KALKI AVATAR INTERNATIONAL · BHAVISHYA MALIKA

ॐ

भविष्य मालिका

मार्गदर्शन एवं प्रश्नोत्तर

पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र जी के उत्तर, उन्हीं के शब्दों में

भविष्य मालिका आधिकारिक चैनल के लाइव प्रश्नोत्तर सत्रों से संकलित

3,322
प्रश्न

196
सत्र

संस्करण · सितम्बर 2026
kalkiabatara.org/qa

इस पुस्तक के विषय में

इस पुस्तक का प्रत्येक उत्तर पूज्य पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र जी ने अपने लाइव प्रश्नोत्तर सत्रों में स्वयं कहा है, जिसे कल्कि अवतार इंटरनेशनल की टीम ने लिपिबद्ध एवं अनूदित किया है। इसमें कुछ भी जोड़ा नहीं गया है; जहाँ पृष्ठ के लिए उत्तर संक्षिप्त किया गया है, वहाँ जुड़े हुए वीडियो में उनके पूरे शब्द उपलब्ध हैं।

प्रत्येक उत्तर के अंत में एक लिंक है जो रिकॉर्डिंग के ठीक उसी क्षण को खोलता है जहाँ पंडित जी वह उत्तर देते हैं, ताकि आप उन्हें सदैव सीधे सुन सकें।

यही संग्रह हिंदी और अंग्रेज़ी में ऑनलाइन kalkiabatara.org/qa पर खोजा जा सकता है।

> आध्यात्मिक तैयारी. भविष्य मालिका के अनुसार साधकों को माधव नाम जप, त्रिसंध्या का पालन, श्रीमद्भागवत महापुराण का अध्ययन, पूर्ण शाकाहार, नशे से दूरी तथा विचार, वाणी और आचरण की शुद्धता का अभ्यास करना चाहिए।

आधिकारिक वेबसाइट

Bhavishya Malika Official Website
https://www.bhavishyamalika.com

Kalki Avatar International
https://www.kalkiabatara.org

Trisandhya, Downloads and Important Updates
https://kalkiabatara.org/resources.html#downloads

Bhavishya Malika Trisandhya Information
https://www.bhavishyamalika.com/trisandhya

जय जगन्नाथ · जय श्री माधव

विषय-सूची

1	L1 - भविष्य मालिका में कलियुग, LIVE by pandit kashinath Mishra	30 मई 2021	प्रश्न 1–16
2	L2 मनुष्य समाज को सत्य युग में जाने का मार्ग, LIVE by pandit kashinath Mishra	6 जून 2021	प्रश्न 17–32
3	L3 कलियुग के अंत का संकेत देवी - देवताओं के मंदिरों से, LIVE by pandit kashinath Mishra	13 जून 2021	प्रश्न 33–60
4	L4 कल्कि भगवान के साथ भेट करने का मार्ग, LIVE by pandit kashinath Mishra	19 जून 2021	प्रश्न 61–95
5	L5 कलियुग अंत के बाद प्रकृति, पंचभूत, संत समाज में क्या बदलाव आएगा? LIVE by pandit kashinath Mishra	20 जून 2021	प्रश्न 96–121
6	L6 विश्व में आद्य सत्य युग का, प्रजा शासन धारा और धर्म का विचार कैसे रहेगा? LIVE	27 जून 2021	प्रश्न 122–141
7	L7 महाविनाशक परमाणु बम से रक्षा पाने का उपाय। #kashinathmishra	4 जुलाई 2021	प्रश्न 142–143
8	L8 महाविनाशक परमाणु बम से रक्षा पाने का उपाय, #kashinathmishra	4 जुलाई 2021	प्रश्न 144–161
9	L9 विश्व के सभी भक्तों के बारे में (पद्म कल्प टीका ग्रंथ) भविष्य मालिका में वर्णन है।	11 जुलाई 2021	प्रश्न 162–190
10	L10 चारों धाम से कलियुग अंत के संकेत , Pandit Kashinath Mishra	18 जुलाई 2021	प्रश्न 191–212
11	L11 वैष्णव धर्मी भक्तों के लिए मालिका में क्या चेतावनी है? Pandit Kashinath Mishra |	25 जुलाई 2021	प्रश्न 213–229
12	L12 सारे विश्व मे जल प्रलय के तांडव होने का कारण क्या है? Pandit Kashinath Mishra	1 अगस्त 2021	प्रश्न 230–246
13	L13 भविष्य मालिका ओड़िआ भाषा में क्यों लिखा गया? Pandit Kashinath Mishra	8 अगस्त 2021	प्रश्न 247–269
14	L14 सारे विश्व के भक्त कैसे और कहाँ एकत्रीकरण होंगे ? Pandit Kashinath Mishra	15 अगस्त 2021	प्रश्न 270–289
15	L15 कलियुग के बीच में ही सत्य युग का आगमन होगा। Pandit Kashinath Mishra	22 अगस्त 2021	प्रश्न 290–309
16	L16.1 सुधर्मा महा महासंघ के आभिमुख्य और विश्व सनातन धर्म की प्रतिष्ठा	29 अगस्त 2021	प्रश्न 310–340
17	L16.2 सुधर्मा महा महासंघ के आभिमुख्य और विश्व सनातन धर्म की प्रतिष्ठा	29 अगस्त 2021	प्रश्न 341–354
18	L17 भक्तों का एकत्रीकरण कहां होगा? और कल्कि भगवान के साथ कैसे भेट होगा?	5 सितम्बर 2021	प्रश्न 355–385
19	L18 पंचसखा रचित-भविष्य मालिका, रचना का उदेश्य क्या है I LIVE	12 सितम्बर 2021	प्रश्न 386–407
20	L19 कलियुग - अंत के बारे में विस्तृत वर्णन | Detail Description about 'END OF KALIYUG''. LIVE	19 सितम्बर 2021	प्रश्न 408–430
21	L20 विश्व में 64 प्रकार की बीमारी आएगी। मनुष्य लोगों के मुख से खून निकलेगा . LIVE	26 सितम्बर 2021	प्रश्न 431–453
22	L21 तृतीय विश्व युद्ध मे भारत के साथ कौन कौन देश रहेंगे? LIVE	3 अक्टूबर 2021	प्रश्न 454–475
23	L22 कल्कि भगवान को कैसे पहचानेंगे? How to identify Sri KALKI Bhagavan. LIVE	17 अक्टूबर 2021	प्रश्न 476–488
24	L23 भक्ति के माध्यम से कल्कि भगवान का दर्शन मिलेगा	31 अक्टूबर 2021	प्रश्न 489–513

25	L24.2 सम्पूर्ण विश्व को भूकंप ग्रास करेगा LIVE	7 नवम्बर 2021	प्रश्न 514–529
26	L24.1 सम्पूर्ण विश्व को भूकंप ग्रास करेगा LIVE	7 नवम्बर 2021	प्रश्न 530–531
27	L25 वर्तमान के समय में बच्चे लोग को पिता-माता को क्या शिक्षा प्रदान करना जरूरी है? LIVE	14 नवम्बर 2021	प्रश्न 532–561
28	L26 राजा का शासन धर्म कैसा होना चाहिए? LIVE	21 नवम्बर 2021	प्रश्न 562–587
29	L27 कल्कि भगवान सभी भक्तों को "अमर कटक" में दर्शन देंगे LIVE	28 नवम्बर 2021	प्रश्न 588–614
30	L28 महामारी से उद्धार का रास्ता The way to get divinity from this PANDEMIC -- LIVE	5 दिसम्बर 2021	प्रश्न 615–633
31	L29 सम्भूत सम्बल ग्राम कहां है? जहा कल्कि भगवान जन्म लिए हैं? GOOGLE MEET #Kalkiavatar #LIVE	9 दिसम्बर 2021	प्रश्न 634–654
32	L30 तुर्की, पाकिस्तान के साथ मिलके भारत के विरुद्ध युद्ध करेगा---GOOGLE MEET---- #Kalkiavtar #LIVE	12 दिसम्बर 2021	प्रश्न 655–671
33	L31 श्री जग्गनाथ जी छत्तिया बट्ट जाएंगे	16 दिसम्बर 2021	प्रश्न 672–685
34	L32 सत्य में रहने वाले भक्तो को निंदा-अपमान मिलेगा-- विष्णु भगवान संहार के लिए कल्कि रूप धारण करेंगे	19 दिसम्बर 2021	प्रश्न 686–714
35	L33 कलियुग के साधु - संत लोग कैसे चरित्र के होंगे?	23 दिसम्बर 2021	प्रश्न 715–727
36	L34 जब बार-बार एक दिन में संक्रांति और अमावस्या एक साथ पड़ेगा, तब महाप्रलय आएगा।	26 दिसम्बर 2021	प्रश्न 728–753
37	L35 नया साल, पिछले साल से और भी विनाश लाएगा। उद्धार पाने का मार्ग क्या है ? LIVE	30 दिसम्बर 2021	प्रश्न 754–773
38	L36 वैष्णो देवी मंदिर से अशुभ की सूचना LIVE	2 जनवरी 2022	प्रश्न 774–779
39	L37 मृत्यु से विजय का रास्ता क्या है-- LIVE	6 जनवरी 2022	प्रश्न 780–818
40	L38 - सत्संग की धारा क्या है?	9 जनवरी 2022	प्रश्न 819–827
41	L39 कलियुग से सत्य युग जाने का मार्ग । How to go SATYA YUG LIVE	13 जनवरी 2022	प्रश्न 828–846
42	L40 इन्द्र देव अन्याय करेंगे, तेज वर्षा होगी-- LIVE	16 जनवरी 2022	प्रश्न 847–857
43	L41 सत्य-न्याय के पुनः उद्धार के लिए, कल्कि भगवान धरावतरण कर चुके हैं। LIVE	20 जनवरी 2022	प्रश्न 858–879
44	L42 राजा बहुत अन्याय करेंगे, बहुत लोगों की मौत होगी। --कलियुग अंत के प्रमाण-- LIVE	23 जनवरी 2022	प्रश्न 880–898
45	L43 कलियुग अंत होने के 13 प्रमुख कारण, 13 main reasons for the end of Kali Yuga,-- LIVE	30 जनवरी 2022	प्रश्न 899–921
46	L44 नीम के पेड़ से निरंतर दूध निकलना, कलियुग अंत की प्रमुख सूचना।-- LIVE	3 फ़रवरी 2022	प्रश्न 922–965
47	L45.2 आगे आने वाले भूकंप के बारे में भविष्य मालिका में क्या वर्णित है? -- LIVE	6 फ़रवरी 2022	प्रश्न 966–966
48	L46 Google meet with Pujya Pandit KASHINATH Misra ji ,-- LIVE	2 अक्टूबर 2022	प्रश्न 967–982
49	L47 Google meet with Pujya Pandit KASHINATH Misra ji ,-- LIVE	9 अक्टूबर 2022	प्रश्न 983–994

50	L48 Today's Google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagwat Mahatamya part -1	13 अक्टूबर 2022	प्रश्न 995–1002
51	L49 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Part- 2	16 अक्टूबर 2022	प्रश्न 1003–1018
52	L50 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagwat Mahatamya Part -3	20 अक्टूबर 2022	प्रश्न 1019–1025
53	L51 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagbat Mahatamya part -4	23 अक्टूबर 2022	प्रश्न 1026–1040
54	L52 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagabat Mahatamya Part -5	27 अक्टूबर 2022	प्रश्न 1041–1050
55	L53 Bhagawat Mahatmya Part -6 " भगवान व्यास-नारद संवाद, भागवत रचना का कारण" #live #malika	30 अक्टूबर 2022	प्रश्न 1051–1068
56	L54 - जोशीमठ, बद्रीधाम और उत्तराखंड के बारे में भविष्य मालिका में क्या वर्णन है?	19 जनवरी 2023	प्रश्न 1069–1083
57	L55.2 - भविष्य मालिका के अनुसार एशिया, अमेरिका और खाड़ी देशों के विनाश का समय आ रहा है।	22 जनवरी 2023	प्रश्न 1084–1095
58	L55.1 - भविष्य मालिका के अनुसार एशिया, अमेरिका और खाड़ी देशों के विनाश का समय आ रहा है।	22 जनवरी 2023	प्रश्न 1096–1096
59	L56 - राजस्थान जैसा रेगिस्तान अंचल में होने वाले परिवर्तन पर भविष्यवाणी | पं. काशीनाथ मिश्र जी	26 जनवरी 2023	प्रश्न 1097–1114
60	L57 - भविष्य मालिका की प्रचार धारा से भक्त लोग सत्य युग को जाएंगे और धर्मसंस्थापना होगा।	29 जनवरी 2023	प्रश्न 1115–1116
61	L58 - जलवायु परिवर्तन का संकेत कलियुग की समाप्ति का प्रमाण।	2 फ़रवरी 2023	प्रश्न 1117–1133
62	L59.2 - श्रीमद् भागवत में कलियुग - अंत का प्रमाण | पं. श्री काशीनाथ मिश्र	19 फ़रवरी 2023	प्रश्न 1134–1146
63	L59.1 - श्रीमद् भागवत में कलियुग - अंत का प्रमाण | पं. श्री काशीनाथ मिश्र	19 फ़रवरी 2023	प्रश्न 1147–1147
64	L60 - विश्व के किन देशों में खाद्य का अभाव होगा | पं. काशीनाथ मिश्र के संग	23 फ़रवरी 2023	प्रश्न 1148–1163
65	L61 - 16 मण्डल गठन एवं भक्तों का उद्धार कैसे होगा? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	26 फ़रवरी 2023	प्रश्न 1164–1175
66	L62 - घर में शांति कैसे आएगी? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	3 मार्च 2023	प्रश्न 1176–1191
67	L63 - Google Meet पं. काशीनाथ मिश्र जी	5 मार्च 2023	प्रश्न 1192–1205
68	L64.1 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	9 मार्च 2023	प्रश्न 1206–1226
69	L64.4 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	12 मार्च 2023	प्रश्न 1227–1231
70	L64.3 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	12 मार्च 2023	प्रश्न 1232–1240
71	L65 - विश्व सनातन धर्म का तृतीय महासत्संग (सूरत सभा) | पं. काशीनाथ मिश्र जी	7 मई 2023	प्रश्न 1241–1253
72	L66 - 'माधव' नाम कैसे पापों से रक्षा करता है? | पं. काशीनाथ मिश्र जी	11 मई 2023	प्रश्न 1254–1271

73	L67 - कलियुग अंत एवं सत्ययुग आगमन पर विचार | पं. काशीनाथ मिश्र जी	1 जून 2023	प्रश्न 1272–1284
74	L68 - Google Meet | With Param Pujya Kashinath Mishra Ji | पं. काशीनाथ मिश्र जी	4 जून 2023	प्रश्न 1285–1297
75	L69 - Google Meet | With Param Pujya Kashinath Mishra Ji | पं. काशीनाथ मिश्र जी	8 जून 2023	प्रश्न 1298–1308
76	L70 - मालिका में पुरी के राजा का वर्णन | पं. काशीनाथ मिश्र जी	11 जून 2023	प्रश्न 1309–1320
77	L71 - प्रेम - मंदिर में आग लगना एवं द्वारकाधीश मंदिर का ध्वज फटना | पं. काशीनाथ मिश्र जी	15 जून 2023	प्रश्न 1321–1349
78	L72 - चारों धाम से सत्ययुग आगमन के संकेत | पं. काशीनाथ मिश्र जी	18 जून 2023	प्रश्न 1350–1360
79	L73 - श्री जगन्नाथ जी और तुलसीदास जी | पं. काशीनाथ मिश्र जी	22 जून 2023	प्रश्न 1361–1381
80	L74 - श्री जगन्नाथ क्षेत्र से कलियुग अंत का प्रमाण | पं. काशीनाथ मिश्र जी	25 जून 2023	प्रश्न 1382–1391
81	L75 - कल्कि भगवान का स्वरूप कैसा होगा ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	30 जून 2023	प्रश्न 1392–1398
82	L80 - सत्ययुग का ध्वज पंचरंगी ही क्यों ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	9 जुलाई 2023	प्रश्न 1399–1417
83	L79 - LIVE | भक्त और भगवान का मिलन | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी एवं आचार्य सलिल जी	9 जुलाई 2023	प्रश्न 1418–1429
84	L85 - क्या मालिका में चन्द्रयान का वर्णन है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	24 जुलाई 2023	प्रश्न 1430–1447
85	L86 - कल्कि अवतार का श्री द्वारिकाधीश मंडल ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	27 जुलाई 2023	प्रश्न 1448–1459
86	L87 - द्वारकाधीश का ध्वजादंड टूटा | यह किस बात का संकेत है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	30 जुलाई 2023	प्रश्न 1460–1470
87	L92 - विश्व युद्ध में भारत का क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	18 अगस्त 2023	प्रश्न 1471–1482
88	L93 - धर्म - संस्थापना के समय में मनुष्य क्यों अनजान है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	20 अगस्त 2023	प्रश्न 1483–1487
89	L94 - सत्ययुग में नए सूर्य एवं चन्द्र की स्थापना | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	20 अगस्त 2023	प्रश्न 1488–1515
90	L97 - तृतीय विश्व युद्ध के बाद राजतंत्र स्थापित होगा ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	3 सितम्बर 2023	प्रश्न 1516–1530
91	L96 - सनातन धर्म का तत्त्व क्या है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	3 सितम्बर 2023	प्रश्न 1531–1555
92	L98 - श्री अच्युतानंद दास जी के 13 अवतार? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	26 सितम्बर 2023	प्रश्न 1556–1568
93	L99 - मालिका पुस्तक के साथ कल्कि अवतार के प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	30 सितम्बर 2023	प्रश्न 1569–1573
94	L100 - भगवान कल्कि के अवतार बिरजा क्षेत्र में मालिका में प्रत्यक्ष प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र जी	1 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1574–1581
95	L101 - भक्तों के साथ के खंडगिरि में कल्कि लीला प्रकाश होगा। पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	3 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1582–1590
96	L102 - शून्य में धूमकेतु का दृश्य होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	5 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1591–1603
97	L103 - शून्य में धूमकेतु का दृश्य होगा भाग - 2| पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	6 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1604–1627
98	L104 -श्री कल्कि एवं सुधर्मा महा महा संघ के बारे में तेर जनम शरण में प्रमाण |पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	7 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1628–1646

99	L105 - छतिया बट एवं जाजपुर में कल्कि भगवान का लीला प्रकाश होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	8 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1647–1667
100	L106 - जगन्नाथ जी का 'छतिया बट' में स्थानांतरण (रूस देश के द्वारा) | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	8 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1668–1694
101	L107 - भविष्य मालिका में लिखा जा चुका था पं० श्री काशीनाथ मिश्र जी का नाम | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	9 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1695–1717
102	L108 - जाजनगर में कल्कि जी का जन्म पट्टा मड़ाण में प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	10 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1718–1735
103	L109 - ''कलि आगत भविष्यांत'' में कल्कि जी के जन्म स्थान का वर्णन | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	11 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1736–1773
104	L110 - यशवंत दास मालिका में कल्कि जी के जन्म नाभि मंडल, जाजनग्र में होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	13 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1774–1821
105	L111 - मालिका में एवं तत्त्वबोधिनी में कल्कि जी के जन्मस्थान का प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	14 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1822–1847
106	L113 - सम्बल ग्राम में 10,000 ब्राह्मणों के द्वारा 7 अश्वमेध यज्ञ हुआ था | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	15 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1848–1873
107	L112 - बलराम दास मालिका में कल्कि जी के जन्मस्थान का प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	15 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1874–1904
108	L114 - एकाम्र वन खंडगिरि में कल्कि लीला का प्रकाश होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	16 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1905–1935
109	L115 - देवी मां और योगिनी गण का संहार | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	18 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1936–1963
110	L116 - बार बार भूकंप आना किस आपदा का संकेत है ? | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	24 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1964–1985
111	L117 - श्री जगन्नाथ संस्कृति की उत्पत्ति ? | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी	30 अक्टूबर 2023	प्रश्न 1986–2011
112	L119 - विश्व के लिए 2024 कैसा होगा? | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी	2 जनवरी 2024	प्रश्न 2012–2041
113	L120 - भक्तों के लिए 2024 कैसा होगा? | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी	16 जनवरी 2024	प्रश्न 2042–2064
114	L121 - तृतीय विश्व युद्ध की तैयारी | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी	3 मार्च 2024	प्रश्न 2065–2098
115	L122 - त्रिकाल संध्या का तत्त्व | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी	4 मार्च 2024	प्रश्न 2099–2136
116	L124- 2024 का राष्ट्रीय निर्वाचन धर्म की जीत	7 अप्रैल 2024	प्रश्न 2137–2159
117	L125- 2025 के मीन - शनि के योग बारे में मालिका में पहले से प्रकाश था | पंडित काशीनाथ मिश्रा	11 अप्रैल 2024	प्रश्न 2160–2186
118	L127- 2025 में बृहस्पति देव के अतिचारी गति से विश्व में धर्म का प्रकाश होगा | पंडित काशीनाथ मिश्रा	19 अप्रैल 2024	प्रश्न 2187–2210
119	L128 - विश्व में क्या परमाणु युद्ध होने वाला है? कब? | पंडित काशीनाथ मिश्रा	22 अप्रैल 2024	प्रश्न 2211–2227
120	L130 - ईरान और यूक्रेन में युद्ध रुकेगा या तीव्र होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्रा	28 अप्रैल 2024	प्रश्न 2228–2265
121	L131: क्या अमेरिका और चीन मिलकर भारत के विरुद्ध समझौता करेंगे? भविष्य मालिका में क्या लिखा हुआ है।	2 मई 2024	प्रश्न 2266–2288
122	L132: ज्यादा धूप और सऊदी में बारिश का कारण क्या है? | पंडित काशीनाथ मिश्र	5 मई 2024	प्रश्न 2289–2321

123	L133: क्या परमाणु युद्ध में धरती का संपूर्ण विनाश होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	10 मई 2024	प्रश्न 2322–2338
124	L134: आगे उत्तर मेरु में बर्फीला प्रलय होगा | पंडित काशीनाथ मिश्र	13 मई 2024	प्रश्न 2339–2369
125	L135: महा बीमारी से उद्धार का मार्ग - त्रिकाल संध्या | पंडित काशीनाथ मिश्र	16 मई 2024	प्रश्न 2370–2394
126	L136: सुधर्मा महा महा संघ सारे विश्व में धर्म संस्थापना का कार्य करेगा। | पंडित काशीनाथ मिश्र	19 मई 2024	प्रश्न 2395–2419
127	L137: धरती पर आगे भूकंप का प्रभाव आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	23 मई 2024	प्रश्न 2420–2441
128	L138: क्या कल्कि अवतार का जन्म हो गया है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र	3 जून 2024	प्रश्न 2442–2460
129	L139: क्या भगवान कल्कि की लीला शुरू हो चुकी है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र	6 जून 2024	प्रश्न 2461–2494
130	L140: सम्बल ग्राम में भगवान कल्कि | पंडित काशीनाथ मिश्र	10 जून 2024	प्रश्न 2495–2516
131	L142: मीन शनि चलन समय में भारत, चीन, और पाकिस्तान का महा युद्ध होगा | पंडित काशीनाथ मिश्र	20 जून 2024	प्रश्न 2517–2545
132	L144: विश्व में एटॉमिक वार का खतरा 600 साल पहले लिख दिया गया था। | पंडित काशीनाथ मिश्र	4 जुलाई 2024	प्रश्न 2546–2563
133	L146: द्वापरयुग में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को जगन्नाथ जी के रत्न भंडार के बारे में क्या बताए थें?	14 जुलाई 2024	प्रश्न 2564–2584
134	L147: 13 दिन के पक्ष में 'रथ यात्रा', मानवों के लिए अमंगल का संकेत! | पंडित काशीनाथ मिश्र	19 जुलाई 2024	प्रश्न 2585–2595
135	L148: Internet Apocalypse कंप्यूटर सिस्टम अचल होने का कारण क्या है? | पंडित काशीनाथ मिश्र	21 जुलाई 2024	प्रश्न 2596–2613
136	L149: मोदी जी का अंतिम समय जाजनग्र (जाजपुर) में बीतेगा: मालिका में प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र	26 जुलाई 2024	प्रश्न 2614–2630
137	L150: भगवान बलभद्र और श्री कृष्ण एक ही शरीर में कल्कि रूप धारण करेंगे | पंडित काशीनाथ मिश्र	28 जुलाई 2024	प्रश्न 2631–2642
138	L152: क्या मालिका में लिखा है पंडित काशीनाथ मिश्र जी का नाम? | पंडित काशीनाथ मिश्र	5 अगस्त 2024	प्रश्न 2643–2661
139	L153: भारत के पड़ोसी देशों के साथ आगे युद्ध की स्थिति बनेगी | पंडित काशीनाथ मिश्र	8 अगस्त 2024	प्रश्न 2662–2675
140	L154: विश्व में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ेगा | पंडित काशीनाथ मिश्र	11 अगस्त 2024	प्रश्न 2676–2689
141	L155: माता और कन्याओं के ऊपर अत्याचार क्यों हो रहा है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र	18 अगस्त 2024	प्रश्न 2690–2702
142	L156: भगवान कल्कि करेंगे परमाणु से सुरक्षा | पंडित काशीनाथ मिश्र	23 अगस्त 2024	प्रश्न 2703–2708
143	L158: विश्व साधु संत महा महासभा - श्री जगन्नाथ पुरी | पंडित काशीनाथ मिश्र	19 सितम्बर 2024	प्रश्न 2709–2715
144	L159:अब बचने का एक ही उपाय - हर घर भागवत, हर घर त्रिसंध्या पाठ | पंडित काशीनाथ मिश्र	10 अक्टूबर 2024	प्रश्न 2716–2738
145	L160 : युग अंत का समय | पंडित काशीनाथ मिश्र	20 अक्टूबर 2024	प्रश्न 2739–2753
146	L161 : मीन शनि योग - महापरिवर्तन का समय! | केवल 48 दिन | पंडित काशीनाथ मिश्र	9 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2754–2760
147	L163 : नीलचक्र से ध्वजा गिरना | आगामी विनाश का संकेत? | पंडित काशीनाथ मिश्र	16 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2761–2769
148	L164 : Earthquake | भूमि पर प्रलय | मानव समाज के लिए चेतावनी | पंडित काशीनाथ मिश्र	17 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2770–2774
149	L165 : Maha Kumbh | महाकुंभ - सत्ययुग आगमन का पहला चरण। | पंडित काशीनाथ मिश्र	21 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2775–2786
150	L166 : कलियुग से सत्ययुग कैसे आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	23 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2787–2799

151	L167: MAHASHIVRATRI | महाशिवरात्री लिंगराज तथा जगन्नाथ क्षेत्र से अशुभ संकेत ! | पंडित काशीनाथ मिश्र	27 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2800–2809
152	L168: EARTHQUAKE | नेपाल-बिहार में भूकंप का असली कारण? | पंडित काशीनाथ मिश्र	28 फ़रवरी 2025	प्रश्न 2810–2815
153	L169: ASTEROID IMPACT | क्या पृथ्वी पर ऐस्टरॉइड गिरने वाला है? | पंडित काशीनाथ मिश्र	3 मार्च 2025	प्रश्न 2816–2827
154	L170: Ukraine-Russia War | यूक्रेन रूस के युद्ध का नतीजा क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	7 मार्च 2025	प्रश्न 2828–2841
155	L171: NATO's Future | नाटो (NATO) का भविष्य क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	9 मार्च 2025	प्रश्न 2842–2857
156	L172: पश्चिम दिशा में सूर्य उदित होंगे वो भी मध्य रात्रि में | पंडित काशीनाथ मिश्र	13 मार्च 2025	प्रश्न 2858–2873
157	L173: WW3 | तीसरे विश्व युद्ध का परिणाम क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	17 मार्च 2025	प्रश्न 2874–2878
158	L174: Bhavishya Malika Volume 2 | भविष्य मालिका पुराण पार्ट 2 कब आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र	20 मार्च 2025	प्रश्न 2879–2885
159	L175: धर्म एकमात्र रास्ता है | अभी भी समय है मानव सभ्यता के लिए | पंडित काशीनाथ मिश्र	26 मार्च 2025	प्रश्न 2886–2920
160	L176: बस ! 48 घंटे और फिर ... | मीन - शनि संयोग | 48 Hours later | पंडित काशीनाथ मिश्र	28 मार्च 2025	प्रश्न 2921–2927
161	L177: भविष्य मलिका की वाणी सत्य हो रही है! | पंडित काशीनाथ मिश्र	10 अप्रैल 2025	प्रश्न 2928–2932
162	L178: जगन्नाथ क्षेत्र से धर्म संस्थापना का एक और संकेत! | पंडित काशीनाथ मिश्र	15 अप्रैल 2025	प्रश्न 2933–2938
163	L179: इस साल विश्व में FOOD CRISIS देखने मिलेगा! | पंडित काशीनाथ मिश्र	20 अप्रैल 2025	प्रश्न 2939–2947
164	L180: America का U-TURN! | अमेरिका पाकिस्तान और चीन का साथ देगा! | Pandit Kashinath Mishra	29 अप्रैल 2025	प्रश्न 2948–2956
165	L181: WORLD WAR 3 की आहट और भविष्य मालिका | Pandit Kashinath Mishra	2 मई 2025	प्रश्न 2957–2964
166	L182: भारत पाकिस्तान युद्ध में विजेता कौन होगा? | मालिका में क्या लिखा है? | Pandit Kashinath Mishra	5 मई 2025	प्रश्न 2965–2977
167	L183: OPERATION SINDOOR के बाद क्या युद्ध होने वाला है ? | Pandit Kashinath Mishra	7 मई 2025	प्रश्न 2978–2986
168	L184: तृतीय विश्व युद्ध के बारे में मालिका में क्या लिखा है? | Pandit Kashinath Mishra	9 मई 2025	प्रश्न 2987–2992
169	L185: विश्व युद्ध एवं पंचभूत प्रलय में रक्षा पाने के उपाय? | Pandit Kashinath Mishra	12 मई 2025	प्रश्न 2993–3005
170	L186: 64 प्रकार की महामारी | त्रिकाल संध्या निदान | Pandit Kashinath Mishra	22 मई 2025	प्रश्न 3006–3020
171	L187: IRAN and AMERICA | ईरान अमेरिका का सम्बन्ध कैसा रहेगा आगे जाके ?| Pandit Kashinath Mishra	22 जून 2025	प्रश्न 3021–3034
172	L188: वर्ल्ड वार की स्थिति क्या होगी? | 13 इस्लामिक देशों की गुप्त बातचीत | Pandit Kashinath Mishra	26 जून 2025	प्रश्न 3035–3058
173	L189: जगन्नाथ पुरी में सबसे बड़ा विनाश का संकेत। Rath Yatra Massacre | Dr Pandit Kashinath Mishra	30 जून 2025	प्रश्न 3059–3067

174	L190: अमेरिका में भूकंप और अमेरिका का भविष्य। Future of US | Dr Pandit Kashinath Mishra	18 जुलाई 2025	प्रश्न 3068–3073
175	L191: विश्व में प्रजा आंदोलन तथा नेपाल का भविष्य। Nepal Protests | Pandit Dr Kashinath Mishra	12 सितम्बर 2025	प्रश्न 3074–3078
176	L192: India-Pakistan के बीच War कभी भी हो सकता है। कारण क्या होगा? | Pandit Dr Kashinath Mishra	15 सितम्बर 2025	प्रश्न 3079–3099
177	L193: 2026 में वैश्विक संकट और प्राकृतिक आपदाएँ | India Pakistan War | Pandit Dr Kashinath Mishra	10 जनवरी 2026	प्रश्न 3100–3111
178	L194: आज के समय में मनुष्य को क्या करना चाहिए ? | Pandit Dr Kashinath Mishra	19 फ़रवरी 2026	प्रश्न 3112–3131
179	L195: JAGANNATH मंदिर से मिला और एक नया संकेत! | Bhavishya Malika | Pandit Dr Kashinath Mishra	25 फ़रवरी 2026	प्रश्न 3132–3149
180	L196: वर्तमान युद्ध से मानवता को क्या सीखना चाहिए? | Bhavishya Malika Puran | Pt Dr Kashinath Mishra	8 मार्च 2026	प्रश्न 3150–3174
181	L197: भविष्य मालिका से नया संकेत? | Bhavishya Malika Puran | Pt Dr Kashinath Mishra	30 मार्च 2026	प्रश्न 3175–3195
182	L198: 30 मार्च 2026 - जगन्नाथ मंदिर ध्वज पर फिर चील का बैठना - अशुभ संकेत? | Pt Dr Kashinath Mishra	31 मार्च 2026	प्रश्न 3196–3207
183	L199: परमाणु महाविनाश से मानव का रक्षा सूत्र क्या है? | Bhavishya Malika | Pt Dr Kashinath Mishra	3 अप्रैल 2026	प्रश्न 3208–3224
184	L200: बड़ा संकेत! जगन्नाथ मंदिर पर चील, श्री मंदिर के ऊपर लाल आसमान 😱 | Pt Dr Kashinath Mishra	15 अप्रैल 2026	प्रश्न 3225–3235
185	L201: Iran–America Ceasefire फेल = भारत–पाक युद्ध की शुरुआत? 😨 | Pt Dr Kashinath Mishra	19 अप्रैल 2026	प्रश्न 3236–3244
186	L202: बंगाल में बड़ा परिवर्तन! आध्यात्मिक बदलाव का स्पष्ट प्रमाण😨 | Pt Dr Kashinath Mishra	7 मई 2026	प्रश्न 3245–3251
187	L203: भविष्य मालिका का जो गलत प्रचार हो रहा है, उस पर स्पष्टीकरण | Pt. Dr. Kashinath Mishra	7 मई 2026	प्रश्न 3252–3260
188	L204: गौ माता और अन्य जीवों की रक्षा अभी क्यों ज़रूरी है? Pt. Dr. Kashinath Mishra	18 मई 2026	प्रश्न 3261–3264
189	L205: 2026-27 Important Prediction: कितना हुआ सच? अब आगे क्या होगा | Pt. Dr. Kashinath Mishra	24 मई 2026	प्रश्न 3265–3274
190	L206: 2026–32 में छात्र और नौजवानों का जीवन कैसे रहेगा सुरक्षित और शांतिमय? | Pt. Kashinath Mishra	27 मई 2026	प्रश्न 3275–3280
191	L207: क्या सभी मनुष्य त्रिकाल संध्या करके जा सकते हैं सत्ययुग ? Pt. Kashinath Mishra	29 मई 2026	प्रश्न 3281–3286

192	L208: अमावस्या-संक्रांति योग बना खतरा? 15 जून के योग के बाद सूखा और तबाही | Pt. Kashinath Mishra	19 जून 2026	प्रश्न 3287–3300
193	L209: VENEZUELA में भूकंप का तांडव , क्या अब भारत की बारी? | Pt. Kashinath Mishra	27 जून 2026	प्रश्न 3301–3308
194	L210: पवित्र स्नान पूर्णिमा महोत्सव | Special Google Meet | Pt. Kashinath Mishra	30 जून 2026	प्रश्न 3309–3314
195	L211: क्या होगा भारत का भविष्य ? Bhavishya Malika Puran | Pt. Kashinath Mishra	26 जुलाई 2026	प्रश्न 3315–3319
196	L212: 13 देशों का मिलन, NATO का विभाजन शुरू ! Bhavishya Malika Puran | Pt. Kashinath Mishra	24 अगस्त 2026	प्रश्न 3320–3322

सत्र 1 · प्रश्न 1–16

L1 - भविष्य मालिका में कलियुग, LIVE by pandit kashinath Mishra

दिनांक: 30 मई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1 मैंने मालिका में पढ़ा कि आठ देवियों को भक्तों की रक्षा का दायित्व सौंपा गया है। लेकिन जो संख्याएँ बताई गई हैं वे बहुत कम हैं, जैसे 5,000, 2,000, 7,000। तो बाकी भक्तों की रक्षा कैसे होगी? ये संख्याएँ मिलाकर 50,000 से भी कम होती हैं, जबकि भक्त तो इससे कहीं अधिक हैं।

उत्तर: आपने जो कहा वह सही है। सत्ययुग की स्थापना के कार्यक्रम में जुड़े भक्तों की संख्या लगभग 70,000 से 80,000 है। कुल मिलाकर, भारत और पूरे विश्व में 33 करोड़ भक्त होंगे, जो मनुष्य शरीर में जन्मे देवी-देवता हैं, और अन्य 31 करोड़ मानव भक्त। विश्व की कुल जनसंख्या 64 करोड़ होगी। धर्म की स्थापना के लिए देवियों को जो उत्तरदायित्व दिया गया है, विशेष रूप से अष्ट चण्डी और अष्ट दुर्गा (काली, दुर्गा, वाराही आदि योगमाया के आठ स्वरूप), वह यह है कि वे उन 70,000 विशेष भक्तों को प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें प्रभु के कार्य में लगाएँ। शेष भक्त भी बचेंगे, परंतु अंत में प्रभु तक पहुँचने से पहले उन्हें बहुत कष्ट सहने होंगे। वे नए युग में धर्म की स्थापना के प्रशासनिक कार्य में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होंगे। देवियाँ इन विशेष भक्तों की रक्षा करेंगी और उन्हें प्रभु की शरण में लाएँगी। यह गुप्त रूप से भी होगा और प्रकट रूप से भी। जैसे, आप किसी ऐसी स्थिति में पड़ सकते हैं जहाँ मृत्यु निश्चित लगे, परंतु उसी क्षण कोई आकर आपको बचा लेगा। तब आपको समझ आएगा कि आपको किसने बचाया। मालिका कहती है कि दिव्य स्त्री-शक्तियाँ धर्म की स्थापना के लिए गाँव-गाँव जाएँगी, और यह आज भी हो रहा है। अन्य भक्त भी बचेंगे, परंतु बहुत कष्ट झेलने के बाद ही वे प्रभु तक पहुँचेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:45 · 30 मई 2021

प्रश्न 2 मैं अनंत माधव जी की भक्त हूँ और मैं मीरा जी जैसी बनना चाहती हूँ। तो कृपया बताइए, क्या मीरा जी का भी पुनर्जन्म होगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। हम मीरा जी को राधा का ही एक स्वरूप मानते हैं। माँ के अनेक रूप हैं, और प्रभु के भी। मीरा जी का शरीर प्रभु में ही विलीन हो गया था। मीरा जैसी बनने की आपकी इच्छा बहुत सुंदर है। मीरा के माध्यम से प्रभु ने सिद्ध किया कि भक्त भगवान से भी बड़ा होता है। शबरी जैसी भक्त किसी भी रूप में मीरा से भिन्न या कम पवित्र नहीं हैं; सोचिए उन्होंने कितने युगों तक प्रतीक्षा की। यदि आपमें वह मातृ-शक्ति और भक्ति है, और आप प्रभु के शरणागत हो जाती हैं, तो आप भी मीरा बन सकती हैं, आप राधा बन सकती हैं। यह मनुष्य जन्म एक अवसर है जिसमें कोई ध्रुव, प्रह्लाद, नारद या इंद्र बन सकता है। हमें इस पवित्र मानव शरीर को प्रभु के प्रेम और आनंद के सागर में डुबोकर इतना शुद्ध बना लेना चाहिए कि आप मीरा बाई से भी बड़ी भक्त बनकर निकल सकें। परंतु आपकी श्रद्धा और शक्ति कितनी है, यह तो केवल भगवान ही जानते हैं। भगवान हृदय की ऐसी इच्छाएँ पूरी करते हैं। इसलिए प्रभु की शरण में रहिए। प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़िए और निरंतर प्रभु का नाम जपिए। सच्चे भक्त को इससे कोई मतलब नहीं होता कि समाज में क्या हो रहा है। उनका संबंध केवल ब्रह्म (परम सत्य) और आत्मा से होता है। ऐसी एकाग्रता से ध्यान कीजिए। मैं आपकी भक्ति का आदर करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि भगवान आपको आपकी इच्छा पूर्ण करने की शक्ति दें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:43 · 30 मई 2021

प्रश्न 3 पंडित जी, कोई कह रहा है कि कलि दानव का जन्म अभी होना बाकी है। आज मैंने एक वीडियो देखा जिसमें कह रहे थे कि कलि दानव का अभी-अभी मनुष्य रूप में जन्म हो चुका है। वे कहते हैं कि भगवान कल्कि का अवतार अभी नहीं हुआ है, परंतु कलि दानव का हो गया है।

उत्तर: फिर वही बात — 'पंडित वही जो बस बड़ी-बड़ी बातें करे।' ये तथाकथित आध्यात्मिक मार्गदर्शक गलत बोलते हैं। मालिका से उनका कोई संबंध नहीं है। कलि दानव को रहने के लिए पाँच स्थान दिए गए थे: स्वर्ण, स्त्री, जुआ, भूमि और पाप। कलि दानव के अनेक रूप हैं; वह कभी एक अकेले मनुष्य के रूप में जन्म नहीं लेगा। इस युग में करोड़ों कलि दानव हैं, करोड़ों रावण हैं, करोड़ों कंस हैं। 'म्लेच्छ' वे हैं जो सदा इन पाँच चीज़ों में डूबे रहते हैं: स्त्री, भूमि, धन, हिंसा और पाप। वही म्लेच्छ हैं, और उन्हीं का विनाश होगा। कोई अलग से कलि दानव जन्म नहीं लेगा। मुझे नहीं पता लोग ये विचार कहाँ से लाते हैं। कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं कहता। श्रीमद्भागवत कहता है कि कलियुग के अंत में, जब शासक डाकुओं जैसे हो जाएँगे और प्रजा को लूटेंगे, तब विष्णु यश के पुत्र भगवान कल्कि जगत के स्वामी के रूप में प्रकट होंगे, इन दानव-रूपी राजाओं और शासकों का नाश करने के लिए। यह कहीं नहीं लिखा कि एक अकेला कलि दानव आएगा जिसका वे वध करेंगे। यह उन लोगों द्वारा बनाया गया भ्रम का मार्ग है जो अपनी आजीविका के लिए साधु बन गए हैं। हमारे हिंदू सनातन धर्म में ऐसा कुछ नहीं है। प्रभु म्लेच्छों का नाश करने आएँगे। विश्व के 800 करोड़ लोगों में से केवल 64 करोड़ बचेंगे। जो सब नष्ट होंगे वे म्लेच्छ हैं, जो उन पाँच चीज़ों को पकड़े रहकर कलि का स्वरूप धारण किए हुए हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:00 · 30 मई 2021

प्रश्न 4 महाराज, इसके होने में कितने वर्ष शेष हैं?

उत्तर: यह सब 2029 तक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:38 · 30 मई 2021

प्रश्न 5 भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध का कारण क्या होगा? किस बात से युद्ध भड़केगा?

उत्तर: युद्ध तो पहले से ही चल रहा है, एक शीत युद्ध। मालिका कहती है कि भारत और पाकिस्तान पहले खेल-खेल में लड़ेंगे, अर्थात् पाकिस्तान छोटे-छोटे संघर्ष शुरू करेगा। उसके बाद वह अपनी शक्ति जुटाने के लिए चीन से हाथ मिलाएगा, और तब एक महाभयंकर युद्ध होगा। वह समय दूर नहीं है। यह 2023 से आगे कभी भी शुरू हो सकता है। तो उस समय की प्रतीक्षा कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:24 · 30 मई 2021

प्रश्न 6 भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, क्या वे भारत के लिए अच्छे हैं? उन पर आरोप लगाए जाते हैं कि वे गलत हैं और देश के लिए कुछ नहीं कर रहे। क्या वे सही हैं? वे कैसे हैं?

उत्तर: देखिए, हम राजनीति में नहीं हैं, और हमें राजनीति पसंद नहीं है। हम धर्म के मार्ग पर हैं और धार्मिकता को ही वरीयता देते हैं। पहली बात, जिस देश में गोहत्या और पशुहत्या होती है, जहाँ अधर्म है, जहाँ उस गौ माता की हत्या होती है जिसने अपने दूध से हमारा पालन किया, वहाँ मैं किसी को अच्छा नहीं कह सकता। मैं धर्म के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता। जो भी धर्मानुकूल है, वही अच्छा है। किसी भी राजनीतिक व्यक्ति से हमारा कोई संबंध नहीं है। राजनेता जो करते हैं, उसका न्याय भगवान कल्कि करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 54:36 · 30 मई 2021

प्रश्न 7 क्या वे भारत के अंतिम प्रधानमंत्री हैं?

उत्तर: इससे आपको क्या मिलेगा? देखिए, मालिका की भविष्यवाणियों को सिद्ध करने के लिए यह लिखा है कि भारत का अंतिम शासक एक 'जोगी' (संन्यासी) होगा। महापुरुष अच्युतानंद की गुप्त मालिका में यह लिखा गया है। और उसके शासन के मध्य में एक सैन्य आपातकाल आएगा। यह मालिका में इसलिए लिखा है ताकि इसे प्रमाणित किया जा सके। मैं किसी की योग्यता या पवित्रता में विश्वास नहीं करता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 55:42 · 30 मई 2021

प्रश्न 8 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। चूँकि वैक्सीन बनाने में पशुओं, जैसे गायों, का उपयोग और वध किया जाता है, तो क्या हमें वैक्सीन लेनी चाहिए? क्या इसे लेने से हम उस पाप के भागीदार बनेंगे? क्योंकि यदि हम वैक्सीन लेते हैं, तो एक तरह से हम पशु की हत्या को स्वीकार कर रहे हैं।

उत्तर: देखिए, भारत एक लोक-कल्याणकारी राष्ट्र है, और उसका संविधान सदा मानव समाज के हित के लिए लिखा गया है। चूँकि हम लोकतंत्र में हैं, सरकार के नियमों और अनुशासन का पालन करना एक संत और प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। हम सबके लिए सरकार की नीतियों का पालन करना और अनुशासन बनाए रखना बहुत आवश्यक है, विशेषकर उस संकट को देखते हुए जिसका सामना आज विश्व कर रहा है। हमारी सरकार जो कदम उठा रही है, वे मानव समाज के कल्याण के लिए हैं। भारत के अनुशासित नागरिक होने के नाते हमें सरकार के आदेश का पालन करना है; हम सरकार के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य हैं। इस विषय में मैं केवल इतना ही कहूँगा: सरकार के अनुशासन का पालन कीजिए। और धर्म के जिस मार्ग को मैं आपको दिखा रहा हूँ, उस पर चलिए। भगवान आपकी रक्षा करेंगे। हम जो मिल रहे हैं उसका कारण यही है कि मानव समाज और भक्तों को कैसे बचाया जाए, यह जाना जा सके। यदि भक्त कष्ट पाएँगे तो प्रभु क्या करेंगे? वे तो अपने भक्तों के लिए ही आए हैं। इसलिए प्रभु के मार्ग पर चलिए। भागवत को वैक्सीन की तरह पढ़िए। शाकाहारी भोजन कीजिए। निंदा मत कीजिए, पराई स्त्री या पराए धन की कामना मत कीजिए, और गलत चीज़ों के पीछे मत भागिए। सदा सत्य, शांति, करुणा और क्षमा के मार्ग पर चलिए। भगवान जगन्नाथ आपकी रक्षा करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 56:43 · 30 मई 2021

प्रश्न 9 पंडित जी, मैं पूछना चाहता था, अच्छे लोग अच्छाई की ओर बढ़ रहे हैं, और बुरे लोगों का विनाश हो रहा है। यह कब तक चलता रहेगा, और भगवान कल्कि कब तक सब कुछ पूर्ण कर देंगे?

उत्तर: नदी की धारा सागर की ओर बहती है, और नाली की धारा गंदे नाले की ओर। भक्त की धारा भगवान की ओर बहती है। हर युग में दानवों ने अपनी प्रवृत्ति कभी नहीं छोड़ी। जैसा कहा गया है, 'जब-जब धर्म की हानि होती है और अहंकारी दानव बढ़ जाते हैं, तब-तब प्रभु सज्जनों की रक्षा के लिए विविध रूप धारण करते हैं।' जब संसार में पाप, अहंकार, घमंड और पशुहत्या बढ़ जाती है, तब लोग सोचते हैं कि उनका धन उन्हें बचा लेगा, परंतु मैं देखता हूँ कि धन किसी की रक्षा नहीं कर सकता। केवल धर्म ही कर सकता है। समाज में अनेक प्रकार के लोग होते हैं। हम व्यक्ति की निंदा नहीं करते, हम उसके कर्मों की निंदा करते हैं। कोई भी स्वभाव से बुरा नहीं होता, परंतु आधुनिक संसार का वातावरण उसे बुरा बना देता है। सत्संग के द्वारा लोग बदल सकते हैं। भगवान और मालिका का संदेश फैलाना हमारा कर्तव्य है। जो बदलेंगे वे बच जाएँगे; जो नहीं बदलेंगे वे नष्ट हो जाएँगे। उनका भाग्य भगवान के हाथ में है। एक समय आ रहा है जब सब मिलेंगे, ठीक जैसे वृंदावन में होता था, और प्रभु की दिव्य लीला प्रकट होगी। हम भाइयों और परिवार की तरह मिलेंगे। वह बहुत आनंदमय समय होगा, मानो वृंदावन की लीला फिर से आरंभ हो रही हो। यदि हम सही मार्ग पर बने रहें और अपने कर्मों पर दृष्टि रखें, तो हम सब उस लीला में सम्मिलित हो सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 59:38 · 30 मई 2021

प्रश्न 10 मैं बस यह पूछना चाहती हूँ, जब कल्कि अवतार आएँगे, तो प्रभु पृथ्वी पर कितने समय तक रहेंगे? कुछ सप्ताह, कुछ महीने, या कुछ दिन?

उत्तर: माता जी, सुनिए। श्रीमद्भागवत कहता है कि कलियुग के 5,000 वर्ष बीतने के बाद माँ गंगा पृथ्वी छोड़ देती हैं। अभी 5,126 वर्ष हो चुके हैं, जिसका अर्थ है कि शास्त्रों के अनुसार माँ गंगा पृथ्वी छोड़ चुकी थीं। परंतु भगवान कल्कि के अवतार के बाद माँ गंगा पुनः पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं। केदारनाथ में जो बादल फटने की घटना हुई, जिसकी चर्चा सरकार करती है, वह गंगा का दूसरा अवतरण था। वे भगवान केदारनाथ के मस्तक पर बहती हुई पृथ्वी पर लौटीं, क्योंकि प्रभु आ चुके हैं। जब प्रभु आते हैं, तब माँ गंगा भी आती हैं। इतिहास बताता है कि गंगा शिव के मस्तक पर केवल एक बार उतरी थीं, जब भगीरथ ने उन्हें बुलाया था। यह हाल की घटना अभूतपूर्व है। माँ गंगा लौट आई हैं, और आप देख सकते हैं कि उनकी सफाई हो रही है और उनकी पवित्रता बढ़ रही है। यह इस बात का प्रमाण है कि कल्कि अवतार पृथ्वी पर हैं। इसे समझिए और दूसरों को समझाइए, अन्यथा मार्ग दिखाने वाला कोई न होने से वे भटक जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:46 · 30 मई 2021

प्रश्न 11 पंडित जी, हम ओड़िया भाषा लिखना कैसे सीख सकते हैं?

उत्तर: आपको ओड़िया सीखने की आवश्यकता नहीं है। हमारी राष्ट्रभाषा देवनागरी होगी, जो हिंदी, ओड़िया, भोजपुरी, कन्नड़, तमिल, फ्रेंच और अंग्रेज़ी का मिश्रण होगी। वही भाषा होगी। जब संसार पर कल्कि का राज्य स्थापित होगा, तब देवनागरी का प्रयोग होगा। आप सभी को ऐसी दिव्य शक्ति प्राप्त होगी कि आप सब कुछ सहज ही सीख जाएँगे, मानो कोई पुरानी स्मृति याद आ रही हो। यह आपको भगवान की कृपा से प्राप्त होगा। ओड़िया सीखना आवश्यक नहीं है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, और उससे भी काम चल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:35 · 30 मई 2021

प्रश्न 12 नमस्कार, यह भविष्य मालिका... इसका अनुवाद कहाँ से प्राप्त हो सकता है?

उत्तर: सुनिए, कोई अनुवाद है ही नहीं। मालिका जिस प्रकार लिखी गई है, वह हिंदी, अंग्रेज़ी और संस्कृत का मिश्रण है। ओड़िया भी उसमें मिली हुई है, पर लिपि ओड़िया है। भाषा में संस्कृत और देवनागरी जैसी बहुत पुरानी भाषाएँ हैं। मालिका को समझने के लिए भगवान की कृपा के सिवा और कुछ नहीं चाहिए। आज मैं मालिका पर बोल पाता हूँ, इसका कारण प्रभु की कृपा है। जब मैं बालक था, तब मुझे समझ नहीं आती थी, पर रुचि थी। अब मैं समझ पाता हूँ। यह भगवान की कृपा है। बहुतों ने मुझसे निवेदन किया कि मालिका को हिंदी में लिखूँ, और मैंने लिखी भी, पर मैंने उसे प्रकाशित नहीं किया क्योंकि मुझे भय था कि इसका व्यवसायीकरण हो जाएगा। प्रकाशक उसे ले लेते, सब भाषाओं में छाप देते, और वह एक व्यापार बन जाता। प्रभु के अनमोल वचन राक्षसों के हाथों में चले जाते — उनके, जो गौ-हत्या करते हैं और पाप करते हैं। इसीलिए यह एक रहस्य है। भगवान ने मुझे जो शक्ति दी है, उससे मैं अपने एपिसोड्स में इसे समझाता हूँ। उन सभी को देखिए, वे 100 से अधिक हैं। वहीं से मालिका को समझिए। मैं मूल ओड़िया पाठ का वाचन करता हूँ और फिर उसका अर्थ समझाता हूँ। उसका अनुसरण करना ही सर्वोत्तम मार्ग है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:06 · 30 मई 2021

प्रश्न 13 भगवान कल्कि किस वर्ष तक आ सकते हैं?

उत्तर: देखिए भाई, भगवान कल्कि तो पहले ही पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं। मालिका में जो लिखा है, उसके अनुसार भगवान कल्कि अब 14 वर्ष के हैं। जब भगवान कल्कि 13 वर्ष के हुए, तब धर्म स्थापना का पहला चरण आरंभ हुआ। मालिका ने उनके 13वें वर्ष के लिए जो कुछ कहा था, वह सब घटित हो चुका है। मालिका का संदेश फैलने के बाद, पूरे भारत में 1,20,000 भक्त एकत्र होंगे। उसके बाद 'खंड प्रलय' और धर्म स्थापना आगे बढ़ेगी। बड़े-बड़े भूकंप आने वाले हैं, साथ ही रोग, सामाजिक हिंसा, युद्ध, प्राकृतिक आपदाएँ, बाढ़ और अग्नि। यह समय आ रहा है। भगवान कल्कि यह सब अपने घर में बैठे-बैठे कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि वे स्वयं को प्रकट करें और सबसे कहें, 'मैं कल्कि हूँ, मेरी शरण में आओ, मैं नया युग आरंभ करूँगा।' ऐसा कभी नहीं हुआ और न कभी होगा। जैसे-जैसे धर्म स्थापना आगे बढ़ेगी और भक्तों का प्रभाव बढ़ेगा, भक्त स्वयं ही भगवान को प्रकट करेंगे। और कुछ बहुत अच्छे भक्तों को भगवान कल्कि के दर्शन होंगे, पर सभी को नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:42 · 30 मई 2021

प्रश्न 14 नहीं नहीं, जैसा आपने पहले कहा था कि कल्कि से पहले एक 'प्रलय' होने वाला है... मेरा मतलब है, अंत की शुरुआत हो चुकी है। यह कितने स्थानों पर होने लगा है?

उत्तर: देखिए माताजी, मानव समाज को बार-बार चेतावनियाँ मिल रही हैं। पहला स्ट्रेन [वायरस का] समाज के लिए एक चेतावनी थी कि वह धर्म की ओर मुड़े। पर लोगों ने समझा नहीं और मछली, मांस, मदिरा, स्त्री और पाप के पीछे भागते रहे। फिर दूसरा आया। यह दूसरी चेतावनी है। चेतावनियाँ आती रहेंगी। यह इतनी जल्दी समाप्त नहीं होगा। पर सजग और संस्कारी भक्त, जो वास्तव में वृंदावन में भगवान कृष्ण के साथ थे, वे समझ जाएँगे। अज्ञानी नहीं समझेंगे। हमारा मालिका का संदेश केवल भक्तों के लिए है, सबके लिए नहीं। जो मछली और मांस खाते हैं, उनके लिए मालिका में कोई स्थान नहीं है, जब तक कि वे आज से ही इसे त्याग न दें। यह 'खंड प्रलय' चल रहा है। कुछ दिन पहले ओड़िशा में तूफान आया और उसने भारी विनाश किया। यह हर वर्ष होता है। एक समय आएगा जब यह वर्ष में दो बार होगा, फिर चार बार, फिर पाँच बार, फिर हर महीने। भगवान चेतावनी दे रहे हैं: 'बदलो, सुधरो, धर्म की ओर आओ। यदि नहीं आओगे, तो तुम्हारी रक्षा कौन करेगा?' मैं पीछे से वार नहीं करूँगा; मैं चेतावनी देकर सामने से वार करूँगा। जैसे भगवान कृष्ण ने कंस को बार-बार चेताया था। पर कलियुग के रावण मूल रावण से भी अधिक क्रूर हैं। सरल जीवन जिएँ। सरल जीवन में सत्य का प्रकाश चमकता है। उतना ही खाइए जितनी आवश्यकता हो और बचा हुआ भोजन गरीबों और पशुओं के साथ बाँटिए। हमारे लिए यही धर्म है।

► यह उत्तर सुनें · 01:13:16 · 30 मई 2021

प्रश्न 15 तो, हमें वैक्सीन लगवानी चाहिए या नहीं? मेरा मतलब है... क्या हमें लेनी चाहिए?

उत्तर: देखिए भाई, हमारा देश एक लोक-कल्याणकारी राष्ट्र है। यह सदा देश के हित में कार्य करता है। सभी नागरिकों को इसके संवैधानिक नियमों और विधानों का पालन करना चाहिए। इसमें मैं भी सम्मिलित हूँ, और आप भी। देश की रक्षा करना और सरकार के कानूनों का पालन करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। जो लोग हमारे सत्संग से, मालिका से जुड़े हैं, जो सत्ययुग के लिए आतुर हैं, जो 'गोपी, तापी और कापी' (भक्त) हैं, उनके लिए मैं धर्म की भाषा बोलता हूँ। उसी भाषा का अनुसरण कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:30 · 30 मई 2021

प्रश्न 16 पंडित जी, मैं ओड़िशा से बोल रही हूँ। मालिका में लिखा है कि समलेश्वरी मंदिर पर बिजली गिरेगी। क्या वह पहले ही हो चुका है?

उत्तर: 2018 में जगन्नाथ मंदिर की ध्वजा पर बिजली गिरी और वह जल गई। 2018 में ही माँ समलेश्वरी मंदिर के शिखर की ध्वजा पर भी बिजली गिरी और वह जल गई। ओड़िशा में वैष्णो देवी की शक्ति के स्वरूप माँ तारिणी देवी मंदिर की ध्वजा भी जल गई। उसी वर्ष बाबा अखंडलमणि के मंदिर का त्रिशूल बिजली गिरने से गिर गया। और ओड़िशा में भगवान नील माधव मंदिर की ध्वजा भी जल गई। तो हाँ, माँ समलेश्वरी मंदिर की ध्वजा पहले ही जल चुकी है। इसके अतिरिक्त, चार दिन पहले माँ के मंदिर में आग लग गई। आपको पता है? उसके एक दिन बाद भारतीय स्टेट बैंक की संबलपुर शाखा में आग लग गई। आपको पता है? यह धर्म स्थापना का संकेत है। जब माँ अपना संहार-कार्य आरंभ करती हैं, तो वे अग्नि रूप में प्रकट होती हैं। जिस दिन माँ वैष्णो देवी ने त्रिकूट छोड़ा, उस दिन त्रिकूट पर्वत पर आग लग गई। 2018 में त्रिकूट पर्वत की आग के बारे में आप जानती हैं? यही प्रमाण है। जगन्नाथ मंदिर की ध्वजा जल गई। जहाँ करोड़ों सूर्यों से भी अधिक तेजस्वी सुदर्शन चक्र विराजमान है, वहाँ बिजली कैसे गिर सकती है? यह विनाश का संकेत है। मानव समाज को यह समझना चाहिए। धर्म को थामे रहिए। धर्म ही सबसे बड़ा धन है।

► यह उत्तर सुनें · 01:19:40 · 30 मई 2021

सत्र 2 · प्रश्न 17–32

L2 मनुष्य समाज को सत्य युग में जाने का मार्ग, LIVE by pandit kashinath Mishra

दिनांक: 6 जून 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 17 आपने कहा था कि जब कलियुग समाप्त होगा और मानव समाज सत्ययुग में प्रवेश करेगा, तो क्या तब इंटरनेट होगा या नहीं? क्या लोगों के घर और भवन रहेंगे? वे खाएँगे-पीएँगे कैसे? क्या फोन होंगे या नहीं? और मानव समाज एक-दूसरे से कैसे जुड़ पाएगा?

उत्तर: देखिए, इस कलियुग में जो भी विकास और तकनीक है, सत्ययुग में उससे करोड़ों गुना अधिक उन्नत साधन होंगे। सत्ययुग में सूर्य और चंद्रमा सत्य की शक्ति से समस्त ब्रह्मांड को प्रकाश देते हैं। शक्ति आध्यात्मिक होगी। सत्ययुग में शासक आध्यात्मिक शासक होंगे। आध्यात्मिक शक्ति ब्रह्मांड की सबसे प्रबल शक्ति है। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि जब भगवान कृष्ण द्वारका से हस्तिनापुर जा रहे थे, तब उनका परिवार मार्ग से गया, पर ऋषिगण अपने दिव्य विमानों से आकाश मार्ग से गए। इस युग में करोड़ों में से कुछ के ही पास हवाई जहाज़ है, और वह भी खतरनाक है। पर उस युग में सभी भक्त पुष्पक विमान में जहाँ चाहें वहाँ यात्रा कर सकेंगे। इलेक्ट्रॉनिक्स की बात करें तो कलियुग में सूर्य की किरणें प्रखर हैं और चंद्रमा की किरणें मंद। पर सत्ययुग में सूर्य की किरणें ऐसी होंगी जैसी अभी चंद्रमा की किरणें हैं, इसलिए लोग गर्मी का अनुभव किए बिना आनंदपूर्वक अपने दैनिक कार्य और खेती कर सकेंगे। रात्रि में चाँदनी हमारी वर्तमान बिजली की रोशनी से भी अधिक उज्ज्वल होगी, और वह शीतल और सुखद होगी। लोग बिना किसी बिजली के रात में यात्रा कर सकेंगे। रही इंटरनेट की बात, तो मनुष्यों में इतनी आध्यात्मिक शक्ति होगी कि उन्हें पता रहेगा कि सभी लोकों में — स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में — क्या हो रहा है। जैसे अभी हम फोन पर बात करते हैं, वैसे ही आध्यात्मिक शक्ति से व्यक्ति समस्त ब्रह्मांड, अनंत ब्रह्मांडों का समाचार पा सकेगा। अपनी ध्यान-शक्ति और दिव्य ऊर्जा से उनके पास सभी आवश्यक साधन होंगे। उनका खान-पान और निवास राजाओं जैसा होगा, और लोगों को कोई कष्ट नहीं होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात, सभी भक्तों में भाईचारा, मित्रता और पवित्रता होगी। औषधि की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि रोग ही नहीं होंगे। लोगों को 'इच्छा मृत्यु' (अपनी मृत्यु का समय चुनने की क्षमता) प्राप्त होगी, और वे अपनी इच्छा से जिएँगे, श्रीमद्भागवत में वर्णित धर्मानुकूल कर्म करते हुए। शास्त्र कहते हैं कि सत्ययुग में देवता और भक्त अपने पुष्पक विमानों में गंगा नदी में क्रीड़ा करने आते थे। वह समय फिर आएगा। लोगों को जो वस्तुएँ मिलेंगी, वे कलियुग की कृत्रिम वस्तुओं से हज़ारों गुना बेहतर होंगी। सभी संत बन जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 13:13 · 6 जून 2021

प्रश्न 18 हम बड़े लोग तो पूजा, जप और तप कर सकते हैं, पर अपने छोटे बच्चों को, जो एक-दो वर्ष के हैं, आने वाले युग के लिए कैसे तैयार करें?

उत्तर: जय जगन्नाथ। वातावरण मनुष्य को सब कुछ देता है। यदि बच्चा बाज़ार जाता है, तो वह बाज़ार का वातावरण देखता है। यदि वह सत्संग में बैठता है, तो कीर्तन और भजन सुनता है। तो अपने बच्चों के लिए, अपने व्यस्त जीवन में भी, जितना जल्दी हो सके उठिए, लगभग 4:30 या 5:00 बजे। रोग मिटाने का यह पहला चरण है। दूसरा, शाम को जितना जल्दी हो सके भोजन कीजिए, 7:00 या 8:00 बजे तक, और 9:30 या 10:00 बजे तक सो जाइए। अपने बच्चों को भी यही सिखाइए, क्योंकि जो सत्ययुग में प्रवेश करेंगे उनकी यही जीवनशैली होगी। सभी मनुष्य रात 8:00-8:30 बजे तक भोजन करेंगे, 10:00 बजे तक सो जाएँगे, और जल्दी उठकर भगवान का नाम जपेंगे। अपने बच्चों को यही दिनचर्या सिखाइए। उन्हें निर्धारित समय पर, 4:30 से 5:00 बजे के बीच, जो ब्रह्म मुहूर्त है, जगाइए और उनके साथ बैठकर भगवान माधव का नाम जपिए। जब आप कीर्तन करें या श्रीमद्भागवत पढ़ें, तो अपने बच्चे को साथ बिठाइए। यदि बच्चा अधिक न बोल पाए, तो भी उसे केवल 'माधव, माधव' कहना सिखाइए। धीरे-धीरे वे जप करने लगेंगे, और आपके कर्मों का अनुसरण करते हुए वे भी सही मार्ग पर आ जाएँगे। पूरा परिवार सत्संग करेगा, घर में रहेगा, और सत्ययुग के योग्य बनेगा। घर में श्रीमद्भागवत पढ़िए, किसी जीव को हानि मत पहुँचाइए, और संतान होने के बाद दांपत्य शारीरिक संबंधों से दूर रहिए। अपने परिवार को आधुनिक फिल्मों, नाटकों और यूट्यूब की नकारात्मक चीज़ों से दूर रखिए। ऐसा करके हम आज के समाज की समस्याओं को सहज ही पार कर सकते हैं और सत्ययुग की ओर बढ़ सकते हैं। हमें कोई नहीं रोक सकता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:22 · 6 जून 2021

प्रश्न 19 महोदय, मेरा प्रश्न यह है कि तकनीक तेज़ी से आगे बढ़ रही है। जो काम पहले हमें चार-पाँच घंटे में होता था, वह अब 20 से 40 मिनट में हो जाता है। बड़ी कंपनियाँ चीज़ों को स्वचालित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर ध्यान दे रही हैं, जिससे मानवीय हस्तक्षेप घट रहा है और मशीनों का उपयोग बढ़ रहा है। इस पर आपके क्या विचार हैं? क्या यह सचमुच हमें प्रगति की ओर ले जा रहा है, या यह मानव सभ्यता के पतन का कारण बन रहा है?

उत्तर: देखिए, जब युग बदलता है, तब लोग अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करते हैं। ऋषि अच्युतानंद ने मालिका में इस विषय में लिखा है। उन्होंने लिखा कि पहले किसान नष्ट होंगे; वे अपने प्राण गँवाएँगे और आत्महत्या करेंगे, जो आप कई वर्षों से देख रहे हैं। उसके बाद धनी लोग, बड़ी कंपनियों के मालिक, जिन्होंने गरीबों को लूटा और समाज के कल्याण के बजाय अपने स्वार्थ के लिए काम किया — उनकी कंपनियाँ बंद हो जाएँगी। बस प्रतीक्षा कीजिए, वह समय बहुत निकट है जब संसार के सबसे बड़े धनी लोगों की कंपनियाँ बंद होंगी। इसका प्रभाव अभी से आरंभ हो रहा है, और यह धीरे-धीरे होगा। पर एक समय आएगा जब यह सब निरर्थक हो जाएगा। समाज में तकनीक और सुविधाएँ सभी मनुष्यों के लिए होनी चाहिए। वर्तमान कलियुग में कुछ ही लोगों के पास शक्ति, अधिकार और धन है। यह सब डिजिटल हो जाएगा, और सबको समान अधिकार मिलेंगे। ऐसा समय आ रहा है। हमें धर्म, नीति और पवित्रता के मार्ग पर चलना चाहिए। जीव हत्या, मांस और मछली का पूर्ण विरोध कीजिए। अन्यथा मानव समाज के लिए सत्ययुग में प्रवेश करना कठिन होगा। यदि कोई हत्या करके मांस-मछली खाता है, तो आने वाले समय का सामना करना बहुत कठिन होगा। धर्म सभा में सबके लिए समान कानून और संविधान होगा, पर हमें कुछ समय और कुछ घटनाओं के बीतने की प्रतीक्षा करनी होगी। प्रतीक्षा कीजिए और देखिए क्या होता है। जय जगन्नाथ जी।

► यह उत्तर सुनें · 25:44 · 6 जून 2021

प्रश्न 20 पिछली बार मैंने 'जीव हत्या' के बारे में सुना। इस संदर्भ में, घर के कीट-पतंगों का क्या, जैसे वर्षा ऋतु में आने वाले छोटे कीड़े जो हमारी वस्तुओं को नुकसान पहुँचाते हैं, या मकड़ियाँ और चींटियाँ? यदि उन्हें मार दिया जाए, तो क्या वह भी पाप है? कभी-कभी उन्हें मारना आवश्यक हो जाता है, पंडित जी।

उत्तर: जय जगन्नाथ। वास्तव में यह कलियुग का परिणाम है। वायु में प्रदूषण के कारण ये कीड़े हर जगह बढ़ गए हैं, खेती में भी। यह कलियुग के प्रदूषण के कारण हो रहा है। यह कुछ वर्ष और चलेगा, जब तक धर्म स्थापना पूर्ण नहीं हो जाती, फिर यह बदल जाएगा। अभी, वर्तमान कलियुग में, मैं इस विषय पर अधिक नहीं कहूँगा। पर पूरा प्रयास कीजिए कि आपके द्वारा कोई पाप न हो। ऐसे कर्मों से बचिए जो पाप और उसके फल की ओर ले जाते हैं। जय जगन्नाथ जी।

► यह उत्तर सुनें · 28:56 · 6 जून 2021

प्रश्न 21 महाराज जी, मेरा एक और प्रश्न है। आजकल जब भी मैं लोगों से मिलता हूँ या सोशल मीडिया पर बातचीत करता हूँ, तो मैं देखता हूँ कि अधिकतर लोग भगवान की पूजा नहीं करते। वे और सब कुछ देख लेंगे, लेकिन जब पूजा-पाठ की बात आती है, तो टाल देते हैं। लोग साल में एक बार भी भगवान को याद क्यों नहीं करते? मेरे दोस्त या मुझसे छोटे लोग भगवान को याद क्यों नहीं करते? और एक बात यह भी है कि पहले कार्टून नेटवर्क जैसे चैनलों पर भगवान से जुड़े कार्टून दिखाए जाते थे, जिनसे बच्चों को ज्ञान मिलता था। आज ऐसा क्यों नहीं होता? बच्चों को भगवान से जुड़े कार्टून क्यों नहीं दिखाए जाते, ताकि वे अपने धर्म, अध्यात्म के बारे में जान सकें और धर्म के अनुसार जीवन जी सकें? क्योंकि मेरा मानना है कि धर्म ही आपको जीने का सही तरीका सिखाता है।

उत्तर: जब कलियुग की व्यवस्था सत्ता में होती है और मानव समाज पापी हो जाता है, तब समाज को सिखाने के लिए कुछ शेष नहीं रहता। कलियुग के प्रभाव के कारण आज लोग आपकी इस पवित्र विचारधारा को लागू नहीं करते। लेकिन आने वाले युग में ऐसा होगा। अगले युग में हर घर में अठारह पुराणों का पाठ होगा। जो शास्त्र-ज्ञान में आगे होगा, वह समाज में पूजनीय होगा और उसे उच्च पद तथा सम्मान मिलेगा। जैसे-जैसे कलियुग चल रहा है, हमारे सनातन धर्म के अधिकार, हमारी नई पीढ़ी के अधिकार हमारे तथाकथित संरक्षकों द्वारा छीन लिए गए हैं, और बार-बार छीने जाते हैं। उनका शासन और उनकी मनमानी अधिक दिन नहीं टिकेगी। एक समय आएगा जब विद्यालय हमारे वैदिक सिद्धांतों पर आधारित होंगे, आश्रमों की तरह, जहाँ सभी शास्त्रों का अध्ययन करेंगे। उन्हें इतना ज्ञान प्राप्त होगा कि उन्हें केवल नौकरी और मार्केटिंग पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी, जिसमें आज लोगों की एकमात्र रुचि है। भगवान श्रीकृष्ण पर आधारित कार्टून और अन्य भक्ति चैनल जो पहले आते थे, अब नहीं आते — यह कलियुग के प्रभाव और उसके अंत का संकेत है। यह अधिक दिन नहीं टिकेगा। 2030 तक सत्ययुग का प्रकाश पूर्ण रूप से प्रकट हो जाएगा, और उसके बाद से लोग सनातन धर्म के सिद्धांतों के अनुसार जीवन जिएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:27 · 6 जून 2021

प्रश्न 22 आपने अभी कहा कि कोरोना जुलाई में चला जाएगा, लेकिन...

उत्तर: आपके पहले प्रश्न के संबंध में, कि मैंने कहा कि कोरोना जुलाई में चला जाएगा — न तो यह शास्त्रों में लिखा है, न ही मैंने कभी ऐसा कहा है। मेरे पिछले एपिसोड्स में आप सुन सकते हैं, मैंने कहा है कि यह रोग जाने वाला नहीं है। यह बार-बार आता रहेगा, और इसे सहने के लिए धर्म की शक्ति चाहिए। यह पहली बात है। आगे, मैंने वह कहा है जो महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है: 'माल माल डाक सप्त थर हेब', अर्थात् सात बार संसार में बड़े-बड़े रोग आएँगे, और सात बार संसार में मृत्यु की ध्वनि गूँजेगी। हमें समाज में इतनी जल्दी कोई परिवर्तन होता नहीं दिखता। फिर भी, हम धर्म की शक्ति के द्वारा इसका सामना कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:35 · 6 जून 2021

प्रश्न 23 जब से मैंने आपसे कल्कि अवतार के बारे में सुना है और जप करना शुरू किया है, मुझे एक अजीब सी अनुभूति होती है और उनके दर्शन की गहरी इच्छा जागती है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: संसार में रहते हुए, अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए और अपने परिवार के बारे में सोचते हुए, दिन में आधा घंटा दिव्य ज्ञान की साधना में लगाइए। दूसरी बात, आप हमारे यूट्यूब चैनल पर दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। भगवान का नाम सबको नहीं दिया जा सकता। यह केवल उन्हीं को दिया जाता है जो मांस-मछली नहीं खाते, जो अपने घरों में प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ करते हैं, और जो पाप, हिंसा और द्वेष से मुक्त हैं। भगवान कल्कि का महामंत्र ऐसे लोगों को चुनकर दिया जाएगा। यह सबके लिए नहीं है। कृपया सुनिए, यह कोई व्यावसायिक संस्था नहीं है। मैं आपको बहुत स्पष्ट कर देना चाहता हूँ, मैंने अपने जीवन में कभी भी आध्यात्मिक मार्ग से एक पैसा भी नहीं कमाया। हमने अपने प्रवचनों के माध्यम से किसी से एक पैसा भी नहीं लिया। मैं आप जैसी पवित्र आत्माओं के साथ ऐसा कोई आर्थिक संबंध नहीं रखना चाहता। मैं आपके साथ भाई की तरह, परिवार की तरह संबंध रखना चाहता हूँ, जैसे वृंदावन में गोप-गोपियाँ भाईचारे के साथ रहते थे। हम वही संबंध बनाए रखेंगे और भगवान का नाम फैलाएँगे। नंबर पर संपर्क करने के बाद, छह महीने बाद भगवान का नाम दिया जाएगा। उस नाम का जप कीजिए। जहाँ तक भगवान कल्कि के दर्शन की आपकी इच्छा है, जब समय आएगा, आपको दर्शन होंगे। यह कोई दुकान नहीं है कि मैं आपको यूँ ही मंत्र दे दूँ। यह कोई व्यापार नहीं है। महापुरुषों ने 500 वर्ष पहले यह लिखा था, इसी उद्देश्य से भक्तों का चयन करते हुए। बार-बार कहा गया है कि भगवान का यह गुप्त मंत्र किसी पापी, अन्यायी या भ्रष्ट व्यक्ति को नहीं दिया जाना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:17 · 6 जून 2021

प्रश्न 24 हमने व्हाट्सएप पर बात की है। मैंने आपको अपने हृदय की इस अनुभूति के बारे में बताया था, और आपने व्हाट्सएप पर उत्तर देते हुए मुझे 'मालवा मंत्र' जपने को कहा था। मैंने उत्तर दिया कि मैं तो जागते ही 'राधे राधे' जपती हूँ, यह कभी रुकता ही नहीं। क्या यह पर्याप्त है?

उत्तर: यदि मैंने आपको व्हाट्सएप पर कोई मंत्र दिया है, तो आपको वही जपना चाहिए। वही सबसे शक्तिशाली मंत्र है। उसे जपिए, और आपको सब कुछ प्राप्त होगा। बस एक बार आजमाकर देखिए और इस मंत्र की शक्ति देखिए। लेकिन एक बात है, आपको अपने शरीर को पवित्र रखना होगा, ब्रह्म मुहूर्त में उठना होगा, और उस मार्ग का पालन करना होगा जो मैंने बताया है। आपको प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ करना चाहिए और अपने पति को भगवान मानना चाहिए। मैं यह केवल आपके लिए नहीं कह रहा, बल्कि सभी स्त्रियों के लिए कह रहा हूँ। सत्ययुग में पति को भगवान माना जाता है, और पत्नी को उनकी समर्पित सहभागिनी होना चाहिए। कलियुग में केवल वही इस मार्ग पर चल सकेंगे जो स्वयं को बदलेंगे, सभी नहीं। चूँकि मैंने आपको मंत्र दिया है, उसका पालन कीजिए, सब कुछ ठीक होगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:50 · 6 जून 2021

प्रश्न 25 गुरुजी, पहले के उस प्रश्न के संबंध में जो विदेश में रहने वाले लोगों के बारे में था... यहाँ रात के 1:30 बज रहे हैं, फिर भी हम आपको सुन रहे हैं। हम विदेश में रहते हैं। हमारे लिए मालिका क्या कहती है? हमें क्या करना चाहिए ताकि युग के अंत में हम किसी अच्छे स्थान पर जा सकें?

उत्तर: यह बड़े आनंद की बात है। देखिए, भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद आपके साथ है। आप मालिका का अनुसरण कर रहे हैं। मालिका में लिखा है कि केवल वही लोग मालिका का अनुभव कर पाएँगे जिन पर मेरा आशीर्वाद है, जो अपने पिछले कर्मों को पीछे छोड़कर सत्य के मार्ग से जुड़ते हैं। आप उन्हीं पवित्र आत्माओं में से एक हैं जो मालिका का अनुसरण कर रहे हैं। जो लोग मालिका का अनुभव करते हैं, वे चारों युगों में भगवान श्रीकृष्ण के भक्त थे, और आप अवश्य उन्हीं में से एक होंगे। इसीलिए आप मालिका से जुड़े हुए हैं। ऐसी पृष्ठभूमि के बिना कोई व्यक्ति कभी हमसे या मालिका से जुड़ नहीं सकता। यदि आप जुड़े हुए हैं, तो आप ऐसी ही पवित्र आत्मा हैं। दूसरी बात, आप विदेश में रहते हैं। मनुष्य कहीं भी रह सकता है, लेकिन उसका स्वाभाविक संस्कार उसके साथ रहना चाहिए। मैं आपको तीन बातें बताऊँगा। चूँकि आप विदेश में रहते हैं, दिन में तीन बार भगवान के नाम का जप कीजिए: प्रातः, सायं और रात्रि में। दूसरी, श्रीमद्भागवत की एक प्रति लीजिए और दिन में एक बार उसका पाठ कीजिए। तीसरी, शाकाहारी भोजन कीजिए और हमारे सत्संग से जुड़े रहिए। जो कहा जाए उसे सुनिए और अपने जीवन में उतारिए। इस मार्ग पर चलकर हम सत्ययुग में मिलेंगे, और जब समय आएगा, तो आपको भगवान कल्कि के दर्शन भी हो सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:36 · 6 जून 2021

प्रश्न 26 पंडित जी, मैं जानना चाहता हूँ, आप कहते हैं कि सत्ययुग आ रहा है। सत्ययुग के बाद क्या त्रेता युग, द्वापर युग और फिर कलियुग आएगा? क्या यह चक्र चलता रहेगा?

उत्तर: देखिए, इस विषय में हमारी विचारधारा यह है कि... हाँ, ईश्वर ने जो ब्रह्मांड रचा है... हाँ, यह सत्य है, यह चक्र चलता रहता है। लेकिन इस विशेष समय पर, एक 'कल्प' (एक ब्रह्मांडीय युगचक्र) का अंत होने वाला है। जब तुलसीदास जी का जन्म हुआ, तो उन्होंने रामचरितमानस में लिखा कि यह सृष्टि विलीन हो जाएगी। सभी भक्त वैकुंठ (दिव्य धाम) को प्राप्त होंगे। तीनों लोक — स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल — तथा चौदह भुवन जल में समा जाएँगे। तब ब्रह्मा जी नई सृष्टि का आरंभ करेंगे। भगवान विष्णु भगवान सत्यदेव के साथ नई सृष्टि के बीज रखेंगे। सूर्य और चंद्रमा भी नए होंगे। मालिका कहती है कि सत्ययुग में प्रतिदिन नया सूर्य और नया चंद्रमा रचा जाएगा, जो सत्य के युग के अनुकूल होगा। सूर्य की किरणें शीतल होंगी, और चाँदनी बहुत तेज होगी, दिन के उजाले जैसी, जिससे बिजली की आवश्यकता नहीं होगी। पंचसखाओं (चैतन्य महाप्रभु के पाँच सखा) ने लिखा है कि महाप्रलय से बचने के लिए श्रीमद्भागवत ही सबसे बड़ी शरण है।

► यह उत्तर सुनें · 46:48 · 6 जून 2021

प्रश्न 27 इस कलियुग में हमारे पास जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क मंदिर जैसे इतने बड़े मंदिर हैं, और ताजमहल जैसी अन्य इमारतें हैं। युग के अंत के बाद उनका क्या होगा? उनका भविष्य क्या होगा?

उत्तर: सत्ययुग में, जब भगवान राम राजा थे, तब अयोध्या बसाई गई थी। कितने ही राजा आए और गए, और उनकी राजधानियाँ बदलती रहीं। जब युग बदलता है, तब तीन स्थान शेष रहते हैं: बद्रीनाथ, वृंदावन और जगन्नाथ धाम। लेकिन जगन्नाथ धाम जल में समा जाएगा, जबकि वृंदावन और बद्रीनाथ बने रहेंगे। हमारे आध्यात्मिक केंद्रों के कुछ चिह्न भी शेष रहेंगे। जब भगवान कल्कि के रूप में आएँगे, तो वे उन्हें पुनर्स्थापित करेंगे। लेकिन जब ब्रह्मांड की महाप्रलय होगी, तब समूचा संसार बदल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:28 · 6 जून 2021

प्रश्न 28 थोड़ी देर पहले मैंने कहा था कि धर्म मनुष्य को जीना सिखाता है। मैं इसमें यह जोड़ना चाहता हूँ कि कोई भी धर्म आपको जीवन जीने का तरीका सिखाता है। हमें किसी व्यक्ति को उसके धर्म से नहीं आँकना चाहिए, क्योंकि धर्म व्यक्ति से अलग है। किसी भी धार्मिक ग्रंथ को पढ़ना चाहिए, चाहे वह भगवद्गीता हो या बाइबल। हमें किसी को उसके धर्म के आधार पर नहीं आँकना चाहिए। यह मेरी मान्यता है।

उत्तर: देखो बेटा, तुम जो कहते हो वह सही है। मैं तुम्हें बताता हूँ, व्यक्ति कभी बुरा नहीं होता। हम व्यक्ति द्वारा किए गए गलत कर्मों की निंदा करते हैं, पर व्यक्ति से प्रेम करते हैं। हमें समूची मानवता से स्नेह है। लेकिन समस्या उनके पापकर्म हैं। हम उन कर्मों की निंदा करते हैं। जो लोग उन कर्मों से ऊपर उठकर अच्छे कर्म नहीं करते, वे हमारी संगति में नहीं हैं। दूसरी बात, सभी धर्म आपस में जुड़े हुए हैं। आने वाले सत्ययुग में केवल एक ही धर्म होगा। कलियुग में जो यह युद्ध होगा, वह धर्म का युद्ध होगा, जाति और पंथ का युद्ध होगा। कलि ने मानव समाज को बाँट दिया है ताकि वे आपस में लड़ें। लेकिन जब सत्ययुग आरंभ होगा, तब एक ही धर्म होगा। यह बहुत अच्छी बात है कि तुम भगवद्गीता पढ़ते हो। श्रीमद्भागवत हिंदू धर्म का सर्वोच्च ग्रंथ है। भागवत पढ़ो, भगवान की शरण लो, और हम सब मिलकर अच्छी परंपराओं के साथ सत्ययुग का आरंभ करेंगे और भगवान कल्कि को संसार में धर्म की स्थापना में सहायता करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:05 · 6 जून 2021

प्रश्न 29 पंडित जी, मुझे भगवान विष्णु की सेवा की ओर प्रबल झुकाव महसूस होता है और सुदर्शन चक्र से जुड़ाव अनुभव होता है। मुझे भीतर से यह प्रेरणा मिलती है कि मैं तपस्या करूँ और धर्म की स्थापना में योगदान दूँ। ऐसा लगता है कि पंच पांडवों ने पहले ही जन्म ले लिया है। मैं बस यह पूछना चाहता हूँ कि क्या सभी देवी-देवताओं और भगवान कल्कि ने पहले ही जन्म ले लिया है, या यह अभी होना बाकी है? और भगवान कितने वर्षों में स्वयं को प्रकट करेंगे?

उत्तर: हमारी मालिका के अनुसार, सभी देवी-देवताओं ने पृथ्वी पर अवतार ले लिया है। पंच पांडवों तथा अन्य सभी देवी-देवताओं ने जन्म ले लिया है। भगवान कल्कि 2025 से 2027 के बीच अपनी दिव्य शक्ति प्रकट करेंगे। उस दिव्य शक्ति से वे अमेरिका जैसे देश को एक ही दिन में जीत सकते हैं। मैं आपसे कहूँगा कि मालिका का अनुसरण कीजिए, श्रीमद्भागवत का पाठ कीजिए, और अपने परिवार की देखभाल करते हुए ध्यान की अवस्था में रहिए। मांस, मछली और हिंसा से दूर रहिए। समय आ गया है कि हम धर्म का प्रचार करें, केवल दिखावे के लिए नहीं, बल्कि अपनी रक्षा के लिए और समूचे संसार में सनातन धर्म को प्रकट करने के लिए। यही इस समय का आवश्यक कार्य है। एक समय आएगा जब सभी भक्त एक होंगे, और सबको शांति प्राप्त होगी। धर्म के मार्ग पर चलिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:40 · 6 जून 2021

प्रश्न 30 पंडित जी, मैं उत्तर प्रदेश से हूँ। मैं 13 वर्षों से आध्यात्मिक मार्ग पर हूँ। मुझे ध्यान में चीज़ें दिखाई देती हैं। आपकी भविष्य मालिका सुनने के बाद मुझे लगता है कि यह सब सत्य है। कृपया मुझे कोई मंत्र दीजिए। मैं आपकी मालिका के मार्ग का पालन करता हूँ, मैं मांस नहीं खाता, शराब नहीं पीता, मैं शुद्ध शाकाहारी हूँ।

उत्तर: ठीक है, देखिए, जो नंबर हमारे व्हाट्सएप पर है, उस फोन नंबर पर हमारे भक्तों को कॉल कीजिए। वे आपसे मंत्र के बारे में बात करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:24 · 6 जून 2021

प्रश्न 31 मैं यह पूछ रहा हूँ, मैं रोज़ एक घंटा मंत्र जप करता हूँ। आप कहते हैं कि दिल्ली भूकंप से नष्ट हो जाएगी। तो जब भूकंप आएगा और इमारतें गिरेंगी, तो क्या मेरे ऊपर भी कुछ गिरेगा? या चूँकि मैं भगवान का भक्त हूँ, तो क्या मेरी मृत्यु नहीं होगी? क्या मेरा पूरा परिवार बच जाएगा?

उत्तर: देखिए बेटा। इस धरती पर अलग-अलग आत्माएँ आई हैं और उन्होंने परिवार बनाए हैं। हमें नहीं पता कि कौन व्यक्ति कितना धर्मपरायण है। लेकिन बात यह है कि यदि सभी भक्त और सभी परिवार धर्म की नाव पर सवार हो जाएँ, तो मलिका में लिखा है कि जो भगवान का नाम जपते हैं, उन पर किसी रोग, प्राकृतिक आपदा, यहाँ तक कि परमाणु युद्ध का भी असर नहीं होगा। उन्हें कुछ नहीं होगा। यह बात मलिका में बार-बार कही गई है। इस पर विश्वास रखिए। जैसे, अगर पाँच लोग एक कार में यात्रा कर रहे हों और दुर्घटना हो जाए, तो चार की मृत्यु हो सकती है और एक बच सकता है। एक क्यों बचा और चार क्यों मरे? यह केवल भगवान जानते हैं। लेकिन मलिका के अनुसार, जो भगवान की शरण लेते हैं, वे बच जाएँगे। भगवान उनकी रक्षा करेंगे। यह भगवान की इच्छा है। अध्यात्म विश्वास, भक्ति और सबसे बढ़कर धैर्य पर टिका है। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए, और आप सब कुछ अनुभव करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:09 · 6 जून 2021

प्रश्न 32 आपके जाने से पहले, कृपया भक्तों को बताइए कि भगवान कल्कि इस समय कौन-सी लीलाएँ कर रहे हैं? क्योंकि आपकी दृष्टि से ही हम जैसे भक्त उनकी शक्तियों और लीलाओं के बारे में जान सकते हैं। कृपया हमें बताइए।

उत्तर: देखिए, भगवान की लीलाओं को केवल भक्त ही जानता है। इस विषय में मैं क्या कह सकता हूँ? आप भक्त हैं, आप उनकी लीलाओं का अनुभव करते हैं। मैं केवल इतना कहूँगा: जब भगवान धरती पर आते हैं, तो वे अपने भक्तों को बुलाते हैं। मलिका में लिखा है कि जब मलिका का प्रचार होगा, तब सभी भक्त भगवान के बारे में जान जाएँगे, और उसके बाद भगवान और उनके भक्तों का मिलन होगा। जब सभी भक्त एकत्र हो जाएँगे, तब कलियुग का विनाश आरंभ होगा। हम इस समय उसी दौर में हैं। यह प्रक्रिया दिन-प्रतिदिन तीव्र होती जाएगी, और धीरे-धीरे आप सब सब कुछ समझ जाएँगे। मेरे कहने की आवश्यकता नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:15 · 6 जून 2021

सत्र 3 · प्रश्न 33–60

L3 कलियुग के अंत का संकेत देवी - देवताओं के मंदिरों से, LIVE by pandit kashinath Mishra

दिनांक: 13 जून 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 33 कुछ लोगों और सज्जनों का यह प्रश्न है: यदि महाप्रलय आने वाला है, तो नौकरी की क्या आवश्यकता है? रोज़गार की क्या आवश्यकता है? पैसा बचाने की क्या आवश्यकता है? और इस संसार में विवाह करने की क्या आवश्यकता है?

उत्तर: मैं आपको एक बात बताऊँगा: सूर्य निरंतर उदय और अस्त होता रहता है। महाभारत युद्ध के समय जो लोग युद्ध कर रहे थे, वे भी भोजन करते थे और फिर युद्ध करते थे। धर्म की स्थापना अपने मार्ग पर चलती रहेगी, लेकिन मानव समाज में वेदों और सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार जो कर्म का प्रवाह है, उसे कोई नहीं रोक सकता। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों (कर्म) का भलीभाँति पालन कीजिए। लेकिन मैं एक बात और जोड़ रहा हूँ: अब आध्यात्मिक कर्म आरंभ होगा। तो जब तक वह समय आए, अपना काम कीजिए, नौकरी कीजिए, इस कलियुग समाज की मर्यादाओं के अनुसार जो भी आवश्यक है, वह कीजिए। उन्हें अच्छी तरह निभाइए और अपने कर्तव्यों में कोई संदेह मत रखिए। अपना काम कीजिए। रोज़गार, शिक्षा और पारिवारिक संबंधों जैसे अपने सामाजिक कर्तव्यों की उपेक्षा मत कीजिए। और अत्यधिक आधुनिकता से थोड़ा सावधान रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 07:39 · 13 जून 2021

प्रश्न 34 मेरा एक प्रश्न है, मैं कोलकाता से अभिजीत हूँ। सरकार अभी जो वैक्सीन दे रही है... हम भक्त हैं। अगर हम यह वैक्सीन न लें, तो क्या भगवान भक्तों को इस रोग से बचाएँगे?

उत्तर: मलिका कहती है कि जो भी भगवान की शरण लेता है, शाकाहारी भोजन करता है, और धर्म के मार्ग पर चलता है, उसके लिए यह रोग कुछ भी नहीं है। सरकार के नियमों का पालन कीजिए; उसमें कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 27:00 · 13 जून 2021

प्रश्न 35 मैंने एक प्रवचन में सुना था, शायद आपसे या किसी अन्य पंडित जी से, कि जिस वर्ष चार ग्रहण होंगे, उस वर्ष विश्व युद्ध होगा। वह या तो अपने चरम पर होगा या आरंभ होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि ज्योतिषीय गणना के अनुसार वह कौन-सा वर्ष है?

उत्तर: देखिए, हम मलिका के अनुसार बोलते हैं। मलिका कहती है कि एक ही दिन सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण होगा, एक ही पक्ष में सूर्य और चंद्र ग्रहण होगा, और एक ही वर्ष में चार या पाँच सूर्य और चंद्र ग्रहण होंगे। ग्रहण अमावस्या और पूर्णिमा के दिन पड़ेंगे। ये संकेत युग परिवर्तन के समय प्रकट होंगे। जब एक महीने में चार ग्रहण होंगे, तो वह कलियुग के अंत का लक्षण होगा। विश्व युद्ध भगवान की इच्छा से होगा। एक जगह लिखा है कि जिस दिन कल्कि के 12,000 भक्त एकत्र होंगे, उस दिन विनाश का कार्य तीव्र हो जाएगा। मलिका में यह भी लिखा है कि जिस दिन 13 मुस्लिम देश एकजुट होंगे, उस दिन विश्व युद्ध होगा। तो उस समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 27:53 · 13 जून 2021

प्रश्न 36 क्या कोलकाता पर इतना बड़ा प्रभाव पड़ेगा? क्या वह नक्शे से मिट जाएगा?

उत्तर: भगवान के भक्तों के लिए, जो भगवान कल्कि से जुड़े हैं, कोई समस्या नहीं होगी। उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। फिर भी, सरकार के नियमों का पालन कीजिए। भगवान को इस पर कोई आपत्ति नहीं है। भगवान कहते हैं, 'अध्यात्म के मार्ग पर चलो और सत्कर्म करो।' हमारे लिए दोनों आवश्यक हैं। और अपने सामाजिक तथा सांसारिक कर्तव्य भी निभाइए।

► यह उत्तर सुनें · 31:19 · 13 जून 2021

प्रश्न 37 प्रभु जी, जैसा कि हम मलिका के अनुसार मानते हैं कि कोरोना भगवान के क्रोध का एक रूप है, लेकिन दुनिया मानती है कि इसे चीन ने शुरू किया। तो क्या यह मानव-निर्मित था?

उत्तर: चीन देश अपनी मुसीबतें स्वयं बुलाता है। मलिका में लिखा है कि चीन को अपने ही कर्मों के कारण महाविनाश का सामना करना पड़ेगा। कोई भी रोग बिना कारण नहीं फैल सकता; वह किसी माध्यम से ही होता है। लेकिन चीन के विषय में मैं आपको बताऊँगा कि मलिका में क्या है और भगवान कल्कि का क्या निर्देश है: चीन में इतना भीषण भूकंप आएगा, और प्रकृति के पंचतत्व ऐसा कहर बरपाएँगे कि चीन पूरी तरह तबाह हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:58 · 13 जून 2021

प्रश्न 38 मैं अहमदाबाद, गुजरात से हूँ। तीन वर्ष पहले मैं द्वारका गया था और मुझे एक आध्यात्मिक अनुभव हुआ। मैंने सच्चिदानंद की उपस्थिति महसूस की, आँखें बंद करके मंदिर के बाहर देवता की मूर्ति देखी, और जैसे ही मैंने तुलसी की माला की इच्छा की, एक रहस्यमयी महिला से मुझे तुलसी की मालाएँ मिल गईं। इस अनुभव के पीछे क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, यह भगवान का संकेत था कि आपको मलिका तक लाया जाए। भगवान की ऐसी कृपा के बिना आप मलिका से क्यों जुड़ते? जो भक्त गोपियाँ और गोप थे, वही ऐसी दिव्य घटनाओं का अनुभव करते हैं, और वही मलिका तक आएँगे, सनातन धर्म के लिए कार्य करेंगे, और भगवान कल्कि से जुड़ेंगे। आपको जो यह अनुभव हुआ, वह भगवान द्वारा आपको आपके पूर्व जन्म के संस्कार और सत्कर्मों की याद दिलाना था। उसी पूर्व संबंध के कारण अब आप हमसे जुड़े हैं। यह आपके कर्मों और पूर्व जन्म के सत्कर्मों का फल है।

► यह उत्तर सुनें · 33:51 · 13 जून 2021

प्रश्न 39 पंडित जी, हम आपसे जुड़े हैं, मलिका का अनुसरण कर रहे हैं, और भगवान का नाम जप रहे हैं। लेकिन हम अपने प्रियजनों, मित्रों और परिवार को इस मार्ग से जोड़ने का प्रयास कैसे करें? आज के समय में बहुत-से लोगों की धार्मिक कार्यों में रुचि नहीं है और वे कलियुग के सांसारिक तथा धन-संबंधी मोह-माया में गहरे उलझे हुए हैं। हम उन्हें कैसे जोड़ें?

उत्तर: हमारा सबसे बड़ा संबंधी भगवान है। मलिका कहती है कि एक परिवार में सभी लोग भगवान कल्कि के भक्त नहीं बनेंगे। केवल वे ही भक्त बनेंगे जो खोजेंगे और शरण लेंगे। जो नहीं लेंगे, वे नहीं बनेंगे। सभी जीवित नहीं बचेंगे। दुनिया की 75% जनसंख्या नष्ट हो जाएगी; केवल 25% ही बचेगी। इसलिए अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते रहिए, और जो आना चाहते हैं, उन्हें श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान की शरण में लाने का प्रयास कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:34 · 13 जून 2021

प्रश्न 40 पंडित जी, आपके यूट्यूब चैनल के वीडियो में हमें कुल 16 में से 7-8 मंडलों (क्षेत्रों) की जानकारी मिली है। क्या आप कृपया नए जुड़े लोगों के लिए सभी 16 मंडलों की जानकारी दे सकते हैं?

उत्तर: 16 मंडल होंगे। तीन ओडिशा में होंगे: जगन्नाथ मंदिर क्षेत्र, भुवनेश्वर (ओडिशा की राजधानी) में लिंगराज मंदिर क्षेत्र, और बिरजा मंदिर क्षेत्र। चौथा कोलकाता में होगा, जो काली मंदिर के आसपास केंद्रित होगा। अन्य में रामेश्वरम धाम, वृंदावन-मथुरा, उज्जैन, काशी, गुजरात में द्वारकाधीश (भगवान कृष्ण की लीलाभूमि), कामाख्या मंदिर, और रतनपुर शामिल हैं। एक मंडल दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान को मिलाकर भी होगा। सच्चिदानंद ने लिखा है कि ये 16 मंडल धरती पर स्थापित होंगे, और वे धर्म स्थापना का कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 39:11 · 13 जून 2021

प्रश्न 41 पंडित जी, क्या मैं ओड़िया में कुछ पूछ सकता हूँ?

उत्तर: (व्यक्ति के ओड़िया में पूछना शुरू करने पर अप्रत्यक्ष रूप से अनुमति प्रदान करते हैं।)

► यह उत्तर सुनें · 41:35 · 13 जून 2021

प्रश्न 42 (ओड़िया में, अनूदित) मैं महापुरुष अच्युतानंद दास और रामचंद्र दास के बारे में पूछना चाहता हूँ। क्या उनके लेखन और कीर्तन प्रामाणिक हैं?

उत्तर: (ओड़िया में, अनूदित) मुझे उनके समय की तिथियाँ ज्ञात नहीं हैं। उन्होंने भागवत लिखा है। आपको भागवत पढ़ना चाहिए; वह बहुत अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:50 · 13 जून 2021

प्रश्न 43 भगवान कल्कि की शरण में जाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: सबसे पहले, आपको मालिका के मार्ग का अनुसरण करना होगा। हर घर के हर सदस्य को इसे पढ़ना चाहिए। शाकाहारी भोजन करें। भगवान कल्कि का अनुसरण करें। मालिका का अनुसरण करने से आपको कोई समस्या नहीं होगी, क्योंकि मालिका ही संसार का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो भगवान तक पहुँचने का माध्यम है। इसका अनुसरण कीजिए, और धीरे-धीरे आप भगवान तक पहुँच जाएँगे। आपको मेरी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

► यह उत्तर सुनें · 43:41 · 13 जून 2021

प्रश्न 44 हरे कृष्ण, पंडित जी। आप भविष्य मालिका और भगवान कल्कि के इस दिव्य कार्य से कैसे जुड़े? कृपया हमें इसके बारे में बताइए।

उत्तर: जैसे कोई नहीं जानता कि नदी कौन-सा मार्ग लेगी, वैसे ही कोई नहीं जानता कि किसी व्यक्ति का मार्ग कैसे खुलता है। मुझे 19 वर्ष की आयु में गुरु मंत्र प्राप्त हुआ था। आज मैं यह कार्य अपने गुरु के आशीर्वाद और प्रेरणा से कर रहा हूँ। भगवान के निर्देश आंतरिक होते हैं। मैंने 10 वर्ष पहले यूट्यूब पर मालिका का प्रचार करने का प्रयास किया था, परंतु सफल नहीं हुआ। जब मैंने दो वर्ष पहले फिर से आरंभ किया, तो जिस दिन हमने यूट्यूब का कार्य शुरू किया, मैं और मेरे सहयोगी इतने बीमार पड़ गए कि लगा जैसे प्राण शरीर से निकल रहे हों। ऐसी कई बाधाओं के बाद, अब हम भगवान के आदेश से मालिका का प्रचार कर रहे हैं। मालिका 'मृतसंजीवनी' नामक जीवनदायिनी बूटी के समान है। यदि आप इसके मार्ग पर चलेंगे, तो 90 वर्ष का व्यक्ति भी वेंटिलेटर से बाहर आ सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 44:38 · 13 जून 2021

प्रश्न 45 पंडित जी, आपने चैतन्य महाप्रभु का उल्लेख किया, जिन्होंने हरे कृष्ण महामंत्र दिया। मैं पूछना चाहता हूँ, धर्म की स्थापना में क्या इस्कॉन की भी कोई भूमिका होगी? उनकी क्या भूमिका होगी?

उत्तर: इस्कॉन (इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस) भगवान श्रीकृष्ण के संदेश का प्रचार करता है। हालाँकि, मुझे एक समस्या दिखती है, और यह मेरा व्यक्तिगत मत है। ओड़िया भागवत और संस्कृत भागवत के 12वें स्कंध में कल्कि अवतार का स्पष्ट उल्लेख है। परंतु भागवत का जो संस्करण इस्कॉन उपयोग करता है, उसमें यह नहीं है। इसलिए मुझे नहीं पता कि उनके अनुयायी भगवान कल्कि तक पहुँच सकते हैं या नहीं। परंतु एक बात निश्चित है: कृष्ण के नाम का जप करने से वे निश्चय ही भगवान की शरण में जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:47 · 13 जून 2021

प्रश्न 46 (बंगाली/हिंदी में) मैंने मालिका में कोलकाता के सियालदह स्टेशन पर एक ट्रेन इंजन की भविष्यवाणी के बारे में पढ़ा, जो 'छतिया धाम' नामक स्थान तक जाएगा। यह भविष्यवाणी क्या है?

उत्तर: जब अंग्रेजों ने पहला भाप इंजन बनाया, तो उनमें से एक इंजन सियालदह स्टेशन पर बिना ड्राइवर के अपने आप चल पड़ता था। इसलिए उन्होंने उसे वहीं जंजीरों से बाँध दिया। एक समय आएगा जब 16 मंडलों के भक्त एकत्र होंगे, और भगवान कल्कि भी वहाँ होंगे। उसके बाद, जब मुसलमान जगन्नाथ मंदिर पर आक्रमण करेंगे, तो विग्रहों को स्थानांतरित करना पड़ेगा। उस क्षण, सियालदह का वह ट्रेन इंजन अपने आप अपनी जंजीरें तोड़ देगा और जगन्नाथ मंदिर क्षेत्र तक जाएगा, क्योंकि अब सीधी रेलवे लाइन स्थापित हो चुकी है। जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के विग्रह उस पर रखे जाएँगे, और वह 'छतिया' नामक स्थान की ओर चलेगा। 'बैंची' नामक स्टेशन से पहले इंजन खराब हो जाएगा। वहाँ से भक्त विग्रहों को अपने कंधों पर उठाकर छतिया ले जाएँगे। इस दौरान भगवान कल्कि अपने मानव रूप में बिरजा क्षेत्र (जाजपुर) में होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:41 · 13 जून 2021

प्रश्न 47 नमस्ते, सरकार जो वैक्सीन दे रही है, उसके बारे में — हमें लेनी चाहिए या नहीं? यदि नहीं लें, तो क्या भगवान भक्तों को इस बीमारी से बचाएँगे?

उत्तर: मालिका कहती है कि जो कोई भगवान की शरण लेता है, शाकाहारी भोजन करता है, और धर्म के मार्ग पर चलता है, उसके लिए यह बीमारी कुछ भी नहीं है। सरकार के नियमों का पालन कीजिए; उसमें कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 59:05 · 13 जून 2021

प्रश्न 48 मैं पूछना चाहता हूँ, ट्रेन की भविष्यवाणी के संबंध में — 500 वर्ष पहले मालिका में यह कैसे लिखा गया, जब ट्रेन का इंजन बना ही नहीं था और रेलवे लाइन थी ही नहीं?

उत्तर: मालिका सत्य पर आधारित है और भगवान श्रीकृष्ण का वचन है। बस देखिए, मालिका का एक-एक शब्द सत्य हो रहा है। इसमें कोरोना के बारे में लिखा था, और इसमें सात और बीमारियों के बारे में भी लिखा है जो आने वाली हैं। ये बीमारियाँ भी लोगों को प्रभावित करेंगी। परंतु भक्तों के लिए समाधान यही है कि भगवान के नाम का जप करें और धर्म के मार्ग पर बने रहें। मानवता के लिए, मालिका का अनुसरण कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:01 · 13 जून 2021

प्रश्न 49 पंडित जी, हमें भगवान कल्कि का नाम ठीक-ठीक किस प्रकार स्मरण और जप करना चाहिए?

उत्तर: सबसे पहले, आपको मालिका का अनुसरण करना होगा। दूसरा, श्रीमद्भागवतम् पढ़िए। और भगवान कल्कि तथा मालिका के संदेश का संसार में प्रचार कीजिए — यही सबसे बड़ा धर्म है। कुछ भक्त हैं जो भारत में और पूरे विश्व में सत्संग करते हैं; उनसे जुड़िए और मिलकर कार्य कीजिए। सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:33 · 13 जून 2021

प्रश्न 50 मैं जौनपुर, यूपी से हूँ। मैं 13 वर्ष की आयु से भक्ति के मार्ग पर हूँ। मैं पूछ रहा हूँ, यूपी में कौन-से मंडल होंगे? साथ ही, मंदिर और मठ तोड़े जा रहे हैं; इसका क्या प्रभाव है?

उत्तर: देखिए, मंदिरों और मठों का ध्वंस कलियुग के अंत का संकेत है। कलि सत्य को टिकने नहीं देगा, इसलिए यह स्थिति पूरे संसार में व्याप्त है। जहाँ तक उत्तर प्रदेश की बात है, यह बहुत बड़ी और दिव्य भूमि है। मथुरा-वृंदावन मंडल यूपी में है। अयोध्या भी निश्चित रूप से एक मंडल होगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:17 · 13 जून 2021

प्रश्न 51 नए युग में सूर्यवंशी राजा मरु और देवापि की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: जब भगवान कल्कि विश्व पर शासन करेंगे, तब वे उन दो राजाओं को राज्य सौंपेंगे जो त्रेता और द्वापर युग से तपस्या में हैं। राजा मरु को अयोध्या का सिंहासन दिया जाएगा, और राजा देवापि को हस्तिनापुर (दिल्ली) का सिंहासन दिया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:06 · 13 जून 2021

प्रश्न 52 पंडित जी, बहुत समय से मैं पूर्ण रूप से शाकाहारी बनना चाहता हूँ और मांसाहार छोड़ना चाहता हूँ। लेकिन जब भी वह मेरे सामने आता है, मैं स्वयं को रोक नहीं पाता और खा लेता हूँ। इस आदत से छुटकारा पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: श्रीमद्भागवत पढ़िए। और भागवत शुरू करने से पहले, सबसे पहले 'गोपी लीला' (गोपियों की दिव्य लीलाएँ) पढ़िए। उसे पढ़ने के बाद आपको उसे खाने की इच्छा ही नहीं होगी। यही मैं कहूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:59 · 13 जून 2021

प्रश्न 53 पंडित जी, मैं इंदौर से हूँ। मेरा एक अच्छा मित्र है जो भगवान को मानता है लेकिन बहुत तर्क-वितर्क करता है। वह कभी-कभी शराब पीता है और अंडा तथा मछली खाता है, और तर्क देता है कि अंडा मांसाहार नहीं है और शराब जौ से बनती है, इसलिए उसमें कोई हानि नहीं है, और यह भी कहता है कि भगवान भैरव भी इसका सेवन करते हैं। ऐसे लोगों को सही मार्ग पर कैसे लाया जाए?

उत्तर: अंडा मांसाहार है; यह पाप है। लिखा है कि सच्चा भक्त इसे एक बार सुनते ही बदल जाएगा। जो नहीं बदलता, वह भक्त नहीं है; उसमें आसुरी प्रवृत्ति है। उन्हें बार-बार बताना आवश्यक नहीं है। सच्चे भक्त को मालिका सुनते ही शरीर में कंपन का अनुभव होगा। जिनमें श्रद्धा नहीं है, जो तर्क करते हैं और प्रति-प्रश्न पूछते हैं, उनका मालिका में कोई स्थान नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:58 · 13 जून 2021

प्रश्न 54 जय जगन्नाथ, पंडित जी। मैं यह कह रहा था कि योगी आदित्यनाथ जी और मोदी जी कोई दिव्य आत्माएँ तो नहीं हैं, है ना?

उत्तर: नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। जब धर्म की स्थापना होगी, तब सनातन धर्म पूरे विश्व में स्थापित होगा। जब भगवान कल्कि शासन का भार संभालेंगे, तब दो राजा, मरु और देवापि, जो इस समय तपस्या में हैं, भारत के लिए चीन के विरुद्ध युद्ध करेंगे। युद्ध के बाद भगवान कल्कि उन्हें क्रमशः अयोध्या और हस्तिनापुर के शासक के रूप में स्थापित करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:35 · 13 जून 2021

प्रश्न 55 मुझे एक प्रश्न पूछना है। मालिका में एक संकेत दिया गया है कि किसी विशेष महीने में एक बड़ी घटना (जैसे विश्व युद्ध) होगी। किस महीने की बात की जा रही है?

उत्तर: देखिए, माना जाता है कि धर्म की स्थापना लगभग 2026 में शुरू होगी। यह कार्य 2023 से 2031 तक चलेगा। इस अवधि में विश्व युद्ध, आपदाएँ और महामारियाँ होंगी। यह सब होगा। आप इसे होते हुए देख ही रहे हैं। सटीक समय भगवान तय करेंगे। कुछ समय मालिका में बताए गए हैं, लेकिन उन्हें पहले से प्रकट करना मेरे लिए उचित नहीं है क्योंकि यह भगवान की योजना है।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:23 · 13 जून 2021

प्रश्न 56 पंडित जी, मैं कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई कर रहा हूँ। भविष्य में तो सब कुछ नष्ट होने वाला है। तो क्या मुझे यह शिक्षा जारी रखनी चाहिए, या कुछ और पढ़ना चाहिए?

उत्तर: मन ही मन भगवान का नाम जपिए। कम से कम एक घंटा श्रीमद्भागवत पढ़िए। भगवान का काम कीजिए और अपना काम (कर्म) भी कीजिए। जैसे हम खाते हैं, पीते हैं और अपने दैनिक कार्य करते हैं, वैसे ही इस युग में शिक्षा भी जीवन का एक हिस्सा है। शिक्षा तो लेनी ही होगी। इसलिए अपनी पढ़ाई जारी रखिए, और साथ ही उस मार्ग पर चलिए जो मैं आपको बता रहा हूँ। यह आने वाले समय में काम आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:55 · 13 जून 2021

प्रश्न 57 मालिका के अनुसार, हनुमान जी और अन्य चिरंजीवियों (अमर जनों) जैसे विभीषण और अश्वत्थामा का क्या योगदान होगा?

उत्तर: मालिका में विभीषण, हनुमान और अश्वत्थामा का उल्लेख है। हनुमान भगवान कल्कि के रथ पर उपस्थित रहेंगे। खंड प्रलय (आंशिक प्रलय) के समय, बद्रीनाथ से लेकर कोलकाता में गंगा के तट तक के क्षेत्र में भक्तों को बचाने का दायित्व हनुमान जी का होगा। वे भगवान कल्कि के निर्देश पर कार्य करेंगे। धर्म की स्थापना के बाद, हनुमान और अन्य लोग भगवान विष्णु (कल्कि) के शरीर में विलीन हो जाएँगे। ऐसा लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:36 · 13 जून 2021

प्रश्न 58 क्या चाय को भी नशीला पदार्थ माना जाए?

उत्तर: हाँ, यह सच है। [सत्ययुग में] चाय का सेवन नहीं होगा। अभी आप पी सकते हैं, लेकिन बिना मसाले के। मंदिरों में जो हर्बल चाय दी जाती है, वैसी ली जा सकती है। लेकिन जो व्यावसायिक चाय बाजार में मिलती है, वह आपके लिए अच्छी नहीं है। पांडव भी एक विशेष पेय का नशे के रूप में सेवन करते थे।

► यह उत्तर सुनें · 01:13:51 · 13 जून 2021

प्रश्न 59 पंडित जी, जब सत्ययुग (सत्य का युग) आएगा, तब लोगों का व्यवसाय या काम क्या होगा? जब तकनीक नहीं होगी, तो लोग जीविका कैसे कमाएँगे?

उत्तर: तकनीक कहीं अधिक विकसित और शांतिपूर्ण होगी। वह आनंद और सुख का समय होगा, अभी से कहीं बेहतर। कोई हानिकारक वस्तु नहीं होगी। तकनीक इतनी उन्नत होगी, मंत्र शक्ति पर आधारित, कि मनुष्य सूर्य तक भी यात्रा कर सकेंगे, या ब्रह्मांड में कहीं भी—स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल। लोग एक महीने काम करेंगे, और धान तथा गेहूँ की फसल इतनी प्रचुर होगी कि उसे खा पाना कठिन होगा। मालिका में लिखा है कि 30 दिनों के भीतर फसल तैयार हो जाएगी और धरती इतना उपजाएगी कि उसे खा पाना मुश्किल होगा। कोई गरीबी नहीं होगी, न अमीर होगा न गरीब। सबके पास अच्छे घर, भोजन, वस्त्र और अच्छा वातावरण होगा। डॉक्टरों या अस्पतालों की कोई आवश्यकता नहीं होगी। वह बड़े आनंद का समय होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:54 · 13 जून 2021

प्रश्न 60 पंडित जी, कहा जाता है कि व्यक्ति को अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग या नरक मिलता है। ये स्थान कहाँ स्थित हैं?

उत्तर: पृथ्वी के विषुवत मंडल (वैषुव मंडल) के ऊपर स्वर्गपुरी (स्वर्ग) है। नीचे मर्त्य (मृत्युलोक) है, और उसके नीचे पाताल (पाताल लोक) है। ये तीन लोक हैं: स्वर्ग, मर्त्य और पाताल। अच्छे कर्म करने से व्यक्ति स्वर्ग जाता है और बुरे कर्म करने से नरक जाता है। गोपियों की तरह भगवान के अत्यंत निकट होकर, व्यक्ति भगवान के परमधाम को प्राप्त कर सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:17:07 · 13 जून 2021

सत्र 4 · प्रश्न 61–95

L4 कल्कि भगवान के साथ भेट करने का मार्ग, LIVE by pandit kashinath Mishra

दिनांक: 19 जून 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 61 भगवान का स्वरूप कैसा है?

उत्तर: एक छोटे बच्चे को उनके दर्शन होना भगवान का आशीर्वाद है। बहुत अच्छा है, बाबा। इतने कम समय में भगवान के दर्शन हो जाना, आप बहुत भाग्यशाली हैं। यह भगवान की कृपा है।

► यह उत्तर सुनें · 15:56 · 19 जून 2021

प्रश्न 62 पंडित जी, मैं राम कुमार शर्मा हूँ। मैंने मांसाहार छोड़ दिया है। कृपया मेरी पत्नी को भी इस मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: आपको अपने पति के धर्म (सन्मार्ग) में उनका साथ देना चाहिए। पति के धर्म और सिद्धांतों के मार्ग पर चलना पत्नी का कर्तव्य है। आपको भी इसी मार्ग पर चलना चाहिए। यह आपके ही हित में होगा, क्योंकि युग समाप्त हो रहा है, और इस समय धर्म से बड़ा कुछ भी नहीं है। यदि आप अपने परिवार को बचाना और आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ना चाहती हैं, तो आपको अपनी इंद्रियों पर शासन करने वाला बनना चाहिए, प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ करना चाहिए, और अपने पति तथा मालिका — दोनों का अनुसरण करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:47 · 19 जून 2021

प्रश्न 63 मैं शुभम तिवारी हूँ। क्या आप हमें भगवान कल्कि की पुस्तक या शास्त्रों के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: भगवान व्यास ने संस्कृत भागवत पुराण में कल्कि अवतार के बारे में लिखा है। उसमें कहा गया है कि भगवान कल्कि तब प्रकट होंगे जब संसार के शासक डाकुओं की तरह व्यवहार करेंगे, अपनी प्रजा का शोषण करेंगे, जब शासक विलासिता में जिएँगे और प्रजा कष्ट भोगेगी, और जब दुख और रोग फैलेंगे। जब राजाओं का शासन भ्रष्ट, अन्यायपूर्ण और लूट से भरा हो जाएगा, तब कल्कि अवतार लेंगे। आज संसार में यही स्थिति है, इसलिए भगवान पहले ही अवतार ले चुके हैं। श्रीमद्भागवत ने इसके बारे में पहले ही लिख दिया था। इस युग में महापुरुष अच्युतानंद, जो भगवान कृष्ण के मित्र सुदामा थे, उन्होंने भगवान कल्कि के विषय में भविष्य मालिका लिखी है। जब मालिका का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार होगा, तब भक्त भगवान को पहचानेंगे और उनका संदेश प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 21:33 · 19 जून 2021

प्रश्न 64 पंडित जी, मेरा प्रश्न रामचरितमानस के सुंदरकांड के बारे में है। हाल ही में लोगों को पन्नों के भीतर एक छोटा-सा बाल मिलने लगा है। पहले ऐसा नहीं होता था; यह तब शुरू हुआ जब भारत में कोरोना आया और जब जगन्नाथ मंदिर का ध्वज फटा। इस संकेत का क्या अर्थ है? क्या यह कलियुग के अंत या विनाश का संकेत है?

उत्तर: यह बहुत ही शुभ और पवित्र संकेत है। भगवान राम कल्कि-राम के रूप में आएँगे; यह मालिका में लिखा है। जब वे राष्ट्र के प्रमुख बनेंगे, तब उनके नाम के साथ 'राम' नाम जुड़ा होगा। संत तुलसीदास जी का ग्रंथ हमारा पवित्र ग्रंथ है, और उसमें इस संकेत का प्रकट होना धर्म की स्थापना और युग के अंत का संकेत है। यह सबसे बड़ा संकेत है, और यह सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। तुलसीदास जी ने भी कलियुग के अंत के संकेतों के बारे में लिखा था, कि भाई बहनों के साथ अपने संबंध की पवित्रता का उल्लंघन करेंगे, लोग छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे की हत्या करेंगे, और अधर्म का बोलबाला होगा। उन्होंने यह भगवान हनुमान और भगवान राम की आज्ञा से लिखा था। आज उनके ग्रंथ में इस संकेत का प्रकट होना विनाश का संकेत है, जो लोगों से कह रहा है कि सावधान हो जाओ। भारत के सभी राम-भक्तों को सतर्क हो जाना चाहिए, क्योंकि भगवान राम यह पवित्र संकेत दे रहे हैं: 'देखो, स्वयं को बदलो। मैंने अपने हिंदू धर्म की स्थापना के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया है।' जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:01 · 19 जून 2021

प्रश्न 65 मालिका में हनुमान जी के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: मालिका कहती है कि पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) द्वारा होने वाले महाविनाश के समय, भगवान हनुमान गंगोत्री-यमुनोत्री से लेकर कोलकाता तक के क्षेत्र से भक्तों को उठाकर भगवान कल्कि के समक्ष लाएँगे। मूल 12,000 भक्त सबसे पहले भगवान कल्कि तक पहुँचेंगे। किंतु जो अन्य भक्त प्रलय — भूकंप, बाढ़, आकाश से अग्नि — के समय पीछे छूट जाएँगे, वे भगवान के नाम-जप से सुरक्षित रहेंगे। हनुमान जी इन सभी भक्तों को बचाकर सुधर्मा सभा (दिव्य सभा) में लाएँगे। उस सभा में सभी देवता, ऋषि और नित्य भक्त उपस्थित रहेंगे, और भगवान कल्कि सनातन नियमों की स्थापना करेंगे। हनुमान जी दुष्ट शक्तियों के विनाश में भी सहायता करेंगे, अपने नेत्रों की अग्नि से शत्रु-सेनाओं को भस्म कर देंगे। वे धर्म की स्थापना और भक्तों की रक्षा में भगवान कल्कि की पूर्ण सहायता करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:33 · 19 जून 2021

प्रश्न 66 मैं बेंगलुरु से आशीष हूँ। आपने 16 सुरक्षित क्षेत्रों (मंडलों) के लिए उत्तर भारत के स्थानों के नाम बताए थे। क्या दक्षिण भारत में भी कोई होगा?

उत्तर: हाँ, जिस स्थान पर भगवान राम ने रामेश्वरम की स्थापना की थी, वही मंडल दक्षिण का संचालन करेगा। जैसे भारत में राज्य हैं, वैसे ही 16 मंडल होंगे। उनका केंद्र-बिंदु, संयुक्त राष्ट्र की तरह, ओडिशा के जाजपुर क्षेत्र में होगा, जो सम्पूर्ण विश्व का केंद्र होगा। रामेश्वरम मंडल दक्षिण का संचालन करेगा। उस युग में टेलीविजन या नेटवर्क की कोई आवश्यकता नहीं होगी। भक्तों के पास दिव्य दृष्टि और आध्यात्मिक शक्ति होगी। एक समय ऐसा आएगा जब भगवान को प्रसन्न करके लोग उड़ सकेंगे और विमानों में यात्रा कर सकेंगे। जैसे-जैसे आध्यात्मिकता बढ़ेगी, मनुष्य की शक्ति भी बढ़ेगी। उत्तर और दक्षिण दोनों में बहुत से भक्त हैं, और वे सब भगवान के भक्तों से मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:56 · 19 जून 2021

प्रश्न 67 मेरा प्रश्न समय-क्रम के बारे में है। कलियुग के अंत में कल्कि का समय आएगा। सत्ययुग के आरंभ से पहले कल्कि का 'अनंत युग' नामक कुछ होता है। इसमें कितना समय का अंतर है और इस बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: कलियुग के 5,000 वर्षों के बाद उसका 'संध्या' काल आरंभ होता है, जिसके दौरान भगवान कल्कि अवतार लेते हैं। धर्म की स्थापना के बाद, भगवान कल्कि, कल्कि-राम के रूप में, 'रामराज्य' (राम का धर्ममय राज्य) स्थापित करेंगे और 1,009 वर्षों तक विश्व पर शासन करेंगे। यही काल 'अनंत युग' या 'संगम युग' है। इन 1,009 वर्षों के बाद अनंत युग समाप्त हो जाएगा, और वास्तविक सत्ययुग आरंभ होगा। यह सत्ययुग कितने समय तक चलेगा, यह हम नहीं जानते; भगवान ही निर्णय करेंगे। अनंत युग 1,009 वर्षों तक चलेगा, और भगवान कल्कि के साथ रहने वाले सभी भक्तों की तथा महाविनाश से बचे 64 करोड़ लोगों की आयु 1,009 वर्ष होगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:20 · 19 जून 2021

प्रश्न 68 नमस्ते, पंडित जी। मैं पूछना चाहता हूँ, क्या भगवान कल्कि विवाह करेंगे?

उत्तर: हाँ, जब भगवान अवतार लेकर आते हैं, तो वे लौकिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। इस युग में भगवान कल्कि की एक पत्नी होगी। वह माता लक्ष्मी और माता वैष्णो देवी की शक्ति का संयुक्त अवतार होंगी। वे उनसे विवाह करेंगे और उनकी केवल एक ही पत्नी होगी, क्योंकि वे भगवान राम हैं। संतान के विषय में, कुछ बातें शास्त्रों में उल्लिखित हैं, किंतु अंततः कुछ निर्णय स्वयं भगवान ही लेते हैं। इस विषय पर निश्चित रूप से कुछ कहना हमारे सामर्थ्य में नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 40:38 · 19 जून 2021

प्रश्न 69 मैं उत्तर प्रदेश से श्वेता हूँ। कुछ वर्षों से मेरा परिवार अधिक आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन की ओर बढ़ रहा है। क्या यह शुभ संकेत है? दूसरा, भविष्य में हमें अपना आचरण कैसा रखना चाहिए? हम शुद्ध शाकाहारी हैं, फिर भी प्याज-लहसुन का सेवन करते हैं। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: सबसे पहले, प्याज-लहसुन के विषय में — इन्हें खाना किसी जीव की हत्या के समान नहीं है, क्योंकि ये धरती माता से उत्पन्न होते हैं। किंतु इन्हें 'उत्तेजक' आहार माना जाता है जो शरीर में गर्मी उत्पन्न करते हैं, यद्यपि ये पूर्णतः तामसिक (अशुद्ध) नहीं हैं। जब तक कलियुग रहेगा, यदि आप इन्हें छोड़ नहीं सकतीं तो यह कोई बड़ी बात नहीं है; यह आदत युग के साथ ही समाप्त हो जाएगी। दूसरा, यह उत्तम संकेत है कि आपका परिवार धर्म की ओर बढ़ रहा है। इस संसार में सबसे बड़ा धन धर्म ही है। जिसके पास धर्म है, वही सबसे सुखी है। मैं सभी को यही सलाह देता हूँ कि गौ माता की सेवा करें, छोटे जीवों को आहार दें, निर्धनों को दान दें, श्रीमद्भागवत का पाठ करें, शाकाहारी रहें, और भगवान कल्कि के नाम का जप करते हुए उनकी शरण लें। इससे आपका जीवन अमर हो जाएगा और आपकी रक्षा होगी। आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपका परिवार इस धर्ममय मार्ग पर एकजुट है।

► यह उत्तर सुनें · 42:08 · 19 जून 2021

प्रश्न 70 कल रात मुझे एक भयावह अनुभव हुआ। मैंने एक गलियारे में एक बहुत ही उग्र देवी का दर्शन किया। उनका शरीर काला था, हड्डियाँ दिख रही थीं, और बाल कमर तक थे। मैं बहुत डर गया और मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वह क्या था?

उत्तर: आपको माता महामाया के दर्शन हुए, जो माता काली का ही एक स्वरूप हैं। पर्दे के पीछे जो धर्म की स्थापना हो रही है, उसका नेतृत्व दिव्य माता महामाया कर रही हैं। अच्युतानंद ने उनके उग्र स्वरूप के बारे में लिखा है। चूँकि आप भगवान कल्कि के भक्त हैं, इसलिए वे आपको कोई हानि नहीं पहुँचाएँगी। वे इस समय हर घर में जा रही हैं, यह चुनते हुए कि आने वाले समय में किन घरों का विनाश करना है। लिखा है कि वे रोग के रूप में मनुष्य के शरीरों में प्रवेश करेंगी, और किसी का कोई नियंत्रण नहीं रहेगा। किंतु जो लोग भगवान की शरण में हैं, जो उनके नाम का जप करते हैं और मालिका सुनते हैं, उनकी रक्षा होगी। आप भाग्यशाली हैं कि आपको ये दर्शन हुए। माता को प्रणाम कीजिए और सम्मान के प्रतीक के रूप में उनके नाम पर नारियल की जटा जलाकर उसका धूप अर्पित कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:21 · 19 जून 2021

प्रश्न 71 पंडित जी, कृपया मुझे आशीर्वाद दें। मेरी इच्छा है कि भगवान मुझे बहुत जल्द चार अलग-अलग रूपों में दर्शन दें।

उत्तर: माताजी, मालिका सुनिए और उसके आदेश का पालन कीजिए। यदि आप ऐसा करेंगी, तो आपको केवल चार रूपों के ही नहीं, बल्कि सभी अवतारों के दर्शन होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 49:40 · 19 जून 2021

प्रश्न 72 कोलकाता में विनाश कब और किस प्रकार का होगा?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि Kali Yuga में कोलकाता युद्ध से बहुत अधिक प्रभावित होगा। परंतु भक्तों के घरों को कुछ नहीं होगा। सांप्रदायिक समस्याएँ, महामारियाँ और पंचतत्वों द्वारा विनाश (तूफान, बाढ़, भूकंप आदि) होंगे। कोलकाता में एक काली मंडल (माँ काली का आध्यात्मिक शक्ति-वलय) है। जो लोग उससे जुड़े हुए हैं और भगवान Kalki के भक्त हैं, उन्हें कोई हानि नहीं होगी। इन भक्तों को एकजुट करने के लिए ही Bhavishya Malika का प्रचार किया जा रहा है। कोलकाता में एक महाविनाश होगा, मुख्य रूप से युद्ध की अग्नि से और साथ ही प्राकृतिक आपदाओं से भी।

► यह उत्तर सुनें · 50:26 · 19 जून 2021

प्रश्न 73 आपने बताया था कि 13 मुस्लिम राष्ट्र आक्रमण करेंगे। आपने कुछ के नाम लिए थे। और कौन-से देश इसमें शामिल होंगे?

उत्तर: मालिका में उल्लेख है कि तुर्की की प्रमुख भूमिका होगी, साथ ही ईरान और पाकिस्तान की भी। सऊदी अरब और चीन भी शामिल होंगे। इराक का नाम भी आता है। इसके अतिरिक्त 'मिश्र-अफ्रीका' शब्द का प्रयोग हुआ है, जो यह संकेत देता है कि कुछ अफ्रीकी राष्ट्र भी इस गठबंधन का हिस्सा होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:40 · 19 जून 2021

प्रश्न 74 और पंडित जी, इज़राइल किसकी तरफ होगा?

उत्तर: हमने जो शास्त्र पढ़े हैं, उनमें यह विशेष रूप से उल्लेख नहीं है कि इज़राइल किस पक्ष में रहेगा। यह लिखा है कि यहूदियों और मुसलमानों के बीच युद्ध होगा। परंतु जो देश भारत के साथ रहेंगे, उनका स्पष्ट उल्लेख है: रूस, जापान और जर्मनी भारत के साथ होंगे। और अमेरिका भारत के साथ विश्वासघात करेगा। मैं आपको यह निश्चित रूप से कह रहा हूँ, ऐसा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:48 · 19 जून 2021

प्रश्न 75 क्या इटली के बारे में कुछ लिखा है? और रूस भारत का समर्थन किस प्रकार करेगा?

उत्तर: इटली के बारे में लिखा है कि भगवान ने वहाँ अपने भक्तों की पहले ही रक्षा कर ली है। यह संभव है कि द्वितीय विश्व युद्ध में उनके गठबंधन की भाँति, जर्मनी, इटली और जापान इस युद्ध में भारत का समर्थन करें। ग्रंथ कहता है कि इटली में भगवान Kalki के भक्त हैं, और भगवान उनकी रक्षा करेंगे तथा वहाँ Sanatana Dharma की स्थापना करेंगे। मुस्लिम राष्ट्रों के संबंध में, अनेक देश एकजुट होकर आक्रमण करेंगे। यह दैवी योजना का हिस्सा है, ठीक वैसे ही जैसे भगवान कृष्ण ने जरासंध को सभी दुष्ट राजाओं को एक स्थान पर एकत्र करने दिया था, ताकि उन सबका एक साथ संहार हो सके। जब ये राष्ट्र एकजुट होकर आक्रमण करेंगे, तब भगवान उनका विनाश करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 55:49 · 19 जून 2021

प्रश्न 76 ये सभी मुस्लिम देश विशेष रूप से ओडिशा पर ही आक्रमण क्यों करेंगे? क्या उन्हें पता होगा कि भगवान Kalki ने वहीं अवतार लिया है और वे एकजुट होकर उन पर आक्रमण करेंगे?

उत्तर: आपने अच्छी बात कही। युद्ध ओडिशा से आरंभ नहीं होगा। पहले पाकिस्तान के साथ युद्ध होगा, और संघर्ष दिल्ली की ओर से शुरू होकर फिर ओडिशा की ओर बढ़ेगा। परंतु ये सभी मुस्लिम देश, और यहाँ तक कि अमेरिका भी, जानते हैं कि भगवान Kalki ही अवतार हैं। जैसे कंस दैत्य जानता था कि उसका अंत कृष्ण के हाथों होगा, वैसे ही ये Sanatana-विरोधी शक्तियाँ जानती हैं कि Kalki उनका विनाश करने आएँगे। वे हमारे शास्त्रों से जानते हैं कि वे ओडिशा में अवतार लेंगे और वहीं से अपने विनाश के कार्य का आरंभ करेंगे। इसलिए वे निश्चित रूप से ओडिशा आएँगे। मालिका कहती है कि एक दिन 14 लाख मुस्लिम सैनिक ओडिशा में एकत्र होंगे। तब भगवान Kalki अपने सुदर्शन चक्र का प्रयोग करेंगे और उनका संहार करेंगे, और वहीं से उनका महाविनाश का युद्ध आरंभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 57:38 · 19 जून 2021

प्रश्न 77 पंडित जी, मैं जानना चाहता हूँ, क्या हमें Bhavishya Malika हिंदी में मिल सकती है?

उत्तर: मिल सकती है, और हमने उसे हिंदी में प्रकाशित करने का प्रयास भी किया है। परंतु यह भक्तों के लिए भगवान का अमृततुल्य वचन है। मैं नहीं चाहता कि यह कोई व्यावसायिक वस्तु बन जाए, कि लोग इसे हिंदी या अंग्रेज़ी में छापकर इसका व्यापार करें। अमृत बाँटने के लिए होता है, बेचने के लिए नहीं। इसीलिए मैंने यह प्रक्रिया रोक दी है। जब तक मुझे भगवान से प्रत्यक्ष आदेश नहीं मिलता, मैं इसे आगे नहीं बढ़ाऊँगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:55 · 19 जून 2021

प्रश्न 78 मुझे एक प्रश्न पूछना है। जब भी मैं बीमार पड़ता हूँ, मैं भगवान को अर्पित किया हुआ जल पीता हूँ और स्वस्थ हो जाता हूँ। परंतु मेरे स्वप्नों में भगवान बस खड़े रहते हैं। ऐसा कई बार हुआ है। वे मुझे क्या संकेत देना चाहते हैं?

उत्तर: मैं सबके सामने आपके व्यक्तिगत आध्यात्मिक रहस्य प्रकट नहीं कर सकता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि भगवान के साथ आपका पूर्व संबंध है। परंतु इतना अवश्य बता सकता हूँ: आपके घर में एक सत्संग (आध्यात्मिक सभा) होना बाकी है। इसीलिए भगवान आपको यह संकेत दे रहे हैं। आपको उसका प्रबंध करना चाहिए। प्रसाद बनाइए और गरीबों में बाँटिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:39 · 19 जून 2021

प्रश्न 79 एक यूट्यूब चैनल कह रहा था कि कलि नाम के एक दैत्य और Kalki अवतार के बीच युद्ध होगा। क्या Kali Yuga कोई दैत्य है?

उत्तर: ऐसी बातों से भ्रमित मत होइए। इसे ठीक से समझिए: Kali Yuga वर्तमान युग है। जो लोग पाप, हिंसा, मदिरा, जुआ और हत्या में लिप्त रहते हैं, वे कलि के प्रभाव से ग्रस्त हैं। इन लोगों को 'म्लेच्छ' कहा जाता है। भगवान Kalki ने इन म्लेच्छों का संहार करने के लिए अवतार लिया है। कलि नाम का कोई अलग दैत्य नहीं है। मनुष्यों के भीतर की पापवृत्ति ही कलि है। भगवान अनेक माध्यमों से उनका विनाश करेंगे: युद्ध, महामारी, सांप्रदायिक हिंसा, प्राकृतिक आपदाएँ, और अंत में स्वयं प्रमुख दुष्ट नेताओं का नाश करके। वे इसी अधर्म का विनाश करने आए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:04 · 19 जून 2021

प्रश्न 80 आपने सुधर्म महासंघ के सदस्यों के लिए एक ध्वज और एक नाम का उल्लेख किया था। हम उसमें कैसे जुड़ सकते हैं और वह कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर: सुधर्म महासंघ भगवान Kalki के भक्तों से बना है। मालिका का प्रचार विश्व Sanatana Dharma (सार्वभौमिक सनातन धर्म) की स्थापना के लिए है। जो भक्त सच्चे अर्थों में इस मार्ग पर, वेदों और भगवान Kalki के मार्ग पर चलेगा, उसे सुधर्म संघ में लाया जाएगा। इसमें कोई आर्थिक लेन-देन नहीं है। यह कार्य भगवान के आदेश से हो रहा है, धन के लिए नहीं। यह धर्म और जनता की रक्षा का कार्यक्रम है। जो भक्त हमारी व्यवस्था से जुड़ चुके हैं और भगवान के सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीते हैं, उन पर सुधर्म महासंघ के लिए विचार किया जाएगा, परंतु इसके लिए भगवान की अनुमति आवश्यक है। किसी को सम्मिलित करने से पहले हम उसकी भक्ति और दृढ़ता को देखते हैं। स्वीकार किए जाने के बाद, वे अपने घर के सामने ध्वज और भगवान का नाम लगा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:45 · 19 जून 2021

प्रश्न 81 पंडित जी, अगर विश्व युद्ध होता है, तो पूरे भारत में सबसे सुरक्षित स्थान कौन-सा होगा?

उत्तर: भगवान कहते हैं, 'जहाँ मेरे भक्त मेरा गुणगान करते हैं, वहीं मैं निवास करता हूँ।' सबसे सुरक्षित स्थान वही है जहाँ भक्त हैं। सारा संसार युद्धभूमि बन जाएगा, परंतु जो भक्त सनातन धर्म से जुड़े हैं, आप चाहे कहीं भी हों, भगवान अपनी दिव्य शक्ति से आपकी रक्षा करेंगे। आपका कुछ नहीं होगा। पापियों के विनाश के बाद भगवान अपने भक्तों को स्थापित करेंगे। इसलिए भगवान की शरण ही सबसे सुरक्षित स्थान है। कोई विशेष भौगोलिक स्थान सुरक्षित नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:15 · 19 जून 2021

प्रश्न 82 पंडित जी, अगर हम घर बना रहे हैं या संपत्ति में निवेश कर रहे हैं, और अगर सब कुछ नष्ट ही होने वाला है, तो इसका क्या लाभ है?

उत्तर: क्या आप प्रतिदिन भोजन नहीं करते? अगर हम खाते हैं, तो हमें रहने के लिए स्थान भी चाहिए। सामाजिक जीवन का प्रवाह—रोज़गार, निवेश, परिवार—रोका नहीं जा सकता और चलता रहेगा। डरने की कोई बात नहीं है। आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए, परंतु भगवान की शरण में रहें, मालिका का अनुसरण करें, और सनातन धर्म के सिद्धांतों पर जीवन जिएँ ताकि आप स्वयं को सुधर्म संघ के योग्य सिद्ध कर सकें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:13:34 · 19 जून 2021

प्रश्न 83 पहले जो कहा गया, उसके संबंध में—कुछ स्रोत कहते हैं कि कलि एक विशेष राक्षस है, एक 'कलि पुरुष', जो भगवान कल्कि से युद्ध करेगा और इस युग का मुख्य खलनायक है। क्या यह सही है?

उत्तर: मैं बहस नहीं करना चाहता, पर सुनिए: मानवता पहले ही पाप की सारी सीमाएँ पार कर चुकी है। पुत्र पिता की हत्या कर रहे हैं, माताओं से बलात्कार कर रहे हैं; भाई भाइयों की हत्या कर रहे हैं। अब कौन-सा अधर्म शेष है? एक अलग राक्षस इससे अधिक और क्या कर सकता है? जो पापवृत्ति मनुष्य के भीतर प्रवेश कर चुकी है, वही असली कलि है। कोई अलग राक्षस नहीं है। भगवान इसी पापवृत्ति का नाश करने आए हैं। जब 2-3 वर्ष की बच्ची से बलात्कार होता है, तो क्या यह पाप की पराकाष्ठा नहीं है? अगर यह ऐसे ही चलता रहा, तो संसार जीवित नहीं रह सकता। भगवान इसी को समाप्त करने आए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:50 · 19 जून 2021

प्रश्न 84 क्या कल्कि अवतार इस समय 13 वर्ष के हैं और ओडिशा में मनुष्य रूप में हैं?

उत्तर: भगवान जब भी पृथ्वी का भार हरने के लिए अवतार लेते हैं, तब सदैव मनुष्य रूप धारण करते हैं। मालिका में लिखा है कि जब बृहस्पति मीन राशि में प्रवेश करेंगे, तब भगवान अपना रूप प्रकट करेंगे। वे अपना कार्य पूर्ण करने के लिए मनुष्य शरीर धारण करते हैं। धर्म की स्थापना कोई छोटी प्रक्रिया नहीं है; सुधर्म संघ के माध्यम से इसमें 30 वर्ष लगेंगे, उसके बाद उनका शासन स्थापित होगा। यह बालक रूप में संभव नहीं है। इसलिए उन्हें परिपक्व मनुष्य शरीर धारण करना ही होगा, और इसका उल्लेख शास्त्रों में है।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:28 · 19 जून 2021

प्रश्न 85 मेरा प्रश्न यह है कि जब 'म्लेच्छों' (पापी लोगों) का विनाश होगा, तो उनकी आत्माओं का क्या होगा? क्या उनका पुनर्जन्म होगा?

उत्तर: असुर, अपना कर्म समाप्त होने के बाद, फिर से जन्म लेते हैं और अपने कर्मों का चक्र जारी रखते हैं। इस युग में जो लोग अत्याचार कर रहे हैं, उन्हें सम्मानजनक विदाई नहीं मिलेगी। वे अपने अगले जन्मों में भी अपनी दुष्ट प्रवृत्तियाँ जारी रखेंगे और भूत-प्रेत बनकर रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:22:58 · 19 जून 2021

प्रश्न 86 राहुल गांधी के बारे में क्या?

उत्तर: इस संसार में मैंने देखा है कि धर्म सबके पक्ष में नहीं होता। जिनके पास धर्म है, वे भगवान को सबसे प्रिय हैं। आपने जिस व्यक्ति का नाम लिया है, उन पर टिप्पणी करना मुझे उचित नहीं लगता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:24:44 · 19 जून 2021

प्रश्न 87 आपने कहा है कि इस वर्ष एक महायुद्ध होगा। क्या आप इस पर विस्तार से बता सकते हैं?

उत्तर: भगवान कल्कि द्वारा किया जाने वाला विनाश एक बहु-चरणीय प्रक्रिया है। यह युद्ध, महामारी, सांप्रदायिक हिंसा, भूकंप, बाढ़ और आचरण में सामान्य गिरावट के माध्यम से होता है। विनाश की यह प्रक्रिया पहले से ही चल रही है और चलती रहेगी। एक ओर विनाश है, दूसरी ओर भगवान के भक्त एकत्र हो रहे हैं। जब 16 मंडल बन जाएँगे, तब विनाश और तीव्र होगा, जो अंतिम महाविनाश की ओर ले जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:25:47 · 19 जून 2021

प्रश्न 88 मैंने सुना है कि जगन्नाथ मंदिर में श्रीकृष्ण का हृदय है, जिसमें अपार शक्ति है। इसका और भगवान कल्कि का क्या संबंध है?

उत्तर: भगवान जगन्नाथ निराकार भगवान हैं, जैसे श्रीकृष्ण हैं। जो कृष्ण हैं, वही जगन्नाथ हैं। जो दिव्य लीला उन्होंने वृंदावन में की, वह आज भी कर रहे हैं। अच्युतानंद ने लिखा है कि जब भगवान जगन्नाथ कल्कि अवतार लेंगे, तब वे कुछ समय के लिए मंदिर छोड़कर एक गुप्त स्थान पर चले जाएँगे। भगवान जगन्नाथ मनुष्य शरीर धारण करेंगे। भगवान पहले ही मनुष्य शरीर में जन्म ले चुके हैं। जगन्नाथ मंदिर का अब भक्तों के लिए बंद होना कल्कि अवतार के प्राकट्य का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 01:27:05 · 19 जून 2021

प्रश्न 89 क्या मालिका में सुभाष चंद्र बोस के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: जो आत्माएँ पहले ही जा चुकी हैं, उनकी चर्चा करने की क्या आवश्यकता है? हमारा ध्यान अपने ही शरीर और आत्मा की रक्षा पर होना चाहिए। भगवान का वचन है 'परित्राणाय साधूनाम्' (साधुओं की रक्षा के लिए)। यदि हम साधु बन जाएँ, तो भगवान हमारी रक्षा करेंगे। लोग आज जीवित हैं और कल नहीं रहते। हमें स्वयं की और अपने परिवार की रक्षा के लिए भगवान का स्मरण करना और उनका अनुसरण करना चाहिए। जो चले गए, उनकी चर्चा से आपको क्या मिलेगा? प्राथमिकता भक्तों को बचाना है, क्योंकि यदि भक्त बचेंगे, तो संसार बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:33:15 · 19 जून 2021

प्रश्न 90 मैं नोएडा से भरत हूँ। क्या हम ज्ञान मार्ग या ध्यान के मार्ग से सत्य युग तक पहुँच सकते हैं?

उत्तर: देखिए, ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग) जैसे मार्गों की अब आवश्यकता नहीं है। इसका कारण यह है कि स्वयं भगवान ने अवतार ले लिया है। इसलिए एकमात्र मार्ग यही है कि भगवान का स्मरण करें, उनकी शरण लें, उनका नाम जपें, और पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना के लिए कार्य करें। यही अब आपका सर्वोच्च कर्तव्य है। इसे पूरा कीजिए, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:34:52 · 19 जून 2021

प्रश्न 91 भगवान कल्कि की वर्तमान आयु क्या है? और उनकी दिव्य शक्ति (पत्नी) का जन्म कहाँ हुआ है?

उत्तर: भगवान की दिव्य शक्ति, जो महालक्ष्मी और वैष्णो देवी का संयुक्त स्वरूप हैं, उनका जन्म हो चुका है, परंतु उनके विषय में जानकारी गुप्त है और उसे प्रकट नहीं किया जा सकता। जहाँ तक भगवान कल्कि की आयु का प्रश्न है, किसी मनुष्य का भगवान की आयु गिनना वेदों का अपमान है। आप बस इतना जान लीजिए कि भगवान ने अवतार ले लिया है और इस समय वे अपनी युवावस्था में हैं। यदि आप पर उनकी कृपा होगी, तो आप उनसे अवश्य मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:38:27 · 19 जून 2021

प्रश्न 92 मैं उत्तराखंड में बद्रीनाथ धाम के पास से हूँ। यहाँ एक स्थानीय मान्यता है कि नर और नारायण पर्वत आपस में मिल जाएँगे, और वर्तमान बद्रीनाथ मंदिर एक नए स्थान पर, जिसे भविष्य बद्री कहा जाता है, स्थानांतरित हो जाएगा। क्या वर्तमान बद्रीनाथ धाम समाप्त हो जाएगा?

उत्तर: बद्रीनाथ धाम सत्य युग, त्रेता युग और द्वापर युग में भी था। भगवान राम भी वहाँ गए थे। तो फिर कलियुग में यह क्यों बदलेगा? अंततः इसका उत्तर भगवान ही देंगे। परंतु मेरी भावना यह है कि यदि बद्रीनाथ हर युग में एक पवित्र स्थल रहा है, जैसा कि स्वयं भगवान ने कहा है, तो यह बना रहेगा। मैं इस विषय पर कुछ भी निश्चित रूप से कहना नहीं चाहता।

► यह उत्तर सुनें · 01:42:42 · 19 जून 2021

प्रश्न 93 मैं राजस्थान में कंप्यूटर के क्षेत्र में काम करता हूँ। क्या मैं सुरक्षित रहूँगा?

उत्तर: सुनिए, मैं एक बात कहूँगा। जो भी भगवान कल्कि की शरण में जाएगा, उसे कुछ नहीं होगा। जो नहीं सुनते, जो तर्क करते हैं और संदेह करते हैं, वे नष्ट हो जाएँगे। तो, चाहे आप युद्ध के बीच में हों, गोलियों से घिरे हों, या समुद्र के नीचे ही क्यों न हों, भगवान आपकी रक्षा करेंगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है, और यह प्रमाणित हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 01:46:27 · 19 जून 2021

प्रश्न 94 क्या आप हमें उस 'काल भैरवी' ध्वनि के बारे में बता सकते हैं, जिसके महाप्रलय से पहले होने की भविष्यवाणी है?

उत्तर: हाँ, सात दिनों के अंधकार और महायुद्ध से पहले, भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर क्षेत्र से 'काल भैरवी' नामक एक ध्वनि निकलेगी। यह पूरे विश्व में सभी को सुनाई देगी—उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। भक्तों को यह ध्वनि सुनाई नहीं देगी। परंतु जब पापी इसे सुनेंगे, तो किसी की छाती फट जाएगी, किसी के मुँह से खून निकलेगा, कोई बेहोश हो जाएगा, और कोई मर जाएगा। भक्तों को कुछ नहीं होगा; वे सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:47:34 · 19 जून 2021

प्रश्न 95 माधव (भगवान) से मिलने के लिए मुझे क्या करना होगा?

उत्तर: क्या आप सुधर्म संघ का हिस्सा हैं? यदि हाँ, तो आपको अपने समूह का संचालन करने वाले लोगों से, जो आपके संपर्क सूत्र हैं, बात करनी चाहिए। यही सबसे उत्तम मार्ग होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:51:10 · 19 जून 2021

सत्र 5 · प्रश्न 96–121

L5 कलियुग अंत के बाद प्रकृति, पंचभूत, संत समाज में क्या बदलाव आएगा? LIVE by pandit kashinath Mishra

दिनांक: 20 जून 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 96 मैं सरोज कुमार नंदा हूँ। कर्म और भाग्य को लेकर मेरे मन में थोड़ा भ्रम है। कृपया मुझे थोड़ा मार्गदर्शन दें। संसार में, कलियुग में, कर्म बड़ा है या भाग्य बड़ा है? आगे बढ़ने के लिए हमें किस पर ध्यान देना चाहिए? हमें अपना कर्म बढ़ाना चाहिए या अपना भाग्य? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, भाग्य 'प्रारब्ध' है (पूर्व कर्मों का फल)। जैसे, एक बालक ऐसे घर में जन्म लेता है जहाँ खेलने के लिए सोने का पालना होता है, जबकि दूसरा बालक ऐसी माँ के यहाँ जन्म लेता है जिसके पास उसे ढकने के लिए एक छोटा-सा कपड़ा भी नहीं होता। यह भाग्य है। भाग्य के कारण ही व्यक्ति को अच्छा परिवार, अच्छा घर, अच्छी जाति और अच्छा धार्मिक संस्थान मिलता है। परंतु हर युग में भगवान ने कर्म को महत्व दिया है। 'सुकर्म' भी है और 'कुकर्म' भी। लिखा है कि जो अच्छे कर्म करता है, वही भाग्यशाली है। भगवान की कृपा से और पाँचों इंद्रियों को वश में रखकर मनुष्य को सत्कर्म करने चाहिए। देखिए, धर्म के कार्य करना बहुत कठिन है, परंतु पाप करना बहुत आसान है। कोई भी सरलता से पाप कर सकता है, चोरी कर सकता है, डाका डाल सकता है। परंतु जीवन भर, जन्म से मृत्यु तक धर्म के मार्ग पर चलना कठिन है। यदि बीच में व्यक्ति कोई पाप कर दे, तो उसके पुण्य नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इस संसार में कर्म ही सबसे बड़ी चीज़ है। परंतु इस 'धर्म संस्थापना' के समय में, आपसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि घर में श्रीमद्भागवत पढ़िए। अपने सांसारिक कर्तव्य जो भी हों, उन्हें करते रहिए; उससे हमारा कोई संबंध नहीं, वह संसार का नियम होना चाहिए। परंतु प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़िए, भगवान के दस अवतार पढ़िए, 16 मिनट ध्यान कीजिए, शाकाहारी बनिए, और समाज में गरीबों तथा दुखियों की सहायता कीजिए। एक दिन अपना भोजन कम करके किसी के साथ बाँटिए, चाहे वह कोई पशु हो, कोई दुखी व्यक्ति हो, या कोई गरीब हो। उन्हें कुछ दीजिए। शांति और सत्य का अभ्यास कीजिए। और आप सब भगवान कल्कि की शरण लीजिए, क्योंकि समय बीता जा रहा है। मैं यह आपको डराने के लिए नहीं कहता, परंतु लोग इस समय के लिए तरसेंगे। तो मैं आपसे इतना ही कहता हूँ: भगवान की शरण में रहिए और भगवान कल्कि को अपना गुरु मानिए। यही कलियुग का गुरु धर्म होगा, और इसी संसार में हमारा जीवन सार्थक होगा, क्योंकि हमें इसी जीवन में भगवान के दर्शन करने हैं। इस समय भगवान हमारे लिए भी आए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 29:43 · 20 जून 2021

प्रश्न 97 जय जगन्नाथ, गुरुजी। मेरा प्रश्न यह है कि हम स्वयं को अनंत शक्ति के प्रति जागरूक कैसे कर सकते हैं? और मनुष्य के जीवन में इस 'समय मंडल' (युग/काल चक्र) का क्या योगदान है? मेरा प्रश्न यह है कि हम स्वयं को अनंत शक्ति के प्रति जागरूक कैसे करें और हमारे जीवन में इस 'समय मंडल' का क्या योगदान है?

उत्तर: अनंत शक्ति का 'मंडल'... वे ऋषि-मुनि और संत जो सत्य के पिता हैं... सत्य युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में—सत्य युग में, जो तपस्या करते थे, उनके लिए यह निराकार तप आवश्यक था। अनंत शक्ति को जागृत करने के लिए वे युगों तक तपस्या कर सकते थे। सत्य युग के बाद त्रेता युग आया। त्रेता युग में लोगों ने यज्ञ, जप और तप से मुक्ति प्राप्त की। फिर द्वापर युग आया, और लोगों ने भगवान कृष्ण का नाम जपकर मुक्ति पाई। प्रेम के धर्म का प्रचार हुआ, और मानव समाज में पवित्रता और शुद्धता प्रकाशित हुई। परंतु कलियुग के लिए, भगवान बुद्ध और महापुरुष अच्युतानंद ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि केवल भगवान का नाम, 'नाम ब्रह्म' ही मार्ग है। अपने हृदय में निरंतर भगवान का नाम जपना... देखिए, वर्तमान परिस्थिति में कोई लंबे समय तक तपस्या नहीं कर सकता, और यह संभव भी नहीं है। आप एक स्त्री हैं; इस पापमय समाज में

किसी स्त्री का गाँव से बाहर जाकर, वन में अकेले तपस्या करना बिल्कुल संभव नहीं है। इसलिए, भगवान ने इस मार्ग के लिए जो बताया है, वही कीजिए। भगवान कल्कि का नाम, 'माधव' नाम जपिए। श्रीमद्भागवत पढ़िए। और सदा सभी प्राणियों में भगवान को देखिए, तथा भगवान के नाम और गुणों को बाँटिए। सत्य, शांति और करुणा के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारिए। भगवान तक पहुँचने के लिए इतना ही पर्याप्त है। बाकी मार्ग अब अप्रासंगिक हो चुके हैं। अगले 10 वर्षों में, कौन जाने संसार कौन-कौन से परिवर्तन देखेगा। और भगवान भी आ चुके हैं। मैं निश्चयपूर्वक कह रहा हूँ, भगवान आ चुके हैं, और 'कल्कि लीला' पूरे विश्व में प्रकट हो रही है। कल्कि लीला चल रही है। महापुरुष ने लिखा है कि योगमाया एक रूप धारण करेंगी... और उस रूप में वे किसी के नियंत्रण में नहीं होंगी। मैं स्पष्ट रूप से नहीं कहूँगा, परंतु इतना समझ लीजिए... यह नियंत्रण... मैं पूरी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहता, परंतु योगमाया की शक्ति से पूरे विश्व में रोग फैलेगा। यह कल्कि लीला का एक अंश है। महापुरुष सच्चिदानंद ने यह लिखा था। योगमाया किस रूप में आएँगी? वे वायु में और पृथ्वी पर, रोग के विभिन्न रूपों में फैलेंगी। महामारी के रूप में वे विनाश करेंगी। इसलिए तपस्या के लिए समय नहीं है। यह जप, तप, योग जिसकी संत बात करते हैं—ध्यान करो, जप करो—कलियुग में इसमें से किसी की आवश्यकता नहीं है। केवल 'नाम भजन' (नाम जपना), सत्य, शांति और करुणा का पालन। पाप मत कीजिए। बस इतना ही। कलियुग के लोग इससे अधिक नहीं कर सकते। और भागवत अवश्य पढ़िए। श्रीमद्भागवत पढ़ने से आपकी आयु बढ़ेगी, परिवार का कलह समाप्त होगा, और रोग-व्याधियाँ भी दूर होंगी। यह इतना महत्वपूर्ण ग्रंथ है। जब महाप्रलय होगा, तब यह हमारे भीतर की दिव्य शक्ति को जागृत करेगा। और कलियुग में सबसे बड़ा धर्म है निरंतर भगवान का नाम जपना। और 'माधव केशव माधव' नाम कलियुग के अंत के लिए सबसे पवित्र नाम है। मालिका में लिखा है कि 'माधव' नाम जपने से संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो आपको रोक सके। आप परीक्षा करके देख सकते हैं। परंतु आपको धर्म के उस मार्ग का भी पालन करना होगा जो बताया गया है। अब और चीज़ों के लिए समय नहीं है। जब समय आएगा, तब हम वे करेंगे। अभी नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 33:13 · 20 जून 2021

प्रश्न 98 हम जानना चाहते हैं... कहा जाता है कि पहले विनाश होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि लोग इससे कैसे बच सकते हैं? वे कैसे सुरक्षित रह सकते हैं और भगवान की शरण ले सकते हैं?

उत्तर: मालिका में क्षत्रियों के विनाश का उल्लेख है। महापुरुष सच्चिदानंद ने क्षत्रियों के विनाश के बारे में लिखा है। क्षत्रिय भगवान की भुजाओं से उत्पन्न हुए थे। रावण के बाद क्षत्रियों का सम्मान है। उन्हें नष्ट करने का कोई उल्लेख नहीं है। लिखा है कि केवल वे ही नष्ट होंगे जो पापी और आसुरी हैं, जो संसार को कष्ट देते हैं, जो जीवों की हत्या करते हैं, जो अत्याचार और भ्रष्टाचार करते हैं। और महापुरुष ने लिखा है कि सबसे पहले संसार में किसानों पर बहुत दबाव पड़ेगा। फसल नष्ट होने के कारण वे आत्महत्या करेंगे, जो पहले से ही हो रहा है। और किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलेगा। 'चासी' (किसान), जैसा कि हम अपनी भाषा में कहते हैं, कृषक, पंचतत्वों से होने वाली अनेक प्राकृतिक आपदाओं का सामना करेंगे। और संसार के बहुत धनी लोग, कारखानों के मालिक, बड़े पैसे वाले लोग, उच्च अधिकारी—वे नष्ट हो जाएँगे। उनकी संपत्ति नष्ट हो जाएगी। और कई बड़े लोग भी मरेंगे। मैं यह विचार प्रस्तुत करता हूँ, आज के समाज को देखिए, मैं जो कह रहा हूँ उसे समझिए और उसका विश्लेषण कीजिए। उसके बाद, सरकारी कर्मचारियों को महीनों तक वेतन नहीं मिलेगा। वह समय भी आ रहा है। धीरे-धीरे ऐसे लक्षण प्रकट होंगे, जो पहले से ही दिखाई देने लगे हैं। जहाँ तक क्षत्रियों की बात है, जो भगवान की शरण में रहते हैं, सच्चे क्षत्रिय... यदि वे मांस, मछली, मदिरा का सेवन करते हैं और पाप करते हैं, तो उनका भाग्य भगवान तय करेंगे। परंतु ऐसा कुछ विशेष नहीं है। मेरा निवेदन है, मेरे वीडियो देखिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, शाकाहारी बनिए, और भगवान कल्कि के स्मरण में रहिए। बहुत बुरा समय आ रहा है। यदि आप सब इस मार्ग पर नहीं आए, तो आप स्वयं समझ जाएँगे कि क्या होगा। संसार को यह बताना मेरा कर्तव्य है क्योंकि यह भक्तों के लिए लिखा गया था। और इसका प्रचार करने से भक्त सुरक्षित रहेंगे। तो, इस संदेश का पालन कीजिए, और सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:47 · 20 जून 2021

प्रश्न 99 क्या हमें भागवत महापुराण पढ़ना है या भगवद्गीता?

उत्तर: श्रीमद्भागवत पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 42:43 · 20 जून 2021

प्रश्न 100 क्या टीवी पर सुनना ठीक रहेगा? टीवी पर भागवत के कार्यक्रम आते हैं। यदि हम उन्हें सुनें या देखें, तो क्या वह पर्याप्त होगा? जैसे रामानंद सागर की रामायण?

उत्तर: देखिए बेटा, इन्हें देखना अच्छा है। कई शास्त्रों का प्रसारण होता है, वीडियो पर, म्यूजिक सिस्टम पर। यह सब ठीक है। परंतु हमारा शरीर, हमारी आर्य परंपरा, इसमें सूर्य देव को जल चढ़ाना, गायत्री मंत्र का जाप करना और माँ का नाम जपना जैसी क्रियाएँ सम्मिलित हैं। यह आवश्यक है क्योंकि यह हमारी अपनी साधना है। सुनना आनंददायक है, परंतु कुछ आपको स्वयं भी करना होगा। वह कीजिए। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 43:01 · 20 जून 2021

प्रश्न 101 मैं यह पूछना चाहता हूँ, मुझे अपने अनुभव में सात मंत्र प्राप्त हुए हैं। मुझे उनका क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, आपके पास मंत्र हैं, और आप उन्हें माला से जपते हैं। लेकिन समय के परिवर्तन के साथ भगवान का नाम भी बदल जाता है। कलियुग में लोगों ने भगवान विष्णु की उपासना की। त्रेता युग में भगवान राम का नाम था। किसी भी गुरु का वचन मिथ्या नहीं होता। आप जो कर रहे हैं, वह करते रहिए। लेकिन कलियुग के लिए सबसे महत्वपूर्ण नाम है 'माधव'। महापुरुष अच्युतानंद ने यह लिखा है। हमें भगवान की शरण लेनी चाहिए और वर्तमान युग के अवतार का सम्मान करना चाहिए। हमें उनकी शरण में जाना चाहिए। यह मालिका के अनुसार है।

► यह उत्तर सुनें · 44:17 · 20 जून 2021

प्रश्न 102 मैं असम से बोल रहा हूँ। क्या आप असमिया जानते हैं?

उत्तर: अगर आप बोलेंगे तो मैं समझ सकता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 46:30 · 20 जून 2021

प्रश्न 103 मोक्ष के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, घर में जीव-जंतु होते हैं। हमारा श्रीमद्भागवत 'वैश्य धर्म' की बात करता है। विशेष रूप से माता, कुत्ते, छोटे जीव जो मनुष्यों पर आश्रित हैं—उन्हें भोजन कराना हमारा कर्तव्य है। तो, जितना हो सके, दान कीजिए और 'माधव' नाम का जप कीजिए। यही आपको करना चाहिए। मैं कोई मंत्र देने वाला गुरु नहीं हूँ; मैं एक साधारण मनुष्य हूँ। मैं केवल इतना कहता हूँ, भगवान का नाम लीजिए, जितना संभव हो उतने आत्मसंयम के साथ संसार में धर्म का आचरण कीजिए, और संसार में भगवान के नाम का प्रचार कीजिए। जो भक्त भटक गए हैं, उन्हें जगाइए। यही आपसे मेरी विनती है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:38 · 20 जून 2021

प्रश्न 104 क्या असम में महाप्रलय (महा बाढ़) आएगी? भक्तों का क्या होगा?

उत्तर: जगन्नाथ मंदिर... कोई समस्या नहीं है। धर्म को थामे रखिए और अपना काम कीजिए। मालिका के अनुसार मैं जिन सिद्धांतों को समझा रहा हूँ, भविष्य मालिका का पूरी तरह से पालन कीजिए। आप सब बच जाएँगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 49:54 · 20 जून 2021

प्रश्न 105 अपने जीवन में मैंने बहुत सी गलतियाँ की हैं। मैं मांसाहारी भी था। अब मैं इस मार्ग पर आ रहा हूँ। अपने जीवन में की गई इतनी सारी गलतियों के साथ मैं इस मार्ग पर कैसे आ सकता हूँ?

उत्तर: आपने अच्छा कहा, चक्रवर्ती। जय जगन्नाथ। यह अच्छी बात है। देखिए, हर व्यक्ति अपने जीवन में गलतियाँ करता है। यह परिस्थितियों के कारण होता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है कि अपने वातावरण के कारण अच्छा व्यक्ति भी बुरा बन सकता है। लेकिन जब समय आता है, तो उसका हृदय प्रकाशित हो जाता है। जैसे साँप के पास मणि होती है, पर वह उसके विष से प्रभावित नहीं होती, और मणि का प्रकाश बना रहता है, वैसे ही हर व्यक्ति जीवन में गलतियाँ करता है। आप आज मुझसे बात कर रहे हैं... मैं आपसे एक बात कहूँगा: यदि आज के बाद आप कोई गलती करेंगे, तो आपको क्षमा नहीं मिलेगी। आपने जीवन में जो भी गलतियाँ की हैं, उन्हें भक्तिपूर्वक भगवान माधव को समर्पित कर दीजिए, क्षमा माँगिए, और अच्छे कर्म कीजिए। और दूसरी बात, श्रीमद्भागवत पढ़िए। रोज़ पढ़िए। भगवान माधव के नाम का जप कीजिए। शाकाहारी बन जाइए। अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता कीजिए। जैसे, अगर हम दस बार खाते हैं, तो एक बार का भोजन छोड़कर उसे बाँट सकते हैं। इसी सिद्धांत के साथ जीवन जीइए। और मालिका का पालन कीजिए, क्योंकि मालिका का पालन करने से व्यक्ति भगवान कल्कि का सेवक बन सकता है। और भगवान की कृपा से संसार की सबसे बड़ी शक्ति प्राप्त कर सकता है। तो, अभी से इसके लिए काम करना शुरू कीजिए। जो धर्मसंगत है, वही कीजिए। और जब यज्ञ होगा, यदि आपको सही तरीके से लाया गया, तो आप निश्चित रूप से यज्ञ में उपस्थित हो सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 52:52 · 20 जून 2021

प्रश्न 106 एक अधिवक्ता के रूप में, मेरा काम हमेशा इस मार्ग के अनुरूप नहीं हो सकता। तो हमें क्या करना चाहिए? अब हमें कौन सा काम करना चाहिए?

उत्तर: बेशक, वकील होने के नाते आप बहुत से लोगों से मिलते हैं। देखिए, अच्छे कर्म कीजिए। मेरा मार्ग सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का है। जब युग बदलता है, तो उस युग के धर्म और सिद्धांतों का पालन करना होता है। और हम जिस मार्ग पर हैं, आप सबको भी उसका पालन करना चाहिए। क्योंकि युग के अंत में, जहाँ सत्य, शांति, करुणा, मैत्री और पवित्रता है, उसी का पालन करना चाहिए। भागवत पढ़िए, मंदिर जाइए, और अपना पेशा अच्छी तरह से निभाइए, लेकिन सत्यनिष्ठ रहने का प्रयास कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 55:31 · 20 जून 2021

प्रश्न 107 क्या हम दूसरों को, जैसे किसी अमेरिकी परिवार को, इस मार्ग पर आमंत्रित कर सकते हैं?

उत्तर: आप अच्छे और पवित्र लोगों से बात कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 56:51 · 20 जून 2021

प्रश्न 108 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि कलियुग के 4,32,000 वर्ष अभी शेष हैं। और आप कह रहे हैं कि भगवान कल्कि आएँगे—नहीं, कि वे आ चुके हैं। मेरा प्रश्न है, सब जानते हैं कि 4,32,000 वर्ष बाकी हैं, और सबने विश्वास का वही 'चश्मा' पहन रखा है। तो हम उन्हें कैसे जागरूक करें या बताएँ कि वे आ चुके हैं?

उत्तर: देखिए, बेटा, जगन्नाथ, आप जो कह रहे हैं... कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है, लेकिन उन 4,32,000 वर्षों में से कलियुग केवल 5,000 वर्ष ही चलेगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में दीर्घायु लिखी हो, लेकिन वह व्यक्ति पाप और व्यभिचार करे, तो वह कम उम्र में ही किसी कार दुर्घटना में या किसी रोग से मर सकता है। उसका जीवन समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार, ब्रह्मा देव और मनु ने कलियुग के लिए 4,32,000 वर्ष निश्चित किए थे, लेकिन कलियुग में पाप की अत्यधिक वृद्धि के कारण—गौ हत्या, ब्रह्म हत्या, शिशु हत्या, भ्रूण हत्या, मातृ हत्या, पितृ हत्या, छल, असत्य आदि—इन सब पापों के कारण कलियुग की आयु घट गई है। इस पर हमारा एपिसोड उपलब्ध है; आप पिछला एपिसोड देख सकते हैं। तो, 4,32,000 से घटकर कलियुग के अस्तित्व के लिए केवल 5,000 वर्ष रह गए। इसीलिए मालिका लिखी गई। मालिका इसलिए लिखी गई क्योंकि लोग नहीं जान पाते, और संत ऐसी बातें कहकर भ्रम पैदा कर देते। लोगों को जगाने के लिए मालिका लिखी गई।

► यह उत्तर सुनें · 57:12 · 20 जून 2021

प्रश्न 109 आजकल के कथावाचक भी यही जानते और कहते हैं कि 4,32,000 वर्ष शेष हैं। क्या हम कह सकते हैं कि उनके पास सत्य नहीं है या वे उसे जान नहीं पा रहे, जबकि वे युगों के बारे में प्रवचन करते हैं?

उत्तर: शास्त्र और वेद कहते हैं कि भगवान का नाम या शास्त्रों का प्रचार करने के लिए धन नहीं लेना चाहिए। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। आजकल समाज में इस संदेश का प्रचार अत्यधिक व्यावसायिक हो गया है। बहुत आडंबर और दिखावा है। भगवान गरीबों, ज़रूरतमंदों और असहायों की सेवा में निवास करते हैं। लेकिन जब शास्त्र बेचे जाते हैं, तो उनकी सत्यता की भी जाँच होनी चाहिए। जो शास्त्रों को बेचते हैं, वे क्या जानेंगे? दूसरी बात, इसीलिए ओडिशा में मालिका लिखी गई। लिखा गया था कि ये सब लोग सबको भ्रमित करेंगे और स्वयं को भगवान तक घोषित कर देंगे। यह भी एक समस्या है। मालिका में स्पष्ट लिखा है कि जब कलियुग के 5,000 वर्ष समाप्त होने को होंगे, तब एक महामारी आएगी, और उस समय भगवान कल्कि 13 वर्ष के होंगे। यह सब शुरू हो चुका है, बेटा। धर्म के जिन सिद्धांतों की मैं आपको बात कर रहा हूँ, उसी मार्ग पर चलिए। समय आ गया है। हमारे पास समय नहीं है। बस भगवान की शरण में चले जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 59:36 · 20 जून 2021

प्रश्न 110 मालिका 500 वर्ष पहले लिखी गई थी, है न? तो यदि 500 वर्ष पहले लिखा गया था कि यह 5,000 वर्षों के बाद होगा, तो अभी केवल 500 वर्ष ही बीते हैं। क्या इसका अर्थ यह नहीं कि मालिका की समय-गणना के अनुसार अभी 4,500 वर्ष शेष हैं?

उत्तर: नहीं, नहीं, नहीं। महापुरुष अच्युतानंद ने 500 वर्ष पहले लिखा था, यह सही है। लेकिन उन्होंने लिखा कि कलियुग की कुल आयु, 4,32,000 वर्षों में से, पाप के कारण घटकर केवल 5,000 वर्ष रह जाएगी। आज ओडिशा में, जगन्नाथ पंजिका, माता बिरजा देवी पंजिका, कोहिनूर पंजिका, और आपकी वह पंजिका जो उत्तर और दक्षिण भारत में प्रयोग होती है—उसके अनुसार, ओड़िया पंजिका के अनुसार कलियुग की आयु 5,126 वर्ष है। और आपकी पंजिका के अनुसार यह 5,123 वर्ष है। यह चल रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:30 · 20 जून 2021

प्रश्न 111 1918 में बहुत लोग मरे थे, 30-40 लाख लोग। भविष्य मालिका कहती है कि एक महामारी आएगी, लेकिन 1918 में भी महामारी (स्पैनिश फ़्लू) आई थी और 1818 में भी। जब 1818 वाली आई थी, तब साईं बाबा ने जन्म लिया था। अभी वाली महामारी इनसे अलग कैसे है?

उत्तर: देखिए, मालिका ने 1818 के बारे में लिखा है, 1916 के बारे में लिखा है, और विश्व की सारी घटनाओं के बारे में लिखा है। भारत की स्वतंत्रता से लेकर, शासन व्यवस्था तक, कौन लोग कितने समय तक राज करेंगे, अमेरिका कैसे निर्धन, अहंकारी और घमंडी हो जाएगा—यह सब मालिका में लिखा है। इन सब चीज़ों के बारे में लिखा गया था, और आज की महामारी के बारे में भी लिखा गया है। कलियुग का अंत 5,000 वर्षों के बाद होगा। 5,000 वर्ष बीत चुके हैं। और जगन्नाथ मंदिर से बार-बार संकेत मिल रहे हैं। जगन्नाथ मंदिर के विषय में एक बात बताता हूँ। सच्चिदानंद ने लिखा है कि जब मंदिर के शिखर पर लगा ध्वज बार-बार गिरेगा, ठीक उसी समय भगवान कल्कि अवतार ले चुके होंगे और अपनी लीला कर रहे होंगे। जो सो रहे हैं, वे सोते ही रह जाएँगे। शिखर का ध्वज बार-बार गिरेगा, और उसी समय भगवान जगन्नाथ अपना अवतार लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:50 · 20 जून 2021

प्रश्न 112 कल आपने कहा था कि वैष्णो देवी और माता लक्ष्मी उनकी एक ही शक्ति होंगी। लेकिन दिल्ली के कल्कि वाटिका में, जो लोग वह संस्था चलाते हैं, उन्होंने कहा कि लक्ष्मी (रमापति) और वैष्णो देवी उनकी दो पत्नियाँ होंगी। उन्होंने कहा कि विवाह होगा, संतान होगी, और फिर धर्म स्थापना का कार्य आरंभ होगा। लेकिन आपने कहा कि वे उनकी शक्ति होंगी। कृपया यह भ्रम दूर कीजिए।

उत्तर: देखो बेटा, कल्कि अवतार, धर्म की स्थापना, 16 मंडल, भक्तों को एकत्र करना, सुधर्म संघ और सत्ययुग लाने के विषय में मालिका ही मूल और आधारभूत ग्रंथ है। मालिका में मूल सिद्धांत हैं और यह भगवान का वचन है। मैं उसी का प्रचार करता हूँ; यह मेरा अपना वचन नहीं है, और उसमें मैं कोई भूल नहीं करता। मालिका कहती है कि भगवान कल्कि देव माता वैष्णो देवी के पास जाएँगे और उनकी शक्ति को अपने में समाहित कर लेंगे। माता वैष्णो देवी की शक्ति माता महालक्ष्मी के शरीर में प्रकट होगी। फिर भगवान का विवाह होगा। सुधर्म सभा से पहले, ब्रह्मा देव और महादेव स्वयं आकर भगवान कल्कि का विवाह उनके आश्रम में एक बरगद के वृक्ष के नीचे सम्पन्न कराएँगे। ऐसा लिखा है। और भगवान ने यह कहा है। तो, मालिका में जो लिखा है, मैं उसी का अनुसरण करता हूँ। अन्य संत और गुरु जो कहते हैं, उनका मैं सम्मान करता हूँ, लेकिन मैं मालिका में जो है उसी का पालन करता हूँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:13 · 20 जून 2021

प्रश्न 113 मेरी गहरी समझ यह है कि हमारा कर्म ही सर्वोपरि है, और कर्म से ही धर्म उत्पन्न होता है। क्या यह सही है?

उत्तर: 'कुकर्म' होता है और 'सुकर्म' होता है। कोई चोरी करता है, कोई लूटता है, कोई भ्रष्टाचार करता है—वह धर्म के अंतर्गत नहीं आता; उसे कर्म कहते हैं। और जो कर्म 'सुकर्म' है—सेवा करना, पवित्र रहना, और धर्म का प्रचार करना—जो यह कर्म करता है, उसके शरीर में धर्म की शक्ति उत्पन्न होती है। उसके भाग्य में, उसके जीवन में, धर्म का मार्ग उसे एक निश्चित स्थान तक ले जाता है। जो कर्म धर्म को प्रकाशित करता है... पहले धर्म नहीं है, पहले कर्म है। और कर्म करने से धर्म उत्पन्न होता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:35 · 20 जून 2021

प्रश्न 114 त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों में की जाने वाली उपासना) कैसे की जाती है?

उत्तर: बैठकर भगवान का नाम, 'माधव' नाम जपने से। यदि आप श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, तो वही त्रिसंध्या है। संध्या का अर्थ है संधिकाल। एक दिन में तीन संधिकाल होते हैं। एक प्रातःकाल, जब रात्रि समाप्त होती है और दिन आरंभ होता है। दूसरा, जब सुबह समाप्त होती है और दोपहर आरंभ होती है। तीसरा, सायंकाल। यदि कोई सेवा या नौकरी में है और समय नहीं है, तो वह जहाँ भी हो, मन ही मन जप कर सकता है। लेकिन यदि वह घर पर है, तो स्नान करके ध्यान में बैठना बेहतर है। सत्ययुग में मानव समाज इसी मार्ग का अनुसरण करेगा। अभी के लिए, जितना हो सके उतना करें। कम से कम, श्रीमद्भागवत पढ़ें, शाकाहारी बनें, और 'माधव' नाम का जप करें। यही उपासना का सार है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:49 · 20 जून 2021

प्रश्न 115 मैं प्रतिदिन श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करता हूँ। लेकिन आप श्रीमद्भागवत पढ़ने के लिए कह रहे हैं। क्या ये अलग-अलग हैं?

उत्तर: भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने संसार में कर्म के प्रभाव को कम करने के लिए कर्म का मार्ग समझाया, ताकि मनुष्य आत्मा को समझ सके और जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पा सके। भगवान ने मुक्ति का जो मार्ग दिखाया, वह श्रीमद्भगवद्गीता में है। श्रीमद्भागवत यह दिखाता है कि कैसे बचा जाए। श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ना अत्यंत पवित्र और आवश्यक बात है। लेकिन हमारी मालिका के अनुसार, हर भक्त के लिए श्रीमद्भागवत पढ़ना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:12 · 20 जून 2021

प्रश्न 116 कौन सा श्रीमद्भागवत, गुरुजी? क्या आपका आशय श्रीमद्भागवत महापुराण से है?

उत्तर: हाँ, महापुराण। महापुराण कहिए। श्रीमद्भागवत महापुराण।

► यह उत्तर सुनें · 01:15:16 · 20 जून 2021

प्रश्न 117 पंडित जी, पूरी दुनिया में जबरन टीकाकरण हो रहा है। उस पर आपका क्या विचार है?

उत्तर: मालिका का पालन कीजिए। शाकाहारी बनिए और भगवान की शरण लीजिए। भारत सरकार के अपने कानून हैं। हम लोकतांत्रिक सरकार में हैं। सभी नागरिकों के लिए सरकार की नीतियों और नियमों का पालन करना अच्छा है, और आवश्यक भी है। क्योंकि, भविष्य में जो होना है वह होकर रहेगा। वह समय आ रहा है। सरकार नागरिकों के लिए अपना कर्तव्य निभाती है। एक राष्ट्र के रूप में, जो कार्य किया जाता है उसमें सबको सहयोग देना चाहिए। मैं धर्म का मार्ग, मालिका का मार्ग समझा रहा हूँ। उसका पालन कीजिए। लेकिन भारत सरकार के नागरिक के रूप में, आपको सभी नियमों और कानूनों का पालन करना होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:15:49 · 20 जून 2021

प्रश्न 118 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि मैं आपके सभी वीडियो देखता और उनका अनुसरण करता हूँ। भविष्य को लेकर मेरा मन विचलित हो जाता है। आप जो कह रहे हैं वह सत्य है, लेकिन समाज और विश्व के वर्तमान वातावरण को देखकर लगता है कि हर कोई अपने-अपने लक्ष्य के पीछे भाग रहा है, स्वयं को स्थिर करने में लगा है। और फिर यह

दूसरा मार्ग है—धर्म का और भगवान कल्कि का संदेश फैलाने का। किस मार्ग पर चलूँ, इसे लेकर मेरा मन बहुत विचलित हो जाता है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखो बेटा, आज संसार में सभी लोग, पूरा विश्व, लक्ष्यहीन है। उनका जो भी लक्ष्य था, वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गया है। और लोगों को आगे बढ़ने में अनेक बाधाएँ हैं। विद्यार्थियों से लेकर सरकारों तक, कंपनियों से लेकर विश्व की सभी संस्थाओं तक, वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। सभी लक्ष्यहीन हो गए हैं, निराशा और समस्याओं में जी रहे हैं। समस्या आएगी, और समय बताएगा। लेकिन बुद्धिमान वही है जो समय को समझे। एक साल नहीं हुआ, दो साल नहीं हुए, यह अभी भी चल रहा है। और आगे क्या... जैसे, किसी अस्पताल में आग लग जाती है। अगर अस्पताल में शॉर्ट सर्किट होता है, बड़े-बड़े मॉल में, तो वह शॉर्ट सर्किट के कारण नहीं होता। किसी इमारत में आग लगती है, एंबुलेंस में, यहाँ तक कि मोटरसाइकिल में भी आग लग जाती है। अपने जीवन में मैं प्रतिदिन अख़बार पढ़ता हूँ, लेकिन पिछले एक साल से मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पा रहा हूँ। मैं भी यह सब सुन और देख रहा हूँ, और अनुभव कर रहा हूँ कि पिछले डेढ़ साल से बस आग, झगड़े, दुर्घटनाएँ, किसी का मरना... स्थिति बिगड़ती जा रही है। और इससे मेरा मन विचलित हो जाता है। बात यह है कि मैं अपने लक्ष्यों पर ध्यान नहीं लगा पा रहा हूँ। मैं क्या करूँ? और आपका मार्ग बहुत अच्छा मार्ग है। सुनो, मैं तुम्हें साफ़-साफ़ और ठीक-ठीक बताता हूँ। मालिका कहती है कि जो भक्त इस मार्ग पर चलेगा, वह बच जाएगा। उनके सुधार के लिए अनेक देवी-देवताओं को स्थान दिया गया है, ताकि मानव समाज का सुधार हो सके। और जो मालिका को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं, वे सत्ययुग, द्वापर और कलि के भक्त होंगे। तो सुनो, निर्देशों का पालन करो, शाकाहारी बनो, श्रीमद्भागवत से पाठ करो, और यूट्यूब पर हमारे सत्संग देखो। सनातन धर्म से जुड़े रहो, सनातन धर्म का प्रचार करो। यही हमारे लिए हितकर है। इसमें कोई खर्च नहीं है, कोई लेन-देन नहीं है। यह धर्म का मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 01:17:11 · 20 जून 2021

प्रश्न 119 मुझे 2018 में भगवान विष्णु के चतुर्भुज, स्वर्णिम स्वरूप के दर्शन हुए थे। इसका क्या महत्व है?

उत्तर: ठीक है, माता जी। आपने भगवान विष्णु के दर्शन किए। भगवान विष्णु ने स्वयं कल्कि अवतार लिया है और मानव शरीर में आए हैं। आप बहुत भाग्यशाली हैं। आपको वह दिव्य दर्शन हुआ जो देवताओं को भी दुर्लभ है। लेकिन अब उस मानव रूप के दर्शन करने का प्रयास कीजिए, क्योंकि भगवान कल्कि का अवतार हो चुका है। उन्होंने अवतार ले लिया है, और भगवान ने धर्म स्थापना का कार्य भी आरंभ कर दिया है। भगवान कल्कि के धर्म से जुड़िए और भगवान के नाम को पूरे विश्व में फैलाइए। सनातन धर्म के लिए कार्य कीजिए। क्योंकि स्वयं भगवान ने आपको अपने दर्शन दिए। मैं अधिक नहीं कहना चाहता, लेकिन भविष्य में भगवान जो कार्य करने वाले हैं, उससे जुड़िए। उसमें स्वयं को लगाइए।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:43 · 20 जून 2021

प्रश्न 120 पुराणों में युग की आयु 432,000 वर्ष बताई गई है, लेकिन इनमें से कई ग्रंथ बदले और संशोधित किए गए हैं। तो हम उन पर विश्वास कैसे करें? यह संभव है कि कलि के प्रभाव से संख्याएँ बदल दी गई हों ताकि उसका राज चलता रहे। क्या इसीलिए भविष्य मालिका को ताड़पत्रों पर लिखना पड़ा?

उत्तर: आपने सही कहा। ग्रंथों को बार-बार संशोधित किया गया है। लोगों ने अपने-अपने एजेंडे के अनुसार उन्हें लिखा, पूरी तरह संशोधित कर दिया। इसीलिए कलियुग के लिए जो आवश्यक है, वह मालिका में लिखा गया है। और माता जी, देखिए, आप भाग्यशाली हैं। आप एक दिव्य, पवित्र आत्मा हैं, कोई ऋषि या संत हैं जो धरती पर आई हैं। आप एक पवित्र आत्मा हैं जिसे भगवान बातें प्रकट करते हैं। तो, मालिका का पालन कीजिए। यही लोगों के लिए, भक्तों के लिए हमारा परम ग्रंथ है। इसका पालन करके हम कलियुग से सत्ययुग में जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:25:07 · 20 जून 2021

प्रश्न 121 हम 'सुदामा संघ' से कैसे जुड़ सकते हैं?

उत्तर: सबसे पहले, सनातन धर्म की जो धारा इस समय बह रही है, उससे जुड़िए। नंबर लीजिए और आइए। जो संत और भक्त इसका संचालन कर रहे हैं, उनके पास आइए और उनसे जुड़िए। कुछ समय उनके साथ रहने के बाद, जो पूरी तरह भगवान की धारा में आ जाएंगे, उन्हें सुदामा संघ में शामिल किया जाएगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:28:47 · 20 जून 2021

सत्र 6 · प्रश्न 122–141

L6 विश्व में आद्य सत्य युग का, प्रजा शासन धारा और धर्म का विचार कैसे रहेगा? LIVE

दिनांक: 27 जून 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 122 मालिका में लिखा है कि विश्वयुद्ध होगा। क्या यह विश्वयुद्ध 2024 में होगा? यह कितने समय तक चलेगा और इसका परिणाम क्या होगा? क्या इस बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: देखिए बेटा, विश्वयुद्ध निश्चित रूप से होगा। मालिका यह कहती है, और कई शास्त्रों में इसका उल्लेख है। मैं शुरू से कहता आ रहा हूँ कि विश्व की 75% जनसंख्या विनाश की ओर बढ़ रही है। मैं पूरे विश्व की बात कर रहा हूँ। फिर भी, अभी समय है। यदि मानव समाज सत्य, धर्म, न्याय, नीति, उदारता और विनम्रता के मार्ग पर लौट आए और भगवान की शरण ले, मालिका में दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करे, तो मानव जीवन को कोई खतरा नहीं होगा। युद्ध होगा, और यह 2023 या 2024 में हो सकता है। तैयारियाँ पहले से ही शुरू हो चुकी हैं। एक ओर मुस्लिम राष्ट्र अपना अलग गठबंधन बना रहे हैं। दूसरी ओर, नाटो में विघटन और पुनर्निर्माण चल रहा है। और तीसरी ओर से, भारत से एक तीसरी शक्ति उभरेगी, जिसके साथ कई सहयोगी राष्ट्र होंगे। इससे पहले, जैसे पांडवों और कौरवों ने अपने सहयोगियों को एकत्र किया था, वैसे ही विश्व 100% गुटों में बँट जाएगा। युद्ध के साथ-साथ महाप्रलय जैसी बाढ़ भी आएगी। कल्पना कीजिए कि हम एक जगह बैठे हैं, और अचानक बादल फटने से भीषण बाढ़ आ जाती है। भूकंप और अग्नि की आपदाएँ भी होंगी। यह सब पंचतत्वों के माध्यम से होगा। हम प्रकृति से जितना अधिक लड़ेंगे, अगले वर्ष उसकी उग्रता उतनी ही बढ़ेगी। युद्ध विश्व का नक्शा पूरी तरह बदल देगा। भारत के कुछ भाग सुरक्षित रहेंगे, लेकिन अन्य भागों में भारी विनाश होगा। बाढ़ और महामारियाँ आएँगी। यह चलता रहेगा। धर्म की स्थापना बाढ़, अग्नि, भूकंप, महामारी, रोग, साम्प्रदायिक हिंसा और युद्ध के माध्यम से होगी। युद्ध निश्चित है। इसलिए मैं एक बात कहना चाहता हूँ: धर्म के मार्ग की ओर आइए। चाहे यह '23 में हो या '24 में, यह अवश्य होगा। जब तक 12,000 भक्त भगवान की शरण न ले लें और 16 मंडल (दिव्य मंडल) स्थापित न हो जाएँ, तब तक धर्म स्थापना की प्रक्रिया चलती रहेगी। मानवता के बचने का सबसे बड़ा मार्ग वही है जो मैं आपको मालिका से बता रहा हूँ: श्रीमद्भागवत पढ़िए, शाकाहारी बनिए (मांस, मछली, अंडा मत खाइए), और गाय तथा अन्य पशुओं जैसे छोटे जीवों को भोजन कराकर दान का अभ्यास कीजिए। इससे धर्म आगे बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:14 · 27 जून 2021

प्रश्न 123 आपने कहा था कि महा सुधर्म महासंघ बन चुका है, तो कृपया इसकी वर्तमान स्थिति के बारे में बताइए। आपने यह भी कहा था कि आपको मालिका के प्रचार के लिए निर्देश मिले हैं; कृपया उन निर्देशों के बारे में बताइए। मेरा कहने का अर्थ यह है कि क्या आप भगवान से मिले हैं? मुझे नहीं पता कि मैंने सही पूछा है या नहीं।

उत्तर: देखिए बेटी, जय जगन्नाथ। जैसे आप मालिका का अनुसरण कर रही हैं, वैसे ही जो कोई धर्म की चर्चा करता है, उसके सिद्धांतों पर विचार करता है, और शास्त्रों को विश्व भर के भक्तों तक पहुँचाता है, वह भी पुण्य अर्जित करता है। हम यह कार्य अपने ही जीवन की मुक्ति के लिए कर रहे हैं। आपके प्रश्न के संबंध में कि मुझे जो निर्देश मिले, वह एक गुप्त विषय है और सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। लेकिन भगवान की कृपा से मैं इतना सरलता से कहूँगा: यह मालिका 600 वर्ष पहले लिखी गई थी। अब इसका प्रचार क्यों हो रहा है? भारत में अनेक ज्ञानी संत हैं, लेकिन यह जिम्मेदारी किसी विशेष व्यक्ति को दी गई। जिसे दी गई, वह इसका प्रचार कर रहा है। मालिका के प्रचार को ही भगवान का आशीर्वाद मानिए। दूसरी बात, आपने जिस सुधर्म संघ के बारे में पूछा, भारत और विश्व में सनातन धर्म की स्थापना के लिए 64 करोड़ लोग संतों में परिवर्तित होंगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे किस धार्मिक संस्था से हैं या उनका धर्म क्या है; सभी मतों के लोग सनातन धर्म में आएँगे।

जैसे विभीषण भगवान राम की शरण में आने के लिए पहले हनुमान के पास गए। राम की शरण लेकर वे संत और अमर हो गए। इसी प्रकार, विश्व में जो लोग सनातन धर्म का पालन नहीं करते, वे सनातन धर्म में आएँगे। और भारत में जो सनातन धर्म का पालन नहीं करते, उन्हें आना ही होगा। यदि वे नहीं आएँगे, तो भगवान उनसे निपटेंगे; उस पर टिप्पणी करना हमारे लिए उचित नहीं है। सनातन धर्म का कार्य पहले होगा, और सुधर्म संघ बन चुका है। सुधर्म संघ से जुड़ने के लिए, जो फोन नंबर दिया गया है उससे संपर्क कीजिए और उनसे बात कीजिए। मालिका स्पष्ट कहती है कि जो लोग भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों में उनके साथ थे—वृंदावन में गोपियों के रूप में, राम अवतार में, बुद्ध अवतार में, चैतन्य अवतार में, या जो वैकुंठ में उनके साथ निवास करते हैं—वे पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। केवल वही सुधर्म महासंघ का निर्माण करेंगे; हर कोई नहीं कर सकता। केवल वही जो नियत हैं, जिन्होंने इसी उद्देश्य से जन्म लिया है, सुधर्म संघ में शामिल होंगे। जो शामिल होंगे, वे भगवान कल्कि के आदेश के अनुसार पूरे विश्व में कार्य करेंगे। जो सनातन धर्म में रहेंगे और उसके सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारेंगे, वे सुरक्षित रहेंगे और राम राज्य से सत्य युग में प्रवेश करेंगे। यही महान मार्ग है। इस मार्ग का अनुसरण कीजिए, मालिका का अनुसरण कीजिए। समय बहुत गंभीर है, लेकिन इससे निकलने का, बचने का मार्ग है। मालिका के माध्यम से हम जो मार्ग दिखा रहे हैं, वह हमारा मार्ग नहीं है; हम साधारण मनुष्य हैं, संत नहीं। हम भगवान की शरण में कार्य करते हैं, और आपको भी करना चाहिए। हमें किसी सम्मान की आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 22:31 · 27 जून 2021

प्रश्न 124 एक सप्ताह पहले मुझे स्वप्न आया कि मैं लव और कुश के काल में थी, भगवान राम के रघुवंश, इक्ष्वाकु वंश के शासनकाल में। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: मालिका का अनुसरण करने के लिए आप जैसे लोग हैं। मालिका इसी उद्देश्य से लिखी गई है: भगवान की शरण में आने के लिए। मालिका के प्रचार के साथ ऐसे सभी भक्त आगे आएँगे। तो, यदि आप ऐसी चीजें देख रही हैं, तो मालिका का अनुसरण कीजिए। मालिका के माध्यम से, जिस उद्देश्य से हम इस पृथ्वी पर आए हैं, वह पूर्ण होगा। ठीक है, माताजी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:13 · 27 जून 2021

प्रश्न 125 महाराज जी, अगली बड़ी घटना क्या होगी? मेरा मतलब है, इस वर्ष या अगले वर्ष, जैसे कोरोना एक बड़ी घटना थी, आने वाली अगली बड़ी घटना क्या है?

उत्तर: मैंने पहले भी कहा है। मालिका का एक पद कहता है, 'माल माल धरणी हेब, शून्य हेब देश, काहारि मुखे न स्फुरिब, ईश्वरंक नाम।' इसका अर्थ है कि धरती शवों से भर जाएगी, राष्ट्र खाली हो जाएँगे, और किसी के मुख पर भगवान का नाम नहीं होगा। विश्व भर में मृत्यु का तांडव होगा, और लोग पीड़ा में चीत्कार करेंगे। कोई भी शक्ति धर्म की स्थापना को रोक नहीं सकती। जब मानवता अपने स्वार्थ और भोग के लिए वेद, धर्म और भगवान के मार्ग का उल्लंघन करती है, पूरे विश्व की बलि चढ़ा देती है, तब धर्म की रक्षा और पृथ्वी को बचाने के लिए—अन्यथा पृथ्वी बचेगी नहीं, क्योंकि धरती माता रो रही हैं—यह प्रक्रिया चलती रहेगी। कोई इसे रोक नहीं सकता; यह और तीव्र ही होगी। अनेक घटनाएँ घटित होंगी। मैं न भी कहूँ, तो भी आप समझ सकते हैं। स्थिति और बिगड़ेगी। लोगों का रोजगार घटेगा। शिक्षा घटेगी। विश्व में जो विकास हो रहा है, वह घटेगा। महँगाई बढ़ती जाएगी जब तक कि वह बेकाबू न हो जाए। उसके बाद जीने का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। सबसे बड़ी बात है धर्म के मार्ग का अनुसरण करना।

► यह उत्तर सुनें · 29:37 · 27 जून 2021

प्रश्न 126 तो, क्या हमें अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए और सब कुछ करना बंद कर देना चाहिए?

उत्तर: नहीं बेटा। जब तक संसार है, कार्य करते रहिए और भगवान का नाम जपिए। और जो मार्ग मैं बता रहा हूँ, वह सरल शाकाहारी मार्ग, अपने जीवन में अपनाइए। काम और वासना के पीछे मत भागिए। महाप्रभु ने लिखा है, 'मर्त्ये मानवंक बुद्धि पृथ्वी व्यापिब, कामासक्त पुरुषंक संख्या बढ़िजिब,' अर्थात संसार कामासक्त लोगों से भर जाएगा। संसार इससे भरा हुआ है। लोग वासना के लिए कुछ भी कर डालते हैं। उस मार्ग पर मत जाइए। जो पाप करते हैं, उन्हें अपने कर्मों का फल मिलेगा। जब व्यक्ति धर्मपरायण हो, तो उस धर्म के मार्ग का अनुसरण कीजिए। अपनी शिक्षा जारी रखिए बेटा, लेकिन धर्म के मार्ग को मत भूलिए। समय आने पर आप समझ जाएँगे कि क्या करना है। अभी पढ़ाई कीजिए और साथ ही धर्म के मार्ग का भी अनुसरण कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:56 · 27 जून 2021

प्रश्न 127 जब भगवान कल्कि आएँगे, तो क्या लोगों का कद छोटा होगा? कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: श्रीमद्भागवत में लिखा है कि कलियुग के अंतिम क्षण में मनुष्यों का कद घट जाएगा। गौ माता का कद भी घट जाएगा। जब आप यह देखें, तो जानिए कि कलियुग का अंत निकट है। श्रीमद्भागवत में अन्य लक्षण भी बताए गए हैं: पुरुष पुरुषों से विवाह करेंगे, स्त्रियाँ स्त्रियों से विवाह करेंगी, भाई बहनों से विवाह करेंगे, शासक अपनी प्रजा को लूटेंगे, और कर का बोझ इतना बढ़ जाएगा कि लोगों के लिए उसे सहना कठिन हो जाएगा। उचित समय पर वर्षा नहीं होगी; बेमौसम बाढ़ आएगी और मौसम में सूखा पड़ेगा। पृथ्वी अपनी शक्ति छिपा लेगी। मानव समाज में सब कामवासना के पीछे भागेंगे, और स्वार्थ सबसे प्रमुख गुण होगा। लोग धन के पीछे भागेंगे, और किसी में दया या क्षमा नहीं होगी। ये सभी लक्षण एक-एक करके विश्व में प्रकट हो रहे हैं। कद की बात करें तो, हमारे पूर्वज—हमारे दादा और परदादा—हमसे अधिक लंबे थे। हमारी ऊँचाई पहले ही घट चुकी है। दूसरी बात, यदि आप भारत के गाँवों में जाकर देसी भारतीय गायों को देखें, संकर नस्ल की नहीं, तो आप देखेंगे कि उनका कद बहुत छोटा हो गया है। यद्यपि यह हर जगह दिखाई न दे, पर कुछ स्थानों पर लक्षण प्रकट हो रहे हैं। सबसे बड़ा प्रमाण मालिका है, और उसमें जो लिखा था वह एक-एक कर घटित हो रहा है। यह धर्म की स्थापना का समय है। इस समय में हमें संयम के साथ मालिका के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 33:26 · 27 जून 2021

प्रश्न 128 धर्म और अधर्म के इस प्रवाह में क्या होगा? जब संसार में सत्य, दया और क्षमा नहीं हैं, तो धर्म की विजय कैसे होगी?

उत्तर: होगा यह कि संसार में सत्य, दया और क्षमा के अभाव में भी धर्म की पूर्ण विजय होगी। दूसरी बात, इस संबंध में महापुरुष अच्युतानंद ने अपनी भविष्य मालिका में लिखा है, 'कैंफुल बीजे हेबे एक गुप्त स्थान, पुरी खोलि देखाइले हेब दरशन।' इसका अर्थ है कि देवों के देव महादेव एक गुप्त स्थान पर विराजमान रहेंगे। उनके नीचे अनेक योगी तपस्या करेंगे। फिर वे भगवान कल्कि को प्राप्त करेंगे। मार्ग खुल चुका है, भगवान के भक्तों की जय हो।

► यह उत्तर सुनें · 36:39 · 27 जून 2021

प्रश्न 129 हम कैसे निश्चित रूप से भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते हैं और सही मार्ग पर बने रह सकते हैं?

उत्तर: यह भगवान का चमत्कार है बेटा। वे सभी मनुष्यों को बदल सकते हैं। यदि हम धर्म के मार्ग पर रहेंगे, तो हमें भगवान का आशीर्वाद मिलेगा। मुख्य बात है धर्म के मार्ग पर रहना, काम और वासना के पीछे न भागना। सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग का अनुसरण कीजिए। धर्मपूर्ण कर्म कीजिए। भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखिए। यदि आप ओडिशा में इस मार्ग का अनुसरण करेंगे, तो आपको निश्चित रूप से भगवान की कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 38:04 · 27 जून 2021

प्रश्न 130 अपने एक वीडियो में आपने बताया था कि चारों युगों की कुल अवधि लगभग 12,000 वर्ष है, जिसमें कलियुग सबसे लंबा है। कृपया चारों युगों की गणना और अवधि समझाइए और यह भी कि कलियुग की आयु सबसे लंबी क्यों है?

उत्तर: रांची के एक सज्जन ने यह प्रश्न पूछा। शास्त्रों के अनुसार, विशेष रूप से सूर्य सिद्धांत में लिखा है: 'तत् द्वादश सहस्राणि चतुर्युगम् उदाहृतम्,' अर्थात चारों युग मिलकर 12,000 दिव्य वर्ष होते हैं। युग की अवधि धर्म की उपस्थिति के व्युत्क्रमानुपाती होती है। धर्म जितना अधिक घटता है, युग की अवधि उतनी ही लंबी होती जाती है। सत्य युग में धर्म चार चरणों पर खड़ा था, इसलिए वह 1200 वर्ष तक चला। त्रेता युग में धर्म का एक चरण कम हो गया, इसलिए उसकी अवधि दोगुनी होकर 2400 वर्ष हो गई। द्वापर युग में एक और चरण कम हुआ, इसलिए उसकी अवधि तिगुनी होकर 3600 वर्ष हो गई। कलियुग में धर्म केवल एक चरण पर खड़ा है, इसलिए उसकी अवधि चार गुनी, यानी 4800 वर्ष है। इनका कुल योग एक चतुर्युग चक्र के लिए 12,000 दिव्य वर्ष होता है। मालिका के अनुसार, कलियुग की आयु 5,000 वर्ष है। मनुस्मृति के अनुसार यह 4,800 वर्ष है। गर्ग संहिता के अनुसार यह 4,800 वर्ष है। निर्णय सिंधु के अनुसार भी यह 4,800 वर्ष है। मालिका कहती है कि जब कलियुग के 5,000 वर्ष पूर्ण होंगे, तब जगन्नाथ पुरी के क्षेत्र से अनेक लक्षण प्रकट होंगे, विश्व भर में एक महामारी फैलेगी, और उस समय धर्म की स्थापना के लिए भगवान अवतार लेंगे और भक्त एकत्र होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 39:34 · 27 जून 2021

प्रश्न 131 पंडित जी, अब तक कितने भक्त सुधर्म संघ से जुड़ चुके हैं?

उत्तर: देखिए, मालिका के अनुसार विश्व भर से 12,000 भक्त सुधर्म महासंघ में जुड़ेंगे। अब तक लगभग 850 लोगों की पहचान हुई है। लेकिन इसके लिए कोई रजिस्टर नहीं है। कोई सदस्यता नहीं है... कोई सीमा या बंधन नहीं है। जो अपनी तपस्या के द्वारा धर्म से जुड़े हुए हैं, वे स्वयं ही सुधर्म महासंघ में आते हैं। समय बताएगा कि कौन आ रहा है। मालिका कहती है कि मालिका और सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ, जिन्हें सुधर्म संघ में आना है, वे स्वयं ही आ जाएंगे। इसके लिए कोई विशेष नियम नहीं है; वे स्वयं ही आएंगे। हमारा कर्तव्य है मालिका का प्रचार करना, और आपका कर्तव्य है उसके मार्ग पर चलना। यही हमारी विनम्र प्रार्थना है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:41 · 27 जून 2021

प्रश्न 132 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि आने वाले समय में कर्नाटक के शारदा पीठ की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: मालिका में दक्षिण भारत के अनेक भक्तों के बारे में लिखा गया है। धर्म की स्थापना में संपूर्ण भारत का योगदान होगा—दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम। मालिका 1,50,000 श्लोकों का विशाल ग्रंथ है। हमने जितना पढ़ा है, उसमें हमने देखा है कि महापुरुष ने पूरे भारत के भक्तों के बारे में लिखा है। कर्नाटक के बारे में निश्चित रूप से लिखा है, परंतु वह विशेष अंश व्यक्तिगत रूप से मेरे सामने नहीं आया, इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। लेकिन भारत के हर जिले और हर गाँव के बारे में लिखा है। इसमें कोई संदेह नहीं है। मालिका का प्रचार संपूर्ण भारत और उसके भक्तों के लिए है। कर्नाटक, तमिलनाडु, रामेश्वरम और आंध्र प्रदेश के लोग—सभी उन 16 मंडलों (दिव्य मंडलों) का हिस्सा होंगे जो बनाए जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:35 · 27 जून 2021

प्रश्न 133 मेरा एक प्रश्न है। कुछ रातों पहले मैंने सपना देखा कि भगवान शिव मेरे घर आए और मुझे बाहर बुलाया। उन्होंने मुझसे अपने साथ चलने को कहा, मुझे आगे चलने को कहा और वे पीछे-पीछे आए। मैं उनके साथ हिमालय पर्वत तक गया। उन्होंने मुझसे चढ़ने को कहा, और मैं चढ़ा, बहुत ऊँचाई तक पहुँच गया। वहाँ मैंने भगवान विष्णु की एक बहुत बड़ी मूर्ति देखी। उन्होंने मुझसे उसके नीचे से निकलने को कहा। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो भगवान शिव और हनुमान जी वहाँ खड़े थे। मैं मूर्ति के नीचे से गया और वहाँ एक छोटा मंदिर मिला जिसमें एक पुजारी थे जिन्होंने कहा कि वे बहुत समय से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। बस इतना ही मैंने देखा। साथ ही, बचपन से कभी-कभी मेरे सिर पर जटा बन जाती है। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: आपके सपने के संबंध में, यह समझिए कि 33 करोड़ देवताओं ने पृथ्वी पर मनुष्य रूप में जन्म लिया है। उनका दिव्य स्वरूप सुधर्म सभा में प्रकट होगा। जैसे राजसूय यज्ञ के समय पांडवों को दिव्य शक्ति प्राप्त हुई थी, वैसे ही मनुष्य रूप में रह रहे सभी देवता और संत सुधर्म सभा में अपनी शक्तियाँ प्राप्त करेंगे। मालिका कहती है कि भगवान महादेव कैलाश से आएँगे। यह सपना आपके पूर्वजन्म के आध्यात्मिक पुण्यों का संकेत है। सपने का मुख्य संदेश यह है कि आपको भगवान कल्कि की शरणागति में आना होगा। आपकी दिव्यता और शक्तियाँ सुधर्म सभा के समय सक्रिय होंगी, उससे पहले नहीं। तब तक आप समाज को कैसे दिखाई देते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। चमत्कार दिखाने के बारे में मत सोचिए। बस अपनी साधना जारी रखिए और भगवान के मार्ग पर चलिए। यही आपके लिए कल्याणकारी है।

► यह उत्तर सुनें · 45:32 · 27 जून 2021

प्रश्न 134 आने वाली घटनाओं में ओडिशा के देवी-देवताओं और मंदिरों, जैसे माधवानंद मंदिर और माँ बिरजा, की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: ओडिशा का माधवानंद मंदिर बहुत प्राचीन है। सूर्य और चंद्रमा इसके साक्षी हैं। माँ भगवती... बिरजा मंदिर में सूर्य और चंद्रमा उनके रथ के द्वारपाल हैं। ओडिशा के सभी देवी-देवता अपनी शक्ति प्राप्त करेंगे और धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:38 · 27 जून 2021

प्रश्न 135 पंडित जी, क्या आप कृपया सभी के लाभ के लिए अपना पिछला उत्तर हिंदी में समझा सकते हैं?

उत्तर: ओडिशा से एक भक्त ने फोन किया था और माँ बिरजा के बारे में पूछा था। मैंने उन्हें बताया कि माँ बिरजा के वार्षिक रथ महोत्सव के समय सूर्य और चंद्रमा उनके रथ के द्वारपाल की भूमिका निभाते हैं। माँ बिरजा देवी वैष्णवी हैं और वैष्णवी शक्ति हैं। वे आदिमाता योगमाया हैं। योगमाया और भगवान कल्कि मिलकर धर्म की स्थापना करेंगे। आठ दुर्गाएँ अलग हैं, और योगमाया अलग हैं। यही मैंने उन्हें समझाया था।

► यह उत्तर सुनें · 53:09 · 27 जून 2021

प्रश्न 136 कोरोना और अन्य आपदाएँ हो रही हैं, तो क्या जो भक्त मालिका का अनुसरण करते हैं और भगवान की शरण में हैं, वे भी प्रभावित हो रहे हैं?

उत्तर: देखिए, जिन लोगों से मैं जुड़ा हूँ, जो मालिका का अनुसरण करते हैं और भगवान की शरण में आ चुके हैं, उनमें से जिनमें सच्ची भक्ति है, वे प्रभावित नहीं हुए—चाहे कुछ भी हो, महामारी हो या कुछ और। परंतु जिनके भाग्य में भगवान की लीला देखना नहीं लिखा है, जिन्होंने अपना धर्म नहीं निभाया, धर्म की स्थापना के समय उनके साथ क्या होगा, यह भगवान पर निर्भर है। मालिका सभी भक्तों को मार्ग दिखाने के लिए लिखी गई है। यदि भक्त इस मार्ग से भटक जाते हैं, तो उनका भाग्य भगवान के अधीन है। लेकिन यदि कोई भगवान के उस नाम को पकड़े रहे जिसका प्रचार हो रहा है, तो बच जाना असंभव नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 54:29 · 27 जून 2021

प्रश्न 137 पिछले एपिसोड में आपने कहा था कि बुद्ध नौवें अवतार थे। लेकिन यह प्रमाणित नहीं है कि वे नौवें अवतार थे। मेरे विचार से साईं बाबा नौवें अवतार थे। कृपया बताइए कि मालिका इस विषय में क्या कहती है, क्योंकि वह तो सब कुछ बताती है।

उत्तर: बेटा, मैं आपके विचार का सम्मान करता हूँ, क्योंकि हम सभी की इच्छाओं का सम्मान करते हैं। परंतु मालिका का अनुसरण करने वाले एक सनातनी हिंदू के रूप में, मुझे अपने मूल शास्त्रों का संदर्भ देना होगा। श्रीमद्भागवत स्पष्ट रूप से संस्कृत में कहता है: 'ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम्, बुद्धो नाम्नाञ्जनसुतः कीकटेषु भविष्यति।' इसका अर्थ है कि जब कलियुग का आरंभ होगा, तब देवताओं के शत्रुओं को मोहित करने के लिए भगवान कीकट प्रदेश (गया) में अंजना के पुत्र बुद्ध के रूप में जन्म लेंगे। इसके अतिरिक्त, भगवान जगन्नाथ के परम भक्त कवि जयदेव ने भगवान की प्रेरणा से गीत गोविंद की रचना की। अपने दशावतार स्तोत्र में उन्होंने भगवान बुद्ध के बारे में लिखा: 'निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं, सदयहृदय दर्शितपशुघातम्, केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे।' इसका अर्थ है, 'हे केशव! हे जगदीश! हे हरि, जिन्होंने बुद्ध का रूप धारण किया! आपकी जय हो! हे करुणामय हृदय वाले बुद्ध, आप वैदिक यज्ञों की विधि के अनुसार किए जाने वाले निरीह पशुओं के वध की निंदा करते हैं।' ये दोनों ही हमारे सनातन धर्म से हैं। साईं बाबा के विषय में, मालिका में उनका उल्लेख अवश्य है। परंतु यदि मैं आपको बता दूँ कि उसमें क्या लिखा है, तो आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए पूरी विनम्रता के साथ, मैं क्षमा चाहता हूँ, मैं उस विषय में नहीं बोल सकता।

► यह उत्तर सुनें · 56:40 · 27 जून 2021

प्रश्न 138 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, एक शोधकर्ता ने ज्योतिषीय और भूवैज्ञानिक आँकड़ों के आधार पर रामायण और महाभारत की तिथियों की गणना की है। क्या उनका तिथि-निर्धारण सही है? दूसरा, मालिका के गलत प्रचार को रोकने के लिए, क्या हम इसे हिंदी और अन्य भाषाओं में छपवाकर वितरित नहीं कर सकते?

उत्तर: तिथियों संबंधी आपके पहले प्रश्न के विषय में, हमारा धर्म सनातन है। मत्स्य अवतार से पहले भगवान विष्णु ने राजा सत्यव्रत को निर्देश दिया था कि वे सभी वेद, पुराण और औषधियाँ एकत्र कर लें, क्योंकि एक महाप्रलय आने वाला था। प्रलय के बाद ये सभी शास्त्र पुनः प्रकट हुए। धर्म हर युग में विद्यमान है। बीते युगों के स्थान आज भी विद्यमान हैं। द्वापर युग का वृंदावन, जो 5,000 वर्ष से भी अधिक पुराना है, आज भी यहीं है। त्रेता युग में भगवान राम के समय की सरयू नदी आज भी यहीं है। ये केवल ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं हैं; ये एक शाश्वत सत्य का हिस्सा हैं। हम इतिहासकारों का सम्मान करते हैं, लेकिन शास्त्र अपनी शाश्वत धारा में चलते हैं। आपके दूसरे प्रश्न के विषय में, यह अच्छी बात है। हम मालिका का प्रचार कर सकते हैं, लेकिन यदि हम इसे हिंदी में पुस्तक के रूप में प्रकाशित करें, तो लोग हिंदी और अंग्रेजी संस्करण बनाकर इसे व्यापार बना देंगे। इसीलिए हम इसे संस्करण के रूप में प्रकाशित नहीं करते। इसके बजाय, मालिका के संदेश का प्रचार कीजिए। देखिए बेटा, समय बहुत कम है। 2029 तक विश्व में एक चक्रवाती परिवर्तन आने वाला है। इस संकटपूर्ण समय में, स्वयं को बचाने के लिए मालिका के मार्ग पर चलिए। फिर हम सब मिलकर सुधर्म सभा में कार्य कर सकते हैं। इस समय सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप और आपका परिवार कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। उसी मार्ग पर चलिए। यदि कोई अच्छा व्यक्ति दिखे, तो उसे मालिका के मार्ग और इस सत्संग की ओर मार्गदर्शन दीजिए। अपना आध्यात्मिक कार्य जारी रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:19 · 27 जून 2021

प्रश्न 139 मेरा एक प्रश्न है। क्या मालिका में श्री रामकृष्ण परमहंस का कोई उल्लेख है?

उत्तर: हाँ, भक्तों के बारे में लिखा गया है। महापुरुष अच्युतानंद ने रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के बारे में लिखा है। वे भी पंचसखा परंपरा से जुड़े हुए थे। विवेकानंद के बारे में स्पष्ट रूप से लिखा है। अनुकूलचंद्र बाबा के बारे में भी लिखा है। मालिका बताती है कि कौन-कौन से संत पृथ्वी पर अवतरित होंगे। उनके बारे में सब कुछ लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:41 · 27 जून 2021

प्रश्न 140 गणेश चतुर्थी के इस शुभ अवसर पर कृपया बताइए: क्या मालिका में युग परिवर्तन में भगवान गणेश की भूमिका का वर्णन है?

उत्तर: भगवान गणेश सर्वोच्च देवता हैं, प्रथम पूज्य हैं। मालिका कहती है कि धर्म की स्थापना के समय सभी 33 करोड़ देवता अपने साक्षात् स्वरूप में पृथ्वी पर उपस्थित रहेंगे। जो सुधर्म सभा का हिस्सा होंगे, वे उस समय उन सभी के दर्शन कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:52 · 27 जून 2021

प्रश्न 141 जय जगन्नाथ, पंडित जी। ओडिशा के भद्रक जिले में गोरा टिकिरी नाम का एक स्थान है। कहा जाता है कि वहाँ पांडवों के अस्त्र-शस्त्र रखे हुए हैं। क्या यह कोई गुप्त सत्य है?

उत्तर: हाँ, यह भद्रक जिले में है, और गोरा टिकिरी में पांडवों के अस्त्र-शस्त्रों का भंडार है। यह एक गुप्त तत्व है। मैं पुराने रहस्यों को उजागर नहीं करता।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:01 · 27 जून 2021

सत्र 7 · प्रश्न 142–143

L7 महाविनाशक परमाणु बम से रक्षा पाने का उपाय। #kashinathmishra

दिनांक: 4 जुलाई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 142 ऐसा क्यों होता है कि भगवान का भक्त इतना कष्ट सहता है, जबकि जो भक्त नहीं है वह अपना जीवन सुखपूर्वक बिताता है?

उत्तर: वक्ता इसे श्रीमद्भागवत में युधिष्ठिर और भगवान कृष्ण के बीच हुए संवाद का संदर्भ देकर समझाते हैं। भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा था कि जो ब्रह्मा, महादेव या देवी की उपासना करते हैं, उन्हें इसी जीवन में अच्छे फल मिलते हैं। उदाहरण के लिए, जो महादेव की उपासना करता है, थोड़े ही समय में महालक्ष्मी उसके घर को धन-धान्य और समृद्धि से भर देती हैं। परंतु जो मेरी (भगवान कृष्ण/विष्णु की) उपासना करते हैं, उन पर कष्ट आते हैं, क्योंकि मैं उनके कर्म अपने ऊपर ले लेता हूँ। मैं उनके अनेक पूर्व जन्मों के कर्म अपने ऊपर ले लेता हूँ ताकि उन्हें पवित्र, पुण्यवान और सुंदर मनुष्य बना सकूँ, उन्हें वैकुंठ (दिव्य धाम) तक पहुँचाने का प्रयास करूँ। इसीलिए विष्णु के भक्त को इस जीवन में अवश्य कष्ट झेलने पड़ते हैं। परंतु मृत्यु के समय वे वैकुंठ जाते हैं और शाश्वत आनंद प्राप्त करते हैं। मानव जीवन की धारा में, जो भगवान विष्णु की शरण लेते हैं, वे मुक्ति प्राप्त करते हैं। उन्हें यातना नहीं भोगनी पड़ती, वे नीच योनि में जन्म नहीं लेते, और उन्हें अनंत सुख मिलता है। इसलिए भगवान के भक्त इस जीवन में दुखी रहते हैं। परंतु इन सभी दुखों को समाप्त करने के लिए, भगवान कल्कि इस अनंत युग में चारों युगों के भक्तों को एकत्र करेंगे और उन्हें अनंत सुख देंगे। भक्तों के लिए सुख का समय आ रहा है, और पापियों के लिए विनाश का समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 16:45 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 143 आप कह रहे थे कि जब महाप्रलय होगा, तब बहुत से लोग मरेंगे। क्या उनका अंतिम संस्कार होगा, और क्या उनकी आत्माओं को शांति मिलेगी?

उत्तर: वक्ता समझाते हैं कि जैसे संसार में जिन लोगों की अकाल या दुर्घटनावश मृत्यु होती है, उनका अंतिम संस्कार प्रायः नहीं हो पाता। ऐसा उनके पूर्व कर्मों के कारण होता है। वे भूत-प्रेत बन जाते हैं और अनेक युगों तक भटकते रहते हैं। इसी प्रकार, आने वाले विनाश में जो लोग मरेंगे, चाहे भारत में हों या पूरे विश्व में, उनका अंतिम संस्कार करने के लिए कोई नहीं बचेगा। यह उनके पूर्व जन्मों में संचित भयंकर कर्मों का परिणाम है। उनका संस्कार नहीं होगा, और वे भूत-प्रेत तथा भटकती आत्माएँ बन जाएँगे, अनेक युगों तक कष्ट भोगेंगे। यही दुखद नियति उनकी प्रतीक्षा कर रही है।

► यह उत्तर सुनें · 20:59 · 4 जुलाई 2021

सत्र 8 · प्रश्न 144–161

L8 महाविनाशक परमाणु बम से रक्षा पाने का उपाय, #kashinathmishra

दिनांक: 4 जुलाई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 144 मैंने पहले ही एक गुरु से दीक्षा ले ली है और मैं उसी मंत्र का जप करता हूँ। लेकिन अब, जैसा कि आप प्रचार कर रहे हैं, और मैं व्हाट्सएप तथा अन्य भक्तों के माध्यम से संपर्क में आया, उन्होंने मुझसे 'माधव' नाम जपने को कहा। मैं दोनों में सामंजस्य कैसे बिठाऊँ? वह पिछला मंत्र मेरे भीतर गहराई तक बस चुका है। इस नए मंत्र का जप मैं कैसे करूँ? कृपया मार्गदर्शन कीजिए, पंडित जी।

उत्तर: यह चुनाव सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है। जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने के लिए भगवान की शरण में आना मानव जीवन के लिए अनिवार्य है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस समय भगवान का अवतार पृथ्वी पर आ चुका है, और धर्म की स्थापना चल रही है। इसलिए हमारे लिए भगवान की शरण लेना आवश्यक है, क्योंकि इस संसार में भगवान से बड़ा कोई नहीं है। संसार में चाहे कुछ भी हो जाए, भगवान की शरण लेना आवश्यक है। भगवान माधव का नाम, जिसका मैं अपने सनातन धर्म में बार-बार उल्लेख करता हूँ... हमारे सनातन धर्म के जो समूह हैं, उनसे जुड़िए, वहाँ आपको बताया जाएगा, और मैं भी आपको अभी बता रहा हूँ: निरंतर 'माधव' नाम का जप कीजिए। और जो दूसरा गुरु मंत्र आपको मिला है, उस मंत्र का प्रयोग अपनी पूजा के समय कीजिए। और पूजा के समय आप भगवान कल्कि का नाम 'माधव' भी जप सकते हैं। पूजा के समय के अतिरिक्त, दिन-रात जितनी देर आप जागते हैं, उतने समय भगवान के नाम का जप करते हुए उनकी शरण लीजिए। यही सर्वोत्तम मार्ग होगा।

► यह उत्तर सुनें · 02:26 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 145 पंडित जी, तीसरी लहर शुरू हो गई है। सतनाम (सच्चे नाम) का जप करने के साथ-साथ मैंने वैक्सीन की दो खुराकें भी ले ली हैं। क्या हमें उपवास भी रखना चाहिए?

उत्तर: मैं किसी को मना नहीं करता। जिन्हें कोई रोग है, कोई दुर्बलता है, या जो वृद्ध हैं, उनके लिए उपवास रखना आवश्यक नहीं है। जो लोग उपवास रख सकते हैं, जिन्हें वर्ष भर उपवास रखने से कोई कष्ट नहीं होगा, उन्हें उपवास रखना चाहिए। बाकी लोग बस भगवान की शरण लें और सनातन धर्म के प्रचार के कार्य में जुट जाएँ। आप सभी से मेरी यही विनती है।

► यह उत्तर सुनें · 05:05 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 146 यह जो युद्ध होने वाला है, वह कब होगा और कितने समय तक चलेगा? और धर्म की स्थापना कब होगी?

उत्तर: धर्म की स्थापना तो पहले से ही चल रही है। यह रोगों, महामारियों, साम्प्रदायिक हिंसा और विश्वयुद्ध जैसे विभिन्न माध्यमों से हो रही है। जैसे-जैसे दुष्कर्मियों की संख्या घटेगी और मानवता की स्थापना होगी, तभी हम कह सकते हैं कि धर्म की स्थापना हो रही है। दुष्टों का विनाश धर्म-स्थापना का ही अंग है, क्योंकि इस संसार में धर्म का उल्लंघन मनुष्य ही करते हैं। जब शास्त्रों के अनुसार धर्मात्मा लोगों की संख्या बढ़ती है, तब धर्म की स्थापना होती है। वर्तमान में संसार की जनसंख्या चारों युगों की कुल जनसंख्या से कई हजार गुना अधिक है। दूसरी बात, मनुष्य भ्रष्ट हो गए हैं और उन्होंने वैदिक सिद्धांतों का उल्लंघन किया है। तीसरी बात, कलियुग का समय भी समाप्त हो चुका है। इसलिए धर्म की स्थापना का कार्य चल रहा है। आप देख रहे हैं, कोविड के रोगी हैं, घरों में आग लग रही है, सड़क पर बाइकों में आग लग रही है, जंगलों में आग लग रही है,

और बिना किसी कारण अचानक घरों में आग लग जाती है। और साल-दर-साल बार-बार चक्रवात आ रहे हैं, जो मानव समाज के लिए महान दुःख का कारण हैं। सरकारों का दमनकारी शासन, जो जनता पर इतना बोझ डाल देता है कि गरीब और मध्यम वर्ग के लिए जीना कठिन हो जाता है, वह भी धर्म-स्थापना का ही एक संकेत है। इसके लिए युद्ध निकट है और कम से कम छह वर्ष तक चलेगा। युद्ध के बीच-बीच में, धर्म की स्थापना के लिए, भीषण अग्निकांड होंगे, प्रचंड गर्मी पड़ेगी, और विशाल भूकंप आएँगे। यह सभी क्षेत्रों में होगा। आप पहले से ही बाढ़, बेमौसम बारिश और बार-बार भूस्खलन देख रहे हैं। यही धर्म-स्थापना का समय है। इससे भी बड़ी विपत्तियाँ अभी आनी बाकी हैं। परंतु भगवान की शरण में रहिए। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 06:43 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 147 मैं प्रतिदिन आपकी मालिका सुनता हूँ, और ऐसा लगता है मानो मैं कई जन्मों से प्रतीक्षा कर रहा था। तो, भगवान कल्कि आ चुके हैं, परंतु हम उनसे कैसे मिल सकते हैं? क्या आप इस बारे में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जो लोग सनातन धर्म से जुड़ेंगे... देखिए, मैं यह अपनी ओर से नहीं कह रहा हूँ, मैं मालिका के वचनों के अनुसार प्रचार कर रहा हूँ। विश्व सनातन धर्म संगठन सशक्त होगा, और सभी धर्मों के लोग उससे जुड़ेंगे। इसी विश्व सनातन धर्म संगठन से भक्त जाकर भगवान कल्कि से मिलेंगे। मालिका में यही मार्ग बताया गया है। उद्देश्य है भक्तों का उद्धार और पापियों का विनाश। यही धर्म की स्थापना है।

► यह उत्तर सुनें · 09:40 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 148 मेरा दूसरा प्रश्न यह है, मुझे नहीं पता कि मैं सही हूँ या नहीं, परंतु आपकी मालिका में कहा गया है कि कोहिनूर हीरा भगवान कल्कि वापस लाएँगे। क्या यह सही है?

उत्तर: देखिए, जो वास्तव में भारत का है... भारत की अनमोल धरोहरें विदेशियों द्वारा ले जाई गईं। भगवान कल्कि को अपनी शक्ति के लिए किसी मानव-निर्मित वस्तु की आवश्यकता नहीं होगी। भगवान कल्कि का महल विश्वकर्मा 24 घंटे में बनाएँगे। मयूर सिंहासन, जो हमारा था, विदेशी उसे ले गए। तो भगवान गरुड़ पर सवार होकर पूरे विश्व की यात्रा करेंगे। वे इंग्लैंड जैसे स्थानों पर जाएँगे। भगवान कल्कि कौस्तुभ मणि, जिसे हम कोहिनूर कहते हैं, और मयूर सिंहासन भी वापस लाएँगे। दिल्ली के सिंहासन पर जो बैठेगा, उसे वे ये समर्पित करवाएँगे। भगवान स्वयं कुछ नहीं लेंगे। वे भारत का सम्मान पुनः स्थापित करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 10:12 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 149 क्या भगवान कल्कि और भगवान बलराम दो अलग-अलग स्वरूप होंगे, या वे एक होकर कार्य करेंगे?

उत्तर: अधिकांश मालिकाओं में भगवान कल्कि के बारे में लिखा गया है। मेरी व्याख्या में कोई गलतफहमी या भूल हुई होगी जिससे भ्रम उत्पन्न हुआ। उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। परंतु सत्य यह है कि सभी मालिकाएँ एक ही बात कहती हैं: भगवान कल्कि धर्म की स्थापना करेंगे। दूसरी बात यह है कि क्या इस युग में भगवान बलराम भगवान कल्कि के साथ होंगे। कृष्ण अवतार में बलराम उपस्थित थे। राम अवतार में लक्ष्मण, शत्रुघ्न और भरत थे। इसी प्रकार, इस कलियुग में केवल कल्कि अवतार ही आएगा। भगवान बलराम, कृष्ण और माँ सुभद्रा की शक्तियाँ भी उन्हीं में समाहित हो जाएँगी। एक शक्तिशाली रूप में, कल्कि महारुद्र अवतार लेकर पृथ्वी पर जन्म लेंगे। वे पहले मानव शरीर में आएँगे, माता के गर्भ से जन्म लेंगे। जब वे तेरह वर्ष के होंगे, तब कल्कि लीला प्रकट होगी। वे मानव शरीर में जन्म लेंगे और संसार को अपने 'सच्चिदानंद' स्वरूप के दर्शन कराएँगे। परंतु जब महायुद्ध, परमाणु युद्ध का समय आएगा, तब वे संसार की रक्षा के लिए दिव्य रूप धारण करेंगे। उस समय उनका तेज करोड़ों सूर्यों के समान होगा।

► यह उत्तर सुनें · 13:36 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 150 पंडित जी, आपने जीव-हत्या का निषेध किया है। मैं शाकाहारी हूँ, परंतु बरसात के मौसम में हमारे घर में बहुत सारे मच्छर और अन्य कीट आ जाते हैं, और हमें कीटनाशक का प्रयोग करना पड़ता है। जब हम उनका प्रयोग करते हैं, तो कीट मर जाते हैं। क्या यह हत्या का पाप माना जाएगा?

उत्तर: देखिए, यह बहुत कठिन प्रश्न है; आपने मुझे धर्मसंकट में डाल दिया है। आप अपने घर को मच्छरों से कैसे बचाएँगे? यदि आप रिपेलेंट का प्रयोग करेंगे, तो वे मरेंगे। यदि नहीं करेंगे, तो आप बीमार पड़ेंगे। अपनी रक्षा करना भी एक प्रकार का धर्म है। मच्छरदानी का प्रयोग कीजिए; वह अच्छा रहेगा। कीटनाशक का प्रयोग करते समय मन में यह अपराधबोध तो उठता ही है कि हम पाप कर रहे हैं। यह एक कर्म है, और इसका हिसाब हमें देना ही होगा। इस बुरे कर्म की काट के लिए कुछ अच्छे कर्म कीजिए। जैसे, चींटियों को खाना डालना शुरू कीजिए। एक निश्चित स्थान तय कीजिए और वहाँ उनके लिए कुछ आहार रखिए। इससे आपको लाभ होगा और पाप कम होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:42 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 151 क्या आने वाले महाप्रलय में वृंदावन का भी विनाश होगा?

उत्तर: उसका थोड़ा-सा भी विनाश नहीं होगा। वहाँ दिव्य 'लीला' होगी, अवश्य होगी। परंतु आप उसका भयंकर रूप देखेंगे। आप उसे नदी में देखेंगे... (तात्पर्य यह है कि तीर्थस्थल सुरक्षित रहेगा)।

► यह उत्तर सुनें · 25:54 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 152 मैंने एक दृश्य में देखा कि भगवान कल्कि के लिए सिंहासन तैयार किया जा रहा है, पत्थर और अन्य सामग्री रखी हुई है। क्या ऐसा हो रहा है?

उत्तर: नमस्कार, उन्होंने अपना कार्य आरंभ कर दिया है। वह कार्य चल रहा है। भारत के देवताओं ने भी अपना कार्य आरंभ कर दिया है। धर्म की स्थापना के साथ-साथ नए युग की रचना और भगवान के लिए आवश्यक कार्य भी आरंभ हो चुका है। तो, आपने जो देखा वह सही है।

► यह उत्तर सुनें · 26:56 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 153 जय जगन्नाथ, प्रभु जी। दो वर्ष पहले मुझे गुरुवार के दिन केले के पेड़ के नीचे एक शालिग्राम मिला था। क्या यह किसी बात का संकेत है?

उत्तर: नाग लोक, गंधर्व लोक, पाताल लोक सहित सभी लोकों से, और यहाँ तक कि वैकुण्ठ और गोलोक से भी भक्त पृथ्वी पर आए हैं। जो शालिग्राम आपको मिला, वह स्वयं भगवान ने आपको दिया है; आपने उसे केवल प्राप्त नहीं किया। केले का पेड़ बहुत ही पवित्र वृक्ष है। शालिग्राम, जो भगवान का ही स्वरूप है, ऐसे पवित्र वृक्ष के नीचे मिला। भगवान कल्कि आ रहे हैं, इसलिए आपको शालिग्राम मिल रहा है। तो माँ, मालिका का अनुसरण कीजिए, शाकाहारी बनिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, और सनातन धर्म के लिए कार्य करने हेतु विश्व सनातन धर्म समूह से जुड़िए। इस समय हमारे लिए यही सबसे बड़ा कर्तव्य है।

► यह उत्तर सुनें · 27:55 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 154 प्रभु जी, मुझे बार-बार साँपों के स्वप्न आते हैं, 2005 से लगातार। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह कहना आवश्यक नहीं है, फिर भी मैं कहूँगा। देखिए, नाग लोक, गंधर्व लोक, पाताल लोक, भूलोक से, और यहाँ तक कि वैकुण्ठ और गोलोक से भी, सभी भक्त पृथ्वी पर आए हैं। तो इस संदर्भ से आप समझ सकते हैं कि आपके स्वप्न का क्या अर्थ है। दूसरी बात, जो शालिग्राम आपको मिला... वह स्वयं भगवान ने आपको दिया है। भगवान कल्कि आ रहे हैं, इसलिए आपको शालिग्राम मिल रहा है। तो मालिका का अनुसरण कीजिए, शाकाहारी बनिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, और सनातन धर्म के लिए कार्य करने हेतु विश्व सनातन धर्म समूह से जुड़िए।

► यह उत्तर सुनें · 28:24 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 155 कोई नया भक्त कैसे समझे कि वह वास्तव में भक्त है?

उत्तर: आपके प्रश्न के संबंध में, 'हमें कैसे पता चले कि हम भक्त हैं?' देखिए, हम चारों युगों के भक्तों के नाम पढ़ते हैं। इस युग में सच्चा भक्त वही है जिसे मालिका से एक खिंचाव, एक सुगंध महसूस होती है। उनके मन में भगवान कल्कि के दर्शन की इच्छा होगी। वे निरंतर भगवान के मार्ग का अनुसरण करेंगे और उनकी शरण में आने के लिए तड़पेंगे, यह सोचते हुए कि 'मेरे भगवान कहाँ हैं?' यही सच्चा भक्त है। जो भगवान को नहीं खोजता, वह भक्त नहीं है। शास्त्र और पुराण आपको भगवान नहीं दे सकते। गोपियाँ और गोप भगवान के भक्त थे। उन्हें खिंचाव महसूस होगा, 'मेरे भगवान आ गए हैं,' और वे उनकी शरण में आएँगे। हम समझ जाएँगे कि कौन भक्त है। यदि वे खोज नहीं रहे हैं, तो वे भक्त नहीं हैं।

► यह उत्तर सुनें · 30:17 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 156 आपने पहले उस ऋषि की अस्थि के बारे में बताया था जिसका उपयोग कल्कि के अस्त्र के लिए होगा। क्या आप बता सकते हैं कि वह कहाँ है?

उत्तर: कल्कि का अस्त्र एक ऋषि की अस्थि से बनेगा। उन्होंने तपस्या में अपने प्राण त्यागे थे। लिखा है कि वह कहाँ है... एक 'साadei' वृक्ष के नीचे, वहीं उस ऋषि की अस्थि है।

► यह उत्तर सुनें · 30:26 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 157 गुरुजी, मालिका की शरण में आने के बाद से मुझे एकादशी व्रत आरंभ करने की तीव्र इच्छा हो रही है, कल योगिनी एकादशी से शुरू करना चाहती हूँ, जबकि मैंने पहले कभी यह व्रत नहीं किया। क्या मैं यह व्रत आरंभ कर सकती हूँ? कहीं मुझसे इसके नियमों में कोई गलती तो नहीं होगी?

उत्तर: यदि आप योगिनी एकादशी का व्रत रखना चाहती हैं, तो ठीक है। सभी व्रत पवित्र हैं। यदि आपका शरीर स्वस्थ है और सह सकता है, तो अवश्य व्रत रखिए। परंतु यदि आपको शारीरिक व्याधियाँ हैं, तो व्रत मत रखिए। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि कलियुग में केवल भक्तिपूर्वक भगवान का नाम जपने से ही हमें समस्त यज्ञ, जप और तप का फल मिल जाता है। तो यदि आप स्वस्थ हैं और आपके शरीर को कोई कष्ट नहीं है, तो एकादशी व्रत कीजिए, कोई समस्या नहीं है। आप फल खा सकती हैं। भगवान को अर्पित प्रसाद ग्रहण करने से भी व्रत भंग नहीं होता। तो, यदि आप कर सकती हैं, तो कीजिए। अन्यथा, केवल भगवान का नाम जपिए और श्रीमद्भागवत का संग कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 34:36 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 158 लोग इतनी बार बीमार क्यों पड़ते हैं? क्या यह पूर्व कर्मों के कारण है?

उत्तर: बीमारी एक बात है, महामारी दूसरी बात। महामारी देवताओं का विधान है। परंतु 'व्याधि' और 'बीमारी' हमारे पूर्वजन्मों के 'प्रारब्ध' के कारण होती है। पिछले जन्मों में हमने जो कर्म किए, वही कारण है कि हम रोगों से पीड़ित होते हैं। इससे निपटने के लिए एक ही उपाय है: निरंतर भगवान का नाम जपने और श्रीमद्भागवत पढ़ने से यह सब दूर हो सकता है। अनेक लोगों के साथ ऐसा हुआ है। मैं बस इतना कहूँगा: भगवान का नाम जपिए और बताए गए मार्ग पर चलिए। आप अवश्य स्वस्थ होंगे। बीमारी आएगी, परंतु वह आपको हरा नहीं पाएगी, न ही बिस्तर पर सीमित कर पाएगी। जब आपके सत्कर्म प्रबल होते हैं, और आप दान-धर्म करते हैं—जीवों को अन्न दीजिए, गाय को दान दीजिए, और थोड़ा जप कीजिए—तो आपका धर्म बढ़ेगा। जैसे-जैसे आपका धर्म बढ़ेगा, रोग धीरे-धीरे कम होते जाएँगे। यही उपाय हमारे शास्त्रों ने बताया है।

► यह उत्तर सुनें · 36:13 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 159 आपने बताया था कि सैन्य कार्रवाई होगी। क्या यह मोदी जी के समय में होगा या बाद में?

उत्तर: यह मोदी जी के समय में ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:18 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 160 नेपाल के भविष्य के बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: नेपाल के बारे में लिखा है कि नेपाल हिंदू धर्म का कट्टर अनुयायी है। वहाँ अनेक भक्तों ने जन्म लिया है, और वे सब भगवान कल्कि से जुड़ेंगे। भगवान कल्कि उस स्थान पर भी जाएँगे। मालिका की रचना भक्तों को भगवान से जोड़ने और उन्हें मुक्ति प्रदान करने के लिए हुई है। परंतु देखिए, मालिका में लिखा है कि नेपाल में बहुत बड़ा भूकंप आएगा। पहाड़ों पर बाढ़ भी आएगी। बहुत से लोग नष्ट हो जाएँगे। यह भी लिखा है कि जो सनातन धर्म और मालिका का अनुसरण करेंगे, वे बच जाएँगे और मुक्ति पाएँगे। यह एक निश्चित भविष्यवाणी है। बहुत बड़ी तबाही होगी, और नेपाल का भूकंप बिहार की भूमि को भी प्रभावित करेगा। बिहार भी प्रभावित होगा। तो, मालिका का अनुसरण कीजिए और व्हाट्सएप समूह से जुड़िए ताकि समझ सकें कि सनातन धर्म के लिए क्या आवश्यक है। उसी मार्ग पर चलिए।

► यह उत्तर सुनें · 40:30 · 4 जुलाई 2021

प्रश्न 161 पंडित जी, ओडिशा के बालासोर में क्या होगा?

उत्तर: लिखा हुआ है... चांदीपुर में... महापुरुष अच्युतानंद ने 500 वर्ष पहले लिखा था कि चांदीपुर में मिसाइल बेस होगा और वहाँ एक महायुद्ध होगा। इसके बारे में लिखा हुआ है। और मालिका के अनुसार, बालासोर तथा खुर्दा जिले युद्ध में बहुत अधिक क्षतिग्रस्त होंगे। क्षति का स्तर कल्पना से परे होगा। खुर्दा और बालासोर जिले सबसे अधिक प्रभावित होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:22 · 4 जुलाई 2021

सत्र 9 · प्रश्न 162–190

L9 विश्व के सभी भक्तों के बारे में (पद्म कल्प टीका ग्रंथ) भविष्य मालिका में वर्णन है।

दिनांक: 11 जुलाई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 162 तो प्रश्न यह है कि यह गुप्त ग्रंथ कहाँ है?

उत्तर: महर्षि सच्चिदानंद ने भविष्य मालिका में इसके बारे में लिखा है। उन्होंने 1,50,000 ग्रंथ लिखे, जिनमें से 300 भविष्य मालिका हैं। ब्रह्मा जी, स्वयं भगवान विष्णु और महादेव जी ने, 33 करोड़ देवताओं के साथ, इसे सुना और उस ग्रंथ को गुप्त रखा। उस ग्रंथ में सारे संसार के भक्तों के बारे में जानकारी है। केवल एक ग्रंथ से उसका वर्णन करना संभव नहीं है। यह पवित्र ग्रंथ भगवान शिव और ब्रह्मा जी के भक्तों के विषय में है। ग्रंथ का नाम प्रकट नहीं किया गया है, परंतु प्रत्येक युग के अंत में, जब सुधर्मा सभा (महान धर्म सभा) बैठती है, तब उसे बाहर लाया जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 05:37 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 163 मैंने एक पंडित जी से सत्यनारायण कथा (एक अनुष्ठान पूजा) करवाई थी, और उन्होंने हवन (अग्नि अनुष्ठान) में गंधक और पीली/काली सरसों का प्रयोग किया। उसके बाद से मेरे पति और मेरे बच्चों का काम रुक गया है। मुझे लगता है कि उन्होंने अनुष्ठान गलत तरीके से किया। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: सुनिए माता जी, यह युग का अंत है। एक समय आएगा जब सभी बेरोजगार हो जाएंगे, परंतु वह समय अभी पूरी तरह नहीं आया है। मेरा सुझाव है कि आपका पूरा परिवार, यदि आप सब एकमत हैं, तो मांस, मछली और अंडा खाना बंद कर दें। घर में प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़ें और भगवान का नाम, श्री सत्यानंद, जपें। सब ठीक हो जाएगा, और आप स्वयं परिवर्तन देखेंगी। यदि आपके पास पंडित के लिए पैसे भी न हों, तो बस भगवान का नाम जपिए। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।

► यह उत्तर सुनें · 21:57 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 164 मैं पंजाब से हूँ। युग परिवर्तन और धर्म की स्थापना में हमारे पंजाब और सिख धर्म का क्या योगदान होगा?

उत्तर: जैन, बौद्ध, हिंदू और सनातन धर्म के सभी अनुयायी एक ही हैं। सिख धर्म भी हमारे हिंदू धर्म का ही एक अंग है; कोई भेद नहीं है। महान गुरु नानक भगवान के परम भक्त थे। वे स्वयं जगन्नाथ क्षेत्र आए, भगवान जगन्नाथ के दर्शन किए, और आज भी गुरु नानक देव जी का मठ और आश्रम पुरी में है। हम सब एक हैं; हम सब हिंदू हैं। भगवान कल्कि के अनेक भक्त पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और भारत के कोने-कोने में सिख समुदाय से हैं। गुरु नानक जी ने स्वयं अपने पवित्र ग्रंथों में कल्कि अवतार का उल्लेख किया है। इसका अर्थ है कि संपूर्ण सिख समुदाय को इसका पालन करना चाहिए। यदि आपके गुरु ने कल्कि अवतार का वर्णन किया है, तो आपको अपने ही कल्याण के लिए उस पर चिंतन करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। भगवान और अपने गुरु के मार्ग पर चलिए, और सनातन धर्म का प्रचार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 26:01 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 165 मैं भवानीपटना से सूरज हूँ। मेरा प्रश्न है कि कल्कि पुराण में चित्रग्रीव नामक एक घोड़े और देवदत्त नामक दूसरे घोड़े का उल्लेख है। क्या यह सत्य है? साथ ही, मालिका में घोड़े के बारे में एक पद है; कृपया उसे समझाएँ?

उत्तर: मालिका कहती है, 'घोड़ा कुदिबा, घोड़ा कुदिबा, घोड़ाकु हाड़ नाहीं, राजा मंडले कपि देखि...' जिसका अर्थ है 'घोड़ा कूदेगा, घोड़ा कूदेगा, घोड़े की हड्डी नहीं है, राजा के मंडल में बंदर को देखकर...'। यह किसी वास्तविक घोड़े के बारे में नहीं है, बल्कि भगवान के मंदिर पर लगे ध्वज की ओर संकेत करता है। ध्वज पर एक बंदर (हनुमान जी) का चित्र है, और भविष्य में यह एक संकेत होगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:03 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 166 माधव (भगवान कृष्ण का एक नाम) की भक्ति कैसे की जाए?

उत्तर: एक स्थान पर बैठकर बार-बार उनका नाम जपिए। भगवान कृष्ण के स्वरूप की अपने सामने कल्पना कीजिए। वे स्वयं प्रकट होंगे। जब भक्ति गहरी होगी, तो बोलना भी कठिन हो जाएगा। बस एक स्थान पर बैठकर निरंतर भगवान का नाम जपिए, यह सोचते हुए कि इस संसार में आपके और माधव के अतिरिक्त कोई नहीं है। आँखें बंद कीजिए, कृष्ण का स्वरूप सामने रखिए, और उनका नाम जपिए। भक्ति अवश्य आएगी। यदि संभव हो तो श्रीमद्भागवत से 'गोपी लीला' (गोपियों की दिव्य लीला) पढ़िए। इतनी भक्ति उमड़ेगी कि आप बैठकर रोने लगेंगे, और आपको स्वतः ही ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। आप ऐसे आनंद का अनुभव करेंगे जो इस संसार में और कहीं नहीं मिलता।

► यह उत्तर सुनें · 33:40 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 167 मेरी पत्नी ने कोलकाता के बारे में एक स्वप्न देखा। उसने देखा कि शहर में आग लगी है, आग की एक बड़ी खाई है जिसमें लोग गिर रहे हैं। गिरने वाले लोग चिल्ला रहे थे 'मुझे बचाओ!' मेरी पत्नी ने उनसे भगवान का नाम जपने को कहा। जिन्होंने 'जय श्री माधव' जपा, वे बाहर आ गए, पर जिन्होंने नहीं जपा, वे गिर गए। इस स्वप्न को मैं कैसे समझूँ?

उत्तर: आपके प्रश्न का उत्तर भविष्य मालिका में है, जहाँ महर्षि सच्चिदानंद ने लिखा है, 'कोलकाता सहर जलि पोड़ि होइबो ख्यार,' अर्थात कोलकाता शहर जलकर राख हो जाएगा। चीन द्वारा आरंभ किया गया ऐसा विनाशकारी युद्ध होगा कि विनाश को रोका नहीं जा सकेगा। पश्चिम बंगाल के बारे में मैं आगे और बताऊँगा, क्योंकि चैतन्य महाप्रभु ने भी इसके बारे में लिखा है। वहाँ के आसुरी लोग नष्ट हो जाएंगे। परंतु जो भक्त माधव का नाम जपते हैं, वे बच जाएंगे, चाहे कितनी भी आग, बाढ़ या रोग क्यों न हो। जब समय आएगा, तब लोग 'माधव' नाम की शक्ति को समझेंगे। आपकी पत्नी ने स्वप्न में जो देखा, वही होने वाला है। अग्नि से होने वाला विनाश किसी भी बाढ़ से कई करोड़ गुना भयंकर होगा। यह भगवान कल्कि के हृदय का वचन है; इसे निश्चित रूप से घटित होने वाली बात मानिए।

► यह उत्तर सुनें · 35:10 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 168 हमें कौन सा नाम जपना चाहिए? हम पहले से ही एक नाम जपते हैं, क्या हमें 'जय श्री माधव' अपनाना चाहिए?

उत्तर: मैं यह पहले भी कह चुका हूँ। पहला, हर घर के हर व्यक्ति को श्रीमद्भागवत पढ़नी चाहिए। दूसरा, पूर्ण रूप से शाकाहारी बनें। इसका अर्थ है न मांस, न मछली, और न ही गुटखा, पान या बीड़ी जैसे नशीले पदार्थ। तीसरा, श्री माधव का नाम, सत्यानंद का नाम जपिए। यदि आप भगवान के पास आना चाहते हैं और आने वाले महाविनाश से बचना चाहते हैं, तो इस मार्ग पर चलना ही आपको बचाएगा। बस इतना ही कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 40:26 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 169 विष्णु पुराण कितना प्रामाणिक है? उसमें कहा गया है कि कलियुग 4,00,000 वर्ष लंबा है। परंतु कलियुग के केवल लगभग 5,000 वर्ष ही बीते हैं। तो यह अभी कैसे समाप्त हो रहा है?

उत्तर: देखिए माता जी, बात ऐसी है: किसी व्यक्ति की कुंडली में 100 वर्ष की आयु दिख सकती है, परंतु 40 वर्ष की आयु में ही किसी दुर्घटना या रोग से उसकी मृत्यु हो सकती है। तब हमें विश्लेषण करना होगा कि इतनी कम आयु में उसकी मृत्यु क्यों हुई। इसी प्रकार, जब पाप का भार बढ़ता है, तो युग की आयु घट जाती है। महर्षि सच्चिदानंद ने भविष्य मालिका में लिखा है कि पाप के अत्यधिक भार के कारण कलियुग की 4,32,000 वर्ष की आयु घटकर केवल 5,000 वर्ष रह जाएगी। मातृहत्या, भ्रूण हत्या, गोहत्या और शिशु हत्या जैसे पाप चरम पर हैं। कितना पाप है? लोग बचपन में गौ माता का दूध पीते हैं और बड़े होकर उसी का वध करते हैं। क्या यह धर्म है? ऐसे पापों के कारण ही कलियुग की आयु कट रही है और इसका विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:28 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 170 आपने कहा था कि मालिका ने कोरोना की भविष्यवाणी एक श्वसन रोग के रूप में की थी, जिसमें लोग मास्क पहनेंगे। आपने यह भी कहा था कि इसमें 'सात बार मृत्यु की बात' का उल्लेख है। क्या आप मालिका के अनुसार आने वाले अन्य रोगों पर प्रकाश डाल सकते हैं?

उत्तर: मालिका कहती है कि मनुष्य कुत्तों और अन्य जीवों को मारकर खाएंगे, और पक्षियों तक को अपना आहार नहीं मिलेगा। यह चीन में हो रहा है, जहाँ लोग कुत्ते और चमगादड़ खाते हैं, और इस प्रकार रोगों को आमंत्रित करते हैं। मालिका में यह भी कहा गया था कि लोग अपने मुख पर 'कवच' (आवरण/मास्क) पहनेंगे, जो सत्य सिद्ध हुआ। सात महामारियों के विषय में — कोरोना निरंतर अपना रूप बदल रहा है। एक ऐसी महामारी आएगी जिसमें लोग बात करते-करते गिरकर मर जाएंगे। उनके मुँह से खून बहेगा और वे मर जाएंगे। 'नील पीलिया' (एक प्रकार का गंभीर पीलिया) जैसा एक और रोग होगा, और उससे बहुत लोग मरेंगे। वायु से फैलने वाले अनेक रोग होंगे। परंतु भक्तों के लिए डरने की कोई बात नहीं है। उनके पास माधव का नाम है। कोई भी रोग उनका क्या बिगाड़ सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 45:42 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 171 मैं देवांश हूँ, महाराष्ट्र से बोल रहा हूँ। मलिका में महाराष्ट्र के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: लिखा है कि महाराष्ट्र में बहुत-से लोग भगवान गणेश की उपासना करेंगे, और इसी के माध्यम से वे भगवान को प्राप्त करेंगे। महाराष्ट्र में बहुत-से शिक्षित लोग हैं। वहाँ कोई बड़ी समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 49:13 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 172 मैं स्कॉटलैंड में रहती हूँ और वहीं काम करती हूँ। मैं शाकाहारी हूँ, लेकिन मैं उन लोगों की देखभाल करती हूँ जो माँस खाते हैं। अपनी नर्सिंग की नौकरी के तहत मुझे उनके लिए माँस पकाना पड़ता है और कभी-कभी अपने हाथों से उन्हें खिलाना भी पड़ता है। इसका मुझ पर क्या कर्म-फल होगा?

उत्तर: आपको यह अपनी आजीविका के लिए करना पड़ता है, लेकिन आप स्वयं माँस या मछली नहीं खातीं। माँ, कोई दूसरी, बेहतर नौकरी ढूँढ़िए। भगवान माधव का नाम जपिए, आपको नौकरी मिल जाएगी। चूँकि कोरोना के कारण अभी नौकरी मिलना कठिन है, इसलिए भगवान से प्रार्थना कीजिए कि आपकी वर्तमान परिस्थिति में आपको कोई कष्ट न हो।

► यह उत्तर सुनें · 50:24 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 173 आपने अपने एक वीडियो में कहा था कि लड़के लड़कियाँ बन जाएँगे और लड़कियाँ लड़के बन जाएँगी। यह बात मुझे समझ नहीं आई।

उत्तर: मैं ट्रांसजेंडर की बात कर रहा था। जलवायु में परिवर्तन के कारण बहुत-से लोगों का लिंग बदल जाता है। यह मलिका में लिखा हुआ था, और आज हमारे समाज में यह हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 53:04 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 174 भारत में ऐसे कई महान व्यक्ति हुए जिन्होंने शक्ति (देवी) की उपासना की, जैसे रामकृष्ण परमहंस, और वे माँस का सेवन करते थे। तो फिर हमारे लिए इसे गलत क्यों माना जाता है?

उत्तर: भक्तों की तीन श्रेणियाँ होती हैं। एक श्रेणी 'जादुवंशी' की है, जो अपने पूर्व कर्मों के कारण देवलोक से आए थे, और वे माँस का सेवन करते थे। कलियुग में कुछ महान संतों ने माँस का सेवन किया होगा, उनके बारे में मुझे जानकारी नहीं है। लेकिन मलिका के अनुसार, जो लोग भगवान कल्कि और भगवान विष्णु के साथ रहेंगे, उन्हें पूर्ण रूप से शाकाहारी होना ही पड़ेगा। अन्यथा वे उनके साथ रह ही नहीं पाएँगे। श्रीमद्भागवत और अन्य सभी शास्त्र शाकाहार का ही समर्थन करते हैं। भगवान कल्कि का संदेश, जो अब मलिका के माध्यम से आप तक पहुँच रहा है, यही है कि सभी भक्त शाकाहारी बनें। जो शाकाहारी नहीं होंगे, वे नष्ट हो जाएँगे। बस इतना ही।

► यह उत्तर सुनें · 54:22 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 175 मैं अभी-अभी जुड़ी हूँ। मेरा बेटा 12 साल का है, 13 का होने वाला है, लेकिन वह न खड़ा हो सकता है, न बैठ सकता है, न चल सकता है, न बोल सकता है। किसी ने मुझसे कहा कि आपकी शरण में आने से उसके लिए कुछ हो सकता है।

उत्तर: भगवान कल्कि ऐसी बीमारियों को ठीक करेंगे। वह समय बहुत निकट आ रहा है। कृपया इस मार्ग का अनुसरण कीजिए। जब सत्ययुग आरंभ होगा, जो बहुत निकट है, तब भक्तों के सभी दुःख और रोग दूर हो जाएँगे। यदि आप इसी मार्ग पर बनी रहेंगी और इसके सिद्धांतों का पालन करेंगी, तो समय आने पर सब ठीक हो जाएगा। तब तक मलिका और सत्संग की धारा से जुड़ी रहिए। मैं आपसे यह भी आग्रह करता हूँ कि हमारे व्हाट्सएप ग्रुप 'विश्व सनातन धर्म' से जुड़ जाइए, ताकि आपको जानकारी मिलती रहे।

► यह उत्तर सुनें · 56:57 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 176 हम राधा और कृष्ण की उपासना करते हैं। आप कहते हैं कि हमें कल्कि का नाम जपना चाहिए। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: भगवान के किसी भी नाम का जप करना बहुत अच्छा है। परंतु वर्तमान युग के धर्म (युग धर्म) के अनुसार, इस विशेष युग के अवतार का सम्मान करना आवश्यक है। इसलिए भगवान कल्कि का नाम, जो भगवान सत्यानंद का ही नाम है, जपना भी सही है। कोई समस्या नहीं है। नाम एक है, भगवान एक हैं।

► यह उत्तर सुनें · 58:13 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 177 मैं लखनऊ से बोल रहा हूँ। लखनऊ के बारे में क्या लिखा है? इसे लक्ष्मण जी ने बसाया था। वहाँ क्या होगा? क्या वहाँ भूकंप आएगा?

उत्तर: आपदाएँ हर जगह आएँगी। यह कठिन समय होगा। पाँच तत्व—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—बाढ़, आग, चक्रवात और भूकंप के रूप में विनाश करेंगे। परंतु भक्त सुरक्षित रहेंगे, जबकि पापी नष्ट हो जाएँगे। जनसंख्या का केवल 33% ही बचेगा। भारत में केवल लगभग 13 करोड़ लोग ही जीवित बचेंगे, और पूरे विश्व में लगभग 300 करोड़ लोग बचेंगे। हमें जनसंख्या का आकलन इसी अनुपात में करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 59:30 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 178 श्री माधव जी (भगवान कल्कि) का स्वरूप कैसा होगा? मलिका में उनके रूप के बारे में क्या वर्णन है?

उत्तर: मलिका में वर्णन है कि भगवान कल्कि लंबे कद के होंगे, और उनके मुख पर चंद्रमा जैसी आभा होगी। उनका वर्ण गौर होगा, वैकुंठ में भगवान विष्णु के समान। वे उतने ही सुंदर होंगे जितने भगवान कृष्ण थे। धर्म की स्थापना के लिए वे कल्कि अवतार धारण करेंगे, और उनका तेज करोड़ों सूर्यों के समान प्रखर होगा। उस समय कोई भी उनके निकट नहीं जा सकेगा। महाप्रलय के बाद, अपने क्रोध को शांत करने के लिए वे कुछ दिनों तक तपस्या करेंगे। उसके बाद वे शांत स्वरूप धारण करेंगे और राम राज्य (भगवान राम का धर्ममय राज्य) की स्थापना करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:07 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 179 मैं जयपुर से योगेश कुमार हूँ। आप कहते हैं कि 'प्रलय' का समय निकट है और युग बदल रहा है। कितना समय बचा है? क्या वर्षों में कोई भविष्यवाणी है?

उत्तर: 'प्रलय' की प्रक्रिया तो पहले से ही चल रही है। यह महामारी उसी का एक भाग है। संकेत देखिए: राजस्थान के रेगिस्तान में वर्षा हो रही है, और सऊदी अरब में बाढ़ आ रही है। यह युग परिवर्तन का संकेत है। धर्म स्थापना की यह प्रक्रिया अगले लगभग 10 वर्षों तक चलती रहेगी। इस अवधि में एक ऐसा समय आएगा जब संचार ठप हो जाएगा, क्योंकि कंप्यूटर, नेटवर्क और बिजली—सब कुछ ठप हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:08 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 180 मेरा प्रश्न गांधीजी के बारे में है। भविष्य मलिका में इस वर्तमान युग के लिए उनके बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: मैंने महात्मा गांधी पर एक विशेष एपिसोड किया था। लिखा था कि गुजरात में मोहन नाम का एक व्यक्ति जन्म लेगा। राम का नाम जपते हुए वह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करेगा। यह भी लिखा था कि नाथूराम गोडसे और नारायण आप्टे द्वारा चलाई गई गोली से उसकी मृत्यु होगी। इस वर्तमान युग के संदर्भ में उनके बारे में कुछ नहीं लिखा है। ग्रंथ में केवल गुजरात में उनके जन्म और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का ही वर्णन है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:23 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 181 भविष्य मालिका पटना, बिहार और बक्सर के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: मालिका कहती है कि बिहार की आँखों में आँसू होंगे। वहाँ भीषण भूकंप और बाढ़ आएगी। साथ ही, वहाँ के लोगों में धर्म का प्रभाव लगातार घटता जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:38 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 182 जैसा आपने कहा, प्रभु अभी 14 वर्ष के हैं। इसका अर्थ है कि उनकी लीला आरंभ हो चुकी है। कृपया उनकी बाल-लीला के बारे में कुछ बताइए?

उत्तर: बहुत अच्छा है कि आपने यह पूछा। जैसे उन्होंने अपने पिछले अवतार में किया था, वैसे ही इस जन्म में भी प्रभु को माखन बहुत प्रिय है। आप यह कर सकते हैं कि हमारे यूट्यूब के विवरण (डिस्क्रिप्शन) में मोहन नाम के एक भक्त का नंबर है, जो सत्संग आरंभ कराने में सहयोग करते हैं। आप उनसे संपर्क करके हमारे सनातन धर्म व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:47 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 183 क्या आप झारखंड के बारे में बता सकते हैं? झारखंड में इस युग परिवर्तन का क्या प्रभाव होगा?

उत्तर: मालिका में उल्लेख है कि प्रभु अपने बचपन में झारखंड गए थे। वहाँ अनेक भक्त हैं। झारखंड में भक्तों का एक समूह होगा, और उन सभी पर प्रभु की कृपा होगी। विनाश काल के दौरान झारखंड भूकंप से प्रभावित होगा। यह भी लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:55 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 184 क्या प्रभु इंस्टाग्राम और फेसबुक पर भी आएँगे?

उत्तर: आप ऐसा तुच्छ प्रश्न क्यों पूछ रहे हैं? लोग अपनी रोज़ी-रोटी को लेकर चिंतित हैं कि उनकी नौकरी रहेगी या नहीं, और आप यह पूछ रहे हैं। यह महत्वपूर्ण नहीं है। यदि हम प्रभु के मार्ग पर चलें, तो इन सब की क्या आवश्यकता है?

► यह उत्तर सुनें · 01:10:52 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 185 मेरा प्रश्न बीच में रह गया था। आपने कहा था कि लड़के लड़कियाँ बन जाएँगे और लड़कियाँ लड़के बन जाएँगी। कृपया इसे समझाइए।

उत्तर: जब जलवायु बदलती है, तो शरीर में परिवर्तन होते हैं। इन जलवायु परिवर्तनों के कारण 10-12 वर्ष के लड़के का लिंग बदल सकता है, और 10-11 वर्ष की लड़की का लिंग बदल सकता है। यह स्वतः ही होगा। मालिका में यही लिखा है, और ऐसी बातें हम अपने समाज में अभी से देख रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:54 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 186 भगवान कृष्ण को केवल कुछ ही लोग पहचान पाए थे, जबकि अन्य उन्हें समझ नहीं सके। हम भक्त कैसे पहचान पाएँगे कि यही भगवान कल्कि हैं?

उत्तर: महर्षि ने इस विषय में लिखा है। उन्होंने लिखा है कि सनातन धर्म के बड़े-बड़े विद्वान और अधिकारी भी उन्हें पहचान नहीं पाएँगे। तो फिर एक साधारण व्यक्ति उन्हें कैसे पहचानेगा? मालिका इसका उत्तर देती है: जो मालिका का अनुसरण करता है, जो वेद, शास्त्र और पुराणों के सार को समझता है, वही उन्हें पहचान पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:38 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 187 मेरा एक प्रश्न है। क्या आप बता सकते हैं कि दिल्ली के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: राजा युधिष्ठिर, जो इस समय हिमालय में तपस्या कर रहे हैं, आकर दिल्ली के सिंहासन पर बैठेंगे। वे हनुमान जी के आदेश पर शासन करेंगे। मालिका के अनुसार दिल्ली को हस्तिनापुर कहा गया है। तपस्वी युधिष्ठिर, जो सोमवंशी (चंद्रवंशी) वंश के हैं, दिल्ली का शासन सँभालेंगे, और उस समय सभी को न्याय मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:15:22 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 188 ब्रह्मा कुमारीज़ संस्था ने कहा है कि सत्य युग 2036 तक आ जाएगा। मालिका इस बारे में क्या कहती है?

उत्तर: हम सभी धार्मिक संस्थाओं को सादर प्रणाम करते हैं। वे अपने गुरुओं के वचनों का प्रचार करते हैं, और हम उसका सम्मान करते हैं। परंतु मैं आपको मालिका के वचन बताऊँगा। मालिका के अनुसार, सत्य युग वर्ष 2000 में ही आरंभ हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:02 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 189 नरेंद्र मोदी धर्म की स्थापना के लिए कुछ कार्य कर रहे हैं, जैसे राम मंदिर। क्या इस दिव्य योजना में उनका कोई संबंध या योगदान है?

उत्तर: मैं किसी राजनीतिक व्यक्ति के बारे में बोलना पसंद नहीं करता, क्योंकि सनातन धर्म के संदर्भ में यह उचित नहीं है। फिर भी मैं इतना कहूँगा: यदि कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, सनातन धर्म को बढ़ावा देता है और मंदिर बनवाता है, तो वह व्यक्ति वंदनीय है और हमारे सम्मान के योग्य है। ऐसे व्यक्ति को मैं सदैव प्रणाम करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:20:00 · 11 जुलाई 2021

प्रश्न 190 छत्तीसगढ़ के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: एक 'कोशल मंडल' (कोशल क्षेत्र) बनेगा, जिसमें ओडिशा के संबलपुर और छत्तीसगढ़ के हिस्से शामिल होंगे। यही भगवान कल्कि के अवतार की भूमि होगी, और वहाँ भक्त एकत्र होंगे। ऐसा लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:11 · 11 जुलाई 2021

सत्र 10 · प्रश्न 191–212

L10 चारों धाम से कलियुग अंत के संकेत , Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 18 जुलाई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 191 मैंने कुछ लोगों को इसके बारे में बताया, और उन्हें यह बहुत अच्छा लगा, लेकिन वे कहते हैं कि उन तक इसकी पहुँच नहीं है। हम इसे उन तक कैसे पहुँचाएँ? उन्हें इसके बारे में कैसे पता चलेगा?

उत्तर: जिनके पास यह नहीं है, आपको उन्हें यह उपलब्ध कराना चाहिए। आप उनकी मदद कर सकते हैं और उन्हें यह सुनवा सकते हैं। यदि उन्हें अच्छा लगे, तो आप उन्हें फोन पर इस सत्संग (आध्यात्मिक प्रवचन) के बारे में बता सकते हैं। ठीक है, माता जी।

► यह उत्तर सुनें · 15:29 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 192 पंडित जी, कोरापुट के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: उसके बारे में लिखा है कि दिव्य धर्म की स्थापना के लिए यह ओडिशा के भीतर फैलेगा, और पशु-प्राणी भी प्रभावित होंगे। ठीक है, यही उत्तर है। जय जगन्नाथ। कृपया अगला प्रश्न लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 17:20 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 193 पंडित जी, मैंने तीन-चार दिन पहले एक सपना देखा। मैंने एक नदी पार की, और उसका पानी हरा हो गया। फिर मैं एक बहुत सुंदर पर्वत पर पहुँची। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: माता जी, इसका अर्थ यह है कि आने वाले दिनों में जब धर्म की स्थापना होगी, तब हर गाँव में केवल सात-आठ लोग ही बचेंगे; सब जीवित नहीं रहेंगे। जो बचेंगे, उन्हें भगवान इसी प्रकार बचाएँगे। आप बच गई हैं। यदि आप इसी मार्ग पर रहेंगी, तो आप ठीक रहेंगी। ठीक है, जय गणेश।

► यह उत्तर सुनें · 18:04 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 194 मेरा प्रश्न है, क्या मालिका पुराण में अहमदाबाद शहर का वर्णन है?

उत्तर: देखिए, मालिका में गुजरात का उल्लेख है। द्वारकाधीश क्षेत्र के बारे में लिखा है और यह भी कि भक्तों को वहाँ अपना कार्य करना चाहिए। यह भी लिखा है कि वहाँ बहुत से संत और भक्त होंगे। धर्म की स्थापना विश्व में सब जगह होगी—गुजरात में, पूरे देश में, और ओडिशा में। पंचतत्व सब जगह विनाश करेंगे। लेकिन भारत के लोगों के बचने के लिए, आपको मालिका के मार्ग पर चलना होगा। भक्त जो आवश्यक है, वह करेंगे। यह सबसे महत्वपूर्ण है। मैं जिस मार्ग का वर्णन करता हूँ, उसका पालन कीजिए, आपका भला होगा। जय श्री प्रभु, श्री जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:56 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 195 पंडित जी, मैंने एक महीने पहले एक सपना देखा। मुझे घुंघराले बालों वाला एक सुंदर बच्चा मिला और मैं उसे गोद में लिए हुए था। मैंने यमुना नदी को प्रचंड वेग से बहते देखा, लेकिन मैंने उसे पार कर लिया। फिर मैं अपने घर पहुँचा, एक पर्वत और किसी प्रकार के हमले को पार किया, और अंत में आपके घर पहुँचा, लेकिन वह बच्चा गायब हो गया था। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: बेटा, इसका अर्थ है कि जब जल प्रलय होगा, तब भगवान आपको बचाएँगे। यही आपके सपने का अर्थ है। ठीक है। जगन्नाथ, कृपया आगे बढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 21:03 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 196 मुझे माता जी के दर्शन हुए, और वे मुझसे एक मंत्र माँग रही थीं। मैंने उनसे कहा कि मैं किसी से कुछ नहीं लेती। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: भगवान की शरण लीजिए, और माता जी प्रसन्न होंगी। देवी स्वयं प्रभु की शरण में हैं। तो आप प्रभु की शरण में आइए, माता जी, और माता भी प्रसन्न होंगी। कोई समस्या नहीं होगी। बस यही कीजिए। प्रणाम। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:35 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 197 प्रार्थना करते समय मुझे एक सपना आया। मैंने सफेद कपड़ों और पगड़ी में एक व्यक्ति को देखा। उन्होंने मुझे कुछ दिया, लेकिन मैं देख नहीं पाई कि वह क्या था, और उन्होंने मुझसे उसे ठीक करने को कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा कि वे कौन थे या इस सपने का क्या अर्थ है।

उत्तर: संत और भक्त आपकी सहायता के लिए हैं। आपको अपनी साधना जारी रखनी चाहिए। आपके मन की इच्छाएँ केवल इस जन्म के कर्म से नहीं हैं, बल्कि आपके पूर्व जन्मों में निहित हैं। इससे अधिक कहना कठिन है, लेकिन आप जितना अधिक भगवान के प्रति समर्पित रहेंगी, उतना अच्छा है। आपको दिव्य दर्शन प्राप्त हुए हैं, इसलिए अपने मार्ग पर चलती रहिए। सब कुछ भगवान से ही आता है।

► यह उत्तर सुनें · 25:46 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 198 मैंने संस्कृत नहीं पढ़ी है, लेकिन मैं सामवेद की कुछ प्रार्थनाएँ सुनती हूँ। क्या यह मार्ग मेरे लिए सही है?

उत्तर: सबसे पवित्र मार्ग वैदिक परंपरा है। जो धर्म सृष्टि को धारण करता है, वह सनातन धर्म है। यह करोड़ों वर्षों से विद्यमान है और आज भी विद्यमान है। इतिहास स्वयं, अपनी 'BC' (ईसा पूर्व) की अवधारणा के साथ, यह सिद्ध करता है कि सनातन धर्म पहले से था। यह सर्वप्रथम मार्ग है। वर्तमान युग (कलियुग) के कारण अनेक धर्म उत्पन्न हो गए हैं, लेकिन जब अगला युग (सत्ययुग) आएगा, तब केवल एक ही धर्म रहेगा: सनातन धर्म। इस चक्र के अंत में, केवल हमारा वैदिक सनातन धर्म ही रहेगा। ठीक है, माता जी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:23 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 199 पंडित जी, आपने भारत और चीन के बीच युद्ध का उल्लेख किया था। वह किस वर्ष होगा, जैसे 2024 या 2025?

उत्तर: मैंने इस पर पहले भी अपने सत्संग में और कल्कि अवतार यूट्यूब चैनल पर चर्चा की है। धर्म स्थापना की प्रक्रिया 2020 में आरंभ हुई और लगभग 10 वर्षों तक चलेगी। भारत का पहला युद्ध पाकिस्तान के साथ होगा, और चीन उनके साथ मिल जाएगा। तेरह मुस्लिम देश हमारे विरुद्ध लड़ेंगे। अमेरिका भारत की सहायता नहीं करेगा, और हमारे पाँच पड़ोसी देश भी हमारे साथ विश्वासघात करेंगे। यह प्रक्रिया 2020 में शुरू हुई और चरम मौसमी घटनाओं के साथ और तीव्र होगी—जैसे मूसलाधार वर्षा से बाढ़ और भीषण लू—अमेरिका और कनाडा के तापमान देखिए। समय निकट है। यह तब होगा जब भगवान चाहेंगे, संभवतः 2020 और 2028 के बीच। पाकिस्तान के साथ युद्ध निश्चित है, लेकिन सही समय भगवान तय करेंगे। मालिका कहती है कि भगवान कल्कि अपने प्रकट होने के बाद तय करेंगे कि युद्ध कब होगा। मैं चीन के साथ युद्ध पर विस्तार से नहीं कहना चाहता। पाकिस्तान के साथ युद्ध एक बार होने ही वाला था, लेकिन भगवान कल्कि ने उसे रोक दिया क्योंकि उनके भक्त अभी एकत्र नहीं हुए थे। जब तक वे एकजुट नहीं होते, धर्म की स्थापना में विलंब होगा। फिर भी, पंचतत्वों के युद्ध सहित यह प्रक्रिया चलती रहेगी। देखते रहिए; सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। मालिका के वचन अटल हैं और अवश्य पूरे होंगे। समय निकट है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:53 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 200 प्रणाम, पंडित जी। मैं अयोध्या के पास बस्ती से हूँ। क्या 'परिकल्पना' ग्रंथ में हमारे क्षेत्र के बारे में कुछ लिखा है? हम कैसे जान सकते हैं?

उत्तर: अयोध्या में भगवान कल्कि के लिए एक 'ज्ञानमंडल' (ज्ञान का मंडल) स्थापित होगा। मालिका में विश्व भर में ऐसे 100 मंडलों का उल्लेख है, और अयोध्या का मंडल उनमें से एक होगा। वहाँ कई हजार भक्त होंगे जो मालिका के माध्यम से आएँगे, और वे अयोध्या तथा उत्तर प्रदेश के आसपास के क्षेत्रों में धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, अयोध्या के भावी शासक एक सूर्यवंशी राजा होंगे, जो इस समय हिमालय के कलापा ग्राम में तपस्या कर रहे हैं, जिन्हें भगवान कल्कि सिंहासन पर बैठाएँगे। वहाँ बहुत कुछ होने वाला है। भगवान कल्कि अपने बचपन में अयोध्या गए थे और उसके बाद भी वहाँ गए हैं। जो शुद्धिकरण हुआ, उसके बारे में आप जानते ही हैं। दो वर्ष पहले भगवान कल्कि दो दिनों के लिए अयोध्या गए थे, और तभी हमें पता चला कि कुछ शुभ होने वाला है। ठीक है, बेटा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:33 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 201 मंदिर के पास बिजली गिरी, लेकिन मंदिर को कोई नुकसान नहीं हुआ। इसका क्या कारण है और यह किस बात का संकेत है?

उत्तर: भगवान के मंदिर पर बिजली गिरना स्वयं देवताओं की ओर से एक संकेत है, जो यह दर्शाता है कि उन्होंने धर्म स्थापना की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। भक्तों को यह समझना चाहिए। मालिका स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी करती है कि मंदिरों पर बिजली गिरेगी। यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी नए युग के आरंभ को चिह्नित करने के लिए राज्य का ध्वज बदला जाता है। कलियुग के युग को समाप्त करने और सत्ययुग को आरंभ करने के लिए, द्वारकाधीश मंदिर का ध्वज पिछले वर्ष फटा और इस वर्ष भी फटा, और अब यह बिजली गिरने की घटना हुई है। यह मालिका की ओर से भक्तों के लिए एक संदेश है। यदि हम अभी इसे नहीं समझ पाए, तो एक समय ऐसा आएगा जब हमें पछतावा होगा और हम कहेंगे, 'पंडित जी ने हमें चेताया था, पर हमने नहीं सुना, और अब हम अपनी गलती के कठिन परिणाम भुगत रहे हैं।'

► यह उत्तर सुनें · 35:30 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 202 पंडित जी, हम सुधर्म महासंघ से कैसे जुड़ सकते हैं?

उत्तर: मैं इन सत्रों में बार-बार आपसे कहता हूँ कि सबसे पहले 'विश्व सनातन धर्म' से जुड़िए। इसके लिए एक संपर्क नंबर है। आपको इस कार्य से जुड़े संतों और भक्तों से बात करनी चाहिए। उनसे जुड़ने और एक निश्चित स्तर की पवित्रता प्राप्त करने के बाद, आप सुधर्म महासंघ से जुड़ सकते हैं। यह कोई व्यापार नहीं है; यह सनातन धर्म का प्रचार है। भगवान अपने पूर्ण प्राकट्य से पहले अपना संदेश फैलाने के लिए अपने भक्तों को भेजते हैं। मालिका का यह प्रचार भगवान कल्कि का ही प्रचार है, जो पहले ही आ चुके हैं। जो भक्त यह समझते हैं, उन सभी को जुड़ना चाहिए। हम सब मिलकर मालिका का उत्सव मनाएँगे और धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। इसलिए, मेरा आपसे आग्रह है कि सनातन धर्म के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़िए, इसके सिद्धांतों और सत्संग को समझिए और उनका पालन कीजिए, फिर आप धर्मसंघ से जुड़ सकते हैं। ठीक है, बेटा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:09 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 203 मैं निताई-गौरांग और राधा-कृष्ण की भक्त हूँ। आप कहते हैं कि भगवान कल्कि पहले ही आ चुके हैं। भगवान के एक ही स्वरूप की उपासना करनी चाहिए, इसलिए मैं असमंजस में हूँ। यदि हमें भगवान कल्कि की शरण लेनी है, तो हम राधा-कृष्ण की उपासना कैसे जारी रख सकते हैं? कृपया इसे स्पष्ट करें।

उत्तर: जब युग बदलता है, तो भगवान का स्वरूप भी बदलता है। भक्त उस विशेष युग के लिए भगवान के उसी अवतार का अनुसरण करते हैं। भगवान राम के समय में लोग राम की उपासना करते थे। भगवान कृष्ण के समय में वे कृष्ण की उपासना करते थे। हमारे शास्त्रों में 24 प्रमुख अवतारों और अन्य अनेक अवतारों का उल्लेख है। सनातन धर्म में, जब भगवान कल्कि आते हैं, तो हमें उनका अनुसरण करना चाहिए, उनके नाम का जप करना चाहिए और उनके सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। एक सच्चा भक्त भगवान के सभी अवतारों को पहचानता है। जैसे हनुमान जी, जो भगवान राम के भक्त थे, उन्होंने भगवान कृष्ण को भी समझा और उनका आदर किया। एक अच्छा भक्त हमेशा भगवान के वर्तमान अवतार को पहचान लेता है। कृपया इसे समझिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:52 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 204 पंडित जी, क्या भविष्य में बिजली होगी?

उत्तर: ठीक है, बेटा। बिजली का एक कहीं बेहतर रूप होगा। यह ऐसी होगी जिससे मृत्यु या करंट नहीं लगेगा और जिससे गर्मी भी नहीं निकलेगी। भगवान इस प्रकार की बिजली बनाएँगे, जो शीतल होगी और सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:05 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 205 पंडित जी, मैंने एक वीडियो देखा जिसमें आपने बताया था कि 31 दिनों तक भगवान जगन्नाथ की न पूजा होगी और न ही भोग लगेगा। कृपया इसे समझाएँ?

उत्तर: यह अत्यंत गूढ़ और गोपनीय विषय है, और मैं इसे प्रकट नहीं करना चाहता। इस पर चर्चा करने से प्रशासन के लिए और मेरे लिए समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं, इसलिए मैं विस्तार में नहीं जा सकता। लिखा है कि 21 दिनों तक भगवान के मंदिर में भोग नहीं लगेगा। यह कब और कैसे होगा, यह तो सचमुच केवल भगवान ही जानते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:38 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 206 मेरे बड़े बेटे को दो साल पहले एक सपना आया जिसमें वह, उसके पिता और उसके चाचा एक पर्वत पर चढ़ रहे थे और 'ॐ' का उच्चारण हो रहा था। शिखर पर उन्होंने देखा कि हनुमान जी एक तेज प्रकाश में बैठे हैं और पशु-पक्षियों को फल खिला रहे हैं। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: माता जी, यह एक उत्तम स्वप्न है, और मालिका इसकी पुष्टि करती है। आने वाली धर्म स्थापना में मेरे गुरुदेव, हनुमान जी, एक प्रमुख भूमिका निभाएँगे। वे भगवान कल्कि के मिशन की पूरी जिम्मेदारी लेंगे और बद्रीनाथ से लेकर ओडिशा तक भक्तों की रक्षा करेंगे। भूख को समाप्त करने के लिए, मालिका में उल्लेख है कि एक विशेष पौधे की पत्तियाँ सभी के लिए पोषण प्रदान करेंगी। यह बिल्कुल सत्य है। इस समय हनुमान जी एक पर्वत पर गहन तपस्या में हैं, इसी उद्देश्य के लिए ध्यानमग्न हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:24 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 207 पंडित जी, विश्व युद्ध के समय, युद्ध और बड़े भूकंपों का वृंदावन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: माता जी, मैं वृंदावन की पावन भूमि को प्रणाम करता हूँ। वृंदावन में भूकंपों का प्रभाव गंभीर नहीं होगा। हालाँकि, वहाँ बीमारियाँ और महामारियाँ होंगी। इसके बावजूद, वृंदावन सुरक्षित रहेगा। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 51:10 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 208 पंडित जी, हम भगवान के प्रति समर्पण कैसे करें और उनकी शरण कैसे लें? साथ ही, हम अपने मन के मार्गदर्शन और अपनी आत्मा के मार्गदर्शन में भेद कैसे करें?

उत्तर: बेटा, इस कलियुग में समर्पण का सबसे बड़ा मार्ग भगवान के पवित्र नाम का जप है। इसके अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं है। नाम जप ही समर्पण का परम रूप है। श्रीमद्भागवत की शिक्षाओं का पालन करें, शाकाहारी भोजन अपनाएँ, और पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों सहित सभी जीवों के लिए दान-पुण्य करें। इस सच्चे मार्ग पर चलकर आप भगवान के प्रति समर्पण प्राप्त कर लेंगे। इसके अलावा, आपको धर्म संगठन से जुड़ना चाहिए और उसके कार्य में योगदान देना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 52:15 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 209 पंडित जी, व्हाट्सएप ग्रुप भर गया है, और हम जुड़ नहीं पा रहे हैं।

उत्तर: ठीक है, एक संपर्क नंबर उपलब्ध है, जिसमें नरेंद्र नाम के एक संत का नंबर भी शामिल है। आपको संतों से बात करनी चाहिए और कोई रास्ता निकालना चाहिए। मालिका का उद्देश्य सभी भक्तों को एकजुट करना है। हमारा लक्ष्य है सभी को सनातन धर्म के अंतर्गत एक साथ लाना। आपको भी इस कार्य में भाग लेना चाहिए। ऐसे लोगों को खोजिए जो सचमुच भगवान की शरण लेना चाहते हैं और उन्हें सनातन धर्म संगठन में लाइए। हम सब मिलकर इस मार्ग पर आगे बढ़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:51 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 210 मैं पंजाब से हूँ। क्या आप हमें 2018 में भगवान कल्कि की अयोध्या यात्रा के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: हाँ, वे वहाँ थे। वे दो दिन अयोध्या में रुके और राम जन्मभूमि स्थल पर गए। उन्होंने भक्तों से कहा था कि शेष कार्य भविष्य में पूरा होगा। इस पर बहुत विस्तार से चर्चा करना उचित नहीं है। बेटा, ये दिव्य रहस्य हैं और इन्हें सबके सामने प्रकट नहीं करना चाहिए। आप पूछते हैं, और मैं उत्तर देता हूँ, पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मालिका का और मेरे दिखाए मार्ग का अनुसरण करें। भगवान की शरण लीजिए। कोई नहीं जानता कि अगला क्षण क्या लेकर आएगा; संसार पल भर में बदल सकता है। यही मार्ग है जो हमें और हमारे परिवारों को बचाएगा। इसलिए, मालिका का संदेश फैलाइए और इसके सिद्धांतों का पालन कीजिए। भगवान के सभी रहस्यों के बारे में खुलकर बोलना उचित नहीं है, और इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 55:01 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 211 मैं महाराष्ट्र से हूँ। क्या मलिका में हमारी आर्थिक राजधानी मुंबई के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: हाँ, मलिका में मुंबई में विनाश के बारे में लिखा है। बाढ़, भूकंप और महामारियों के संयोग से यह नगर क्षतिग्रस्त होगा। लेकिन मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो लोग मलिका के मार्ग पर चलते हैं, प्रभु का स्मरण करते हैं और अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों का पालन करते हैं, वे सुरक्षित रहेंगे। बहुत कठिन समय आ रहा है, बड़ी इमारतों के लिए विशेष खतरे हैं, परंतु इस विषय पर खुलकर बोलना मेरे लिए उचित नहीं है। आगे अनेक चुनौतियाँ हैं। यदि मैं सब कुछ बता दूँ, तो व्यापक भय फैल जाएगा। पहले से सावधान रहना ही बेहतर है। इस मार्ग का पालन करें: पहला, श्रीमद्भागवत पढ़ें; दूसरा, मलिका का अनुसरण करें; और तीसरा, प्रभु के नाम का प्रचार करें। मैं इतनी ही सलाह दे सकता हूँ। समय बुरा है, इसलिए कृपया सावधान रहें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 56:50 · 18 जुलाई 2021

प्रश्न 212 मैंने आपके किसी वीडियो में सुना था कि प्रभु लगभग 74,000-75,000 भक्तों के साथ पृथ्वी पर अवतरित होंगे। क्या यह पहले ही हो चुका है, या अभी होना बाकी है?

उत्तर: मैं इस प्रश्न का उत्तर दूँगा। सभी भक्त पहले ही जन्म ले चुके हैं। वे सभी देवी-देवता, यक्ष, गंधर्व और नाग, जिन्हें प्रभु के कार्य में सहायता करनी है, वे भी जन्म ले चुके हैं और अपने-अपने कार्यों में पहले से ही लगे हुए हैं। मलिका इन भक्तों को खोजने और एकत्र करने का माध्यम है, क्योंकि इसके ज्ञान के बिना वे न तो प्रभु के बारे में जान सकते हैं और न ही आने वाली घटनाओं के बारे में। मलिका का मार्ग इन भक्तों को बचाने के लिए है। सभी जन्म ले चुके हैं, और वे सब एकत्र किए जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 59:29 · 18 जुलाई 2021

सत्र 11 · प्रश्न 213–229

L11 वैष्णव धर्मी भक्तों के लिए मालिका में क्या चेतावनी है? Pandit Kashinath Mishra |

दिनांक: 25 जुलाई 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 213 मलिका 13 दिन के चक्र के बारे में क्या कहती है? आपने 13 दिन के 'पक्ष' के बारे में कुछ बताया था। क्या महाभारत से पहले भी 13 दिन का पक्ष हुआ था? और कलियुग के अंत में कितने 13 दिन के पक्ष होंगे? कृपया इस पर कुछ जानकारी दें।

उत्तर: मलिका के अनुसार, 13 की संख्या महत्वपूर्ण है। यह 13 दिन के पक्ष, 13 दिन के शासन, 13 राजनीतिक दलों के गठबंधन और 13 मुस्लिम देशों के गठबंधन की ओर संकेत करती है। मलिका कहती है, '13 दिन का पक्ष युद्ध का कारण बनेगा, जिससे बड़ी चिंता उत्पन्न होगी।' जब ऐसा होगा, तब भगवान कल्कि सोचेंगे कि धर्म स्थापना का समय आ गया है। धर्म की स्थापना को लेकर 13 वर्षों तक संघर्ष होगा। 13 मुस्लिम देश एक होंगे, और 13 राजनीतिक दल मिलकर भारत पर आक्रमण करेंगे। मुस्लिम देशों का एकीकरण तो पहले ही हो चुका है। भगवान कल्कि कलियुग में धर्म की स्थापना करेंगे। कुछ तिथियों को ध्यान में रखें जैसे 13, 27, 7 और 17। इन तिथियों पर संसार में महाविनाश होगा, और प्रभु के माध्यम से धर्म स्थापना के बड़े कार्य संपन्न होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:38 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 214 मेरे कुछ प्रश्न हैं। पहला, भगवान की कृपा से हम आपसे और इस आध्यात्मिक मार्ग से जुड़े हैं। हमें कैसे पता चलेगा कि हम सुधर्म महासंघ में सम्मिलित होने और धर्म स्थापना में भाग लेने के लिए पर्याप्त रूप से शुद्ध हो गए हैं? दूसरा, हममें से जो लोग इस मार्ग पर हैं और अपना पूरा प्रयास कर रहे हैं, लेकिन परिवार के असहयोगी सदस्यों जैसी बाधाओं का सामना करते हैं, उनका क्या? भगवान हमें पूर्ण रूप से कैसे स्वीकार करेंगे, और हम क्या कर सकते हैं? तीसरा, मैं दक्षिण भारतीय तमिल हूँ और श्री वैष्णव परंपरा से हूँ, इसलिए हम पहले से ही शाकाहारी हैं। लेकिन मेरे रिश्तेदार हिंदी नहीं जानते और इस धारा से नहीं जुड़ पाते। उनका क्या? अंत में, आपने रामेश्वरम में एक संगठन का उल्लेख किया था। हम वहाँ व्यावहारिक रूप से कैसे जुड़ सकते हैं और धर्म स्थापना के लिए कार्य कर सकते हैं?

उत्तर: यह सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि आप विष्णु सहस्रनाम पढ़ते हैं। भगवान विष्णु का भक्त ईश्वर तक पहुँचने का माध्यम है। आपके प्रश्नों के उत्तर में: इस कलियुग में भगवान कल्कि प्रत्येक देश में जाएँगे, और संसार भर के भक्त मलिका के माध्यम से सुधर्म संघ से जुड़ेंगे। भगवान कल्कि सनातन धर्म की स्थापना के लिए विदेश जाएँगे, और वहाँ के उनके भक्तों को पूरा दायित्व सौंपा जाएगा। इस प्रकार मलिका का प्रचार विश्वभर में होगा। आपको सनातन धर्म व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ना चाहिए। जब समय आएगा, तो आपको प्रभु की 'निकट संबंध परीक्षा' में सम्मिलित किया जाएगा। अभी के लिए, हम जो मार्ग दिखा रहे हैं उसका पालन करें। घर पर प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़ें। परिवार के सदस्यों पर दबाव न डालें; यदि वे श्रद्धा से जुड़ते हैं, तो यह अच्छा है। त्रिसंध्या करें—दिन के तीन संधिकालों (प्रातः, मध्याह्न और सायं) में प्रार्थना। यदि संभव हो तो सूर्यदेव को प्रणाम अर्पित करें, क्योंकि यह हमारे सनातन धर्म का अंग है। रामेश्वरम के विषय में, वहाँ भगवान कल्कि का एक 'मंडल' (केंद्र) होगा। भक्त धीरे-धीरे एकत्र होंगे और प्रभु से जुड़ेंगे। वे भक्त फिर पूरे दक्षिण में धर्म के प्रचार का कार्य करेंगे। जैसे ऋषियों ने भगवान राम का नाम फैलाया, वैसे ही इस युग में भक्त मलिका के माध्यम से भगवान कल्कि का संदेश फैलाएँगे। भाषा की बाधा के विषय में, यह कोई समस्या नहीं है कि आपके रिश्तेदार हिंदी नहीं समझते। इस सत्संग का संचालन करने वाले संत उनसे अंग्रेजी में बात कर सकते हैं, और मैं भी कर

सकता हूँ। सत्ययुग की भाषा संस्कृत और देवनागरी होगी, लेकिन अंग्रेजी, रूसी, तमिल और तेलुगु जैसी अन्य सभी भाषाएँ उसमें विलीन हो जाएँगी। वे दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं और अंग्रेजी में बात कर सकते हैं। अंत में, वह समय आ रहा है जब ऐसी घटनाएँ होंगी जो हमने न कभी देखीं, न सुनीं, न कल्पना कीं—महाप्रलय जैसी बाढ़, आकाश से अग्नि, भूकंप। मुक्ति के लिए भगवान माधव के नाम का जप करें। ग्रुप में दिखाए गए मार्ग का पालन करें, आप सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:37 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 215 लोग कहते हैं कि अंतिम युद्ध इज़राइल में होगा। क्या इस विषय में मलिका में इज़राइल का कोई उल्लेख है?

उत्तर: मैं भक्तों के लिए महापुरुष अच्युतानंद द्वारा लिखी गई मलिका का प्रचार कर रहा हूँ। मलिका के अनुसार, आरंभ में इज़राइल एक साझा शत्रु के विरुद्ध भारत के साथ मित्रता में रहेगा। लेकिन विश्वयुद्ध के दौरान पूरा समीकरण बदल जाएगा। इज़राइल अमेरिका के पक्ष में चला जाएगा, साथ ही पाकिस्तान, चीन, इंग्लैंड और अफ्रीका भी। दूसरी ओर, जर्मनी, फ्रांस, जापान और रूस भारत के साथ होंगे। मलिका यह नहीं कहती कि अंतिम युद्ध इज़राइल में होगा। अंतिम, निर्णायक युद्ध ओडिशा में होगा, भगवान कल्कि के साथ। तेरह मुस्लिम देशों, चीन और तुर्की का गठबंधन जगन्नाथ पुरी की पवित्र भूमि होते हुए ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर की ओर बढ़ेगा। उन्हें यह ज्ञात होगा कि भगवान कल्कि संसार को नियंत्रित कर रहे हैं, और वे अपना शासन स्थापित करने के लिए उन्हें पराजित करने का प्रयास करेंगे। उसी क्षण भगवान कल्कि अपने सुदर्शन चक्र का आह्वान करेंगे और उसी स्थान पर लाखों विदेशी सैनिकों का संहार कर देंगे। फिर वे धूमकेतु के समान तेजस्वी, उग्र रूप धारण करेंगे, अपने अश्व पर आरूढ़ होंगे, और समस्त संसार में विनाश का कार्य आरंभ करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:00 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 216 क्या यह सत्य है कि भगवान कल्कि पंजाब आएँगे और अमृतसर के हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) में नमन करेंगे?

उत्तर: निश्चित रूप से, हाँ। यह गुरु परंपरा की बात है। जब उनके स्वर्ण मंदिर जाने का समय आएगा, तब वे जाएँगे, लेकिन किसी को पता नहीं चलेगा। वे मानव शरीर में होंगे, और कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा। वे किसी के सामने अपनी पहचान प्रकट नहीं करेंगे। लेकिन वे अवश्य आएँगे। प्रत्येक युग में प्रभु ने हर पवित्र स्थान और तीर्थ की यात्रा की है। भगवान कल्कि भी जाएँगे। सिख समुदाय के पुण्यात्मा भक्त, जो भगवान विष्णु के प्रति समर्पित हैं, उनसे जुड़ेंगे। गुरु नानक देव ने स्वयं कल्कि अवतार के बारे में लिखा, इस प्रकार सिख समुदाय को संकेत दिया कि भगवान कल्कि आ रहे हैं। सिख समुदाय भी धर्म की स्थापना में भगवान कल्कि से जुड़ेगा। वे स्वर्ण मंदिर अवश्य जाएँगे, लेकिन गुप्त रूप से जाएँगे, दर्शन करेंगे और लौट आएँगे। कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 33:43 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 217 मलिका सरस्वती नदी के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: मलिका कहती है कि सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में जितनी भी नदियाँ थीं, वे सब भारत में पुनः प्रकट होंगी। पवित्र और पावन सरस्वती नदी, तथा अन्य नदियाँ जो लुप्त हो गईं या भूमिगत हो गईं, वे सब फिर से प्रकट होंगी। सभी नदियों का जल शुद्ध और मधुर हो जाएगा, जो मानवता के लिए आनंद का स्रोत होगा। लोग कृषि कर सकेंगे, और वे शांति एवं सुख से रहेंगे। जलवायु शीतल हो जाएगी; प्रचंड गर्मी नहीं रहेगी। भारत और पूरे विश्व में सभी लुप्त नदियाँ पुनः प्रकट होंगी, और सरस्वती नदी अवश्य प्रकट होगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:47 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 218 आपने एक बार बताया था कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होने ही वाला था, लेकिन उसे रोक दिया गया। कृपया इस पर प्रकाश डालें कि जब वह होना निश्चित था, तो उसे क्यों रोका गया?

उत्तर: मलिका के अनुसार, वह युद्ध निश्चित रूप से होगा। प्रभु ने उस समय एक विशेष कारण से उसे स्थगित कर दिया: भक्त अभी एकत्र नहीं हुए थे। मलिका कहती है कि महायुद्ध, जो भारत और पाकिस्तान से आरंभ होगा, तभी शुरू होगा जब सभी भक्त एकत्र हो जाएँगे। उस समय ऐसा होना प्रभु की इच्छा नहीं थी क्योंकि सुधर्म महासंघ के लिए आवश्यक भक्तों की संख्या अभी पूरी नहीं हुई थी। इसलिए हमें प्रतीक्षा करनी होगी। एक ओर भक्तों को एकत्र करने की प्रक्रिया चल रही है, और दूसरी ओर संसार के विनाश की प्रक्रिया भी चल रही है।

► यह उत्तर सुनें · 37:50 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 219 कृपया बताएँ कि मलिका सिंगापुर के बारे में क्या कहती है। मैं 2016 से आपको सुन रहा हूँ। हम शाकाहारी हैं; यहाँ की जनसंख्या का केवल लगभग 4-5% ही शाकाहारी है। क्या 'मंडल' (आध्यात्मिक मंडली) में हमारा स्थान होगा?

उत्तर: पूरा संसार 16 मंडलों में विभाजित है। उदाहरण के लिए, एक अफ्रीका मंडल है। महापुरुष अच्युतानंद ने भविष्य मलिका में लिखा है कि जो भक्त मलिका का अनुसरण करते हैं, वे अपनी इच्छा से किसी भी मंडल में सम्मिलित हो सकते हैं। इसलिए, भले ही आप सिंगापुर में हैं, आप दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-राजस्थान मंडल में, या वृंदावन मंडल में, या अयोध्या मंडल में सम्मिलित हो सकते हैं। आप इनमें से किसी में भी जुड़ सकते हैं। मैं आपको 'विश्व सनातन धर्म' व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने की भी सलाह देता हूँ। अब, भविष्य के विषय में: संसार के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र पूरी तरह जल में डूब जाएँगे। पूर्व का बहुत थोड़ा भाग ही बचेगा। केवल वे ही बचेंगे जो संतों का जीवन जीते हैं और मलिका का अनुसरण करते हैं, और वे ही नए सत्ययुग के बीज बनेंगे। इंडोनेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, सिंगापुर, जापान और आधा चीन बाढ़ में डूब जाएँगे। जल से होने वाला विनाश युद्ध से होने वाले विनाश से कहीं अधिक होगा। वह समय आएगा जब सूर्य से एक खगोलीय पिंड तीन टुकड़ों में टूटकर संसार के महासागरों में गिरेगा। जलस्तर 1200 से 2000 फीट से भी अधिक ऊपर उठ जाएगा। छोटे-छोटे स्थानों पर भी बाढ़ और चक्रवात आएँगे। लेकिन जल भक्तों को स्पर्श नहीं करेगा। स्वयं हनुमान जी और बलराम जी भक्तों को जल से बचाएँगे। यदि आप मलिका से जुड़े हैं, धर्म में स्थित रहते हैं, और दिखाए गए मार्ग का पालन करते हैं, जैसे श्रीमद्भागवत का पाठ, तो आपको कोई हानि नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:15 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 220 आपने कहा था कि भारत में अधिकांश लोग नष्ट हो जाएँगे। हमें कैसे पता चलेगा कि हम बचेंगे या नहीं? क्या सब कुछ पूर्वनिर्धारित है?

उत्तर: ध्यान से सुनिए। महापुरुष ने मलिका में लिखा है कि केवल वे ही भक्त सत्ययुग में जाएँगे जो मलिका से जुड़े हुए हैं। यदि आपको मलिका में श्रद्धा है, आप उसके बताए मार्ग का पालन करते हैं, और सुधर्म महासंघ के भीतर कार्य करते हैं, तो आप बचने के सही मार्ग पर हैं। कुछ लोग अपने अगले जन्म में सत्ययुग में जाएँगे। भारत में 33 करोड़ लोग बचेंगे, और उनमें से 72,000 लोग सीधे सुधर्म महासंघ में आएँगे। यह सब प्रभु के कार्य और उनके निर्णय का भाग है।

► यह उत्तर सुनें · 43:11 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 221 मुझे लगता है कि वह महान घटना अगले वर्ष भाद्रपद मास में घटित होगी। मेरा हृदय पूरी तरह बदल चुका है, और मैं सांसारिक माया-मोह तथा आसक्तियों से विरक्त महसूस करता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: नहीं, यदि आप विवाहित हैं और आपके दो बच्चे हैं, तो आपको उनकी देखभाल करनी ही होगी। उनके प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का भली-भाँति निर्वाह करें। अपने कुल धर्म का पालन करते रहें; रुकिए मत। भगवान का भजन और कीर्तन जारी रखें।

► यह उत्तर सुनें · 45:05 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 222 महाराष्ट्र के बारे में मालिका में क्या लिखा है? साथ ही, हर किसी की नौकरी है और उसे अपना कर्म तो करना ही पड़ता है। हाल ही में हमारे गाँव में एक तेंदुआ घुस आया। क्या यह शास्त्रों में वर्णित समय और कल्कि अवतार के आगमन का संकेत है?

उत्तर: कलियुग के अंतिम चरण में सभी जंगली जानवर आबादी वाले क्षेत्रों और गाँवों में प्रवेश करेंगे और मनुष्यों को भारी क्षति पहुँचाएँगे। इसका अर्थ यह है कि जैसे मनुष्य अब किसी नियम का पालन नहीं करते, वैसे ही पशु भी अपने प्राकृतिक नियम तोड़ देंगे। उनका रहना जंगल में तय है, पर वे जंगल छोड़कर मानव बस्तियों में आ जाएँगे और विनाश करेंगे। यह वास्तव में इस बात का संकेत है कि विनाश का समय निकट है। महाराष्ट्र में अनेक भक्तों ने जन्म लिया है; वे भगवान से जुड़ेंगे, सत्संग में भाग लेंगे और धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। पूरे भारत में अनेक भक्त हैं, और वे सब मिलकर कार्य करेंगे। 'मंडलों' का नाम एक ही होगा, किंतु उनमें दो या तीन राज्य सम्मिलित हो सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 47:17 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 223 बेंगलुरु और पूरे कर्नाटक राज्य के लिए मालिका में क्या लिखा है? साथ ही, हम सुधर्म संघ से कैसे जुड़ सकते हैं? मैं तो अभी आपके व्हाट्सऐप ग्रुप से भी नहीं जुड़ा हूँ। इसकी प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: जुड़ने के लिए संपर्क नंबर हमारे यूट्यूब वीडियो के विवरण (डिस्क्रिप्शन) में दिया गया है। कृपया विश्व सनातन धर्म समूह से जुड़ने के लिए उस नंबर पर संपर्क करें। हम सभी अच्छे, संत स्वभाव के लोगों को सुधर्म संघ और सनातन धर्म से जुड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। बेंगलुरु और कर्नाटक के विषय में आपको यह समझना होगा कि भक्त और पापी हर जगह हैं — भारत के और विश्व के हर कोने में। आने वाला विनाश विश्वव्यापी होगा। मालिका में विशेष रूप से उल्लेख है कि दक्षिण क्षेत्र में बहुत से भक्त हैं। इसमें दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और मद्रास जैसे बड़े शहरों के नाम भी लिए गए हैं और वहाँ होने वाले भीषण विनाश का वर्णन है। मैं भय उत्पन्न न हो, इसलिए पूरा विस्तार से वर्णन नहीं करना चाहता। परंतु धर्म स्थापना का कार्य हर जगह होगा। बेंगलुरु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और अन्य सभी राज्यों में बाढ़, अग्नि, भूकंप और महामारी आएँगी। सब कुछ होगा। महामारी सबसे व्यापक होगी। कोई भी स्थान बचेगा नहीं, क्योंकि पूरे विश्व की शुद्धि होनी है। आसुरी प्रवृत्ति के लोगों का नाश होना है और संत स्वभाव के लोगों की रक्षा होनी है। इसलिए धर्म के मार्ग पर चलिए। दूसरों का क्या होगा, इसकी चिंता मत कीजिए। यदि हम धर्म में स्थित रहेंगे, तो भगवान हमारी रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:35 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 224 पंडित जी, मीन शनि (मीन राशि में शनि) का काल कब आएगा?

उत्तर: हमारी ज्योतिषीय गणना के अनुसार, शनि के मीन राशि में प्रवेश की संभावना वर्ष 2024 से 2025 के बीच है। मालिका कहती है कि जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, तब धर्म स्थापना का कार्य अत्यंत तेज़ी पकड़ेगा। यह 2025 में होना निश्चित है। पर वहाँ तक पहुँचने से पहले हमें शेष वर्षों से गुज़रना होगा। यह इतना आसान नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 53:05 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 225 आपने कहीं कहा था कि मालिका के अनुसार जब कलि (कलियुग का मूर्त रूप) 16 सरदारों (प्रमुखों) के बीच प्रवेश करेगा, तब महाप्रलय जैसी बाढ़ आएगी। कृपया इस पर विस्तार से बताएँ।

उत्तर: भक्ति के 256 प्रकार हैं, और उनके भीतर 16 'मंडल' (आध्यात्मिक क्षेत्र या समूह) होंगे। इन 16 मंडलों के नियंत्रण और संचालन के लिए प्रत्येक का एक 'सेनापति' होगा, जिसे 'सरदार' कहा जाएगा। ये 16 सरदार धर्म स्थापना के लिए कार्य करेंगे। जब 16 मंडल पूर्ण रूप से बन जाएँगे, तब भगवान स्वयं इन सभी स्थानों के लिए एक प्रतिनिधि या प्रमुख नियुक्त करेंगे। यह निर्णय पूरी तरह भगवान पर निर्भर है। हमें उस समय के आने की प्रतीक्षा करनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 55:13 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 226 क्या आपको स्वयं भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं?

उत्तर: ऐसी बातें प्रकट करना उचित नहीं है। यदि कोई इसे प्रकट करे, तो संसार में कुछ लोग इसे बड़ी भक्ति और समर्पण के साथ स्वीकार करेंगे, परंतु यह अत्यंत गोपनीय और पवित्र विषय है। सार्वजनिक मंच पर इसकी चर्चा करना न मेरे लिए उचित है, न मालिका की पवित्रता के लिए। फिर भी, महापुरुष अच्युतानंद ने यह लिखा है: जो आत्माएँ सत्ययुग में ऋषि थीं, जो त्रेता युग में वानर सेना का हिस्सा थीं, जिन्होंने द्वापर युग में वृंदावन में भगवान के साथ लीला में भाग लिया था, और जिन्होंने कलियुग में पुनः जन्म लिया है — वे निश्चय ही इस विषय में जानती हैं। उन्हीं को भगवान के दर्शन प्राप्त होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 56:36 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 227 मैं राजस्थान के रामदेव पीर के बारे में पूछना चाहता हूँ। कृपया उनके विषय में बताइए।

उत्तर: देखिए, मैं सनातन धर्म के लिए कार्य करता हूँ, जो सभी धर्मों में सबसे महान है। श्रीमद्भागवत में भगवान विष्णु के 24 अवतारों का वर्णन है। भविष्य मालिका कहती है कि इस युग में भगवान कृष्ण के तीन अवतार होंगे। एक थे श्री बुद्ध देव, जो मध्य काल में प्रकट हुए। दूसरा अवतार, जैसा महामुनि व्यासदेव ने श्रीमद्भागवत में वर्णन किया है, श्री गुरु देव का अवतार है। और तीसरा है कल्कि अवतार। जब हम शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, तो सनातन धर्म के लिए श्रीमद्भागवत से बड़ा या अधिक प्रामाणिक कोई ग्रंथ नहीं है। उस पवित्र ग्रंथ में मैंने यही पढ़ा है। आप जो पूछ रहे हैं, उसका मैं आदर करता हूँ और प्रणाम करता हूँ, परंतु भगवान के अवतारों के विषय में मेरे अध्ययन से प्राप्त ज्ञान इतना ही है।

► यह उत्तर सुनें · 58:12 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 228 हम सुबह-शाम भगवान की पूजा करते हैं, पर अपने विचारों और वाणी में 100% शुद्ध नहीं हैं। हम जैसे लोगों का क्या होगा, जो पूजा तो करते हैं, पर मन से झूठ निकल ही जाता है और कभी-कभी दूसरों से कठोर शब्द भी बोल देते हैं? हमारा क्या होने वाला है, और हम स्वयं को कैसे बदलें कि भगवान राम हमें क्षमा कर दें?

उत्तर: मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आप श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं? मालिका के मार्ग के अनुसार, जो-जो व्यक्ति सत्ययुग में जाने के लिए नियत है, वह निश्चित रूप से भागवत पढ़ेगा। जो भागवत नहीं पढ़ेगा, वह कभी सत्ययुग नहीं देखेगा। यह मालिका का पहला सिद्धांत है। यह अच्छी बात है कि आप गीता पढ़ते हैं, परंतु श्रीमद्भागवत पढ़ने से आपके भीतर जो क्रोध है और पाँचों इंद्रियों पर जो नियंत्रण नहीं है, वह वश में आ जाएगा। श्रीमद्भागवत में अपार शक्ति है। तो, श्रीमद्भागवत पढ़ना आरंभ कीजिए, और धीरे-धीरे आपके पाप धुल जाएँगे। जो मार्ग हम आपको दिखा रहे हैं, उसका अनुसरण कीजिए; वही आपके लिए हितकर होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:07 · 25 जुलाई 2021

प्रश्न 229 मैं राजस्थान से हूँ और मुझे मार्गदर्शन चाहिए। राजस्थान के लिए जो 'मंडल' (समूह) बनेगा, उससे जुड़ने के लिए मुझे किससे बात करनी चाहिए?

उत्तर: आपको हमारे यूट्यूब वीडियो के विवरण में दिए गए संतों के नंबरों पर संपर्क करना चाहिए। वे आपको सब कुछ मार्गदर्शन देंगे। हमारी इच्छा यही है कि आप सब कम से कम इस मार्ग का अनुसरण करें और अपने धार्मिक कर्तव्य व कार्यक्रम करें। भारत में ऐसे अनेक तथाकथित संत हैं जो व्यापार के लिए अपने-अपने ढंग के धर्म का प्रचार करने में लगे हैं। जब सच्ची धर्म स्थापना का समय हमारे द्वार पर खड़ा है, तब उनका क्या होगा? हम नहीं जानते कि कल समाज का क्या होगा। परंतु यदि आप सच्चे धर्म से जुड़े हैं, तो संसार का जो भी हो, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा; उसका आप पर कोई असर नहीं होगा। कम से कम जो अच्छे लोग बदलना चाहते हैं, वे अभी बदल जाएँ। यही भगवान की इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:42 · 25 जुलाई 2021

सत्र 12 · प्रश्न 230–246

L12 सारे विश्व मे जल प्रलय के तांडव होने का कारण क्या है? Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 1 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 230 इस सितंबर से 13 दिन का 'पक्ष' आरंभ हो रहा है। इसका क्या प्रभाव होगा?

उत्तर: देखिए, मालिका में लिखा था कि 13 दिन का पक्ष बार-बार आएगा। एक ही मास में, एक ही पक्ष में, पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रांति होंगी। और उसी पक्ष में चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, अमावस्या और संक्रांति एक साथ पड़ेंगे। संसार में यह बार-बार होगा। यह 13 दिन की अवधि बार-बार आएगी, केवल एक बार नहीं। यह पहले भी हो चुका है। मालिका के शास्त्रों के अनुसार, जब भगवान कल्कि 13 वर्ष के होंगे, तब 13 दिन का पक्ष आएगा, जो अब निकट है। मालिका में लिखा है कि जब 13 दिन का पक्ष होगा, तब भक्त एकत्र होंगे, और दूसरी ओर भगवान कल्कि धर्म स्थापना को आगे बढ़ाने का विचार करेंगे। भगवान 13 वर्ष के हो चुके हैं, और धर्म स्थापना भी आरंभ हो चुकी है। याद रखिए, 13 दिन का पक्ष पहले भी आ चुका है और फिर आ रहा है। यह भक्तों के लिए धर्म स्थापना का शुभ संकेत है, परंतु पापियों के लिए विनाश का संकेत है। जय जगन्नाथ, प्रणाम।

► यह उत्तर सुनें · 16:28 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 231 मेरा प्रश्न यह है कि हर युग में पहले हमारे सामने राक्षस प्रकट होते हैं, और उसके बाद भगवान का अवतार होता है। तो क्या इस युग में कलि (राक्षस) मानव शरीर में प्रकट होगा, और फिर कल्कि अवतार प्रकट होंगे?

उत्तर: देखिए बेटा, मैं यह पहले ही समझा चुका हूँ। कलि पाँच स्थानों पर निवास करता है: जहाँ जुआ है, असत्य है, नशा है, स्वर्ण का लोभ है, और अवैध संबंध हैं। जो लोग अपने सुख के लिए इन चीज़ों का भोग करते हैं, वे कलि के लोग हैं। उन्हें ही कलि के राक्षस माना जाएगा। इन राक्षसों के विनाश के लिए भगवान कल्कि अवतार लेंगे, जैसा कि शास्त्रों में लिखा है। तो, जो लोग अपने सामाजिक जीवन में इन पाँच तत्वों में विश्वास करते हैं और उनका पालन करते हैं, वे ही कलि के राक्षस हैं। भगवान कल्कि इन सब लोगों का विनाश करने के लिए हाथों में अस्त्र-शस्त्र लेकर नहीं घूमेंगे। वे पंचभूतों का उपयोग करेंगे - बाढ़, भूकंप, रोग, महामारी और संघर्षों के माध्यम से, वे धीरे-धीरे नष्ट हो जाएंगे। कलि एक अकेले राक्षस के रूप में नहीं आएगा। समाज में जो भी इन पाँच दुर्गुणों का आचरण करते हैं, वे ही राक्षस हैं, और वे ही नष्ट होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:18 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 232 मैं खड़गपुर से हूँ। क्या यहाँ कुछ होगा या नहीं? क्या आप बता सकते हैं?

उत्तर: कोलकाता और पश्चिम बंगाल में भी सब कुछ होगा। संसार में एक समय ऐसा आएगा जब भारत में केवल 50% लोग ही बचेंगे, और संसार में, चार में से केवल एक। हम यह धर्म की स्थापना देखेंगे। अभी तो केवल छोटी-छोटी बातें शुरू हुई हैं। एक समय ऐसा आएगा जब एक गाँव में केवल 4-5 लोग ही बचेंगे। यह भी मालिका में लिखा है। यह ब्रह्मा का वचन है; इसे कोई टाल नहीं सकता। उस समय, जो हम अभी कर रहे हैं वह भी शायद संभव न हो। जो मार्ग मैं दिखा रहा हूँ वह अभी अच्छा न लगे, परंतु जब समय आएगा, तब स्थिति को संभालने वाला कोई नहीं होगा। इसलिए, जो भी इस पवित्र मार्ग पर चलेगा, वह बच जाएगा। जो नहीं चलेगा, वह अपनी ही इच्छा से नष्ट हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:21 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 233 मेरे पिताजी ने मांस खाना नहीं छोड़ा है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: अच्छा, समझ गया। देखिए, अगर आपके पिताजी ने नहीं छोड़ा है... हमारा मार्ग बहुत सरल और स्थिर है। हम किसी पर ज़ोर-ज़बरदस्ती या दबाव नहीं डाल सकते। कोई बदले या न बदले, यह उसकी अपनी इच्छा है। परंतु आपको इस पवित्रता तक आना है और भगवान की शरण लेनी है। देखिए, हम अकेले आए हैं, और अकेले ही जाएंगे। इस संसार में हमारा एक परिवार है, तो उनके साथ अनुशासित ढंग से रहिए और साथ ही उन्हें अपना धर्म भी दिखाइए। हर किसी को अपने धर्म का अधिकार है। उनसे कहिए कि वे अपने धर्म का पालन करें और श्रीमद्भागवत पढ़ें। अगर आपके पिताजी नहीं मानते, तो एक काम कीजिए: श्रीमद्भागवत से 'गोपी लीला' अपने पिताजी को पढ़कर सुनाइए। शायद वे समझ जाएँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:16 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 234 मेरी कुंडली में लिखा है... एक पंडितजी ने मुझे बताया कि पैसा कमाने की कोई आवश्यकता नहीं है, और 40 वर्ष के बाद, जो मेरा होना है वह मेरा होगा। साथ ही, जब मैं मंदिर जाता हूँ, तो वे कहते हैं कि मैं एक महान व्यक्ति बनूँगा। इस विषय में आप क्या कहते हैं?

उत्तर: देखिए, इस युग की सबसे बड़ी पवित्रता है विनम्रता, परिश्रम और कर्म। अपना काम करते रहिए। जीव को सही समय पर जो आवश्यक है वह करना चाहिए। यह ठीक है कि आपकी जन्म कुंडली में लिखा है, इसमें कोई समस्या नहीं है। परंतु मेरा मत यह है कि सभी मनुष्यों को अपना कर्म करना चाहिए। अपने हाथों से परिश्रम करके कमाइए, अपने परिवार का पालन-पोषण कीजिए, और संसार के लिए कुछ कीजिए। इस संसार में, भगवान की कृपा से हर कोई महान है। तो अगर आपकी कुंडली में लिखा है, तो उसकी प्रतीक्षा कीजिए, परंतु अपना काम करते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:18 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 235 गुजरात में क्या होगा, और हम अपने पाप कैसे कम कर सकते हैं?

उत्तर: गाँव के गाँव महामारियों से नष्ट होकर दफ़न हो जाएंगे। इसके साथ ही, बाढ़, चक्रवात और संघर्ष होंगे। इन सब में, 70% मानवता समाप्त हो जाएगी, और प्रकृति तथा पंचभूतों में महान परिवर्तन होगा। राक्षसों का विनाश होगा—वे जो पापी हैं, जो प्रतिदिन पाप करते हैं, और जो सोच-विचार कर पाप करते हैं। इस पाप के प्रभाव को कम करने के लिए, सबसे पहले स्वयं को बदलना आवश्यक है। उसके बाद, हमारा परिवेश और जो लोग हमारे साथ रहते हैं, वे बदलेंगे। यदि हम मिलकर यह करेंगे, तो पूरे संसार में धीरे-धीरे कुछ परिवर्तन होगा। जो बदलेंगे वे बचेंगे, और जो नहीं बदलेंगे वे नहीं बचेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:55 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 236 पटना, बिहार के विषय में मालिका क्या कहती है? साथ ही, भविष्य मालिका के हिंदी संस्करण के विषय में, लोगों को इसे समझना बहुत कठिन लगता है और वे सही अर्थ नहीं निकाल पाते। क्या करना चाहिए?

उत्तर: मालिका में जो लिखा है वह यह है कि बिहार में अधिक बाढ़ और भूकंप आएंगे, जिनसे बहुत विनाश और महामारियाँ होंगी। परंतु भक्त बच जाएंगे; यह लिखा है। जहाँ तक भविष्य मालिका के हिंदी संस्करण की बात है, उसे समझना वास्तव में बहुत कठिन है। लोग सही अर्थ नहीं निकाल पाएंगे और भ्रमित हो जाएंगे। इसलिए, पुस्तक की कोई आवश्यकता नहीं है। बस जैसे शिक्षाएँ समझाई जाती हैं, वैसे ही उनका पालन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:06 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 237 प्रणाम, पंडितजी। क्या आप 'मंडल' के विषय में कुछ कह सकते हैं? मुझे समझ नहीं आता कि यह क्या है। साथ ही, आपने पंचभूतों के उपयोग की बात कही, और यह बहुत भयावह है। हम अपनी और अपने परिवार की रक्षा कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: जो लोग इस मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं है। 'विश्व सनातन धर्म' समूह से जुड़िए। अपने परिवार के सभी सदस्यों को श्रीमद्भागवत सिखाइए। धर्म और सत्य के मार्ग पर चलिए, 'सत्य कर्म धर्म' के सिद्धांतों पर। यही राहत का सबसे बड़ा मार्ग है। यही आप कर सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:26 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 238 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा आप कह रहे हैं, एक बहुत भयंकर प्रलय आएगा। तो उससे कोई कैसे बच सकता है?

उत्तर: मैं आप सबके लिए यह संदेश फैला रहा हूँ। मैं आपको बता रहा हूँ कि मानव समाज कैसे बच सकता है और आनंद से जी सकता है। हमारे 'विश्व सनातन धर्म' समूह से जुड़िए, व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़िए, और शिक्षाओं के प्रवाह में बने रहिए। मैं आपसे कह रहा हूँ, अंत में, आप केवल इसी मार्ग पर चलकर ही बचेंगे। अभी, यह लोगों को कड़वा लग सकता है, परंतु जब समय आएगा, तब सोचने का समय नहीं होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:02 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 239 पुरी के राजा (गजपति) और भगवान कल्कि के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: भगवान केवल भक्तों के हैं। राजा पूर्वजन्म के आशीर्वाद से इस धरती पर आए हैं और इस जन्म में भी भक्त हैं। भगवान कल्कि से उनका संबंध तब होगा जब समय आएगा। देखिए, भगवान कल्कि अपनी पहचान सबके सामने प्रकट नहीं करेंगे। जब समय आएगा, तब राजा भगवान की शरण में आएंगे। इस विषय में मालिका में लिखा है। हमें उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी। मुझे नहीं पता कि तब कितने लोग होंगे या क्या होगा। उस समय, नेटवर्क भी नहीं होगा। परंतु भक्त अपनी आंतरिक अनुभूति और शास्त्रों के ज्ञान से इसका अनुभव करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:21 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 240 इस्कॉन संस्था, जिसकी स्थापना श्रील प्रभुपाद ने कृष्ण भावनामृत के प्रचार के लिए की थी, की धर्म की स्थापना में क्या भूमिका होगी?

उत्तर: उन्होंने पूरे संसार में एक महान परिवर्तन लाया। मैं उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ क्योंकि उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के नाम को पूरे संसार में फैलाया। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसी दिव्य आत्मा ने भारत में जन्म लिया। संसार में भगवान श्रीकृष्ण के अनेक भक्त हैं। परंतु उनमें से सभी नहीं बचेंगे। केवल वे ही बचेंगे जो मालिका का अनुसरण करते हैं। जो मालिका की आलोचना करते हैं और भगवान के वचन का पालन नहीं करते, उनका भाग्य स्वयं भगवान तय करेंगे। मालिका में लिखा है कि जो मालिका के मार्ग पर चलता है और उसके सिद्धांतों को अपने सामाजिक जीवन में लागू करता है, वही सच्चा भक्त है, और केवल वही बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:26 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 241 लगभग 500 वर्ष पहले देवायत पंडित नाम के एक पंडित ने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन ऐसा आएगा जब महायुद्ध और महामारी होगी, और तब श्रीकृष्ण उत्तर दिशा से आएंगे और अपनी तलवार से शत्रुओं का संहार करेंगे। क्या यह सत्य है?

उत्तर: बहुत से लोगों ने इस विषय में लिखा है। उन्हें भविष्य मालिका के बारे में ज्ञान था, क्योंकि उनके पास दिव्य शक्तियाँ थीं। इसलिए उन्होंने जो लिखा है, वह सही है। वह समय अब हमारे सामने आ चुका है। उसके अनुसार, मालिका का अनुसरण कीजिए। यह आपके लिए कल्याणकारी होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:30 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 242 इस युग में मोक्ष के लिए किस नाम या मंत्र का जप करना चाहिए?

उत्तर: सत्य युग में भगवान विष्णु के नाम का जप किया जाता था। त्रेता युग में भक्तों ने राम नाम का जप करके मोक्ष प्राप्त किया। द्वापर युग में उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के नाम का जप किया। इसी प्रकार, कलियुग में जो लोग जगन्नाथ के नाम का जप करेंगे, वे मुक्ति प्राप्त करेंगे। अब कलियुग समाप्त हो रहा है और सत्य युग आ रहा है। इस संधिकाल में जिस नाम का जप करना है, वह है 'माधव'। महान संत सच्चिदानंद ने इस विषय में लिखा है। निरंतर 'माधव माधव' का जप करना ही मोक्ष का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 40:38 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 243 उत्तर प्रदेश में कौन-सा मंदिर सुरक्षित रहेगा? क्या उत्तर प्रदेश में वृंदावन और मथुरा क्षेत्र सुरक्षित रहेंगे?

उत्तर: सत्य सनातन धर्म समूह से जुड़िए, और समूह के लोग आपको श्री वृंदावन मथुरा मंडल से जोड़ देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:58 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 244 क्या कंप्यूटर और इंटरनेट काम करना बंद कर देंगे? कल्कि अवतार के आगमन के साथ क्या इंटरनेट की सुविधा कम हो जाएगी या पूरी तरह समाप्त हो जाएगी?

उत्तर: सबसे पहले, शास्त्रों के अनुसार भगवान कल्कि का अवतार हो चुका है। उनके अवतार के बाद संसार के पंचतत्वों और वैज्ञानिक तकनीकों में बहुत-सी बाधाएँ आएंगी। क्योंकि कल्कि के पास संपूर्ण संसार की चाबी है, वे चीज़ों को शुरू भी कर सकते हैं और रोक भी सकते हैं। तो जब भगवान आ चुके हैं, तब सारी आधुनिक तकनीक और आधारभूत ढाँचे में गिरावट आएगी। लेकिन यह भक्तों के लिए अच्छा है। भगवान मोक्ष प्रदान करने आए हैं। उनका नाम 'तारणहार' है। यह संसार के लिए सुख और शांति का संदेश है। यह बहुत अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:56 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 245 क्या कल्कि और इमाम महदी एक ही व्यक्ति हैं या अलग-अलग? और क्या उनके बीच युद्ध होगा?

उत्तर: श्रीमद् भागवत और भगवान कल्कि के मार्ग के अनुसार, भगवान कल्कि ही अवतार हैं। संसार में सभी धर्म एक ही धर्म, सनातन धर्म में विलीन हो जाएंगे। भगवान कल्कि किसी विशेष व्यक्ति से युद्ध नहीं करेंगे। वे पृथ्वी को शुद्ध करने, उसे पाप के प्रवाह से मुक्त करने और उसका संतुलन बचाने आए हैं। सभी धर्मों के लोग—हिंदू, सनातनी, मुसलमान—जो धर्म का पालन करते हैं, उन्हें भगवान कल्कि बचाएंगे। ऐसा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:58 · 1 अगस्त 2021

प्रश्न 246 आपने कहा था कि 2018 में वैष्णो देवी और भगवान कल्कि की भेंट हुई थी। 2018 में एक बड़ा धूल भरा तूफान आया था। क्या मालिका में लिखा है कि यह उनकी भेंट का संकेत था?

उत्तर: यह मेरी अपनी अनुभूति है। जिस दिन त्रिकूट पर्वत पर आग लगी थी... मालिका में लिखा है कि जब कोई देवी या देवता अपना धाम छोड़ते हैं, तो आप उस क्षेत्र में अग्नि देखेंगे। तब आप जान जाएंगे कि देवता ने वह स्थान छोड़ दिया है। 2018 में त्रिकूट पर्वत पर आग लगी थी, लोग इस बारे में जानते हैं। तो हम उस दिन को वह दिन मानते हैं जिस दिन माता वैष्णो देवी ने अपना धाम छोड़ा। मालिका और उसके वचनों का अनुसरण करते हुए हम कहते हैं कि वही वह दिन था जब माता ने धर्म की स्थापना के लिए और संपूर्ण संसार के भक्तों के उद्धार के लिए अपना स्थान छोड़ा।

► यह उत्तर सुनें · 48:54 · 1 अगस्त 2021

सत्र 13 · प्रश्न 247–269

L13 भविष्य मालिका ओड़िआ भाषा में क्यों लिखा गया? Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 8 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 247 द्वापर युग में, भगवान कृष्ण के समय में पौंड्रक नाम का एक झूठा नारायण था। क्या आने वाले समय में हमें भी ऐसे झूठे कल्कि मिलेंगे, और उनसे बचने का क्या उपाय है?

उत्तर: हर युग में भगवान भक्तों की रक्षा के लिए अपनी लीला करते हैं। उदाहरण के लिए, श्रीमद् भागवत में उल्लेख था कि भगवान विष्णु वसुदेव और देवकी के यहाँ जन्म लेंगे, फिर भी उसी युग में कुछ लोगों ने पौंड्रक वासुदेव को भगवान का दर्जा दे दिया। इसी प्रकार, इस युग में भी जो सच्चे और धर्मनिष्ठ हैं, वे भगवान तक पहुँचेंगे। मालिका कहती है कि कलियुग के अंत में 12 व्यक्ति स्वयं को भगवान घोषित करेंगे, अपने-अपने प्रकार के धर्म का प्रचार करेंगे, भक्तों को इकट्ठा करेंगे, बड़े-बड़े संगठन खड़े करेंगे, और बड़े-बड़े प्रवचनों के माध्यम से स्वयं को भगवान के रूप में प्रस्तुत करेंगे, तथा अपना नाम भारत और संसार भर में फैलाएंगे। किंतु सच्चे भगवान का नाम हर जगह नहीं फैलेगा, क्योंकि वे गुप्त रूप से कार्य करेंगे। वे स्वयं का प्रचार नहीं करेंगे, बल्कि अपने भक्तों को स्वयं चुनेंगे। मालिका कहती है कि 12 व्यक्ति स्वयं को भगवान घोषित करेंगे और सनातन धर्म के मार्ग का अनुसरण नहीं करेंगे। लोग अपने अज्ञान में उनके शिष्य बन जाएंगे। भारत में ऐसे बहुत-से लोगों का पर्दाफाश हो चुका है। क्या भगवान कभी अपना प्रचार करते हैं या शिष्य बनाते हैं? किस शास्त्र में लिखा है कि भगवान ने शिष्य बनाए या गुरु मंत्र दिया? भगवान मित्र, सखा और परिवार बनाने आते हैं। वे भक्तों के साथ अपने परिवार जैसा व्यवहार करते हैं; वे उनके साथ खेलते हैं, खाते हैं, और यहाँ तक कि जूठा भोजन भी बाँटते हैं। भगवान अपनी 'लीला' करते हैं, वे शिष्य बनाने या संगठन खड़े करने नहीं आते। लेकिन कलियुग में जो लोग स्वयं का प्रचार करते हैं, मालिका की आलोचना करते हैं, गुप्त रूप से धनवान लोगों को अपना शिष्य बनाते हैं, ट्रस्ट बनाते हैं, और राजाओं जैसा जीवन जीते हैं—वे ही झूठे हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानस में इस विषय में लिखा है, फिर भी लोग समझते नहीं। उन्होंने लिखा कि कलियुग में तथाकथित संत बहुत धन इकट्ठा करेंगे और भव्य आश्रम बनाएंगे, जबकि गृहस्थ अपने पापों के कारण निर्धन हो जाएंगे। एक सच्चे तपस्वी को धन की क्या आवश्यकता है? उन्हें तो संन्यासी होना चाहिए। फिर भी लोग उनके पीछे भागते हैं, क्योंकि उनके भाग्य में भगवान नहीं हैं। जिनके भाग्य में भगवान हैं, वे उन तक पहुँचने का मार्ग खोज लेंगे, जबकि अन्य लोग पौंड्रक जैसे झूठे प्रचारकों की शरण लेकर अपना जीवन नरक की ओर ले जाएंगे। मालिका स्पष्ट रूप से कहती है कि भारत में 12 झूठे कल्कि या भगवान प्रकट होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:40 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 248 एक मित्र ने मुझे बताया कि लगभग 2025 में सभी मुस्लिम देश, चीन के साथ मिलकर भारत पर हमला करेंगे और हिंदुओं, पंडितों तथा राजपूतों का नरसंहार होगा। ऐसी स्थिति में भगवान कल्कि उन्हें पहले ही क्यों नहीं बचाएंगे? विनाश के बाद ही क्यों बचाएंगे? यही मेरा संशय है।

उत्तर: यह सभी के लिए, विशेषकर भारत भूमि से जुड़े सभी भक्तों के लिए, बहुत अच्छा और प्रासंगिक प्रश्न है। यह उचित प्रश्न है: भगवान भारत में हो रहे अत्याचारों से मानव समाज को क्यों नहीं बचाएंगे? लेकिन देखिए, बाबा, बहुत-से अत्याचार भारत के भीतर भी होते हैं। जो लोग गलत काम करते हैं, वे क्या हैं? वे भी राक्षस हैं। भगवान को इन सब लोगों को एक साथ समाप्त करने के लिए एक माध्यम चाहिए। उनका विनाश किसी माध्यम से होगा, चाहे वह युद्ध हो या सांप्रदायिक हिंसा। लेकिन एक बात निश्चित है, और वह हिमालय जितनी अटल है: पंडित (धर्मनिष्ठ भक्त) शाश्वत हैं। इस धरती पर ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ जो किसी भक्त के सिर का एक बाल भी टेढ़ा कर सके। भगवान कल्कि उन्हें अवश्य बचाएंगे; यह भी मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 31:50 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 249 पंडित जी, एक छोटा-सा प्रश्न। हमारे पूर्वज सदा भगवान राम, भगवान कृष्ण और माता रानी की पूजा करते आए हैं। क्या अब हमें उनकी पूजा बंद करके केवल भगवान कल्कि की पूजा करनी चाहिए? मुझे यह संशय है।

उत्तर: हम कलियुग में हैं। हम भगवान राम, भगवान कृष्ण और भगवान के अनेक अन्य अवतारों की पूजा करते हैं। भगवान के किसी भी स्वरूप की पूजा करना किसी शास्त्रीय सिद्धांत का उल्लंघन नहीं है। यह हमारे लिए आवश्यक है और हमें यह करना चाहिए। इसमें कोई दोष या भ्रम नहीं है। किंतु जब भगवान साक्षात् रूप में पृथ्वी पर विराजमान हों, तब उस स्वरूप की पूजा और आराधना करना भी आवश्यक है। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो यह भगवान की 'लीला' बन जाती है। जब भगवान कृष्ण वृंदावन में अपनी लीला कर रहे थे, तब गोपियों ने उन्हें पुकारा, लेकिन ब्राह्मण उन्हें पहचान नहीं सके। जब उन्होंने अंततः पहचाना, तब उन्हें उनका 'दर्शन' नहीं मिल सका। यह शास्त्रों में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 33:57 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 250 मैंने कहीं पढ़ा था कि भगवान कल्कि 17 वर्ष की आयु में स्वयं को प्रकट करेंगे। आपके अनुसार अभी उनकी आयु क्या है, और मालिका किस वर्ष में उनके प्रकट होने का संकेत देती है?

उत्तर: देखिए, बाबा, ऋषि-मुनि और संत भगवान की एक झलक पाने के लिए ही अनेक युगों तक तपस्या करते हैं। द्वापर युग में सभी लोग भगवान कृष्ण को पहचान नहीं सके थे। धर्म की स्थापना के बाद ही, जब उन्होंने कंस और अनेक अन्य राक्षसों का संहार किया, तब समाज ने उन्हें भगवान के रूप में पहचाना। इस समय धर्म की स्थापना के लिए भक्तों को एकत्र करने की प्रक्रिया चल रही है। जब सभी भक्त एकत्र होंगे और भगवान कल्कि से मिलेंगे, तब मालिका माध्यम बनेगी; वही मार्ग दिखाएगी। मालिका कहती है कि भगवान गुप्त रूप से अपनी 'लीला' करेंगे। भक्तों को पता चलेगा, लेकिन वे सबको 'दर्शन' नहीं देंगे। वे गाँव-गाँव घूमकर सबको अपने दर्शन नहीं कराएंगे। लोगों को अपने कर्मों का फल मिलेगा; जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं, वे भगवान से जुड़ेंगे। इसलिए यूट्यूब पर मैं जो यह प्रश्न देखता हूँ, 'कल्कि कब प्रकट होंगे?', वह सही प्रश्न नहीं है। वे कौन-से योग्य लोग हैं, तपस्या करने वाले, जिनके लिए भगवान प्रकट हों? क्या वे पापियों को मोक्ष देने के लिए प्रकट होंगे? यह भगवान का काम नहीं है। इस युग में भी संत भगवान के दर्शन के लिए आएंगे और धर्म की स्थापना में भाग लेंगे। लेकिन यह अवसर सबको नहीं मिलेगा। भगवान मीडिया चैनलों पर सबके देखने के लिए नहीं आएंगे, उन झूठे प्रचारकों की तरह जो स्वयं को भगवान घोषित करते हैं। भगवान कल्कि मालिका के माध्यम से धर्म की स्थापना करेंगे, भक्तों को एकत्र करते हुए, जैसे इस समय हम सब जुड़े हुए हैं। केवल वही भक्त उनका

'दर्शन' पाएंगे जो गुप्त रूप से कार्य कर रहे हैं। सबको उनके आश्रम में आने की अनुमति नहीं मिलेगी, चाहे वे कितने ही धनवान या शक्तिशाली क्यों न हों। भगवान गुप्त रूप से कार्य करेंगे, अपनी 'योगमाया' के माध्यम से भारत और संसार भर से भक्तों को एकत्र करेंगे। केवल भक्तों को ही पता चलेगा; सबको नहीं। कोई सार्वजनिक उपस्थिति या प्राकट्य नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:58 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 251 कल्कि कब प्रकट होंगे?

उत्तर: वे योग्य लोग कौन हैं जो तपस्या कर रहे हैं, जिनके लिए भगवान प्रकट हों? क्या भगवान समाज के अनेक पापियों के लिए प्रकट होंगे, उन्हें दर्शन देंगे और उन्हें मुक्ति प्रदान करेंगे? क्या यह भगवान का काम है? इस युग में संत भगवान के दर्शन के लिए आएंगे और धर्म की स्थापना के लिए रहेंगे; वे अमर हैं। लेकिन यह सुविधा सभी को नहीं मिलेगी। लंका में सभी राक्षसों ने भगवान राम को नहीं देखा था। इसी प्रकार, इस युग में भगवान मीडिया चैनलों पर नहीं आएंगे कि सब उन्हें देख लें, जैसा कि वे झूठे भविष्यवक्ता करते हैं जो स्वयं को भगवान घोषित करते हैं। ऐसा नहीं होगा। मालिका कहती है कि भगवान कल्कि मालिका के माध्यम से, भक्तों को एकत्र करके धर्म की स्थापना करेंगे। वे गुप्त रूप से कार्य करेंगे, और केवल भक्त ही उन्हें जानेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:42 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 252 समाचारों में आया है कि शी जिनपिंग तिब्बत गए और उन्होंने कहा कि अगले दलाई लामा को चीन चुनेगा। क्या भगवान कल्कि के अवतार और लामा के बीच कोई संबंध है, विशेषकर इसलिए कि दलाई लामा ने भारत में शरण ली हुई है? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।

उत्तर: जब कोई युग समाप्त होता है, तो लोग भटक जाते हैं और शास्त्रों का पालन नहीं करते। जब किसी को सत्ता मिलती है, तो वह जूते पहनकर भगवान के मंदिर में घुस जाता है। यह 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' का संकेत है—विनाश के समय बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। बौद्ध धर्म के भी अनेक भक्त बचाए जाएंगे; यह मालिका में लिखा है। लेकिन देखिए, चीन का भूगोल पूरी तरह बदल जाएगा। भगवान कल्कि ने एक बार इसका उल्लेख किया था। एक दिन चीन ने भारत का इतिहास बदलने की बात कही थी। एक भक्त के प्रश्न के उत्तर में भगवान ने कहा था, 'मैं विश्व मानचित्र पर चीन का भूगोल बदल दूँगा और उन्हीं की बनाई हुई चीज़ों से उनके अपने देश में विनाश कराऊँगा।' आज हम इसे होते हुए देख रहे हैं। मैं 10 वर्ष पहले कही गई बात कर रहा हूँ, हाल की नहीं। जो ऐसे कार्य करते हैं, वे अपने ही विनाश को आमंत्रित करते हैं। अनेक बौद्ध भी बचाए जाएंगे। वे जो कर रहे हैं, करने दीजिए; अब ज़्यादा समय नहीं बचा है। लगभग 10 वर्षों के भीतर सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। स्थिति इतनी कठिन हो जाएगी कि संभालना मुश्किल होगा, और हर वर्ष आप और अधिक विनाश देखेंगे, और चीन भी देखेगा। मालिका भक्तों के लिए मुक्ति का वचन है।

► यह उत्तर सुनें · 40:25 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 253 मैं बंगाल में जाजपुर के पास रहता हूँ, जिसका उल्लेख मालिका में है। क्या आप बता सकते हैं कि वहाँ की घटना कब होगी? क्या मैं जाकर उसमें सम्मिलित हो सकता हूँ ताकि मैं भगवान के दर्शन कर सकूँ और बच सकूँ?

उत्तर: यह बहुत अच्छा और पवित्र प्रश्न है। भविष्य मालिका ने इसका स्पष्ट वर्णन किया है। इसमें कहा गया है कि जब भगवान कल्कि 16 मंडलों (भक्तों के समूहों) का निर्माण करेंगे, तब वे जाजपुर जाएंगे। भक्तों के 16 मंडल वहाँ एकत्र होंगे और यज्ञ करेंगे। यह अंतिम यज्ञ होगा, जहाँ धर्म की स्थापना में सम्मिलित सभी देवता और मानव भक्त एकत्र होंगे। भगवान कल्कि भी अपने मानव शरीर में वहाँ जाएंगे। लोग उनका अत्यंत सुंदर रूप देखकर सोच सकते हैं कि वे किसी धनी व्यक्ति के पुत्र हैं, भगवान नहीं। यह भी मालिका में लिखा है। भगवान वहाँ कुछ समय रुकेंगे और फिर लौट जाएंगे; वे पूरे समय नहीं रुकेंगे। जाजपुर की घटनाओं के बाद, विश्वभर में धर्म स्थापना का कार्य गति पकड़ेगा। यह अद्भुत है कि आपका घर जाजपुर के पास है। समय आने पर आप निश्चित रूप से भगवान से मिलेंगे। अभी के लिए, विश्व सनातन धर्म के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ें और जाजपुर से धर्म स्थापना का कार्य आरंभ करें, क्योंकि भगवान का वहाँ जाना नियत है।

► यह उत्तर सुनें · 44:18 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 254 मैं किस मंडल में रहूँगा? मुझे किस मंडल में सम्मिलित होना चाहिए?

उत्तर: कालिका मंडल में सम्मिलित हों। बंगाल, बिहार और असम जैसे छोटे राज्यों को मिलाकर कालिका मंडल बनाया जाएगा। मालिका ने कालिका मंडल को प्राथमिकता दी है। माँ काली की भूमि के भक्तों को विश्व सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए। विवरण (डिस्क्रिप्शन) में उल्लिखित उन संतों से बात करें जो धर्म स्थापना के इस कार्य में लगे हुए हैं, और कालिका मंडल में सम्मिलित हों। यही अच्छा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:35 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 255 पंडित जी, हम किस मंडल में रहेंगे? (उत्तर प्रदेश, लखनऊ/अयोध्या से)

उत्तर: अयोध्या में भगवान कल्कि की महत्वपूर्ण 'लीला' होगी, क्योंकि यह उनकी पूर्व जन्मभूमि है। उत्तर प्रदेश एक बड़ा राज्य है जिसमें मथुरा, वृंदावन और अयोध्या हैं। वहाँ के भक्तों से जुड़ने के लिए, विवरण में उल्लिखित समूहों में सम्मिलित हों। वहाँ के लोग इस सत्संग पर कार्य कर रहे हैं। उनसे जुड़ें और विश्व सनातन धर्म के लिए कार्य करें। यही अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 47:48 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 256 हम सभी देवी-देवताओं का सम्मान करते हैं, लेकिन इस युग में मुक्ति के लिए भगवान का कौन-सा नाम सबसे पवित्र है और जपा जाना चाहिए?

उत्तर: इस युग में मैं 'माधव' नाम का जप करूँगा। आप भगवान विष्णु, भगवान कृष्ण या माँ भगवती की उपासना कर सकते हैं—किसी की भी उपासना करें। किंतु भगवान माधव का नाम विशेष रूप से कल्याणकारी है। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्य एक ही ज़ोन का हिस्सा होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:08 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 257 झारखंड किस मंडल का हिस्सा होगा? क्या वह ओडिशा के साथ होगा?

उत्तर: झारखंड ओडिशा के बिरजा मंडल के साथ होगा। आप ओडिशा के भक्तों से जुड़ सकते हैं। या फिर, चूँकि आप हिंदीभाषी हैं, आप मथुरा-वृंदावन या कालिका मंडल से जुड़कर कार्य कर सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ हैं; हम सब भगवान और सनातन धर्म के लिए कार्य कर रहे हैं। हर भक्त की आवश्यकता है, और कोई भेद नहीं है। भारत के सभी लोग अंततः इन 16 मंडलों का हिस्सा होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:00 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 258 पंडित जी, आपने कहा था कि विश्व में 64 करोड़ लोग बचेंगे। क्या इन सभी 64 करोड़ लोगों तक मालिका का पहुँचना आवश्यक है ताकि उनकी रक्षा हो सके?

उत्तर: यह बहुत उत्तम प्रश्न है, सुन रहे सभी भक्तों के लिए एक प्रमुख प्रश्न। जब कलियुग का अंत आएगा, तब मालिका का प्रचार होगा। जैसे-जैसे धर्म स्थापना निकट आएगी, हो सकता है मालिका स्वयं सभी 64 करोड़ लोगों तक न पहुँचे, लेकिन 'माधव' नाम उन तक अवश्य पहुँचेगा। वे केवल 'माधव' नाम के जप से ही बच जाएंगे। हो सकता है उन्हें भगवान के दर्शन न हों या वे इन चर्चाओं में सम्मिलित न हो पाएँ जैसे हम आज कर रहे हैं, लेकिन 'माधव' नाम के माध्यम से विश्वभर के सभी 64 करोड़ लोगों तक मुक्ति पहुँचेगी। महान संत अच्युतानंद ने इस बारे में लिखा है कि केवल 'माधव, माधव' जपने मात्र से लोग बच जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 51:01 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 259 'भक्त निरूपण टीका' (भक्तों की पहचान पर एक ग्रंथ) के अनुसार, भगवान के दर्शन पाने के लिए भक्त को कौन-सा मार्ग चुनना चाहिए?

उत्तर: भगवान राम ने कहा था, 'निर्मल मन वाला ही मुझे पाता है।' इसका अर्थ है वह व्यक्ति जो किसी भी प्राणी में भेद नहीं देखता—चींटी या कुत्ते से लेकर किसी भी मनुष्य तक, यहाँ तक कि शत्रु तक में भी। वे संसार में किसी को अपना शत्रु नहीं मानते। वे सर्वत्र ब्रह्म को देखते हैं; वे हर वस्तु में भगवान का रूप देखते हैं। इसलिए उनके भीतर कोई हिंसा या क्रोध नहीं होता। भक्त का एक प्रमुख लक्षण है ब्रह्मांड के सभी प्राणियों के प्रति करुणा, जड़ वस्तुओं से लेकर कीट-पतंगों तक। वे भगवान की समस्त सृष्टि का सम्मान करते हैं और हर चीज़ में दिव्यता देखते हैं। वे सरल हृदय वाले होते हैं। यदि कोई उनसे कुछ कहता है, तो वे उसका अधिक विश्लेषण या आलोचना नहीं करते। यदि वह अच्छा है, तो उन्हें प्रसन्नता होती है; यदि बुरा है, तो वे बस वह स्थान छोड़ देते हैं। और उन्हें बिना किसी प्रमाण या सबूत के भगवान पर श्रद्धा होती है। केवल उनका नाम सुनते ही उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। उनकी श्रद्धा पूर्ण होती है। इस कलियुग में मुख्य मार्ग ये हैं: शाकाहारी होना, भगवान और मालिका पर अंध विश्वास रखना, और बिना किसी प्रमाण के मालिका के वचनों को सीधे स्वीकार करना। यही भक्त का लक्षण है। जो भी मालिका का विरोध करता है, तर्क करता है, प्रश्न उठाता है या आलोचना करता है, वह भक्त के मार्ग पर नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 52:45 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 260 हम नवरात्रि का व्रत रखते हैं और हाल ही में पढ़ने के लिए श्रीमद् भागवत घर लाए हैं। इस पाठ को करने की उचित विधि क्या है?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार, हर घर के हर व्यक्ति को श्रीमद् भागवत पढ़ना चाहिए। श्रीमद् भागवत को बार-बार पढ़ने से आयु बढ़ती है। यह एक महान अभ्यास है। यह अच्छा है कि लोग पाठ का आयोजन करते हैं, लेकिन मेरा सुझाव है कि आपके परिवार के सभी सदस्य स्वयं इसे पढ़ें। जो भगवान कल्कि से जुड़े होंगे, वे सभी ब्राह्मण होंगे और सभी श्रीमद् भागवत पढ़ेंगे। स्वयं पढ़ें, और आप धीरे-धीरे इसे समझने लगेंगे। साथ ही, चूँकि यह धर्म स्थापना का समय है, यदि आपके पास समय हो तो सनातन धर्म और मालिका का प्रचार करें। यही सबसे बड़ी सेवा होगी। भगवान ने अपना कार्य आरंभ कर दिया है, और हमारा प्रमुख लक्ष्य यह होना चाहिए कि आप जैसी पवित्र आत्माओं की, जो भागवत के प्रति समर्पित हैं, सहायता करें ताकि सनातन धर्म का संदेश विश्वभर में फैले। इस नवरात्रि में, यदि परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर श्रीमद् भागवत पढ़ें, तो यह उत्तम होगा और पृथ्वी को पवित्र करेगा। यदि सौ लोग एक साथ बैठकर इसे पढ़ें, तो यह और भी अधिक पवित्र हो जाता है। साथ ही, गरीब और असहाय हिंदुओं की कुछ सेवा करें।

► यह उत्तर सुनें · 56:20 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 261 घर के छोटे बच्चे पढ़ नहीं सकते, लेकिन अगर सब एक जगह बैठ जाएँ और एक व्यक्ति ज़ोर से पढ़े तथा बाकी सब सुनें, तो क्या यह स्वीकार्य है?

उत्तर: यह तो बहुत ही अच्छा है। जब पूरा परिवार एक साथ बैठकर भगवान का भजन (भक्ति गीत/स्तुति) करता है, तो वही परम भक्ति है। यदि बच्चे पढ़ नहीं सकते, तो उन्हें सुनाइए। आज संसार में माता-पिता अपने बच्चों को न भागवत सुनाते हैं, न हनुमान चालीसा का पाठ कराते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे भटक जाते हैं, माता-पिता का अनादर करते हैं और कामनाओं के पीछे भागकर अपना चरित्र नष्ट कर लेते हैं। जिस घर में सब—बुज़ुर्ग, वृद्ध, बच्चे—मिलकर भागवत पढ़ने के लिए एकत्र होते हैं, वह घर महान पुण्य का स्रोत बन जाएगा। जो पढ़ नहीं सकते, उन्हें भी बैठाकर सुनाना चाहिए। उनकी आयु बढ़ेगी, और धर्म स्थापना के समय उनकी रक्षा होगी। यह हमारे लिए महान जीवनदायी अमृत है। यह उत्तम है, कृपया ऐसा ही कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 59:51 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 262 क्या हमें 'म्लेच्छों' (बर्बर/पापियों) के प्रति भी शत्रुता का भाव नहीं रखना चाहिए?

उत्तर: भक्त का लक्षण है अपने ही कर्मों पर चिंतन करना। हमें यह सोचना चाहिए कि हम अपने कर्म कैसे सुधार सकते हैं, दिन भर में हमने क्या अच्छा किया और क्या बुरा किया। यह विचार सदा हमारे साथ रहना चाहिए ताकि हम स्वयं को सुधार सकें। म्लेच्छों का विनाश होगा; उनका विनाश निश्चित और अटल है। हर युग में यही शास्त्रीय नियम है। लेकिन उनके बारे में सोचकर समय व्यर्थ करना संत का लक्षण नहीं है। संत का लक्षण है सदा भगवान के नाम, महिमा, भजन, कीर्तन और लीला में डूबे रहना। वे बार-बार अपने ही कर्मों का विश्लेषण करते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। भगवान ने हमें इस संसार में इसलिए भेजा है कि हम अपने कर्म सुधारें और फिर दिव्य धाम लौटें। एक बार उद्धव ने भगवान कृष्ण से पूछा कि मनुष्य को इस संसार में क्या करना चाहिए। भगवान कृष्ण ने उनसे कहा कि इस मृत्युलोक में, स्वर्गलोक से लेकर पृथ्वीलोक तक सभी को, यहाँ तक कि ब्रह्मा जी और महादेव को भी, एक दिन शरीर त्यागना ही पड़ता है। मृत्यु सबके लिए निश्चित है। इसलिए मनुष्य को अच्छे कर्मों पर ध्यान देना चाहिए। नारद जैसा कार्य कीजिए, जिनका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था, पर अपनी सेवा के बल पर वे ब्रह्मा के पुत्र बन गए। म्लेच्छों का विनाश होगा, लेकिन वह हमारी जिम्मेदारी नहीं है। हमारी जिम्मेदारी है संसार को बदलना। डाकू रत्नाकर भी तो महर्षि वाल्मीकि बन

गए। इसलिए हम जैसे संत जो भगवान की शरण में कार्य करते हैं, हमारा कर्तव्य है संसार में परिवर्तन और रूपांतरण लाना, लोगों को पाप से बचाना। दूसरों के बारे में सोचने के लिए हमारे पास बहुत कम समय है। अपना कर्म सुधारिए, भगवान का नाम जपिए, और सारे संसार में भगवान को देखिए। संसार को सद्बुद्धि मिले, इसकी प्रार्थना कीजिए। बस इतना ही।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:28 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 263 भगवान के लिए कोई मंदिर नहीं बना सकता, फिर लोगों ने उन्हें मक्का-मदीना में बंदी बनाकर कैसे रखा है? वे वहाँ से कैसे मुक्त होंगे?

उत्तर: इस विषय पर मैंने यूट्यूब पर कई एपिसोड डाले हैं। मालिका कहती है कि मक्का-मदीना कभी ब्राह्मण शासन के अधीन था; वह ब्राह्मणों की भूमि थी। वे वहाँ महान कार्य कर रहे थे। समय के साथ एक मुसलमान शरण और रहने की जगह माँगते हुए आया। ब्राह्मणों ने उसे स्थान दे दिया। धीरे-धीरे उसने ब्राह्मणों को नष्ट करने का काम किया और वहाँ मक्का-मदीना स्थापित कर दिया। वह मुसलमानों का पवित्र स्थल है, लेकिन एक समय आएगा जब मक्का-मदीना में फिर से ब्राह्मण शासन स्थापित होगा; यह मालिका में लिखा है। वहाँ भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा भी होगी। एक समय आएगा जब स्वयं भगवान महादेव (शिव) वहाँ प्रकट होंगे और संसार के पापियों का विनाश करेंगे। यह भी मालिका में है। भगवान तभी प्रकट होते हैं जब पाप अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है। जैसे भगवान कृष्ण ने शिशुपाल को सौ बार क्षमा किया और अंत में उसका अंत किया, वैसे ही भगवान समाज को अनेक अवसर दे रहे हैं—महामारियाँ, रोग, युद्ध—फिर भी मानवता समझती नहीं और पाप करती रहती है। इसलिए भगवान आ चुके हैं, और धर्म की स्थापना होगी। मालिका कहती है कि मक्का-मदीना में भगवान जगन्नाथ का मंदिर फिर से बनेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:13 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 264 कुछ लोग ऐसे हैं जो शाकाहारी हैं लेकिन मालिका में विश्वास नहीं करते। उनके लिए मालिका में क्या लिखा है?

उत्तर: जो मालिका में विश्वास नहीं करते, उनके लिए कोई स्थान नहीं है। वे अपने रास्ते जाएँगे। मालिका भक्तों के लिए है। जो भक्त नहीं हैं, वे इस पर विश्वास नहीं करेंगे; यह मालिका में लिखा है। तो बस इतना समझ लीजिए: जो विश्वास नहीं करते, उनके सामने मालिका की बात करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह कोई व्यापारिक उद्यम नहीं है; यह धर्म की स्थापना है। यह भक्तों के लिए है, इसलिए भक्त ही सुनेंगे। दूसरों के लिए यह आवश्यक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:41 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 265 मैं यूट्यूब पर भागवत पुराण सुनता हूँ, लेकिन पुस्तक नहीं पढ़ता। क्या हमारे सनातन धर्म के अनुसार यूट्यूब पर सुनना पर्याप्त है?

उत्तर: सुनने से पुण्य मिलता है, इसमें कोई संदेह नहीं। फिर भी एक काम कीजिए। दिन में जब भी समय मिले, किसी शांत स्थान पर बैठिए, दीपक और धूप जलाइए, भगवान की स्तुति कीजिए, और फिर श्रीमद्भागवत पढ़िए। यही हमारी परंपरा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:44 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 266 क्या मालिका में कोटा, राजस्थान के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: मालिका ने सभी राज्यों के बारे में लिखा है। महान संत ने मालिका में लिखा है कि भारत के किन राज्यों की सीमाओं पर युद्ध होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:32 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 267 भगवान विष्णु के हर अवतार में माता लक्ष्मी भी उनके साथ अवतार लेती हैं। कल्कि अवतार में वे कहाँ हैं? क्या वे वैष्णो देवी हैं?

उत्तर: वैष्णो देवी, लक्ष्मी के स्वरूप में, भगवान द्वारा प्राप्त होंगी और भगवान कल्कि की पत्नी होंगी। जैसे राम अवतार में भगवान राम ने सीता के साथ राम राज्य स्थापित किया, वैसे ही भगवान कल्कि वैश्विक राम राज्य स्थापित करेंगे। माता महालक्ष्मी, माता वैष्णो देवी के रूप में, भगवान की शरण लेंगी। माता वैष्णो देवी अपना धाम पहले ही छोड़ चुकी हैं। वे पहले ही निकल चुकी हैं और मानव शरीर में पृथ्वी पर आ चुकी हैं। भगवान कल्कि ने भी संभल गाँव में, जहाँ उनका जन्म हुआ, अपना स्थान स्थापित कर लिया है।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:31 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 268 माता लक्ष्मी (वैष्णो देवी के रूप में) और भगवान कल्कि का मिलन कब होगा?

उत्तर: उनका मिलन एक बार तब हुआ था जब भगवान कल्कि माता वैष्णो देवी के 'दर्शन' (दिव्य दर्शन) के लिए गए थे। मालिका यह भी कहती है कि माता महालक्ष्मी पहले ही जगन्नाथ पुरी में मानव शरीर में जन्म ले चुकी हैं। भगवान जगन्नाथ, माता पार्वती और माता लक्ष्मी का कार्य आरंभ हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:59 · 8 अगस्त 2021

प्रश्न 269 कुछ लोग ऐसे हैं जो मालिका में विश्वास करते हैं, भागवत पढ़ते हैं और मार्ग का पालन करते हैं, लेकिन सिगरेट पीना नहीं छोड़ पाते। जब मैं उन्हें कहता हूँ, तो वे कहते हैं, 'एक सिगरेट पी ली तो क्या बड़ी बात है? बाकी सब तो मैं मानता ही हूँ।' उनके लिए क्या समाधान है?

उत्तर: क्या देवता सिगरेट पीते हैं? नहीं। मैं उन लोगों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे इन आदतों को छोड़ दें। यह शरीर एक दिव्य मंदिर है, और ऐसी आदतें इसका अनादर करती हैं। भगवान कल्कि के भक्तों को दिव्य शक्ति की आवश्यकता होगी। यह शरीर पवित्र और शक्तिशाली कैसे बनेगा? भक्तों को परमाणु हथियारों के विरुद्ध लड़ना पड़ेगा। उन्हें भूख और प्यास का सामना करना पड़ेगा। इसके लिए दिव्य शक्ति और पवित्र शरीर चाहिए, क्योंकि देवता मानव शरीर में प्रवेश करेंगे। यदि शरीर पवित्र नहीं होगा, तो भगवान जो दिव्य शक्ति प्रदान करेंगे, उसे वे कैसे ग्रहण करेंगे? इसीलिए मैं आप सबसे विनम्रता से कहता हूँ कि यदि हम अपने शरीर को पवित्र नहीं रखेंगे, तो आने वाली आपदाओं का सामना नहीं कर पाएँगे। तब हम कहेंगे, 'पंडित जी ने हमें मालिका का मार्ग बताया, हमने उसका पालन किया, फिर हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ?' मैं फिर भी आपसे निवेदन करता हूँ कि इन चीज़ों को छोड़ दीजिए। उन्हें यह समझाइए। वे भक्त हैं, उनका मन पवित्र है, और उनमें श्रद्धा है। उन्हें थोड़ा समझाइए, और परिवर्तन लाइए। लगे रहिए; सत्संग (आध्यात्मिक प्रवचन) के माध्यम से वे धीरे-धीरे बदल जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:23:21 · 8 अगस्त 2021

सत्र 14 · प्रश्न 270–289

L14 सारे विश्व के भक्त कैसे और कहाँ एकत्रीकरण होंगे ? Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 15 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 270 मैं भगवान से कैसे मिल सकता हूँ?

उत्तर: पहले यह बताइए, आप कहाँ से बोल रहे हैं? (कॉल करने वाले ने कहा देवघर, झारखंड)। मालिका ने झारखंड के बारे में लिखा है। भगवान से मिलने के लिए आपको उनकी अनुमति चाहिए; मैं कुछ नहीं कर सकता। मेरी सलाह है कि जो सनातन धर्म संगठन बन रहा है, उसमें जुड़िए, क्योंकि वही पूरे विश्व का नेतृत्व करेगा। लोग अभी इस पर विश्वास न करें, पर यह भगवान का वचन है। अपनी साधना जारी रखिए, जैसे माधव का नाम जपना और श्रीमद्भागवत पढ़ना। चाहे कैसी भी समस्याएँ आएँ, भागवत प्रतिदिन अवश्य पढ़िए। हमारे संगठन से जुड़िए और इस कार्य में योगदान दीजिए। यही मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 18:17 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 271 हमारा महामंत्र है 'ॐ श्री सत्य अनन्त माधवाय नमः।' मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हम इसे चप्पल पहने हुए, बैठकर या खड़े होकर जप सकते हैं?

उत्तर: देखिए, यदि सुविधा हो तो चप्पल उतारकर नाम जपना ही श्रेष्ठ है। परंतु यदि आप ऐसी स्थिति या स्थान पर हैं जहाँ यह संभव नहीं है, तो आप मन ही मन पवित्र गंगा में डुबकी लगाकर फिर नाम जप सकते हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 23:31 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 272 मेरा एक और प्रश्न है। मैं एक विशेष आध्यात्मिक मार्ग में दीक्षित हूँ, जहाँ हम कृष्ण स्वरूप की उपासना करते हैं। मैं यह महामंत्र ('ॐ श्री सत्य अनन्त माधवाय नमः') भी जपता हूँ। क्या मैं दोनों कर सकता हूँ? क्या इसमें कोई समस्या है?

उत्तर: देखिए, भगवान श्रीकृष्ण की जो लीला अधूरी रह गई थी, वह अब इस अनन्त युग में आगे बढ़ाई जाएगी। तो आपने कृष्ण को पहले ही थाम लिया है, यह बहुत उत्तम है। भगवान कृष्ण का नाम जितना चाहें उतना जपिए; इससे आनंद मिलता है। करते रहिए, इसमें कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:10 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 273 मेरा प्रश्न कल्कि अवतार के विषय में है। क्या वे अवतरित हो चुके हैं, या अभी आना बाकी है?

उत्तर: हमारे शास्त्रों के अनुसार भगवान का अवतार पृथ्वी पर हो चुका है। भगवान और उनके भक्तों का मिलन होगा, और पूरे विश्व में मालिका ही एकमात्र ऐसा शास्त्र है जो इस मिलन को संभव बनाता है। मालिका के माध्यम से भक्त भगवान से जुड़ेंगे। जब वे जुड़ जाएँगे, तब धर्म की स्थापना आगे बढ़ेगी और भक्तों का सुधार होगा। यही शास्त्रों में लिखा है, और इसका समय आ चुका है। मेरी आपको सलाह है कि आप विश्व सनातन ग्रुप से जुड़िए और अपने घर से ही धर्म के लिए कार्य कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:27 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 274 आपने कहा है कि कलियुग समाप्त हो गया है, परंतु संसार में अनाचार और पाप बढ़ते जा रहे हैं। हम कैसे कह सकते हैं कि कलियुग समाप्त हो चुका है?

उत्तर: देखिए, दीपक बुझने से पहले सबसे तेज़ जलता है। उसी प्रकार, जैसे-जैसे कलियुग समाप्त हो रहा है, उसका प्रभाव भड़क उठता है। जब कोई अधिक पाप करता है, तो उसकी प्राणशक्ति क्षीण हो जाती है और वह दुर्घटना या रोग से मर सकता है। जैसे-जैसे कलि ब्रह्मांड से विदा ले रहा है, उसका प्रभाव फैलता है और वह पलटकर लड़ता है, जिससे उथल-पुथल और मानसिक कष्ट उत्पन्न होते हैं। मालिका शास्त्र कहता है कि 5,000 वर्षों के बाद कलि के कष्ट समाप्त हो जाएँगे। यह पहले से बताया गया है, ठीक वैसे ही जैसे श्रीमद्भागवत ने भगवान कृष्ण के जन्म की भविष्यवाणी की थी।

► यह उत्तर सुनें · 28:08 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 275 मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि आप कहते हैं कि कलियुग के बाद सत्ययुग आएगा, परंतु एक वीडियो में मैंने आपको यह कहते सुना कि इसके बाद अनन्त युग 1,009 वर्षों तक चलेगा। कृपया स्पष्ट करें कि आगे अनन्त युग आएगा या सत्ययुग?

उत्तर: जिस अनन्त युग की मैं बात करता हूँ, वह सत्ययुग का आरंभ है। अनन्त युग में 1,009 वर्षों तक भक्त जीवित रहेंगे। भगवान उन्हें राजा और नेता बनाएँगे, और वही पूर्ण एवं संपूर्ण सत्ययुग होगा, जिसके दौरान जनसंख्या बढ़ेगी।

► यह उत्तर सुनें · 28:21 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 276 तो क्या इसका अर्थ यह है कि अनन्त युग सत्ययुग का ही एक भाग है?

उत्तर: जो लोग अनन्त युग के दौरान परिष्कृत होते हैं, जो सत्ययुग के योग्य मनुष्य बनते हैं, वही सच्चा सुख स्थापित करेंगे और पूर्ण सत्ययुग का निर्माण करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:41 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 277 आपने कहा था कि मालिका के अनुसार सात दिनों तक सूर्य नहीं उगेगा। ऐसी स्थिति में बिजली कहाँ से आएगी?

उत्तर: मालिका भक्तों के उद्धार का मार्ग है। सभी भक्त बचे रहेंगे, जबकि पापियों का विनाश होगा। सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। इस अवधि के बाद निराकार भगवान ब्रह्मांड में नया सूर्य और नया चंद्रमा स्थापित करेंगे। नया सूर्य अपनी शीतल किरणों से मानवता को शांति देगा, और रात में चाँदनी सूर्य के समान उज्ज्वल होगी। यही सत्ययुग का स्वभाव है। इसके अतिरिक्त, भक्तों को यह अंधकार अनुभव ही नहीं होगा। मालिका कहती है कि भगवान कल्कि जो उनके साथ होंगे उन्हें आँखों में लगाने के लिए एक वस्तु देंगे, जिससे उन्हें दिव्य प्रकाश प्राप्त होगा और वे अंधकार से अप्रभावित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:27 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 278 माता सती और सीता जैसी विभूतियों के साथ हुए अन्याय को, तथा अन्य स्त्रियों की पीड़ा को देखते हुए, क्या अनन्त युग में स्त्रियों को न्याय और समान अधिकार मिलेंगे?

उत्तर: आधुनिक विज्ञान और मंत्रों के संयोग से मानवता हज़ार गुना अधिक उन्नत हो जाएगी। भगवान की शरण में सभी को समान अधिकार होंगे, ठीक वैसे ही जैसे राम राज्य में थे। भगवान कल्कि सर्वोच्च मर्यादा का पालन कराएँगे, और न्याय की विजय होगी। भगवान एक लाख भक्तों को विश्व का शासक बनाएँगे। भोजन, आवास या मूलभूत आवश्यकताओं की कोई समस्या नहीं रहेगी। देव शिल्पी विश्वकर्मा नए नगरों का निर्माण करेंगे। लोग परम आनंद की अवस्था में रहेंगे, द्वैत, लोभ या संघर्ष से मुक्त। सभी एक-दूसरे से प्रेम करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:33 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 279 सत्ययुग में धर्म के चारों चरण अक्षुण्ण रहते हैं, अर्थात् अधर्म होता ही नहीं। यदि ऐसा है, तो सत्ययुग का अंत क्यों हुआ?

उत्तर: इसका अंत अहंकार और घमंड के कारण हुआ। ऋषि एक शब्द में किसी को भस्म कर देते थे, दूसरों को शाप दे देते थे, इच्छानुसार प्रकृति को नियंत्रित करते थे, और छोटी-छोटी बातों पर मृत्युदंड दे देते थे। अहंकार का यही अंधकार सत्ययुग के विनाश का कारण बना। इसके अतिरिक्त कोई और कारण नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 36:23 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 280 क्या छत्तीसगढ़ में कोई संगठन बनेगा? वहाँ क्या होगा?

उत्तर: पूरे विश्व से सभी भक्त एकत्र हो रहे हैं। आपको उस मुख्य संगठन से जुड़ना चाहिए जो बन रहा है — सुधर्म महासंघ। छत्तीसगढ़ के भक्तों सहित सभी भक्तों को सुधर्म महासंघ और श्री सनातन ग्रुप से जुड़ना चाहिए। कौन किसका दायित्व सँभालेगा, यह स्वयं भगवान कल्कि निर्णय करेंगे। महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे शास्त्रों द्वारा बताए गए मार्ग पर चला जाए।

► यह उत्तर सुनें · 37:56 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 281 अन्य देशों का भविष्य क्या होगा, और विदेश में रहने वाले भक्तों का क्या होगा?

उत्तर: मलिका के अनुसार, यूरोप के कई देश छोटे-छोटे द्वीप बन जाएँगे, परंतु पाँचों महासागर बने रहेंगे। इंग्लैंड, अमेरिका और जर्मनी जैसे देश छोटे द्वीपों के रूप में रहेंगे। वहाँ के भक्त माधव नाम के जप से बच जाएँगे। भगवान कल्कि स्वयं उन देशों में जाएँगे और शासन का उत्तरदायित्व भक्तों को सौंपेंगे। यदि आप विश्व सनातन धर्म ग्रुप के लिए कार्य करते हैं और यह आपके भाग्य में है, तो आप सुधर्म महासंघ में सम्मिलित होंगे, भगवान से मिलेंगे और यह कार्य आगे बढ़ाते रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 40:11 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 282 मलिका में राजस्थान के विषय में क्या लिखा है?

उत्तर: धर्म के लिए भगवान हनुमान वहाँ प्रभु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। राजस्थान हनुमान जी की भूमि है, उनकी उपस्थिति का प्रतीक है। हनुमान जी वहाँ हैं और भक्तों की सहायता करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:41 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 283 मैं जानना चाहती हूँ कि भगवान विष्णु के अवतार ब्राह्मण या क्षत्रिय कुलों में ही क्यों होते हैं, शूद्र कुलों में क्यों नहीं?

उत्तर: सुनिए, माता जी। सत्य युग में ब्राह्मणों का शासन होता है। त्रेता युग में क्षत्रियों का शासन होता है। द्वापर युग में वैश्यों का शासन होता है, और कलियुग में शूद्रों का शासन होता है। जब सत्य युग आता है, तब शास्त्र और वैदिक विधान के अनुसार वह ब्राह्मण शासन का युग होता है। इसलिए भगवान ब्राह्मण देह में अवतार लेते हैं। उन्होंने पशु रूप में भी अवतार लिए हैं और भिन्न-भिन्न युगों में तीनों वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य—में भी अवतार लिए हैं। चूँकि आने वाला युग सत्य युग है, इसलिए वे उस युग के विधान के अनुसार ब्राह्मण रूप में अवतार लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 43:44 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 284 क्या भगवान कल्कि भी भगवान कृष्ण की तरह बाँसुरी बजाएँगे?

उत्तर: भगवान की लीला हर युग में भिन्न होती है। इस युग में भगवान कल्कि के प्रमुख कार्य हैं—दानवों का संहार करना, धर्म की स्थापना करना, और अपने भक्तों को राजा बनाकर तथा सुख देकर पुरस्कृत करना। फिर भी, यदि कोई अपार भक्ति वाला भक्त उनसे जुड़ जाए, तो वे उसके लिए अवश्य बाँसुरी बजाएँगे। ऐसे भक्त को वे कृष्ण रूप के दर्शन प्रदान करेंगे। भक्त भगवान को उसी रूप में देखता है, जिस रूप की वह उपासना करता है।

► यह उत्तर सुनें · 45:11 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 285 मैं बहुत समय से भगवान विष्णु की भक्त हूँ। हाल ही में उनका नाम जपते समय मुझे लगा जैसे कुछ मेरे भीतर प्रवेश कर गया, और मेरे सिर में झनझनाहट होने लगी। यह क्या था?

उत्तर: आप भगवान विष्णु के चरणों की एक पवित्र आत्मा हैं। आपके शरीर में जो कंपन और अनुभूति होती है, वह दिव्य शक्ति से आती है। सभी सच्चे भक्तों को यह दिव्य शक्ति प्राप्त होगी; किसी को पहले, किसी को बाद में। दिव्य ऊर्जा का यह प्रकाश उस हर भक्त में प्रकट होगा जिसका शरीर शुद्ध है, मन निर्मल है, और जिसने भगवान की शरण ली है। यह बहुत ही शुभ संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 46:14 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 286 जब हम भगवद्गीता या पुराणों जैसे किसी पवित्र ग्रंथ का पाठ करते हैं, तो उसे पूरा करने के बाद क्या हमें उसे फिर से आरंभ से पढ़ना चाहिए?

उत्तर: हाँ, सहज भाव से उसे फिर से आरंभ कीजिए। एक बार पूरा हो जाए, तो दूसरी बार शुरू कीजिए। आपको इसे निरंतर, अखंड प्रवाह में पढ़ते रहना चाहिए। यह अभ्यास चलता रहे।

► यह उत्तर सुनें · 48:10 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 287 मैं एक शिक्षक हूँ, और कभी-कभी मेरे मित्र या अन्य लोग ऐसी बातें कहते हैं जो हतोत्साहित करती हैं या इन मान्यताओं का उपहास करती हैं। मुझे इसे कैसे सँभालना चाहिए?

उत्तर: ऐसे लोगों से वाद-विवाद मत कीजिए। यदि उनसे सामना हो जाए, तो बस इतना कह दीजिए, 'ठीक है भाई,' और आगे बढ़ जाइए। जो भगवान की बात सुनना ही नहीं चाहता, उससे उलझना आवश्यक नहीं है। मलिका में भी कहा गया है कि पापी या अविश्वासी व्यक्ति इन उपदेशों का मूल्य नहीं समझेगा। इसलिए मैं विनम्रतापूर्वक कहता हूँ, यदि किसी में सुनने की इच्छाशक्ति या भक्ति नहीं है, तो उससे इन विषयों पर बात मत कीजिए। बस इतना ही आपको करना है।

► यह उत्तर सुनें · 49:52 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 288 भगवान मथुरा कब आएँगे?

उत्तर: भगवान मथुरा आ चुके हैं और वहाँ से होकर जा भी चुके हैं।

► यह उत्तर सुनें · 50:57 · 15 अगस्त 2021

प्रश्न 289 जो महिलाएँ भागवत का पाठ करती हैं, उन्हें मासिक धर्म के समय क्या करना चाहिए?

उत्तर: उस समय उन्हें पवित्र ग्रंथ को शारीरिक रूप से स्पर्श नहीं करना चाहिए। इसके स्थान पर उन्हें मन ही मन भगवान का नाम जपना चाहिए। ग्रंथ को स्पर्श न करने की यह अवधि लगभग सात दिनों की होती है।

► यह उत्तर सुनें · 51:32 · 15 अगस्त 2021

सत्र 15 · प्रश्न 290–309

L15 कलियुग के बीच में ही सत्य युग का आगमन होगा। Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 22 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 290 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि क्या भगवान कल्कि का जन्म जन्माष्टमी को होगा?

उत्तर: भगवान कल्कि के जन्म के विषय में शास्त्रों ने पूर्ण प्रमाण दिया है। वह शुक्ल पक्ष (चंद्रमा की बढ़ती हुई कला) के समय होगा। उस समय सभी ग्रह और नक्षत्र एक ही स्थान पर संरेखित होंगे। यह ठीक वैसे ही होगा जैसे भगवान रामचंद्र का जन्म दोपहर 12 बजे हुआ था। शास्त्र कहते हैं कि वह समय न बहुत ठंडा था न बहुत गर्म, जगत के कल्याण के लिए एक सुखद काल था। वह ठीक दोपहर के 12 बजे का समय था। सभी ग्रह और नक्षत्र एक ही स्थान पर थे; उसी समय भगवान राम का पृथ्वी पर जन्म हुआ। और भगवान कल्कि का जन्म भी ऐसे ही समय में होगा, जैसा शास्त्रों में कहा गया है। जहाँ तक जन्माष्टमी की बात है, हम भगवान का जन्मोत्सव इसलिए मनाते हैं क्योंकि उन्होंने पिछले युग में उस समय अवतार लिया था। इस वर्तमान युग में भगवान उग्र भी होंगे, अर्थात् वे संहारक होंगे और प्रलय भी करेंगे। साथ ही, वे अपने भक्तों का उद्धार करेंगे। तदनुसार शास्त्रों ने लिखा है कि भगवान उस विशेष समय पर उपस्थित रहेंगे, और उसी के अनुसार पृथ्वी पर उनका जन्म हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 19:53 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 291 मेरे पास तो कुछ भी नहीं है, तो मैं क्या करूँ?

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है आपका मन। यदि आपके मन में कोई द्वंद्व है, कोई प्रश्न है, या कोई विचार है, तो सबसे पहले सब कुछ त्यागकर दान करना आवश्यक है। और जो दान किया गया है, उसे भूल जाना भी अनिवार्य है। यह विचार कि 'मैंने एक बार यह दान किया था' या 'मैंने एक बार वह दान किया था', आपके मन में नहीं रहना चाहिए। उसे पकड़े रखना आवश्यक नहीं है। यदि वह मन में रह जाए, तो उस पुण्य कर्म का प्रभाव घट सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 22:28 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 292 दान में क्या देना चाहिए?

उत्तर: देखो बेटा, इस संसार में आपके पास जो कुछ भी है, अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसका दान करना चाहिए। कोई एक फल का दान कर सकता है। कोई सोने का दान कर सकता है। कोई गाय का दान कर सकता है। कोई ज़मीन-जायदाद का दान कर सकता है। दान का कोई निश्चित नियम नहीं है—न कोई विशेष मात्रा, न सीमा, न मूल्य। एक पैसे या पाँच पैसे का दान भी दान ही है। यदि कोई सच्चे हृदय से किसी को एक फल भी दान करता है—किसी पशु को, किसी भिखारी को, या किसी ग़रीब को—तो भगवान उसे स्वीकार करते हैं। दूसरी ओर, किसी व्यक्ति के पास करोड़ों रुपये हो सकते हैं, पर वह मन में द्वंद्व रखकर, केवल दिखावे के लिए दान करता है। तो, दान... मैं बच्चों से कह रहा हूँ... कृपया म्यूट कीजिए... मैं यह कहता हूँ कि दान के पात्रों में ग़रीब, दीन-दुखी, असहाय, और साथ ही कुत्ते, गाय तथा अन्य जीव-जंतु भी आते हैं जो हमारे इस संसार के अंग हैं। आप उन्हें भी कुछ दान कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 23:20 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 293 अफ़ग़ानिस्तान में जो घटनाएँ हो रही हैं, उनमें भगवान की क्या भूमिका है? और राजस्थान के विषय में क्या मान्यता है?

उत्तर: भगवान... उसे छोड़िए। उन्होंने उन्हें त्याग दिया है, क्योंकि जो उनसे जुड़ेंगे वे नष्ट हो जाएँगे। भगवान कल्कि का धर्म-स्थापना का कार्य उनके लिए है जो पीड़ित हैं। मैं पूरे संसार की बात कर रहा हूँ, जहाँ लोग आपस में लड़ रहे हैं। कल्कि की ऊर्जा का उन पर प्रभाव पड़ेगा। इस प्रकार पूरे विश्व में पापियों का विनाश होगा। अफ़ग़ानिस्तान में जो दानव पनपे हैं, छोटे-छोटे दानव, और संसार में और भी बहुत से... हमें उनसे कोई सरोकार नहीं। पर बात यह है कि अफ़ग़ानिस्तान में जो धर्म के मार्ग पर जीवन जी रहे हैं, भगवान निश्चित रूप से उनकी रक्षा करेंगे। जो पाप में जी रहे हैं, वे नष्ट हो जाएँगे। एक समय आएगा, आप सब देखेंगे, और केवल धर्म ही प्रकाशित होगा। दूसरा, भारत सरकार की नीति के विषय में... दूसरी बात राजस्थान को लेकर भारत में जो मान्यता है, उसके बारे में है। कहा गया है कि राजस्थान की सीमाओं पर बहुत युद्ध और जनजातीय संघर्ष होंगे। भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। भगवान के आदेश पर हनुमान उनकी रक्षा करेंगे, और 16 मंडलों में अनेक महान योद्धा भगवान कल्कि के साथ होंगे। और राजस्थान में बाढ़, भूकंप और बीमारियाँ आएँगी। इनसे बचने के लिए भगवान के मार्ग पर, मालिका के मार्ग पर चलना होगा। जय जगन्नाथ। कृपया अगला प्रश्न प्रस्तुत करें।

► यह उत्तर सुनें · 25:00 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 294 तालिबान ने अफ़ग़ानिस्तान पर क़ब्ज़ा कर लिया है, और चीन उनका समर्थन कर रहा है। क्या यह अधर्म के उदय की शुरुआत है?

उत्तर: संसार में जो लोग समाज और विश्व को भ्रमित करने के लिए सत्य का मुखौटा पहनते हैं, उनका असली रूप प्रकट हो जाएगा। तो, यह समय धर्म की परीक्षा का है। मैं केवल इतना ही कहूँगा: यह धर्म-स्थापना पूरे विश्व में होगी। हर देश में एक समय आएगा... आज जो अफ़ग़ानिस्तान में हो रहा है, वह केवल एक देश तक सीमित नहीं रहेगा; यह हर देश में होगा। तो, भगवान... धर्म के मार्ग पर चलिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:37 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 295 बरगढ़ के विषय में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: बरगढ़ ओडिशा के संबलपुर ज़िले में है। यह एक दिव्य क्षेत्र है। इसका नाम माँ समलेश्वरी मंडल है, और वहाँ स्थापना होगी। छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और अनेक अन्य क्षेत्र इस मंडल का हिस्सा होंगे। और मालिका में लिखा है... [श्लोक का पाठ करते हैं]... माँ के मंदिर पर एक ध्वज फहराया जाएगा... और उसका... यह चिह्न पहले ही प्रकट हो चुका है। यह मंदिर से दिखाई देता है। तो, यह माँ के मंदिर से धर्म-स्थापना का संकेत है। इसका अनुसरण कीजिए, मालिका खोलिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:11 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 296 कृपया हमें घटोत्कच और संभल के महत्व के बारे में बताइए।

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार, वे भीम के पुत्र थे। उन्होंने भगवान के आदेश पर अपना कार्य किया, और उन्हें भगवान का वरदान था कि वह स्थान तीर्थ बन जाए। हम हिंदुओं के लिए यह भक्तों हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। और घटोत्कच ने भगवान के आदेश पर और जो उन्होंने माँगा था उसके आधार पर, भगवान ने उसे तीर्थ स्थान बना दिया। अब घटोत्कच पुनः आएँगे और भगवान कल्कि से मिलेंगे तथा विश्व के सभी देशों के विरुद्ध भारत के साथ मिलकर युद्ध करेंगे, क्योंकि उनका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ था... वे भगवान के साथ होंगे... और वे सभी भारत के साथ होंगे... हमारे भगवान के साथ। इसमें कोई संदेह नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 31:30 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 297 मैं भगवान का कार्य करना चाहता हूँ। मैं इसे कैसे कर सकता हूँ?

उत्तर: पहले मैं इसका उत्तर दूँगा। अजय मंडल के लिए कार्य कीजिए, सनातन धर्म के लिए कुछ कार्य कीजिए। विश्व सनातन धर्म समूह से जुड़िए... सदस्य बनिए... एक नंबर है, उस नंबर पर संपर्क कीजिए ताकि आपका नाम सूची में जुड़ जाए। और उसके बाद, पूरे विश्व के लिए सनातन धर्म का कार्य कीजिए। तो, जो भक्त कार्य करेंगे... कृपया प्रतीक्षा कीजिए, मैं बोल रहा हूँ... कृपया प्रतीक्षा कीजिए, मैं उत्तर दूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:12 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 298 हमने मुस्लिम मौलवियों के वीडियो में सुना है कि ग़ज़वा-ए-हिंद होगा। ग़ज़वा-ए-हिंद के दौरान भारत में कोई मंदिर सुरक्षित नहीं रहेगा, वे हिंदुओं को मुसलमान बना देंगे, बहुत रक्तपात होगा, और वे सभी मंदिरों की मूर्तियाँ तोड़ देंगे। क्या यह संभव है?

उत्तर: आपके दूसरे प्रश्न के संबंध में... संसार के सभी धर्म... मैं किसी एक धर्म की बात नहीं कर रहा हूँ... [श्लोक का पाठ करते हैं]... अर्थात् पूरे विश्व में केवल एक ही धर्म रहेगा। इस संसार में... सृष्टि के आरंभ में सनातन था, और अंत में भी सनातन ही रहेगा। हर युग में सनातन ही रहेगा। कोई शास्त्र ऐसा नहीं है जो कहता हो कि सनातन के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का पृथ्वी पर स्थान होगा। यह कलियुग चल रहा है, और लोग आपस में झगड़ेंगे, द्वंद्व करेंगे और लड़ेंगे। इसीलिए संसार में इतनी परेशानियाँ और धर्म हैं। जब सत्ययुग आएगा, तब केवल एक जाति, एक धर्म और एक ध्वज होगा। देखिए, भारत में... मैंने यह पिछले सत्संग में भी कहा था... भारत में और विश्व के हर देश में लोग पाप कर रहे हैं। पापी लोग आपस में लड़ेंगे, पर धर्मात्मा लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता। और एक बात और, जो भक्त मालिका की धारा में हैं और भगवान कल्कि के भक्त हैं, उनका कुछ नहीं हो सकता। यह हमारे शास्त्रों में लिखा है। और जो भगवान कल्कि के धर्म-संग में, सनातन धर्म में रहेंगे, भगवान उनकी रक्षा करेंगे। पापी, चाहे भारत में हों या विश्व में कहीं भी, आपस में लड़कर मर जाएँगे। इसी प्रकार युद्ध होगा और धर्म के लिए मंथन होगा। तो, वे जो कहते हैं उसका कोई अर्थ नहीं, कोई प्रयोजन नहीं। वे अपने विचार रखते हैं, पर शास्त्र और जिसने संसार की रचना की है, वे सनातन धर्म की स्थापना करेंगे, और पृथ्वी पर कोई अन्य धर्म नहीं रहेगा। यह सबको कान खोलकर सुन लेना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 34:19 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 299 जब भूकंप जैसी आपदाएँ आएँगी, तो भक्तों की रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: लिखा है कि भगवान धरती माता, माता वासुकि को आदेश देंगे कि वे अपना सिर उठाएँ। जब वे सिर उठाएँगी, तो पूरे विश्व में भूकंप आएँगे। उस समय भक्त जहाँ कहीं भी होंगे, उनके लिए धरती पर्वत के समान हो जाएगी। जल, वायु और पंचतत्व उन्हें छू भी नहीं सकेंगे, और भक्त बच जाएँगे जबकि पापी मर जाएँगे। दूसरी बात यह है कि भगवान भक्तों की रक्षा के लिए ही आए हैं, है न? वे रक्षक हैं। माधव के नाम का जप कीजिए। इस नाम में इतनी शक्ति है कि यह कंप्यूटर को चूर कर सकता है... यह परमाणु बमों को निष्प्रभावी कर सकता है। यही नाम की शक्ति है। ब्रह्मांड में यह नाम... कितनी भी बड़ी विपत्ति क्यों न हो, इस नाम का जप करके बाढ़, अग्नि, भूकंप और पंचतत्वों से बचा जा सकता है। तीसरी बात यह है कि हमें धर्म के मार्ग पर भी चलना चाहिए। यदि हम धर्म के मार्ग पर नहीं हैं, यदि हम अधर्मी हैं, तो नाम काम नहीं करेगा। जैसे प्लास्टिक का लोहे के साथ कोई विद्युत संबंध नहीं होता, वैसे ही जो धर्मात्मा व्यक्ति सत्य, करुणा, क्षमा और पवित्रता के साथ नाम का जप करता है, उसका कुछ नहीं होगा। ओडिशा के छह ज़िले समुद्र में समा जाएँगे, पर भक्त बच जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 42:52 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 300 मैं जानना चाहती हूँ, भगवान कल्कि तिरुवनंतपुरम के पद्मनाभस्वामी मंदिर में उस द्वार को खोलने के लिए कब जाएँगे जो आज तक कभी नहीं खोला गया?

उत्तर: माता, आपने अच्छा प्रश्न पूछा है। भगवान कल्कि... स्वामीनाथन मंदिर, जो नारायण का मंदिर है... उसका द्वार कब खुलेगा? देखिए माता, मैं आपको एक बात बताऊँ। यदि भगवान अपने स्वरूप में, मानव देह में जाकर उसे खोलते हैं, तो संपूर्ण दक्षिण और दक्षिण के सभी देश, वहाँ के सभी लोग भगवान की शरण में आ जाएँगे। और धर्म बढ़ेगा, और सभी पापी भी बच जाएँगे। पर भगवान ने कहा है कि वे धर्मात्माओं की रक्षा के लिए, गोपियों की रक्षा के लिए आए हैं। इस प्रक्रिया में गोपियाँ और पापी दोनों बच जाते। तो, जो आपने कहा... देखिए माता, मैं आपको एक बात बताऊँ। भगवान नारायण का मंदिर, स्वामीनाथन मंदिर, उसका द्वार खुलेगा, और वह पाताल लोक का सीधा मार्ग है। आपको क्या मिलेगा? क्या आप पाताल जाना चाहती हैं? नहीं, नहीं, नहीं। फिर आपको मिलेगा... तो, जिन्हें वहाँ से आना है वे आएँगे, और भगवान उसकी व्यवस्था करेंगे। यह भगवान के हाथ में है। दूसरी बात यह है कि भगवान पद्मनाभस्वामी मंदिर अवश्य जाएँगे। भगवान कृष्ण ने भी अपने क्षेत्र का भ्रमण किया था। वह भगवान का ही क्षेत्र है। और जब भगवान जाएँगे, तो किसी को पता नहीं चलेगा। यदि हमें पता चल भी जाए, तो हम नहीं बताएँगे क्योंकि भगवान गुप्त रूप से जाते हैं। भगवान अपनी पहचान सबके सामने प्रकट नहीं करते। जहाँ भक्ति और महिमा होती है, वहाँ वे दर्शन के लिए जाते हैं। वे सबको दर्शन नहीं देते; यह बहुत गुप्त है। वे अवश्य जाएँगे, यह हम भी जानते हैं। पर जिस दिन वे जाएँगे, वे एक साधारण मनुष्य की तरह जाएँगे, और कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा। पर आप मालिका के मार्ग पर चलिए। और सनातन धर्म के लिए कार्य कीजिए। यदि आप गोपी हैं, कपि (वानर भक्त) हैं, यदि आपका हृदय शुद्ध है और आप सोचती हैं, 'हाँ, मैं भगवान कल्कि और सनातन धर्म की धर्म-स्थापना का हिस्सा बनूँगी,' तो उसके लिए कार्य कीजिए। भगवान एक दिन आपको आपके कर्मों और पवित्रता का फल अवश्य देंगे। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:43 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 301 अब कृष्ण जन्माष्टमी आ रही है। जब भगवान स्वयं अवतरित हो चुके हैं, तो इस बार हम उनका जन्मदिन कैसे मनाएँ कि वे हमें शीघ्र अपने दर्शन दें?

उत्तर: कृष्ण जन्माष्टमी से जुड़े आपके दूसरे प्रश्न के लिए धन्यवाद। इस जीवन में भगवान कृष्ण के नाम के साथ-साथ 'माधव' नाम का जप कीजिए। यही सबसे पवित्र नाम है। क्योंकि जब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था, तब माता भगवती ने उन्हें यही नाम दिया था। सबसे पहले माता भगवती ने उनका नाम माधव रखा। लेकिन गर्ग मुनि आए और उन्होंने भगवान का नाम श्रीकृष्ण रखा। इससे माता दुखी हो गईं। माता भगवती ने भगवान से पूछा, 'प्रभु, मैंने तो आपका नाम माधव रखा था, पर आपका नाम बदल गया।' भगवान ने उत्तर दिया, 'माता, यह नाम मैंने कलियुग के अंत में भक्तों के उद्धार के लिए रखा है।' इसलिए... कलियुग के अंत और सत्ययुग के आरंभ में 'श्रीकृष्ण' मेरा नाम रहेगा, और उस नाम का जप करके भक्तों का उद्धार होगा। तो उनका जन्मदिन मनाइए, कृष्ण नाम का जप कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:01 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 302 मुझे अपना यह अनुभव समझ नहीं आ रहा। भगवान इसके माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: देखिए, आप जैसी शुद्ध भक्त से मिलकर मेरा हृदय भी भाव-विभोर हो गया है। मेरी आँखों में भी आँसू आ रहे हैं। यह बहुत अच्छा है। यह धरती पर पवित्रता का मिलन है, और मुझे भी बहुत आनंद हो रहा है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, देखिए, मथुरावासी भगवान के परिवार हैं। और आप... तो हर युग में आप भगवान से मिली हैं, और इस युग में भी आप उनसे मिलेंगी। इसमें कोई प्रश्न ही नहीं है। देखिए, अभी भगवान की बाल लीला चल रही है। भगवान बाल गोविंद हैं। इसीलिए भगवान आपको बाल गोविंद के रूप में दर्शन दे रहे हैं। वे यह बता रहे हैं कि 'इस रूप में, इस बार मैं धनुष लेकर लड़ूँगा, मैं युद्ध करूँगा, और मेरे हाथ में बाँसुरी नहीं है।' तो आपकी पवित्रता और भक्ति की शक्ति से... इसमें भगवान कह रहे हैं, 'देखो, मैं इस रूप में काम कर रहा हूँ, और तुम लोग मेरा काम करो। धर्म की स्थापना के लिए काम करो। बहुत लोगों को समझाओ। धरती पर पवित्रता और शुचिता लाने का प्रयास करो।' और आपसे... यही भगवान का संदेश है। जय। जय माँ। जय जय माँ।

► यह उत्तर सुनें · 51:54 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 303 पंडित जी, मैं छतिया बाटा के बारे में कुछ जानना चाहती हूँ। पुरी में विग्रह जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा हैं। लेकिन छतिया बाटा में सुभद्रा बीच में नहीं हैं। इसके पीछे क्या कारण है?

उत्तर: देखिए, माता। छतिया बाटा में जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ... वे हरिदास महाराज की समाधि पर हैं और बाद में रघुवर दास तथा एक और संत जो आए थे, उनकी समाधि पर। सबसे पहले हरिदास की समाधि के ऊपर जगन्नाथ महाप्रभु की मूर्ति बनी। बाद में जो लोग गोलोकवासी हुए, उनकी मूर्तियाँ बनीं। तो... इसके पीछे का कारण... देखिए, भगवान कल्कि छतिया बाटा नहीं जाएँगे। जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के काष्ठ रूप छतिया बाटा जाएँगे। एक नया मंदिर बनेगा। वहाँ रथ यात्रा होगी। रुत्ची के राजा और रानी वहाँ जगन्नाथ की रथ यात्रा का आयोजन करेंगे। लेकिन भगवान कल्कि बड़चणा जाएँगे। [मालिका के पद सुनाते हैं]... यह महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है। जगन्नाथ की चतुर्धा मूर्तियाँ छतिया बाटा में रहेंगी। उस समय दशाशनी में... इसे अच्छी तरह समझिए... दशाशनी वहाँ है जहाँ बैतरणी नदी है। दशाशनी घाट पर दस हजार ब्राह्मणों ने यज्ञ किया था... इसीलिए बैतरणी नदी के तट पर उसे दशाश्वमेध घाट कहा जाता है। और जब भगवान जगन्नाथ अपने क्षेत्र से छतिया बाटा आएँगे, उस समय भक्त... भक्तगण भगवान कल्कि को अपने कंधों पर बिठाकर बड़चणा गाँव ले जाएँगे। पूजा के बाद भगवान कहेंगे... यह महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है... बड़चणा के पास भगवान कहेंगे, 'मैं यहीं रहूँगा।' वे क्यों नहीं जाएँगे? भगवान कहेंगे, 'वहाँ जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की पूजा हो रही है। उनके सम्मान में और भक्तों की भावना का आदर करते हुए, मैं आज वहाँ अपनी छाया नहीं डालूँगा। मैं बड़चणा में ही रहूँगा।' और जाजपुर से बड़चणा तक और हरिदासपुर से बड़चणा तक समुद्र जैसा जनसमूह हो जाएगा, और वहाँ एक

विशाल सभा होगी, जहाँ लाखों भक्त भोजन करेंगे। और उसी समय से भगवान कल्कि, नंद किशोर, आनंद किशोर के रूप में, संसार में धर्म की स्थापना करेंगे। इसका भी उन्होंने उल्लेख किया है। तो भगवान कल्कि वहीं रहेंगे। उत्सव बड़चणा में होगा, छतिया बाटा में नहीं। भगवान बड़चणा में अपने भक्तों से मिलेंगे और धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। और कुछ लोग... ठीक है, माता?

► यह उत्तर सुनें · 54:04 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 304 मैं साईं बाबा की बहुत बड़ी भक्त हूँ। मालिका में उनके बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: सुनिए। भारत देवभूमि है, संतों की भूमि है। और इस धरती पर बहुत से संत, हजारों संत अवतरित हुए हैं और उन्होंने अपना कार्य किया है। [एक पद सुनाते हैं]... इस संसार में लोग... और उनके लिए भगवान जगन्नाथ, विष्णु, राम, कृष्ण हैं। इनके अतिरिक्त और कोई नहीं है। हमारे हिंदू धर्म की परंपरा के अनुसार, श्रीमद्भागवत के अनुसार, भगवान के अवतार धर्म की स्थापना के लिए होते हैं। और कलियुग में तीन अवतार हैं। भगवान का पहला अवतार, दूसरे भगवान बुद्ध, और तीसरे भगवान कल्कि। इसके अतिरिक्त शास्त्रों में और कुछ नहीं लिखा है। और जो कुछ और लिखा है... आपने जो नाम लिया, मैं वह नाम नहीं लूँगा, क्योंकि नाम लेना भी हमारे धर्म और परंपरा का उल्लंघन है। तो मैं संसार के सभी संतों और साधुओं का सम्मान करता हूँ। मैं आपकी बातों और आपकी भावनाओं का भी सम्मान करता हूँ। लेकिन माता, इस संसार में भगवान के सिवा और कोई नहीं है जो मुक्ति दे सके। यह पहली बात। दूसरी बात यह है कि उनके बारे में क्या लिखा है... अगर मैं कह दूँ, तो आपको अच्छा नहीं लगेगा। किसी ने यह प्रश्न पूछा था। अगर मैं बता दूँ कि क्या लिखा है, तो आपको प्रसन्नता नहीं होगी। आपको लगेगा, 'ये ऐसा क्यों कह रहे हैं?' तो जो बुरा है और जो लोगों को अच्छा नहीं लगेगा, वह मैं नहीं कहता। लेकिन लिखा हुआ है। आप कहें तो मैं आपको एक प्रति भिजवा दूँगा। मैं अपने लोगों से कह दूँगा, और आप विश्लेषण कर सकती हैं कि क्या लिखा है। ठीक है, माता?

► यह उत्तर सुनें · 59:47 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 305 मेरा प्रश्न है, क्या हरे कृष्ण महामंत्र का जप करके हम भगवान कल्कि से मिल सकते हैं?

उत्तर: मन को शुद्ध करने के लिए हरे कृष्ण मंत्र का जप कीजिए, और कुछ समय 'माधव' नाम का भी जप कीजिए। यह आवश्यक है। वे एक ही स्वरूप हैं, एक ही अवतार हैं, पर नाम अलग-अलग हैं। 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता।' वे एक ही स्वरूप हैं, पर उनके अनंत नाम हैं। 'कृष्ण' नाम भी रहेगा, लेकिन इस युग के लिए 'माधव' आवश्यक है। तो इस युग के लिए 'माधव' नाम का जप कीजिए। यह काम कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:58 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 306 राजस्थान में धर्म का केंद्र कहाँ स्थापित होगा? आपने पहले बताया था कि हनुमान जी राजस्थान में एक केंद्र स्थापित करेंगे।

उत्तर: पहले मैं पहले प्रश्न का उत्तर दूँगा। देखिए, भगवान कल्कि के बहुत से भक्त राजस्थान के कोने-कोने में हैं। यह शुद्ध और पवित्र भूमि है, और इस पर हनुमान जी का आशीर्वाद भी है। जब धर्म की स्थापना होगी, तब हनुमान जी भगवान के भक्तों की रक्षा करने जाएँगे। जो भक्त फँसे हुए हैं, वे उन्हें बचाएँगे। और शेष भक्तों को भगवान कल्कि के पास शरणागति के लिए लाया जाएगा। यह पवित्र भूमि है, इसका कण-कण पवित्र है, और वहाँ के लोग भी बहुत अच्छे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:46 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 307 मैं आईटी उद्योग में काम करता हूँ और विदेशियों से बातचीत करता हूँ। मैं सोच रहा था कि मैं इस मालिका का प्रचार अंग्रेजी में कैसे कर सकता हूँ, शायद एक वेबसाइट बनाकर। इस काम में मेरी कैसे मदद हो सकती है?

उत्तर: देखिए, बेटा। हम मालिका का प्रचार हिंदी में करते हैं। अंग्रेजी में इसका प्रचार नहीं किया जाता। हम अंग्रेजी भी बोल सकते हैं, लेकिन भगवान का ऐसा कोई आदेश नहीं है कि इसका प्रचार अंग्रेजी में किया जाए। मैंने इस विषय में भगवान से बात की थी। उन्होंने कहा कि कुछ लोग जो शुद्ध हैं, उनका उद्धार होगा। लेकिन जो पापी प्रतिदिन गौहत्या करते हैं... भारत में प्रचार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। गौहत्या भारत में भी होती है। पाप भारत में भी होता है। लेकिन हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। अगर हिंदी में प्रचार नहीं होगा, तो भक्तों को कैसे पता चलेगा? पापी भी सुनेंगे। लेकिन हम पापियों के लिए प्रचार नहीं कर रहे; हम धर्मात्माओं के लिए प्रचार कर रहे हैं। अगर अंग्रेजी में प्रचार होगा, तो यह सीधे गौहत्या करने वालों तक पहुँचेगा। क्योंकि वे भावुक होते हैं, बहुत से लोग बदल भी सकते हैं। तो अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जो संत है, सज्जन है, शुद्ध है, जो शाकाहारी बनना चाहता है... अगर आपको पूरा विश्वास है कि वह शाकाहारी बनेगा और हमारे मार्ग पर चलेगा, तो उसके लिए रास्ता है। इतना कीजिए और सनातन धर्म के लिए काम कीजिए। क्योंकि संसार के सभी देश छोटे-छोटे द्वीप बन जाएँगे। वहाँ कुछ भक्त बचे रहेंगे। लेकिन भारत अखंड भारत रहेगा। जो भारत बचेगा उसमें चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और श्रीलंका शामिल होंगे, जिससे एक बहुत बड़ा अखंड भारत बनेगा। और बाकी देश छोटे द्वीप होंगे। तो मालिका के मार्ग पर चलिए। भारत में जो भक्त और संत भगवान कृष्ण को मानते हैं, उन तक जितना हो सके पहुँचना जरूरी है, क्योंकि कृष्ण ही कल्कि हैं। उन तक पहुँचना आवश्यक है क्योंकि भारत दिव्य भूमि है, और भारत में बहुत से भक्त हैं जो अनजान हैं या गलत मार्ग के गुरुओं के साथ फँसे हुए हैं। उन्हें बचाइए। वही बेहतर होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:58 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 308 भविष्यवाणियों में कहा गया है कि मांसाहार, मांस, मदिरा आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। क्या प्याज और लहसुन के बारे में भी ऐसा ही कुछ लिखा है?

उत्तर: भोजन तीन प्रकार का होता है: राजसिक, तामसिक और सात्विक। प्याज और लहसुन सात्विक नहीं माने जाते; वे राजसिक हैं। ये शरीर में गर्मी पैदा करते हैं। भगवान के भोग में इनका उपयोग नहीं होता। ये पूर्णतः राजसिक हैं। और जो भोजन घी तथा अन्य गरिष्ठ सामग्री से बनता है, जिसे राजा-महाराजा खाते थे, वह भी राजसिक है। तामसिक भोजन वह है जिसमें जीव-हत्या होती है। तो बेटा, जब आप बाहर हों तो प्याज-लहसुन खा सकते हैं, कोई समस्या नहीं। यह धरती माता से आता है; यह किसी पशु से नहीं है। लेकिन यह उत्तेजक है और हमारे मंदिरों में इसका उपयोग नहीं होता। शुद्ध मठों और मंदिरों में इसका उपयोग नहीं होता। सत्ययुग में इसका उपयोग नहीं होगा। लेकिन अभी अगर कोई समस्या हो तो आप खा सकते हैं। लेकिन धर्म का काम कीजिए। रोज भागवत पढ़िए। उद्धार के लिए, भक्तों के लिए पाप से और कलियुग के आने वाले विनाश से मुक्ति पाने की यही सबसे बड़ी औषधि है। श्रीमद्भागवत पहला मार्ग है। दूसरा, त्रिसंध्या कीजिए, माधव नाम का जप कीजिए। दशावतार स्तोत्र का पाठ कीजिए। और हमेशा गरीबों, दुखियों और पशुओं को प्रतिदिन कुछ न कुछ दान कीजिए। यह आवश्यक है। चाहे 10 रुपए हों या 5 रुपए, या अपने भोजन में से ही कुछ दान कर दीजिए। और एक व्यक्ति को शाकाहारी बनाइए। शास्त्रों में लिखा है कि जो व्यक्ति एक व्यक्ति को शाकाहारी बनाता है, उसे दस यज्ञों का फल मिलता है। कोई व्यक्ति अपने जीवन में दस यज्ञ नहीं कर सकता क्योंकि इसमें बहुत धन लगता है, अच्छे ब्राह्मण नहीं मिलेंगे, अच्छा घी नहीं मिलेगा, या इतना शुद्ध वातावरण नहीं मिलेगा। इसमें बहुत परिश्रम लगता है। लेकिन एक व्यक्ति को शाकाहारी बनाकर आपको अपने ही घर में दस यज्ञों का फल मिल जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:54 · 22 अगस्त 2021

प्रश्न 309 मैं पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार से जुड़ा हूँ। उनकी क्या भूमिका है, और क्या वे भगवान कल्कि से मिलेंगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा है। देखिए, हम भी प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जप करते हैं। गायत्री मंत्र हिंदू सनातन धर्म की प्रमुख धारा है। श्रीमद्भागवत या किसी भी शास्त्र को पढ़ने से पहले हम माता गायत्री का आवाहन करते हैं। यह सनातन धर्म की पहली धारा है, और यह सभी भक्तों के लिए आवश्यक है। हालाँकि, गायत्री संगठन में केवल चुने हुए भक्त, जो गोपियाँ थीं, वही भगवान कल्कि से मिलेंगे, सब नहीं। क्योंकि उसमें कामनावाले लोग भी हैं, स्वार्थी लोग भी हैं, कौतूहलवश आने वाले लोग भी हैं, और तर्क-वितर्क करने वाले भी हैं। और हमें नहीं पता कि कौन क्या अच्छा काम कर रहा है। मालिका में केवल इतना लिखा है कि हर धर्म से, पवित्रता के हर मार्ग से... गायत्री धर्म हमारे सनातन धर्म का ही एक अंग है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन बात यह है कि सब भगवान से नहीं मिलेंगे, क्योंकि सब अधिकारी नहीं हैं। जो अधिकारी हैं, उन्हें मार्ग का पालन करना होगा। सत्ययुग में जाने के लिए आपको वैदिक धारा और मालिका, भगवान कल्कि द्वारा दिए गए निराकार वचनों का पालन करना होगा। आप गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं, गायत्री यज्ञ कर सकते हैं, यह संसार के लिए अच्छा है। लेकिन जिस स्थिति की ओर हम बढ़ रहे हैं, उसके अनुसार उन्हें काम करना होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:58 · 22 अगस्त 2021

सत्र 16 · प्रश्न 310–340

L16.1 सुधर्मा महा महासंघ के आभिमुख्य और विश्व सनातन धर्म की प्रतिष्ठा

दिनांक: 29 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 310 आपने बताया था कि मुस्लिम देश एकजुट होकर लड़ेंगे और बम फटेंगे। क्या अभी काबुल, अफगानिस्तान में जो हो रहा है, वह उसी की शुरुआत है?

उत्तर: यह मैंने नहीं कहा; यह मालिका में लिखा है। हाँ, अभी जो हो रहा है वह शुरुआत है, धर्म संस्थापना का आरंभ है। और अंत में पापियों का नाश होगा। जो पाप और अन्याय करते हैं, उनका नाश होगा। यह सभी देशों के लिए, पूरे विश्व के लिए एक चेतावनी है।

► यह उत्तर सुनें · 01:54 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 311 आपने बताया था कि भगवान का जन्म 2005 में नहीं हुआ था। तो क्या वे अकेले आए, या अपनी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र के साथ आए? और क्या वे इसी आयु में अपने कार्य करेंगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। इस युग में, हमारे श्रीमद्भागवत, महाभारत, सभी शास्त्रों और विशेष रूप से मालिका के अनुसार, बलभद्र की शक्ति भगवान कल्कि के शरीर में ही निवास करेगी। भगवान बलभद्र और भगवान जगन्नाथ दोनों कल्कि अवतार में एक ही शरीर में आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 03:14 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 312 क्या उनसे मिलने का कोई उपाय है? मैं उनसे मिलने के लिए विश्व सनातन धर्म से जुड़ा हूँ।

उत्तर: हाँ, हम यहाँ हैं। सनातन धर्म में होना आपका सौभाग्य है। जुड़े रहिए। जब समय आएगा, और जब आपको उनसे मिलने का निर्देश मिलेगा, तब यह हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 04:01 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 313 भगवान कल्कि किस आयु में धर्म की स्थापना आरंभ करेंगे?

उत्तर: महर्षि अच्युतानंद ने भविष्य मालिका में लिखा है कि जब भगवान कल्कि 13 वर्ष के होंगे, तब वे पूरे विश्व में धर्म की स्थापना के बारे में सोचना आरंभ करेंगे। 13 वर्ष की आयु से 25 वर्ष तक वे यह कार्य पूर्ण करेंगे। मैं आपको बता सकता हूँ कि शास्त्रों के अनुसार भगवान वर्ष 2020 में 13 वर्ष के हुए। महर्षि अच्युतानंद ने लिखा कि जब भगवान 13 वर्ष के होंगे, तब विश्व में अनेक समस्याएँ और युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। यही संकेत होगा कि भगवान का धर्म-स्थापना का कार्य आरंभ हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 04:33 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 314 क्या यह कार्य पटना से संबंधित है?

उत्तर: देखिए, इसमें केवल पटना नहीं, पूरा विश्व शामिल होगा। यह बिहार के साथ होगा, अखंड बिहार के साथ होगा, और पूरे विश्व के साथ होगा। भगवान कल्कि एक ही शासक होंगे; वे पूरे विश्व पर शासन करेंगे। और हर राज्य में उनके भक्त राजा बनेंगे। राजतंत्र पुनः स्थापित होगा।

► यह उत्तर सुनें · 05:41 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 315 श्रीमद्भागवत में, जब उद्धव गोपियों से मिलने जाते हैं, तो सभी के नाम बताए गए हैं, पर राधा रानी का नाम नहीं है। ऐसा क्यों?

उत्तर: आपका प्रश्न एक अत्यंत पवित्र ग्रंथ के विषय में है। महारानी (राधा रानी) भगवान का ही अंश थीं, जो प्रकृति और पुरुष दोनों के सार से निर्मित हुईं। जब भगवान के भक्त उद्धव गोपियों से मिलने आए, तो सभी के नाम आए, पर माता का नाम नहीं आया। इसका कारण यह है कि माता तो वृंदावन में भगवान की दिव्य लीलाओं में प्रतिदिन उनके साथ ही रहती हैं। उनका अलग से आना आवश्यक ही नहीं था। उनका संबंध अभिन्न और शाश्वत है। इसमें कोई संदेह नहीं है। इसीलिए उस प्रसंग में उनका नाम नहीं लिया गया।

► यह उत्तर सुनें · 06:39 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 316 जब मैं भागवत पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है जैसे मुझे कोई पूर्व जन्म याद आ रहा हो। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह आपकी भक्ति की धारा है, और आपकी यह अनुभूति परम पवित्रता का संकेत है। हम उस भाव को नमन करते हैं। यह बहुत अच्छा है कि आप इस प्रकार अपने मन और हृदय से भगवान से जुड़े हुए हैं। आपको भगवान का आशीर्वाद मिलेगा, सत्संग होगा, और सत्य युग (सत्य के युग) में पहुँचने के बाद भगवान अपना कार्य आरंभ करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 08:17 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 317 इन आध्यात्मिक सत्यों का व्यक्तिगत अनुभव, केवल शास्त्रों में पढ़ने से आगे बढ़कर, कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

उत्तर: यह आपकी भक्ति के भीतर आपका अपना अनुभव है। जो जानते हैं, केवल वे ही इसे सच में समझ सकते हैं। शास्त्र प्रमाण हैं, और उनमें सब कुछ लिखा है। परंतु जब तक हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं होता, तब तक हम भगवान के स्मरण और विश्वास में पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हो सकते। जिनकी भक्ति गहरी है और जो अपने अनुभव में भगवान के साथ रहे हैं, उन्होंने इसे अनेक बार महसूस किया है। यदि आप भी निरंतर इस मार्ग पर चलें, तो आपको भी यह अनुभव हो सकता है। भक्ति की यह धारा केवल बोलने से नहीं आती; यह अपने भीतर के भाव से आती है। तो इसका पालन कीजिए, और जब समय आएगा, तो आपको भी ऐसी अनुभूतियाँ होंगी और आप भी जान जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:25 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 318 इस युग में राधा रानी किस रूप में उपस्थित हैं?

उत्तर: प्रकृति में, माता राधा रानी, जो योगमाया (दिव्य माया शक्ति) हैं, वही महालक्ष्मी, महाकाली और माता सरस्वती भी हैं। इस जन्म में वे माता वैष्णो देवी का एक अंश हैं। महालक्ष्मी के रूप में वे भगवान कल्कि के साथ अपनी दिव्य लीला करेंगी। द्वापर युग में वे राधा रानी थीं, और कलियुग में वे माता महालक्ष्मी हैं, जो कल्कि के साथ रहेंगी। ठीक है, बेटा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:01 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 319 सुधर्म महासंख (धर्म की महासभा) से कैसे जुड़ा जा सकता है और भगवान के साथ कैसे रहा जा सकता है?

उत्तर: देखिए बेटा, हम सनातन धर्म का प्रचार करते हैं, और भक्त हमारे संगठन से जुड़ते हैं। भगवान के पास आना बहुत आसान है, पर भगवान के साथ टिके रहना बहुत कठिन है। जो सहन करेंगे और श्रद्धा एवं भक्ति में बने रहेंगे, वे ही सुधर्म महासंख के सदस्य बन पाएँगे। यह तब होगा जब समय आएगा, और आप अपनी भक्ति के बल पर उस स्थान तक पहुँच सकते हैं। यह पूरी तरह आप पर निर्भर है, हम पर नहीं। जय जगदम्बा।

► यह उत्तर सुनें · 11:46 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 320 क्या राधा रानी का अवतार हो चुका है, या भारत में अभी होना बाकी है?

उत्तर: माता राधा रानी के रूप में, माता महालक्ष्मी के रूप में, मालिका में लिखा है कि उनका जन्म जगन्नाथ क्षेत्र (जगन्नाथ पुरी के क्षेत्र) में होगा, और यह हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 13:41 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 321 चूँकि राधा रानी, जो माता लक्ष्मी हैं, जन्म ले चुकी हैं, तो अब उनका नाम क्या है?

उत्तर: महान संत अच्युतानंद ने उनका नाम माता महालक्ष्मी लिखा है, और वह महालक्ष्मी ही रहेगा। क्योंकि इस बार जो भगवान आ रहे हैं, वे स्वयं भगवान विष्णु हैं, वैकुंठ के निवासी। विष्णु और महालक्ष्मी का मिलन होगा, और उनका नाम महालक्ष्मी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 14:08 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 322 जिन लोगों के भाग्य में भगवान कल्कि से मिलना लिखा है, क्या वे कुछ वर्षों में उनसे मिलना शुरू कर देंगे?

उत्तर: मुझे सटीक समय ज्ञात नहीं है, पर यह निश्चित है कि एक दिन आप सब भगवान से अवश्य मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 15:00 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 323 क्या आप कृपया इस सत्संग (आध्यात्मिक प्रवचन) की अवधि एक घंटे से थोड़ी और बढ़ा सकते हैं?

उत्तर: मैं प्रयास करूँगा। मैं आपकी इच्छा का सम्मान करता हूँ और पूरी कोशिश करूँगा। यदि भगवान कृपालु हुए, तो हम इसे बढ़ा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 16:06 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 324 क्या आप हमें भगवान का जन्मदिन मनाने के बारे में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: भगवान के जन्मदिन के बारे में... देखिए माता जी, आप विश्व सनातन धर्म में अपना कार्य जारी रखिए और अपने हृदय में मौन रहकर भगवान से संवाद कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:53 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 325 महायज्ञ कब होगा?

उत्तर: देखिए बेटा, महायज्ञ का समय महापुरुष अच्युतानंद जी ने अपने ग्रंथ 'नीलकंठ' में लिखा है। यह घटना वर्ष 2020 से 2029 के बीच घटित होगी। कुछ घटनाओं के लिए महापुरुष ने सटीक समय नहीं बताया, परंतु यह यज्ञ धर्म स्थापना के काल में होना बताया गया है।

► यह उत्तर सुनें · 17:52 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 326 मुझे हिंदी पढ़ना नहीं आता। आपने श्रीमद्भागवत पढ़ने की सलाह दी थी, तो मैं यह कैसे करूँ?

उत्तर: माधव का नाम अपने मन में रखिए और उसका जप कीजिए। श्रीमद्भागवत अनेक भाषाओं में उपलब्ध है। यह अंग्रेज़ी, हिंदी और कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा गया है। आपको अपनी भाषा में एक प्रति ढूँढ़कर लेनी चाहिए। इसे पढ़ना आवश्यक है; यह आपके लिए बहुत लाभकारी होगा। आपको यह मिल जाएगी। यदि नहीं मिली, तो हम आपको कुछ लोगों से जोड़ सकते हैं जो आपको एक प्रति दिलाने में सहायता कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 19:04 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 327 इस जीवन में प्रभु के गुरु कौन होंगे?

उत्तर: इस जन्म में प्रभु के गुरु परशुराम जी होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:39 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 328 हम या संसार में कोई भी उनके गुरु परशुराम जी के विषय में कैसे जान पाएगा?

उत्तर: देखिए, भगवान परशुराम इस समय महेन्द्राचल पर्वत पर मानव शरीर में निवास करते हैं। किंतु आपके लिए या किसी के लिए भी उनके दर्शन करना सरल नहीं है। यदि कोई उन्हें देख ले, तो वह जीवित नहीं बचेगा, क्योंकि एक साधारण मनुष्य के लिए उनके दिव्य शरीर को देख पाना असंभव है। परंतु जब भगवान कल्कि के साथ सुधर्म सभा की स्थापना होगी, तब वे अपने भक्तों को दिव्यता प्रदान करेंगे। तब आप भी परशुराम जी के दर्शन कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 21:13 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 329 क्या भगवान कल्कि का विवाह महालक्ष्मी से होगा?

उत्तर: हाँ, माधव (कल्कि) के साथ विवाह अवश्य होगा। पूर्व युग में भगवान राम ने माता वैष्णो देवी को वचन दिया था कि यदि वे उन्हें उनके अगले अवतार में पहचान लेंगी तो वे उन्हें स्वीकार करेंगे, परंतु उनकी दिव्य माया के कारण वे पहचान न सकीं, क्योंकि कलियुग में उनकी भूमिका अभी शेष थी। सुधर्म सभा के विधिवत आसीन होने से पूर्व, स्वयं ब्रह्मा जी प्रभु के आश्रम में आएँगे और विवाह संस्कार का आरंभ कराएँगे। भगवान महादेव और माता दुर्गा भी उपस्थित रहेंगे, साथ ही कुछ चुने हुए भक्त भी। यह मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 22:21 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 330 हम जन्माष्टमी को भगवान कृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाते हैं, और चूँकि भगवान कल्कि भी भगवान कृष्ण ही हैं, तो क्या भक्त भगवान कल्कि का जन्मदिन भी मनाएँगे?

उत्तर: हाँ, भक्त भगवान कल्कि का जन्मदिन मनाएँगे। सुधर्म महासभा की स्थापना के बाद, पूरे विश्व में भगवान का जन्मदिन मनाया जाएगा। अभी वह समय नहीं है, क्योंकि भक्त अभी पूरी तरह भगवान से जुड़े नहीं हैं। पर जब समय आएगा, बेटा, तब यह सारे संसार में मनाया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:03 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 331 भगवान का प्रिय भोजन क्या है?

उत्तर: भगवान के भोजन के विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है कि आप जो भी भक्ति के साथ अर्पित करते हैं, वह स्वीकार किया जाता है। यदि कोई लाखों व्यंजनों का भव्य भोग लगाए, तो भगवान उसे स्वीकार करते हैं। और यदि कोई भक्त केवल एक फूल और थोड़ा जल प्रेम से अर्पित करे, तो भगवान उसे अमृत की तरह स्वीकार करते हैं। तो हम सचमुच उन्हें क्या अर्पित कर सकते हैं? यदि आप थोड़ा-सा भी भक्ति के साथ दें, तो वही उनके लिए सर्वश्रेष्ठ भोजन बन जाता है। उनका कोई विशेष प्रिय भोजन नहीं है। उन्हें सचमुच प्रिय वह है जब कोई सच्चा भक्त भक्तिपूर्वक उन्हें कुछ समर्पित करता है। भगवान उस अर्पण को स्वीकार करने के लिए आतुर हो जाते हैं। यही मुख्य बात है।

► यह उत्तर सुनें · 25:30 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 332 आपने कहा है कि आजकल के बहुत से कथावाचक और गुरु वेदों और पुराणों का उपयोग करके सपने बेच रहे हैं और अपने साम्राज्य खड़े कर रहे हैं। हम कैसे पहचानें कि इनमें से असली कौन है?

उत्तर: देखो बेटा, तुलसीदास महाराज ने अपने रामचरितमानस में लिखा है कि कलियुग में अनेक तथाकथित संत प्रकट होंगे। वे वास्तविक संत नहीं होंगे, बल्कि संत के वेश में लोग होंगे। वे बहुत धन खर्च करके अपने ही ढंग का धर्म खड़ा करेंगे और स्वयं सांसारिक कामनाओं में डूबे रहेंगे, जबकि दूसरों को वैराग्य का उपदेश देंगे। संत का सच्चा लक्षण क्या है? धर्म के अनुसार जीवन जीना। रही बात आज संसार में मौजूद इतने सारे संतों की, तो समय आने पर भगवान कल्कि स्वयं निर्णय करेंगे कि कौन अच्छा है और कौन बुरा। हमारे लिए इस पर टिप्पणी करना उचित नहीं है, क्योंकि यह हमारे अधिकार में नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 26:35 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 333 क्या हमें किसी को भी दान देना चाहिए, उदाहरण के लिए गौशालाओं को या ऐसे लोगों द्वारा चलाए जा रहे अन्य कार्यों को जो स्वयं बहुत धनी दिखाई देते हैं?

उत्तर: अरे बेटा, जो गौशालाओं के लिए दान लेता है, वह एक-डेढ़ करोड़ रुपये की मर्सिडीज़ कार चलाता है। वे महँगे फोन और चश्मे इस्तेमाल करते हैं, खूब शान-शौकत से खर्च करते हैं। मैं क्या कहूँ? जो लोग करोड़ों की कार चलाते हैं, उन्हें संत कैसे कहा जा सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 28:48 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 334 क्या मुझे भगवान से मिलने का सौभाग्य मिलेगा?

उत्तर: अपनी भक्ति के द्वारा आप उनसे मिलेंगी, माता जी। भक्ति में बनी रहिए, सनातन धर्म में रहिए, और जब समय आएगा, यदि आप एक अच्छी और सच्ची भक्त हैं, तो आप उनसे अवश्य मिलेंगी। सही समय की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:41 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 335 क्या किसी विशेष समय, स्थान और आसन पर साधना करने से अधिक लाभ मिलता है?

उत्तर: देखिए, आपका प्रश्न किसी विशेष गुरु-परंपरा से संबंधित है, इसलिए मैं उस पर सीधे टिप्पणी नहीं करूँगा। पर इतना अवश्य कहूँगा: भगवान सर्वव्यापी हैं और प्रेम के द्वारा प्रकट होते हैं। उन्होंने कहा है, 'मेरा भक्त कहीं भी हो सकता है—किसी वृक्ष के नीचे, किसी एकांत स्थान में—यदि वह भक्ति के साथ मेरी उपासना करता है, तो मैं प्रकट होकर उसकी सहायता के लिए आता हूँ।' भगवान के लिए कोई विशेष पात्र या समय नहीं है; उनका स्वरूप अनंत है। भगवान भक्ति से ही प्राप्त होते हैं। आपकी भक्ति की पवित्रता के अनुसार ही आपको भगवान के दर्शन और उनके पास स्थान मिलेगा। फिर भी, यदि आप किसी गुरु-परंपरा का पालन करते हैं, तो आपको उसका सम्मान करते रहना चाहिए। इससे आगे मैं उस पर कुछ नहीं कहूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:22 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 336 आपके सुझाव के अनुसार, मैंने भागवत महापुराण का बंगाली अनुवाद पढ़ना शुरू किया है। उस ग्रंथ में लिखा है कि इसे पढ़ने से मनुष्य के सारे पाप धुल जाते हैं। क्या यह सच है?

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। यह परिवर्तन आप सबको संत और महात्मा बना देगा। पर मुख्य बात यह है: जिस दिन से आप पूरे हृदय से श्रीमद्भागवत पढ़ना आरंभ करते हैं, उस दिन से आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप जानबूझकर धर्म के विरुद्ध कोई कार्य न करें। यह संकल्प बनाए रखिए। जो ग्रंथ आप पढ़ रहे हैं, वह सर्वाधिक पवित्र है। यदि आप उसे उसी पवित्रता और सत्यनिष्ठा के साथ पढ़ें जिसकी मैं बात कर रहा हूँ, तो आपका जीवन सार्थक हो जाएगा। आप सत्य युग तक भी पहुँच सकते हैं, और अंत में आपको बहुत अच्छी गति प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:51 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 337 भगवान अपने भक्तों को कैसे चुनते हैं? यदि कोई मनुष्य चुनता, तो उसके कुछ मापदंड होते, पर कहा जाता है कि भगवान के तरीके अलग हैं और वे सबको स्वीकार करते हैं, उन्हें भी जो मानवीय मापदंडों से अयोग्य लग सकते हैं। इसे हमें कैसे समझना चाहिए?

उत्तर: भगवान मानवीय सोच के आधार पर नहीं चुनते। यदि हम मनुष्य की तरह सोचेंगे, तो हम भूल करेंगे। मालिका कहती है, 'क्या दिन, क्या रात, मेरा क्या काम? मेरे ऐसे करोड़ों-करोड़ों भक्त हैं।' मनुष्य को अपना अहंकार त्यागना चाहिए। हत्या करने और मांस खाने का पाप ज्ञान और भक्ति के संयोग से मिट सकता है। भगवान का विचार इसी आधार पर होता है, और वही भक्त को बनाने वाले हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:39 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 338 क्या भगवान हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में आएंगे?

उत्तर: भगवान 2018 में हिमाचल की यात्रा कर चुके हैं। मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि उन्होंने कितने स्थानों की यात्रा की, पर वे वहाँ जा चुके हैं और शायद दोबारा नहीं जाएंगे। वे धर्म स्थापना के समय जा सकते हैं, पर यदि उस समय जाएंगे, तो आपको केवल अग्नि ही दिखाई देगी; आप उनका दिव्य रूप नहीं देख पाएंगे। यदि आप सुधर्म महाशंख (महासभा) में विराजमान हैं, तो आप उसके माध्यम से भगवान कल्कि से जुड़ सकते हैं और उनके दिव्य शरीर का दर्शन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:44 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 339 मैं भगवान से कैसे मिल सकता हूँ? आप कहते हैं कि उनका नाम जपो, पर मैं इसे ठीक से कैसे करूँ?

उत्तर: आपको सुधर्म महाशंख से, सच्चे सनातन धर्म में जुड़े रहना चाहिए। जब समय आएगा... मैं हमेशा यह कहता हूँ: जो कोई सत्ययुग या द्वापर युग में भगवान का भक्त था, यदि वह वही आत्मा है, तो वह निश्चित रूप से भगवान से मिलेगा और धर्म स्थापना में कार्य करेगा। यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं, तो आपको निश्चित रूप से अवसर मिलेगा। कृष्ण का नाम जपिए, और त्रिसंध्या (दिन में तीन बार: प्रातः, दोपहर, संध्या) में माधव का नाम जपिए। सदैव भीतर ही भीतर उनका नाम जपते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:41 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 340 क्या हमें भगवान के भजन व्हाट्सएप पर मिल सकते हैं?

उत्तर: भजन ओड़िया में लिखे हुए हैं। आप स्वयं भी 'माधव' नाम के साथ हिंदी में भजन लिख सकते हैं। आप उन्हें लिख सकते हैं और सुन सकते हैं। देखिए, भगवान के कार्य का व्यापक प्रचार नहीं होता; धर्म स्थापना गुप्त रूप से हो रही है, इसलिए आधुनिक संतों की तरह अधिक प्रचार नहीं होगा। यह भगवान का कार्य है, और यह उनके भक्तों के साथ गुप्त रूप से ही होगा। बस उस मार्ग पर चलिए जो मैं आपको दिखा रहा हूँ। यदि आपको भजन व्हाट्सएप पर चाहिए, तो मोहित से बात कीजिए, जिनका नंबर आपके पास है। वे आपको ओड़िया भजन दे सकते हैं या हिंदी में लिखकर भी दे सकते हैं ताकि आप उन्हें गा सकें।

► यह उत्तर सुनें · 38:29 · 29 अगस्त 2021

सत्र 17 · प्रश्न 341–354

L16.2 सुधर्मा महा महासंघ के आभिमुख्य और विश्व सनातन धर्म की प्रतिष्ठा

दिनांक: 29 अगस्त 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 341 सुधर्म महासंघ की रचना क्यों की गई? इसका उद्देश्य क्या है?

उत्तर: इसका वर्णन महापुरुष अच्युतानंद ने भविष्य मालिका में किया है। जब भगवान कल्कि पृथ्वी पर अवतार लेंगे, तो सबसे पहला काम वे सुधर्म महासंघ की स्थापना का करेंगे। इसके संदेश को फैलाने और सच्चे भक्तों को एकत्र करने की जिम्मेदारी वे अपने भक्तों को सौंपेंगे। अन्य धर्मों और संप्रदायों के विपरीत, जहाँ संस्थापक स्वयं उपदेश देते हैं, भगवान स्वयं सीधे उपदेश नहीं देंगे। इसके बजाय, वे अपने भक्तों के माध्यम से और मालिका ग्रंथों के अनुसार ऐसा करेंगे। सुधर्म महासंघ का गठन भगवान के अवतार के दो वर्ष बाद होगा, ताकि विश्व भर में उनके सभी भक्तों को एक किया जा सके। इसका उद्देश्य होगा पूरे भारत और विश्व से भक्तों को एकत्र करना तथा सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और सत्य युग (सत्य के युग) के मार्ग के सिद्धांतों का प्रचार करना। भगवान कल्कि के सभी भक्त सुधर्म महासंघ के माध्यम से जुड़े रहेंगे। यह सभा पिछले युगों — द्वापर, त्रेता और सत्य युग — में भी थी, और इस युग में इसकी फिर से स्थापना होगी।

► यह उत्तर सुनें · 02:23 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 342 सुधर्म महासंघ का सदस्य बनने की योग्यता क्या है?

उत्तर: सबसे बड़ी एकमात्र योग्यता है भक्ति। जो लोग धनवान, ज्ञानवान, शक्तिशाली हैं या ऊँचे पदों पर हैं, उन्हें केवल इस आधार पर सदस्य नहीं बनाया जाएगा। सुधर्म महासंघ का एकमात्र उद्देश्य है विश्व भर से भगवान के भक्तों को एक करना; इसका कोई और मकसद नहीं है। महापुरुष अच्युतानंद ने इन भक्तों की संख्या के बारे में लिखा है। विश्व की 8.4 अरब जनसंख्या में से केवल 3,000 भक्त ही सुधर्म महासंघ के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि बनेंगे। ये 3,000 वही होंगे जो भगवान कल्कि के आदेशों का पालन करेंगे और भारत तथा विश्व में धर्म-स्थापना के कार्य को आगे बढ़ाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 07:27 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 343 तो, भगवान को कौन प्राप्त करेगा? भगवान से किसकी भेंट होगी?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि जो लोग पूर्व के सत्य, त्रेता और द्वापर युगों में भगवान के भक्त थे, उन्हें भीतर से एक पुकार या एक 'गंध' (अनुभूति) मिलेगी कि भगवान आ गए हैं और उनका संगठन बन रहा है, और उन्हें उसमें जुड़ना है। यह प्रेरणा उनके अपने हृदय के भीतर से उठेगी, और वे स्वयं ही जुड़ जाएँगे; उन्हें मनाने या लाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सुधर्म महासंघ का गठन पहले ही हो चुका है। सभी भक्तों को विश्व सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए, और जो अच्छे कर्म करेंगे और भगवान द्वारा योग्य समझे जाएँगे, उन्हें तब सुधर्म महासंघ में सम्मिलित किया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 11:39 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 344 बहुत से लोग पूछते हैं: चूँकि मृत्यु निश्चित और अटल है, तो मरने से पहले हमें ऐसे कौन से कर्म करने चाहिए जिससे हम वैकुंठ (भगवान के धाम) पहुँच सकें और अपना जीवन सार्थक बना सकें?

उत्तर: आने वाले समय में बड़ी विपत्तियाँ आएँगी। समुद्र अपने तट लाँघकर बहुत से लोगों को मारेगा, सुनामी आएँगी, भूकंप आएँगे, महामारियाँ, अकाल और सूखा पड़ेगा। पंचतत्वों का प्रभाव और तीव्र होगा। ऐसे समय में हमारे पास भगवान की शरण लेने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। इसलिए मालिका का संदेश प्रचारित करने का उद्देश्य संतों, सज्जनों और भगवान से प्रेम करने वालों के उद्धार के लिए है। यह उन्हीं के लिए है, ताकि वे बच सकें, मालिका के संदेश को समझ सकें, और उसके माध्यम से भगवान के धाम तक पहुँच सकें।

► यह उत्तर सुनें · 13:02 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 345 आपने बताया था कि काबुल की घटनाएँ, जहाँ नेता बेकाबू होते जा रहे हैं, एक शुरुआत हैं। क्या यह सचमुच शुरुआत है?

उत्तर: हाँ, यह शुरुआत है। यह धर्म की स्थापना की शुरुआत है। और अंत में पापियों का भी विनाश होगा। जो लोग पाप और अन्याय करते हैं, उनका विनाश होगा। यह सभी देशों के लिए, पूरे विश्व के लिए एक चेतावनी है।

► यह उत्तर सुनें · 15:29 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 346 आपने कहा था कि इस युग में भगवान अकेले नहीं आएँगे, बल्कि उनके साथ उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र भी होंगे। क्या आप इस पर विस्तार से बता सकते हैं?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। इस युग में, हमारे श्रीमद्भागवत, महाभारत, सभी शास्त्रों और विशेष रूप से मालिका के अनुसार, बलभद्र की शक्ति भगवान कल्कि के शरीर के भीतर निवास करेगी। श्री बलभद्र और श्री जगन्नाथ (कृष्ण) दोनों कल्कि अवतार में एक ही शरीर में आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:31 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 347 क्या प्रभु से मिलने का कोई उपाय है?

उत्तर: प्रभु से मिलने के लिए आपको विश्व सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए। आपको जुड़ना ही होगा। जब समय आएगा, तब आपको उनकी कृपा प्राप्त होगी। हमें सही समय की प्रतीक्षा करनी है, क्योंकि जब प्रभु आदेश देंगे, तभी आप सब उनसे मिल पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 17:18 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 348 भगवान कल्कि अपना धर्म स्थापना का कार्य कब आरंभ करेंगे?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद जी ने भविष्य मालिका में लिखा है कि जब भगवान कल्कि 13 वर्ष के होंगे, तब वे सम्पूर्ण विश्व के समक्ष स्वयं को प्रकट करने के बारे में विचार करेंगे। 13 वर्ष की आयु से लेकर 25 वर्ष की आयु तक वे धर्म स्थापना का कार्य पूर्ण करेंगे। मैंने बताया है कि शास्त्रों के अनुसार प्रभु वर्ष 2020 में 13 वर्ष के हुए। और जैसा महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा, जब प्रभु 13 वर्ष के होंगे, तब सम्पूर्ण विश्व में अनेक समस्याएँ और युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। यही संकेत होगा कि प्रभु ने अपना धर्म स्थापना का कार्य आरंभ कर दिया है।

► यह उत्तर सुनें · 18:01 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 349 क्या भगवान कल्कि का पटना से कोई संबंध होगा?

उत्तर: देखिए, उनका संबंध सम्पूर्ण विश्व से होगा, केवल पटना या बिहार से नहीं। भगवान कल्कि सम्पूर्ण विश्व के शासक होंगे। वे पूरे विश्व पर शासन करेंगे, और हर राज्य में उनके भक्त ही राजा बनेंगे। राजतंत्र की व्यवस्था पुनः लौटेगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:08 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 350 श्रीमद्भागवत में जब उद्धव गोपियों से मिलने आते हैं, तब सभी गोपियों के नाम का उल्लेख है, परंतु राधा रानी का नाम नहीं है। ऐसा क्यों?

उत्तर: देखिए, आपका प्रश्न बहुत ही पवित्र है। माता राधा रानी स्वयं प्रभु का ही एक स्वरूप थीं। वे प्रकृति और पुरुष—दोनों के अनंत सार से प्रकट हुई थीं। उद्धव प्रभु के भक्त थे। जब वे गोपियों से मिलने आए, तो उन सबके नामों का उल्लेख हुआ, परंतु माता का नाम नहीं आया। इसका कारण यह है कि माता तो सदैव श्री वृंदावन में प्रभु की दिव्य लीला में उनके साथ ही रहती हैं। उन्हें उद्धव के पास आने की क्या आवश्यकता थी? कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि माता और प्रभु का संबंध अविभाज्य और शाश्वत है। इसमें कोई संदेह नहीं। इसीलिए उनके नाम का उल्लेख नहीं हुआ।

► यह उत्तर सुनें · 20:06 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 351 (प्रश्नकर्ता प्रभु से संबंधित अपनी कोई व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभूति या अनुभव साझा करते हैं।)

उत्तर: हाँ, यह आपकी भक्ति की धारा है, और यह जो अनुभूति आपको हो रही है, वह पवित्रता का सर्वोच्च रूप है। हम उसे भी नमन करते हैं। यह बहुत अच्छा है। इसी प्रकार अपने मन और हृदय से प्रभु से जुड़े रहिए। आपको सत्संग में उनका सान्निध्य प्राप्त होगा, और सत्य युग में पहुँचकर आप पुनः प्रभु के कार्य में लगे रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:43 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 352 आप इन बातों की चर्चा करते हैं, पर हम इन पर विश्वास कैसे करें? शास्त्र तो प्रमाण देते हैं, लेकिन व्यक्तिगत अनुभव और दृढ़ विश्वास कैसे प्राप्त हो?

उत्तर: आप जो कह रहे हैं, वह बहुत अच्छी बात है। पर देखिए, यह अपनी भक्ति और अपने व्यक्तिगत अनुभव की बात है। जो सचमुच जानते हैं, वही इन बातों को समझ सकते हैं। शास्त्रों और पुराणों ने सब कुछ लिख दिया है, और प्रमाण वहाँ मिल जाता है। पर जब तक हमारे भीतर भक्ति और व्यक्तिगत अनुभव न हो, तब तक हम पूर्ण श्रद्धा के साथ पूरी तरह भगवान की शरण में नहीं जा सकते। जिनके भीतर भक्ति और अनुभव है, जो अपनी अनुभूति में सत्य के साथ रहे हैं, उन्होंने इसे पहले ही अनुभव कर लिया है। यदि आप भी निरंतर इस मार्ग पर चलें, तो आपको भी वह अनुभव हो सकता है। यह भक्ति-भाव की एक धारा है; केवल बातें करने से यह नहीं होगा। यह अपनी अनुभूति और अपने व्यक्तिगत भाव से आती है। तो मार्ग पर चलते रहिए, और जब समय आएगा, तब आपको भी यह अनुभूति होगी और आप जान सकेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:31 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 353 इस वर्तमान युग (कलियुग) में भगवान कल्कि के साथ राधा रानी का स्वरूप या भूमिका क्या है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, माता राधा रानी योगमाया हैं (दिव्य सृजनात्मक शक्ति)। वे ही महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती भी हैं। इस जन्म में वे माता वैष्णो देवी के अंश के रूप में और महालक्ष्मी के स्वरूप में भगवान कल्कि के साथ अपनी दिव्य लीला करेंगी। द्वापर युग में वे राधा रानी थीं, और कलियुग में वे कल्कि के साथ माता महालक्ष्मी होंगी। ठीक है, बेटा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:31 · 29 अगस्त 2021

प्रश्न 354 हम सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। हम सुधर्म महासंघ के सदस्य कैसे बन सकते हैं?

उत्तर: देखिए बाबा, हम सनातन धर्म का प्रचार करते हैं, और भक्त इस संगठन से जुड़ते हैं। भगवान के पास आना एक बात है, पर भगवान के साथ बने रहना बहुत कठिन है। जो बने रहते हैं, जो अपनी श्रद्धा और भक्ति में अडिग रहते हैं, वे आगे चलकर सुधर्म महासंघ के सदस्य बन सकते हैं। पर यह तभी होगा जब समय आएगा, और आप अपनी भक्ति के द्वारा वहाँ तक पहुँच सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:15 · 29 अगस्त 2021

सत्र 18 · प्रश्न 355–385

L17 भक्तों का एकत्रीकरण कहां होगा? और कल्कि भगवान के साथ कैसे भेट होगा?

दिनांक: 5 सितम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 355 गुरुजी, मैं पूछना चाहता था, आपने कहा था कि महाप्रलय आएगा। क्या इसका प्रभाव जम्मू-कश्मीर के भक्तों पर भी पड़ेगा?

उत्तर: देखो बेटा, चाहे जम्मू-कश्मीर हो, माउंट आबू हो, बद्रीनाथ हो, या संसार का कोई भी भूभाग हो, प्रलय का प्रभाव हर जगह महसूस होगा। विशेष रूप से कश्मीर क्षेत्र में सांप्रदायिक हिंसा, भूकंप, युद्ध और बाढ़ का प्रभाव होगा। तो चिंता मत करो। मालिका का अनुसरण करो और भगवान का नाम जपो। इस समय हमारे लिए यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 12:52 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 356 मेरे परिवार के लोग विश्वास नहीं करते। जब मैं उनसे कहता हूँ कि उन्हें पूजा-पाठ करना चाहिए, तो कोई नहीं सुनता। मैं क्या करूँ?

उत्तर: अगर कोई नहीं सुनता, तो उन्हें बताना आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह अमृत हर किसी के भाग्य में नहीं होता। यह अमृत केवल कुछ ही लोगों के लिए है। इसलिए उन्हें मत बताइए। अपनी स्वयं की कर्म-धारा को सुधारने पर ध्यान दीजिए। यदि कोई नहीं सुनता, तो बताना आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह हमारी मालिका के सिद्धांतों का उल्लंघन है। इसलिए उन लोगों को कभी मत बताइए। आपको जो करना है वह कीजिए, कोई समस्या नहीं है, और अपने मार्ग पर चलते रहिए। जय जगन्नाथ। जय श्री राधे राधे।

► यह उत्तर सुनें · 14:44 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 357 पंडित जी, मैं एक बात पूछना चाहता था। मैंने एक वीडियो देखा जिसमें आप सत्संग कर रहे थे, और आपके पीछे एक पोस्टर था जिसमें कल्कि जी और एक लड़के की तस्वीर थी। वह क्या है?

उत्तर: देखो बेटा, मैं समझता हूँ। मैं एक बात कहना चाहता हूँ। देखिए, मैं लंबे समय से मालिका पर और भगवान कल्कि के लिए कार्य कर रहा हूँ। मैं भगवान कल्कि द्वारा मुझे सौंपे गए कार्यों के अनुसार काम कर रहा हूँ। आप भाग्यशाली हैं कि आपने वह देखा। यह बहुत अच्छा है। यदि आपके हृदय की पवित्रता और आपका मन इसे स्वीकार करता है, बेटा, तो इसका अनुसरण कीजिए। वही आपके लिए अच्छा है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:38 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 358 धर्म स्थापना के समय राजस्थान में किस प्रकार का प्रलय होगा? क्या अग्नि तत्व होगा, या युद्ध का वातावरण होगा? इस भूमि पर किसका अधिक प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: देखिए, आने वाले समय में राजस्थान हरा-भरा हो जाएगा। यह पहली बात है। राजस्थान का मरुस्थल क्षेत्र भी बदल जाएगा। कलियुग के अंत और सत्ययुग के आरंभ के साथ, ये सभी परिवर्तन दिखाई देंगे। यह समुद्र जैसा होगा; कई दिनों तक वर्षा होगी, जिससे सागर बन जाएगा। इसी प्रकार, राजस्थान में जल प्रलय, अग्नि-प्रलय, युद्ध का प्रलय और भूकंप का प्रलय होगा। ये सब होते रहेंगे। परंतु भक्तों के बचने के लिए, उस मार्ग पर चलिए जो मैं दिखा रहा हूँ। ठीक है बेटा? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:56 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 359 भगवान कल्कि को उनका घोड़ा कैसे मिलेगा, और वह अभी कहाँ है?

उत्तर: इसके बारे में मालिका में लिखा है। जब भगवान कल्कि धर्म स्थापना के लिए निकलेंगे, तब तक संसार की जनसंख्या लगभग 70% कम हो चुकी होगी। उस समय, भगवान कल्कि की सहायता के लिए, सभी देवता भगवान इंद्र के साथ उन्हें बैकुंठ नाम का घोड़ा भेंट करेंगे। यह घोड़ा आकाश में विचरण करेगा, पूरे संसार में यात्रा करेगा, और भगवान को लेकर चलेगा जब वे धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। ठीक है बेटा? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:10 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 360 पंडित जी, मेरा प्रश्न है, जैसा आपने आज की भूमिका में खंडगिरि क्षेत्र के बारे में बताया, क्या हम खंडगिरि को दूसरे नाम, जालू क्षेत्र, से भी पुकार सकते हैं?

उत्तर: हाँ, यह सही है। जालू पर्वत वहाँ है, और कुछ ऋषि-मुनि व संत वहाँ भगवान का नाम जप रहे हैं। परंतु खंडगिरि के विषय में, महापुरुष अच्युतानंद ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। उन्होंने बताया कि मिलन खंडगिरि में होगा, कहते हुए, 'एकठारा होइबे खंडगिरि पासे, अनंत मूर्ति दर्शन करिबे अनायासे,' जिसका अर्थ है, 'वे खंडगिरि के पास एकत्र होंगे और अनायास ही अनंत रूप का दर्शन करेंगे।' यह खंडगिरि ही है, और कुछ नहीं। यह एकाम्र क्षेत्र में है। भक्तों और भगवान का मिलन वहीं, उसी प्रकार होगा। इसलिए इस विषय में जो कहा गया है, उसका अनुसरण कीजिए। दूसरे स्थान के विषय में, जब समय आएगा, आप भगवान से मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:13 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 361 कृपया हमें हीराकुद बाँध के विषय में कुछ बताइए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। हीराकुद बाँध के विषय में महापुरुष ने लिखा है कि एक दिन हीराकुद और पारादीप आपस में मिल जाएँगे। पारादीप ओडिशा के जगतसिंहपुर ज़िले में समुद्र के किनारे स्थित एक बंदरगाह है। एक दिन ऐसा आएगा जब समुद्र और हीराकुद आपस में मिलेंगे। यह तब होगा जब चीन और पाकिस्तान हीराकुद बाँध पर मिसाइलें दागेंगे, जिससे वह टूट जाएगा। जैसा लिखा है, 'शत्रु द्वारा भंग हेब, ओडिशा र छ जिल्ला जल रे बुड़िब', अर्थात् 'यह शत्रु द्वारा तोड़ा जाएगा, और ओडिशा के छह ज़िले जल में डूब जाएँगे।' संबलपुर में आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया भारत का सबसे बड़ा बाँध, शत्रुओं—चीन और पाकिस्तान—द्वारा दागी गई मिसाइलों के कारण टूट जाएगा। उसका जल समुद्र के जल से मिलकर ओडिशा के छह ज़िलों को डुबो देगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। आने वाले दिनों में ऐसा होने वाला है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:13 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 362 भविष्य मालिका में श्री श्री अनुकूल ठाकुर जी का उल्लेख है। कृपया बताइए कि उनके विषय में क्या लिखा है। धन्यवाद।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। अनुकूलचंद्र के विषय में महापुरुष अच्युतानंद ने बड़े आनंद और पवित्रता के साथ लिखा है। उन्होंने लिखा है कि उनका जन्म बिहार राज्य में होगा और वे पूरे भारत तथा संसार में धर्म का प्रचार करेंगे। वे अनेक भक्तों का उद्धार करेंगे और अच्छे कार्य करेंगे। यह भी लिखा है कि बहुत-से लोग उन्हें परम गुरु और दिव्य पुरुष मानकर उनकी पूजा करेंगे। बहुत-सी अच्छी बातें लिखी हुई हैं। ठीक है, बेटा? जय माता दी।

► यह उत्तर सुनें · 23:31 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 363 मैं यह पूछना चाहता था कि यदि भारत पर मिसाइलें दागी जाती हैं, तो हीराकुद बाँध कैसे टूटेगा? क्या दैवी शक्ति उन्हें निष्क्रिय नहीं कर देगी?

उत्तर: शास्त्रों में लिखा है कि युद्ध के आधुनिक अस्त्र-शस्त्र भगवान की कृपा और भक्तों की प्रार्थना से निष्क्रिय हो जाएँगे। यह बिल्कुल सही है। परंतु यदि विनाश ही नहीं होगा, तो भारत, ओडिशा और अन्य स्थानों के पापियों का नाश कैसे होगा? यदि हीराकुद बाँध नहीं टूटेगा, तो दानवों का संहार कैसे होगा? जो अपने माता-पिता को कष्ट देते हैं, दिन भर मांस-मछली खाते हैं, जघन्य कर्म करते हैं, लोगों से लड़ते हैं, पाप करते हैं, भगवान को नहीं मानते, वैदिक मार्ग का उल्लंघन करते हैं, और भगवान की शरण लेने के बजाय अहंकार से बोलते हैं—उनका नाश तो होना ही है, है न? तो यही विनाश का मार्ग है। परंतु भक्तों के लिए चिंता की कोई बात नहीं होगी। ठीक है, बेटा?

► यह उत्तर सुनें · 24:39 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 364 लोगों को भोजन कैसे मिलेगा? इतने विनाश के बाद वे खेती कहाँ करेंगे?

उत्तर: भक्त बच जाएँगे, बेटा। पापियों का नाश होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:53 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 365 राजा विराट का भगवान श्रीकृष्ण के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध था। क्या मालिका में वर्तमान समय में उनके विषय में कोई वर्णन है?

उत्तर: वे सभी जो भगवान के भक्त थे—केवल विराट ही नहीं, बल्कि पाँचों पांडव, सात्यकि, 500 बलबीर, और अन्य सभी भक्त—सभी ने पृथ्वी पर जन्म ले लिया है। वे सब भगवान कल्कि से मिलेंगे। धर्म की स्थापना के समय सुधर्मा सभा के माध्यम से उनका परिचय कराया जाएगा। ठीक है, बेटा? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:24 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 366 राजा विराट ने कहाँ जन्म लिया है?

उत्तर: देखो बेटा, राजा विराट जैसे लाखों-करोड़ों ने पृथ्वी पर जन्म लिया है। भगवान अपनी योजना के अनुसार उन्हें आगे लाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:09 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 367 पंडित जी, मेरा प्रश्न राजनीति के विषय में है। मैंने देखा है कि भगवान विष्णु के चार चिह्न—शंख, चक्र, गदा और पद्म—राजनीतिक दलों द्वारा प्रतीक के रूप में उपयोग किए जाते हैं। शंख, चक्र और कमल का उपयोग हुआ है, परंतु गदा का नहीं। जब उसका प्रतीक उपयोग होगा, कृपया उस पर कुछ प्रकाश डालिए?

उत्तर: उसका उपयोग तो होता है। बजरंग दल।

► यह उत्तर सुनें · 28:10 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 368 हम कैसे अनुभव कर सकते हैं कि हम सच्चे भक्त हैं, कि हम सही मार्ग पर हैं, और यह भी कि हम चारों युगों के भक्त हैं? क्या कुछ अस्वाभाविक घटित होगा जिससे हमें अपने आप पता चल जाएगा, या हमें कैसे पता चलेगा?

उत्तर: देखो बेटी, जब भी किसी वस्तु का मंथन होता है, तो उसका सत्य प्रकट हो जाता है। यदि तुम धैर्य, पवित्रता और भगवान के नाम से अपने मन का मंथन करोगी, तो तुम्हें सब कुछ ज्ञात हो जाएगा। माधव का नाम जपो और भगवान की सेवा में रहो, तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:07 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 369 महाराज, मुझे हमेशा यह भय रहता है कि विदेश में रहने के कारण भगवान के कार्य में भाग लेने और उनके मार्ग पर चलने में कोई समस्या तो नहीं होगी? क्या हमें भारत वापस आना होगा, या भगवान स्वयं किसी न किसी तरह ऐसे भक्तों को मार्ग पर ले आएँगे? यह प्रश्न मुझे हमेशा डराता है।

उत्तर: मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जो लोग मालिका से जुड़ते हैं, मालिका की बात करते हैं, और सत्संग में आते हैं—यह इस बात का संकेत है कि वे पूर्व में भक्त थे और पुनः भक्त होना उनके भाग्य में है। यही पहला और सबसे बड़ा संकेत है। दूसरा संकेत, बेटी, यह है कि जो मार्ग मैं दिखा रहा हूँ उसका पालन करो: शाकाहारी बनो, श्रीमद्भागवत पढ़ो, और त्रिसंध्या (दिन में तीन बार प्रार्थना) करना प्रारंभ करो। यदि तुम यह सब करोगी, तो तुम्हें कोई समस्या नहीं होगी। तुम कहीं भी रह सकती हो। फिर भी, जब पूरे विश्व में धर्म की स्थापना होगी, तब अधिक कुछ शेष नहीं बचेगा। परंतु जिस स्थान पर भक्त निवास करते हैं, वह बच जाएगा। जो भक्त भगवान की शरण में भक्ति और शुद्ध मन से मार्ग का पालन करता है, वह बच जाएगा। ठीक है, बेटी? जय श्री हनुमान।

► यह उत्तर सुनें · 29:59 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 370 मैं आपके मालिका समूह से जुड़ना चाहती हूँ। इसके लिए मुझे क्या करना होगा, गुरुजी? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: एक काम करो। विश्व सनातन धर्म के लिए इंटरनेट पर देखो; हमारे वीडियो के विवरण (डिस्क्रिप्शन) में एक लिंक है। उसे खोलो और विश्व सनातन धर्म से जुड़ जाओ। संसार में भक्त जहाँ कहीं भी होगा, भगवान उसे ढूँढ़ लेंगे, और मालिका उसका भाग्य है। तो इसका पालन करो, इस समूह से जुड़ो, और सिद्धांतों का पालन करो। सब ठीक हो जाएगा, बेटी। आने वाले समय में और अधिक विनाश आ रहा है, और मानव समाज के लिए उसे सँभालना कठिन होगा। हज़ारों और लाखों लोग मरेंगे। मुक्ति का मार्ग मालिका है। इसका पालन करो और धर्म के लिए कार्य करो। यही मेरा तुमसे निवेदन है। इसका पालन करने से सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:08 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 371 क्या मालिका में गुजरात के बारे में कुछ कहा गया है?

उत्तर: हाँ, प्रभु ने इस पर विचार किया है। यह एक पवित्र भूमि है। इस पवित्र भूमि के विषय में लिखा है कि वहाँ भक्तों को एकत्र होना पड़ेगा, और एक श्री द्वारिकाधीश मंडल (एक दिव्य मंडल या समूह) बनेगा। उस मंडल में भक्त रहेंगे और प्रभु के नाम का प्रचार करेंगे, भजन-कीर्तन करेंगे, और दिव्य ऊर्जा का आह्वान करेंगे। ठीक है, बेटी?

► यह उत्तर सुनें · 33:26 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 372 2020 में आली के राजा ने जो यज्ञ (अग्नि यज्ञ) किया था, उसका क्या कारण था? कृपया मुझे विस्तार से बताइए।

उत्तर: देखिए, यदि कोई राजा, संत या ऋषि कोई अनुष्ठान करता है, तो वह एक पवित्र कार्य है। पर मालिका के अनुसार, आली में एक महायज्ञ केवल एक ही बार होगा, वह भी भगवान के प्रत्यक्ष आदेश से। वह समय आने पर भक्तों के माध्यम से किया जाएगा। आपने जिस यज्ञ का उल्लेख किया, उसके कारण का मालिका में कोई वर्णन नहीं है। कोई भी कहीं भी धार्मिक अनुष्ठान कर सकता है; यह व्यक्ति और संसार के लिए एक शुभ कर्म है। पर मालिका में जो लिखा है, वह यह है कि अंत समय में आली क्षेत्र भक्तों के माध्यम से प्रकट होगा, और वहाँ के जिन लोगों को प्रभु ने चुना है, वे उस महान घटना का हिस्सा बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:06 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 373 क्या 2024 में मोदी शासक बनेंगे?

उत्तर: इतनी जल्दी नहीं, थोड़ा प्रतीक्षा कीजिए। अभी समय नहीं आया है। मैंने कहा था कि मोदी सरकार 2030 तक चलती रहेगी। अंत में भारत में जो सरकार होगी, वही अंतिम सरकार होगी। उस समय राष्ट्रपति शासन लगेगा, और युद्ध होगा। उनका कार्यकाल समाप्त भी हो जाए, तो क्या समुद्र का कोई अंत होता है? ठीक है, ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 35:47 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 374 हमारे उत्तराखंड में टिहरी बाँध है। क्या वह भी टूटेगा?

उत्तर: सुनिए। आज के सभी पर्वत और पहाड़ धूल में मिल जाएँगे और समतल भूमि बन जाएँगे। तो इस आधुनिक सरकार ने जो बाँध बनाए हैं, वे नहीं रहेंगे। जब सत्य युग आरंभ होगा, तब हर गाँव में माँ गंगा की शाखाओं जैसी छोटी-छोटी नदियाँ होंगी, जो भूमि की सिंचाई करेंगी। अच्छी खेती होगी, और किसी बाँध की आवश्यकता नहीं होगी। भूमि समतल हो जाएगी, और लोग आनंदपूर्वक खेती करेंगे। पर विनाश होगा, उत्तराखंड में बहुत बड़ा और अकल्पनीय विनाश होगा, क्योंकि वह एक पवित्र धार्मिक स्थल है। यह निश्चित रूप से होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:54 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 375 मैं देवघर, झारखंड से हूँ। क्या मालिका में हमारे देवघर बाबा धाम के बारे में कुछ लिखा है? कृपया हमें बताइए।

उत्तर: मालिका में संसार और ब्रह्मांड की हर बात लिखी है। भगवान महादेव के भारत और संसार भर में असंख्य रूप हैं, और देवघर एक पवित्र स्थान है। आपके देवघर बाबा के क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों के बारे में सब कुछ मालिका में लिखा है। परंतु हम उस बात को अधिक महत्व देते हैं जो भक्तों के एकत्र होने, धर्म की स्थापना, और भगवान कल्कि तथा उनके भक्तों के मिलन के विषय में लिखी है। ठीक है, बेटी?

► यह उत्तर सुनें · 38:43 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 376 कृपया एक बात और बताइए। आजकल लोग विवाह से पहले ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: विवाह से पूर्व ब्रह्मचर्य का पालन वैदिक परंपरा का एक पवित्र सिद्धांत है। इसका पालन हर युग में हुआ, पर कलियुग में नहीं। इसका कारण यह है कि समाज अनुशासनहीन हो गया है, और मीडिया तथा इंटरनेट विनाश कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली लड़के-लड़कियों को भ्रष्ट कर रही है। हमारी शिक्षा प्रणाली में वैदिक शास्त्रों को सम्मिलित करना आवश्यक है। जब तक सरकार ऐसा नहीं करती, तब तक ब्रह्मचर्य का प्रश्न ही नहीं उठेगा, क्योंकि बच्चों को सही शिक्षा या संस्कार नहीं मिल रहे। आज का समाज आधुनिकता के पीछे भागता है, और टीवी, मीडिया तथा वेबसाइटों के माध्यम से बुराई फैलती है। इसलिए कोई भी बच्चों को ब्रह्मचर्य का पालन करना नहीं सिखाता। परंतु युवाओं के लिए इसका पालन करना आवश्यक है। पर केवल ब्रह्मचर्य ही पर्याप्त नहीं है। धर्म के मार्ग पर चलना, मालिका का अनुसरण करना, और प्रभु की शरण लेना आवश्यक है। धर्म की स्थापना होगी, पर भारत और संसार के 70% लोग नष्ट हो जाएँगे। इसे लिख लीजिए। सुधार का मार्ग धर्म है। जो धर्म में रहेगा, वह बचेगा; जो नहीं रहेगा, वह नहीं बचेगा। जय जय राम।

► यह उत्तर सुनें · 40:16 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 377 पंडित जी, एक दिन आपने एक वीडियो डाला था जिसमें कहा था कि आप बाद में बताएँगे कि भारत में परमाणु बम कहाँ गिरेंगे, पर आपने कभी बताया नहीं। यदि संभव हो, तो क्या आज इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं? वे कहाँ गिरेंगे, कितने लोग मरेंगे, और भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: देखो बेटा, मालिका में लिखा है कि परमाणु युद्ध होगा। यह तीसरा विश्व युद्ध केवल भारत को ही प्रभावित नहीं करेगा; संसार के सभी देश इस संकट के नीचे हैं, और भारत पर विशेष संकट है। पर यदि बम गिरेंगे, तो भारत कैसे बचेगा? वे निश्चित रूप से भारत पर हज़ारों परमाणु बम गिराएँगे। यह मालिका में लिखा है। चीन, पाकिस्तान, अमेरिका, और उनके सहयोगी मुस्लिम देश मिलकर भारत के विरुद्ध यह पापकर्म करेंगे। पर वे बचेंगे नहीं। परमाणु बमों से हमारे देश का कुछ नहीं होगा। वे अपने ही बमों से नष्ट हो जाएँगे। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए। यदि आप जीवित रहे, तो तब देखेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 42:52 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 378 पर क्या इसका अर्थ यह है कि भारत में एक भी परमाणु बम नहीं फटेगा? वे जो भी गिराएँ, एक भी नहीं फटेगा?

उत्तर: कुछ नहीं होगा। मध्यम दूरी के हथियार और मिसाइलें भारत में विनाश करेंगी। पर जब बात परमाणु बमों की आएगी, तो भगवान हमारी रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:25 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 379 देश के भीतर के आतंकवादियों से कैसे निपटा जाएगा?

उत्तर: सामाजिक और धार्मिक कट्टरता है। कुछ धन के अहंकार में आतंकवाद करते हैं, कुछ सत्ता के अहंकार में। सभी आतंकवादी नष्ट हो जाएँगे। समाज में कई प्रकार के आतंकवादी हैं; उन सभी का अंत हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:54 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 380 जैसे-जैसे भक्त एकत्र हो रहे हैं, वे सब भगवान से कब तक मिल पाएँगे?

उत्तर: पहले अच्छे भक्त तो प्रकट हों, फिर हम इस पर विचार करेंगे। जो अच्छे भक्त हैं, जो करोड़ों में एक हैं, वही प्रभु से मिलेंगे। बाकी शायद उनसे नहीं मिल पाएँगे। वे बस जहाँ हैं वहीं रहें और भगवान के नाम का जप करते रहें।

► यह उत्तर सुनें · 45:38 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 381 शुक्ल पक्ष आ रहा है, और यह 13 दिनों की अवधि है। क्या इस दौरान कुछ महत्वपूर्ण घट सकता है?

उत्तर: हाँ, भक्तों के लिए यह बहुत आनंद का समय है। जब इस तरह 13 दिनों की अवधि आती है, तब भगवान कल्कि धर्म स्थापना के कार्य को आगे बढ़ाएँगे। यह आगे बढ़ेगा। आने वाले समय में, जैसे 2028 में, जब ऐसा 13 दिनों का शुक्ल पक्ष आएगा, तो वह भक्तों के लिए बहुत आनंद का समय होगा। धर्म स्थापना की तिथियाँ 13, 17, 27 जैसी संख्याओं से जुड़ी हैं। ऐसे दिनों में भक्तों के लिए धर्म का कोई अच्छा कार्य होगा। इसे आपको ध्यान में रखना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 46:09 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 382 मैं कह रहा था कि अगले वर्ष एक विशेष शुक्ल पक्ष आ रहा है। मैंने सुना है कि वह महान घटना तभी घटित होगी। क्या यह सच है?

उत्तर: जब तक सभी सच्चे भक्त एकत्रित नहीं हो जाते, तब तक यह नहीं होगा। उनके एकत्रित होने के बाद कुछ बड़ा देखने को मिलेगा। युद्ध पूरी तरह रुकेगा नहीं; यह 2021 तक चलता रहेगा। ठीक है, बेटा।

► यह उत्तर सुनें · 47:39 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 383 मैं भक्ति करता हूँ और भागवत पुराण पढ़ता हूँ। आज मुझे एक जंगल का दर्शन हुआ जहाँ बहुत से लोग एकत्रित हैं, और एक संत त्रिशूल लेकर उनके आगे-आगे चल रहे हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जंगलों में बहुत से भक्त और संत हैं; इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन त्रिशूल धारण करने का अधिकार केवल माँ भवानी और भगवान महादेव को है। वे ही संहार का कार्य करते हैं। परंतु इस युग में संहार करने वाले भगवान शिव नहीं होंगे। स्वयं भगवान कल्कि ही संहार का कार्य करेंगे। सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर है। भगवान ही सब कुछ सँभालेंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 48:08 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 384 जब हनुमान जी भक्तों को लेने आएँगे, तो हमें कैसे पता चलेगा कि वे हमारे लिए आए हैं?

उत्तर: यदि आप सच्चे भक्त हैं, तो आपको उनका दर्शन होगा। लिखा है कि केवल वे ही, जो सच्चे और पवित्र भक्त हैं, इस पावन मिलन को प्राप्त करेंगे। यदि आप सच्चे हृदय से उन्हें पुकारेंगे, तो वे अवश्य आएँगे। उस समय आपको उनका दर्शन होगा। वह समय अभी नहीं आया है।

► यह उत्तर सुनें · 50:52 · 5 सितम्बर 2021

प्रश्न 385 मैं इतिहास पढ़ता हूँ और अलग-अलग कालक्रमों से भ्रमित हो जाता हूँ। कुछ स्रोत कहते हैं कि सनातनी 4,500 वर्ष पहले मध्य एशिया से आए। भगवान राम का काल 8,500 वर्ष पहले बताया जाता है। फिर भी सनातन धर्म को 1.96 अरब वर्ष पुराना कहा जाता है। मैं इन विरोधाभासों को कैसे स्पष्ट करूँ?

उत्तर: यदि आप इस सब के बारे में इतना सोचेंगे, तो पागल हो जाएँगे। इसके बारे में मत सोचिए। जीवन का एक क्षण का भी भरोसा नहीं है, फिर हज़ारों वर्षों की चिंता क्यों? यह भगवान का हिसाब है; इसे भगवान पर छोड़ दीजिए। आपको इतना सोचने की क्या आवश्यकता है? इसके बजाय अपनी प्रार्थना कीजिए, स्वयं को बचाइए, और अपना कर्म कीजिए। दया, दान और धर्म का आचरण कीजिए। अब हमारा काम है भारत और सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म की स्थापना करना। तो आप में से जो चाहें, विश्व सनातन धर्म समूह से जुड़ें और सनातन धर्म के लिए कार्य करें। गौ माता की रक्षा के लिए कार्य करें। अठारह पुराणों और श्रीमद्भागवत की शिक्षाओं का प्रचार करें। यही सबसे पवित्र कर्तव्य है। इसका पालन करने से आपका मनुष्य जन्म सफल होगा, और पृथ्वी पर आने वाले पंचतत्वों के प्रलय से स्वयं को बचाने के लिए यही सबसे बड़ी औषधि और मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 51:54 · 5 सितम्बर 2021

सत्र 19 · प्रश्न 386–407

L18 पंचसखा रचित-भविष्य मालिका, रचना का उदेश्य क्या है I LIVE

दिनांक: 12 सितम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 386 भक्तों का भगवान से मिलन कब होगा?

उत्तर: जब आप उतने पवित्र हो जाएँगे और भगवान की कृपा प्राप्त करेंगे, तो आपको उनका दर्शन अवश्य होगा। दूसरी बात, मालिका के अनुसार, 2021, 2022 और 2023 के वर्षों में सभी भक्त एकत्रित होंगे, और उन्हें भगवान के विषय में संपर्क प्राप्त होगा। यह मालिका में लिखा है। तब तक कृपया प्रतीक्षा कीजिए और उस मार्ग पर चलिए जो मैं आपको दिखा रहा हूँ। यह आप सबके लिए अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:20 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 387 गुरुजी, आपने अभी कहा कि मालिका का हिंदी संस्करण प्रकाशित होगा। क्या आप इसके बारे में और बता सकते हैं?

उत्तर: मालिका का हिंदी संस्करण प्रकाशित हो सकता था, लेकिन हमने उसे रोक दिया। हमने इसलिए रोका क्योंकि 3-4 वर्ष पहले जब से मालिका का प्रचार शुरू हुआ, तब से कई यूट्यूब चैनल इसे तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत कर रहे हैं। कोई कहता है सात सूर्य उदय होंगे, कोई दावा करता है कि भगवान कल्कि यहाँ या वहाँ जन्म ले चुके हैं; वे इसे समझते नहीं और उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं है। यदि इसका हिंदी में प्रचार होगा, तो व्यापारिक बुद्धि वाले लोग इस ग्रंथ का व्यवसायीकरण कर देंगे। हमें धन में कोई रुचि नहीं है; मालिका कोई व्यापार नहीं है। हिंदी संस्करण 10 दिनों में तैयार हो सकता है, यह कोई समस्या नहीं है। लेकिन यदि हम इसे हिंदी में प्रकाशित करें, तो लोग इसका अंग्रेज़ी और अन्य सभी भाषाओं में अनुवाद करके अपने निहित स्वार्थों के साथ इसका प्रचार करेंगे। मालिका का सच्चा अर्थ भक्तों तक नहीं पहुँचेगा। हम ऐसे व्यापारिक बुद्धि वाले लोगों के लिए हिंदी संस्करण नहीं बनाना चाहते। यह एक गुप्त ग्रंथ है, और मैं इसका प्रचार भक्तों के लिए कर रहा हूँ। इसमें कोई बिचौलिया या व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। मैं यह इसलिए नहीं करता कि मालिका बस लोगों तक पहुँच जाए।

► यह उत्तर सुनें · 16:41 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 388 स्थापित भक्तों के लिए, क्या आप कम से कम हिंदी संस्करण सीधे हमें भेज सकते हैं?

उत्तर: यदि मैं भेजूँगा, तो वे उसे डाउनलोड कर लेंगे और किसी न किसी तरह प्राप्त कर लेंगे। मैं यह तभी करूँगा जब मुझे भगवान से आदेश प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:38 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 389 मेरा प्रश्न वर्ष 2019 के बारे में है, जिसका उल्लेख मालिका में है। कृपया इसका महत्व समझाएँ।

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद और पंचसखा द्वारा दी गई मालिका के अनुसार, भगवान कल्कि 2019 में 13 वर्ष के हो जाएँगे। और जिस समय से भगवान 13 वर्ष के होंगे, उसी समय से धर्म स्थापना का कार्य आरंभ होगा और 2022-23 तक चलता रहेगा। 2021 की घटनाएँ 2022 में और तीव्र होंगी तथा और बढ़ेंगी। बाढ़ आएगी, वायु से विनाश, भूकंप और अग्नि से विनाश होगा—पाँचों तत्वों द्वारा विनाश होगा। साम्प्रदायिक हिंसा, आपदाएँ होंगी और महामारियाँ बढ़ेंगी। इन सबके बीच भक्तों को एकत्रित करने का कार्य भी आगे बढ़ेगा। इसी प्रकार चलता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:49 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 390 महोदय, क्या आपने कहा था कि भगवान का जन्म 2005 में हुआ था?

उत्तर: मालिका में उल्लेख है कि 2005 में कुछ घटनाओं के बाद—जैसे जगन्नाथ मंदिर से ध्वजा का गिरना, देवी का अपने सिंहासन से हटना, सप्तशती चंडी से रक्त बहना, और जगन्नाथ मंदिर की रसोई पर बिजली गिरना—भगवान कल्कि का अवतार होगा। मैंने यह नहीं कहा कि उनका जन्म 2005 में हुआ; मैंने कहा कि यह इन घटनाओं के *बाद* होगा। अवतार इसी के अनुसार होगा, और जब भगवान 13 वर्ष के होंगे, तब सम्पूर्ण विश्व में एक महामारी फैलेगी, जैसा महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है। हम इसी गणना का अनुसरण करते हैं, और इसके अनुसार भगवान 13 वर्ष के होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:23 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 391 ओडिशा से एक भक्त पूछ रहे हैं: कुछ दिन पहले मैंने सपने में अष्टभुजा देवी को उनके रौद्र रूप में देखा। मैंने उनके शरीर पर रक्त के छींटे भी देखे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जब धर्म स्थापना का समय, जो कि प्रभु की दिव्य लीला है, निकट आता है, तब माँ भगवती स्वयं संहार का कार्य करेंगी। जैसे, पूरे विश्व में फैली महामारी देवियों के प्रभाव से उत्पन्न एक रोग है। तो, आपको जो यह दर्शन हुआ, वह पापियों के प्रति माँ दुर्गा देवी के क्रोध और रोष को प्रकट करता है। यह संकेत देता है कि आने वाले समय में वे संहार का कार्य करेंगी। इसीलिए भक्तों को ऐसे दर्शन हो रहे हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:49 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 392 इन घटनाओं के संदर्भ में दक्षिण में स्थित पद्मनाभस्वामी मंदिर का क्या महत्व है?

उत्तर: यह भगवान विष्णु का मंदिर है, और उस मंदिर में जो द्वार बंद है, वह पाताल लोक का मार्ग है। यदि वह खुला होता, तो मनुष्य पाताल लोक में जा सकते थे, जिससे समस्याएँ उत्पन्न होतीं। इसीलिए प्रभु ने उसे बंद रखा है। धर्म की स्थापना के बाद, सत्य युग में, वह पुनः खोला जाएगा, जैसे सत्य युग में सब कुछ खुला रहेगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 28:11 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 393 आपने अभी संख्या 16 के बारे में बात की। मैं उसका संदर्भ नहीं समझ पाया क्योंकि मूल प्रश्न ओड़िया में था। कृपया प्रभु की आयु के संदर्भ में 13, 14, 15 और 16 संख्याओं का महत्व समझाएँगे?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद ने इसके बारे में लिखा है। जब प्रभु 13 वर्ष के होंगे, तब सारा संसार आश्चर्यचकित हो जाएगा। संसार पर अचानक आपदाएँ आ पड़ेंगी—महामारियाँ, पंच महाप्रलय (अग्नि, जल आदि से), भूकंप के प्रभाव—और लोग चकित रह जाएँगे। उनके 14वें और 15वें वर्ष में मालिका के माध्यम से भक्तों को एकत्र करने का कार्य होगा। 16वाँ वर्ष भगवान कल्कि की गुप्त लीला के लिए है, क्योंकि धर्म स्थापना का कार्य चल रहा होगा। वे शायद किसी से प्रत्यक्ष रूप से न मिलें, परंतु भक्त सत्संग करेंगे, साथ रहेंगे, मालिका का अनुसरण करेंगे, धर्म के मार्ग पर बने रहेंगे और सत्य युग की दिशा में कार्य करेंगे। फिर, जब प्रभु 17 वर्ष के होंगे, तब सत्य की झलकियाँ यहाँ-वहाँ दिखाई देने लगेंगी। मालिका में यही लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 29:01 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 394 मेरा एक प्रश्न है। हमने जाना है कि सत्य के मार्ग में शाकाहार, सदाचरण और नशे से दूर रहना शामिल है। लेकिन आपने यह भी कहा कि संसार का कोई भी धार्मिक व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर सकता है। कई धर्म ऐसे हैं जहाँ मांस खाना या मदिरा पीना उनकी प्रथाओं का हिस्सा बताया गया है। उन्हें धार्मिक कैसे माना जा सकता है, और क्या उनके लिए मापदंड अलग होंगे?

उत्तर: देखिए, कलियुग के कारण संसार में अनेक धर्म और संप्रदाय हैं, परंतु सनातन धर्म पहले भी था, आज भी है, और भविष्य में केवल वही रहेगा। कोई अन्य धर्म नहीं बचेगा। तो, जो लोग पाप करते हैं, पशुओं की हत्या करते हैं, अधर्म करते हैं, हमारे सनातन धर्म के श्रीमद्भागवत का पालन नहीं करते, मांस-मछली खाते हैं, शराब पीते हैं—उनके लिए मालिका में कोई स्थान नहीं है। यदि वे बुरे कर्म करेंगे, तो निश्चय ही उसका फल भोगेंगे। परंतु जो भक्त सत्त्व (पवित्रता और सद्गुण) में रहते हैं, वे बच जाएँगे। यह भागवत और मालिका दोनों में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 30:22 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 395 क्या आने वाले समय में पुरी, ओडिशा के शंकराचार्य की कोई भूमिका होगी?

उत्तर: जय जगन्नाथ। हमारे हिंदू सनातन धर्म के अनुसार, हम चारों दिशाओं के चार शंकराचार्यों का आदर करते हैं। परंतु उनकी भूमिका का निर्णय प्रभु अपनी दिव्य योजना के अनुसार करेंगे। इस पर टिप्पणी करना मेरे लिए उचित नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 33:27 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 396 बद्रीनाथ से कोलकाता तक के पवित्र मार्ग के बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: लिखा है कि बद्रीनाथ से कोलकाता तक के मार्ग पर आधे लोगों की रक्षा भक्त हनुमान जी करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:21 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 397 भविष्य में विश्व की राजधानी और शासन के बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: मैं मालिका से कह रहा हूँ। शास्त्रों के अनुसार लिखा है कि ओडिशा सारे विश्व की राजधानी बनेगा। विश्व शासन का केंद्र 'सुधर्म महासंघ' के नियंत्रण में होगा। भगवान विष्णु अपने भक्तों के माध्यम से सारे विश्व पर शासन करेंगे। अयोध्या में शासन होगा, और दिल्ली की गद्दी पर मिलीभगत देखने को मिलेगी। यह मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 36:16 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 398 13, 17 और 27 संख्याओं का क्या महत्व है? आपने पिछली बैठक में इनका उल्लेख किया था। साथ ही, आपने कहा था कि हमारे मोहन भाई ने किसी का बुखार ठीक किया; कृपया इस पर विस्तार से बताएँगे?

उत्तर: 13, 17 और 27 संख्याओं के विषय में मालिका में विस्तृत वर्णन है। ये संख्याएँ उन तिथियों को दर्शाती हैं जब बड़ी घटनाएँ घटित होंगी। जैसे, इस तिथि को भूकंप आएगा, इस तिथि को युद्ध आरंभ होगा, इस तिथि को अग्नि से संबंधित आपदा होगी। ये संख्याएँ संसार के सुधार हेतु मालिका में उल्लिखित हैं। दूसरी बात, मैंने मोहन भाई के बारे में ठीक वैसा नहीं कहा था, परंतु मैंने यह कहा था: यदि कोई भक्तिभाव से 'माधव' का नाम जपे और धर्म के मार्ग पर बना रहे, तो बुखार तो छोड़िए, बड़े-बड़े रोग और महामारियाँ भी उसे छोड़ देंगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये रोग दैवी विधान से हैं और मानवता के सामूहिक कर्म का फल हैं। मनुष्यों ने जल, वायु, अग्नि और आकाश तत्वों को प्रदूषित किया है, और अब वे उसका परिणाम भोग रहे हैं। प्रभु के मार्ग पर रहने से मनुष्य बचेगा और मुक्ति पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:21 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 399 पंडित जी, क्या मालिका में 'नया पटना' का कोई उल्लेख है?

उत्तर: जब राजधानी पटना पर और ओडिशा राज्य की राजधानी पर पंचरंगी ध्वज फहराएगा, तब यह भक्तों के लिए संकेत होगा कि धर्म स्थापना का समय निकट है। इसके बारे में यही लिखा गया था।

► यह उत्तर सुनें · 39:28 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 400 भगवान कृष्ण दक्षिण भारत नहीं आए थे, परंतु भगवान राम आए थे। क्या मालिका में भगवान कल्कि के दक्षिण भारत आने के बारे में कोई जानकारी है? क्या बेंगलुरु या मैसूरु के बारे में कुछ लिखा है, क्योंकि यहाँ बहुत से गुप्त भक्त हैं?

उत्तर: सबसे पहले, आप जिस पवित्र भूमि से हैं, उसे मैं प्रणाम करता हूँ। दूसरी बात, मालिका सबके पास नहीं पहुँचेगी। केवल सच्चे भक्तों को ही इसका पता चलेगा; किसी न किसी तरह यह उन तक पहुँच जाएगी, और इसका अनुसरण करके वे धर्म स्थापना के कार्य में जुड़ेंगे। तीसरी बात, भगवान कल्कि दक्षिण में अवश्य जाएँगे। परंतु वे अपने आगमन की घोषणा नहीं करेंगे। वे मनुष्य शरीर में, गुप्त रूप से जाएँगे। शास्त्रों और मालिका के अनुसार, प्रभु निर्धारित तीर्थस्थलों पर जाएँगे, और तब उन स्थानों का महत्व बढ़ जाएगा। बाद में, सत्य युग में, जब नए शास्त्र लिखे जाएँगे, तब लोग पढ़ेंगे कि प्रभु आए थे। वे अवश्य जाएँगे, और वहाँ के अनेक भक्त उनके द्वारा बचाए जाएँगे। वह समय निकट है।

► यह उत्तर सुनें · 40:33 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 401 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। कुछ दिनों से मेरे साथ अजीब-सी बातें हो रही हैं। जब मैं सूर्य देव को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं दिन भर उन्हें निहार सकता हूँ, बिना आँखों में कोई तकलीफ़ हुए। बहुत शीतलता का अनुभव होता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: ठीक है, आप जो बता रहे हैं वह एक प्रकार की 'तपस्या' है। पहले के समय में जो लोग घंटों सूर्य को निहारते थे, उन्हें अपनी तपस्या का फल मिलता था और सूर्य देव के दिव्य दर्शन भी होते थे। परंतु चूँकि यह कलियुग है, मैं आपको सलाह दूँगा कि अभी ऐसा न करें। जो हो रहा है वह यह है कि दैवीय शक्ति का प्रभाव आप पर उतर रहा है। मालिका का अनुसरण करें, और जब समय आएगा तो आप सब कुछ समझ जाएँगे। आपको कोई तकलीफ़ नहीं होती, यह एक शुभ संकेत है; यह 'सत्यवीर' (सत्य के वीर) का लक्षण है। यह दैवीय शक्ति का प्रभाव है। आने वाले समय में सभी भक्त और संत बिना किसी हानि के सूर्य को देख सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:11 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 402 धर्म की स्थापना, भक्तों के उद्धार, और क्या भगवान कल्कि महाराष्ट्र पधारेंगे — इस विषय में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: हाँ, महाराष्ट्र में धर्म की स्थापना, वहाँ के भक्तों के उद्धार, और यह भी लिखा है कि भगवान कल्कि उस स्थान पर भी जाएँगे। यह सब लिखा हुआ है। वहाँ बहुत सारे भक्त हैं। मालिका में भारत, विश्व और ब्रह्मांड के हर स्थान की जानकारी है। सभी भक्तों का उद्धार होगा और धर्म की स्थापना होगी। महाराष्ट्र को प्रणाम। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 403 आपने एक बार कहा था कि सभी को तुलसी माला और जनेऊ धारण करना चाहिए। कृपया इसकी विधि और नियम समझाइए?

उत्तर: मनुस्मृति के अनुसार चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को जनेऊ धारण करने का अधिकार है, परंतु कलियुग में यह परंपरा क्षीण हो गई है। प्रत्येक वर्ण के लिए विशेष नियम हैं। तुलसी माला चैतन्य महाप्रभु द्वारा दी गई एक महान परंपरा है, और सनातन धर्म के सभी अनुयायियों के लिए इसे धारण करना अनिवार्य है। यह शरीर और मन को बुरी शक्तियों से बचाती है। जहाँ तक जनेऊ की बात है, उसकी पवित्रता बनाए रखने के नियम हैं, जैसे शौचादि क्रियाओं के समय उसे कान पर चढ़ाना और अपवित्र स्थानों से बचना। ऐसे बहुत से नियम हैं। मैं मोहन से कहूँगा कि वे आपको विशेष नियम समझा दें।

► यह उत्तर सुनें · 46:14 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 404 क्या हरिशंकर-नृसिंहनाथ पर्वत पर हनुमान जी विराजमान हैं?

उत्तर: उस विशेष स्थान पर नहीं। हनुमान जी का निवास 'अखंड बिहार' में है। मैं सब कुछ सबको नहीं बता सकता, परंतु इतना कह सकता हूँ: हनुमान जी वहाँ गुप्त रूप में तपस्या कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:47 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 405 मैं पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के बोलपुर से हूँ। यहाँ हमारे पास कंकालीतला शक्ति पीठ है। क्या भगवान इस स्थान पर पधारेंगे?

उत्तर: वह स्थान नवद्वीप के निकट है। भगवान नवद्वीप अवश्य जाएँगे। भगवान कल्कि वहाँ सड़क मार्ग से जाएँगे, हवाई मार्ग से नहीं। वे माता के स्थान पर भी जाएँगे। संभव है कि वे कंकालीतला भी जाएँ। शास्त्रों में लिखा है कि वे कोलकाता के काली मंदिर जाएँगे, और कोलकाता के भक्त वहाँ भगवान से मिलेंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 49:31 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 406 इंदौर के बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: सुनिए, सभी राज्यों और सभी स्थानों के बारे में लिखा हुआ है। भक्तों के उद्धार के लिए मालिका का प्रचार होगा, और इंदौर के भक्त भी भगवान से मिलेंगे। यह सब लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 51:08 · 12 सितम्बर 2021

प्रश्न 407 भगवान के वक्षस्थल पर जो 'श्रीवत्स' चिह्न अंकित होगा, वह क्या है?

उत्तर: श्रीवत्स भगवान के शरीर पर श्री राधा रानी और माता लक्ष्मी का चिह्न है। यह चिह्न भक्तों को भगवान श्रीकृष्ण के शरीर पर दिखाई देता था। यह सबको दिखाई नहीं देगा। महान संतों ने लिखा है कि जब भगवान दिव्य दर्शन देंगे तो केवल सच्चे भक्त ही इस चिह्न को देख पाएँगे। सभी इसे नहीं देख पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:57 · 12 सितम्बर 2021

सत्र 20 · प्रश्न 408–430

L19 कलियुग - अंत के बारे में विस्तृत वर्णन | Detail Description about 'END OF KALIYUG''. LIVE

दिनांक: 19 सितम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 408 मेरा प्रश्न यह है कि क्या माधव जी देवभूमि द्वारका में हैं? और मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि क्या अहमदाबाद के कांकरिया झील में भगवान की लीला होगी? कृपया इस पर प्रकाश डालिए?

उत्तर: यह देवभूमि है, भगवान श्रीकृष्ण की उपस्थिति का केंद्र। यह पवित्र भूमि है, और भगवान वहाँ अवश्य जाएँगे और उद्धार करेंगे। जो वहाँ हैं, उनकी वे रक्षा करेंगे। जो क्षेत्र संकट में है, वहाँ वे निश्चित रूप से, निश्चित रूप से जाएँगे। कुछ भक्तों को इसका पता चलेगा, परंतु सभी उन्हें पहचान नहीं पाएँगे। भगवान जाने से पहले अपने आगमन की घोषणा नहीं करेंगे। जब वे उस भाग में जाएँगे, तो यह सांकेतिक (सब्जेक्टिव) होगा। आने वाले समय में यही होने वाला है। इसलिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप धर्म, पवित्रता और मालिका के मार्ग पर चलें।

► यह उत्तर सुनें · 09:31 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 409 पंडित जी, हम पूछना चाहते हैं कि भगवान की जन्म तिथि और जन्म समय क्या है?

उत्तर: देखिए, जब भगवान आते हैं और अवतार लेते हैं, तो भक्तों के लिए उनके दर्शन करना महत्वपूर्ण है। आपके लिए यही अच्छा है कि आप उनके दर्शन करें और उनका नाम जपें। भगवान के जन्म की सही तिथि तो शायद ब्रह्मा जी को भी न पता हो। हम तो साधारण जीव हैं। इसलिए, मैं इस बारे में बोलूँ या न बोलूँ, यह भगवान की पवित्रता और दिव्य प्रवाह के लिए अच्छा नहीं होगा। अतः बेहतर यही है कि हम विनम्रता के साथ इस पर चिंतन करें। बस इतना ही। भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करते रहिए, उनका नाम जपिए, कीर्तन कीजिए, और सनातन धर्म के लिए कार्य कीजिए। इस समय हमारे लिए बस इतना ही आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 10:46 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 410 पंडित जी, क्या आप कानपुर आएँगे?

उत्तर: वे हर जगह जाएँगे, कानपुर भी जाएँगे। बात इतनी सरल है। वे सर्वत्र हैं, और उनका अधिकार भगवान के सभी भक्तों को दिया जाना है। हमें सही समय की प्रतीक्षा करनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 11:47 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 411 भगवान बलदेव ने कहाँ अवतार लिया, और इस समय वे कहाँ हैं?

उत्तर: उनके विषय में — इस जन्म में, इस युग में, कलियुग के अंत में जब भगवान कल्कि आएँगे... इस पर मैं पहले भी कई एपिसोड में अपने विचार व्यक्त कर चुका हूँ। भगवान कल्कि के शरीर में बलदेव और श्री जगन्नाथ, अर्थात् श्रीकृष्ण और बलराम, दोनों एक ही शरीर में विलीन होकर कल्कि के रूप में आएँगे। इसलिए बलदेव अलग नहीं हैं। मालिका में इसका स्पष्ट वर्णन है। जब कल्कि आएँगे, तब उनके शरीर के दाहिने भाग में बलरामदेव का अंश होगा और बाएँ भाग में भगवान कृष्ण का अंश होगा। दोनों एक शक्ति में मिलकर कल्कि अवतार के रूप में प्रकट होंगे। दोनों के शरीर एक ही शरीर में होंगे। जयदेव के दशावतार चरित के अनुसार भगवान कल्कि धर्म की स्थापना के लिए अवतार हैं। मालिका ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि एक ही अवतार होगा, कल्कि अवतार, परंतु उनके शरीर में बलरामदेव और भगवान श्रीकृष्ण की शक्तियाँ एक होकर मिल जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 12:20 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 412 क्या हम घर से बाहर रहते हुए भी गीता का पाठ कर सकते हैं? और यदि कर सकते हैं, और यदि हम होटल में ठहरे हों, तो क्या वहाँ श्रीमद्भागवत का भी पाठ कर सकते हैं? यदि हाँ, तो उसकी उचित विधि और पद्धति क्या है? आपने एक बार कहा था कि दीया जलाकर ही भागवत का पाठ करना चाहिए। तो जब हम होटल में ठहरे हों, तब हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जब आप घर से बाहर हों, होटल में हों, तो एक काम कीजिए। वहाँ आप भागवत का पाठ नहीं कर सकते, क्योंकि वहाँ अनेक प्रकार के लोग, अशुद्ध विचारों वाले लोग आते हैं। इसलिए केवल भगवान का नाम भजन कीजिए। श्रीमद्भागवत में एक श्लोक है... यदि आप इसका जप करेंगे, तो आपको संपूर्ण श्रीमद्भागवत के पाठ का फल मिलेगा। हम इसे आपको भेज देंगे। हमारे साथ जो संत कार्य करते हैं — मोहन, नरेंद्र, पद्मा — यदि आप उनसे पूछेंगे तो वे आपको अपडेट करेंगे और भेज देंगे। हाँ, यदि आप होटल में ठहरे हैं, तो इतना करना ही पर्याप्त है।

► यह उत्तर सुनें · 13:58 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 413 आपको त्रिजटा के वंश के बारे में जानने की आवश्यकता क्यों है? (प्रश्नकर्ता उत्तर देते हैं: "क्योंकि पंडित जी, हमने सुना है कि त्रिजटा ने अशोक वाटिका में माता सीता की बहुत सहायता की थी। लेकिन अब शायद भविष्य मालिका में त्रिजटा के वंशजों का उल्लेख है, और वह किसी नकारात्मक विचारधारा से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।")

उत्तर: देखिए, पहले मैं आपको बता दूँ, त्रिजटा विभीषण के वंश की हैं। वे विभीषण की पुत्री थीं। उन्होंने 13 महीने तक माता सीता की सेवा की। इस युग में, त्रिजटा के वंश को कलियुग में तेरह पीढ़ियों तक जीवित रहने का अधिकार है। वे जीवित रहेंगे, और उसके बाद उनका वंश समाप्त हो जाएगा। भारत का एक बहुत प्रमुख परिवार इससे जुड़ा हुआ है, इसलिए मैं इस पर बोलना नहीं चाहता। इस पर बोलने से विवाद खड़ा हो जाएगा, क्योंकि भारत के शासन में शामिल एक बहुत बड़ा परिवार इससे जुड़ा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 17:11 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 414 तो पंडित जी, इससे एक प्रश्न उठता है: क्या यह परिवार कुछ और समय तक सत्ता में रहेगा? क्या उनके बने रहने की कोई आशा है? क्या भविष्य मालिका में ऐसा कुछ है जो कहता हो कि उन्हें अब और शासन करने को नहीं मिलेगा?

उत्तर: परिवार में विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं... उन्हें जाना ही पड़ेगा। नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। ऐसी बातें कहना ठीक नहीं है। ऐसा कुछ भी नहीं लिखा है। केवल इतना लिखा है कि उनका परिवार तेरह पीढ़ियों तक रहेगा। उसके बाद उनका वंश और नई पीढ़ियाँ समाप्त हो जाएँगी। तेरह पीढ़ियों के बाद वंश समाप्त हो जाएगा। यही लिखा है। एक और बात जो एक स्थान पर लिखी है, वह यह कि जब जगन्नाथ मंदिर पर आक्रमण होगा और मुसलमान लोग पुरी पर युद्ध करेंगे, तब त्रिजटा वंश उपस्थित रहेगा। उस समय उनके परिवार का कोई व्यक्ति वहाँ होगा। यह भी लिखा है। और क्या लिखा है, यह कहना ठीक नहीं है। देखिए, हम देश में विवाद खड़ा करने के लिए नहीं हैं।

► यह उत्तर सुनें · 18:28 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 415 क्या उनका जन्म हो चुका है?

उत्तर: श्लोक कहता है कि भगवान कल्कि का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में होगा जो अग्निहोत्र (यज्ञ कर्म) करता है। वे [पंचसखा] उनके साथ रहेंगे। वे बचपन से लेकर युग के अंत तक धर्म की स्थापना में लगे रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 21:04 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 416 पंडित जी, लगभग 500 वर्ष पहले एक संकट आया था... क्या मालिका में उसका कोई वर्णन है?

उत्तर: श्रीमंत शंकरदेव के संकट के विषय में... मालिका धर्म, अध्यात्म और ज्ञान की स्थापना के विषय में लिखी गई है। मैंने इस विशेष विषय पर अधिक नहीं पढ़ा है, जिसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। परंतु कहीं न कहीं अवश्य लिखा होगा, क्योंकि 1,85,000 ग्रंथ लिखे गए हैं। उन सबको कौन पढ़ सकता है? वह अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:05 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 417 हमें किस नाम का जप करना चाहिए?

उत्तर: जब भगवान कल्कि आएँगे, तब भक्त उन्हें माधव कहकर पुकारेंगे, और कुछ लोग उन्हें सत्यानंद नाम से पुकारेंगे। यह लिखा है। इस नाम का जप करने से भक्तों का उद्धार होगा। शून्य ही महाशून्य है। शून्य की कोई कल्पना या वर्णन नहीं कर सकता। केवल योगी ही शून्य के मार्ग पर चल सकते हैं। हम सांसारिक जीवन वालों के लिए शून्य ब्रह्म की स्थिति के बारे में सोचना या समझना कठिन है। इसलिए नाम भजन कीजिए, और भगवान के नाम के द्वारा आपको मुक्ति का मार्ग मिलेगा। मालिका में यही लिखा है, और कुछ नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 23:06 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 418 अंधकार के सात दिनों में हनुमान जी हमारी रक्षा कैसे करेंगे? हम हनुमान जी और गरुड़ जी के बारे में जानना चाहते हैं, मालिका में क्या लिखा है?

उत्तर: देखिए, इस बारे में मैं पहले भी कई एपिसोड में बोल चुका हूँ। हनुमान जी इस समय तपस्या में हैं। जब भगवान कल्कि उन्हें पुकारेंगे, तब हनुमान जी प्रकट होंगे। भगवान उन्हें बद्रीनाथ से कोलकाता तक के संपूर्ण क्षेत्र में भक्तों की रक्षा का कार्य सौंपेंगे। हनुमान जी और विभीषण दोनों ओडिशा में आकर भगवान कल्कि से मिलेंगे। यह भी लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 25:07 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 419 ओडिशा के राजा गजपति दिव्यसिंह देब हैं। 64वें अंक (राज्यकाल वर्ष) का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, जिस समय से वे सिंहासन पर आरूढ़ हुए, उसी समय से उनके राज्यकाल वर्ष (अंक) की गणना शुरू हुई। वर्ष की गणना उसी क्षण से की जाती है। इसी पद्धति के अनुसार लिखा जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 25:58 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 420 पंडित जी, आपने कहा कि जो लोग मांस, मदिरा और अंडे का सेवन करते हैं, वे जीवित नहीं बचेंगे। लेकिन दवाइयों जैसी चीज़ों का क्या, जिनमें भी अल्कोहल होता है, या बाज़ार की खाद्य वस्तुएँ जिनमें अक्सर हमें पता ही नहीं होता कि उनमें क्या मिला है? यदि हम अनजाने में ऐसी चीज़ों का सेवन कर लें, तो क्या वह भी पाप माना जाएगा?

उत्तर: अनजाने में कुछ खा लेने से किसी को पाप नहीं लगता। दूसरी बात, जो व्यक्ति बीमार है और उसे दवा की आवश्यकता है, वह निश्चित रूप से दवा लेगा। सत्ययुग अभी नहीं आया है। जब सत्ययुग आएगा, तब सभी रोग ठीक हो जाएँगे। बहुत से लोगों ने केवल भगवान के नाम का जप करके बड़े-बड़े रोग भी ठीक कर लिए हैं। उत्तर प्रदेश के द्विवेदी जी नामक एक व्यक्ति ने अपने पिता के बारे में अपना अनुभव साझा किया, जिनका ऑपरेशन होना निश्चित था। कुछ घंटों तक नाम जप करने से वे ठीक हो गए, और ऑपरेशन की आवश्यकता ही नहीं रही। तो सच्चे भक्तों के लिए भगवान मार्ग दिखाएँगे। मध्यम श्रेणी के भक्तों को समाज के साथ चलना पड़ेगा। एक समय ऐसा आएगा जब दवा की आवश्यकता नहीं होगी। अभी दवा काम करेगी, परंतु एक समय आ रहा है जब दवा लेने का उल्टा प्रभाव होगा। हमें समय के अनुसार जीना है। अनजाने में कुछ सेवन कर लेने में कोई पाप नहीं है। सबसे बड़ा पाप है जानबूझकर किसी जीव की हत्या करना, जानबूझकर किसी को हानि पहुँचाना, या जानबूझकर मांस, मछली और मदिरा का सेवन करना।

► यह उत्तर सुनें · 29:12 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 421 पंडित जी, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, प्रभु का वर्ण कैसा होगा? दूसरा, भगवान कल्कि जो 12 हाथ लंबी तलवार धारण करेंगे, उसके बारे में... हमारे पास के एक गाँव में कुछ प्रकट हुआ है, और लोग उसे भगवान कल्कि की खड़ाऊ मानकर उसकी पूजा कर रहे हैं। क्या यह सच है? और भगवान कल्कि स्वयं 12 हाथ लंबी तलवार लेकर कैसे चलेंगे-फिरेंगे? मुझे यह समझ नहीं आता। हम स्वयं को इतना छोटा देखते हैं; प्रभु कितने बड़े होंगे, तलवार कितनी बड़ी होगी? ये विचार मेरे मन में बार-बार आते रहते हैं।

उत्तर: भगवान में कुछ भी करने की शक्ति और प्रभाव है। यह प्रश्न पहले भी पूछा जा चुका है। भगवान अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं। वे हिमालय जैसे करोड़ों पर्वतों के समान विशाल रूप में प्रकट हो सकते हैं, और यदि चाहें तो माँ की गोद में एक छोटे बालक की तरह खेल भी सकते हैं। किसी भी मनुष्य के लिए भगवान की शक्ति को समझ पाना संभव नहीं है। यदि कोई मनुष्य इसके बारे में सोचता है, तो यह उसके अज्ञान के कारण है। भगवान कल्कि हजारों मीटर, फुट या किलोमीटर लंबी तलवार धारण कर सकते हैं। जिनके रोम-रोम में एक ब्रह्मांड विद्यमान है, उनके लिए आप 12 हाथ लंबी तलवार की चिंता क्यों कर रहे हैं? प्रभु के लिए यह बहुत छोटी बात है। यह विचार छोड़ दीजिए। उनकी केवल इच्छा मात्र से करोड़ों ब्रह्मांड भस्म हो सकते हैं। इसलिए इसके बारे में मत सोचिए। इसके बारे में सोचना स्वयं के लिए ही कष्ट मोल लेना है। तो, ऐसा मत सोचिए।

► यह उत्तर सुनें · 31:25 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 422 क्या उनका जन्म हो चुका है?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार, प्रभु 14 वर्ष के हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:58 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 423 पंडित जी, आप जिस तलवार की बात कर रहे थे, वह कहाँ से प्रकट होगी? वह कहाँ होगी?

उत्तर: देखिए, भगवान कल्कि तलवार धारण नहीं करेंगे। प्रभु सुदर्शन चक्र से, काल चक्र से विनाश करेंगे, जो पापियों का नाश करता है। दूसरी बात, सुनिए... एक ऋषि ने अपनी तपस्या से ब्रह्म-अवस्था प्राप्त की थी। उनकी अस्थियाँ वज्र (एक दिव्य अस्त्र) में परिवर्तित हो चुकी हैं। भगवान कल्कि उसी वज्र को धारण करेंगे। उसमें लगभग एक हजार किलोमीटर तक जला देने की क्षमता है। वे उसी वज्र से प्रहार करेंगे। प्रभु इसी वज्र से विनाश करेंगे; यह मालिका में लिखा है। मालिका में 12 हाथ की तलवार का भी उल्लेख है, परंतु प्रभु की शक्ति आणविक है।

► यह उत्तर सुनें · 36:18 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 424 मुझे क्षमा करें पंडित जी, परंतु हमारे संबलपुर में, महानदी के तट पर एक स्थान है... और वह वहीं से प्रकट हो रही है। (अर्थात् तलवार वहाँ प्रकट हो रही है।)

उत्तर: यह तो बहुत अच्छी बात है। यदि किसी प्रकट होने वाली वस्तु से धर्म की स्थापना हो सकती, तो भगवान के आने की आवश्यकता ही न होती। इस युग में प्रभु का अस्त्र वज्र होगा, जैसा महापुरुष सत्यानंद ने लिखा है। महापुरुष अच्युतानंद ने भी एक ऋषि के बारे में लिखा है जो तपस्या में थे। जाजपुर क्षेत्र में, कनक दुर्गा के स्थान पर, एक वृक्ष के नीचे भगवान कल्कि का वज्र छिपा हुआ है। समय आने पर प्रभु उसे निकालेंगे और धारण करेंगे। उस क्षण, लोग 100 किलोमीटर दूर भी खड़े नहीं रह पाएँगे। प्रभु इसी अस्त्र से विनाश करेंगे। विनाश चक्र के द्वारा भी होगा, दुर्गा के द्वारा, रोगों, महामारियों और पंचतत्वों के द्वारा भी होगा। मालिका में लिखा है कि जब माँ समलेश्वरी की ध्वजा जलेगी, तब संबलपुर युद्धभूमि बन जाएगा। उसके बाद महान कार्य आरंभ होगा। माँ समलेश्वरी अपना क्षेत्र छोड़ देंगी... और यह सब तो हो भी चुका है। हो चुका है। माँ धर्म स्थापना के कार्य में प्रभु के साथ जुड़ चुकी हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:48 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 425 क्या यह सच है कि Kali Yuga का अंत तृतीय विश्वयुद्ध से होगा, और विश्व की केवल 7-8 प्रतिशत जनसंख्या ही शेष रहेगी? और यह विश्वयुद्ध कब होगा?

उत्तर: Kali Yuga का अंत तो होगा, परंतु विनाश का कार्य शेष है। यह ऐसा ही है जैसे जब कोई नया मंदिर बनाया जाता है, तो पुराने ढाँचे को तोड़कर हटाया जाता है। उसी प्रकार Kali Yuga का पुराना ढाँचा तोड़ा जाएगा। इसका माध्यम पंचतत्व होंगे: अग्नि, वायु, जल, आकाश और पृथ्वी। इन सभी माध्यमों से विनाश होगा। युद्ध भी इस प्रक्रिया का एक चरण होगा, और वह आणविक युद्ध होगा। उसमें विश्व की दो-तिहाई से कुछ अधिक जनसंख्या नष्ट हो जाएगी। संपूर्ण विश्व में 64 करोड़ लोग शेष रहेंगे। भारत में 33 करोड़ शेष रहेंगे। इन्हीं 64 करोड़ लोगों से Satya Yuga का आरंभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:07 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 426 परंतु पंडित जी, क्या यह तृतीय विश्वयुद्ध भूमि और संपत्ति के विवादों के कारण होगा?

उत्तर: हाँ, यही कारण है।

► यह उत्तर सुनें · 41:21 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 427 जैसे भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में बचपन से ही दिव्य लीलाएँ और चमत्कार किए, जैसे पर्वत उठाना और पूतना का वध करना, क्या इस Kali Yuga में भी ऐसी कोई लीलाएँ हैं?

उत्तर: मैं आपको एक बात बताता हूँ। प्रभु ने कंस का वध करने से पहले कई दैत्यों को परास्त किया था और अपनी माया से लोगों को मोहित भी किया था। उसी प्रकार भगवान कल्कि... आज के प्रभु ठीक वैसे ही हैं जैसे वे भगवान कृष्ण थे। वे ही कल्कि हैं। क्योंकि अवतार कृष्ण का है, और कृष्ण ही कल्कि हैं।

► यह उत्तर सुनें · 41:36 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 428 पंडित जी, उनका वर्ण कैसा है?

उत्तर: (एक श्लोक उद्धृत करते हुए) "शशिवर्णं चतुर्भुजम्..." (चंद्रमा के वर्ण वाले, चतुर्भुज)। जब कोई ब्राह्मण कुल में जन्म लेता है और पवित्र होता है, तो उसकी आभा में चंद्रमा जैसी आभा मिली होती है। प्रभु वैसे ही हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:33 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 429 मुझे यह पूछना है कि तीन दिन पहले मैंने एक स्वप्न देखा कि मैं रेलगाड़ी में यात्रा कर रही हूँ। स्वप्न में भीतर से एक आवाज़ ने मुझसे कहा, "पुरी आ गया।" मैं रेलगाड़ी में बिल्कुल अकेली थी, और मुझे अपने आसपास कोई दिखाई नहीं दे रहा था। मैं पूरी तरह अकेली थी जब आवाज़ ने कहा, "पुरी आ गया।" मैं उठी और दोनों ओर खिड़की से बाहर देखा तो हरियाली और मंदिर दिखाई दिए, और सामने धाम था। इसका क्या अर्थ है? कल मैंने एक और स्वप्न देखा जिसमें मुझे प्रभु के दर्शन भी हुए।

उत्तर: ऐसे महत्वपूर्ण स्वप्नों के माध्यम से भगवान अनुभव कराते हैं और भक्तों को यह अनुभूति कराते हैं कि धर्म स्थापना का समय आ गया है। यदि भक्त इस अनुभव को हृदय में धारण करें, तो भगवान में उनकी श्रद्धा दृढ़ होगी। संभवतः आप पुरी नहीं आ सकीं, इसलिए भगवान ने आपको स्वप्न में पवित्र धाम तक पहुँचा दिया। यह भक्तों के लिए एक अनुभव है, और यह बहुत अच्छा है। माँ, इसका अनुसरण कीजिए। इस जीवन में, देखिए, स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं है; आत्मा शरीर से अलग है। शरीर नष्ट हो जाता है, और आत्मा दूसरा जन्म लेती है। परंतु यदि इस जीवन में भगवान हमें ऐसा अनुभव देते हैं, तो आपको इसे समझना चाहिए। धर्म के लिए कार्य कीजिए, सनातन धर्म के लिए कार्य कीजिए, और प्रभु से जुड़ी रहिए। यह आपके लिए कल्याणकारी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:08 · 19 सितम्बर 2021

प्रश्न 430 पंडित जी, मुझे भागवत के बारे में पूछना था। मेरा प्रश्न यह है... भगवान कृष्ण ने द्वापर युग में अश्वत्थामा को शाप दिया था। तो क्या Kali Yuga में अश्वत्थामा श्रीकृष्ण, श्री Madhava से मिलेंगे? कृपया उनके बारे में बताइए।

उत्तर: जब भगवान कल्कि अपने चक्र से 14 लाख म्लेच्छों के विरुद्ध युद्ध करेंगे, उस समय दोनों महान योद्धा अश्वत्थामा और शल्य प्रभु के साथ होंगे। और इसी जीवन में अश्वत्थामा को मुक्ति प्राप्त होगी। प्रभु उन्हें मोक्ष प्रदान करेंगे, और उनका शाप समाप्त हो जाएगा। उन्हें जो शाप मिला था, वह समाप्त हो जाएगा। यह मालिका में लिखा है। वे अवश्य आकर उनसे मिलेंगे। समय आने पर भक्त भी उनसे मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 46:29 · 19 सितम्बर 2021

सत्र 21 · प्रश्न 431–453

L20 विश्व में 64 प्रकार की बीमारी आएगी। मनुष्य लोगों के मुख से खून निकलेगा . LIVE

दिनांक: 26 सितम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 431 पंडित जी, मैं प्रभु जी (भगवान) से मिलना चाहता हूँ। क्या वे दर्शन दे रहे हैं? कृपया विस्तार से बताइए कि वे कब दर्शन देंगे और हम उनसे कैसे मिल सकते हैं। मैं इस समय विदेश में हूँ।

उत्तर: देखिए, शैलेश बाबा, आपकी भक्ति, आपकी पवित्रता और आपके हृदय में भगवान के प्रति जो श्रद्धा है, वही एक दिन आपको उनके दर्शन कराएगी। इस विषय में आप हमारे मोहन और नरेंद्र के संपर्क में रहिए, और जब समय आएगा, तब हम आगे बढ़ेंगे। ठीक है, बाबा। जय जगदीश।

► यह उत्तर सुनें · 09:04 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 432 प्रभु जी, पिछले सप्ताह मुझे एक स्वप्न आया और मैं उसका अर्थ समझना चाहता हूँ। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा, विशालकाय वानर एक पहाड़ी पर खड़ा है। पास ही एक तंबू था, और वहाँ छोटे-छोटे दिव्य प्राणी (गंधर्व) बैठे थे। कुछ आपस में लड़ रहे थे, कुछ सांसारिक भोग-विलास में लगे हुए थे। वह बड़ा वानर पहाड़ी से आगे की ओर देख रहा था और उन्हें भी देख रहा था। मैं यह पूरा दृश्य सामने से देख रहा था। इसका क्या अर्थ है? यदि आप समझा दें तो बड़ी कृपा होगी।

उत्तर: देखिए, भगवान के अनेक रूप हैं। जो आपस में लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं, वे भी कभी वानर सेना में थे। और पृथ्वी पर उनके हजारों भक्त हैं। धर्म के नाम पर ये ही अच्छे भक्त आपस में लड़ रहे हैं, और हनुमान जी भी उनके बीच में हैं। तो अर्थ, उत्तर यह है: आज संसार में और भारत में अनेक धर्म और संप्रदाय हैं। जो वानर सेना में थे, जो गोपी गोपाल के साथ थे, जो भगवान राम के साथ थे, वे आज आपस में धार्मिक युद्ध लड़ रहे हैं और भगवान की शरण में नहीं आ रहे हैं। यही इसका अर्थ है। हनुमान जी उनके नेता थे, और उनके बीच में उनका प्रकट होना यही दर्शाता है। वे भगवान के पास नहीं आते, बस आपस में लड़ते रहते हैं। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 10:17 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 433 मेरा प्रश्न हमारे सैनिकों, हमारे भाइयों के बारे में है, जो ऊँचे पहाड़ों में, बर्फ में, सीमाओं पर और जंगलों में रहते हैं। उनमें हमारे अपने कई भाई और रिश्तेदार भी हैं। वे ऐसी जगहों पर रहते हैं जहाँ तापमान शून्य से भी नीचे और इतनी बर्फ होती है कि उन्हें मांसाहार करना पड़ता है। तो कृपया इस विषय में हमारा मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: यदि आपका परिवार, आपका भाई, शून्य से नीचे के तापमान में काम करता है, तो भारत में हम सब उनका सम्मान करते हैं। वे हमारे देश के लिए लड़ते हैं। लेकिन, एक काम कीजिए। देखिए, समय के साथ व्यक्ति का कर्म नहीं बदलता। इसलिए इस विषय में मैं ज्यादा नहीं कहूँगा, पर इतना जरूर कहूँगा, माता जी: धर्म, नीति और वेद सभी कहते हैं कि हमारा लाभ कितना ही बड़ा क्यों न हो या हम पर कितनी ही बड़ी विपत्ति क्यों न आए, दूसरों के लिए अपने प्राणों का बलिदान करना मनुष्य जन्म का सबसे बड़ा कर्तव्य है। इसलिए मैं इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा। फिर भी इतना कहूँगा: भगवान की शरण में आइए, और भगवान उनके लिए व्यवस्था कर देंगे। वे ऐसी व्यवस्था करेंगे कि वे शाकाहारी भी बन सकें और भारत तथा देश के लिए लड़ भी सकें। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 13:08 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 434 पंडित जी, उत्तराखंड के बारे में मलिका में क्या लिखा है?

उत्तर: यह सभी देवताओं का निवास स्थान है, पितरों की भूमि है, और पवित्र भूमि है। सभी तीर्थ, गंगा, यमुना, सरस्वती की धाराएँ—इस पवित्र भूमि के बारे में सब कुछ मलिका में लिखा है। लिखा है कि उत्तराखंड के हिमालय से अनेक संत, ऋषि और भक्त आज भी वहाँ हैं जो धर्म की स्थापना में भगवान के साथ होंगे। और बद्रीनाथ से लेकर गंगा के तटों के साथ काली नदी तक, वहाँ जितने भी भक्त थे, उन सबको हनुमान जी की शरण में मुक्ति मिलेगी। एक बहुत बड़ी आपदा आएगी और लूटपाट होगी। प्रकृति के पंचतत्वों का प्रलय होगा। एक समय ऐसा आएगा जब जो पहाड़ आप देख रहे हैं, वे समतल भूमि बन जाएँगे। लेकिन भक्त बच जाएँगे, और उत्तराखंड भी एक ऐसा स्थान होगा जहाँ भगवान कल्कि पधारेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:18 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 435 पंडित जी, नमस्कार। भगवान कल्कि की 64 कलाएँ कौन-सी होंगी?

उत्तर: देखिए, जब भगवान आते हैं, तो वे धर्म की स्थापना के लिए आते हैं। भगवान राम ने अवतार लिया, अनेक अवतार हुए। भगवान कृष्ण का अवतार... भगवान विष्णु ने पूर्ण ब्रह्म के रूप में अवतार लिए। जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने धर्म की स्थापना की, उसी प्रकार भगवान कल्कि 64 कलाओं के साथ प्रकट होंगे। उनमें सारी शक्तियाँ होंगी। भगवान कल्कि के चारों ओर चार मेघ होंगे—सामवर्त, द्रोण, पुष्कर, ये चार मेघ-समूह। और कल्कि के साथ 49 प्रकार के पवन होंगे। अपनी इच्छा मात्र से वे धर्म की स्थापना करेंगे। उदाहरण के लिए, अपने पवित्र धाम में बैठे-बैठे ही वे अपनी इच्छा से अनेक देशों का विनाश कर सकते हैं। वे अनेक देशों का सुधार कर सकते हैं। वे बाढ़ ला सकते हैं, वे अग्नि उत्पन्न कर सकते हैं, वे महामारी फैला सकते हैं। तो हमारे शास्त्रों में अणिमा, लघिमा जैसी अनेक दिव्य शक्तियाँ हैं। देखिए, ब्रह्मांड उन्हीं से उत्पन्न होता है। सभी देवता भगवान से ही उत्पन्न होते हैं। और इस संसार में भगवान धर्म की स्थापना करेंगे। तैंतीस करोड़ देवताओं की शक्ति भगवान कल्कि के शरीर में समाहित है। और अपनी ही इच्छा से वे धर्म की स्थापना करेंगे। उनकी शक्तियों को गिनना हमारे लिए संभव नहीं है। और 64 कलाओं का अर्थ है पूर्ण ब्रह्म। जब विष्णु अवतार लेते हैं, तो वे 64 कलाओं के साथ आते हैं। धनुर्विद्या, युद्धकला जैसी सभी विद्याएँ... भगवान परशुराम भगवान कल्कि का अभिषेक करेंगे। जब भगवान कल्कि का जन्म होगा, तो वे 8 कलाओं के साथ जन्म लेंगे। उनके यज्ञोपवीत संस्कार और पूजन के बाद भगवान कल्कि को 16 कलाएँ प्राप्त होंगी। और गुप्त रूप से वे परशुराम जी से मिलेंगे। और भगवान इन सभी शक्तियों को अपने शरीर में धारण करके धर्म की स्थापना करेंगे। जय गुरुदेव।

► यह उत्तर सुनें · 17:26 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 436 पंडित जी, प्रणाम। मैं अपना अनुभव साझा कर रहा हूँ। लगभग 15-20 वर्ष पहले मेरे बचपन में, वहाँ भगवान कृष्ण की एक मूर्ति थी। मैं उसके पास गया, और भगवान की मूर्ति ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं आश्चर्यचकित रह गया कि भगवान मूर्ति से बाहर आकर मेरा हाथ कैसे पकड़ सकते हैं। मुझे यह समझ नहीं आया। भगवान का यह कैसा संकेत है? कृपया इसके बारे में बताइए।

उत्तर: अलग-अलग तरीकों से जो संकेत मिलते हैं, वे पहला संकेत हैं कि व्यक्ति भक्त है। यदि आप भक्त न होते, तो भगवान कृष्ण आपको दर्शन क्यों देते? दूसरी बात, आज आप मलिका सुन रहे हैं। भगवान कृष्ण का अवतार हो रहा है। उन्होंने जो आपका हाथ पकड़ा, वह इस बात का संकेत था कि जब समय आएगा, भगवान से जुड़ने का समय आएगा, तो आपको भी मार्ग मिल जाएगा। बस इतना ही समझ लीजिए। मलिका का अनुसरण कीजिए और भगवान के अनुयायी बने रहिए। यह आपके लिए अच्छा है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 23:28 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 437 हैदराबाद का क्या होगा? मैं राजस्थान से हूँ, लेकिन हम हैदराबाद में रहते हैं। हैदराबाद का क्या होगा?

उत्तर: देखिए, इस विषय में, आंध्र प्रदेश के बारे में, प्राकृतिक आपदाओं का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा। तो पूरे दक्षिण में अनेक भक्त हैं जो मलिका के माध्यम से बच गए हैं। और एक समय आएगा... विशाखापट्टनम में एक देवी का मंदिर है, जो एक पहाड़ी के ऊपर है। समुद्र उस देवी के मंदिर तक पहुँच जाएगा। इतना लिखा हुआ है। और भी बहुत सी बातें लिखी हैं, पर मेरे लिए सब कुछ पढ़कर बता पाना संभव नहीं है। मैं इतना बताऊँगा: धर्म की स्थापना में आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

► यह उत्तर सुनें · 25:06 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 438 'ओंकार' का जप करना होता है। क्या यह 'संध्या' (त्रिकाल की प्रार्थना) की बात है? 'संध्या' का क्या अर्थ है?

उत्तर: दिन में तीन बार। 'संध्या' का समय। पहला, प्रातःकाल जब दिन निकलता है। दूसरा, दोपहर में जब सूर्य ऊपर होता है। तीसरा, जब सूर्य अस्त होता है, और अंधकार आता है, और दिन समाप्त होता है। तो ये तीन समय ही तीन संध्याएँ हैं। 'ओंकार' भगवान का नाम है, भगवान की शक्ति है, और भगवान को सबसे बड़ा प्रणाम है। आप जितना कर सकें, उतना जप कीजिए। संध्या काल के लिए हम जो विधि बताते हैं, उसका पालन करना आपके लिए अच्छा है। यह आप पर निर्भर करता है।

► यह उत्तर सुनें · 26:47 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 439 क्या असुर (दैत्य) मनुष्यों से श्रेष्ठ हैं? भागवत के पंचम स्कंध में लिखा है कि असुरों को मनुष्यों से कहीं अधिक श्रेष्ठ बताया गया है। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: देखिए, शास्त्र अनेक प्रकार से लिखे गए हैं। लेकिन हमारा वेद केवल इतना कहता है: जो इस पृथ्वी पर सत्व गुण के आधार पर जन्म लेते हैं, वे मनुष्य हैं। और जो मनुष्य सत्व गुण के आधार पर कर्म करता है, वह उनमें सर्वश्रेष्ठ है। और यदि कोई व्यक्ति मनुष्य जन्म लेकर तामसिक (अंधकारमय/अज्ञानमय) गुण प्रकट करता है, तो उसे असुर प्रवृत्ति का कहा जाता है। वेदों ने सदैव पाशविक शक्ति को अस्वीकार किया है। तो वेदों के अनुसार, मनुष्य में मनुष्यता, अर्थात् सात्विक गुण होना आवश्यक है। जिसमें आसुरी, तामसिक गुण हैं, वह पापी के समान है। बस इतना ही मैं समझाऊँगा; आप इससे समझ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 28:12 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 440 आपने जिस रोग का उल्लेख किया था, जिसमें लोगों के मुँह से खून आएगा, वह रोग कब से शुरू हो रहा है?

उत्तर: देखिए, धर्म की स्थापना का पहला चरण 2020 से शुरू हो चुका है। और यह कब होगा, यह कोई नहीं जानेगा। लेकिन सारी दुनिया देखेगी। वह समय आएगा जब 64 प्रकार की महामारियाँ आएँगी। यह उन्हीं रोगों में से एक है। तो हमारे जो भक्त मलिका का अनुसरण करते हैं, उनके लिए चिंता की कोई बात नहीं है। अपने जीवन में नाम जप, कीर्तन, सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास कीजिए। श्रीमद्भागवत पढ़िए, और दया व दान का अभ्यास कीजिए। मलिका का अनुसरण कीजिए। हमें कोई समस्या नहीं होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:26 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 441 मैं एक डॉक्टर हूँ, और मेरा प्रश्न यह है कि चूँकि मैं चिकित्सा का अभ्यास कर रहा हूँ, तो आपकी ओर से और मलिका की ओर से मेरे लिए क्या मार्गदर्शन है जो मेरी चिकित्सा-सेवा में मेरी सहायता कर सके, विशेषकर आने वाले प्रलय में होने वाली 64 प्रकार की बीमारियों के संदर्भ में?

उत्तर: देखिए, आपका कर्तव्य, आपका पेशा, आपका काम—जब तक यह Kali Yuga समाप्त नहीं हो जाता, तब तक उसे पूरी निष्ठा के साथ कीजिए। दूसरी बात, हमारे जीवन की धारा को देखिए। जैसे नदी का लक्ष्य समुद्र में मिल जाना होता है, वैसे ही मनुष्य जन्म का लक्ष्य मोक्ष है। परंतु इस जीवन में, इस संसार में, हम मोक्ष नहीं माँगते, क्योंकि भगवान ने पृथ्वी पर अवतार लिया है, धर्म की स्थापना होगी, और राम राज्य (राम का राज्य) आएगा। सभी भक्त उसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो, उसकी प्रतीक्षा कीजिए, अपने धर्म का पालन कीजिए, और अपना काम कीजिए। आप सबसे मेरी यही विनती है। Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 33:09 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 442 क्या धर्म की स्थापना में या इस युग परिवर्तन में भगवान श्री दत्तात्रेय की भी कोई भूमिका होगी?

उत्तर: भगवान दत्तात्रेय Satya Yuga में भगवान विष्णु के अवतार थे। अब, Kali Yuga में, धर्म की स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका Kalki अवतार की है। भगवान Kalki स्वयं धर्म की स्थापना करेंगे। इस वर्तमान युग में दत्तात्रेय अवतार की कोई आवश्यकता नहीं है। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि जब संसार में पाप और अन्याय बढ़ जाएँगे, तब भगवान Kalki सभी भक्तों की रक्षा करने, वेदों की रक्षा करने, और प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेंगे। वे सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना करेंगे। तो, इस युग में दत्तात्रेय अवतार का किसी भी शास्त्र में उल्लेख नहीं है। केवल Kalki अवतार का ही उल्लेख है।

► यह उत्तर सुनें · 34:45 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 443 पंडित जी, हीराकुद बाँध कब टूटेगा? मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो, पर मैं जानना चाहता हूँ कि यह कितना निकट है।

उत्तर: देखिए, शास्त्रों में लिखा है कि चीन और पाकिस्तान के मिसाइल हमले के दौरान हीराकुद बाँध और भारत के कई अन्य बाँध नष्ट हो जाएँगे। तो, वह समय कब होगा? यह युद्ध के दौरान होगा। उसकी तिथि भगवान तय करेंगे, हम नहीं कर सकते। परंतु यह निश्चित रूप से होगा। समय निकट है। और यह पूर्णतः निश्चित है। आने वाले समय में हम इसे देखेंगे। यह युद्ध के समय होगा। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:08 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 444 पंडित जी, मैंने आपके चैनल पर ओड़िया भाषा में एक वीडियो देखा जिसमें एक साँवले रंग के पंडित जी बोल रहे हैं। उनके पीछे लिखा है 'सुधर्म महासंघ', और एक बच्चे का फोटो है। मैंने उसे देखा। क्या वह बच्चा Kalki है?

उत्तर: देखिए, माता जी, मेरा काम आपको Bhavishya Malika का मार्ग दिखाना है। और जो Malika में लिखा है, उसे मैं प्रकाश में लाता हूँ और उसका वर्णन करता हूँ। यदि वह पवित्रता आपके हृदय में आ जाए, तो वही शक्ति है। वही शक्ति स्वयं, समय आने पर, आपको सही स्थान तक ले जा सकती है। परंतु एक बात मैं आपको बता दूँ। जिन भगवान के दर्शन बड़े-बड़े योगी और ऋषि भी हर युग में नहीं पा सके, और जो ब्रह्मा और शिव के लिए भी दुर्लभ हैं—यदि वह पावन दर्शन आपको सहज ही उपलब्ध हो जाए, तो अपने कर्मों के फल के द्वारा आप उसे जान सकती हैं। मेरा सुझाव है कि आप समय की प्रतीक्षा कीजिए। विश्व सनातन धर्म ग्रुप के सत्संग से जुड़िए। तब आपकी सारी इच्छाएँ पूर्ण होंगी। जय गणेश।

► यह उत्तर सुनें · 37:17 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 445 धर्म की स्थापना के बाद, गुरु परंपरा कब लौटेगी?

उत्तर: ठीक है, ठीक है। यह अभी नहीं है। यह 2030 में नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 38:56 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 446 क्या Malika में कन्नौज के ब्राह्मणों के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: ब्राह्मणों के बारे में यह लिखा है: जब ओडिशा के राजा जाजाति केशरी ब्राह्मणों को लाए, तो उन्होंने उनकी बस्ती बैतरणी नदी के तट पर बसाई। और वे 10,000 ब्राह्मण सीधे वैकुंठ गए और मोक्ष प्राप्त किया। और दूसरी बात उत्तर प्रदेश के बारे में है, जो कन्नौज है। वहाँ के भक्त, Malika के माध्यम से, भगवान की शरण में आएँगे। बस इतना ही। Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 40:01 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 447 जब मैं अपनी पूजा-प्रार्थना करती हूँ, तो मैं सारे मंत्र भूल जाती हूँ। कोई मंत्र याद नहीं आता। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: यह आप पर भगवान की कृपा है। भगवान ने आपको केवल अपना नाम ही याद रखवाया है। इस युग में, संसार के सभी भक्त 'Madhava' नाम से ही तरेंगे। और Madhava नाम के अतिरिक्त अभी कोई भी मंत्र बड़ा नहीं है। क्योंकि Malika में लिखा है कि चाहे कितने भी मंत्र, तंत्र या शास्त्र हों, कोई मंत्र काम नहीं करेगा। केवल Madhava मंत्र, Madhava नाम ही भक्तों की रक्षा करेगा। यह भगवान का आशीर्वाद है कि आप बाकी सब भूल जाती हैं और केवल Madhava नाम ही याद रखती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 41:09 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 448 मैं जो कुछ भी पढ़ता हूँ, मुझे ऐसा लगता है जैसे सुदर्शन चक्र सड़कों पर घूम रहा है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान आपको दिखा रहे हैं... इसका अर्थ यह है कि आप भक्त हैं। आप भगवान की शरण में हैं; आपने भगवान को स्वीकार किया है। और Malika में लिखी सबसे बड़ी बात यह है कि सुदर्शन चक्र भक्तों की रक्षा करेगा। जब भक्तों पर कोई बड़ी विपत्ति आएगी, तब सुदर्शन चक्र उनकी रक्षा करेगा। आप यह अनुभव कर रहे हैं, और यह सभी भक्तों के लिए एक उदाहरण है। आप बहुत पवित्र हैं। इसका पालन कीजिए, और भगवान की शरण में Malika के माध्यम से हम जो मार्ग दिखा रहे हैं, उस पर चलने से आपके लिए और भी अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:08 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 449 क्या ध्रुव जी ने जन्म ले लिया है? द्रौपदी और नारद जी का क्या?

उत्तर: माता द्रौपदी योगमाया थीं; वे पहले ही पृथ्वी पर जन्म ले चुकी हैं। भगवान के भक्त ध्रुव ने भी जन्म ले लिया है। नारद जी और सभी देवताओं ने जन्म ले लिया है। क्योंकि जब भगवान आते हैं, तो सभी जन्म लेते हैं और उनकी दिव्य लीला में भाग लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 44:09 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 450 क्या भगवान सूर्य और भगवान चंद्र जन्म लेंगे?

उत्तर: देवता... जब दिन-रात अंधकार होगा, उस समय उनके जन्म का प्रकाश प्रकट होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:42 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 451 मैं उन लोगों के बारे में पूछना चाहती हूँ जो अभी तक माधव जी का नाम नहीं जानते। जैसे, वे 'हरि हरि' या 'कृष्ण कृष्ण' का जाप करते हैं। क्या उनकी प्रार्थना नहीं सुनी जाएगी?

उत्तर: देखिए माता जी, सत्ययुग में भगवान विष्णु का नाम महत्वपूर्ण था। त्रेतायुग में राम नाम मुक्ति का मार्ग था। द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने अपने नाम से भक्तों की रक्षा की। और कलियुग में जगन्नाथ का नाम था। अब जब कलियुग समाप्त हो चुका है और हम संधिकाल (संगम युग) में हैं, तो सभी नाम भगवान के ही हैं, परंतु 'माधव' नाम का अपना विशेष महत्व है। इस नाम का जाप करना नितांत आवश्यक है। आप नारायण का भी जाप कर सकते हैं, वह भी ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 45:18 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 452 चैतन्य महाप्रभु ने हरे कृष्ण महामंत्र दिया। आप 'माधव' नाम जपने के लिए कह रहे हैं। क्या हमें हरे कृष्ण महामंत्र के स्थान पर 'माधव' का जाप करना चाहिए?

उत्तर: हमारे भगवान ने कलियुग में अवतार लिया। पहले भगवान बुद्ध, फिर चैतन्य महाप्रभु, और तीसरे हैं भगवान कल्कि। भगवान अवतार ले चुके हैं। आप 'हरे राम...' मंत्र का जाप कर सकते हैं। वह हमारे भगवान का ही मंत्र है, इसमें कोई संदेह नहीं। परंतु जब युग बदलता है, तो हमारे लिए वर्तमान अवतार का सम्मान करना भी आवश्यक है। क्योंकि भगवान ने श्री माधव नाम से जन्म लिया है। भगवान कल्कि का नाम माधव है। तो उसी अनुसार, भगवान का सम्मान करना आवश्यक है। देखिए, जब भगवान कृष्ण ने अवतार लिया, तो क्या किसी ने उन्हें विष्णु नाम से पुकारा या 'राम राम' का जाप किया? नहीं। उस समय भगवान का नाम श्री कृष्ण था। इसी प्रकार, इस समय जब भगवान कल्कि ने माधव नाम से अवतार लिया है, तो आपको माधव नाम का जाप करना चाहिए। आप हरे राम महामंत्र का भी जाप कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:47 · 26 सितम्बर 2021

प्रश्न 453 बाबा, हम मेरठ से हैं। पिछले सप्ताह, आप दो दिन तक हमारे स्वप्न में आए और कहा, 'धर्म ध्वजा फहराओ, और अपने से जुड़े लोगों के घरों में भी फहरवाओ।' हम इसका अर्थ जानना चाहते हैं।

उत्तर: बाबा, कुछ दिन पहले सत्संग में मैंने कहा था कि जो भक्त शाकाहारी हैं, जो माधव की शरण में हैं, जो मालिका की धारा में हैं, उन्हें अपने घरों पर पंचरंगी बाना (पाँच रंगों वाली ध्वजा) फहराना चाहिए। यह मैं पहले भी कह चुका हूँ, और फिर से कह रहा हूँ। यदि आपको धर्म, नीति और मालिका पर पूर्ण विश्वास है, तो हाँ बाबा, अपने घर पर इसे फहराइए। और आने वाली सभी समस्याओं और आपदाओं के समय देवता आपकी रक्षा करेंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 50:45 · 26 सितम्बर 2021

सत्र 22 · प्रश्न 454–475

L21 तृतीय विश्व युद्ध मे भारत के साथ कौन कौन देश रहेंगे? LIVE

दिनांक: 3 अक्टूबर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 454 गुरुजी, कुछ दिन पहले मैंने सुना कि राजस्थान में भगवान कल्कि का एक मंदिर है। इस मंदिर के सामने एक घोड़े की मूर्ति भी है। जब भगवान कल्कि प्रकट होंगे, तो वह घोड़ा जीवित हो जाएगा, और भगवान उस पर सवार होकर अपना कार्य आरंभ करेंगे। क्या ऐसा कुछ मालिका में भी लिखा है?

उत्तर: ठीक है, यह बहुत अच्छी बात है, बहुत पवित्र है। राजस्थान में भगवान कल्कि का ऐसा मंदिर वास्तव में है; मुझे इसके बारे में पता है। परंतु वह सब तब होगा जब समय आएगा। उसके लिए आप सभी को प्रतीक्षा करनी होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:57 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 455 जब हीराकुद बाँध टूटेगा, उस समय गुरुजी, क्या पूरे देश में भीषण युद्ध छिड़ जाएगा?

उत्तर: देखिए, यह होगा। कई जलविद्युत परियोजनाएँ हैं जो बिजली उत्पन्न करती हैं। पाकिस्तान और चीन उन्हें निशाना बनाएँगे। वे हीराकुद बाँध को भी निशाना बनाएँगे; इसके बारे में मालिका में लिखा है। तो जब विश्वयुद्ध होगा, यह उसके बीच में घटित होगा। शास्त्रों में लिखा है कि यह होना निश्चित है। कोई बात नहीं। जो धर्म का पालन करते हैं, भक्ति में रहते हैं, भगवान की शरण लेते हैं, और सत्य, धर्म एवं न्याय का अनुसरण करते हैं, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा। बस उन्हें आने वाले दिनों की प्रतीक्षा करनी है जब यह स्थिति निश्चित रूप से उत्पन्न होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:57 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 456 आपने कहा है कि हर जगह कुछ न कुछ होगा। तो क्या हमारे बिहार क्षेत्र में, विशेष रूप से मिथिलांचल, समस्तीपुर और दरभंगा में कुछ होने की संभावना है?

उत्तर: देखिए, धर्म की स्थापना पूरे विश्व में होगी। यदि धर्म की स्थापना नहीं होगी, तो पापियों का नाश कैसे होगा? संतुलन और समानता लाने के लिए भगवान के पास अनेक साधन हैं। यह केवल बिहार या झारखंड की बात नहीं है; यह भारत के हर राज्य और विश्व के हर देश की बात है। सभी स्थानों पर बाढ़, तेज़ आँधियाँ, अग्नि, भूकंप, युद्ध, महामारी, रोग और सांप्रदायिक हिंसा होगी। ये सब धर्म स्थापना के चरण हैं। बिहार, झारखंड और मिथिला का क्षेत्र, जो जनकपुरी और नेपाल तक फैला है, एक विशाल भूकंप की चपेट में आएगा। यह लिखा हुआ है। यहाँ बाढ़ और 'पंच महायुद्ध' (पाँच महान युद्धों) का भी विस्तार से उल्लेख है।

► यह उत्तर सुनें · 18:27 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 457 भगवान कल्कि जगन्नाथ पुरी कब आएँगे?

उत्तर: मालिका शास्त्रों में लिखा है कि भगवान मनुष्य रूप में जन्म लेंगे, और नीलाचल क्षेत्र (जगन्नाथ पुरी) में वे अपना दिव्य 'साकार ब्रह्म' रूप धारण करेंगे। जगन्नाथ क्षेत्र भगवान कल्कि का अपना धाम है। वे वहाँ प्रतिदिन आते हैं और आते रहेंगे; इसमें कोई संदेह नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात, धर्म स्थापना के समय भगवान महादेव, विभीषण, मनुष्य रूप में भगवान कल्कि, और हनुमान जी अपने दिव्य शरीरों के साथ कुछ समय के लिए जगन्नाथ क्षेत्र में उपस्थित रहेंगे। वहाँ उपस्थित भक्त उनके दर्शन कर सकेंगे। परंतु अन्यथा, भगवान अपने धामों जैसे श्री वृंदावन धाम, श्री द्वारिका, बद्रीनाथ, अयोध्या और जगन्नाथ पुरी में प्रतिदिन आते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 21:02 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 458 पंडित जी, भगवान कल्कि किस आयु में युद्ध करेंगे?

उत्तर: देखिए, भगवान की कोई आयु नहीं होती। भगवान अपने जन्म से, अपने बचपन से, यहाँ तक कि एक महीने की आयु से भी कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि वे 'इच्छा निर्मित तनु धारी' हैं—अर्थात वे अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं और अपनी इच्छा से उसे विलीन कर देते हैं। परमात्मा की कोई आयु नहीं होती। फिर भी, मालिका शास्त्रों के अनुसार, विश्व भर में धर्म की स्थापना भगवान की युवावस्था में होगी। जब वे 13 वर्ष के होंगे, तब धर्म स्थापना का प्रथम चरण आरंभ होगा। उसके बाद धर्म स्थापना के सात चरण होंगे। अंत में, भगवान कल्कि समुद्र में दैत्यों से युद्ध करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:55 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 459 महामारी भक्तों को कैसे प्रभावित कर सकती है?

उत्तर: महामारी के संबंध में मालिका में लिखा है कि जो भगवान कल्कि की शरण में हैं, माधव की शरण में हैं, और मालिका का अनुसरण करते हैं—यदि वे बीमार भी पड़ें, तो रोग आएगा, परंतु उनके साथ टिक नहीं पाएगा। एक-दो दिन के भीतर वे स्वस्थ हो जाएँगे, और वह चला जाएगा। यह भी एक परीक्षा है, जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है। स्पष्ट रूप से लिखा है कि देवियाँ अपनी संहारक शक्ति के साथ परीक्षा के लिए हर घर में प्रवेश करेंगी। परंतु जो भगवान कृष्ण के चरणों में हैं, उनके घर सुरक्षित रहेंगे। यदि दिव्य संहारक शक्ति प्रवेश भी करे, तो वह देखेगी कि व्यक्ति भगवान का मंत्र जप रहा है और उनकी शरण में है। एक समय आएगा—यह मैं निश्चितता के साथ कहता हूँ—कि यदि कोई भगवान का नाम जपे, तो देवी उस रोग को छोड़कर अन्यत्र चली जाएँगी। तो प्रतीक्षा कीजिए। जो हमारे कार्य के लिए काम करते हैं, उनके बारे में मैं दृढ़ विश्वास के साथ कहता हूँ कि यदि वे बीमार भी पड़ें—क्योंकि उन्हें इस जन्म के कुछ कर्म भोगने ही होते हैं—तो रोग उन्हें हानि नहीं पहुँचा पाएगा। वही दिव्य शक्तियाँ उन्हें छोड़ देंगी, क्योंकि वे देखेंगी कि यह भगवान का भक्त है और इसे हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। तो उनकी परीक्षा ली जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 25:22 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 460 क्या कलियुग की कोई वस्तु सत्ययुग में नहीं जाएगी? क्या केवल व्यक्ति की आत्मा जाएगी, उसका शरीर नहीं?

उत्तर: दूसरी बात के संबंध में, मानव समाज के भक्त इसी शरीर में सत्ययुग में जाएँगे जो उनके पास अभी है—चाहे वे वृद्ध हों, विकलांग हों, या बिस्तर पर पड़े हों। उनकी जो भी स्थिति हो, जो माधव की शरण में हैं और मालिका की धारा में हैं, वे उसी शरीर में सत्ययुग में जाएँगे। सत्ययुग में दिव्य शक्ति द्वारा उनके शरीर स्वस्थ कर दिए जाएँगे, और उन्हें युवावस्था की ऊर्जा प्राप्त होगी। फिर, वे धर्म स्थापना के दौरान भगवान के मार्ग पर रहते हुए सत्ययुग में 1009 वर्षों तक जीवित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:49 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 461 मैं पूछ रहा था, तीसरे विश्वयुद्ध के दौरान क्या भगवान कल्कि उपस्थित रहेंगे?

उत्तर: हाँ, भगवान कल्कि वहाँ रहेंगे। यह भी लिखा है कि भगवान कल्कि सड़क मार्ग से यात्रा करेंगे और किसी स्थान पर कुछ समय के लिए रुकेंगे। भक्तगण यज्ञ (हवन) करेंगे। भारत के 16 मंडलों और विश्व के 16 मंडलों से भक्त वहाँ एकत्र होंगे। परंतु मालिका में लिखा है कि लोग भगवान कल्कि को पहचान नहीं पाएंगे। वे समझेंगे कि यह तो किसी धनी परिवार का लड़का है; बस इतना ही सोचेंगे। यह भी लिखा है। लेकिन जो भक्त उनकी शरण में जाएंगे, उन्हें भगवान के दर्शन होंगे, वे आनंद का अनुभव करेंगे और सत्य युग के लिए तैयार होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:48 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 462 दिल्ली का सत्संग बंद हो गया है। क्या इसे फिर से शुरू किया जा सकता है? या यह साप्ताहिक सत्संग जो आप करते हैं, क्या यह सप्ताह में दो बार हो सकता है?

उत्तर: देखिए, सत्संग कभी बंद नहीं होता। आप सब स्वयं सत्संग करते हैं। आप घर पर सत्संग करते हैं, आप त्रिसंध्या (दिन में तीन बार प्रार्थना) करते हैं, तो सत्संग चल ही रहा है। आप सब निरंतर इसे चला रहे हैं। सत्संग बंद नहीं हुआ है। जो सामूहिक सत्संग हो रहा था वह रुक गया है, पर आप सब व्यक्तिगत रूप से इसे जारी रखे हुए हैं। यह हमारे लिए एक छोटी-सी भावनात्मक बात है, पर कोई बात नहीं। भगवान हमारी परीक्षा ले रहे हैं। वे देख रहे हैं कि भक्त अलग-अलग होने पर भी सत्संग करते रहते हैं या नहीं। वे देख रहे हैं कि कौन परीक्षा में उत्तीर्ण होता है। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए; हम फिर सत्संग के लिए मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:57 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 463 आपका यह सत्संग रविवार को होता है। क्या यह सप्ताह में दो बार हो सकता है?

उत्तर: आप अच्छा बोलते हैं। यह भगवान की इच्छा है। मेरे लिए तो और भी अच्छा होगा। पता नहीं क्यों ऐसा नहीं हो पाता। पर जब समय आएगा, तब देखेंगे। मैं आपको बताऊँ, हम भगवान की कृपा से एक दिन सत्संग करते हैं। यह अनुभव की बात है। देखिए, जब आपका सत्संग होता है, तो मेरा धर्म और पवित्रता बढ़ती है, और मुझे भगवान का आशीर्वाद मिलता है। कोई भी धर्म-कार्य केवल अपनी इच्छा से नहीं कर पाता। मेरी भी इच्छा है, पर वह पूरी नहीं हो पाती। जब भगवान की कृपा होगी, हम आपसे मिलेंगे और दो बार करने का प्रयास करेंगे। किसी की इच्छा धर्म करने या दान देने की हो सकती है, पर पाँच इंद्रियाँ उसे बाँध लेती हैं। मैं भगवान की शरण में हूँ। यदि भगवान की इच्छा होगी, तो हम सप्ताह में दो बार करने का प्रयास करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 35:01 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 464 गुरुजी, मैं पूछना चाहता था, मैं बहुत समय से मीटिंग में जुड़ने की कोशिश कर रहा हूँ, पर जुड़ नहीं पा रहा। क्या मुझसे कोई गलती हुई है?

उत्तर: कोई गलती नहीं है। देखिए, हम सब समाज में, अपनी कर्मभूमि में रहने वाले लोग हैं। कलियुग में कर्म ही सबसे महत्वपूर्ण बात है। देखिए, यदि आप सत्संग में लाइव नहीं जुड़ पा रहे, तो आप इसे बाद में सुन सकते हैं। जैसे, जो भक्त अमेरिका में रहते हैं, जब हमारा सत्संग होता है, तो उनके यहाँ सुबह के 4 या 5 बजे होते हैं। वे लाइव नहीं देख पाते, इसलिए बाद में देखते हैं। यदि आप लाइव न जुड़ पाने की इस बात से परेशान हैं, तो इसे बाद में देखिए। चर्चाओं से, भक्तों के प्रश्नों से, और जो विचार हम आपके साथ साझा करते हैं, उनसे आपको फिर भी कुछ न कुछ मिलेगा। इसी मार्ग पर चलते हुए हम भगवान की शरण में जाएंगे और अपना धर्म-कार्य करते रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:50 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 465 मैं अपने घर में श्री कल्कि भगवान की ध्वजा लगाना चाहता हूँ।

उत्तर: क्या आप शाकाहारी हैं? क्या आपने सब कुछ छोड़ दिया है? यदि हाँ, तो छह महीने बाद ध्वजा लगाइए। अच्छा रहेगा। जब आप इसे लगाएंगे, तो आप देवता को प्रणाम करेंगे। छह महीने बाद आप इसे लगा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:27 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 466 मेरा प्रश्न है, क्या हरि स्मृति सुधर्म आश्रम भगवान का घर है? कृपया हमें इसके बारे में कुछ जानकारी दीजिए।

उत्तर: क्या आप विश्व सनातन धर्म समूह में हैं? टेलीग्राम पर? विश्व सनातन धर्म की जो संस्था बनी है, क्या आप उसके सदस्य हैं? ठीक है, मैं मोहन से कहूँगा कि वे इस विषय पर अपने विचार साझा करें। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 40:37 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 467 पंडित जी, मुझे ध्वजा कहाँ मिलेगी? भगवान कल्कि की ध्वजा?

उत्तर: वह ध्वजा 'पंचरंगी बाना' (पाँच रंगों वाली ध्वजा) है। हर रंग का एक मंत्र है। पाँच रंग पाँच तत्वों की शक्ति को दर्शाते हैं: सत्य, शांति, दया, क्षमा और मैत्री। वही भगवान की ध्वजा है। मैं एक काम करूँगा: मैं टेलीग्राम पर विश्व सनातन समूह में ध्वजा की एक फोटो साझा करने का प्रयास करूँगा। जो इसे संभालते हैं — मोहन, पदनम और नरेंद्र — उनसे कहूँगा कि वे आप सबके साथ फोटो साझा कर दें, शायद व्हाट्सऐप पर। उसके आधार पर आप ध्वजा बना सकते हैं। यदि आप छह महीने से शाकाहारी हैं, मालिका के मार्ग पर चलते हैं, श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, और त्रिसंध्या करते हैं, तो आप ध्वजा लगा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 41:26 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 468 पंडित जी, तीसरा विश्वयुद्ध किस वर्ष से आरंभ होगा?

उत्तर: जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, मालिका ने लिखा है: 'मीने शनि गुरु बारे...' भाद्र मास (लगभग सितंबर) में शनिवार के दिन, जब शनि मीन में प्रवेश करेंगे। यह 2024 से शुरू होता है। उस समय महाकाल संसार को निगल लेंगे, और युद्ध अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:57 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 469 क्या हम दवा ले सकते हैं? उसमें कुछ मांसाहारी तत्व होते हैं, तो क्या हम उसे ले सकते हैं?

उत्तर: मैं ओमेगा के बारे में नहीं बोल सकता। देखिए, यदि आप ओमेगा की बात करते हैं, तो वह आपको अलसी के बीजों से भी मिल सकता है। अलसी के बीज इससे भरपूर होते हैं। आपको वहाँ से मिल जाएगा। फिर भी, मैं किसी के विरुद्ध नहीं हूँ। जीवन बचाने के लिए दवा आवश्यक है और उसे लेना महत्वपूर्ण है। आप सब एक कठिन परिस्थिति में हैं। युग का अंत पूरी तरह हुआ नहीं है, और सत्य युग का उदय भी नहीं हुआ है। इस समय हमारे लिए इस युग की धारा के अनुसार चलना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 44:22 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 470 मेरा प्रश्न है, यदि हम प्याज और लहसुन खाते हैं, तो भी क्या हम पंचरंगी ध्वजा लगा सकते हैं?

उत्तर: यह अच्छा प्रश्न है। देखिए, प्याज और लहसुन धरती माता से उगते हैं। वे जीव-जंतु नहीं हैं। फिर भी, वे 'राजसिक' और 'तामसिक' भोजन माने जाते हैं, अर्थात वे उत्तेजक या गर्मी पैदा करने वाले होते हैं। उन्हें खाने में कोई पाप नहीं है। पर जो ऋषि या संत शांति के मार्ग पर चलते हैं, वे पूर्ण शाकाहारी बन जाते हैं और प्याज-लहसुन से बचते हैं। यदि आप उन्हें खाते भी हैं, तो जब तक आप शाकाहारी हैं, पशुओं की हत्या नहीं करते, अंडा, मांस या मछली नहीं खाते, भागवत पढ़ते हैं, त्रिसंध्या करते हैं, मालिका का अनुसरण करते हैं, और सनातन धर्म समूह में हैं, तब तक आप ध्वजा लगा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 45:54 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 471 एक बात और, हम बाकी सब तो करते हैं, पर त्रिसंध्या (दिन में तीन बार की प्रार्थना) नहीं कर पाते। सुबह कर लेते हैं, पर दोपहर में नहीं। तो क्या हम ध्वजा नहीं लगा सकते?

उत्तर: देखिए, माँ, त्रिसंध्या का यह मतलब नहीं है कि आपको मंदिर या पूजाघर में बैठकर विधिवत पूजा ही करनी है। इसका अर्थ यह है: एक काम कीजिए। आप जहाँ कहीं भी हों, किसी भी जगह, बस माधव का नाम 10, 15, या कम से कम 21 बार जप लीजिए। अगर दस अवतारों—मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्कि—का पाठ करने का समय नहीं है, तो कम से कम नाम तो जप ही सकते हैं। बस इतना कीजिए। आप हमेशा 'हरे कृष्ण हरे राम' जप सकते हैं। मन ही मन जपिए, माँ, हमेशा, सुबह से शाम तक। भगवान के अनेक नाम हैं, पर 'माधव' नाम कलियुग के उद्धार के लिए है। कृष्ण का कोई भी नाम जपिए, या 'हरे कृष्ण हरे राम'। संध्या के समय, जहाँ कहीं भी हों, बस इतना कर लीजिए। यह ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 46:56 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 472 (भगवान कृष्ण के अपने पास से गुज़रकर अपने आसन पर बैठने के स्वप्न का वर्णन करने के बाद) इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: इसका अर्थ, माँ, यह है कि भगवान आपको बुला रहे हैं। वे कह रहे हैं, 'मेरी शरण में आओ और मेरा नाम जपो।' यह स्वयं भगवान कृष्ण की आज्ञा है। ऐसा है जैसे वे बैठकर अपने भक्तों के बारे में सोच रहे हैं, और आप लोग आ गए हैं। बस यही इसका अर्थ है, और कुछ नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 49:57 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 473 पंडित जी, क्या मालिका में अंगद के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: देखिए, अंगद भगवान के भक्त थे। इस युग में भी वे भगवान के भक्त हैं और धरती पर आए हुए हैं। वे सब एक-दूसरे से सुधर्मा सभा (धर्मसभा) में मिलेंगे। उस समय जिसके पास धर्म है, जिसकी भगवान में पूर्ण श्रद्धा है—हनुमान जी, ध्रुव और प्रह्लाद जैसी श्रद्धा—और जो पूरी तरह भगवान की शरण में रहता है, वही सुधर्मा सभा में बैठेगा। सुधर्मा सभा में सबकी पहचान प्रकट हो जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 50:22 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 474 घर में सब लोग इसमें शामिल नहीं हैं। मतलब, अगर घर में एक व्यक्ति भी मांसाहार करता है, तो क्या वे लोग ध्वजा नहीं लगा सकते?

उत्तर: ध्वजा पूरे परिवार की रक्षा करेगी। अगर आप नाम जपेंगे, तो आपकी रक्षा होगी। अगर कोई दूसरा नहीं जपता, तो उसका भाग्य भगवान तय करेंगे। पर आप ध्वजा लगा सकती हैं। हाँ, लगा सकती हैं। आप कीर्तन करती हैं, नाम जपती हैं, भागवत पढ़ती हैं। देखिए, माँ, धीरे-धीरे परिवार के सभी लोगों को एक ही नाव पर लाने की कोशिश कीजिए। भगवान की कृपा से यह हो जाएगा। छोटी-मोटी दिक्कतें आएँगी, पर धीरे-धीरे, दिन-ब-दिन हम आगे बढ़ेंगे। कोशिश करती रहिए। पवित्रता में कोई टकराव नहीं होता। आध्यात्मिकता की शक्ति अपार है; उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है। आपके मन की पवित्रता और भगवान के प्रति आपकी भक्ति से आपके परिवार के सभी लोग प्रभावित होंगे। नाम जपती रहिए। ठीक है, माँ।

► यह उत्तर सुनें · 51:31 · 3 अक्टूबर 2021

प्रश्न 475 गुरुजी, जिस भविष्य मालिका ग्रंथ से आप यह सब बता रहे हैं—हम वह ग्रंथ पढ़ना चाहते हैं। तो वह हिंदी में कहाँ मिलेगा? हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर: यह पुस्तक अभी हिंदी में रची नहीं गई है। यह एक गुप्त ग्रंथ है। हम भी इसे हिंदी में प्रकाशित करने का प्रयास कर रहे थे, पर अगर इसका हिंदी में प्रचार हुआ, तो इसका व्यावसायीकरण हो जाएगा। सबसे महत्वपूर्ण बात, मालिका को हर कोई समझ नहीं सकता। यह ओड़िया में लिखी गई है, पर इसके हज़ारों अर्थ हैं जिन्हें लोग समझ नहीं पाते। केवल वही मालिका को समझेगा और उसकी व्याख्या कर सकेगा जिस पर भगवान का आशीर्वाद हो। इसका यह मतलब नहीं कि यह आशीर्वाद केवल हमारा है; आप भी कर सकते हैं। पर देखिए, मालिका का सार, उसका निचोड़, आप सबके साथ साझा किया गया है। कई वर्षों तक, भगवान की कृपा से इसका अध्ययन करने के बाद, यह ज्ञान आप तक पहुँच रहा है। उसका पालन कीजिए। इस युग के अंतिम पाँच वर्षों में क्या होगा, यह कोई नहीं जानता। इसलिए इसे समझिए और सनातन धर्म के लिए काम कीजिए। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 53:08 · 3 अक्टूबर 2021

सत्र 23 · प्रश्न 476–488

L22 कल्कि भगवान को कैसे पहचानेंगे? How to identify Sri KALKI Bhagavan. LIVE

दिनांक: 17 अक्टूबर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 476 क्या मालिका में उत्तर-पूर्व भारत के बारे में कुछ उल्लेख है?

उत्तर: पूर्वी भारत की राजधानी होगी... अभी असम की राजधानी क्या है? दिसपुर, गुवाहाटी में। देखिए, असम में कामाख्या मंदिर है ना? कामाख्या देवी का मंदिर। कामाख्या देवी भगवान की धर्म-स्थापना का हिस्सा होंगी। और लिखा है... एक और बात यह है कि असम में सभी भक्त एकत्र होंगे। और जो भक्त पिछले युगों से सच्चे भक्त रहे हैं, वे भगवान से मिलेंगे। पर आने वाले समय में सभी भक्त मिलकर एक कल्कि मंडल बनाएँगे, और धर्म की स्थापना... वह कोलकाता में होगी... देखिए, भगवान कल्कि का मंडल हर जगह होगा। यह भगवान कल्कि के नाम से होगा, हालाँकि नाम अलग हो सकता है। जो नाम काली मंदिर में आता है... यह आध्यात्मिकता है। तो आप सब सनातन धर्म की स्थापना के लिए काम कीजिए। समय का सदुपयोग कीजिए, वरना पता नहीं किस समय क्या हो जाए। समय बहुत महत्वपूर्ण है। सनातन धर्म के लिए काम कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 26:07 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 477 राजस्थान में कौन-सा मंडल (समूह) होगा, और हम उससे संपर्क कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: राजस्थान, महाराष्ट्र, नागपुर मंडल... जैसे हस्तिनापुर और कुरुक्षेत्र, बिहार, पंजाब, राजस्थान और दिल्ली सहित, एक मंडल बनाएँगे। भारत में मंडल हैं। देखिए, बाबा, संपर्क का माध्यम तो मालिका ही है। दूसरा, जो संगठन हमारे सनातन धर्म के लिए काम करते हैं... उनसे जुड़कर आप संपर्क में बने रहेंगे। फिर हमें पता चलेगा कि आगे क्या करना है और भक्तों के उद्धार का मार्ग क्या होगा। आपको भी इसके बारे में पता चलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:54 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 478 आपने कहा था कि विज्ञान का युग समाप्त हो जाएगा और रेलगाड़ियाँ नहीं चलेंगी। ऐसे में लोग कोलकाता के समागम में कैसे पहुँचेंगे?

उत्तर: देखिए, माँ, हमारे जो भक्त मालिका के माध्यम से धर्म-स्थापना से जुड़े हैं, उनके लिए भगवान के दिव्य धाम तक पहुँचना... यह सब अभी कलियुग में हमें अजीब लगता है। हम सोचते हैं क्या होगा, क्या नहीं होगा। पर जब समय आएगा, तब भक्तों को स्पष्ट निर्देश और प्रमाण मिलेंगे। एक समय आएगा, माँ, जब भक्त आकाश-मार्ग से जहाँ चाहें वहाँ जा सकेंगे। तो जैसे-जैसे हम सत्ययुग की ओर बढ़ेंगे, वैसे-वैसे दिव्य शक्ति और अधिक प्रकट होगी। पर 16 मंडलों की जो सभा कोलकाता में होगी, उस सभा के समय ये वैज्ञानिक यंत्र और कंप्यूटरीकरण, जैसे मोबाइल फोन, सक्रिय रहेंगे। यह सब थोड़ा बाद में समाप्त होगा क्योंकि वह अंतिम सभा होगी। और वह स्थान... उस स्थान का नाम मैं गुप्त रख रहा हूँ क्योंकि पूरी दुनिया में रक्तपात होगा और बहुत सारे मनुष्यों का संहार होगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:52 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 479 मेरा प्रश्न पश्चिम बंगाल में भगवान कल्कि को लेकर है। क्या वे वहाँ पहले ही आ चुके हैं?

उत्तर: भगवान कल्कि आ चुके हैं। अब वे लौट गए हैं। तो उनका आना-जाना चलता रहेगा। जब बहुत-से लोगों का समय आएगा, तब उन्हें उनके दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:44 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 480 ऐसी खबर थी कि भारत में एक मंदिर में आग लग गई। इसका क्या महत्व है, और क्या भविष्यवाणियों में इसके बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: इसका महत्व यह है कि माता जी संहार के प्रयोजन से प्रस्थान कर चुकी हैं। देवी-देवताओं के मंदिर में आग लगने का प्रमाण यह है कि देवता वह स्थान छोड़ रहे हैं। वे भगवान की शरण में आते हैं और भगवान के निर्देशानुसार नियत स्थान पर जाकर अपना संहार का कार्य आरंभ करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:26 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 481 मेरे पिताजी की पहली पुण्यतिथि निकट आ रही है। हम अगले सप्ताह भागवत पुराण के पाठ की व्यवस्था करना चाहते हैं। क्या हम ऐसा कर सकते हैं, या यह पुण्यतिथि के बाद ही करना चाहिए?

उत्तर: माताजी, आप भागवत पुराण कभी भी पढ़ सकती हैं। यह केवल सात दिनों के लिए नहीं है। मैं तो यह कहता हूँ: परिवार के हर सदस्य को इसे पढ़ना चाहिए। किसी दूसरे को बुलाकर पाठ करवाना उतना पवित्र नहीं है, माताजी, जितना कि यदि आप सब स्वयं पढ़ें। क्योंकि सत्य युग में सभी भक्त ब्राह्मणों के समान होंगे, वे ज्ञानी होंगे और वैदिक मार्ग का अनुसरण करेंगे। इसलिए आपके लिए इसका पालन करना आवश्यक है। आपके परिवार के सदस्यों को साथ बैठकर भागवत पुराण पढ़ना चाहिए। और श्रीमद्भागवत को प्रतिदिन पढ़ने का प्रयास करें। मैं हर सदस्य से यही कहता हूँ। इसे पढ़ने से आपकी आयु बढ़ेगी, रोग दूर होंगे, और सत्य युग की देवियों द्वारा किए जाने वाले विनाश से आपको रक्षा मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 35:50 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 482 आपने कहा था कि प्रभु पश्चिम बंगाल आए थे। वे ठीक-ठीक कहाँ गए थे? और इसकी कोई खबर क्यों नहीं है?

उत्तर: उन्होंने पश्चिम बंगाल के कई क्षेत्रों का भ्रमण किया, जैसे बाँकुड़ा, बर्दवान, और कुछ अन्य क्षेत्र। रही बात खबर न होने की, तो यदि भक्तों को पता चल जाएगा तो पापियों को भी पता चल जाएगा। यदि सभी पापी प्रभु के दर्शन कर लें, तो उन्हें भी मुक्ति मिल जाएगी। इसीलिए प्रभु गुप्त रूप से चलकर अपना कार्य करते हैं। इसमें हमारा कोई कहना नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 38:33 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 483 प्रभु से मिलने के लिए और जिस महाभयंकर युद्ध की आप बात करते हैं, उसके लिए कितना समय बचा है?

उत्तर: पंचतत्वों का तांडव हर जगह हो रहा है। देखिए केरल में क्या हो रहा है। और अन्य स्थानों पर क्या हो रहा है... भारत और विश्व के हर कोने में अशांति होगी। यह रेगिस्तान बन जाएगा। यह समय-समय पर होता रहेगा। दूसरा और तीसरा चरण शुरू होगा। श्रीलंका में भूकंप... सब कुछ होगा। जो युद्ध होगा वह और अधिक विनाश लाएगा, और यह चलता रहेगा। पंचतत्वों द्वारा विनाश भी चलता रहेगा। रही बात प्रभु से मिलने की, तो वह तब होगा जब आपकी भक्ति पूर्ण होगी और आपको प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:43 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 484 आपने कल्कि अवतार के संदर्भ में हनुमान जी की भूमिका और वंश के बारे में कुछ बताया था। कृपया उस पर विस्तार से बताएँ?

उत्तर: दूसरी बात, प्रभु जो धर्म की स्थापना करेंगे, उसमें हनुमान जी साक्षात् उपस्थित रहेंगे। वे भक्तों की रक्षा करेंगे। और आप भी प्रभु से मिलेंगे, ऐसा नहीं है कि नहीं मिलेंगे। आप पूर्ण रूप से उनसे मिलेंगे, उनसे बात करेंगे, सब कुछ होगा। आप साथ बैठेंगे और वे राम कथा सुनाएँगे। भक्तों को स्वयं हनुमान जी के मुख से संपूर्ण राम चरित्र सुनने का अवसर मिलेगा। एक बात यह है कि आपको अपने तन, मन और कर्म को शुद्ध करना होगा, क्योंकि सत्य युग में जाना इतना आसान नहीं है। माया भ्रम पैदा करती है। मनुष्य सांसारिक माया में पूरी तरह लिप्त है। और ऐसे समय में जब मनुष्य की आस्था आधुनिक और वैज्ञानिक व्यवस्थाओं में है, और वह अपने सुख के लिए स्वार्थी हो गया है... ऐसे समय में जो भक्त भगवान को पाएँगे, वे वही हैं जो स्वार्थ और भोग का त्याग करके भगवान और मालिका का अनुसरण करते हैं। उनका भाग्य वर्णन करना मेरी सामर्थ्य से परे है। परंतु इतना संभव है: चारों युगों में मनुष्य को जो सुख नहीं मिला, उससे कई गुना अधिक सुख उन्हें सत्य युग में मिलेगा। उस सुख का कोई अंत नहीं होगा। सत्य युग में जाने का यह अंतिम अवसर है। उस समय के लिए अपने कर्म और पवित्रता को बनाए रखें और आप सब सनातन धर्म के लिए कार्य करें। समय नहीं है, मैं बार-बार कहता हूँ। हमें कुछ नहीं चाहिए। यदि प्रभु दो वक्त का भोजन दे दें, हम प्रसन्न हैं। और कुछ नहीं चाहिए। परंतु जो चाहिए वह यह है कि पूरे विश्व के लिए धर्म और पवित्रता का भार आप पर आ पड़ता है। पशु वध बंद होना चाहिए, शासकों को जनता के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए, विश्व के सभी मनुष्यों में प्रेम का भाव होना चाहिए, और स्वार्थ नहीं होना चाहिए। यही सनातन धर्म का प्रत्यक्ष स्वरूप है जो प्रकट होगा। हम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, आपको भी प्रतीक्षा करनी चाहिए और तदनुसार अपने कर्मों को परिष्कृत करके उस मार्ग पर चलना आवश्यक है। तो, यह प्रभु की कृपा है, सब कुछ उनकी कृपा से होता है।

► यह उत्तर सुनें · 43:42 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 485 क्या हमें सरकार द्वारा अनिवार्य किया गया टीका लगवाना चाहिए?

उत्तर: सरकार की व्यवस्था, कलि युग के नियम, आप जहाँ भी हैं, उनका पालन करना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण है और सबसे बड़ी बात यह है, देखिए... किसी ने टीके की दो खुराक ले लीं, लेकिन कार से जाते समय उसका एक्सीडेंट हो जाता है। क्या ऐसा नहीं होता? उसके लिए दो टीके मृत्यु के कारणों में से बस एक कारण हैं। मृत्यु के अनेक कारण हैं। मनुष्य के जन्म और शरीर को नियंत्रित करने के लिए आध्यात्मिक शक्ति आवश्यक है। उसे एकजुट कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 47:35 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 486 क्या माँ दुर्गा और राधा रानी एक ही हैं?

उत्तर: वे प्रभु के अंश हैं। वे प्रभु की संहारक शक्ति हैं, शक्ति हैं। उनमें कोई भेद नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 48:54 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 487 आपके पिछले वीडियो से समझ में आता है कि भगवान कल्कि का जन्म 2005 में या उसके बाद हुआ, जिससे वे लगभग 15 वर्ष के हैं। प्रश्न यह है कि क्या अब तक उनके माता-पिता को यह अनुभव हो गया है कि वे वास्तव में कल्कि हैं?

उत्तर: देखिए, जब प्रभु आते हैं, तो वे अपने माता-पिता, परिवार और मित्रों के साथ समय बिताते हैं। और इस बार, जब प्रभु मनुष्य अवतार में आए हैं, तो वे भी इसी सिद्धांत का पालन करेंगे। बहुत लोगों को यह संदेह है कि कल्कि सीधे आकर धर्म की स्थापना करेंगे। वह बाद की बात है। पहले हमें यह विचार करना है कि सभी भक्तों को एकत्र कैसे किया जाएगा। यह कौन करेगा? और भक्तों को कौन बचाएगा? और क्या भक्तों में वह शक्ति है... आने वाले समय में इतने रोग आएँगे, ऐसा विनाश का समय आएगा, क्या भक्त जीवित बचेंगे? जो प्रभु के साथ हैं, प्रभु के नाम के साथ हैं, और प्रभु के संगठन में हैं, उनमें शक्ति होगी। उसके कारण वे विपत्ति को पराजित करके सत्य युग में जा सकेंगे। यह हर युग में होता है, और इस युग में भी हो रहा है। मालिका में स्पष्ट लिखा है कि प्रभु मनुष्य रूप में आएँगे। और व्यास जी ने भी श्रीमद्भागवत में लिखा है: 'संभल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति' - भगवान कल्कि संभल ग्राम में विष्णुयश नामक महात्मा ब्राह्मण के घर मनुष्य शरीर में जन्म लेंगे। और मालिका कहती है कि जब प्रभु 4 वर्ष के होंगे, तब वे सुधर्म महासंघ की स्थापना करेंगे। मैं बार-बार कह रहा हूँ, जो सत्य सनातन धर्म, सर्व धर्म सनातन धर्म संगठन में हैं, वे भक्त सुधर्म संघ में जाएँगे। और मालिका की वह धारा सुधर्म में जाएगी। भगवान के संगठन में, भगवान कल्कि के संगठन में, कोई शिष्य-गुरु का संबंध नहीं होगा। संबंध भाइयों, मित्रों और परिवार का होगा। क्योंकि जब भगवान आते हैं, वे कभी गुरु-शिष्य का संबंध नहीं रखते; वे अपने भक्तों के साथ अपने परिवार की तरह रहते हैं। और प्रभु परिवार की तरह रहते हैं। प्रभु एक अलग जीवन भी जीते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 49:17 · 17 अक्टूबर 2021

प्रश्न 488 गुरुजी, मैं बीकानेर, राजस्थान से हूँ। मैं सत्य सनातन संस्था संगठन से कैसे जुड़ सकता हूँ और संपर्क कर सकता हूँ?

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। देखिए, राजस्थान में बहुत समय से भगवान कल्कि का एक मंदिर है। वह शायद अजमेर के पास है, जहाँ भगवान कल्कि की पूजा होती है। और राजस्थान धर्म की भूमि है, पवित्र और शुद्ध भूमि है। वहाँ पशु वध कम है। यह बहुत अच्छा है। संपर्क करने के लिए, हमने विश्व सनातन धर्म के लिए एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है। क्योंकि जैसे-जैसे चीज़ें आगे बढ़ रही हैं, हमने एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है। विश्व और भारत से बहुत से लोग उसमें हैं। उस माध्यम से कभी-कभी सत्संग भी होता है। तो, स्क्रीन पर जो व्हाट्सएप ग्रुप का नंबर दिख रहा है, आप उस नंबर पर संपर्क करें, और उस नंबर के माध्यम से उनसे बात करें। वे आपको जोड़ लेंगे, और आप उस माध्यम से कार्य कर सकते हैं और हमारा मार्गदर्शन भी कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 52:01 · 17 अक्टूबर 2021

सत्र 24 · प्रश्न 489–513

L23 भक्ति के माध्यम से कल्कि भगवान का दर्शन मिलेगा

दिनांक: 31 अक्टूबर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 489 मैं बहुत दूर से बोल रहा हूँ। मुझे एक संदेह है। मेरे कुछ मित्र सनातन धर्म से जुड़े नहीं हैं, लेकिन वे मांस-मछली नहीं खाते, वे ब्राह्मण हैं, और श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं। क्या उनके लिए सनातन धर्म और सुधर्म महासंघ से जुड़ना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, जो लोग मांस-मछली नहीं खाते और श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, वे शुद्ध और पवित्र हैं। लेकिन विश्व के लिए और सनातन धर्म के लिए हमें बहुत कुछ करना है। धर्म की स्थापना के लिए जो प्रभु अवतरित हुए हैं, उनकी शरण में जाना आवश्यक है। सनातन धर्म और सुधर्म महासंघ के माध्यम से ही हम भविष्य में भगवान कल्कि से जुड़ पाएँगे। इसलिए, मेरा मानना है कि उनका सनातन धर्म में आना आवश्यक है, लेकिन अंततः यह उनकी इच्छा और उनकी आवश्यकता है।

► यह उत्तर सुनें · 09:52 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 490 मेरा प्रश्न अमरोहा देवारो और छुटिया मठ के बारे में है। क्या चित्रा मछली और गोरा कुम्हार वहाँ मिलेंगे?

उत्तर: देखिए, मालिका में लिखा है कि उन्हें पूर्व जन्म में शाप मिला था। वे गंधर्व थे जिन्हें शाप मिला था। इस जन्म में, बिरजा क्षेत्र में प्रभु के क्षेत्र में एक 'मंडल' होगा, और उनकी अस्थियाँ वहाँ रखी जाएँगी। यह मालिका में लिखा है। वे दोनों इसी जीवन में देह त्यागेंगे, और उनकी अस्थियाँ बिरजा क्षेत्र में प्रभु के क्षेत्र के द्वार पर रखी जाएँगी। इसीलिए उन्होंने ये रूप धारण किए हैं, शाप के कारण।

► यह उत्तर सुनें · 11:31 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 491 गुरुजी, आपने कहा था कि हमारे देश पर 727 राजा राज करेंगे। तो क्या उस समय हमारे देश में एक भी राजा नहीं होगा? क्या उस समय ज़्यादा ख़तरा रहेगा?

उत्तर: आप किस समय की बात कर रहे हैं? अभी भारत एक गणतंत्र है, लोकतंत्र है। आने वाले समय में, विश्वयुद्ध और धर्म स्थापना के बाद यह राजतंत्र बन जाएगा। भक्तों को पूरे विश्व में अधिकार मिलेगा। भगवान भक्तों को अधिकार देंगे, जैसे भगवान श्रीकृष्ण ने उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाया था। इसी प्रकार विश्व के अनेक क्षेत्रों और देशों में अनेक भक्तों को सत्ता मिलेगी। मालिका शास्त्रों के अनुसार, भगवान 1,00,000 भक्तों को अधिकार प्रदान करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 13:00 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 492 हम भगवान को कैसे पहचानें? वे कौन-से लक्षण होंगे जिनसे हम पहचान सकें कि वही भगवान हैं, ताकि हम सत्य युग के घर की ओर बढ़ सकें?

उत्तर: आपको सिद्धांतों को अपनाना होगा और उनके अनुसार जीना होगा। जैसे, शाकाहारी बनना और श्रीमद्भागवत से जुड़ना आवश्यक है। यह सब करने से आपको भगवान के दर्शन होंगे और आप उनका अनुभव करेंगे। तब आप इसका अर्थ समझ जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 14:22 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 493 धर्म स्थापना के दौरान क्या नकारात्मक शक्तियाँ आपको परेशान नहीं करतीं? और दूसरा, 'कलि' (युग का नकारात्मक प्रभाव) कितना नष्ट हो चुका है? कितने प्रतिशत बाकी है?

उत्तर: माताजी, हम धर्म स्थापना का कार्य कर रहे हैं। नकारात्मक शक्तियाँ हमें परेशान करती ही हैं, बहुत परेशान करती हैं, लेकिन अंततः वे हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं। जिन्होंने इस पृथ्वी और मानव समाज की रचना की, वही हमारे भगवान हैं। कलि एक साधारण शक्ति है। वह कुछ भी कर ले, कुछ हासिल नहीं कर सकती। वह हमारा विरोध करेगी, मेरा भी विरोध करती है। जब हम सत्संग या कथा करते हैं, तो उससे पहले मुझे तेज़ बुखार या दूसरी परेशानियाँ हो जाती हैं, लेकिन हम डरते नहीं, क्योंकि हम पर भगवान की कृपा है। कुछ नहीं होगा। वह कोई वास्तविक हानि नहीं पहुँचा पाएगी। भगवान पूरे विश्व का भ्रमण कर रहे हैं और धर्म स्थापना का कार्य कर रहे हैं। जब आप भगवान के साथ हैं, तो दुनिया की कोई भी शक्ति आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। पांडवों को देखिए; एक ओर वे पाँच थे, और दूसरी ओर पूरे विश्व की सेनाएँ थीं, फिर भी भगवान ने उन्हें विजयी बनाया और शांति स्थापित की। तो माताजी, देखिए, धर्म की सदा विजय होती है। पाप अस्थायी समस्याएँ लाता है, और पापी उन्हें पैदा करते हैं, लेकिन उनमें कोई वास्तविक शक्ति नहीं होती। वे तो केवल भक्तों को और मज़बूत बनाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 15:26 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 494 (यह एक साझा अनुभव है, जिसके बाद प्रार्थना है) एक भक्त अपना अनुभव साझा करते हैं कि उनके मन में वैष्णो देवी मंदिर जाने की इच्छा हुई और फिर चमत्कारिक रूप से उन्हें पास ही एक मंदिर मिल गया, जहाँ उन्होंने भगवान कल्कि का एक बड़ा चित्र भी देखा जिसमें उनके आगमन का संदेश था। वे इस प्रार्थना के साथ समाप्त करते हैं: "भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वे मेरी पुकार सुनें और शीघ्र ही मुझे उनके श्रीचरणों में सेवा का अवसर प्रदान करें। बस इतना ही, पंडित जी।"

उत्तर: बहुत अच्छा। यह अनुभव उन भक्तों के लिए है जो सच्चे हृदय से भगवान को स्मरण करते हैं। उन्हें भगवान से ऐसे संकेत और दर्शन प्राप्त होंगे, जो दिखाएँगे कि भगवान और माता हमारे साथ हैं। सभी अच्छे भक्तों को ऐसे अनुभव होंगे। आपकी पवित्रता और भक्ति के कारण भगवान और माता ने आपको दर्शन दिए। भक्तों के लिए यह सबसे बड़ा अनुभव है, और हमें इसी के साथ आगे बढ़ना है। वह समय आएगा जब आप भगवान कल्कि की शरण लेंगे। मैं आपसे कह रहा हूँ, वह समय आएगा जब आप भगवान कल्कि की शरण लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 18:29 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 495 एक सप्ताह पहले मैंने सपना देखा कि मेरा विवाह हो रहा है। सपने में मैं कुँवारा हूँ, और विवाह तय हो गया है। एक व्यक्ति मेरे हाथ में नारियल देता है और अपने ही वस्त्र से एक टुकड़ा लेकर उस नारियल पर रख देता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आने वाले सत्य युग में, जो भक्त सुधर्म सभा (धर्म की सभा) में सम्मिलित होंगे, वे प्रवेश से पहले समुद्र में जाकर स्नान करेंगे। उसके बाद उन्हें नया जीवन प्राप्त होगा। सभी भक्त युवा अवस्था को प्राप्त करेंगे। सुधर्म सभा के बाद कुछ भक्तों का पुनर्विवाह होगा और उनका पुनर्वास किया जाएगा। ऐसा समय आ रहा है। यदि आप सचमुच भगवान कल्कि, सनातन धर्म और मालिका की पवित्र धारा में हैं, तो आप भी ऐसे समय का अनुभव करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:57 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 496 पंडित जी, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, क्या श्री कल्कि महाराज गया आएँगे, क्योंकि वहाँ बहुत से लोग श्राद्ध कर्म के लिए आते हैं? दूसरा, इंडोनेशिया में राष्ट्रपति की बेटी ने हिंदू धर्म अपना लिया है, और मैंने सुना है कि 30,000 मुसलमानों ने भी हिंदू धर्म अपनाया है। क्या यह धर्म स्थापना की शुरुआत है?

उत्तर: बिल्कुल, यह धर्म स्थापना की शुरुआत है; धर्म स्थापना तो पहले से ही चल रही है। बहुत से लोग बदलेंगे, और बहुत से नहीं बदलेंगे। जो बदलेंगे, उनकी रक्षा भगवान करेंगे। ऐसा समय हमारे सामने है। सनातन धर्म पूरे विश्व में प्रकाशित होगा। कितने भी लोग इसका विरोध कर लें, विश्व के सभी देशों में केवल सनातन धर्म ही रहेगा; कोई दूसरा धर्म नहीं रहेगा। यह पहली बात है। दूसरी बात, भगवान कल्कि निश्चित रूप से गया जाएँगे। वह एक पवित्र तीर्थस्थल है, और भगवान वहाँ जाते हैं। भगवान कल्कि भारत के अनेक राज्यों में जाते हैं, और भक्त उन्हें देखते हैं। जो भक्त हैं, वे अनुभव करते हैं कि वे उनके गाँव या तीर्थस्थान में आए हैं। भक्त उन्हें देख रहे हैं। ऐसा ही है।

► यह उत्तर सुनें · 22:36 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 497 (निहित प्रश्न) मालिका में असुरों के विनाश का उल्लेख है। यह कब होगा? मैं इसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।

उत्तर: देखिए माताजी, अभी हज़ारों, बल्कि लाखों असुर हैं। दूसरे युगों में अंधकासुर और अनेक असुर थे, लेकिन इस युग में करोड़ों असुर हैं। मालिका कहती है कि सभी असुरों का विनाश होगा—जो सनातन धर्म का विरोध करते हैं, जो समाज में पाप फैलाते हैं, जो जीवों पर हिंसा करते हैं, जो मनुष्यों को कष्ट देते हैं, और जो प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करते हैं। इन सभी असुरों का विनाश होगा, जिनमें वह भी शामिल है जिसका आपने उल्लेख किया। आपको बस समय की प्रतीक्षा करनी है। समय धीरे-धीरे चलता है। 'पंचक' काल के साथ, जब 2025 में शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, तब समय बहुत कठिन हो जाएगा। वह बहुत ही संकटपूर्ण समय होगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:10 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 498 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। कुछ भक्त हैं जो ब्रह्म ज्ञान (दिव्य ज्ञान) विकसित कर रहे हैं। उनमें कुछ ऐसे हैं जिन्हें ब्रह्म ज्ञान का अनुभव तो हुआ है, पर वह स्थिर नहीं है। सांसारिक मोह का एक ज़ोरदार झटका आता है, और ज्ञान लुप्त हो जाता है। ऐसे भक्तों का भविष्य क्या होगा? कृपया हमें प्रकाश दिखाइए।

उत्तर: इस जीवन में सबसे बड़ी और सबसे पवित्र वस्तु है पवित्र नाम। जो माता के नाम का जप करेंगे, उन्हें ब्रह्म ज्ञान (दिव्य ज्ञान) प्राप्त होगा और भगवान के दर्शन होंगे, और वे सत्य युग में जाएँगे। मालिका में लिखा है कि केवल माधव के नाम का जप करने से ही हम भविष्य में होने वाली हर बात को जान लेंगे। हम आने वाले समय को देख भी सकते हैं। लेकिन निर्धारित मार्ग का पालन भी करना होगा: श्रीमद्भागवत का पाठ, 10 अवतारों के नामों का जप, भगवान श्रीकृष्ण के 16 पवित्र नामों का जप, और निरंतर 'माधव' नाम का जप। ऐसा करने से भक्त की शक्ति और आंतरिक प्रकाश बढ़ेगा, और वे सब कुछ देख पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:34 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 499 पंडित जी, भारत में आपातकाल कब घोषित होगा?

उत्तर: वह उस समय का शासन है।

► यह उत्तर सुनें · 28:21 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 500 पंडित जी, कृपया हमें 17 संख्या के बारे में बताइए।

उत्तर: आप 17 प्राणशक्तियों की मुक्ति की बात कर रहे हैं। लेकिन भगवान यह 17 से आगे भी कर सकते हैं। यह उनकी इच्छा है; वे इसे कभी भी कर सकते हैं। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, मालिका का अनुसरण करें, जो मार्ग मैं आपको दिखा रहा हूँ उस पर चलें, और सनातन धर्म से जुड़ें। आप सब कुछ जान जाएँगे, और उसी के अनुसार आचरण करना आपके लिए अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:38 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 501 अनुकूल ठाकुर, रामकृष्ण परमहंस... क्या वे किसी उद्देश्य से आए थे? क्या वे फिर आएँगे, या वे आ चुके हैं? और यदि कोई भक्त पिछले जन्म में राधा-कृष्ण का भक्त था, तो क्या यह संभव है कि राधा-कृष्ण का अवतार इस जन्म में उससे मिले?

उत्तर: रामकृष्ण परमहंस और निगमानंद के विषय में मालिका में लिखा है कि वे आएँगे, कुछ भक्तों को पवित्र करेंगे, और उनकी परंपरा इस संसार में बनी रहेगी। आपके दूसरे प्रश्न के विषय में — बहुत से अवतार धरती पर आए हैं और उन्होंने परिवर्तन किया है। परंतु कहीं भी यह नहीं लिखा है कि वे फिर से आएँगे। दूसरी बात, यदि कोई व्यक्ति अच्छे कर्म करता है, तो उसका पुनर्जन्म मनुष्य के रूप में होता है। अभी धर्म की स्थापना का समय है, और भगवान कल्कि अवतरित हो चुके हैं। वे संपूर्ण विश्व के गुरु हैं। इस युग में व्यक्तिगत गुरुओं की परंपरा नहीं रहेगी। केवल भगवान स्वयं ही विश्वगुरु होंगे, और वे संपूर्ण विश्व में धर्म की स्थापना करेंगे, अर्थात् पाप का नाश करेंगे। वे अपनी इच्छा से आगे बढ़ेंगे। इस समय में आप सब मालिका से जुड़िए। यदि आप पवित्र हैं, तो आप भी भगवान से मिल सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 29:24 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 502 (यह एक निवेदन है) मेरा एक निवेदन है। यदि आप हमें भगवान का केवल एक नाम जप करने के लिए दे दें, तो मैं बहुत आभारी रहूँगा।

उत्तर: (वक्ता बाद में सत्र के अंत में विस्तृत उत्तर देते हैं) मैं आपको बताता हूँ। निरंतर 'माधव' नाम का जप कीजिए। साथ ही, मैं आपको भगवान विष्णु के 16 पवित्र नाम और 10 अवतारों के नाम जप करने के लिए दूँगा। [इसके बाद वक्ता विशेष श्लोक और नाम सुनाते हैं, जैसे 'वासुदेवं चिन्तयेत् विष्णुम्...', 'श्री मत्स्य अवतार, श्री कूर्म अवतार...' आदि, और हरे कृष्ण महामंत्र की भी संस्तुति करते हैं]। श्रीमद्भागवत का पाठ करना भी आवश्यक है। इस मार्ग पर चलने से आपको शक्ति और रक्षा मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 32:55 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 503 सनातन धर्म ग्रुप में तीन लोग काम करते हैं: मोहन, पद्मा और नरेंद्र। क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ। वे जो कुछ भी पोस्ट करते हैं, मैं भी उसे पढ़ता हूँ। उसे पढ़िए और उसका पालन कीजिए। आप मुझसे बात कर सकते हैं, कोई समस्या नहीं। यदि वे अभी सत्संग में हैं, तो मैं उन्हें बता दूँगा। यदि आप उन्हें फोन करेंगे, तो वे आपसे बात करेंगे। कोई दिक्कत नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 33:49 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 504 कृपया बताइए कि भगवान के बचपन में उनकी पहचान के विषय में मालिका में क्या लिखा है?

उत्तर: ठीक है, माता जी। भगवान के बचपन के विषय में मालिका में जो लिखा था... वह ओड़िया भाषा में लिखा है, इसलिए शायद आप न समझ पाएँ। उसमें कहा गया है कि जब भगवान तीन वर्ष पूर्ण करके चौथे वर्ष में प्रवेश करेंगे, तब वे अपनी दिव्य लीला आरंभ करेंगे। भक्त उनसे मिलेंगे, वे सुधर्म की स्थापना करेंगे, और धर्म स्थापना के कार्य को आगे बढ़ाएँगे। भक्तों के बीच एक ज्योति प्रज्वलित होगी। यह सब पहले ही हो चुका है। भगवान की बाल लीला समाप्त हो चुकी है। जो भक्त उन्हें देख सकते हैं और उनके विषय में जानते हैं, यदि आप उनसे बात करेंगी तो वे आपको और बता सकते हैं। परंतु अब धर्म स्थापना का समय निकट आ रहा है। अब सबसे महत्वपूर्ण बात है 16 मंडलों का गठन और भक्तों का एकत्र होना। इसीलिए मालिका का प्रचार किया जा रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 34:35 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 505 (ओड़िया में, अनूदित) एक भविष्यवाणी है: 'तुम अपने पिता के हाथ से अवतरित होगे... तुम्हारा जन्म 13 तारीख को होगा।' यह बहुत विवादास्पद है। यह बिपिन चंद्र, चंद्र आदि की ओर संकेत करता है। शास्त्रों के अनुसार जन्म हो चुका है। इस पर बहुत ध्यान आकर्षित हो रहा है। क्या आप इसे स्पष्ट कर सकते हैं?

उत्तर: (वक्ता ओड़िया में उत्तर देते हुए प्रश्न को टाल देते हैं) मैं उस विशेष प्रकाशन से जुड़े प्रश्नों का उत्तर यहाँ नहीं दे सकता। यह उसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 36:25 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 506 प्रभु जी, धर्म स्थापना के बाद आप 'क्षीर सागर' की बात करते हैं जहाँ लोग स्नान करेंगे। क्या सभी वहाँ स्नान कर पाएँगे, या केवल कुछ ही? और, धर्म स्थापना के क्रम में कहा जाता है कि भगवान दुष्टों का वध करेंगे। क्या वे इसके लिए सुदर्शन चक्र का प्रयोग करेंगे?

उत्तर: पहले प्रश्न के विषय में — उस समय विष्णु और शिव उपस्थित रहेंगे, 'पंचक' काल चल रहा होगा, और सुधर्म सभा चल रही होगी। परंतु केवल वे ही भक्त जो पवित्र थे, जो द्वापर युग में भगवान के साथ थे, जैसे गोपियाँ... भगवान क्षीर सागर को बिरजा देवी मंदिर के सामने पृथ्वी पर बुलाएँगे। माँ दुर्गा उसकी रक्षा करेंगी। द्वार पर दुर्गा के गण उपस्थित रहेंगे। केवल वही जिन्हें भगवान से अनुमति और पास मिलेगा, वे ही जाकर स्नान कर पाएँगे, सब नहीं। दूसरे प्रश्न के विषय में — भगवान, चक्रधारी... जब सभी मुस्लिम और अन्य सेनाएँ लड़ते-लड़ते ओडिशा की सीमाओं तक पहुँचेंगी और खंडगिरि में भगवान का सामना करेंगी, तब भगवान पहले उन्हें ललकारेंगे और फिर 'काल चक्र' से उनका नाश करेंगे। वे शापित प्राणी नहीं हैं; वे अपने ही कर्म से असुर हैं। इस युग में अपने ही कर्मों के कारण करोड़ों असुर हैं। भगवान धर्म की स्थापना करने और सत्य युग लाने के लिए उनका नाश करेंगे। यह आवश्यक नहीं कि उन्हें मुक्ति प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:03 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 507 दो दिन पहले मुझे एक स्वप्न आया। मैंने एक स्त्री को देखा जो पुरुषों को खा रही थी। वह अच्छी साड़ी और सब कुछ पहने सुसज्जित थी, पर वह लोगों को खा रही थी। इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि द्वापर युग से ही माँ महामाया, माँ कालिका और उनके गण प्रतीक्षा कर रहे हैं। कलियुग के अंत में भगवान उन्हें मनुष्य का मांस और रक्त देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जो दिव्य शक्तियाँ विनाश के कार्य में लगी हैं, उनका कार्य इस समय चल रहा है। जो रोग, महामारियाँ और आपदाएँ हो रही हैं — भगवान ने उन्हें इन चीज़ों का अधिकार दिया है। उन्होंने सभी देवियों को पूर्ण अधिकार नहीं दिया है; यदि वे सबको विनाश का अधिकार दे देते, तो विनाश की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अभी उन्होंने विनाश का यह अधिकार थोड़े से देवताओं को ही दिया है। आपने स्वप्न में जो देखा, वह वही कार्य है, और वह चल रहा है। जैसा महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है, देवियाँ विनाश कर रही हैं, और मनुष्य अपने पाप कर्मों का फल भोग रहे हैं। यह और बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:32 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 508 मैं अपने पूरे परिवार के साथ भगवान की शरण लेना चाहता हूँ, और इसके लिए जो कर सकता हूँ कर रहा हूँ, पर अभी तक मुझे कोई आध्यात्मिक अनुभव या अनुभूति नहीं हो रही। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: क्या आप उस मार्ग का पालन कर रहे हैं जो मैंने बताया है? बेटा, जब तक कोई विपत्ति न आए, तब तक आपको कैसे पता चलेगा कि वह आपके लिए टल गई? इसलिए माधव का नाम जपिए और इस स्ट्रीम में जैसा मैंने बताया है वैसा कार्य कीजिए। साथ ही, सनातन धर्म ग्रुप से जुड़िए। यह सब आवश्यक है क्योंकि यह भगवान कल्कि के लिए बनाया जा रहा एक परिवार है, और भगवान इन परिवारों को अनुमति देंगे और उनकी रक्षा करेंगे। आपका जुड़ना आवश्यक है। सनातन धर्म ग्रुप से जुड़िए, हमारे साथ जुड़े अन्य भक्तों से मिलिए। जब कोई समस्या आएगी, ठीक उसी क्षण आप पहचान जाएँगे कि भगवान आपके साथ हैं। आपको वह अनुभव मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:30 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 509 मैं उस 'वन वर्ल्ड गवर्नमेंट' के विषय में पूछना चाहती हूँ जिसका उल्लेख मोदी जी ने पिछले वर्ष किया था। क्या अमेरिका द्वारा प्रस्तावित यह अवधारणा भारत में भी आएगी? और क्या इससे लोगों को कोई समस्या होगी?

उत्तर: देखिए माता जी, वे बहुत बातें करते हैं, पर उन्हें कुछ भी पता नहीं है। विनाश का समय चल रहा है, और विनाश का कार्य और बढ़ेगा ही। यह संसार के सभी देशों के बीच युद्ध का समय है। अगले चार-पाँच वर्षों में एक महायुद्ध होने वाला है; बस देखते जाइए। कोई 'वन वर्ल्ड गवर्नमेंट' संभव नहीं होगी। सब अपने-अपने स्वार्थ के लिए काम कर रहे हैं। भगवान विनाश करने आ रहे हैं, इसलिए उसके लिए तैयार रहिए। ये सब नेता जो पाप करते हैं और अपनी जनता पर अत्याचार करते हैं, उनका विनाश भी होने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 46:48 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 510 मालिका कहती है कि एक दिन मुंबई पानी में डूब जाएगी। इसका कारण क्या होगा?

उत्तर: केवल मुंबई ही पानी में नहीं डूबेगी। मुंबई डूबेगी, चेन्नई डूबेगा, आंध्र प्रदेश डूबेगा, ओडिशा डूबेगा, बंगाल डूबेगा, और गुजरात का कच्छ क्षेत्र भी डूबेगा। संपूर्ण विश्व के सभी तटवर्ती भूभाग जलमग्न हो जाएँगे। एक दिन एक धूमकेतु ('लंका नक्षत्र') समुद्र में गिरेगा। इसके कारण समुद्र का पानी हज़ारों फुट ऊँचा उठेगा, और उस समय सब कुछ जलमग्न हो जाएगा। लोग इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, पर वे धर्म को नहीं समझते और पाप करते रहते हैं। वे विनाश का समय देखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:02 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 511 मैंने इसे कई बार समझने की कोशिश की है। माता काली, महामाया... वे तो जगदम्बा हैं, स्वयं भगवान का ही अंश हैं। जगदम्बा होकर भी वे मांस कैसे खा सकती हैं और रक्त कैसे पी सकती हैं? यह बात मुझे उलझन में डालती है। कोई माँ अपने ही बच्चों को कैसे खा सकती है और मांसाहारी कैसे हो सकती है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। द्वापर युग में, जब भगवान श्रीकृष्ण ग्वाल-बालों के साथ लौट रहे थे, तब माता महामाया ने भगवान से उनके कुछ भक्त माँगे, जिनका वे संहार कर सकें। भगवान ने उत्तर दिया, 'इस युग में ये मेरे साथ वृंदावन में लीला कर रहे हैं, इसलिए मैं अभी इन्हें तुम्हें नहीं दे सकता।' तब माता ने पूछा कि उनकी यह इच्छा कब पूरी होगी। भगवान ने उत्तर दिया कि शास्त्रों में लिखा है कि Kali Yuga में लोग पापी हो जाएँगे। वे जीवों की हत्या करेंगे, नशा करेंगे, भगवान Kalki की शरण लेने से इनकार करेंगे, और धर्म की स्थापना का विरोध करेंगे—अर्थात् वे पाप, अन्याय और भ्रष्टाचार में लिप्त रहेंगे। माता उनका संहार करेंगी। भगवान स्वयं विष्णु हैं, सबके रक्षक। वे अपने चक्र से उनका संहार क्यों करेंगे? यदि पापियों का संहार न हो, तो पृथ्वी पर मानव समाज जीवित नहीं रह सकता। माता पापियों का संहार करने आती हैं और भक्तों की रक्षा करने भी आती हैं। Bhavishya Malika कहती है कि वे भक्तों की रक्षा करेंगी और पापियों का संहार करेंगी। जब कोई पाप करता है, तो उसका संहार आवश्यक हो जाता है। इसमें माता का दोष नहीं है, क्योंकि उनका संहारकारी रूप (संहार रूपी) भी है और कल्याणकारी रूप (वैष्णवी रूपी) भी। अपने संहार रूप में वे पापियों का नाश करती हैं, और अपने कल्याणकारी वैष्णवी रूप में वे भक्तों की रक्षा करती हैं। यह हर युग में होता आया है।

► यह उत्तर सुनें · 49:16 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 512 पंडित जी, '16 नामों' से क्या आपका तात्पर्य हरे कृष्ण महामंत्र से है: 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे'?

उत्तर: माता जी, मैं उन 16 नामों की बात कर रहा था [विष्णु के, जिनका मैंने अभी उच्चारण किया]। आप इस रिकॉर्डिंग को दोबारा देख सकती हैं। जो मंत्र भगवान चैतन्य महाप्रभु ने दिया—'हरे राम, हरे कृष्ण'—उसका जप भी आपको करना चाहिए। यह हमारे सनातन धर्म की परंपरा है। परंतु 'Madhava' नाम भी अनिवार्य है, क्योंकि Madhava ही परम सत्य हैं, अनंत युगों के सत्य को जानने की कुंजी हैं। Kali Yuga में चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिया गया मंत्र हमारे लिए आवश्यक था, इसलिए उसका भी जप कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 56:28 · 31 अक्टूबर 2021

प्रश्न 513 पंडित जी, हम यह पूछ रहे हैं कि आप किन 16 नामों की बात कर रहे हैं: जिनका आपने अभी उच्चारण किया, या हरे कृष्ण महामंत्र?

उत्तर: जिन 16 नामों का मैंने उच्चारण किया, वे भगवान महाविष्णु के 16 पवित्र नाम हैं। जैसे, 'नारायणम् तनु त्यागे' का अर्थ है कि मृत्यु के समय जो श्री नारायण के नाम का जप करता है, उसे वैकुंठ (दिव्य धाम) प्राप्त होता है। इन 16 नामों का जप करने से, मानव शरीर को नियंत्रित करने वाले 16 तत्व संतुलन में रहेंगे, शरीर स्वस्थ रहेगा, धर्म का प्रभाव बना रहेगा, और आपको भगवान का आशीर्वाद तथा सभी देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होगा। इस मंत्र का जप करने से आपको स्वप्नों और अनुभवों में भगवान से जुड़ी अंतर्दृष्टि मिलेगी। इसीलिए मैं आपसे यह करने को कह रहा हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 57:04 · 31 अक्टूबर 2021

सत्र 25 · प्रश्न 514–529

L24.2 सम्पूर्ण विश्व को भूकंप ग्रास करेगा LIVE

दिनांक: 7 नवम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 514 क्या यह Satya Yuga (सत्य का युग) इस कल्प (ब्रह्मांडीय चक्र) के अंत में आएगा, या यह Kali Yuga (वर्तमान युग) के बीच में आ रहा है?

उत्तर: देखिए, माता जी। शास्त्रों के अनुसार, Kali Yuga का अंत 5,000 वर्षों के बाद होगा। अभी ओडिशा जगन्नाथ पंजिका के अनुसार 5126वाँ वर्ष चल रहा है। 5126वाँ वर्ष चल रहा है, इसलिए समाज में युग का प्रभाव महसूस किया जा रहा है। बहुत से लोग धर्म की ओर मुड़ रहे हैं। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि Kali Yuga के अंत में एक अच्छा समय आएगा। और जब वह अच्छा समय आएगा, तो जो लोग बचे रहेंगे वे Satya Yuga में जाएँगे। वे Satya Yuga की शुरुआत करेंगे। अर्थात्, आरंभ में वह धर्मपरायण युग होगा। फिर कुछ समय बाद वे गलतियाँ करेंगे... यह Kali Yuga का अंत है। फिर Satya Yuga होगा, और Satya Yuga के अंत में ब्रह्म प्रलय (महाप्रलय) होगा, वैसे ही जैसे जब भगवान ने मत्स्य अवतार (मछली का अवतार) लिया था। तो वह समय भी आ रहा है। यदि भगवान चाहें, तो वे कुछ भी बदल सकते हैं। युग के अंत में Satya Yuga आता है, और प्रलय होता है। तो यह भगवान की धारा है; यह भगवान पर निर्भर है कि इसके बाद वे वही युग वापस लाएँगे या कोई नया रचेंगे। यह उनका निर्णय है।

► यह उत्तर सुनें · 01:26 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 515 पंडित जी, मैं बाराबंकी से बोल रहा हूँ। यहाँ हमारे पास 5,000 वर्ष पुराना एक वृक्ष है, जिसे भगवान श्रीकृष्ण और पांडवों ने लगाया था। तो, क्या वे यहाँ फिर से आएँगे?

उत्तर: मेरे प्रिय, भगवान के चरण वहाँ पड़े हैं। देखिए, भगवान का क्षेत्र द्वापर युग था। आपका क्षेत्र उन स्थानों में से एक है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण धर्म की स्थापना के लिए गए थे। वे भक्तों से मिले और पाँच पांडवों के साथ आए। उस स्थान पर भगवान की दिव्य उपस्थिति बनी रहेगी, और समय आने पर वे अवश्य वहाँ पधारेंगे। वह भूमि का एक पवित्र टुकड़ा है, और समय आने पर आप सबके साथ एक पवित्र संबंध बनेगा। भगवान और पांडव फिर से द्वापर युग और त्रेता युग के क्षेत्रों का भ्रमण करेंगे। यह Bhavishya Malika में लिखा है। और आप तो पहले से ही सनातन धर्म से जुड़े हुए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 03:24 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 516 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, भारत में राष्ट्रपति शासन कब लागू होगा? दूसरा, आपने बताया था कि एक बड़ी चट्टान या क्षुद्रग्रह सक्रिय होकर अंतरिक्ष से प्रशांत महासागर में गिरेगा। कृपया इस बारे में कुछ जानकारी दीजिए।

उत्तर: आप जिस राष्ट्रपति शासन के बारे में पूछ रहे हैं, वह निश्चित रूप से लागू होगा। यह कैसे होगा? लगभग 2025 के आसपास, जब शनि का प्रभाव प्रबल होगा, और यह धर्म की स्थापना चल रही होगी, तब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ेगा। चीन भी उस युद्ध में शामिल होगा। उस समय सैन्य आपातकाल घोषित किया जाएगा। रूस भी भारत की सहायता करेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह युद्ध कब होगा, यह भगवान Kalki पर निर्भर करता है। क्योंकि भक्त अभी तक एकत्र नहीं हुए हैं, और 16 मंडल (समूह) अभी नहीं बने हैं। जब तक 16 मंडल नहीं बनते और धर्म की स्थापना का कार्य आगे नहीं बढ़ता, तब तक कुछ विलंब होगा। जब पांडवों ने महाभारत का युद्ध लड़ा था, तब उन्हें कई वर्ष वनवास में बिताने पड़े थे। इसी तरह, भक्त अभी वनवास में हैं, दुःख में हैं। लेकिन 16 मंडलों का बनना आवश्यक है। और यह निश्चित रूप से 2025 के आसपास होगा। सैन्य आपातकाल होगा, रूस का समर्थन रहेगा, और क्षुद्रग्रह भी गिरेगा। सबसे अच्छा यही है कि उस समय के आने की प्रतीक्षा की जाए। मेरी सलाह है कि इन बातों को लेकर घबराइए मत।

► यह उत्तर सुनें · 07:31 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 517 मुझे अक्सर सुबह के ध्यान के समय एक सुंदर सुगंध आती है, जैसी सत्यनारायण पूजा के समय आती है, जबकि कोई खाना भी नहीं बना रहा होता। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: माता जी, यह सब Bhavishya Malika में लिखा है। पहला, भगवान ने आपको ध्यान में दर्शन दिए। दूसरा, जब उनकी सुगंध आती है, तो यह भगवान के प्राकट्य का संकेत है। जब उनकी सुगंध आती है, तो इसका अर्थ है कि वे आपके पास आते हैं। तीसरा, आप मुझसे बात कर रही हैं, जो संसार को भगवान Kalki के बारे में बताता है। तो आपको इसका अर्थ समझना चाहिए: यह भगवान का संकेत है कि यही धर्म की स्थापना का समय है। आपको सनातन धर्म के लिए कार्य करना चाहिए, और यह आवश्यक है कि आप इस दिशा में कार्य करें कि उनके धर्म की स्थापना कैसे आगे बढ़ेगी। इसीलिए भगवान आपको ये संकेत दे रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 14:39 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 518 उनके दर्शन कैसे हो सकते हैं?

उत्तर: देखिए, इसके लिए अलग से प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। डिस्क्रिप्शन में दिए गए नंबर के माध्यम से हमारे सनातन धर्म व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ जाइए। आपको धर्म की स्थापना और भगवान Kalki की इच्छा के बारे में पता चलेगा, और यह भी कि क्या करना आवश्यक है। आपको उसका पालन करना चाहिए। और सबसे अच्छी बात यह है कि भगवान स्वयं पहले से ही आपके पास आ रहे हैं। आप एक पुण्यात्मा स्त्री हैं जिन्हें भगवान दर्शन दे रहे हैं। यह Bhavishya Malika में लिखा है, और आप मुझसे बात कर रही हैं, मैं ही वह बोलने वाला हूँ। तो इसका पालन कीजिए और सनातन धर्म ग्रुप से जुड़िए। यह आपके लिए आवश्यक है। यदि आप इसका पालन करेंगी, तो यह आपके लिए अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:47 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 519 रामभद्राचार्य जी ने हाल ही में एक भविष्यवाणी की है कि 2024 तक PoK (पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर) भारत में मिल जाएगा और चीन का एक हिस्सा भी भारत में शामिल हो जाएगा। इस पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: एक ओर पाकिस्तान है, और बहुत से मुस्लिम देश उसका पूरा समर्थन करेंगे। इसका परिणाम क्या होगा, यह आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं; मुझे नहीं लगता कि यह कहना आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि मालिका में लिखा है कि एक युद्ध होगा, और वह युद्ध विश्वयुद्ध में परिवर्तित हो जाएगा। तो हम आने वाले समय की ओर देख रहे हैं। यह मालिका में भी दिखाया गया है। हम बस उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो भगवान की इच्छा से होगा। साधु-संत जो भी कहते हैं, हम उसका सम्मान करते हैं। उस पर टिप्पणी करना हम आवश्यक नहीं समझते।

► यह उत्तर सुनें · 17:07 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 520 हम कैसे बच पाएंगे, और हमारे प्रभु हमारी रक्षा कैसे करेंगे?

उत्तर: देखिए, मैं आप सबको बताता हूँ। धर्म की स्थापना पूरे ब्रह्मांड में होगी, केवल भारत में नहीं। युद्ध तो इसका एक माध्यम मात्र है। कहीं महाबाढ़ आएगी; कहीं महाअग्नि; कई जगहों पर महाविनाश, भूकंप और अकाल होगा। आकाश से आग बरसेगी। इन विभिन्न माध्यमों से पूरे विश्व में धर्म की स्थापना होगी। मालिका की धारा कहती है कि धर्म की स्थापना हर जगह होगी। जो लोग धर्म, पवित्रता, शाकाहारी आहार और वैदिक मार्ग का पालन करते हैं, वही बचेंगे, चाहे वे विश्व में कहीं भी हों। पूरे ब्रह्मांड में रामराज्य (धर्म का राज्य) स्थापित होगा। पूर्ण शुद्धिकरण होगा। और जब रामराज्य स्थापित होगा, तब भक्त बच जाएंगे। आपको सत्संग और सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 18:53 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 521 मैं पिछले 8-9 वर्षों से भगवान कृष्ण की मीराबाई जैसी बहुत बड़ी भक्त हूँ। मैंने जीवन में हर दुःख सहा है। लेकिन अब मैं थक गई हूँ, पंडित जी। मेरे जैसे भक्तों के बारे में मालिका में क्या लिखा है? मैं दुःख सहते-सहते थक चुकी हूँ और मुझे केवल कृष्ण पर ही विश्वास है कि वे मुझे बचाएंगे।

उत्तर: माता जी, मैं आपको और आपकी भक्ति को प्रणाम करता हूँ। यह बहुत अच्छी बात है कि आप भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन हैं। मानव जीवन में यही सबसे पवित्र मार्ग है। देखिए, भगवान कृष्ण और भगवान कल्कि एक ही हैं, और वे पहले ही मनुष्य शरीर में पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। जिस प्रभु को आप खोज रही हैं, वे भक्तों को बचाने के लिए मनुष्य शरीर में पृथ्वी पर आ चुके हैं। तो मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ: आपको सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए और भगवान कल्कि से जुड़ना चाहिए। यही आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण मार्ग होगा। आपने अपने जीवन में जो भी परिश्रम किया है और जिस भक्ति में आप लीन रही हैं, उसका फल आपको अवश्य मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:29 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 522 हमें भगवान कल्कि से भेंट कब होगी?

उत्तर: देखो बेटा, तुम बहुत छोटे हो। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, शिक्षा ग्रहण करो, और माता-पिता का आशीर्वाद लो। तुम पाँचवीं कक्षा में हो। यदि संभव हो तो अपने माता-पिता से कहो कि तुम्हें पढ़ने के लिए भागवत ग्रंथ दें। उसे 10-15 मिनट पढ़ने से न केवल तुम्हारे परिवार का कल्याण होगा, बल्कि तुम्हारा भविष्य, एकाग्रता, शिक्षा, आयु और बल भी बहुत बढ़ेगा। तुम्हें जीवन में सुख मिलेगा। ठीक है बेटा? इतना कर लो।

► यह उत्तर सुनें · 23:00 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 523 मालिका के माध्यम से हमें पता चला है कि मुस्लिम देश भारत पर आक्रमण करेंगे, और ओडिशा को छोड़कर शेष देश मुस्लिम नियंत्रण में आ जाएगा। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।

उत्तर: देखिए, मालिका में ऐसा बिल्कुल भी नहीं लिखा है। मालिका में जो लिखा है वह यह है कि तेरह मुस्लिम देश, पाकिस्तान और चीन के साथ मिलकर, भारत के विरुद्ध युद्ध करेंगे। लेकिन भगवान कल्कि इन सभी देशों पर भारत की विजय सुनिश्चित करेंगे। पूरे भारत और विश्व में सनातन धर्म का ही बोलबाला होगा। मुस्लिम और चीनी सेनाएँ दोनों ओडिशा आएँगी और भगवान कल्कि से युद्ध करेंगी। उस युद्ध में विदेशी सेनाओं के 14 लाख सैनिक मारे जाएँगे। तो, जैसा आपने कहा वैसा कुछ भी होने वाला नहीं है। शास्त्र अपनी धारा से चलते हैं। आने वाले समय में सनातन धर्म प्रकाशित होगा। हम केवल सत्य कहते हैं, वह धारा जो भगवान ने दी है। पापियों का विनाश होगा, और धर्मात्माओं की रक्षा होगी। पापी विश्व में कहीं भी हों, वे बच नहीं पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:09 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 524 राजा परीक्षित ने शुक्रताल में भागवत सुनी थी। तो क्या भगवान कल्कि भी यहाँ आएँगे? क्या कल्कि पहले ही इस स्थान पर आ चुके हैं?

उत्तर: भगवान पहले ही आ चुके हैं। जब भगवान आते हैं, तो वे विश्व और ब्रह्मांड के सभी तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हैं, लेकिन वे यह गुप्त रूप से करते हैं। भक्त जानते हैं। तो यह पहले ही हो चुका है, क्योंकि यह एक पवित्र, पावन स्थान है।

► यह उत्तर सुनें · 26:11 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 525 क्या भगवान कल्कि कोलकाता का भ्रमण कर चुके हैं?

उत्तर: देखो बेटा। मैं यह पहले भी कह चुका हूँ, पिछले एपिसोड में। भगवान जाकर दर्शन कर चुके हैं। और यदि आवश्यकता हुई, तो भगवान भविष्य में फिर जा सकते हैं। यह भगवान पर निर्भर करता है।

► यह उत्तर सुनें · 27:01 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 526 मुझे एक दृष्टि हुई थी कि माता वैष्णो देवी आई हैं और उनके लिए एक मंदिर बनाना है। क्या आपके पास इसके बारे में कोई जानकारी है?

उत्तर: बेटा, माता वैष्णो देवी धर्म की स्थापना में भगवान के साथ कार्य करेंगी। तुम्हें जो दृष्टि हुई वह सच्चा दर्शन है। माता भी अपने भक्तों के पास आती हैं। रही बात माता के लिए मंदिर बनाने की, तो उनका मंदिर त्रिकूट में पहले से ही विद्यमान है। और सत्य युग में, माता के मंदिर कई अन्य अलग-अलग स्थानों पर भी प्रकाशित होंगे, और भक्तों को उनके दर्शन होंगे। तो, तुम्हें माता की सेवा में कार्य करना चाहिए, अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:48 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 527 चूँकि भगवान सबके लिए समान हैं, तो धर्म की स्थापना के लिए भगवान कल्कि सबका हृदय ही क्यों नहीं बदल देते? इतने विनाश की क्या आवश्यकता है? वे भगवान हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं, है ना?

उत्तर: देखो बेटा। मानव समाज में परिवर्तन का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि मानवता में अब धर्म की इच्छा ही नहीं रही। भगवान ने पृथ्वी इसलिए बनाई थी कि सबको समान अधिकार मिले और सब एक-दूसरे की सहायता करें, लेकिन अब असमानता, स्वार्थ और क्रूरता है। देखो कितना पशु-वध होता है। पृथ्वी केवल मनुष्यों के लिए नहीं बनाई गई थी। हजारों वर्षों से अनेक संतों ने मानवता को धर्म के मार्ग पर लाने का प्रयास किया, लेकिन उनकी बातों का कोई असर नहीं होता। मनुष्य ने अपने कर्मों से पूरी जलवायु को प्रदूषित कर दिया है, जिससे ध्रुव पिघल रहे हैं। यदि पृथ्वी नहीं बचेगी, तो मानवता नहीं बचेगी। इसलिए पहले पापियों का विनाश करके पृथ्वी का सुधार करना होगा। भगवान पापियों का नाश करने के लिए आते हैं, धर्मात्माओं के लिए नहीं। वे पापियों का विरोध करने और धर्म तथा ब्रह्मांड के संतुलन की रक्षा करने आते हैं। संसार को बचाना भगवान का कर्तव्य है, और वे वही करेंगे जो आवश्यक है, जो भक्तों और पवित्र आत्माओं के लिए अच्छा होगा, और जो संसार के दुर्भाग्य का कारण हैं उनका वे विनाश करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:36 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 528 आपने एक बार कहा था कि जो लोग सत्य युग में जाएँगे, उनका शरीर दिव्य हो जाएगा। हमें यह कब पता चलेगा? और हमारे शरीर में अचानक कौन से परिवर्तन होंगे? क्या यह सबके साथ होगा?

उत्तर: देखिए, जो मार्ग हम आप सबको बताते हैं—शाकाहारी बनना, त्रिसंध्या करना (दिन में तीन बार प्रार्थना), प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़ना, दान करना, और सनातन धर्म का प्रचार करना—जो लोग इन कार्यों में लगे रहेंगे, वही सत्य युग के बीज बनेंगे। केवल उन्हीं लोगों के शरीर से, भगवान की दिव्य शक्ति के प्रभाव से, रोग और वृद्धावस्था के प्रभाव दूर हो जाएँगे। सबको दिव्य शरीर प्राप्त होगा। यह परिवर्तन उन पुण्यात्मा लोगों के लिए है जो सनातन धर्म से जुड़े हैं, जो कलियुग से सत्य युग में जाएँगे, और जो भगवान कल्कि की शरण में रहेंगे। लिखा है कि सुदामा वृद्ध हो गए थे और चल नहीं पाते थे, लेकिन भगवान के आशीर्वाद से उन्हें नया जीवन मिला। इस युग में भी भगवान भक्तों को इसी प्रकार बचाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:05 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 529 सत्य युग कब आएगा?

उत्तर: जब आप सब उस सत्य के मार्ग पर, जिस पर आप अभी हैं, पूर्ण रूप से चलेंगे... जब आप इस धारा का पूरी तरह अनुसरण करेंगे। जब आप जैसे पुण्यात्मा लोग, हमारी मालिका के अनुसार, समाज में और पूरे विश्व में एकत्र होंगे, तब धर्म की स्थापना होगी और सत्य युग का आगमन होगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:54 · 7 नवम्बर 2021

सत्र 26 · प्रश्न 530–531

L24.1 सम्पूर्ण विश्व को भूकंप ग्रास करेगा LIVE

दिनांक: 7 नवम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 530 मैंने सुना है कि जब लोग पानी के लिए खुदाई करते हैं, तो कभी-कभी पानी की जगह आग निकल आती है। क्या यह सच है, और इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि मानवता अपने सिद्धांतों में भ्रष्ट हो गई है। व्यक्ति केवल अपना ही हित देखता है, संसार का नहीं। भगवान ने जो शरीर दिया है वह अपने आपको देखने के लिए है, परंतु संसार का कल्याण भी आवश्यक है। मानवता के लिए भगवान और वेदों के मार्ग पर चलना नितांत आवश्यक है। जब कोई पानी के लिए खुदाई करता है, तो आग निकल आती है। मैंने अपने जीवन में यह नहीं देखा, परंतु जब प्रकृति और व्यक्ति के कर्म एक-दूसरे के विरोध में होते हैं, तब ऐसे लोगों के लिए पानी की जगह आग निकलती है। और आप सही कह रहे हैं, वह आग बुझाई नहीं जा सकती। Bhavishya Malika ऐसा ही कहती है। मेरे विचार अचानक बदल गए; कर्मों के फल के कारण संसार में ऐसे परिवर्तन भी होते हैं। यह तो बस एक छोटा-सा संकेत है; आने वाले समय में आप संसार में ऐसे अनेक उलझन भरे संकेत देखेंगे। यह बहुत अच्छी बात है कि आप इसे देखते हैं और समझते हैं। Bhavishya Malika के मार्ग पर चलिए, सनातन धर्म से जुड़िए, और संसार में धर्म का प्रभाव फैलाने के लिए कार्य कीजिए। यही सबसे अच्छा होगा। जय जय माँ।

► यह उत्तर सुनें · 11:40 · 7 नवम्बर 2021

प्रश्न 531 मैंने एक स्वप्न देखा कि एक गाँव पर भारी बमबारी हो रही है। पहली बार की बमबारी में बहुत से लोग रो रहे थे, और ऐसा लग रहा था जैसे अंत आ गया हो। फिर दूसरी बार शुरू हुआ, और लड़ाकू विमानों से बम गिराए जा रहे थे। बम हमारे पास गिरते थे पर फटते नहीं थे; वे बस गेंद की तरह उछल जाते थे। मैं गाँव से भागकर सड़क के किनारे आ गया। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो पूरा गाँव मिट चुका था। इसका क्या अर्थ है, पंडित जी? कृपया बताइए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। आप सब भी सुनिए। ये जो हमारे सत्संग में बता रहे हैं... एक समय आएगा जब बमबारी से पूरा का पूरा गाँव एक ही बार में नष्ट हो जाएगा। परंतु भगवान इन्हें सूचित करना चाहते हैं, इसलिए वे इन्हें स्वप्न में यह दिखाते हैं, यह कहते हुए कि 'देखो, यह समय आ रहा है।' उस समय के आने से पहले ही इन्हें बताया जा रहा है। तो ऐसा समय आएगा, जैसा कि Bhavishya Malika में लिखा है, कि कुछ स्थानों पर, संसार के अनेक नगर और भारत के गाँव पूरी तरह नष्ट हो जाएँगे। कभी बमबारी से, कभी भारी वर्षा से, और कभी आकाश से गिरने वाली उल्काओं से।

► यह उत्तर सुनें · 13:12 · 7 नवम्बर 2021

सत्र 27 · प्रश्न 532–561

L25 वर्तमान के समय में बच्चे लोग को पिता-माता को क्या शिक्षा प्रदान करना जरूरी है? LIVE

दिनांक: 14 नवम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 532 चेन्नई और दक्षिण भारत के अन्य भागों में जो विनाशकारी वर्षा हम देख रहे हैं, उसका क्या महत्व है?

उत्तर: यह पंचभूतों के महाप्रलय की एक झलक है, और आगे चलकर यह और बढ़ेगी। मैंने पहले भी इसका उल्लेख किया था। यह वर्षा किसानों के लिए लाभकारी नहीं होगी; यह हानिकारक होगी क्योंकि यह गलत समय पर, फसल कटाई के समय आएगी, जिससे विनाश होगा। संसार के लोग बहुत परेशान होंगे। केवल किसान ही नहीं, बल्कि छोटे और मध्यम स्तर के उद्योगों वाले मध्यम वर्ग के लोग भी भारी समस्याओं का सामना करेंगे। आज लोग सोचते हैं कि वे अपनी नौकरी से सुखी हैं, परंतु यदि संसार को बचाना है तो उन्हें धर्म का आचरण भी करना चाहिए। यह प्रलय केवल जल का नहीं होगा; अग्नि का प्रलय, भूकंप और सामाजिक अशांति भी होगी। वायु प्रदूषित होगी, जिससे रोग फैलेंगे। दक्षिण में आप जो बाढ़ अभी देख रहे हैं, भविष्य में वह 10, 15 या 100 गुना अधिक तीव्र होगी। बचने का एकमात्र उपाय है भगवान की शरण लेना, मालिका और श्रीमद्भागवत का पाठ करना, दिन में तीन बार त्रिसंध्या करना, और निरंतर भगवान के नाम का जप करना। ऐसा करने से हम संसार पर आने वाली विपत्तियों से सुरक्षित रह सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:55 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 533 पंडित जी, मैं यह पूछना चाहता था कि इस युग में जिन लोगों की अकाल मृत्यु हुई है, क्या वे सत्य युग में वापस आएंगे? उनकी अकाल मृत्यु का अर्थ है कि उनका कुछ कार्य अधूरा रह गया। क्या वे सत्य युग में लौटकर आएंगे?

उत्तर: यह बहुत बड़ा पर आवश्यक प्रश्न है। देखिए, यह ऐसा ही है जैसे कोई समुद्र में जाकर खो जाए और उसका कुछ पता न चले। इसी प्रकार, जब कोई व्यक्ति मरता है, यदि उसने पर्याप्त पुण्य संचित किया है, आपका घर पवित्र है, आपकी भगवान में भक्ति है, आप सनातन धर्म के मार्ग पर चलते हैं, और आप इसके लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं, तो मैं आशा कर सकता हूँ कि उनका पुनर्जन्म आपके परिवार में या कहीं और हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 15:35 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 534 नेपाल में जनकपुर मंदिर और पशुपतिनाथ मंदिर ईसाई मिशनरियों के निशाने पर हैं। इस पर आपका क्या मत है?

उत्तर: नेपाल एक पवित्र भूमि है। भगवान उस भूमि पर आए थे। माता सीता की जन्मभूमि को कोई नहीं बदल सकता। यह हिंदू राष्ट्र था, है और रहेगा। पशुपतिनाथ मंदिर सुरक्षित रहेगा; उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नेपाल में भूकंप आएगा, परंतु युद्ध से होने वाला विनाश उतना गंभीर नहीं होगा। मैं स्वयं दो वर्ष पहले जनकपुरी और भगवान पशुपतिनाथ के मंदिर गया था और वहाँ आनंद का अनुभव किया। यह भगवान के आशीर्वाद से युक्त पवित्र स्थान है, इसलिए इसके विषय में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 17:13 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 535 मक्केश्वर महादेव के विषय में मालिका में क्या लिखा है, और मन को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है?

उत्तर: ये मक्केश्वर महादेव मक्कासर राज्य में विद्यमान हैं। सत्य युग के काल में, भगवान कल्कि के अवतरण के समय, भक्तगण उनके विषय में सब कुछ जान जाएंगे। दूसरे भाग के संबंध में, मन को नियंत्रित करने के लिए प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का एक अध्याय पढ़ें, त्रिसंध्या करें, और सदैव भगवान के नाम का जप करें। ऐसा करने से मन पर नियंत्रण धीरे-धीरे आरंभ हो जाएगा। कुछ दिनों बाद यह सफल होगा क्योंकि जब आपके शरीर पर आध्यात्मिक प्रभाव होगा, तो तामसिक गुणों का प्रभाव, जो पाँच इंद्रियों के माध्यम से भटकाव पैदा करते हैं, धीरे-धीरे कम होता जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:58 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 536 पश्चिम बंगाल के भविष्य, अखंड भारत की अवधारणा, और हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों के विषय में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: भारत का जो विभाजन हुआ था, वह समाप्त हो जाएगा। वे सभी भाग जो भारत के साथ थे, जहाँ आर्य शासन व्यवस्था विद्यमान थी, वे सभी देश भारत के साथ होंगे। यह एक ही भूमि होगी, अखंड भारत। चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान... ये सभी देश, श्रीलंका को छोड़कर, भूटान सहित, एक शासन के अधीन एक विशाल भूखंड बनेंगे, जो आर्यावर्त या अखंड भारत है। जहाँ तक हिंदुओं पर अत्याचारों की बात है, वहाँ उनकी संख्या अधिक है, और यह कलियुग का काल है, इसलिए धर्म पर आक्रमण होंगे। हमें सही समय की प्रतीक्षा करनी होगी, धर्म के मार्ग पर चलना होगा, और समय के साथ उन्हें न्याय मिलेगा। सभी लोगों को उनके अधिकार मिलेंगे और वे शांति से रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:40 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 537 पुराणों के अनुसार, नर और नारायण पर्वत आपस में मिल जाएंगे, जिससे केदारनाथ और बद्रीनाथ का मार्ग बंद हो जाएगा। उनके स्थान पर भविष्य बद्री और भविष्य केदार प्रकट होंगे। क्या आप बता सकते हैं कि यह भगवान कल्कि के आगमन से पहले होगा या बाद में?

उत्तर: मालिका और मेरे द्वारा पढ़े गए सभी शास्त्रों के अनुसार, बद्रीनाथ सत्य युग में भी विद्यमान थे। भगवान कृष्ण के परम भक्त उद्धव द्वापर युग में पैदल चलकर उस क्षेत्र में गए, तपस्या की, और मोक्ष प्राप्त किया। सत्य युग में, जब सनत कुमारों का जन्म हुआ, तो महर्षि नारायण ने वहीं उन्हें उपदेश दिया था। चारों भाई, जो भगवान के अवतार थे, उन्होंने वहाँ तपस्या की। तो बद्रीनाथ सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग में विद्यमान थे, और कलियुग में भी विद्यमान हैं। यह प्रचार कि दोनों पर्वत मिल जाएंगे और बद्रीनाथ तथा केदारनाथ बंद हो जाएंगे, पूर्णतः असत्य है। ऐसा कुछ भी होने वाला नहीं है। तीर्थस्थल बना रहेगा, और लोग वहाँ जाते रहेंगे। चार धाम—बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम और जगन्नाथ पुरी—आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित किए गए थे। ये चारों धाम प्रत्येक युग में रहेंगे। बद्रीनाथ की स्थिति वैसी नहीं रहेगी जैसी अभी है, परंतु मार्ग बना रहेगा। पर्वत उस प्रकार नहीं मिलेंगे जैसा वर्णन किया जाता है, क्योंकि यह स्वयं भगवान का क्षेत्र है और सत्य युग में भी ऐसा ही रहेगा। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:31 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 538 मुझे अपने पिता की मृत्यु के विषय में एक विस्तृत व्यक्तिगत अनुभव हुआ था—दर्शन में भगवान कृष्ण को देखना, और मेरे पिता का मोक्ष प्राप्त करना। मैंने एक भोज के समय अपने पिता को संत के रूप में भी देखा, और बाद में नीलगिरि पर्वत में अपने पिता और अपने गुरु के विषय में एक स्वप्न देखा, जो मुझे भगवान जगन्नाथ तक ले गया। इन सभी अनुभवों का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत बड़ी बात है। भगवान अपने भक्तों की इच्छाएँ पूर्ण करते हैं। आपकी इच्छा थी कि जब भी आप भगवान को पुकारें, वे प्रकट हों, और जब आपने अपने पिता की मृत्यु के समय उन्हें पुकारा, तो भगवान आए, उन्हें दर्शन दिए, और आपके पिता ने सिर झुकाकर वैकुंठ प्राप्त किया। आपकी इच्छा पूर्ण हुई। दूसरी बात, अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आप द्वारका गए। भगवान ने, आपके पिता की इच्छा पूर्ण करने के लिए, उन्हें संत के रूप में भेजा। वे आए, आपके भोज में सम्मिलित हुए, और अपना कार्य पूरा होने के बाद वैकुंठ लौट गए। तीसरी बात, भगवान कृष्ण की कृपा से आपको नीलगिरि पर्वत का जो दर्शन हुआ, वह भगवान कल्कि के अवतार का संकेत है। नीलगिरि के भगवान जगन्नाथ स्वयं ही कल्कि अवतार हैं। इसलिए, आने वाले समय में आपको धर्म की स्थापना के लिए और कल्कि अवतार के लिए कार्य करना चाहिए। भगवान ने आपकी इच्छा और आपके पिता की इच्छा पूरी की, उन्हें दो बार उस स्थान पर भेजकर। अब, धर्म की स्थापना के लिए भगवान पहले ही अवतार ले चुके हैं। हम जो मार्ग दिखा रहे हैं, उस पर चलिए, क्योंकि भगवान कृष्ण ने द्वापर युग में भक्तों की रक्षा की थी, और भगवान कल्कि, कृष्ण के रूप में, इस युग में आ चुके हैं। आप सभी को इस मार्ग पर आना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 27:11 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 539 हमारे सभी सिद्ध पीठों के संबंध में—जल, अग्नि और पंचभूतों द्वारा प्रलय के समय, ये सिद्ध पीठ कैसे बचेंगे? मालिका में इस विषय में क्या लिखा है?

उत्तर: रामेश्वरम, कामाख्या मंदिर, बद्रीनाथ, द्वारकाधीश मंदिर और जगन्नाथ क्षेत्र जैसे पवित्र सिद्ध पीठ सभी सुरक्षित और पवित्र रहेंगे। प्रलय के समय कुछ मामूली क्षति हो सकती है, परंतु ये स्थल प्रत्येक युग में विद्यमान रहेंगे क्योंकि भगवान कृष्ण और भगवान राम ने भारत का भ्रमण किया था। इस युग में भगवान पुनः भ्रमण करेंगे, और कलियुग के अंत के बाद भी ये स्थान बने रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:42 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 540 क्या लोगों को भगवान के चरणों के दर्शन हुए हैं? उन पर कौन से चिह्न हैं?

उत्तर: मालिका में लिखा है: 'दाहिने चरण में अंकुश [हाथी को हाँकने का अंकुश] का चिह्न है, और बाएँ चरण में आधी गदा का चिह्न है।' परंतु यह सबको देखने को नहीं मिलेगा। केवल शुद्ध और योग्य भक्तों को ही उनके दर्शन प्राप्त होंगे। भगवान सबको घूम-घूमकर अपने चिह्न नहीं दिखाएँगे कि 'मैं धर्म की स्थापना के लिए आया हूँ, मेरे चरणों के चिह्न देखो।' यह वैसा नहीं है जैसा कलियुग में कुछ साधु-संत करते हैं। यह भक्ति और पवित्रता का मार्ग है। जिनमें उस स्तर की भक्ति होगी, वे ही उन्हें पहचान पाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:59 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 541 पंडित जी, भगवान राम और भगवान कृष्ण अपने परिवार के साथ रहे। इस संदर्भ में, भगवान कल्कि कहाँ रहते हैं? क्या वे अपने परिवार के साथ रहते हैं, या कहीं दूर किसी आश्रम में? कृपया इस बारे में कुछ जानकारी दीजिए।

उत्तर: वे गृहस्थ जीवन जिएँगे। भगवान कल्कि भी एक मनुष्य ही होंगे; उनका रूप किसी साधु या संत जैसा नहीं होगा। वे एक सामान्य व्यक्ति की तरह होंगे और धर्म की स्थापना करेंगे। वे अपने भक्तों से जुड़ेंगे, मित्रों और संबंधियों का एक परिवार बनाएँगे, और सब मिलकर धर्म की स्थापना का कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:05 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 542 कहा जाता है कि कलियुग में त्रिजटा का वंश 13 पीढ़ियों तक चलेगा। क्या वे सभी 13 पीढ़ियाँ जन्म ले चुकी हैं?

उत्तर: सुनिए, लिखा है कि त्रिजटा का वंश 13 पीढ़ियों तक चलेगा, और 13वीं पीढ़ी के बाद उनके वंश में कोई नहीं बचेगा। और जैसा कि आप भली-भाँति जानते हैं, त्रिजटा के वे वंशज जो भारत में कार्यरत थे—मैं सब कुछ नहीं कहूँगा, क्योंकि इस प्रश्न का पूरा उत्तर देने से सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं—जिनके हाथ में भारत में सत्ता के पद रहे, उनका परिवार 13 पीढ़ियों तक चलेगा। और अब भी उनकी अंतिम पीढ़ी के जो हैं, उनका विवाह नहीं हुआ है। वंश वहीं समाप्त हो जाता है। 13 पीढ़ियाँ पूरी हो चुकी हैं, लेकिन कलियुग का अंत अभी नहीं आया है। यही प्रमाण है, है न?

► यह उत्तर सुनें · 38:28 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 543 द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने गुरु दक्षिणा के रूप में अपने गुरु सांदीपनि के पुत्र को उसी शरीर में वापस जीवित कर दिया था। मैं पूछ रहा हूँ, यदि भगवान दयालु हैं, तो क्या वे मेरे पिता को उसी रूप में वापस ला सकते हैं?

उत्तर: बाबा, आपके पिता अगले जन्म में पुनर्जन्म लेने वाले हैं, यही मुझे दिखाई देता है। उनका पुनर्जन्म होगा। पुनर्जन्म हो जाने के बाद वे उसी रूप में कैसे लौट सकते हैं? देखिए, यदि आप सब भक्ति और समर्पण की स्थिति में बने रहें, और जब भगवान कल्कि सुधर्म सभा (धर्म की सभा) करेंगे, उस समय भगवान कल्कि अपने सभी भक्तों की इच्छाएँ पूर्ण करेंगे। यदि आपकी पवित्रता और भक्ति उस स्तर तक पहुँच सके, तो उस समय भक्त भगवान से जो भी माँगेंगे, वे उनकी इच्छा पूरी करेंगे। यह भी शास्त्रों में लिखा है। इसलिए समय की प्रतीक्षा कीजिए और अपने कर्मों पर विचार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 39:46 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 544 हम सब कुछ करते हैं—त्रिसंध्या, नाम जप, छोटे बच्चे भी करते हैं। लेकिन हमें भगवान के दर्शन का संदेश नहीं मिला, और इससे मैं बहुत व्यथित हूँ। हम भागवत महापुराण पढ़ते हैं, जप करते हैं, फिर भी भगवान तक नहीं पहुँच पाते। ऐसा क्यों?

उत्तर: धैर्य से सुनिए। भगवान के पास आना, उनके दर्शन करना, भगवान के साथ रहना—इन सब बातों में अनेक बाधाएँ आती हैं। भक्त अपनी शुद्ध भक्ति में... प्रभु, कृपा कीजिए... भगवान आपको दर्शन देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:45 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 545 लगभग एक साल पहले मैंने एक स्वप्न देखा। पूरा संसार अंधकारमय था, और आग की वर्षा होने लगी। मैंने अपने परिवार और बच्चों को इकट्ठा कर एक सुरक्षित स्थान के भीतर कर लिया। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि भगवान आपको बुला रहे हैं और कह रहे हैं, 'मैं आ चुका हूँ, धर्म की स्थापना होने वाली है। स्वयं को बदलो और मेरे साथ रहो, सनातन धर्म के लिए कार्य करो।' यह स्वप्न एक आदेश है। यदि वे स्वप्न में आते हैं, तो यह प्रमाण है कि उनका अवतार हो चुका है। दूसरी बात, मालिका में लिखा है कि आकाश से अनेक उल्कापिंड गिरेंगे। भक्तों को हानि नहीं होगी, परंतु अनेक वन और नगर जलकर राख हो जाएँगे। यह भविष्य में होने वाला है। तो जो आपने देखा, वही भविष्य में होने वाला है, और संसार उसका साक्षी बनेगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:12 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 546 मैं वेदों और सनातन धर्म का अनुसरण करता हूँ, और सनातन धर्म में मैं निराकार ईश्वर की उपासना करता हूँ। मेरा परिवार मूर्ति पूजा करता है, पर मैं नहीं करता। क्या मेरी पूजा पद्धति का कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: एक बात बताता हूँ। द्वापर युग में क्या गोपियाँ और ग्वाले भगवान कृष्ण की तस्वीर की पूजा करते थे? उस समय क्या मूर्ति पूजा थी? नहीं। कलियुग में मनुष्य के मन को स्थिर करने के लिए, क्योंकि लोग इतने पवित्र नहीं हैं कि प्रत्यक्ष रूप से भगवान को देख सकें, उनसे बात कर सकें और उनके साथ बैठ सकें, इसलिए मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ। जब कलियुग बदलकर सत्ययुग होगा, तब भक्त भगवान से प्रत्यक्ष मिलेंगे, उनसे बात करेंगे और प्रत्यक्ष रूप से उनकी पूजा करेंगे। भक्ति ही सबसे महत्वपूर्ण है। मंदिर में एक-दो घंटे पूजा करने से भगवान प्रसन्न होते हैं, लेकिन जिसके हृदय में भक्ति और कर्मों में पवित्रता है, वही भगवान को प्राप्त करता है। यह बिल्कुल सही है। देखिए, सभी भक्तों को भगवान कल्कि की शरण लेनी होगी, क्योंकि वे ही संसार पर शासन करेंगे। जब वे मनुष्य रूप में धरती पर आ चुके हैं, तो आप सबको उनकी शरण लेनी ही होगी। पवित्रता के साथ उनके मार्ग पर चलना भी आवश्यक है। इसीलिए मालिका लिखी गई, इसीलिए मैं मालिका का प्रचार कर रहा हूँ, सबको युग के अंत के बारे में बता रहा हूँ। अन्यथा सब वैसे ही चलता रहता, और भक्त तथा भगवान का कभी मिलन नहीं होता। इसीलिए आपको यह स्वप्न आया, ताकि आप अच्छा कार्य कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 45:30 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 547 सुधर्म महासंघ का गठन कब होगा? क्या यह महामिलन (मिलन) से पहले होगा या बाद में?

उत्तर: मालिका के अनुसार, सुधर्म महासंघ के सभी सदस्य एक स्थान पर एकत्र होंगे। उसके बाद सुधर्म सभा होगी, और भगवान कल्कि 16 मंडलों (क्षेत्रों/समूहों) की स्थापना करेंगे। इन 16 मंडलों के बारे में मैं पहले भी बता चुका हूँ। भक्त इन मंडलों के अंतर्गत कार्य करेंगे। भगवान कल्कि एक ओर भक्तों को रखेंगे और दूसरी ओर पंचतत्वों के माध्यम से, युद्ध के माध्यम से और महामारियों के माध्यम से समस्त ब्रह्मांड में विनाश का कार्य करेंगे। छोटे स्तर का विनाश तो पहले से ही हो रहा है, और सुधर्म महासंघ के गठन और उसके विस्तार के बाद यह और बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:28 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 548 चारों युगों के बाद क्या होता है? क्या ब्रह्म प्रलय होती है, जिसमें सूर्य, चंद्रमा और तारों सहित सब कुछ एक महासागर में विलीन हो जाता है?

उत्तर: हाँ, चारों युगों के बाद ब्रह्म प्रलय होती है, जिसमें आकाश, सभी तारे, चंद्रमा और सूर्य, अनंत ब्रह्मांडों तक, सब एक महासागर बन जाते हैं। सब कुछ उसी में विलीन हो जाता है, और सारी वस्तुएँ सुप्त अवस्था में रहती हैं। फिर भगवान नए सूर्य, चंद्रमा, तारे और सब कुछ नए सिरे से रचते हैं। इस समय हम कलियुग से अनंत युग, अर्थात संगम युग की ओर बढ़ रहे हैं। शीघ्र ही हम सत्ययुग में प्रवेश करेंगे। सत्ययुग 10,000 वर्षों तक रहेगा, अथवा जब तक भगवान की इच्छा हो। उसके बाद ब्रह्म प्रलय होगी, और सभी मनुष्य तथा जीव नष्ट हो जाएँगे। फिर नई सृष्टि आरंभ होगी। यह चक्र चलता रहता है। इसका वर्णन श्रीमद्भागवत में लिखा है। भक्ति के मार्ग पर चलिए; केवल भक्ति से ही मुक्ति मिल सकती है। ज्ञान का मार्ग तो केवल मानसिक रूप से बातों को समझने में सहायक होता है, परंतु भक्ति भागवत से जन्म लेती है। भागवत एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें शुद्ध भक्ति के सिवा और कुछ नहीं है। इसीलिए 18 पुराणों में इसे महापुराण कहा जाता है। जो श्रीमद्भागवत पढ़ता है, उसे सभी 18 पुराण पढ़ने का फल मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 49:39 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 549 आपने कहा है कि हमें भागवत पढ़ना चाहिए। मेरा प्रश्न यह है कि क्या हमें केवल उसमें लिखा हुआ पढ़ना चाहिए, या उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना और लागू भी करना चाहिए? पढ़ना एक बात है, और उसे जीवन में उतारना दूसरी बात।

उत्तर: देखिए बाबा, हमारी आर्य परंपरा यह है कि हम जो कहते हैं, वही करते हैं। जिसका हम स्वयं पालन करते हैं, वही समाज को बताते हैं। यही आर्य परंपरा और वैदिक मार्ग का नियम है। इसलिए श्रीमद्भागवत में हम जो पढ़ते हैं, उसे अपने जीवन और सामाजिक आचरण में पूरी तरह उतारना चाहिए। ऐसा करके हम सत्ययुग के धर्मनिष्ठ मनुष्य बन सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 51:40 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 550 जब मैं 'माधव, माधव' का जप करता हूँ, तो मैंने एक आवाज़ सुनी, 'भक्त, मैं आ गया हूँ।' मुझे कमल और शंख धारण किए एक स्वरूप के दर्शन भी हुए, और एक और अनुभव हुआ जिसमें मैंने भगवान के चरण पकड़े और फिर उनके साथ नृत्य किया। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, कृपया इन अनुभवों का और मुझे मिल रहे संदेश का अर्थ समझाइए।

उत्तर: यह बहुत आनंद की बात है। जो अनुभव आपको हो रहे हैं, ऐसे ही अनुभवों के बारे में कई और भक्त भी मुझे फोन करके बताते हैं। देखिए, जो भगवान के नाम का जप करते हैं, और विशेष रूप से जो मालिका के अनुसार सनातन धर्म के सुधर्म संघ में कार्य कर रहे हैं, और जिनके हृदय में पवित्रता है, भगवान उनमें से हर एक के घर जाते हैं। वे हर भक्त के पास जाते हैं और उन्हें प्रमाण देते हैं कि 'मैं आ चुका हूँ।' प्रलय का समय निकट है। यह अनुभव भगवान की उपस्थिति का आपका अनुभव है। केवल आपको ही नहीं, अनेक भक्तों को यह अनुभव हो रहा है। इसका अर्थ है कि आने वाले समय में जो भगवान के भक्त होंगे, भगवान कल्कि के भक्त होंगे, उन्हें ऐसे अनुभव होते रहेंगे। वह समय आएगा जब आप भगवान से मिलेंगे और वानर सेना की तरह मिलकर धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। यह बहुत पवित्र है और यह भगवान की उपस्थिति है। जब भक्त पुकारता है, तो भगवान अवश्य जाते हैं और उसके घर में उपस्थित होते हैं। बहुत से लोग यह अनुभव करते हैं। आप एक पवित्र आत्मा हैं, इसीलिए आपको यह अनुभव हुआ। यह बहुत अच्छा है। अपनी भक्ति बढ़ाइए, भगवान के पक्ष में रहिए, और सनातन धर्म के लिए कुछ कार्य कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 52:42 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 551 मेरी माँ को बार-बार सपने आ रहे हैं कि भारत के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम हिस्सों में बम विस्फोट हो रहे हैं। यह सपना उन्हें एक बार नहीं, बल्कि कई दिनों से आ रहा है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, आने वाले समय में पूरे भारत और समस्त ब्रह्मांड पर युद्ध का साया मंडराएगा। बम विस्फोट होंगे, आकाश से उल्कापिंड गिरेंगे, बाढ़ आएगी और भूकंप आएंगे। यह सब भविष्य में होने वाला है। जो मालिका में लिखा है, प्रभु आप सबको उसका संकेत दे रहे हैं, पहले से सावधान कर रहे हैं। 'देखो, यह समय आ रहा है।' यह समझकर, और यह समझकर कि यह धर्म स्थापना का समय है, जो मार्ग दिखाया जा रहा है, उस पर आपको चलना होगा। यह प्रभु का मार्ग है, प्रभु से मिलने का मार्ग है, और सत्य को जानने का मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 56:00 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 552 जो लोग दूसरे धर्मों से जुड़े हैं, उनका क्या होगा? जैसे जो दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ते हैं और अच्छे इंसान हैं, पर हमारे सनातन धर्म से जुड़े नहीं हैं। आने वाले 5-6 वर्षों में, जब नया सत्य युग शुरू होगा, तब जो माधव की उपासना करते हैं वे जाएँगे। दूसरे धर्मों के लोगों का क्या होगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा और महत्वपूर्ण प्रश्न है। सब सुनिए। संसार में जब तक कलियुग है, तब तक अनेक धर्म हैं। जब सत्य युग आएगा, तब एक ही धर्म और एक ही मार्ग होगा। जो माधव का नाम जपते हैं, सनातन धर्म के साथ हैं, सत्संग में आते हैं, धर्म स्थापना के लिए कार्य करते हैं, और अभी से भगवान कल्कि से जुड़े हुए हैं, वे निश्चित रूप से बचेंगे। वे प्रभु के सेवक और दूत बनकर पूरे विश्व में धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। जहाँ तक दूसरे धर्मों के अच्छे लोगों की बात है—और दूसरे धर्मों में भी अच्छे लोग हैं जो पवित्रता से जीवन जीते हैं और पशुओं की हत्या नहीं करते—ऐसे लोग भी सुरक्षित रहेंगे और सत्य युग के नागरिक बनेंगे। हो सकता है वे सुधर्म महासंघ को लागू करने के कार्य में शामिल न हों, लेकिन अपनी पवित्रता के कारण वे बचेंगे। उनमें से कुछ बचेंगे, और अंत में वे भी प्रभु की शरण में आएँगे और आगे चलकर सनातन धर्म को अपना धर्म बना लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 57:12 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 553 प्रभु जी, मुझे भगवान कृष्ण के सपने आते हैं। पर मैं भगवान कृष्ण से कहता हूँ कि मुझे भगवान कल्कि का सपना दिखाइए, फिर भी मेरे सपनों में केवल भगवान कृष्ण ही आते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर: जो भगवान कृष्ण हैं, वही भगवान कल्कि हैं। अगर तुम कल्कि का रूप देख लेते, तो डर जाते, मेरे बच्चे। इसीलिए प्रभु तुम्हें कृष्ण के रूप में दर्शन देते हैं। जब तुम बड़े हो जाओगे और उसे सह पाओगे, उस समय तुम उन्हें देखोगे, क्योंकि कल्कि अवतार बहुत ही संहारक, विध्वंसकारी और भयानक है, जिसे सहन करना कठिन है। इसीलिए वे कृष्ण के रूप में आते हैं। तुम बालक हो, इसीलिए वे ऐसा करते हैं। जो कृष्ण हैं, वही कल्कि हैं। बहुत अच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:19 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 554 क्या बीकानेर क्षेत्र में महाप्रलय या भूकंप आएंगे?

उत्तर: सिर्फ बीकानेर ही नहीं, बल्कि पूरे राजस्थान राज्य में महाप्रलय आएगा। युद्ध और भूकंपों के बाद, भविष्य के लिए कई नई नदियाँ भी निकलेंगी। जो नदियाँ लुप्त हो गई हैं वे फिर से प्रकट होंगी, और सत्य युग के लिए कुछ नई, अच्छी नदियाँ निकलेंगी, जिससे राजस्थान हरा-भरा हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:25 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 555 कौन-कौन से स्थान सुरक्षित क्षेत्र (सेफ ज़ोन) होंगे?

उत्तर: हर स्थान सुरक्षित क्षेत्र है। जहाँ प्रभु की कृपा है, वही सुरक्षित स्थान है। पूरा संसार नष्ट नहीं होगा। संसार चलता रहेगा, लेकिन पापियों का विनाश अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:57 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 556 जब लोग सत्य युग में जाएँगे, तो क्या उन्हें कलियुग याद रहेगा?

उत्तर: जब परिवर्तन होता है, तो मन भी परिवर्तित हो जाता है। जब व्यक्ति को नया शरीर मिलेगा, तो पिछले युग की स्मृतियाँ मिट जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:45 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 557 कलियुग के जो लोग अपने परिवार के साथ सत्य युग में जाएँगे, क्या वे वहाँ एक-दूसरे से मिलेंगे?

उत्तर: कलियुग के जो लोग अभी मालिका के माध्यम से सुधर्म और सनातन धर्म से जुड़ रहे हैं, वे और उनके परिवार जाएँगे। संसार बदलेगा, और वे भी बदलेंगे। सत्य युग में सबका रूपांतरण हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:27 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 558 क्या भगवान कल्कि कानपुर आएँगे या नहीं?

उत्तर: देखिए, प्रभु निश्चित रूप से हर क्षेत्र में जाएँगे क्योंकि धर्म की स्थापना पूरे ब्रह्मांड में, संसार में, और विशेष रूप से भारत में होनी है। जिन स्थानों का उल्लेख है, उन सब का वे भ्रमण करेंगे। कानपुर उस सूची में है या मार्ग में है, यह अलग बात है।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:57 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 559 पंडित जी, क्या भगवान कल्कि हमारे यहाँ भी आएँगे? अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: मैं जो आपसे कह रहा हूँ, अगर आप वह सब करेंगे, तो आपका सब कुछ ठीक हो जाएगा। त्रिसंध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और प्रभु का नाम जपिए। सनातन धर्म समूह से जुड़िए; वे आपका मार्गदर्शन करेंगे। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। आपका शरीर भी शुद्ध और स्वस्थ हो जाएगा। अपने वर्तमान आहार और जीवनशैली को बदलना आवश्यक है। सनातन धर्म समूह से जुड़िए; वे आपको बताएँगे कि क्या करना है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:10 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 560 क्या हमें अपने प्रभु के दर्शन होंगे या नहीं?

उत्तर: आपको अवश्य होंगे। (धर्म की) शरण में आ जाइए, और हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:06 · 14 नवम्बर 2021

प्रश्न 561 हिंदू धर्म की मुख्य नींव, जैसा कि हमने सुना है, वेद और उपनिषद हैं। तो क्या जो लोग वेद और उपनिषद पढ़ते हैं, वे सत्य युग तक नहीं पहुँच सकते?

उत्तर: देखिए, वेद और उपनिषद पढ़ने से व्यक्ति में पवित्रता आती है, लेकिन इससे भक्ति आ ही जाए, यह ज़रूरी नहीं। वह ज्ञान का मार्ग है। यदि वे भक्ति के मार्ग पर आ जाएँ, तो वे भगवान को प्राप्त करेंगे और सत्य युग में जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:50 · 14 नवम्बर 2021

सत्र 28 · प्रश्न 562–587

L26 राजा का शासन धर्म कैसा होना चाहिए? LIVE

दिनांक: 21 नवम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 562 पंडित जी, मैं मुंबई का निवासी हूँ। मलिका मुंबई के बारे में क्या कहती है? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: जय जगन्नाथ। यह पूरे मुंबई और महाराष्ट्र के लिए बहुत अच्छा प्रश्न है। भविष्य मलिका के अनुसार, मुंबई में महाप्रलय होगा और युद्ध का महाताण्डव होगा। भूकंप भी आएगा, लेकिन प्रलय और युद्ध का प्रभाव अधिक होगा। परंतु जो लोग मलिका के मार्ग पर चलेंगे और भगवान की शरण लेंगे, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। एक समय ऐसा आएगा जब पूरे ब्रह्मांड में जो 70% लोग पाप करते हैं, उनके लिए कोई स्थान नहीं बचेगा। जो 30% लोग वास्तव में सज्जन हैं और पवित्रता तथा धर्म के मार्ग पर चलते हैं, वे संसार में बचे रहेंगे और सब कुछ फिर से बनाएँगे। जय गण।

► यह उत्तर सुनें · 10:37 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 563 पंडित जी, मैं इंदौर से बोल रहा हूँ। क्या प्रभु जी (भगवान) अपने भक्तों को कोई दिव्य मंत्र देंगे? और क्या वे उसे ऑनलाइन देंगे, या भक्तों को उसे प्राप्त करने के लिए किसी सभा में आना होगा?

उत्तर: मलिका के अनुसार, भगवान कल्कि कोई खुली बैठक या सार्वजनिक सभा भक्तों के साथ नहीं करेंगे। वे इस प्रकार भक्तों से नहीं मिलेंगे। भगवान से मिलने का केवल एक ही मार्ग होगा: मलिका। मलिका का यह मार्ग, भविष्य मलिका, स्वयं भगवान द्वारा दिया गया शास्त्र है। स्वयं भगवान ने कहा है कि भक्त कैसे बचेंगे, वे भगवान से कैसे जुड़ेंगे, और मानव समाज की रक्षा कैसे होगी। इसके बारे में भविष्य मलिका में लिखा हुआ है। आप में से जो लोग मलिका सुनते हैं, उन्हें विश्व सनातन धर्म संगठन से जुड़ना चाहिए। एक समय ऐसा आएगा जब इंटरनेट नहीं होगा, और कंप्यूटर निष्क्रिय हो जाएँगे। ब्रह्मांड के सारे कंप्यूटर, सुपरकंप्यूटर, सारी मशीनरी—सब कुछ बंद हो जाएगा और काम करना बंद कर देगा। उस समय, जो लोग मलिका के मार्ग पर हैं, जो त्रिसंध्या करते हैं, जो भागवत पढ़ते हैं, और जो सनातन धर्म के लिए कार्य करते हैं, उन्हें एक अनुभूति, एक अनुभव होगा कि आने वाले विपरीत समय का सामना कैसे करना है और कैसे सुरक्षित रहना है। तो, एक समय ऐसा आएगा जब 'ऑनलाइन' का युग समाप्त हो जाएगा। भक्त अनुभव के माध्यम से भक्ति के मार्ग पर चलेंगे। बस इतना ही।

► यह उत्तर सुनें · 11:42 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 564 पंडित जी, आने वाले धर्म युद्ध में, क्या हम जैसे युवा उनकी सेना में होंगे? और उस भविष्य के सत्य युग में, क्या एटीएम, मोबाइल, टीवी और पेट्रोल से चलने वाले वाहनों जैसे मशीन से चलने वाले उपकरण अब भी रहेंगे?

उत्तर: देखिए, जब आध्यात्मिक युग (सत्य युग) आरंभ होगा और भगवान सनातन धर्म की स्थापना करेंगे, तब एक समय ऐसा आएगा जब कलियुग की यांत्रिक शक्ति समाप्त हो जाएगी। उस समय धर्म की शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति और मंत्र शक्ति प्रबल होगी। मंत्रों की शक्ति से लोग आकाश से जुड़ सकेंगे और एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा कर सकेंगे। युद्ध मंत्रों की शक्ति से लड़ा जाएगा। संसार के सभी लड़ाकू विमान, परमाणु हथियार और मिसाइल प्रणालियाँ मंत्रों की शक्ति से निष्प्रभावी कर दी जाएँगी। संसार में किसी यांत्रिक शक्ति का कोई प्रभाव नहीं होगा। यह मंत्र शक्ति भगवान कल्कि के आदेश और धारा से आएगी। और जो भक्त नारायणी सेना में भगवान के साथ होंगे, उन्हें युद्ध कला, दिव्य ज्ञान, और जो कुछ भी आवश्यक है, स्वयं भगवान द्वारा सिखाया जाएगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 13:35 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 565 मेरा प्रश्न यह है कि मलिका के अनुसार, अच्युतानंद जी ने कलियुग में कहाँ जन्म लिया है? वे लोगों के सामने कब प्रकट होंगे, और वे भगवान से कब मिलेंगे?

उत्तर: उनके 13 जन्म हो चुके हैं, और उनका 14वाँ जन्म भगवान के चरणों में विलीन होने के लिए है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है। तो, महापुरुष अच्युतानंद भगवान के अभिन्न अंग हैं। कलियुग के अंत में, महापुरुष अच्युतानंद और भगवान मिलेंगे, और वे मिलकर धर्म की स्थापना का कार्य करेंगे। लेकिन यदि हमारे पास आवश्यक पुण्य होगा, तो हम सब उनके दर्शन कर सकेंगे। हमें समय के आने की प्रतीक्षा करनी होगी और धर्म के मार्ग पर बने रहना होगा। बस वही करिए जो हम आपसे कहते हैं। अच्युतानंद, पंचसखा और भगवान से मिलन तब होगा जब समय आएगा। लेकिन जिस धर्म के मार्ग के बारे में मैं आपको बता रहा हूँ, उसका पूर्ण रूप से पालन करके आप उस अवस्था तक पहुँच सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:47 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 566 मैंने एक सत्यनारायण पूजा का सपना देखा जिसमें एक मित्र ने मुझे सम्मिलित होने के लिए बुलाया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, सत्य युग आ रहा है। और जब कोई भगवान की उपासना करता है, सत्यनारायण पूजा करता है, तो यह एक पवित्र कार्य है। भगवान आपके सपने में आए और आपको बुलाया, इसका अर्थ है कि भगवान के भक्तों को ऐसे अनुभव होते हैं। किसी न किसी रूप में, भगवान आपको समझा रहे हैं, 'मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं तुम्हारा मार्गदर्शन कर रहा हूँ।' और भगवान सत्यनारायण ही कल्कि हैं। क्योंकि आप सनातन धर्म का पालन करते हैं और उसके मार्ग पर चलते हैं, इसलिए भगवान आपके सपने में आए और आपको बुलाया। यह एक संयोग है, एक संकेत है। तो, यह आपके लिए प्रसन्नता की बात है। भविष्य में आपको और भी सपने और अनुभव होंगे। जिस मार्ग का मैं वर्णन करता हूँ, उसका पालन करते रहिए, और उससे भी अच्छी बातें होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 20:12 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 567 प्रणाम, पंडित जी। हम हिमाचल में मज़दूर हैं, हम मंदिर निर्माण का काम करते हैं। क्या हमें भविष्य में कोई समस्या होगी? हमारी पूरी आजीविका इसी पर निर्भर है।

उत्तर: बाबा, आप धर्म के मार्ग पर हैं। आप इतनी मेहनत करते हैं, और अपनी मेहनत की कमाई से अपने परिवार का पालन करते हैं। आप पवित्र हैं और धर्म में भी हैं। क्या आप उन सभी नियमों का पालन करते हैं जो मैं बताता हूँ? ... जहाँ-जहाँ देवी-देवता और तीर्थस्थान हैं, वे क्षेत्र प्रकाशित रहेंगे। यही आपके सपने का अर्थ है। दूसरी बात, चूँकि आप मज़दूर हैं, आप कठिन परिश्रम करते हैं और मार्ग पर हैं। जब महाविनाश होगा, और हिमाचल तथा उत्तराखंड में और अधिक तबाही आने वाली है, तब आप सुरक्षित रहेंगे। कोई समस्या नहीं होगी क्योंकि आप मार्ग पर हैं, भगवान की शरण में हैं। कोई समस्या नहीं। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 22:15 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 568 पंडित जी, मैं जानना चाहता हूँ कि भविष्य मलिका राजस्थान के बारे में क्या कहती है।

उत्तर: देखिए, भविष्य मलिका में राजस्थान के बारे में लिखा है कि वहाँ युद्ध, महाविनाश और भूकंप का प्रभाव होगा। और भक्त, बालाजी के, खाटू श्याम जी के, जो भी भक्त हैं, वे सनातन धर्म और मलिका की धारा में आएँगे। उन्हें मुक्ति मिलेगी, वे भगवान से मिलेंगे, भक्त भगवान कल्कि से मिलेंगे, और वे सभी भक्त भी वहाँ हैं। तो, आप सनातन धर्म के मार्ग पर बने रहिए, समय की प्रतीक्षा कीजिए, और सब अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:52 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 569 पंडित जी, बच्चों पर क्या प्रभाव होगा? नए बच्चों के लिए, छोटे बच्चों के लिए, उन पर क्या प्रभाव होगा?

उत्तर: धर्म की स्थापना के लिए, उनके लिए कुछ विशेष नहीं है। यदि वे 12 वर्ष के हैं, तो उन्हें मार्ग का पालन करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:47 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 570 हमने अपने आराध्य लड्डू गोपाल को भोग लगाया, और उसमें से कुछ बिना किसी निशान के गायब हो गया। कृपया अपनी दिव्य दृष्टि से देखिए: क्या यह हमारा भ्रम है, या भगवान ने हमें एक अनुभव दिया है?

उत्तर: देखिए, चूँकि आप मार्ग पर हैं, आप भागवत पढ़ते हैं, त्रिसंध्या करते हैं, और माधव का नाम जपते हैं, भगवान आपसे प्रसन्न हैं और भगवान ने आपका अर्पित प्रसाद स्वीकार किया है। यह आपके लिए बहुत बड़े पुण्य और सौभाग्य की बात है। आपने भगवान लड्डू गोपाल को भोग लगाया, और वे तुरंत आए। यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि आप सनातन धर्म के मार्ग का पालन कर रहे हैं। आज भगवान अदृश्य रूप में आते हैं; कल एक समय ऐसा आएगा जब भगवान अपने भक्तों के सामने प्रकट होंगे। तो, आपको ऐसे अनेक अनुभव होंगे। यह पवित्र अनुभव सभी भक्तों के लिए भी एक संदेश है कि जैसे-जैसे उनकी पवित्रता और भक्ति बढ़ेगी, उन्हें भी वही संकेत और अनुभव प्राप्त होंगे जो आपको हुए हैं। यह बड़े आनंद की बात है। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 26:46 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 571 मैंने सपना देखा कि मैं पानी में डूब रहा था, लेकिन जब मैंने भगवान जगन्नाथ का नाम लिया, तो किसी ने मुझे बाहर खींच लिया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माताजी, आपने सपने में जो देखा उसका अर्थ यह है: भविष्य में एक महाप्रलय आएगा। बहुत से लोग असहाय हो जाएंगे। उस समय भगवान आपको बचाएंगे। इसीलिए आपको यह दृश्य दिखाया गया। और जब ऐसा समय आए, तो आपको मालिका के मार्ग पर बने रहना चाहिए। भगवान आपको पहले से बता रहे हैं कि वे आपको बचाएंगे। हाँ, भगवान अवश्य आएंगे माताजी, और वे भक्तों की रक्षा करेंगे। जब तक आपकी भक्ति इतनी निर्मल रहेगी, भगवान का प्रकाश आप पर और अधिक चमकता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:18 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 572 '313 गुप्तन' का रहस्य क्या है? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें। और भक्तों के एकत्रित होने से इसका क्या संबंध है?

उत्तर: 13 अंक के बारे में लिखा गया है। 7, 17 और 27 तारीखें संधि और धर्म स्थापना की तिथियाँ हैं। ब्रह्मांड में जो कुछ भी होगा, चाहे भूकंप हो, अग्नि हो, या मृत्यु — वह इन्हीं तिथियों से जुड़ा होगा। और 13 धर्म की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण अंक है। 13 अंक, या 13 वर्ष, धर्म स्थापना की गणना का हिस्सा है। 3 अंक के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 33:19 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 573 मैंने एक यूट्यूबर से सुना कि जब सब कुछ डिजिटल हो जाएगा, तो सबके हाथ में एक माइक्रोचिप लगेगी, और जो कोई इसे लेगा वह नरक में जाएगा। अगर हमें भविष्य में वह माइक्रोचिप लेनी पड़ी, तो क्या ऐसा कुछ होगा? क्या यह संभव है?

उत्तर: आप जिस माइक्रोचिप की बात कर रहे हैं, वह कभी लागू नहीं होगी, यह पहली बात। दूसरी बात, मैंने मालिका में इसके बारे में कहीं नहीं पढ़ा; यह कहीं भी नहीं लिखा है। यूट्यूब पर बहुत से लोग मालिका की बात करते हैं... जो लोग मालिका को दूसरी चीज़ों के साथ मिलाकर बात करते हैं, उनके बारे में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर मैं नहीं दूँगा। यह हमारी मालिका है। हमें अपने सनातन धर्म पर ध्यान देना चाहिए, यद्यपि हम अन्य धर्मों का भी सम्मान करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:33 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 574 भविष्य मालिका में आपने एक बार कहा था कि दो सूर्य उदय होंगे। एक दूसरा सूर्य प्रकट होगा। कृपया इस बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: सात दिनों तक सूर्य और चंद्रमा दिखाई नहीं देंगे। सात दिनों तक सूर्य देव और चंद्र देव के दर्शन नहीं होंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि एक नई सृष्टि होगी। इसलिए भगवान एक नया सूर्य और एक नया चंद्रमा स्थापित करेंगे, और यह प्रक्रिया सात दिनों तक चलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:44 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 575 और यह घटना कब होगी, पंडित जी?

उत्तर: यह भक्तों के एकत्रित होने के बाद होगा। भक्तों का एकत्रीकरण अभी हो रहा है। भक्तों के एकत्रित हो जाने के बाद, धर्म की स्थापना आगे बढ़ेगी। उस समय हम ऐसी घटनाएँ देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:33 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 576 मैं अपनी पत्नी को भविष्य और अवतार के बारे में बताता रहता हूँ, लेकिन वह मुझ पर विश्वास नहीं करती। क्या यह भगवान कल्कि की 'माया' है जो उसे समझने से रोक रही है?

उत्तर: देखिए, यह वास्तव में भगवान की 'योगमाया' है। जो भक्त हैं, वे इस क्रम को समझ जाएंगे। जो भगवान के भक्त नहीं हैं, भगवान उन्हें अपनी माया से किसी दूसरे मार्ग पर भटका देंगे। उन्हें कुछ समझ नहीं आएगा। आप उन्हें कितना भी बताएं, कोई असर नहीं होगा क्योंकि वे भगवान के भक्त नहीं हैं। केवल वही जो भगवान के भक्त हैं, महसूस करेंगे, अनुभव करेंगे और विश्वास करेंगे। वे भगवान की शरण में आएंगे और मालिका को स्वीकार करेंगे। जो भक्त नहीं हैं, उन पर कोई असर नहीं होगा, चाहे आप उन्हें कितनी भी बार बताएं; वे नहीं बदलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:54 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 577 पहले मुझे भगवान बहुत दिखाई देते थे, लेकिन अब दिखाई नहीं देते। पता नहीं भगवान मेरे साथ हैं या नहीं।

उत्तर: देखिए माताजी, भगवान कभी-कभी लोगों को दर्शन देते हैं या सपने में बात करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि भगवान हर समय दर्शन देंगे या सपने में आएंगे। यह संभव नहीं है। और इसका यह भी अर्थ नहीं कि भगवान ने आपको छोड़ दिया है या वे आपके साथ नहीं हैं। ऐसा कुछ नहीं है। आपको भगवान की शरण में रहना चाहिए। भगवान अपनी इच्छा से दर्शन देते हैं। भगवान सदा अपने भक्तों के साथ रहते हैं। भक्त जितना अधिक उनके लिए तड़पता है, भगवान उतनी ही अधिक उसकी परीक्षा भी लेते हैं। इसलिए सही समय की प्रतीक्षा कीजिए, और भगवान की शरण में रहिए। वे भक्त का साथ कभी नहीं छोड़ते।

► यह उत्तर सुनें · 39:07 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 578 मैं न तो अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगा पाता हूँ, न ही भक्ति में ठीक से मन लगा पाता हूँ। मंदिर जाने पर भी मुझे जुड़ाव महसूस नहीं होता।

उत्तर: बस इतना ही कीजिए, सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:01 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 579 पंडित जी, भगवान हमें दर्शन कब देंगे?

उत्तर: जब आपकी भक्ति पूर्ण हो जाएगी, और आपकी पवित्रता तथा समर्पण सिद्ध हो जाएंगे, तब आपको उनके दर्शन होंगे। जब आप उस स्थिति में पहुँचेंगे, तो आपको भगवान के दर्शन मिलेंगे। आपकी तपस्या चल रही है; इसे जारी रखिए और अपनी भक्ति बढ़ाइए।

► यह उत्तर सुनें · 42:06 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 580 त्रिसंध्या क्या है और इसे कैसे करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, त्रिसंध्या यह है: पहले, सुबह, उस संधिकाल में जब रात समाप्त होती है और भोर आरंभ होती है, उस समय 16 नामों, 10 अवतारों और माधव के नाम का जप कीजिए। दूसरी संध्या दोपहर में है, 12:00 बजे, जब समय 12 से 1 की ओर बदलता है, अर्थात् जब अपराह्न आरंभ होता है। उस समय सत्संग कीजिए और 16 नामों, 10 अवतारों तथा माधव के नाम का जप कीजिए। और शाम को, जब समय बदलता है और संध्या आती है, उस संधिकाल को संध्या बेला कहते हैं। उस समय भी 10 अवतारों, 16 नामों और भगवान माधव के नाम का जप कीजिए। इससे आपको शांति और सुख मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:15 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 581 मैं 'सूर्य मंडल' (सौर मंडल/क्षेत्र) के बारे में जानना चाहता हूँ।

उत्तर: संसार में 'सौर्य मंडल' (सौर क्षेत्र) होंगे। अफ्रीका महाद्वीप में एक मंडल होगा। भारत में, ओडिशा में 15 मंडल होंगे, जिनमें भगबती मंदिर का क्षेत्र, व्यास मंडल और अन्य सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में वृंदावन मंडल होगा, जिसमें मथुरा, अयोध्या और वृंदावन सम्मिलित होंगे। कोलकाता में माता कालिका मंदिर के लिए एक मंडल होगा, और दक्षिण में रामेश्वरम मंडल होगा। और महक रतनपुर मंडल में राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब के कुछ भाग सम्मिलित होंगे। इस प्रकार, उस समय 16 मंडल होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:19 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 582 आपने भारत के बाहर एक मंडल का उल्लेख किया। यूरोपीय देशों और अमेरिकी महाद्वीप का क्या? वहाँ के लोगों के लिए कौन-सा मंडल होगा? कृपया इसे स्पष्ट करें।

उत्तर: एशिया और यूरोप के देशों के लिए प्रयाग मंडल है। साथ ही, संबलपुर का समलेश्वरी मंडल एक सूर्य मंडल है, जिसका उल्लेख मालिका में भी है; मैं पहले इसका उल्लेख नहीं कर सका। माता समलेश्वरी मंडल एक बड़े क्षेत्र को समाहित करेगा, जिसमें ओडिशा के कुछ भाग और यहाँ तक कि रायपुर के कुछ लोग भी इस मंडल में सम्मिलित होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 46:45 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 583 जब मैं ध्यान में होता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं किसी नदी में डुबकी लगा रहा हूँ और 'माधव, माधव' का जप कर रहा हूँ। ऐसा कई बार होता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि 'माधव' नाम स्वयं गंगा जैसी पवित्र धारा है। भगवान का नाम माँ गंगा से करोड़ों गुना अधिक पवित्र है। जो लोग उस धारा में रहते हुए उनके नाम का जप करते हैं, उन्हें ऐसे अनुभव होते हैं। यह पवित्रता का संकेत है, बाबा। यह आपके लिए आनंद की बात है। बस भक्ति में बने रहिए, सब ठीक होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:59 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 584 मेरा प्रश्न यह है कि मैंने सुना था कि इस परिवर्तन के काल में, एक निश्चित समय के बाद, शायद 2023 के बाद, काला जादू और तंत्र काम करना बंद कर देंगे। क्या ऐसा कुछ है?

उत्तर: देखिए, तंत्र विद्या (गूढ़ साधनाओं) के विषय में, आने वाले समय में, हाँ, कलि विद्या (काला जादू) काम करना बंद कर देगी। जिस काले जादू की आप बात कर रहे हैं... हाँ। जैसे-जैसे सत्य युग अधिकाधिक प्रकट होगा, ये चीजें संसार से नष्ट हो जाएँगी। लेकिन वह समय इतना शीघ्र नहीं है; यह भविष्य में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:27 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 585 आज सुबह कीर्तन करते समय मैंने एक साँवले रंग के, बड़ी मूँछों वाले व्यक्ति को देखा जिसने कहा, 'मैं इन सबको मारने की तैयारी कर रहा हूँ, और ये मुझे मारने का प्रयास कर रहे हैं।' मैं डर गया पर कीर्तन जारी रखा। इसका क्या अर्थ था?

उत्तर: देखिए, जहाँ कहीं भी भक्त भगवान के नाम का जप करते हैं, वहाँ कलि (कलियुग का मूर्त रूप) अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास करता है। वह अपनी शक्ति दिखाता है, भक्तों को डराने और भगाने का प्रयास करता है। तो, आपने जो रूप देखा, वह कलि का था। लेकिन वह कर ही क्या सकता है? उसका अंत होने ही वाला है। वह चाहे कितना भी प्रयास कर ले, सत्य युग की स्थापना होकर रहेगी। इसलिए, आप भगवान की भक्ति में बने रहिए। उस दानव की बातों का कोई प्रभाव नहीं होगा। भगवान आप जैसे लोगों की शुद्ध भक्ति के माध्यम से उसका नाश करवाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:38 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 586 मेरा प्रश्न है कि कलियुग कब समाप्त होगा?

उत्तर: कलियुग तो पहले ही समाप्त हो चुका है। धर्म की स्थापना और विनाश का कार्य चल रहा है। शास्त्रों के अनुसार, कलियुग 5,000 वर्षों तक रहने वाला था। 5,126 वर्ष हो चुके हैं, और कलियुग समाप्त हो चुका है। भगवान का अवतार पहले ही अवतरित हो चुका है। धर्म की स्थापना—धर्म को पुनः उसके पैरों पर खड़ा करने—और पापियों के विनाश का कार्य चल रहा है। आने वाले समय में यह कार्य तीव्र होगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:03 · 21 नवम्बर 2021

प्रश्न 587 पंडित जी, नेमल गाँव में बरगद के पेड़ की शाखा—अब वह कितनी ऊँची है? जो शाखा गुरु अच्युतानंद जी की समाधि से थोड़ा ऊपर है, वह कितनी ऊँची है, और वह उनके सिर से कब स्पर्श हुई?

उत्तर: शाखा उनके सिर से स्पर्श हुई... वह घटना पहले ही घट चुकी है। वह कार्य पूर्ण हो चुका है, कलियुग समाप्त हो चुका है, और भगवान अवतरित हो चुके हैं। शास्त्रों में, मालिका में लिखा था कि जब उस बरगद के पेड़ की शाखा उनके सिर से स्पर्श करेगी, तब भगवान का अवतार प्रकट होगा। वह कार्य हो चुका है। यह बहुत पहले हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 54:49 · 21 नवम्बर 2021

सत्र 29 · प्रश्न 588–614

L27 कल्कि भगवान सभी भक्तों को "अमर कटक" में दर्शन देंगे LIVE

दिनांक: 28 नवम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 588 भविष्य मालिका वर्ष 2025 के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: भविष्य मालिका इसके विषय में एक श्लोक कहती है। जनवरी 2025 में, शनि मीन राशि में अपनी उच्च स्थिति में प्रवेश करेंगे। उस समय, महाकाल ब्रह्मांड को अपने ग्रास में ले लेंगे। ब्रह्मांड छल, पाखंड, महामारियों और संपूर्ण मानव समाज में विनाश के तांडव का साक्षी बनेगा। किंतु भक्तों को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो भक्त भगवान की शरण लेते हैं और उनके नाम का जप करते हैं, वे सुरक्षित रहेंगे। केवल पापियों का विनाश होगा, और विनाश का युग आगे बढ़ेगा। जय गणेश।

► यह उत्तर सुनें · 10:27 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 589 गुरुजी, 2025 के लिए दिल्ली के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: 2025 से पहले भी दिल्ली को कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम वेद पुराण के अनुसार, संपूर्ण ब्रह्मांड—मैं केवल भारत की बात नहीं कर रहा, बल्कि ब्रह्मांड के सभी देशों की—पाँच तत्वों द्वारा विनाश का साक्षी बनेगा: जल, वायु, आकाश और अग्नि। अग्नि तत्व द्वारा विनाश युद्ध के माध्यम से होगा। आकाश तत्व के माध्यम से, बिजली गिरेगी, उल्कापात होगा और अग्नि की वर्षा होगी। जल तत्व के माध्यम से, कुछ तटीय क्षेत्र जलमग्न होंगे, और भारी हिमपात तथा बादल फटने की घटनाएँ होंगी। यह अभी भी हो रहा है, लेकिन 2025 से यह तीव्र हो जाएगा। बीच का समय, 2022, 23 और 24 भी मानवता के लिए बड़ी विपत्ति लाएगा; इसमें क्या छिपा है, यह तो समय ही बताएगा।

► यह उत्तर सुनें · 11:45 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 590 गुरुदेव, आपने जिस महाविनाश का उल्लेख किया, वह युद्ध के बीच होगा। क्या 'मलिक' लोग (म्लेच्छों की ओर संकेत) उसमें भाग नहीं लेंगे, क्योंकि उस समय शायद युद्धविराम हो?

उत्तर: ब्रह्मांड में युद्ध पहले से ही चल रहा है, जाति और धर्म के नाम पर युद्ध। यह हर जगह हो रहा है, अभी भी। यह केवल युद्ध या जातीय संघर्षों की बात नहीं है। पाँच प्राकृतिक तत्वों द्वारा भी विनाश होगा। सब कुछ एक साथ होगा। पाँच तत्वों द्वारा विनाश होगा, और यह सब चलता रहेगा और तीव्र होता जाएगा। समय आगे बढ़ रहा है; यह धर्म की स्थापना का पहला चरण है। आज मनुष्य कुछ नहीं समझता। मालिका कहती है कि जब तक वह समझेगा, तब तक मृत्यु के सिवा कोई मार्ग नहीं बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 13:02 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 591 आपने बताया था कि महाभारत युद्ध की पांडव और कौरव सेनाएँ पृथ्वी पर पुनर्जन्म ले चुकी हैं। क्या वे सभी भगवान के साथ होंगी? और पाकिस्तान तथा सबूरी शिविर का क्या होगा?

उत्तर: इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा गया है।

► यह उत्तर सुनें · 14:53 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 592 भविष्य मालिका में राजस्थान जैसी जगहों पर ऋषियों का उल्लेख है। आपने दक्षिण अफ्रीका में भी एक स्थान का ज़िक्र किया था। क्या और भी स्थान हैं? वे और कहाँ-कहाँ स्थित हैं?

उत्तर: महर्षि अच्युतानंद ने इस बारे में लिखा है। जो योगी, मुनि और ऋषि तपस्या से सिद्ध हैं और सच्चे संत हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। भक्त भगवान को पहचान नहीं पाएँगे। जो नकली साधु भारत और दुनिया भर में घूमते हैं, बड़े-बड़े समागम करते हैं और अपनी पूजा करवाते हैं — भगवान कल्कि कभी ऐसा नहीं करेंगे। भगवान कल्कि गुप्त रहेंगे। भक्त मालिका के माध्यम से उन तक आएँगे। वे इतने गुप्त रहेंगे कि ब्रह्मा और महेश (शिव) को भी उनका ठिकाना पता नहीं होगा। लेकिन भगवान अपनी योगमाया शक्ति और मालिका के प्रचार-प्रसार के द्वारा अपने भक्तों को अपने पास बुलाएँगे और धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। एक ओर धर्म की स्थापना गुप्त रूप से होगी, तो दूसरी ओर महाविनाश चलता रहेगा। भगवान के भक्त इस कार्य को करने के लिए ब्रह्मांड में भ्रमण करेंगे। भगवान कल्कि के दर्शन पाना बहुत कठिन है। यह कोई मज़ाक नहीं है कि आँख बंद की और उन्हें देख लिया। वे केवल सच्चे भक्तों को ही अपने दर्शन देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 15:48 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 593 क्या जगन्नाथ पुरी में महाप्रलय आने वाला है?

उत्तर: 2018 में जगन्नाथ पुरी में एक बड़ी विनाशकारी घटना पहले ही हो चुकी है, जिसमें बहुत कुछ टूट गया था और जगन्नाथ मंदिर में पानी घुस गया था। बहुत नुकसान हुआ था। मेरी बात सुनिए, मैडम, दो महीने तक बिजली नहीं थी। इससे पता चलता है कि वहाँ कितना विनाश हुआ था, और अभी और होना बाकी है। अब भी जगन्नाथ पुरी में और होगा; अभी बहुत कुछ होना शेष है। यह सब पाप की वृद्धि के कारण हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 19:15 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 594 पंडित जी, हमें भगवान के दर्शन कब हो सकते हैं?

उत्तर: सुनिए, भक्त को भगवान के दर्शन भक्ति के माध्यम से होते हैं। इस कलियुग में लोग सोचते हैं कि भगवान प्रकट होंगे, मंच बनाएँगे, समागम करेंगे, दर्शन देंगे, सबको बुलाएँगे और कहेंगे कि उनके जयकारे लगाओ। ऐसा शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा है। जब भगवान आते हैं, तो भक्त अपने ध्यान के माध्यम से अपने आप उनसे मिलते हैं; उन्हें स्वतः ही उनके दर्शन हो जाते हैं। इस कलियुग में मुक्ति का एकमात्र माध्यम मालिका है। जो मालिका को सुनेंगे, उन्हें कुछ अनुभूति होगी, भगवान के बारे में कुछ जानकारी मिलेगी। इसीलिए भगवान के आदेश पर उनके परम सखाओं ने भक्तों के लिए यह मालिका लिखी। और केवल वही भक्त, जो मालिका का अनुसरण करेंगे, भगवान कल्कि के समर्थन में होंगे। जय गणेश।

► यह उत्तर सुनें · 20:49 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 595 पंडित जी, मेरा घर शारदा के पास है। आपने कहा था कि वहाँ एक यज्ञ होगा। चूँकि शारदा एक बड़ा क्षेत्र है, क्या आप बता सकते हैं कि यह कहाँ होगा, किस मंदिर के पास, और किस वर्ष में?

उत्तर: शारदा में यज्ञ निश्चित रूप से होगा। हम अभी भगवान के कुछ सहयोगियों के साथ स्थान को लेकर चर्चा ही कर रहे थे। इस यज्ञ के बाद ब्रह्मांड में विनाश और तीव्र होगा। मैं आपको सटीक वर्ष नहीं बता सकता, लेकिन यह अगले पाँच वर्षों के भीतर होने वाला है। यह निश्चित है। यह भगवान के 16 मंडलों (मंडलियों/समूहों) के गठन के बाद होगा। 16 मंडलों के गठन का कार्य इस समय अपने पहले चरण में है। यह पूर्ण होने के बाद यज्ञ होगा। 16 मंडलों के भक्त वहाँ जाएँगे, और भगवान भी उपस्थित रहेंगे। यज्ञ के बाद ब्रह्मांड में पापियों का विनाश बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:07 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 596 मुझे स्वप्न में एक मंत्र मिला था, लेकिन भूलवश मैं उसे भूल गया हूँ। मैं बस यह जानना चाहता हूँ, क्या मुझे वह मंत्र वापस मिलेगा?

उत्तर: सुनिए, स्वप्न में मंत्र मिलने का अर्थ है कि भगवान आपको वह मंत्र अवश्य देंगे। वे उन भक्तों को स्वप्न में दिखाते हैं जो शेष रह गए हैं, जो अभी तक भगवान के पास नहीं आए हैं, जिनका भगवान कल्कि से मिलना नियत है, जो चारों युगों के भक्त रहे हैं, या जो दिव्य आत्माएँ पुनर्जन्म लेकर आई हैं। भगवान उन्हें स्वप्न में संकेत देते हैं कि अमुक मंत्र का जप करो या दर्शन करो। कभी-कभी लोग स्वयं भगवान को भी देख लेते हैं। जिस मंत्र की आप बात कर रहे हैं... यह मंत्र महर्षि अच्युतानंद द्वारा सिद्ध किया गया था। इस मंत्र को सिद्ध करके व्यक्ति आकाश में रह सकता है और दुनिया के विभिन्न तीर्थस्थलों पर गंगाजल छिड़क सकता है, और उस स्थान की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी। यह 'पादुका' मंत्र है। जो भक्त इस मंत्र को सिद्ध कर लेता है, वह आकाश में उड़ सकता है। मालिका से जितना मैं जानता हूँ, यह मंत्र केवल उन्हीं को मिलेगा जो भगवान से मिलेंगे। यह उन्हें दिया जाएगा जो अत्यंत गुप्त हैं और सत्य धर्म की स्थापना के लिए कार्य करते हैं। यदि आप उनमें से हैं जिनका उनसे मिलना नियत है, तो भविष्य में आपको भी यह स्वतः मिल जाएगा। अभी नहीं। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए, अपने कर्तव्यों का पालन कीजिए, और स्वयं को सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के कार्य में लगाइए।

► यह उत्तर सुनें · 23:33 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 597 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि पिछले एक दिन से, जब से मैंने आपके दिए हुए मंत्र से प्रार्थना करना शुरू किया है, मेरा मन बहुत अशांत हो गया है और मैं बिल्कुल भी एकाग्र नहीं हो पा रहा हूँ। मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: देखिए, कलियुग में पाप करने में बहुत आनंद आता है, जबकि धर्म का पालन कठिन होता है। यह स्वाभाविक है। जब कोई भगवान के मंत्र का जप करता है, जप-तप करता है, या कीर्तन करता है, तो बाधाएँ आएँगी। मन अशांत हो जाएगा, विघ्न आएँगे, कोई अचानक बुरी खबर आ जाएगी, या कोई ज़रूरी काम आ पड़ेगा, जिससे वह भगवान का नाम न ले सके। इसे तोड़ने के लिए, अपने मन में भक्ति जगाइए और भगवान पर पूर्ण विश्वास रखते हुए मंत्र का जप कीजिए। सब ठीक हो जाएगा। यह कलि (कलियुग) का प्रभाव है, और कलि ही यह टकराव पैदा कर रहा है। भक्ति के साथ भगवान की शरण में जाने से सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:52 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 598 क्या महाराष्ट्र के रत्नागिरी में प्रलय होना नियत है? इसके बारे में आप हमें क्या बता सकते हैं?

उत्तर: मानव समाज को बार-बार चेतावनी दी जा रही है। दक्षिण की ओर देखिए—कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश में—कितनी बारिश हो रही है। तिरुपति मंदिर के ऊपर बादल फटने और बारिश से भी विनाश हुआ। 2018 में एक चक्रवात ने तबाही मचाई थी। द्वारकाधीश मंदिर के ऊपर बिजली गिरी थी। उत्तराखंड की पवित्र भूमि में आप भूस्खलन और बारिश देख रहे हैं। दक्षिण में यह अब भी जारी है, और भविष्य में और होना बाकी है। इसका अर्थ है कि ये मानव समाज के लिए चेतावनियाँ हैं कि वह अपने आपको सुधार ले। लेकिन वह नहीं सुधरेगा। धर्म स्थापना का कार्य होगा, और समय सब कुछ बता देगा। यह होकर रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:16 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 599 चूँकि 2025 शुरू होने वाला है, क्या होने वाला है? क्या आप हमें पूरे वर्ष के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: धर्म स्थापना का पहला चरण 2019 में शुरू हुआ था। धर्म की स्थापना होगी, और जो पाप में डूबे हुए हैं... जैसे ही नया वर्ष 2025 शुरू होगा, जो होगा वह यह कि पिछले वर्षों में जो कुछ हुआ, वह सब दोहराया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:31 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 600 यहाँ दिल्ली में भूकंप कब आने की संभावना है?

उत्तर: सुनिए, मैडम, जहाँ बड़े लोग होते हैं, वहाँ बड़े पाप और बड़े घोटाले भी होते हैं। तो जहाँ ऐसा होता है, वहाँ बड़ा विनाश भी होगा। और एक बात, केवल दिल्ली ही नहीं। यह वाशिंगटन, अमेरिका में भी होगा। बीजिंग में हुआ, आपने देखा। एक समय आएगा जब चीन का भूगोल बदल जाएगा। ऐसी ही चीज़ें हमारे देश में भी होंगी। बात केवल दिल्ली की नहीं है; धर्म स्थापना का यह कार्य पूरे ब्रह्मांड के लिए है। धर्म स्थापना का पहला चरण 2019 से चल रहा है, और दिल्ली में बहुत बड़ा भूकंप आएगा। बीमारी, महामारी और युद्ध का तांडव भी होगा। मालिका के अनुसार, यह लगभग 2025 में होगा, लेकिन यह उससे पहले भी हो सकता है। मालिका कहती है कि 2019 के बाद भूकंप, जल और भूमि से विनाश होगा। दिल्ली में एक समय ऐसा आएगा जब 10 मिनट की बारिश से 25 फीट पानी भर जाएगा। एक समय ऐसा आएगा जब भूकंप से महाविनाश होगा। एक समय ऐसा आएगा जब बीमारी इतनी फैलेगी कि लाशों के ढेर लग जाएँगे। और यह केवल दिल्ली में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में होगा। यूरोप में तो यह पहले से ही हो रहा है और और तीव्र होगा। लेकिन जो धर्म का पालन करते हैं, उनके लिए डरने की कोई बात नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 32:39 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 601 पंडित जी, धरती पर तीसरा विश्वयुद्ध कब होगा?

उत्तर: हाँ, तीसरा विश्वयुद्ध पूरी तरह से परमाणु युद्ध होगा। यह अपेक्षित समय से पहले भी हो सकता है; यह प्रभु पर निर्भर है।

► यह उत्तर सुनें · 34:59 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 602 बिहार के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: बिहार के लिए, बिहार के मुजफ्फरपुर के लिए लिखा है कि हिमालय और नेपाल से सटे क्षेत्रों में वर्षा और भूकंप से भारी विनाश होगा। इसका कोई निश्चित समय नहीं है, लेकिन बीच-बीच में छोटी-छोटी घटनाएँ होती रहेंगी। जब मीन राशि में शनि का संयोग होगा, तब विनाश बढ़ जाएगा। जैसे यह सभी राज्यों में होगा, वैसे ही बिहार में भी होगा। भक्त बच जाएँगे, और धर्म की स्थापना होगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:49 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 603 पंडित जी, असम में क्या होगा?

उत्तर: असम में अभी क्या हो रहा है? वहाँ बार-बार हुआ है। हाँ, वहाँ भी विनाश होगा। देखिए, यह हर जगह होगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:32 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 604 इतने सारे पानी (बाढ़) के बीच हम प्रभु तक कैसे पहुँचेंगे?

उत्तर: आप अपना (धर्म का) कार्य करते रहिए, और प्रभु की कृपा से लोग बच जाएँगे और पूजा-अर्चना कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 38:04 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 605 और मन की चंचलता पर कैसे विजय पाई जा सकती है?

उत्तर: मन की चंचलता Kali Yuga का लक्षण है, क्योंकि Kali Yuga में मन अत्यंत चंचल होता है और हमेशा मनुष्य को भटकाता रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 38:21 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 606 और अपने जीवन से आलस्य को कैसे दूर किया जा सकता है?

उत्तर: प्रतिदिन भागवत का पाठ करें और Trisandhya (प्रातः, मध्याह्न और संध्या की उपासना) करें। ऐसा करने से आपका सब कुछ ठीक हो जाएगा। बहुत अच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 38:30 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 607 राम और रावण का युद्ध त्रेता युग में हुआ, और महाभारत द्वापर युग में। Kali Yuga में कलि नामक असुर कौन है? क्या वह हमारे अपने गाँवों और शहरों में मौजूद है?

उत्तर: आप कौन हैं? आपके गाँव में, आपके शहर में, आपके भाग्य में... ये छोटे-छोटे असुर विनाश करते हैं। मैं पूरे भारत की बात कर रहा हूँ, केवल आपके गाँव की नहीं। हर जगह बहुत-सी अधूरी बातें हैं। जिस भी व्यक्ति में लोभ, मोह, अहंकार, घमंड, काम और वासना है—वही व्यक्ति कलि है।

► यह उत्तर सुनें · 38:57 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 608 आपने कहा था कि ब्रह्मा और शिव को भी भगवान Kalki का अता-पता नहीं चलेगा। लेकिन अगर ऐसा है, तो वे सुधर्मा सभा (दिव्य सभा) में कैसे उपस्थित होंगे?

उत्तर: लिखा है कि ब्रह्मा और शिव को प्रभु के रहस्य ज्ञात नहीं होंगे। लेकिन जब प्रभु धर्म की स्थापना करेंगे और सुधर्मा सभा का आयोजन करेंगे, तब सभी देवताओं को निमंत्रण दिया जाएगा। जब भगवान विष्णु का निमंत्रण उन तक पहुँचेगा, तब ब्रह्मा और विष्णु (तथा शिव) सम्मिलित होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 40:12 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 609 क्या जनवरी से दिसंबर तक कुछ महत्वपूर्ण घटित होगा?

उत्तर: जो रोग संसार में है, वह जारी रहेगा। और आने वाले समय में और भी कई रोग आने वाले हैं। हम बार-बार लोगों को बताते हैं कि शाकाहारी बनें, धर्म के मार्ग पर आएँ, और Sanatana Dharma के लिए कार्य करें, लेकिन लोग ऐसा नहीं करते; वे समझते ही नहीं। जो समझते हैं, वे बच जाते हैं। लेकिन संसार में जो लोग धर्म के मार्ग पर नहीं हैं, उनके लिए कष्ट का समय निश्चित है।

► यह उत्तर सुनें · 41:16 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 610 पंडित जी, कृपया मुझे मेरे ठाकुर जी के बारे में मार्गदर्शन दीजिए। मैं उन तक पहुँचने का प्रयास कर रही हूँ, पर नहीं पहुँच पा रही। मेरे सहशिष्य कहते हैं कि मुझे प्रतीक्षा करनी चाहिए, अभी मेरा समय नहीं आया है। कृपया मुझे कुछ मार्गदर्शन दें।

उत्तर: देखिए, माता जी, आप जहाँ भी हैं, प्रभु की कृपा आप पर है, भले ही अभी तक आपको उनके दर्शन न हुए हों। भक्ति और समर्पण में बनी रहिए, प्रभु की कृपा आप पर बनी रहेगी। जैसे आप Bhavishya Malika का अनुसरण कर रही हैं, वैसे ही आपको धर्म की स्थापना के कार्य में भी स्वयं को जोड़ना चाहिए। Sanatana Dharma के लिए कार्य कीजिए। समय आने पर आपको प्रभु के दर्शन होंगे। प्रभु का आशीर्वाद अपने भक्तों पर सदा रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 42:15 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 611 भगवान कल्कि की पत्नी उनसे कितने वर्ष छोटी होंगी?

उत्तर: सुनिए, मैं आपको एक बात बताता हूँ। इस समय हम समुद्र के बीचों-बीच हैं, और हमारी नाव में छेद हो गया है। पानी तेज़ी से भीतर आ रहा है। ऐसे समय में हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है नाव को और स्वयं को बचाना। यह सोचना कि भगवान की पत्नी की आयु कितनी होगी, भगवान की आयु क्या है, माँ की आयु क्या है... यह तो ब्रह्मा जी को भी ज्ञात नहीं है। सृष्टि के बाद हज़ारों दिव्य वर्षों तक ब्रह्मा जी अपने ही उद्गम का पता नहीं लगा सके। क्या ब्रह्म (परम तत्त्व) की कोई आयु होती है? माँ ब्रह्म-स्वरूपा हैं, और भगवान स्वयं ब्रह्म हैं। माँ वैष्णवी शक्ति हैं, और भगवान विष्णु हैं। दोनों मिलकर महाविष्णु हैं, और माँ महाविष्णु का ही एक अंश हैं। यदि हम अपने मानवीय मन से उनकी आयु के विषय में सोचेंगे, तो देवता प्रसन्न नहीं होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:04 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 612 एक यूट्यूब चैनल ने कहा कि अगले वर्ष 'ओडिशा का एक दीप' बुझ जाएगा, जिसका संकेत किसी प्रमुख व्यक्ति की ओर था। उन्होंने यह भी दावा किया कि अगले अप्रैल-मई तक लोग कल्कि अवतार के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जान जाएँगे। क्या यह सच है?

उत्तर: लोगों को अवतार के बारे में पता नहीं चलेगा; केवल भक्त ही उनके आसपास एकत्र होंगे। भगवान कल्कि के बारे में कुछ भक्त ही जानेंगे; आम जनता को उनका कोई सुराग नहीं मिलेगा। दूसरी बात, 'ओडिशा का दीप' बुझने की बात, यानी किसी बड़े व्यक्तित्व या ऊँचे पद पर बैठे किसी व्यक्ति के प्रभावित होने की बात—वे जो भी कह रहे हैं, वह पूरी तरह गलत है। ऐसा कुछ भी होने वाला नहीं है। वे ये बातें केवल अपना चैनल बढ़ाने और अधिक सब्सक्राइबर पाने के लिए कहते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:39 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 613 आपने बताया था कि इंटरनेट, कंप्यूटर और ऐसी सारी तकनीक बंद हो जाएगी। ऐसा होने में कितना समय बचा है?

उत्तर: इंटरनेट बहुत जल्दी सूचना पहुँचा देता है... इससे पाप बढ़ता है। एक दिन ऐसा आएगा जब पूरा नेटवर्क, अमेरिका का नेटवर्क भी, ठप हो जाएगा। वह समय आ रहा है। आप ठीक कहते हैं कि लोगों को बचाने की आवश्यकता है। पर लोग धर्म की ओर मुड़ते ही नहीं; बल्कि आलोचना करते हैं, भगवान की निंदा करते हैं, मछली और मांस बेचते हैं, और अपने सुख के लिए सब कुछ करते हैं। इस संसार में वास्तविक सुख है ही नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 48:22 · 28 नवम्बर 2021

प्रश्न 614 आप शाकाहारी बनने की सलाह देते हैं, पर क्या प्याज और लहसुन (सात्त्विक दृष्टि से) मांसाहारी नहीं माने जाते?

उत्तर: शाकाहारी होते हुए भी कोई प्याज और लहसुन खा सकता है। ये पूर्णतः सात्त्विक नहीं माने जाते, पर स्वाद के लिए खाए जाते हैं। धरती माता चावल, गेहूँ, फल उत्पन्न करती हैं... धरती माता जो कुछ हमें देती हैं, वह मांसाहारी कैसे हो सकता है? यह प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ, प्याज और लहसुन राजसिक माने जाते हैं, पर वे मांसाहारी नहीं हैं। साधु-संत सात्त्विक स्थिति बनाए रखने के लिए इनसे बच सकते हैं, पर इन्हें खाने में कोई समस्या नहीं है। मुख्य निषेध किसी जीव की हत्या करने का है।

► यह उत्तर सुनें · 49:56 · 28 नवम्बर 2021

सत्र 30 · प्रश्न 615–633

L28 महामारी से उद्धार का रास्ता The way to get divinity from this PANDEMIC -- LIVE

दिनांक: 5 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 615 मैं भगवान विष्णु का नाम जपता हूँ, पर आप कहते हैं कि हमें 'माधव' नाम जपना चाहिए। मुझे विष्णु नाम जपने की इतनी आदत हो चुकी है कि अब मैं इसे छोड़ नहीं सकता। क्या माधव और विष्णु एक ही हैं? क्या मैं जारी रख सकता हूँ? दूसरी बात, अपने दिवंगत पिता की आत्मा की मुक्ति के लिए मैंने सवा करोड़ बार भगवान विष्णु का नाम जपने का संकल्प लिया है। क्या इस उद्देश्य के लिए मुझे माधव नाम पर आ जाना चाहिए, या विष्णु नाम ही जारी रखना चाहिए?

उत्तर: दोनों ही ठीक हैं। 'माधव' नाम ब्रह्मांड में सर्वोपरि और सहज सुलभ है, और माधव वास्तव में विष्णु का ही दूसरा नाम है। अपने पिता की मुक्ति के लिए आप विष्णु नाम का जप जारी रख सकते हैं, इसमें कोई समस्या नहीं। फिर भी, 'माधव' नाम का जप भी आपके पिता की आत्मा को शांति देगा, क्योंकि यह इस विशेष युग के लिए निर्धारित मंत्र है। हर युग में भगवान का एक प्रमुख नाम होता है: सत्य युग में विष्णु, त्रेता युग में राम, द्वापर युग में कृष्ण, और कलियुग में जगन्नाथ। जिस वर्तमान संक्रमण काल में हम हैं, उस संगम युग के लिए 'माधव' का जप सबसे प्रभावी है। तो, आप विष्णु नाम से अपना संकल्प जारी रख सकते हैं, पर साथ ही 'माधव' का जप और त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) करने से आपके पिता को निश्चित रूप से मुक्ति मिलेगी। इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि विष्णु और माधव एक ही हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:25 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 616 मैंने अपने मित्र को, जो बहुत बड़े भक्त और अकाउंटेंट हैं, आपके चैनल के बारे में बताया। अब उन्हें लगता है कि यदि भविष्य में कुछ भी नहीं बचेगा—न इमारतें, न संपत्ति, न बड़ी कंपनियाँ—तो उनके काम और सीए परीक्षा की तैयारी का क्या अर्थ है? उन्हें यह सब व्यर्थ लगता है। क्या हमें अगले 4-5 वर्ष अपने व्यावसायिक जीवन में बिताने चाहिए या पूरी तरह भगवान की भक्ति को समर्पित कर देने चाहिए, क्योंकि सब कुछ नश्वर है?

उत्तर: धर्म की स्थापना अपने क्रम से होती रहेगी। जैसे हम रात को भोजन करते हैं और फिर सुबह भी करते हैं, वैसे ही हमें अपना काम जारी रखना चाहिए। सूर्य, चंद्रमा और ग्रह सभी ब्रह्मांड को चलाए रखने के लिए निरंतर अपने पथ पर चलते हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी प्रतिदिन काम करना और भोजन करना पड़ता है। धर्म की स्थापना अवश्य होगी, पर मेरी सलाह है कि आप अपना काम 'निष्काम कर्म' के रूप में जारी रखें—फल की आसक्ति के बिना किया गया कर्म। अपना काम ठीक से कीजिए। इसके साथ-साथ, आने वाले युग की तैयारी के लिए भगवान के नाम-जप के मार्ग पर चलना अनिवार्य है। यदि हम काम करना बंद कर देंगे, तो अपने परिवार को कौन खिलाएगा? जो होना निश्चित है, वह सबके साथ होगा। केवल बैठकर प्रतीक्षा करना हमारे कर्तव्य का उल्लंघन है। महाभारत युद्ध के समय सैनिकों ने युद्ध से एक दिन पहले भोजन किया, यह जानते हुए भी कि वे संभवतः मारे जाएँगे, फिर भी उन्होंने अपने कर्तव्य निभाए। इसी प्रकार धर्म और अधर्म के बीच युद्ध होगा। जो धर्म के साथ रहेंगे, वे बच जाएँगे। अपने मित्र से कहिए कि वे अपना काम जारी रखें, दान-पुण्य करें, श्रीमद्भागवत पढ़ें, 16 नाम और 10 अवतारों का जप करें, त्रिसंध्या करें, और माधव नाम का जप करें। जब तक वह समय नहीं आता जब उद्योग-धंधे बंद हो जाएँगे, तब तक हमें अपने परिवार का पालन करना है और अपनी आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी करनी हैं, और साथ ही दृढ़ता से धर्म के मार्ग पर चलते रहना है।

► यह उत्तर सुनें · 15:29 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 617 मेरी माँ ने स्वप्न में देखा कि वे भगवान जगन्नाथ को कुछ अर्पित कर रही हैं। फिर उन्होंने दो उँगलियाँ दिखाकर कहा, 'बस देखते रहो क्या होता है।' इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: स्वप्न की दो उँगलियाँ आने वाले दो वर्षों का संकेत हैं। अगले दो वर्षों के भीतर संसार के लिए अत्यंत निर्णायक और कठिन समय आ रहा है। उस अवधि में लोग मलिका की भविष्यवाणियों को सचमुच समझ पाएँगे। भगवान ने आपकी माँ को यह संकेत उनकी पवित्रता और भक्ति के कारण दिया। दो उँगलियों का अर्थ है कि भविष्यवाणी किया गया समय दो वर्षों में आ जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:04 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 618 क्या इसका अर्थ दो महीने नहीं हो सकता?

उत्तर: मैं इस विषय में सब कुछ जानता हूँ, पर मैं इस पर और अधिक कहना नहीं चाहता। मैं उतना ही कहता हूँ जितना कहना आवश्यक है। ये घटनाएँ संसार में घटित होंगी, पर यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आप उस आध्यात्मिक मार्ग पर चलें जो मैं आपको दिखा रहा हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 20:54 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 619 पंडित जी, क्या प्रभु नवसारी, गुजरात आएँगे?

उत्तर: भगवान कल्कि इस समय पूरे भारत और ब्रह्मांड का भ्रमण कर रहे हैं। वे गुजरात अवश्य आएँगे, पर गुप्त रूप से, किसी को बताए बिना। धर्म की स्थापना के बाद वे वहाँ के भक्तों को बचाने के लिए पुनः गुजरात जाएँगे। आपको उस समय के आने की प्रतीक्षा करनी होगी। तब तक उन सिद्धांतों का पालन कीजिए जो मैं सिखाता हूँ। गुजरात में अनेक पवित्र लोग हैं और यह भगवान कृष्ण की पावन भूमि है, इसलिए भगवान की अनेक लीलाएँ वहाँ प्रकट होंगी। इसके अलावा, जलमग्न द्वारका नगरी पुनः जल से ऊपर उठेगी। मलिका कहती है कि जब अमेरिका जलमग्न होगा, तब द्वारका पुनः प्रकट होगी। आने वाले समय में गुजरात में भक्तों का एक समुदाय बनेगा, और हम सब उसे देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 22:29 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 620 आपने 64 प्रकार के रोगों का उल्लेख किया था। क्या यह कोरोनावायरस उन्हीं में से एक है? दूसरी बात, स्वयं को बचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें दवा पर भरोसा करना चाहिए या भगवान के नाम-जप पर? यह स्थिति बहुत कष्ट दे रही है।

उत्तर: इस रोग से बचने के लिए मैं जो मार्ग बताता हूँ वह है—प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ कीजिए। त्रिसंध्या (प्रातः, दोपहर और संध्या की प्रार्थना) के समय माधव नाम, 16 नाम और 10 अवतारों का जप कीजिए। आपको हमारे विश्व सनातन धर्म संगठन से भी जुड़ना चाहिए; संपर्क नंबर यूट्यूब के विवरण में हैं। यदि आप इस आध्यात्मिक मार्ग का अपने जीवन में पूर्ण रूप से पालन करेंगे, तो रोग से आपको कोई खतरा नहीं होगा। यही शास्त्रीय परंपरा है और यही मुक्ति का मार्ग है। भविष्य मलिका इसीलिए लिखी गई थी कि भक्तों को सुरक्षा के इस मार्ग पर मार्गदर्शन मिले। रोग आते रहेंगे, और कई आ भी चुके हैं, पर हमें कोई भय नहीं रखना चाहिए। हमारा कर्तव्य है धर्म का पालन करना और आने वाले युग के लिए निर्धारित परंपराओं का अनुसरण करना।

► यह उत्तर सुनें · 24:22 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 621 क्या एक दिन इंटरनेट और कंप्यूटर काम करना बंद कर देंगे? क्या ये सारी विशाल इमारतें जो बनाई गई हैं, राख में बदल जाएँगी? क्या सचमुच ऐसा हो सकता है?

उत्तर: हाँ, एक समय ऐसा आएगा जब कंप्यूटर और तकनीक का ज्ञान न तो सही परिणाम देगा और न ही किसी काम का रहेगा। लोग इस ज्ञान के मार्ग पर चलेंगे, पर वह निष्फल रहेगा। ऐसा समय निश्चित रूप से आएगा। संसार भर की सभी बड़ी-बड़ी इमारतें और विशाल संरचनाएँ भी नष्ट हो जाएँगी। किंतु जो भक्त इन संरचनाओं के निकट रहते हुए भी धर्म के मार्ग पर अडिग रहते हैं, सनातन धर्म और मालिका के सिद्धांतों का पालन करते हैं, उन्हें सुरक्षित रखा जाएगा। प्रभु अपने भक्तों की रक्षा करेंगे। यह मालिका का निश्चित वचन है। इसलिए उस मार्ग पर चलिए जो मैं आपको दिखाता हूँ। हम ये सत्संग मानवता को बचाने के लिए करते हैं। ये मेरे शब्द नहीं हैं; ये भगवान के शब्द हैं, और इन्हें आप तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। इनका चरण-दर-चरण पालन कीजिए, और आप देखेंगे कि संसार की समस्याएँ किस प्रकार हल होती हैं और आपको किस प्रकार शांति प्राप्त होती है।

► यह उत्तर सुनें · 26:28 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 622 लोग काला जादू और तांत्रिक क्रियाएँ करते हैं, और मुझे लगता है कि मैं अक्सर उनका निशाना बनता हूँ। कुछ समय तक इसका गहरा प्रभाव रहता है, जिससे बहुत परेशानी होती है और मेरे काम में बाधा आती है। जब मैं भगवान का नाम जपता हूँ और आपकी शिक्षाओं का पालन करता हूँ तो प्रभाव कम हो जाता है, पर कष्ट का वह समय बहुत कठिन होता है। मैं इससे कैसे निपटूँ?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। ऐसे आसुरी प्रवृत्ति के लोगों से परेशान व्यक्तियों की सहायता करना मेरा दायित्व है। निश्चिंत रहिए, ये दुष्ट लोग नष्ट होंगे, क्योंकि इन्होंने हर युग में पवित्र आत्माओं को कष्ट दिया है। उपाय इस प्रकार है: मैं आपको एक मंत्र दूँगा। दस अवतारों का, सोलह नामों का, भगवान कल्कि के नाम का, माँ के नाम का और दुर्गा स्तुति का जाप कीजिए। प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का वह अध्याय पढ़िए जिसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कंस वध का वर्णन है। साथ ही, एक तुलसी पत्र लीजिए, उसे शालिग्राम शिला या भगवान विष्णु के चित्र पर रखिए, उस पर 108 बार 'माधव' नाम का जाप कीजिए, और फिर उस पत्र को ग्रहण कर लीजिए। यह प्रतिदिन कीजिए। यह काला जादू करने वाले लोग आपके निकट के ही हैं, पर चिंता मत कीजिए; यह काम नहीं करेगा। यदि ब्रह्मांड के सारे तांत्रिक भी मिलकर आपके विरुद्ध हो जाएँ, तो भी वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्योंकि आध्यात्मिक शक्ति तांत्रिक शक्ति से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। आपकी भक्ति और आपकी पवित्रता ही आपका कवच है। मन ही मन निरंतर 'माधव' का जाप करते रहिए। कम से कम एक महीने तक, जब तक अत्यंत आवश्यक न हो, घर से बाहर मत जाइए। यदि बाहर जाना ही पड़े, तो नाम जप करके ही जाइए। यदि नकारात्मक प्रभाव महसूस हो, तो बैठ जाइए और 'ॐ श्री सत्य अनंत माधव' का जाप कीजिए। समस्या हल हो जाएगी। प्रभाव धीरे-धीरे घटेगा और फिर पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:05 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 623 क्या 2025 पाकिस्तान का आखिरी दिन होगा? क्या उसी समय भारत में गृहयुद्ध होगा? और क्या ओडिशा के राजा का अपहरण होगा? हमें यह जानकारी एक वेबसाइट पर मिली; आप यह निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?

उत्तर: मालिका कहती है कि 2025 में, जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेगा, तब ब्रह्मांड और पंचतत्वों में महान उथल-पुथल होगी। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि उसी दिन पाकिस्तान समाप्त हो जाएगा। जगन्नाथ के राजा से संबंधित घटना होगी, पर उसका समय अभी नहीं आया है। मैं पूरी जानकारी प्रकट नहीं करना चाहता क्योंकि इससे गोपनीय बातें उजागर हो जाएँगी। एक युद्ध होगा जिसमें पाकिस्तान और चीन भारत पर आक्रमण करेंगे, और 13 मुस्लिम देश पाकिस्तान का साथ देंगे। यह युद्ध 2029-2031 तक चल सकता है। भारतीय सेना इसे समाप्त नहीं कर पाएगी, इसलिए अंतिम युद्ध स्वयं प्रभु लड़ेंगे। वे पाकिस्तान का विनाश करेंगे और वहाँ धर्म की स्थापना करेंगे। उस समय सैन्य शक्ति व्यर्थ होगी; केवल मंत्र शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति ही काम आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:37 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 624 क्या भगवान श्रीकृष्ण ने रूस को उनकी सेवा करने के लिए कोई वरदान दिया था?

उत्तर: हाँ। उनके काल में, जब प्रभु समस्त ब्रह्मांड के उत्तरदायी थे, तब रूस के राजा ने उनकी सेवा करने का अवसर माँगा। प्रभु ने उत्तर दिया, 'इस युग में इसकी आवश्यकता नहीं है। किंतु कलियुग में, जब मैं जगन्नाथ क्षेत्र में दारुब्रह्म (काष्ठ विग्रह) के रूप में निवास करूँगा, तब मेरी भूमि और भारत महान संकट में होंगे। उस समय भारत की सेवा करके और मेरी जो सेवा शेष रह गई है उसे पूर्ण करके तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।'

► यह उत्तर सुनें · 39:32 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 625 भगवान श्रीकृष्ण की राशि क्या है? यह मेरा अंतिम प्रश्न है।

उत्तर: सभी राशियाँ उन्हीं की हैं। पर उनकी राशि सिंह (सिंह राशि) है।

► यह उत्तर सुनें · 40:28 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 626 तीसरे विश्व युद्ध के दौरान कोलकाता की क्या स्थिति होगी?

उत्तर: बात केवल कोलकाता की नहीं है। संसार के सभी बड़े महानगर नष्ट हो जाएँगे। इतने बड़े पैमाने का युद्ध आने वाला है कि इन शहरों का नामोनिशान नहीं बचेगा। संसार का भूगोल ही पूरी तरह बदल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:49 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 627 सात दिन और सात रात का अंधकार किस वर्ष होगा?

उत्तर: सात दिन और सात रात के पूर्ण अंधकार का यह काल अवश्य आएगा। सूर्य नहीं उगेगा। जंगली जानवर घरों में घुस आएँगे और लोगों पर हमला करेंगे। कुछ भी दिखाई नहीं देगा। किंतु भक्तों को कोई कष्ट नहीं होगा; उनके घर सुरक्षित रहेंगे। यह घटना प्रभु के प्रत्यक्ष नियंत्रण में है। भविष्य में यह निश्चित रूप से होगा, पर इसका समय पूर्णतः उन्हीं पर निर्भर है। हमारा कर्तव्य है प्रतीक्षा करना और तैयार रहना।

► यह उत्तर सुनें · 41:29 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 628 इस संदेश को फैलाने के लिए, क्या हम दीवारों पर लिखने या पर्चे छपवाकर बाँटने जैसे काम कर सकते हैं?

उत्तर: यदि आप सनातन धर्म के लिए कार्य करना चाहते हैं, तो यह बहुत उत्तम है। सबसे पहले, आपको विधिवत रूप से हमारे संगठन से जुड़ना चाहिए। दूसरा, 10-12 अन्य भक्तों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित कीजिए। पर्चों के विषय में, आपको धर्म की स्थापना, अधर्म के अंत, भगवान कल्कि के आगमन, और 1,44,000 भक्तों के एकत्र होने के बारे में लिखना चाहिए। यह उल्लेख कीजिए कि लोगों को धर्म के मार्ग पर लौटना होगा और भक्ति तथा पवित्रता के साथ मालिका का पालन करना होगा। सनातन धर्म के सभी अनुयायियों से आग्रह कीजिए कि वे इस संदेश को फैलाने के लिए एकजुट हों। इससे बड़ा परिवर्तन आएगा और उन भक्तों को बचाने में सहायता मिलेगी जो नकली संतों के अधीन झूठे आध्यात्मिक मार्गों में फँसे हुए हैं। पर्चा छपवाने से पहले उसमें लिखी जाने वाली सटीक सामग्री के बारे में कृपया एक बार मुझसे परामर्श अवश्य कर लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 44:15 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 629 मुझे एकादशी के दिन एक स्वप्न आया। हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे आए, हाथ हिलाया, और चले गए। फिर, जहाँ वे खड़े थे, वहाँ धोती पहने एक पुरुष प्रकट हुए, जिनके हाथ में तलवार जैसा कुछ था। उनके शरीर से हजारों फूटते पटाखों जैसा अपार प्रकाश निकल रहा था। पीछे से देखने पर उनका एक ही पैर लगता था, पर सामने से दो पैर थे। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: आपको भगवान कल्कि के दर्शन हुए हैं। आपने जो दो रूप देखे, वे भगवान बलराम और भगवान श्रीकृष्ण के प्रतीक हैं, जो एक होकर कल्कि बने हैं। एक ओर भगवान विष्णु हैं, दूसरी ओर भगवान शिव, दोनों एक ही शरीर में। प्रधानमंत्री की उपस्थिति यह दर्शाती है कि इस युग में विश्व के नेताओं सहित सभी लोगों को अंततः प्रभु की ओर मुड़ना ही होगा, क्योंकि वे ही ब्रह्मांड के एकमात्र मार्गदर्शक हैं। यह आने वाले समय का संकेत है। प्रभु ने आपको इस दर्शन का आशीर्वाद दिया है। यह बहुत अच्छी बात है कि आप सनातन धर्म से जुड़े हुए हैं और अपनी साधना करते हैं। उसे निष्ठा से जारी रखिए। एक समय आ रहा है जब एक महारोग के कारण मानवता को बचाना कठिन हो जाएगा, और इस वीडियो कॉल जैसे आधुनिक संचार साधन संभव नहीं होंगे। स्वयं को बचाने के लिए आपको इसी आध्यात्मिक मार्ग का सहारा लेना होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:51 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 630 बचपन से ही, जब मैं आरती करता हूँ, तो कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं जमीन से ऊपर उठ रहा हूँ, मानो मैं हवा में तैर रहा हूँ और झूल रहा हूँ। ऐसा अब भी कभी-कभी होता है। जब मैं होश में आता हूँ, तो सोचता हूँ कि यह क्या हुआ। यह अनुभव क्या है?

उत्तर: यह आपके शरीर में आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रवेश की अभिव्यक्ति है। यह प्रभु की कृपा का चिह्न और एक सच्चा आध्यात्मिक अनुभव है। एक समय आ रहा है जब भगवान कल्कि जिन भक्तों को अपनी शक्ति प्रदान करेंगे, वे उड़ सकेंगे, जल पर चल सकेंगे, और समुद्र पार कर सकेंगे। आपको जो अनुभूति होती है, वह इसी दिव्य शक्ति का प्रभाव है। यह बहुत ही शुभ संकेत है, जो आपके शरीर की पवित्रता और आप पर प्रभु के आशीर्वाद को दर्शाता है। इसे सहेजिए और बनाए रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 51:46 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 631 जब धर्म की स्थापना होगी, तो क्या भक्तों को भगवान के पास जाना होगा, या भगवान सबको बचाने के लिए हर राज्य में जाएँगे?

उत्तर: जब धर्म स्थापना का समय आएगा, तब हमारा सनातन धर्म संगठन मालिका के उपदेशों के प्रचार के माध्यम से पूरे भारत में 1,44,000 चुने हुए भक्तों की पहचान करेगा। जब ये भक्त-समूह एकत्र हो जाएँगे, तब वे सभी भगवान से मिलने आएँगे। उन्हें भगवान के दर्शन (दिव्य दर्शन) होंगे और उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा। इसके बाद वे अपने-अपने राज्यों में — चाहे बिहार हो, पंजाब हो, हरियाणा हो या दिल्ली — लौटकर धर्म स्थापना का कार्य करेंगे। इस मिशन को पूरा करने के लिए एक विशाल, एकजुट संगठन बनाया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:15 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 632 ग्रंथों में उल्लेख है कि 56वें 'अंक' में 'खेल' समाप्त हो जाएगा। 56वें 'अंक' का क्या अर्थ है?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद द्वारा बताए गए अंक जटिल ग्रह-गोचरों से संबंधित हैं, जिन्हें समय आने पर कोई भी साधारण मनुष्य पूरी तरह समझ नहीं सकता। मालिका इस बात की पुष्टि करती है कि मनुष्य इन अंकों से सही समय का निर्णय नहीं कर पाएँगे। इसके बजाय, आप समय को उसके लक्षणों से जानेंगे: फैलती हुई महामारी, पंचतत्वों में गड़बड़ी, और जगन्नाथ मंदिर जैसे पवित्र स्थलों पर अशुभ घटनाएँ। ये परिवर्तन ही असली प्रमाण हैं। जहाँ तक 56वें 'अंक' की बात है, यह भगवान कल्कि पर निर्भर है कि वे अपनी दिव्य लीला और धर्म स्थापना को कब समाप्त करें। इस पर अटकलें लगाने से कोई लाभ नहीं है। यह कोई रोज़ का समाचार नहीं है। यदि सबको सही तारीख पता चल जाए, तो वे लापरवाह हो जाएँगे। समय पूरी तरह भगवान की इच्छा पर निर्भर है। समय बहुत निकट है। आने वाले चार से पाँच वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और मानवता के लिए बहुत कठिन होंगे। केवल वही बचेंगे जो धर्म का पालन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 55:33 · 5 दिसम्बर 2021

प्रश्न 633 मुझे एक अजीब सपना आया जिसमें आप मेरे घर आए। मेरी माँ ने कहा कि हमें यज्ञ (हवन) करना है और मुझसे तैयारी करने को कहा। जब मैंने सामग्री ढूँढ़ी, तो मैंने बाहर एक रेलगाड़ी देखी जिससे कोयला गिर रहा था। मैंने सोचा, 'ऐसा कौन-सा यज्ञ होता है जिसमें कोयले की ज़रूरत पड़ती है?' तब आपने कहा, 'नहीं, यह आवश्यक है। इसकी तैयारी करो।' इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह स्वप्न आपके लिए एक निर्देश है। अपनी ग्रह शांति के लिए आपको घी से यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ करते समय निरंतर माधव के नाम का स्मरण करें और अग्नि में 108 बार आहुति दें। आपने स्वप्न में जो देखा, वह आपके लिए एक आवश्यक अनुष्ठान है, इसलिए आपको इसे करवाना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 57:37 · 5 दिसम्बर 2021

सत्र 31 · प्रश्न 634–654

L29 सम्भूत सम्बल ग्राम कहां है? जहा कल्कि भगवान जन्म लिए हैं? GOOGLE MEET #Kalkiavatar #LIVE

दिनांक: 9 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 634 16 मंडलों (क्षेत्रों) का गठन कब पूरा होगा? क्या भगवान ने इस कार्य के लिए कोई समय-सीमा निर्धारित की है?

उत्तर: मैं यह विनम्रता के साथ कहता हूँ। सबसे पहले, 16 मंडलों के जो भक्त हैं, वे विश्व सनातन धर्म महामाया संघ से जुड़ेंगे। मालिका ग्रंथों के अनुसार, भक्तों की निर्धारित संख्या पूरी होनी चाहिए। उसके बाद विश्व युद्ध आरंभ होगा। एक ओर युद्ध चलेगा, और दूसरी ओर भक्त भगवान से मिलेंगे। भगवान कल्कि उन्हें बचाने के लिए 16 मंडलों की स्थापना करेंगे। सभी 16 मंडलों के भक्तों का एकत्रीकरण अभी शेष है। जब सभी भक्त एकत्र हो जाएँगे, तब भगवान स्वयं 16 मंडलों का गठन करेंगे। यह उनका दिव्य दायित्व है।

► यह उत्तर सुनें · 15:20 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 635 हाल ही में जगन्नाथ मंदिर के ऊपर उड़ती हुई चीलें देखी गईं, जो एक असामान्य घटना है — इसका क्या महत्व है?

उत्तर: देखिए, यह सर्वविदित तथ्य है कि जगन्नाथ मंदिर के ऊपर से कोई पक्षी नहीं उड़ता। भगवान विश्वकर्मा ने मंदिर का निर्माण इस प्रकार किया है कि उसका ध्वज हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता है। मंदिर पर कभी कोई पक्षी नहीं बैठता, केवल चीलों का दुर्लभ अपवाद है, जो कुछ बार ध्वज के ऊपर नीलचक्र पर बैठी देखी गई हैं। बस एक-दो दिन पहले, पतितपावन ध्वज के पास मंदिर के ऊपर हजारों चीलें उड़ती हुई देखी गईं। इस घटना के एक दिन बाद, भारत को बहुत दुखद समाचार मिला, जिसके बारे में आप सब जानते हैं। भगवान के मंदिर के ऊपर उड़ती ये चीलें इस बात का संकेत हैं कि आने वाले समय में सम्पूर्ण ब्रह्मांड श्मशान के समान हो जाएगा। चूँकि भगवान सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हैं, उनके पवित्र क्षेत्र में ऐसी घटना का अर्थ है कि विशाल संख्या में मनुष्य और अन्य जीव-जंतु मृत्यु को प्राप्त होंगे। कठिन समय निकट आ रहा है, और हर जगह विनाश बढ़ेगा। यह भारत और सम्पूर्ण विश्व के लिए बहुत बुरा संकेत है। इसी कारण, मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए उस मार्ग पर चलें जो हम आपको दिखा रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:11 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 636 मेरा प्रश्न स्वामी यति नरसिंहानंद सरस्वती जी के विषय में है, जिनकी इस समय बहुत चर्चा है और जो धर्म संसद स्थापित करने जा रहे हैं। क्या भगवान कल्कि भी किसी रूप में वहाँ प्रकट होकर उनका समर्थन करेंगे? कृपया विस्तार से बताइए।

उत्तर: भविष्य मालिका में इस प्रकार का कुछ भी नहीं लिखा है। मालिका कहती है कि भगवान स्वयं धर्म की स्थापना करेंगे। भविष्य मालिका, श्रीमद् भागवतम्, या श्रीमद् महाभारत में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि भगवान के अतिरिक्त कोई और धर्म की स्थापना करेगा। हर युग में, जब भी धर्म की स्थापना होती है, भगवान ही अपने भक्तों के साथ इसे करते हैं। धर्म संसद की स्थापना करना एक अच्छा कार्य है, परंतु हमारे शास्त्रों में इसके विषय में कुछ नहीं लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 20:16 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 637 एक और बात, पंडित जी। स्वप्न में विराट स्वरूप (भगवान का विश्वरूप) देखने के पीछे क्या रहस्य या अर्थ है?

उत्तर: विराट स्वरूप, वह अनंत रूप जो भगवान ने महाभारत के समय अर्जुन को दिखाया था, आप भक्तों के लिए सबसे बड़ी चेतावनी है। चूँकि आप भक्त हैं, इसलिए भगवान आपको स्वप्न में यह दर्शन दे रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि भारत में एक महायुद्ध होने वाला है, और देश का विभाजन होगा। भगवान यह रूप इसलिए दिखाते हैं ताकि आपको आश्वस्त कर सकें कि वे अपने भक्तों के साथ हैं और आपकी रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 22:16 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 638 मैं फरीदाबाद से हूँ। मैंने सत्यबादी नामक एक स्थान के बारे में सुना है, जहाँ भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ हाथ-पैर सहित दर्शाई गई हैं। मालिका इस विषय में क्या कहती है? कृपया समझाइए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। सत्यबादी में जगन्नाथ, बलभद्र और माता सुभद्रा की मूर्तियों की पूजा वास्तव में हाथ-पैर सहित रूप में होती है। जिस विशेष स्थान पर हाथ-पैर वाले जगन्नाथ की मूर्ति स्थापित है, वह महापुरुष हरिदास की समाधि (स्थल) है, जो महापुरुष अच्युतानंद के अवतार थे। महापुरुष ने भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की थी कि वे उनके साधना-स्थल पर पधारें, और भगवान ने ऐसा करने का वचन दिया था। कलियुग के अंत में, जब रूस और चीन की सेनाओं का भारत के विरुद्ध महायुद्ध होगा, तब जगन्नाथ, बलभद्र और माता सुभद्रा की मूर्तियों की रक्षा के लिए उन्हें पुरी से सत्यबादी ले जाया जाएगा। वहाँ सात दिनों तक दारु ब्रह्म (पवित्र काष्ठ स्वरूपों) की रथ यात्रा होगी। मनुष्य शरीर में जन्मे भगवान कल्कि धर्म की स्थापना करेंगे, और देवताओं के दारु ब्रह्म स्वरूप वहीं सत्यबादी में रहेंगे और वहीं उनकी पूजा होगी। यही भविष्यवाणी है।

► यह उत्तर सुनें · 23:16 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 639 कुछ लोग ऐसे हैं जो हरि में विश्वास करते हैं, परंतु भगवान राम और भगवान कृष्ण का अनादर करते हैं, यहाँ तक कि उनका मज़ाक भी उड़ाते हैं। फिर भी वे अन्यथा सात्विक (आचरण में शुद्ध) हैं, तिलक लगाते हैं, और अच्छे विचार रखते हैं। ऐसे लोगों को कैसे बचाया या मार्गदर्शन दिया जा सकता है?

उत्तर: इस संसार में भगवान की कथाएँ अनंत हैं, और उनके स्वरूप अनुपम व अनंत हैं। भगवान विष्णु, राम, हरि, कृष्ण, जगन्नाथ, माधव, मधुसूदन — ये सब एक ही परमेश्वर के नाम हैं। अलग-अलग युगों में भगवान का नाम और अवतार अलग होता है। हरि नारायण से जुड़े हैं; हरि नारायण स्वयं विष्णु हैं। सत्ययुग में लोग उन्हें विष्णु या हरि के रूप में पूजते थे। 'हरि' नाम वास्तव में भगवान विष्णु के कल्कि अवतार के गुणों को दर्शाता है। सत्ययुग के बाद, त्रेतायुग में भगवान ने राम के रूप में अवतार लिया, और भक्त उनके नाम का जप करके तर गए। त्रेतायुग के बाद, द्वापरयुग में भगवान विष्णु, अर्थात् हरि, कृष्ण के रूप में जन्मे, और भक्त कृष्ण नाम का जप करके तर गए। कलियुग में जगन्नाथ अवतार है। वर्तमान काल में, जो युगों का संधिकाल है, मालिका कहती है कि माधव ही कल्कि हैं, और कल्कि ही माधव हैं। जो लोग भगवान के नामों के आधार पर भेद पैदा करते हैं, वे भावुकता में ऐसा करते हैं। मेरा मानना है कि उन्हें अपनी अंतरात्मा और भक्ति के साथ बार-बार भगवान से पूछना चाहिए, 'हे प्रभु, आपके अनंत रूप और अनंत नाम हैं। क्या आप हरि, राम, माधव या जगन्नाथ से भिन्न हैं?' यदि वे अपनी अंतरात्मा से पूछेंगे, तो भगवान उन्हें सही उत्तर देंगे। यह एक छोटा-सा भावनात्मक विषय है, जैसे लोग कहते हैं, 'मैं कृष्ण का भक्त हूँ,' 'मैं राम का भक्त हूँ,' 'मैं बद्रीनाथ का भक्त हूँ।' ऐसा कुछ नहीं होता। भगवान एक ही हैं, नाम अलग-अलग हैं। यदि वे नहीं समझते, तो यह उनकी अपरिपक्वता है, और हमें इस पर टिप्पणी करना आवश्यक नहीं लगता।

► यह उत्तर सुनें · 25:39 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 640 भविष्य में जिन भक्तों को भगवान के दर्शन होंगे, क्या उनके नाम पहले से ज्ञात हैं या कहीं लिखे हुए हैं?

उत्तर: केवल भगवान के भक्त, जो गोलोक (दिव्य धाम) से आए हैं और धर्म के प्रति समर्पित हैं, वही मालिका को सुनेंगे। जैसा कहा गया है, 'सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग के केवल मेरे भक्त ही मुझे जान पाएँगे; और कोई मुझे जान नहीं सकेगा।' मेरा भक्त वही है जो मालिका सुनता है, सुनने के बाद भगवान को खोजता है, और भक्ति के साथ उनके प्रति समर्पित होता है। भगवान के अवतार के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ेगी, उनका मन विस्तृत होगा, और उनकी भक्ति बढ़ेगी। ये ही सच्चे भक्त हैं, और यही वे लोग हैं जो भगवान कल्कि से मिलेंगे और सत्ययुग लाने में सहयोग करेंगे। उनके नाम 'नामलिखित ग्रंथ' नामक एक ग्रंथ में लिखे हैं। सुधर्मा सभा (धर्मसभा) में भगवान उनके नाम प्रकट करेंगे, उनके पूर्वजन्म, उनके कितने जन्म हुए, वे कहाँ से आए, और उन्होंने क्या-क्या किया — यह सब बताएँगे। यह उन भक्तों के लिए लिखा गया है जो सुधर्मा सभा का हिस्सा होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:23 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 641 मैं जम्मू से हूँ। जम्मू किस मंडल (क्षेत्र) में आता है? और दूसरी बात, क्या भगवान कल्कि का नामकरण संस्कार और अन्य संस्कार गुरु महाराज (अच्युतानंद) द्वारा किए गए थे?

उत्तर: जम्मू और कश्मीर बद्रीनाथ मंडल के अंतर्गत आते हैं। और हाँ, भगवान कल्कि का नामकरण संस्कार और अन्य सभी संस्कार महापुरुष अच्युतानंद जी द्वारा किए गए थे।

► यह उत्तर सुनें · 31:53 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 642 असम किस मंडल (क्षेत्र) के अंतर्गत आएगा?

उत्तर: वह कामाख्या मंडल में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:56 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 643 सपने में हनुमान जी को देखना, विशेषकर जब वे हमें कुछ दे रहे हों, इसका क्या संकेत है?

उत्तर: हनुमान जी भगवान राम के भक्त हैं, और भगवान राम ने उन्हें वरदान दिया था कि कलियुग के अंत में उन्हें उनके भक्तों की रक्षा करनी है और उन्हें उन तक लाना है। तो यदि हनुमान जी आपके सपने में आते हैं, तो इसका अर्थ है कि उनका कार्य आरंभ हो चुका है। वे भगवान के भक्तों को भगवान कल्कि तक लाने के उपाय खोज रहे हैं, चाहे स्वप्न के माध्यम से हो या किसी अन्य माध्यम से। सटीक माध्यम तो केवल भगवान और हनुमान जी ही जानते हैं, परंतु शास्त्रों के अनुसार यह कार्य शुरू हो चुका है, और यह इस बात का संकेत है कि भगवान हनुमान कमान संभाल रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:03 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 644 मैं सागर, मध्य प्रदेश से हूँ। हाल ही में मैं अपने घर के पास एक मंदिर में गया, जहाँ मैंने भगवान कल्कि की एक मूर्ति और मंदिर देखा जो मई 2019 में स्थापित हुआ था। पहले वह वहाँ नहीं था। वहाँ का मंत्र है 'जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मपति जयनते', जो आपके द्वारा दिए गए मंत्र से अलग है। मेरे लिए इसका क्या महत्व है?

उत्तर: 'जय जगत जय कल्कि...' मंत्र भी उपासना का एक रूप है, और आपको उसका जप करना चाहिए। उसमें कोई समस्या नहीं है। परंतु मालिका कहती है कि भगवान कल्कि का जो नाम उसमें लिखा है, वही नाम माँ काली अपनी परीक्षा के समय पूछेंगी। जो मंत्र हम मालिका के माध्यम से दे रहे हैं, वह केवल मालिका में ही मिलता है। स्वयं भगवान विष्णु ने उसे लिखने का निर्देश दिया था; यह किसी मनुष्य द्वारा बनाया गया मंत्र नहीं है। यही मंत्र भक्तों की रक्षा करेगा। भारत भर में भगवान कल्कि के अनेक मंत्रों का जप हो रहा है, और भगवान उन सभी से प्रसन्न हैं। उसमें कोई आपत्ति नहीं है। परंतु माँ काली अपनी परीक्षा में जो मंत्र पूछेंगी, वह यही है। वे पूछेंगी, 'भगवान का मंत्र बताओ', और जो नहीं बोल पाएंगे, वे उसी क्षण मारे जाएंगे। यह मंत्र अन्य कष्टों और रोगों से पार पाने में भी सहायक होगा। सत्य वही है जो शास्त्र में लिखा है। आपको अपनी समझ के अनुसार जो सही लगे, वही करना चाहिए। मेरा कर्तव्य आपको बताना है।

► यह उत्तर सुनें · 40:36 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 645 उस मंदिर के लोग यह भी कहते हैं कि उन्हें अपना मंत्र हनुमान जी से वरदान के रूप में मिला है। उन्हें आध्यात्मिक अनुभव भी हो रहे हैं। मंत्र अलग-अलग कैसे हो सकते हैं?

उत्तर: जो मंत्र गुरु-शिष्य परंपरा (गुरु परंपरा) के माध्यम से दिए जाते हैं, उन पर टिप्पणी करना मैं आवश्यक नहीं समझता। मैं भविष्य मालिका की बात कर रहा हूँ। मैं केवल इतना कह रहा हूँ कि मालिका में लिखे मंत्र का जप भक्तों के उद्धार का कारण बनेगा। यही लिखा है, और मैं भक्तों के लिए इसका प्रचार कर रहा हूँ। यह मंत्र पापियों के लिए नहीं है; उनके लिए इसका कोई अर्थ नहीं है। यह धर्मात्माओं के लिए अनिवार्य है। समय आने पर भक्त इस मंत्र की शक्ति को समझेंगे। भगवान कल्कि ओडिशा में अवतार लेंगे। संसार के सभी भक्त अंततः वहीं आएंगे। सनातन धर्म की मुख्य स्थापना वहीं होगी, और सुधर्म संघ (धर्मसभा) उसका मुख्यालय होगा। क्या उन दूसरे लोगों ने इन बातों के विषय में कुछ कहा है? क्या उन्होंने लिखा है कि भक्त किस प्रकार एकत्र होंगे, 16 मंडल किस प्रकार बनेंगे, या भगवान कहाँ अवतार लेंगे? यदि नहीं, तो कोई बात नहीं। उनकी भक्ति और उनकी गुरु परंपरा से मिला नाम भी भगवान को प्रसन्न करेगा। उसमें कोई आपत्ति नहीं है। परंतु मैं तो वही कह रहा हूँ जो मालिका में दिया गया है।

► यह उत्तर सुनें · 43:37 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 646 त्रिजटा वंश के प्रभावों के बारे में तो हम जानते हैं। पर चीन में भूरिश्रवा कौन हैं, और कलिंगासुर कौन हैं?

उत्तर: भूरिश्रवा शी जिनपिंग नहीं हैं। भूरिश्रवा भगवान कृष्ण के महान भक्त थे। उन्होंने युद्ध रोकने का प्रयास किया और अपनी पगड़ी तक फेंक दी, फिर भी वे युद्ध को रोक नहीं सके। वे कृष्ण के भक्त थे और शाकाहारी थे। चीन में जिन भूरिश्रवा का जन्म हुआ है, उनका जन्म एक भक्त के स्थान पर हुआ है, शासक के रूप में नहीं। वे भी आकर भगवान कल्कि की शरण लेंगे और भारत के साथ रहेंगे। और आप जिन कलिंगासुरों के बारे में पूछ रहे हैं, यह शब्द पापियों और भ्रष्टाचारियों के लिए है, जो समाज की समस्याओं का कारण हैं, जो धर्म के मार्ग पर नहीं चलते, जो वेदों और शास्त्रों की परंपराओं का उल्लंघन करते हैं। वही कलिंगासुर हैं, और उनका विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 45:56 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 647 एक बात बताइए, क्या त्रिजटा वंश के राजकुमार को भगवान जगन्नाथ के मंदिर में प्रवेश करने से मना किया गया है?

उत्तर: इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा। यह एक विवादास्पद प्रश्न है... समय ही बताएगा। अब तक ऐसा नहीं हुआ है। भविष्य में क्या होगा, यह भगवान पर निर्भर है। अभी तक ऐसा नहीं हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 47:22 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 648 मेरे पास एक बाल गोपाल (बाल कृष्ण की मूर्ति) हैं। जब मैं उन्हें सुलाती हूँ, तो कभी-कभी, हर 15-20 दिन में, मुझे उन पर रेत जैसा कुछ दिखाई देता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि बाल गोपाल खेल रहे हैं। उन्होंने मनुष्य शरीर में जन्म लिया है, और वह उनके चरणों की रेत है। अब वे एक मानव बालक हैं और घूमते-फिरते हैं। इसका प्रमाण आपके घर में प्रकट हो रहा है। भगवान आप जैसे अनेक भक्तों को ऐसे संकेत देते हैं। यह दर्शाता है कि आप कितनी पवित्र हैं। भगवान जो लीलाएँ करते हैं, उनका प्रतिबिंब आपके घर में दिखता है। हम भी आप जैसे पवित्र भक्तों का सम्मान करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:17 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 649 दोनों मंत्रों के विषय में — क्या हम दोनों का जप कर सकते हैं?

उत्तर: भगवान के अनेक नाम हैं। कोई कृष्ण का नाम जपता है, कोई महादेव की उपासना करता है, कोई विष्णु की। दूसरे गुरुदेव ने भगवान कल्कि का जो मंत्र दिया है, वह भी अच्छा मंत्र है; आप उसका जप कर सकते हैं, कोई आपत्ति नहीं है। परंतु आपके उद्धार के लिए, मालिका में लिखे अनुसार भगवान कल्कि के नाम का जप अधिक सुरक्षा दे सकता है, क्योंकि यही वह मंत्र है जो स्वयं भगवान ने अपने भक्तों के लिए दिया है, और जिसे हम आपके साथ साझा कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 49:21 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 650 16 मंडलों के विषय में — क्या उनमें केवल वर्तमान में जुड़े हुए भक्त ही होंगे, या और भी लोग हो सकते हैं?

उत्तर: 16 मंडलों के भक्त... आप बड़ौदा, गुजरात से हैं न? गुजरात में द्वारकाधीश मंडल बनेगा। कुल 1,56,000 भक्तों का एकत्र होना निश्चित है, और अभी सभी एकत्र नहीं हुए हैं। इसमें एक-दो वर्ष और लगेंगे। स्वयं भगवान सुधर्म सभा (धर्मसभा) में अपने भक्तों के साथ 16 मंडलों का गठन करेंगे, जैसा कि शास्त्रों में लिखा है। 16 मंडलों के नाम मालिका में उल्लेखित हैं। सभी भक्त, वे ब्रह्मांड में कहीं भी हों, भगवान कल्कि से मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:19 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 651 हर युग में भगवान मनुष्य जैसी लीलाएँ करते हैं, जिसमें शिक्षा ग्रहण करना भी शामिल है। क्या इस युग में भगवान कल्कि भी विधिवत शिक्षा ग्रहण करेंगे?

उत्तर: हर युग में जब भगवान आते हैं, तो वे दिव्य लीलाएँ और क्रीड़ाएँ करते हैं। जैसा महर्षि वाल्मीकि ने लिखा है, जिनके मुख से चारों वेद प्रकट होते हैं, वही एक साधारण विद्यार्थी की तरह आश्रम में बैठकर अध्ययन करते हैं। भगवान राम ने अध्ययन किया, परशुराम ने अध्ययन किया, बुद्ध ने शिक्षा ली, और चैतन्य महाप्रभु ने भी। भगवान जिस भी युग में आते हैं, वे उस युग की व्यवस्थाओं और संविधान का पालन करते हैं। वे कुछ अलग नहीं करते; वे एक साधारण मनुष्य की तरह अपना जीवन जीते हैं। इस युग में भी भगवान की सारी लीलाएँ उसी प्रकार हो रही हैं, और यह भी शास्त्रों में निर्दिष्ट है।

► यह उत्तर सुनें · 51:33 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 652 भगवान कल्कि मेरे स्वप्न में नहीं आते। मेरी बहन और अन्य लोगों ने उन्हें देखा है, पर मुझे उनके दर्शन कैसे होंगे?

उत्तर: यदि आप भगवान के भक्त हैं, तो भक्तिपूर्वक समर्पण कीजिए। भगवान माधव के नाम के जप से उन्होंने भारत में और विदेशों में भी भक्तों को अपने दर्शन दिए हैं। जब आपका समय आएगा, तब आपको भी उनके दर्शन प्राप्त होंगे। भक्त के लिए सबसे बड़ा कर्तव्य है प्रतीक्षा करना।

► यह उत्तर सुनें · 52:50 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 653 छत्तीसगढ़ के बारे में मलिका में क्या लिखा है?

उत्तर: छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश से सटा हुआ है। वहाँ के भक्त भी धर्म की स्थापना में सहयोग करेंगे। जैसे पूरे भारत से लोग आएँगे, वैसे ही छत्तीसगढ़ से भी भक्त भगवान के पास आएँगे। और मलिका में लिखा है कि ओडिशा के संबलपुर में माँ समलेश्वरी का मंदिर होगा, माँ भगवती का मंदिर। माँ समलेश्वरी के नाम से एक मंडल बनेगा, और उस मंडल में आधा मध्य प्रदेश सम्मिलित होगा।

► यह उत्तर सुनें · 53:59 · 9 दिसम्बर 2021

प्रश्न 654 मैं बेंगलुरु से हूँ। मैं लंबे समय से आपके सत्संग और सनातन धर्म के मार्ग का अनुसरण कर रहा हूँ। मेरी समस्या यह है कि मैं चाहता हूँ कि मेरे परिवार के सदस्य और निकट के लोग भी सनातन धर्म का पालन करें, भविष्य मलिका पढ़ें, और भगवान की शरण लें, पर वे मानते नहीं हैं। कृपया कोई प्रार्थना या कुछ मार्गदर्शन बताइए।

उत्तर: आपका प्रश्न बहुत अच्छा है। पर मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि इस संसार में सभी लोग भगवान के अपने जन, यदुवंशी नहीं हैं। सभी लोग इस युग में भगवान कल्कि से मिलने गोलोक से नहीं आए हैं। भेद है: जो भक्त हैं, उनका भगवान से संबंध है। जो नहीं हैं, वे कितना भी कहने पर नहीं आएँगे। आप अकेले जन्मे हैं, और अकेले ही मरेंगे; हम साथ नहीं जाएँगे। अपने परिवार के लिए आपकी चिंता आपकी पवित्रता का चिह्न है। यदि आप उन्हें कहते हैं और वे नहीं सुनते, तो कहना बंद कर दीजिए। एक समय आएगा जब जो आज नहीं सुन रहे, वही आपको इसके विषय में सुनने के लिए बुलाएँगे। वे आपसे बात करना चाहेंगे, पर आप कहेंगे, 'अब भगवान की बात करने की आज्ञा नहीं है, और अब कुछ बदला नहीं जा सकता, क्योंकि जब मैंने पहले कहा था तब आपने मार्ग का अनुसरण नहीं किया। अब उसका पालन करने से कोई फल नहीं मिलेगा। तो आप अपने मार्ग पर जाइए।' विनाश और धर्म की स्थापना की प्रक्रिया पूरे ब्रह्मांड में चल रही है। इसे केवल भक्त ही समझेंगे; मलिका में लिखा है कि दूसरे इसे समझ नहीं पाएँगे, क्योंकि उनका अधिकार नहीं है। इसे स्वीकार करने योग्य पवित्रता उनमें नहीं है। वे दिव्य लोकों से जन्मे नहीं हैं। वे मनुष्य रूप में जन्मे हैं और अपने कर्म के अनुसार अपने मार्ग पर चलेंगे। पर जो देवता हैं, जो भक्त हैं, जो वैकुंठवासी हैं, गोपियाँ और गोप—वही मलिका पर विश्वास करते हैं, करते रहेंगे, और कभी नहीं छोड़ेंगे। इसीलिए मलिका लिखी गई थी। तो यदि वे विश्वास नहीं करते, तो मत कहिए। कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे पास जो समय है उसे भगवान के चिंतन में, शास्त्रों के अध्ययन में, मलिका पढ़ने में, और संतों व भक्तों की संगति में बिताना ही श्रेष्ठ है।

► यह उत्तर सुनें · 56:16 · 9 दिसम्बर 2021

सत्र 32 · प्रश्न 655–671

L30 तुर्की, पाकिस्तान के साथ मिलके भारत के विरुद्ध युद्ध करेगा---GOOGLE MEET---- #Kalkiavtar #LIVE

दिनांक: 12 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 655 आपने कहा कि मृत्यु व्यक्ति के जीवन का सबसे आनंदमय क्षण है। यह ठीक हो सकता है, पर धर्म की स्थापना के लिए आप जिस कार्य के प्रति समर्पित हैं, उसे देखते हुए क्या भक्तों का एकत्रीकरण और धर्म की स्थापना जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी नहीं होनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, धर्म स्थापना का कार्य चल रहा है। और जैसे-जैसे यह हो रहा है, आप देखिए, समाज चर और अचर, गुण और दोष का मिश्रण है, जैसा तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है। संसार दोषपूर्ण है; कुछ लोग अच्छा करेंगे, पर जब संसार में धर्म की धारा बहती है, तो विरोध होता ही है। यह सदा से होता आया है। भगवान कृष्ण ने धर्म स्थापना में कितना दुख सहा, बुद्ध देव ने कितने कष्ट झेले, और चैतन्य महाप्रभु नंगे पाँव संसार में घूमे, अपना पूरा जीवन धर्म स्थापना को समर्पित कर दिया। तो आप और मेरे जैसे पुण्यात्मा भी इस कार्य में लगे हुए हैं। बाधाएँ आएँगी, पर उनसे हमारा क्या लेना-देना? कुछ लोगों को लगता है कि उनके स्वार्थ पर चोट पड़ रही है, पर हम निःस्वार्थ हैं, इसलिए कोई फर्क नहीं पड़ता। दूसरी बात यह है कि भक्तों का एकत्रीकरण हो रहा है, और धर्म की स्थापना भी हो रही है। आने वाले समय में, 2021 में जो कष्ट हुए, वे 2022 में बढ़ेंगे, और 2023 में और भी अधिक। यह बढ़ता ही जाएगा। पर हम अडिग हैं। हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं; हमें अपने मार्ग पर चलना है। निंदा और स्तुति ज्ञानी के लिए एक समान हैं, क्योंकि ज्ञानी लोग निंदा को स्तुति मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान और उनके भक्त हिंसा, क्रोध, आसक्ति और पाँच इंद्रियों से परे हैं। हम सब इन इंद्रियों से परे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 15:33 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 656 जब कोरोना शुरू हुआ, उसके लगभग एक महीने पहले, मुझे एक स्वप्न आया था। मैं गेहूँ लेकर समुद्र के किनारे खड़ी थी, और मैंने वह गेहूँ समुद्र में फेंक दिया। इसका क्या अर्थ है, कि कोरोना से पहले मुझे ऐसा स्वप्न आया?

उत्तर: यह स्वप्न भविष्य के अन्न संकट का संकेत था। इसने बताया कि फसल कटाई के समय बाढ़ में सारे अनाज और गेहूँ नष्ट हो जाएँगे। यह आने वाले समय का एक नमूना था, जो आपको पहले ही दिखाया गया। भगवान ने आपको चेतावनी दी कि एक समय आएगा जब लोगों का अन्न पानी से नष्ट हो जाएगा। और आज वही हो रहा है। भक्तों को इसी प्रकार के संकेत मिलते हैं, चाहे स्वप्न में, अनुभवों के माध्यम से, या मन में किसी अनुभूति के रूप में। जो कुछ आपके मन में आता है, वह भगवान की कृपा है।

► यह उत्तर सुनें · 19:22 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 657 पंडित जी, स्वप्न में आनंदमयी माँ के दर्शन होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, जो संत, साधु और पुण्यात्माएँ पहले थीं, उन्होंने अब पुनः पृथ्वी पर जन्म लिया है। आपका उनसे कोई संबंध अवश्य होगा, इसीलिए आपने आनंदमयी माँ को देखा। वे भी संभवतः पृथ्वी पर आ चुकी हैं। जैसे आध्यात्मिक विभूतियाँ अपने शिष्यों को स्वप्न में दर्शन देती हैं, वैसा ही अभी हो रहा है। इस जीवन में सभी भक्त उपस्थित हैं, क्योंकि जब स्वयं भगवान अवतरित होते हैं, तो सभी भक्त साधारण हो जाते हैं, संत साधारण हो जाते हैं, और वे भगवान से मिलते हैं, उनकी लीला में भाग लेते हैं, और फिर अत्यंत स्थिर भाव से प्रस्थान करते हैं। तो इसका अर्थ है कि आनंदमयी माँ, जो एक संत थीं, संभवतः वे भी पृथ्वी पर आ चुकी हैं, और इसीलिए आपने उन्हें स्वप्न में देखा।

► यह उत्तर सुनें · 22:15 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 658 मैंने पहले मांसाहार किया है। क्या फिर भी मेरा जीवन सही दिशा में जा सकता है? मैं पहले खाता था, पर जब से आपके वीडियो देखने लगा, मैंने छोड़ दिया। मैंने अज्ञानवश खाया; मुझे यह ज्ञान नहीं था। पर धीरे-धीरे मैंने अध्यात्म के बारे में जाना और आपसे भगवान कल्कि और भविष्य मलिका के बारे में सुना, तो मैंने छोड़ दिया। कृपया मुझे कुछ सही मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: संसार में दो प्रकार के पाप होते हैं। एक वह पाप जो अज्ञानवश होता है। दूसरा 'अपराध' है, जिसका अर्थ है जानबूझकर किसी का प्राण लेना या जान-बूझकर पाप करना। आपने अज्ञानवश मांसाहार किया। जब आपको मलिका के बारे में पता चला और शास्त्रों के माध्यम से समझ आया कि यह अच्छा नहीं है, तो आपने छोड़ दिया। इसके लिए आपको भगवान की कृपा मिलती है, क्योंकि आपने जानबूझकर ऐसा नहीं किया। जिस क्षण आपको ज्ञान हुआ, आपने छोड़ दिया। यह बहुत आनंददायक और पवित्र बात है। जो मार्ग मैंने दिखाया है—श्रीमद्भागवत का पाठ और त्रिसंध्या में माधव नाम का जप—वह आपके पूर्व के पापों को धो देगा और भविष्य में एक बहुत शक्तिशाली मार्ग की ओर बढ़ने की शक्ति देगा। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्म की स्थापना का समय अब है। यदि आप भगवान के भक्त हैं और मलिका का अनुसरण कर रहे हैं, तो आप निश्चित रूप से भगवान के भक्त हैं और आप सत्य युग की भी कामना करते हैं। तो ऐसी अपवित्रताओं से दूर रहिए। जो मार्ग मैं दिखा रहा हूँ उसमें कोई पाप नहीं है; सब कुछ आनंदपूर्वक आगे बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 23:38 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 659 मैं पूछना चाहता हूँ, क्या भगवान विष्णु के स्वरूप में भगवान कल्कि पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं?

उत्तर: वर्तमान समय में भगवान का आगमन हो चुका है। धर्म स्थापना का समय चल रहा है, पापियों का विनाश हो रहा है, और भक्तों का एकत्रीकरण भी हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 26:57 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 660 पंडित जी, हम देखते हैं कि 100 में से 95 लोग पापी हैं। तो धर्म आगे कैसे बढ़ेगा?

उत्तर: यह कलियुग है, इसीलिए जनसंख्या इतनी अधिक है। पर सत्य युग में पूरे संसार में केवल 64 करोड़ लोग ही बचेंगे। हनुमान जी ने यह लिखा है। और भारत में केवल 3 करोड़ ही बचेंगे। अभी भारत में 140-145 करोड़ लोग हैं, पर केवल 3 करोड़ ही बचेंगे। लोग कम होने पर, जो बचेंगे वे धर्म की ओर मुड़ेंगे। 3 करोड़ भक्तों की संख्या पूरी होगी, और वे लोग धर्म को धारण करेंगे और आनंदपूर्वक जीवन बिताएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:38 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 661 पंडित जी, इसमें कितना समय लगेगा?

उत्तर: देखिए, धर्म स्थापना का पहला चरण कम से कम 3 वर्षों तक चलेगा। यह प्रक्रिया सातवें चरण तक चलती रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 28:41 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 662 अगर हमारे भगवान कल्कि मनुष्य शरीर में आ चुके हैं और इसी धरती पर हैं, तो क्या वे अपने किसी भक्त को दर्शन दे रहे हैं?

उत्तर: जगन्नाथ मंदिर में जो घटना हुई, जिसमें बड़ी संख्या में गिद्ध नीलचक्र और पतित पावन ध्वज के चारों ओर लंबे समय तक मंडराते रहे, वह एक बड़ा संकेत था। भगवान जगन्नाथ स्वयं कलियुग में भगवान के अवतार हैं, और भगवान अपने ही क्षेत्र से प्रमाण दे रहे हैं कि सारा ब्रह्मांड युद्धभूमि बन जाएगा। यह सबसे बड़ा संकेत है, और मालिका में इसके बारे में लिखा है। भगवान के अवतार के दर्शन देने के संबंध में, यदि आप भगवान की शरण में आना चाहते हैं और मालिका का अनुसरण करना चाहते हैं, तो मेरा सुझाव है कि आप मेरे सैकड़ों वीडियो देखें। आपको बहुत से उत्तर मिलेंगे और बड़ा आनंद अनुभव होगा। जहाँ तक आपके विशेष प्रश्न की बात है, हम इसकी चर्चा समूह में नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे सनातन धर्म के कार्य के साथ-साथ हमें बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसा कि आप जानते हैं। हम इसे निजी रखेंगे। मैं किसी से कहूँगा कि आपसे निजी तौर पर बात करके इस पर विस्तार से चर्चा करे।

► यह उत्तर सुनें · 29:30 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 663 जयपुर में बने पहले कल्कि मंदिर में भगवान कल्कि के घोड़े की मूर्ति है। ऐसी मान्यता है कि घोड़े के पैर का घाव धीरे-धीरे भर रहा है, और जब वह पूरी तरह भर जाएगा, तब घोड़ा जीवित हो उठेगा। उस घाव की वर्तमान स्थिति क्या है?

उत्तर: मैं आपको बताता हूँ। एक समय आएगा जब भगवान कल्कि स्वयं उस स्थान पर जाएँगे। मान्यता यह है कि घोड़ा जीवित हो उठेगा, और भगवान कल्कि वहीं से उस पर सवार होंगे। मैं आपसे कह रहा हूँ, भगवान कल्कि उस स्थान पर जाएँगे, और उनके स्पर्श से वह जीवित हो उठेगा। वह समय अभी नहीं आया है। धैर्य रखिए, क्योंकि धर्म स्थापना में लगभग 10 वर्ष लगेंगे। यह 2020 में शुरू हुआ और 2030 तक चलेगा। इसी बीच, विश्वयुद्ध के दौरान, संघर्ष के अंत में, भगवान कल्कि अपने भौतिक शरीर में उस स्थान पर जाएँगे। उस समय अच्छे और पवित्र भक्त इसे देख सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:00 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 664 कोरोना महामारी के दौरान मेरा अवलोकन यह था कि एक अन्य विशेष समुदाय पर, जो गोमांस और वैसी ही चीज़ें खाता है, इस बीमारी का उतना प्रभाव नहीं पड़ा। इससे मेरे मन में कुछ भ्रम पैदा हुआ है। इसकी व्याख्या कैसे की जा सकती है?

उत्तर: देखिए, धर्म हमेशा सीधा मार्ग होता है; वह टेढ़ा नहीं होता। भगवान हिसाब रखते हैं कि कोई व्यक्ति कितने पाप करता है। एक समय आएगा... मैं इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करना चाहता, पर इतना कहूँगा: एक समय आ रहा है जब भारत में या विश्व में एक भी 'विधर्मी' नहीं बचेगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने शक्तिशाली, बलवान या साधन-संपन्न हैं; एक भी नहीं बचेगा। यह मालिका में लिखा है। ज्ञानियों और भक्तों का सबसे बड़ा कर्तव्य है सही समय की प्रतीक्षा करना। हम उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और आपको भी प्रतीक्षा करनी चाहिए। समय को देखिए, और उत्तर धीरे-धीरे आपके सामने स्वयं प्रकट होता जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:16 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 665 मैंने आपके किसी एपिसोड में सुना था कि भगवान कल्कि परशुराम जी से शिक्षा प्राप्त करेंगे, 64 कलाएँ और दिव्यास्त्रों का प्रयोग सीखेंगे, साथ ही शासन के तरीके भी। क्या उन्हें यह प्रशिक्षण मिल चुका है, या यह अभी होना बाकी है?

उत्तर: संस्कृत शास्त्रों में लिखा है कि जब समय आएगा, तब भगवान परशुराम भगवान कल्कि को 64 कलाएँ, ब्रह्मास्त्र, दिव्य अस्त्र, वरुणास्त्र और अन्य सभी दिव्यास्त्र प्रदान करेंगे। लेकिन यह गुप्त रूप से होगा; कोई इसे देख नहीं पाएगा। और यह हो भी चुका है। धर्म स्थापना चल रही है, और परशुराम जी अब भी महेन्द्रांचल पर्वत पर तपस्या में हैं। यह सारा कार्य पूरा हो चुका है। क्यों? क्योंकि यह भगवान और परशुराम के बीच का विषय है। हम कलियुग में हैं। यदि यह सब खुले तौर पर होता, तो सोचिए मीडिया और उससे उत्पन्न समस्याओं के बारे में। इसलिए भगवान और परशुराम ने यह सब पहले ही गुप्त रूप से कर लिया है, और धर्म स्थापना चल रही है। सब कुछ हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 36:29 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 666 पंडित जी, क्या इस समय हम स्वयं भगवान अच्युतानंद महाराज से बात कर रहे हैं?

उत्तर: नहीं, बाबा। देखिए, हम अच्युतानंद के भक्तों के वचनों का प्रचार कर रहे हैं। मैं वे नहीं हूँ। मैंने आपसे बार-बार कहा है, इस संसार में एकमात्र गुरु भगवान हैं। यदि आपको गुरु चाहिए, तो हनुमान जी को अपना गुरु बनाइए। उन्हें गुरु बनाकर आप भगवान राम तक पहुँच सकते हैं। मैं तो एक साधारण मनुष्य हूँ। भगवान ने मुझे ब्राह्मण कुल में जन्म दिया है, और मेरा कर्तव्य है वेदों के मार्ग से इस संसार में परिवर्तन लाना। मैं तो बस एक सेवक हूँ, और सेवक कभी स्वामी नहीं बन सकता। ऐसा सोचना अहंकार होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:29 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 667 मैं बालाजी मंदिर के बारे में कुछ साझा करना चाहता था, जहाँ आपको अपनी मनोकामना बतानी नहीं पड़ती; वहाँ के संत को कागज़ पर एक प्रिंटआउट मिल जाता है जिसमें विस्तार से लिखा होता है कि व्यक्ति क्यों आया है। इस पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: यह बहुत ही आनंद की बात है। प्रसिद्ध बालाजी... हाँ, वहाँ आपको कुछ कहना नहीं पड़ता। वहाँ के संत को कागज़ का एक प्रिंटआउट मिल जाता है जिसमें अपने आप लिखा होता है कि व्यक्ति ने यह प्रार्थना क्यों की है। यह बहुत ही आनंद की बात है। जब मुझे भगवान का आशीर्वाद मिलेगा, तो मैं भी वहाँ जाऊँगा। यह ईश्वर की कृपा है। यह हम सब सनातन धर्म वालों का सौभाग्य है कि ईश्वर के आशीर्वाद से हमारे पास यह शक्ति है। बालाजी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

► यह उत्तर सुनें · 40:41 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 668 मैं केवल दिन में दो बार, सुबह और शाम, त्रिसंध्या कर पाता हूँ। व्यस्त दिनचर्या के कारण दोपहर में नहीं कर पाता। क्या इसका कोई समाधान है?

उत्तर: देखिए, यदि आप दोपहर में नहीं कर पाते, तो एक काम कीजिए। उस समय, बस एक-दो मिनट के लिए, 'माधव' नाम का 108 बार जप कीजिए और केवल 10 अवतारों के नाम बोल दीजिए: मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि, तथा विष्णु के 16 नाम जो आप जानते हैं। बस इतना ही कीजिए। आप इसे खड़े होकर या बैठकर, कहीं भी कर सकते हैं। यह संधिकाल है जब देवता उपस्थित रहते हैं, और जब मनुष्य की प्रार्थना उन तक पहुँचती है, तो सत्ययुग आ सकता है। इसलिए कृपया इस अभ्यास का पालन कीजिए और कम से कम दो-तीन मिनट इसे दीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 42:04 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 669 पंडित जी, क्या आप कृपया हमें भगवान के 24 अवतारों और उनकी लीलाओं के बारे में कुछ बताएँगे?

उत्तर: हाँ, मैं अवश्य बताऊँगा। 24 अवतारों को समझाने में बहुत समय लगेगा। पर देखिए, 24 अवतारों में सबसे पहले चार कुमार हैं: सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार। अंतिम अवतार कल्कि हैं। 10 मुख्य अवतार भी इसी में शामिल हैं, और दत्तात्रेय जैसे अवतार भी। परंतु चारों युगों में धर्म स्थापना के लिए 10 अवतार सबसे प्रमुख हैं। जयदेव, जो भगवान जगन्नाथ के परम भक्त थे, उन्होंने इनके बारे में तब लिखा जब भगवान जगन्नाथ ने स्वयं उन्हें बताया। कल्कि अवतार निकट भविष्य में होने वाला है। मैं 24 अवतारों पर हमारे यूट्यूब चैनल पर एक विस्तृत एपिसोड बनाऊँगा, जिसे आप सब सुन सकें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:02 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 670 मेरा एक प्रश्न है। हमारे परिवार में हम पूजा-पाठ करते हैं, लेकिन कुछ परिस्थितियों और आर्थिक तंगी के कारण मैं भगवान के दर्शन के लिए मंदिर नहीं जा पाता। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आपकी भक्ति में शक्ति है। उस भक्ति को प्रकट कीजिए। भगवान के दर्शन सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है; भगवान द्वारा दिखाया गया मार्ग महत्वपूर्ण है। केवल दर्शन कर लेने से कोई महान नहीं हो जाता। महान है भगवान द्वारा दिए गए शास्त्रों को पढ़ना और समझना तथा स्वयं को सांसारिक और सामाजिक जीवन से अलग करना। भगवान के नाम का भजन-कीर्तन करने से आपको वह सब कुछ मिलेगा जो दर्शन पाने वालों को मिलता है। आपको भी मिलेगा, इसलिए दुखी मत होइए। मैं जो मार्ग दिखा रहा हूँ, उसका अनुसरण कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। एक समय आएगा जब आपको धन मिलेगा, सब कुछ ठीक हो जाएगा, और आपकी आर्थिक स्थिति भी बदल जाएगी। बस जैसा कहा गया है, वैसा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:57 · 12 दिसम्बर 2021

प्रश्न 671 मैं यह पूछना चाहता था कि आपने पहले एक भक्त से कहा था कि अगर किसी पर काला जादू (black magic) का असर हो, तो उसे सुपारी पर एक तुलसी पत्र रखकर वह जल पीना चाहिए और भगवान का नाम लेना चाहिए, तो काला जादू असर नहीं करेगा। क्या यह उपाय हर किसी के लिए सही और प्रभावी है?

उत्तर: हाँ, माधव का नाम इतना पवित्र और शक्तिशाली है। अगर वह भक्ति और मुक्ति दे सकता है, तो... देखिए, ये नकारात्मक शक्तियाँ भी एक प्रकार के राक्षस हैं जो कष्ट देते हैं। वे कैसे पराजित होंगे? आपकी भक्ति के प्रकाश से। तो आप सब धर्म का प्रकाश फैलाइए, जो मार्ग मैंने दिखाया है उस पर चलिए, और जैसा मैंने कहा है वैसा कीजिए। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:41 · 12 दिसम्बर 2021

सत्र 33 · प्रश्न 672–685

L31 श्री जग्गनाथ जी छत्तिया बट्ट जाएंगे

दिनांक: 16 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 672 मेरा एक प्रश्न है। आजकल जैसा समय है, उसमें मैं अपनी बेटी का विवाह कैसे करूँ? वह अब 20 वर्ष की है, लेकिन जो लड़के हमें मिल रहे हैं वे मांसाहारी और शराब पीने वाले हैं। मैं क्या करूँ? उसका विवाह कैसे होगा?

उत्तर: देखिए माँ, आपने बहुत अच्छी बात कही। आज के समाज में जो लोग शराब पीते हैं, अकसर उनका चरित्र अच्छा नहीं होता। और फेसबुक तथा पोर्न वेबसाइटों के प्रभाव से बहुत-से लोग बिगड़ गए हैं। लेकिन एक बात है, माँ। भगवान की शरण लीजिए और श्रीमद्भागवत के मार्ग पर बनी रहिए। अपनी बेटी को भी यही मार्ग दिखाइए। आपको किसी अच्छे, शाकाहारी लड़के का—जो मांसाहार नहीं करता—संबंध मिलेगा, और उससे विवाह करके वह सुखी जीवन बिताएगी। देखिए, आज के समय में जब लोग विवाह करते हैं, तो बहुत-से विवाह टिकते ही नहीं। बहुत लोग तलाक ले लेते हैं, और परिवारों में अशांति है। बहुत-सी बेटियाँ अपना घर छोड़कर अकेली रह रही हैं, क्योंकि आज के समय के पुरुषों में पवित्रता नहीं है। ऐसे लोगों से विवाह करने से अच्छा है थोड़ा प्रतीक्षा कर लेना। भगवान के मार्ग पर रहने से भगवान आपके लिए एक अच्छा लड़का भेजेंगे। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए। जो मार्ग मैं बता रहा हूँ, उस पर चलिए। आपको संबंध मिलेगा, अच्छा लड़का मिलेगा, और उसी से आप उसका विवाह करेंगी। समय की प्रतीक्षा कीजिए, माँ। जय जय माँ जय।

► यह उत्तर सुनें · 35:26 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 673 मेरा प्रश्न यह है कि जो लोग सत्ययुग तक जीवित बचेंगे, क्या उन्हें अपने चारों ओर इतना विनाश देखकर अत्यंत पीड़ा और कष्ट नहीं होगा? अपने ही परिवार वालों को शायद मरते हुए देखकर? इतनी पीड़ा में वे नए युग की स्थापना कैसे करेंगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। लेकिन देखिए बाबा, द्वापर युग के अंत में, जो लोग मालिका से जुड़े हैं, वे पवित्र आत्माएँ हैं जो भगवान के लिए पृथ्वी पर आई हैं। उनका कर्तव्य है पृथ्वी की पूर्ण रूप से रक्षा करना और मानव समाज को सत्य, धर्म, न्याय, नीति और आदर्श के मार्ग पर लाना। एक समय आएगा जब भगवान का अस्त्र धारण कर संसार की, ब्रह्मांड की रक्षा करना और पृथ्वी को उसकी नई सृष्टि के लिए, सत्ययुग के लिए तैयार करना आपका कर्तव्य होगा। उस समय आपके मन में यह नहीं रहेगा कि कौन मर रहा है और कौन नहीं। एक समय आ रहा है जब लोग चारों ओर मृत्यु देखेंगे। जब कोई मरेगा—चाहे परिवार का हो, मित्र हो, रिश्तेदार हो, या कोई दूर का—जैसे-जैसे यह होता रहेगा, आपको इसकी आदत पड़ जाएगी। यह पहली बात है। दूसरी बात, भगवान ने आप सबसे धर्म की रक्षा करने को कहा है। उस समय आपको शक्ति और सामर्थ्य भी मिलेगी, और आपका मन दृढ़ हो जाएगा। आप अपने कार्य में लगे रहेंगे, और वह एक दैवीय कर्तव्य जैसा लगेगा। समय के साथ लोग भी बदलेंगे और सत्ययुग लाने के लिए कार्य करने लगेंगे। तो समय के साथ, उस क्षण जो भी आवश्यक होगा, वह भगवान की कृपा से हो जाएगा। इसकी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन अगर आप संसार को और अपने परिवार को बचाना चाहते हैं, तो उन्हें धर्म के मार्ग पर लाना और सही राह दिखाना हमारा कर्तव्य है। ऐसा करना ही सही होगा। जय जय माँ जय।

► यह उत्तर सुनें · 37:33 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 674 भक्तों को किन परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा, और उन्हें कैसे पता चलेगा कि क्या करना है? उन्हें किस नाम का जप करना चाहिए?

उत्तर: देखिए बाबा, मैं आपको शुरू से बताता हूँ। सत्ययुग में लोग भगवान विष्णु का नाम जपते थे। सत्ययुग में ऋषि, मुनि, साधु और संत केवल भगवान विष्णु का ही नाम जपते थे। सत्ययुग के बाद जब त्रेता युग आया, तो भगवान राम का नाम जपा गया, और राम नाम जपकर सभी भक्तों ने मुक्ति पाई। द्वापर युग में भगवान कृष्ण का नाम जपकर भक्तों ने वैकुंठ प्राप्त किया। और कलियुग में श्री जगन्नाथ का नाम है, क्योंकि कलियुग के अवतार श्री जगन्नाथ हैं। लेकिन कलियुग भी समाप्त हो चुका है। अब हम सत्ययुग की ओर बढ़ रहे हैं। इस समय, माधव का नाम लेने से... और जो देवी माताएँ आएँगी, अष्ट दुर्गा और नव दुर्गा, वे भक्तों की परीक्षा लेंगी। वे स्वप्न में और साक्षात् रूप में परीक्षा लेंगी। वे तीन-चार बातें पूछेंगी। पहले वे पूछेंगी, 'तुम किसका नाम जप रहे हो?' भक्त कहेगा, 'मैं माधव का नाम जप रहा हूँ।' यह पहले प्रश्न का उत्तर होगा। दूसरे, वे कहेंगी, 'दुर्गा-माधव स्तुति सुनाओ।' उसे सुनाने से दूसरे प्रश्न का उत्तर हो जाएगा। फिर वे कहेंगी, '16 नाम सुनाओ।' 16 नाम सुनाने से वे प्रसन्न होंगी। फिर वे कहेंगी, '10 अवतार सुनाओ।' जो मार्ग मैं आपको बता रहा हूँ, उस पर चलने से न रोग, न देवी माताएँ, न कोई प्राकृतिक आपदा आपका कुछ बिगाड़ पाएगी। बस करके देखिए। जब समय आएगा, तब आपको इसका मूल्य और इसकी शक्ति का एहसास होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:03 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 675 हजारों वर्ष पुरानी भगवान की मूर्तियाँ मिल रही हैं। इन प्राचीन मूर्तियों के अभी मिलने का क्या महत्व है?

उत्तर: 5,126 वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण द्वारिका के राजा के रूप में इस धरती पर थे। तो ये मूर्तियाँ, जो भारत में और बाहर के देशों में खुदाई में निकल रही हैं, मुख्यतः उसी समय की हैं, 5,000 वर्ष पहले की। हमारे शास्त्र कहते हैं कि 5,126 वर्ष हो चुके हैं, जो विज्ञान को अध्यात्म के साथ जोड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसे-जैसे सत्ययुग निकट आ रहा है, सनातन धर्म ब्रह्मांड में सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी देशों के लोग यह जानते हैं। वे कह सकते हैं, 'हम ईसाई हैं', या 'हम किसी दूसरे समुदाय के हैं', लेकिन वहाँ हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिल रही हैं। इसका प्रमाण यह है कि उस समय सनातन धर्म पूरे ब्रह्मांड में प्रचलित था, और फिर से वैसा ही होने वाला है। यह हमारे लिए सबसे पवित्र संदेश है, और इससे हमारे मन को शांति मिलती है। एक समय आएगा जब सारा ब्रह्मांड सनातन धर्म का होगा। कोई दूसरा धर्म नहीं होगा। मैं कट्टरपंथी नहीं हूँ, लेकिन यह एक स्वाभाविक सत्य है, क्योंकि सनातन धर्म वह शाश्वत धर्म है जो ब्रह्मांड को धारण करता है। सनातन धर्म था, है, और भविष्य में भी पूरे ब्रह्मांड में रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:48 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 676 आप कहते हैं कि अब बहुत थोड़ा समय बचा है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, आज हम जिस समय में जी रहे हैं, क्या कोई व्यक्ति शांति में है? व्यक्ति के पास चाहे कितने भी साधन हों, वह शांत नहीं है। इसका अर्थ है कि यह युग परिवर्तन का समय है। और देखिए, जब फसल कटाई के समय वर्षा विनाश करती है, तो यह अभाव केवल भारत में नहीं है। आने वाले समय में सूखा पड़ेगा, और लोगों को अन्न नहीं मिलेगा। लेकिन जो भक्त भगवान के मार्ग पर रहेंगे, वे प्रभु की कृपा के अंतर्गत रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 54:44 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 677 'छतिया' क्या है?

उत्तर: हरिदास जी ने अपना आश्रम, अपना उपासना स्थल बनाया था, और वे भगवान के भक्त थे। उन्होंने भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की, 'एक बार मेरे स्थान पर पधारिए, वहाँ रथयात्रा होगी और मुझे आपके दर्शन होंगे।' लेकिन उस समय ब्राह्मणों और सेवकों ने हरिदास महाराज को भगवान के दर्शन में बहुत बाधाएँ डालीं। इससे वे दुखी हुए और उन्होंने प्रार्थना की, 'प्रभु, कृपया बस एक बार पधारिए।' भगवान ने उत्तर दिया, 'मैं द्वापर युग से ही छतिया धाम जाने की योजना बना रहा हूँ। मैंने छतिया को आशीर्वाद दिया है, और तुम भी यही माँग रहे हो। दोनों को पूरा करने के लिए मैं छतिया जाऊँगा, लेकिन केवल सात दिनों के लिए।'

► यह उत्तर सुनें · 55:26 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 678 यह कहाँ स्थित है?

उत्तर: लगभग 50 किलोमीटर दूर है... ठीक है, माँ। जय जय माँ जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 56:17 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 679 मेरा पहला प्रश्न है, क्या भगवान कल्कि अवतार ले चुके हैं? और मेरा दूसरा प्रश्न है, क्या आप हमें चीन के बारे में कुछ बता सकते हैं? और बिहार के बारे में भी?

उत्तर: बिहार के संबंध में, वह पवित्र भूमि फिर से पवित्र होगी, और मैं अखंड बिहार की बात कर रहा हूँ। मैं वर्तमान राजनीतिक स्थिति की बात नहीं कर रहा; मैं भविष्य की बात कर रहा हूँ। बिहार के बारे में लिखा है। बिहार के सभी भक्तों को एक होना पड़ेगा, धर्म की स्थापना होगी, और भगवान के भक्तों को भगवान के दर्शन भी होंगे। प्राकृतिक आपदाएँ आएँगी; बिहार के बारे में सब कुछ लिखा है। लेकिन हमें इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हम भगवान के मार्ग पर बने रहेंगे। यह दैवीय इच्छा से, भगवान की इच्छा से होगा। भगवान कल्कि के चार रूप होंगे... वे अपने शरीर सहित होंगे, और केवल उनकी आज्ञा मात्र से कार्य होंगे। यह शास्त्रों में लिखा है। तो चिंता की कोई बात नहीं है। हमारा कर्तव्य है मार्ग पर चलना, मालिका का अनुसरण करना, और धर्म की स्थापना करना।

► यह उत्तर सुनें · 57:09 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 680 तो, भगवान कल्कि ने अवतार लिया है या नहीं?

उत्तर: देखिए बाबा, यह एक गुप्त, रहस्यमय विषय है। अगर मैं इस पर बोलूँगा, तो कुछ लोग मानेंगे और कुछ नहीं मानेंगे। यह भी लिखा है कि केवल सच्चे भक्त, जो चारों युगों से भक्त रहे हैं, वे ही जानेंगे कि भगवान आ रहे हैं। मैं आपको इतना बताऊँगा, बेटा, अपने स्वयं के अनुभव और भक्ति से: अपने अंतःकरण से पूछिए, 'भगवान, क्या आप धरती पर आ चुके हैं? अगर आप आ गए हैं, प्रभु, तो मैं आपके दर्शन करना चाहता हूँ।' आपका अंतःकरण आपको उत्तर देगा, और भगवान किसी संकेत के माध्यम से आपको बता देंगे। देखिए, जैसे मैं भगवान का कार्य कर रहा हूँ, वैसे ही आप जैसे लोग भी कर रहे हैं। तो आप पर भी भगवान की प्रत्यक्ष कृपा होगी। अपनी अंतरात्मा से पूछिए, आपको उत्तर मिलेगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए, आपको उत्तर मिलेगा, और फिर आप मुझे बता सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 58:58 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 681 पंडित जी, मेरा प्रश्न है, कृपया हमें दुर्गा-माधव स्तुति के बारे में बताइए।

उत्तर: दुर्गा-माधव स्तुति भगवान के एक पवित्र भक्त ने लिखी थी। यह स्तुति, 'दुर्गा-माधव कृपा मध्य कृपामयी...', नव दुर्गा को प्रसन्न करेगी। देवी माताएँ परीक्षा लेंगी ही, है ना? रही बात दुर्गा-माधव स्तुति का मंत्र कैसे मिले, तो हमारे मोहन सत्संग में हैं। उनका नंबर विवरण (डिस्क्रिप्शन) में है। आप उनसे बात करेंगे तो वे इसे PDF के रूप में दे देंगे। इसका जाप करने से आपको बहुत आनंद मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:37 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 682 क्या आप कह रहे हैं कि इसे टेलीग्राम पर डाल दें?

उत्तर: बेटा, ठीक है, मैं इस बारे में बात करूँगा। लेकिन कृपया मोहन से बात कर लीजिए। मैं मोहन को बता दूँगा। अरे मोहन, इन्हें दुर्गा-माधव स्तुति दे दो, बाबा। मोहन से बात कीजिए और आपको मिल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:27 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 683 मेरा प्रश्न है, मुझे एक सपना आया जिसमें कोई लगातार कह रहा था 'सब ठीक हो जाएगा', और मुझ पर एक हाथ रखा गया। मैं जानना चाहती हूँ कि इसका क्या अर्थ है।

उत्तर: देखिए माताजी, वह साँवले रंग का हाथ आप पर भगवान कल्कि का आशीर्वाद है। यदि आप सब धर्मनिष्ठ और अच्छे बन जाएँ, तो इस संसार में धर्म का स्तर ऊपर उठेगा। रही बात दूसरी समस्याओं की, तो वे ठीक हो सकती हैं, चाहे घरेलू समस्या हो, पारिवारिक समस्या हो, या कुछ और। मैं आपको इतना बताऊँगा: इस सत्संग में मैं आप सबको मार्ग पर चलने के लिए कहता हूँ। इस पर चलने से आपको पारिवारिक सुख, आर्थिक उन्नति, भगवान की शरण, और धर्म के मार्ग पर सब कुछ मिलेगा। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—मनुष्य के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, वह सब आपको इस मार्ग से मिलेगा। आपको इसका पालन करना ही होगा। ऐसा करने से बहुत से सपने और अनुभव आएँगे। जो करते हैं, उन्हें मिलता है। महाप्रभु का स्पर्श संसार में सबसे निकट की वस्तु है; वह दिव्य है, महादेव के समान। जो आपको मिला है, वह उनका पवित्र आशीर्वाद है। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:50 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 684 आप पंडित काशीनाथ मिश्र को 'पिताजी' क्यों कहते हैं?

उत्तर: मैंने एक बार उन्हें उत्तर दिया था कि हमारे माता-पिता ने हमें जन्म दिया, लेकिन जो इस संसार में आपको सही मार्ग दिखाए, वही आपका सच्चा पिता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:58 · 16 दिसम्बर 2021

प्रश्न 685 कृपया उस घटना के बारे में अपने विचार साझा कीजिए ताकि भक्तगण जान सकें। उन्हें इस मार्ग की शक्ति भी पता चलनी चाहिए। कृपया हमें इसके बारे में बताइए; सबको जानकर खुशी होगी।

उत्तर: हमने अपनी यात्रा पूरी की। उस यात्रा के दौरान हमें कोरोना हो गया। हमें पता है कि हमें यह कैसे हुआ। लेकिन जब हम लौटने वाले थे, तो हमने अपना RT-PCR टेस्ट कराया, और रिपोर्ट पॉज़िटिव आई। हम सोचने लगे कि अब क्या होगा। हमने और कुछ नहीं किया, बस मन ही मन भगवान को याद किया और पिताजी (वक्ता) को संदेश भेजा कि क्या हुआ है। वहाँ से हमें बस एक ही संदेश मिला, 'तुम्हारे मन में जो है, तुम्हारी श्रद्धा सिद्ध होगी। श्रद्धा के साथ जाओ, सावधानी बरतो, मुँह ढँक लो, कोई बाधा नहीं आएगी।' बिना टेस्ट के आप एक शहर से दूसरे शहर यात्रा नहीं कर सकते। हमने बिना RT-PCR रिपोर्ट के एक देश से दूसरे देश की यात्रा की। यह पूर्णतः भगवान का चमत्कार है। यह तो बस एक बात है। पिताजी ने गाड़ी चलाने के बारे में भी कुछ कहा था, और गाड़ी चलाते समय हम दो बार मृत्यु से बचे। भगवान के और भी बहुत से चमत्कार हैं जिनका हम यहाँ उल्लेख नहीं करना चाहते। हम बस इतना कहेंगे कि भगवान धरती पर आ चुके हैं। पिताजी के मार्ग की आलोचना करने से पहले, एक बार माधव का नाम जपकर तो देखिए। एक बार उस अमृत को पीकर तो देखिए, फिर आपको पता चलेगा। आलोचना करना बहुत आसान है।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:26 · 16 दिसम्बर 2021

सत्र 34 · प्रश्न 686–714

L32 सत्य में रहने वाले भक्तो को निंदा-अपमान मिलेगा-- विष्णु भगवान संहार के लिए कल्कि रूप धारण करेंगे

दिनांक: 19 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 686 पंडित जी, मुझे कुछ दिन पहले सपना आया कि मैं एक पहाड़ पर चल रहा था, और रास्ते में बहुत सारे साँप पड़े हुए थे। वे मुझे कोई हानि नहीं पहुँचा रहे थे; बस पड़े हुए थे और मैं पहाड़ पर चलता जा रहा था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: वास्तव में इसका सही अर्थ यह है कि ऐसा समय आने वाला है। मालिका शास्त्र में भी लिखा है कि पाताल के नाग लोक से नाग सभी धरती पर आएँगे। उनके प्रभाव और उनके विष के असर से बहुत से क्षेत्र विषैले हो जाएँगे। साँपों ने आपको हानि इसलिए नहीं पहुँचाई क्योंकि आप भक्त हैं। मैं यह पवित्र और श्रद्धालु लोगों से कह रहा हूँ: जो मालिका का पालन करते हैं, उन्हें साँप नहीं काटेंगे। वे कुछ नहीं करेंगे; वे अपने रास्ते जाएँगे जैसे आप अपने रास्ते जाते हैं। तो, वह समय आ रहा है जब सारा नाग लोक धरती पर आएगा और महाविनाश में सहायता करेगा। वे विनाश में भाग लेंगे, परंतु भक्तों की रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 07:22 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 687 पंडित जी, मेरा प्रश्न पंजाब के बारे में है। धर्म की स्थापना में वह क्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा? जैसा कि हम जानते हैं, पंजाब एक पवित्र भूमि है जहाँ हमारे अनेक गुरु धरती पर आए हैं। और मेरा दूसरा प्रश्न है, जैसा आपने ग्रुप में पोस्ट किया था, पाकिस्तान में मुस्लिम देशों की एक बैठक हो रही है। कृपया उसके बारे में विस्तार से बताइए।

उत्तर: ठीक है। जब क्रूरता थोपने और सिख धर्म को भ्रष्ट करने के प्रयास हुए, तब सिख धर्म में गुरु परंपरा स्थापित हुई। अनेक पवित्र और पूजनीय गुरु आए और उन्होंने धर्म की रक्षा की। पवित्रता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि गुरु नानक देव स्वयं जगन्नाथ क्षेत्र में आए और वहाँ अपना मठ स्थापित किया। अपने लेखन में उन्होंने कल्कि अवतार के बारे में लिखा। इसका अर्थ है कि संपूर्ण सिख समुदाय धर्म की स्थापना के भगवान के कार्य में सम्मिलित होगा। जो पवित्र हैं और धर्म का पालन करते हैं, सिख समुदाय के ऐसे लोग मिलकर सनातन धर्म के लिए कार्य करेंगे और धर्म की स्थापना में भगवान के साथ कार्य करेंगे। दूसरी बात 13 मुस्लिम देशों के एकत्र होने की है। मालिका में लिखा है कि '13 टोपीवाले' एकत्र होंगे, और उसके बाद विश्व युद्ध की तैयारी पूरी हो जाएगी। यह अभी हो रहा है और आने वाले समय में पूरा होगा। जब यह पूरा होगा, तो वे एकजुट होकर भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू करेंगे। यह कार्य चल रहा है। परिणाम भी मालिका में लिखा है, यह भी कि युद्ध की व्यूह रचनाएँ कैसे बनेंगी और कौन-कौन जुड़ेगा। वे सब एकत्र होकर लड़ेंगे, पर अंत में सनातन धर्म की विजय होगी। उसके लिए आप कार्य कर रहे हैं, मैं कार्य कर रहा हूँ, हम सब मिलकर कार्य कर रहे हैं। भगवान हमारी सहायता करेंगे और इस दिव्य भारतवर्ष की भूमि की रक्षा करेंगे। भक्तों की पवित्रता और प्रभु की कृपा से अखंड भारत का निर्माण होगा। जितने भी हिस्से अलग हुए थे—अफ़गानिस्तान, बलूचिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार, हमारे सभी पड़ोसी राज्य—सब पुनः भारत से जुड़ जाएँगे। वह समय आएगा जब सनातन धर्म का प्रकाश फैलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 09:03 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 688 आपने पिछले सत्र में कहा था कि उनका (कल्कि अवतार का) जन्म हो चुका है। उसके अनुसार, हमें अब तक उनकी कोई लीला क्यों नहीं दिखी?

उत्तर: मालिका शास्त्र के अनुसार भगवान का अवतार हो चुका है। मालिका में लिखा था कि जब जगन्नाथ मंदिर से ध्वजा गिरेगी, तभी भगवान कल्कि का अवतार होगा। उस समय से गणना करें तो, मालिका के अनुसार, जब वे 14 वर्ष के होंगे तब उनका धर्म स्थापना का कार्य आरंभ होगा। जगन्नाथ जी की ध्वजा 2008 से 15 वर्ष पहले गिरी थी। तो यह प्रमाण है। दूसरी बात, उनकी 'लीलाओं' के विषय में, देखिए, आपकी भक्ति ही आपकी शक्ति है, आपका अनुभव ही आपकी शक्ति है, आपका अंतःकरण ही आपकी शक्ति है। भक्ति और समर्पण में रहकर उस मार्ग का पालन कीजिए जो मैं आपको दिखा रहा हूँ, और आपको भगवान कल्कि की संपूर्ण जानकारी मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 13:32 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 689 'अनंत युग' क्या है, और राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में इसका प्रभाव कब दिखाई देगा?

उत्तर: एक युग के अंत और सत्य युग के आरंभ के बीच का समय, वह छोटा-सा काल जब सत्य युग आरंभ होता है, उसे 'अनंत युग' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, इसे 'आद्य सत्य युग' (पहला सत्य युग) भी कहते हैं। यह युग सत्य का प्रकाश फैलाएगा और पवित्र भक्तों को एकत्र करेगा। भक्तों के एकत्र होने के बाद, भगवान कल्कि के द्वारा धर्म की स्थापना होगी। धर्म की स्थापना और पापियों के विनाश के बाद, सनातन धर्म की पुनः स्थापना होगी। फिर आद्य सत्य युग आगे बढ़ेगा, और धीरे-धीरे, 1000 वर्षों के बाद, पूर्ण सत्य युग आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:10 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 690 भगवान की प्राप्ति कैसे होगी? तपस्या से या उनके नाम से?

उत्तर: देखिए, इस समय भगवान को पाने के लिए मालिका के मार्ग पर चलना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है। मालिका ही एकमात्र शास्त्र है जिसमें कलियुग के अंत, धर्म की स्थापना, भक्तों के एकत्रीकरण, भगवान और भक्त के मिलन, और सत्य युग कैसे आरंभ होगा—इन सबके बारे में लिखा है। तो, मालिका का पालन कीजिए, और उसके बाद धीरे-धीरे सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:13 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 691 महाराज जी, राजस्थान में पाकिस्तान या चीन का हमला कब होगा?

उत्तर: देखिए, जैसा मैंने थोड़ी देर पहले कहा, जब 13 'टोपीवाले', यानी 13 मुस्लिम देश एकत्र हो जाएँगे, तब भारत और पाकिस्तान के बीच पूर्ण स्तर का युद्ध शुरू होगा। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए। शुरू होने के बाद यह अपने आप आगे बढ़ता जाएगा। समय आने पर आप देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:45 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 692 आपने 13 मुस्लिम देशों के एकत्र होने की बात कही। उस संदर्भ में, जब ये घटनाएँ घटित होंगी तो हमारे देश के भीतर के मुस्लिम समुदाय और देशविरोधी लोगों का क्या होगा?

उत्तर: यह बहुत ही उचित प्रश्न है। हमारे देश में रहने वाले मुस्लिम लोग हमारे अपने नागरिक हैं, जो अन्य देशों के लोगों से भिन्न संदर्भ है। मैं हमारी वर्तमान शासन व्यवस्था के अनुसार बोल रहा हूँ। लेकिन जब धर्म की स्थापना होगी, तब भगवान धर्म या मत-पंथ को न देखकर केवल एक बात देखेंगे: किसका पाप अधिक है। जिसका पाप अधिक होगा—अर्थात् जो पाप करता है, समाज के लिए हानिकारक है, पृथ्वी पर भार है, जीवों की हत्या करता है, सनातन धर्म के विरुद्ध आचरण करता है और वेदों का विरोध करता है—केवल उसी का विनाश होगा। इसमें भगवान कोई धर्म, नीति या जाति नहीं देखेंगे। केवल वही बचेंगे जिनके पास अधिक पुण्य और पवित्रता है। मैं इतना ही कह सकता हूँ। जिसके साथ धर्म है, वह सुरक्षित रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 17:13 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 693 सनातन धर्म के अनुसार, जब कोई मोक्ष प्राप्त करता है तो उसका पुनर्जन्म नहीं होता। वह वैकुंठ, विष्णु के धाम, चला जाता है। मेरी शंका भगवान विष्णु के दो द्वारपालों, जय और विजय, को लेकर है। वे तो पहले से ही वैकुंठ में थे, फिर वे कैसे गिरे और उन्हें तीन बार असुर रूप में जन्म क्यों लेना पड़ा? यदि कोई आत्मा वैकुंठ जाती है, तो क्या उसे पुनर्जन्म से मुक्त नहीं होना चाहिए?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। जैसे नदी बहती हुई समुद्र में मिल जाती है, उसकी आगे की गति रुक जाती है, पर नदी स्वयं तो बनी ही रहती है। इसी प्रकार, जो व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है वह गोलोक वैकुंठ जाता है और दिव्य, चतुर्भुज शरीर धारण करता है। वे वहाँ आनंद में नित्य दिव्य लीला में सम्मिलित होते हैं। मोक्ष का अर्थ यह नहीं कि उनका पुनः जन्म नहीं होगा। इसका अर्थ है कि उन्हें वैकुंठ में स्थान और दिव्य शरीर मिलता है। जब भगवान पृथ्वी पर अवतार लेते हैं, तब वही भक्त उनकी पार्थिव लीलाओं में सम्मिलित होने के लिए पुनः जन्म लेते हैं, और बाद में वैकुंठ लौट जाते हैं। किंतु यदि कोई पृथ्वी के जीवन में बहुत अधिक पाप कर ले, तो वह वापस नहीं जा सकता। यह चक्र चलता रहता है। शास्त्रों में लिखा है कि राम और कृष्ण अवतारों से पहले देवताओं को भगवान की सहायता के लिए पृथ्वी पर जन्म लेने को कहा गया था। तो यह अंतिम मृत्यु नहीं है, बल्कि शरीर का शुद्धिकरण होकर दिव्य रूप में परिवर्तन है, जहाँ मृत्यु का कोई भय नहीं। यह चक्र चलता रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 18:58 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 694 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें भारत का प्रतीक एक दीपक बुझाया जा रहा था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: दीपक ऊर्जा और प्रकाश का प्रतीक है। इसका अर्थ है कि भारत पर शत्रुओं की दृष्टि पड़ेगी। जैसे-जैसे भारत का प्रकाश फैलेगा और उसकी शक्ति बढ़ेगी, उस पर समस्याएँ आएँगी, और उसी अर्थ में 'दीपक बुझेगा'। भारत को बाहरी शत्रुओं से समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। लेकिन धर्म की स्थापना होकर रहेगी। भक्त राम राज्य की रचना करेंगे। यह कार्य होना ही है। समस्याएँ अपने आप नहीं जाएँगी; वे वर्ष-दर-वर्ष बढ़ती ही जाएँगी। आप सब देखते रहिए और धर्म के मार्ग पर चलिए। लोगों को जागरूक कीजिए कि कलियुग समाप्त हो चुका है और अब धर्म स्थापना का समय है।

► यह उत्तर सुनें · 24:08 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 695 दशावतार में श्री बलराम का उल्लेख भगवान कृष्ण के साथ आता है। क्या भगवान कृष्ण परम महाविष्णु हैं और बलराम एक अवतार हैं? इनमें क्या अंतर है, और इस युग के लिए बलराम के अवतार का उल्लेख क्यों नहीं है?

उत्तर: देखिए, बलराम, महादेव, संकर्षण और लक्ष्मण—ये सब उनकी ऊर्जा के ही प्रकट रूप हैं। ये सब महाविष्णु से निकली एक ही ऊर्जा हैं। कलियुग में बलराम नहीं आएँगे, क्योंकि कल्कि अवतार एक ही संपूर्ण अवतार है। भगवान कल्कि के शरीर में महाविष्णु, बलराम और ब्रह्मा की संयुक्त ऊर्जाएँ समाहित हैं। चूँकि स्वयं महाविष्णु आ रहे हैं, इसलिए बलराम अलग से नहीं आएँगे। कल्कि सभी शक्तियों को मिलाकर आए हैं। मालिका में इस युग में बलराम के आने का उल्लेख नहीं है। जब कहा जाता है 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' (कृष्ण स्वयं परम भगवान हैं), तो इसका अर्थ है कि वे संपूर्ण स्वरूप थे। बलराम को द्वापर युग में अवतार माना गया था।

► यह उत्तर सुनें · 26:06 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 696 मेरा प्रश्न बंगाल की गंगा काली जी के विषय में है, जिन्हें दक्षिणाकाली भी कहा जाता है। वहाँ कौन-सी गुप्त दिव्य लीलाएँ होने वाली हैं?

उत्तर: कोलकाता की दक्षिणा काली माता धर्म स्थापना में सहायता करेंगी। वे भगवान के निर्देशानुसार भक्तों को जोड़ेंगी। माँ कालिका के नाम पर एक 'कालिका मंडल' (काली का मंडल) बनेगा, जिसमें अलग-अलग राज्य मिलकर जुड़ेंगे। माता पार्वती इस रूप में केवल कोलकाता में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में सभी देवियों को साथ लेकर धर्म स्थापना के लिए कार्य करेंगी।

► यह उत्तर सुनें · 28:07 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 697 जब धर्म का कार्य चल रहा है, तो उसमें भाग लेने वाले भक्तों को कष्ट और दुःख के अलावा कुछ क्यों नहीं मिल रहा?

उत्तर: पांडव वन में गए और उन्होंने बहुत दुःख में समय बिताया। यह कुछ समय तक चला, पर फिर भगवान ने धर्म की स्थापना की और सभी भक्तों को शांति और सुख मिला। असुरों के प्रभाव के कारण भक्तों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, परंतु यह थोड़े ही समय के लिए होगा। जब भगवान धर्म की स्थापना करेंगे, तब यह बदल जाएगा और भक्तों को अनंत सुख प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:17 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 698 तो यह हमारे लिए परीक्षा का समय है, जैसा पहले के भक्तों के लिए था। इसे सहने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: इसके लिए सबसे बड़ी पवित्रता का कार्य यही है कि जो मार्ग मैं दिखा रहा हूँ, उस पर चलें। इस मार्ग पर चलने से पापियों का प्रभाव, शत्रुओं का प्रभाव और भक्तों पर आ रही समस्याएँ दूर हो जाएँगी, और भक्त आनंद में रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:22 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 699 बाबा, आपने कई स्थानों के बारे में बताया है। नेपाल में क्या होगा? मैं जानना चाहता हूँ।

उत्तर: नेपाल में अधिकांश लोग सनातन धर्म का पालन करते हैं। बहुत से लोग भगवान बुद्ध के भक्त हैं, जिनका अवतार धर्म स्थापना के लिए हुआ था। किंतु जब मैं वहाँ गया, तो मैंने लोगों को माँस खाते देखा, जबकि स्वयं भगवान बुद्ध ने जीव हत्या का विरोध किया था। शास्त्र इस विषय में स्पष्ट हैं। नेपाल के भक्तों का सुधार होगा और वे भगवान कल्कि के अधीन धर्म स्थापना में सम्मिलित होंगे। किंतु नेपाल में एक बहुत बड़ा, विनाशकारी भूकंप आएगा। भक्त बच जाएँगे। भूस्खलन, भुखमरी और बादल फटने जैसी प्राकृतिक आपदाएँ नेपाल सहित पूरे विश्व में होंगी। इन समस्याओं से बचने के लिए आपको प्रतिदिन श्रीमद्भागवतम् का पाठ करना चाहिए, त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) करनी चाहिए, और हम जो मार्ग दिखाते हैं उसका पालन करना चाहिए। ऐसा करने से आप भगवान कल्कि की शरण में आ सकते हैं और अपने परिवार को सुरक्षित रख सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 31:24 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 700 बहुत से हिंदू हैं जो दान करते हैं और भगवान का नाम लेते हैं, लेकिन जब हम उन्हें इस मार्ग से जुड़ने को कहते हैं, तो वे कहते हैं, 'हम तो पहले से ही अच्छे कर्म करते हैं, इसलिए हम पर कोई दुःख नहीं आएगा। हम वैसे भी बच जाएँगे।' वे जुड़ने से इनकार क्यों करते हैं?

उत्तर: देखिए, कुछ शुद्ध भक्त होते हैं जो सीधे भगवान कल्कि से जुड़े हैं और सनातन धर्म से जुड़ेंगे। फिर कुछ अन्य हैं जो अप्रत्यक्ष हैं; वे अच्छे लोग हैं जो धर्म, दान और सत्कर्म करते हैं। वे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन वे कलियुग के अंत में धर्म स्थापना के विशेष कार्य में भाग नहीं ले रहे हैं। इसीलिए वे नहीं जुड़ते। कोई बात नहीं। कुछ भक्त हैं जो जुड़ेंगे, और कुछ सामान्य लोग हैं। फिर भी आपको उन्हें बताने का प्रयास करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 35:36 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 701 तो, क्या उन दूसरे अच्छे लोगों को सुरक्षा मिलेगी या नहीं?

उत्तर: मुख्य भक्त भगवान कल्कि से जुड़ेंगे और धर्म की स्थापना के कार्य में लगेंगे। जो दूसरे मनुष्य अच्छे कर्म कर रहे हैं, उन्हें उनके कर्म के अनुसार फल मिलेगा। जो महामारियाँ और प्राकृतिक आपदाएँ आने वाली हैं, उनमें जो लोग इस मार्ग पर हैं, वे सुरक्षित रहेंगे। जो नहीं हैं, यदि उनका पुण्य और पवित्रता अधिक है, तो उन्हें भी कुछ समय के लिए सुरक्षा मिल सकती है। अंत में जो होगा, वह उनके कर्म के अनुसार होगा।

► यह उत्तर सुनें · 36:56 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 702 मैं हिमाचल से हूँ। दो दिन पहले ज्वाला देवी मंदिर के भंडार (अन्न भंडार) में भीषण आग लग गई। इसका क्या अर्थ है? यह किस बात का संकेत है?

उत्तर: यह बहुत महत्वपूर्ण संकेत है। ऐसी घटनाएँ पहले भी हुई हैं: जगन्नाथ मंदिर का ध्वज बिजली गिरने से जल गया था, और समलेश्वरी तथा तारा तारिणी मंदिरों में आग लगी थी। ज्वाला देवी मंदिर के अन्न भंडार में आग लगने का अर्थ है कि एक ऐसा समय आ रहा है—अगले दो से चार वर्षों के भीतर—जब हिमाचल से लगे राज्यों सहित पूरे उत्तर भारत को भीषण सूखे और पीने के पानी की कमी का सामना करना पड़ेगा। या फिर इतनी अधिक वर्षा होगी कि सारी फसलें नष्ट हो जाएँगी। यही संकेत है। इसका यह भी अर्थ है कि देवी ने धर्म की स्थापना के लिए भगवान से जुड़ने हेतु अपना भौतिक स्थान छोड़ दिया है। यह अग्नि इसी का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 37:51 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 703 पंडित जी, कहा जाता है कि Satya Yuga में पर्वत ऊपर उठेंगे और उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव खिसक जाएँगे। आप भी कह रहे हैं कि यह धीरे-धीरे पहले से ही हो रहा है। क्या आप इसे विस्तार से बताएँगे?

उत्तर: हाँ, बहुत सारे परिवर्तन होंगे। Satya Yuga के आरंभ होने से पहले 3000 बड़े भूकंप आएँगे, इतने शक्तिशाली कि उन्हें रिक्टर स्केल पर मापा नहीं जा सकेगा। इनसे पृथ्वी का पूरा भूगोल बदल जाएगा। नई नदियाँ निकलेंगी, पुरानी सूख जाएँगी, और समुद्र समतल मैदान बन जाएँगे। ऐसे अनेक भौगोलिक परिवर्तन होने वाले हैं। वैज्ञानिक भी अब कह रहे हैं कि ध्रुवों पर गति की रफ्तार बढ़ रही है। आने वाले समय में यह होना निश्चित है।

► यह उत्तर सुनें · 39:50 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 704 पंडित जी, यह जो महामारी अभी चल रही है, क्या यह भी धर्म की स्थापना का हिस्सा है?

उत्तर: जब पृथ्वी पर पाप बढ़ता है, तो मनुष्यों पर उनके कर्म के माध्यम से विपत्तियाँ आती हैं। इसके दो प्रकार हैं: 'व्याधि' (रोग) और 'महामारी'। कैंसर या मधुमेह जैसे रोग व्यक्ति के पूर्वजन्म के कर्मों का फल हैं। किंतु महामारी तब आती है जब समग्र समाज में पाप बढ़ जाता है। यह जो महामारी आई है, यह देवियों की शक्ति है। यह अब अपने तीसरे चरण में है; यह सातवें चरण तक जाएगी। मैं पिछले दो वर्षों से यह कहता आ रहा हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 41:33 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 705 लोग अब कह रहे हैं कि वैक्सीन की बूस्टर डोज़ लेनी पड़ेगी। क्या हमें लेनी चाहिए? मैंने YouTube पर देखा कि किसी ने दावा किया कि इसे लेने से व्यक्ति Kali Yuga के दानव के साथ जुड़ जाएगा। क्या यह सच है?

उत्तर: नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। आपको सरकार के नियमों और विनियमों का पालन करना चाहिए। हमारा देश लोकतंत्र है, और सरकार जानबूझकर ये कदम उठा रही है। सरकार के नियमों का पूरी तरह पालन करें; यह समाज के हित में है। लेकिन मैं आपको बता दूँ, जिन्होंने डोज़ ली है वे भी परेशानी में हैं, और जिन्होंने नहीं ली वे भी परेशानी में हैं। सब संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे समय में लोगों को सरकार के नियमों का पालन करना चाहिए और साथ ही उस आध्यात्मिक मार्ग का भी पालन करना चाहिए जो हम दिखाते हैं: भागवत का पाठ, Trisandhya करना, और विशेष भजनों का गायन। ऐसा करने से आपको सुरक्षा मिलेगी। बीमारी आ सकती है, पर वह प्राणघातक नहीं होगी। आप सुरक्षित रहेंगे। लेकिन सरकार के नियमों का पालन अवश्य करें।

► यह उत्तर सुनें · 42:50 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 706 पंडित जी, आपने Malika के आधार पर जगन्नाथ मंदिर के उन संकेतों के बारे में बताया था जो अवतार से पहले प्रकट होंगे। क्या वे सभी संकेत पहले ही घट चुके हैं, या कुछ अभी बाकी है?

उत्तर: लिखा था कि गरुड़ स्तंभ पर कौआ बैठेगा, रत्न सिंहासन पर रक्त दिखाई देगा, मंदिर के शिखर से पत्थर गिरेगा, और नीचे से जलधारा (झरना) निकलेगी। ये सब हो चुका है। केवल एक बात बाकी है कि समुद्र Jagannath मंदिर की बाईस सीढ़ियों तक आ जाए। आने वाले समय में सारी मानवता इसे देखेगी। Jagannath मंदिर के संकेत ही धर्म की स्थापना का रोडमैप हैं। सभी संकेत मिल चुके हैं; केवल समुद्र का सीढ़ियों तक चढ़ना बाकी है। यह कभी भी हो सकता है; यह भगवान की लीला है।

► यह उत्तर सुनें · 44:34 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 707 क्या सरस्वती नदी फिर से बहेगी?

उत्तर: सरस्वती नदी... हाँ, राजस्थान में कई जगहों पर वह पहले ही फिर से प्रकट हो चुकी है। प्रवाह है।

► यह उत्तर सुनें · 46:26 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 708 पंडित जी, भगवान हम सबके सामने अपने भौतिक स्वरूप में कब आएँगे?

उत्तर: यह प्रश्न मैं अक्सर सुनता हूँ। जब प्राचीन ऋषियों ने तपस्या की, तो भगवान केवल उन्हीं के लिए प्रकट होते थे, सबके लिए नहीं। 'प्रकट होने' का आधुनिक विचार ऐसा है जैसे किसी मंत्री को मीडिया के सामने पेश किया जाए। पर यह तो धर्म का मार्ग है। जब भगवान प्रकट होंगे, तो अपने भक्तों के लिए होंगे। वे आपके घर में भी प्रकट हो सकते हैं। वे हमारे कुछ जुड़े हुए भक्तों को उनकी भक्ति के स्तर के अनुसार पहले ही भौतिक दर्शन दे चुके हैं। वे केवल उन्हीं को 'दर्शन' देंगे जिनमें भक्ति का वह स्तर है। भगवान Kalki इस विनाश के युग में जनसाधारण को कभी सामूहिक दर्शन नहीं देंगे। वह Satya Yuga में होगा, अभी नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 46:55 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 709 जैसे राम और कृष्ण अवतारों में अधिकतर लोग नहीं जानते थे कि वे भगवान हैं; केवल कुछ ही जानते थे। क्या फिर से वैसा ही होगा, कि भगवान हमारे बीच होंगे, पर केवल भक्त ही उन्हें पहचानेंगे जबकि बाकी सब उन्हें एक साधारण मनुष्य समझेंगे?

उत्तर: हाँ, बिल्कुल ऐसा ही है। वे एक साधारण मनुष्य की तरह अपना जीवन जी रहे हैं। और भक्त, जैसे उन्होंने वृंदावन में उन्हें पहचाना था, वैसे ही भगवान को पहचानेंगे, और वे उन्हें पहचानेंगे। जैसा मैंने कहा, भक्तों के 16 'मंडल' बनेंगे, और वे सीधे भगवान Kalki से जुड़े होंगे। वे उनसे बातचीत करेंगे और उनका पारिवारिक जैसा संबंध होगा। लेकिन यह संभव नहीं है कि भगवान कोई बड़ी सभा करके या बाज़ार में प्रकट होकर सार्वजनिक दर्शन दें। वे अपने भक्तों के बीच रहेंगे, और केवल वे ही उन्हें उनके मानव रूप में पहचानेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:43 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 710 पंडित जी, Satya Yuga कब आरंभ होगा? या क्या वह पहले ही शुरू हो चुका है?

उत्तर: वह पहले ही आरंभ हो चुका है। केवल विनाश का समय बाकी है। अन्याय के विरुद्ध युद्ध शुरू हो चुका है। इसीलिए आप देखते हैं कि जो कोई अन्याय करता है या गलत काम करता है, वह पकड़ा जाता है। सरकारों को देखिए और उन कल्याणकारी योजनाओं को देखिए जो वे लोगों के लिए चलाती हैं। जैसे, ओडिशा में आपको 5 रुपये में भोजन मिल जाता है। यह भी Satya Yuga का एक संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 50:06 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 711 पंडित जी, जो मनुष्य स्वभाव से आसुरी हैं और धर्म के मार्ग पर नहीं हैं, उनका परिवर्तन कैसे होगा?

उत्तर: सबसे पहले वेदों और ज्ञान के परम प्रकाश के माध्यम से। इस परम प्रकाश को देखकर, सुनकर और अनुभव करके कुछ लोग बदल जाएंगे। और जो इसे स्वीकार नहीं करेंगे, उनके भाग्य का निर्णय भगवान धर्म-स्थापना के समय करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:46 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 712 पंडित जी, सबके कल्याण के लिए कृपया बताइए कि पाखंडियों की पहचान कैसे करें? उनके लक्षण क्या हैं? हर जगह लोग स्वयंभू गुरु बन गए हैं।

उत्तर: कलियुग के अंत में पाखंडियों की संख्या बढ़ेगी। वे स्वयं को भगवान या महान गुरु कहेंगे, धनी भक्तों को इकट्ठा करेंगे और संगठन बनाएंगे। वे तंत्र-मंत्र की शक्तियों का भी उपयोग कर सकते हैं। लेकिन गुप्त रूप से वे स्वयं ज्योतिषियों से अपनी ग्रह-दशा दिखवाते हैं और अपना भविष्य सुरक्षित करते हैं। यदि सरकार उनकी जांच करे... मैं सभी संतों की बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि इन पाखंडियों की... तो सब सामने आ जाएगा। वे बैठकर घोषणा करते हैं, 'मैं भगवान हूं,' और लोगों को डराते हैं। उनका विनाश होगा; अभी कुछ समय बाकी है। या तो धर्म-स्थापना के समय उनसे निपटा जाएगा, या वे सरकार द्वारा पकड़े जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:14 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 713 जो लोग धर्मग्रंथ पढ़ने के लिए पैसे लेते हैं, उनके बारे में क्या?

उत्तर: देखिए, धन और स्त्री—ये दो ही रास्ते हैं जिनसे वे पकड़े जा सकते हैं। मैं सरकार से निवेदन करता हूं कि इन लोगों की जांच करे, शायद महिलाओं को एजेंट के रूप में इस्तेमाल करके। तब स्पष्ट हो जाएगा कि वे क्या करते हैं और क्या नहीं करते। उनकी जांच होना आवश्यक है, और तब वे पकड़े जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 54:12 · 19 दिसम्बर 2021

प्रश्न 714 मेरा कोई प्रश्न नहीं है, मैं बस यह कहना चाहती हूं कि आप हमें परम सत्य की ओर हमारा ध्यान केंद्रित करने में मदद कर रहे हैं।

उत्तर: देखिए माताजी, मैं आप जैसा ही एक साधारण मनुष्य हूं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप जैसी पवित्र आत्माओं को, जो धर्म के मार्ग पर चलना चाहती हैं, भगवान की कृपा प्राप्त हो। भगवान आपको सही मार्ग दिखाएं और आप धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ें। बस इतना ही।

► यह उत्तर सुनें · 55:24 · 19 दिसम्बर 2021

सत्र 35 · प्रश्न 715–727

L33 कलियुग के साधु - संत लोग कैसे चरित्र के होंगे?

दिनांक: 23 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 715 जब परमाणु युद्ध होगा और भारत के शत्रु देशों पर परमाणु बम गिराए जाएंगे, तो वहां रहने वाले भक्त कैसे बचेंगे? वहां जहरीली गैसें और विनाश होगा।

उत्तर: मालिका के अनुसार, जो भक्त धर्म के मार्ग पर रहते हैं, भगवान की शरण लेते हैं और मालिका का पालन करते हैं, वे बच जाएंगे। सुधर्म संघ के माध्यम से 16 'मंडल' (क्षेत्र) बनाए जाएंगे, और भारत के बाहर के लोग भी इसमें शामिल हो सकते हैं। ये भक्त श्रीमद् भागवत का पाठ, त्रिसंध्या, 16 नामों का जप और दशावतार जैसी साधनाओं का पालन करके शुद्ध होंगे। परमाणु युद्ध या पंचतत्वों की महाविपत्ति से पहले, भगवान अपनी दिव्य शक्ति से उनकी रक्षा करेंगे। उनकी सुरक्षा की संपूर्ण जिम्मेदारी भगवान और देवताओं को सौंपी गई है। इसलिए चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल इतनी आवश्यकता है कि जो मार्ग हमने बताया है, उसका पालन करें। जो इसका पालन नहीं कर सकते, उनका क्या होगा यह मैं नहीं जानता, पर जो करेंगे वे सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 10:07 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 716 एक भक्त की ओर से मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, विश्व सनातन धर्म और सुधर्म महासंघ एक ही हैं या अलग-अलग? दूसरा, पिछले सत्र में आपने कुछ ऐसा कहा था कि 'मैं कल रहूं या न रहूं,' जिसका अर्थ आपकी मृत्यु से था। आप ऐसी बातें क्यों कहते हैं? इससे हमें दुख होता है।

उत्तर: आपके दूसरे प्रश्न के संबंध में—मानव जीवन की कोई गारंटी या स्थिरता नहीं है; यह भगवान का दिया हुआ दिव्य उपहार है। जब तक हमारे कर्म और पवित्रता सही हैं, तब तक हम इस संसार में रह सकते हैं। यदि मेरे वचन या कर्म में कोई त्रुटि हुई, तो मेरा भी न्याय होगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जो भगवान की शरण में जाते हैं, उन्हें अपने जीवन से कोई मोह नहीं रहता, क्योंकि वे सदा भगवान के ध्यान में रहते हैं। इसीलिए कभी-कभी ऐसे शब्द मन में आ जाते हैं। मैं ऐसी भावुक बातें नहीं करना चाहता, पर यह स्वतः हो जाता है। यदि आप सबको इससे ठेस पहुंची है, तो मैं विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगता हूं। आपके पहले प्रश्न—सुधर्म महासंघ और विश्व सनातन धर्म—के संबंध में: ये दोनों संगठन एक ही मार्ग के अलग-अलग चरण हैं। यह ऐसा ही है जैसे एक अच्छा विद्यार्थी स्कूल से कॉलेज जाता है, फिर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, और फिर अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में। लक्ष्य एक ही है। सनातन धर्म में भक्त सबसे पहले मालिका, सुधर्म संघ, भविष्य पुराण, धर्म-स्थापना और भगवान के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक-दो वर्ष बाद, जब उनका मन पूर्णतः शुद्ध और द्वंद्वरहित हो जाएगा, तब वे सुधर्म महासंघ के माध्यम से कार्य करेंगे। वे 'सुधर्म' बन जाएंगे, अर्थात् उनका आचरण और कर्म देवता के समान होंगे। जब भगवान आएंगे, तो वे स्वयं सुधर्म महासंघ की स्थापना करेंगे। सनातन धर्म के सबसे भक्तिवान लोग, जिन्होंने मन, प्रेम और भक्ति से भगवान और मालिका के प्रति समर्पण किया है, वे भगवान के निकट रहेंगे और सुधर्म महासंघ के सदस्य बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 13:05 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 717 द्वापर युग में कंस ने भगवान कृष्ण को हानि पहुंचाने के अनेक प्रयास किए थे। इसी प्रकार, क्या इस युग में कल्कि अवतार को भी ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। मालिका कहती है कि भगवान कल्कि मानव शिशु के रूप में जन्म लेंगे, पर उनमें अपार शक्ति होगी। वे चाहें तो क्षण भर में सप्त द्वीपों (सात महाद्वीपों) की रचना या संहार कर सकते हैं। उनकी आंखों की एक दृष्टि से करोड़ों सूर्यों का प्रकाश निकलेगा। उनकी श्वास के वेग से संपूर्ण ब्रह्मांड कांप उठेगा। भगवान कल्कि के शरीर के प्रत्येक रोमकूप में करोड़ों ब्रह्मांड समाहित होंगे। दिखने में वे बालक जैसे होंगे, पर उनके कर्म परब्रह्म के होंगे। वे धर्म की स्थापना के लिए 64 'कलाओं' के साथ जन्म लेंगे। इसलिए किसी के लिए उन्हें हानि पहुंचाना असंभव है। पिछले युगों में राक्षसों के पास दिव्य शक्तियां और अस्त्र-शस्त्र थे। इस युग में राक्षस मानव रूप में हैं, और भगवान कल्कि उन्हें सूक्ष्म उपायों से समाप्त करेंगे। कोई भी उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा। यदि कोई प्रयास भी करेगा, तो भगवान उसे इस प्रकार समाप्त कर देंगे कि किसी को पता भी नहीं चलेगा। उनके पास समस्त शक्ति है और उन्हें किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 17:35 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 718 तीसरे विश्व युद्ध के दौरान पढ़ाई होगी या नहीं? ऑनलाइन कक्षाएं आदि चलेंगी या सब बंद हो जाएगा?

उत्तर: आपको अभी अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। अपनी पढ़ाई में और साथ ही भक्ति में भी अनुशासन रखिए। युद्ध तब होगा जब उसका होना नियत है। उस समय स्कूल से लेकर कंप्यूटर तक सब कुछ नष्ट हो जाएगा। कोई सरकार या प्रशासन नहीं होगा। उस युग में लोग धर्मशास्त्रों का पालन करेंगे। इसलिए अगले चार-पांच वर्ष अच्छे से पढ़िए, अच्छे अंक लाइए, अपने माता-पिता को प्रसन्न कीजिए, और साथ ही धर्मशास्त्र भी पढ़िए। उस समय के बारे में तब सोचेंगे जब वह आएगा। अभी उसके बारे में सोचना आपके मन के लिए अच्छा नहीं है। वे विचार छोड़िए, पढ़ाई पर ध्यान दीजिए, और भगवान का नाम जपिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:33 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 719 भगवान विष्णु नारायण अपने विराट रूप में हैं। क्या उनमें केवल कुछ ही 'कलाएं' हैं, या उनमें सभी 64 'कलाएं' हैं?

उत्तर: जब भगवान विष्णु अवतार लेते हैं, तो वे चारों युगों के भक्तों को सुख देने, उनके अधिकारों को पूर्ण करने और उन्हें उनकी तपस्या का फल देने के लिए आते हैं। इस युग में भगवान विष्णु स्वयं कुछ समय के लिए अपना धाम छोड़कर भगवान कल्कि के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेंगे। मालिका कहती है कि क्षीरसागर-निवासी महाविष्णु ही कल्कि रूप में अवतरित होते हैं। भगवान कल्कि के शरीर में दाहिनी ओर भगवान राम की शक्ति और बाईं ओर भगवान कृष्ण की शक्ति होगी। भक्तों की शांति और सुख की कामनाओं को पूर्ण करने के लिए बलराम (अनंत के रूप में) और देवी महालक्ष्मी भी उनके साथ होंगे। भगवान कल्कि सभी 64 'कलाओं' के संगम होंगे। उनमें अपार शक्ति होगी और वे धर्म की स्थापना करेंगे। वे पूर्ण अवतार हैं, ठीक वैसे ही जैसे भगवान कृष्ण पृथ्वी पर सबसे महान अवतार थे। भगवान कल्कि स्वयं महाविष्णु के अवतार हैं। उनके चार भाई सदा उनके साथ रहेंगे, और वे उनकी इच्छा का पालन करेंगे। वे पूर्ण अवतार हैं।

► यह उत्तर सुनें · 23:52 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 720 सत्य युग में, जब धर्म सबसे अधिक प्रबल था, तब भगवान ने कलियुग की तुलना में अधिक अवतार लिए। पर कलियुग में तो पाप इतना अधिक फैला हुआ है। क्या भगवान को यहां मनुष्यों में धर्म की पवित्रता बनाए रखने के लिए अधिक अवतार नहीं लेने चाहिए थे? उन्होंने कम अवतार क्यों लिए?

उत्तर: यह धारणा ही गलत है। सत्य युग में भगवान के पांच अवतार हुए: मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह और वामन। त्रेता युग में दो: परशुराम और राम। द्वापर युग में दो, यदि भगवान कृष्ण के साथ बलराम को भी अवतार माना जाए। परंतु कलियुग में भगवान ने तीन अवतार लिए हैं: भगवान बुद्ध, भगवान चैतन्य महाप्रभु और भगवान कल्कि। कलियुग की कुल अवधि 4,32,000 वर्ष है, परंतु इसमें से इस चक्र में केवल लगभग 5,000 वर्ष ही बीतेंगे। इसलिए तीन अवतार कोई कम संख्या नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कलियुग में भगवान भक्तों के उद्धार के लिए आते हैं। अन्य युगों में अवतार मुख्यतः दुष्टों के संहार में लगे रहे। इस युग में भगवान बुद्ध ने धर्म, अहिंसा और समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम का उपदेश दिया। चैतन्य महाप्रभु ने प्रेम-धर्म और हरिनाम-संकीर्तन का प्रचार किया। भगवान कल्कि न उपदेश देंगे, न समझाएंगे, न शिष्य बनाएंगे। वे अपने आगमन की घोषणा के लिए कोई जनसभा नहीं करेंगे। वे केवल भक्तों के उद्धार के लिए आते हैं। मालिका भक्तों के उद्धार के लिए लिखी गई थी, क्योंकि आधुनिक युग में लोगों के पास शास्त्र-ज्ञान नहीं होगा और वे मालिका सुनकर ही बचेंगे। इसलिए कलियुग के ये तीन अवतार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

► यह उत्तर सुनें · 27:30 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 721 मेरा एक प्रश्न है। आजकल जो तकनीक इतने ऊँचे स्तर पर पहुँच चुकी है, क्या वह सब भी नष्ट हो जाएगी?

उत्तर: देखिए, महाभारत के युद्ध के समय भी पीतल, लोहा और सोने जैसी धातुएँ उपलब्ध थीं और उनका उपयोग होता था। वही उनकी तकनीक थी। इस युग में सबसे उन्नत तकनीकें सुपर कंप्यूटर, कंप्यूटर और रडार प्रणालियाँ हैं। आने वाले सत्य युग में भी धातुएँ रहेंगी। परंतु आज की तकनीक मशीनों द्वारा संचालित है, और मशीनें विफल हो सकती हैं। हम देखते हैं कि अंतरिक्ष अभियान, मिसाइलें और यहाँ तक कि सुपर कंप्यूटर भी विफल हो जाते हैं। लेकिन आने वाले युग में मंत्रों की शक्ति सर्वोपरि होगी। मंत्रों की शक्ति किसी भी मशीन की शक्ति से हज़ारों-लाखों गुना अधिक होगी।

► यह उत्तर सुनें · 32:23 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 722 जो सत्य युग आ रहा है, क्या वह राजा हरिश्चंद्र के समय के सत्य युग जैसा होगा?

उत्तर: नहीं, वह उससे भी श्रेष्ठ होगा। हरिश्चंद्र और विश्वामित्र के समय राजा थे जो शासन करते थे। परंतु आने वाले सत्य युग में मृत्युलोक स्वर्गलोक जैसा बन जाएगा। स्वयं भगवान विष्णु शासन करेंगे, कोई राजा नहीं। विकास, शांति और सुख स्वर्गीय होंगे। सभी देवता और पंचतत्व भक्तों की सेवा में लगे रहेंगे। भक्त अनंत आनंद का अनुभव करेंगे और उन्हें 'इच्छा मृत्यु' (अपनी मृत्यु का समय स्वयं चुनने की क्षमता) प्राप्त होगी। कोई दुःख नहीं होगा क्योंकि स्वयं भगवान और महालक्ष्मी सबका भरण-पोषण करेंगे। किसी भी वस्तु की कमी नहीं होगी। सारी पृथ्वी स्वर्ग में परिवर्तित हो जाएगी। देवशिल्पी विश्वकर्मा भक्तों के लिए दिव्य निवास बनाएँगे, और मनुष्यों के लिए दिव्य भोजन और दिव्य शरीर होंगे। वृक्ष साल भर फल देंगे। केवल सुख, शांति और आनंदमय वातावरण रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:00 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 723 क्या कोई अंतिम राजा होगा, और क्या लोगों को 'इच्छा मृत्यु' (अपनी मृत्यु का समय चुनने) की शक्ति प्राप्त होगी?

उत्तर: किसी अंतिम राजा का कोई प्रमाण नहीं है। हाँ, लोगों को 'इच्छा मृत्यु' प्राप्त होगी। भगवान विष्णु आ रहे हैं, और भक्त अपनी इच्छा से शरीर त्याग सकेंगे। स्वर्ग में रहने वाले देवता भी कभी-कभी गलत कार्य कर बैठते हैं और श्राप के कारण पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेते हैं। परंतु नए युग में जो लोग होंगे, वे सब देवता, ऋषि और संत होंगे। वे केवल सत्कर्म ही करेंगे। इसीलिए हम श्रीमद्भागवत पढ़ने पर बल देते हैं। जो व्यक्ति भागवत पढ़ता है, वह झूठ बोलने से पहले सौ बार सोचेगा। वह गलत मार्ग पर नहीं चलेगा। उसका अपने क्रोध, अहंकार और पाँचों इंद्रियों पर नियंत्रण होगा। इसीलिए विश्व सनातन धर्म इस मार्ग का प्रचार कर रहा है—लोगों को शुद्ध करने और उन्हें शांति व आनंद के उस नए युग के लिए तैयार करने हेतु।

► यह उत्तर सुनें · 37:00 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 724 इतने सारे नकली गुरु हैं, जैसे कि वे जो दावा करते हैं कि वे ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पिता को जानते हैं, या वे जो कहते हैं कि वे आपको भगवान कल्कि से मिलवा सकते हैं। लोग ऐसे ठगों के जाल में कैसे फँस जाते हैं?

उत्तर: जो सच्चे मन से भगवान को खोजते हैं, उन्हें भगवान मिल जाते हैं, और जो नहीं खोजते, उन्हें नहीं मिलते। जो अपना समय ठगों के साथ बिताते हैं, उन्हें नरक प्राप्त होगा। आज संसार की सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों के हृदय में करुणा नहीं है। यदि उनमें करुणा होती, तो वे अपना धन इन ठगों को देने के बजाय गरीबों, दुखियों और जरूरतमंदों की सहायता करते। भारत में इतने गरीब लोग हैं, फिर भी लोग नकली संतों के पीछे भागते हैं। परंतु सच्चे संत भी हैं। मैं अयोध्या के एक संत से मिला जिनके पास कुछ भी नहीं है—न रहने का स्थान, न आश्रम। यदि कोई भोजन दे दे तो ही वे खाते हैं और किसी से कुछ माँगते नहीं। ऐसे संतों को मैं करोड़ों प्रणाम करता हूँ। संसार उन्हीं के कारण टिका हुआ है। एक अच्छे और पवित्र व्यक्ति को सच्चा संत मिल जाएगा। इसके विपरीत, जो व्यक्ति स्वयं पतित, पापी, अधर्मी और चरित्रहीन है, वह वैसे ही स्वभाव वाले नकली गुरु की ओर खिंच जाएगा। यह समान का समान की ओर आकर्षित होने का विषय है।

► यह उत्तर सुनें · 42:30 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 725 'गौशालाओं' में भी इतना भ्रष्टाचार है। जो लोग उन्हें खोलते हैं, वे दान के पैसे का दुरुपयोग करते हैं, और गायें भूखी रहकर दुर्बल हो जाती हैं। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: गाय हमारी माता है; वह 33 करोड़ देवताओं का निवास स्थान है। जब मनुष्य बड़ा हो जाता है और अपनी माँ का दूध नहीं पी सकता, तब गौ माता ही हमारा पोषण करती है। इस कलियुग में लोग अपनी माँ का अपमान करते हैं और यहाँ तक कि उसकी हत्या तक कर देते हैं, तो आश्चर्य नहीं कि वे गौ माता के साथ भी वैसा ही व्यवहार करें। ऐसे लोगों के लिए विनाश के अतिरिक्त कोई गंतव्य नहीं है। उनका समय आएगा, और वे सब नष्ट हो जाएँगे। समय धीरे-धीरे निकट आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 45:38 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 726 श्री अच्युतानंद जी महाराज द्वारा लिखित मालिका में क्या आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानंद सरस्वती का कोई उल्लेख है?

उत्तर: हाँ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारत में गौ रक्षा और सामाजिक जागरण के लिए महान कार्य किया। उनका कार्य भी धर्म स्थापना का एक अंग है। मालिका में अनेक संतों और महापुरुषों का उल्लेख है, जिनमें अनुकूलचंद्र, दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, संत तुकाराम और तुलसीदास महाराज शामिल हैं। मालिका बहुत विशाल है, जिसमें 1,50,000 खंड हैं, और सभी उपलब्ध नहीं हैं। परंतु उसमें सम्पूर्ण ब्रह्मांड और इन संतों के बारे में लिखा गया है। यह भी लिखा है कि ये सभी महापुरुष जो भारत में आए और इस भूमि को पवित्र किया, वे पुनर्जन्म लेंगे। जब भगवान कल्कि अवतार लेंगे, तब वे साधारण मनुष्यों के रूप में जन्म लेंगे। बाद में, जब सुधर्म सभा (धर्मात्माओं की सभा) स्थापित होगी, तब भक्त पहचान पाएँगे कि ये लोग अपने पूर्व जन्मों में कौन थे।

► यह उत्तर सुनें · 46:39 · 23 दिसम्बर 2021

प्रश्न 727 सनातन वैदिक संस्कृति में अष्टांग योग को मार्ग बताया गया है, परंतु कलियुग में इसका पालन बहुत कठिन है। आप कहते हैं कि मालिका सुनने से हमें पुण्य प्राप्त हो सकता है। परंतु बहुत से लोग अपने और मानवता के उत्थान पर ध्यान देने के बजाय केवल इसी प्रश्न में अटके हुए हैं कि भविष्य में क्या होगा, जैसे विश्व युद्ध में क्या होगा। चूँकि 99% लोग आगे नहीं बढ़ रहे हैं, तो इसका समाधान क्या है?

उत्तर: यह सच है कि कलियुग में पूर्ण अष्टांग योग का अभ्यास संभव नहीं है, फिर भी आज लोग जो सरल योग करते हैं, वह आने वाले सत्य युग का संकेत है। लोगों की चिंताओं के विषय में, दो मार्ग हैं। कलियुग के व्यक्ति का मार्ग यह है कि वह अपने भविष्य, अपनी नौकरी और अपने सुख के बारे में सोचे। धर्म का और सत्य युग के भक्तों का मार्ग यह है कि वे स्वयं के बारे में नहीं, बल्कि ब्रह्मांड, पंचतत्वों, मानवता, प्रकृति और समस्त जीवों के कल्याण के बारे में सोचें। स्वार्थी लोग केवल अपने भविष्य के बारे में सोचते हैं। हमारा लक्ष्य है कि समाज बदले। एक समय आएगा जब भारत में सब लोग, चाहे उनका वर्तमान धर्म कोई भी हो, सनातन धर्म का पालन करेंगे और श्रीमद्भागवत पढ़ेंगे। लोग आज इसे स्वीकार न करें, परंतु एक समय आएगा जब भारत और संसार में रहने वाले सभी लोग इसे पढ़ेंगे, त्रिसंध्या करेंगे और भजन गाएँगे। समाधान यह है कि श्रीमद्भागवत का संदेश फैलाया जाए। इसे पढ़ने से जो शुद्धि होती है, वह केवल सुनने की तुलना में सौ गुना अधिक है। इसे पढ़ने से उत्पन्न तरंगें देवताओं और तत्वों को प्रसन्न करेंगी, जिससे संसार में शांति और सुख आएगा। भगवान के आगमन से पहले सदैव भागवत का प्रचार होता है। यह प्रचार आप सबके माध्यम से हो रहा है। आप जिनके संपर्क में आएँ, उन्हें बताइए। इसी प्रकार यह संदेश सम्पूर्ण ब्रह्मांड में फैलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:46 · 23 दिसम्बर 2021

सत्र 36 · प्रश्न 728–753

L34 जब बार-बार एक दिन में संक्रांति और अमावस्या एक साथ पड़ेगा, तब महाप्रलय आएगा।

दिनांक: 26 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 728 पंडित जी, यह ओमिक्रॉन वेरिएंट कितना खतरनाक है? और 2022 में क्या यह तबाही मचाएगा, या फिर से दंगे होंगे? 2022 में विनाश का कारण क्या होगा?

उत्तर: देखिए, जब भी धर्म की स्थापना होनी होती है, भगवान तीन संकेत, तीन चेतावनियाँ देते हैं। वे तीन चेतावनियाँ और तीन संकेत देते हैं। यह तीसरा वेरिएंट है। इसके लिए मैं हमेशा कहता हूँ, संवैधानिक नियमों और सरकार के नियमों का पालन कीजिए। और धार्मिक भक्तजन, पवित्र लोग, हमारे धार्मिक मार्ग का भी पालन करें। जो पवित्र हैं और चाहते हैं, वे इसका पालन करें। परंतु हमने भूतकाल के बारे में लिखा है। मैं इस पर अधिक टिप्पणी नहीं करना चाहता। मैं पहले कह चुका हूँ कि 2027 तक अनेक महामारियाँ आएँगी। और 2022, 2023, 24, 25, 26, 2027 तक... यह '19 में शुरू हुआ था, तो यह धारा चलती रहेगी। यह कितना बुरा या अच्छा होगा, यह समय तय करेगा। परंतु जैसे पंचतत्व हैं, वैसे ही यह भी धर्म स्थापना की एक धारा है। बस इतना ही। जो धर्म में रहेंगे, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। समस्याएँ उनके लिए हैं जो पाप में जीते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 10:13 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 729 अपने युग में भगवान कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से अनेक लोगों का वध किया, और उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई। तो अब जब भगवान कल्कि सुदर्शन चक्र से लोगों का वध करेंगे, तो क्या उन्हें भी मुक्ति प्राप्त होगी?

उत्तर: मुक्ति और वैकुंठ (दिव्य धाम) भगवान की इच्छा के अधीन हैं। जब भगवान लोगों का संहार करते हैं, तो यह उन्हीं पर निर्भर है। क्योंकि इस युग के अंत में चारों युगों के पाप और पुण्य का विचार होगा; पिछला युग अलग था। भगवान अपना संहारक रूप धारण करके पापियों का नाश करेंगे। वे उन्हें मुक्ति देंगे या नहीं, यह मैं नहीं जानता, क्योंकि यह मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 12:43 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 730 पंडित जी, कृपया हमें 'माधव' नाम के बारे में थोड़ा बताइए। यह नाम कहाँ से आया? इसका क्या महत्व है? आप जो जानते हैं, कृपया हमारे साथ साझा कीजिए। जैसा कि सभी पुराणों में लिखा है, भगवान कल्कि आ रहे हैं। आने वाले कठिन समय में सब लोग भगवान कल्कि को उनके नाम से पुकारेंगे, क्योंकि सब जानते हैं कि दसवाँ अवतार कल्कि अवतार होगा। तो 'माधव' नाम के विषय में कृपया हमारा थोड़ा मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, मालिका में लिखा है: "माधव, माधव सर्वत्र जपा जाएगा।" सम्पूर्ण ब्रह्मांड माधव, माधव नाम का जप करेगा। परंतु सब लोग उस माधव को, अर्थात् भगवान को, पहचान नहीं पाएँगे। और एक अन्य स्थान पर सच्चिदानंद ने लिखा है, "जो अभी माधव हैं, वही कल्कि होंगे।" जब वे संहार का कार्य करेंगे, तब उनका नाम कल्कि होगा, परंतु अभी उनका नाम माधव है। माधव नाम का जप करने से भक्तों की रक्षा होगी। इसके साथ, दशावतार स्तोत्रम् और दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करना सब कुछ ठीक कर देने के लिए पर्याप्त है। आपने एक बार कहा था कि देवी दुर्गा द्वापर युग में यह नाम देना चाहती थीं। समय के अभाव में मैं विस्तार से नहीं बता सका, परंतु अब संक्षेप में कहता हूँ। द्वापर युग में जब भगवान का जन्म हुआ, तब माता भगवती, योगमाया ने भगवान का नाम 'माधव' रखा था। इस पर मैंने एक दिन सत्संग में चर्चा की थी। परंतु कुलपुरोहित गर्ग मुनि ने नामकरण संस्कार के समय उनका नाम 'श्रीकृष्ण' रखा। तब माता भगवती, देवी दुर्गा ने भगवान से पूछा, "हे प्रभु, मैंने तो गोपियों और गोपों के लिए आपका यह नाम रखा था। यह नाम क्यों बदल दिया गया?" भगवान ने उत्तर दिया, "देखो माता, यह नाम सबसे महत्वपूर्ण है। कलियुग में इसी नाम से भक्तों की रक्षा होगी। मैंने जितने भी अवतार लिए हैं, उन सबमें यह नाम सबसे शक्तिशाली और भक्ति से परिपूर्ण है। इसलिए कलियुग के अंत में जब मैं कल्कि अवतार लूँगा, तब माधव नाम की उपासना से भक्तों का उद्धार होगा। इसीलिए मैंने यह नाम कलियुग के लिए सुरक्षित रखा है।"

► यह उत्तर सुनें · 13:48 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 731 'माया' क्या है? और जो जीवन हम जी रहे हैं, उसमें क्या माया है और क्या नहीं? कृपया इस विषय में थोड़ा बताइए। हम प्रभु के चरणों में समर्पित हैं और माया को समझना चाहते हैं। यह जीवन जीने के लिए, माया क्या है? और हमारे जीवन में योगमाया (दिव्य मायाशक्ति, देवी) की क्या भूमिका है?

उत्तर: देखिए, इस संसार में जो कुछ भी मनुष्य को सांसारिक सुख देता है, वही माया है। जैसे, कोई सुंदर वस्तु देखने से आँखों को शांति मिलती है। अच्छा भोजन करने से जिह्वा को शांति मिलती है। धन-संपत्ति होने से मनुष्य को नींद, सुख और शांति मिलती है। अच्छा घर, अच्छी वस्तुएँ, अच्छी ज़मीन—इस संसार में जो कुछ भी सुख का साधन है, वह सब क्षणभंगुर है; उसमें कोई स्थायित्व नहीं है। जो-जो वस्तुएँ स्थायी नहीं हैं, वे माया द्वारा दी गई शक्तियाँ हैं। क्योंकि उनमें माया है, और वे वस्तुएँ स्थायी नहीं हैं। स्थायी है मनुष्य की भक्ति, समर्पण, स्थिरता और सहनशीलता, अर्थात् धैर्य। जो अपने जीवन में सत्य, शांति, दया, क्षमा और मैत्री का आचरण करता है, उसके साथ माया नहीं रहेगी। क्योंकि यदि कोई सत्य बोलता है, तो वह असत्य से कमाई नहीं कर सकता। थोड़ी कठिनाई हो सकती है, पर उसमें कोई रोग नहीं है। पारिवारिक उलझनें... पिता और पुत्र के बीच का पवित्र संबंध माया नहीं है। परंतु संतान, संसार और पत्नी के प्रति आसक्ति में थोड़ी माया होती है। क्योंकि मनुष्य अपनी संतान के लिए कुछ भी कर गुज़रेगा। संतान गलती भी करे तो भी वह उसे स्वीकार कर लेता है; यह भी माया का ही लक्षण है। तो माया सदा दुःख ही देती है, और माया मनुष्य के साथ सदा नहीं रहती। वह क्षणिक है। इस नश्वर संसार में हम जो कुछ भी देखते हैं—नदियाँ, समुद्र, बड़े-बड़े मार्ग, पर्वत—सब माया की ही रचनाएँ हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब ये सब विलीन हो जाएँगे। केवल एक ही चीज़ माया को काट सकती है, और वह है धर्म। धर्म कैसे आता है? सत्य, शांति, दया और क्षमा का आचरण करने से मनुष्य धर्म संचित करता है। इस संसार में हमारा शरीर भी माया का ही रूप है। एक समय आएगा जब हमें यह शरीर छोड़ना ही पड़ेगा। परंतु आत्मा अविनाशी है; वह माया के अधीन नहीं है। धर्म भी माया के अधीन नहीं है। ये दोनों मिलकर आत्मा के साथ जाएँगे और सारे विचार-विमर्श के बाद उसे अच्छी स्थिति में पहुँचा देंगे। तो माया दुःख का कारण है। और धर्म मनुष्य जीवन के सार्थक उद्देश्य के लिए है। मनुष्य कभी-कभी माया में शोक करता है: कोई मर गया, व्यापार में घाटा हो गया,

पढ़ाई में अच्छा परिणाम नहीं आया। यह सब माया के प्रभाव में है, इसीलिए मनुष्य शोक करता है। मनुष्य को यह जानना आवश्यक है कि जिन वस्तुओं के लिए वह परिश्रम कर रहा है, वे स्थायी नहीं हैं। तो माया से दूर रहने का अर्थ है—संसार में जो कुछ भी हो, इसकी चिंता मत कीजिए कि हमारे लिए क्या होगा और क्या नहीं। निरंतर भगवान के प्रति समर्पित रहिए, उनका नाम जपिए, भोजन मिले या न मिले, नौकरी हो या न हो। भगवान अपने भक्तों को अवश्य खिलाएँगे, उनका पालन करेंगे और उनकी रक्षा करेंगे। यह उनका दायित्व है, हमारा नहीं। माया के कारण हम सोचते हैं कि हम स्वयं कर लेंगे, और जब नहीं कर पाते तो दुःख होता है। संसार ऐसे ही चलता है। परंतु सच्चा ज्ञानी व्यक्ति इससे विचलित नहीं होता। वह भगवान द्वारा दिखाए मार्ग पर चलता है। सुख आए तो प्रसन्न होना आवश्यक नहीं, और दुःख आए तो दुःखी होना आवश्यक नहीं। यही माया को काटने का सबसे बड़ा उपाय है। और धर्म की स्थापना में योगमाया की शक्ति के विषय में: हर युग में असुरों के विनाश के लिए योगमाया आती हैं। इस युग में महाविष्णु और योगमाया मिलकर धर्म की स्थापना का कार्य करेंगे। महामाया विनाश करेंगी और प्रभु भक्तों की रक्षा करेंगे। यदि आवश्यकता पड़ी, जहाँ महामाया का कार्य पर्याप्त नहीं होगा, वहाँ महाविष्णु अपनी शक्ति से विनाश करेंगे—एक ओर भक्तों की रक्षा और दूसरी ओर पापियों का संहार। तो योगमाया (दुर्गा) और माधव दोनों मिलकर विनाश का कार्य करेंगे। यह मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 17:15 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 732 कृपया 'दया' का अर्थ समझाइए, जो सत्य और शांति से उत्पन्न होती है?

उत्तर: सत्य, शांति और दया... 'दया' का अर्थ यह है: देखिए, मनुष्य ऐसा प्राणी है जिस पर 56 करोड़ जीव निर्भर हैं। क्योंकि मनुष्य के पास हाथ, पैर और ज्ञान है, वह अपना भोजन स्वयं उत्पन्न कर सकता है और खा भी सकता है। उसमें बाँटने की शक्ति भी है, जबकि अन्य जीवों के पास ऐसे साधन नहीं हैं। तो समस्त जीवों के लिए, मनुष्य जगत और पशु जगत के लिए, मनुष्य में दया होना आवश्यक है। इसका अर्थ है किसी की हत्या न करना, किसी का प्राण न लेना, किसी को हानि न पहुँचाना, किसी की संपत्ति, धन या साधन बलपूर्वक न छीनना। जो दूसरों का है, उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। जिस व्यक्ति में दया होती है वह सोचता है, "मैं उन्हें हानि क्यों पहुँचाऊँ या उनके साथ बुरा क्यों करूँ?" यही दयालु स्वभाव का लक्षण है। और सबसे बड़ी दया यह है कि जब आप गरीब, दुखी, अपाहिज या दिव्यांग लोगों को अथवा भूखे पशुओं को देखें, तो उन्हें भोजन दें। यह दया के अंतर्गत आता है। और कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि पुत्र, पुत्री, पत्नी या परिवार का कोई सदस्य गलती कर दे, हमारी कोई संपत्ति नष्ट कर दे, या कोई छोटी वस्तु खो दे। उन्हें क्षमा कर दीजिए। क्योंकि जो होना है वह होता है, और जो नहीं होना है वह नहीं होता। हम तो बीच में, माया के अधीन होकर, व्यर्थ ही परेशान होते हैं। तो सबके प्रति स्नेह, परवाह और प्रेम रखना ही दया का लक्षण है।

► यह उत्तर सुनें · 24:12 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 733 जब हम किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति की सहायता करने जाएँ, तो क्या हमें उन्हें प्रेमपूर्वक समझाकर रोज़गार दिलाने में मदद करनी चाहिए, या भोजन से सहायता करनी चाहिए? इन दोनों में से कौन-सी सच्ची दया मानी जाती है?

उत्तर: देखिए, लोगों की उतनी ही सहायता कीजिए जितनी उन्हें आवश्यकता है। आवश्यकता से अधिक देना ज़रूरी नहीं है। यह हमेशा ध्यान रखिए: जो काम करने में सक्षम हैं, उन्हें काम करना सिखाइए। जो काम करने में असमर्थ हैं, उनकी सहायता कीजिए। और जो कभी काम नहीं कर पाएँगे, उनकी नियमित सहायता करना अच्छा है। परंतु उसके लिए आपके पास स्वयं आवश्यक साधन होने चाहिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 26:13 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 734 मैंने यूट्यूब पर देखा कि 2022 में चीन से युद्ध हो सकता है या एलियन का हमला हो सकता है। क्या यह सच है?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। आज मैं देख रहा था कि कुछ लोग 2022 और चीन पर हमले की बात कर रहे हैं। लोगों ने इस विषय पर यूट्यूब पर कुछ वीडियो भी डाले हैं। देखिए, 2022 में ऐसा कुछ भी होने वाला नहीं है। यह एलियन हमला होने वाला नहीं है। यह कभी नहीं होगा। आने वाले समय में मानव समाज स्वयं ही अपने कर्मों का फल भोगेगा। किसी दूसरे ग्रह से कोई एलियन नहीं आ रहे हैं। ऐसा कोई हमला होने वाला नहीं है। यह केवल लोगों को भ्रमित करने के लिए है। इसमें कोई सच्चाई नहीं है। यह कभी नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:10 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 735 पिताजी, मेरे मन में एक प्रश्न है। जब अंतिम समय आएगा, तब भगवान कल्कि सभी भक्तों को कैसे एकत्र करेंगे?

उत्तर: सभी भक्त मालिका के माध्यम से एकत्र किए जाएँगे। मालिका का प्रचार होगा, और आप जैसे शुद्ध लोग जो मालिका का अनुसरण कर रहे हैं, अपने गाँवों और शहरों के अच्छे लोगों तक इसका संदेश पहुँचाएँगे। जो अपने पूर्वजन्म में संत, ऋषि और तपस्वी थे, वे मालिका की ओर खिंचे चले आएँगे। मालिका का अनुसरण करते हुए, जैसे आज आप इस सत्संग में हैं, वैसे ही वे भी आपके साथ जुड़ जाएँगे। इस प्रकार पूरे भारत और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सभी भक्त एकत्र किए जाएँगे। एक ओर विनाश का कार्य चलेगा और दूसरी ओर भक्तों को एकत्र करने का कार्य चलता रहेगा। दोनों एक साथ होंगे। विनाश का कार्य चलता रहेगा, पर भक्त एकत्र किए जाएँगे। भक्त प्रभु के नाम-जप और कीर्तन की धारा में रहेंगे, और वे बच जाएँगे। भक्तों को कुछ नहीं होगा। जैसे-जैसे पापियों का विनाश होगा, धीरे-धीरे तीन-चौथाई से अधिक लोग मिट जाएँगे। जो शेष रहेंगे वे मालिका के भक्त होंगे। ऐसा समय आएगा। यह कार्य प्रभु की कृपा से आगे बढ़ रहा है, और आप सब भी मालिका का अनुसरण कर रहे हैं। धीरे-धीरे शेष भक्त भी जुड़ जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:14 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 736 हर युग में बहुत से दुष्ट लोग थे जिन्होंने अच्छे लोगों को बहुत सताया। आने वाले सत्य युग में, क्या प्रभु ऐसे लोगों का जन्म ही रोक देंगे, या उनके साथ क्या होगा? कृपया इस विषय में कुछ बताइए।

उत्तर: सनातन धर्म का जो कार्य अब आरंभ हुआ है... जो भी व्यक्ति प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़ता है, सत्य, शांति और दया का आचरण करता है, त्रिसंध्या करता है, 16 नामों का जप करता है, और सदा सत्य बोलता है... ऐसे लोग मालिका के माध्यम से तैयार किए जाएँगे, और उन्हें सत्य युग के लिए भेजा जाएगा। ये सारे असुर, अधर्मी, दुष्ट स्वभाव के मनुष्य—इनमें से एक भी शेष नहीं रहेगा। कोई अधर्मी व्यक्ति नहीं होगा। पशुओं की हत्या करने वाला एक भी व्यक्ति इस धरती पर नहीं बचेगा, एक भी नहीं। क्योंकि वह सत्य का युग होगा। और जो लोग शेष रहेंगे वे सब भाईचारे के साथ, एक परिवार की तरह रहेंगे, हमारे सनातन धर्म के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत के अनुसार—सारा संसार एक परिवार है। सब सबकी सहायता करेंगे। सभी लोगों के बीच शांति, पवित्रता और सहयोग रहेगा। सबके पास खाने, पीने और रहने के साधन होंगे। एक भी पापी शेष नहीं रहेगा। और उस समय यदि कोई पाप करेगा या झूठ बोलेगा, तो वह मर जाएगा। वह जीवित नहीं रह पाएगा। आज के कलियुग की तरह नहीं, जहाँ लोग जितना चाहें पाप करते हैं और जितना चाहें धन इकट्ठा करते हैं। एक व्यक्ति के पास दवा के लिए पैसे नहीं हैं, जबकि दूसरों के पास बैंक में करोड़ों जमा हैं। वे मर जाते हैं, और कोई नहीं जानता कि वह धन कहाँ चला जाता है, पर गरीब गरीब ही रहता है और अमीर और अमीर होता जाता है। इसीलिए प्रभु धर्म की स्थापना के लिए आए हैं। जब भगवान आते हैं, तो वे सबको समान बनाते हैं और सबको वेदों की धारा

में देखते हैं। इसीलिए हम आपके लिए वेदों की धारा का प्रचार करते हैं—सनातन धर्म की वह सच्ची धारा जो आपको बचा सकती है, वह आपके साथ है। जो वेदों और प्रभु के नाम को थामे रहेंगे, वे सत्य युग में होंगे, जहाँ कोई पापी नहीं होगा, केवल अच्छे लोग होंगे। यदि कोई पाप करेगा, तो वह समाप्त हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:13 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 737 हमने बहुत से संतों से सुना है जिन्होंने भविष्य बताया और कलियुग के अंत के विषय में कहा, परंतु उनमें से किसी ने हमें भविष्य का उपाय नहीं बताया, जो आपने हमें बताया है। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, पंडित जी।

उत्तर: धन्यवाद। बहुत आनंद होता है। यह भगवान और भक्तों के लिए है। जो विनाश आने वाला है उसके विषय में भी लिखा है और भक्तों के उद्धार के विषय में भी। और यदि आप भक्तों के सारे अनुभव सुनेंगे, तो आप देखेंगे कि जो धर्म की धारा में हैं, उन्हें कुछ नहीं होगा। सारी विपत्तियाँ आएँगी, पर जो व्यक्ति इस धारा में है वह बच जाएगा। यह प्रमाणित हो चुका है, और बार-बार प्रमाणित होता है क्योंकि यह प्रभु की धारा है, मेरी नहीं। भगवान ने मुझे कुछ सामर्थ्य दिया है, और उनकी कृपा से मैं बोल पाता हूँ, आपको बता पाता हूँ और सूचित कर पाता हूँ। यह सब भगवान की ही कृपा है।

► यह उत्तर सुनें · 33:32 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 738 वर्तमान युग से संबंधित प्रभु के नाम, जैसे माधव, का जप करना क्यों आवश्यक है, न कि पिछले युगों के नामों, जैसे राम या कृष्ण, का?

उत्तर: क्योंकि युग के अनुसार प्रभु का एक मंत्र, एक नाम और एक अवतार होता है। जैसे, मेरे पिछले जन्म में मेरा नाम कुछ और था। इस जन्म में, यदि आप मुझे मेरे वर्तमान नाम से पुकारेंगे, तो मैं सुनूँगा। यदि आप मुझे मेरे पिछले जन्म के नाम से पुकारेंगे, तो मैं सोचूँगा कि आप किसे पुकार रहे हैं। दूसरी बात यह है कि भगवान हर युग में अवतार लेते हैं, और उस अवतार का नाम उसी युग के अनुसार प्रचारित होता है। जैसे, सत्य युग में महाविष्णु का नाम; त्रेता युग में भगवान श्रीराम का नाम; द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का नाम; और कलियुग में श्रीजगन्नाथ का नाम। और इस संधि युग में जहाँ हम खड़े हैं, यह भगवान कल्कि या माधव का नाम है। युग के अनुसार अवतार के नाम का जप करने से भगवान की कृपा प्राप्त होती है। हरे कृष्ण, हरे राम का जप हमारे लिए और संसार के लिए अच्छा है। परंतु जो विपत्ति आने वाली है, उसके लिए माधव का नाम आवश्यक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:14 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 739 मेरा प्रश्न यह था कि जो विश्वयुद्ध होने वाला है, वह कब होगा?

उत्तर: देखो बेटा, पहले तुम्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। तुम बच्चे हो। तुम्हारे माता-पिता और परिवार तुम्हारी देखभाल करते हैं। जब समय आएगा, तब हो जाएगा। तुम्हें उसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। अच्छे से पढ़ो और प्रभु का नाम जपो। यदि हो सके तो श्रीमद्भागवत पढ़ो और 16 नामों का जप करो। ऐसा करने से तुम्हारी एकाग्रता बढ़ेगी, जो पढ़ोगे वह याद रहेगा, पढ़ाई में अच्छा परिणाम आएगा, अच्छा चरित्र बनेगा, और तुम एक अच्छे इंसान बनोगे। जब युग बदलेगा, तो तुम सत्य युग में जा सकोगे। तो विश्वयुद्ध की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जो भगवान की शरण में जाता है, उसे विश्वयुद्ध में कुछ नहीं होगा। तुम्हें कुछ नहीं होगा, और भक्तों को कभी कुछ नहीं होता। इसलिए धर्म और पवित्रता पर ध्यान दो।

► यह उत्तर सुनें · 36:57 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 740 तो भगवान कल्कि द्वारका कब आएँगे?

उत्तर: देखो बेटा, मालिका में लिखा है कि वे जाएँगे। एक समय आएगा जब बेट द्वारका, जो समुद्र के नीचे है, फिर से ऊपर उठ आएगी, और अमेरिका पानी में डूब जाएगा। जब बेट द्वारका ऊपर उठेगी, तब भगवान कल्कि वहाँ जाएँगे और भक्तों की रक्षा के लिए किसी को राजा बनाएँगे। वे उस समय जाएँगे। और यदि वे उससे पहले जाते हैं, तो प्रभु गुप्त रूप से जाएँगे, क्योंकि वे अपने आगमन की घोषणा नहीं करेंगे। यदि करते, तो सब आ जाते—पापी और भक्त दोनों। वे सबको नहीं बचा सकते, इसलिए प्रभु गुप्त रूप से जाएँगे। और जब धर्म की स्थापना होगी, तब द्वारका, बेट द्वारका ऊपर उठ आएगी, और लोग भगवान श्रीकृष्ण का महल देखेंगे। उस समय प्रभु जाकर गुजरात में द्वारका को पुनः स्थापित करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:05 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 741 पंडित जी, जो द्वारका डूब गई थी, क्या वह फिर से ऊपर आएगी?

उत्तर: हाँ, जो द्वारका 5,000 साल पहले डूब गई थी, वह फिर से ऊपर आएगी। जब अमेरिका पानी में डूबेगा, तब द्वारका ऊपर उठेगी। यह लिखा हुआ है, और यह होकर रहेगा। क्योंकि हम प्रभु को याद करते हैं, इसलिए वे भक्तों के लिए सभी तीर्थस्थानों की पुनः स्थापना करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 39:13 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 742 पंडित जी, मेरा एक मित्र है जो कहता है कि मालिका ही गुरु है। वह न किसी समूह से जुड़ा है, न ही इस आधुनिक युग में उसके पास मोबाइल फोन या कोई तकनीक है। फिर भी, उसे दुनिया में हो रही हर बात का पता रहता है। यह किस तरह का चमत्कार है?

उत्तर: देखिए भाई, इस संसार में जो अपने पूर्व जन्मों में संत, ऋषि, तपस्वी और देवता थे, वही लोग मालिका के साथ हैं। वे सब देवता, ऋषि और संत हैं, और आपका मित्र भी उन्हीं में से एक है। कुछ लोगों को 'जातिस्मर ज्ञान' (पूर्व जन्मों की स्मृति) होता है। वे भूत और भविष्य के बारे में बता पाते हैं। यह हजारों और लाखों युगों से चला आ रहा है, और वे इस युग में भी आए हैं। वे जो कहते हैं, उसका हम सम्मान करते हैं। आने वाले समय में संसार में ऐसे और भी बहुत से लोग आएंगे जो स्पष्ट रूप से बताएँगे कि भविष्य में क्या होने वाला है। धीरे-धीरे उनका प्रकाश प्रकट होगा, और संसार को ऐसे संतों और ऋषियों से मार्गदर्शन मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:07 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 743 पंडित जी, आप कह रहे थे कि एक युग लाखों वर्षों का नहीं होता, है ना? 2018 में आपने गणना समझाई थी: 1200, 2400, 3600 और 4800 वर्ष। मैंने आपका वीडियो देखा था। मुझे यह सही लगता है, क्योंकि ऐसा लगता है कि रामायण काल लाखों वर्ष पहले नहीं था। यदि आप इस पर मार्गदर्शन करें, तो मेरा संदेह दूर हो जाएगा।

उत्तर: देखो बेटा, यह कलियुग कई बार आ चुका है। जैसे, जब तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखी, तब तक 18 या 19 कलियुग बीत चुके थे। उन्होंने रामचरितमानस में यह लिखा है। तो कलियुग इतनी बार आ चुका है कि किसी को पता नहीं, क्योंकि ब्रह्मांड अनंत है। युग निरंतर आते-जाते रहते हैं, लोग आते-जाते हैं, देवता आते हैं, धर्म की स्थापना होती है, पाप बढ़ता है, फिर विनाश होता है, और फिर पृथ्वी शुद्ध होती है। यह चक्र चलता रहता है। यदि हम सभी शास्त्रों पर विचार करें, तो हमारा ज्ञान सीमित रह जाएगा। लेकिन युग चक्र चलता रहता है। हर युग में भक्तजन इन बातों की चर्चा करते हैं, जैसे आज हम कर रहे हैं। किसी को पता नहीं कि कितने युग बीत चुके हैं या यह कितने वर्षों तक चलता रहेगा। लेकिन चार युगों—सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि—के बारे में गणना 1200, 2400, 3600 और 4800 वर्ष की है। जैसे-जैसे धर्म घटता है, युग की अवधि बढ़ती जाती है। सत्य युग में धर्म के चार पाद होते हैं। फिर धर्म का एक पाद चला जाता है, और अवधि दोगुनी हो जाती है। फिर एक और पाद चला जाता है, और वह तिगुनी हो जाती है। कलियुग में केवल एक पाद बचता है, और अवधि चार गुनी हो जाती है। इस गणना के अनुसार, कलियुग 4800 वर्षों तक रहने वाला था। यह मनुस्मृति, गर्ग संहिता और निर्णय सिंधु में भी लिखा है, और सबसे बड़ा दैवीय वरदान यह है कि यह मालिका में भी है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 42:16 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 744 सभी पंडित यह क्यों कहते रहते हैं कि कलियुग 4,32,000 वर्षों का है? अभी-अभी मैंने एक से बात की, उन्होंने भी कहा कि अभी बहुत समय बाकी है। क्या वे अध्ययन नहीं करते, या वे मोह-माया में फँसे हुए हैं?

उत्तर: देखिए, इस संसार में हर कोई अपनी आजीविका कमाने में लगा है। अगर वे कहेंगे कि कलियुग समाप्त हो रहा है, तो उनका शिष्य कौन बनेगा, और वे यह आशीर्वाद कैसे देंगे कि "तुम्हारा परिवार होगा, संतान होगी, तुम घर बनाओगे"? ऐसे आशीर्वाद देकर उन्हें धन मिलता है, इसलिए वे लोगों को धोखा देते हैं। और वे शास्त्रों को लोगों के सामने सही ढंग से प्रस्तुत नहीं करते। अगर उन्हें शास्त्र नहीं पता, तो वे इस ज्ञान को वेद-विरोधी कह देते हैं। मैं यह पूरे भारत से सुनता हूँ। लेकिन एक समय आएगा जब वे स्वयं कहने लगेंगे, "नहीं, कलियुग समाप्त हो गया है।" तब वे अपनी बात बदल लेंगे। लेकिन हम यह काम संसार में किसी को दिखाने के लिए नहीं कर रहे; हमें इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हमारा लक्ष्य यह है कि लोग शरण लें, मालिका का अनुसरण करें, धर्म का आचरण करें, और यह समझकर कि युग समाप्त हो रहा है, अपने कर्तव्यों का पालन करें ताकि पृथ्वी पर मानव समाज बच सके और पृथ्वी का संतुलन बना रहे। सत्य धर्म का प्रकाश प्रकट होगा। दूसरे क्या करते हैं, इससे हमें कोई मतलब नहीं। हमें किसी के बारे में बोलना पसंद नहीं, लेकिन यह आवश्यक है कि वे शास्त्रों को ठीक से पढ़कर बोलें। अगर वे पढ़ते नहीं, तो सही नहीं बोलते। यह उनकी भूल है। इसका निर्णय भगवान करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:55 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 745 पंडित जी, क्या दिल्ली पर परमाणु बम गिराया जाएगा, और क्या दिल्ली पूरी तरह नष्ट हो जाएगी?

उत्तर: देखो बेटा, मैं तुम्हें इतना बताऊँगा। यह तीसरा विश्व युद्ध परमाणु युद्ध होगा। इसमें सभी देशों—भारत, पाकिस्तान, चीन और दुनिया के सभी देशों—की स्थिति प्रभावित होगी। लेकिन अगर मैं इस बारे में विशेष रूप से बोलूँ, तो दिल्ली के लोग क्या सोचेंगे? वे भयभीत हो जाएँगे। इसलिए मुझे कहना ठीक नहीं लगता। लेकिन विश्व युद्ध के प्रभाव से पूरे संसार में तबाही मचेगी। तो केवल दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरा भारत और दुनिया का कोई भी देश जो भारत से लड़ेगा, वह भी नष्ट हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:47 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 746 पंडित जी, आंध्र प्रदेश के एक संत थे, वीरभद्र स्वामी जी, जिन्होंने कई वर्ष पहले यह भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इसे ताड़पत्रों पर लिखा था। उसी आधार पर मैंने आपसे पूछा कि क्या यह दिल्ली में होगा, जैसा उन्होंने लिखा था।

उत्तर: देखिए, यह बहुत गुप्त बात है। अगर मैं इस बारे में बोलूँ, तो लोग भयभीत हो जाएँगे, और समस्याएँ खड़ी होंगी। सब कुछ मालिका में लिखा हुआ है। जब कभी हम व्यक्तिगत रूप से मिलेंगे, तब इस पर बात करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:42 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 747 मैं पूछ रहा था, क्या समुद्र में मूल द्वारका, भगवान कृष्ण के समय वाली द्वारका, के अवशेष मिल रहे हैं?

उत्तर: हाँ, मिल रहे हैं। लोग जाकर देखते हैं, और वे बता रहे हैं कि बहुत सी चीजें मिली हैं। सब कुछ मिलेगा, और विश्वकर्मा की कृपा से इसका पुनर्निर्माण होगा। यह बिल्कुल वैसा ही हो जाएगा जैसा था।

► यह उत्तर सुनें · 48:24 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 748 क्या ऐसा हो सकता है कि सत्य युग का समय धीरे-धीरे निकट आ रहा है, और इसी के परिणामस्वरूप अब ये चीजें मिल रही हैं?

उत्तर: हाँ, यह जानकारी इसलिए आ रही है क्योंकि आने वाले समय में कुछ प्रकट होने वाला है। इसीलिए प्रभु का कुछ प्रमाण मिल रहा है, जैसे द्वारका का अस्तित्व, जिसे कुछ लोगों ने छिपाने की कोशिश की थी। भविष्य में और भी मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 49:07 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 749 पंडित जी, मैं सोच रहा था कि कान्हा जी (भगवान कृष्ण) की भक्ति कैसे की जाए?

उत्तर: भक्ति कैसे की जाती है? एक जगह बैठकर भगवान श्री कृष्ण का नाम एक बार, दो बार, तीन बार लीजिए... बैठकर सौ बार जप कीजिए। भगवान कृष्ण का नाम बार-बार जपने से आपको और अधिक प्राप्त होगा, और तब आप समझ जाएँगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 51:05 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 750 प्रणाम, मेरा प्रश्न यह था कि सत्य युग कब आरंभ होगा?

उत्तर: सत्य युग का आरंभ... देखिए, कलियुग तो पहले ही समाप्त हो चुका है। अब विनाश का दौर चल रहा है। सत्य युग आरंभ हो रहा है; वह आरंभ हो चुका है। इसीलिए, आप देखिए, इस बार पूरे भारत में श्रीमद्भागवत ग्रंथ सबसे अधिक खरीदा गया है। कई चैनलों पर इसकी खबरें हैं। यह सत्य युग के आरंभ का संकेत है। क्योंकि जब हर घर में भागवत होगी, तब सत्य युग का उदय होगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:52 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 751 जय श्री माधव, पंडित जी। आपने 13 दिन के 'पक्ष' के बारे में बताया था। यह कब होगा?

उत्तर: देखिए, जब हमारे प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे, तब 13 दिन का पक्ष हुआ था। यह भविष्य में फिर होगा। यह 13 दिन का पक्ष धर्म की स्थापना का संकेत है। जब 13 दिन का पक्ष होता है, तब विनाश का कार्य बढ़ जाता है। मैं गणना करके आपको बताऊँगा कि भविष्य में किन वर्षों में यह होगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:34 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 752 पंडित जी, भविष्य मालिका में जो लिखा है, जिसे आप हमारे साथ साझा करते रहे हैं, क्या आपने स्वयं उससे जुड़ा कुछ देखा या अनुभव किया है?

उत्तर: सभी भक्त इसका अनुभव करते हैं, केवल मैं ही नहीं। सब करते हैं। मालिका का एक-एक शब्द पत्थर की लकीर जैसा है। महापुरुष अच्युतानंद ने जो कुछ लिखा, वह एक-एक करके सत्य सिद्ध हुआ है। हजारों संकेत मिल चुके हैं। उन्होंने एक बात यह भी लिखी थी कि आने वाले समय में नागपुर की टकसाल नहीं रहेगी। और यह भी कि कुछ देश अलग हो जाएँगे। और मालिका ने यह भी कहा था कि चीन और पाकिस्तान मिलकर भारत से युद्ध करेंगे। आप सब स्थिति देख ही रहे हैं। तो मालिका में जो कुछ लिखा है, वह एक-एक करके सत्य सिद्ध हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। जो लोग मालिका का अनुसरण करते हैं—मैं लगभग 30-35 वर्षों से इसका अनुसरण कर रहा हूँ—उन्होंने देखा है कि सब कुछ सत्य हुआ है। भविष्य में भी होगा, और मालिका के माध्यम से भक्तों की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 53:39 · 26 दिसम्बर 2021

प्रश्न 753 क्या नियमित साधना से भगवान से मिलन संभव है?

उत्तर: हाँ, संभव है।

► यह उत्तर सुनें · 55:29 · 26 दिसम्बर 2021

सत्र 37 · प्रश्न 754–773

L35 नया साल, पिछले साल से और भी विनाश लाएगा। उद्धार पाने का मार्ग क्या है ? LIVE

दिनांक: 30 दिसम्बर 2021 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 754 नए वर्ष में मानव समाज के लिए क्या होगा, और कौन से परिवर्तन आएँगे?

उत्तर: आने वाला वर्ष भक्तों के लिए और उनके लिए अच्छा रहेगा जो धर्म, सदाचार, आदर्श और वैदिक व्यवस्था के मार्ग पर चलते हैं। जो भगवान की शरण में हैं और अपने जीवन में सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री का आचरण करते हैं, उनके लिए आने वाले वर्ष में चिंता की कोई बात नहीं है। किंतु यदि मानव समाज ने स्वयं को नहीं सुधारा और अपने कर्म व आचरण नहीं बदले, तो उसे पिछले वर्ष से भी अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ेंगी: आग की घटनाएँ अधिक होंगी, बाढ़ आएगी, और लोग भूकंप तथा विनाश के प्रभाव देखेंगे। 2019 से जो बीमारी कष्ट दे रही है, वह 2021 की तुलना में और भी गंभीर हो जाएगी, और नई बीमारियाँ भी उत्पन्न होंगी। प्रशासनिक अव्यवस्था, सामाजिक अस्थिरता, शांति का अभाव और बढ़ती सांप्रदायिक हिंसा होगी। प्रशासन और आम जनता के बीच समस्याएँ और टकराव बढ़ेंगे। युवा पीढ़ी को पहले जैसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता रहेगा। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव होगा। लोग एशिया, यूरोप और अफ्रीका में विनाश देखेंगे। सुप्त ज्वालामुखी सक्रिय हो जाएँगे। मानवता के लिए सबसे बड़ी चुनौती गरीबी होगी। इसलिए जीवित रहने के लिए कठिन परिश्रम करने के साथ-साथ, लोगों के लिए सत्त्व के आध्यात्मिक मार्ग को अपनाना सबसे आवश्यक है। मैं समस्त मानव समाज से विनम्र निवेदन करता हूँ कि धर्म को थामे रखें। आपको समाज में दूसरे लोग जो कह रहे हैं या कर रहे हैं, उससे सीखने की आवश्यकता नहीं है। यदि समाज में कुछ अच्छा है, तो उसे सीखिए; यदि बुराई है, तो उससे आपका कोई लेना-देना नहीं। जो धर्म में रहना चाहते हैं, उनके लिए 2022 में कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:53 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 755 पिताजी, मेरा एक प्रश्न था। कुछ दिन पहले मैंने एक वीडियो में भगवान को देखा जहाँ उनकी पूजा हो रही थी...

उत्तर: देखिए, मैं आपको इतना ही कहूँगा। सत्संग में लोगों के साथ इस विषय पर बात करने के बजाय... इसके बारे में नियुक्त लोगों से बात कीजिए। यदि सचमुच आवश्यक हो, तो मुझसे बात कीजिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 14:17 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 756 मालिका कहती है कि ओडिशा का अंतिम राजा 'बाल-वृद्ध' होगा। क्या यह घटना पहले ही घट चुकी है?

उत्तर: हाँ, मालिका ने यह लिखा है। कहा गया है कि यह तब होगा जब धर्म संस्थापना का समय आएगा और भगवान अवतार लेंगे। वह समय इस समय चल रहा है। एक अवधि तक, जो राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे युवा थे। उन्होंने कुछ समय तक भगवान की सेवा में अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। फिर, भगवान की अनुमति से, उन्होंने कुछ समय के लिए एक और प्रतिनिधि नियुक्त किया, जो भी एक युवक थे। तो हम देख सकते हैं कि मालिका में जो लिखा था, वह वास्तव में घट रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 15:00 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 757 पंडित जी, कृपया मुझे हनुमान जी के बारे में बताइए।

उत्तर: जगन्नाथ क्षेत्र (पुरी) में समुद्र बार-बार अपना तट लाँघकर मंदिर की ओर गर्जना करता हुआ बढ़ता था। तब भगवान ने हनुमान जी को बुलाया। हनुमान जी, जो अयोध्या में भगवान राम की भक्ति में लीन थे, आए और बोले, 'प्रभु, मैं आ गया हूँ। मैं यहीं रहूँगा और सुनिश्चित करूँगा कि समुद्र अपनी सीमा न लाँघे।' फिर उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि उन्हें बाँध दिया जाए ताकि वे यहाँ से जा न सकें। भगवान जगन्नाथ की इच्छा से, हनुमान जी जगन्नाथ मंदिर में समुद्र की रखवाली कर रहे हैं। किंतु एक समय आएगा जब भगवान जगन्नाथ क्षेत्र छोड़ देंगे। उस समय हनुमान जी और अन्य सभी देवता भी उस क्षेत्र को छोड़ देंगे। तब समुद्र अपना तट लाँघेगा, पहले बाईसी पाहाचा (बाईस सीढ़ियों) के ऊपर से, और बाद में वह नील चक्र (मंदिर के शिखर पर स्थित चक्र) को भी डुबो देगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:28 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 758 क्या महाराष्ट्र के नासिक क्षेत्र के बारे में कुछ लिखा है? विशेष रूप से नासिक शहर के बारे में?

उत्तर: महाराष्ट्र के विषय में लिखा है कि लोग बीमारियों, महामारियों, बाढ़ और आग जैसी अनेक समस्याओं को सहेंगे। साथ ही, भक्त धर्म की स्थापना के लिए एकजुट होंगे और आगे बढ़ेंगे। विशेष रूप से नासिक के विषय में—महापुरुषों ने 1,50,000 ग्रंथ लिखे हैं, और मैंने वे सब नहीं पढ़े हैं। किंतु महाराष्ट्र के बड़े शहरों, जैसे मुंबई, के बारे में विशेष उल्लेख हैं।

► यह उत्तर सुनें · 18:04 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 759 गुरुजी, मुझे स्वप्न में भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी दोनों के दर्शन हुए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह आपका सौभाग्य है। वास्तव में, आज सुबह ही एक भक्त ने मुझसे ऐसे ही एक अनुभव के बारे में बात की थी। देखिए, चूँकि भगवान की लीला प्रकट होने वाली है, इसलिए भक्तों को ये दर्शन और संकेत मिल रहे हैं। यह आपके लिए अत्यंत पवित्र संकेत है और भगवान का आशीर्वाद है।

► यह उत्तर सुनें · 18:54 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 760 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मैं एक पंक्ति में था, एक गुफा से होकर गुजरा, श्वेत वस्त्रधारी एक महापुरुष से मिला, और हम सभी को सफेद दुपट्टे मिले। हमें जल वाला एक मार्ग दिखाया गया और कहा गया कि पहाड़ी पर बनी एक कुटिया तक जाएँ। इस स्वप्न का, विशेषकर सफेद दुपट्टों का, क्या अर्थ है?

उत्तर: आपने जो श्वेत वस्त्र देखा, वह सत्य (सत्त्व) और धर्म का प्रतीक है। आपने जिन महापुरुष को देखा, वे संभवतः महापुरुष अच्युतानंद थे। जिस कुटिया की ओर आपको भेजा गया, वह भगवान का आश्रम है। जिस जलयुक्त पर्वत का आपने उल्लेख किया, वह गुप्तगंगा नामक स्थान है—मालिका में वर्णित एक गुप्त स्थान। आने वाले समय में भक्तों को उस स्थान पर बुलाया जाएगा, और उन्हें सौंपे गए कार्यों के अनुसार उन्हें पंक्तिबद्ध किया जाएगा। यह स्वप्न इस बात का संकेत है कि आपको भगवान और महापुरुष अच्युतानंद के दर्शन प्राप्त हुए हैं, और आपको धर्म की स्थापना के कार्य के लिए चुना गया है। आपको इस अनुभव को सहेजकर रखना चाहिए और सनातन धर्म के लिए कार्य करते रहना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:55 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 761 मलिका में 2022 के लिए मिथिलांचल (बिहार का एक क्षेत्र) के बारे में क्या कहा गया है?

उत्तर: धर्म की स्थापना की प्रक्रिया चल रही है। पंचभूतों से जो आपदाएँ विश्व को प्रभावित करेंगी, वे आपके क्षेत्र पर भी असर डालेंगी। अन्न की कमी, सूखा और अकाल बढ़ते ही जाएँगे। ऐसे समय में भगवान की शरण में रहें। रोग और महामारियाँ तो पहले से ही मौजूद हैं, और ये और बढ़ेंगी; ये जाने वाली नहीं हैं। सांसारिक कष्ट बढ़ते ही रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:38 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 762 मैं पूछना चाहता था कि सिक्किम के बारे में क्या लिखा है। वहाँ हर जगह हमारे जैसा ही पंचरंगी ध्वज दिखाई देता है। उसके बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: जब भगवान ने बुद्ध अवतार लिया था, तब उनके पास भी पंचरंगी पताका थी। सिक्किम का पंचरंगी ध्वज सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री का प्रतीक है। परंतु आने वाले समय में इन सीमावर्ती क्षेत्रों को बड़ी परेशानी झेलनी पड़ेगी। युद्ध और भूकंप का बड़ा प्रभाव होगा। पंचभूतों से जो आपदाएँ पूरे भारत को प्रभावित कर रही हैं, वे वहाँ भी होंगी। केवल ध्वज होना पर्याप्त नहीं होगा; उस ध्वज जिस धर्म का प्रतिनिधित्व करता है, वह धर्म होना आवश्यक है। जो इस धर्म का पालन करेंगे, वे बचेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:58 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 763 समुद्र मंथन से निकली स्वर्णिम रामायण के विषय में — उसके टुकड़े कर दिए गए थे। एक टुकड़ा किसी अन्य लोक में है, और दूसरा दो देशों के पास है। बाकी टुकड़ा कहाँ है?

उत्तर: देखिए, यह एक गुप्त विषय है, और मैं इस पर बोलना नहीं चाहता। परंतु समुद्र मंथन से निकले जिस रामायण ग्रंथ की आप बात कर रहे हैं, समय आएगा और भगवान स्वयं उसे प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:17 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 764 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें चारों ओर घोर अंधकार था, आकाश लाल था, सैन्य सायरन बज रहे थे, और लोग भगदड़ में इधर-उधर भाग रहे थे, धूल-मिट्टी से सने और फटे कपड़ों में, आश्रय ढूँढ़ते हुए। क्या यह भगवान का कोई संकेत था, आने वाले समय की एक झलक?

उत्तर: हाँ, यह एक संकेत था। आने वाले समय में एक महायुद्ध होगा। बमों के धुएँ से आकाश लाल हो जाएगा, और अंधकार सब कुछ ढँक लेगा। लोग इधर-उधर भागेंगे, और चारों ओर विनाश होगा। भगवान अपने भक्तों को स्वप्न में ऐसे दृश्य दिखाते हैं ताकि उन्हें आने वाले समय की चेतावनी मिल सके। मलिका कहती है कि एक समय आएगा जब आकाश रक्त के रंग का हो जाएगा, अंधकार छा जाएगा, और लोग अपनी जान बचाने के लिए भागेंगे, पर उन्हें केवल दुःख ही मिलेगा। यह दृश्य इन कठिन समयों के आने से पहले भक्तों को दिया गया एक संकेत है। धर्म और पवित्रता ही आपकी सबसे बड़ी शक्ति है।

► यह उत्तर सुनें · 27:16 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 765 क्या गुजरात के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: यद्यपि मैंने सभी ग्रंथ नहीं पढ़े हैं, फिर भी लिखा है कि गुजरात के लोग धर्म की स्थापना के लिए एकजुट होंगे। भक्तगण भगवान द्वारकाधीश से प्रार्थना करेंगे, और एक 'मंडल' (दिव्य मंडली/समूह) बनेगा। पंचभूतों की आपदाएँ वहाँ भी होंगी, विशेषकर समुद्र के निकट तटीय क्षेत्रों में। परंतु साथ ही वहाँ भक्तों का उदय भी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:47 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 766 मैंने दो महीने पहले एक स्वप्न देखा था। चाँदनी रात थी और मैं अकेला था, पर वास्तव में वह अंधकार का समय था और लोग नष्ट हो चुके थे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जब धर्म की स्थापना होगी, तब अंधकार सब कुछ ढँक लेगा, और लोग आपस में लड़ रहे होंगे। परंतु भक्तों को यह अंधकार दिखाई नहीं देगा। भगवान की कृपा से उनकी आँखें प्रकाश से भरी रहेंगी। मलिका कहती है कि भक्त देख सकेंगे, परंतु शेष संसार नहीं देख पाएगा। आपने जो चाँदनी देखी, वह इसी का संकेत है: दूसरों के लिए जब अंधकार और विनाश था, तब भी आप दिव्य प्रकाश देख रहे थे।

► यह उत्तर सुनें · 31:32 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 767 क्या मलिका में उत्तराखंड के पाताल भुवनेश्वर के बारे में कोई वर्णन है, जहाँ एक स्वयंभू शिवलिंग है? कहा जाता है कि जब वह बढ़कर गुफा की छत को छू लेगा, तब कलियुग समाप्त हो जाएगा, और अब वह छूने के बहुत करीब है।

उत्तर: ऐसा होगा। जब संहार आरंभ होगा, उस समय वह लिंग छत को छू लेगा। परंतु उस क्षण, संचार-व्यवस्था ठप हो जाने के कारण सब लोग इसके बारे में जान नहीं पाएँगे। यद्यपि मैंने हर ग्रंथ नहीं पढ़ा है, पर मलिका में यह अवश्य लिखा होगा। ऐसे संकेत अनेक स्थानों पर प्रकट हो रहे हैं, और वहाँ का यह संकेत भी पूर्ण होगा। भगवान इस भविष्यवाणी को पूर्ण करेंगे और फिर संहार की प्रक्रिया आरंभ करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:16 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 768 पंडित जी, कृपया कुरुक्षेत्र के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: कुरुक्षेत्र, वह धर्मक्षेत्र जहाँ महाभारत लड़ा गया था, एक दिव्य 'मंडल' का हिस्सा होगा जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान शामिल हैं। भगवान कल्कि भी उचित समय पर कुरुक्षेत्र में चरण रखेंगे। उस क्षेत्र के आसपास रहने वाले भक्त भी बचेंगे। भगवान अपने भक्तों को बचाने के लिए उन्हें चेतावनियाँ देंगे। परंतु अगला महायुद्ध कुरुक्षेत्र में नहीं होगा; वह दिल्ली में होगा। कुरुक्षेत्र एक पवित्र तीर्थस्थल बना रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:37 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 769 मेरे पास एक अद्भुत शक्ति है। जब मैं वर्षा को रुकने के लिए कहता हूँ, तो वह रुक जाती है। जब मैं कहता हूँ कि किसी विशेष स्थान पर बरसो, तो बरसती है। यदि मेरा जन्मदिन अच्छे से मनाया जाए, तो अच्छी वर्षा होती है, और यदि नहीं मनाया जाए, तो सूखा पड़ता है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: यह वर्षा रानी और आपके साथ उनके संबंध से जुड़ा है। मैंने कई बार कहा है कि हज़ारों देवी-देवता पहले ही पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। कुछ को अपनी दिव्यता के संकेत मिलते हैं, और कुछ को नहीं। आपके पास जो शक्ति है वह दिव्य शक्ति है, भगवान की कृपा से मिला वरदान है। आप साधारण मनुष्य नहीं हैं। चूँकि आपके पास यह शक्ति है और भगवान का अवतार हो चुका है, इसलिए आपको सनातन धर्म की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए और मलिका का संदेश फैलाना चाहिए। फल देने वाला वृक्ष व्यर्थ है यदि वह फल समाज के हित में काम न आए। आप जैसे लोग जो पृथ्वी पर आए हैं, उन्हें आगे बढ़कर धर्म की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए और भगवान के कार्य में सहयोग देना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:44 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 770 आपने कहा कि आने वाला समय बहुत बुरा होगा। हम शांति और प्रेम का अभ्यास करने का प्रयास कर रहे हैं, पर उस आंतरिक शांति का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। हम शांति का अनुभव कैसे करें?

उत्तर: मनुष्य को सच्ची शांति तभी मिलती है जब उसकी अंतरात्मा परमात्मा से जुड़कर उसमें लीन हो जाती है। जब तक हम इस भौतिक शरीर से आसक्त रहते हैं और सांसारिक परिस्थितियों तथा समस्याओं को उससे जोड़ते रहते हैं, तब तक न शरीर को शांति मिलेगी, न आत्मा को। सत्संग में भाग लेने, भागवत पढ़ने और मलिका के मार्ग पर चलने से आप धीरे-धीरे सच्चे धर्मानुयायी (सुधर्मा) बन जाएँगे। उस स्थिति में संसार में जो हो रहा है, उसका आप पर प्रभाव नहीं पड़ेगा; आपको हर जगह केवल भगवान ही दिखाई देंगे। वर्तमान ग्रह-स्थितियाँ भक्तों में भी व्याकुलता पैदा कर रही हैं, परंतु यह अधिक समय तक नहीं रहेगा। मेरा सुझाव है कि आप एक-दो महीने तक भागवत की गोपी लीला को बार-बार पढ़ें। इससे शांति और मानसिक स्थिरता आएगी, और आपका मन विभिन्न समस्याओं से विचलित नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:05 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 771 मैं तीन गुणों — सत्त्व, रज और तम — के बारे में पढ़ रहा था। उसमें लिखा था कि ये तीनों ही अहंकार के गुण हैं। इन तीनों गुणों से ऊपर कैसे उठा जा सकता है?

उत्तर: रजोगुण का संबंध अपने परिवार, भविष्य और धन के लिए काम करने से है। तमोगुण का संबंध सांसारिक भोगों से है, जैसे फ़िल्में, शॉपिंग, नशीले पदार्थ और इंद्रिय-सुख की कामनाएँ। रज और तम दोनों ही क्षणिक सुख देते हैं और उसके बाद कष्ट आता है। लेकिन आप जैसे लोग जो धर्म के मार्ग पर हैं, उनके लिए एक समय ऐसा आएगा जब इनमें से कोई भी आपको विचलित नहीं कर पाएगा। भगवान की कृपा से आप हर जगह भगवान को देखेंगे, और कोई भी समस्या आप पर असर नहीं करेगी। कलियुग में इन गुणों का प्रभाव प्रबल है, परंतु जो पवित्र मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए यह प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। माधव का नाम जपिए। एक समय आएगा जब आप हर जगह भगवान के दर्शन करेंगे और शांति प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:20 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 772 महावतार बाबाजी के बारे में कहा जाता है कि वे 2000 से अधिक वर्षों से जीवित हैं। कलियुग में कोई इतने लंबे समय तक कैसे जीवित रह सकता है? यह भी कहा जाता है कि वे पहले भगवान कृष्ण थे। क्या वे भविष्य में भी आएंगे?

उत्तर: सबसे पहले, मैं बाबाजी को प्रणाम करता हूँ। मैं यह कहना चाहता हूँ कि श्रीमद्भागवत सहित 18 पुराणों में मैंने इसका उत्तर कहीं नहीं देखा। दूसरी बात, भगवान कृष्ण अपने ही नाम से जाने जाते हैं, और हमारे शास्त्र स्पष्ट रूप से बताते हैं कि कौन से अवतार आएंगे और कौन से नहीं, जैसे 24 अवतार या 10 मुख्य अवतार। श्रीमद्भागवत में जो लिखा है, वही सत्य है। कोई पूर्वजन्म में कृष्ण थे — ऐसे दावों पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा, क्योंकि यह मेरा अधिकार नहीं है; हम केवल वही प्रचार करते हैं जो शास्त्रों में है। लेकिन इतना अवश्य कहूँगा: सभी महान संत और ऋषि, चाहे वे पृथ्वी पर हों या हिमालय में, कल्कि अवतार से मिलेंगे। वे साधारण मनुष्य शरीर में आएंगे, ठीक वैसे ही जैसे इस सत्संग में बैठे भक्तगण, ताकि धर्म की स्थापना में सहयोग कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 43:53 · 30 दिसम्बर 2021

प्रश्न 773 पिताजी, क्या हम जैसे लोग भविष्य में भगवान से मिल सकते हैं?

उत्तर: भगवान से मिलना कलियुग में ही सबसे सरल है। सत्ययुग में इसके लिए युगों तक तपस्या करनी पड़ती थी। त्रेतायुग में भक्ति और समर्पण के बाद भी यह कठिन था। द्वापर युग में केवल कुछ हज़ार गोपियाँ और गोप ही भगवान को पहचान सके। परंतु कलियुग में केवल नाम भजन, कीर्तन और धर्म के मार्ग पर चलकर ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है। यह बहुत सरल है। इसीलिए ऋषि, संत और देवता भी कलियुग में जन्म लेने की कामना करते हैं, ताकि वे सहज ही भगवान का दर्शन, उनका सान्निध्य और मोक्ष प्राप्त कर सकें। इसलिए मैं जो मार्ग आपको बता रहा हूँ, उस पर चलना आपके लिए अच्छा है। बहुत से लोग पहले से ही भगवान को अपने सपनों में देख रहे हैं, चेतावनियाँ पा रहे हैं और उन्हें दृश्य दिखाए जा रहे हैं। यही तो चाहा गया था।

► यह उत्तर सुनें · 46:33 · 30 दिसम्बर 2021

सत्र 38 · प्रश्न 774–779

L36 वैष्णो देवी मंदिर से अशुभ की सूचना LIVE

दिनांक: 2 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 774 मैंने आपका एक वीडियो देखा जिसमें आपने कहा था कि कुछ समय बाद हमारी मुद्रा, यानी नोट, चलन से बाहर हो जाएँगे। ऐसा समय कब आएगा, पंडित जी? कृपया इस पर अपने विचार बताइए।

उत्तर: आपने जो कहा है, वह निश्चित है। आने वाले समय में यह स्थिति पूरे ब्रह्मांड में आएगी, केवल भारत में नहीं। जब कल्कि अवतार प्रकट होंगे, उनके युग में कुछ समय बीत जाने के बाद, ऐसी स्थिति पूरे विश्व में फैल जाएगी। आर्थिक लेन-देन, आर्थिक मूल्य, व्यर्थ हो जाएगा। उस समय आज के समाज में धन का जो मूल्य है, वह घट जाएगा। एक समय ऐसा आएगा जब धन के माध्यम से होने वाला व्यापार भी रुक जाएगा। लेकिन उसमें बहुत समय है; यह स्थिति विश्वयुद्ध के अंत की ओर उत्पन्न होगी।

► यह उत्तर सुनें · 02:19 · 2 जनवरी 2022

प्रश्न 775 मैं आपको अपना स्वप्न बताना भूल गया। आप कह रहे थे कि धर्मपरायण लोगों को स्वप्न आते हैं। मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें एक वृक्ष था, और उसके पीछे कुछ कपड़े में लिपटा हुआ था... और एक पेड़ के नीचे से... मैं समझ नहीं पाया। कृपया इस बारे में थोड़ा बताइए, क्योंकि यह ओडिशा में है?

उत्तर: और जहाँ पंच पांडव हैं, यह वही है। उसके बाद आपको दिव्य दर्शन प्राप्त होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 04:52 · 2 जनवरी 2022

प्रश्न 776 मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था। जैसा कि आपने सुना होगा, कुछ दिन पहले हरिद्वार में एक धर्म संसद हुई थी, जिसमें यति नरसिंहानंद सरस्वती नाम के एक स्वामी जी थे। वे इस्लाम के विरुद्ध एक योद्धा हैं और उन्होंने इस्लाम तथा जिहादियों के विरुद्ध बहुत कुछ कहा है। उनकी दृष्टि यह है कि इस्लाम की गंदगी इस धरती से समाप्त होनी चाहिए। इस संबंध में मालिका क्या कहती है? क्या यह समाप्त होगा? वे यह भी मानते हैं कि 2029 तक प्रधानमंत्री एक मुसलमान होगा और इस्लामी शासन आ जाएगा। तो मेरा प्रश्न यह है कि भक्तों और इन असुरों, इस्लामी जिहादियों के बीच जो युद्ध होने वाला है, क्या वह होगा या नहीं? क्या होगा? कृपया समाधान बताइए।

उत्तर: भगवान श्री नारायण सनातन धर्म की स्थापना करेंगे। पूरे ब्रह्मांड में केवल सनातन धर्म ही रहेगा। मैं यह शुरू से ही कहता आ रहा हूँ, और मालिका में भी लिखा है कि भगवान विष्णु पूरे ब्रह्मांड में सनातन धर्म की स्थापना करेंगे। उस समय जो लोग बचेंगे, वे पवित्र आत्माएँ होंगी; केवल शुद्ध हृदय वाले ही बचेंगे। सभी सनातनी बन जाएँगे और सनातन धर्म के सिद्धांतों का पालन करेंगे। एक ही ध्वज होगा — सत्य, शांति, करुणा और विश्व-मैत्री का पंचरंगा ध्वज। यह पंचरंगा ध्वज, जो द्वारकाधीश भगवान कृष्ण का था, ब्रह्मांड का ध्वज होगा। पूरे ब्रह्मांड में केवल सनातन धर्म ही रहेगा। रही बात युद्ध की, तो उत्तर यह है: भगवान कल्कि की नारायणी सेना 16 मंडलों में बनेगी। वही नारायणी सेना, जिसके द्वारा भगवान हर युग में धर्म की स्थापना करते हैं, फिर से बनेगी। नारायणी सेना के पास मंत्र शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति का तेज होगा। जो लोग नारायणी सेना के विरुद्ध लड़ेंगे, वे केवल किसी एक धर्म या संप्रदाय के नहीं होंगे। युद्ध पापियों और धर्मात्माओं के बीच होगा। उस युद्ध में भक्तों के पास दैवी शक्ति होगी, और उसी दैवी शक्ति से वे संसार के पापियों को परास्त करेंगे। कोई भी उनके सामने टिक नहीं पाएगा। और भक्त मरेंगे

नहीं। वे लड़ेंगे, पर मरेंगे नहीं, भले ही विनाश हो रहा हो। ऐसा समय आएगा, और यह सब भगवान की शक्ति के आशीर्वाद से होगा। ब्रह्मांड में, भारत में जितने भी पुण्यात्मा और संत हैं, वे सब संभवतः भगवान कल्कि की शरण में आएंगे। और उनमें से भगवान स्वयं चुन-चुनकर नारायणी सेना बनाएंगे, और वे पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 05:56 · 2 जनवरी 2022

प्रश्न 777 मेरा एक प्रश्न है। विश्वयुद्ध को लेकर 2024 में क्या होने वाला है? यह 2024 में होगा या 2025 में?

उत्तर: शास्त्रों में लिखा है कि जब शनि मीन राशि में प्रवेश कर उससे युति करेगा — जैसे यह नया वर्ष शनिवार को आरंभ हुआ — जब शनि की मीन राशि में यह युति होगी, तब उथल-पुथल होगी। उस समय 'नवग्रह कूट' (एक विशेष ग्रह-योग) बनेगा, और पूरे ब्रह्मांड की स्थिति वैसी ही होगी जैसी महाभारत युद्ध से ठीक पहले थी। उस समय पाँच प्राकृतिक तत्वों से भारी विनाश होगा। परंतु मालिका में एक बात यह भी लिखी है: जब तक भगवान की इच्छा हो, वे युद्ध को रोक भी सकते हैं और भक्तों की रक्षा भी कर सकते हैं। और जब तक 16 मंडल नहीं बन जाते और भक्त सुरक्षित नहीं हो जाते, तब तक भगवान युद्ध का अपना निर्णय रोके रखेंगे, क्योंकि यह भगवान पर निर्भर है, हम पर नहीं। फिर भी मालिका यह कहती है कि शनि की मीन राशि में युति के साथ पूरे ब्रह्मांड में निराशा और युद्ध होगा, और वह परमाणु युद्ध होगा। यह भी लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 11:01 · 2 जनवरी 2022

प्रश्न 778 भगवान के चरणों में अनंत प्रणाम, पंडित जी। मैंने एक बार स्वप्न में देखा कि मैं एक नाव में जा रही हूँ। रास्ते के दोनों ओर असंख्य कमल के फूल खिले हुए थे। चारों ओर... फिर एक बहुत बड़ा वृक्ष है, और उसके नीचे... और हमें भगवान के लिए दो शुभ वस्तुएँ दी गईं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: ठीक है, माताजी। आपने जो जल प्रलय और भक्तों के बचने के बारे में पूछा, हाँ, यह मालिका में लिखा है। जहाँ भक्त होंगे, वहाँ चारों ओर जल होगा, परंतु जिस स्थान पर भक्त होंगे वह स्थिर रहेगा और जल उन तक नहीं पहुँचेगा। आपने स्वप्न में जो देखा — कि चारों ओर जल है पर वह आपको छूता नहीं, आप बीच में खड़ी हैं और चारों ओर जल है — ऐसा समय आएगा। और जहाँ भगवान के भक्त रहते हैं, उन पर जल या जल प्रलय का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। दूसरी बात, जो फल दिए जा रहे थे, वे मोक्ष और भगवान की प्राप्ति के मार्ग का प्रतीक हैं। यह ऐसा था मानो वे आपको प्रसाद दे रहे हों और साथ ही यह चेतावनी भी दे रहे हों कि मोक्ष का ऐसा समय आ रहा है, और यही भगवान का मार्ग है। तो ऐसा समय आएगा, और आपको उसका पूर्वाभास दर्शन हुआ है। आप सब भगवान की शरण में रहिए और मालिका के मार्ग पर चलिए। भगवान अवश्य आपकी रक्षा करेंगे। जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:56 · 2 जनवरी 2022

प्रश्न 779 मेरा प्रश्न यह है कि जैसे हम देख रहे हैं कि गौ माता को बचाने के लिए एक कानून लागू किया जा रहा है, क्या भविष्य में हर जीव को बचाने के लिए कोई कानून बनेगा?

उत्तर: देखिए माताजी, जब सनातन धर्म की स्थापना होगी, तब सभी जीवों की रक्षा होगी। अभी भी पशुओं को मारने के विरुद्ध सरकारी कानून हैं; यदि कोई ऐसा करता है तो दंड का प्रावधान है। लेकिन गौ हत्या के विषय में हमारा संविधान क्या कहता है, यह आप जानते हैं। एक समय आएगा जब सभी जीवों की रक्षा होगी। और भगवान की पवित्र शक्ति से सभी मनुष्य जीव हत्या करना बंद कर देंगे। हर ओर धर्म होगा, और सभी सरकारी कानून इसी को दर्शाएँगे। यह स्थिति धर्म की स्थापना के अंतिम चरण की ओर आएगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:06 · 2 जनवरी 2022

सत्र 39 · प्रश्न 780–818

L37 मृत्यु से विजय का रास्ता क्या है-- LIVE

दिनांक: 6 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 780 मैं असम से नवज्योति दास हूँ। परसों सुबह 5 बजे मुझे एक स्वप्न आया। मैंने इतना भयंकर तूफ़ान देखा कि केवल वही इमारत खड़ी रह गई जिसमें हमारा परिवार था; चारों ओर केवल पानी ही पानी था। तूफ़ान इतना तेज़ था कि हमारी इमारत हिल रही थी। उसके बाद मैंने देखा कि जहाँ पहले धान के खेत थे, वहाँ कुछ भी नहीं बचा, एक भी पेड़ खड़ा नहीं था। तूफ़ान के बाद ऐसा लगा मानो हम समुद्र के बीच में हैं; किसी के बचने का कोई रास्ता नहीं था, बस पानी ही पानी। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: ध्यान से सुनिए, यह सभी भक्तों के लिए है। यह मालिका में लिखा है। उसमें कहा गया है कि कुछ स्थानों पर सात दिनों तक वर्षा होगी। वर्षा इतनी भारी होगी, मानो हाथी की सूंड से पानी बह रहा हो। हवाएँ भी बहुत तेज़ होंगी, और लोगों को चारों ओर केवल जल और वायु ही दिखाई देगी। आप पंचभूत का प्रकोप देखेंगे। आने वाले समय में यह होना निश्चित है। ऐसी प्रलय होगी, ऐसी वर्षा होगी और ऐसी प्रचंड हवाएँ चलेंगी कि बड़ी-बड़ी इमारतें भी आकाश में उड़ जाएँगी। यह स्थिति केवल भारत तक सीमित नहीं रहेगी; विश्व के हर देश को इसका सामना करना पड़ेगा, असम सहित। परंतु जो भगवान का नाम जपते हैं और धर्म के मार्ग पर चलते हैं, उनके घर सुरक्षित रहेंगे, ठीक वैसे ही जैसे स्वप्न में आपका घर था। दूसरे घर, चाहे कितने भी मज़बूत बने हों, नहीं बचेंगे। केवल वही घर बचेंगे जो धर्म से सुरक्षित हैं, और उन्हें भगवान बचाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 09:21 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 781 श्री माधव। मैं यमुनापुरम गाँव से हूँ। मेरा भी ऐसा ही एक प्रश्न है। आज सुबह 6 बजे मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मैं अपने घर के भीतर था, और बाहर सड़क पर मुझे ज़ॉम्बी दिखाई दिए। मैं फ़िल्में वग़ैरह नहीं देखता, इसलिए यह मेरे अवचेतन मन से नहीं आया। जो मैंने देखा वह बिल्कुल स्पष्ट था। बाहर ज़ॉम्बी जैसे लग रहे थे। यह किसी वायरस जैसा है; अगर किसी को हो जाए, तो वह दूसरों को संक्रमित कर देता है, और यह फैलता जाता है। वे आधे जीवित, आधे मृत जैसे हैं। यह कुछ भयावह था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बिल्कुल सही है। आप सब जो स्वप्न देख रहे हैं, वे सत्य हैं। भगवान अपने भक्तों को सूक्ष्म रूप से ये बातें दिखाते हैं ताकि उन्हें आने वाले समय की चेतावनी मिल सके। एक समय आ रहा है जब ऐसी बीमारी फैलेगी कि हर घर और हर गाँव में शव चार, पाँच, दस दिनों तक पड़े रहेंगे। लोग अभी इसे नहीं समझते। 2019 से धर्म का प्रभाव उतना नहीं बढ़ा जितना बढ़ना चाहिए था। एक समय आएगा जब लोगों के पाप और पुण्य का न्याय होगा। लोग अपने घरों में सुरक्षित रहेंगे, किंतु पापी अपने ही मार्ग पर मरेंगे, और उन्हें उचित अंतिम संस्कार भी नहीं मिलेगा। वर्तमान बीमारी को देखिए: किसी के पास कितना भी धन, सत्ता या सामर्थ्य क्यों न हो, मृत्यु के समय उसे पानी तक नहीं मिलता। कोई उन्हें छूता नहीं, उनका अंतिम संस्कार ठीक से नहीं होता, उनकी अस्थियाँ विसर्जित नहीं होतीं, और न कोई कर्मकांड या 'पिंडदान' होता है। लोग सब कुछ छोड़कर इस संसार से चले जाते हैं, फिर भी वे धर्म की ओर नहीं मुड़ते। वे सोचते हैं, 'उनके साथ हुआ, हमारे साथ क्या होगा?' यही मानव समाज कहता है। जब तक समाज आत्मचिंतन नहीं करता, यह उसी का दोष है। देखिए समाज में क्या हो रहा है और अपने अंतर्मन से उस पर विचार कीजिए कि आपको क्या करना है। समाज के इस मोह में पिता और पुत्र, माता और संतान, सभी एक-दूसरे से दूर रहते हैं। मृतक को कोई नहीं छूता। इस प्रकार की अपमृत्यु, जो आपने स्वप्न में देखी, भविष्य में होगी। अनेक बीमारियाँ आएँगी, और लोग कष्ट भोगेंगे, किंतु धर्म की ध्वजा सदैव ऊँची लहराएगी।

► यह उत्तर सुनें · 12:26 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 782 पंडित जी, मैं पहले देखे गए दो और स्वप्न बताना चाहता था। जिस दिन मैंने भागवत पढ़ना आरंभ किया, उस रात मैंने महाप्रभु को उसी रूप में देखा जिसमें हम उन्हें प्रायः देखते हैं, घोड़े पर सवार। मैंने आकाश में घोड़े पर महाप्रभु का विराट रूप देखा। दूसरे स्वप्न में, मैं अपने घर से बाहर निकला और एक मंदिर देखा जिसमें चैनल गेट था। भीतर बहुत से लोग मंदिर में भगवान की पूजा कर रहे थे, और ज़ोरों से कीर्तन चल रहा था।

उत्तर: पंजाब और हरियाणा में भगवान कल्कि के अनेक भक्त एकत्र होंगे। धर्म की स्थापना के समय भगवान कल्कि अपने घोड़े पर प्रकट होंगे और अपने भक्तों से मिलेंगे। उससे पहले वे आप जैसे लोगों को 'दर्शन' देते हैं, क्योंकि आप धर्म के मार्ग पर हैं और मालिका का अनुसरण करते हैं। भगवान आपको दिखा रहे हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 16:01 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 783 प्रभु, क्या मुझे आपके 'दर्शन' हो पाएँगे या नहीं?

उत्तर: देखिए, माता जी। मैंने सभी भक्तों को यह पहले भी बताया है। सबसे पहले, आपको धर्म की धारा में प्रवेश करना होगा। इसमें श्रीमद्भागवत का पाठ, शाकाहारी बनना, और त्रिसंध्या (दिन में तीन बार प्रार्थना) करना सम्मिलित है। यह सब करने से, और मालिका का अनुसरण करते हुए सनातन धर्म के लिए कार्य करने से, आपको निश्चय ही भगवान के दर्शन प्राप्त होंगे। भगवान के दर्शन पाने के लिए आपको इस मार्ग को थामे रखना होगा, और आपको दर्शन प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 17:11 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 784 मैं नेपाल से हूँ। मैं भी एक स्वप्न बताना चाहता था। एक रात मैंने स्वप्न देखा कि मैं खेत में भैंसें चरा रहा था, तभी प्रभु और माता प्रकट हुए। मेरी एक भैंस तालाब में गिर गई, और मैं भय से काँपने लगा। माता ने मुझसे कहा कि शांत रहो, कुछ नहीं होगा। फिर पानी से तलवार जैसी कोई वस्तु निकली, उन्होंने उसे मेरे हाथ में रखा, और वे चले गए। ठीक अगले ही दिन मैंने एक और स्वप्न देखा जिसमें भीषण तूफ़ान आया, इतना प्रचंड कि न कोई पेड़ बचा, न कोई घर। सबके घर बह रहे थे। किंतु मैं अपनी दादी के साथ था, ज़ोर-ज़ोर से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो नारायण' का जाप कर रहा था। हमारा घर हिल रहा था, पर उसे कोई क्षति नहीं हुई। केवल मैं और मेरी दादी बचे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि भगवान ने आपकी रक्षा के लिए आपको सूक्ष्म रूप में यह 'संजीवनी' दी है। आप अपने जीवन के मार्ग में जो जाप और कीर्तन कर रहे थे, उसे सदैव थामे रखिए। भगवान ने उस रूप में आपको 'दर्शन' और आशीर्वाद दिया। भगवान ऐसे दर्शन और मार्गदर्शन उन्हें देते हैं जो आने वाले सत्ययुग के 'बीज' बनेंगे। अब आपका कर्तव्य है नेपाल में सनातन धर्म के लिए कार्य करना। सावधानी से भक्तों का चयन कीजिए और उनके बीच मालिका की शिक्षाओं का प्रसार कीजिए। समस्त मानव समाज के कल्याण के लिए भगवान के उस मार्ग का विस्तार कीजिए जिसकी हम चर्चा करते हैं। यही आने वाले समय का कार्य है।

► यह उत्तर सुनें · 18:01 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 785 जहाँ मैं काम करता हूँ, वहाँ मेरे सहकर्मियों को कोरोना हो गया है। मुझे यह या कोई अन्य रोग न हो, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: पहला, सनातन धर्म समूह से जुड़िए। दूसरा, प्रतिदिन श्रीमद्भागवत (गोरखपुर गीता प्रेस वाली) का एक अध्याय पढ़िए, जब भी अवसर मिले। तीसरा, दुर्गा माधव स्तुति, दश अवतारों के नाम, और सोलह नामों का जाप कीजिए। विश्व सनातन धर्म समूह के भक्त यही करते हैं। ऐसा करने से भक्त आने वाली समस्याओं से बच जाएँगे। उदाहरण के लिए, ओडिशा में एक भक्त पॉज़िटिव पाया गया था, किंतु इस मार्ग का पालन करने और जाप करने के बाद, दिल्ली में वह नेगेटिव आया। तो, जो मैं आपसे कह रहा हूँ उसका पालन कीजिए, और साथ ही सरकार के नियमों का भी पालन कीजिए। यह मेरा दृढ़ विश्वास और अनुभव है कि जो लोग मालिका और सुधर्म महासंघ के मार्ग पर रहेंगे, वे सुरक्षित रहेंगे, भले ही उनके आसपास के सब लोग बीमार पड़ जाएँ। आपको यह संकल्प भी लेना होगा कि आप कोई पाप या अन्याय नहीं करेंगे, काम और वासना से मुक्त रहेंगे, और भगवान श्री सत्यानंद माधव के नाम का जाप करेंगे। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपको परिणाम दिखाई देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:17 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 786 पंडित जी, मैं गोरखपुर से श्रीमद्भागवत कैसे मँगवा सकता हूँ?

उत्तर: यह गोरखपुर प्रेस से उपलब्ध है। आप इसे किसी भी राम मंदिर में, बल्कि किसी भी मंदिर में पा सकते हैं। मैं विशेष रूप से गीता प्रेस की श्रीमद्भागवत की सलाह देता हूँ क्योंकि उसमें संपूर्ण और प्रामाणिक पाठ है।

► यह उत्तर सुनें · 23:07 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 787 कहा जाता है कि भागवत कथा सात दिनों में पूरी करनी चाहिए, किंतु सात दिनों में पूरी करना कठिन है। क्या यह आवश्यक है?

उत्तर: मैं यह नहीं कह रहा कि आपको सात दिनों में पूरी करनी ही है। मैं कह रहा हूँ कि प्रतिदिन एक अध्याय पढ़िए। सात दिन का नियम सबके लिए आवश्यक नहीं है। वह राजा परीक्षित के लिए था, जो अपने अंतिम क्षणों में थे और जिनके पास जीने के लिए केवल सात दिन शेष थे। उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

► यह उत्तर सुनें · 24:32 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 788 मेरी 24 वर्षीय बेटी मुझे पूजा और जाप करते देखती है। वह मुझसे पूछती है, 'पापा जी, भगवान कल्कि का क्या अपडेट है?' मैं अपने बच्चों को क्या बताऊँ?

उत्तर: सदैव पवित्र रहिए। अपनी बेटी को भी धर्म के इस मार्ग में सम्मिलित कीजिए। उसे श्रीमद्भागवत सुनवाइए और जिस मार्ग का मैं वर्णन करता हूँ उसके बारे में बताइए। उसे भी त्रिसंध्या करनी चाहिए और भगवान के नाम का जाप करना चाहिए। इस प्रकार वह भी सुरक्षित रह सकती है। प्रत्येक आत्मा और प्रत्येक शरीर का अपना अलग कर्म होता है। जो अच्छे कर्म करेंगे, उन्हें अच्छे फल मिलेंगे। हम स्वयं को एक परिवार के रूप में देखते हैं, किंतु पृथ्वी और ईश्वर की सृष्टि की दृष्टि से, प्रत्येक आत्मा को अपने स्वयं के धर्म-कर्तव्य निभाने होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:01 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 789 मेरी बेटी दो महीने के लिए जयपुर गई थी। जिस दिन वह पहुँची, उसे देवी के दर्शन हुए। हमारे यहाँ एक बड़ा मंदिर-स्थान है जिसमें महामाई, गणपति जी, शिव जी, पार्वती माँ और राधा कृष्ण जी की मूर्तियाँ हैं। उसके दर्शन में, बड़ी, प्रकाशमान मूर्तियाँ उलटी हो गई थीं। माता की मूर्ति उलटी थी। और अभी पिछले शनिवार को मेरी बेटी कह रही थी, 'मम्मा, मम्मा, देवी पानी से बाहर आ गईं!' इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, माता जी, इसका अर्थ है कि महामाया शक्ति संहार का कार्य करेंगी। देवी की मूर्ति का उलट जाना एक संकेत है। यह मेरे अपने घर में भी हुआ है, दो बार। दो वर्ष पहले, जिन माता महामाया और माता गिरिजा देवी की मैं पूजा करता हूँ, उनका फ़ोटो फ्रेम रात में अपने आप पूरी तरह उलट गया था। इसका अर्थ है कि देवी-देवता अपने दिव्य लोकों और मंदिरों को छोड़कर अब संहार के कार्य में लगे हुए हैं। भक्तों को ये संकेत मिलते हैं। आपको यह संकेत मिला है, और यह आप पर भगवान की कृपा है। यह मेरे साथ व्यक्तिगत रूप से हुआ। जब मैं अपने मंदिर में पूजा करने गया, तब मैंने यह देखा। तो, धर्म के मार्ग पर बने रहिए और अपना धर्म-कार्य जारी रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 26:02 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 790 पंडित जी, क्या मालिका में 'पंचम जगद्गुरु' (पाँचवें विश्वगुरु) के बारे में कुछ लिखा है, जैसे आदि शंकराचार्य प्रथम थे?

उत्तर: देखिए, मालिका कहती है कि पृथ्वी पर जितने भी सच्चे गुरु (सद्गुरु) आए हैं, वे सभी भगवान कल्कि के आगमन के साथ अपने मानव रूपों में धर्म के प्रसार का कार्य भी करेंगे। वे सभी अंततः भगवान से मिलेंगे और साथ मिलकर धर्म-स्थापना के कार्य को आगे बढ़ाएँगे। केवल इतना ही लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 28:55 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 791 मेरी आयु 36 वर्ष है और मैंने विवाह नहीं किया है। क्या धर्म के मार्ग पर चलने के लिए विवाह करना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, वशिष्ठ जैसे महान ऋषि और अन्य अनेक सिद्ध ऋषि विवाहित थे। ब्रह्मा जी विवाहित थे। योगियों में सर्वश्रेष्ठ महादेव भी विवाहित थे। कलियुग में गृहस्थ जीवन (गृहस्थ धर्म) को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। इसका कारण यह है कि इस युग में भक्त भगवान के नाम-जप से भगवान को प्राप्त करेंगे, और गृहस्थ व्यक्ति ऐसा करते हुए अपने सभी कर्तव्य निभा सकता है। इसके अतिरिक्त, कलियुग में एक महत्वपूर्ण कर्म है मृत्यु के बाद 'पिंडदान' (पूर्वजों को अर्पण), जिसके लिए परिवार आवश्यक है। इसलिए विवाह करना आवश्यक है। जो वृक्ष फल न दे, उसका क्या मूल्य? जब पृथ्वी पर एक पवित्र आत्मा जन्म लेती है, तो धर्म का प्रभाव बढ़ता है। आप जैसे पुण्यात्मा लोग भगवान की उपासना करते हैं; स्वयं भगवान कृष्ण विवाहित थे, गोपाल भी विवाहित थे। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। फिर भी, आपने विवाह न करने का चुनाव किया है, और मैं आपके व्यक्तिगत निर्णय पर कोई टिप्पणी नहीं करूँगा। परंतु शास्त्र कहते हैं कि परिवार के साथ धर्मपूर्वक कर्तव्यों का पालन करना कलियुग में सबसे सरल मार्ग है, जिससे गृहस्थ जीवन सबसे बड़ा धर्म बन जाता है। यद्यपि ऐसा लिखा है, फिर भी आप ब्रह्मचारी बने रहे हैं, और इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ और आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। यदि आप अब विवाह करना चाहें, तो अब भी कर सकते हैं; कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 30:11 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 792 मैं भारत के नेताओं, नरेंद्र मोदी और योगी जी के विषय में जानना चाहता हूँ। क्या योगी जी भविष्य में प्रधानमंत्री बनेंगे? भारत के सभी नेताओं में उनका कार्य सबसे प्रमुख प्रतीत होता है। उनका भविष्य कैसा है?

उत्तर: देखिए, मैं आपको बताता हूँ। वे उसी पद पर बने रहेंगे जिस पर वे इस समय हैं। यह पहली बात है। दूसरी बात, आपके प्रश्न के विषय में, इस पर अधिक मत सोचिए। मैंने इस विषय पर अपने विचार कई वर्ष पहले व्यक्त कर दिए थे। वे दोनों धर्म की स्थापना में सहयोग के लिए कलियुग के अंत तक अपने-अपने पदों पर बने रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:08 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 793 इन दोनों में से सर्वश्रेष्ठ कौन होगा?

उत्तर: जो इस समय सर्वोच्च पद पर हैं, वे वैसे ही रहेंगे, और दूसरे उनसे नीचे रहेंगे। क्रम इसी प्रकार रहेगा। आपको ऐसा लग सकता है कि एक बेहतर हैं, परंतु हमें प्रतीक्षा करनी होगी और देखना होगा कि समय क्या प्रकट करता है। यह मेरे हाथ में नहीं है; यह उनके कर्मों से निर्धारित होता है, और उनके कर्म बदले नहीं जा सकते। मैं मानता हूँ कि वे अच्छा कार्य करते हैं, और इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:04 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 794 मोदी जी और योगी जी की चर्चा के संबंध में, कई चैनल कह रहे हैं कि मोदी जी 2024 के चुनाव तक प्रधानमंत्री रहेंगे, उसके बाद योगी जी कार्यभार संभालेंगे। क्या संवैधानिक व्यवस्था बदलेगी? क्या मोदी जी अंतिम प्रधानमंत्री हैं?

उत्तर: नहीं, नहीं। वे ही अंतिम हैं, और वे ही अंतिम रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:18 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 795 मैं गायत्री परिवार से जुड़ा हुआ हूँ। हमारा भविष्य क्या होगा?

उत्तर: हमारी हिंदू परंपरा में अनेक संप्रदाय हैं। परंतु हमारे सनातन धर्म का सर्वप्रमुख मंत्र गायत्री मंत्र है, जो इसके सभी अनुयायियों के लिए आवश्यक है। गायत्री संगठन से जुड़े लोग इसका प्रतिदिन जप करते हैं, और ब्राह्मणों सहित कई अन्य लोग भी करते हैं। आप श्रीराम शर्मा द्वारा स्थापित संगठन का हिस्सा हैं, जिसका अर्थ है कि आप पहले से ही एक धर्ममय और पवित्र मार्ग पर हैं। आप अच्छे कर्म कर रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। परंतु जब युग का अंत आएगा, तब सभी को मालिका के मार्ग को अपनाना होगा। इस मार्ग में श्रीमद्भागवत का पाठ, सोलह नामों का जप, दशावतार और दुर्गा माधव स्तुति जैसी साधनाएँ सम्मिलित हैं। जो इस धर्म की धारा में बने रहेंगे, वे कलियुग की आपदाओं से बच जाएँगे और उनकी रक्षा होगी। बस इतना ही।

► यह उत्तर सुनें · 35:33 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 796 मैं गीता प्रेस की भागवत के स्थान पर 'सुख सागर' पढ़ता हूँ क्योंकि मुझे उसमें अधिक आनंद मिलता है। क्या यह ठीक है?

उत्तर: ठीक है, जैसी आपकी इच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 37:27 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 797 और संस्कृत के कर्मकांड प्रतिदिन करने की आवश्यकता नहीं है, है ना?

उत्तर: कलियुग में सबसे शक्तिशाली साधना 'नाम कीर्तन' (भगवान के नाम का जप) है। सत्ययुग में ध्यान था; त्रेता युग में यज्ञ था; और द्वापर युग में मंदिर में पूजा थी। परंतु इस युग में केवल नाम ही मुक्ति देगा। आप स्वयं देखेंगे कि पूरे-पूरे गाँव रोग से ग्रस्त होंगे, परंतु जो हमारे धर्म के मार्ग पर, सच्ची पवित्रता और नियमों के पालन के साथ चल रहे हैं, उन्हें तनिक भी हानि नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:41 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 798 यूट्यूब पर एक व्यक्ति हैं जो दावा करते हैं कि सरकार का टीकाकरण लेना एक षड्यंत्र है। वे कहते हैं कि जो कोई भी टीका लगवाएगा, वह अपने अच्छे कर्मों के बावजूद स्वतः ही भगवान कल्कि के विरोधी पक्ष में होगा। इस पर आपका क्या विचार है?

उत्तर: देखिए, हमारा देश एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है, और यह ब्रह्मांड का सर्वश्रेष्ठ देश है। प्रत्येक नागरिक के लिए सरकार के नियमों और कानूनों का पूर्ण पालन करना आवश्यक है। मैं जिस आध्यात्मिक मार्ग की बात करता हूँ, वह उन भक्तों के लिए है जो सनातन धर्म से जुड़ते हैं, सबके लिए नहीं। यह उनके लिए है जो भक्त बनेंगे और सच्चे सनातन धर्म के लिए कार्य करेंगे। परंतु सरकार के कानूनों का पालन करना हम सबका कर्तव्य है। भारत के एक अनुशासित नागरिक के रूप में, आपको देश के कानून का पालन करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:38 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 799 स्त्री होने के नाते, हम अपने अशुद्धि के दिनों (मासिक धर्म) में भागवत कैसे पढ़ सकते हैं? क्या इसकी अनुमति है? अब पीडीएफ उपलब्ध होने से इस बात को लेकर बहुत भ्रम है कि हम क्या कर सकते हैं और क्या नहीं।

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार, आपको अशुद्धि के दिनों में पवित्र ग्रंथ नहीं पढ़ना चाहिए। उस समय आपको अपने पूजा कक्ष में प्रवेश नहीं करना चाहिए। परंतु आप अपने शयनकक्ष या किसी अन्य अलग स्थान पर बैठकर त्रिसंध्या कर सकती हैं और भगवान के नाम का जप कर सकती हैं। जब शुद्धि का समय लौट आए, तब आप पुनः भागवत पढ़ सकती हैं। तकनीकी रूप से आप पीडीएफ पढ़ सकती हैं, परंतु वह भौतिक ग्रंथ से जुड़ने के समान नहीं है। उस समय केवल नाम-जप पर ध्यान देना ही सर्वोत्तम है।

► यह उत्तर सुनें · 41:25 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 800 पंडित जी, पांडव, कौरव, दुर्योधन और कर्ण इस युग में कहाँ जन्मे हैं? और इस समय उनकी आयु क्या होगी?

उत्तर: हमारे शास्त्रों के अनुसार, द्वापर युग का युद्ध अधूरा रह गया था। इसी कारण वे सभी—पाँचों पांडव और सातों चिरंजीवी योद्धा—मनुष्य शरीर में पुनः पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। कुछ भगवान कल्कि से मिल चुके हैं, कुछ नहीं मिले हैं, परंतु अंततः वे सब उनसे मिलेंगे। उन्होंने साधारण मनुष्यों के रूप में जन्म लिया है। सुधर्मा सभा (धर्म की महान सभा) में भगवान उन्हें उनकी दिव्य शक्तियाँ प्रदान करेंगे और उनके दिव्य अस्त्र-शस्त्र उन्हें पुनः प्राप्त होंगे। वे अब काफी आयु के हो चुके हैं और सुरक्षित रह रहे हैं। आने वाले समय में वे शस्त्र उठाएँगे और भारत के लिए युद्ध करेंगे। यह सब मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 43:57 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 801 क्या कोई ऐसा मालिका ग्रंथ है जिसमें सभी भक्तों के नाम हैं? क्या उसमें हमारे नाम भी होंगे? यदि नहीं, तो क्या इस मार्ग पर चलकर भी हमें मुक्ति मिल सकती है?

उत्तर: देखिए, भक्त एक-दो लाख नहीं, बल्कि चार लाख हैं। मालिका का जो ग्रंथ भक्तों के नाम रखता है, उसे 'पद्मकल्प' कहा जाता है। यह ग्रंथ इस समय गिरिजा क्षेत्र में गुप्त है। इसे स्वयं भगवान सुधर्मा सभा में, ब्रह्मा देव और महादेव की उपस्थिति में प्रकट करेंगे। तब ब्रह्मा देव उस ग्रंथ से पढ़कर सभी भक्तों के नाम घोषित करेंगे। इसलिए आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। यह सांकेतिक चिह्न समझ लीजिए: जो कोई भी मालिका का अनुसरण करता है, जो श्रद्धा से इसे सुनता है, और जो भगवान तथा सनातन धर्म के उस मार्ग पर चलता है जिसकी हम बात करते हैं, वही भक्त है। इससे अधिक कुछ नहीं है। यह तथ्य ही कि आप मालिका देख और सुन रहे हैं, इस बात का प्रमाण है कि आप भक्त हैं। यदि आप नहीं होते, तो मालिका के प्रति यह प्रेम आपको क्यों होता?

► यह उत्तर सुनें · 45:18 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 802 क्या हम भागवत को शाम को, 'संध्या काल' में पढ़ सकते हैं?

उत्तर: हाँ, माता जी। शाम को पढ़ना बहुत अच्छा है। आपको पढ़ना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 47:15 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 803 पंडित जी, मुंबई का क्या होगा? यहाँ कोरोना के मामले काफी बढ़ रहे हैं। भविष्य मालिका इसके भविष्य के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: इस धरती पर जो लोग धर्म के मार्ग पर रहेंगे, वे सुरक्षित रहेंगे। जो सत्य के मार्ग पर चलेंगे, उन्हें रोग से राहत मिलेगी और शांति भी प्राप्त होगी। और जो मनमानी करते हैं, उन्हें उसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। मैं इससे अधिक नहीं कहूँगा, क्योंकि इससे लोगों में भय फैलेगा। मैं क्यों कहूँ?

► यह उत्तर सुनें · 47:29 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 804 क्या जल प्रलय भी होगा?

उत्तर: हाँ, प्रलय होगा, बहुत बड़ा। यह तो धर्म की स्थापना का केवल पहला चरण है। यह प्रक्रिया सात चरणों में पूरी होगी, और उस अवधि में कभी भी जल प्रलय हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 47:57 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 805 हम आपसे कब मिल पाएंगे और आपके 'दर्शन' कब कर पाएंगे?

उत्तर: मैं आपको 'दर्शन' देना चाहता हूँ, पर यह तभी होगा जब भगवान की इच्छा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 48:24 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 806 मुझे कुछ बच्चों का सपना आया, और फिर उसी रात किसी के नाम के बारे में एक और सपना आया। ऐसा लगा कि यह भगवान के भाइयों के बारे में था। आप इस पर क्या कह सकते हैं?

उत्तर: आपने जो देखा उस पर मैं विशेष रूप से कुछ नहीं कह सकता, परंतु मैं आपको विभिन्न युगों में भगवान के भाइयों के बारे में बता सकता हूँ। राम अवतार में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न थे। कृष्ण अवतार में कृष्ण और बलराम थे। कलियुग में वे सभी धर्म की स्थापना के कार्य के लिए पुनः जन्म लेंगे। यह संभव है कि आपने सपने में जो देखा वह इसी से संबंधित हो, विशेषकर यदि आप धर्म के मार्ग पर हैं। हर युग में अवतार अलग-अलग होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:55 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 807 हम बेंगलुरु से हैं और छह महीने से अधिक समय से आपके बताए मार्ग का पालन कर रहे हैं। परंतु कभी-कभी हम प्रतिदिन दान नहीं कर पाते। किसी दिन हो जाता है, किसी दिन नहीं, और इससे मेरे मन में चिंता होती है। मैं हर दिन करना चाहता हूँ, पर हमेशा नहीं कर पाता। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जो अपनी सामर्थ्य के भीतर हो, वही करना चाहिए। किसी के पास दो रुपये हो सकते हैं, किसी के पास एक। यदि किसी के पास कुछ भी न हो, तो उसके मन और भाव की पवित्रता ही सबसे महत्वपूर्ण है। आपके भीतर देने की इच्छा है, और यदि परिस्थितियाँ अनुमति नहीं देतीं, तो इसमें कोई पाप नहीं है। आपका भाव अच्छा है। बस जब भी संभव हो, प्रयास करते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 50:47 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 808 मैंने सपना देखा कि मेरी दादी और माँ तीर्थयात्रा पर जा रही थीं। मैं उनके पीछे दौड़ रही थी, पुकार रही थी, पर वे मुझे सुन नहीं पा रही थीं। मैं थककर बैठ गई, वहाँ मैंने एक नदी देखी। एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि यह गंगा है। फिर मेरे पास एक लड़की आई, और मैंने उससे मुझे घर तक पहुँचाने के लिए कहा, और वह मान गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: माता जी, गंगा नदी के बारे में आपका सपना यह दर्शाता है कि आपको माँ गंगा की पवित्र कृपा प्राप्त हुई है। मैं इसे पूरे विस्तार से नहीं बताऊँगा, पर इतना समझ लीजिए कि एक भक्त के रूप में यह आपके लिए अत्यंत शुभ है। माँ गंगा सबसे पवित्र नदी हैं, और उनका आशीर्वाद मनुष्य को शुद्ध कर देता है। आपको उनके 'दर्शन' हुए। जो दूसरी लड़की आपने देखी, वह माँ यमुना हो सकती हैं, जो आपको मानव रूप में दिखाई दीं। बहुत से भक्तों को ऐसे दर्शन होते हैं, और आपको भी यह आशीर्वाद मिला है।

► यह उत्तर सुनें · 51:53 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 809 मेरा प्रश्न है कि भगवान कल्कि कब आएंगे?

उत्तर: आप तो इतने छोटे बच्चे हैं; इन बातों की चिंता क्यों करते हैं? यह आपकी पढ़ाई करने, शिक्षा प्राप्त करने और भगवान का नाम जपते हुए धर्म के मार्ग पर चलने की उम्र है, जैसा मैंने बताया है। जब समय आएगा, तब भक्तों की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 53:30 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 810 पर मैं जानना चाहता हूँ।

उत्तर: यदि आप सचमुच जानना चाहते हैं, तो भगवान के उस मार्ग पर चलिए जिसका मैं वर्णन करता हूँ। यदि आप ऐसा करेंगे, तो समय आने से पहले ही सभी भक्तों को प्रमाण मिल जाएगा। इस सत्संग में सबको देखिए; जो इस मार्ग पर चलते हैं, उन्हें किसी भी आपदा से पहले—चाहे भूकंप हो, आग हो, युद्ध हो या कोई और संकट—सपने और सूक्ष्म दर्शन होते हैं। यह पूर्वज्ञान आपको सही सावधानी बरतने का अवसर देता है। यदि आप इस मार्ग पर बने रहेंगे और कार्य करते रहेंगे, तो आपको भी ये संकेत मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 54:03 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 811 मेरा परिवार किसी दूसरे गुरु को मानता है। हमारा परिवार कैसे बच सकता है और सत्य युग में कैसे प्रवेश कर सकता है? मैं उन्हें इस मार्ग पर कैसे लाऊँ?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। इसे कुछ देर के लिए छोड़ दीजिए। जो मार्ग मैं बताता हूँ — क्या आपके परिवार के सभी लोग श्रीमद् भागवत पढ़ते हैं? क्या वे सब शाकाहारी हैं? क्या वे बताए गए नामों का जप करते हैं? यदि नहीं, तो आपको उन्हें मार्गदर्शन देना होगा। जो लोग इस मार्ग पर बने रहेंगे, वे सत्य युग में जाएँगे। हमारे समूह से जुड़ने के लिए आप हमारा संपर्क नंबर यूट्यूब चैनल से ले सकते हैं। नियम सरल हैं: त्रिसंध्या करें, भागवत पढ़ें, शाकाहारी रहें, और नशीली वस्तुओं से दूर रहें। इसका पालन करने से आपके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, उन्हें सत्य युग में प्रवेश मिलेगा, और उन्हें भगवान के 'दर्शन' भी प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 55:22 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 812 मुझे काम के लिए बहुत यात्रा करनी पड़ती है, और अक्सर होटलों में ठहरना पड़ता है। इससे मेरे लिए श्रीमद् भागवत का दैनिक अध्याय पढ़ना कठिन हो जाता है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आपको श्रीमद् भागवत अपने साथ ले जाना चाहिए। आप इसे कहीं भी पढ़ सकते हैं, होटल में भी। श्रीमद् भागवत पढ़ने से आपका मन शुद्ध रहेगा, आनंद मिलेगा, और आपको सुरक्षा प्राप्त होगी। इसे साथ ले जाइए और पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 58:48 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 813 मेरे फोन में पीडीएफ संस्करण है। क्या मैं उससे पढ़ सकता हूँ, या मुझे भौतिक पुस्तक साथ रखनी चाहिए?

उत्तर: यदि आपने पीडीएफ डाउनलोड कर रखी है, तो आप उससे भी पढ़ सकते हैं। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 59:32 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 814 यात्रा के दौरान मुझे त्रिसंध्या को लेकर भी ऐसी ही समस्या होती है। सुबह की प्रार्थना मैं कर लेता हूँ, पर अपनी दिनचर्या के कारण दोपहर और शाम की प्रार्थना अक्सर छूट जाती है।

उत्तर: जो दो समय छूट जाते हैं, उनके लिए यह करें: आप जहाँ भी हों, एक-दो मिनट निकालकर मन ही मन दस अवतारों के नामों का जप करें: मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि। साथ ही सोलह नामों और माधवी जप का भी उच्चारण करें। इतना पर्याप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 59:47 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 815 यदि प्रार्थना का समय तब आ जाए जब मैं गाड़ी चला रहा हूँ, तो क्या मैं गाड़ी चलाते हुए पूरी त्रिसंध्या कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, आप कर सकते हैं। बस सावधान रहें और गाड़ी जल्दबाज़ी में न चलाएँ। श्रद्धा के साथ चलाएँ और जल्दबाजी न करें।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:50 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 816 मैं आपके मार्ग का पूरी तरह पालन करता हूँ, और मुझे हमेशा भगवान की उपस्थिति का अनुभव होता है जो मुझे मार्गदर्शन देती है। पर मुझे कभी ऐसा स्वप्न नहीं आया जिसमें मैंने भगवान को देखा हो, जबकि मैं यह चाहता हूँ। एक बार मैंने स्वप्न में एक बहुत बड़ा साँप देखा था। क्या भगवान केवल स्वप्न में ही 'दर्शन' देते हैं, और क्या मैं कभी उन्हें देख पाऊँगा?

उत्तर: स्वप्न में आपको जो साँप के 'दर्शन' हुए, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। कल्कि अवतार बलराम और विष्णु का संयुक्त स्वरूप है, और साँप (शेषनाग) उनका अभिन्न अंग है। तो एक प्रकार से आपको उनके एक स्वरूप के 'दर्शन' पहले ही हो चुके हैं। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। जैसे-जैसे आप इस मार्ग पर चलते रहेंगे और जप करते रहेंगे, भविष्य में आपको भगवान विष्णु और कृष्ण के 'दर्शन' भी प्राप्त होंगे। सही समय की प्रतीक्षा करें; यह अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:41 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 817 क्या हम आपसे व्यक्तिगत रूप से मिल सकते हैं?

उत्तर: आप निश्चित रूप से मिल सकते हैं। हालाँकि, संसार की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, आने वाले समय में और भी लॉकडाउन और कठिनाइयाँ आएँगी। जैसे-जैसे धर्म की स्थापना आगे बढ़ेगी, लोगों को और अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। उस काल में, सही समय आने पर भक्त अवश्य ही भगवान से मिलेंगे। मार्ग पर बने रहिए, और जब समय आएगा, आपको भी भगवान के 'दर्शन' प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:35 · 6 जनवरी 2022

प्रश्न 818 क्या हमें भगवान कल्कि के 'दर्शन' हो सकते हैं?

उत्तर: आपको उनके 'दर्शन' अवश्य होंगे। आपका हृदय निर्मल है, मेरे बच्चे। आपको भगवान के 'दर्शन' प्राप्त होंगे। बस भगवान माधव का नाम जपते रहिए, और आप उन्हें देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:08 · 6 जनवरी 2022

सत्र 40 · प्रश्न 819–827

L38 - सत्संग की धारा क्या है?

दिनांक: 9 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 819 सबकी ओर से मेरा एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। कलि के साथ वर्तमान स्थिति को लेकर, वह क्या योजना बना रहा है? माननीय प्रधानमंत्री पर हमला हुआ, और वे इस समय भारत में भी नहीं हैं। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें। साथ ही, यह '13 यूटोपिया' क्या है और क्या मलिक सुदेश किसी प्रकार का संगठन बना रहे हैं? और ये लोग, जैसे उन्होंने अपने 'निपटान' में किया, मलिका के अनुसार, किस वर्ष में ये 'बाबा-टाइप' गतिविधि शुरू करेंगे?

उत्तर: जय श्री जगन्नाथ। कलि पुरुष के बारे में आपने जो कहा... देखिए, 'कलि' नाम सुनते ही देश के लिए रोने का मन करता है, और मैं रोता भी हूँ। तो इसके लक्षण क्या हैं? यह संकेत करता है कि भगवान प्रकट होने वाले हैं। और आत्मा... देखिए, जैसे जब किसी का संपर्क होता है, तो हम बात करते हैं, और अंतिम काम कम हो जाता है। उसी प्रकार, जैसे-जैसे शुद्ध लोग भगवान के साथ बने रहते हैं, यदि आपमें उनकी भक्ति है और आप पूजा की संपूर्ण विधि का पालन करते हैं, तो भगवान...

► यह उत्तर सुनें · 12:45 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 820 मैं जानना चाहता हूँ, क्या आने वाले समय में राजस्थान में जल प्रलय आएगा?

उत्तर: हाँ, जल प्रलय होगा। अचानक, अकल्पनीय वर्षा होगी। यह पहले की किसी भी वर्षा से भिन्न होगी। इस परिवर्तन के दौरान, कई नई नदियाँ भी निकलेंगी। यह राजस्थान में धर्म स्थापना के समय से जुड़ा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 14:56 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 821 पंडित जी, 'जगनमोहन' (विश्व को मोहित करने वाली घटना / धर्म की स्थापना) कब होगा?

उत्तर: यह तब होगा जब धर्म स्थापना होगी। विश्वयुद्ध होगा, और यह प्रक्रिया पूरे विश्व में आगे बढ़ेगी। भगवान की इच्छा से यह उसी समय होगा। हम उसी समय की ओर बढ़ रहे हैं। मैं यह नहीं कहूँगा कि यह 1-2 वर्ष में हो जाएगा, परंतु आने वाले 5 से 8 वर्षों में आप सब एक बहुत बड़ा परिवर्तन देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 15:47 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 822 मैंने एक स्वप्न देखा कि मैं ऑस्ट्रेलिया में हूँ और मेरी भेंट प्रभु जी से होती है। वे कहते हैं, 'नहीं, मैं यहाँ काम करने आया हूँ।' इसका क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह है कि भगवान विदेश जाएँगे?

उत्तर: देखिए, आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है। आपकी पवित्रता और भक्ति के कारण ही प्रभु ने आपको पहले से संकेत दे दिया। प्रभु सम्पूर्ण ब्रह्मांड में भ्रमण करेंगे। वे धर्म स्थापना के लिए जाएँगे। शायद उस समय आप जैसे भक्तों की भेंट प्रभु से वहीं ऑस्ट्रेलिया में होगी, क्योंकि कुछ भक्त भी धर्म स्थापना के कार्य के लिए ब्रह्मांड में भ्रमण करेंगे; प्रभु उन्हें भेजेंगे। जो अच्छे भक्त उनके निकट हैं, उन्हें वे भेजेंगे। शायद इसमें आपका भी योगदान है, इसीलिए आपको यह स्वप्न आया। भक्ति के मार्ग पर बने रहिए और प्रभु की शरण में रहिए। समय आने पर यह सिद्ध हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:57 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 823 आने वाला संकट क्या किसी विश्वासघाती विदेशी सहायता जैसा होगा, या वर्तमान स्थिति ही विनाश का कारण बनेगी, या कुछ और होगा? कृपया स्पष्ट करें।

उत्तर: इसने सम्पूर्ण ब्रह्मांड को परेशान कर रखा है, और समस्याएँ बढ़ती ही जा रही हैं। पिछले दो वर्षों से लोगों ने बहुत कष्ट झेला है। किसी का रोज़गार चला गया, किसी के पास खाने को पर्याप्त नहीं है, और यह ठीक भी नहीं हो रहा। और फिर एक और बीमारी आ जाती है। इससे मानव समाज को बहुत दुःख हो रहा है। तो संसार में जब ऐसी बातें होती हैं, तो मैं बस इतना कहूँगा: देखिए, आप सब देख ही रहे हैं कि हम इस समय किस काल में हैं। अब, आने वाले समय के लिए तैयार रहिए। और वह समय हमारे लिए बहुत कठिन होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:22 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 824 मैं इस ज्ञान की धारा को हर व्यक्ति और हर परिवार तक पहुँचाना चाहता हूँ, परंतु अभी तक आरंभ नहीं कर पाया हूँ। कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दें और प्रभु से प्रार्थना करें कि यह संदेश सब तक पहुँचे।

उत्तर: यह बहुत ही पवित्र विचारधारा है। क्योंकि, देखिए, यदि पृथ्वी पर एक व्यक्ति भी धर्म के मार्ग पर चलता है, तो वह पृथ्वी के संतुलन में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। तो, धर्म की यह धारा हर व्यक्ति तक पहुँचे, इसके लिए आप शुद्ध हृदय से जो प्रयास कर रहे हैं, उसे जारी रखिए। प्रभु की कृपा भी आप पर है। धर्म का कार्य कभी रुकता नहीं; उसका प्रवाह चलता रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 22:03 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 825 पंडित जी, मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें भगवान कल्कि मुझे घोड़े पर बिठाकर एक पर्वत पर ले जा रहे थे, जहाँ हज़ारों भक्त खड़े थे। एक भीषण जलप्रलय हो रहा था। प्रभु मुझे और लगभग छह अन्य लोगों को बुलाते हैं, हमें तलवारें देते हैं, और कहते हैं कि हमें इनकी आवश्यकता पड़ेगी। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: स्वप्न का अर्थ यह है कि प्रभु स्वप्न में केवल अपने भक्तों को ही संकेत देते हैं। आने वाले समय में भक्तों की भेंट प्रभु से होगी। धर्म स्थापना के लिए प्रभु उन्हें सामर्थ्य, शक्ति और अस्त्र-शस्त्र देंगे। और वे उन भक्तों को जहाँ भी भेजेंगे, वे वहाँ जाकर (अधर्मियों के लिए) कहर बरपाएँगे। इसलिए, आपको जो स्वप्न आया वह एक संकेत था। जिस मार्ग की मैं बात करता हूँ, उसका अनुसरण कीजिए। ऐसा करने से आपको बातों को जानने के लिए और अधिक समय मिलेगा और अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रभु के चरणों में शांति प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:39 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 826 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि जो लोग सत्य युग में जाएँगे, क्या वे सभी आत्म-ज्ञानी होंगे?

उत्तर: हाँ, वे सब आत्म-ज्ञानी होंगे। जो भी सत्य युग में जाएगा, वह ब्रह्म ज्ञान (परब्रह्म का ज्ञान) और आत्म ज्ञान में निपुण होगा। और जिसे हम 'शरीर तत्त्व' (शरीर का ज्ञान) कहते हैं, वह अलग है... शुद्ध ब्रह्म ज्ञान के द्वारा सब कुछ जान लिया जाएगा, और सभी मनुष्य अपने शुद्ध आचरण में ब्राह्मणों के समान होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:50 · 9 जनवरी 2022

प्रश्न 827 जय श्री माधव। मैंने देवी भागवत पुराण का पाठ पूरा कर लिया है। क्या मुझे इसे फिर से आरंभ करना चाहिए?

उत्तर: आपने पूरा कर लिया? फिर से आरंभ कीजिए। निरंतर कीजिए। कहा गया है... और साथ ही श्रीमद् भागवत भी पढ़िए। एक पाठ पूरा होने पर, उसे फिर से आरंभ से शुरू कीजिए। रुकिए मत। यह रथ चलता रहना चाहिए। भक्तों के लिए यही मार्ग है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:41 · 9 जनवरी 2022

सत्र 41 · प्रश्न 828–846

L39 कलियुग से सत्य युग जाने का मार्ग । How to go SATYA YUG LIVE

दिनांक: 13 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 828 मेरी पत्नी ने एक स्वप्न देखा जिसमें एक धार्मिक सभा में आग लग गई। उसके बाद घोड़े पर सवार एक व्यक्ति नंगी तलवार लिए प्रकट हुआ। हमने एक गुरु का नाम लिया है, परंतु स्वप्न में कहा गया कि यह नाम सही नहीं है और हमें 'घोड़े वाले बाबा', जिनके पास तलवार है, उनकी उपासना करनी चाहिए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। धार्मिक स्थानों में आग लगना इस बात का संकेत है कि झूठे धर्म और झूठी शिक्षाएँ नष्ट होंगी। केवल भगवान नारायण द्वारा स्थापित सनातन धर्म ही रहेगा, जैसा मालिका में लिखा है। घोड़े पर भगवान कल्कि के दर्शन का अर्थ है कि केवल कल्कि मंत्र, जिसे मैं मालिका से बताता हूँ—भगवान श्री सत्यानन्दम् का नाम—ही लोगों को बचाएगा। इस युग में कोई अन्य मंत्र काम नहीं करेगा। अपनी पत्नी से कहिए कि वे इस मंत्र का जप आरंभ करें और सनातन धर्म के समूह में रहकर कार्य करें। स्वप्न यह संकेत देता है कि आने वाले समय में ऐसा विनाश कई धार्मिक संस्थानों में देखने को मिलेगा, परंतु भगवान कल्कि के भक्त बच जाएँगे। कोई और नाम काम नहीं आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:53 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 829 मैं दो वर्षों से इस मार्ग से जुड़ा हुआ हूँ, कृष्ण के मार्ग का भी अनुसरण कर रहा हूँ। हमने भागवत पुराण का पाठ आरंभ किया था, परंतु कुछ कठिनाइयाँ आ गईं और बीच में ही रोकना पड़ा। इस विषय में हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: सुनिए, श्रीमद् भागवत सत्य को जानने का प्रमुख मार्ग है। जब आप कोई धर्म का कार्य आरंभ करते हैं, तो अनेक बाधाएँ आना स्वाभाविक है—शारीरिक, आर्थिक, या अन्य प्रकार की। 'कलि' (इस युग की नकारात्मक शक्ति) का प्रभाव ये समस्याएँ खड़ी करने का प्रयास करता है ताकि आपका पाठ रुक जाए। परंतु कुछ नहीं होगा। आगे बढ़िए। जिस पर प्रभु का आशीर्वाद है, उसे संसार की कोई शक्ति रोक नहीं सकती। बाधाएँ आ सकती हैं, परंतु प्रभु की कृपा से आप उन्हें पार कर लेंगे और शिखर तक पहुँचेंगे। इसलिए, इस मार्ग पर चलते रहिए; यह आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 18:47 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 830 कुछ सप्ताह पहले हमारे प्रधानमंत्री पर हमले का षड्यंत्र हुआ था, और वे कमज़ोर होते दिख रहे हैं। क्या वे बलदेव के अवतार हैं? या योगी जी [योगी आदित्यनाथ] बलदेव हैं? क्या वे हमें भविष्य के परमाणु हमले से बचाएँगे? क्या आप बता सकते हैं कि क्या योगी जी प्रधानमंत्री बनेंगे और हमारी रक्षा करेंगे?

उत्तर: कोई भी मनुष्य भारत या विश्व को परमाणु हमले से नहीं बचा सकता। केवल दिव्य शक्ति, भगवान विष्णु ही ब्रह्मास्त्र (परमाणु अस्त्र) का प्रतिकार कर सकते हैं। इस युग में केवल भगवान कल्कि में ही परमाणु हमले को रोकने की शक्ति है। भगवान कल्कि भारत और अपने भक्तों की रक्षा करेंगे—सबकी नहीं, बल्कि उनकी जो पवित्र हैं और धर्म के मार्ग पर चलते हैं। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के विषय में—वे पाकिस्तान के साथ युद्ध के प्रारंभिक चरण में नेतृत्व करेंगे, जो तीसरे विश्वयुद्ध का आरंभ होगा। परंतु वह युद्ध निर्णायक नहीं होगा। जब सभी राष्ट्र अन्यायपूर्वक भारत पर आक्रमण करेंगे, तब भगवान कल्कि देश को बचाने के लिए प्रकट होंगे। भगवान कल्कि स्वयं ही बलदेव के अवतार हैं, साथ ही भगवान कृष्ण और भगवान जगन्नाथ के भी। कोई मनुष्य कल्कि या बलराम नहीं हो सकता। प्रभु धर्म की स्थापना के लिए अवतार लेते हैं। वर्तमान नेता प्रारंभिक युद्ध का नेतृत्व करेंगे, परंतु अंतिम क्षणों में भगवान कल्कि ही भारत की रक्षा करेंगे। उनके कार्य सूक्ष्म होंगे; जैसे, चीन के अपने ही परमाणु हथियार उनके देश के भीतर फट सकते हैं, और लोग सोचेंगे कि यह भारत ने किया, परंतु वह भगवान कल्कि की दिव्य शक्ति का कार्य होगा। इन दिव्य लीलाओं को केवल वे ही भक्त समझ पाएँगे जो मालिका का अनुसरण करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:15 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 831 क्या योगी जी भविष्य में प्रधानमंत्री बन पाएंगे?

उत्तर: सुनिए, इस विषय पर हम आपस में बात करेंगे। यह खुली चर्चा का विषय नहीं है। इस पर हम बाद में बात करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:01 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 832 मालिका के अनुसार, 10 या 12 ढोंगी लोग स्वयं को कल्कि बताकर प्रकट होंगे। हम सभी भक्त इन नकली कल्कियों से कैसे सुरक्षित रहेंगे ताकि हम भ्रमित न हों?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। मालिका कहती है कि 12 नकली कल्कि स्वयं को भगवान घोषित करेंगे। उनकी अपनी पूजा होगी, वे भक्तों से धन लेंगे, और धनी तथा प्रभावशाली अनुयायियों को आकर्षित करेंगे, अपने लिए शांति और समृद्धि का दिखावा खड़ा करेंगे। ये ढोंगी अंततः नष्ट हो जाएंगे; कुछ तो पहले ही बेनकाब हो चुके हैं, और आगे भी आएंगे। रही बात यह कि सच्चे भक्त कैसे सुरक्षित रहेंगे — चारों युगों के सच्चे भक्त मालिका के माध्यम से ही सच्चे भगवान तक आएंगे। वे ढोंगियों के पास नहीं जाएंगे। यदि कुछ समय के लिए भ्रमित हो भी गए, तो उनका सात्विक स्वभाव और विष्णु से जुड़ाव उन्हें वहाँ अधिक देर तक टिकने नहीं देगा। भगवान स्वयं अपने भक्तों के उत्तरदायी हैं और किसी अनुभव, स्वप्न, या केवल अपनी ओर खींचकर उन्हें अपने पास ले आएंगे। भगवान अपने भक्तों को बुलाते हैं; भक्त स्वयं नहीं आ सकता। ढोंगियों को समय आने पर अपनी नियति भुगतनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 25:39 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 833 एक भक्त दंपति ने आपसे बात की, और उसी रात पति को एक स्वप्न आया। उनकी पत्नी तुलसी के पौधे के सामने रोते हुए भगवान को पुकार रही थीं। तभी एक अत्यंत सुंदर भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हुए। भगवान ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और जब उन्होंने वह हाथ थामा, तो उन्हें अपार दिव्य आनंद की अनुभूति हुई। फिर उन्होंने देखा कि जब वे रो रही थीं, तो भगवान की आँखों में भी आँसू थे। स्वप्न टूट गया और वे चौंक गईं, सोचने लगीं कि जगत के स्वामी की आँखों में आँसू क्यों थे? इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान सदैव अपने भक्तों की सेवा में रहते हैं। आज ब्रह्मांड के सभी भक्त, गौमाता, और अन्य जीव अन्याय और कष्ट के कारण रो रहे हैं। उनके आँसू देखकर भगवान की आँखें भी भर आती हैं, यह सोचकर कि वे संसार को कैसे बचाएंगे। भगवान के आँसू उनके भक्तों और सभी निर्दोष प्राणियों के कष्ट के लिए हैं। वे अपने शुद्ध भक्तों के पास इस प्रकार आते हैं ताकि उन्हें आश्वासन दे सकें। जिस माता को यह दर्शन हुआ, वे बहुत पवित्र हैं, और भगवान का हाथ थामकर उन्होंने आने वाले Satya Yuga में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया है, बशर्ते वे उस मार्ग पर चलती रहें जो मैं बताता हूँ। यदि वे भटक गईं, तो भगवान उनकी रक्षा नहीं करेंगे। भगवान के आँसू इसलिए भी हैं कि उन्हें संहार का कार्य करना है — एक ओर वे अपने भक्तों को बचाते हैं, और दूसरी ओर उन्हें बुराई के नाश के लिए महानरसिंह का उग्र रूप धारण करना पड़ता है।

► यह उत्तर सुनें · 29:04 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 834 सत्संग एक घंटे तक चलता है, और तुरंत 5 मिनट के भीतर उसका अंग्रेज़ी अनुवाद व्हाट्सएप पर आ जाता है। यह क्या है? इतनी तेज़ी से टाइप करना तो बहुत कठिन लगता है।

उत्तर: जिस पर भगवान की कृपा होती है, उस पर माता सरस्वती की भी कृपा होती है। जिन्हें दैवीय शक्ति तैयार करती है, वे थोड़े ही समय में कुछ भी कर सकते हैं। आने वाले समय में आप भक्तगण भी अपने जीवन में अनेक परिवर्तन देखेंगे। आप एक क्षण के अंश में कुछ भी कर सकेंगे। जैसे-जैसे हम अधिक पवित्र होते जाएंगे और Satya Yuga की ओर बढ़ेंगे, हमारा शरीर इतना शुद्ध हो जाएगा कि वह सूर्य में भी बिना जले प्रवेश कर सकेगा। धर्म की ऐसी शक्ति है।

► यह उत्तर सुनें · 33:13 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 835 आपसे मेरा प्रश्न यह है कि मैं भगवद्गीता में विश्वास रखती हूँ और एक बार पढ़ चुकी हूँ तथा फिर से शुरू की है। साथ ही, भविष्य के बारे में आप जो कुछ कहते हैं, वही बातें मेरे पिताजी ने 20 वर्ष पहले मेरी माँ और बहन को बताई थीं। मेरे लिए आपका क्या मार्गदर्शन है?

उत्तर: बहुत अच्छा है, माता। मैं आपको सलाह देता हूँ कि गोरखपुर गीता प्रेस वाला श्रीमद्भागवत पढ़िए, जिसमें बारह स्कंध हैं। उसे पूरा और निरंतर पढ़िए। यदि आप सुरक्षा चाहती हैं, Satya Yuga में जाना चाहती हैं, और भगवान से मिलना चाहती हैं, तो यही मार्ग है। जब समाप्त हो जाए, तो फिर पहले अध्याय से शुरू कीजिए। दूसरा, विश्व सनातन धर्म संगठन से जुड़िए। तीसरा, जो मार्ग हम बताते हैं उसका पालन कीजिए: Trisandhya कीजिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान और पवित्रता का पालन कीजिए, और भगवान श्री सत्यानंदम् के नाम का जप कीजिए। ऐसा करने से आप Satya Yuga में जा सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:38 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 836 मालिका के अनुसार, क्या तीसरा विश्व युद्ध 2025 में होगा या नहीं? और यदि होता है, तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: आपने अच्छा प्रश्न पूछा है। 2025 की ग्रह-स्थिति महाभारत युद्ध के समय की ग्रह-स्थिति से भी अधिक भयंकर है। यह काल 2025 से आरंभ होता है, और तीसरा विश्व युद्ध निश्चित रूप से होगा। इसकी शुरुआत भारत और पाकिस्तान के बीच होगी और फिर यह पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लेगा। लेकिन हमारे जो भक्त इस मार्ग पर हैं, उनके लिए कोई कष्ट नहीं, कोई दुःख नहीं, कोई समस्या नहीं, और कोई तनाव नहीं होगा। क्योंकि हम भगवान के स्मरण में हैं और उनके उस मार्ग पर हैं, जिसे उन्होंने स्वयं मानवता को बचाने के लिए बनाया है। संसार में महाविनाश होगा, किंतु जो पवित्र आत्माएँ इस मार्ग पर चलेंगी उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा। आपको सुरक्षा मिलेगी, भविष्य मिलेगा, और आप भगवान से भी मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:45 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 837 भगवान Kalki कब तक प्रकट हो सकते हैं?

उत्तर: लोग ऐसे प्रश्न पूछते हैं... जिन भगवान के दर्शन ऋषि-मुनियों और योगियों को युगों की तपस्या के बाद भी नहीं हुए, क्या आपको लगता है कि वे इतनी आसानी से सबके सामने प्रकट हो जाएंगे? यदि वे खुले तौर पर प्रकट हो गए, तो पापी भी बच जाएंगे। फिर उनका नाश कैसे होगा? भगवान अवतार ले चुके हैं। धर्म-स्थापना का कार्य चल रहा है। भक्तों को भगवान के दर्शन हो रहे हैं। यदि आपके भाग्य में होगा, तो आपको भी उनके दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 39:35 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 838 बांग्लादेश, अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में सनातन धर्म के अनुयायी बहुत दयनीय स्थिति में हैं, नरक से भी बदतर जीवन जी रहे हैं। भगवान उन्हें कब मुक्ति दिलाएंगे?

उत्तर: आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है। वे बहुत दुःख में हैं। उनसे कहिए कि भगवान Kalki Madhava, श्री सत्यानंदम् के नाम का जप करें। यदि वे इस नाम का जप करेंगे, तो भगवान स्वयं उन्हें दिखाएंगे कि वे उन्हें कैसे बचाएंगे। किंतु वे समझने को तैयार नहीं हैं और अलग-अलग मार्गों पर चल रहे हैं। यदि वे इस मार्ग को स्वीकार कर लें, तो भगवान स्वयं जाकर उनकी रक्षा करेंगे। जो संकट में हैं उन्हें विश्वास करने को तैयार होना पड़ेगा। यदि वे विश्वास करेंगे, तो बच जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:23 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 839 पंडित जी, यह संदेश उन तक कैसे पहुँचाया जा सकता है? यह भी एक बड़ी समस्या है।

उत्तर: मैं जानता हूँ कि वे बहुत पीड़ित हैं। लेकिन यदि वे भगवान की शरण लेंगे, तो भगवान उनके पास जाएंगे। उनमें भक्ति और पवित्रता होनी चाहिए। जो विदेश में हैं और संकट में हैं, उन्हें मेरी सलाह है: श्रीमद्भागवत, दुर्गामाधव स्तुति, 16 नाम और 10 अवतार पढ़ें, और श्री सत्यानंदम् के नाम का जप करें। वे यह करके देखें। संसार की कोई शक्ति, चाहे उनका शत्रु कितना ही बड़ा क्यों न हो, उन्हें छू भी नहीं पाएगी। सरकार और परिस्थिति बदल जाएगी, किंतु भक्त सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 42:39 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 840 किसी को स्वप्न आया जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी। एक घोड़े पर चँदोवा (छत्र) था, और जब उसे लेने की कोशिश की गई, तो उस घर के लोगों ने कहा कि मृतक पर घंटी बाँध दो। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: उत्तर यह है कि स्वप्न में जिस व्यक्ति की मृत्यु हुई, वह भगवान के योग्य नहीं था। उस स्थान के लोग भगवान विष्णु के विरोधी थे, इसीलिए उसकी मृत्यु हुई। उस पर घंटी बाँधने का निर्देश यह दर्शाता है कि वह भगवान का व्यक्ति नहीं है। और जो भी भगवान का भक्त नहीं है, वही आने वाले समय में नष्ट होगा। यही इस स्वप्न का अर्थ है।

► यह उत्तर सुनें · 45:05 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 841 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मेरी पत्नी भागवत पढ़ती हैं पर त्रिसंध्या नहीं करतीं, और उन्हें बार-बार सपने आते हैं कि वे पानी से घिरी हुई हैं। दूसरा, क्या हनुमान जी राजस्थान में अपने भक्तों के लिए सूक्ष्म रूप में प्रकट होंगे या स्थूल (शारीरिक) रूप में, और कब? क्या इसका उल्लेख मालिका में है?

उत्तर: मालिका कहती है कि धर्म की स्थापना से पहले हनुमान जी सूक्ष्म रूप में कार्य करेंगे। इस समय वे गुप्त रूप से भगवान के भक्तों की सहायता कर रहे हैं, जहाँ कहीं भी वे संकट में हैं। जब धर्म स्थापना का अंतिम समय आएगा, तब सभी भक्तों को हनुमान जी के प्रत्यक्ष, स्थूल दर्शन होंगे। आपकी पत्नी को जो महाप्रलय (जल प्रलय) दिख रहा है, उसके विषय में उनसे कहिए कि वे त्रिसंध्या करें। जल प्रलय से होने वाला विनाश भीषण होगा, और उनकी रक्षा के लिए त्रिसंध्या करना आवश्यक है। यदि वे करेंगी, तो बच सकती हैं। इसीलिए उन्हें ये सपने आ रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:31 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 842 मैंने अपनी पत्नी से कई बार कहा है कि त्रिसंध्या शुरू करें, पर वे नहीं करतीं। मुझे लगता है शायद जब भगवान की आज्ञा होगी, तभी वे करेंगी।

उत्तर: धर्म और शास्त्रों के सिद्धांत ही समस्त मनुष्यों के सुख का आधार हैं। उनसे कहिए कि यह हमारे अपने कल्याण के लिए है और अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए है। संध्या (संधि) के समय में पृथ्वी और भक्तों के कल्याण हेतु समस्त देवी-देवताओं की पूजा होती है। इसीलिए मैं त्रिसंध्या की बात करता हूँ। यह सुधर्म महासंघ से आया भगवान का अपना मार्ग है। इसका पालन करना आप सबके लिए शुभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:06 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 843 मेरे घर में मैं माँ काली और लक्ष्मी-नारायण के चित्रों की पूजा करता हूँ। पूजा करते समय, यदि मैं किसी संकट में हूँ और मन ही मन उनसे कोई प्रश्न पूछता हूँ, तो मुझे चित्र में उनकी आँखें झपकती हुई दिखाई देती हैं। इसका क्या अर्थ है? क्या भगवान मुझसे बात करने का प्रयास कर रहे हैं?

उत्तर: भक्ति का मार्ग अनंत है, और उसे केवल एक भक्त ही समझ सकता है। यह आपकी शुद्ध भक्ति और भगवान की कृपा के कारण हो रहा है। अपनी भक्ति बढ़ाइए और उसमें और अधिक लीन होइए। सबसे महत्वपूर्ण बात, सांसारिक कामनाओं से दूर रहिए, तो आपको इससे भी उच्च कोटि के अनुभव होंगे। जो हो रहा है वह अच्छा है। सभी सच्चे भक्तों को ऐसे अनुभव होंगे। चिंता की कोई बात नहीं है। अपनी पूजा जारी रखिए, पर साथ ही उस मार्ग का भी पालन कीजिए जो हम बताते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 49:09 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 844 एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति त्रिसंध्या कर सकता है और भागवत पढ़ सकता है। पर जो अनपढ़ हैं, वे भगवान के लिए क्या करें? वे तो केवल 'माधव, माधव' जप सकते हैं।

उत्तर: जो अनपढ़ हैं, उनके लिए वेद का मार्ग 'श्रुति' है, जिसका अर्थ है 'जो सुना जाए'। सुनने से ही वह कंठस्थ हो जाता है। उन्हें दुर्गामाधव स्तुति, 16 नाम और 10 अवतार बार-बार सुनवाइए। दूसरी बात, यदि कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति श्रीमद्भागवत का पाठ कर रहा हो, तो उन्हें वहाँ जाकर सुनना अच्छा रहेगा। अन्यथा, वे मोबाइल फोन पर ऑडियो सुन सकते हैं। यह मार्ग उनके लिए ठीक है। और उन्हें निरंतर भगवान का नाम जपते रहना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 50:54 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 845 मेरी माँ 80 वर्ष की हैं। वे केवल 'माधव, माधव' जप सकती हैं, और कुछ नहीं कर सकतीं। मैं भागवत पढ़ता हूँ और वे सुनती हैं। क्या इतना पर्याप्त है?

उत्तर: यह ठीक है। और उनसे कहिए कि चूँकि उनके पास और अधिक काम नहीं है, वे माधव नाम, 16 नाम, 10 अवतार और दुर्गामाधव स्तुति सुन सकती हैं। उन्हें ये सब सुनवाइए। यदि वे इनका पाठ न कर पाएँ तो कोई बात नहीं, पर कम से कम नाम तो जपें। नाम से धीरे-धीरे मुक्ति मिल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 51:49 · 13 जनवरी 2022

प्रश्न 846 पंडित जी, पिछली बार आपने कहा था कि आगे चलकर एक रेल दुर्घटना होगी। आज असम के गुवाहाटी में एक बड़ी रेल दुर्घटना हो गई है।

उत्तर: यह जागरूकता आप जैसे भक्तों की पवित्रता से आती है। कृपया दूसरों को भी जागरूक करते रहिए। देखिए, ये रेल दुर्घटनाएँ और विमान दुर्घटनाएँ बहुत बढ़ेंगी। साथ ही जल से होने वाली मृत्यु—नावों का डूबना, लोगों का डूब जाना—ये सब संकेत हैं। ये घटनाएँ बहुत बढ़ेंगी। पर यदि उस ट्रेन में कोई भक्त हो, तो उस ट्रेन की दुर्घटना नहीं होगी। भक्त के धर्म की ऐसी शक्ति है; उसे कोई तोड़ नहीं सकता। इसलिए इन अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटिए और उन्हें आने वाले समय के प्रति जागरूक कीजिए, ताकि लोग सुरक्षित रह सकें, और सबसे महत्वपूर्ण, भक्तों की रक्षा हो सके।

► यह उत्तर सुनें · 52:45 · 13 जनवरी 2022

सत्र 42 · प्रश्न 847–857

L40 इन्द्र देव अन्याय करेंगे, तेज वर्षा होगी-- LIVE

दिनांक: 16 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 847 गुरुजी, जैसा आपने बताया था, हम शीत ऋतु में बेमौसम बारिश का अनुभव कर रहे हैं। यह कैसे संकेत करता है कि Kali Yuga का अंत आ रहा है? यह बात मुझे ठीक से समझ नहीं आई। साथ ही, मैंने देखा है कि कई जगहों पर ये चीजें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के माध्यम से हो रही हैं। विज्ञान ने AI विकसित कर लिया है जिससे वे कभी भी बारिश या बर्फबारी करवा सकते हैं। तो हम इससे कैसे निपट सकते हैं?

उत्तर: जब यह मौसम बदलता है, तो यह वैसा ही है जैसा मालिका शास्त्र में वर्णित है। उसमें कहा गया है कि बेमौसम बारिश होगी। ऐसा क्यों होगा? क्योंकि Kali Yuga के अंत में देवी-देवता, जैसे इंद्रदेव, अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते, क्योंकि वे युग परिवर्तन के लिए भगवान के संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो आज जो बारिश हो रही है, वह युग के अंत का संकेत है, जैसा शास्त्रों में लिखा है। और जो वैज्ञानिक कृत्रिम रूप से बारिश करवाते हैं, वे बस इतना ही कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने परमाणु बम बना लिया, पर उसके विनाशकारी प्रभावों से मानवता को बचाने का कोई समाधान उनके पास नहीं है। वे कृत्रिम बारिश तो करवा सकते हैं, पर चक्रवात या भगवान द्वारा नियत बेमौसम बारिश को रोक नहीं सकते, क्योंकि ये घटनाएँ धर्म और भगवान के अधीन हैं। मनुष्य एक सीमा तक उन्नति कर सकता है, पर सर्वशक्तिमान नहीं बन सकता। इसलिए चिंता मत कीजिए। यह Kali Yuga के अंत और Satya Yuga के आरंभ का संकेत है। आने वाले 8-10 वर्षों में मानवता को कष्ट झेलने पड़ेंगे। जो धर्म के मार्ग पर चलेंगे उनकी रक्षा होगी, और जो नहीं चलेंगे उनका भाग्य भगवान तय करेंगे। इसलिए सनातन धर्म के मार्ग पर चलिए।

► यह उत्तर सुनें · 06:42 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 848 गुरुजी, मैं मुंबई में रहता हूँ। पिछले सप्ताह मैंने उसी प्रलयकालीन बारिश का अनुभव किया जिसकी आपने बात की थी। मैं उसमें पूरी तरह भीग गया, पर जैसे ही घर आकर मैंने श्रीमद्भागवत का पाठ किया, मुझे कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं हुई। तो क्या आने वाले समय में मुंबई में ऐसी और समस्याएँ होंगी? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: जो इस पवित्र मार्ग पर बने रहेंगे, उन्हें रोग छू भी नहीं सकेगा। यदि उनके कुछ पूर्व पाप हैं, तो थोड़े समय के लिए कष्ट हो सकता है, पर उनकी मृत्यु नहीं होगी। यह हमारा दृढ़ विश्वास है। आप जैसे लोग जो भागवत पढ़ते हैं और धर्म के मार्ग पर चलते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। मुंबई की बात करें, तो वहाँ इतनी भारी वर्षा होगी कि लोगों को शहर छोड़ने पर विवश होना पड़ेगा। सुनामी और भूकंप भी आएँगे। आने वाले समय में यह और अधिक तीव्रता से होगा, क्योंकि मानव समाज ने धर्म के मार्ग का उल्लंघन किया है। लोग सोचते हैं कि शांति और विकास से सुरक्षा मिलेगी, पर सुरक्षा की सबसे बड़ी शक्ति है धर्म—सनातन धर्म—को धारण करना और उसका प्रसार करना। केवल मुंबई ही नहीं, बल्कि विश्व भर के सभी महानगरों को समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पर भक्तों को इन समस्याओं की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे भगवान के मार्ग पर हैं, और जो उनके मार्ग पर हैं उन्हें डरने का कोई कारण नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 12:42 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 849 पंडित जी, जब मुझे Bhavishya Malika के बारे में पता चला, तो मैंने मांसाहार छोड़ दिया। पर मेरे परिवार वाले इसे स्वीकार नहीं करते; उन्हें लगता है कि मुझे अचानक कुछ हो गया है। मैं उन्हें बहुत समझाने की कोशिश करता हूँ कि एक निर्णायक समय आ रहा है, पर वे विश्वास नहीं करते। मैं उन्हें कहता हूँ कि भगवान आ चुके हैं और शीघ्र ही धर्म की स्थापना करेंगे, पर वे ध्यान नहीं देते। मैं क्या करूँ? उन्हें कैसे समझाऊँ?

उत्तर: जब हम इस संसार में नहीं थे, तब हमारा कोई नहीं था। यहाँ आने के बाद हमें माया स्पर्श करती है, जो 'मेरा परिवार', 'मेरा सब कुछ' जैसे मोह उत्पन्न करती है। पर हम अकेले आए हैं और अकेले ही जाएँगे; कोई साथ नहीं जाएगा। जिस मार्ग की हम बात करते हैं, वह केवल भक्तों के लिए है। यदि आपके परिवारजन भक्त हैं और धर्म स्थापना में भगवान के साथ रहने के लिए नियत हैं, तो वे अवश्य समझ जाएँगे। यदि नहीं, तो लाख बार कहने पर भी नहीं समझेंगे, और आपको इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। हमारा परिवार यदुवंशियों का परिवार है, गोपियों और ग्वालों का, भक्तों का परिवार है। केवल वही इस मार्ग को समझेंगे जो भगवान के परिवार के हैं। दूसरे इसे समझ नहीं पाएँगे। इसलिए आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। बस उन्हें बता दीजिए, और यदि वे स्वीकार न करें, तो उन पर दबाव मत डालिए। सबका भाग्य अलग-अलग होता है। चार बच्चों के एक ही परिवार में, एक IAS अधिकारी बनता है, एक किसान रह जाता है, एक मध्यम वर्ग का होता है, और एक गरीब हो जाता है। यह उनके कर्म पर आधारित है। तो यदि वे न समझें, तो कोई बात नहीं। आप बस स्वयं को इस मार्ग पर बनाए रखिए और उनकी चिंता मत कीजिए। यह सबको फैलाने का मिशन नहीं है; यह भक्तों को चुनने का मिशन है।

► यह उत्तर सुनें · 15:15 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 850 मैं अभी News Nation पर एक समाचार पढ़ रहा था कि जापान में धरती के भीतर गहराई में एक विस्फोट हुआ है। उन्होंने कहा कि यह पूरी मानवता के लिए खतरा है और जापान सरकार ने किसी प्रकार का विस्फोट किया जहाँ ज्वालामुखी फट रहे थे। मुझे यह समाचार ठीक से समझ नहीं आया। कृपया स्पष्ट करेंगे?

उत्तर: सुनिए, शास्त्रों में लिखा है कि मनुष्य अपने ही कर्मों से अपना विनाश स्वयं आमंत्रित करेगा। वैज्ञानिक अच्छे विकास भी करते हैं, जैसे दवाइयाँ बनाना और तकनीक को आगे बढ़ाना, जो समाज के लिए अच्छा है। पर कई बार वे ऐसी चीजें भी आविष्कार करते हैं और ऐसे प्रयोग करते हैं जो हमारी अपनी पृथ्वी को नष्ट करें और मानवता को कष्ट पहुँचाएँ। ऐसे कार्य करके मनुष्य अपना विनाश स्वयं आमंत्रित करता है। फिर भी, हर युग में भगवान ने इस पृथ्वी को क्षुद्रग्रहों और धूमकेतुओं जैसी बड़ी विपत्तियों से बचाया है। आने वाले समय में भी भगवान पृथ्वी की रक्षा करेंगे; मनुष्य इसे नष्ट नहीं कर पाएगा। पर वे जो छोटे-छोटे कार्य करते हैं, उनसे मानव समाज के लिए आंशिक विपत्तियाँ अवश्य आएँगी। भक्तों के लिए चिंता की कोई बात नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 18:59 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 851 पंडित जी, मलिका लगभग 600 वर्ष पहले लिखी गई थी, जब भारत अखंड था (अखंड भारत)। भारत का विभाजन तो बहुत बाद में हुआ। तो मलिका इस विषय में क्या कहती है? क्या पाकिस्तान और बांग्लादेश के नाम उसमें हैं? क्या विभाजन के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: मलिका में बांग्लादेश का उल्लेख है। जब यह लिखी गई थी, तब हमारा देश स्वतंत्र नहीं था। लिखा है कि पाकिस्तान भारत से अलग होगा। यह भी लिखा है कि भारत की एक भावी प्रधानमंत्री, इंदिरा गांधी, पाकिस्तान से बांग्लादेश के अलग होने में सहायक होंगी। इसके अतिरिक्त, मलिका अखंड भारत का वर्णन करती है, जिसमें अफ़ग़ानिस्तान, बलूचिस्तान, पाकिस्तान, चीन और म्यांमार सम्मिलित होंगे। यह सब लिखा हुआ है। तो, मलिका में सब कुछ लिखा है; यह भगवान की वाणी की धारा है। कुछ भी छूटा नहीं है; पूरे विश्व के बारे में लिखा है। वह समय आएगा जब अखंड भारत पुनः बनेगा, परंतु उसे भगवान बनाएंगे, भगवान कल्कि बनाएंगे। कोई मनुष्य यह नहीं कर पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:32 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 852 मेरा प्रश्न यह है कि संघर्ष कब आरंभ होगा? आपने 2022, 23, 24 वर्षों का उल्लेख किया था।

उत्तर: यह तो 2019 में ही आरंभ हो चुका है, और इसकी शुरुआत जगन्नाथ क्षेत्र से हुई। एक बहुत बड़ा चक्रवात (फ़ानी) आया, जिसने उस पावन नगरी में तबाही मचा दी। कल्पवट वृक्ष की डाल टूट गई, जगन्नाथ मंदिर में पानी भर गया, और भगवान की ध्वजा फट गई। पूरी पुरी नगरी एक से दो महीने तक वीरान रही। यह आपदा सबसे पहले जगन्नाथ की पावन भूमि पर आई, और उसके बाद महामारी आई। तो, 2019 के उसी समय से धर्म संस्थापना का पहला तीन वर्षीय चरण आरंभ हुआ, जिसमें 2019, 2020 और 2021 आते हैं। फिर 2022 से दूसरा तीन वर्षीय चरण चलेगा। धर्म संस्थापना का यह कार्य चल रहा है और और तीव्र होगा। आगे चलकर ऐसी समस्याएँ खड़ी होंगी कि लोगों को समझ आएगा कि धन का कोई मूल्य नहीं है। उस समय आप सब देखेंगे कि भगवान की शक्ति कितनी महान है, और आपके पड़ोसी आश्चर्य करेंगे कि आप सुरक्षित क्यों हैं जबकि वे संकट में हैं। इसीलिए हम आपको यह ज्ञान देते हैं, और यह आपका दायित्व है कि आप अच्छे लोगों और संतों को सनातन धर्म के इस मार्ग पर लेकर आएँ।

► यह उत्तर सुनें · 23:34 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 853 कुछ दिन पहले मैंने संत बेतरा नाम के एक संत या ज्योतिषी को देखा। उन्होंने भविष्यवाणी की कि वर्ष 2034-44 तक हिंदुत्व पूरे विश्व में फैल जाएगा। उन्होंने कहा कि हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री, श्री मोदी, सत्ता योगी आदित्यनाथ को सौंप देंगे। उसके बाद उनका शासन आरंभ होगा, और अखंड भारत एक हिंदू राष्ट्र बनेगा। उन्होंने कहा कि योगी जी हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को आगे बढ़ाएंगे, और नरेंद्र मोदी इससे पहले के अंतिम प्रधानमंत्री हैं। इस पर आपका क्या मत है?

उत्तर: मैंने इस विषय पर पहले एक एपिसोड बनाया है। मलिका कहती है कि एक ऐसा व्यक्ति जो योगी और संन्यासी है, भारत का राजा बनेगा। उसके बाद सैन्य आपातकाल आएगा, अर्थात् सेना का शासन। और उसके बाद रूस शासन करेगा; भारत में रूस का शासन होगा। यही मलिका में लिखा है। वर्तमान प्रधानमंत्री योगी हैं, और आप जिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की बात कर रहे हैं, वे भी योगी हैं। मैं इससे आगे कोई टिप्पणी नहीं करूँगा; यह भगवान की इच्छा है। परंतु लिखा यही है। उसके बाद हमारे देश पर देश के बाहर से शासन होगा। मलिका यह भी कहती है कि जब कलियुग बदल रहा होगा, तब ग्रहों की स्थिति स्थिर नहीं रहेगी, और ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ सटीक नहीं होंगी और न ही स्पष्ट दिशा देंगी। उस समय भगवान कल्कि की लीला विश्व में धर्म की स्थापना करेगी, जो अभी से हो रहा है। आने वाले युग में राजतंत्र होगा, लोकतंत्र नहीं। जैसे भगवान कृष्ण ने पांडवों को सम्राट बनाया, वैसे ही भगवान कल्कि राजा बनेंगे और अपने भक्तों को भी राजा बनाएंगे। राजा वोट से नहीं चुना जाएगा; 2029 के बाद लोकतंत्र नहीं रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:39 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 854 इतिहास बताता है कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस जीवित हैं और उनकी मृत्यु नहीं हुई। अनेक कथाएँ हैं: कि वे परमाणु विस्फोटों से बच गए, कि मेरे पिताजी 80 के दशक में उनसे मिले थे, कि उन्हें प्रधानमंत्री शास्त्री के साथ खड़े देखा गया था, और यह कि उनकी मृत्यु का आधिकारिक वृत्तांत एक षड्यंत्र है। मेरे पिताजी तो भगवान कल्कि का ध्यान करते समय नेताजी का चेहरा भी देखा करते थे। मैं आपसे यह स्पष्टता चाहता था कि क्या ये बातें सत्य हैं।

उत्तर: देखिए, आप जो प्रश्न पूछ रहे हैं, वह विवादास्पद भी है और गोपनीय भी। मलिका में नेताजी सुभाष बोस के बारे में लेख अवश्य है। लिखा है कि वे भगवान के भक्त हैं। उनके बारे में और क्या लिखा है, यह मैं प्रकट नहीं करूँगा क्योंकि वह विवादास्पद होगा, और यह एक रहस्य है जिसके बारे में बोलना उचित नहीं। धर्म संस्थापना के समय सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। जब भगवान कल्कि अपने सभी भक्तों को सुधर्मा सभा (दिव्य सभा) के लिए बुलाएंगे, तब भक्तों को पता चलेगा कि कौन कौन है और कहाँ है। उस समय भारत की जनसंख्या लगभग 130 करोड़ होगी, परंतु संचार के साधन बहुत कम होंगे, इंटरनेट नहीं होगा। इसलिए इन बातों पर मेरा बोलना उचित नहीं है। बस इतना समझ लीजिए: उनके बारे में लिखा है, उनकी वीरता के बारे में लिखा है, और यह कि वे भगवान की भक्ति में हैं। बाकी विवरणों पर मैं चर्चा नहीं करूँगा क्योंकि वे अत्यंत विवादास्पद और गोपनीय हैं। यदि हम जीवित रहे, तो आने वाले समय में आपके मन में जो बातें हैं, उनका प्रमाण आप देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:15 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 855 इस सत्संग से जुड़े लोगों की इस संसार में आगे चलकर क्या भूमिका होगी?

उत्तर: जो लोग इस सत्संग में हैं, जो सनातन धर्म के प्रसार के इस कार्य का हिस्सा हैं—यह सत्संग '16 मंडलों' के निर्माण के लिए हो रहा है। यह सभा इन मंडलों के निर्माण हेतु भक्तों को एकत्र करने के लिए है, जैसे कालिका मंडल, द्वारिका मंडल, अयोध्या मंडल, इत्यादि, जिनका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ। यही मार्ग मानवता को बचाएगा। एक समय ऐसा आएगा जब एक लाख लोगों के नगर में केवल एक-दो हज़ार ही बचेंगे, और हमारे लोग—जो उस मार्ग पर चलते हैं जिसका हम वर्णन करते हैं—उन्हीं में होंगे। आपकी भूमिका है इन 16 मंडलों के निर्माण में सहयोग करना और उन भक्तों को बचाना जो नकली गुरुओं और ढोंगियों के चंगुल में फँसे हैं, और उन्हें भगवान कल्कि के मुख्य मार्ग पर लाना। आप सबको मिलकर नए युग का आरंभ करने के लिए कार्य करना है। भगवान कल्कि धर्म की स्थापना करेंगे, और भक्त धर्म का संदेश फैलाएंगे। यही कार्य आप सबको करना है। यही हमारे भक्तों की मुख्य और सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है।

► यह उत्तर सुनें · 36:54 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 856 इस कलियुग में, हम भगवान की चाहे जितनी प्रार्थना करें, मन बहुत तनावग्रस्त रहता है और अधर्म की ओर भटक जाता है। मन में लगातार बुरे विचार आते रहते हैं। इससे कैसे बचें और अपने दुष्ट मन को वश में कैसे करें?

उत्तर: देखिए, जब भी कोई धर्म का कार्य करने का प्रयास करता है, बाधाएँ आती हैं। विशेषकर कलियुग के प्रभाव के कारण ऐसा होता है। यह केवल आपके साथ नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के साथ होता है जो धर्म के मार्ग पर चलता है और सत्संग में आता है। निरंतर भगवान के मार्ग पर बने रहने से परिवर्तन होगा। बुरी भावनाएँ, चिंताएँ और नकारात्मक (तामसिक) प्रवृत्तियाँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाएँगी। यह तब तक होता रहेगा जब तक आपका मन पूर्ण रूप से और सर्वथा भगवान विष्णु के चरणों में समर्पित न हो जाए।

► यह उत्तर सुनें · 40:17 · 16 जनवरी 2022

प्रश्न 857 प्रभुजी, आपने एक बार कहा था कि क्षीर सागर को पृथ्वी पर लाया जाएगा। वह कब होगा? और कृपया हमें 'ब्रह्म अक्षर मंत्र' के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: देखिए, क्षीर सागर जो वैकुंठ में है... जब भगवान कल्कि दर्ज क्षेत्र में सुधर्मा सभा (दिव्य सभा) का आयोजन करेंगे...

► यह उत्तर सुनें · 42:10 · 16 जनवरी 2022

सत्र 43 · प्रश्न 858–879

L41 सत्य-न्याय के पुनः उद्धार के लिए, कल्कि भगवान धरावतरण कर चुके हैं। LIVE

दिनांक: 20 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 858 कलियुग का अंत कैसे होगा, और यदि कलियुग अभी समाप्त ही नहीं हुआ तो भगवान अवतार कैसे लेंगे?

उत्तर: कलियुग के अंत और भगवान के अवतार को समझने के लिए हम केवल एक ग्रंथ पर निर्भर नहीं रह सकते। हमें अनेक पवित्र ग्रंथों का अध्ययन करना होगा और उनका मिलान करना होगा। इनमें अठारह पुराण, श्रीमद्भागवत, श्रीमत् महाभारत, वायु पुराण, मनुस्मृति, सूर्य सिद्धांत जैसे अन्य शास्त्र, और सबसे महत्वपूर्ण, पवित्र भविष्य मलिका सम्मिलित हैं, जो चारों वेदों और अठारह पुराणों का सार है। इन सभी ग्रंथों को एक साथ देखने पर ही हमें कलियुग के अंत और अवतार के विवरण की स्पष्ट समझ मिल सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 02:44 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 859 प्रभु, कलियुग कब समाप्त होगा और आप कब अवतार लेंगे?

उत्तर: भगवान ने गरुड़ से कहा कि कलियुग के 5,000 वर्ष बीत जाने के बाद कुछ संकेत प्रकट होंगे। एक संकेत है चंद्रमा के पास एक तारे का दिखाई देना, जिसे लोगों ने 2005 में एक-दो महीने तक देखा था। दूसरा संकेत भगवान जगन्नाथ की चलंती प्रतिमा, अर्थात् पुरी के ठाकुर राजा से संबंधित है। राजा के 40वें 'अंक' (राज्यकाल गणना की एक पद्धति) के बाद भगवान कल्कि का अवतार हो चुका होगा। मलिका यह स्पष्ट रूप से कहती है। ये दोनों संकेत पहले ही घटित हो चुके हैं: चंद्रमा के ऊपर तारा प्रकट हो चुका है, और ठाकुर राजा का 40वाँ अंक भी बीत चुका है। मलिका के प्रमाण के अनुसार, भगवान अवतार ले चुके हैं, और कलियुग का अंत आ पहुँचा है।

► यह उत्तर सुनें · 06:06 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 860 प्रभु, भक्तों को आपके अवतार के बारे में कैसे पता चलेगा?

उत्तर: सबको पता नहीं चलेगा। जो लोग सांसारिक भोग-विलास, इंद्रिय-सुख और धन कमाने में डूबे हुए हैं, वे मुझे नहीं पा सकेंगे। वे इसके अधिकारी नहीं हैं। केवल वे आत्माएँ जो गोलोक वैकुंठ से आई हैं—वे देवता और भक्त जिन्होंने पृथ्वी पर जन्म लिया है—वे ही मलिका के माध्यम से मेरे बारे में जानेंगे। वे बच जाएँगे और धर्म संस्थापना के कार्य में मेरे साथ जुड़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 08:02 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 861 आपने एक बार कहा था कि जो लोग आपसे जुड़ते हैं और भविष्य मालिका का अनुसरण करते हैं, वे गोलोक से आई हुई आत्माएँ हैं। क्या हम सब उन्हीं में से हैं?

उत्तर: यह बिल्कुल सत्य है, और मालिका में भी यही लिखा है। उसमें कहा गया है कि मालिका किसी न किसी माध्यम से केवल उन्हीं भक्तों तक पहुँचेगी जो भगवान के गोलोक से आए हैं। उन्हें आध्यात्मिक अनुभव और अनुभूतियाँ होंगी। वे भगवान को खोजेंगे, उनकी धारा में रहेंगे, और सत्य युग में जाएँगे। मालिका में लिखा है कि वे वास्तव में गोलोक के भक्त ही हैं। इसीलिए मैं यह बार-बार कहता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 21:45 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 862 मैं एक वर्ष से आपके साथ हूँ। इससे पहले मैं अज्ञानी था और मैंने पाप किए। क्या मुझे उसका कर्मफल भोगना पड़ेगा?

उत्तर: सुनिए, जो पाप व्यक्ति अज्ञानवश करता है, वे क्षमा किए जा सकते हैं। परंतु जानबूझकर किए गए पाप अपराध माने जाते हैं, और वे क्षमा नहीं होते। लेकिन एक उपाय है। जो भक्त उस मार्ग का अनुसरण करते हैं जो मैं बताता हूँ—त्रिसंध्या (दिन में तीन बार प्रार्थना) करना और श्रीमद्भागवत का पाठ करना—उनके पूर्व संचित कर्म धीरे-धीरे धुलते और शुद्ध होते जाएँगे। वह कर्म टूट जाएगा, और शुभ कर्म आपके भाग्य का हिस्सा बन जाएगा। इसमें कुछ समय लगेगा, पर वह चला जाएगा और आप पवित्र हो जाएँगे। चिंता मत कीजिए। आज से ही आरंभ कीजिए और फिर कभी गलत मत कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 22:53 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 863 मैं पूछना चाहता हूँ, क्या भगवान कल्कि पहले ही पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं, और क्या उन्होंने पापियों के विनाश के लिए अपने अनुयायियों को पूरी तरह तैयार कर लिया है?

उत्तर: देखिए, शास्त्रों के अनुसार भगवान का अवतार हो चुका है, और धर्म की स्थापना चल रही है। भक्तों की रक्षा होगी, और 16 'मंडल' (दिव्य क्षेत्र) बनेंगे। एक ओर धर्म की स्थापना होगी, और दूसरी ओर पापियों का विनाश होगा। यह विनाश इतना तीव्र हो जाएगा कि एक समय ऐसा आएगा जब अंतिम संस्कार करने वाला भी कोई नहीं बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:57 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 864 सुबह के समय मुझे ऐसा अनुभव होता है कि सत्य युग आ चुका है। क्या यह सच है?

उत्तर: यह बिल्कुल सत्य है। सत्य युग का आगमन हो चुका है। इसका पूर्ण प्रभाव अभी समाज पर नहीं फैला है, पर आप जैसे भक्तों पर इसका असर शुरू हो चुका है। इसीलिए आप भागवत पढ़ रहे हैं, त्रिसंध्या कर रहे हैं, धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं, और मालिका का संदेश फैला रहे हैं। यह सत्य युग का प्रभाव है, जिससे पाप का विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:59 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 865 क्या यह सच है, जैसा मालिका कहती है, कि त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) से ऊपर निरंजन हैं, और उनसे भी ऊपर निराकार नाम के एक और देव हैं?

उत्तर: देखिए, भगवान का पहला स्वरूप निराकार था। निराकार से ॐ-ब्रह्म हुए। ॐ-ब्रह्म से भगवान महाविष्णु प्रकट हुए। और महाविष्णु से 24 अवतार, तथा ब्रह्मा जी और शंकर जी आए। इन जटिलताओं में पड़ने के बजाय यह समझिए कि कलियुग का अंत आ गया है। माधव की उपासना कीजिए, क्योंकि माधव स्वयं ही कल्कि होंगे। इस पर ध्यान देना आपके लिए अच्छा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:50 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 866 क्या हाल की घटनाएँ, जैसे टोंगा के पास प्रशांत महासागर में ज्वालामुखी विस्फोट, कलियुग के अंत के संकेत हैं?

उत्तर: हाँ। देखिए प्रशांत महासागर में ज्वालामुखी विस्फोट से क्या हुआ। टोंगा द्वीप तक राहत पहुँचने में पाँच दिन लग गए। बहुत से लोग विस्थापित हुए, बहुत से मरे, और कोई ठीक गिनती नहीं है। बचाव अभियान असफल रहा। एक समय आ रहा है जब ऐसी आपदाएँ दुनिया में हर जगह होंगी, और कोई भी किसी दूसरे की मदद करने की स्थिति में नहीं होगा। देखिए ये घटनाएँ कैसे बढ़ती हैं, और तब आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही निर्णय लिया है कि अपने परिवार की रक्षा के लिए सही मार्ग पर चलें।

► यह उत्तर सुनें · 29:08 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 867 आपने हमें दिन में तीन बार त्रिसंध्या करने का निर्देश दिया है। यदि इसे दिन में केवल एक बार किया जाए, तो क्या वह स्वीकार्य होगा? क्या करना चाहिए?

उत्तर: बहुत सी चीज़ें कलियुग के नियमों के अनुसार की जाती हैं, परंतु सत्य युग के मार्ग में त्रिसंध्या आवश्यक है, अर्थात् दिन की तीन संधियों में उपासना। तीनों संध्याओं में देवी-देवताओं की यह उपासना उन्हें प्रसन्न करती है। जब देवता और भगवान प्रसन्न होते हैं, तो आपको दीर्घायु, तेज और बल का आशीर्वाद मिलता है। इसीलिए इसका विधान है।

► यह उत्तर सुनें · 30:23 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 868 आपने सत्य बोलने और अन्य सिद्धांतों के बारे में भी बताया था। क्या हमें उसके बारे में भी पढ़ना चाहिए?

उत्तर: वह पालन करने के लिए है। उसका पालन करना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 31:16 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 869 आपने 16 मंडलों (दिव्य क्षेत्रों) की बात कही थी। क्या दक्षिण भारत में कोई मंडल नहीं है?

उत्तर: भारत में रामेश्वरम मंडल पूरे दक्षिण भारत को जोड़ेगा। दक्षिण में रामेश्वरम के नाम से एक बहुत बड़ा मंडल बनेगा, जिसकी स्थापना स्वयं भगवान श्री राम करेंगे। दक्षिण से बहुत से भक्त पहले से ही संपर्क में हैं, और वे आगे बढ़ेंगे तथा रामेश्वरम मंडल के माध्यम से धर्म की स्थापना में भाग लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:42 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 870 जब तीसरा विश्व युद्ध शुरू होगा, आपने कहा था कि जापान और अन्य राष्ट्र भारत के साथ होंगे। क्या इज़राइल और ऑस्ट्रेलिया भी भारत के साथ खड़े रहेंगे?

उत्तर: उस समय, भले ही ऑस्ट्रेलिया और इज़राइल अभी हमारे साथ हैं, ऐसी स्थिति बनेगी कि वे नाटो के साथ ही रहेंगे। मैंने यह पहले भी कहा है: जापान, फ्रांस, जर्मनी, और सबसे बड़ी शक्ति रूस भारत की सहायता के लिए होंगे। उस समय इज़राइल और ऑस्ट्रेलिया, नाटो का हिस्सा होने के कारण, उनके साथ होंगे। भले ही वे भारत को मजबूत करने में मदद करना चाहें, पर जिस दबाव और शासन के अधीन वे हैं, उसके कारण वे अमेरिका के साथ काम करने को विवश होंगे और भारत को कोई सहायता नहीं दे पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:22 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 871 जो लोग कार्यालयों या उद्योगों में काम करते हैं, वे त्रिसंध्या कैसे कर सकते हैं, विशेषकर स्नान और स्वच्छता की आवश्यकता को देखते हुए?

उत्तर: जो घर पर हैं, वे अपने पैर धोकर, श्री विष्णु और माँ गंगा का नाम लेते हुए अपने ऊपर थोड़ा जल छिड़ककर प्रार्थना कर सकते हैं। परंतु जो सेवा में हैं—कॉर्पोरेट क्षेत्र में, सरकारी क्षेत्र में, या किसी कंपनी या उद्योग में काम कर रहे हैं—उनके लिए स्नान या शुद्धिकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। आप जहाँ कहीं भी हों, बस पाँच मिनट के लिए, हृदय से, मन ही मन अवतारों के नाम का जप करें—मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और भगवान कल्कि—और विष्णु के सोलह नाम, दुर्गा-माधव स्तुति। इतना ही पर्याप्त है।

► यह उत्तर सुनें · 38:03 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 872 क्या जूते उतारना आवश्यक है, या प्रार्थना जूते पहने हुए भी की जा सकती है?

उत्तर: यदि आपके पास जूते उतारने की सुविधा है, तो अवश्य उतारें। अन्यथा, अपनी परिस्थिति के अनुसार करें। मन और हृदय की पवित्रता ही सबसे बड़ी पवित्रता है। इस आंतरिक पवित्रता के बिना और किसी बात का कोई महत्व नहीं। यदि आपका मन शुद्ध है और आप भगवान के शरणागत हैं, तो वही मायने रखता है।

► यह उत्तर सुनें · 38:57 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 873 आने वाले समय में ज्योतिष और ग्रहों की भविष्यवाणियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: सारा ज्योतिष विफल हो जाएगा। ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ सच नहीं होंगी। ग्रह और नक्षत्र सभी परिवर्तन की स्थिति में हैं। भगवान ने उनकी स्थितियाँ बदलने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। इसलिए वे सही फल नहीं दे पा रहे हैं, और आने वाले समय में यह प्रभाव और भी अधिक स्पष्ट होगा। उदाहरण के लिए, सूर्य की किरणें संसार के कल्याण के लिए हैं, परंतु अब वे कैंसर का कारण बनती हैं। भविष्य में सूर्य से निकलने वाली किरणें कंप्यूटर और समस्त तकनीक को नष्ट कर देंगी। यह समय आ रहा है, जिसका अर्थ है कि परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है।

► यह उत्तर सुनें · 39:35 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 874 मैं महाराष्ट्र के भविष्य के बारे में जानना चाहता हूँ, विशेषकर मुंबई और पुणे जैसे बड़े शहरों के, जहाँ धर्म के साथ-साथ बहुत अधर्म भी हो रहा है। उनकी क्या स्थिति होगी?

उत्तर: मुंबई और महाराष्ट्र भगवान गणपति का क्षेत्र है, इसीलिए इस राज्य को अच्छी जलवायु, जल, धन और समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त था। परंतु एक समय आ रहा है, और आ चुका है, जब भगवान गणपति महाराष्ट्र छोड़ चुके हैं। उन्होंने धर्म की स्थापना का अपना कार्य आरंभ करने के लिए अपना स्थान छोड़ दिया है। इसलिए संपूर्ण महाराष्ट्र क्षेत्र को बड़े पैमाने पर बाढ़, भूकंप, सांप्रदायिक समस्याओं, दुःख, महामारी और रोगों का सामना करना पड़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:33 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 875 मेरी बेटी के ससुराल वाले पूर्णिमा और अमावस्या के दिनों में हमारे विरुद्ध नकारात्मक अनुष्ठान करते हैं। अपनी रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: माता जी, कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। संसार में किसी के पास कितनी भी शक्ति या सामर्थ्य क्यों न हो, वह एक भक्त का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं आपको इस बात से अवगत कराना चाहता हूँ। भगवान माधव पर पूर्ण विश्वास रखें। जैसे हनुमान जी को श्री राम पर विश्वास था, और पांडवों को श्री कृष्ण पर विश्वास था, वैसे ही आपको दृढ़ विश्वास रखना है और माधव का नाम जपना है। हर रविवार अपने घर में सत्संग करें। ऐसे कर्म करने वाले ये पापी लोग अपने अंत को प्राप्त होंगे; उन्हें विनाश से कोई नहीं बचा सकता। जो भक्तों को कष्ट देते हैं, उनके लिए—माधव पर पूर्ण विश्वास रखें। यदि आपका विश्वास पूर्ण है, तो भगवान समुद्र को भी सुखा सकते हैं। ऐसी शक्ति है उनके नाम में।

► यह उत्तर सुनें · 43:25 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 876 मैंने फेसबुक पर पढ़ा कि भविष्य मालिका में कहा गया है कि भगवान कल्कि के पिता आरंभ में ही चल बसेंगे, और फिर भगवान कठोर तपस्या करेंगे। क्या ऐसा वास्तव में उल्लेखित है?

उत्तर: देखिए, मालिका में जो कुछ लिखा है, उसका संपूर्ण और सच्चा अर्थ मानव समाज नहीं समझ सकता। धर्म की स्थापना कैसे होगी, यह जटिल है। चिंता करने योग्य ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। धर्म की स्थापना अपने समय के अनुसार होगी, और भगवान की इच्छा के अनुसार होगी। आप सब बस अपने कर्म, धर्म और परंपरा के मार्ग का पालन करें। ऐसा करने से आप सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:11 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 877 गुप्त नवरात्रि आरंभ हो रही है। क्या इस समय की गई साधना का अधिक फल मिलेगा, या सामान्य जैसा ही रहेगा? हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: इस युग में ऐसी विशेष साधनाओं का कोई विधान नहीं है। कलियुग में विहित विधियाँ हैं—भगवान के नाम का भजन, कीर्तन और दान। इसके अलावा, कलियुग समाप्त हो रहा है और सत्ययुग आ चुका है। इसलिए जो मार्ग दिखाया गया है, उसके अतिरिक्त आपको किसी अन्य साधना की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सभी देवी-देवता पहले ही पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। भगवान का अवतार हो चुका है। धर्म स्थापना के इस समय में साधना, तंत्र और मंत्र जैसी क्रियाओं का कोई फल नहीं मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:30 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 878 हम जम्मू-कश्मीर से हैं। क्या हमें कोई समस्या का सामना करना पड़ेगा? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, जब भगवान की कृपा आप पर है, तो कुछ भी आपका अहित नहीं कर सकता। धर्म स्थापना का युग चल रहा है। जैसे महाभारत युद्ध में भगवान ने एक छोटी-सी चिड़िया को बचाया था, वैसे ही वे आपको बचाएँगे। आपका उद्धार होगा। कोई समस्या नहीं है, डरने की कोई बात नहीं है। भक्तों के लिए भय का कोई वातावरण नहीं है। बस नियमों और विधियों का अनुशासन के साथ पालन करें। भविष्य में जो कुछ आवश्यक होगा, भगवान मार्गदर्शन करेंगे, और मैं भी आपको बताऊँगा। आप अपना कार्य करते रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:47 · 20 जनवरी 2022

प्रश्न 879 मेरे पिताजी कभी-कभी अपने नित्य कर्म करने में देर कर देते हैं। उन्हें क्या करना चाहिए?

उत्तर: यदि समय थोड़ा आगे-पीछे हो जाए, तो वे तब कर सकते हैं। उन्हें प्रयास करते रहना चाहिए, और भगवान की कृपा से सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 56:11 · 20 जनवरी 2022

सत्र 44 · प्रश्न 880–898

L42 राजा बहुत अन्याय करेंगे, बहुत लोगों की मौत होगी। --कलियुग अंत के प्रमाण-- LIVE

दिनांक: 23 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 880 पिताजी, मुझे भगवान के दर्शन कैसे हो सकते हैं?

उत्तर: आप जो कर्म करते हैं, जो प्रेम आपके भीतर है, जो आचरण आप रखते हैं—वही स्वयं भगवान को देखने और उनके दर्शन प्राप्त करने का मार्ग है। यदि आप ऐसी भक्ति में रहते हैं, त्रिसंध्या (तीनों समय की प्रार्थना) करते हैं और इस मार्ग का पालन करते हैं, तो आपको स्वप्न में भी भगवान के दर्शन हो सकते हैं, या जाग्रत अवस्था में भी, और आप उन्हें कहीं भी अनुभव कर सकते हैं। देखिए, भगवान से मिलने का सबसे बड़ा मार्ग भक्ति है। और हममें भक्ति कैसे उत्पन्न होगी? जब हमारा आहार सात्विक (शुद्ध) हो और वह शास्त्र हो जो सच्चे ज्ञान को प्रकाशित करता है, जो सबसे बड़ा शास्त्र है—इसे भगवान द्वारा दिया हुआ मानिए, भगवान के मुख से निकले साक्षात वचन। आप उसे पढ़ रही हैं। यह आपको भगवान से जोड़ेगा, और यह आपके जीवन के मार्ग को पूर्णतः धर्म की दिशा में ले जाएगा। इस जीवन में जो ऐसे मार्ग पर चलते हैं, वे सबसे भाग्यशाली हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके पास धन नहीं है या उन्हें दो समय का भोजन भी नहीं मिलता; फिर भी वे संसार में सबसे भाग्यशाली हैं। क्योंकि अगले जीवन के लिए, इस जीवन से अगले जीवन तक, हम अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयास आरंभ कर रहे हैं। इसके लिए आपको भगवान का आशीर्वाद मिलेगा, माता जी। समय आने पर सब कुछ होगा। धैर्य रखें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:23 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 881 बहुत से भक्त अपने आध्यात्मिक अनुभव साझा करते हैं। मैं एक वर्ष से आपसे जुड़ा हूँ, पर मुझे कोई अनुभव नहीं हुआ। जो भी ज्ञान मुझे है, वह केवल बौद्धिक स्तर पर है; भावनात्मक स्तर पर कोई अनुभूति नहीं होती। आप जो भी बताते हैं, मैं सब करने का प्रयास करता हूँ, तो मैं इससे सच्चे अर्थों में कैसे जुड़ूँ?

उत्तर: ठीक है, आप सब कुछ करते हैं। देखिए, जिसमें जितनी अधिक भक्ति होती है, भगवान उसकी उतनी ही अधिक परीक्षा लेते हैं। जिसमें अधिक भक्ति है, प्रभु उसकी अधिक परीक्षा लेते हैं। इसका अर्थ है कि धैर्य का फल, प्रतीक्षा का फल मीठा होगा। एक समय आएगा जब आपको बहुत बड़ी प्रगति प्राप्त होगी, ऐसी अनुभूति होगी जो संसार में बहुत कम लोगों को मिलती है। आपको भी वैसी अनुभूति होगी, पर समय की प्रतीक्षा कीजिए। सब ठीक हो जाएगा। सब कुछ अपने समय पर आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:18 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 882 माधव जी, आपने 24, 94 और 99 अंकों के बारे में तथा उस संदर्भ में उनके स्वरूप के बारे में कुछ कहा था। कृपया उस पर विस्तार से बताएँगे?

उत्तर: भगवान ने जिन अंकों का उल्लेख किया — 24, 94, 99... 99 का कार्य हो चुका है। और 24 तथा 94 के विषय में... हाँ, 294... इन दोनों अंकों का कार्य धर्म संस्थापना से जुड़ा हुआ है। जो कार्य धर्म संस्थापना के समय के अनुकूल था, वह पूर्ण हो चुका है। और 26 अंक के साथ भारत के लोग उसका प्रतिबिंब देखेंगे। हाँ, और भगवान ने समय से पहले ही आपको इस बारे में बता दिया, और समय आने पर वे और भी प्रकट करेंगे। इसे अपने मन में रखिए। समाचार अच्छा था।

► यह उत्तर सुनें · 24:25 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 883 आज के विद्यार्थियों को लेकर मेरा आपसे एक प्रश्न है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बारे में आप जानते हैं। यह विद्यार्थियों को जिस प्रकार की शिक्षा देती है, उससे उनका झुकाव हमारी आध्यात्मिक विचारधारा की ओर नहीं होता। तो हम उनके लिए क्या करें कि उनके मन में कुछ आध्यात्मिक विचार जागें? कृपया हमारा मार्गदर्शन करें।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, हम Kali Yuga में हैं, इसलिए इस युग की शिक्षा व्यवस्था अध्यात्म और संस्कृति से कुछ दूर है। भारत में फिर भी कुछ बेहतर स्थिति है, पर विदेशों में तो कोई नियम ही नहीं है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सरकार कुछ परिवर्तन लाने जा रही है। दूसरी बात, हमारे बच्चों के पहले गुरु उनके माता-पिता होते हैं। जब आप श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, प्रार्थना करते हैं और भगवान का नाम जपते हैं, तो मेरा विनम्र निवेदन है कि अपने बच्चों को भी उसमें सम्मिलित कीजिए। उन्हें साथ जोड़ने से वे भी संस्कारी बनेंगे। आप देखेंगे कि उनके आचरण और कर्मों में परिवर्तन आएगा। विद्यालय में दिए गए संस्कार का प्रभाव होता है, पर पारिवारिक जीवन में दिए गए संस्कार का प्रभाव कहीं अधिक होता है। बच्चों को दो-तीन वर्ष की आयु से ही संस्कार देना आरंभ कीजिए। जो बड़े बच्चे नौकरी कर रहे हैं, उन्हें भी जोड़ने का प्रयास कीजिए। साथ जुड़ने से, शास्त्रों का अध्ययन करने से, भागवत पढ़ने से, Trisandhya करने से और नाम जपने से उनका चरित्र भी बदलेगा। आज के युवा दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं, बीमार पड़ते हैं, बुरी संगति में पड़ जाते हैं। उन्हें बदलने का केवल एक ही उपाय है। उन्हें अध्यात्म की इस धारा में लाइए। जब आप साधना करें, उन्हें भी सम्मिलित कीजिए। कम से कम एक बार घर में सत्संग कीजिए। यह आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 27:06 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 884 गुरुजी, मैं दिल्ली से राहुल बोल रहा हूँ। कल मेरा जन्मदिन है, तो मैं आपका आशीर्वाद चाहता था।

उत्तर: मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। देखिए, जन्मदिन मनुष्य को याद दिलाता है कि आप अकेले आए थे, और भगवान ने आपको इस धरती पर भेजा था। सदा स्मरण रखिए कि आपको कभी धर्म और सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होना है। उस दिन भगवान के श्रीचरणों में नाम-जप, कीर्तन और भक्ति कीजिए। अपने माता-पिता की पूजा कीजिए। और यदि आपके पास कुछ साधन हैं, तो उसे पशुओं, निर्धनों और दुखियों में बाँटिए। लोग जन्मदिन पर केक काटते हैं, पर अपने ही कल्याण के लिए हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए जिसके पास कुछ नहीं है। उनकी प्रसन्नता से हमें भगवान की कृपा मिलेगी, और जन्मदिन सार्थक हो जाएगा। दूसरी बात, हर जन्मदिन एक पड़ाव है। यदि मनुष्य की आयु 70 वर्ष है, तो एक वर्ष बीत गया। समय बीतता जा रहा है। हमें इस थोड़े से समय में सत्कर्म करके भगवान के पास लौटना है। जन्मदिन की शुभकामनाएँ। भगवान आपको आशीर्वाद दें। आपका तन, मन और धन संसार में आध्यात्मिक संस्कृति, पवित्रता और वैदिक मार्ग के प्रसार में लगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:29 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 885 पिताजी, मैं आपको एक स्वप्न बताना चाहती हूँ और उसका अर्थ समझना चाहती हूँ। मैंने देखा कि मैं अपने घर में झाड़ू लगाने जा रही थी और मुझे दो झाड़ू दिखीं। एक सामान्य प्रकार की थी, और दूसरी पूरी तरह काली थी। मैं असमंजस में थी। तभी पीछे से एक आवाज़ ने कहा, 'वही झाड़ू उठाओ जो सामान्यतः प्रयोग होती है।' तो मैंने वही उठाई और घर साफ किया। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: हम सामान्यतः जो झाड़ू प्रयोग करते हैं, वह अधिकतर सफेद रंग की होती है। आपने जो दूसरी देखी वह काली थी, क्योंकि वह पाप का प्रतीक है। भगवान ने आपसे कहा कि यदि आप पाप की झाड़ू पकड़ेंगी, तो आपके जीवन में पाप बढ़ेगा। यदि आप धर्म की झाड़ू से सफाई करेंगी, तो धर्म का प्रकाश फैलेगा। तो यह समझ लीजिए, माता। जय जय माँ।

► यह उत्तर सुनें · 33:58 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 886 जय माधव, मैं राजस्थान से बोल रही हूँ। दो दिन पहले मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैंने देखा कि माँ काली सबसे उनके कर्मों का हिसाब माँग रही हैं। मुझे याद आया कि आपने कहा था कि जगदम्बा आएँगी और सबके कर्मों के आधार पर उनका भविष्य तय करेंगी। मुझे यही स्वप्न आया था।

उत्तर: देखिए, यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। Bhavishya Malika में लिखा है कि जब युग का अंत होगा, तब माँ महाकाली दुष्टों का संहार करेंगी, पर भक्त भी तो हैं। तो वे भक्तों को कैसे पहचानेंगी? पहले वे उनके स्वप्न में आकर सूचित करेंगी कि वे आ रही हैं, ताकि वे सतर्क हो जाएँ। केवल आप ही नहीं, हज़ारों भक्तों को ऐसे स्वप्न आते हैं जिनमें जगदम्बा उन्हें दिखाती हैं कि आगे क्या होने वाला है। तो जो Madhava का नाम जपते हैं, जो Trisandhya का अभ्यास करते हैं, जो भागवत पढ़ते हैं, और विशेष रूप से जो सुधर्म संघ तथा सत्य सनातन धर्म के संगठनों में कार्य करते हैं, जगदम्बा उनका अहित नहीं करेंगी। स्वप्न के माध्यम से उनकी पहचान स्थापित होगी। पर पापियों का संहार होगा। उन्हें वे कोई दर्शन नहीं देंगी। उनका विनाश अचानक और अदृश्य रूप से होगा। इसलिए चिंता मत कीजिए। आप सब धर्म का पालन करते हुए कार्य कर रहे हैं। जो होना है वह देवी की कृपा से होगा। जय महादेव।

► यह उत्तर सुनें · 35:35 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 887 जय श्री माधव, मैं दिल्ली से संजय बोल रहा हूँ। मुझे स्वप्न आया कि मेरे पिताजी मृत्युशय्या पर हैं, अंतिम क्षणों में, पर उनका देहांत अभी नहीं हुआ था। फिर मैंने देखा कि सब उन्हें छोड़कर अंतिम संस्कार की क्रियाओं में लग गए और मुझे पीछे छोड़ दिया। रात के 2 बजे थे। मैं सोच रहा था कि इस स्वप्न का क्या अर्थ है।

उत्तर: आने वाले समय में, जैसा Bhavishya Malika में लिखा है, जब लोग मरेंगे तो उनका अंतिम संस्कार करने वाला कोई नहीं होगा। उसके साधन ही नहीं होंगे। लोगों के शव यूँ ही पड़े रहेंगे और पशु उन्हें हटाएँगे। कोई कर्मकांड नहीं होगा, न दाह-संस्कार, न समाधि (संतों के लिए भू-समाधि)। इनमें से कुछ भी संभव नहीं होगा, क्योंकि ये क्रियाएँ करने के लिए लोग ही उपलब्ध नहीं होंगे। ऐसा ही समय आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:14 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 888 परिवर्तन का समय आ गया है। हम अपने समय और धन का सदुपयोग कैसे करें? भविष्य में बिजली जैसी चीज़ें शायद न रहें, और संपत्ति में किया गया निवेश व्यर्थ हो जाएगा। तो अभी लोगों के पास जो भी साधन हैं, उनका वे कैसे उपयोग करें?

उत्तर: यह बहुत अच्छा और आवश्यक प्रश्न है। इस समय हमारा सबसे बड़ा कर्म यह होना चाहिए कि हम सादा जीवन जिएँ। प्रतिदिन गरिष्ठ भोजन न करें; सादा, शाकाहारी भोजन करें। दूसरी बात, खर्च के विषय में — यदि आप महीने में ₹1000 खर्च करते हैं, तो ₹200 अलग रखिए जिससे ज़रूरतमंदों में बाँट सकें — चाहे वे लोग हों या पशु। एक समय आ रहा है जब सारे वाहन व्यर्थ हो जाएँगे क्योंकि न डीज़ल होगा न पेट्रोल। इसलिए धर्म के वाहन में बैठिए। उस मार्ग पर चलिए और कुछ दान-पुण्य कीजिए। साथ ही अपना काम भी करते रहिए और आजीविका कमाइए। अपनी कमाई में से थोड़ा दान कीजिए, चाहे एक रुपया ही क्यों न हो। ज़रूरतमंद को देना आवश्यक है। जो समय आ रहा है, उसमें धन, स्वर्ण, रत्न और संपत्ति का कोई मूल्य नहीं होगा। सब कुछ बदल जाएगा। इसलिए उससे पहले धर्म के मार्ग पर चलिए और थोड़ा दान कीजिए। धार्मिक कार्य से मेरा अर्थ है सच्चा दान करना, न कि धनी, पाखंडी तथाकथित साधुओं को दान देना, क्योंकि मनुस्मृति के अनुसार वह पाप है। सच्चा धर्म-कार्य कीजिए। यह आवश्यक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:08 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 889 मैं पिछले एक वर्ष से शाकाहारी हूँ। पर कभी-कभी मुझे ऐसी जगहों पर यात्रा करनी पड़ती है जहाँ माँसाहारी भोजन भी बनता है। मुझे लगता है कि भोजन दूषित हो सकता है। ऐसी स्थिति में मैं क्या करूँ? क्या हम ऐसी जगहों पर खा सकते हैं?

उत्तर: जब आप ऐसी जगहों पर जाएँ, तो बस एक बार उन्हें कह दीजिए कि आपको शुद्ध शाकाहारी भोजन चाहिए। कहिए, 'यदि आप दे सकते हैं तो कृपया दीजिए। यदि नहीं दे सकते, और मुझे कुछ अशुद्ध देते हैं, तो पाप आपका होगा, मेरा नहीं।' बस इतना कहकर खा लीजिए। आपको कोई पाप नहीं लगेगा, क्योंकि विवशता को भी देखना पड़ता है। हम मनुष्य-शरीर में हैं, और भोजन आवश्यकता है। रेल या वायुयान की यात्रा के विषय में, जहाँ आपको निश्चय नहीं होता, वहाँ भी आपको खाना तो पड़ेगा। अशुद्ध भोजन करने से शरीर को कष्ट होगा, पर ऐसी विवशता की स्थिति में आपको पाप नहीं लगेगा। आजकल रेलगाड़ियों में ऑनलाइन बहुत से शुद्ध शाकाहारी विकल्प उपलब्ध हैं। वायुयान में देखिए कि और कौन-सी चीज़ें उपलब्ध हैं जिन्हें खाकर आप काम चला सकें। कोई बात नहीं, ऐसी स्थिति में आपको पाप नहीं लगेगा।

► यह उत्तर सुनें · 45:59 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 890 मुझे भारत में होने वाली बड़ी घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है, जैसे जनरल रावत की मृत्यु का। मुझे गहरी उदासी और बेचैनी महसूस होती है। मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? क्या यह अंतर्ज्ञान है? यदि हाँ, तो यह भारत से ही क्यों जुड़ा होता है, जबकि मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ?

उत्तर: देखिए, भक्त, चाहे वे अमेरिका में जन्मे हों या कहीं और, भगवान के आशीर्वाद से इस धरती पर धर्म की स्थापना में सहयोग करने आए हैं। और इन भक्तों को आभास हो जाता है कि आगे क्या होने वाला है। आपकी ही तरह, बहुत से भक्त इसे स्वप्न में देखते हैं या उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। आप संभवतः ऐसी ही एक शुद्ध भक्त हैं। Bhavishya Malika में लिखा है कि भगवान भक्तों को आने वाली घटनाओं की अनुभूतियाँ और अनुभव देंगे। ऐसे लोग संसार में धर्म का प्रसार करेंगे। जो मार्ग मैं बता रहा हूँ उस पर चलिए, और सबसे महत्वपूर्ण, भगवान शिव की उपासना कीजिए। Madhava का नाम जपने से आपकी दृष्टि और भी स्पष्ट हो जाएगी। एक समय आएगा जब नेटवर्क नहीं रहेगा, और हम यह सत्संग नहीं कर पाएँगे। पर जैसे आपको दर्शन हो रहे हैं, वैसे ही बहुत से लोगों को सूचना मिलेगी कि क्या करना है और भक्त कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। संवाद दूसरे ढंग से होगा। अभी तो यह बहुत हल्का प्रभाव है। समय आने पर उन सभी भक्तों को, जिन्हें धर्म संस्थापना के लिए कार्य करना है, ये अनुभूतियाँ होंगी। यह बहुत अच्छा है, माता। इसे बनाए रखिए और धर्म की स्थापना के लिए अपना योगदान दीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 48:12 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 891 मुझे क्या करना होगा?

उत्तर: आपको क्या करना है... जब समय आएगा, तब आपको सब कुछ पता चल जाएगा। अगर मैं अभी सबको ये बातें बता दूँ, तो भ्रम पैदा हो सकता है। भारत में धर्म की स्थापना... कुछ लोग इससे प्रभावित होते हैं, कुछ नहीं होते। जब समय आएगा, तब यह होगा। आपको कुछ विशेष करने की आवश्यकता नहीं है। बस मार्ग पर चलते रहिए और निरंतर माधव के नाम का जप कीजिए। आपको माधव के दर्शन भी होंगे। जब समय आएगा, तब आपको सब कुछ पता चल जाएगा, माताजी। समय की प्रतीक्षा कीजिए और मार्ग पर चलिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 55:35 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 892 जो लोग भारत के बाहर रहते हैं और हिंदी नहीं जानते, वे मालिका तक नहीं पहुँच पाएँगे। उनका उद्धार कैसे होगा? वे न तो माधव का नाम जानते हैं और न ही त्रिसंध्या के बारे में। वहाँ के 31 करोड़ भक्तों का उद्धार कैसे होगा और वे कैसे एकत्र होंगे?

उत्तर: देखिए, जो दिव्य आत्माएँ भारत में जन्मी थीं, उनमें से कुछ जाकर अलग-अलग देशों में बस गई हैं। मालिका का प्रचार इस समय हिंदी में हो रहा है, क्योंकि अंग्रेज़ी के लिए अनुमति नहीं है। लेकिन एक समय आएगा, जब विश्व की जनसंख्या आधी हो जाएगी, तब मालिका का प्रचार और व्यापक रूप से होगा। यूरोपीय, अफ्रीकी और एशियाई देशों में जो धर्मात्मा लोग बचेंगे, उनके लिए उस समय भगवान अंग्रेज़ी में भी मालिका का प्रचार करवाएँगे। पहले महापापियों का विनाश होगा। जब संसार में कम से कम आधे लोग बचेंगे, तब मालिका का प्रचार होगा। जो बदलेंगे, उनका उद्धार होगा। जो नहीं बदलेंगे, उनका भाग्य प्रभु तय करेंगे। समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 56:39 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 893 मैं बेंगलुरु से अंबे बोल रही हूँ। मेरा प्रश्न यह है कि आजकल कई राज्यों में हमारे हिंदू मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। यह देखकर बहुत पीड़ा होती है। इसका क्या संकेत है? यह बहुत दुखद है कि केवल हिंदू मंदिरों को ही निशाना बनाया जा रहा है।

उत्तर: यह बिल्कुल सही है। जब हमारे देश में ऐसा होता है तो बहुत पीड़ा होती है। 100 करोड़ से अधिक हिंदुओं के राष्ट्र में, हमारे मंदिरों के लिए कोई प्रत्यक्ष संवैधानिक संरक्षण नहीं है। वर्तमान सरकार के पास संविधान संशोधन करने की क्षमता और संख्या दोनों हैं, लेकिन ऐसा कोई कानून नहीं बनाया गया। यदि किसी विकास परियोजना के मार्ग में कोई मंदिर आता है, तो उचित प्रक्रिया यह है कि आगे बढ़ने से पहले देवता को स्थानांतरित कर पुनः प्राण-प्रतिष्ठा की जाए। लेकिन इसका पालन नहीं किया जाता। सरकार को एक संशोधन लाना चाहिए जिससे यह सुनिश्चित हो कि हिंदू मंदिर सुरक्षित रहें, उचित रूप से स्थानांतरित हों और उनका विकास हो। इसके लिए संसद में एक कानून पारित करने की आवश्यकता है। मैं भारत के सभी संतों और मठाधीशों से भी विनम्र निवेदन करता हूँ कि वे अपनी शक्ति का उपयोग करके हमारे संविधान में यह संशोधन करवाएँ। यदि वे कदम उठाएँ, तो भविष्य में हिंदू समाज को ऐसा दुख नहीं झेलना पड़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 58:23 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 894 मैंने एक मंदिर के पुजारी से बात की कि भगवान का अवतार हो चुका है। उन्होंने कहा कि कलियुग के अभी 4,32,000 वर्ष शेष हैं और लोगों की ऊँचाई बहुत छोटी हो जाएगी। मैंने उनसे कहा कि यह गलत है, लेकिन उन्होंने पलटकर पूछा कि क्या इसका मतलब यह है कि अन्य युगों के लिए बताई गई आयु भी गलत है? मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

उत्तर: देखो, बेटा। श्रीमद्भागवत में यह उल्लेख अवश्य है कि कलियुग के अंत में मनुष्यों की ऊँचाई घट जाएगी। इसमें यह नहीं कहा गया कि उनकी ऊँचाई चने के पौधे जितनी छोटी हो जाएगी। हम भी भागवत पढ़ते हैं; ऐसा कहीं नहीं लिखा है। दूसरी बात, जो लोग 4,32,000 वर्ष के आँकड़े को पकड़े हुए हैं, उनके पास भविष्य मालिका नहीं है। कलियुग के अंत के बारे में दिव्य पुरुषों द्वारा लिखा गया ग्रंथ मालिका है। उनके पास वह ग्रंथ नहीं है, इसीलिए उन्हें पता नहीं है। मालिका कहती है कि बड़े-बड़े योगी भी कलियुग की स्थिति को नहीं समझ पाएँगे। और वही हो रहा है। विनाश आरंभ होगा, और आने वाले समय में वे अपनी बात बदल देंगे। देखिए, केवल भक्त ही जान सकेगा। वे भक्त नहीं हैं, तो उन्हें कैसे पता चलेगा? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई ब्राह्मण है या विद्वान। केवल विनम्र भक्त ही मालिका के बारे में जान पाएँगे, सब नहीं। वे शास्त्रों को ठीक से नहीं पढ़ते और गलत जानकारी देते हैं। हमें उनके बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है। विनाश का चरण चल रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:35 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 895 मेरा एक और प्रश्न है। कई हफ्तों से मेरे पिताजी को बाढ़ के सपने आ रहे हैं, कि इंग्लैंड डूब रहा है, और वे सपनों में नेताजी सुभाष चंद्र बोस को भी देख रहे हैं। इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: देखिए, मालिका में लिखा है कि इंग्लैंड, आयरलैंड और अमेरिका जैसे यूरोपीय देश... इन राष्ट्रों का 70% भाग पानी में डूब जाएगा। केवल 30% ही बचेगा। यह मालिका में लिखा है और यह होने वाला है। यह आपके प्रश्न के पहले भाग का उत्तर है। दूसरी बात, नेताजी सुभाष बोस के संबंध में, उनके बारे में भी मालिका में लिखा है। यह एक विवादास्पद और गोपनीय विषय है, इसलिए हमें इस पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, लेकिन लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:59 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 896 भ्रष्टाचारियों का भविष्य क्या होगा?

उत्तर: यह भ्रष्टाचार भी बढ़ता जा रहा है। इसका अर्थ है कि यह धर्म की स्थापना का समय है। जब सत्ता का दुरुपयोग होता है और वह धर्मात्मा लोगों के अधिकार छीन लेती है, तब भगवान मानवता के लिए हस्तक्षेप करेंगे। बस प्रतीक्षा कीजिए, यह संसार में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:26 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 897 पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण मुझे भागवत पढ़ने का समय नहीं मिलता, इसलिए मैं इसे अपने मोबाइल पर सुनती हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: जब समय आएगा, तो हमें यह शरीर छोड़ना ही पड़ेगा जिसके लिए हम इतनी मेहनत करते हैं। इसलिए कम से कम 10-15 मिनट निकालकर भागवत पढ़िए। सुनना बहुत अच्छा है, लेकिन आपको भागवत पढ़ना भी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:17:48 · 23 जनवरी 2022

प्रश्न 898 मुझे हनुमान जी का सपना आया और मैंने किसी को देखा जो भगवान कल्कि जैसे लग रहे थे, पंडित की तरह 'चोटी' के साथ। सपने में ऐसा संकेत था कि वे भक्तों को 'जनेऊ' देंगे। यह कब होगा?

उत्तर: सुधर्मा सभा में, वे भक्तों का साथ देंगे, और सब ब्राह्मण बन जाएँगे। जनेऊ आपको उसी समय मिलेगा; अभी समय नहीं आया है। प्रभु की कृपा से भक्तों को यह प्राप्त होगा। और दूसरी बात यह है कि इस धर्म संस्थापना के समय में भागवत पढ़ना और माधव के नाम का जप करना बंद मत कीजिए। कोई और देवता आपको नहीं बचाएँगे, क्योंकि मुक्ति देने वाले माधव ही हैं। कोई और नाम काम नहीं आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:53 · 23 जनवरी 2022

सत्र 45 · प्रश्न 899–921

L43 कलियुग अंत होने के 13 प्रमुख कारण, 13 main reasons for the end of Kali Yuga,-- LIVE

दिनांक: 30 जनवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 899 पंडित जी, मुझे एक सपना आया था जो मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। सपने में मैंने एक छोटी बच्ची देखी, लगभग छह साल की, जो हाथ में एक साँप पकड़े हुए आती है। मैं और मेरी पत्नी वहाँ खड़े हैं, और वह कहती है, 'ये कल्कि जी हैं।' मेरी पत्नी पहले थोड़ा डर जाती है, लेकिन मैं कहता हूँ, 'अगर ये कल्कि जी हैं, तो डरने की कोई जरूरत नहीं।' फिर वह साँप मुझे दे देती है। वह मेरे हाथ पर चढ़ता है, उसे चूमता है, और चला जाता है। इसी तरह, फिर वह मेरी पत्नी के सिर पर चढ़ता है और जाने से पहले उसका हाथ भी चूमता है। तो पंडित जी, मुझे यह सपना आया था। क्या आप कृपया इसका अर्थ बता सकते हैं?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। सब सुनिए। जो छोटी बच्ची हाथ में साँप लेकर आई थी, वह स्वयं माता वैष्णो देवी हैं, माता जोगमाया हैं। और जो साँप उसने पकड़ा हुआ था, वह स्वयं भगवान कल्कि थे, क्योंकि मालिका में ऐसा लिखा है। इस युग में कल्कि का नाम सत्य अनंत माधव है। अनंत का अर्थ है बलराम, और माधव का अर्थ है कल्कि। इस युग में भगवान कल्कि अनंत शक्ति हैं, अर्थात वे बलराम की शक्ति से विनाश करेंगे और भगवान श्रीकृष्ण की शक्ति से भक्तों का पालन करेंगे। एक ही शरीर में अनंत और भगवान कृष्ण दोनों हैं। भगवान कल्कि का दाहिना भाग भगवान बलराम हैं, और बायाँ भाग भगवान कृष्ण हैं। मैं इतना ही कहूँगा: भगवान कल्कि अपने अनंत रूप में विनाश का कार्य करेंगे, और उनका एक नाम अनंत भी है। तो आपको भगवान कल्कि का आशीर्वाद मिला है। आप भाग्यशाली हैं। आपको अपने जीवन में धर्म, कर्तव्य और आध्यात्मिक मार्ग को पूरी तरह अपनाना चाहिए। आपको प्रभु की कृपा प्राप्त हुई है। इसका अर्थ है कि अब से हम पूरी तरह धर्म का पालन करेंगे और कोई पाप, अधर्म या अन्याय नहीं करेंगे, और प्रभु के मार्ग पर चलेंगे। जो लोग मालिका सुनते हैं उन्हें ऐसे सपने आते हैं, और जो नहीं सुनते उन्हें भी ऐसे सपने आएँगे। वे भी मालिका के माध्यम से धीरे-धीरे इस मार्ग की ओर आएँगे। मालिका का यह प्रचार भक्तों की मुक्ति का मार्ग है। हम माध्यम हैं, और आप सब प्रभु की सभा हैं। आप भाग्यशाली हैं, और आपको अनंत, अर्थात भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त हुई है।

► यह उत्तर सुनें · 16:21 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 900 पंडित जी, मुझे सपना आया कि कोई मुझे हमारे घर के पास वाले काली माता मंदिर में ले गया और वहाँ छोड़ दिया। वहाँ मैं किसी से मिला जिसके बालों में मोरपंख था। उसने मेरे साथ भोजन किया और कहा, 'नीचे एक बाबा जी का मंदिर है। वहाँ मेरा इंतज़ार करना, मैं आऊँगा।' बहुत समय बीत गया, और जब मैं देखने गया, वहाँ कोई नहीं था। बाबा जी, इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: बेटा, इसका अर्थ यह है: देखो, विनाश का कार्य इस समय चल रहा है; संसार में यह आरंभ हो चुका है। तो देवी माँ, माता काली, विचार कर रही थीं कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए और उन्होंने तुम्हें अपने मंदिर में छोड़ दिया, मानो कह रही हों, 'इस मामले को देखो।' लेकिन प्रभु एक अलग रूप में आए, तुम्हें बचाया, और कहा, 'मैं तुम्हारे साथ हूँ, चिंता मत करो।' और माता ने तुम्हें जाने दिया। यह भविष्य में होने वाला है। या इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि सूक्ष्म जगत में कोई बीमारी जो फैल रही है, वह तुम्हें लगने वाली थी, लेकिन वह संकट टल गया है। यही इसका अर्थ है।

► यह उत्तर सुनें · 20:26 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 901 मैं भी एक स्वप्न साझा करना चाहती हूँ। एक दिन मैंने सपना देखा कि पृथ्वी पर बड़ी संख्या में परग्रही जीव आ रहे हैं और सभी दुखी लोगों को ले जा रहे हैं। कोई कह रहा था कि कुछ ही दिनों में महाप्रलय आने वाली है, इसलिए सबको चले जाना चाहिए। मैं बार-बार उनसे विनती कर रही थी कि 'अगर प्रलय आ रही है, तो हम यहीं अपनी मातृभूमि पर मर जाएँगे। आप हमें क्यों मजबूर कर रहे हैं? जो अपनी मर्ज़ी से जाना चाहता है, वह चला जाए। जो जाना नहीं चाहते, उन्हें मत ले जाइए।' फिर भी वे सबको ले जा रहे थे। पंडित जी, इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, जो होना निश्चित है, वह अवश्य होगा। पर देखिए, जब महाप्रलय होगी, तब प्रभु अपनी जोगमाया शक्ति के माध्यम से कार्य करेंगे। वे किसी न किसी रूप में, किसी न किसी शरीर में, किसी न किसी माध्यम से भक्तों की रक्षा करेंगे। यह मालिका में लिखा है। तो केवल भक्त ही बचाए जाएँगे; अधर्मियों का उद्धार नहीं होगा। यह होने वाला है। रही बात परग्रही जीवों की, तो देखिए, हम हिंदू हैं। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि हम मर्त्य लोक में रहते हैं, जिसमें मनुष्य निवास करते हैं। मर्त्य लोक के अतिरिक्त चंद्र लोक, सूर्य लोक, देव लोक, स्वर्ग लोक, और गोलोक, वैकुंठ तथा ऐसे कई स्थान हैं जहाँ देवता, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, मुनि और ऋषि निवास करते हैं। वे सामान्यतः किसी को हानि नहीं पहुँचाते, न किसी को दुख देते हैं। वे अपने लोक में रहते हैं, और मनुष्य अपने लोक में। जब प्रभु आदेश देंगे, तब वे आकर अपना कर्तव्य निभाएँगे। ठीक है, बाबा?

► यह उत्तर सुनें · 21:51 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 902 पंडित जी, मैं प्रभु से बहुत प्रेम करता हूँ। लेकिन मेरे परिवार में मुझे हर दिन शाकाहारी भोजन नहीं मिलता। तामसिक (मांसाहारी) भोजन खाने के बाद मुझे प्रभु का नाम लेने में बहुत संकोच होता है। वे कहते हैं, 'देखो, तुम्हारे शरीर को रोज़ प्रोटीन चाहिए, और हम रोज़-रोज़ दूध, घी और मक्खन नहीं दे सकते।' मैं क्या करूँ? मुझे प्रभु का नाम लेने में बहुत कठिनाई होती है; मन अशांत हो जाता है। मैं जप नहीं कर पाता; मन में बहुत संकोच होता है।

उत्तर: आपको विनम्रता से अपने परिवार से, अपने माता-पिता से निवेदन करना चाहिए। इस संसार में सबसे बलवान कौन है? घोड़ा क्या खाता है? क्या घोड़ा मछली, नॉन-वेज, मांस खाता है? नहीं। तो फिर वैज्ञानिक और समाज घोड़े को इतना बलवान क्यों मानते हैं? वह घास खाता है। यानी वह शाकाहारी है। उसे भी बल मिलता है। जो मांस-मछली खाता है, उसे पाप लगता है, और जो बल उसे मिलता है, उसके बदले उसके शरीर में रोग भी फैलते हैं। एक समय आएगा, और आ भी चुका है, जब पशुओं में कैंसर और कई अन्य बीमारियाँ फैल चुकी हैं। मालिका में लिखा है कि पहले बड़ी संख्या में मछलियाँ और पशु रोगों से मरेंगे, और फिर वही रोग मनुष्य समाज में आएँगे। तो इसका अर्थ यह हुआ कि जिसमें सबसे अधिक पवित्रता है, वही सबसे अधिक बलवान है। अपने माता-पिता से कहिए, 'देखिए, घोड़ा कितना कम खाता है, हाथी मांस नहीं खाता, फिर भी वे इतने बलवान हैं। वह शक्ति कहाँ से आती है?' आयुर्वेद का अर्थ यही है कि जड़ों, जड़ी-बूटियों और वनस्पतियों का सीधे सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है, और उसमें कोई रसायन नहीं होता। मुर्गी या बकरी, वे क्या खाती हैं? वे पौधे और घास खाती हैं। तो अगर हम सीधे फल, फूल और शाकाहारी भोजन करें तो क्या समस्या है?

► यह उत्तर सुनें · 24:08 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 903 मैंने एक सपना देखा जिसमें मैं हमेशा बच्चों के साथ खेल रहा हूँ। इसका क्या अर्थ है? मैं अपने सपने में बच्चों को देखता हूँ और उनके साथ खेलता हूँ।

उत्तर: जैसे प्रभु ग्वाल-बालों और गोपियों के साथ खेला करते थे, वैसे ही बच्चों के साथ खेलना गोविंद (भगवान श्रीकृष्ण) की लीला का संकेत है। तो यदि आप भाग्यशाली हैं, तो ऐसा हो सकता है, बाबा। आप भी उस वृंदावन लीला का हिस्सा थे, और अब आप प्रभु के सत्संग में, प्रभु के मार्ग पर आ रहे हैं, जो आपके पूर्व जन्म और वर्तमान जन्म का प्रमाण है।

► यह उत्तर सुनें · 29:32 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 904 अगर कलियुग समाप्त हो रहा था, तो 500 वर्ष पहले जब चैतन्य महाप्रभु आए, तो उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि वे कलियुग के अंत में फिर आएँगे?

उत्तर: अंत में, चैतन्य महाप्रभु ने अपने ग्रंथों में कल्कि अवतार के बारे में लिखा है। और उन्होंने यह भी कहा कि 'भगवान कल्कि आएँगे, धर्म की स्थापना करेंगे और भक्तों की रक्षा करेंगे।' जब चैतन्य महाप्रभु ओडिशा में जगन्नाथ क्षेत्र में थे, तब उन्होंने बार-बार इस विषय में कहा। वे आए और उस समय धर्म की स्थापना तथा भक्तों की रक्षा का कार्य किया। तो उन्होंने यह उल्लेख किया कि भविष्य में प्रभु कल्कि के रूप में आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:12 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 905 पंडित जी, पिछले तीन-चार दिनों से मुझे रोज़ सपने आ रहे हैं। परसों मैंने सपना देखा कि एक बहुत बड़ा पर्वत है जिसके ऊपर से बहुत सारा पानी बह रहा है। एक महिला मेरे साथ थी, जो मुझे पर्वत के दूसरी ओर ले जा रही थी और कह रही थी, 'यह पर्वत टूटने वाला है, और पानी दिल्ली तक पहुँच जाएगा।' जैसे ही हम दूसरी ओर जा रहे थे, पर्वत टूट गया। कुछ लोग बह गए, पर हम किसी तरह एक ओर पहुँच गए, और पानी हमारी तरफ नहीं आया। हम अपनी जान बचाने के लिए एक ऊँची जगह पर चढ़ गए, और ऊपर से किसी ने हमारी ओर रस्सियाँ फेंकीं। हम एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए जहाँ हमारे लिए सब कुछ उपलब्ध था—खाना, पीना, आश्रय। फिर कल मुझे उसी सपने का अगला भाग दिखा। तब से मैं पूरे दिन इसी सपने में खोई रहती हूँ। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आप कहाँ से बोल रही हैं, माता जी? इसका अर्थ यह है कि आने वाले समय में हमारी सभी बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ टूटेंगी। यानी महाप्रलय आएगी। मालिका में यह भी लिखा है कि स्वयं प्रभु और बलदेव भक्तों को खोजेंगे, उनकी रक्षा करेंगे, उन्हें स्थान देंगे और उनकी पूरी ज़िम्मेदारी लेंगे। हनुमान जी भी उनके साथ होंगे। तो इसका अर्थ है कि आपको महाप्रलय से मुक्ति का मार्ग दिखाया जा रहा है, और भविष्य में महाप्रलय अवश्य होगी। देखिए, भक्तों के लिए—किसी को ऐसे दर्शन होते हैं, कोई नए युग के सपने देखता है, कोई विनाश के, और किसी को प्रभु के दर्शन होते हैं; उन्हें अलग-अलग प्रकार के स्वप्न आते हैं। चूँकि आप मालिका से जुड़ी हुई हैं, इसलिए प्रलय से पहले ही आपको सूचित किया जाएगा। यह उसी जुड़ाव का फल है।

► यह उत्तर सुनें · 32:27 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 906 पंडित जी, मैंने यह लगभग एक साल पहले देखा था। सपने में मैं देखता हूँ कि एक बहुत बड़ा पत्थर मुझे मारने के लिए मेरी ओर आ रहा है। लेकिन एक साँप प्रकट हुआ और उसने मेरे सामने उसे रोक दिया। पत्थर टूट जाता और फिर से बनकर मेरी ओर आ जाता। और फिर उस साँप ने वही किया, पत्थर को रोककर मेरी रक्षा की। ऐसा कई बार हुआ। फिर सपने में मैं पूछता हूँ, 'यह साँप कौन है जो बार-बार मुझे इस पत्थर से बचा रहा है?'

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद ने भगवान कल्कि को शेषनाग का अवतार, एक भक्त और भगवान शिव का स्वरूप बताया है। आपको सपने में जो दर्शन हुए, वे दिखाते हैं कि बाधक शक्तियाँ, कलि का प्रभाव, संकट की शक्तियाँ—वे आपको चाहे जितना हानि पहुँचाने का प्रयास करें, प्रभु आपकी रक्षा करते हैं। इसका अर्थ है कि आप भक्त हैं। जो भक्त होते हैं, उन्हें प्रभु अनेक प्रकार के स्वप्न दिखाते हैं। जो विपत्ति आप पर आने वाली थी, प्रभु ने आपको उससे बचाया। शायद पहले भी कुछ होने वाला था।

► यह उत्तर सुनें · 37:10 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 907 पिताजी, आज सुबह मुझे एक सपना आया। सपने में मैंने चंद्रमा देखा। कहते हैं कि चंद्रमा में भगवान श्रीराम के दर्शन होंगे, पर मुझे वे नहीं दिखे। मुझे महावीर जी, हनुमान जी दिखे। मैंने सपने में उन्हें दो बार देखा, और दोनों बार हनुमान जी ही दिखे। और बाद में ऐसा लगा जैसे वे सूर्य के बहुत निकट हैं, और चंद्रमा की चाँदनी बहुत बढ़ रही थी।

उत्तर: चाँदनी बहुत तेज़ होगी, मानो हम दिन में काम कर रहे हों। ऐसी चाँदनी युग परिवर्तन का संकेत है। दूसरी बात, राम और हनुमान जी... राम और हनुमान में कोई भेद नहीं है। और प्रभु ने हनुमान जी को भक्तों की रक्षा का कार्य सौंपा है। इसलिए हनुमान जी के माध्यम से आपको प्रभु के दर्शन होते हैं। प्रभु ने हनुमान से कहा है, 'जिन लोगों की रक्षा करने को मैंने कहा है, उन्हें तुम अपने दर्शन देना।' और हनुमान जी को बद्रीनाथ से बंगाल तक भक्तों की रक्षा की ज़िम्मेदारी दी गई है। इसलिए वे आपको अपने दर्शन देते हैं, क्योंकि प्रभु ने उन्हें आप जैसे भक्तों के लिए ऐसा करने का आदेश दिया है। तो हनुमान जी कह रहे हैं, 'मैं हूँ, तुम बस धर्म, नीति और आदर्श को थामे रखो और मार्ग पर चलो।'

► यह उत्तर सुनें · 39:14 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 908 कुछ दिन पहले मुझे एक सपना आया। हम साथ चल रहे थे, तभी एक व्यक्ति मुझसे पूछता है, 'भाई, आप कहाँ तक जाएँगे?' हम एक छोटे पर्वत पर रुकते हैं, और वह कहता है, 'मैं थोड़ा और आगे जाऊँगा, भगवान शिव के दर्शन करने।' अचानक मैं हँसता हूँ, और मेरे शरीर का रूप बहुत विशाल हो जाता है। फिर मेरे शरीर से एक तेज़ प्रकाश निकलता है। वह दूसरा व्यक्ति हाथ जोड़े खड़ा है, किसी भगवा वस्त्रधारी, साधु जैसे व्यक्ति की ओर देख रहा है। फिर मुझे एक और व्यक्ति दिखता है, पीले वस्त्रों में एक साधु। मुझे समझ आता है कि पहला व्यक्ति केवल मुझे नहीं, बल्कि इस दूसरे स्वरूप को देख रहा है। जब मैं मुड़ता हूँ, तो पीले वस्त्रों वाले को देखकर कहता हूँ, 'भगवान शिव, आप यहाँ कैसे?' मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। तब वे कहते हैं, 'तपस्या करने वाले भी तुम ही हो, और संहार करने वाले भी तुम ही हो। यह मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूँ।' फिर मेरी आँख खुल गई।

उत्तर: देखिए बाबा, आपको जो यह सपना आया है, यह आपकी आत्मा से जुड़ा हुआ दिव्य स्वप्न है। इसका अर्थ समय के साथ प्रकट होगा। अभी इसके बारे में कुछ कहना उचित नहीं है। पर इतना कहना चाहता हूँ: सभी भक्त, सभी देवी-देवता इस संसार में जन्म ले चुके हैं, और भगवान कल्कि... सभी भक्त... यह तभी प्रकट होगा जब समय आएगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए, धर्म के मार्ग पर चलिए, और अपना कार्य करते रहिए, सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 41:29 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 909 शुक्रवार की सुबह मुझे सपना आया कि सबके पैर के नीचे एक चिप लगाई जा रही है। लोग एक-दूसरे से नफ़रत कर रहे थे। जिनके पास चिप थी, उन्हें मारा जा रहा था। हिंदुओं और मुसलमानों के बीच लड़ाई चल रही थी। कुछ लोग मेरी ओर आए, और जब वे आए तो मैंने मंत्र जपना शुरू कर दिया, और वे भाग गए। उसी सपने में, जब लोग मेरी ओर आते, तो मैं हवा में उड़ जाता और हनुमान चालीसा का पाठ करता, और वे मुझे छोड़ देते। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह समय आएगा। मालिका में लिखा है कि प्रभु की कृपा से भक्त आकाश में तैर सकेंगे और जल पर चल सकेंगे। यह मालिका में स्पष्ट लिखा है। और दूसरी बात, जो लोग मार्ग पर हैं और मालिका का अनुसरण करते हैं, उनके शत्रु चाहे कितने ही बड़े क्यों न हों, चाहे पाकिस्तान और चीन से सेनाएँ आ जाएँ और अनेक विपत्तियाँ आ पड़ें, वे भक्तों का कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे। प्रभु के नाम और भक्ति के माध्यम से उन्हें दिव्य शक्ति प्राप्त होगी। सभी भक्तों के लिए ऐसा समय आएगा, और वे बच जाएँगे। कोई पापी उनका अहित नहीं कर पाएगा। यह होने वाला है, इसीलिए यह सपनों में दिखाई देता है। चिप के बारे में नहीं लिखा है; यह एक संकेत है। चिप एक प्रतीक है, जिसका अर्थ है कि भक्तों की पहचान के लिए उन पर एक विशिष्ट चिह्न या निशान होगा। यह मालिका में लिखा है। भक्तों के शरीर पर 13-14 प्रकार के चिह्न होंगे। आपने इसे चिप के रूप में देखा। देवी-देवता जब उनकी रक्षा के लिए आएँगे तो इन चिह्नों को देखेंगे, और पापी इन चिह्नों को देखकर डर से भाग जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:29 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 910 मेरा प्रश्न यह है कि 1800 के दशक में कई आध्यात्मिक व्यक्ति जन्मे, जैसे रामकृष्ण परमहंस और कई अन्य। क्या मालिका में बालमुकुंद जी महाराज और लक्ष्मी नारायण जी महाराज का कोई उल्लेख है?

उत्तर: देखिए बाबा, हर युग में पृथ्वी की रक्षा करने और मानवता को मार्ग दिखाने के लिए संत, साधु और स्वयं प्रभु के अंश संसार में अवतरित होते हैं। यह सदा होता आया है। इनमें से कुछ लोगों के प्रभाव, मार्ग और पवित्रता से धर्म का संतुलन बना रहा। तो विनाश के इस समय में, वे सभी साधु, संत और महात्मा जो पहले पृथ्वी पर आ चुके थे, वे भी मनुष्य रूप में आए हैं। मनुष्य शरीर में उनका कोई विशेष चिह्न नहीं होता, कोई दिव्य शक्ति नहीं होती। वे साधारण मनुष्य की तरह ही आएँगे। वे भगवान कल्कि से मिलेंगे, और फिर समय आने पर प्रभु के निर्देशानुसार कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:17 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 911 मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि आने वाले समय में दिल्ली में हमारे आसपास के कई इलाके पूरी तरह जलमग्न हो जाएंगे। लेकिन हमारे घर के अंदर, ग्राउंड फ्लोर पर, बाहर छह फीट पानी होने के बावजूद अंदर पानी नहीं आ रहा। और हम जहाँ-जहाँ कदम रखते हैं, वहाँ से पानी पीछे हट जाता है और हम आगे चल पाते हैं। यह कैसे संभव है? यह क्या हो सकता है कि जब सबके घरों में 10 फीट पानी भरा है, तब हमारे घर में पानी नहीं घुस रहा, और जहाँ-जहाँ हम पैर रखते हैं, वहाँ पानी हमारे लिए रास्ता बनाने को हट जाता है?

उत्तर: विनोद, जैसे आपको यह दर्शन हुआ, वैसे ही पंजाब के सिद्धू नाम के भगवान के एक अच्छे भक्त, जो आयरलैंड में रहते हैं, उन्हें भी ऐसा ही अनुभव हुआ था। उनकी पत्नी को भी एक दर्शन हुआ था जिसमें समुद्र पास आ रहा था, पर उनके निकट नहीं आ रहा था। समुद्र दो भागों में बँट जाता, दोनों ओर पानी होता, और वे बीच में खड़े रहते, पानी उन्हें छूता तक नहीं। उन्होंने भी ऐसा ही प्रश्न पूछा था। और आपने भी पूछा है। मालिका में लिखा है: 'जिस स्थान पर भक्त निवास करता है, वहाँ विपत्ति प्रवेश नहीं करेगी, चाहे बाढ़ हो या समुद्र का उमड़ना, समुद्र दो भागों में बँट जाएगा।' जहाँ-जहाँ योगी भक्त हैं, वहाँ समुद्र, बाढ़ या विनाश उन्हें दोनों ओर से रास्ता देकर निकल जाएगा; पानी प्रवेश नहीं करेगा। और जहाँ भक्त खड़ा होगा, वहाँ का पानी सूख जाएगा। हमें ऐसा ही भक्त बनना है और ऐसी ही पवित्रता में रहना है।

► यह उत्तर सुनें · 48:38 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 912 मुझे ब्रह्म मुहूर्त (भोर से पहले के समय) में एक अनुभव हुआ। मैं अर्धनिद्रा में थी, तभी मेरा सूक्ष्म शरीर उठकर बैठ गया। मैंने देखा कि एक प्रकाश का गोला मुझमें प्रवेश कर गया, और वह भगवान विष्णु के स्वरूप में बदल गया। इसके बाद मुझे भगवान कल्कि का मंत्र दिया गया। अब जब मैं पूजा करती हूँ, तो मुझे दस अवतारों के दर्शन होते हैं, और जब मैं भगवान का ध्यान करने की कोशिश करती हूँ, तो मुझे केवल शेषनाग दिखाई देते हैं। इस ब्रह्म मुहूर्त के अनुभव का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, उस दिन आपको दर्शन हुआ, और उसमें आपको भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। भगवान का आशीर्वाद आकर आपके सूक्ष्म शरीर में समा गया। उसके बाद आपने मोहन से बात की और भगवान कल्कि का मंत्र प्राप्त किया। दूसरी बात, भगवान शेषनाग के स्वरूप, अनंत स्वरूप के विषय में... मुझे भी कई बार भगवान कल्कि के अनंत स्वरूप के दर्शन हुए हैं, और पंचसखा ने मालिका में बार-बार लिखा है, 'शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करने वाले भगवान कल्कि अनंत हैं।' इसलिए भक्तों को उनके भाव के अनुसार दर्शन होते हैं। ओडिशा के कई मंदिरों में भगवान कल्कि की मूर्ति अनंत, अर्थात् शेषनाग या अनंतनाग के रूप में पूजी जाती है, और उनकी कल्कि के रूप में पूजा होती है। इसलिए आपने जो देखा वह सही है, माता जी।

► यह उत्तर सुनें · 50:39 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 913 परसों मैं सुबह 5 बजे ध्यान कर रहा था। अचानक ऐसा लगा कि बहुत अँधेरा है, जैसे रात का समय हो, लेकिन मुझे एक तेज़ प्रकाश दिखाई दिया, जैसे स्ट्रीटलाइट हो। मैं किसी जंगल में कहीं जा रहा था, पर वहाँ सब कुछ स्ट्रीटलाइट की तरह जगमगा रहा था, जबकि अँधेरा था। और फिर अचानक आकाश में भगवान प्रकाश के रूप में प्रकट हुए। उनका स्वरूप प्रकाश से बना था, एक दिव्य तेज। और उनकी आँखों से प्रकाश की दो किरणें निकलीं, और फिर मेरा ध्यान टूट गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए बाबा, भगवान कल्कि अपने गुप्त-प्रकट स्वरूप में, कल्कि अवतार कलियुग के प्रभावों को दूर करने और अनुभव तथा प्रेरणा देने के लिए स्वप्न में आते हैं। तो आपको भी ऐसे अनुभव हो रहे हैं। इसका अर्थ यह है: वह महान धन, वह सबसे बड़ी शक्ति, जो भगवान का आशीर्वाद है, आपको उसका अनुसरण करना चाहिए। आप भाग्यशाली हैं कि धर्म का मार्ग, मालिका, आप तक पहुँची है। मालिका हिंदी में नहीं लिखी गई है; वह ओड़िया में है। और भगवान की कृपा से, उनके आशीर्वाद से, हम उसका अनुवाद कर रहे हैं। तो भगवान आपको मुक्ति का मार्ग दिखा रहे हैं और साथ ही स्वप्न में विभिन्न रूपों में दर्शन दे रहे हैं। इसलिए इसे हृदय में धारण कीजिए और मालिका के अनुसार धर्म की स्थापना के लिए, सनातन धर्म के लिए कार्य कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 59:02 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 914 कुछ दिन पहले मुझे स्वप्न आया कि किसी स्थान पर बहुत से लोग युद्ध कर रहे थे। मैं भी वहाँ था। दो असुर आए, और उनसे भी बड़ा एक असुर उन्हें कह रहा था कि सब लोगों को पकड़ो, मारो और बंदी बनाकर ले जाओ। मैं भी उसी स्थान पर था जहाँ युद्ध हो रहा था। असुरों ने मुझे भी पकड़ लिया और मारने ही वाले थे। तभी कोई साधु के रूप में आया, मुझे बचाया, और उन दोनों असुरों को भगा दिया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि आने वाले समय में धर्म-युद्ध होगा। धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष होगा। जैसे पापी लोग भक्तों का विरोध करते हैं, वे हर अच्छे व्यक्ति का विरोध करते हैं, मंदिर तोड़ते और लूटते हैं, और लोगों के विरुद्ध, गौ माता के विरुद्ध कार्य करते हैं, और संसार में बहुत से लोग धर्म के विरुद्ध कार्य करते हैं। तो उनका विनाश होगा, और भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। यही आपके स्वप्न का अर्थ है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:34 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 915 जब मेरा जन्म हुआ, ठीक उसी क्षण बहुत तेज़ वर्षा होने लगी, ठीक वैसे ही जैसे भगवान कृष्ण के जन्म के समय हुई थी। और जैसे ही मेरा जन्म हुआ, वर्षा रुक गई। सब लोग कृष्ण नाम का जाप कर रहे थे। तो क्या यह कोई दिव्य चमत्कार है? साथ ही, मेरे जन्म से पहले मेरी माँ को एक स्वप्न आया था जिसमें एक तेजोमय व्यक्ति ने उनसे कहा था, 'मैं आ रहा हूँ।'

उत्तर: मैंने अपने कई एपिसोड में पहले भी यह कहा है: देखिए, भगवान के सभी भक्त साधारण मनुष्य के शरीर में आएँगे। उनमें कोई दिव्य शक्तियाँ नहीं होंगी। और वे सभी भगवान से मिलेंगे। कई देवता—सूर्य देव, चंद्र देव, इंद्र देव, ध्रुव, प्रह्लाद—सभी पहले ही पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं। इसका अर्थ है, देखिए बाबा, अब सब साधारण मनुष्य हैं। किसी के मन में कोई अहंकार नहीं होना चाहिए। क्योंकि भगवान के सामने सभी मनुष्य केवल मनुष्य हैं और दासों के दास हैं। इसी सिद्धांत के अनुसार अपना जीवन जिएँ, भगवान की शरण में रहें। जब समय आएगा, तब भगवान और भक्त के बीच का निर्णय सब कुछ सुलझा देगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:20 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 916 मुझे स्वप्न में हनुमान जी के दर्शन हुए। जब भी मैं इसके बारे में सोचता हूँ, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसके अलावा, मुझे पहले भी महाप्रलय (महाबाढ़) के बहुत से स्वप्न आते थे। लेकिन पिछले कुछ दिनों से मुझे महाबाढ़ का एक ही स्वप्न लगातार आ रहा है, विशेषकर हनुमान जी के दर्शन के बाद। स्वप्न की शुरुआत एक बहुत शांत समुद्र से होती है। आकाश से एक बूँद गिरती है, और जैसे ही वह पानी को छूती है, सुनामी जैसी विशाल लहरें उठने लगती हैं। मैं देख रहा हूँ और मुझे डर लगता है, लेकिन हृदय में मुझे कोई भय महसूस नहीं होता। मुझे लगता है कि भगवान मेरे साथ हैं। यह स्वप्न मुझे पिछले तीन-चार दिनों से लगातार आ रहा है। इस स्वप्न से पहले मुझे सबसे पहले हनुमान जी के दर्शन हुए थे। साथ ही, उस दिन मेरे घर तीन साधु आए थे।

उत्तर: देखिए, मैंने पहले भी कहा है, हनुमान जी भक्तों की रक्षा के लिए दर्शन देते हैं। जहाँ-जहाँ भक्त हैं, वहाँ हनुमान जी उन्हें दर्शन देते हैं, क्योंकि भगवान ने हनुमान जी को भक्तों की रक्षा का दायित्व सौंपा है। दूसरी बात, एक धूमकेतु पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है, जो एक दिन समुद्र में गिरेगा, और समुद्र 1000 फीट तक ऊपर उठेगा। इतनी बड़ी महाबाढ़ आएगी। राजस्थान में भी बाढ़ आने वाली है, और भारत तथा विश्व के कई राज्यों में निश्चित रूप से बाढ़ आएगी। तो इसका अर्थ है कि महाबाढ़ एक बड़ी घटना होगी। भक्तों को इसी के दर्शन हो रहे हैं। मालिका में लिखा है कि हनुमान जी लोगों को असुरों से बचाएँगे; यह भी मालिका में है। तो आपको ये दर्शन इसलिए हुए क्योंकि आप भक्त हैं। इसलिए भगवान आपको सचेत कर रहे हैं। इन सभी संतों और साधुओं को भक्तों को सचेत करने का दायित्व दिया गया है। यह मालिका में लिखा है। तो भगवान ने आपको सचेत करने के लिए किसी को भेजा। उसके बाद आपको हनुमान जी के दर्शन हुए। ये सभी दिव्य स्वप्न केवल भक्तों को ही आते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:08 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 917 पंडित जी, मैं एक सप्ताह से भागवत में भरत जी का चरित्र पढ़ रही हूँ। अब जब मैं पढ़ने बैठती हूँ तो मुझे ऐसा दिव्य अनुभव होता है; ऐसा लगता है जैसे मेरा शरीर ही नहीं है। बहुत दिव्य अनुभूति होती है, और एक सुगंध आती है, अष्टगंध (एक पवित्र लेप) की सुगंध। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: तो आपको भगवान का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। वे आकर आपको यह अनुभूति कराते हैं कि 'मैं आ गया हूँ।' दिव्य सुगंध भगवान के आगमन का सूचक चिह्न है। आपको वह प्राप्त हो रही है, माता जी। आप बहुत भाग्यशाली हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:01 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 918 पंडित जी, भोग (पवित्र अन्न अर्पण) में क्या अर्पित किया जा सकता है? किस प्रकार का भोग लगाना चाहिए?

उत्तर: सात्विक भोजन, जो घी से बना हो, या तेल से भी बना हो, वह ठीक है। और जो शाकाहारी सामग्री और फलों से बना हो, वह सब सात्विक माना जाता है। मंदिरों में वही भोजन भोग के रूप में अर्पित किया जाता है। फिर राजसिक भोजन होता है, जिसमें प्याज, लहसुन और तीखा-मसालेदार भोजन आता है, जो राजाओं और सम्राटों के योग्य माना जाता है। वह मंदिरों में अर्पित नहीं किया जाता। और तामसिक भोजन में मांस, मछली और मदिरा आते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:15:42 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 919 मैं बचपन से भगवान विष्णु की भक्त हूँ। ऑफिस के काम के कारण मैं लंबी प्रार्थना नहीं कर पाती, लेकिन त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) कर लेती हूँ और छुट्टी के दिनों में भागवत पढ़ती हूँ। क्या यह पर्याप्त है, या मुझे और अधिक करना चाहिए?

उत्तर: हमारा पहला ऑफिस हमारा शरीर और मोक्ष है। दूसरा ऑफिस हमारा सांसारिक जीवन है जहाँ हम जीविका कमाते हैं। यदि दिन में आपके पास समय नहीं है, तो रात को सोने से पहले, स्वयं को पवित्र करके 10 मिनट श्रीमद्भागवत पढ़िए, माता जी। क्योंकि भागवत जीवनदायिनी अमृत है। भागवत सत्य युग के मार्ग की पहली सीढ़ी है। भागवत ही भक्तों की रक्षा करेगी। तो कम से कम, माता जी, यदि दिन में नहीं, तो रात को सोने से पहले 10 मिनट भागवत पढ़िए। और त्रिसंध्या में 16 नामों, दस अवतारों, वासुदेव मंत्र और थोड़ी दुर्गा-माधव स्तुति का जाप कीजिए। इसमें 5 से 10 मिनट लगेंगे। दिन में तीन बार 10 मिनट यानी 30 मिनट। श्रीमद्भागवत पढ़ना आपको उन रोगों और समस्याओं से बचाएगा जो संसार में आने वाली हैं। यह आपके लिए एक रक्षा कवच बन जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:26 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 920 मैंने श्रीमद्भागवत गीता पढ़ना शुरू किया, दो बार पूरी की, फिर तीसरी बार। लेकिन फिर भी मुझे कुछ समझ नहीं आता; कुछ हो ही नहीं रहा। उसके बाद मैंने रामचरितमानस और ऋषियों के अन्य ग्रंथ पढ़ना शुरू किया। साथ ही मैंने अन्य साधनाएँ भी शुरू कीं, लेकिन फिर भी मैं समझ नहीं पा रहा कि मेरे साथ क्या हो रहा है।

उत्तर: देखिए, हनुमान जी की भक्ति भगवान राम पर केंद्रित थी, इसीलिए वे समुद्र पार कर सके। तो आपको केवल श्रीमद्भागवत ग्रंथ पढ़ना चाहिए। कोई अन्य ग्रंथ पढ़ना आवश्यक नहीं है। यह पहली बात। और दूसरी बात, जब आप पढ़ें, तो भगवान विष्णु को हृदय में रखकर भक्ति भाव से पढ़ना आवश्यक है। यदि मन इधर-उधर भटकता रहा, तो आपको भागवत पढ़ने का पूर्ण फल और कृपा प्राप्त नहीं होगी। और सबसे महत्वपूर्ण, निरंतर माधव के नाम का जाप कीजिए और भागवत पढ़िए। इससे आपकी समस्याएँ दूर होंगी और आपके मन को संतोष मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:22:06 · 30 जनवरी 2022

प्रश्न 921 कुछ दिन पहले मुझे एक स्वप्न आया। एक पर्वत पर, एक सुंदर गुफा के भीतर, मैंने माँ काली की बहुत सुंदर मूर्ति देखी। उस मूर्ति के सामने एक बहुत बड़ी यज्ञवेदी थी। पास ही, एक सुंदर लकड़ी के आश्रम के ऊपर बने घर में भगवान जगन्नाथ विराजमान थे, परंतु बलराम और सुभद्रा वहाँ नहीं थे। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पीली साड़ी पहने एक माता भगवान जगन्नाथ को कुछ खाने के लिए अर्पित कर रही थीं। उसके बाद स्वप्न समाप्त हो गया। मैं सोच रही थी कि बलराम जी और सुभद्रा जी वहाँ क्यों नहीं थे, पर भगवान जगन्नाथ थे।

उत्तर: देखिए, आपने जो सुंदर पर्वत देखा, वह नीलाचल है, जहाँ प्रभु विराजते हैं। और प्रभु स्वयं धर्म की स्थापना करेंगे; भगवान कल्कि धर्म की स्थापना करेंगे। और जो माता उन्हें भोजन करा रही थीं... यह जो दर्शन आपको हुआ, आप भाग्यशाली हैं। धर्म और नीति के मार्ग पर चलिए; यही आपका कर्तव्य है।

► यह उत्तर सुनें · 01:26:42 · 30 जनवरी 2022

सत्र 46 · प्रश्न 922–965

L44 नीम के पेड़ से निरंतर दूध निकलना, कलियुग अंत की प्रमुख सूचना।-- LIVE

दिनांक: 3 फ़रवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 922 मैं यह पूछ रहा हूँ कि क्या 51 शक्तिपीठ इस प्रलयकाल में बचे रहेंगे? 51 शक्तिपीठ और चार धाम?

उत्तर: हाँ महाराज। बद्रीनाथ धाम, द्वारका धाम, विंध्यवासिनी मैया जी, जगन्नाथ धाम और रामेश्वरम जैसे स्थान—ये चार धाम हिंदुओं के सर्वाधिक पवित्र स्थल हैं। और बारह ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ, सब कुछ सुरक्षित रहेगा। यह क्षेत्र अर्जुन के समय में भी ऐसा ही था, और कलियुग के अंत में भी ऐसा ही रहेगा, क्योंकि ये देवियों, देवताओं और स्वयं भगवान के द्वारा स्थापित क्षेत्र हैं।

► यह उत्तर सुनें · 15:45 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 923 पंडित जी, मैं सहारनपुर से बोल रही हूँ। दो दिन पहले मुझे एक स्वप्न आया। मैं आकाश में बैलगाड़ी में यात्रा कर रही थी। वहाँ बहुत सारे विशाल और भिन्न-भिन्न प्रकार के खेत थे। और आकाश में दो सूर्य उदय हो रहे थे। दो सूर्य थे और दो चंद्रमा। एक ओर दो सूर्य थे और दूसरी ओर दो चंद्रमा। मैंने अपने साथ के लोगों को दिखाया और कहा, 'देखो, आकाश में दो सूर्य!' वे बहुत बड़े थे और तेज़ चमक रहे थे, और चंद्रमा भी बहुत बड़े और चमकीले थे। इस स्वप्न का क्या अर्थ है? यह स्वप्न मैंने सुबह लगभग 6:30 बजे देखा, और जब मैं जागी तो ऐसा लगा जैसे यह सचमुच हो रहा हो, जैसे मैं वास्तव में देख रही हूँ। आसपास बहुत कम लोग थे; पृथ्वी खाली-सी लग रही थी। बैलगाड़ी में लगभग 8-10 लोग थे। इस स्वप्न का क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: देखिए माता जी, जब युग बदलता है, और जब कलियुग के विनाश का अंतिम समय आता है और सत्ययुग आरंभ होने को होता है, उस समय आकाश में एक, दो, तीन या अनेक सूर्यों का प्रकाश होगा। दूसरी बात, चंद्रमा भी चमकीला होगा क्योंकि अनेक ग्रह और नक्षत्र पृथ्वी के निकट आ जाएँगे। उनकी चमक और प्रभाव हमारी पृथ्वी पर पड़ेगा। मालिका में यह लिखा गया है कि जब कलियुग समाप्त होगा, तब आकाश में अनेक सूर्य और चंद्रमा दिखाई देंगे। और जैसा आपने देखा, लोगों की संख्या बहुत कम थी। यह इसलिए क्योंकि कलियुग के अंत में समस्त ब्रह्मांड में केवल 64 करोड़ लोग ही बचेंगे। भारत में सबसे अधिक, 33 करोड़, और शेष विश्व में 31 करोड़। वर्तमान की लगभग 9 अरब जनसंख्या में से केवल इतने ही शेष रहेंगे। तो जिस गाँव में आज हज़ारों लोग हैं, वहाँ केवल चार, पाँच या शायद दस लोग ही बचेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:50 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 924 और मैंने इंटरनेट पर देखा, एक समाचार था कि वृंदावन में एक पीपल के वृक्ष से धुआँ निकल रहा है। उसमें से तेज़ अगरबत्ती जैसी सुगंध आती है। इसका क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: देखिए माता जी। एक ओर, जगन्नाथ मंदिर में ध्वज पर गिद्ध का बैठना ब्रह्मांड के विनाश का संकेत है। दूसरी ओर, नीम के वृक्षों से मीठा रस बह रहा है। और तीसरी बात, जैसा आपने बताया, श्री वृंदावन में एक पीपल के वृक्ष से सुगंधित धुआँ निकल रहा है। मीठे रस की तरह ही यह सुगंधित धुआँ भी विनाश का संकेत है। भक्तों को समझना चाहिए कि प्रभु वृंदावनवासियों को यह संदेश दे रहे हैं: धर्म स्थापना का समय आ गया है, स्वयं को बदलिए। प्रभु की शरण लेना और मालिका का अनुसरण करना आवश्यक है। क्योंकि कलियुग में शास्त्र कहते हैं कि मुक्ति हरिनाम के जप से है। कलियुग में केवल कथा सुनने से काम नहीं चलेगा; स्वयं नाम जपना होगा। कथा सुनना ठीक है, परंतु कलियुग में नाम-जप ही मुक्ति का मार्ग है। और किसका नाम? माधव का नाम। मालिका ने स्पष्ट रूप से बताया है कि किस नाम का भजन भक्तों को मुक्ति देगा। क्योंकि युग के साथ नाम और अवतार भी बदलते हैं। जैसे, त्रेता युग में भक्तों का उद्धार राम नाम से हुआ। द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण से। कलियुग में जगन्नाथ। और अभी हम जिस युग में हैं, संगम युग, और आने वाला अनंत युग, उसमें प्रभु का नाम माधव है। क्योंकि श्रीमद्भागवत में भगवान व्यास ने 'माधव' नाम का उच्चारण सबसे अधिक बार किया है। और माधव नाम ही मुक्ति दिलाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:27 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 925 कल मैंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में एक क्लिप में सुना। एक ज्योतिषी ने निष्कर्ष निकाला कि मोदी जी का संकल्प है कि कैलाश मानसरोवर को चीन से जोड़ें और तिब्बत को भी स्वतंत्र कराएँ। उसके बाद वे संन्यास ले लेंगे। क्या मालिका में इस बारे में कुछ लिखा है, पंडित जी?

उत्तर: देखिए बेटा। इस विषय में... यह बहुत बड़ा विषय है। मैं क्या कहूँ? आपके प्रश्न की गरिमा के अनुरूप मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 23:07 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 926 पंडित जी, नीम के वृक्षों से दूध जैसा रस निकलने की यह घटना, मेरे विचार से ऐसी ही घटना 1990 के दशक में हुई थी, और 2005 में भी, और दो-तीन वर्ष पहले भी। तो कम से कम 20 वर्षों का एक लंबा काल बीत चुका है। जो संकेत अभी दिख रहे हैं, वे शायद अगले 25, 30 या 40 वर्षों में यूँ ही बीत जाएँ, और शायद निकट भविष्य में कुछ न हो। ये असाधारण संकेत पहले भी प्रकट होते रहे हैं, पर उनका प्रभाव दिखाई नहीं देता। यह भगवान पर निर्भर करता है। इस विषय में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: समय की प्रतीक्षा कीजिए, बेटा। 2019 से '20, '21, '22 तक, और '23 में क्या समय आएगा, वह आप मुझे तब बताइएगा। और उसके बाद क्या आएगा, वह भी आप बताइएगा। और '25 में मैं बोलने योग्य रहूँगा या नहीं, यह मुझे नहीं पता। जय जलाराम जी।

► यह उत्तर सुनें · 25:09 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 927 पिताजी, मेरा प्रश्न यह था कि जिन प्रभु ने अवतार लिया है, उनके माता-पिता उन्हें किस नाम से पुकारते हैं?

उत्तर: माता-पिता अपने स्नेह के कारण अनेक नाम रख लेते हैं। जैसे आप अपने परिवार में अपने बच्चे के लिए कितने ही नाम रखते हैं, वैसे ही चलता रहता है। माता जी, यह एक अलग विषय है, इस पर मैं अधिक विस्तार से नहीं जा सकता। परंतु इतना अवश्य कहूँगा: हर बच्चा अपने माता-पिता के लिए स्नेह और पवित्रता का विषय होता है। और तदनुसार, प्रभु का उनसे संबंध उनकी भावनाओं पर आधारित होता है।

► यह उत्तर सुनें · 27:23 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 928 पंडित जी, भगवान विष्णु के 10 अवतार हुए हैं। उनमें से कृष्ण जी के अवतार की बाल-रूप में लड्डू गोपाल के रूप में लगभग हर घर में पूजा होती है। उनकी अन्य रूपों में भी पूजा होती है, पर बहुत से लोग उन्हें बहुत प्रेम से, एक बच्चे की तरह पूजते हैं। इसके पीछे क्या रहस्य या शक्ति है? क्या इसके पीछे कोई कथा है?

उत्तर: देखिए, भगवान श्री कृष्ण की बाल-लीलाएँ श्री वृंदावन, गोवर्धन और मथुरा में हुईं। ओडिशा जैसे अन्य राज्यों में भी भगवान कृष्ण की पूजा होती है, और लड्डू गोपाल की भी पूजा होती है। यह परंपरा चलती आ रही है क्योंकि वृंदावन, मथुरा और उत्तर भारत में सब प्रभु को 'लल्ला' मानते हैं। तदनुसार, बाल गोविंद की पूजा सबके हृदय में प्रभु के बाल-रूप के रूप में बसी है। इसलिए सभी भक्त उन्हें इसी रूप में पूजते हैं। ओडिशा में भगवान कृष्ण के भव्य रूप, द्वारकाधीश, की पूजा होती है। कुछ स्थानों पर भगवान कृष्ण के पूर्ण 'पुरुष' रूप की पूजा होती है। इसी प्रकार यह चलता रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 28:15 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 929 महोदय, यदि हमारे प्रभु प्रकट होते हैं, तो क्या हमें कल्कि अवतार के दर्शन होंगे?

उत्तर: मालिका की रचना प्रभु से संबंध जोड़ने के लिए हुई थी। यदि मालिका न होती, तो आप सब कैसे जानते? सभी कथावाचक कहते हैं कि कलियुग समाप्त नहीं हुआ; वे 4,32,000 वर्षों के आँकड़े को पकड़े रहते हैं। परंतु वह कलियुग समाप्त हो चुका है, सत्ययुग आरंभ होने वाला है, और धर्म स्थापना का समय चल रहा है—यह आपको किसी ने नहीं बताया। अधिकांश लोग अब भी नहीं समझते। तो मालिका ही है जो बताती है कि भक्त कैसे मुक्ति पा सकते हैं और कैसे प्रभु की शरण में आ सकते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो भक्त मालिका सुनेंगे, उन्हें प्रभु के दर्शन होंगे। और वही भक्त सत्ययुग के लिए बीज बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 30:43 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 930 तो, क्या हम उनसे मिलेंगे?

उत्तर: करते रहिए, और जब आपके लिए धर्म का प्रचार करने का समय आएगा, तब सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:48 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 931 जय श्री माधव, पिताजी। यदि हम आपके ही शब्दों में माधव नाम की महिमा सुन सकें, तो भक्तों के लिए यह बहुत बड़ा आशीर्वाद होगा।

उत्तर: लोगों के लिए, भक्तों के लिए, मुझसे अलग से बात कीजिए, मैं आपको सब कुछ बताऊँगा। संपर्क में रहिए; सत्संग तो होता ही रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 32:12 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 932 प्रणाम। मालिका कहती है कि वे प्रकट होंगे... क्या वे 2025 में प्रकट होंगे?

उत्तर: मालिका कहती है, 'वे गुप्त रूप से कार्य करेंगे और अपना संकेत नहीं देंगे।' लिखा है, 'वे गुप्तता से प्रकट होंगे।' भगवान गुप्तता से प्रकट होंगे, परंतु ऐसा कहने से सब लोग जान नहीं जाएँगे, और सब विश्वास भी नहीं करेंगे। आगे लिखा है, 'भक्त उन्हें पूर्व अनुभवों से पहचान लेगा।' इसका अर्थ है कि जो भक्त हर युग में भगवान के भक्त रहे हैं, वे जान जाएँगे। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि भगवान कल्कि अवतार लेंगे। जो लोग भागवत पढ़ते हैं, वे यह जानते हैं। उसमें यह भी कहा गया है कि जब संसार में पाप बढ़ जाएगा, तब भगवान कल्कि पृथ्वी पर अवतरित होंगे। यह शास्त्रों में लिखा है, और भक्त इसका अनुसरण करते हैं और जानते हैं कि भगवान का अवतार अवश्य होगा। परंतु उन्हें यह नहीं पता था कि कब। अब मालिका आ गई है, और आपको इसका मार्ग मिल गया है, तो आपको पता चल गया है कि इस समय ये संकेत प्रकट होंगे, और कलियुग का काल समाप्त होने के बाद भगवान अवतार लेंगे। यह केवल भक्तों के लिए है। अन्य लोग यह नहीं जान पाएँगे कि भगवान ने अवतार ले लिया है। भगवान का प्रचार किसी मीडिया चैनल पर नहीं होगा। उन्हें देखकर भी लोग भ्रमित हो जाएँगे। परंतु धर्म की स्थापना आगे बढ़ती रहेगी। भक्त जान जाएँगे, 'ये मेरे भगवान हैं।' केवल भक्त ही जानेंगे; अन्य लोग नहीं। किसी मीडिया या सोशल मीडिया पर कोई प्रचार नहीं होगा। यह केवल मालिका के माध्यम से ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:58 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 933 पंडित जी, भक्तों की परीक्षा पहले से किस प्रकार होगी?

उत्तर: भक्तों की परीक्षा... वर्तमान महामारी एक तरीका है। साथ ही, देवी-देवता पहले घर-घर जाकर भक्तों की परीक्षा उनके स्वप्न में लेंगे। बाद में, जब 80% लोग नष्ट हो चुके होंगे, तब गण (शिव के पार्षद) मृतकों के रूप में आकर भक्तों की परीक्षा लेंगे। भक्तों की परीक्षा इस प्रकार तीन-चार चरणों में होगी। परंतु जो लोग, जैसा मैं कहता हूँ, 1) श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, 2) त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) करते हैं, और 3) माधव नाम का जप करते हैं... जिनका माधव में पूर्ण विश्वास है, जो 16-नाम, 10-अवतार दुर्गा-माधव स्तुति का पाठ करते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी, कोई कष्ट नहीं होगा। मैं यह विश्वास के साथ कहता हूँ। यही उनकी परीक्षा है।

► यह उत्तर सुनें · 35:44 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 934 मेरे मित्र ने एक प्रश्न पूछा था: बाँके बिहारी जी की मूर्ति को हम कपड़े से ढककर रखते हैं। क्या आप इस विषय में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: संसार में सबसे बड़ा धन कौन है? कुछ लोग सोचते हैं कि धन-पैसा ही है। कुछ अपने जीवनसाथी को अपना धन मानते हैं। और कुछ भक्त अपने भगवान को ही सबसे बड़ा धन मानते हैं। भक्त का लक्षण यह भय है कि 'कहीं मेरे भगवान को नज़र न लग जाए।' इसलिए वृंदावन में यह परंपरा चली आ रही है। माता यशोदा भगवान को काला टीका लगाती थीं ताकि उन्हें नज़र न लगे। वे पूजा करते समय ऐसी कई बातें करती थीं, अनुष्ठान करती थीं, और दान देती थीं। वृंदावन की यह परंपरा इसी प्रकार चलती आ रही है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:11 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 935 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा आपने कहा, लोगों को रक्षा और मुक्ति केवल माधव नाम से ही मिलेगी। तो आज के युग में जिन लोगों का संबंध बाँके बिहारी नाम के माध्यम से भगवान कृष्ण से है, जो भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं और जिनका हृदय उनसे जुड़ा है, क्या उन्हें अब माधव नाम का प्रयोग करना होगा? या भगवान कृष्ण के नाम से भी उनकी परीक्षा उत्तीर्ण हो सकती है?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न। इस विषय में गीत गोविंद में लिखा है। चैतन्य महाप्रभु ने भी इसके बारे में लिखा है। जब माता राधा रानी पहली बार तमाल वृक्ष के नीचे भगवान कृष्ण से मिलीं, तो उन्होंने उन्हें 'माधव' नाम से पुकारा। तो भगवान कृष्ण ही माधव हैं। नाम स्वयं माधव है। और जब हम कलियुग से अनंत युग में जाते हैं, तो जो कल्कि के रूप में आएँगे, उनका नाम माधव है। इसीलिए, जब राम आए, तो यदि हम भगवान राम को 'विष्णु, विष्णु' कहकर पुकारते, तो क्या उन्हें अच्छा लगता, जबकि वे मनुष्य शरीर में आए थे? यह हमारी संकीर्ण सोच है। क्योंकि भगवान कृष्ण, राम, माधव, गोविंद सब एक ही हैं। परंतु भगवान ने कहा है कि यही नाम मुक्ति देगा। राम का नाम त्रेता युग के लिए था, कृष्ण द्वापर के लिए, और अब लोग माधव नाम से ही तरेंगे। तो इसे मत भूलिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:25 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 936 हमारे देश भारत में, क्या मोदी जी सैन्य रूप में भगवान कल्कि को सिंहासन सौंपेंगे?

उत्तर: इस विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है। क्या लिखा है? कि हस्तिनापुर के सिंहासन पर, सोमवंशी राजा मरु भगवान कल्कि को सिंहासन अर्पित करेंगे। और देवापि अयोध्या में विराजमान होंगे। यह श्रीमद्भागवत में लिखा है। भगवान कल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड पर राज्य करेंगे—अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, सभी देश। भारत तो छोटी बात है, बेटा। सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक के अधिकार में होगा, और वह भगवान कल्कि के नियंत्रण में, उनकी इच्छा से होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:23 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 937 जय श्री माधव, पंडित जी। मेरा प्रश्न यह है कि मेरी माँ को स्वप्न आया कि धर्म की स्थापना में थोड़ी देर होगी। और उन्हें एक और स्वप्न आया जिसमें उन्होंने भगवान कल्कि का भयावह रूप देखा। क्या ये दोनों बातें सत्य हैं?

उत्तर: ऐसा नहीं है कि समय नहीं है। सभी कथावाचक 4,32,000 वर्ष कहते हैं; वह उनके स्वप्न में आया है। यदि आप भगवान के भक्त हैं, तो स्वयं को सुधारिए। बात एक-दो वर्ष की देरी की नहीं है। समय निकट है। धर्म की स्थापना चल रही है, बेटा। इसे मालिका के माध्यम से समझिए और भगवान से जुड़कर धर्म की स्थापना के लिए कार्य कीजिए। यही हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है।

► यह उत्तर सुनें · 44:09 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 938 जो यह स्थिति चल रही है [यूक्रेन और रूस के बीच], क्या यह विश्व युद्ध का संकेत है?

उत्तर: आपने अच्छा पूछा। यूक्रेन और रूस के बीच जो तनाव बढ़ रहा है, और यूरोपीय देशों की धमकियाँ, यह भविष्य के विश्व युद्ध की तैयारी है। जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होगा, तब यूरोपीय देश भारत का विरोध करेंगे, और रूस भारत की सहायता करेगा। अभी जो क्रोध बाहर आ रहा है, वह भारत-पाकिस्तान युद्ध में प्रतिबिंबित होगा। इसीलिए यह समीकरण बन रहा है। असली लड़ाई भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच त्रिकोणीय युद्ध होगी। 13 मुस्लिम देश भारत पर आक्रमण करेंगे, और यूरोपीय देश भी उनकी सहायता करेंगे। तो अभी जो हो रहा है, वह उसी समीकरण का निर्माण है। परंतु हमें इससे क्या लेना-देना? पापियों का विनाश निश्चित है। महामारी को दो वर्ष हो गए, लोग रोज़ मर रहे हैं, परंतु उन्होंने पाप करना नहीं छोड़ा। तो पापियों के विनाश के लिए एक माध्यम चाहिए। आप सब के लिए कोई समस्या नहीं है। धर्म को लाना आप जैसे भक्तों का काम है। यदि कोई माध्यम नहीं होगा, कोई युद्ध नहीं होगा, तो पापियों का विनाश कैसे होगा? यह धर्म की स्थापना के अनेक माध्यमों में से एक है। वर्तमान यूक्रेन समस्या थोड़ी बढ़ेगी, परंतु यह भविष्य के लिए एक नींव तैयार करेगी। जब भारत-पाकिस्तान युद्ध होगा, तब ये सभी यूरोपीय देश अपना क्रोध हम पर निकालेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:08 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 939 पंडित जी, कल्कि पुराण और भविष्य मालिका में अंतर क्यों है? इनके वर्णन अलग-अलग क्यों हैं?

उत्तर: विष्णु पुराण पहला पुराण है। उसके बाद अन्य पुराण आए। सबसे पवित्र शास्त्र श्रीमद्भागवत है। उसमें जो लिखा है, वह महाभारत में थोड़ा बदल गया है क्योंकि महाभारत श्रीमद्भागवत के बाद लिखा गया। और कल्कि पुराण महाभारत के बाद लिखा गया। और कल्कि पुराण के बाद महापुरुषों ने मालिका लिखी। तो जो भी सुधार करने थे, वे भगवान के निर्णय से किए गए। उन्होंने कुछ सुधार किए और भक्तों के लिए जो कुछ आवश्यक है, वह सब मालिका में लिख दिया। क्योंकि यह मालिका इस युग में भगवान के परम सखा, महापुरुष अच्युतानंद द्वारा लिखी गई। इसलिए, मालिका में जो लिखा है, वही होने वाला है। जिसमें भी सुधार की आवश्यकता थी, उसे सुधार कर लिखा गया है।

► यह उत्तर सुनें · 48:29 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 940 पंडित जी, मेरा एक और प्रश्न है। जब भी भगवान अवतार लेते हैं, तो वे स्वयं उस समय निर्णय लेते हैं कि आगे क्या होगा। तो फिर मालिका में या किसी अन्य शास्त्र में पहले से यह कैसे वर्णित किया जा सकता है कि भगवान भविष्य में क्या करने वाले हैं?

उत्तर: देखिए, बेटा। भगवान कपिल मुनि के अवतार लेने से पहले, उनकी माता देवहूति को कर्दम ऋषि ने बताया था कि भगवान उनके घर जन्म लेंगे। भगवान राम के जन्म से पहले, श्रीमद्भागवत में राम अवतार का वर्णन था। भगवान कृष्ण के जन्म से पहले, लोग श्रीमद्भागवत पढ़ रहे थे और जानते थे कि वे जन्म लेंगे। इसी प्रकार, मालिका भी कहती है कि भगवान कल्कि आएँगे, और धर्म की स्थापना होगी। भागवत भी कहता है कि भगवान कल्कि अवतार लेंगे, भक्तों की रक्षा करेंगे, घोड़े पर सवार होकर और तलवार धारण कर, वे सत्य, धर्म और न्याय की स्थापना करेंगे। यह लिखा है। शास्त्र भविष्य के बारे में, भूतकाल के बारे में, और जो आने वाला है उसके बारे में लिखते हैं। हर युग में, शास्त्रों ने अवतार के आने से पहले उनके बारे में लिखा है, और भक्त उसे पढ़ते हैं। ऐसे ही होता है, बेटा।

► यह उत्तर सुनें · 49:53 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 941 क्या हम कल्कि पुराण घर में रख सकते हैं? क्या इससे कोई समस्या होगी?

उत्तर: भारत और विश्व में सनातन धर्म के अनेक मिशन हैं, परंतु उनकी धारा हमारी धारा से बहुत अलग है। क्योंकि मैं आपको बताऊँगा, बेटा, Kali Yuga में लोग कथाएँ सुनते थे। परंतु सनातन धर्म की हमारी धारा में लोग भागवत पढ़ेंगे, सब संत बनेंगे, ब्राह्मण बनेंगे। वे सत्य, शांति, दया और क्षमा के साथ अपने चरित्र और आध्यात्मिक जीवन को ऊँचा उठाएँगे। वे Trisandhya करेंगे। यह अतीत के अन्य धार्मिक प्रचारों में नहीं है। क्योंकि Satya Yuga का मार्ग वहाँ नहीं है। जिस मार्ग से मानवता आगे बढ़ सकेगी, वह मार्ग प्रभु के आशीर्वाद से विश्व सनातन धर्म संगठन ने बनाया है। इस संगठन की धारा विशुद्ध रूप से Satya Yuga के कल्याण के लिए है। अतीत के अन्य सनातन धर्म संगठनों में यह नहीं है। तो सोचिए कि यह अलग क्यों है।

► यह उत्तर सुनें · 52:00 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 942 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। क्या आप हमें बता सकते हैं कि आने वाले समय में हमारे देश में Kalki अवतार कब प्रकट होंगे, और हम सभी बंधनों से कब मुक्त होंगे तथा यहाँ Satya Yuga की स्थापना कब होगी? कभी-कभी थोड़ा डर लगता है। क्या हम ठीक रहेंगे?

उत्तर: पहले मैं यह कहना चाहता हूँ: जो लोग धारा में हैं, जो नियमों का पालन करते हैं, जो पवित्रता के मार्ग पर हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं है। दूसरी बात, सब पूछते हैं, 'भगवान Kalki कब प्रकट होंगे?' क्या वे कोई मीडिया चैनल हैं? क्या वे कोई प्रधानमंत्री हैं जो घोषणा करेंगे, 'मैं भगवान हूँ, मेरे दर्शन के लिए आओ'? पिछले युगों में भक्त को भगवान के दर्शन के लिए कितनी तपस्या करनी पड़ती थी। क्या भगवान इतनी आसानी से आकर कहेंगे, 'मैं भगवान हूँ, मेरे दर्शन कर लो'? यदि कोई भगवान को मनुष्य शरीर में देख ले, तो उसे मुक्ति मिल जाएगी। इसीलिए भगवान गुप्त रहेंगे। Bhavishya Malika कहती है कि भगवान Kalki चोर की तरह गुप्त रूप से पूरे ब्रह्मांड में विचरण करेंगे, और कोई उन्हें पहचान नहीं पाएगा। केवल आप जैसे शुद्ध भक्त ही जानेंगे कि वे ही भगवान हैं। तो, वे गुप्त रूप से धर्म की स्थापना करेंगे, किसी को पता नहीं चलेगा, और वे कहीं प्रकट नहीं होंगे। ऐसा कभी नहीं होगा कि वे प्रकट होंगे, लोग उन्हें स्वीकार करेंगे, और सबको मुक्ति मिल जाएगी। भगवान गुप्त रूप से धर्म की स्थापना करेंगे। भक्त जहाँ कहीं भी होंगे, किसी न किसी तरह भगवान के संपर्क में आ जाएँगे, या भगवान Kalki स्वयं जाकर उन्हें दर्शन देंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 56:32 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 943 क्या इसका अर्थ यह है कि भगवान Kalki मानवता के लिए, मनुष्य रूप में आएँगे?

उत्तर: हर युग में जब भी धर्म की स्थापना हुई है, भगवान मनुष्य रूप में ही आए हैं। राम, कृष्ण, चैतन्य महाप्रभु, परशुराम, बुद्ध अवतार—सभी मनुष्य रूप में ही आए। तुलसीदास जी ने लिखा है, 'जब-जब होइ धरम कै हानी' तब प्रभु मनुज शरीर धारण करते हैं। जब भगवान राम ने रावण से युद्ध किया, तो किसी राजा ने उनकी सहायता नहीं की; उनके पास केवल वानर और भालू थे। सारे राजा बस देख रहे थे। जब प्रभु ने रावण का संहार कर धर्म की स्थापना कर दी, तब ब्रह्मांड के सभी राजा आकर राम के चरणों में गिरे और मुक्ति माँगने लगे। हर युग में प्रभु इसी तरह आते हैं और गुप्त रूप से धर्म की स्थापना करते हैं। धर्म की स्थापना के बाद लोग विवश होकर प्रभु की शरण में आते हैं। और इस युग में भी ऐसा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 59:22 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 944 भागवत महापुराण में कहा गया है कि जो भगवान को अर्पित किया जाए, उसे ग्रहण नहीं करना चाहिए। लेकिन जब हम पूजा करते हैं, तो प्रसाद ग्रहण करते हैं। तो क्या हमें वह भी नहीं खाना चाहिए?

उत्तर: देखिए, Kali Yuga के इस समय में प्रभु का प्रसाद भक्तों के लिए अमृत है। भगवान कृष्ण और चैतन्य महाप्रभु ने अपना प्रसाद सभी भक्तों में बाँटा। भगवान उसे ग्रहण नहीं करते, वे केवल उसे देखते हैं। जब उनकी कृपादृष्टि उस पर पड़ती है, तो वह अमृत बन जाता है। वह भक्तों के लिए पवित्र है। Jagannath मंदिर में प्रतिदिन प्रभु को 56 प्रकार के भोग अर्पित किए जाते हैं, और वह भोग लाखों लोग खाते हैं। यह परंपरा तब से चली आ रही है जब ब्रह्मा जी ने मंदिर की प्रतिष्ठा की थी। तो शास्त्रों को ठीक से समझना पड़ता है। मैं इसे बाद में समझाऊँगा। जय श्री Madhava।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:06 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 945 जब से मैं आपसे जुड़ा हूँ और थोड़ा-बहुत Bhavishya Malika का अनुसरण कर रहा हूँ, मुझे लगता है कि मैं बहुत बड़ा पापी हूँ। पर जब भी मैं सुबह भगवान शंकर के दर्शन के लिए जाता हूँ, मुझे एक मरा हुआ चूहा दिखता है जिसे कोई खा रहा होता है। इसका क्या अर्थ है? और कृपया मुंबई के बारे में भी थोड़ा बताइए कि आने वाले समय में उसकी क्या स्थिति होगी।

उत्तर: बेटा, मुंबई का सौभाग्य महालक्ष्मी और भगवान गणेश की कृपा से था। अब भगवान गणेश और महालक्ष्मी ने धर्म की स्थापना के लिए अपनी दिशा बदल ली है। इसलिए आने वाले समय में उस स्थान पर बहुत सी समस्याएँ और आपदाएँ आने वाली हैं। भक्तों के लिए कोई समस्या नहीं है, पर यह पापियों के विनाश का समय है।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:52 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 946 पंडित जी, मैं बिहार से हूँ। क्या 2022 में बिहार में कुछ होने वाला है? कृपया बिहार के बारे में थोड़ा बताइए।

उत्तर: कुछ प्राकृतिक आपदाएँ अवश्य होंगी, जैसे भूकंप, बाढ़, बीमारियाँ, महामारी, सब कुछ। पर बात यह है कि बिहार भूकंप से तबाह होगा। यह Bhavishya Malika में लिखा है। जय श्री Madhava।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:54 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 947 ठाकुर अनुकूलचंद्र द्वारा दिखाया गया मार्ग, हमें ऐसा लगता है कि वह Bhavishya Malika के सागर की ओर ले जाता है और उन्हीं महाप्रभु के चरणों में मिलता है। तो क्या अनुकूल ठाकुर के मार्ग पर चलने वाले भक्त भी बचेंगे? हम Bhavishya Malika से भी जुड़े हुए हैं। कृपया अनुकूलचंद्र के बारे में बताइए।

उत्तर: याद रखिए, Bhavishya Malika में महापुरुष अच्युतानंद ने ठाकुर अनुकूलचंद्र बाबा के बारे में लिखा है। उन्होंने उनके बारे में बहुत अच्छा लिखा है। क्योंकि जब Bhavishya Malika लिखी गई थी, तब ठाकुर अनुकूल बाबा का जन्म भी नहीं हुआ था। Bhavishya Malika उससे पहले लिखी गई थी, और उसमें कहा गया है, 'लीला जाणा हेब, कीर्ति प्रकाशिब, अनुकूल नामे...' अर्थात् ठाकुर अनुकूल बाबा बहुत-बहुत भक्तों को एकत्र करेंगे। वे सत्त्व (पवित्रता) की धारा फैलाएँगे। भक्त उनके नाम पर भजन करेंगे और सत्संग करेंगे। यही उन्होंने लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:49 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 948 प्रभु की धारा में, क्या Bhavishya Malika के माध्यम से भगवान Kalki के प्रति समर्पण करना आवश्यक है?

उत्तर: इसी समय, हमें वर्तमान समय को समझना होगा। उन्होंने जो मार्ग दिखाया है, भारत में और अन्य देशों में, सत्त्व का प्रकाश—यह बहुत महान और पवित्र कार्य उन्होंने किया है। इसके लिए आप सब भाग्यशाली हैं कि आप पहले से ही इस मार्ग पर हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:26 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 949 मैं पूछना चाहता हूँ, जैसा अर्जुन ने गीता में कहा था, कि यदि कोई आपका सहस्रनाम (हजार नाम) न जप सके, तो वे कौन से कुछ चुने हुए नाम हैं जिनका जप करके वही फल मिल सके? जैसे, विष्णु सहस्रनाम में 26 से 28 नाम हैं। जो गीता नहीं पढ़ सकते, क्या वे उनका जप कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए बेटा, गीता पढ़ना अपनी-अपनी इच्छा है। पर श्रीमद्भागवत हमारे लिए सबसे पवित्र ग्रंथ है। उसे पढ़ना आवश्यक है, नहीं तो हम Satya Yuga में नहीं जा पाएँगे। अर्जुन ने जो कहा था, वह Dvapara Yuga के लिए था। अब हम संगम युग में हैं। तो इस युग के अनुसार हमारे लिए श्रीमद्भागवत पढ़ना आवश्यक है। और एक अध्याय भी न पढ़ना हमारे लिए अच्छा नहीं है। क्योंकि Satya Yuga में सब भागवत पढ़ेंगे। गीता पढ़ेंगे या नहीं, मुझे नहीं पता। पर श्रीमद्भागवत वे अवश्य पढ़ेंगे। यदि नहीं पढ़ेंगे, तो बच नहीं पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:04 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 950 पिताजी, जैसा आपने कहा कि Satya Yuga में एक नया सूर्य उदय होगा, तो क्या हर युग में नया सूर्य उदय होता है?

उत्तर: देखिए... अभी स्थिति सबसे चरम पर है, इसलिए बहुत अधिक परिवर्तन होगा। Kali Yuga की सारी गलत चीज़ें बदल दी जाएँगी। इसीलिए यह चारों युगों के अंत में हो रहा है। अन्य युगों में ऐसा नहीं हुआ था।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:24 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 951 पिताजी, मुझे हमेशा एक हाथी दिखाई देता है। चाहे मैं यूँ ही बैठा हूँ, या स्वप्न में, या पूजा करते समय। कभी-कभी वह भगवान गणेश होते हैं। ऐसा क्यों है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि कोई शुभ समाचार आने वाला है। आने वाले समय में आपके परिवार में, आपके जीवन में किसी प्रकार का मंगलमय प्रसंग आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:14 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 952 पिताजी, आज जब मैं भगवद्गीता पढ़ रही थी, तो मुझे एक बहुत ही विचित्र वृक्ष दिखाई दिया जिसके पत्ते सुनहरे थे और तेज़ चमक रहे थे। और कुछ दिन पहले, कीर्तन करते समय, मुझे लंबी जटाओं वाले एक महात्मा दिखाई दिए, जो दीवार से मुझे देख रहे थे।

उत्तर: देखिए, युग-परिवर्तन के इस समय में, आपकी आँखें आने वाले स्वर्ण युग का प्रकाश देख रही हैं। ऐसा लगता है कि यह ज्ञान का प्रकाश है। क्योंकि यह Kali Yuga लोहे का युग है। आने वाला युग स्वर्ण युग है। और जिन्हें आप देखती हैं, वे ऋषि हैं जो आपको दर्शन दे रहे हैं। धर्म की स्थापना में उन्हें यह दायित्व दिया गया है कि वे भक्तों को दर्शन दें और उनका मार्गदर्शन करें।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:49 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 953 जी, पिताजी। और एक दिन, मैंने आकाश में पाँच या सात ऋषियों को देखा, और वे सब जल्दी में थे, मानो आगे जाने की होड़ लगी हो, आपस में बातें करते हुए।

उत्तर: भगवान Kalki ने सप्तऋषियों (सात महान ऋषियों) को भक्तों की रक्षा का दायित्व सौंपा है। आपको उन्हीं के दर्शन हो रहे हैं। बहुत से भक्तों को पहले ही उनके दर्शन हो चुके हैं। यह चल रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:05 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 954 पिताजी, मैं प्रदोष का व्रत रखती थी। एक बार, मैंने एक बहुत बड़े दिव्य नाग को देखा। उनके सामने मैं चींटी जितनी छोटी थी। उनका मुँह बहुत बड़ा खुला हुआ था। मेरे पास एक साधु खड़े थे, और मैं अपने हाथों से नाग देवता को खिला रही थी, प्रसाद अर्पित करने के लिए अपना हाथ उनके मुँह के भीतर डाल रही थी। साधु मुझे प्रोत्साहित कर रहे थे। वह बहुत ही दिव्य स्थान था।

उत्तर: देखिए, माता जी। भगवान Kalki अपने शरीर में बलराम जी भी हैं, जो शेषनाग हैं, और भगवान विष्णु भी। मैंने पहले भी कहा है कि भगवान शेषनाग संहार करेंगे, जबकि भगवान विष्णु भक्तों की रक्षा करेंगे। भगवान एक ही शरीर में आए हैं। और ओडिशा में Bhavishya Malika की धारा में भगवान Kalki को अनंत और शेषनाग के रूप में वर्णित किया गया है। इसीलिए आपको यह दर्शन हुआ। यह Kalki अवतार का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:41 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 955 पंडित जी, आपने कहा कि पैसे का कोई मूल्य नहीं रहेगा। तो क्या हमें लंबे समय के लिए इसे कमाना चाहिए या नहीं?

उत्तर: जब तक हम इस धारा में हैं, हमें संसार की स्थिति का अनुसरण करना ही पड़ेगा। अभी के लिए, पैसा आवश्यक है। लेकिन बाद में, आपके पास चाहे कितना भी हो, उसका कोई अर्थ नहीं रहेगा। संसार के सबसे धनी लोगों को अपनी संपत्ति किसी काम की नहीं लगेगी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि आप काम करना छोड़ दें। जब तक आपमें सामर्थ्य है, आपको काम करना चाहिए। हमें भगवान से कोई निषेध नहीं मिला है। समय के मार्ग का अनुसरण कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:12 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 956 गुरुजी, क्रिप्टोकरेंसी जैसी चीज़ों के आने से, क्या लोगों को इससे नुकसान हो सकता है?

उत्तर: एक समय आएगा जब किसी के पास जो भी धन होगा, उसका कोई हिसाब नहीं रहेगा, और उसे निकालना बहुत कठिन हो जाएगा। वह समय आएगा, पर अभी नहीं। वह 5 वर्ष बाद है। कम से कम 4-5 वर्षों तक यह स्थिति नहीं बनेगी। बीच-बीच में कंप्यूटर में बार-बार गड़बड़ियाँ होंगी। लेकिन कंप्यूटरों के पूर्ण रूप से निष्क्रिय होने का समय अभी नहीं आया है। इसलिए, अभी के लिए, इसे बनाए रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:17:23 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 957 गुरुजी, आपने एक बार कहा था कि विश्व युद्ध सितंबर 2024 और 2025 के बीच हो सकता है। अगर विश्व युद्ध होता है, और आधिकारिक ब्लैकआउट होता है, तो कंप्यूटरों में जो पैसा है वह चला जाएगा, है ना?

उत्तर: नहीं, जो महासंग्राम होगा उसमें... उसके कारण नहीं होगा। सौर सुनामी आ रही है ना? जब वह आएगी, तब कंप्यूटर ठप हो जाएँगे। धर्म की स्थापना सात चरणों में होगी। तो, समय के साथ देखते रहिए, यह धीरे-धीरे बढ़ेगा। हाँ, बैंक वगैरह सब प्रभावित होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:27 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 958 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। हम दुर्गा-Madhava स्तुति करते हैं। मेरे पास एक PDF है जिसमें ओड़िया भाषा और उसका हिंदी अनुवाद है। मैं केवल हिंदी वाला ही पढ़ती हूँ। क्या यह ठीक है अगर मैं ओड़िया न पढ़कर केवल हिंदी पढ़ूँ? क्या भगवान फिर भी प्रसन्न होंगे?

उत्तर: देखिए, भगवान नाम के जप से प्रसन्न होते हैं। लेकिन जो लिखा गया है, वह भक्त के उद्धार के लिए एक भजन है। इसमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन शास्त्रीय परंपरा कहती है कि भजन उसी धारा में पढ़ना चाहिए जिसमें वह लिखा गया है। शास्त्रीय परंपरा के अनुसार, जो भजन ओड़िया में है, उसका पाठ सही उच्चारण के साथ करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:19:49 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 959 पिताजी, यदि किसी को 'पादुका मंत्र' (खड़ाऊँ का मंत्र) प्राप्त होता है, तो उसे सिद्ध कैसे किया जाता है? इसकी उपासना कैसे करें? इसके क्या नियम हैं?

उत्तर: देखिए, पादुका मंत्र भक्तों को दिया जाएगा, और वह भगवान की कृपा से दिया जाएगा। इससे व्यक्ति आकाश में उड़ सकता है और अपने भौतिक शरीर के साथ ब्रह्मांड में किसी भी स्थान पर जा सकता है। यह मंत्र भगवान Kalki का अभिन्न अंग है, और भगवान यह मंत्र उन भक्तों को देंगे जो धर्म की स्थापना के कार्य में जुड़ेंगे। समय आने पर यह प्राप्त होगा। जो भक्त ब्रह्मांड में धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे, उन्हें यह प्राप्त होगा, सबको नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:04 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 960 पंडित जी, 10 दिन पहले, मुझे एक स्वप्न आया कि मैं मन की गति से कहीं भी जा सकता हूँ। मुझे वह शक्ति मिली, और मुझसे कहा गया कि इसका उपयोग 2 वर्ष बाद करना, यद्यपि मैं अभी परीक्षण कर सकता हूँ। मैंने परीक्षण किया और यह काम कर गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आप मन की गति से कहीं भी जा सकते हैं। इसका अर्थ है, बेटा, कि आपके मन की गति से आपका दिव्य शरीर जाकर देख सकता है कि कहाँ क्या हो रहा है। आपको सारे समाचार मिल जाएँगे। हो सकता है आप वहाँ कुछ कर न सकें, पर आप देख सकते हैं कि क्या हो रहा है। यह भगवान की कृपा है, जो स्वप्न में दिखाई गई है। यदि आप नियमों की धारा में रहेंगे, तो आने वाले समय में आपको इसका प्रमाण मिलेगा, और जो आपने स्वप्न में देखा वह सार्थक हो जाएगा। ठीक है, बेटा।

► यह उत्तर सुनें · 01:23:13 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 961 पिताजी, मैंने आपको अपने घर में देखा। मैंने आपको अपने घर में एक पिता की तरह, एक संरक्षक की तरह, हमारे घर में भोजन करते हुए देखा। आप हमारे घर कब आएँगे?

उत्तर: सुनो, माता। गुरु परंपराओं में भक्तों के घर आना-जाना होता रहता है। लेकिन दूसरी बात, आपके मन की पवित्रता... देखिए, भगवान ने मुझे आपको कुछ बताने की क्षमता दी है। और जिससे मेरी बातों पर आपका विश्वास और श्रद्धा बढ़े, इसलिए भगवान ने आपको यह दर्शन कराया। क्योंकि जो मैं कह रहा हूँ वह सही है। और जब समय आएगा, तब भगवान ऐसा करा देंगे, माता। यदि प्रभु की कृपा हुई, तो मैं आ सकता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 01:25:50 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 962 पिताजी, मक्का मदीना के बारे में, मैंने भी सुना है कि वहाँ एक शिवलिंग है।

उत्तर: मक्केश्वर महादेव। हाँ, हम उन्हीं की बात कर रहे हैं। मक्का में विराजमान मक्केश्वर महादेव को हम कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं। और यह बिल्कुल सही है। इसका एक बहुत विस्तृत वर्णन है जिसे मैं प्रकट नहीं करना चाहता। यह इस प्रकार होगा कि किसी को पता भी नहीं चलेगा कि कैसे हुआ। लेकिन जब महादेव वहाँ अपना पूर्ण स्वरूप प्रकट करेंगे... जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 01:27:30 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 963 मैं अपने माता-पिता को जगन्नाथ पुरी के दर्शन के लिए ले जाना चाहता हूँ। दर्शन के बाद, मेरी आपके दर्शन की भी इच्छा है।

उत्तर: देखिए, पुरी का मंदिर अब खुला है, बेटा। यदि आप दर्शन करना चाहते हैं, तो हमें पहले से बता दीजिए, और जो कुछ संभव होगा हम व्यवस्था कर देंगे। और देखिए, मैं आपके जैसा ही एक साधारण व्यक्ति हूँ। मैं भक्तों को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ। मुझमें कोई विशेष योग्यता नहीं है; मैं भी आपके दर्शन की इच्छा रखता हूँ। लेकिन फिर भी, भगवान जगन्नाथ के दर्शन अवश्य कीजिए, यह बहुत अच्छी बात है। पर इतना मैं कहूँगा: सनातन धर्म के प्रचार के लिए, हमें सारे ब्रह्मांड में वानर सेना की तरह कार्य करना है। उस कार्य को आगे बढ़ाना ही सबसे महत्वपूर्ण बात है। और जब आपको प्रभु के दर्शन के लिए आने का समय मिले, तो पहले से हमसे बात कीजिए। जो भी सहायता चाहिए, हम कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:29:40 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 964 पंडित जी, मैंने एक यूट्यूब वीडियो देखा जिसमें ओड़िया में मालिका का वर्णन करने वाले एक सज्जन ने कहा कि सुभाष चंद्र बोस अभी भी जीवित हैं और रूस में हैं। और जब यहाँ मुगल शासन आएगा, तब वे हमें मुक्त कराने के लिए रूसी सेना को भारत लाएँगे। क्या मालिका में ऐसा कुछ है?

उत्तर: इस विषय में, मैं सब कुछ प्रकट नहीं करूँगा। लेकिन इतना कहूँगा: रूस द्वारा सेना लाने की बात, वह सही नहीं है। रूस का प्रमुख भारत को सैन्य सहायता प्रदान करेगा। वह भारत आएगा और भारतीय सेना के साथ मिलकर विदेशियों के विरुद्ध युद्ध करेगा। यह लिखा हुआ है। लेकिन सुभाष चंद्र बोस के बारे में जो लिखा है वह एक गुप्त विषय है। मैं उस पर कोई टिप्पणी नहीं करूँगा। जो लोग अपनी व्यूअरशिप बढ़ाना चाहते हैं, वे ऐसी बातें प्रकाशित करते हैं। यह कहना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। समय आने पर सब कुछ प्रकट हो जाएगा। (आगे का प्रश्न: 'कम से कम इतना तो बता दीजिए कि वे जीवित हैं या नहीं।') मैं नहीं कहूँगा। यह एक विवादास्पद विषय है। इस पर कोई निर्णय नहीं हुआ है क्योंकि यह भगवान के अधीन है। कोई भी सरकार इसका समाधान नहीं निकाल सकती। तो बताने से क्या लाभ? जो होगा वह प्रभु की इच्छा से होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:30:53 · 3 फ़रवरी 2022

प्रश्न 965 रामायण पढ़ते समय... भगवान राम भगवान विष्णु के अवतार हैं, और भगवान लक्ष्मण शेषनाग के अवतार हैं। तो, भगवान शत्रुघ्न और भगवान भरत प्रभु के कौन से अंश या 'लीला कला' हैं?

उत्तर: भरत प्रभु के सुदर्शन चक्र हैं, और शत्रुघ्न उनके शंख हैं। क्योंकि रामचरितमानस में लिखा है, 'अंस सहित मनुज अवतारा...' अर्थात्, 'अपने अंशों को साथ लेकर हम चारों भाइयों ने अवतार लिया है।' भरत सुदर्शन चक्र हैं, शत्रुघ्न शंख हैं, लक्ष्मण शेषनाग हैं, और प्रभु स्वयं पूर्ण अवतार हैं। भगवान राम ने हनुमान जी से कहा था, 'तुम मुझे मेरे भाई भरत के समान प्रिय हो।' इससे पता चलता है कि भगवान राम ने भरत को कितना महत्व दिया।

► यह उत्तर सुनें · 01:34:34 · 3 फ़रवरी 2022

सत्र 47 · प्रश्न 966–966

L45.2 आगे आने वाले भूकंप के बारे में भविष्य मालिका में क्या वर्णित है? -- LIVE

दिनांक: 6 फ़रवरी 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 966 लोग पूछते हैं कि मनुष्य का जन्म क्यों होता है? मानव जीवन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर: इस संसार में मानव जन्म का केवल एक ही उद्देश्य है: भगवान को प्राप्त करना। यह इसलिए है कि आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाए और उस जन्म-मृत्यु के चक्र से परे चली जाए जिसमें मनुष्य भटकता रहता है, ताकि वह वैकुंठ और गोलोक पहुँच सके। यही मानव जन्म का सबसे बड़ा लक्ष्य है।

► यह उत्तर सुनें · 00:20 · 6 फ़रवरी 2022

सत्र 48 · प्रश्न 967–982

L46 Google meet with Pujya Pandit KASHINATH Misra ji ,--LIVE

दिनांक: 2 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 967 पिछले एक वर्ष से हिंदुओं पर अत्याचार बहुत बढ़ गए हैं। यह सरकार जिसे हमने चुना, मोदी और अन्य लोग, कुछ नहीं कर रहे। हमने सोचा था कि वे हिंदुओं के लिए हैं, पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। लोग तो उन्हें 'मर्दे मुजाहिद' तक कहते हैं (एक शब्द जो यह दर्शाता है कि वे चरमपंथियों के मित्र हैं)। भगवान कल्कि कब नियंत्रण लेंगे? जिस तरह से चल रहा है, यह सरकार जिहादियों को छात्रवृत्ति दे रही है, उन्हें मजबूत बना रही है, जबकि हम हिंदुओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं। हम कैसे बचेंगे, और भगवान कल्कि पूर्ण नियंत्रण कब लेंगे?

उत्तर: मैं इसका उत्तर देना चाहता हूँ, बेटा। देखिए, जब कंस मरा, तब भी वह राजा ही था। भक्त भी मुझसे यही प्रश्न पूछते हैं। लेकिन कंस जब तक मरा नहीं, तब तक वह पाप करता रहा। उस समय वह मथुरा का राजा था और सुख-सुविधा में रहता था। तो, जो पाप करते हैं और सुख-सुविधा में रहते हैं, उनकी अकाल मृत्यु होगी। हमारे सनातन धर्म के अनुसार, हर युग में पापियों ने पाप किए और अंततः उनका नाश हुआ और उन्हें नरक भेजा गया, फिर कभी मनुष्य या असुर के रूप में जन्म न लेने के लिए। इस युग में जो पाप करेंगे, वे भी नरक जाएँगे और अनगिनत कल्पों तक कष्ट भोगेंगे। इस सत्संग में जो लोग भागवत पढ़ते हैं, उनके लिए आने वाली आपदा के विषय में... रेगिस्तान में बाढ़ आ रही है। पाकिस्तान की बाढ़ तो छोटी बात है। भविष्य में ऐसी भयंकर बाढ़ें आएँगी कि सड़कों पर 100 फीट पानी चढ़ जाएगा। भगवान चुन-चुनकर वहाँ ऐसा करेंगे जहाँ पाप व्याप्त है। हमारे लोग भी उन जगहों पर हो सकते हैं, पर उन्हें कुछ नहीं होगा। जो इस मार्ग पर चलते हैं वे अपने अनुभव से यह जानते हैं। सुरक्षा यही है कि धर्म के कार्य में लगे रहें। भगवान पापियों का नाश करेंगे; समय आ रहा है, और हमें बार-बार संकेत मिल रहे हैं। आज अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इंग्लैंड और कई यूरोपीय देशों में सूखा पड़ा है। एक महा अकाल आएगा, और हमारे देश सहित पूरे विश्व में पाप, भ्रष्टाचार और अन्याय बढ़ेगा। लेकिन भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। भगवान की शरण में जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 16:40 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 968 क्या ये मोदी हमारी तरफ हैं या जिहादियों की तरफ? क्योंकि उनके सारे काम उन्हें शक्तिशाली और हमें कमजोर बना रहे हैं। वे उन्हें छात्रवृत्ति दे रहे हैं। क्या भगवान उन्हें भी दंड देंगे? मैं बस यही पूछना चाहता था।

उत्तर: किसी भी मनुष्य में धर्म को रोकने की शक्ति नहीं है, चाहे वह चाहे भी। लेकिन इसमें कुछ समय लगेगा। कार्य आरंभ हो रहा है। जब समय आएगा, तब आप देखेंगे कि पापियों का नाश कैसे होता है। धर्म की स्थापना शुरू हो चुकी है। आने वाले समय में लोग पंचतत्वों का ऐसा प्रलय देखेंगे कि उन्हें याद आएगा कि मैं 2013-14 में क्या कह रहा था। प्रभाव उससे दोगुना होगा जितना मैंने बताया था। मानव समाज में बहुत लोग नहीं बचेंगे। समय आ रहा है; भगवान विचार कर रहे हैं। प्रतीक्षा करना भक्त का कर्तव्य है, जैसे पाँच पांडवों ने कई वर्षों तक प्रतीक्षा की। लेकिन हमें उतने वर्षों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बस कुछ महीने, या एक से तीन वर्ष देखिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:00 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 969 क्या यह कार्य हिंदुओं के विरुद्ध हो रहा है या हिंदुओं के लिए?

उत्तर: आने वाले समय में हिंदू और सनातन धर्म के अनुयायी बहुत सक्रिय हो जाएँगे। सनातन धर्म का प्रचार दूसरे देशों में भी होगा, और अंततः पूरे विश्व में केवल सनातन धर्म ही रहेगा। हम केवल भारत को नहीं देखते; हम अखंड भारत के बारे में सोचते हैं, और भविष्य में अखंड भारत होगा। भगवान ने अपने ढंग से धर्म स्थापना का कार्य पहले ही आरंभ कर दिया है, और यह आगे बढ़ता रहेगा। हमारे मानव समाज की रक्षा के लिए, आप सब इस धर्म के मार्ग को अपनाइए।

► यह उत्तर सुनें · 23:29 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 970 मेरा प्रश्न इस सत्संग के बारे में है... यह गुजरात में क्यों आयोजित किया जा रहा है?

उत्तर: देखिए, भगवान श्रीकृष्ण ने धर्म की स्थापना की, और उनके शासन का पवित्र केंद्र गुजरात था। भगवान की इच्छा से, उसी पवित्र क्षेत्र से 16 'मंडलों' में से पहला मंडल बनेगा। भविष्य ग्रंथ के अनुसार, पहला मंडल वहीं बनेगा, और इस प्रकार शासन का नया युग उसी स्थान से आरंभ होगा। दूसरी बात, कई वर्ष पहले गुजरात के एक संत ने भी भविष्यवाणी की थी कि यह साबरमती के तट पर होगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:32 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 971 एक 'दिवायत पंडित' ने भविष्यवाणी की थी कि पहला धार्मिक सत्संग यमुना के तट पर होगा, लेकिन उन्होंने यह भविष्यवाणी गुजरात से की थी। क्या इसका कोई संबंध है?

उत्तर: यह बिल्कुल सही है। मैंने भी वह पढ़ा है, और यह साबरमती के तट पर हो रहा है। भविष्य मालिका के अनुसार पहला सत्संग वहीं होने का विधान है, और वैसा ही हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 25:52 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 972 सोमवार की रात मेरी बहू ने एक स्वप्न देखा। उसने भगवान शंकर को विशाल रूप में, खुले बालों के साथ, अत्यंत क्रोधित मुद्रा में त्रिशूल धारण किए हुए देखा। उनके सामने एक राक्षस था। भगवान शंकर कह रहे थे, 'मैं इस राक्षस का वध करूँगा,' और उसे मारने के लिए आगे बढ़ रहे थे। उनके गण कह रहे थे, 'भगवान शंकर अभी इसका वध करेंगे, और हम उस राक्षस की चिता की भस्म से उनकी पूजा करेंगे।' इस स्वप्न का क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है: भगवान विष्णु के तीन स्वरूपों में से ब्रह्मा सृष्टि का कार्य संभालते हैं, विष्णु पालन का, और शिव संहार का। यह संहार का कार्य बलराम जी द्वारा किया जाएगा। इसके पूर्व संकेत के रूप में अनेक भक्तों को स्वप्न में ऐसे दर्शन हो रहे हैं। इसका अर्थ है कि पापियों के विनाश का समय आ गया है। धैर्य रखिए, और आगे क्या होता है यह हम देखेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये पापी और अधिक पाप कर रहे हैं, और जैसा आप मालिका में सुनते हैं, भगवान शिव ने उसी के अनुसार यह दर्शन दिया है।

► यह उत्तर सुनें · 26:39 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 973 जो लोग गरीब हैं या जिन्हें कोई समस्या है और वे अहमदाबाद के सत्संग में नहीं आ सकते, उनका क्या?

उत्तर: हम जुड़े हुए हैं। गरीबों के लिए और जो किसी समस्या के कारण नहीं आ सकते, उनके लिए हमारा 'सुदामा महासंघ' सहायता करेगा। लेकिन आपको जो नंबर दिया गया है, उस पर हमसे संपर्क करना होगा। भगवान और धर्म का कार्य सामूहिक रूप से होता है, और हम सब मिलकर कार्य करेंगे। संपर्क में रहिए। यदि किसी को कुछ आवश्यकता हो तो हमें बताइए, हम उसी के अनुसार कार्य करेंगे। गुजरात के सत्संग में हम फिर मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:42 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 974 मेरा प्रश्न मेरे स्वास्थ्य के बारे में है। 17 वर्षों से मेरी रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत कमजोर है। आपसे जुड़े हुए 6 महीने हो गए हैं, लेकिन मुझे अभी तक कोई समाधान नहीं मिल रहा है।

उत्तर: देखिए बेटा, आज की बीमारी पिछले जन्मों के कर्मों का फल है। हर किसी को कोई न कोई बीमारी है। केवल एक-दो दिन तपस्या करने से आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त नहीं होतीं; इसमें युगों लग जाते हैं। आपके पिछले कर्म इस जन्म में रोग के रूप में प्रकट हुए हैं। लेकिन मालिका के अनुसार, जब समय आएगा, तो जो भक्त इस मार्ग और 'त्रिसंध्या' का पालन करते हैं, वे बच जाएँगे, चाहे कोई बड़ी विपदा या अकाल ही क्यों न आ जाए। सत्य के मार्ग से उनका शरीर दिव्य हो जाएगा। जैसे ऋषियों ने हजारों वर्षों तक तपस्या की, वैसे ही हमें भी कुछ समय प्रतीक्षा करनी होगी। उस युग में कोई बीमार नहीं होगा; सब दिव्य और सुंदर होंगे। उसके लिए संयम और मार्ग का पालन आवश्यक है। आपके पिछले जन्म के कर्म धीरे-धीरे कम होंगे, तुरंत नहीं। लेकिन भगवान आपको मृत्यु और बड़ी समस्याओं से बचाएँगे। आपके कर्म समय के साथ धीरे-धीरे कटते जाएँगे। उस परिवर्तन की प्रतीक्षा कीजिए और भगवान की शरण में रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:26 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 975 आप कह रहे हैं कि यह सत्संग सत्य युग के आरंभ के लिए है, लेकिन यह वास्तव में कब शुरू होगा?

उत्तर: देखिए, 22 नवंबर से होने वाला यह सत्संग सत्य युग के आरंभ के लिए है। हम जितने लोगों को तैयार कर रहे हैं, उनकी संख्या बड़ी होनी चाहिए। जैसे शासन करने के लिए बहुमत वाली पार्टी चाहिए, वैसे ही सत्य युग को लाने की प्रक्रिया शुरू करने का यह पहला कार्यक्रम है। जैसे-जैसे संसार के लोग धीरे-धीरे हमारी परंपरा से जुड़ेंगे, एक समय ऐसा आएगा जब सत्यवादी, सद्गुणी लोगों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी, और प्रकृति स्वयं बदल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 32:24 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 976 हमारी सबसे बड़ी परंपरा श्रीमद्भागवत कथा है। आपका आयोजन पारंपरिक कथा से किस प्रकार अलग होगा?

उत्तर: यह बहुत अलग है। यहाँ लोग केवल सुनेंगे नहीं, बल्कि स्वयं भागवत पढ़ेंगे, और प्रवचन के माध्यम से उसकी व्याख्या की जाएगी। लोग भागवत पढ़ना सीखेंगे। कलियुग में लोग अधिकतर कथाएँ सुनते थे पर पढ़ते कम थे। लेकिन सत्य युग में वे भागवत का सार और उसका समस्त ज्ञान जानेंगे। हम कथा के माध्यम से उसे समझाएँगे। इसी प्रकार यह कार्य होगा, और धीरे-धीरे लोग शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगे, जैसा उन्हें सत्य युग में था।

► यह उत्तर सुनें · 34:11 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 977 जब मैं पढ़ने या ध्यान करने की कोशिश करता हूँ, तो मेरा मन बिल्कुल एकाग्र नहीं हो पाता। मेरा मन बस यही सोचता रहता है कि यह कब खत्म होगा और मैं कब उठ सकूँगा। मैं इसे कैसे ठीक करूँ?

उत्तर: मन कहीं टिक नहीं पाता। यह कलियुग का प्रभाव है। लेकिन हमें कलियुग के प्रभाव पर विजय पानी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 35:24 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 978 एक बड़े सौर तूफान की खबर है। क्या मालिका बताती है कि सिस्टम, यानी इंटरनेट और मोबाइल कनेक्टिविटी, कब ठप होगी? यह किस वर्ष होगा? क्या यह विश्व युद्ध के दौरान होगा या उससे पहले?

उत्तर: वैज्ञानिक आपको पूरी बात नहीं बताते। आने वाले समय में सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। आठवें दिन सूर्य फिर उदय होगा। यह समय आ रहा है। यह तब होगा जब सूर्य के पार से किसी खगोलीय पिंड का एक टुकड़ा आकर समुद्र में गिरेगा। समुद्र की लहरें लगभग 15 से 20 मिनट तक बहुत ऊँची उठेंगी, और बहुत से लोग मारे जाएँगे। पूरा विद्युत ढाँचा नष्ट हो जाएगा। लेकिन जल भक्तों को देखकर दो भागों में बँट जाएगा और उनके बगल से निकल जाएगा। जो हमारी धारा में हैं और आर्य परंपरा का पालन करते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:51 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 979 कहा जाता है कि जब कलियुग आरंभ हुआ, तो भगवान शिव अपने परिवार सहित कैलाश पर्वत स्थित अपना धाम छोड़कर चले गए। तो मेरा प्रश्न है कि भगवान शिव अब कहाँ निवास करते हैं?

उत्तर: भगवान शिव चारों युगों में कैलाश पर ही हैं। शास्त्रों में लिखा है कि वे सत्य युग और त्रेता युग में वहीं थे। राम अवतार के समय वे कैलाश से भगवान राम से मिलने आए थे। भगवान कृष्ण के समय भी वे उपस्थित थे। कैलाश एक दिव्य लोक है जहाँ भगवान शिव आज भी निवास करते हैं और सदैव करते रहेंगे। लेकिन धर्म की स्थापना के समय वे हनुमान जी और अन्य सभी देवताओं के साथ जगन्नाथ केंद्र में आएँगे। कार्य भगवान की इच्छा के अनुसार होगा। तो, भगवान शिव अब भी कैलाश पर ही हैं।

► यह उत्तर सुनें · 41:23 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 980 हम सब कुछ कर रहे हैं और भगवान से अनंत प्रेम है, लेकिन कभी-कभी हम मार्ग से भटक जाते हैं। इसका हमें बहुत दुख होता है और हम क्षमा माँगते हैं, फिर भी ऐसा होता रहता है। कृपया हमें आशीर्वाद दीजिए कि हम भटकें नहीं।

उत्तर: ठीक है, मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि आपको अपने मन पर नियंत्रण प्राप्त हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब भी आपका मन चंचल हो जाए और आपसे कोई गलती हो जाए, तो कुछ समय बैठकर भगवान के दस अवतारों के नामों का जप कीजिए। ऐसा करने से मन की चंचलता धीरे-धीरे कम होगी, भगवान की कृपा आपके साथ बनी रहेगी, और कलियुग का प्रभाव आपको स्पर्श नहीं करेगा। चिंता मत कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:11 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 981 कृपया पितृ दोष (पूर्वजों के कर्म) के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: आप सत्संग में आ रहे हैं और धर्म की इस धारा से जुड़ रहे हैं। आपका पूर्व कर्म जो भी हो, यह मार्ग भक्त को बचाने के लिए भगवान का दिया हुआ आशीर्वाद है। आपको इस मार्ग को ठीक से अपने जीवन में उतारना चाहिए। यह आपके पूरे जीवन के कर्म को सुलझाने में सहायक होगा। मैं यह नहीं कहूँगा कि 'मैं आपको मुक्ति दूँगा।' मैं आपको मार्ग दिखाऊँगा, और उस पर चलकर आप उस गंतव्य तक पहुँच सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:39 · 2 अक्टूबर 2022

प्रश्न 982 जो लोग विष्णु सहस्रनाम संस्कृत में नहीं पढ़ सकते, उन्हें इसे कैसे पढ़ना चाहिए?

उत्तर: आप इसे अपनी भाषा में, जैसे हिंदी या गुजराती में, उच्चारण के अनुसार लिखकर वहाँ से पढ़ सकते हैं। भागवत कथा की परंपरा में श्रोताओं की मुक्ति के लिए यज्ञ (हवन) करने का विधान है। यदि कोई ऐसा न कर सके, तो विष्णु सहस्रनाम पढ़ने से वही फल मिलता है। इससे सात दिवसीय भागवत कथा का पुण्य प्राप्त होता है। इसीलिए मैं आप सबसे कह रहा हूँ कि आने वाले आयोजन में मुख्य रूप से विष्णु सहस्रनाम पर ध्यान दें। वहाँ आप 'त्रिसंध्या' और भागवत पाठ के बाद इसे पढ़ेंगे। यही परंपरा है। आज के कथावाचक इसका उल्लेख नहीं करते, पता नहीं क्यों। लेकिन हम वैदिक परंपरा को छोड़ नहीं सकते, क्योंकि हमारा मिशन सत्य युग, वैदिक परंपरा और आर्य परंपरा को जोड़कर विश्व को सनातन धर्म की सच्ची धारा देना है।

► यह उत्तर सुनें · 48:14 · 2 अक्टूबर 2022

सत्र 49 · प्रश्न 983–994

L47 Google meet with Pujya Pandit KASHINATH Misra ji ,--LIVE

दिनांक: 9 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 983 भगवान को हर युग में मनुष्य रूप में जन्म क्यों लेना पड़ता है?

उत्तर: श्रीमद् रामचरितमानस कहता है, 'जब-जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब-तब प्रभु धरि मनुज शरीरा।' शास्त्र कहते हैं कि जब भी धर्म की हानि होती है, चाहे द्वापर हो या कलियुग, भगवान मनुष्य रूप धारण करते हैं। वे लोगों को बदलने के लिए मानव शरीर में आते हैं। जब भगवान मनुष्य रूप में आते हैं, तब पृथ्वी के लोग और भक्त उनसे जुड़ पाते हैं। एक तरह से भगवान की लीला भक्तों के साथ होती है। यदि भगवान हर युग में धर्म की स्थापना के लिए अपने दिव्य रूप में आएँ, तो संसार के सारे पापी भय के कारण उनकी शरण में आ जाएँगे, और धर्म की स्थापना की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। भगवान देखेंगे कि सबने उनके सामने समर्पण कर दिया है, तो फिर वे पुण्यात्मा और पापी में भेद कैसे करेंगे? इसीलिए भगवान गुप्त रूप से आते हैं। जैसे, भगवान का जन्म कंस के कारागार में हुआ, और भगवान राम का जन्म अयोध्या में हुआ, वे वन गए और गुप्त रूप से असुरों का संहार किया। जब भगवान राम धर्म की स्थापना के लिए आए, तब भारत के कई राजा उन्हें भगवान मानने को तैयार नहीं थे। वे दिव्य रूप में नहीं आते, बल्कि मानवीय गुणों के साथ मानव शरीर में आते हैं। वे लोगों और भक्तों के साथ मानव-सदृश लीला (मानव लीला) करते हैं और अपने संघर्ष के मिशन को पूरा करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 09:42 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 984 भक्तों के मन में एक जिज्ञासा है कि क्या भगवान हर अवतार में माता के गर्भ से जन्म लेते हैं, या कभी-कभी सीधे प्रकट होते हैं? जैसे कुछ लोग कहते हैं कि राम अवतार में भगवान सीधे प्रकट हुए थे। सच्चाई क्या है?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार, विशेषकर रामचरितमानस के अनुसार, राजा दशरथ और माता कौशल्या थे, और भगवान राम का जन्म उनसे हुआ। अलौकिक घटनाएँ कभी-कभी होती हैं, जैसे परशुराम अवतार, मत्स्य अवतार, या वराह अवतार में। कभी-कभी भक्तों की प्रार्थना से भगवान की अनोखी लीलाएँ होती हैं। परंतु चारों युगों में धर्म की स्थापना के लिए, चाहे भगवान राम हों, भगवान कृष्ण हों, भगवान परशुराम हों, या भविष्य में आने वाले भगवान कल्कि—सभी मानव शरीर में आते हैं। इसका कारण यह है कि धर्म की स्थापना में लंबा समय लगता है। उसे स्थापित करने के साथ-साथ भगवान अपने भक्तों के साथ समय भी बिताते हैं और संसार में पूर्ण सत्य की स्थापना करते हैं। यह मानव-सदृश लीला (मानव लीला) आवश्यक है, और उसके लिए उन्हें कई वर्षों तक रहना पड़ता है। इसीलिए वे दिव्य रूप धारण नहीं करते। वे माता-पिता के घर जन्म लेते हैं और संसार से कहते हैं, 'मैं भी आपकी तरह मनुष्य हूँ, मैं भी कर्म से बँधा हूँ।' उदाहरण के लिए, भगवान राम, भगवान कृष्ण और भगवान परशुराम—सभी पढ़ने गए और सभी सांसारिक मानवीय कार्य किए। फिर जैसे-जैसे समय बीतता है, जब वह क्षण आता है, लोग उन्हें भगवान और भगवान का अवतार मान लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:49 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 985 भगवान केवल भारत की भूमि पर ही जन्म क्यों लेते हैं? क्या इसके पीछे कोई कारण है?

उत्तर: हाँ। भारत अब छोटा हो गया है; पहले यह अखंड भारत था, जिसमें कई पड़ोसी देश शामिल थे। असली कारण तो भगवान ही जानते हैं, पर जितना हम जानते हैं, पिछले युगों में असुरों की जनसंख्या भारत के अलावा अन्य देशों में कहीं अधिक थी, जबकि भक्तों की संख्या भारत में अधिक है। भगवान सर्वत्र हैं, लेकिन वे प्रकट होते हैं—अवतार लेते हैं—भारत में, क्योंकि यहाँ उनके भक्तों की संख्या बहुत अधिक है। वे भक्ति करते हैं और समर्पण में जीते हैं। यदि हम युगों के आरंभ में जाएँ, तो भगवान सबसे पहले यहीं उपस्थित थे। सभी युगों में भगवान यहीं प्रकट हुए हैं। भारत में जो भगवान की दिव्य उपस्थिति है, वह अन्य देशों में नहीं मिलती। जब भगवान आते हैं, तो वे अपनी लीला करते हैं, धर्म की स्थापना करते हैं, और उनके साथ उनके सहयोगी भी होते हैं। शायद यही सोचकर भगवान भारत जैसी पवित्र भूमि पर आते हैं और अपने भक्तों के साथ पूरे विश्व में धर्म की स्थापना करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:41 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 986 मैंने सुना है कि मालिका में भक्तों की कुल संख्या भी लिखी है। यह कुल संख्या क्या है, और क्या सभी भक्त कभी एक स्थान पर एकत्र होंगे?

उत्तर: भक्त चार प्रकार के होंगे। पहले चरण में भगवान के व्यक्तिगत भक्त, यदुवंशी होंगे, जिनकी संख्या केवल 3,000 है। दूसरे चरण के भक्त भगवान के संदेश का प्रसार करेंगे। तीसरा चरण भगवान की शरण में रहकर उनका नाम जपेगा, पर उनकी लीला में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं होगा। चौथा चरण केवल सनातन धर्म में विश्वास रखेगा और अच्छे लोग होंगे। जहाँ तक कुल संख्या की बात है, पूरे विश्व में 64 करोड़ (640 मिलियन) लोग होंगे। वे 3,000 भक्त भगवान के साथ सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। मालिका कहती है, 'कोटि (एक करोड़) में एक मेरा भक्त है,' और उनकी संख्या 3,000 है। हाँ, सभी देशों से भक्त एकत्र होंगे। उससे पहले 16 मंडल बनाए जाएँगे। बीच-बीच में युद्ध और प्राकृतिक आपदाएँ चलती रहेंगी, और पापियों का विनाश होगा। फिर सुधर्मा सभा (धर्म की सभा) बुलाई जाएगी। भगवान एक घोषणा करेंगे, और सभी देशों से भक्त आएँगे। सुधर्मा सभा में स्थानों की संख्या लगभग 3,000 भक्तों तक सीमित रहेगी, जिनमें देवता, ऋषि और संत होंगे, तथा भगवान ब्रह्मा और भगवान महादेव भी सम्मिलित होंगे। वह स्थान विश्व की संसद बनेगा। अन्य भक्त आएँगे पर भीतर बैठ नहीं पाएँगे; वे बाहर रहकर भगवान के दर्शन करेंगे। उस दिन सभी भक्त एकत्र होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:36 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 987 पंडित जी, वर्ष 2024 के बारे में क्या? क्या होने वाला है?

उत्तर: धर्म की स्थापना 2020 में शुरू हो गई थी। 2021 चेतावनी का समय था। 2023 और 2024 में भक्तों को और भी अधिक चेतावनियाँ मिलेंगी। चेतावनी का अर्थ है पंचतत्वों का प्रलय, युद्ध, रोग, महामारी, साम्प्रदायिक हिंसा, अभाव और अकाल का प्रकट होना—यह सब इसलिए आ रहा है क्योंकि लोग बदल नहीं रहे। आने वाला समय बहुत बुरा है। 2023-24 में आप पूरे विश्व में भूकंप और बढ़ती बाढ़ देखेंगे, विशेषकर तटीय क्षेत्रों में। कई चक्रवात आएँगे, साम्प्रदायिक हिंसा बढ़ेगी, और युद्ध की स्थिति धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी। छद्म युद्ध (प्रॉक्सी वॉर) होंगे, और युद्ध के नए मोर्चे खुलेंगे। रोगों की बात करें तो 64 प्रकार के रोग आ रहे हैं, जैसा मालिका में लिखा है। जो लोग सनातन धर्म के मार्ग पर रहेंगे और बताए गए नियमों का पालन करेंगे, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा। यह मालिका में लिखा है। जब अन्न, जल और औषधि उपलब्ध नहीं होंगे, तब भक्त भगवान के नाम से मुक्ति और आनंद पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:30 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 988 विश्व युद्ध किस वर्ष से शुरू होगा?

उत्तर: आधार अभी रखा जा रहा है। विश्व युद्ध 2025 में होगा। मई 2025 में शनि का एक योग है। मीन राशि में, कन्या लग्न में शनि अवरोधक स्थिति में होगा। यह योग भगवान की इच्छा से विश्व के लिए सबसे बड़े विपत्ति काल का आरंभ करेगा। समय बुरा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:55 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 989 मुंबई का क्या होगा?

उत्तर: मुंबई में ज्यादातर भूकंप, बाढ़ और युद्ध के प्रभाव होंगे। लेकिन जो लोग धर्म में रहकर जीते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। जो लोग मेरे बताए मार्ग पर चलेंगे, उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा। जो नहीं चलेंगे, उनका भाग्य भगवान तय करेंगे। बुरा समय आ रहा है। हम लोगों से कह रहे हैं कि देर होने से पहले स्वयं को सुधार लें। हम मानव सभ्यता की शांति और सुख के लिए मालिका साझा करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:59 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 990 जब श्रीमद् भागवत का आयोजन होगा, तो हम में से जो लोग स्वयं उपस्थित नहीं हो सकते, क्या वे अपने घरों से लाइव देखकर उसमें भाग ले सकते हैं?

उत्तर: हाँ, वे अपने घरों में बैठकर भाग ले सकते हैं। भगवान की कृपा उन पर भी होगी। यह बहुत अच्छी बात है, आप ऐसा कर सकते हैं। यदि आपके गाँव या पड़ोस में लोग हैं, तो उन्हें भी इसके बारे में बताइए। आप दूर हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह बहुत अच्छा विचार है।

► यह उत्तर सुनें · 37:10 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 991 जब वे पापियों का संहार कर रहे होंगे, तब क्या हमारी भी कोई भूमिका होगी?

उत्तर: यदि आपका ऐसा सौभाग्य और सामर्थ्य होगा, तो प्रभु आपको बुला लेंगे। अन्यथा आप अपने घर में रहते हुए ही प्रभु की शरण में रहेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 39:45 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 992 क्या प्रभु विभिन्न तीर्थस्थलों पर जाएँगे?

उत्तर: यदि भगवान की इच्छा होगी, तो प्रभु जाएँगे। यह सब प्रभु पर ही निर्भर है।

► यह उत्तर सुनें · 41:21 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 993 प्रभु को क्या पसंद है? वे कौन-सा भोजन ग्रहण करते हैं, ताकि हम भी उसी के अनुसार अपना जीवन बदल सकें?

उत्तर: यह तो केवल वही जानते हैं। लेकिन जब भगवान आते हैं, तो वे भक्तों को अपना दर्शन देते हैं। अपने स्वयं के अनुभव और भक्ति के माध्यम से भक्त सब कुछ जान जाते हैं। आप बस भक्ति में बैठ जाइए, और आपको सब कुछ ज्ञात हो जाएगा, क्योंकि भक्त ही भगवान के सबसे निकट और सबसे समीप होता है।

► यह उत्तर सुनें · 41:50 · 9 अक्टूबर 2022

प्रश्न 994 प्रभु दर्शन कैसे प्राप्त हो सकता है?

उत्तर: आप कर सकते हैं, क्योंकि आप मालिका से जुड़े हुए हैं। दूसरे लोग जुड़ नहीं पाएँगे, क्योंकि मालिका में उनके लिए कोई स्थान नहीं है। जो चारों युगों के भक्त नहीं हैं, वे न मालिका का अनुसरण करेंगे और न ही उसे सुनेंगे, चाहे वे प्रयास ही क्यों न करें। आप लोगों का हृदय पवित्र और अच्छा है। अपनी भक्ति के माध्यम से आप प्रभु को पा लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 42:33 · 9 अक्टूबर 2022

सत्र 50 · प्रश्न 995–1002

L48 Today's Google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagwat Mahatamya part -1

दिनांक: 13 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 995 आपने जो पुराण लिखे हैं, उनका सार क्या है? हम कलियुग के अज्ञानी लोग कैसे मुक्ति पा सकते हैं और बच सकते हैं? कृपया आपके द्वारा रचित भागवत का सार संक्षेप में बताइए।

उत्तर: सभी 18 पुराणों का सार दो पंक्तियों में निहित है: 'पुण्याय परोपकाराय, पापाय पर पीड़नम्।' इसका अर्थ है कि दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य है, और दूसरों को पीड़ा देना सबसे बड़ा पाप है। परोपकार का अर्थ है समस्त संसार का, भगवान की सारी सृष्टि का भला करना। इसमें केवल गरीब और असहाय ही नहीं, बल्कि 5 अरब 60 करोड़ जीव भी सम्मिलित हैं। उनकी देखभाल अपनी संतान की तरह करनी चाहिए। यही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है। सच्चा धर्म तब बनता है जब हम संसार की सभी वस्तुओं को भगवान की मानकर उनका सम्मान करें, उनकी रक्षा के लिए कार्य करें, और सबके प्रति प्रेम, करुणा और दया रखें। सबसे बड़ा पाप है भगवान की सृष्टि के किसी भी अंश के विरुद्ध आचरण करना—चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, मनुष्य हो, वन हो या नदियाँ—और उन्हें पीड़ा देना। ऐसा करने से मनुष्य नरक में जाता है। यही भागवत का मूल सिद्धांत है। यदि हम इसे अपने जीवन में उतारें, तो हमारा जीवन वास्तव में सार्थक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 03:47 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 996 क्या यह संदेश हमारे बीच, मीडिया में और हर जगह फैलेगा, या यह केवल इसी सभा तक सीमित रह जाएगा?

उत्तर: यह जानकारी रखना आवश्यक नहीं है। जैसा कि मैंने पहले कहा, कृपया श्रीमद्भागवत के बारे में या गुजरात में होने वाले हमारे आगामी सत्संग के बारे में प्रश्न पूछिए। वही बेहतर रहेगा। यह प्रश्न सबको समझ नहीं आएगा, और यह एक व्यक्तिगत प्रश्न है। आप इस विषय में मुझसे निजी रूप में बात कर सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:06 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 997 बचपन से ही मैं महादेव (भगवान शिव) की उपासना करता आया हूँ। क्या भगवान विष्णु के स्थान पर उनकी उपासना करना अधर्म माना जाएगा?

उत्तर: जब धर्म संस्थापना का समय आता है, विशेष रूप से कलियुग में, तो शास्त्र कहते हैं कि 16 नामों का जप ही मनुष्यों के लिए मोक्ष का मार्ग है। जो भगवान शिव की उपासना करते हैं उन्हें धन और समृद्धि मिलती है, जो देवी की उपासना करते हैं उन्हें भी, और भगवान विष्णु के भक्तों को भी सब कुछ प्राप्त होता है। परंतु इस विशेष समय में सभी मनुष्यों के लिए सर्वोत्तम यही है कि वे भगवान विष्णु की कल्कि अवतार के रूप में उपासना करें। क्योंकि प्रभु आने ही वाले हैं, इसलिए सबसे साधारण मनुष्य के लिए भी उनका स्वागत करना सबसे बड़ा सौभाग्य है। इसलिए इस समय भगवान विष्णु की उपासना करनी चाहिए। आप भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा और सभी देवताओं की उपासना कर सकते हैं, लेकिन शरण भगवान विष्णु की लीजिए, क्योंकि वे स्वयं धर्म की स्थापना के लिए अवतरित होने वाले हैं।

► यह उत्तर सुनें · 24:08 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 998 हमें खाटू श्याम जी और भगवान बलदेव की उपासना करने को कहा जाता है। क्या वे, भगवान कल्कि और भगवान विष्णु सब एक ही हैं? अब हमें किसकी उपासना करनी चाहिए?

उत्तर: खाटू श्याम जी, भगवान बलदेव और भगवान कल्कि सब एक ही हैं। धर्म बँट गया है; कोई स्वयं को वैष्णव कहता है, कोई बौद्ध, इत्यादि। कल्कि पुराण में तो जैन धर्म में पूजे जाने वाले का भी उल्लेख है। अच्छी बात यह है कि प्रभु धर्म की स्थापना करेंगे। इस बार बलराम अलग से नहीं आएँगे। भगवान कल्कि का शरीर भगवान बलराम और भगवान कृष्ण दोनों का संयोग होगा। तो आपको भगवान राम, कृष्ण और बलराम—सबकी एक साथ उपासना करने का सौभाग्य प्राप्त है। आपको खाटू श्याम जी और बलदेव की उपासना करनी चाहिए; वे प्रभु के ही स्वरूप हैं। लेकिन चूँकि यह धर्म संस्थापना का समय है और प्रभु आने ही वाले हैं, इसलिए उनका स्वागत करना मनुष्यों का सर्वप्रमुख कर्तव्य है। मालिका में भी कहा गया है कि महाविनाश के समय सभी को उनकी शरण लेनी होगी। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे, तो शायद वे बच न पाएँ।

► यह उत्तर सुनें · 26:16 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 999 मेरा प्रश्न यह है कि भागवत महापुराण कहता है कि कलियुग में धर्म अपने चार पैरों में से केवल एक पर खड़ा रहता है। अनंत युग में धर्म की क्या स्थिति होगी?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार चार युग हैं: सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। पूर्ण सत्ययुग के आने से पहले प्रभु और उनके भक्तों के लिए एक विशेष युग बनता है। प्रभु स्वयं अवतार लेते हैं और 1009 वर्षों तक अपने भक्तों का पालन-पोषण करते हैं। उसके बाद पूर्ण सत्ययुग आरंभ होता है, और युगों का चक्र चलता रहता है। अनंत युग भगवान महाविष्णु का युग है, जिनका नाम अनंत है। 'हरि अनंत हरि कथा' का अर्थ है कि हरि (विष्णु) अनंत हैं। वे कल्कि अवतार लेंगे और 1009 वर्षों तक अपने भक्तों का पालन-पोषण करेंगे, 'रामराज्य' की स्थापना करते हुए। हर युग में संसार के कल्याण के लिए कार्य करने वाले सभी देवता, ऋषि और संत एकत्र होंगे। अनंत युग एक स्वतंत्र युग होगा जिसमें मनुष्यों की जनसंख्या केवल 64 करोड़ होगी और यह 1009 वर्षों तक चलेगा। उसके बाद अनंत युग के सभी लोग पूर्ण सत्ययुग में प्रवेश कर जाएँगे, ऋषियों जैसा जीवन जिएँगे, और युगों का चक्र नए सिरे से आरंभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:01 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1000 मैं महाकाल मंदिर के बारे में पूछना चाहता था। मैंने कुछ सुना था कि उसके साथ क्या होगा।

उत्तर: देखिए, जहाँ-जहाँ प्रभु की उपस्थिति है, चाहे वह महादेव (शिव) का क्षेत्र हो जैसे रामेश्वरम्, उज्जैन, काशी, वाराणसी, या केदारनाथ, बद्रीनाथ और द्वारकानाथ जैसे स्थान—ये सभी पावन क्षेत्र सुरक्षित रहेंगे। परंतु उन क्षेत्रों के जो लोग दुष्कर्मों में लिप्त हैं और धर्म के मार्ग पर नहीं हैं, वे किसी न किसी रूप में नष्ट हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:57 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1001 मैं कुछ अलग पूछना चाहती थी। मैं अगस्त में दर्शन के लिए आई थी और मुझे ऐसे लोग मिले जो आपकी निंदा कर रहे हैं और उस मालिका के बारे में गलत जानकारी फैला रहे हैं जो आप हमें सिखा रहे हैं। इस बारे में हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: इस संसार में, जब तक Kali Yuga चल रहा है, आपको बहुत निंदा का सामना करना पड़ेगा। देखिए माँ, न हमें और न ही आपको इस बात की चिंता करने की आवश्यकता है। हम किसी का बुरा नहीं सोचते; हम तो बस लोगों का मार्गदर्शन करने का प्रयास करते हैं। Kali Yuga में, जब पुत्र और पुत्री का अपने ही माता-पिता और परिवार के प्रति शुद्ध प्रेम, स्नेह या विश्वास नहीं है, तो हम संसार में धर्म की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? इसलिए इसकी चिंता मत कीजिए। इस पर हम किसी और समय आगे चर्चा कर सकते हैं। आप मुझे फोन कर सकती हैं और हम बात कर सकते हैं। अभी बेहतर यह है कि नए लोगों को प्रश्न पूछने दिया जाए ताकि हम उनकी कुछ समस्याओं का समाधान कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 33:35 · 13 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1002 जो 64 करोड़ लोग अगले युग में प्रवेश करेंगे, क्या मालिका उन सभी तक पहुँचेगी? यदि हाँ, तो कब तक? और यदि यह सब तक नहीं पहुँची, तो बाकी लोग महाप्रलय से कैसे बचेंगे?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानन्द ने कई बार लिखा है कि यह ज्ञान 'गुप्त' है। यदि यह प्रकट भी हो जाए, तो सभी के लिए इसे सुनना, समझना और पचा पाना संभव नहीं है। पूर्व युगों से प्रभु के सच्चे भक्तों के लिए यह कठिन नहीं है; मालिका किसी न किसी प्रकार से उन तक पहुँच ही जाएगी, और वे इस पर विश्वास करेंगे। इसके प्रकट होने का समय आ गया है। लिखा है कि मालिका भक्तों तक पहुँचेगी। यह पापियों तक नहीं पहुँचेगी, और यदि पहुँच भी गई तो वे इसे स्वीकार या विश्वास नहीं करेंगे। हमारा कर्तव्य केवल सत्य बोलना है। मालिका भक्तों तक अपना मार्ग स्वयं खोज लेगी। जैसे कृष्णानन्द और शैलेश जैसे भक्त हैं, जिन्होंने सच्चे मन से सत्य की खोज की तो प्रभु ने स्वयं उनसे बात की या उन्होंने स्वयं मालिका को पा लिया। मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि कोई भी अच्छा भक्त, जिसका चरित्र शुद्ध है और जिसने अच्छे कर्म किए हैं, उस तक मालिका अवश्य पहुँचेगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:11 · 13 अक्टूबर 2022

सत्र 51 · प्रश्न 1003–1018

L49 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Part- 2

दिनांक: 16 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1003 सनक मुनि ने पूछा: Kali Yuga के इस वर्तमान भयानक युग में, जब मनुष्य पापी, भ्रष्ट और अज्ञानी हैं, तो उनकी मुक्ति कैसे होगी?

उत्तर: सूत मुनि ने समझाया कि भागवत कथा (भागवत पुराण का आख्यान) ही मुक्ति का मार्ग है। उन्होंने कहा कि यह कथा साधारण नहीं है। हर मनुष्य को कई जन्मों में भी भागवत कथा सुनने का अवसर नहीं मिलता, और हर कोई इसका विद्वान नहीं बन सकता। सबसे भाग्यशाली वह व्यक्ति है जो भागवत पढ़ता है, इसकी कथाएँ सुनता है और इसके मार्ग पर चलता है। वक्ता ने रामचरितमानस से तुलसीदास महाराज को उद्धृत किया: 'वही सबसे भाग्यशाली है जो राम के चरणों में अनुरक्त है।' इसका अर्थ है कि जो लोग दिखावे के लिए नहीं, बल्कि सच्ची भक्ति और प्रेम के साथ स्वयं को पूर्ण रूप से भगवान के चरणों में समर्पित कर देते हैं, वे ही सबसे भाग्यशाली हैं। इसलिए, मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है भगवान की शरण लेना, भागवत कथा सुनना और भागवत ग्रंथ पढ़ना। सूत मुनि ने आगे बताया कि मनुष्य अपने असंख्य पूर्व जन्मों से अनभिज्ञ है। जब लोग सांसारिक भोगों के पीछे भागते हैं, तो आध्यात्मिक ज्ञान लुप्त हो जाता है। उन्होंने ऋषियों से कहा कि भागवत एक ऐसा शास्त्र है जिसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और परम तत्त्व समाहित हैं। इन्हें अपने चरित्र और कर्मों में उतारकर मनुष्य मुक्ति प्राप्त करता है। इस प्रकार, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और तत्त्व के माध्यम से अंततः मुक्ति प्राप्त होती है। तुलसीदास महाराज ने भी रामचरितमानस में इस विषय में लिखा है। भागवत कथा लोगों को बदल सकती है। वर्तमान समय Kali Yuga का अंत है। जब कोई युग समाप्त होता है, तो धर्म की पुनःस्थापना होनी ही चाहिए। इसके लिए और लोगों के उद्धार के लिए श्रीमद्भागवत कथा का प्रचार और पठन तथा वैदिक सिद्धांतों का पालन आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 17:34 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1004 उस समय सभी ऋषियों और सोनक मुनि ने पूछा: इस भागवत कथा के नियम, विधि-विधान और परंपराओं के बारे में आपको किसने बताया?

उत्तर: वक्ता इसके उत्तर में एक कथा सुनाते हैं। महर्षि नारद मुनि काशी, वाराणसी और हरिद्वार जैसे सभी तीर्थस्थलों में भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने देखा कि हर जगह पाप व्याप्त है। लोगों में धर्म, भक्ति, मुक्ति और ज्ञान का अभाव था। वे आलसी, भ्रष्ट और हिंसक हो गए थे, और सीधे-सादे, भले लोगों को कष्ट दे रहे थे। सनातन धर्म का पतन और मंदिरों का विध्वंस देखकर नारद अत्यंत दुःखी हो गए। भारी मन से वे बद्रीनाथ गए, परंतु वहाँ भी उन्हें शांति नहीं मिली। वहाँ उनकी भेंट चार कुमारों (सनक, सनंदन आदि) से हुई। उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया, और कुमारों ने नारद से पूछा कि वे इतने व्यथित क्यों दिख रहे हैं। नारद ने संसार की दशा पर अपना दुःख बताया। तब कुमारों ने उन्हें कहा कि इसका एक ही समाधान है: सात दिन की भागवत कथा। उन्होंने बताया कि यदि यह कथा उचित नियमों और वैदिक परंपरा के अनुसार संसार में प्रचारित की जाए, तो यह लोगों में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और परम तत्त्व को जाग्रत करेगी, और उन्हें मुक्ति की ओर ले जाएगी। इससे नारद आनंद से भर गए। तत्पश्चात, पहली सात दिवसीय भागवत कथा हरिद्वार के आनंद घाट पर महर्षियों के बीच हुई।

► यह उत्तर सुनें · 26:52 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1005 ऋषियों ने नारद से पूछा: आप ज्ञान से पवित्र हैं और आध्यात्मिक संस्कारों वाले संत हैं। आप एक महान ऋषि हैं, भगवान के समान। फिर आप इतने व्यथित क्यों दिख रहे हैं, मानो किसी व्यक्ति का सारा धन नष्ट हो गया हो और वह अकेला सड़क पर बैठा हो?

उत्तर: नारद ने उत्तर दिया: मैंने पूरे भारत में, जो देवभूमि है, भ्रमण किया और सभी तीर्थस्थलों के दर्शन किए। मैंने देखा कि लोगों में न भक्ति है, न ज्ञान, न वैराग्य — जो विष्णु द्वारा स्थापित सनातन धर्म का सार हैं। संसार की दशा, पृथ्वी की सुरक्षा और मानव समाज के भविष्य के बारे में सोचकर मेरा मन इस द्वंद्व से भर गया है कि क्या होगा और कैसे होगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:22 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1006 तब नारद महामुनि ने कहा, 'प्रभु, मार्ग क्या है?'

उत्तर: कुमारों ने उत्तर दिया: सात दिन की भागवत कथा। यदि इसे नियमों और वैदिक परंपरा के अनुसार संसार में प्रचारित किया जाए, तो मनुष्यों में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और तत्त्व प्रकाशित होंगे। और जब ये चारों तत्त्व किसी व्यक्ति में प्रकाशित हो जाते हैं, तो वह मुक्ति की ओर बढ़ सकता है। यही वह उद्देश्य भी है जिसके लिए ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ने पृथ्वी की रचना की।

► यह उत्तर सुनें · 31:56 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1007 राजा परीक्षित ने अपने गुरु शुकदेव से पूछा, 'गुरुदेव, मुझे क्या करना चाहिए?'

उत्तर: यह प्रश्न तब पूछा गया जब इंद्र के नेतृत्व में देवता राजा परीक्षित के पास आए। उन्होंने उन्हें अमर बनाने के लिए दिव्य अमृत का घड़ा भेंट किया, बदले में भागवत कथा माँगी, जिसे वे अपनी मुक्ति के लिए सुनना चाहते थे। यह सुनकर शुकदेव हँसे और बोले, 'देवताओं में भक्ति नहीं है। वे भागवत कथा सुनकर क्या करेंगे? यह तो काँच के टुकड़े की तुलना अनमोल रत्न से करने जैसा है।' उनका आशय था कि भागवत कथा उस अमृत से कहीं अधिक मूल्यवान है जो देवता दे रहे थे। यह भक्त मनुष्यों के लिए है, और इसीलिए भागवत कथा ऐसा खजाना है जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

► यह उत्तर सुनें · 38:58 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1008 पिताजी, मैं कह रही हूँ कि हम भागवत केवल हिंदी में ही पढ़ सकते हैं। क्या यह ठीक है, या संस्कृत में भी पढ़ना आवश्यक है?

उत्तर: यह संस्कृत, अंग्रेज़ी, तमिल, तेलुगु, उड़िया और बंगाली में उपलब्ध है; यह सभी भाषाओं में है। आप जो भी भाषा बोलते हैं, उस भाषा में पढ़ने में कोई समस्या नहीं है। यह आपकी अपनी मातृभाषा में उपलब्ध है, और उसे पढ़कर आप इसके सभी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 45:04 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1009 जय श्री Madhava, पंडित जी। क्या श्रीमद्भागवत गीता को महापुराण (श्रीमद्भागवतम्) के समान ही महत्व दिया गया है, या यह कुछ और है?

उत्तर: देखिए, श्रीमद्भागवत गीता... भागवत में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और तत्त्व समाहित हैं। अपने जीवन को मुक्त करने का मार्ग श्रीमद्भागवतम् में मिलता है, जैसा हमारे शास्त्रों में लिखा है। भगवद्गीता पढ़ना अच्छा है, परंतु शास्त्रों के अनुसार मुक्ति का मार्ग — इसी कारण श्रीमद्भागवतम् को महापुराण (महान पुराण) कहा जाता है। मैंने पिछले सत्संग में कहा था कि श्रीमद्भागवत कथा चारों वेदों और अठारह पुराणों का सार है। इसे पढ़ने से आपमें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य प्रकाशित होंगे, और आपको मुक्ति प्राप्त होगी। गीता सनातन धर्म का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है, परंतु भागवत महापुराण हमारे जीवन के लिए मुक्ति का सबसे बड़ा मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 45:54 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1010 भागवत में, जैसा आपने बताया, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य हैं, साथ ही तत्त्व भी है। परंतु कुछ स्थानों पर अत्यंत शृंगारिक या कामुक वर्णन भी हैं। ऐसा क्यों है?

उत्तर: उसका विश्लेषण करना मेरी सामर्थ्य में नहीं है। उसमें शृंगार है, भक्ति है, ज्ञान है। उसमें ज्ञान योग, भक्ति योग, ब्रह्मचर्य, सभी सांसारिक नियम, राजाओं का शासन और भगवान का वंश — सब कुछ लिखा है। यह भगवान के मुख से निकला हुआ वचन है। मुझ जैसा छोटा-सा ब्राह्मण उस पर क्या कह सकता है? मैं तो केवल इतना कहूँगा कि भगवान ने कहा है, इसलिए उसे स्वीकार करना ही हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। किसी ने एक बार महर्षि शुकदेव जी से पूछा, 'भगवान तो समस्त ब्रह्मांड के स्वामी हैं, फिर उन्होंने गोपियों के साथ इतना समय क्यों बिताया?' शुकदेव जी ने उत्तर दिया, 'संसार के लिए क्या आवश्यक है और क्या नहीं, यह केवल वही जानते हैं; हम नहीं जानते।' जब शुकदेव जी इसका उत्तर नहीं दे सके, तो मैं कैसे दे सकता हूँ?

► यह उत्तर सुनें · 48:16 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1011 श्रीमद्भागवत के विषय में — क्या इसे प्रतिदिन पढ़ने का कोई नियत समय है, या हम दिन में किसी भी समय पढ़ सकते हैं?

उत्तर: सुबह 4:00 या 4:30 बजे से लेकर रात 12:00 बजे तक, आप किसी भी समय श्रीमद्भागवत पढ़ सकते हैं। आप इसे सुन भी सकते हैं। देखिए, हम सब अपनी जीविका के लिए काम करते हैं, खाते हैं, पीते हैं और अपना जीवन जीते हैं, परंतु यह तो हमारे जीवन की अंतिम यात्रा की बात है। जैसा मैंने आपको पहले बताया, यदि हम मिट्टी में एक बीज बोते हैं, तो उससे एक पौधा या वृक्ष उगता है। उसी प्रकार, इस मनुष्य जन्म का फल... आपको प्रतिदिन इसे पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए। कथा सुनिए, परंतु जैसे-जैसे Satya Yuga (सत्य युग) आरंभ हो रहा है, आप जितना अधिक प्रतिदिन इसे पढ़ेंगे, उतनी ही अधिक शांति आपको मिलेगी। यह अमृत है। पढ़कर देखिए; आप कितना भी पढ़ें, आपका मन तृप्त नहीं होगा। लोग अपना पूरा जीवन भागवत को सैकड़ों बार पढ़ने में बिता देते हैं, फिर भी मन और चाहता है। तो अपने उपलब्ध समय के अनुसार पढ़िए। भगवान अपने भक्तों के लिए सदा जागते हैं; भगवान सोते नहीं हैं।

► यह उत्तर सुनें · 50:25 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1012 22 से 28 नवंबर तक के आयोजन के विषय में — यदि किसी कारणवश हम वहाँ न पहुँच सकें, तो घर पर इसे कैसे मनाएँ?

उत्तर: देखिए, यदि आप जा सकते हैं, तो आपको जाना चाहिए। यदि नहीं जा सकते, तो जीवन में अनेक कठिनाइयाँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं। यह अपने प्रकार का पहला सत्संग है, क्योंकि इस भागवत कथा आयोजन में लोग स्वयं भागवत पढ़ेंगे। Satya Yuga (सत्य युग) की ओर ले जाने वाले इस संधिकाल (संगम युग) में यह पहली बार होगा कि इतने सारे लोग एक साथ बैठकर श्रीमद्भागवत पढ़ेंगे। इसका आरंभ शंखध्वनि से होगा। Bhavishya Malika में लिखा है कि जो इसमें भाग लेंगे, वे Satya Yuga में प्रवेश करेंगे। इसीलिए इसका प्रचार किया जा रहा है। आप निश्चित रूप से घर पर भी इसे कर सकते हैं, कोई समस्या नहीं। यदि आप नहीं जा सकते, तो 5:30 से 8:30 तक लाइव प्रसारण होगा। आप घर पर भागवत पढ़ सकते हैं और कथा सुन सकते हैं। तदनुसार, घर पर आप कलश स्थापित कर सकते हैं, भगवान के नाम से भजन-कीर्तन कर सकते हैं, और अपने घर को पवित्र कर सकते हैं। उन सात दिनों में, जब तक आप भागवत कथा सुन रहे हैं, आपको बिस्तर पर नहीं सोना चाहिए। जो लोग सात दिन सुनते या पढ़ते हैं, उन्हें भूमि पर सोना चाहिए। आपको सात्त्विक भोजन भी करना चाहिए; उस समय राजसिक भोजन नियमों के अनुकूल नहीं है। जब भागवत कथा हो रही हो, तब सादा भोजन करना चाहिए। इस प्रकार आपको भी इसका लाभ प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:49 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1013 मुझे विस्तार से बताइए।

उत्तर: हम वहाँ दर्शन के लिए गए थे। पहले एक महिला उस स्थान से गुजर रही थी, और वह खुला क्षेत्र है, इसलिए वहाँ कोई खुदाई नहीं हो रही थी। परंतु उसने देखा कि वह स्वयं ही भूमि से ऊपर आते हुए प्रकट हो रहा है। फिर उसने सबको बताया। तो अब वहाँ पूजा-अर्चना हो रही है, और हम भी भविष्य में वहाँ एक मंदिर स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 56:31 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1014 आपने कहा कि संहार पूरे विश्व में होगा। क्या यह भारत में भी होगा?

उत्तर: भारत में भी पाप हो रहे हैं। देखिए, हमारा सनातन धर्म स्वयं कहता है कि उसने ही सृष्टि की रचना की और उसे उसके सिद्धांत तथा व्यवस्था दी। मानवता सनातन धर्म की ही रचना है। इसलिए संहार पापियों का होगा, चाहे वे भारत में हों या किसी अन्य देश में। यह उनका होगा जो वेदों का विरोध करते हैं। क्योंकि जब भगवान आते हैं, तो वे वेदों के सिद्धांतों के अनुसार धर्म की स्थापना करते हैं। जो वेदों का विरोध करते हैं और उसके मार्ग पर नहीं चलते, चाहे उनका कोई भी धर्म हो — हिंदू हो या कोई और — जहाँ भी पापी हैं, उनका संहार होगा। यदि पापी बने रहे, तो शांतिप्रिय लोग जी नहीं सकेंगे। Satya Yuga (सत्य युग) कैसे आरंभ होगा? तो, महादेव निश्चय ही संहार करेंगे। इस विषय में बहुत कुछ लिखा गया है, जो गुप्त सत्य हैं और जिन्हें मैं प्रकट नहीं कर सकता, क्योंकि कुछ लोगों को वे अच्छे नहीं लगेंगे। परंतु इतना मैं अवश्य कहूँगा: महादेव पूरे विश्व में संहार का कार्य करेंगे। और वे महादेव Kalki की ही शक्ति हैं; यह एक ही शक्ति है। संहार पापियों के लिए है, और भक्तों के लिए मुक्ति होगी। एक ओर संहार की यात्रा होगी, और दूसरी ओर भक्त आनंदित होंगे, आनंद में अपने भजन-कीर्तन करते रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 58:09 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1015 मेरा प्रश्न यह है कि भगवान ने रासलीला की थी। क्या वे इस युग में भी करेंगे, और कहाँ?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। द्वापर युग में भगवान ने गोपियों को उनकी तपस्या का फल दिया था। मैं इसे रासलीला नहीं कहता, क्योंकि भगवान किसी के पति या प्रेमी नहीं हैं। परंतु भक्तों ने उन्हें एक सांसारिक लीला में बाँधने के लिए तपस्या की थी, इसलिए भगवान ने उनकी इच्छा पूरी की। भगवान ने स्वयं कुछ नहीं किया; वे केवल निमित्त थे। वे अजन्मा हैं; वे निराकार और साकार दोनों रूपों में विद्यमान हैं और उनमें कोई भेदभाव नहीं है। उन्होंने भक्तों की इच्छाएँ पूरी कीं। परंतु इस Kali Yuga में भगवान अपने हाथों में तलवार और चक्र धारण करेंगे और संहार का कार्य करेंगे। इस युग में भगवान बाँसुरी धारण नहीं करेंगे, क्योंकि पापियों की संख्या बहुत बढ़ गई है, और इस जन्म में उनके अवतार का उद्देश्य पापियों का संहार करना है। रासलीला नहीं होगी, परंतु भक्तों और भगवान के बीच मिलन होगा। सत्संग होगा, और राम राज्य की स्थापना होगी। भक्तों को राजा बनाया जाएगा। उस युग में उन्होंने भक्तों की इच्छाएँ पूरी कीं, परंतु इस युग में वे जनता को राजा बनाएँगे, क्योंकि भगवान के कार्य युग के अनुसार बदलते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:21 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1016 पिताजी, मेरा प्रश्न श्रीमद्भागवत के अनुसार है। जब गर्भ में स्थित शिशु कष्ट से रोता है, तो वह भगवान से प्रार्थना करता है। परंतु संसार में आते ही क्या वह अपने प्रारब्ध में उलझ जाता है और सब कुछ भूल जाता है? ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है; सभी भक्तों को इसे सुनना चाहिए। मनुष्य के जन्म लेने से पहले, वह माता के गर्भ में भगवान से प्रार्थना करता है। वह कहता है, 'प्रभु, मुझे बचा लीजिए। यदि मैं इस जीवन में जन्म लूँ,' — यह भागवत में लिखा है — 'तो मैं सत्संग करूँगा, भजन-कीर्तन के माध्यम से आपका नाम फैलाऊँगा, और फिर आपके पास लौट आऊँगा। कृपया इस एक बार मुझे बचा लीजिए।' भगवान से प्रार्थना करते हुए, जब वह पृथ्वी पर जन्म लेता है, तो उसकी इंद्रिय-शक्तियाँ, पाँच इंद्रियाँ, और छह विकार... जो भगवान के प्रति प्रेम लेकर आते हैं, उन्हें ये चीजें स्पर्श नहीं करतीं। क्योंकि, देखिए, जब हम किसी मार्ग पर चलते हैं, तो एक ओर मंदिर देखते हैं, दूसरी ओर गरीब लोग, और तीसरी ओर धनवानों की हवेलियाँ। संसार में सब कुछ उपलब्ध है। मन को वश में करने के लिए श्रीमद्भागवत में लिखा है कि इसे पढ़ने से यह माया दूर हो सकती है। जैसा आपने कहा, जन्म के बाद सब कुछ मनुष्य को घेर लेता है और वह भूल जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जैसा प्रह्लाद ने सभी बच्चों से कहा था, 'भागवत पढ़ो, जब से तुम भगवान को समझने लगो तभी से आरंभ करो।' तो, आपके इस अच्छे प्रश्न के माध्यम से मैं अपने सनातनी लोगों को यह संदेश देना चाहता हूँ: यदि कोई बचपन से भागवत पढ़े, तो जैसा सूत मुनि कहते हैं, वह अपने मन को वश में करके उसे भगवान की ओर मोड़ सकता है, जिससे वह माया और इंद्रियों से दूर रहता है। यदि हम अपने परिवारों से यह संस्कार छोटी उम्र से दें, तो आज संसार में जिन समस्याओं से हम पीड़ित हैं, उनसे हमारी अगली पीढ़ी बच सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:31 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1017 मैंने 33 करोड़ देवताओं के बारे में कुछ सुना है... उनमें सबसे महान कौन है?

उत्तर: ब्रह्मा देव ने आठ वसुओं, दस... और बारह आदित्यों (सूर्यों) की रचना की, क्योंकि बारह महीनों में पृथ्वी पर बारह सूर्य उदय होते हैं। उनमें सबसे महान कौन है? सनातन धर्म कहता है कि संसार में भगवान सबसे महान हैं। हमारी विचारधारा में, एक को ऊँचा उठाना और दूसरे को छोटा करना सनातन धर्म के अनुकूल नहीं है। यह भगवान की विचारधारा है, भगवान की सृष्टि है। वे किसे महान, अच्छा या बुरा बनाते हैं — यह न हमारे हाथ में है, न हमारे नियंत्रण में, और न ही इतने विराट विषय पर बोलना हमारे सामर्थ्य में है। मैं केवल इतना कहूँगा कि संसार में भगवान सबसे महान हैं, और भगवान के प्रति हमारी भक्ति और समर्पण ही हमारे लिए सर्वोत्तम है। सूर्य, चंद्रमा, तारे, ग्रह, नक्षत्र, आठ वसु... ये सब सृष्टि का एक अंश हैं। यह सब ब्रह्म में विलीन हो जाता है। जब यह विलीन होता है, तो एक नई सृष्टि भी होती है। जो रचना करता है, वही सबसे महान है। जो विलीन होते हैं, वे उन्हीं से रचे जाते हैं। तो हम किसे सबसे महान कहें? जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:10 · 16 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1018 Bhavishya Malika में वर्णित 'बारह हाथ खंडा' (बारह हाथ की तलवार) के बारे में कुछ संदेश दीजिए।

उत्तर: यह Bhavishya Malika में लिखा है और इसकी अनेक व्याख्याएँ हैं। भगवान Kalki के पास एक तलवार होगी, और उसकी लंबाई ऐसी बताई गई है कि वह उनकी इच्छा के अनुसार बढ़ और घट सकती है। कुछ लोग कहते हैं कि वे बारह हाथ लंबी तलवार धारण करेंगे और संहार करेंगे। परंतु हमारे मत में, इसका अर्थ यह है कि संसार में सभी पाप की ओर मुड़ जाएँगे। हर गाँव में और पूरे विश्व में लोग विद्रोही हो जाएँगे। लोग छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे की हत्या करेंगे, हत्याएँ होंगी, और यह चलता रहेगा। इसका अर्थ है कि संसार में हर व्यक्ति के हाथ में एक 'तलवार' होगी, और हिंसा प्रकट होगी। वह अस्त्र जिसे भगवान Kalki वास्तव में धारण करेंगे, वह वज्र है। यह Bhavishya Malika में लिखा है। मतंग नामक एक ऋषि ने तपस्या से ब्रह्म की अवस्था प्राप्त की थी, और उनकी अस्थियाँ एक गुप्त स्थान पर हैं, जो अब जाग्रत हो चुका है। जब भगवान Kalki आदेश देंगे, तो वह उनके हाथ में आ जाएगा। वे उसी वज्र से प्रहार करेंगे। चाहे परमाणु बम हो या कोई भी उन्नत तकनीक, वह कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, भगवान उसे वज्र की शक्ति से भस्म कर देंगे। यदि भगवान एक-एक करके लोगों का वध करते जाएँ, तो इसमें बहुत अधिक समय लगेगा। तो, 'बारह हाथ की तलवार' इस बात का प्रतीक है कि संसार में सब हिंसक हो जाएँगे। परंतु अंतिम संहार के लिए भगवान Kalki वज्र धारण करेंगे। यह Bhavishya Malika से है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:29 · 16 अक्टूबर 2022

सत्र 52 · प्रश्न 1019–1025

L50 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagwat Mahatamya Part -3

दिनांक: 20 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1019 शास्त्र स्त्री को 'माया' और व्यभिचारिणी बताते हैं, जबकि पुरुष अनेक विवाह कर सकता है और फिर भी व्यभिचारी नहीं माना जाता। यह भी कहा जाता है कि पुरुष के मोक्ष के लिए उसके परिवार को उसका सहयोग करना चाहिए, परंतु स्त्री के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। यह पुरुष-प्रधान समाज जैसा लगता है। क्या Satya Yuga में यह बदलेगा? स्त्री की भूमिका केवल घर के कामों तक सीमित क्यों दिखाई देती है? यदि माँ दुर्गा संहारिणी हो सकती हैं, तो स्त्रियों को वे अधिकार क्यों नहीं मिलते? यह आज भी स्त्रियों के संघर्ष और असुरक्षा को लेकर हृदय से पूछा गया प्रश्न है।

उत्तर: यह अच्छा प्रश्न है। भागवत में स्त्री का वर्णन तीन रूपों में किया गया है: पुत्री, पत्नी और माता के रूप में। जब वह अपने पति और परिवार को भोजन परोसती है, तब उसे माता के रूप में देखा जाता है। पति-पत्नी का संबंध सृष्टि का आधार है। माताओं को सर्वत्र सम्मान दिया जाता है। कहा जाता है कि पत्नी को पति के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। आत्मा एक ही है, भले ही शरीर भिन्न हों — पुरुष हो या स्त्री। ऐसा नहीं है कि स्त्रियों को अधिकार नहीं दिए गए; श्रीमद्भागवत माता को सर्वोच्च अधिकार देता है। भगवान कृष्ण ने स्वयं अपनी माता का सम्मान किया और उनकी आज्ञा मानी। पत्नी के कर्तव्यों के वर्णन आज के युग में शायद उचित न लगें, परंतु आने वाले Satya Yuga में पति-पत्नी का बंधन अटूट और पवित्र होगा। शास्त्र Kali Yuga के लिए पति और पत्नी के कर्तव्यों का वर्णन करते हैं। यदि स्त्री भक्तिपूर्वक अपने पति की सेवा करती है, तो वह वैकुंठ प्राप्त करती है और उसे किसी अन्य कर्म की आवश्यकता नहीं होती। परंतु पुरुष को जन्म से मृत्यु तक अपने कर्मों का विचार करना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि पुरुष प्रभुत्व रखते हैं; हर घर में माताओं का सम्मान होता है। भागवत बताता है कि पति और पत्नी को कैसे रहना चाहिए। दोनों को पवित्र होना चाहिए। यदि उनका बंधन दृढ़ और निष्ठावान हो, तो भगवान उन्हें अगले जन्म में फिर पति-पत्नी के रूप में मिलाते हैं। Satya Yuga में अनेक विवाहों के विषय में: पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकता था क्योंकि वह उन सबकी आवश्यकताएँ पूरी कर सकता था, क्योंकि संसाधन असीमित होंगे। किसी को विवाह के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा। उस युग में, यदि कोई स्त्री किसी पुरुष से विवाह करने की इच्छा प्रकट करती, तो भले ही वह पहले से विवाहित हो, उसकी इच्छा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता था, क्योंकि इससे शाप लगता। पुरुष 10-15 पत्नियाँ शांति से रख सकता था — वह शांति जो आज एक पत्नी के साथ भी नहीं मिलती। वह पूर्ण सत्य और धर्म का लोक होगा। Satya Yuga में माताओं का सम्मान सर्वोच्च होगा। माता देवी है, संसार की रक्षक और सृजनकर्ता। भागवत इन बातों को पारिवारिक कर्तव्यों के दृष्टिकोण से समझाता है। तो, आनंद से भागवत पढ़िए, अपने पति की सेवा कीजिए, और ऐसा करके आप वह प्राप्त करेंगी जो बड़े-बड़े ऋषि भी नहीं कर पाते।

► यह उत्तर सुनें · 47:33 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1020 'सच्चिदानंद' का क्या अर्थ है?

उत्तर: सच्चिदानंद का अर्थ है वे, जो चेतन जगत में, निर्गुण में और सगुण में विद्यमान हैं। वे सृष्टि की रचना और विलय करते हैं। वे विविध प्रकार की तपस्याओं के माध्यम से संसार में मनुष्यों को बचाते हैं। वे चेतन जगत में हैं, निराकार हैं, साकार हैं, सगुण हैं और निर्गुण हैं — वे सर्वत्र हैं। इसीलिए उन्हें सच्चिदानंद स्वरूप कहा जाता है। वे ही पालन करते हैं और सब कुछ करते हैं, परंतु वे अपने कर्म का भी विचार करते हैं। भगवान ने कभी संसार के प्रति पक्षपात नहीं किया। वे कर्मों का फल भी लेते हैं और संसार को प्रदान करते हैं। यही भगवान की विचारधारा है।

► यह उत्तर सुनें · 55:26 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1021 25 तारीख को एक ग्रहण है और 8 तारीख को दूसरा, दोनों एक ही पक्ष के भीतर। इसका क्या महत्व है?

उत्तर: जब अमावस्या और संक्रांति एक साथ आती हैं, तो वह समय बहुत कठिन होगा, जिसे संभालना मुश्किल होगा। मेरी सलाह है कि आप 'धारा' (धर्म के प्रवाह/पथ) का अनुसरण करें और सत्संग में बने रहें। यदि आप इस जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं और अपने परिवार की रक्षा करना चाहते हैं, तो अब भी समय है। यदि संसार धर्म के इस पथ को स्वीकार कर ले, तो सुरक्षित रहने का यही सबसे बड़ा उपाय होगा; इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 57:42 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1022 'त्रिसंध्या आरती' क्या है?

उत्तर: त्रिसंध्या का अर्थ है दिन की तीन संधियों में की जाने वाली उपासना। पहली प्रातःकाल में, ब्रह्ममुहूर्त के समय, जो 3:30-4:00 बजे से लेकर 6:30 बजे तक रहता है। फिर मध्याह्न आता है, और उसके बाद सायं संध्या। ये संधि काल यानी मिलन के समय हैं। जैसे मनुष्यों के कर्तव्य होते हैं, वैसे ही देवताओं के भी होते हैं। इन संध्या कालों में यदि कोई वैदिक मंत्रों का जप करे, शास्त्र पढ़े, या भागवत का पाठ करे, तो सभी देवता और वसुगण प्रसन्न हो जाते हैं। यह पूजा पाकर वे कृपादृष्टि से संसार की देखभाल करते हैं। इससे संसार में मंगल होगा। मानव समाज रोगमुक्त होकर शांति से रहेगा, और पृथ्वी पर कोई समस्या उत्पन्न नहीं होगी। इसीलिए हम कहते हैं कि सबको त्रिसंध्या करनी चाहिए। यदि आप करेंगे, तो दूसरे भी आपका अनुसरण करेंगे। यदि भारत में सब लोग त्रिसंध्या करें, तो भारत एक पवित्र, दिव्य भूमि बन जाएगा और उस पर कोई विपत्ति नहीं आएगी। दिव्य रक्षकों की भी पूजा करनी आवश्यक है, और उनके लिए जो सेवा हमें करनी चाहिए, वह त्रिसंध्या के माध्यम से पूर्ण होती है।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:02 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1023 'द्रव्य यज्ञ' क्या है?

उत्तर: संसार में लोगों को उनके कर्मों और पापों से बचाने के लिए 'द्रव्य यज्ञ' (भौतिक वस्तुओं का दान-यज्ञ) भी किया जाता है। आप जानते हैं कि हमारी सनातन धर्म परंपरा में, जब किसी की मृत्यु होती है, तो दान किया जाता है। उस समय 'द्रव्य' यानी भौतिक वस्तुओं का दान करना द्रव्य यज्ञ माना जाता है। इसका अर्थ है ब्राह्मण को गाय जैसी वस्तु दान करना, या किसी गरीब को चावल, अन्न और वस्त्र देना। कोई घर दान करता है, कोई भूमि दान करता है। इससे व्यक्ति धर्म (पुण्य) अर्जित करता है। इससे व्यक्ति के पापकर्म भी नष्ट होते हैं, और धर्म प्राप्त कर वह स्वर्ग लोक तक पहुँच सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:24 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1024 आपने कहा था कि जब लोभ और इच्छा समाप्त हो जाती है, तब वैराग्य आता है। यह भी कहा जाता है कि भगवान से कुछ नहीं माँगना चाहिए। इस मार्ग पर चलने के बाद अधिकांश सांसारिक इच्छाएँ क्षीण हो गई हैं, लेकिन एक नई, प्रबल इच्छा जाग उठी है: प्रभु का सान्निध्य मिले, उनकी सेवा का अवसर मिले, और सदा उनके साथ रहूँ। क्या ऐसी इच्छाएँ रखना ठीक है, या हमें प्रभु से कुछ भी नहीं माँगना चाहिए?

उत्तर: यह इच्छा ही हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है। सत्य युग के जीवों जैसा शुद्ध बनने के लिए, भगवान की यह इच्छा अंतिम क्षण में उत्पन्न होती है। सब सुखी और आनंदित हो जाते हैं। जिस मनुष्य में भगवान के प्रति यह इच्छा नहीं है, वह वास्तव में मनुष्य ही नहीं है। यदि आपके भीतर यह भाव उठ रहा है, तो इसे और अधिक जगाइए। ऐसा होने पर भगवान सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं, क्योंकि यह आत्मा और परमात्मा का मिलन है। यदि किसी व्यक्ति में भगवान के प्रति प्रेम, भक्ति या लगाव नहीं है, तो वह मुक्ति कैसे पाएगा? सांसारिक वस्तुओं से विमुख होना आवश्यक है। सांसारिक वस्तुएँ माया द्वारा रचित हैं और नश्वर हैं। हमें उनसे कोई आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। लेकिन भगवान अनंत हैं, असंख्य ब्रह्मांडों के स्वामी हैं। उनका अस्तित्व असीम है, और वैसी ही हमारी आत्मा भी है। तो यदि आत्मा और परमात्मा के बीच यह प्रेम, पवित्रता और लगाव है, तो जान लीजिए कि आप पर भगवान की कृपा है। जितना हो सके प्रेम कीजिए, जितना हो सके प्रभु के प्रति अपना लगाव बढ़ाइए। इस संसार में सबसे धनी व्यक्ति वही है जो ऐसा करता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:03 · 20 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1025 मनुष्य जन्म क्यों हुआ? यह इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा प्रश्न है। मैं भी पूछता हूँ, हम क्यों आए? हमारा क्या करना शेष रह गया था? मनुष्य किस उद्देश्य से इस पृथ्वी पर आया?

उत्तर: शास्त्र कहते हैं कि भगवान मनुष्य जन्म देकर कहते हैं, 'जाओ, जो भी कर्म शेष है उसे पूरा करो।' इसके लिए सबसे बड़ा मार्ग भक्ति है। जिसके पास भक्ति है, वही संसार का सबसे बड़ा विद्वान है। सांसारिक ज्ञान या शिक्षा से कोई महान नहीं बनता। यदि कोई भक्ति के मार्ग पर महान बनता है, तो उसे ही सबसे बड़ा विद्वान कहा जाता है। भक्ति के आगमन से व्यक्ति के पूर्व पापकर्म धीरे-धीरे धुल जाते हैं। और धीरे-धीरे भक्ति के माध्यम से दिव्य ज्ञान आता है। जैसे अभी वह युवती कह रही थीं कि इस 'धारा' (मार्ग) में आने के बाद उनकी सांसारिक वस्तुओं से आसक्ति टूट गई है, लेकिन भगवान के प्रति लगाव बढ़ रहा है। वे पूछ रही थीं कि क्या यह ठीक है। हाँ, यह ठीक है। जो कोई भी हमारी 'धारा' में आता है, प्रतिदिन श्रीमद्भागवत पढ़ता है, और सत्संग में रहता है, उसकी कोई सांसारिक आसक्ति नहीं रहेगी। उन्हें कोई दुःख विचलित नहीं करेगा, क्योंकि वे धीरे-धीरे शुद्ध होते जाएँगे। धीरे-धीरे भक्ति और भगवान के प्रति समर्पण का भाव जाग उठेगा। भक्ति के मार्ग पर बने रहिए। इस मनुष्य जन्म में जो कुछ भी हुआ है, प्रभु धर्म, भक्ति और समर्पण के द्वारा उस सबको शुद्ध कर देंगे, और फिर वे शांति, सुख, और यहाँ तक कि वैकुंठ में स्थान भी दे सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:35 · 20 अक्टूबर 2022

सत्र 53 · प्रश्न 1026–1040

L51 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagbat Mahatamya part -4

दिनांक: 23 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1026 पंडित जी, जैसा आप कहते हैं, ओडिशा में कल्कि इस समय बाल रूप में हैं, और कई लोगों ने उनके दर्शन भी किए हैं। मैंने यह अनुभव किया है और सत्संग में सुना है। तो क्या भगवान को उनके बाल रूप में पहचाना जा सकता है? क्या ऐसा संभव है, या ये केवल कहानियाँ हैं?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका के अनुसार, जिसे सुदाम सखा ने लिखा था... और मालिका में जगन्नाथ संस्कृति, जगन्नाथ क्षेत्र, और संसार में परिवर्तन के लक्षणों के बारे में जो लिखा है, उससे हम समझते हैं कि धर्म की स्थापना के लिए पृथ्वी पर भगवान के अवतार का समय चल रहा है। भक्तों का एकत्रीकरण आने वाले समय में होगा, और भक्तों का उद्धार करने के लिए मालिका सबसे बड़ा माध्यम होगी। तो आप एक काम कीजिए: जो सत्संग गूगल मीट पर होता है और दूसरा सत्संग जो प्रतिदिन होता है... क्योंकि मालिका भक्तों के लिए और उनके उद्धार के लिए लिखी गई है। और दूसरी बात यह है कि सिख धर्म का एक ग्रंथ है, जिसमें हमारे पूज्य गुरु नानक देव ने लिखा है कि भगवान कल्कि का अवतार ओडिशा में होगा, गया क्षेत्र में नहीं। आपको इसके बारे में थोड़ा पढ़कर देखना चाहिए। यह आप सबके लिए एक रहस्य है। गुरुदेव के साथ, जो संसार की हर बात जानते हैं, उन्होंने कल्कि अवतार के बारे में भी कुछ लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 48:29 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1027 जय जगन्नाथ, मैं राजेंद्र बोल रहा हूँ। क्या आप कृपया उस बात को विस्तार से बताएँगे (कि धुंधुकारी की आत्मा ने कथा कैसे सुनी)?

उत्तर: वह एक रूप में विद्यमान रहता है, अर्थात् पवन (वायु) के रूप में विद्यमान रहता है, और कभी-कभी उसका वास्तविक स्वरूप भी प्रकट होता है। क्योंकि जैसे मनुष्य का एक रूप होता है, वह वायु की तरह चलता है। बाँस की गाँठ के भीतर एक छेद था, और उस छेद में बैठकर वह भागवत कथा सुनता रहा। प्रतिदिन उसकी एक गाँठ टूटती थी, अर्थात् फट जाती थी। सात दिनों में सात गाँठें फट गईं, और उसे मुक्ति मिल गई। उसे अपना दिव्य रूप मिल गया। वह प्रकट हुआ, सबको प्रणाम किया, अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, और वह मुक्त हो गया। लिखा है कि जो कोई सच्ची भक्ति और विधि-विधान के अनुसार भागवत कथा करता या सुनता है, उसे मुक्ति प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 51:20 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1028 ग्रहण के समय शास्त्रों और मूर्तियों जैसी पवित्र वस्तुओं के साथ क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

उत्तर: चाहे देवता हों या भगवान, हर वस्तु के लिए आपको गौमाता का गोबर लेना चाहिए, उसमें कुछ मिलाकर उससे वस्तुओं का स्पर्श करना चाहिए। ग्रहण समाप्त होने के बाद हर चीज़ पर गंगाजल छिड़कें और फिर आप पढ़ सकते हैं। उस समय, आप सबके घरों में, जहाँ भी हमारे देवता, मूर्तियाँ, पुस्तकें, शास्त्र या पुराण हैं, या कोई भी ऐसी सामग्री है जिसमें कोई छोटा-सा गुण है, उस पर गोबर लगाकर रखना चाहिए। इस प्रकार वह शुद्ध बनी रहेगी। ग्रहण का यही मुख्य नियम है।

► यह उत्तर सुनें · 55:06 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1029 साधु, संत, ऋषि और मुनि में क्या अंतर है?

उत्तर: साधु वह है जो धर्मपूर्ण, सत्य साधनों से जीविका कमाता है और अपना परिवार चलाता है। वे पूर्ण रूप से वैदिक कर्म मार्ग का पालन करते हैं। वे संसार में कोई अनुचित कार्य नहीं करते। उनके भोजन, कर्म और निद्रा में—उनके सभी कार्यों में शुद्धता और पवित्रता दिखाई देती है। उन्हें साधु कहा जाता है। और संत वे हैं जो संसार के लिए कल्याणकारी होते हैं। और ऋषि वे हैं जो तपस्या करते हैं। कलियुग में मुझे अधिक ऋषि दिखाई नहीं देते। जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, वे कई वर्षों तक, 1000-2000 वर्षों तक तपस्या में बैठकर भगवान का ध्यान करते हैं। उन्हें ऋषि कहा जाता है। और जो सिद्धि प्राप्त करने के बाद शास्त्र और पुराण लिखते हैं, उन्हें मुनि कहा जाता है। तो ये अलग-अलग श्रेणियाँ हैं। हमारे कलियुग में, संतों की संख्या आप जानते हैं, और साधु हैं, क्योंकि कलियुग में केवल साधु ही बच सकते हैं... हरि नाम का जप करके, भागवत पढ़कर लोग मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 56:29 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1030 लाभ प्राप्त करने के लिए कम से कम कितने अध्याय पढ़ने चाहिए?

उत्तर: तब भी धर्म आता है, लेकिन मुख्य मार्ग, हमारी वैदिक परंपरा के अनुसार... आज लोगों के पास अपनी नौकरी के अलावा अधिक समय नहीं है। तो आप एक अध्याय पढ़ सकते हैं। उसे भक्ति से पढ़िए, समर्पण से पढ़िए। भगवान उसे स्वीकार करेंगे, और हमारा जीवन भी सार्थक हो जाएगा। क्योंकि यदि किसी घर में भागवत पढ़ी जाती है, तो वह घर पाँच तीर्थों का संगम (पंच तीर्थ) बन जाता है - गंगा, यमुना, सरस्वती, त्रिवेणी, प्रयाग संगम। सभी देवता, मुनि और ऋषि वहाँ आकर उपस्थित होते हैं। यदि आप घर पर पढ़ते हैं, तो घर तीर्थ बन जाता है, और उसमें रहने वाले लोग मुक्ति प्राप्त करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 59:14 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1031 गुरुजी, हमें जो भी फल मिलते हैं, वे हमारे पिछले कर्मों के आधार पर मिलते हैं। तो क्या कथा सुनने के बाद हमारे किए हुए कर्म धुल सकते हैं? यह बात मुझे समझ नहीं आई। मैं इसे थोड़ा समझना चाहता था।

उत्तर: देखिए, कर्म मनुष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण धारा है। क्योंकि गीता में भी भगवान ने अर्जुन को यही समझाया था: 'तू अपना कर्म कर, क्योंकि इस संसार में कर्म से बड़ा कुछ भी नहीं है।' परंतु कर्म दो प्रकार के होते हैं। एक है सामाजिक, सांसारिक धर्म, और दूसरा है आध्यात्मिक कर्म। दोनों आवश्यक हैं। हमें सांसारिक कर्म भी करना है, और साथ ही आध्यात्मिक कर्म भी, जिससे सनातन धर्म की उत्पत्ति हुई। दूसरा है आध्यात्मिक कर्म, अर्थात् इस आत्मा को मुक्त करने के लिए हमें हरि कीर्तन करना है, भागवत पढ़ना है। क्योंकि जब नैमिषारण्य में सभी संतों और ऋषियों ने व्यासदेव से पूछा, 'आपने इतने शास्त्र लिखे हैं। परंतु कलियुग के लोग इन श्लोकों का अर्थ नहीं समझ पाएंगे। इन शास्त्रों को पढ़कर मोक्ष प्राप्त करने का समय किसके पास है?' तब व्यासदेव ने उन्हें बताया कि सभी मनुष्यों को कौन-सा कर्म करना चाहिए... 'अष्टादश पुराणों का सार, व्यास के वचनों में यही है कि परोपकार सबसे बड़ा पुण्य है, और परपीड़ा सबसे बड़ा पाप है।' सबसे बड़ा पुण्य है संसार की सेवा करना, और यदि आप दूसरों का बुरा करते हैं, तो पाप उत्पन्न होता है। और यदि हम संसार के सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करें, तो हमें स्वर्ग प्राप्त होगा। तो कर्म के दो पहलू हैं: आध्यात्मिक कर्म और सांसारिक कर्म। यदि हम यह करें, तो हम स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं। परंतु यदि हम भगवान विष्णु या नारायण, कृष्ण, राम की उपासना करें और भक्ति में शरणागत हो जाएं, तब भगवान वैकुंठ देते हैं। आपको स्वर्ग, सूर्य लोक, चंद्र लोक, पितृ लोक, या गंधर्व लोक, पाताल लोक भी मिल सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:38 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1032 यदि मैं भागवत पुराण पढ़ूं, तो क्या मेरे पिछले (बुरे) कर्मों का प्रभाव कम हो सकता है?

उत्तर: बिल्कुल। जैसे अंधकार में प्रकाश चमकता है तो सभी वस्तुएं दिखाई देने लगती हैं, वैसे ही यदि कोई व्यक्ति श्रीमद्भागवत पढ़ता है और अच्छे आध्यात्मिक कर्म करता है, तो उसके बुरे कर्मों पर सत्य का प्रकाश पड़ता है। धीरे-धीरे वह सत्यवादी बन जाता है। और एक समय ऐसा आएगा जब वह बुरे कर्म नहीं करेगा, क्योंकि उसका शरीर धीरे-धीरे आध्यात्मिक होता जाएगा। उसका विवेक जाग्रत होगा। जब विवेक और विचार-शक्ति जाग्रत होती है, तो संसार के लोग अच्छे बन जाएंगे। और इस विवेक को जगाने के लिए सभी मनुष्यों के लिए, हम सबके लिए, आध्यात्मिक कर्म आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:08 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1033 मेरा प्रश्न यह है कि जब हम घर में श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, तो क्या हमारे दिवंगत पूर्वज सुनने आते हैं?

उत्तर: देखिए, जिस घर में वे रहे और जिसे उन्होंने छोड़ा, जिन्हें मुक्ति नहीं मिली है, हमारे ऐसे अनेक पूर्वज आज भी हमारे घर के आसपास प्रतीक्षा कर रहे हैं, चाहे हमारे आंगन में हों या पेड़-पौधों के पास, क्योंकि उन्हें मुक्ति नहीं मिली है। और जब भागवत कथा होती है, तो वे सभी पितृ लोक से और नीचे के मृत्यु लोक से, सब आते हैं। क्योंकि भगवान ने स्वयं उन्हें पवित्र और सत्यमय कार्यों में आने का अधिकार दिया है। जिन लोगों ने अपने कर्मों के अनुसार भिन्न-भिन्न जन्म पाए हैं, उन्हें आने का अधिकार है। तो जब आपके घर में यह पढ़ा जाता है, तो एक ओर पूर्वज प्रसन्न होते हैं, और वे सुनने भी आते हैं। और सुनकर, जिन्हें मुक्ति नहीं मिली है, वे भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:01 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1034 भागवत का तत्त्व क्या है?

उत्तर: भागवत श्री भगवान के मुख से निकली हुई है। इसे पढ़ने से मनुष्य के शरीर में वह ऊर्जा और शक्ति आती है। और जब भक्ति, ज्ञान और वैराग्य प्राप्त होते हैं, तो तत्त्व सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। क्योंकि जिस व्यक्ति में भक्ति नहीं है... भक्ति के बाद ज्ञान आता है। जब ज्ञान आता है, तब उसका मोह नहीं रहेगा। और उसका सारा समय कार्य को समर्पित होगा, तब भागवत से उसका संबंध धीरे-धीरे बढ़ेगा, और उसके तत्त्व की शक्ति से वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। भागवत ऐसा शास्त्र है जिसे सत्ययुग और अन्य आरंभिक युगों में सभी देवताओं और स्वयं भगवान ने भगवान शंकर और ब्रह्मा देव को सुनाया था। और वही भागवत, बाद के युगों में, भागवत कथा और भागवत शास्त्र के रूप में संसार में पढ़ी जाने लगी। और व्यासदेव ने द्वापर युग में इसका पुनः संपादन किया। आरंभ में भगवान ने यह ब्रह्मा देव और भगवान शंकर को पहले ही बता दिया था। अब आप और क्या जानना चाहते हैं? बताइए।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:26 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1035 हममें से जो लोग घर में प्रतिदिन भागवत कथा पढ़ते हैं, उनके लिए आहार या पढ़ने की सही विधि को लेकर कोई नियम हैं? किन नियमों का पालन करना चाहिए?

उत्तर: सबसे पहले, मन की पवित्रता आवश्यक है। मन की पवित्रता का क्या अर्थ है? मन की पवित्रता यह है कि आपका मन दर्पण के समान हो जाए। आपके मन में केवल भगवान का प्रतिबिंब, भगवान के गुण और भगवान की महिमा होनी चाहिए। किसी और चीज़ को स्थान देने से आपका मन मलिन हो जाएगा। तो जो लोग भागवत पढ़ते हैं, उन्हें पहले अपना मन शुद्ध करना चाहिए, अर्थात् हर क्षण अपने मन में भगवान को स्थापित करना चाहिए। दिन भर काम करते रहिए और भगवान का नाम जपते रहिए। ऐसा करते-करते एक समय आएगा जब कोई बाहरी, बुरा या असत्य विचार मन में प्रवेश नहीं करेगा। बाहरी आचरण की दृष्टि से, आप स्नान कर सकते हैं, स्वच्छ वस्त्र पहन सकते हैं, और पूजा के लिए फूल, धूप और दीप अर्पित कर सकते हैं। परंतु पहले मन का शुद्ध होना आवश्यक है। मन को शुद्ध कीजिए और भागवत पढ़िए। यदि आप पूरा स्नान नहीं कर सकते, तो शरीर के महत्वपूर्ण अंगों पर जल छिड़ककर और पैर धोकर पढ़ सकते हैं। जो व्यक्ति बीमार है, वह भी पढ़ सकता है। स्नान करना संभव न हो, फिर भी गंगाजल छिड़ककर और सात बार मां गंगा का नाम लेकर आप भागवत पढ़ सकते हैं। मैं आपको एक बात बताऊं, जब भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ, वसुदेव जेल में थे। उनके पास स्नान करने का कोई स्थान नहीं था। इसी शास्त्र में लिखा है कि उन्होंने अपने मन में मां गंगा देवी का स्मरण किया, मानसिक स्नान किया, और फिर भगवान को मथुरा से गोकुल ले गए। तो मन की पवित्रता ही मुख्य है, और हम मन से गंगा स्नान भी कर सकते हैं। शुद्ध मन से भागवत पढ़िए और भगवान को प्राप्त कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:28 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1036 अलग-अलग श्लोक हैं। क्या केवल उन्हें पढ़ना पर्याप्त है, या इससे आगे भी कुछ है?

उत्तर: देखिए, भागवत की रचना 'श्रुति' (अर्थात् वेदों) से हुई है। श्री भागवत वेदों से बनी है। भागवत वेदरूपी कल्पवृक्ष का पका हुआ फल है। वेदों का एक और नाम है 'श्रुति'। भागवत को बार-बार सुनने और पढ़ने से आपको ज्ञान प्राप्त होगा। एक बार, दो बार, तीन बार पढ़ने के बाद आप स्वयं समझ जाएंगे, क्योंकि भगवान धीरे-धीरे वह समझ देते हैं; वे एक साथ सब कुछ नहीं देते। पढ़ते रहिए, और आप भी ज्ञानी बन जाएंगे। और इतना ज्ञान आएगा... देखिए, सब कुछ हमारे शरीर के भीतर ही है... आप 'ब्रह्मज्ञानी' बन सकते हैं। संसार में हर कोई बन सकता है, परंतु भक्ति और मन की पवित्रता के साथ बार-बार पढ़ने से तत्त्व का ज्ञान प्रकट होगा। जैसे दही मथने से मक्खन निकलता है, वैसे ही वह भागवत आपके मन में प्रकट होगी, और आप समझ जाएंगे। इसीलिए मैं कहता हूं कि सभी को इसे पढ़ना चाहिए। यदि सब पढ़ेंगे, तो संसार में और हर परिवार में शांति और सुख आएगा। न कोई दुर्भाग्य रहेगा, न बुरे ग्रहों का प्रभाव, न जादू-टोना; लोगों को जो भी कष्ट देता है, उससे भी उन्हें रक्षा मिल सकती है। इसीलिए हम इसे पढ़ते हैं। इसे पढ़िए, सुनाइए, संसार के साथ बांटिए। इससे संसार में शांति होगी और सत्ययुग की स्थापना में सहायता मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:37 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1037 गीता के ज्ञान और भागवत के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: गीता को परम शास्त्र का नाम दिया गया और भागवत को महापुराण का नाम दिया गया। महापुराण का अर्थ है कि यह सभी नदियों के संगम के समान है। और मनुष्य की मुक्ति के लिए, मृत्यु के समय भागवत सबसे अधिक आवश्यक है। यह जन्म सांसारिक कर्म के लिए है, परंतु आगे के अनेक जन्मों के लिए भागवत हमें सहारा देती है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:43 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1038 रुद्राक्ष माला पहननी चाहिए या तुलसी माला?

उत्तर: मैं कहूंगा कि वैदिक परंपरा के अनुसार रुद्राक्ष पहनने का विधान सबके लिए नहीं है। परंतु आजकल बहुत से लोग रुद्राक्ष पहनते हैं। यदि मैं रुद्राक्ष के बारे में अधिक कहूंगा, तो यह विवादास्पद हो सकता है। मैं बस इतना ही कहूंगा: शास्त्रों में सबके लिए रुद्राक्ष पहनने का उल्लेख नहीं है। परंतु तुलसी माला सभी पहन सकते हैं। दूसरी बात यह है कि बुरे लोगों की संगति न करें। यह आवश्यक है। महाप्रभु इसे इस धरती पर लाए और कहा कि जो लोग तुलसी माला पहनकर महामंत्र का जप करेंगे, वे आनंद में रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:04 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1039 भगवान के श्रीचरणों में भक्ति में शरणागति और स्थिरता लाने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए? सांसारिक प्रभावों और पारिवारिक उलझनों के कारण हम अक्सर स्थिर नहीं रह पाते, और आलस्य आ जाता है। भगवान की कृपा कैसे प्राप्त करें और स्वयं को भगवान के श्रीचरणों में समर्पित करने का प्रयास कैसे करें?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न। देखिए, आपने जो प्रश्न पूछा है, वह हमारे लिए, संसार के लिए, सबके लिए, और विशेष रूप से भक्तों के लिए आवश्यक है। देखिए, जब आपके भीतर भक्ति आएगी, तब भागवत-ज्ञान का प्रकाश चमकेगा। और इस कलियुग में लोगों का मन चंचल है। एक मिनट वे भागवत पढ़ रहे होते हैं, और अगले ही मिनट दूसरा विचार आ जाता है। यह सबके साथ होता है, केवल आपके साथ नहीं। संसार में, जो पूर्ण शरणागति में नहीं हैं, उनके सामने ऐसी समस्याएं आती हैं। परंतु एक काम कीजिए: श्रीमद्भागवत से 'गोप लीला' को 12 बार पढ़िए। लगातार 12 बार पढ़ते रहिए। उसके बाद आप देखिएगा कि आपको कितना आनंद मिलता है। और जो भी विघ्न आएंगे, आप कहेंगे, 'यह सब माया है,' और वे आप पर असर नहीं डाल पाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:02 · 23 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1040 मैं कुछ पूछना चाहता हूं... पहले मुझे भगवान के बारे में पता नहीं था, परंतु जब मुझे इसके बारे में पता चला... (निहित प्रश्न: मुझमें अचानक आध्यात्मिकता के प्रति रुचि क्यों जाग रही है?)

उत्तर: इसका अर्थ है कि भगवान की इच्छा के बिना किसी को भागवत का ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जब वे स्वयं चाहते हैं, तब वे बुलाते हैं। और ज्ञान के माध्यम से वे उसके मन में प्रवेश करते हैं और उसे जगाते हैं, मानो कह रहे हों, 'आओ, मेरी शरण में आ जाओ।' तो यह भगवान की इच्छा से होता है। मैं जो भी कर रहा हूं, उनकी इच्छा से कर रहा हूं। क्योंकि सांसारिक कार्य तो कोई भी कर सकता है, परंतु धर्म कार्य पूर्णतः भगवान के अधीन है। और तभी उसका फल मिलता है। जब हमारा मन उनसे जुड़ जाता है, तो वे हमारी सहायता करते हैं ताकि यह जीव कोई अच्छा कार्य करके मुक्त हो सके। तो आप भी अच्छे कर्म कीजिए। और भागवत के बिना, भगवान की कृपा के बिना, यह संभव नहीं है। क्योंकि उनकी कृपा है, इसीलिए हम चर्चा कर रहे हैं, और आप इस पर विचार कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:22:01 · 23 अक्टूबर 2022

सत्र 54 · प्रश्न 1041–1050

L52 Today's google meet with pandit shree kashinath Misha,-- LIVE Bhagabat Mahatamya Part -5

दिनांक: 27 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1041 नारद जी, आपका पूर्वजन्म क्या था, और आपके मन में भगवान के प्रति भक्ति और दिव्य प्रेरणा कैसे जागृत हुई? यह कैसे हुआ?

उत्तर: नारद महामुनि ने श्रीमद्भागवत में इसका विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने कहा: मेरे पूर्वजन्म में मेरी माता कुछ बड़े लोगों के यहाँ दासी थीं, और मैं उनका इकलौता पुत्र था। मेरी माता ने मुझे बड़े प्रेम और पवित्रता से पाला, सदा मुझे अपनी नज़रों के सामने रखा। वे दिन-रात राजा के घर में सेवा करती थीं, और मैं वहीं पला-बढ़ा। परंतु समय की परिस्थितियों के कारण मैं दूसरे लोगों से घुलता-मिलता नहीं था। मैं सीधा-सादा जीवन जीता था और दूसरे छोटे बच्चों की तरह मित्र बनाने या खेलने में मेरी कोई रुचि नहीं थी। समय बीतता गया, और जब मैं पाँच वर्ष का बालक था, तब मुझे सत्संग का अवसर मिला। जहाँ मेरी माता काम करती थीं, वहाँ कुछ संत और ब्राह्मण 'चातुर्मास्य' (वर्षा ऋतु के चार महीने) के लिए ठहरने आए, क्योंकि वे अपनी यात्रा रोककर एक ही स्थान पर रह जाते थे। जिस घर में मेरी माता काम करती थीं, उसके स्वामी ने मुझे उनकी सेवा में नियुक्त कर दिया। मेरी माता भी उन संतों और ब्राह्मणों की सेवा कर रही थीं, और मैं भी उनकी सेवा में लग गया। ब्राह्मणों की सेवा करते हुए, उनकी पूजा, प्रार्थना, स्तोत्र और भागवत के प्रति भक्ति को देखकर, तथा उनके साथ बैठकर उनके कार्यों में भाग लेकर, मेरे भीतर भगवान के प्रति भक्ति और ज्ञान का प्रकाश जागृत हुआ। मैं उनके साथ रहता था और दिन में केवल एक बार भोजन करता था, वह भी ब्राह्मणों की थालियों का उच्छिष्ट। सभी ब्राह्मण और संतजन मुझे बहुत प्रेम करते थे और आशीर्वाद देते थे। धीरे-धीरे उन्होंने मुझे भागवत का सार समझाया। उनके उपदेशों से मैं भगवान और भागवत के प्रेम में डूब गया। जब चातुर्मास्य के चार महीने पूरे हुए, तो ब्राह्मणों ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा, 'तुम्हारे हृदय में भगवान के प्रति शुद्ध भक्ति का प्रकाश जगे, तुम भगवान की शरण में जाओ, और उनकी कृपा सदा तुम पर बनी रहे।' उनके जाने के बाद कुछ दिन बीते। एक रात मेरी माता गाय दुहने बाहर गईं और उन्हें साँप ने काट लिया, और वे चल बसीं। मेरा और कोई नहीं था; मेरे पिता पहले ही गुज़र चुके थे, और मेरा कोई अन्य परिवार नहीं था। संतों के माध्यम से मेरे हृदय में भगवान को पाने की इच्छा पहले ही प्रबल हो चुकी थी, और सांसारिक आसक्तियाँ धीरे-धीरे मिट चुकी थीं। माता की मृत्यु के बाद मैंने वह स्थान छोड़ दिया और उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। रास्ते में मैं कई कुटियों और नगरों से गुज़रा, पर मेरा मन कहीं नहीं टिका। मैं चलता रहा और एक घने जंगल में प्रवेश कर गया, जहाँ बहुत से हिंसक पशु थे। पर मेरा मन भगवान की भक्ति में लगा था, इसलिए मैंने खतरों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर एक जलाशय के पास मुझे थकान महसूस हुई और मैं बैठ गया। थोड़ा जल पीकर और स्नान करके मेरी थकान दूर हो गई। मैंने ध्यान में बैठने का निश्चय किया, जैसा ब्राह्मणों और संतों ने मुझे सिखाया था कि एकांत, निर्जन स्थान में बैठकर भगवान की कृपा पाना सरल होता है। जब मुझे ऐसा स्थान और वातावरण मिला, तो मैं बैठ गया और भगवान के उस अनंत स्वरूप का ध्यान करने लगा जिसका वर्णन ब्राह्मण संतों ने किया था। धीरे-धीरे मैं भक्ति में और गहरे उतरता गया। इस अवस्था में कुछ समय बीतने के बाद मुझे भगवान के स्वरूप के दर्शन हुए। मैंने चतुर्भुज नारायण के दर्शन किए। वह इतना आनंदमय था कि मेरे मन की सारी सांसारिक कामनाएँ नष्ट हो गईं; मुझे सर्वत्र केवल भगवान ही दिखाई देने लगे। कुछ क्षणों बाद भगवान अंतर्धान हो गए। मुझे दुःख हुआ, पर मैंने हार नहीं मानी। मैं उसी स्थान पर बैठा रहा और भगवान की तपस्या और ध्यान करता रहा। जब मैं ध्यान कर रहा था, तब भगवान ने मेरा दुःख समझा और आकाशवाणी के रूप में मुझसे कहा, 'इस जन्म में तुम मुझे नहीं पाओगे। फिर भी, तुम्हारी भक्ति और संस्कारों के कारण मैंने तुम्हें यह क्षणिक दर्शन दिया। अगले युग में तुम मुझे प्राप्त करोगे।' उन्होंने कहा कि प्रलय के बाद भी मेरे मन में उनकी स्मृति बनी रहेगी, और मैं उनकी उपासना करता रहूँगा और उनकी शरण में रहूँगा। समय बीतता गया, और मैं दिव्य प्रेम में डूबा हुआ तपस्या करता रहा।

महाप्रलय के समय, जब ब्रह्मा जी सृष्टि रच रहे थे, तब मैं ब्रह्मा के श्वास (मन) से उनके पुत्र नारद के रूप में उत्पन्न हुआ। जैसा भगवान का आशीर्वाद था, मैं सदा भगवान के नाम-कीर्तन और दिव्य ज्ञान में लगा रहा। मुझे स्वर्ग, पृथ्वी या पाताल—कहीं भी बिना किसी रुकावट के जाने की शक्ति प्राप्त हुई। इस प्रकार मैं ब्रह्मा का मानसपुत्र बना।

► यह उत्तर सुनें · 21:10 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1042 हमारी परंपरा में हम दुर्गा माधव स्तुति गाते हैं। उसमें कहा गया है कि महामाया (महान माया/देवी दुर्गा) मदन मोहन (कृष्ण का एक नाम) के रूप में सर्वव्यापी हैं। यह कैसे संभव है? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।

उत्तर: वहाँ जो लिखा है वह दुर्गा और माधव दोनों का मिलन है। एक स्थान पर माता दुर्गा की रमा, उमा, वाणी, राधा जैसे नामों से स्तुति की गई है, और दूसरे स्थान पर दुर्गा और माधव दोनों की एक साथ वंदना की गई है। 'मदन मोहन के रूप में सर्वव्यापी' वाली पंक्ति माता दुर्गा के लिए नहीं है। यह माधव (कृष्ण) की स्तुति है। स्तुति में दोनों की वंदना है; एक भाग माधव का वर्णन करता है, जिन्हें आप मदन मोहन कह रहे हैं, और दूसरा भाग, 'दुर्गा रमा वाणी राधा', माता दुर्गा की स्तुति करता है। तो स्तुति में दोनों की ही वंदना है।

► यह उत्तर सुनें · 38:56 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1043 सत्य युग में भगवान नारायण का कौन-सा अवतार था?

उत्तर: सत्य युग में भगवान विष्णु का अवतार था। सत्य युग में भगवान ने धर्म की स्थापना के लिए चार मुख्य अवतार लिए: मत्स्य (मछली), कूर्म (कछुआ), वराह (शूकर), और नरसिंह (नर-सिंह), तथा वामन (बौना) रूप भी इसमें सम्मिलित है। ये रूप आवश्यकता पड़ने पर प्रकट हुए। जैसे, जब वेदों का उद्धार करना था, तब भगवान ने मत्स्य अवतार लेकर उन्हें बचाया और संसार में उनका प्रकाश फैलाया। कूर्म अवतार समुद्र मंथन के लिए था, जिससे देवता, यक्ष, गंधर्व, मनुष्य, औषधियाँ और ब्रह्मांड के लिए आवश्यक सभी तत्व उत्पन्न हुए। वराह अवतार में भगवान ने पृथ्वी को ब्रह्मांड में उसके उचित स्थान पर स्थापित किया। नरसिंह अवतार में भगवान ने अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की और दैत्य हिरण्यकशिपु का संहार किया। वामन अवतार में उन्होंने राजा बलि को वश में करके पाताल भेज दिया। तो अवतार हर युग में होते हैं। ये सत्य युग में भगवान के विशेष अवतार थे। पर सबसे ऊपर, भगवान विष्णु ही सत्य युग के प्रमुख देवता हैं। शास्त्र कहते हैं, 'कृते यद् ध्यायतो विष्णुम्', अर्थात् कृत युग (सत्य युग) में सभी भगवान विष्णु का ध्यान करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 40:02 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1044 जब 'मंडल' (समूह) के भक्त एकत्र होंगे, तो क्या आप विभिन्न मंडलों के भक्तों के बारे में कुछ प्रकाश डाल सकते हैं? उनके बारे में हमें थोड़ा बताइए।

उत्तर: उद्देश्य है पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना। भविष्य मालिका के अनुसार 16 मंडल बनेंगे। ये 16 प्रकार के भक्तों के रहने के स्थान होंगे। वहाँ से इन मंडलों के माध्यम से विचार, भक्ति और धर्म-प्रचार की धारा पूरे विश्व में फैलेगी। इन 16 मंडलों के नेतृत्व में धर्म का कार्य आगे बढ़ेगा। इनमें से 15 मंडल भारत में बनेंगे, और एक अफ्रीका के किसी देश में बनेगा, जिसे मालिका में 'अफ्रीका मंडल' कहा गया है। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, रूस, यूरोपीय देश और चीन जैसे अन्य देशों के भक्त भी इन 16 मंडलों से जुड़ेंगे। यह कार्य भगवान की इच्छा से और समय के साथ आगे बढ़ेगा। यह यथासमय पूर्ण होगा। उसके लिए अभी हमारे लिए सबसे बड़ा निर्देश है — प्रतीक्षा करना।

► यह उत्तर सुनें · 42:30 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1045 क्या आप मुझे धर्म संस्थापना के युग और कल्कि अवतार के बारे में और बता सकते हैं?

उत्तर: मालिका पर सभी एपिसोड सुनकर आप इस पर चिंतन कर सकते हैं। यदि आप श्रीमद्भागवत के बारे में कुछ जानना चाहते हैं, तो मुझसे बात करना बेहतर होगा। यदि आप धर्म संस्थापना के युग और अवतार के बारे में जानना चाहते हैं, तो आपको सभी एपिसोड देखने चाहिए। इसके अतिरिक्त, आप ऑनलाइन सत्संगों के दौरान मोहन नाम के एक अच्छे, संत स्वभाव के व्यक्ति से जुड़ सकते हैं। ऐसे लोगों से मिलकर आप समय के साथ धीरे-धीरे समझ जाएँगे। यह बताने की बात नहीं है; यह अनुभव की बात है। जब समय के साथ आप उस स्तर पर पहुँचेंगे, तब आप सब कुछ समझ जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:39 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1046 गुजरात के कार्यक्रम में, क्या भागवत का अर्थ सहित पाठ होगा, या संस्कृत वाला पाठ होगा?

उत्तर: इस सत्संग का उद्देश्य है कि सभी को अपने घरों में भागवत पढ़ना शुरू करने के लिए प्रेरित किया जाए। जो लोग सत्संग में आएँगे, उन्हें सत्य युग के सिद्धांत सिखाए जाएँगे — वे बातें जो मनुष्यों को करनी आवश्यक हैं। जो सिखाया गया है उसकी समीक्षा करेंगे और जो नया है उसका परिचय देंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात है भागवत के पाठ और मालिका के विचारों के माध्यम से मनुष्य के भीतर परिवर्तन। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण होगा ताकि जो लोग आकर सीखना चाहते हैं, उन्हें भी कुछ जानकारी मिल सके। जैसे जब हम किसी कार्यालय में काम करते हैं तो उसके मानकों का पालन करते हैं, वैसे ही सत्य युग में प्रवेश करने के लिए — क्योंकि अभी हम संधिकाल में हैं और कलियुग समाप्त हो चुका है — लोगों को यह जानना आवश्यक है कि उनसे क्या अपेक्षित है। भागवत का पाठ आवश्यक है, और सत्य, शांति, दया व क्षमा के सिद्धांत भी। मानव समाज में इन मूल्यों को धीरे-धीरे स्थापित करने के लिए गुजरात में पहला सत्संग हो रहा है। धीरे-धीरे, मानव समाज के कल्याण के लिए मालिका के सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित भारत के सभी स्थानों पर सत्संग होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:36 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1047 गुजरात में होने वाले भागवत कथा अमृत के संबंध में, जो लोग नए-नए सत्संग से जुड़े हैं और जिन्होंने अभी-अभी भागवत पुराण पढ़ना शुरू किया है, क्या वे सब उस समय साथ मिलकर पाठ करेंगे?

उत्तर: देखिए, लोगों को अपनी-अपनी भाषा में पढ़ना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो — हिंदी, मराठी, गुजराती, तेलुगु, अंग्रेज़ी। लोग अपनी-अपनी भाषा में पढ़ेंगे। व्यवस्था केवल आधे घंटे के पाठ की है, लंबे समय की नहीं। उस आधे घंटे में जो जितना पढ़ सके, पढ़ सकता है। जैसे-जैसे लोग संध्या के अभ्यास से जुड़ेंगे, वे इस धारा में आ जाएँगे, और उन्हें देखकर दूसरे लोग भी जुड़ेंगे। हम इस पर ज़ोर इसलिए दे रहे हैं क्योंकि आगे बड़ी बीमारियाँ आ रही हैं, महायुद्ध आ रहा है, और विनाश आ रहा है। मानव समाज कैसे बचेगा? दवा काम नहीं करेगी। कोई तंत्र, मंत्र, औषधि या आधुनिकता काम नहीं आएगी। जो काम आएगा वह वही है जो हम आपको बता रहे हैं। जो लोग इस धारा में बने रहेंगे, उन्हें कोई समस्या या कष्ट नहीं होगा। पर ऐसा नहीं है कि आज आप धारा में आ जाएँ और कल शिकायत करें कि कुछ नहीं हुआ। जो लोग समय आने से पहले इस धारा में जुड़ते हैं, यह उनकी इच्छा है। पर जो बाद में आएँगे, मान लीजिए दो साल बाद, यह सोचकर कि जब होगा तब देखेंगे, उन्हें कोई लाभ नहीं मिलेगा। जो निरंतर इस मार्ग पर चलते हैं, उन्हें आने वाले समय का सामना करने में कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 48:05 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1048 कल्कि अवतार और कलियुग के अंत के बारे में किसने लिखा है?

उत्तर: कल्कि अवतार और कलियुग के अंत के बारे में महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है। इसके अतिरिक्त, भगवान व्यास ने भी श्रीमद्भागवत में तथा महाभारत के आदि पर्व और वन पर्व में इसके बारे में लिखा है। शास्त्र कहते हैं कि भगवान का अवतार 'द्विज' या ब्राह्मण के घर में होता है। जब भगवान विष्णु अवतार लेते हैं, तो प्रायः शुक्रवार को आते हैं। भगवान ने क्षत्रिय, ब्राह्मण और शूद्र कुलों में भी जन्म लिया है, और कभी-कभी पशु योनि में भी, जैसे कूर्म (कछुआ) अवतार।

► यह उत्तर सुनें · 54:27 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1049 अहमदाबाद में, क्या दो लोग एक ही भागवत से पाठ कर सकते हैं, या हर एक के पास अलग प्रति होना आवश्यक है?

उत्तर: यदि एक व्यक्ति पाठ कर रहा हो और उसमें दूसरी आवाज़ मिल जाए, तो पाठ ठीक से नहीं हो पाता, और शास्त्र का उच्चारण गलत हो सकता है। इसलिए हर व्यक्ति के लिए अलग पुस्तक आवश्यक है। जिनके पास पुस्तक नहीं है, उनके लिए हम व्यवस्था करेंगे कि हर एक को एक पुस्तक मिल जाए, ताकि सब साथ बैठकर पाठ कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 56:02 · 27 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1050 दशावतार (दस अवतारों) में भगवान कृष्ण का उल्लेख क्यों नहीं है?

उत्तर: भगवान कृष्ण वह स्रोत हैं जिनसे संपूर्ण संसार के सभी अवतार प्रकट हुए हैं; वे सब उनके अंश हैं। जो भगवान कृष्ण हैं, वही भगवान जगन्नाथ हैं। इसीलिए दशावतार में बलराम को सम्मिलित किया गया है। भगवान कृष्ण स्वयं सृष्टिकर्ता हैं; सब कुछ उनके अंशों से रचा गया है। इसलिए भगवान कृष्ण को सबके मूल, महाविष्णु का अवतार माना जाता है। वे स्वयं ही उद्गम हैं।

► यह उत्तर सुनें · 57:13 · 27 अक्टूबर 2022

सत्र 55 · प्रश्न 1051–1068

L53 Bhagawat Mahatmya Part -6 " भगवान व्यास-नारद संवाद, भागवत रचना का कारण" #live #malika

दिनांक: 30 अक्टूबर 2022 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1051 हम हर 11 दिन में श्रीमद् भागवत का एक अध्याय पढ़ रहे हैं। क्या हम इसके साथ-साथ 'गोप लीला' भी पढ़ सकते हैं, पिताजी?

उत्तर: पूरा ग्रंथ पढ़िए। इसे 10-12 बार पढ़ने से भगवान, शास्त्र और भागवत के प्रति भक्ति को लेकर मन में जो संशय उठते हैं, वे दूर हो जाएँगे। यह कठिन है, पर सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति का आंतरिक आध्यात्मिक सार पूरी तरह शुद्ध हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 11:03 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1052 श्रीमद् भागवत में कहा गया है कि भगवान श्रीराम के चरण इतने अत्यंत कोमल थे कि वे माता जानकी के हाथों का स्पर्श भी सहन नहीं कर पाते थे। फिर अपनी पादुकाएँ भाई भरत को देने के बाद उन्होंने 14 वर्ष तक वन में नंगे पाँव कैसे चले? कृपया समझाइए।

उत्तर: वह भगवान की इच्छा थी। वे वनवासी का जीवन जी रहे थे और उस जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार आचरण करते थे। पादुका पहनना या न पहनना उनका निर्णय था। संभवतः वन में तपस्वी जीवन की आचार-संहिता के अनुसार 'पादुका' पहनना उचित नहीं था, इसीलिए उन्होंने नहीं पहनी। अंततः यह भगवान की इच्छा है और हमारे प्रश्नों और विचारों से परे है। सबसे संभावित कारण यही है कि वे जो तपस्वी, वनवासी जीवन जी रहे थे, उसके नियमों के अनुकूल यह नहीं था।

► यह उत्तर सुनें · 12:01 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1053 श्रीमद् भागवत में कहीं कहा गया है कि केवल वही लोग इसे पढ़ने के अधिकारी हैं जिन्होंने किसी वैष्णव भक्त से दीक्षा ली हो। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए?

उत्तर: हमारे देश में सनातन धर्म के सभी अनुयायी भगवान की शरण में हैं। हर कोई भगवान का कोई न कोई नाम लेता है, तो सब एक ही बात है। इसलिए सभी को इसे पढ़ने का अधिकार है। इस विषय में कोई द्वंद्व या संशय मत रखिए। भागवत पढ़िए, और आनंदपूर्वक उसका श्रवण और कीर्तन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 14:53 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1054 अभी हम जो त्योहार मनाते हैं, क्या उस समय, नए युग (सत्य युग) में, हम उन्हें मना पाएँगे या नहीं?

उत्तर: भगवान के अवतारों के जन्मदिन और भगवान के दिव्य कार्यों व 'लीलाओं' की स्मृति के दिन सनातन धर्म द्वारा मनाए जाएँगे। सभी भगवान विष्णु के भक्त बन जाएँगे। इसलिए भगवान के जन्म और उनके सभी अवतारों से जुड़े दिन मनाए जाएँगे। किंतु अन्य त्योहार, जिन्हें लोग आधुनिक मनोरंजन और खुशी के कारणों से मनाते हैं, उनका कोई प्रभाव नहीं रहेगा। लोग उन्हें भूल जाएँगे; वे त्योहार नहीं चलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:08 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1055 ऐसा उल्लेख है कि बलराम जी ने सूत गोस्वामी का वध तब किया जब वे भागवत सुना रहे थे। उसके बाद भागवत की कथा कैसे आगे चली?

उत्तर: उनके पुत्र को आशीर्वाद मिला, और उसके बाद उन्हीं के माध्यम से भागवत की कथा आगे चली।

► यह उत्तर सुनें · 22:12 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1056 जो लोग Kali Yuga से Satya Yuga में जाएँगे, क्या उन्हें Kali Yuga के अपने जीवन की स्मृतियाँ याद रहेंगी?

उत्तर: नहीं, जो लोग Kali Yuga से Satya Yuga में जाएँगे, उन्हें Kali Yuga का ज्ञान या स्मृति नहीं रहेगी। उस समय सभी निष्काम भक्त बन जाएँगे। उनके मन में केवल भगवान और भगवद्-भक्ति की धारा ही रहेगी। मनुष्य का मन अभी जिन अनेक समस्याओं और स्मृतियों से गुजरता है, वे समाप्त हो जाएँगी। कुछ लोगों को अपने पूर्व कर्मों की कुछ स्मृति रह सकती है, पर सभी के लिए ऐसा नहीं होगा। भगवान की 'माया' प्रकट होगी, और 'योगमाया' के द्वारा Kali Yuga के प्रभाव, लक्षण और कर्म मनुष्य के मन से मिटा दिए जाएँगे। तब मानवता एक पवित्र बंधन में रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 23:18 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1057 तो, जो लोग Satya Yuga में जाएँगे, क्या वे अपने वर्तमान संबंध और रिश्तेदार भी भूल जाएँगे?

उत्तर: देखिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है: जो Satya Yuga में रहेंगे, उनके नए विवाह होंगे। सभी Satya Yuga के जीव बन जाएँगे और उन्हें दिव्य शरीर प्राप्त होगा। उनके लिए एक नया संसार रचा जाएगा। रिश्तेदारों और परिवार की बात करें तो, ऐसे किसी संबंध का विचार उनके मन में नहीं रहेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात, उन सभी को नया यौवन प्राप्त होगा और वे एक जैसे दिखेंगे। उस अवस्था में परिवार या कुटुम्ब की कोई अवधारणा नहीं होती; सभी भक्त होंगे। फिर भक्तों के बीच नए विवाह और नए परिवार बनेंगे, और एक नया Satya Yuga आरंभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:52 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1058 युग के अंत में होने वाले महाप्रलय के दौरान सूर्य और चंद्रमा का क्या होगा?

उत्तर: उस काल में चंद्रमा और सूर्य नहीं उगेंगे। भगवान जगत के कल्याण के लिए नए चंद्रदेव और नए सूर्यदेव की नियुक्ति करेंगे। सात दिन और सात रात तक समस्त संसार में अंधकार रहेगा। इस दौरान युद्ध भी होगा, और संपूर्ण विश्व में प्रकृति के पंचतत्वों का विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:51 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1059 क्या आप बता सकते हैं कि यह कब होगा, इसकी कोई तिथि?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार यह भगवान के अधीन है। हमारे लिए कोई विशिष्ट आँकड़ा या तिथि बताना उचित नहीं है। भगवान ही संपूर्ण ब्रह्मांड के रचयिता हैं। पर यह होना नियत है, और यह अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:45 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1060 मेरा प्रश्न यह है कि Satya Yuga से पहले जो प्रलय होगा, उसमें आने वाली घटनाओं का संकेत या आभास हमें कैसे मिलेगा?

उत्तर: Kali Yuga के अंत का विनाश आंशिक आपदा के रूप में होगा, जो संसार भर में चरणों में घटित होगा—बाढ़ आएगी, भूकंप होंगे, आग लगेगी, युद्ध होंगे, महामारियाँ फैलेंगी, सांप्रदायिक हिंसा होगी, इत्यादि। यह एक ही साथ होने वाली एकमात्र घटना नहीं होगी। जो लोग Bhavishya Malika का अनुसरण करते हैं, उन्हें इसका पता रहेगा, जैसा कि हमने अपने एपिसोड्स में समझाया है। अपनी अनुभूति की शक्ति से या भगवान की सूक्ष्म उपस्थिति की कृपा से उन्हें आने वाली घटनाओं की जानकारी मिलेगी। इसी आधार पर वे भक्तिपूर्वक भगवान का नाम जपते रहेंगे। भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे, जबकि साधारण लोग समझ नहीं पाएँगे। आपदा चलती रहेगी, पर भक्त दैवी कृपा से बच जाएँगे। वे समझ जाएँगे कि मानव समाज के शुद्धिकरण का समय आ गया है, जहाँ अच्छे लोग रहेंगे और दुष्ट लोग हटा दिए जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:33 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1061 ध्यान करते समय मुझे एक आध्यात्मिक अनुभव हुआ... क्या सत्य युग में मंदिर और चार धाम जैसे प्रमुख तीर्थ स्थल बने रहेंगे?

उत्तर: सभी मंदिर और सभी चार धाम सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग — सभी युगों में बने रहेंगे। हालाँकि, कुछ मंदिरों का पुनर्निर्माण होगा। सभी तीर्थ स्थल भी बने रहेंगे, क्योंकि वे पिछले युगों में भी थे और कलियुग में भी हैं। तीर्थ स्थल और भगवान के धाम बने रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:57 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1062 पिछले युगों में राम और कृष्ण जैसे अवतारों की पूजा होती थी, परंतु शास्त्रों में यह भी वर्णित है कि असुर भगवान शिव की पूजा करते थे। आने वाले सत्य युग में क्या सभी लोग केवल भगवान विष्णु की ही पूजा करेंगे?

उत्तर: त्रेता युग में भगवान राम थे और द्वापर में भगवान कृष्ण। परंतु हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि अन्य लोग, जैसे असुर, वरदान पाने और देवताओं से युद्ध करने के लिए तपस्या द्वारा भगवान शंकर या ब्रह्मदेव की आराधना करते थे। तो जब सत्य युग आएगा, तब सभी लोग भगवान विष्णु के शरणागत होंगे। भक्तों की भक्ति और भावनाएँ युग के अनुसार प्रकट होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 35:11 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1063 हम गुजरात आ रहे हैं। हमने सुना है कि आप वहाँ भागवत महापुराण का आयोजन कर रहे हैं और हम उसमें सम्मिलित होना चाहते हैं। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: हमारे लोग आपकी सहायता करेंगे। कृपया ऐसा करें: हमारे यूट्यूब चैनल पर और जो कार्यक्रम की जानकारी साझा की जाती है, उसमें गुजरात के अनेक लोगों के संपर्क नंबर दिए गए हैं। कृपया उन नंबरों पर संपर्क करें और पहले से सूचित कर दें कि आप आ रहे हैं। आपको जिस भी चीज़ की आवश्यकता होगी, वे उसमें आपकी सहायता करेंगे। इस प्रकार आपको आनंदमय अनुभव होगा, और भगवान की कृपा आपके साथ रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:13 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1064 श्रीमद्भागवत दो खंडों में आती है। क्या हमें कार्यक्रम में दोनों खंड लाने चाहिए, या केवल एक लाना पर्याप्त होगा?

उत्तर: बहुत अधिक पाठ करना संभव नहीं होगा, क्योंकि सत्संग प्रातः से सायं तक चलेगा। हम सात अध्यायों तक पाठ करेंगे। परंतु दोनों पुस्तकें लाना आवश्यक है। भागवत के आधे भाग की ही पूजा और पाठ करना उचित नहीं है। कृपया पूर्ण ग्रंथ, दोनों खंड लेकर आएँ। यदि आपके पास एक ही पूर्ण खंड है, जैसे गीता प्रेस गोरखपुर वाला, तो वह भी ठीक है। परंतु सबसे उत्तम यह है कि पूरा ग्रंथ लेकर आएँ।

► यह उत्तर सुनें · 38:45 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1065 जब मैं यह ज्ञान बाँटने का प्रयास करता हूँ, तो लोग सुनते नहीं। बात यहाँ तक पहुँच गई है कि संबंध टूट रहे हैं; लोग बात करना बंद कर देते हैं और संदेशों का उत्तर नहीं देते। ऐसे लोगों को हम कैसे समझाएँ कि वे इस आध्यात्मिक मार्ग और आने वाली भागवत कथा से जुड़ें?

उत्तर: सुनिए, केवल वही समझेंगे जिनका बदलना नियत है — शुद्ध भक्त, संत और वे दिव्य आत्माएँ जिन्होंने पृथ्वी पर जन्म लिया है। यह मार्ग सबके लिए नहीं है। मैं सदा कहता हूँ, इसे केवल उन्हीं से साझा करें जिन्हें इसकी आवश्यकता अनुभव होती है। जिन्हें रुचि नहीं है, उनसे बात न करें। 90% लोग कलियुग के आधुनिक तरीकों में डूबे हुए हैं। जिन्हें रुचि नहीं है, उनसे आध्यात्मिक विषयों पर कभी बात न करें। केवल उन्हीं से साझा करें जो भगवान के लिए भूखे-प्यासे हैं और जो सुनना चाहते हैं। मालिका भी कहती है कि जो तर्क-वितर्क करते हैं, आधुनिकता में डूबे हैं, या पापी और स्वार्थी हैं, उन्हें शास्त्र न समझाएँ। समय के साथ भगवान स्वयं चुन-चुनकर सही लोगों को ले आएँगे। हमारा कर्तव्य है अच्छे लोगों से बात करना, इसलिए जो ग्रहण करने को तैयार नहीं हैं, उनसे ज़बरदस्ती बात न करें।

► यह उत्तर सुनें · 41:24 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1066 हमारा देश मुहम्मद बिन कासिम के समय से लेकर सदियों से विदेशी आक्रमणों और छल-कपट से पीड़ित रहा है। क्या यह सब ठीक होगा?

उत्तर: आप अच्छी बात कहते हैं, परंतु देखिए, हमारे ही देश के भीतर ऐसे लोग हैं जो भगवान के प्रति समर्पित नहीं हैं; कुछ तो भगवान राम की पूजा भी नहीं करते। जो सनातनी मार्ग और मालिका का अनुसरण करते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी; भगवान उनकी रक्षा करेंगे। परंतु जो पाप करते हैं, उनके विचार पापमय हैं, और संघर्ष पापियों के बीच ही होगा। और अन्य देशों की बात करें, तो उन्हें भी विनाश का सामना करना पड़ेगा। पाँच प्राकृतिक तत्वों से भारी उलट-पुलट होगी, और वे स्वयं सुरक्षित नहीं रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:53 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1067 आपने कहा था कि सत्य युग के लिए 33 से 64 करोड़ लोग बचाए जाएँगे। जैसे-जैसे भक्त मालिका का संदेश फैला रहे हैं, यदि अनुयायियों की संख्या इस आँकड़े से अधिक हो जाए तो क्या होगा? क्या फिर भी उतने ही बचेंगे, या संख्या अधिक हो सकती है?

उत्तर: पिछले एपिसोड में मैंने स्पष्ट किया था कि 33 करोड़ भारत में रहेंगे, और अन्य शेष विश्व से एकत्र किए जाएँगे। हमारे शास्त्रों के अनुसार 33 करोड़ देवी-देवता हैं। भारत में जो 33 करोड़ बचेंगे, वे ये ही दिव्य सत्ताएँ हैं जिन्होंने मनुष्य शरीर में जन्म लिया है। शेष विश्व में जो बचेंगे, वे उनके सेवक होंगे। देवताओं की संख्या 33 करोड़ निश्चित है, और यह इससे अधिक नहीं होगी। भारत एक बार फिर 'देवभूमि' बनेगा, 33 करोड़ देवताओं की भूमि। केवल वही लोग इस दिव्य स्थिति को प्राप्त करेंगे और शेष रहेंगे, जो हमारे द्वारा प्रचारित सनातनी और वैदिक मार्ग का अनुसरण करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:39 · 30 अक्टूबर 2022

प्रश्न 1068 प्रभु जी, क्या हमें भगवान के दर्शन हो पाएँगे?

उत्तर: हाँ। मालिका में लिखा है कि जब दूसरी बार राम राज्य स्थापित होगा, तब चारों युगों के भक्त मिलेंगे। भगवान के सभी भक्त उनके शासन में रहेंगे और उस समय उनके दर्शन करेंगे। मालिका में 'कल्कि राम' की बात कही गई है। उस समय सभी भक्तों को भगवान कल्कि के धाम के दर्शन होंगे। परंतु धर्म की पूर्ण स्थापना से पहले, संभवतः केवल 12 लाख लोग — या उससे भी कम — भगवान के दर्शन कर पाएँगे। परंतु जब भगवान समस्त विश्व पर शासन करेंगे, तब सबको उनके दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:19 · 30 अक्टूबर 2022

सत्र 56 · प्रश्न 1069–1083

L54 - जोशीमठ, बद्रीधाम और उत्तराखंड के बारे में भविष्य मालिका में क्या वर्णन है?

दिनांक: 19 जनवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1069 पंडित जी, मैं हमारे जोशीमठ में हो रहे विनाश के बारे में पूछना चाहता था, जहाँ अनेक मंदिर भी नष्ट हो रहे हैं। इसका अर्थ क्या है?

उत्तर: आज भारत में जो कुछ हो रहा है... उस पर चर्चा करने से हमें बहुत लाभ नहीं होगा, परंतु इतना कहूँगा: देखिए, धर्म का प्रकाश धीरे-धीरे फैल रहा है। एक समय आ रहा है जब केवल धर्म ही शेष रहेगा। कलियुग के मंदिर और मठ नष्ट होंगे। आप सबको इस दिशा में कार्य करना चाहिए: कौन सा धर्म, कौन सा मार्ग, किस नाम से हम मानव समाज को बचा सकते हैं? भारत में धर्म का प्रभाव बढ़ रहा है, और यह समस्त विश्व में बढ़ेगा। सारा विश्व धीरे-धीरे, क्रमशः सनातन धर्म की ओर आएगा। उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसलिए, ऐसे समय में धर्म के कार्य में लगे रहिए। हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम मालिका को समस्त विश्व में साकार करें। यह कार्य कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 05:51 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1070 तो हमें क्या करना चाहिए? धर्म के उत्थान के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न। धर्म की स्थापना तो पहले ही आरंभ हो चुकी है। आने वाले समय में एक बड़ा भूकंप होने वाला है। और केवल इतना ही नहीं, भारत का सारा नक्शा बदल जाएगा। आज आपके मन में यह विचार क्यों उठ रहा है: धर्म बचेगा, या अधर्म उस पर हावी हो जाएगा? अधर्म कभी नहीं जीतेगा। परंतु अब समय है मालिका के प्रचार का। आप सब मालिका को समस्त विश्व में फैलाएँ और उत्तराखंड के भक्तों को इसके प्रति जागरूक करें। भगवान आ रहे हैं। मालिका इसी कारण लिखी गई थी। और उत्तराखंड की वर्तमान स्थिति समस्त भारत के लिए एक चेतावनी है। केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि समस्त ब्रह्मांड के लिए। क्योंकि यह चेतावनी सारे विश्व में प्रलय लाएगी। एक ओर प्रकृति और पंचतत्वों में परिवर्तन होगा, और उसके साथ ही एक बड़ा भूकंप होने वाला है। धरती माता नीचे से संकेत दे रही हैं, कह रही हैं, 'अब मुझमें पृथ्वी को धारण करने की शक्ति नहीं है।' इसीलिए संकेत पहले चार धामों (तीर्थ स्थलों) से आया। आने वाले समय में महाविनाश का संकेत रामेश्वरम से आएगा। पहले लोगों को मालिका के बारे में बताइए। अधर्म के अनुयायी न कभी यहाँ थे, न रहेंगे। सनातन धर्म समस्त विश्व में प्रबल होगा। हम कानून में संशोधन करेंगे ताकि जहाँ भी हिंदू धर्म की परंपरा, संस्कृति या तीर्थ स्थल हो, वहाँ हिंदुओं के अतिरिक्त किसी और को स्थान न दिया जाए। यदि यह होना है, तो भगवान ही करेंगे, और हम भगवान के शरणागत होकर कार्य करते हैं। और 5-7 वर्ष प्रतीक्षा कीजिए और देखिए क्या होता है।

► यह उत्तर सुनें · 10:41 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1071 मैं एक वीडियो देख रहा था जिसमें वे भविष्यवाणियाँ कर रहे थे, लेकिन साथ ही यह भी कह रहे थे कि सिर्फ़ भविष्यवाणियाँ होने का मतलब यह नहीं कि अंत आ गया है, क्योंकि कलियुग के अभी केवल 5000 वर्ष ही पूरे हुए हैं। तो लोग इस बात से अनजान हैं कि विनाश का दौर शुरू हो चुका है। इस विषय में उनकी सहायता कैसे की जा सकती है, और क्या किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए माताजी, मैं सन् 2000 से यह कहता आ रहा हूँ। धर्म के समय में कलियुग समाप्त हो चुका है, और धर्म संस्थापना (धर्म की स्थापना) होगी। और उस समय वही पाखंडी कहेंगे, 'यह तो हमने भी कहा था।' वे पाखंडी नष्ट हो जाएँगे। वे धर्म को नहीं समझते, और मानव समाज को यह नहीं बताते कि कलियुग समाप्त हो चुका है। उन्हें धर्म संस्थापना या शास्त्रों का कोई ज्ञान नहीं है। यदि ज्ञान होता तो वे अवश्य कुछ कहते। पर समय आएगा। दो वर्ष प्रतीक्षा कीजिए। वही लोग तब अपने मुँह से कहेंगे, 'हाँ, यह आ रहा है।' और उस समय भगवान भी उन्हें बचने के लिए जगह नहीं देंगे। अब बदलने का समय है। यह मेरा वचन नहीं है; यह भगवान ने कहा है। मैं किसी को डरा नहीं रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ, 'धर्म में आइए।' मैं कहता हूँ, 'मालिका का अनुसरण कीजिए।' मैं कहता हूँ, 'त्रिसंध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और मानव समाज बच जाएगा।' वे लोगों को बर्बाद कर रहे हैं। जब समस्या आएगी, तब लोग कहेंगे... मैं आज कह रहा हूँ और चट्टान की तरह खड़ा हूँ। विनाश का समय आ रहा है। और विनाश इतना भीषण होगा कि जब विनाश का अंतिम क्षण आएगा, तब लोग सचेत होकर कहेंगे, 'आप सत्य कह रहे थे।' पर उस समय उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा। हमारी मालिका का मार्ग—त्रिसंध्या करना, भागवत पढ़ना, दान देना, और भगवान का नाम जपना—इसके लिए कम से कम पाँच से सात वर्ष की साधना चाहिए। अन्यथा मनुष्य सत्ययुग के योग्य नहीं बन पाएगा। और जो 4,32,000 वर्ष कहते हैं... स्वयं गर्ग ऋषि ने अपने ग्रंथ गर्ग संहिता में लिखा है कि यह 4800 वर्ष होंगे। जो ऐसा कहते हैं, उन्हें बताइए। यदि उन्होंने पढ़ा ही नहीं, तो वे स्वयं को संत क्यों कहते हैं? हम मानवता के उद्धार का मार्ग दिखा रहे हैं। हमारा और कोई उद्देश्य नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:03 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1072 पिताजी, कृपया बम्बई के विषय में कुछ बताइए। मुंबई में क्या होगा, कब होगा, और सबसे पहले क्या होगा?

उत्तर: मुंबई पर एक महाविपत्ति आने वाली है। और 5 अप्रैल के बाद... युद्ध के प्रभाव से क्या होगा, यह मैं कहना नहीं चाहता, पर इतना समझ लीजिए: संसार में मनुष्यों की जनसंख्या ऐसी हो जाएगी कि एक गाँव में केवल तीन-चार लोग ही बचेंगे। ऐसी स्थिति होने वाली है। केवल वही लोग सत्ययुग के मनुष्य बनेंगे जिनके पास धर्म है, जिनके पास मालिका के वचन हैं। और वह समय आएगा जब इंटरनेट बंद हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:09 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1073 एक बार हमारे गाँव में एक संत आए थे और उन्होंने कहा कि वे गुजरात से हैं, और उन्होंने एक भविष्यवाणी की। क्या दूसरे संतों की ऐसी भविष्यवाणियाँ सच होती हैं?

उत्तर: देखिए, मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। यदि कोई ऐसी बात कह रहा है, तो वह उसका अपना कथन होगा; मालिका में ऐसा कुछ नहीं है। और दूसरी बात यह है कि मालिका में लिखा है कि बड़े-बड़े 'ज्ञानी' लोग आएँगे और कहेंगे, 'मुझे स्वप्न आया था,' या 'मुझे दैवीय आदेश मिला है।' वे कहेंगे, 'यहाँ भगवान प्रकट हुए हैं,' 'यहाँ देवी प्रकट हुई हैं,' 'इस मंदिर में आइए,' 'यहाँ आश्रम बनाइए।' ऐसे अनेक लोग आएँगे और संसार को भ्रमित करेंगे। इसके बारे में मालिका में और हर शास्त्र में लिखा है। इसका कोई प्रमाण या सत्यता नहीं है। देखिए, भटकिए मत। प्रतिदिन त्रिसंध्या कीजिए। भागवत पढ़िए। और माधव का नाम जपिए। यही हमारे लिए सबसे बड़ा रक्षा कवच है। बहुत लोग यहाँ-वहाँ ऐसी बातें कहेंगे। इसका कोई अर्थ नहीं है, और मालिका ने इस बारे में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 25:17 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1074 वे अपवित्र लोगों का समर्थन कर रहे हैं... उत्तराखंड में भाजपा की सरकार है, और मोदी उनके भक्त बन गए हैं... हमें कहा जा रहा है कि उनसे मित्रता करो। वे हमें नष्ट करना चाहते हैं। इस विषय में हम क्या करें?

उत्तर: देखिए, चिंता मत कीजिए भाई। केवल चाहने से हम कुछ नहीं कर सकते। पर जो करने वाला है, उसने कर देना शुरू कर दिया है। 7 वर्ष शेष हैं। इन 7 वर्षों में सब कुछ बदल जाएगा। इसलिए चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बस समय की प्रतीक्षा कीजिए और देखिए क्या होता है। न गाँव बचेगा, न शहर। केवल सनातन और उसके भक्त ही बचेंगे। और कोई कुछ नहीं कर पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:13 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1075 जिनके पास संपत्ति, प्रचुर धन और वैभव है, क्या वे स्वयं को बचा पाएँगे?

उत्तर: धनवान, सम्मानित, ज्ञानी... एक समय ऐसा आएगा जब लोग धन की ओर देखेंगे तक नहीं। उसका कोई अर्थ नहीं रहेगा। लोग अन्न के लिए घर-घर भटकेंगे। इसलिए जिसके पास धर्म है, वही सुरक्षित रहेगा। मैं आपको बार-बार कह रहा हूँ। आने वाले समय में धर्म ही सबसे बड़ी शक्ति होगी, धन नहीं। और एक समय ऐसा आएगा जब दवा काम नहीं करेगी। यदि दवा काम नहीं करेगी, तो आप क्या करेंगे? आप नाम जपेंगे। कौन-सा नाम? वही नाम जिसके बारे में हम आपको बता रहे हैं। भगवान ने इस कार्य के लिए कुछ लोगों को चुना है। शायद भगवान ने मुझ पर थोड़ी कृपा की है, और मैं उसे आप तक बाँट रहा हूँ। 600 वर्ष बीत गए; मुझसे पहले कितने लोग आए? तो यह भगवान की कृपा है। युग के अंत के साथ धर्म का प्रचार आरंभ हो गया है, और यह बढ़ रहा है। वह समय आएगा जब 64 करोड़ भक्त एकत्र होंगे। अन्यथा कोई भी जीवित नहीं रह पाएगा। मैं यह कार्य अकेला कर रहा हूँ। आपको भी मेरे साथ जुड़कर मालिका का प्रचार करना चाहिए। क्योंकि जिन लोगों को भगवान ने शक्ति, सामर्थ्य और धन दिया है, वे कहते हैं कि कलियुग समाप्त नहीं हुआ है। पर हमारे भक्त क्या करेंगे? इसलिए हम सब मिलकर काम करेंगे। अमेरिका में आधे घंटे में तापमान -62 डिग्री तक गिर गया। यदि -70 हो जाता, तो सब मर जाते। और ऐसा समय भी आएगा। मालिका में लिखा है कि 12-18 फीट तक बर्फ गिरेगी, और बहुत लोग नष्ट हो जाएँगे। जहाँ-जहाँ भक्त होंगे, वहाँ गर्माहट रहेगी। भगवान अपनी योगमाया शक्ति से भक्तों के लिए सब कुछ स्थिर कर देंगे। एक ओर पापियों का विनाश होगा, और दूसरी ओर भक्तों की रक्षा होगी। इसलिए समय को समझिए और आगे बढ़िए। धर्म ही रहेगा, और धर्म के अतिरिक्त कुछ नहीं रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:40 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1076 यहाँ की स्थिति कैसी रहेगी?

उत्तर: भागवत कथा का अर्थ क्या है? सच्ची भागवत कथा का अर्थ है कि सात दिनों तक निरंतर भागवत पढ़ा जाए। लोग अपनी दिनचर्या छोड़कर हर समय बैठकर सुनें। आजकल भागवत कथा भजन और गानों के साथ होती है, और पूरी कथा नहीं सुनाई जाती। सत्ययुग में जो भागवत कथा होगी, वह पूर्ण होगी। ऐसी कथा आज नहीं होती। कलियुग में लोगों के पास अपने उद्धार के लिए इतना समय नहीं है। इसीलिए यह आवश्यक है कि आप त्रिसंध्या करें, घर पर स्वयं भागवत का एक अध्याय पढ़ें, और भगवान का नाम जपें। आपके लिए अब यही सर्वोत्तम है कि आप उस सत्ययुग के निर्माण की दिशा में कार्य करें। और केवल धर्म में आ जाना ही पर्याप्त नहीं है। जब भगवान की मालिका का प्रचार हो रहा है, तब कुछ लोग इसे स्वीकार नहीं करते। वे कुछ समय के लिए भक्त हो सकते हैं, पर वे चारों युगों तक भगवान के भक्त बनकर रहना नहीं चाहेंगे। मैं केवल इतना ही कहूँगा: यदि कोई संत है, भक्त है, साधक है, तो उसके लिए मालिका का अनुसरण करना अच्छा होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:48 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1077 मैं जमशेदपुर से हूँ। यहाँ एक भागवत कथा हुई थी, और कहा गया था कि जो भी धन एकत्र होगा वह गौ सेवा और गौशाला बनाने के लिए है। ऐसी स्थितियों में, जहाँ हमें पक्का पता नहीं कि धन का उपयोग कैसे होता है, क्या दान देना उचित है?

उत्तर: वे जो करते हैं, वह उनकी जिम्मेदारी है। उन्हें देने में कोई हानि नहीं है। दान देना हमारे लिए सबसे बड़ा धर्म है। आपको दान देना चाहिए। यदि वे उसका गलत उपयोग करते हैं, तो उसका पाप उन्हीं पर होगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:00 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1078 जैसे भगवान ने अपना स्थान छोड़ा... उसी प्रकार क्या दक्षिण के बालाजी मंदिर के देवता भी शरीर रूप में वह स्थान छोड़ेंगे?

उत्तर: वे द्वारिकानाथ हैं; उनमें कोई भेद नहीं है। तो इसका अर्थ समझिए: पवित्र स्थान, तीर्थ स्थल बना रहेगा। पर जब भगवान के अवतार का समय होता है, ऐसे समय में भगवान ने हमें पहले ही बता दिया है कि क्या करना है। यह मत सोचिए कि बालाजी एक भगवान हैं और जगन्नाथ दूसरे भगवान हैं। वे अलग नहीं हैं। देखिए, यह धर्म संस्थापना का समय है, जिसका अर्थ है पापियों का विनाश और धर्म का उत्थान। ऐसे समय में आपके बचने का, अपना जीवन और अपने परिवार को बचाने का मार्ग... यदि आप पर भगवान की कृपा है, तो मालिका का अनुसरण कीजिए। जो मैं कहता हूँ वह कीजिए। दान दीजिए। जैसे वह माताजी कह रही थीं कि उन्होंने ₹100 दान किए, यह बहुत अच्छा है। यदि कोई दान लेकर उसका गलत उपयोग करता है, तो पाप उसका है, हम पर नहीं आता। तो देखिए, भगवान सर्वत्र हैं। और जब भगवान अवतार लेते हैं, तब वे सभी स्थान छोड़ देते हैं, पर पवित्र स्थल बना रहता है।

► यह उत्तर सुनें · 40:41 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1079 मेरा प्रश्न यह है कि हमें धर्म—सत्य, प्रेम, शांति—को अपने जीवन में उतारना है, पर शरीर से तो हम अपने कर्मों पर नियंत्रण कर लेते हैं, मन जो चाहे वही करता है। यदि मन इस धर्म को स्वीकार न करे, तो हम क्या करें?

उत्तर: कुछ दिन भागवत पढ़ने के बाद स्थिरता आएगी। और जब समय ठीक होगा, तो मन धीरे-धीरे धर्म की ओर बढ़ेगा। जब तक हम इसे नहीं पढ़ेंगे, हमारा मन चंचल ही रहेगा, और हम धर्म के कार्य नहीं कर पाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:21 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1080 कर्नाटक में 16 मंडलों (भक्तों के समूहों) की क्या स्थिति है?

उत्तर: यह प्रारंभिक अवस्था में है। 16 मंडलों के सभी सदस्यों को एकत्र करना आवश्यक है। इसीलिए हम मालिका का प्रचार अनेक भाषाओं में कर रहे हैं। मालिका कर्नाटक की भाषाओं में भी उपलब्ध होगी। इसमें कुछ समय लगेगा। 16 मंडलों में लगभग 31 से 33 करोड़ भक्त होंगे। अभी तो आरंभ ही हुआ है और इसमें और 3-4 वर्ष लगेंगे। एक ओर विनाश होगा, और दूसरी ओर भक्तों को एकत्र किया जाएगा। इस प्रकार धर्म की स्थापना चलती रहेगी। भक्त बचेंगे, और पापी नष्ट होंगे। 16 मंडल अभी के लिए बन गए हैं, पर शास्त्रों में बताई गई सदस्यों की संख्या अभी तक पूरी नहीं हुई है। उसके लिए हमें और आप सबको बहुत कार्य करना है। क्योंकि भगवान के आने से पहले उनके भक्त ही उनका कार्य करते हैं। यदि आप उनके कार्यकर्ता हैं, तो आपको भी इस प्रकार कार्य करना चाहिए कि भगवान का कार्य सहज और सुगम हो जाए।

► यह उत्तर सुनें · 44:25 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1081 गिरिराज जी की परिक्रमा जैसे धार्मिक अनुष्ठान के लिए, यदि हम अपनी ओर से किसी परिचित पंडित को पैसे देकर करवा लें, तो क्या वह मान्य है?

उत्तर: माता जी, मैं बस इतना कहूँगा: जहाँ कहीं भी धर्म का आचरण हो रहा हो, उसमें भाग लीजिए। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संसार के सभी धर्म मालिका के अंतर्गत आ जाएँगे। कोई दूसरा मार्ग नहीं होगा। देखिए माता जी, अपने विवेक से काम लीजिए: यह सही है या गलत? और ऐसे समय में हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है? ऐसा कार्य कीजिए जो आपके लिए और संसार के लिए मंगलकारी हो। हर मनुष्य के भीतर अंतरात्मा होती है। और अंतरात्मा तब जागृत होती है जब हमारा मन भगवान से जुड़ता है। आप सब भागवत पढ़ते हैं। अंतरात्मा से काम कीजिए, जिसमें धर्म का प्रकाश निवास करेगा। हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि हम वैसे ही कार्य करें जैसे पिछले युगों में भगवान के भक्तों ने किया था। हमें वानर सेना की तरह कार्य करना है। आप जो भी धर्म का आचरण करें, अपनी अंतरात्मा से पूछकर कीजिए। जब अंतरात्मा बोलती है, तब सब कुछ शुभ होता है। तो माता जी, अपनी अंतरात्मा के अनुसार ही कार्य कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 46:30 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1082 कहा जाता है कि 16 मुस्लिम देश एकजुट होंगे। तब हमारी सरकार क्या करेगी, मोदी जी क्या करेंगे?

उत्तर: यह मनुष्य के वश में नहीं है। जो होने वाला है... सरकार क्या कर सकती है? आप सब वानर सेना (भगवान की सेना) में सम्मिलित हो चुके हैं। आप उनके लिए कार्य कर रहे हैं। [उत्तर का आशय यह है कि दैवीय इच्छा के सामने मानवीय सरकारें महत्वहीन हैं और भक्तों को अपने आध्यात्मिक कार्य पर ध्यान देना चाहिए।]

► यह उत्तर सुनें · 49:47 · 19 जनवरी 2023

प्रश्न 1083 क्या आप सदस्यों के लिए 16 मंडलों के बारे में एक बार फिर बता सकते हैं? और जो भविष्य मालिका अंग्रेज़ी में छप रही है, क्या वह हम सबको मिलेगी?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। यह भगवान की इच्छा का संकेत है। अंग्रेज़ी पुस्तक उपलब्ध होगी। विवरण (डिस्क्रिप्शन) में जो नंबर दिया गया है, वह मोहन नाम के एक लड़के का है। उससे संपर्क में रहिए और अंग्रेज़ी पुस्तक पाने के लिए ऑनलाइन सत्संग में आइए। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है... यह संदेश आपकी रक्षा के लिए आप तक पहुँच रहा है। परमाणु बम से रक्षा करने की शक्ति संसार में किसी के पास नहीं है। लेकिन अपनी रक्षा के लिए जो मार्ग हमारे पास है, वह स्वयं भगवान ने कहा है। धर्म की स्थापना से पहले, यह मेरे भक्तों के बीच प्रचारित होगा। मालिका प्राप्त होने पर उनके मन में एक स्पंदन उठेगा: 'धर्म की स्थापना होगी! हम भगवान का कार्य करेंगे! हम भगवान से मिलेंगे! फिर राम राज्य आएगा!' जो भक्त नहीं हैं, वे इसका विरोध करेंगे और आलोचना करेंगे। हमें उससे कोई लेना-देना नहीं, क्योंकि हमें भारत और संसार में भगवान के भक्तों को बचाना है। कितने ही लोग मुझे गाली देते हैं। कोई बात नहीं। हमें अच्छे कर्म करने चाहिए और फिर भगवान के पास लौट जाना चाहिए। आपको मालिका का अनुसरण करना चाहिए, सत्संग में जुड़ना चाहिए, और मालिका पुस्तक का वितरण करना चाहिए, जो अमृत है। ऐसा करने से बहुत ही कम समय में 16 मंडलों की पूरी संख्या बन जाएगी। और 16 मंडल बन जाने के बाद भगवान धर्म की स्थापना को तीव्र कर देंगे। उत्तराखंड में जिस समस्या की बात माता जी कर रही थीं, वे सारी समस्याएँ धीरे-धीरे हल हो जाएँगी। और सनातन धर्म के अतिरिक्त जो कुछ भी है, उन्हें भी सनातन धर्म में आने के लिए विवश होना पड़ेगा। क्योंकि धर्म स्वयं ही सनातन है। जोशीमठ की स्थिति भगवान का एक संकेत है। हमारे भक्त सुरक्षित हैं। यह भगवान का वचन है, और आपको इस पर विश्वास रखना चाहिए। कोई समस्या नहीं है। भगवान सब देख लेंगे। बस मालिका का प्रचार कीजिए और हमारे सभी सनातन धर्म के भक्तों को फिर से भगवान से जोड़िए। यही आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

► यह उत्तर सुनें · 50:51 · 19 जनवरी 2023

सत्र 57 · प्रश्न 1084–1095

L55.2 - भविष्य मालिका के अनुसार एशिया, अमेरिका और खाड़ी देशों के विनाश का समय आ रहा है।

दिनांक: 22 जनवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1084 क्या भारत में कोई प्रभाव नहीं होगा? मैं जानना चाहता हूँ कि प्रभाव होगा या नहीं, और यदि होगा, तो क्या भक्त सुरक्षित रहेंगे?

उत्तर: देखिए, भारत पर परमाणु हमला होगा, और वह बहुत बड़ा होगा। लेकिन यह मालिका में लिखा है। देखिए, परमाणु हथियार बनने से भी पहले, 600 वर्ष पूर्व, यह लिखा गया था कि एक परमाणु घटना आएगी। हमारे पड़ोसी हमें धमकाते हैं कि वे परमाणु शक्ति संपन्न देश हैं। लेकिन आपने एक बात सही कही: परमाणु हमला होगा, परंतु भक्तों को कुछ नहीं होगा। यह एक दिन में बदलने से नहीं होगा; इसके लिए उन्हें कई वर्षों तक निरंतर जप करना होगा और भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ निष्काम भक्त बनना होगा। विपत्तियाँ हम पर आएँगी, लेकिन हमें समर्पण में बने रहना है।

► यह उत्तर सुनें · 01:56 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1085 मेरे परिवार के सदस्य इन भविष्यवाणियों या मालिका में विश्वास नहीं करते। तो क्या मेरी प्रार्थना और पाठ से वे भी सुरक्षित रहेंगे?

उत्तर: एक ही पेड़ पर बहुत से फल लगते हैं; कुछ मीठे होते हैं, कुछ टेढ़े-मेढ़े, और कुछ थोड़े खट्टे। हमारा परिवार भी वैसा ही है। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, अपने परिवार की देखभाल करना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। क्योंकि श्रीमद्भागवत में लिखा है कि अपने परिवार की देखभाल करना हमारा परम कर्तव्य है। इस विषय पर परिवार से कोई वाद-विवाद नहीं होना चाहिए। किसी को बाध्य करने या जबरदस्ती करने की आवश्यकता नहीं है। एक समय आएगा जब हमारे परिवार के सदस्य हमारे साथ जुड़ जाएँगे। हालाँकि, उस समय उन्हें पवित्रता की उस धारा का पूरा प्रभाव अनुभव नहीं होगा। और यह ठीक है, क्योंकि समय बहुत निकट है। धर्म की स्थापना आगे बढ़ेगी। भक्त तो राम का नाम सुनते ही स्वयं आ जाएँगे। जो भक्त नहीं हैं, उन्हें आप कितनी ही बार कहें, उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए मैं कहता हूँ, अपने परिवार की नीतियों और रीति-रिवाजों के अनुसार जीवन जिएँ। इस विषय में परिवार से कोई वाद-विवाद न करें। भगवान की शरण लें। परिवार से कुछ न कहें। हम अकेले आए हैं, और अकेले ही जाएँगे। लेकिन चूँकि हमारा परिवार है, इसलिए सम्मान, स्नेह और प्रेम के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 03:46 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1086 पिताजी, मेरे दो प्रश्न हैं। कल रात मुझे और मेरी पत्नी को एक ही सपना आया। मेरे सपने में प्रलय हो रही थी, और मैंने कुछ लोगों को डूबते हुए देखा। इसी तरह, मेरी पत्नी ने हमारे कुछ रिश्तेदारों को डूबते देखा, लेकिन हम सुरक्षित थे। तो मैं इसे समझना चाहता था। और मुझे इस पर भी मार्गदर्शन चाहिए: कहा जाता है कि 2026 में भूकंप आएगा, तो क्या वह उससे पहले आएगा या बाद में?

उत्तर: भूकंप निरंतर आते रहेंगे। बीमारियाँ आती-जाती रहेंगी। बहुत से युवा मरेंगे, विशेषकर वे जो तंत्र, मंत्र और देवी उपासना में लगे हैं और जो भगवान विष्णु की शरण में नहीं हैं, जो मछली और मांस खाते हैं, और जो भ्रष्ट हैं। ऐसे लोगों के लिए समय बुरा होगा। और बड़े भूकंप जारी रहेंगे। 2025 से पहले भी भूकंप आएँगे; ऐसा नहीं है कि वे रुक जाएँगे। वे जारी रहेंगे, साथ ही बीमारियाँ और युद्ध के प्रभाव भी। सब कुछ चलता रहेगा। लेकिन देखिए, मालिका में लिखा है: जहाँ कहीं मेरे भक्त होंगे, भगवान उनके नीचे की भूमि को ऊपर उठा देंगे ताकि उन्हें बचा सकें। भक्तों को कुछ नहीं होगा। और यदि भक्त पानी में डूब रहे हों या किसी संकट में हों, तो स्वयं भगवान बलराम, भगवान के भाई, उन्हें निकालकर सुरक्षित स्थान पर ले आएँगे। तो, भक्तों को कुछ नहीं होगा; पापी नष्ट होंगे। अपने परिवार को बचाइए, भगवान का नाम जपिए। अंतिम क्षण की भक्ति काम नहीं आएगी; यह शास्त्रों में लिखा है। क्योंकि ऋषि-मुनियों को कई वर्षों तक तपस्या करनी पड़ती है, विद्यार्थी को परीक्षा के लिए पूरे वर्ष पढ़ाई करनी पड़ती है। हमारा मार्ग भी इसी सिद्धांत पर आधारित है। किसी व्यक्ति के लिए अपने पूर्व कर्मों को सुलझाने या शुद्ध करने और स्वयं को पवित्र बनाने के लिए, कम से कम कई वर्षों तक भगवान की शरण में रहना आवश्यक है, पवित्रता, जप और भागवत जैसे शास्त्रों के पाठ के साथ। इससे उनका शरीर शुद्ध होगा, और जब शरीर शुद्ध होगा, तभी वे सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 07:01 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1087 पंडित जी, आप कहते हैं कि भगवान अवतार ले चुके हैं। आपका अर्थ है कि भगवान...?

उत्तर: मैंने बस इतना कहा है: मालिका, शास्त्रों और पुराणों के अनुसार, भगवान कल्कि अवतार ले चुके हैं। लेकिन भक्तों को भगवान को अपनी भक्ति, भाव और समर्पण के द्वारा खोजना होगा। वे अपनी भक्ति से भगवान को प्राप्त करेंगे। क्योंकि जब मनुष्यों ने तपस्या की, जब गोपियों ने भगवान को खोजा, तो उन्हें तुरंत प्राप्ति नहीं हुई। मित्रों, आपको भगवान के दर्शन होंगे। पहले धर्म की धारा में आइए। मैं जो कहता हूँ वैसा करने से आप पर भगवान की कृपा होगी, और धीरे-धीरे ज्ञान का प्रकाश उदित होगा। तो, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पहले स्वयं को उस धर्म की धारा में, जिसकी हम बात कर रहे हैं—सत्संग, जप, कीर्तन—'सुधर्मा' (धर्मपरायण) बनाइए। धीरे-धीरे स्वयं अनुभव कीजिए, और आपको यह ज्ञान हो जाएगा कि यह सही है या गलत। आपका अनुभव और आपकी अंतरात्मा उस समय आपको बता देगी। इसलिए इस पर समय मत गँवाइए, क्योंकि समय बहुत निकट है। ऐसे समय में धर्म के अतिरिक्त और कुछ भी हमारी रक्षा नहीं कर सकता।

► यह उत्तर सुनें · 10:25 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1088 ऐसी स्थिति में [बाँध टूटने और हरिद्वार में बाढ़ आने की], दिल्ली तक की आबादी का क्या भविष्य आप देखते हैं?

उत्तर: बिल्कुल सही। भारत के सभी बाँध नहीं बचेंगे। इस भूकंप से बाँध अवश्य टूटेगा, और पानी दिल्ली और हरिद्वार तक पहुँचेगा; यह भी सही है। लेकिन मालिका में एक बात लिखी है: 'समुद्र पर्वतों पर होगा, सागर का राजा प्रचंड होगा।' भक्तों को डरना नहीं चाहिए। पानी 100 मीटर उठे, 200 मीटर उठे, या हजार मीटर भी उठे, धर्म की धारा में रहने वाले भगवान के भक्त सब सुरक्षित रहेंगे। यही हमारा धर्म है, और इसीलिए मालिका लिखी गई थी। मालिका किसके लिए लिखी गई थी? यदि सभी भक्त जल समाधि ले लें (डूब जाएँ), तो भगवान किसके साथ धर्म की स्थापना करेंगे? इसलिए भक्तों को सुरक्षित रखा गया है। और भविष्य में वे धारा में बने रहेंगे। संघर्ष और विनाश से पहले, मालिका का प्रचार हो रहा है। उत्तराखंड में ऐसी वर्षा होगी... आपने बाँध की बात कही, लेकिन हरिद्वार में ऐसी वर्षा होगी कि बहुत भारी मात्रा में पानी आएगा। मैं वर्षा की बात कर रहा हूँ। और हर महीने बादल फटेंगे और वर्षा होगी। समय मत गँवाइए। क्योंकि जब हम आए, तो जिस रक्षक ने हमें भेजा, उन्होंने ही हमें जन्म दिया और आज तक हमारा पालन-पोषण किया है। माता-पिता अपना कर्तव्य निभाते हैं, लेकिन परम कर्ता भगवान ही हैं। इसलिए चिंता मत कीजिए। आप सब आनंदपूर्वक मालिका की धारा में बने रहिए। सत्संग में जुड़िए। हमारे सत्संग में हम आपको मालिका के सभी सिद्धांत बताएँगे, और हम आपको वे सिद्धांत बताते रहेंगे जिनसे मानवता की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 14:08 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1089 [जब मैं भगवान का नाम सुनता हूँ तो] मेरी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। इसका क्या कारण है, पंडित जी?

उत्तर: भगवान का नाम... यह महान आनंद है, बहुत प्रसन्नता होती है। मेरे हृदय में भी शांति का अनुभव होता है। केवल शास्त्र सुनने से कोई भक्त नहीं बन जाता। अनेक पूर्व जन्मों के पुण्य कर्मों के कारण ही मनुष्य पृथ्वी पर जन्म लेता है और भगवान का संदेश प्राप्त करता है। ऐसे समय में मैं बस इतना कहना चाहता हूँ: हमें मार्ग का अनुसरण करना है, हमें 'सुधर्मा' (धर्मपरायण) बनना है। हमें कलियुग के अपने मानव शरीर को 'सुधर्मा' के दिव्य मानव शरीर में परिवर्तित करना है, जो हमारे शरीर की प्रकृति, रोगों, प्राकृतिक आपदाओं और अतिरेक से रक्षा करेगा। जब वह पवित्र धारा आँखों से बहती है, और अंत में, यदि भगवान से मिलन हो जाता है, तो आप उस मिलन को प्राप्त कर लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 19:03 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1090 मुझे आपसे दो प्रश्न पूछने थे। पहला, यह 'धर्म संस्थापना' की प्रक्रिया किस वर्ष तक पूर्ण होगी, और 'सत्य युग' किस वर्ष तक आएगा?

उत्तर: रामेश्वर मंडल का कार्य आरंभ हो चुका है। अनेक भक्त रामेश्वर मंडल से जुड़ चुके हैं, और कुछ संत-महात्मा जो वन में रहते हैं, वे भी जुड़ चुके हैं। तो रामेश्वर मंडल का गठन आरंभ हो गया है। रही बात धर्म की स्थापना की, तो वह 2020 में आरंभ हुई और 2031 तक चलती रहेगी। 2032 में सत्य प्रकट होगा, लोगों को शांति मिलेगी, और पृथ्वी पाप के भार से मुक्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 21:44 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1091 जब भक्त साधना करते हैं, नाम-जप करते हैं या प्रभु की स्तुति करते हैं, तो नकारात्मक शक्तियाँ उन्हें परेशान करती हैं। उनसे बचने के लिए प्रभु ने क्या आदेश दिया है?

उत्तर: क्योंकि जब आप धर्म का कार्य करते हैं तो बाधाएँ बढ़ जाती हैं। विशेषकर Kali Yuga में कलि का प्रभाव, जब भक्त धर्म के कार्य करते हैं तो वह निश्चित ही बाधा उत्पन्न करता है। लेकिन यदि प्रभु पर हमारी श्रद्धा दृढ़ बनी रहे... कुछ समय तक असुर अपना प्रभाव डालता है ताकि भक्त गिर जाएँ, मार्ग छोड़ दें, और Bhavishya Malika पर विश्वास करना बंद कर दें। इससे अनेक समस्याएँ, बीमारियाँ और रोग होते हैं। जब वे नाम-जप करते हैं, तो कष्ट और पीड़ा आती है, और तब लोग पूछते हैं कि इस पीड़ा से छुटकारा कैसे मिले। यह कम से कम एक वर्ष तक चलता है। निरंतर नाम-जप करने और जिस मार्ग का मैं वर्णन करता हूँ उस पर चलने से यह समाप्त हो जाएगा। क्योंकि कलि (नकारात्मक शक्ति) चाहती है कि लोग धर्म के मार्ग पर न चलें। देखिए, कभी-कभी जब मैं प्रवचन देने जाता हूँ, तो मुझे इतना तेज़ बुखार हो जाता है कि दवा लेकर जाना पड़ता है। मैं जानता हूँ कि कौन-सी शक्ति मेरे साथ यह कर रही है। फिर मैं प्रवचन देता हूँ, और सब कुछ ठीक हो जाता है। क्योंकि धर्म का कार्य इतना आसान नहीं है, और जब आप धर्म के मार्ग पर चलते हैं, तो बाहरी शक्तियाँ आपका विरोध करती हैं। हमें पहले अपना कार्य करना है और उनकी शरण लेनी है। हम जानते हैं कि यह सब होने वाला है; यह शास्त्रों में लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 23:33 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1092 यह [संगम युग] कितने वर्षों तक रहेगा?

उत्तर: यह वह युग है जिसमें जीव के कर्म और धर्म का विचार होता है, जहाँ भगवान और भक्त का मिलन होता है। और भगवान तथा भक्तों का मिलन इसलिए होता है क्योंकि प्रभु चारों युगों के उन भक्तों के सारे कष्ट ले लेते हैं जो संकट में हैं, और उनके लिए आनंदमय Satya Yuga की रचना करते हैं, स्वर्ग को धरती पर ले आते हैं। वर्षों तक स्वयं भगवान शासन करेंगे, और उस समय जो मनुष्य रहेंगे वे पूर्ण Satya Yuga में चले जाएँगे। और पूर्ण Satya Yuga लगभग 1200 से 2400 वर्षों तक रहता है। यह भगवान की इच्छा पर निर्भर करता है। किसी विशेष समय पर कोई युग कितने समय तक रहेगा, यह भगवान और उस युग में जन्मे मनुष्य तय करते हैं। तो ऐसा समय आएगा। पूर्ण Satya Yuga संगम युग के बाद आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:07 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1093 मुझे एक स्वप्न के बारे में पूछना था। मेरे स्वर्गीय पिता आए और मुझसे और मेरी पत्नी से बोले, 'चलो दर्शन के लिए चलते हैं।' वे एक ऐसे वाहन पर आए जो किसी पशु जैसा लग रहा था, उसके पैर मुझे दिखाई नहीं दिए, वह घोड़े जैसा लग रहा था, लेकिन हवा में चल रहा था। हम उनके पीछे एक वाहन पर गए। वे हमें माँ काली के एक मंदिर के सामने ले गए और वहाँ छोड़ दिया। मैंने स्वयं को वहाँ एक गैलरी में बैठे देखा। मुझे इसका अर्थ समझ नहीं आया। सोचा आपसे इसका अर्थ पूछ लूँ।

उत्तर: नहीं, आपको माँ के दर्शन नहीं हुए; प्रभु ने आपको अपनी लीला दिखाई है। मैं आपको इतना ही कहना चाहता हूँ: पूर्वज अपने लोगों का, अपने परिवार का कल्याण सोचते हैं। और इस समय प्रभु ने माँ काली को संहार की पूरी जिम्मेदारी दी है। आपके पूर्वज आपको माँ काली के पास ले गए, लेकिन आपने उनका रौद्र रूप नहीं देखा। इसका अर्थ है कि यह अनेक लोगों के लिए प्रभु की ओर से एक परीक्षा थी।

► यह उत्तर सुनें · 30:09 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1094 एक प्रश्न यह है कि मैंने सुना है कि विश्व युद्ध की स्थिति बन रही है। जैसा आपने कहा, अलग-अलग YouTube चैनल अलग-अलग जानकारी देते हैं। कोई कहता है कि यह 2024 में पूरी तरह शुरू होगा, कोई कहता है 2023, कोई कहता है कि 2022 में इसकी नींव पड़ गई। मेरा मन कहता है कि विश्व युद्ध होगा, लेकिन मुझे बड़ा संशय है कि यह कब और कैसे होगा, क्योंकि इतने सारे अलग-अलग मत और विचार हैं।

उत्तर: लेकिन हम यह कहते हैं: हमें किसी TRP या प्रचार की आवश्यकता नहीं है। संसार में हमारा कोई शिष्य नहीं है; सभी हमारे मित्र हैं। आप मेरे परिवार जैसे हैं। जैसे कोई अपने परिवार की चिंता करता है, वैसे ही मैं आपके कल्याण की कामना करता हूँ। और जो लोग कहते हैं कि यह अमुक समय पर होगा, वे बस वही दोहरा रहे हैं जो वे TV चैनलों पर Bhavishya Malika के प्रचार से सुनते हैं। लेकिन विश्व युद्ध Bhavishya Malika में लिखा हुआ है। युद्ध तब होगा जब भगवान Madhava Kalki चाहेंगे। प्रभु ही सब करेंगे; यह उनकी इच्छा से होगा। विश्व युद्ध का समय इसी संधिकाल में है, लेकिन यह प्रभु की इच्छा पर निर्भर है। जब तक प्रभु अपना नाम सभी भक्तों में नहीं बाँट देते और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर देते... तब तक युद्ध नहीं होगा। युद्ध निश्चित रूप से होगा, वह तो बहुत पहले ही हो जाता, लेकिन इसे टाला जा रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 34:10 · 22 जनवरी 2023

प्रश्न 1095 क्या यह 2023 में पूरी तरह शुरू हो सकता है? क्योंकि जहाँ तक मुझे जानकारी है, शनि का मीन राशि में संचार 2025 में होने वाला है।

उत्तर: शाम 5:30 बजे शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, और उनके साथ 11 ग्रह संसार के लिए अवरोधक स्थिति में एक साथ आ जाएँगे। इसमें मंगल और आध्यात्मिक ग्रह नेपच्यून भी शामिल होंगे। क्योंकि भगवान Kalki अपनी इच्छा से, अपने घर में बैठे-बैठे, किसी भी देश का विनाश कर सकते हैं, किसी भी देश में हाहाकार मचा सकते हैं, और पृथ्वी के लिए समय तक बदल सकते हैं। हमारे प्रभु बहुत शक्तिशाली हैं। यह केवल लोगों के कहने से नहीं होगा। यदि युद्ध हो गया, तो मंडलों का गठन कैसे होगा? तो जब तक 16 मंडल नहीं बन जाते, इसमें कुछ और समय लगेगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:05 · 22 जनवरी 2023

सत्र 58 · प्रश्न 1096–1096

L55.1 - भविष्य मालिका के अनुसार एशिया, अमेरिका और खाड़ी देशों के विनाश का समय आ रहा है।

दिनांक: 22 जनवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1096 तो, ऐसा समय आने से पहले, सुरक्षा का मार्ग क्या है?

उत्तर: भारत के सभी लोग तब भारत लौट आएँगे। वे जहाँ कहीं भी हों, उन्हें आना ही पड़ेगा। अभी शायद समझ में न आए, लेकिन वह समय आएगा। तब आप सब हमारे देश में आएँगे, क्योंकि और कहीं सुरक्षा नहीं मिलेगी, और यहाँ स्वयं भगवान सुरक्षा प्रदान करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 07:28 · 22 जनवरी 2023

सत्र 59 · प्रश्न 1097–1114

L56 - राजस्थान जैसा रेगिस्तान अंचल में होने वाले परिवर्तन पर भविष्यवाणी | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 26 जनवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1097 'सनातनी' का क्या अर्थ है?

उत्तर: सनातनी का अर्थ है मानव शरीर को दिव्य शरीर में रूपांतरित करना।

► यह उत्तर सुनें · 05:07 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1098 दिव्य शरीर कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर: Bhavishya Malika के अनुसार सत्संग और Trisandhya के मार्ग पर चलने से शरीर दिव्य हो जाएगा—ऐसा शरीर जिसे कोई रोग, समस्या या कोई अन्य विपत्ति हानि नहीं पहुँचा सकती। ऐसे ही शरीरों के निर्माण के लिए Bhavishya Malika का प्रचार किया जा रहा है। यह भक्तों को आरंभ से ही रूपांतरण का मार्ग दिखा रही है।

► यह उत्तर सुनें · 05:18 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1099 पंचसखाओं ने विश्व मालिका क्यों लिखी?

उत्तर: उन्होंने इसे भक्तों को उनके पूर्व संस्कारों के आधार पर जगाने के लिए लिखा।

► यह उत्तर सुनें · 06:28 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1100 पंडित जी, मुझे कुछ पूछना था। दो-तीन बार मैंने स्वप्न में बाँके बिहारी जी का मंदिर देखा और वहाँ से प्रसाद भी मिला। मुझे इसका अर्थ समझ नहीं आया। भगवान के दर्शन तो शुभ होने चाहिए, लेकिन मेरे जीवन में कुछ अच्छा नहीं हुआ; मैं अब भी परेशान हूँ। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माता जी, स्वप्न में यह देखने का अर्थ है कि आने वाले समय में आपको बाँके बिहारी जी के अवतार के दर्शन होंगे और आपको उनका प्रसाद भी मिलेगा। यह पहली बात। दूसरी बात, हमारी सामाजिक और पारिवारिक समस्याएँ हमारे 'प्रारब्ध' से जुड़ी होती हैं। आप घर पर Trisandhya में रहिए और हमारे ऑनलाइन सत्संग से जुड़िए। सत्संग से जुड़ने पर आपकी सामाजिक और पारिवारिक समस्याएँ हल हो जाएँगी। प्रभु के अवतार के इस समय में आपको जो शुभ स्वप्न आया, उसका अर्थ है कि प्रभु आ चुके हैं और प्रसाद भी देंगे। आप उन भाग्यशाली लोगों में से हैं जो Bhavishya Malika से जुड़ते हैं; वे चारों युगों के भगवान के भक्त हैं। जो Bhavishya Malika से जुड़ते हैं वे सच्चे भक्त हैं जो वृंदावन, अयोध्या और Satya Yuga में भी थे, और अब Kali Yuga में भक्त बनकर जन्मे हैं। आपको अच्छा दर्शन हुआ है, और आपको प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन भी होंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 12:18 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1101 महाराज जी, मैं पूछना चाहता हूँ कि राजस्थान में भीषण गर्मी कब पड़ेगी? किस वर्ष इतनी गर्मी होगी कि सारे पेड़-पौधे जलने लगेंगे?

उत्तर: देखिए, आज राजस्थान में जो गर्मी है, वह लगभग सात गुना और बढ़ेगी। महर्षि सच्चिदानंद ने भविष्य मालिका में लिखा है कि जब रंग 'चतुर धूम्र वर्ण' (चार गुना धुँधला रंग) हो जाएगा, तब सूर्य की प्रचंड किरणें बढ़ेंगी। यह पहले ही 4% बढ़ चुका है और सात गुना और बढ़ेगा। आज अगर तापमान 48-50 डिग्री सेल्सियस तक जाता है, तो यह लगभग 60 डिग्री तक जाएगा। और एक दिन दुनिया में तापमान 70 डिग्री तक पहुँच जाएगा। यह बढ़ता ही जाएगा। हमारी रक्षा का सबसे बड़ा मार्ग मालिका का मार्ग है। सत्संग से जुड़िए। भगवान की शरण लीजिए। बहुत बुरा समय आ रहा है। मानव समाज की रक्षा केवल सत्य युग के सिद्धांतों से ही होगी। इसीलिए मालिका का प्रचार पहले से किया जा रहा है। राजस्थान में बहुत से भक्त हैं जो मालिका के माध्यम से बचेंगे। तो, सत्संग से जुड़िए और अपने जीवन में धर्म के सिद्धांतों को अपनाइए। यह आपके लिए अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:23 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1102 मैं दिल्ली से हूँ, और मेरा 21 वर्ष का बच्चा 100% दिव्यांग है और चल नहीं सकता। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या वह ठीक होगा, और अगर हाँ, तो कब तक?

उत्तर: देखिए माताजी, यह पूर्व जन्म का 'प्रारब्ध' है। इस समस्या का समाधान, जैसा मालिका में लिखा है, तब आएगा जब भगवान कल्कि की धर्म-स्थापना पूर्ण हो जाएगी। मालिका में लिखा है कि जब सत्य युग पूरी तरह आरंभ होगा तो एक भी रोगी या दिव्यांग व्यक्ति नहीं बचेगा। वह समय कम से कम 2032 तक है। यदि आप भक्ति के साथ भगवान की शरण में रहेंगी, तो उस समय जो भी उपस्थित होंगे, वे सब रूपांतरित हो जाएँगे। सब युवा और सुंदर हो जाएँगे। धर्म के प्रभाव से सब आनंद में रहेंगे। 'प्रारब्ध' रोग के रूप में आता है। अभी का सबसे अच्छा उपाय है वर्तमान समय का सदुपयोग करना। हमें अपने पूर्व कर्म का पता नहीं है, पर हम यह जानते हैं कि अभी अच्छे कर्म करने से अच्छा फल मिलेगा। तो दान, धर्म और पवित्रता के मार्ग पर चलिए। यह बड़े आनंद की बात है कि आप इससे जुड़ी हुई हैं। समय की प्रतीक्षा कीजिए, और भगवान की कृपा से यह होगा। और साथ ही, यदि भक्ति प्रबल है, तो भगवान की कृपा से कुछ और विकास हो सकता है। भक्ति के द्वारा भगवान से जुड़ने पर उपचार मिल सकता है। आप जितनी अधिक भक्ति में लीन होंगी, उपचार उतना ही प्रभावी होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:58 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1103 मेरे परिवार पर बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। मेरे पति को हार्ट अटैक आया है, और बहुत उथल-पुथल है। हमें शांति कैसे मिलेगी?

उत्तर: देखिए माताजी। यदि हम किसी जीव की हत्या करते हैं, तो हमें भगवान की कृपा नहीं मिल सकती। मेरा मार्ग यह है कि आपको भागवत पढ़ना होगा, त्रिसंध्या का पालन करना होगा, और सत्संग में रहने से आपकी समस्या हल हो जाएगी। और सबसे पहले, आपको शाकाहारी बनना होगा। जो शाकाहारी बनेंगे, वही सत्य युग के मनुष्य बनेंगे। आपको अपने पति को भी शाकाहारी बनाने का प्रयास करना चाहिए। धर्म कहता है: किसी का बुरा मत सोचो, किसी का बुरा मत करो, और किसी में बुरा मत देखो। ऐसा करने से हमें पवित्रता प्राप्त होगी, और जब शरीर पवित्र होगा, तो हम सभी रोगों और समस्याओं से मुक्त हो जाएँगे। यदि आपके पति जीवों को मारकर खाते हैं, तो यह पाप है, और उसका हमारे पास कोई उपचार नहीं है। परंतु हमारे जो लोग इस मार्ग पर हैं, जो शाकाहारी हैं और भागवत पढ़ते हैं, उन पर भगवान की कृपा है। अपने पति को बदलने का प्रयास कीजिए, पर जबरदस्ती मत कीजिए, क्योंकि इससे घर में समस्या होगी। अच्छे लोग अच्छे ही रहेंगे। जो नहीं बदलेंगे, उनके लिए हम क्या कर सकते हैं? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:58 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1104 हम सत्संग से कैसे जुड़ सकते हैं?

उत्तर: जो नंबर दिया गया है, उस पर बात कीजिए। नंबर विवरण (डिस्क्रिप्शन) में है। उस नंबर पर बात कीजिए और सत्संग से जुड़ जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 27:44 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1105 स्वामी जी, हम जगन्नाथ पुरी दर्शन के लिए आना चाहते हैं, और हम आपसे भी मिलना चाहते हैं। हम नासिक, महाराष्ट्र से बोल रहे हैं।

उत्तर: ठीक है। जब आप आएँ, तो मुझे बता दीजिएगा, और हम उसी के अनुसार योजना बना लेंगे। जब आपके पास समय हो, तो मुझे बताइएगा। अन्यथा, मोहन से संपर्क कीजिए, जो हमारा सत्संग संभालते हैं। जब आप जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी आएँ, तो हम आपकी यथासंभव सहायता करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:00 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1106 मेरा प्रश्न यह है कि युवा वर्ग, नई पीढ़ी, कलियुग के प्रभाव में बहुत अधिक है। हम इससे अपनी रक्षा कैसे करें?

उत्तर: देखिए, सबसे बड़ी समस्या खान-पान की आदतें हैं। आजकल युवा अधिकतर मांसाहारी भोजन पसंद करते हैं, और परिवार उन्हें अच्छे संस्कार नहीं देते। यह संसार के लिए और धर्म के लिए बड़े दुःख की बात है। मालिका में लिखा है कि बूढ़े और वृद्ध बचे रहेंगे, पर बड़ी संख्या में युवा मरेंगे। जो रोग और समस्याएँ आएँगी, वे युवा लोगों को अधिक हानि पहुँचाएँगी। वृद्ध लोगों को कोई समस्या नहीं होगी। तो, भगवान की शरण लीजिए, उनके नाम का जप कीजिए, और सत्संग में रहिए। समय के साथ जो हो रहा है उसे देखिए, और आप पाएँगे कि आपकी समस्याएँ धीरे-धीरे हल हो रही हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:44 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1107 पिताजी, 'माया' क्या है?

उत्तर: 'माया' यह है कि आप अभी मुझे फोन कर रहे हैं। यही आपकी माया है। क्योंकि आप मुझसे बात कर सकते हैं, हम नियमित रूप से बात करते हैं, फिर भी फोन कॉल ने आपको माया का स्पर्श महसूस कराया और आगे बात करने की रुचि जगाई। इसी को माया कहते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:18 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1108 पिताजी, मैं उत्तर प्रदेश से हूँ। कुछ दिन पहले मैंने सपना देखा कि मेरे घर की सफाई हो रही है, और सफाई के दौरान एक विशाल अजगर और एक विशाल कछुआ मिले, पर दोनों मरे हुए थे। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस सपने का अर्थ यह है कि आने वाले समय में आसुरी प्रवृत्ति के लोगों का नाश होगा। ऐसा होगा। जय श्री माता।

► यह उत्तर सुनें · 32:58 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1109 मेरे पति ने एक प्रश्न पूछा जिसका उत्तर मैं नहीं दे सकी। यदि ब्रह्मा जी ने पहले मनु और शतरूपा की रचना की और उनसे पृथ्वी को आबाद करने को कहा, परंतु पृथ्वी तो रसातल में थी, तो पहले मनुष्यों के बनने से पहले ही हिरण्याक्ष नामक दैत्य कैसे विद्यमान था जो उसे वहाँ ले गया?

उत्तर: मनु और शतरूपा की रचना से पहले, आदि दैत्य हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दिति के गर्भ से जन्मे थे। मनु और शतरूपा की रचना ब्रह्मा जी ने ब्रह्मलोक में की थी। जब ब्रह्मा ने उन्हें पृथ्वी पर भेजा, तो उन्होंने उसे जल में डूबा हुआ पाया। उस समय हिरण्याक्ष पाताल लोक में था। उस युग के दैत्यों में अपार शक्ति थी। तो, मनु और शतरूपा ने वापस जाकर ब्रह्मा को बताया। ब्रह्मा और देवताओं की प्रार्थना पर, भगवान विष्णु ने वराह रूप धारण किया, हिरण्याक्ष से युद्ध कर उसका वध किया, पृथ्वी को रसातल से वापस लाए, और उसे उसकी कक्षा में स्थापित किया। यह वराह कल्प के नाम से जाना जाता है। उसके बाद मनु और शतरूपा पृथ्वी पर आए, और मनुष्यों की सृष्टि आरंभ हुई। तो, मनु और शतरूपा दिव्य लोक (ब्रह्मलोक) में थे जबकि दैत्य पाताल लोक में थे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:12 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1110 क्या इसका अर्थ यह है कि दैत्यों की रचना ब्रह्मा जी ने नहीं की थी और वे पहले से ही विद्यमान थे?

उत्तर: दैत्यों के पिता ब्रह्मा जी नहीं हैं। नहीं। वे पहले से ही अस्तित्व में आ चुके थे। कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थीं, दिति और अदिति। दिति के गर्भ से दैत्य (असुर) आए, और अदिति के गर्भ से देवता और ऋषि आए। मनु की रचना ब्रह्मा जी ने की थी। दिति से जन्मे दैत्य पाताल लोक में रह रहे थे। ब्रह्मा द्वारा रचे गए मनु और शतरूपा ब्रह्मलोक में थे। जब उन्होंने जलमग्न पृथ्वी देखी, तो उन्होंने ब्रह्मा को सूचित किया, जिन्होंने फिर भगवान विष्णु से प्रार्थना की। अपने वराह अवतार में, भगवान ने दैत्यों को पराजित कर पृथ्वी को बचाया। जैसे ब्रह्मा और महादेव प्रथम देव हैं, वैसे ही हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु प्रथम दैत्य थे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:55 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1111 मैं अपनी गर्दन की कशेरुकाओं (नेक वर्टिब्रे) के लिए जो दवा लेती हूँ, वह काम करती नहीं दिखती; उल्टा उससे मेरा शरीर फूल रहा है और वज़न बढ़ रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है, और क्या इसका कोई उपाय है?

उत्तर: देखिए माँ, चिकित्सा के लिए एक भौतिक विज्ञान है, और एक आध्यात्मिक मार्ग है। आध्यात्मिक मार्ग आत्मा को मुक्ति देता है, शरीर को नहीं। आपके शरीर की समस्या पूर्वजन्म के 'प्रारब्ध' के कारण है। इसके लिए आपको अनुलोम-विलोम और कपालभाति जैसे योग का अभ्यास करना चाहिए; आपका वज़न कम हो जाएगा। साथ ही, अपने आहार और दिनचर्या को व्यवस्थित कीजिए। यदि कोई सूर्यास्त के बाद भोजन न करे, तो कोई रोग नहीं होगा, क्योंकि भोजन ठीक से पचता नहीं है। दवा तो आपको लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि अभी Kali Yuga ही है। जब पूर्ण सत्य का प्रकाश चमकेगा, तब दवा की ज़रूरत नहीं होगी। फ़िलहाल, धर्म ही हमारी रक्षा है। अपनी शारीरिक समस्या के लिए उचित चिकित्सा कीजिए, योग कीजिए, और आहार पर नियंत्रण रखिए। सब ठीक हो जाएगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 41:02 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1112 कल रात मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मेरा घर पूरी तरह अंधकारमय था। जब मैं गेट पर गई, तो एक कुत्ते या सियार ने मेरा पूरा बायाँ हाथ अपने मुँह में पकड़ लिया और छोड़ ही नहीं रहा था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति को दर्शाता है, माँ। यह राहु और केतु ग्रहों के प्रभाव का संकेत है। धर्म के मार्ग पर बनी रहिए, इससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी। ग्रह-नक्षत्र कष्ट देते हुए प्रतीत हो सकते हैं, पर यदि भगवान की कृपा आपके साथ है, तो वे कुछ नहीं कर सकते। Trisandhya कीजिए, भागवत पढ़िए, सब ठीक हो जाएगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 44:29 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1113 मैं कोलकाता से हूँ। Bhavishya Malika में लिखा है कि कोलकाता पर परमाणु बम गिराया जाएगा। मेरा प्रश्न है, यह कब हो सकता है? किस वर्ष में?

उत्तर: सुनिए। Bhavishya Malika के अनुसार, कोलकाता के सियालदह में एक यज्ञ होगा। वहाँ भक्तों के 16 मंडलों (समूहों) का यज्ञ होगा। ये 16 मंडल इस समय बन रहे हैं। इनके बनने और यज्ञ होने के बाद, कोलकाता में धर्म-युद्ध और पापियों का विनाश होगा। देखिए, ऐसे परमाणु हमलों के बारे में भारत में अनेक स्थानों को लेकर लिखा है। परंतु एक अन्य स्थान पर यह भी कहा गया है कि भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। इसलिए यदि भक्त सचमुच भक्त बन जाएँ, तो भगवान Kalki आपको परमाणु हमले से बचा लेंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 47:31 · 26 जनवरी 2023

प्रश्न 1114 यह (कोलकाता पर हमला) किस वर्ष में हो सकता है, पंडित जी?

उत्तर: आज का समय समाप्त हो गया है। अगले रविवार रात 9 बजे से 10:30 बजे तक, हम अपने भक्तों के कल्याण हेतु Bhavishya Malika की विचारधारा के लिए Google Meet में आपसे पुनः मिलेंगे। आज नेटवर्क की समस्या के कारण, मैं ठीक से सुन नहीं पाया और कुछ प्रश्नों का उत्तर देना कठिन रहा। मुझे लगता है कि शायद मैं आपके प्रश्न का 100% संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाया।

► यह उत्तर सुनें · 49:36 · 26 जनवरी 2023

सत्र 60 · प्रश्न 1115–1116

L57 - भविष्य मालिका की प्रचार धारा से भक्त लोग सत्य युग को जाएंगे और धर्मसंस्थापना होगा।

दिनांक: 29 जनवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1115 तो, क्या मुझे कुछ बदलना चाहिए? क्या मुझे कुछ अलग करना चाहिए, गुरुजी?

उत्तर: आप बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। देखिए, आपने श्रीमद् भागवत कई बार पढ़ा है, परंतु मेरा निवेदन है कि घर के हर सदस्य के लिए एक अध्याय पढ़ना आवश्यक है। क्योंकि आने वाला रोग सबके लिए है, केवल आपके या मेरे अकेले के लिए नहीं। शरीर की शुद्धि के लिए बच्चों से लेकर वृद्धों तक सभी को इसे पढ़ना चाहिए, और जो पढ़ नहीं सकते, उन्हें पढ़कर सुनाना चाहिए। आप पहले से ही दिन में दो बार संध्या (दो संध्या) करती हैं। दोपहर में, जब समय मिलते हैं, तब 10 मिनट दुर्गा Madhava स्तुति से भगवान की प्रार्थना कीजिए। यह तय होगा कि भक्तों को साधना की कौन-सी धाराएँ दी जाएँगी, और यह भी Malika में लिखा है। यह हमारे माध्यम से होगा; यह पुस्तक में लिखा है, इसीलिए भगवान ने मुझे यह दायित्व दिया है, और हम यह कर रहे हैं। यह बताया जाएगा; यह Malika में लिखा है, और हमारे पास इसकी PDF है, इसलिए कोई समस्या नहीं है। आपको भी इसका पालन करना चाहिए। प्रतिदिन भागवत पढ़िए, Malika के ऑनलाइन सत्संग में उपस्थित रहिए, और कम से कम Malika का प्रचार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:48 · 29 जनवरी 2023

प्रश्न 1116 क्या लखनऊ में रामायण जलाई गई है?

उत्तर: ठीक है, देखिए, जब असुरों के पाप बढ़ते हैं, तब विनाश होता है। तो, आपको इसे 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' (विनाश निकट होने पर बुद्धि विपरीत हो जाती है) के रूप में समझना चाहिए। यदि वे ऐसे काम न करें, तो उनका विनाश कैसे होगा? तो, यह संघर्ष का संकेत है, और इससे कहीं बुरा होने वाला है। देखिए, भगवान ने धर्म की स्थापना के लिए पहले ही सब कुछ रच दिया है। कार्य आरंभ हो चुका है। और ऐसे समय में, जो लोग भगवान के विरुद्ध काम करते थे, वे और अधिक करेंगे। तो, इसमें कोई समस्या नहीं है। वे जो कहते हैं उससे मुझे भी दुख होता है, परंतु भगवान ने ऐसे ही पापियों के विनाश के लिए धर्म की स्थापना आरंभ की है। और संसार के अविनाशी शास्त्रों के विषय में — कोई व्यक्ति सोच सकता है कि वह एक पुस्तक, कागज़ की पुस्तक जला सकता है, परंतु पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है जो ब्रह्म (परम सत्य) को जला सके। जो ऐसे कार्य करते हैं, उनके लिए यह उनके विनाश के समय बुद्धि के नष्ट होने का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 32:51 · 29 जनवरी 2023

सत्र 61 · प्रश्न 1117–1133

L58 - जलवायु परिवर्तन का संकेत कलियुग की समाप्ति का प्रमाण।

दिनांक: 2 फ़रवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1117 ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए? किन कर्मों से मानव समाज का कल्याण होगा? मानव समाज की रक्षा कैसे होगी और रोग-बीमारी से सुरक्षा कैसे मिलेगी?

उत्तर: केवल शरण या आशीर्वाद देकर कोई मानव समाज की रक्षा नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, यदि आप अपने घर में खाना बनाना बंद कर दें, तो एक दिन बाहर से मँगा सकते हैं, पर यदि वह विकल्प न हो, तो आपको खाना बनाना ही पड़ेगा या उपवास करना पड़ेगा। इसी प्रकार, ऐसे समय में हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है अपने कर्मों को बदलना। हमें वैदिक मार्ग पर लौटना होगा। जो वैदिक मार्ग पर आएँगे, वे सत्यवादी बनेंगे। अभी जो ठंड हम अनुभव कर रहे हैं, वह और भी अधिक बढ़ जाएगी। सब कुछ तीव्र हो जाएगा, जैसे बिजली का करंट 440 से बढ़कर 840 वोल्ट हो जाए। वर्षा ऋतु में वर्षा की मात्रा सामान्य से 50 गुना अधिक होगी, जिससे बाढ़ आएगी। अधिक हिमपात होगा और अधिक भूकंप आएँगे। कोई किसी की रक्षा नहीं कर पाएगा; हमें केवल अपने कर्म से ही रक्षा मिलेगी। Malika ही एकमात्र शास्त्र है जो मानव सभ्यता को रक्षा दे सकता है। यह आपको सत्यवादी, दिव्य और देवताओं के समान बनाएगा, परंतु आपके लिए इसके मार्ग पर चलना अनिवार्य है। हम महाविनाश के काल में हैं। लोग कह सकते हैं कि यह तो हमेशा कहा जाता है, पर जब पाप बढ़ता है, तो विनाश अनिवार्य है। लोगों को पाप के विषय में सचेत करना हमारा कर्तव्य है ताकि वे पाप कम कर सकें। यदि पृथ्वी पर पाप घटेगा, तो विनाश भी टल जाएगा। परंतु यदि पाप बढ़ता ही रहा, यदि लोग नहीं सुनते और वैदिक मार्ग पर नहीं चलते, और मनमानी करते हैं, तो इस संसार में एक भगवान हैं जो पृथ्वी, मानव समाज और समस्त जीवों की रक्षा के लिए अपना कार्य करते हैं। यदि समस्त मानवता धर्म की ओर मुड़ जाए, तो आज जो आपदाएँ और रोग लोगों को सता रहे हैं, वे समाप्त हो जाएँगे। परंतु लोग अपनी दिनचर्या में — कमाने और खाने में — उलझे हुए हैं, और वे सीखने या सुनने को तैयार नहीं हैं। बीमार पड़ने पर ही वे चिकित्सा की सहायता लेते हैं। यह चक्र चलता रहता है। पर धर्म का पालन करने से हमें रक्षा मिलेगी। मंत्र Kali Yuga के नहीं हैं; इस युग में केवल वे ही सबसे अधिक सुरक्षित रहेंगे जिनके पास शुद्ध वैदिक मार्ग और मंत्र साधना है।

► यह उत्तर सुनें · 09:40 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1118 मैंने पहले भी भागवत महापुराण कई बार पढ़ा है, परंतु इस बार जब मैंने सप्तम स्कंध पूरा किया, तो पुस्तक के भीतर से बालों की एक छोटी-सी लट निकली। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि भगवान ने आपको आपका कष्ट दिखाया, और भागवत पढ़ने से वह दूर हो गया, इसलिए उन्होंने इसे प्रमाण के रूप में छोड़ दिया। आपको इसे पढ़ते रहना चाहिए। हर सत्यवादी मनुष्य को इसे पढ़ना ही होगा क्योंकि हमें स्वयं को सत्यवादी बनाना है। गुरु परंपरा से आशीर्वाद लेना ठीक है, परंतु Trisandhya आपको स्वयं करनी होगी, भागवत स्वयं पढ़ना होगा, और ब्रह्मज्ञानी बनना होगा। Satya Yuga में सभी ब्राह्मण बनेंगे; यही मार्ग मैं बता रहा हूँ। समय बदलेगा; सात वर्ष शेष हैं। इस अवधि के भीतर मानवता को बदलना होगा। जो पहले बदल जाएँगे वे ठीक रहेंगे, पर जो बिल्कुल अंत में बदलेंगे उनका क्या होगा, यह हम नहीं कह सकते। भागवत पढ़ने से भगवान ने आपको यह प्रमाण दिया है, उस बालों की लट के माध्यम से आपको आपका कष्ट दिखाया है। कुछ भी बुरा नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:42 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1119 झारखंड के भविष्य के विषय में Malika क्या कहती है?

उत्तर: महान संत अच्युतानंद ने शास्त्रों में लिखा है। झारखंड में केवल वही बचेंगे जो पहले से भगवान के मार्ग पर हैं। भोजन मिलने में कुछ कठिनाई हो सकती है, परंतु भगवान महालक्ष्मी के माध्यम से अपने भक्तों के लिए भोजन की व्यवस्था करेंगे, और भक्त भी उनकी रक्षा करेंगे। झारखंड में एक बड़े भूकंप से भारी तबाही होगी, और उसके साथ 'पंचामृत' का प्रलय भी होगा। रोग और बीमारियाँ बनी रहेंगी क्योंकि Malika समस्त संसार के लिए, हर स्थान के लिए लिखी गई है। इसलिए आपको धर्म के मार्ग पर रहना चाहिए, Malika का पालन करना चाहिए, और ऑनलाइन सत्संग में सम्मिलित होकर भगवान की शरण में रहना चाहिए। यह आपके लिए अच्छा है। एक समय आएगा जब इंटरनेट नहीं होगा, और हम आपका मार्गदर्शन नहीं कर पाएँगे। कल मंत्र जपने से परसों की आपदा से बचाव नहीं हो सकता। इसीलिए हम पहले से इस मार्ग का प्रचार कर रहे हैं। यह सब 2032 तक Satya Yuga के आगमन से पहले हो रहा है। जब महायुद्ध आरंभ होगा, तब इंटरनेट बार-बार बंद होगा। मैं आपको पहले ही बता रहा हूँ, इंटरनेट बंद रहेगा, और हम संवाद नहीं कर पाएँगे। जो लोग अभी जानते हैं, वही माध्यम बनेंगे जिनसे दूसरे बदलेंगे। समय कम है, इसलिए इस सीमित समय का उपयोग धर्म के लिए कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:17 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1120 एक व्यक्ति हैं जिनमें अच्छे संस्कार और संस्कृति है, परंतु वे भगवान का नाम स्मरण नहीं करतीं। तो, वे जो कर रही हैं वह धर्म माना जाएगा या नहीं? कृपया बताइए।

उत्तर: देखिए, एक सच्चा मनुष्य जो धर्म के मार्ग पर शुद्ध आत्मा है, यह बहुत अच्छी बात है। परंतु जिस युग की ओर हम बढ़ रहे हैं, उसमें ऐसा है जैसे किसी को अमेरिका जाना हो तो उसे हवाई जहाज़ से जाना ही पड़ेगा। इसी प्रकार, सत्य के नाम का जप करना आवश्यक है। यदि कोई अच्छा व्यक्ति है, संत है, साधु है, अच्छे कर्म कर रहा है, तो यह संसार के लिए दुर्लभ और मूल्यवान है। परंतु भगवान का नाम ही मुक्ति का मार्ग है। यदि वे अपने अच्छे कर्मों के साथ नाम का जप भी करें, तो उनके लिए बहुत लाभकारी होगा। यह आवश्यक है। यदि उन्हें भगवान में श्रद्धा है, तो उनका नाम जपने में क्या समस्या है? सत्यनिष्ठा भगवान द्वारा रची गई है, और भगवान स्वयं धर्म की स्थापना के लिए आते हैं। यह भगवान Kalki की धर्म-स्थापना का समय है; वे स्वयं आ रहे हैं। ऐसे समय में उनकी उपासना करना, उनसे प्रार्थना करना, और उनके नाम का जप करना हमारे लिए दुर्लभतम सौभाग्य है। यह भाग्य की बात है। जो हो रहा है वह अच्छा है, पर इस साधना को जोड़ने से यह और भी उत्तम हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:49 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1121 मैं सूरत से दर्शन हूँ। जब मैं गहरी एकाग्रता के साथ त्रिसंध्या करता हूँ, तो पहले मुझे अपने पेट के हिस्से से कंपन उठते हुए महसूस होते थे। अब ऐसा लगता है कि वे छाती से आ रहे हैं, और मुझे चेहरे के हिस्से में अधिक कंपन महसूस होते हैं। मेरा शरीर ठंडा हो जाता है, और कंपन ऊपरी हिस्सों में अधिक स्पष्ट होते हैं, मानो वे वहीं से शुरू होते हों। मैं इसे पूरी तरह समझ नहीं पाता। मैंने थोड़ा-बहुत पढ़ा है कि इसका अर्थ हो सकता है कि मेरी ऊर्जा ऊपर उठ रही है, लेकिन मुझे पूरा ज्ञान नहीं है। कृपया कुछ मार्गदर्शन दीजिए?

उत्तर: सृष्टि होती है, और आपकी ऊर्जा नाभि में उत्पन्न हुई थी। वह ऊपर उठकर आपकी त्रिकुटी (भौंहों के बीच का स्थान) तक जाएगी। जब वह वहाँ पहुँचेगी, तब आप पूर्ण रूप से भगवान के प्रति समर्पित हो जाएँगे। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि ऊर्जा नाभि में उत्पन्न होती है और उसकी यात्रा यहाँ (त्रिकुटी पर) पूर्ण होती है। यह बहुत अच्छा संकेत है। अपने मार्ग पर चलते रहिए, यह और भी बेहतर होता जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:24 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1122 मैंने एक गाय का सपना देखा, और उसके थन से दूध बह रहा था। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: दूध अमृत की धारा है; यह मानव जीवन-व्यवस्था का पालन करता है। जन्म देने वाली माता के बाद, जो हृदय से मनुष्यों का पोषण करती है, वह गौ माता है। उसके थन से बहता दूध अमृत की धारा है। यह वेदों की धारा है, धर्म की पवित्र धारा है। यह स्वप्न आपको उस पवित्रता का बोध कराता है। यह बहुत अच्छा स्वप्न है, माता जी। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए अच्छा है जो धर्म के कार्य कर रहे हैं। भगवान की शरण में रहिए, त्रिसंध्या कीजिए, और आपको ऐसे और भी अच्छे स्वप्न दिखाई देंगे। यह धर्म के आगमन का संकेत है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 32:10 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1123 मेरा प्रश्न यह है कि जब महाप्रलय आएगा, तो आपने सत्संग में कहा था कि भगवान भक्तों को सुरक्षित स्थान पर ले जाएँगे। उस समय हमें सत्संग या भागवत पुराण जैसे ग्रंथ उपलब्ध नहीं होंगे, तो हम कैसे काम चलाएँगे?

उत्तर: देखिए, पुत्र। सत्संग करने वाले भक्तों की रक्षा के लिए भगवान कल्कि 16 मंडलों (दिव्य समूहों) का निर्माण करेंगे। आप सब इन 16 मंडलों के सदस्य बनेंगे। इन मंडलों के माध्यम से दिव्य शक्ति का प्रकाश उपस्थित रहेगा। मंडलों के भक्तों को जो भी आवश्यक होगा—उनकी रक्षा कैसे होगी, क्या कार्य करने हैं—वह सब भगवान के निर्देशानुसार आपको बताया जाएगा। इसलिए उसकी चिंता मत कीजिए। अभी के लिए सत्संग से जुड़िए। 16 मंडलों का निर्माण चल रहा है और आने वाले समय में पूर्ण हो जाएगा। भक्त इन मंडलों के भीतर रहेंगे और भगवान की कृपा से सुरक्षित रहेंगे। उनके आशीर्वाद से 16 मंडलों के भक्त सम्पूर्ण विश्व में धर्म की स्थापना करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:10 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1124 क्या हम गायत्री संध्या कर सकते हैं (गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं)?

उत्तर: पिछले युगों में सभी गायत्री मंत्र का जप करते थे, लेकिन कलियुग में कुछ विशेष विधान हैं। गायत्री मंत्र का जप पृथ्वी को पवित्र करता है और उसे स्वर्गमय बनाता है। उससे जो ध्वनि निकलती है वह सारे संसार में फैलती है, पृथ्वी को महान आनंद और देवताओं को शांति प्रदान करती है। जैसे फ़िल्टर वायु और जल को शुद्ध करता है, वैसे ही इस मंत्र के प्रभाव से पंचतत्व शुद्ध होते हैं। आपको गायत्री मंत्र अवश्य जपना चाहिए; कोई समस्या नहीं है। यदि आप ब्राह्मण हैं, तो ऐसा करना आवश्यक है। परंतु त्रिसंध्या का जो मार्ग मैं बताता हूँ, वह वही है जिसका पालन करने का निर्देश स्वयं मालिका देती है। मैं आपको यह ईश्वर की इच्छा के अनुसार बता रहा हूँ। यह साधना आपको पृथ्वी से लेकर आकाश तक, पंचतत्वों से संबंधित सभी आपदाओं से रक्षा करेगी। अंततः सभी इस मार्ग से जुड़ेंगे, लेकिन सभी को सुरक्षा नहीं मिलेगी, क्योंकि जो प्रारंभ से ही इस मार्ग पर हैं उनके शरीर अधिक पवित्र होंगे। जो बाद में जुड़ेंगे उनका क्या होगा, यह ईश्वर के विवेक पर है, मेरे नहीं। परंतु महर्षि अच्युत ने लिखा है कि समय रहते इसका पालन करने से मानवता और संसार का कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:35 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1125 आने वाले सत्ययुग में शासन व्यवस्था या राष्ट्रध्वज कैसा होगा?

उत्तर: हाँ, यह भी मालिका में लिखा है। जब कलियुग समाप्त होगा, तब सुधर्म सभा (सत्य धर्म की सभा) की स्थापना होगी, और विश्व के लिए एक नया संविधान बनेगा। ध्वज न लाल होगा न पीला; पंचरंगी ध्वज नियत किया गया है।

► यह उत्तर सुनें · 36:35 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1126 आप कहाँ से बोल रहे हैं?

उत्तर: देखिए, पुत्र, हमारा कार्य मालिका का प्रचार करना है। मालिका, जो मूल रूप से ओड़िया भाषा में लिखी गई थी, भगवान की कृपा से अनूदित हुई है, और हम आपके कल्याण के लिए उसका संदेश फैला रहे हैं। अपनी स्वयं की भक्ति और अनुभव से आप इसके बारे में बहुत अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे। पुस्तकें पढ़कर आपको अनेक सत्य मिलेंगे। ऐसे समय में, यदि आप मार्ग पर बने रहेंगे, तो अपने प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं पा लेंगे। यह कोई साधारण बात नहीं है। जो कार्य बड़े-बड़े संत और ऋषि करेंगे, वही कार्य हमारे मार्ग पर चलने वाले साधारण लोग भी कर सकेंगे। मार्ग सही होना चाहिए। मार्ग में या आपकी श्रद्धा में कोई विचलन नहीं होना चाहिए। तब आपको सब कुछ ज्ञात हो जाएगा। क्योंकि पुस्तकों से मिलने वाले बाहरी ज्ञान से परे, भीतरी ज्ञान—अनुभव का ज्ञान—ही आपको बहुत कुछ सिखाएगा। जो मार्ग मैं आपको दिखा रहा हूँ वह आपके भले के लिए है। सत्संग से जुड़िए। यदि आप और जानना चाहते हैं, तो सत्संग में चर्चाएँ होती हैं। जुड़ने के लिए आप दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:36 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1127 भविष्य में अन्न और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी तथा धन के अवमूल्यन की बहुत चर्चा हो रही है। इस पर आपकी क्या टिप्पणी है?

उत्तर: यह सबके लिए बहुत अच्छा और रोचक प्रश्न है, और इसकी जानकारी होना आवश्यक है। देखिए, 2023 की आर्थिक स्थिति बदलेगी। इसका पतन 2026 में शुरू होगा। आज हमारे पास जो सांसारिक संपत्ति है, जैसे धातुएँ और अन्य संपत्तियाँ—मालिका में लिखा है कि एक समय आएगा जब वे किसी काम की नहीं रहेंगी। परंतु वह समय अभी नहीं आया है; अभी कुछ समय है। सांसारिक संपत्ति, धन और रत्न सब समय के साथ धीरे-धीरे अपना मूल्य खोते जाएँगे, यहाँ तक कि वे निर्मूल्य हो जाएँगे। लेकिन इसके आधार पर अभी कोई कदम मत उठाइए। 2025 के बाद मैं इस पर फिर बोलूँगा, और आप इसे होते हुए देखेंगे। एक समय आएगा जब सड़क पर पड़ा सोना भी लोग उठाने की परवाह नहीं करेंगे। उसका क्या उपयोग होगा? लोग अन्न के लिए भीख माँगेंगे पर उन्हें नहीं मिलेगा। सौ लोगों में से शायद एक ही जीवित बचेगा। मानवता कैसे बचेगी? परंतु जो धर्म के मार्ग पर हैं, उनके लिए भगवान सब कुछ, अन्न सहित, व्यवस्था करेंगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है, और मालिका में लिखा है कि भगवान किसी न किसी प्रकार से अपने भक्तों की रक्षा करेंगे—जो मार्ग पर बने रहते हैं और इसमें विश्वास रखते हैं। कलियुग का अंत तब निकट होगा जब लोग भूमि, स्वर्ण और स्त्री को सबसे बड़ा धन मानने लगेंगे, सबसे ऊपर। हम पहले ही देख रहे हैं कि जमीन के दाम आसमान छू रहे हैं। हम देखते हैं कि रिश्तों को लेकर परिवार टूट रहे हैं, क्योंकि लोग इन सांसारिक वस्तुओं को प्राथमिकता देते हैं। यह समय का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 40:27 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1128 त्रिपुरा के भक्तों और उनके भविष्य के एकत्रीकरण के बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: भक्तों ('बाओ' कहे जाने वाले) का एकत्रीकरण मालिका के माध्यम से होगा। मालिका का जितना अधिक प्रचार होगा, उतने ही अधिक चारों युगों के भक्त एकत्र होंगे। भक्तों का एकत्रीकरण पहले से ही चल रहा है। त्रिपुरा के भक्त भी एकत्र होंगे; वे 'कालिका मंडल' का हिस्सा होंगे। एक कालिका मंडल बनेगा, जिसमें असम, कोलकाता, त्रिपुरा, नागालैंड, मिजोरम और कई निकटवर्ती राज्यों के भक्त शामिल होंगे। इसलिए आप हमारे सत्संग से जुड़े रहिए, मालिका का अनुसरण कीजिए, और संध्या कीजिए। यह आपके लिए अच्छा है। यह तथ्य ही कि आप मालिका के संपर्क में आ रहे हैं, इसका अर्थ है कि आपके कुछ 'संस्कार' (पूर्व के आध्यात्मिक पुण्य) हैं। यही संस्कार आपको आज सत्संग में हमसे बात करने में समर्थ बना रहा है। यह समय है स्वयं को बदलने का और समय के साथ संसार को बदलने का।

► यह उत्तर सुनें · 44:51 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1129 आपने बिहार के बारे में कुछ उल्लेख किया था। कृपया उसे विस्तार से बताइए?

उत्तर: देखिए, बिहार के संबंध में... बिहार की भूमि पर अनेक स्थानों पर हनुमान जी तपस्या में लीन हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उनका जन्म वहीं हुआ था, परंतु वे आज भी वहाँ तपस्या में उपस्थित हैं, यह तथ्य सभी को ज्ञात नहीं है। हनुमान जी प्रकट होंगे। इसीलिए बिहार में हनुमान जी के अनेक भक्त हैं। यह क्षेत्र भूकंपों से बहुत प्रभावित होगा, और बहुत क्षति होगी। पंचतत्वों के प्रभाव और रोग भी व्याप्त होंगे। यह तत्काल नहीं होगा बल्कि धीरे-धीरे प्रकट होगा। लोग धीरे-धीरे बदलेंगे। एक ओर धर्म की स्थापना होगी, और दूसरी ओर ये संकेत प्रकट होंगे। मालिका का पालन करके और मार्ग पर बने रहकर, आपको स्वयं को सुदृढ़ करना होगा और सत्यवान बनने का कार्य आरंभ करना होगा। एक समय आएगा जब सभी मालिका की ओर मुड़ेंगे और भगवान की शरण लेंगे, क्योंकि जब स्वयं भगवान धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हो रहे हैं, तो उनसे बड़ा कोई और नहीं होगा। संकेत पहले से ही दिख रहे हैं। लोग अभी विश्वास न करें, परंतु भविष्य में वे अपने मुख से स्वीकार करेंगे कि जो भविष्यवाणी की गई थी वह सत्य हुई। परंतु तब विश्वास करने से क्या लाभ? अभी विश्वास करने से लोगों को बदलने में सहायता मिल सकती है। अभी समय है। बाद में, संघर्ष के समय में, परिवर्तन के लिए बहुत कम समय होगा। इस समय भगवान कल्कि से बड़ा कोई नहीं है। अन्य सभी देवता अपने दिव्य लोकों को छोड़कर मानव शरीर में जन्म ले चुके हैं, और धर्म की स्थापना की तैयारी कर रहे हैं। आप भी मालिका के माध्यम से इसका अनुभव और ज्ञान प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 46:58 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1130 जो बच्चे दिन में केवल एक बार संध्या करते हैं पर भागवत भी पढ़ते हैं, उनके बारे में मालिका क्या कहती है?

उत्तर: देखिए, शास्त्र हमें ध्रुव की कथा सुनाते हैं। बहुत छोटी अवस्था में ही वे अकेले तपस्या करने वन चले गए थे। माता-पिता के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम अपने बच्चों का मार्गदर्शन करें। वे विद्यालय जाते हैं और पढ़ते हैं। यदि उन्हें सुबह समय मिले, तो उन्हें करना चाहिए। यदि वे दिन में विद्यालय में हैं, तो अवकाश के समय केवल पाँच मिनट लेकर कर सकते हैं। उनमें ये संस्कार डालना महत्वपूर्ण है। ये बच्चे बड़े होकर संसार को सनातन संस्कृति के सिद्धांत सिखाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:14 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1131 क्या आप कृपया एक व्यक्तिगत समस्या पर मार्गदर्शन दे सकते हैं? (प्रश्न स्पष्ट नहीं है, परंतु ऐसा लगता है कि यह कष्टों से राहत पाने के बारे में है।)

उत्तर: उन्हें इस मार्ग पर विश्वास करना होगा और इसे समझना होगा। तब उनके लिए सब कुछ ठीक हो जाएगा। संदेश का प्रचार किया जा रहा है। जो लोग 'माधव' नाम के जप की धारा में बने रहेंगे, उन्हें सबसे बड़ी राहत मिलेगी। और इसका प्रमाण स्वयं भगवान देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:27 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1132 समाज की वर्तमान स्थिति और उसके कानूनों के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है, विशेषकर तब जब वे धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध प्रतीत होते हैं?

उत्तर: देखो बेटा, यह एक गणतंत्र है। मैं धर्म के प्रचारक के रूप में कार्य कर रहा हूँ। मेरी व्यक्तिगत मान्यताओं के आधार पर दुनिया नहीं बदलेगी, क्योंकि हम Kali Yuga के संविधान और कानूनों के अधीन जी रहे हैं। दुनिया में बहुत सी ऐसी बातें होंगी जिनकी अनुमति वेद या शास्त्र नहीं देते। पर हम क्या कर सकते हैं? यह Kali Yuga का अंतिम चरण है। समय सब कुछ प्रकट करेगा, क्योंकि हम निर्धारित समय से पहले या बाद में कुछ नहीं कर सकते। पर इतना मैं अवश्य कहूँगा: भक्तों के लिए बहुत अच्छा समय आ रहा है। हमें उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी और भगवान Kalki की शरण लेनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 53:07 · 2 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1133 योगी आदित्यनाथ का भविष्य क्या है और वे कौन-सी भूमिका निभाएँगे?

उत्तर: यदि योगी जी संसार के लिए अच्छा कार्य करते हैं—और बहुत अच्छा कार्य वास्तव में हो भी रहा है, और भविष्य में वे और भी बेहतर करेंगे—तो उन्हें उसका फल मिलेगा। अच्छे लोगों को अच्छा फल मिलना ही चाहिए। परंतु अंततः भगवान किसे कहाँ स्थापित करेंगे, यह प्रभु तय करते हैं, मैं नहीं। हम यह निर्णय नहीं कर सकते। Satya Yuga का आगमन आरंभ हो रहा है। इस नई शुरुआत के लिए प्रभु अच्छे लोगों को पृथ्वी पर ला रहे हैं और उन्हें शासन का दायित्व दे रहे हैं। यह एक क्रम है कि किसी बड़े परिवर्तन से पहले अच्छे लोग सत्ता में आते हैं और शासक बनते हैं। Satya Yuga से पहले बदलते हुए वातावरण का अनुभव आप स्वयं कर सकते हैं। Satya Yuga बहुत जल्दी आ रहा है, और उससे पहले हम धर्म की धारा में परिवर्तन और शासन में बदलाव देख रहे हैं। यह भारत के लिए और संसार के लिए शुभ है।

► यह उत्तर सुनें · 55:30 · 2 फ़रवरी 2023

सत्र 62 · प्रश्न 1134–1146

L59.2 - श्रीमद् भागवत में कलियुग - अंत का प्रमाण | पं. श्री काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 19 फ़रवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1134 हरिद्वार, उत्तराखंड से एक व्यक्ति पूछती हैं: उनके घर में मांस खाया जाता है, पर वे स्वयं नहीं खातीं। क्या वे सत्संग में सम्मिलित हो सकती हैं?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। सनातन धर्म पूरे विश्व में प्रकाशित होगा, और सभी धर्मों के लोग सनातन धर्म से जुड़ेंगे। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि भारत के बाहर विश्व के सभी देशों में सनातन धर्म स्थापित होगा। केवल एक ही धर्म रहेगा, और यह बलपूर्वक नहीं होगा। सनातन धर्म के प्रचार और उसके सिद्धांतों के कारण लोग स्वयं इसकी ओर आने को विवश होंगे। आध्यात्मिक संस्कृति और भागवत पढ़े जाएँगे, और भगवान Kalki पूरे विश्व पर शासन करेंगे। तो सभी धर्मों के लोगों को आने की अनुमति है, परंतु उनका 'धारा' (निर्धारित मार्ग) में आना आवश्यक है। उन्हें Trisandhya धारा को अपनाना चाहिए और प्रभु की शरण में आना चाहिए। जब समय आएगा, सब आएँगे। हमें उन्हें कहना भी नहीं पड़ेगा। यदि वह महिला आना चाहती हैं, तो कोई रोक-टोक या बाधा नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 14:24 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1135 क्या हम जो पाठ करते हैं, वह सामग्री हम उन्हें भेज सकते हैं?

उत्तर: हाँ, भेज सकते हैं। आप सब भेज सकते हैं। उन्हें करना चाहिए। यह बहुत अच्छा है। इसी प्रकार Bhavishya Malika का प्रचार होगा। इसका प्रचार इसीलिए हो रहा है, ताकि सभी धर्मों और मतों के लोग धीरे-धीरे जुड़ें और मिलकर एक वैश्विक सनातन धर्म बने। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 16:29 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1136 मैं गुड़गांव से संदीप हूँ। द्वापर युग में जब भगवान अवतरित हुए, तब बड़े-बड़े ऋषि, संत और योगी, जो भविष्यद्रष्टा थे, वे भी उन्हें पहचान नहीं सके; उन्होंने उन्हें साधारण मनुष्य समझा। स्वयं अर्जुन ने भी उन्हें मित्र माना, भगवान नहीं, जब तक भगवान ने उन्हें अपना विराट रूप नहीं दिखाया। तभी उन्होंने समझा कि श्रीकृष्ण समस्त ब्रह्मांड के स्वामी हैं। तो हम तो Kali Yuga के जीव हैं, इतने चंचल मन वाले; हम जैसे लोग भगवान को कैसे पहचान पाएँगे? हमें विश्वास कैसे होगा?

उत्तर: इस Kali Yuga में मनुष्यों में उतनी क्षमता नहीं है। लोग खाने-पीने तक सीमित हैं। उनके पास कुछ ज्ञान है और थोड़ा-सा तकनीकी ज्ञान है। इसीलिए भगवान ने स्वयं लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए Bhavishya Malika पुराण की रचना की। Malika में भगवान ने सुदामा से कहा, 'देखो, यह Malika जो तुम लिख रहे हो, जब Kali Yuga समाप्त होगा, तब इसका प्रचार होगा। मेरे भक्त इस Malika को सुनेंगे, समझेंगे, और Malika का अनुसरण करके मेरी शरण में आएँगे।' क्योंकि Malika में विस्तार से बताया गया है कि भक्तों का समागम, भगवान के अवतार का स्थान, भगवान Kalki कहाँ और कब अवतरित होंगे, भक्त और भगवान कैसे मिलेंगे, कौन-से भक्त संगठन बनाएँगे, बीच में क्या स्थिति होगी, किस नाम से भक्तों की रक्षा होगी, और किस मार्ग से सत्य प्रकट होगा। तो आपको Malika की शरण लेनी चाहिए, और Malika के माध्यम से आप भी भगवान Kalki से जुड़ेंगे। जो Bhavishya Malika को सुनते और देखते हैं, भगवान उन्हें स्वप्न के माध्यम से बहुत से सत्य प्रकट करेंगे, और उनका मन और शरीर स्वयं भगवान के अनुरूप हो जाएगा। क्योंकि यह ग्रंथ प्रभु की इच्छा से लिखा गया है, उन्हीं की इच्छा से इसका प्रचार हो रहा है, और इसे सुनकर तथा इसका अनुसरण करके आप भी भगवान Kalki से मिलेंगे। जैसे-जैसे यह युग समाप्त होगा, वैसे-वैसे एक नया युग भी आरंभ होगा। बहुत कम समय है। सत्संग से जुड़ें, मार्ग का अनुसरण करें, और संध्या का पालन करें। आप मुझे अपने अनुभव बताएँगे; आप भी देखेंगे कि क्या होने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 19:29 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1137 गुरुजी, मैं कई दिनों से आपके YouTube के माध्यम से जुड़ा हूँ और मुझे आपके Bhavishya Malika पुराण का पहला भाग मिला है। मेरा प्रश्न यह है कि पढ़ते समय, आपने Satya Yuga और Kali Yuga दोनों में 'पंचसखा' के अवतारों का उल्लेख किया है, और उसमें हनुमान जी का नाम भी सम्मिलित है। परंतु हनुमान जी तो सभी रूपों में 'चिरंजीवी' (अमर) हैं, है ना?

उत्तर: त्रेता युग में हनुमान जी भगवान श्रीराम के साथ भगवान शिव के 11वें रुद्र अवतार के रूप में थे। हनुमान जी ने भगवान राम के साथ धर्म की स्थापना में कार्य किया। पंचसखा वे पाँच मुख्य व्यक्ति हैं, प्रभु के पाँच मूल तत्व, जिन्होंने धर्म की स्थापना में भाग लिया, और उनमें हनुमान जी का नाम भी सम्मिलित है। इसका यह अर्थ नहीं है कि... हनुमान जी रुद्र अवतार हैं, वे स्वयं भगवान शिव हैं जो पृथ्वी पर आए। और Kali Yuga में, उस समय, हनुमान जी पुनः प्रभु के पास आएँगे। प्रभु की इच्छा से वे विश्वभर में धर्म-स्थापना के कार्य की देखरेख करेंगे। वे भक्तों की रक्षा करेंगे और पापियों का नाश करेंगे। विदेशी भी नष्ट होंगे। विभीषण आएँगे, हनुमान जी आएँगे। इसी अर्थ में उन्हें अवतार माना जाता है। भगवान Kalki का शरीर भगवान राम के समान होगा।

► यह उत्तर सुनें · 23:10 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1138 महाराज जी, एक और छोटा प्रश्न। आपने YouTube पर कहा था कि पाकिस्तान, 13 या 57 इस्लामी देशों और चीन के साथ मिलकर भारत पर आक्रमण करेगा, जैसा कि Bhavishya Malika में लिखा है। क्या 'पाकिस्तान' नाम विशेष रूप से उल्लिखित है, क्योंकि पाकिस्तान तो 1947 में ही बना था?

उत्तर: लिखा है। और तुर्की तथा ईरान... परसों ही ईरान ने भारत में एक बैठक छोड़ दी। और तुर्की के बारे में मैंने 2020 में कहा था। मैंने कहा था कि तुर्की में एक विनाशकारी भूकंप आएगा, और मैंने उसके परिणाम भी बताए थे। आप 2020 का वह एपिसोड देख सकते हैं। मैं विशेष रूप से तुर्की की बात कर रहा था। इसका अर्थ है कि तुर्की भविष्य में हमारी सहायता नहीं करेगा। कभी नहीं करेगा। प्रभु के भक्त पूरे विश्व में भी हैं। सभी भक्तों को बचाने के लिए धर्म की स्थापना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 25:27 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1139 क्या आप कृपया 'Trisandhya धारा' (तीन समय की दैनिक प्रार्थना का मार्ग) समझा सकते हैं, जिसका आपने उल्लेख किया?

उत्तर: हाँ, यह बहुत अच्छी बात है। हमारे लोग सत्संग करते हैं और Malika के मार्ग से जुड़े हैं। हम पूरे विश्व के भक्तों को भी जोड़ते हैं; विवरण और नंबर नीचे दिया गया है। पृथ्वी और ब्रह्मांड का संतुलन, देवताओं की पूजा, और पृथ्वी तथा ब्रह्मांड की रक्षा—ये सब इस भगवान-प्रदत्त, वेद-आधारित मार्ग का हिस्सा हैं। पहली संध्या प्रातः 3:30/3:45 बजे से 6:30 बजे तक है। दूसरी संध्या सुबह 11:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक है। तीसरी संध्या सूर्यास्त के समय है। इन तीनों संध्या समयों में 16 नामों का जप करना चाहिए, भगवान का दशावतार स्तोत्र पढ़ना चाहिए, किसी एक संध्या में श्रीमद्भागवत का पाठ करना चाहिए, दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करना चाहिए, और भगवान Madhava का नाम 108 बार जपना चाहिए। इस मार्ग का पालन करने से, यदि समय के कुछ बुरे प्रभाव हम पर आ भी जाएँ, तो प्रभु आपकी रक्षा करेंगे। क्योंकि प्रभु देखेंगे, 'देखो, ये लोग Trisandhya कर रहे हैं, ये Satya Yuga की ओर बढ़ रहे हैं, इन्होंने मांस-मछली छोड़ दिया है और धर्म की ओर बढ़ रहे हैं, तो मेरा आशीर्वाद इन पर अवश्य होना चाहिए।' भगवान की कृपा, भगवान Kalki की कृपा पाने के लिए, यह मार्ग आप सबके लिए आवश्यक है। पूरी विस्तृत विधि जानने के लिए आप डिस्क्रिप्शन में दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 28:25 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1140 अगर कोई व्यक्ति काम कर रहा है, नौकरी करता है, या किसी और वजह से व्यस्त है, तो निर्धारित समय पर — जैसे दोपहर या शाम को — संध्या करने का क्या उपाय है?

उत्तर: देखिए, अगर आप काम पर हैं या यात्रा कर रहे हैं, तो शायद उस समय आप भागवत नहीं पढ़ पाएँगे। ऐसी स्थिति में आप रात को घर लौटकर पढ़ सकते हैं। या फिर सोने से पहले उसे अपने साथ ले जाइए, पैर धोइए, भगवान और माँ गंगा का स्मरण कीजिए, और फिर 5-10 मिनट भागवत पढ़िए। रहीं बाकी संध्याएँ, तो अगर आपके पास स्तोत्र पढ़ने का समय नहीं है, तो दो-तीन मिनट निकालना ज़रूरी है। इतने समय में 16 नामों का जप लगभग 30 सेकंड में हो जाएगा, और दशावतार स्तुति... यहाँ तक कि माधव का नाम 11 बार जप लेना भी पर्याप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:47 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1141 पंडित जी, कृपया हमें वे 16 नाम बताइए?

उत्तर: आप इसे रिकॉर्ड कर सकते हैं, या फिर यह आपको इसी यूट्यूब वीडियो में मिल जाएगा। विष्णु... भोजन... नारायण... [प्रतिलेख अधूरा है]। इसीलिए मैं कहता हूँ, अगर समय नहीं है तो 11 बार भी जप कर लीजिए और रात को भागवत पढ़ लीजिए। आपको आनंद और शांति मिलेगी, और भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी। भगवान कल्कि संसार में सब कुछ देखते हैं, वे देखते हैं कि उनके कौन-से भक्त उनके मार्ग पर चल रहे हैं। इसीलिए मालिका लिखी गई। यह भगवान कल्कि का दिया हुआ मार्ग है। यह भगवान कल्कि का दिया हुआ मार्ग है, जो 600 वर्ष पहले स्थापित किया गया था, और मैं तो बस इसका प्रचार कर रहा हूँ ताकि यह आप तक पहुँचे।

► यह उत्तर सुनें · 32:00 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1142 साधना पूरी करने में लगभग आधे घंटे से 45 मिनट लगते हैं। क्या इसमें कोई समस्या है?

उत्तर: देखिए, नाम जप... मैं 108 बार कहता हूँ, पर आप 1008 या 2008 बार भी कर सकते हैं। जितनी अधिक 'मंत्र सिद्धि' आप प्राप्त करेंगे, उतने ही अधिक अनुभव आपको होंगे। और मैं विशेष रूप से उन सभी भक्तों से कहना चाहता हूँ जो त्रिसंध्या में आए हैं, जो आएँगे, और जो मालिका के मार्ग पर चल रहे हैं या चलेंगे — भगवान उन्हें स्वप्न में सब कुछ बता देंगे कि क्या होने वाला है और क्या नहीं। इसी माध्यम से उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी, क्योंकि यह स्वयं भगवान का मार्ग है। हम तो बस इसका प्रचार कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:12 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1143 पिताजी, एक और प्रश्न है। जब हम घर पर होते हैं, तो हम पूजा-प्रार्थना करते हैं। पर उसके बाद जब हम बाज़ार जाते हैं या घर से निकलते हैं, तो भी हम भगवान का स्मरण और नाम जप करते रहते हैं — जैसे कार चलाते हुए, मोटरबाइक चलाते हुए, या कहीं बैठे हुए। पर थोड़ा संशय होता है, क्योंकि हमने जूते पहने होते हैं, और जूते पहने हुए ही हम गाड़ी चला रहे होते हैं और भगवान का नाम भी ले रहे होते हैं। क्या यह स्वीकार्य है?

उत्तर: आप अपने कार्यस्थल पर जूते पहने हुए भी नाम जप कर सकते हैं। देखिए, ये सब बाहरी, भौतिक बातें हैं। मन का भगवान से जुड़ने पर कोई रोक नहीं है। मन भगवान का ही अंश है, और जितना अधिक हम उसे जाग्रत करेंगे, उतनी ही अधिक भगवान की कृपा हमें प्राप्त होगी। तो अपने कार्यस्थल पर, चाहे आपने जूते पहने हों, कोई विशेष पोशाक पहनी हो, या आप कार चला रहे हों, आप बाज़ार में 3-5 मिनट निकालकर यह कर सकते हैं। या गाड़ी चलाते हुए भी आप उनका नाम ले सकते हैं। हाँ, गाड़ी चलाते समय मैं यह सलाह दूँगा कि ऐसी सुनसान जगह पर यह न करें जहाँ आसपास कोई न हो, क्योंकि जैसा कि मालिका में लिखा है, दुष्टों की संख्या बढ़ गई है। लोग चोरी और डकैती करेंगे। इसलिए अपनी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए, ये सब सुरक्षित स्थान पर करना ही बेहतर है। फिर भी, अगर भगवान की कृपा आप पर है, तो ऐसी बातें नहीं होंगी। पर इसका यह अर्थ नहीं कि हम आसुरी शक्तियों से प्रभावित क्षेत्र में ये कार्य करें।

► यह उत्तर सुनें · 35:16 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1144 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि मैं तीन-चार दिनों से त्रिसंध्या के मार्ग पर चल रहा हूँ, और मेरे हृदय में भगवान कल्कि के दर्शन की तीव्र इच्छा उठती है। मुझसे सहा नहीं जाता, आँखों में आँसू आ जाते हैं, इतनी व्याकुलता होती है।

उत्तर: भगवान के दर्शन उनके भौतिक स्वरूप में हो सकते हैं — सगुण और निर्गुण, दोनों रूपों में। भगवान के दर्शन उनके स्वरूप का ध्यान करके भी हो सकते हैं। तो समय की प्रतीक्षा कीजिए। जब समय आएगा, तब यह होगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:22 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1145 क्या साधना या सत्संग के दौरान सांसारिक कार्य, जैसे फोन कॉल, निपटाना उचित है?

उत्तर: साधना के लिए 10-15 मिनट निकालना ज़रूरी है। उतनी देर तो कम से कम आपको अपना फोन बंद करके ही यह करना चाहिए। साधना पूरी हो जाने के बाद, आप अपने परिवार से जितनी देर चाहें बात करें, कोई समस्या नहीं। पर सत्संग के बीच में ऐसा करना उचित नहीं है। अगर आपके लिए ऐसा करना आवश्यक ही हो जाए, तो आपको सत्संग और त्रिसंध्या की विचारधारा छोड़ देनी चाहिए। आपको मालिका का मार्ग छोड़ देना चाहिए; वही आपके लिए बेहतर होगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:13 · 19 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1146 कितनी शिक्षा की आवश्यकता है? मैं बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ और कभी-कभी साधारण बातें भी समझ नहीं पाता।

उत्तर: एक व्यक्ति पढ़ेगा तो दूसरा समझ जाएगा। अच्छा है, इसलिए पढ़िए। बहुत अच्छा है। हमें नहीं पता कि हमारे देश और संसार में क्या होगा, या कब होगा। जैसा मैंने कहा, ऐसे समय में जो त्रिसंध्या के मार्ग पर चलेंगे, वे सत्य युग तक पहुँचेंगे। और समय बता देगा; ज़्यादा समय नहीं है, 7 वर्ष से अधिक नहीं। ऐसे समय में धर्म के अलावा हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। न धन, न विद्या, न संबंध, न मान, न यश, न तत्व, न शक्ति, न कोई व्यवस्था काम आएगी। केवल 'धारा' (निर्धारित मार्ग) ही काम आएगी। उस मार्ग पर चलकर... [समय समाप्त हो गया है]।

► यह उत्तर सुनें · 40:50 · 19 फ़रवरी 2023

सत्र 63 · प्रश्न 1147–1147

L59.1 - श्रीमद् भागवत में कलियुग - अंत का प्रमाण | पं. श्री काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 19 फ़रवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1147 आज लोगों के मन में एक प्रश्न है: क्या Kali Yuga सचमुच समाप्त हो गया है? यदि समाप्त हो गया है, तो इसका प्रमाण क्या है? लोग किस आधार पर इसे मानेंगे? और सनातन धर्म कैसे बचेगा?

उत्तर: इसका उत्तर और प्रमाण श्रीमद्भागवत में मिलता है, जिसे सनातन धर्म का महापुराण, स्वयं भगवान का स्वरूप, तथा श्रद्धा और भक्ति का आधार कहा गया है। वक्ता बताते हैं कि Kali Yuga का वास्तव में प्रचंड चरण (घोर कलि) भगवान श्रीकृष्ण के अपने धाम गमन के साथ आरंभ हुआ था। उस काल में धर्म का कोई प्रकाश नहीं था, सभी हिंदू तीर्थस्थल अविश्वासियों के नियंत्रण में थे, लोग धर्म-विरोधी हो गए थे, और धर्म का मार्ग छोड़कर उनका एकमात्र ध्यान अपने भरण-पोषण पर था। वक्ता का आशय है कि यह प्रचंड चरण समाप्त हो चुका है, जो स्वयं प्रमाण है, और सनातन धर्म का बचे रहना इन शास्त्रों को समझने और उन पर विश्वास करने से जुड़ा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:15 · 19 फ़रवरी 2023

सत्र 64 · प्रश्न 1148–1163

L60 - विश्व के किन देशों में खाद्य का अभाव होगा | पं. काशीनाथ मिश्र के संग

दिनांक: 23 फ़रवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1148 तो भक्तों की रक्षा कैसे होगी? उनका उद्धार कैसे होगा?

उत्तर: शास्त्रों में लिखा है कि हमारे देश में और विदेशों में भी ऐसे अनेक वृक्ष हैं, जिनके पत्ते खाने से न भूख लगेगी और न प्यास। पर यह भगवान के अधीन है। भगवान कल्कि भक्तों को उनकी पहचान बताएँगे, और भक्त उनका स्थान खोज लेंगे। यह सबको उपलब्ध नहीं होगा। जब संसार भुखमरी से जूझेगा, जब खाने को कुछ नहीं होगा और लोग नरभक्षण करने लगेंगे — जो कुछ देशों में अभी से हो रहा है — तब हमारे भक्त कैसे जीवित रहेंगे? भक्तों के जीवित रहने का उपाय यही है: ऐसे अनेक वृक्ष और पौधे हैं जिनके पत्ते खाने से भक्तों को भूख और प्यास नहीं लगेगी। और उन्हीं की शक्ति से भक्त फिर धर्म की पुनः स्थापना करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 07:28 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1149 हम इसका सामना कैसे करेंगे? यानी उन सब आपदाओं से हम कैसे लड़ेंगे? हमें किस प्रकार की शक्ति चाहिए?

उत्तर: सबसे बड़ी शक्ति है सत्संग की धारा। भागवत। पूर्ण समर्पण आवश्यक है। किसी भी भक्त के लिए, भगवद्गीता में लिखा है, अगर उसने पूर्ण समर्पण नहीं किया, तो उसकी भक्ति का कोई मूल्य नहीं। यह ऐसा है जैसे दवा तो ली जा रही है, पर रोग ठीक नहीं होता और बढ़ता ही जाता है। इस तरह कोई व्यक्ति बिना भक्ति के भगवान की पूजा में अपना समय बिता सकता है और धर्म की स्थापना में उसे कोई स्थान नहीं मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 10:27 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1150 इस रोग (दुख के रोग) को दूर करने के लिए हम क्या कर सकते हैं? संसार में सुख लाने के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर: ऐसा करने से संसार में सुख आएगा, और ब्रह्मांड में सुख आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 23:08 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1151 हम भक्ति करते हैं, पर हमारे बच्चे नहीं करते। तो क्या उन्हें भी इसका लाभ मिलेगा?

उत्तर: यदि आपके कर्म अच्छे हैं, तो आपको अच्छे फल मिलेंगे। और जिनके कर्म ठीक नहीं हैं... फिर भी, आपको संसार के सभी लोगों के कल्याण के लिए प्रयास करना चाहिए। सत्संग के माध्यम से लोग बदलते हैं, जैसे डाकू रत्नाकर महर्षि वाल्मीकि बन गए। हमारी मानव सभ्यता धार्मिक दृष्टि से बहुत बेहतर स्थिति में है और अच्छे कर्म कर रही है। अपने परिवार के विषय में, प्रयास करते रहिए, पर किसी पर जोर-जबरदस्ती मत कीजिए। मैं आपसे पूरे विश्वास और दृढ़ता के साथ कह रहा हूँ कि एक समय ऐसा आएगा जब सभी लोग, हमारे अपने परिवार सहित, कहेंगे, 'चलो हम सब एक ही धारा में साथ रहें।' परंतु उस समय सबके लिए परिणाम अच्छा नहीं होगा। बदलने का समय अभी है। फिर भी, मुझे यह कहना है कि धर्म के इस विषय को लेकर परिवार में कलह, मतभेद या वाद-विवाद मत होने दीजिए। यदि संभव हो, तो मानसिक शांति बनाए रखिए। यदि नहीं, तो अपने कर्तव्यों का पालन करते रहिए और धर्म के सिद्धांतों के माध्यम से संसार से व्यवहार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:51 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1152 भारत में जो भूकंप आने वाला है, क्या वह हर जगह होगा या केवल कुछ स्थानों पर? जैसे, क्या पुणे में होगा? यहाँ महाराष्ट्र में?

उत्तर: यह सभी स्थानों पर होगा। कहीं अधिक तीव्र होगा और कहीं कम, पर होगा हर जगह। और इस बार... इसकी कोई निश्चितता नहीं है। परंतु एक निश्चितता उनके लिए है जो हमारी धारा में हैं, सत्संग में हैं, प्रभु की शरण में हैं; प्रभु उनका ध्यान रखेंगे। लोग अपने ही कर्मों के कारण कष्ट भोग रहे हैं, और जो धर्म का पालन करते हैं वे सकुशल रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:38 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1153 पंडित जी, भविष्यवाणी का दूसरा भाग हिंदी में कब उपलब्ध होगा?

उत्तर: पंडित जी, इस पर काम चल रहा है। और भगवान की कृपा से, जितना वे चाहेंगे उतना हम इसका प्रचार कर पाएंगे। यह हमारे हाथ में नहीं है। यदि यह हमारे या किसी और के हाथ में होता, तो 600 वर्ष बीत गए, इसका प्रचार क्यों नहीं हुआ? मुझसे पहले लाखों-करोड़ों लोग, संत और ऋषि इस धरती पर आए, धर्म का प्रचार किया, और धर्म का कार्य किया, पर वे यह नहीं कर सके। कुछ व्यावसायिक लोग भी पुस्तक लेकर उसे व्यावसायिक बनाकर मालिका का प्रचार करना चाहते थे।

► यह उत्तर सुनें · 34:13 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1154 हमने ये सब कार्य अज्ञानवश किए हैं, और अब हम इस चर्चा के बिंदु तक पहुँचे हैं। तो अब हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: शास्त्र कहता है कि अज्ञानवश किया गया कार्य भूल कहलाता है। यदि कोई जानबूझकर करता है, यह जानते हुए कि उसे जन्मों तक भोगना पड़ेगा और यह महापाप है, तो उसे अपराधी कहा जाता है, जिसे अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। तो जिन्होंने ऐसे कर्म किए हैं, यदि वे अब बदल जाते हैं, तो मेरा विश्वास है कि भगवान उन्हें अवश्य क्षमा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:48 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1155 मैं एक मंत्र की 16 या 20 माला जपता हूँ। इतने वर्षों के बाद यह मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है। क्या मुझे अब मंत्र बदलना चाहिए, या इसे जारी रखना ठीक रहेगा?

उत्तर: देखिए, भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में अर्जुन को माधव संप्रदाय के बारे में बताया था। श्री जगन्नाथ क्षेत्र की परंपरा माधवी परंपरा है। और कलियुग में भक्तों को मुक्ति दिलाने वाला नाम माधव है। महामंत्र का जप कीजिए। जिस युग में राम आए, भक्तों ने राम का नाम जपा। जब कृष्ण आए, तब कृष्ण का नाम जपा। माधव के नाम का जप भक्तों को मुक्ति दिलाएगा। महामंत्र का जप कीजिए, नाम का ध्यान कीजिए, त्रिसंध्या का पालन कीजिए, भागवत पढ़िए, और प्रभु की सेवा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 39:40 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1156 देवी भक्तों की परीक्षा लेंगी और पूछेंगी, 'तुम्हारे प्रभु कौन हैं?' उस समय आप क्या उत्तर देंगे?

उत्तर: तो जो 'माधव' कहेंगे, वे उन्हें आशीर्वाद देकर जाने देंगी। जो कहेंगे कि वे विश्वास नहीं करते, उन्हें कोई आशीर्वाद नहीं मिलेगा। क्योंकि जिस युग में राम आए, भक्तों ने राम का नाम जपा। जब कृष्ण आए, तब कृष्ण का नाम जपा। माधव के नाम का जप भक्तों को मुक्ति दिलाएगा। महामंत्र का जप कीजिए, नाम का ध्यान कीजिए, त्रिसंध्या का पालन कीजिए, भागवत पढ़िए, और प्रभु की सेवा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 41:04 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1157 [ग्रहण के कारण] क्या होता है? क्या उसके बाद भूकंप आने की संभावना है?

उत्तर: सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण होते रहेंगे। भूकंप इस प्रभाव के कारण नहीं आते। भगवान कल्कि पंचभूतों के माध्यम से विनाश का कार्य करेंगे। आप कह सकते हैं, 'अच्छे लोग मर रहे हैं, तो यह कैसा विनाश है?' कुछ कहते हैं कि जीव-हत्या पाप है, या गरीबों पर अत्याचार हो रहा है। जो धर्मपरायण हैं, उनके लिए यह अच्छा है। पापियों के लिए, इस समय का सामना करना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 42:20 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1158 तो यह कैसे संभव है? (संदर्भ: प्रश्नकर्ता की 6 वर्ष की बेटी अत्यंत भक्तिमयी है)।

उत्तर: आपकी बेटी में अभी जो भक्ति है, वह उसके पूर्वजन्म के संस्कारों से है। आप भाग्यशाली हैं कि आपके घर में ऐसी पवित्र आत्मा है। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए, प्रभु सब ठीक कर देंगे। भक्त की इच्छा पूरी करने के लिए प्रभु सदैव तत्पर रहते हैं। साथ मिलकर जप कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 44:04 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1159 'डाक' (भैरव की पुकार) के बारे में बताइए।

उत्तर: जो लोग हानि पहुँचाते हैं, संसार के कल्याण के लिए कार्य नहीं करते, दान और धर्म में प्रवृत्त नहीं होते, ईश्वर में विश्वास नहीं करते, और अपने माता-पिता की सेवा नहीं करते—उनके लिए ही भैरव डाक का प्रभाव है। उस समय महाकाली का स्वरूप, माँ भैरवी आएंगी। और माँ भैरवी इतनी जोर से चीत्कार करेंगी कि वह पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में सुनाई देगा। और जो पापी उसे सुनेंगे, उनमें से कुछ को रक्त की उल्टियाँ होंगी, और कुछ मर जाएंगे। ऐसा समय आ रहा है, और यह कभी भी हो सकता है। भक्त उसे नहीं सुनेंगे; केवल पापी ही सुनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 46:42 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1160 क्या यह इस वर्ष अप्रैल में होगा?

उत्तर: होगा। 16 मंडल (दिव्य मंडल) अभी बने नहीं हैं, पर कुछ छोटे-मोटे प्रभाव होंगे। बड़े प्रभाव का समय अभी नहीं आया है।

► यह उत्तर सुनें · 47:40 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1161 जी, मैं पूछना चाहता हूँ कि इंटरनेट कनेक्टिविटी कब ठप होगी?

उत्तर: 2024. मैंने इस बारे में लगभग 6 साल पहले बताया था। उस समय कोई तकनीक, कोई विज्ञान, यहाँ तक कि नासा भी नहीं जानता था कि सूर्य से एक टुकड़ा आएगा। तो जब वह आएगा, तो वह तीन महासागरों पर गिरेगा। एक टुकड़ा आएगा, फिर वह विस्फोट होकर तीन टुकड़ों में बँट जाएगा। और वे तीनों टुकड़े तीन महासागरों में गिरेंगे। और उस समय, उसके आने से पहले ही, इंटरनेट नष्ट हो जाएगा। और सभी विद्युत प्रणालियाँ भी। और पूरा संसार अंधकार में होगा। उस समय भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। वे किस प्रकार रक्षा करेंगे, इसके बारे में भी लिखा हुआ है। अभी समय नहीं है, मैं इस समय केवल एक ही प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 48:13 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1162 और इसका कारण क्या है? उसका कारण क्या है? (संदर्भ: प्रश्नकर्ता तुर्की में भूकंप के दौरान आकाश में दिखी हरी रोशनी के बारे में पूछ रहे हैं।)

उत्तर: कहीं भूकंप होंगे, कहीं बाढ़, कहीं आग, और कहीं आकाश से चक्रवात आएँगे। यही माध्यम है। और जिस स्थान पर भूकंप आता है वहाँ जो हरी रोशनी दिखाई देती है, वह भगवान कल्कि के विनाश का संकेत है। भगवान कल्कि सूक्ष्म रूप से यह सिद्ध करते हैं कि 'विनाश मैं ही कर रहा हूँ।' मैंने मालिका में इसका पहले भी उल्लेख किया है। तो यह हरी रोशनी उस निराकार स्वरूप का दर्शन है जो भक्तों को मिलता है, क्योंकि भगवान अदृश्य रहकर कार्य करते हैं। यह भगवान कल्कि के विनाश कार्य का पूर्ण प्रमाण है।

► यह उत्तर सुनें · 50:53 · 23 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1163 वे कह रहे हैं कि जनवरी में... तीन चमकते हुए तारे [पृथ्वी की ओर आ रहे हैं]?

उत्तर: वह समय अभी नहीं आया है। और भगवान की इच्छा के बिना... 2012 में पृथ्वी की ओर कुछ ऐसा आ रहा था जो पृथ्वी से कई सौ गुना बड़ा था, और उस समय भगवान ने इस पृथ्वी की रक्षा की। लेकिन उल्का के टुकड़े इस पृथ्वी पर आ रहे हैं। यह तब होगा जब भक्त एकत्र होंगे और 16 मंडल बनेंगे, विश्वयुद्ध के बीच में, पापियों के विनाश का कार्य होगा। भक्त बचेंगे, और पापी नष्ट होंगे। कोई संप्रदाय, कोई धर्म उन्हें नहीं बचा पाएगा। जो लोग सनातन धर्म की धारा में, त्रिसंध्या, माधव परंपरा और सुधर्म महासंघ में हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं है। आपने जो कहा वह सही है, तीन उल्का-खंड पृथ्वी पर आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:22 · 23 फ़रवरी 2023

सत्र 65 · प्रश्न 1164–1175

L61 - 16 मण्डल गठन एवं भक्तों का उद्धार कैसे होगा? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 26 फ़रवरी 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1164 भगवान नृसिंह इतने क्रोधित हो गए थे कि वे संसार का विनाश करने निकल पड़े। उस समय अनेक भक्तों ने उनकी स्तुति की और उन्हें शांत करने का प्रयास किया, परंतु भगवान शांत नहीं हुए। ऐसा क्यों हुआ? भगवान को 'भक्तवत्सल' कहा जाता है और कहा जाता है कि वे भक्तों की प्रार्थना सुनकर अपना क्रोध शांत कर लेते हैं। तो फिर उनकी स्तुति सुनकर भी वे शांत क्यों नहीं हुए, और अंततः शरभ अवतार की आवश्यकता क्यों पड़ी? यह पहला प्रश्न है। दूसरा प्रश्न यह है: मालिका में लिखा है कि कुछ बातें अत्यंत गुप्त हैं, फिर भी भक्तों का उन्हें जानना आवश्यक है। ऐसे में यहाँ के सभी भक्तों को ये परम गुप्त बातें पता होनी चाहिए, परंतु ऐसा क्यों है कि हमें अब भी सब कुछ पता नहीं है?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। भगवान नृसिंह का अवतार एक अनोखा अवतार था। भगवान बहुत क्रोधित थे और उन्हें उस समय अवतार लेना पड़ा क्योंकि उनके भक्त प्रह्लाद को कष्ट दिया जा रहा था। वे अत्यंत क्रोध की अवस्था में थे। उस समय प्रह्लाद ने भगवान की स्तुति की। सभी देवताओं ने प्रह्लाद से उन्हें शांत करने को कहा, और प्रह्लाद की प्रार्थना सुनकर भगवान शांत हो गए। इसका प्रमाण यह है कि भक्त ही भगवान के लिए सबसे बड़ा, सबसे शाश्वत और सबसे सच्चा है। भगवान अपने भक्तों के लिए अवतार लेते हैं। यदि हम वैसे भक्त बन जाएँ, तो भगवान उसी प्रकार हमारे लिए भी आ सकते हैं। आपके दूसरे प्रश्न के संबंध में, मालिका के वचन गुप्त हैं। उनमें गुप्त क्या है? भगवान के शरीर से प्रकट हुए महापुरुष अच्युतानंद ने कहा था कि अभी वह समय नहीं आया है, और इस समय तक मालिका गुप्त ही रहेगी। अब वह समय आ गया है। पंचमुखी भगवान कल्कि विभिन्न रूपों में आएँगे—भूकंप, बाढ़, चक्रवात, सौर ज्वालाएँ और रोग। आप कह सकते हैं कि मानव सभ्यता का विनाश हो रहा है, पर यही तो हमारे शास्त्रों और पुराणों ने लिखा है। पाप बढ़ने पर भगवान अवतार लेते हैं। कलियुग का सबसे महत्वपूर्ण धर्म है सर्व प्राणियों पर दया और भगवान के नाम का जप। ये भविष्यवाणियाँ तब गुप्त थीं, परंतु अब प्रकट की जा रही हैं। एक बात और, महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा कि भगवान कल्कि के बारे में विवरण—उनका जन्मस्थान, उनकी पहचान, वे भक्तों से कैसे मिलेंगे, उनका पता—यह सब अत्यंत गुप्त है, बड़े-बड़े ऋषियों से भी। उन्होंने लिखा कि मालिका का प्रचार भक्तों तक होगा, और जो सरल हृदय से सुनेंगे, वे शरण लेकर आगे बढ़ेंगे। तो, मालिका के रहस्य अब आपके सामने प्रकट किए जा रहे हैं। आने वाले 7 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं। धर्म की धारा में आइए। कोई गुट-परंपरा नहीं है। बस जीव-हत्या, भ्रूण-हत्या, छल-कपट और दूसरों को कष्ट देने से दूर रहिए। जब तक यह परिवर्तन नहीं होता, विनाश चलता रहेगा। 2014 से आगे हमने जो भविष्यवाणी की थी, वह आप एक-एक करके होते हुए देख रहे हैं। मालिका का अनुसरण करके भारत और विश्व के सभी भगवद्-भक्तों के लिए भगवान के मार्ग को स्वीकार करना आसान होगा। सनातन धर्म आगे बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:43 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1165 यदि कोई भक्ति के इस मार्ग का अनुसरण करे, तो क्या मुसलमान और ईसाई भी ऐसा कर सकते हैं? क्या वे भी इस मार्ग पर चलकर बच सकते हैं?

उत्तर: यह संभव है। बहुत अच्छा प्रश्न है। संसार में सनातन धर्म की स्थापना होगी। संसार एक अखंड विश्व बन जाएगा, जिसमें अनेक नामों वाले देश होंगे, परंतु सनातन धर्म सर्वत्र रहेगा। एक समय आएगा जब सभी लोग, यहाँ तक कि सऊदी अरब जैसे अन्य धर्मों वाले देशों से भी, परिस्थितियों के कारण सनातन धर्म अपनाने को विवश होंगे। ज्यों-ज्यों विश्व में भारत का सम्मान बढ़ेगा, लोग इसके धर्म की महानता को पहचानेंगे। धीरे-धीरे, आने वाले समय में, हमारा सनातन धर्म का प्रचार पूरे ब्रह्मांड में होने जा रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 29:33 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1166 राजस्थान के सीकर से एक बाबाजी हैं, जो सनातन धर्म की ध्वजा उठाए हुए हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मालिका में 26 वर्ष के किसी व्यक्ति के बारे में लिखा था... (निहित प्रश्न: क्या मालिका में जिसकी भविष्यवाणी है, वे यही हैं?)

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान कल्कि के दर्शन के लिए लोगों को कई वर्षों तक प्रतीक्षा करनी होगी। वे इतने गुप्त रहेंगे कि हर कोई उन्हें देख नहीं पाएगा। न वे सार्वजनिक दर्शन देंगे, न सार्वजनिक कार्यों में संलग्न होंगे। वे टीवी या मीडिया में बैठकर धर्म-स्थापना की बात नहीं करेंगे। तो बोलेगा कौन? जो भक्त मालिका की धारा में आएँगे, वही मालिका और धर्म के प्रचार का कार्य करेंगे। यदि किसी को भगवान कल्कि के दर्शन हो जाएँ, तो उसे मुक्ति मिल जाएगी। वे सांसारिक और सामाजिक गतिविधियों में संलग्न नहीं होंगे; वे उनसे ऊपर होंगे। उनका कार्य है धर्म और अधर्म को तौलना, धर्म को ऊपर उठाना और अधर्म को दबाना। और अवतार के संबंध में, हर शास्त्र कहता है कि भगवान कल्कि का अवतार संभल नगर में होगा। भगवान इतनी आसानी से अपने दर्शन नहीं देंगे। भक्त इस पर चिंतन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 31:44 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1167 पंडित जी, वे (भगवान कल्कि) उनसे (अन्य सार्वजनिक व्यक्तियों से) किस प्रकार भिन्न हैं? और मेरा दूसरा प्रश्न है, जैसा आपने अभी कहा, यदि मनुष्य पाप करना बंद कर दें, तो धर्म की स्थापना नहीं होगी और विनाश नहीं आएगा। तो क्या भविष्य मालिका इसी कारण से लिखी गई थी कि धर्म की स्थापना होगी और भगवान अवतार लेंगे?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। शास्त्रों में पहले से ही लिखा गया है कि भगवान कल्कि मानव देह में आएँगे। वे सामान्य मनुष्य जैसे दिखेंगे, परंतु उनमें सभी 64 दिव्य कलाएँ होंगी। वे अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते हैं। महापुरुष अच्युत ने उनकी शक्तियों का विस्तार से वर्णन किया है। भगवान कल्कि मानव देह में आएँगे, सामान्य मनुष्य जैसे दिखेंगे और मानवोचित कर्म करेंगे। वृंदावन की तरह दिव्य लीलाएँ होंगी, भाईचारे और मित्रता के संबंध होंगे, गुरु-शिष्य के नहीं। अपनी इच्छा से वे संपूर्ण ब्रह्मांड को हिला सकते हैं। एक श्वास से वे हिमालय जैसे विशाल पर्वतों को हिला सकते हैं। उनकी आँखों से करोड़ों सूर्यों का प्रकाश निकल सकता है। वे किसी भी अस्त्र को अपने मन से नियंत्रित कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, यदि कोई देश परमाणु बम छोड़े, तो वे उसे मोड़कर उसी देश का विनाश कर सकते हैं। उनकी शक्ति के सामने कोई खड़ा नहीं हो पाएगा। भगवान श्रीराम 12 कलाओं के साथ आए थे और भगवान श्रीकृष्ण 16 कलाओं के साथ, परंतु भगवान कल्कि 64 कलाओं के साथ पूर्ण अवतार होंगे। उनका शरीर माता योगमाया, भगवान बलराम और स्वयं भगवान का संयोग होगा। भगवान कल्कि द्वारा धर्म की स्थापना होने जा रही है। आप सब मालिका की धारा में आइए; समय बहुत कम है। यदि आपके भाग्य में भगवान से मिलना लिखा है, तो आप मालिका का अनुसरण करेंगे। मेरा विश्वास है कि केवल वही सच्चा भक्त मालिका पढ़ेगा, जिसका भगवान के साथ कई युगों से संबंध रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 37:42 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1168 पिताजी, मेरा व्यक्तिगत प्रश्न हनुमान जी के बारे में है। (यह आगे दिए गए उत्तर के आधार पर की गई व्याख्या है।)

उत्तर: उन्होंने भगवान के कार्य में योगदान दिया। परंतु उस समय उनकी द्वापर युग से एक अधूरी इच्छा थी। उस इच्छा को पूर्ण करने के लिए भगवान उसे पूरा करेंगे। वे पहले ही मानव देह में पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। हाँ, उन्होंने जन्म ले लिया है। और उनके साथ उनके चार साथियों ने भी पृथ्वी पर जन्म लिया है। वे भगवान कल्कि से मिलेंगे, और भगवान कल्कि उन्हें दिव्य शक्तियाँ प्रदान करेंगे। भगवान की कृपा से वे पाकिस्तान, चीन और भारत का विरोध करने वाले अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ेंगे। वे युद्ध में रहेंगे, द्वापर युग की अपनी सभी इच्छाएँ पूर्ण करेंगे, और भगवान कल्कि के सान्निध्य में रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:31 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1169 यह कब तक होगा?

उत्तर: (वक्ता इस घटना के लिए कोई निश्चित समय-सीमा बताए बिना अगले प्रश्न की ओर बढ़ जाते हैं, और इसके बाद वाले उत्तर में 16 मंडलों के गठन की समय-सीमा पर चर्चा करते हैं।)

► यह उत्तर सुनें · 46:18 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1170 और 16 मंडलों (क्षेत्रों/समूहों) में भक्तों के कार्य की रूपरेखा क्या होगी? उनमें भक्त किस प्रकार कार्य करेंगे?

उत्तर: यह गूगल मीट प्रचार को आगे बढ़ाने के लिए और भगवान की कृपा से भक्तों द्वारा मंडल बनाने के लिए हो रही है। भक्तों का कार्य होगा नियमों का पालन करना और भगवान के नाम का प्रसार करना। वे माध्यम बनेंगे। 16 मंडलों के गठन का कार्य 2014 से पहले शुरू हो गया था। यह अधिकतम 2, 3 या 4 वर्ष और चलेगा और इसी समय के भीतर पूर्ण हो जाएगा। एक ओर 16 मंडलों के भक्त एकत्र होंगे, और दूसरी ओर पृथ्वी पर संघर्ष और महाप्रलय (पंचामृत प्रलय) हो रहा है और बढ़ता जाएगा। 2022 से 2023 बहुत बुरी स्थिति है। अपने वर्तमान तौर-तरीके छोड़िए, धर्म में आइए, और भागवत मंडल से जुड़िए, क्योंकि 16 मंडलों का गठन आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 46:34 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1171 अनुसरण करने योग्य मुख्य मंत्र या साधना कौन-सी है?

उत्तर: आने वाले संक्रमण के युग में यंत्र शक्ति (तकनीक की शक्ति) का कोई प्रभाव नहीं रहेगा। लोग स्वयं को बचाने और सुख पाने के लिए भौतिक वस्तुओं का उपयोग करते रहे, परंतु अब लोगों का मंत्र शक्ति (मंत्रों की शक्ति) पर अधिकार प्राप्त करना आवश्यक है। मैं किसी तंत्र-मंत्र की साधना की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं उस कृष्ण-भक्ति के मार्ग की बात कर रहा हूँ, जो नारद महामुनि ने ध्रुव को सिखाया था। इसी मार्ग से नारद एक साधारण मनुष्य से ब्रह्माजी के पुत्र बने, और ध्रुव ने अमर पद प्राप्त किया। यह मालिका पुराण में लिखा है। इसे सीखने के लिए हमारे यूट्यूब वीडियो या पुस्तकों में हमारा संपर्क नंबर मिल जाएगा। भारत और विदेश से बहुत से लोग हमारे सत्संग में सम्मिलित होते हैं, जो सप्ताह में लगभग पाँच बार होता है। आप भी जुड़ सकते हैं। अपने आध्यात्मिक संस्कारों का पोषण कीजिए। समय आने पर आपको स्वयं ज्ञात हो जाएगा। गूगल मीट पर इस छोटे-से संपर्क के माध्यम से देखिए कि लोग कहाँ तक पहुँच चुके हैं।

► यह उत्तर सुनें · 51:06 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1172 जय श्री माधव, पंडित जी। हम प्रभु का संदेश प्रचारित कर रहे हैं... मुझे उड़ने का दृश्य दिखाई दिया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जब धर्म की स्थापना आरंभ होगी, विश्वयुद्ध के दौरान, भारत के सैनिकों की सहायता के लिए नारायण सेना (प्रभु की सेना) प्रकट होगी। इस सेना में पाँच महावीर, सप्तरथी, पाँच पांडव, 64 सिद्ध और प्रभु के सभी भक्त सम्मिलित होंगे। उस समय प्रभु भक्तों को एक मंत्र देंगे। इस मंत्र का जप करके वे इच्छानुसार आकाश में उड़ सकेंगे, किसी भी देश में जा सकेंगे और भयंकर विनाश कर सकेंगे। तो आपने जो देखा है, वह संभवतः एक 'संस्कार' है जो भगवान आपको दे रहे हैं। इस 'संस्कार' को जीवंत करने के लिए अपने मन को वश में कीजिए और प्रभु की भक्ति में डूब जाइए। इस धारा में बने रहकर आप इससे भी अधिक गहन बातें देख और अनुभव कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 53:38 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1173 हम लोगों को इन शिक्षाओं के बारे में बताते हैं, कुछ सुनते हैं और कुछ नहीं सुनते। बाद में मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैं आकाश में था, और वहाँ एक कोट था जैसा पुरुष पहनते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि एक छोटे मंदिर का द्वार खुलता है और उसमें से एक आवाज़ आती है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भक्त भी सैनिकों की तरह युद्ध करेंगे। आपने प्रभु के जिस नाम का उल्लेख किया, वही नाम जिन लोगों ने जपा है, वे उसी से वह कार्य करेंगे। आपके मन में यह द्वंद्व था कि आप धर्म की स्थापना में पर्याप्त योगदान नहीं दे पा रहे हैं। प्रभु ने वह द्वंद्व दूर कर दिया है। समय आने पर आप भी वह कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 56:52 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1174 कृपया 'त्रिसंध्या' साधना के बारे में बताइए।

उत्तर: मैं आपको त्रिसंध्या (तीन संधिकाल) की साधना बताता हूँ। यह दिन और रात की तीन संधियों के लिए है। पहली है ब्रह्म मुहूर्त, लगभग प्रातः 3:00-3:30 बजे, जब प्रातःकाल आता है और रात्रि विदा होती है। इस समय कृष्ण मंत्र का जप करना चाहिए, जिसमें 16 नाम, 10 अवतार, 108 बार माधव नाम और दुर्गा माधव स्तुति सम्मिलित हैं। दूसरी संध्या मध्याह्न में है, सुबह 11:30 और दोपहर 12:30 के बीच, जब प्रातःकाल बीतता है और मध्याह्न आता है। वही मंत्र जपने चाहिए। तीसरी है सायंकाल, 'गोधूलि' बेला, जब सूर्य अस्त होता है और रात्रि आरंभ होती है। इस समय आपको वही मंत्र अवश्य जपने चाहिए जो मैंने बताए। जिनके पास कम समय है, वे केवल 16 नाम और 10 अवतारों के नाम जप सकते हैं। इसी साधना से नारद महामुनि देवतुल्य बन गए। त्रिसंध्या की यह साधना भारत में पुनः प्रचारित होगी। इस मार्ग पर चलकर आप अपनी स्वयं की शक्ति प्राप्त करेंगे, जिससे रोगों से लेकर भविष्य की सभी समस्याओं पर विजय पा सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 58:46 · 26 फ़रवरी 2023

प्रश्न 1175 विश्वयुद्ध कब होगा?

उत्तर: उसके लिए कई नए मोर्चे और गठबंधन बन रहे हैं। संभवतः 2025 और 2026 के बीच यह अंतिम रूप लेगा, और तब विश्वयुद्ध आरंभ होगा। उससे पहले बहुत से भूकंप, विनाश, बाढ़ आएँगे, और भारत में बहुत भीषण अन्न-संकट होने वाला है। जो मिले वही खाइए, कुछ दान कीजिए, और भविष्य में आपको वह वापस मिलेगा; भगवान देंगे। तो मालिका के अनुसार, युद्ध की तैयारी 2025-2026 की अवधि के लिए निश्चित है। उस समय को ध्यान में रखिए और प्रभु की शरण में रहिए। यह आपके ही कल्याण के लिए है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:51 · 26 फ़रवरी 2023

सत्र 66 · प्रश्न 1176–1191

L62 - घर में शांति कैसे आएगी? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 3 मार्च 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1176 मुझे एक स्वप्न आता रहता है जिसमें लगता है कि मैं जाकर किसी के बिस्तर पर बैठ गई, या वह मुझसे लुभाने वाली बातें कह रहा है। ऐसा हो रहा है, तो मैं इसका क्या करूँ, जबकि मैं प्रभु का नाम जपती हूँ?

उत्तर: हमारे सत्संग में ऐसे बहुत से लोग हैं जो 20-25 वर्षों तक काले जादू से परेशान थे, और अब उनके परिवार अच्छे से चल रहे हैं। ऐसा परिवर्तन सत्संग में रहने से आया। यदि कोई आपको बुरी नीयत से देख रहा है या आपका बुरा सोच रहा है, तो नष्ट वही होगा; दुःख उसी को मिलेगा, क्योंकि समय आ रहा है। यह तो छोटी-सी बात है; हम इससे भी बड़ी शक्तियाँ प्राप्त कर सकेंगे। तो एक काम कीजिए: निरंतर माधव का नाम जपिए, भागवत पढ़िए, और संध्या (सायं प्रार्थना) की धारा में बनी रहिए। फिर मुझे बताइए कि आपकी समस्या बनी रहती है या नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 50:08 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1177 दिन भर मुझे याद रहता है कि मुझे सत्संग में जाना है। परंतु जैसे ही 8 बजते हैं, उससे थोड़ा पहले, मैं भूल जाता हूँ कि मुझे भरतपुर मंडल के सत्संग में जुड़ना है। क्या इसका अर्थ यह है कि मैं प्रभु के योग्य नहीं हूँ?

उत्तर: जब पूर्ण समर्पण आ जाएगा, तब वे स्वयं मार्ग दिखाएँगे। उस स्थिति तक पहुँचने के लिए नाम जपिए, निरंतर प्रभु का नाम जपिए।

► यह उत्तर सुनें · 53:16 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1178 जो हम प्याज-लहसुन खाते हैं, उनके लिए क्या तुलसी की माला उचित है? क्या उन्हें खाने के बाद हम तुलसी माला पर जप कर सकते हैं?

उत्तर: मान लीजिए आपने खा-पी लिया है, कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 54:52 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1179 मेरे घर में भगवान महादेव या भगवान श्रीकृष्ण का कोई मंदिर या मूर्ति नहीं है। तो क्या जप करने के लिए घर में उनकी मूर्ति और मंदिर होना आवश्यक है?

उत्तर: जहाँ मंदिर नहीं है, वहाँ घर ही मंदिर है। तो अपने घर को मंदिर मानिए, माधव के स्वरूप को अपने मन में स्थापित कीजिए, आँखें बंद कीजिए और उनका नाम जपिए। आप कर सकते हैं। इसमें कोई समस्या नहीं है। यह भगवान की पवित्र सृष्टि है।

► यह उत्तर सुनें · 56:35 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1180 पिताजी, जैसा आपने पहले बताया था, सम्पूर्ण सृष्टि में से 64 करोड़ लोग बचेंगे, जिनमें से 33 करोड़ भारत से होंगे। तो वे चाहे भारत से हों या कहीं और से, क्या इस शरीर को छोड़ने के बाद उन्हें सत्य युग में नया शरीर मिलेगा?

उत्तर: जो भक्त हैं, और उनके अतिरिक्त, जो भी मनुष्य पवित्रता के साथ धर्म की धारा में आता है, वे भी भगवान की कृपा से रह सकते हैं, यदि उनकी भक्ति और श्रद्धा पर्याप्त दृढ़ हो। परंतु शास्त्रों में इतना ही लिखा गया है। भविष्य में प्रभु इस संख्या को बढ़ा सकते हैं। मनुष्य के कर्मों के द्वारा धर्म में रहने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 57:39 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1181 आज के युवाओं के बारे में मेरे मन में एक प्रश्न आया। कलियुग के प्रभाव से युवावस्था में जो शारीरिक आकर्षण होता है... क्या वह केवल शारीरिक आकर्षण है या वह आध्यात्मिक जुड़ाव बन गया है?

उत्तर: यह संसार नश्वर है, और इसका प्रभाव बना रहता है। जो धर्म में जीते हैं, उन पर वह प्रभाव नहीं होता। यह शरीर पंचतत्वों में विलीन हो जाता है, जबकि आत्मा अपने कर्मों का फल लेती है। जो वास्तव में ज्ञानी है, वह इसके पीछे नहीं भागेगा। अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि हमें एक दिन यह शरीर छोड़ना है। जिस शरीर के लिए हम इतना तरसते हैं, कामना और वासना के पीछे भागते हैं, वह तो बस एक माध्यम है, और उसे हम छोड़कर चले जाएंगे। अज्ञानी उसके पीछे भागते हैं। तो इस आध्यात्मिक सत्संग में एक शुद्ध आत्मा के रूप में, शरीर के पीछे भागने के बजाय, जब तक यह शरीर आपके पास है, इसका उपयोग सत्कर्म करने में कीजिए ताकि आप भगवान के पास लौट सकें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 59:17 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1182 पंडित जी, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ... जो हो रहा है, क्या भविष्यवाणियाँ उससे पूरी तरह मेल खा रही हैं?

उत्तर: भगवान की कृपा से होगा। सत्ययुग में पापियों के दिन भुला दिए जाएँगे। चारों ओर शांति, सुख और समृद्धि फैलेगी, और मनुष्य को पृथ्वी पर स्वर्ग से कहीं बेहतर सुख मिलेगा। लेकिन क्या आप सब धर्म की धारा में हैं या नहीं?

► यह उत्तर सुनें · 01:02:13 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1183 चीन अन्य इस्लामिक राष्ट्रों के साथ मिलकर भारत पर जो हमला करने जा रहा है, क्या यह दूर की घटना है या निकट है?

उत्तर: पहले मैं इस प्रश्न का उत्तर दूँगा कि देवी-देवता मंदिरों में हैं या नहीं। कलियुग की आधी आयु (5000 वर्ष) के बाद, सभी देवी-देवता पृथ्वी छोड़ देते हैं और मानव शरीर धारण कर लेते हैं। अब 5126 वर्ष हो चुके हैं, आधे से अधिक, जैसा शास्त्रों में लिखा है। वे मंदिरों के स्वामी नहीं हैं क्योंकि उनके स्वामी पृथ्वी पर आ चुके हैं। यह धर्म की स्थापना का समय है, इसलिए वे भी प्रभु के कार्य के लिए मानव शरीर में आ गए हैं। आपकी दूसरी बात के संबंध में... हाँ, उनके शत्रु हमला करेंगे। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि उनकी मान्यता है कि यदि वे मंदिरों को नष्ट कर देंगे, तो देवी-देवता हिंदुओं की सहायता नहीं करेंगे। लेकिन वे यह नहीं जानते कि उन्हें नष्ट करने के लिए... जो भी ऐसा करने आएँगे, वे सब मर जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:31 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1184 मैं पूछना चाहता था कि मैं किस मंडल (क्षेत्र/समूह) के अंतर्गत आऊँगा? मैं जौनपुर, उत्तर प्रदेश से हूँ।

उत्तर: उत्तर प्रदेश, हमारे उत्तर प्रदेश में मथुरा और वृंदावन शामिल हैं। अब यह अलग है, उत्तराखंड बन गया है... यह सबसे बड़ा मंडल बनेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:58 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1185 क्या इसमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस की कोई भूमिका होगी?

उत्तर: देखिए, 18 दिन के महाभारत युद्ध का आधा समय अभी शेष है। कलियुग में वह समय लगभग 47 दिनों के बराबर है। उस शेष समय में युद्ध पूर्ण होगा। दूसरी बात, पांडवों और महाभारत युद्ध के सभी योद्धा भी मानव शरीर में पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। वे आएँगे, और उन्हें सुदर्शन चक्र से शक्ति प्राप्त होगी। वे मंत्र शक्ति और धनुर्विद्या से विपक्ष के विरुद्ध लड़ेंगे। और उस सत्य के सामने संसार की सारी शक्तियाँ पराजित हो जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:17:03 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1186 नेताजी की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: और भगवान उन्हें शक्ति प्रदान करेंगे। वे पूरे विश्व को अपने नियंत्रण में ले आएँगे, और उनके सामने सभी शक्तिशाली विदेशी ताकतें बह जाएँगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:12 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1187 भारत में सैन्य शासन कब शुरू होगा?

उत्तर: वह समय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद होगा। और इस बार, यदि प्रभु की इच्छा हो और भक्त एकत्रित हो जाएँ, तो यह जल्दी हो सकता है। यदि थोड़ी देर होती है, तो वह भक्तों के एकत्रित होने के लिए होगी, पर यह होगा निश्चित। समय बहुत निकट है।

► यह उत्तर सुनें · 01:19:54 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1188 कुछ दिनों से मैं अपने सपनों में बहुत सारे भूत-प्रेत देख रहा हूँ। वे कुछ कर नहीं पाते, बस दिखाई देते हैं। मैंने देश में दंगों के सपने भी देखे हैं, लोग एक-दूसरे को मार रहे हैं, बहुत भयावह दृश्य। भविष्य के लिए इसका क्या अर्थ है? इसका कारण क्या है?

उत्तर: वे ये चीजें सपनों में दिखाते हैं। इसीलिए आपको ये पूर्वाभास हो रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:22:06 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1189 पंडित जी, क्या मालिका में जम्मू-कश्मीर के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: तटीय... आपके बड़े क्षेत्र में युद्ध अवश्य होगा। जम्मू-कश्मीर में बाढ़ से भी विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:24:49 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1190 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि हमारा हिंदू राष्ट्र कब तक स्थापित होगा?

उत्तर: भारत तो पहले से ही हिंदू राष्ट्र है। इसे हिंदू राष्ट्र घोषित करना हमारी मानसिकता की बात है। आर्यावर्त भारत का ही एक नाम है। यदि हमारी भारतीय शासन व्यवस्था, जैसे इलाहाबाद का नाम बदलकर प्रयागराज किया गया, वैसे ही भारत का नाम बदलकर आर्यावर्त कर दे, तो सबकी इच्छा पूरी हो जाएगी। ठीक है? और दूसरी बात यह है कि सनातन धर्म पूरे विश्व में स्थापित होगा। यह हर देश का धर्म बन जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:26:02 · 3 मार्च 2023

प्रश्न 1191 चूँकि माधव जी को कल्कि के रूप में आना है, तो क्या वे पहले ही आ चुके हैं?

उत्तर: मैं आपसे कहता आ रहा हूँ, और आज भी कह रहा हूँ, जो मार्ग मैं आपको दिखा रहा हूँ... यदि आप सच्ची भक्ति के साथ उस पर चलेंगे, तो आपको सब कुछ स्वयं ज्ञात हो जाएगा। मुझे बताना नहीं पड़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:29:38 · 3 मार्च 2023

सत्र 67 · प्रश्न 1192–1205

L63 - Google Meet पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 5 मार्च 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1192 कुछ लोग काले जादू और उसके तामसी प्रभाव से हमारे परिवारों को—हमारे माता-पिता, भाई-बहनों को—कष्ट देना चाहते हैं। कृपया इस विषय में हमारा मार्गदर्शन करें।

उत्तर: इस संसार में कितनी भी बड़ी शक्ति हो, कितना भी शक्तिशाली तंत्र हो, चाहे कोई भूत-प्रेत हो, महामारी हो, या कोई भी आसुरी शक्ति हो... जो भक्त इस धारा में हैं, जो भागवत पढ़ते हैं, कृष्ण का स्मरण करते हैं, और अपने घरों में माधव का नाम गाते हैं, जो संध्या के अनुष्ठान करते हैं... 25-30 वर्षों से लोगों ने संध्या के अभ्यास, भागवत पढ़ने और माधव नाम के जप से मुक्ति पाई है। उनके परिवार फिर से अच्छी तरह से बस गए हैं, कोई समस्या नहीं है, और वे उन्नति भी कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 15:48 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1193 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा शास्त्रों में कहा गया है, हमारे शरीर में 14 इंद्रियाँ हैं। जब विराट पुरुष में अहंकार उत्पन्न हुआ, तो क्या हम मनुष्यों में जो 'मैं' का भाव है—जैसे 'मैं हूँ', 'मैं ही सबसे बड़ा हूँ'—वह उसी अहंकार के समान है, या दोनों में कोई अंतर है?

उत्तर: हम भगवान की स्तुति और ध्यान में जाएँगे; हम उस कक्षा में जाएँगे। विराट पुरुष, अपने मूल स्वरूप में, पहले एक ज्योति स्वरूप थे। उस ज्योति से 'ॐकार' प्रकट हुआ, और उससे भगवान का प्रकट स्वरूप, विराट रूप, प्रकट हुआ। और उस विराट रूप से समय-समय पर भगवान के अनेक अवतार हुए हैं। यह भगवान की अनंत लीला है। इसमें गहराई से जाने से हमें कुछ प्राप्त नहीं होगा। इस समय जो विपत्ति आ रही है—उससे आपको रक्षा कैसे मिलेगी?

► यह उत्तर सुनें · 18:20 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1194 मैं अपनी बेटी के बारे में जानना चाहता हूँ।

उत्तर: असली कारण पूर्वजन्म से है। मनुष्य जन्म लेने के बाद, वह उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है, और उसके कारण व्यक्ति को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। इसकी मुक्ति पूजा या जप से नहीं होती, क्योंकि हम जानते हैं कि जब व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोग रहा होता है, तो केवल भगवान ही उसे ठीक कर सकते हैं। जब तक संतान का विवाह नहीं हो जाता, तब तक माता-पिता के कर्मों का फल भी उसमें जुड़ जाता है। आप भी माधव नाम का जप करें और भगवान की शरण में जाएँ। कहिए, 'माधव, हमारी संतान की रक्षा करो।' मुझे लगता है कि वह ठीक हो सकती है। उसके कानों में माधव का नाम फुसफुसाइए, और स्वयं भी निरंतर माधव नाम का जप कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:35 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1195 रेशमा लखानी नाम की एक महिला, जो सनातनी नहीं हैं, जगन्नाथ मंदिर में प्रवेश कर गईं। क्या यह उचित है?

उत्तर: जो सनातन धर्म में नहीं हैं, उन्हें हमारे जगन्नाथ मंदिर और चार धाम में प्रवेश की अनुमति नहीं है। इसीलिए भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के समय बाहर आते हैं। उस समय कोई भी भक्त, किसी भी जाति या किसी भी धर्म का हो, भगवान जगन्नाथ का स्पर्श कर सकता है और उनके दर्शन कर सकता है। इसीलिए हर वर्ष भगवान की नौ दिन की रथ यात्रा का उत्सव होता है। यदि किसी में भक्ति है, तो उसके लिए उस समय की प्रतीक्षा करना ही बेहतर है।

► यह उत्तर सुनें · 25:41 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1196 तुर्की में भूकंप आया, तो मेरा प्रश्न है कि और कहाँ-कहाँ भूकंप आने वाले हैं?

उत्तर: भारत की बात करें तो यह दिल्ली से आएगा। पाकिस्तान, दिल्ली, अफगानिस्तान, थाईलैंड, इंडोनेशिया, जापान, चीन। और भारत में: हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर भारत, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, और उस ओर से फिर बिहार, हिमाचल। ऑस्ट्रेलिया में यह बहुत होगा। चीन और पाकिस्तान में विनाश होगा। प्रतिदिन भूकंप आएँगे। सरकार किसे ब्रेकिंग न्यूज़ देगी? टीवी चैनल सोचते रह जाएँगे कि किस समाचार को 'ब्रेकिंग न्यूज़' बनाएँ, क्योंकि हर समाचार ब्रेकिंग न्यूज़ बन जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:14 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1197 पहले धर्म की विजय होती थी, परंतु आज स्थिति यहाँ तक आ गई है कि कहीं अत्याचार हो रहा हो तो भी अच्छे लोग बोल नहीं पाते। तो हम किस ओर जा रहे हैं? पंडित जी, कृपया इस पर अपने विचार साझा करें।

उत्तर: यह टूट चुका है। आज संसार में यदि कोई धर्म की बात करता है, तो उसकी निंदा होती है, और किसी में धर्म की बात कहने का साहस नहीं है। सभी धर्म की बात का विरोध करते हैं। कलियुग में यही हो रहा है। देखिए, यह जितना बढ़ेगा, उतना ही विनाश होगा। जैसा संत तुलसीदास ने कहा है, सत्य परेशान होता है, पर कभी पराजित नहीं होता।

► यह उत्तर सुनें · 31:11 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1198 कई पुराणों में लिखा है कि कलियुग 4,32,000 वर्ष का होगा, परंतु हम कहते हैं कि इसके केवल 5,000 वर्ष ही बीतेंगे। इस हिसाब से क्या हम पुराणों और शास्त्रों की अवहेलना नहीं कर रहे हैं? यह पहला प्रश्न है। और दूसरा प्रश्न यह है कि यदि भगवान इतनी जल्दी आ ही चुके हैं, तो वे अपने भक्तों को दर्शन क्यों नहीं दे रहे हैं?

उत्तर: कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। पाप के भार के कारण इसकी आयु कम हो गई है, और कलियुग की अवधि छोटी होगी। इसी कारण स्वयं भगवान महाविष्णु कृष्ण ने पंचसखाओं के माध्यम से भविष्य मालिका पुराण की रचना करवाई। कलियुग के 4,32,000 वर्ष पूरे नहीं भोगे जाएँगे। केवल लगभग 5,000 वर्ष ही भोगे जाएँगे। मनुस्मृति में इसका उल्लेख 4,800 वर्ष के रूप में है, और कई अन्य शास्त्रों में भी इसका वर्णन किया गया है।

► यह उत्तर सुनें · 33:10 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1199 मेरा प्रश्न यह था कि जब भक्त एकत्र होते हैं, तो हम इस समय कलियुग में माया में उलझे हुए हैं, गृहस्थ जीवन में फँसे हुए हैं, माता, भाई और सबके साथ संबंधों में बँधे हैं। तो हम उन्हें छोड़कर भगवान के पास कैसे एकत्र हो सकते हैं?

उत्तर: भगवान की शरण में जाने के लिए अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। महान संत अच्युतानंद ने कहा था कि यदि कोई भटक जाए, तो वह भगवान की शरण में कैसे आएगा? इसलिए उन्होंने शरण लेने का एक मार्ग दिखाया: अंत में, निरंतर मेरा, अर्थात् भगवान का, नाम जपो। एक गृहस्थ भगवान को कहीं अधिक शीघ्रता से प्राप्त कर सकता है, जबकि तप, ध्यान और योग में परिश्रम बढ़ जाता है और भगवान से मिलना कठिन हो जाता है, जिसमें कई जन्म लग जाते हैं। परंतु एक ही जीवन में, संसार में रहते हुए भी हम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। बस उस विधि का पालन कीजिए जो मैं आपको बता रहा हूँ, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 40:32 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1200 जिस विनाश और अपने प्रियजनों की मृत्यु की भविष्यवाणी की गई है, उसे देखने की पीड़ा और दुःख से हम कैसे निपटें?

उत्तर: जब मृत्यु होती है, तो उस समय जो भी उसे देखेगा, मोह के कारण उसे दुःख होगा। पर देखिए, आज जब गोहत्या होती है, तो क्या समाज उसके बारे में कुछ कर रहा है? क्या कोई संविधान बदल रहा है? वे उन्हें मार देते हैं। संसार में धर्म का प्रकाश फैलने के लिए, पृथ्वी पर सूर्योदय होने के लिए, मानव सभ्यता के कल्याण के लिए, हमें कुछ बलिदान देने ही होंगे। यह जितना लंबा चलेगा, संसार में उतना ही अधिक कष्ट फैलेगा। कष्ट और रोग के अतिरिक्त, कुछ लोग ऐसे छोड़े जाने चाहिए जो शांति और सुख से रह सकें, धर्म के मार्ग पर चल सकें, और संसार में शांति स्थापित कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 44:06 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1201 लेकिन गलती तो हो चुकी है, तो मैं उसका प्रायश्चित कैसे करूँ?

उत्तर: देखिए, केवल आप ही नहीं, माताजी, केवल हम ही नहीं, संसार में हर कोई गलती करता है, अनजाने में भी। भगवान का नाम जपने से... भगवान कहते हैं, 'जो मेरी शरण में आता है, चाहे उसने लाखों ब्राह्मणों की हत्या क्यों न की हो, यदि वह पश्चात्ताप भरे हृदय से मेरी शरण में आता है, तो मैं उसे क्षमा कर देता हूँ।' लेकिन वह क्षमा जीवन में केवल एक ही बार मिलती है, माताजी। भगवान की शरण में या भगवान की मूर्ति के समक्ष जाकर पश्चात्ताप के साथ केवल एक बार क्षमा माँग लीजिए, आपको क्षमा मिल जाएगी। लेकिन उसके बाद यदि हम फिर से गलती करते हैं, फिर से अधर्म करते हैं, तो वह हमारा सबसे बड़ा अपराध बन जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:31 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1202 कितने ब्रह्मांड हैं?

उत्तर: जब एक का अंत होता है... मान लीजिए पृथ्वी पर कोई विनाश या भूकंप होता है, तो उसका प्रभाव पूरे सौरमंडल में महसूस किया जाता है... उनके बीच हमारा संबंध स्थापित हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 52:32 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1203 जब भगवान पृथ्वी पर अवतार लेते हैं, तो क्या देवता और ऋषि भी मनुष्य रूप धारण करते हैं?

उत्तर: हाँ। सभी देवताओं, भक्तों, सिद्धों, ऋषियों और अमर भक्तों को बताया गया था कि भगवान राम अवतार ले रहे हैं, और उन्हें जाकर पृथ्वी पर जन्म लेना चाहिए ताकि वे भगवान की लीला में सहभागी हो सकें। वे सब मनुष्य शरीर में आए। भगवान श्री कृष्ण के जन्म से पहले, भागवत में लिखा है... उनके अवतार से पहले, ब्रह्मा देव ने भी सभी देवताओं, ऋषियों और भक्तों से कहा था, 'देखो, भगवान आ रहे हैं, तुम जाकर मनुष्य शरीर धारण करो।' जब भगवान कल्कि आ रहे हैं, तब सभी ऋषि, मुनि, साधु और संत मनुष्य शरीर में आते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 54:24 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1204 27 फरवरी को, ओडिशा में बालासोर जैसे नाम की किसी जगह पर, शाम को बहुत भयानक आवाज़ हुई थी। मैंने उसका वीडियो देखा था। मैं आपसे इसके बारे में पूछना चाहता था, पंडित जी।

उत्तर: हर जगह एक कंपन महसूस किया गया। यह उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक सुनाई देगा। भक्त इसे नहीं सुनेंगे। जो पापी हँसते हैं, वे यह आवाज़ सुनेंगे, और वे खून तक की उल्टी करेंगे। यह मालिका में लिखा है। तो यह हुआ, और मैंने सत्संग की शुरुआत से ही इस पर चर्चा कर दी थी, और आपने भी वीडियो में देखा।

► यह उत्तर सुनें · 57:13 · 5 मार्च 2023

प्रश्न 1205 मानव समाज, जीव-जगत और स्वयं संसार परमाणु हथियारों से कैसे बचेगा?

उत्तर: यही परिणाम है, और मालिका में यह भी लिखा है कि जो भक्त भगवान कल्कि के समान भक्ति के साथ रहते हैं, वे परमाणु हथियारों से भी नहीं डरेंगे। आप सब सत्संग की धारा का अनुसरण कीजिए, संसार में कुछ दान-धर्म कीजिए, गौ माता को खिलाइए, गौ माता की सेवा कीजिए, अन्य जीवों की सेवा कीजिए, अपने माता-पिता की सेवा कीजिए, और संसार में अपने सभी कर्मों का फल भगवान को समर्पित कर दीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:00 · 5 मार्च 2023

सत्र 68 · प्रश्न 1206–1226

L64.1 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 9 मार्च 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1206 भूकंप आने वाला है, तो क्या बिहार और नेपाल में कोई खतरा होगा?

उत्तर: नेपाल में होगा, और बिहार में भी होगा। बिहार और नेपाल दोनों में होगा। अत्यधिक वर्षा होगी, और भूकंप के साथ-साथ युद्ध का प्रभाव भी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:35 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1207 कृपया हमें कोई उपाय बताइए जिससे हम इससे बच सकें।

उत्तर: भागवत पढ़िए, और उसके साथ-साथ सत्य, शांति और करुणा के बारे में जो मैं आपको बता रहा हूँ, उसका अभ्यास कीजिए। 16 अवतारों के विषय में, हमारे ऑनलाइन सत्संग में, मोहन राम नाम के एक लड़के ने इसे देखा है, और कृष्ण नाम का एक और लड़का है। तो, नीचे जो नंबर दिखाई देता है, उस पर कॉल कीजिए और सत्संग से जुड़िए; आपको सब कुछ पता चल जाएगा। फिर भगवान... एक समय आएगा जब पैसे का कोई उपयोग नहीं रहेगा। हमारी पुरानी वस्तु-विनिमय (बार्टर) की परंपरा लौट आएगी, जहाँ कोई चावल देता है, कोई दाल देता है, कोई सब्ज़ी देता है और बदले में चावल लेता है। आने वाले समय में ऐसे ही आदान-प्रदान से व्यवस्था चलेगी। तो, जो भक्ति और समर्पण की धारा में रहेंगे, भगवान उन्हें सुरक्षित रखेंगे, उन्हें कुछ नहीं होगा। आप धारा का अनुसरण कीजिए और ऑनलाइन सत्संग से भी जुड़िए। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 23:48 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1208 हमें अपने इस कार्य का प्रचार कैसे करना चाहिए?

उत्तर: वे इसे सुनकर बहुत प्रसन्न होंगे और भगवान का अनुसरण करेंगे। वे आपसे कहेंगे कि उन्हें सब कुछ बताइए। जो इस धारा में होने के लिए नहीं हैं, अर्थात् जो कलियुग के अंत से बचने के लिए नहीं हैं, वे इसे नहीं सुनेंगे; वे इसकी बात नहीं करेंगे। इसलिए, सबको उपदेश देना आवश्यक नहीं है। कई संप्रदाय... जैसे-जैसे कलियुग चल रहा है, भारत में और संसार में कई संप्रदाय बन गए हैं। यदि संप्रदाय न बनें, तो कलि (नकारात्मक पक्ष) का जन्म कैसे होगा? इसलिए, हमारा संदेश सबको बताना आवश्यक नहीं है, बल्कि केवल उन्हीं को जो भक्त और समर्पित हैं, जो इच्छुक व्यक्ति हैं।

► यह उत्तर सुनें · 27:43 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1209 मिलन कब तक होगा? भगवान द्वारा भक्तों का यह संगठन कब तक होगा? और कितना समय है, या वे पहले ही संगठित हो चुके हैं?

उत्तर: और यह 2026 तक चलता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:53 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1210 मालिका का संदेश उन तक अवश्य पहुँचा होगा, है ना? ऐसा तो हो नहीं सकता कि मालिका का संदेश उन तक न पहुँचा हो; अवश्य पहुँचा होगा।

उत्तर: न तो तुर्की कभी हमारा मित्र होगा, न ही पाकिस्तान। न वे रहे हैं और न कभी होंगे। इस विषय में, 2020 में, मैंने एक एपिसोड जारी किया था जिसमें मैंने लोगों को बताया था... उस 2020 के एपिसोड में... वे अपनी युद्ध-सामग्री का प्रयोग भारत के विरुद्ध करेंगे, ओडिशा तक। और पाकिस्तान सबसे बड़ी लड़ाई शुरू करेगा, विश्वयुद्ध खड़ा करते हुए। आज वह कहता है, 'हमारी मदद करो,' और मदद मिलने के बाद, जब वह अपने आप खड़ा होने लगेगा, तो कहेगा, 'भारत हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है।' और एक बात और, आने वाले समय में पाकिस्तान को फिर से सूखा, अत्यधिक वर्षा और भूकंप का सामना करना पड़ेगा। उस वर्षा से होने वाली तबाही भविष्य में और भी अधिक होगी। देश का मौसम पूरी तरह विषैला हो जाएगा। लोग केवल साँस लेने से ही मर जाएँगे। भगवान हमारे देश की रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:03 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1211 हमारे भारत में, आपके अनुयायियों के अलावा, क्या कुछ और लोग भी बचेंगे?

उत्तर: हमारी सरकार जो कुछ कर रही है, सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है। हमारे लिए भी वह बहुत होगा। तो ऐसे समय में उसके बारे में भी सोचने का समय है क्योंकि समय निकट है। ऐसे समय में हमारा मित्र हमारा मित्र ही रहेगा। कुछ कभी मदद नहीं करेंगे। रूस हमारी मदद करेगा। तो ऐसे समय में मालिका का प्रभाव... क्योंकि हमारा देश सनातन धर्म का देश है, हिंदू देश है, हमारे पुराण और शास्त्र... और सबसे महत्वपूर्ण है मालिका। इसके अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती अनुवाद—सभी अनुवाद हो चुके हैं, जापानी और रूसी सहित। हमारे सभी लोगों और हमारी शासन व्यवस्था के लिए इसका पालन करना आवश्यक है, जिससे भारत का कल्याण होगा। और भवितव्यता के विधान को कौन टाल सकता है? भगवान की योगमाया की शक्ति से लोग मोहित हो जाएँगे और कुछ भी समझ नहीं पाएँगे। जब विनाश होगा, तब हमारे भक्त समझेंगे कि पंडित जी ने जो कहा था वह आज हो रहा है। और यदि पहले कही गई बातों के आधार पर उन्होंने कुछ सावधानियाँ बरती होतीं, तो आज उन्हें यह दुख नहीं देखना पड़ता। लेकिन भवितव्यता को कौन टाल सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 33:55 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1212 बाबा, क्या 16 मंडलों का गठन हो गया है? क्या कुछ सदस्यों की नियुक्ति मंडलों में पहले से ही हो रही है?

उत्तर: 16 मंडलों के गठन के बाद धर्म की स्थापना आगे बढ़ेगी। क्योंकि देखिए, जब तक हमारे लोग किसी स्थान पर होते हैं... जैसे भारत में कुछ ऑपरेशनों के दौरान, अगर हमारे लोग बीच में होते हैं तो फायरिंग नहीं होती। सरकार हमेशा लोगों को शांतिपूर्वक निकालने की कोशिश करती है। इसी तरह, भगवान भी सोचते हैं कि एक बार 16 मंडल बन जाएँ, और सब धारा में आ जाएँ, सब भागवत पढ़ें, और सब सत्य युग के मानव बन जाएँ, तब भगवान उनकी रक्षा करेंगे। बाकी पापी लोगों का मन अलग तरह से काम कर रहा है। 16 मंडल फिर आगे बढ़ेंगे, क्योंकि 16 मंडलों के गठन के बाद धर्म की स्थापना बहुत तेजी से आगे बढ़ेगी।

► यह उत्तर सुनें · 35:57 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1213 मेरा प्रश्न यह है कि हमारा प्राचीन सांस्कृतिक ज्ञान, जो हमारे साहित्य और शास्त्रों में है, क्या वह बचेगा या नहीं?

उत्तर: देखिए, युग के अंत में भगवान अपने भक्तों के माध्यम से हमारे सभी शास्त्रों को एकत्र करते हैं। लेकिन इस युग में 'ब्रह्म प्रलय' (पूर्ण प्रलय) नहीं होगा जिसमें सब कुछ जल में डूब जाए। यह 'खंड प्रलय' (आंशिक प्रलय) होगा। सभी शास्त्र और ग्रंथ बचे रहेंगे। लेकिन पूरा विश्व वेदों के सिद्धांतों के अनुसार चलेगा। और ब्रह्मा जी और शंकर जी साथ बैठकर पूरे विश्व के लिए वेदों के सिद्धांतों पर आधारित एक संविधान बनाएँगे। वह संविधान पूरे विश्व में लागू होगा। और सभी शास्त्र सुरक्षित हैं, पहले के शास्त्र भी सम्मिलित हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:55 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1214 भारत की स्थिति को लेकर, हमारे महापुरुषों के इतिहास और हमारी संस्कृति के साथ जो छेड़छाड़ हुई है, क्या लोगों के सामने पूरी तरह स्पष्ट तस्वीर आएगी या नहीं?

उत्तर: और शोषित व्यवस्था... और हमारी वीरों और पराक्रमियों की परंपरा, वह पवित्र परंपरा इतिहास में रहनी ही चाहिए। क्योंकि हमें इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाना है। पहले वाले समाप्त हो चुके हैं, यह भी संभव नहीं होगा। लेकिन एक बात, इतिहास में हमने जो कुछ देखा है, हमारी संस्कृति और परंपरा में जो छेड़छाड़ और फेरबदल हमने देखा है, भगवान उसका सौ गुना बदला लेंगे। और यह एक गुप्त बात है... इसके बारे में मुझे ज्यादा नहीं कहना चाहिए। और अधिकतर, सनातन धर्म प्रकाशित होगा। इसके लिए मालिका में एक पूरी योजना बनाई गई है। पूरे विश्व में, केवल भारत में नहीं, पूरे विश्व में, एक भी व्यक्ति सनातन धर्म से विमुख नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:01 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1215 क्या गर्जना की आवाज़ें भी होंगी?

उत्तर: यह समय अभी शुरू नहीं हुआ है; यह भविष्य में होगा। यह पूरी दुनिया में होगा क्योंकि 'म्लेच्छ' (अपवित्र लोग) हर जगह हैं। म्लेच्छों के विनाश के लिए ये प्रारंभिक संकेत शुरू होते हैं। जैसे युद्ध से पहले छोटी-छोटी आवाज़ें होती हैं, और बाद में पूरा ऑपरेशन चलता है। अभी सभी देवताओं ने अपना अभ्यास शुरू कर दिया है, और आने वाले समय में वे इसे बढ़ाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 40:27 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1216 जब प्रकाश नहीं होगा, उस समय हमें क्या करना चाहिए? मैंने आपसे सुना था कि हमें दीपक जलाकर भगवान का नाम स्मरण करना चाहिए। और जब जंगली जानवर और पक्षी हमारे घरों और गाँवों में घुस आएँ, तब क्या करें?

उत्तर: अंधकार होगा। यह धर्म की स्थापना के अंतिम क्षणों में होगा। अर्थात्, जब कल्कि भगवान पूरे विश्व में धर्म की स्थापना करेंगे और स्वयं भगवान युद्ध करेंगे, उस समय सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। और उस समय दिव्य शक्तियाँ आएँगी और पापियों के विनाश के लिए हर घर में प्रवेश करेंगी। और उन सात दिनों की अवधि में भगवान एक नया सूर्य और एक नया चंद्रमा स्थापित करेंगे। सूर्य देवताओं के अलग-अलग नाम हैं। तो, जो सत्य युग के सूर्य देव बनेंगे... अर्थात्, सत्य युग में मंद, शीतल वायु और अच्छे वातावरण के लिए भगवान इस सूर्य देव को स्थापित करेंगे, जो एक अच्छी जलवायु बनाएँगे। और एक नए चंद्र देव भी स्थापित होंगे, जो रात्रि को दिन के समान उज्ज्वल बना देंगे। इसके लिए भगवान 7 दिनों की अवधि में तैयारी करेंगे। उस समय अंधकार रहेगा। और जंगल के जानवर, उस समय, 7 दिनों तक, सोचेंगे कि क्या हो रहा है। हमारे जो भक्त भगवान की शरण में और धारा में हैं, उन्हें कुछ नहीं होगा, क्योंकि भगवान उनकी रक्षा करेंगे। न कोई जानवर, न कोई योगिनी, न कोई विनाशकारी शक्ति उनके घर आएगी, न ही अंधकार में उन्हें कोई कष्ट होगा। भगवान अपनी कृपा और करुणामयी दृष्टि से उनकी रक्षा करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:40 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1217 यह कब जुड़ेगा? क्या यह इसी वर्ष होगा, या उसमें अभी समय है?

उत्तर: जब भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा, उसी क्षण वह युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा। अभी विश्व युद्ध का समीकरण बन रहा है—कौन सा देश किसके साथ रहेगा। यह समीकरण चल रहा है। लेकिन विश्व युद्ध तब होगा जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होगा, और चीन उसमें शामिल होगा। उसी क्षण वह युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:36 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1218 आपने इलेक्ट्रॉनिक्स के बारे में कहा था... उनका क्या होगा?

उत्तर: नहीं, यह आधुनिक व्यवस्था, कलियुग की व्यवस्था, यंत्र शक्ति है। क्योंकि 'कल' (यंत्र) के युग में, कोई भी काम करने के लिए मनुष्य को यंत्रों की आवश्यकता होती है। लेकिन सत्य युग में मंत्र शक्ति है। उस युग में मंत्र शक्ति से वर्षा कराई जा सकती थी। मंत्र शक्ति के द्वारा अग्नि से भी अपनी रक्षा की जा सकती थी। मंत्र शक्ति से अन्न या जो भी चाहिए, उत्पन्न किया जा सकता था। और एक देश से दूसरे दूर स्थान तक जाने के लिए 'मन-जन' (मन-यान) थे, अर्थात् मंत्र, हमारे हवाई जहाज़ों की तरह। तो आज हमारे पास जो तकनीक है, वह कई लाख गुना अधिक उन्नत होगी। लोहा होगा, सोना होगा, सभी धातुएँ होंगी। धातु गलाने की व्यवस्था भी सत्य युग में होगी। लेकिन वह कलियुग की संरचना के भीतर काम नहीं करेगी। क्योंकि देखिए, लोहे का उपयोग तब भी होता था। भीम जिस गदा का प्रयोग करते थे वह लोहे की बनी थी। तो लोहे की गदा... जरासंध... जिसने लोहे की गदा को जन्म दिया...

► यह उत्तर सुनें · 50:45 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1219 आने वाले समय में जो 16 मंडल बनेंगे, उनके परिसर के भीतर या उन क्षेत्रों में जो भक्त नहीं हैं, क्या उन्हें उन मंडलों में एकत्र किया जाएगा? या, यदि लोग किसी मंडल क्षेत्र में नहीं हैं, तो भगवान उनकी रक्षा कैसे करेंगे? कृपया समझाइए।

उत्तर: इतने सारे जिले हैं; हर राज्य में लगभग 300, 400, 500, यहाँ तक कि हजारों जिले हैं। तो, इसी तरह, 16 मुख्य मंडल कार्यालय होंगे। 16 मंडलों के अलावा, जिला और गाँव स्तर पर भी छोटे मंडल बनेंगे। उदाहरण के लिए, वाराणसी काशी मंडल को लीजिए। आसपास के सभी राज्य और लोग उस मंडल का हिस्सा होंगे। तो छोटे मंडल होंगे, और 16 बड़े मंडल उनकी निगरानी, नियंत्रण और देखभाल करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 55:05 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1220 मोदी जी के बारे में क्या?

उत्तर: आप सब भारत और विश्व में हो रहे परिवर्तनों को देख रहे हैं। उनके पास कितनी शक्ति है... मैं क्या कहूँ? आज विश्व में भारत का जो गौरव है, उसका प्रमाण दिखाई दे रहा है। और कोई दिखाई नहीं देता। शास्त्र ही प्रमाण हैं। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 57:18 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1221 वे भगवान शिव के उपासक हैं, वे इस विचारधारा में नहीं हैं, और शायद वे पाठ भी नहीं करते। उनके बारे में क्या?

उत्तर: और जिसकी कोई तुलना नहीं... और उसके साथ जो आता है वह है जीवों के प्रति करुणा। तो, 'जीव ब्रह्म सनातन'—जो ब्रह्म को नहीं समझते... कोई वेशभूषा से, भाषा से, या शास्त्र पढ़ने से साधु नहीं बन जाता। साधु अपने कर्मों से बनता है। 'सर्वं सहाय ले संन्यासी कथै'... महापुरुष अच्युतानंद ने इस बारे में लिखा है। जब सब कुछ त्याग दिया जाता है, तभी कोई संन्यासी, साधु, संत बनता है। आप उस पर विचार कर सकते हैं। जो इस धारा में नहीं आते, उनके बारे में मैं स्पष्ट रूप से नहीं बोलूँगा, क्योंकि आप हमारी परंपरा जानते हैं। लेकिन जो धर्म की परंपरा का पालन नहीं करते, जो जीव-हत्या से विरत नहीं होते, जो भगवान कल्कि के शरणागत नहीं होते, उनके लिए शायद बहुत बड़ी समस्या आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 58:28 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1222 ठीक है, पर महादेव का भक्त तो भगवान का ही भक्त है न?

उत्तर: भगवान के एक ही शरीर से सृष्टि होती है... वे एक ही शरीर से आएंगे न? एक समय आएगा, मैं आपको बताता हूँ... आप भगवान शंकर के भक्त हैं; भगवान शंकर हमारे गुरु हैं। तो मैं आपको इतना बताऊँगा: एक समय आएगा जब भगवान कल्कि का विवाह होगा, उस समय भगवान शंकर, माता पार्वती, देवी दुर्गा, भगवान ब्रह्मा और नारद मुनि आएंगे। और कुछ अच्छे भक्त इसे देख पाएंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:18 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1223 बचपन से मैं भगवान राम का नाम जपता आ रहा हूँ और उसी में रमा हुआ हूँ। अब जैसा बताया गया है कि उनका नाम माधव है, तो मुझे भगवान राम का नाम छोड़ने में थोड़ी कठिनाई हो रही है। मैं क्या करूँ? मैं भगवान राम

का नाम भुला नहीं पा रहा हूँ क्योंकि हनुमान जी से मेरा बहुत गहरा लगाव है।

उत्तर: यह तो बड़ी आनंद की बात है। देखिए, सत्य युग में भक्तों का उद्धार महाविष्णु के नाम से, नारायण के नाम से हुआ। त्रेता युग में भगवान राम, जो अवतार थे, उनका नाम जपकर उद्धार हुआ। द्वापर युग में भगवान कृष्ण के नाम से। कलियुग में कल्कि आएंगे, और उनका नाम... युग के अनुसार हम राम, कृष्ण, सबका नाम जपते हैं। इस बारे में हमें कोई मानसिक अवरोध नहीं रखना चाहिए। भगवान एक ही हैं। राम का नाम जपिए, कभी मत छोड़िए। हनुमान जी की पूजा कीजिए। अगर हम सम्मान न दें... भगवान के सभी अवतार स्वयं भगवान ही हैं। तो अगर हम सम्मान न दें, तो हम भेदभाव में पड़ जाएंगे। इसका यह अर्थ नहीं कि वे भक्त नहीं रहेंगे। आपके लिए कोई समस्या नहीं है, लेकिन जब भगवान आ ही गए हैं, तो उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है, है न बाबा? ... जो भगवान कल्कि आएंगे, उनके नाम के साथ 'राम' जुड़ेगा। उनका नाम कल्कि राम होगा। यह मालिका में भी लिखा है और शास्त्रों में भी। कल्कि राम का अर्थ है कि मानव अवतार में स्वयं भगवान राम ही शासन करेंगे। रूप कल्कि का होगा, नाम राम होगा। जितना आप राम का नाम जपते हैं, कुछ दिनों के लिए माधव का नाम भी जपिए। आप देखेंगे कि भविष्य में संसार में क्या-क्या होने वाला है, क्या समस्याएँ आएँगी। इस युग के अवतार की उपासना करके हमारे लोग जानेंगे कि भविष्य में क्या होगा, लोगों की रक्षा कैसे होगी, स्वयं को कैसे बचाना है, और भगवान से मिलने के लिए कौन-से कर्म करने हैं। और देखिए, भगवान मानव अवतार में आ चुके हैं, और इसी मानव अवतार में भक्तों को भगवान कल्कि के दर्शन होंगे। क्या आप भगवान कल्कि को देखना और उनसे मिलना नहीं चाहते? माधव नाम जपिए, और स्वयं देखिए कि उसमें कितना प्रकाश और कितनी शक्ति है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:23 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1224 लिखा है कि संसार में जो भी भगवान राम का नाम लेगा, उसे मार दिया जाएगा। ऐसा भयंकर कलियुग आ रहा है। लेकिन ऐसा लगता है कि सत्य युग शुरू होने वाला है, तो ये दूसरी बातें कब होंगी? क्या 1000 साल बाद फिर से कलियुग शुरू होगा?

उत्तर: देखिए, मैं आपको एक बात बताता हूँ। किसी साधु या संत पर टिप्पणी करना मेरे लिए ज़रूरी नहीं है। लेकिन इतना मैं कहूँगा... भगवान विष्णु के अवतार भगवान बुद्ध धरती पर आए। उस समय क्या हो रहा था? जीव-हत्या... और किसी में धर्म नहीं था; सब तंत्र में विश्वास करते थे। और आपने जो कहा कि मनुष्य छोटे होते जा रहे हैं... क्या आप जानते हैं कि द्वापर युग में भीम की ऊँचाई कितनी थी? 15-16 फुट नहीं। भीम जो गदा इस्तेमाल करते थे उसका वज़न 52 'भार' था, जो 52 क्विंटल से भी ज़्यादा है। क्या 15 फुट का व्यक्ति... मैं क्या कहूँ? लेकिन लोग ऐसी बातें कहते हैं। शास्त्रों को देखना ज़रूरी है। शास्त्रों में यही लिखा है। और मनुष्य का मांस... मध्य युग में असुर और नास्तिक मनुष्यों को मारकर खा रहे थे, और आज भी लोग मनुष्यों को खा रहे हैं। जो कोई यह कहे, उससे कहिए कि शास्त्र पढ़े। लेकिन देखिए, मेरे मन में सबके लिए सम्मान है। ... मैंने सब कुछ बता दिया था, और सब कुछ हो रहा है। वे कहेंगे कि यह हमारी गलती थी। वे कहेंगे कि हमने सनातन धर्म को गलत मार्ग पर ले गए, और उसके कारण बहुत से लोग सही मार्ग पर नहीं आ सके। इसका अर्थ है कि हम अपने अच्छे लोगों को संभाल नहीं सके, और संसार नष्ट हो गया।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:11 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1225 क्या मनुष्यों को जीने के लिए पानी नहीं मिलेगा?

उत्तर: धरती का जलस्तर... फिर 1000 दिनों का अकाल पड़ेगा। ऐसा समय आ रहा है। तो, भगवान के धर्म के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:13:08 · 9 मार्च 2023

प्रश्न 1226 जैसा आपने बताया कि सभी वैज्ञानिक यंत्र बंद हो जाएँगे, तो उस समय बाकी सबका जीवन कैसा होगा? और जब ये वैज्ञानिक यंत्र काम करना बंद कर देंगे, क्योंकि हमारा जीवन इन्हीं पर निर्भर है, तो जब सब कुछ अचानक रुक जाएगा तो हम कैसे जिएँगे? और ऐसे समय में क्या लोग भगवान की ओर मुड़ेंगे और मानेंगे कि भगवान आ गए हैं, या वे नास्तिक ही बने रहेंगे?

उत्तर: 2025 से 29-31 तक वह दिव्य लीला चलती रहेगी। इस बीच सूर्य से एक टुकड़ा धरती पर गिरेगा। और जब वह तीन टुकड़ों में टूटकर तीन महासागरों में गिरेगा, उस समय सारे कंप्यूटर और सैटेलाइट सिस्टम जलकर नष्ट हो जाएँगे। उस समय कोई कंप्यूटर काम नहीं करेगा, कोई तकनीक काम नहीं करेगी। उससे पहले भी धरती पर कई बार ऐसी समस्याएँ आएँगी, क्योंकि बार-बार सोलर सुनामी आ रही हैं, वे तरंगें आ रही हैं। लेकिन यह अंतिम होगी; यह 2025 और 2029-30 के बीच निश्चित रूप से होगी। और उसी समय, जब ऐसा समय आएगा, लोग कहेंगे, 'हम धर्म की ओर जाएँगे।' जो पहले से ही भगवान की शरण में हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं होगी। जो अंतिम क्षण में आएँगे, उनका शरीर इतना शुद्ध नहीं होगा कि पाँच महाविपत्तियों को सह सके। वे रक्षा के लिए, अपनी सुरक्षा के लिए अवश्य आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:19 · 9 मार्च 2023

सत्र 69 · प्रश्न 1227–1231

L64.4 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 12 मार्च 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1227 भगवान का विवाह कब होगा? यानी किस वर्ष में?

उत्तर: भगवान राम की तरह, भगवान का एक ही विवाह होगा। यह भगवान कृष्ण की तरह नहीं होगा, जिन्होंने अनेक भक्तों से मिलन किया ताकि उनके द्वारा व्यक्त की गई उस इच्छा को पूरा कर सकें कि वे भगवान के साथ शाश्वत आनंद पाएँ। इस जन्म में वैसा कुछ नहीं है; यह भगवान श्री राम की तरह होगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:10 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1228 वे 'निष्कलंक' अवतार हैं, तो कृपया 'निष्कलंक' के अर्थ पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: जैसे भगवान राम 'निष्कलंक' थे, जिसका अर्थ है कि भगवान का एक ही विवाह होगा। भगवान कृष्ण की तरह अनेक भक्तों से मिलन इसलिए था कि उन्होंने भगवान के साथ शाश्वत आनंद की जो इच्छा व्यक्त की थी, वह पूरी हो सके। लेकिन इस जन्म में वैसा कुछ नहीं है; यह भगवान श्री राम की तरह होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:05 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1229 गौ माता के बारे में बताइए। गौ माता की यह दुर्दशा कब तक चलती रहेगी? क्या भविष्य मालिका में इसका कोई उल्लेख है? वे इससे कब मुक्त होंगी?

उत्तर: यह समय बहुत निकट आ रहा है। मालिका में लिखा है कि कलियुग के अंत में बहुत बड़ी संख्या में गौ माताएँ विभिन्न रोगों से मरेंगी। यह इस बात का संकेत है कि जब धर्म का नाश होता है, तब दानवों का संहार होता है। रही बात आज जो गौ-हत्या करते हैं, उनकी—सभी पापियों से हिसाब लिया जाएगा। गौ-हत्या रुकेगी, और हर घर में गौ माता की पूजा होगी। वे हर घर में निवास करेंगी, और आने वाले पवित्र युग में हम गौ माता के साथ, जो हमारी अपनी माता के समान हैं, एक परिवार की तरह रहेंगे। वह समय निकट है, और पाप में डूबे हुए लोगों के लिए न्याय का समय भी निकट आ रहा है। प्रतीक्षा कीजिए, समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 08:20 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1230 आज देवी-देवताओं के नाम पर पशु बलि दी जाती है। यह पाप है, तो हम दूसरे लोगों की मानसिकता कैसे बदल सकते हैं? कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। आज मंदिरों में जो पशु वध और बलि होती है, मैं उस कर्म में विश्वास नहीं करता; मैं उसका विरोध करता हूँ। माता अपने पुत्र का वध नहीं करती और न ही अपने पुत्र की बलि लेती है; यह शास्त्रों में लिखा है। 'बलि' का वास्तविक अर्थ है त्याग। परंतु लोग स्वयं पशु समान बन गए हैं और दूसरे पशुओं को मार रहे हैं। अपना कर्म सुधारने के लिए दूसरे जीव को मारने से पाप ही बढ़ेगा, तो फिर किसी का दुःख कैसे दूर होगा? यह प्रथा आज मध्यकालीन तंत्र पूजा के कारण प्रचलित है। देवी-देवता राक्षसों का संहार करते हैं, उन निर्दोष जीवों का नहीं जिन्हें कोई ज्ञान नहीं है और जो कोई पाप नहीं करते। जो इन सीधे-सादे, पवित्र जीवों को मारते हैं, वे नरक जाएंगे। वह समय आएगा जब सभी मंदिरों में पशु बलि बंद कर दी जाएगी। कलियुग में बलि की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भगवान के नाम जप और भजन से ही सारे दुःख दूर हो जाते हैं, जैसे श्रीमद्भागवत पढ़ना और माधव का नाम जपना।

► यह उत्तर सुनें · 10:55 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1231 सत्ययुग आने ही वाला है, है ना?

उत्तर: भगवान का राज्य स्थापित होगा। सभी भक्त प्रतिदिन यज्ञ करेंगे, धर्म की धारा में रहेंगे और भागवत पढ़ेंगे। अच्छा भोजन करके, भजन गाकर, भगवान की शरण लेकर, और उनके नाम व कीर्तन का जप करके वे मुक्ति प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 14:32 · 12 मार्च 2023

सत्र 70 · प्रश्न 1232–1240

L64.3 - मनुष्य लोग सत्य युग में कैसे जायेंगे? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 12 मार्च 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1232 मेरा प्रश्न है, मैं पुणे से मनोज हूँ। मालिका में उल्लेख है कि 64 करोड़ लोग बचेंगे। क्या ऐसी कोई संभावना है कि हम उपासना के द्वारा इस संख्या को बढ़ा सकें, ताकि अधिक से अधिक लोग बच सकें और सत्य युग में प्रवेश कर सकें? या यह संख्या निश्चित है?

उत्तर: भक्त के भाग्य में जो लिखा है, वह अवश्य होगा। इस युग के महापाप से, जो शुद्धता के साथ मानव जीवन की धारा में प्रवेश करते हैं... आपके प्रश्न के उत्तर में, हाँ, यदि लोग धर्म की ओर मुड़ें तो संख्या बढ़ सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 06:15 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1233 मैं यह प्रश्न पूछना चाहता था: जैसे जब भगवान राम आए थे, तब माता सीता ने भी धर्म की स्थापना में योगदान दिया, और फिर जब भगवान कृष्ण आए, तो राधा जी ने भी... [अस्पष्ट]। क्या भगवान कल्कि की भी कोई संगिनी होंगी, और मालिका उनके विषय में क्या कहती है?

उत्तर: जब भगवान अपना अवतार लेंगे, तब माता वैष्णो देवी महालक्ष्मी के अवतार के रूप में मनुष्य शरीर में आएंगी। मनुष्य शरीर में ही भगवान कल्कि के साथ उनका विवाह होगा। भगवान कल्कि का माता वैष्णो देवी के साथ विवाह संस्कार होगा, और कुछ अच्छे भक्तों को उसे देखने का अवसर मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 08:38 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1234 भक्तों के एकत्र होकर भगवान कल्कि से मिलने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: पहले एक सम्मेलन होगा। मैं आपको क्रमशः बताता हूँ। सबसे पहले भक्त अनुयायी मिलेंगे। 16 मंडल (समूह) बनाए जाएंगे। भक्त मार्ग पर चलेंगे और भगवान का अनुसरण करेंगे, उनके शरणागत रहेंगे। विश्वकर्मा वह आश्रम बनाएंगे जहाँ भगवान कल्कि निवास करेंगे। उस समय विश्वकर्मा भगवान की नगरी बनाएंगे, और भगवान के रहने के लिए उनका आश्रम या महल बनाया जाएगा। अंतिम समय में एक ऐसा आश्रम होगा जहाँ 10,000 भक्त एकत्र होंगे। यदि आपकी भक्ति शुद्ध है और आप भगवान की शरण में हैं, तो भगवान आपको बुला सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:15 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1235 हम भगवान कल्कि को कैसे पहचान सकते हैं? क्या उनके शरीर पर कोई विशेष चिह्न हैं?

उत्तर: कृष्ण के चरण को हिरण का कान समझ लेना... वही चिह्न उनके शरीर पर है, और मालिका में इसके विषय में लिखा गया है। तो यदि आप सच्चे भक्त हैं और आपमें पवित्रता है, तो आपको वह चिह्न अवश्य देखने को मिलेगा। आप 'श्रीवत्स' चिह्न देखेंगे, ध्वजा चिह्न देखेंगे, और अन्य चिह्न भी; आप सब कुछ देखेंगे। सच्चे भक्त को यह दर्शन प्राप्त होता है। जो पापी केवल भगवान कल्कि की परीक्षा लेने आएगा, उसे कुछ भी दिखाई नहीं देगा। परंतु जो शुद्ध प्रेम-भक्ति के साथ आते हैं, उन्हें भगवान बिना माँगे ही सब कुछ दिखा देते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:30 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1236 मैंने बहुत से लोगों से चर्चा की है, जो समझाने पर भी नहीं समझते; उनकी बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो चुकी है। हमें उनके साथ काम करना पड़ता है, और हमारी प्रवृत्तियाँ और उनकी प्रवृत्तियाँ बहुत अलग हैं। उनके साथ काम करना हमारी मजबूरी है, पर हमें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हम बस भगवान का नाम जपते रहते हैं। तो अब क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, हम कहीं भी रहें—गाँव में, महल में या शहर में—तामसिक (अज्ञानी) लोग मालिका या भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं समझेंगे। जहाँ धर्म की बात हो, वहाँ ऐसे लोगों के साथ कभी चर्चा में मत पड़िए। उनसे जितना कम समय हो सके उतना ही व्यवहार कीजिए, केवल उतना ही जितना आवश्यक हो। यदि कोई भक्त या अच्छा व्यक्ति मिल जाए तो उससे बात करना बेहतर है। शास्त्र कहते हैं कि जो तर्क-वितर्क करने वाले और अज्ञानी हैं, उनके साथ शास्त्र, भविष्य या धर्म की चर्चा कभी नहीं करनी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 18:27 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1237 हमारे देश में बहुत से विद्वान कथावाचक, संत और ऋषि हैं। यदि वे सब मिलकर भविष्य मालिका का प्रचार-प्रसार करें, तो भगवान का कार्य अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ सकता है और भक्त एकजुट हो सकते हैं। ऐसा क्यों नहीं हो रहा?

उत्तर: उनका एक साथ आना नितांत आवश्यक है। परंतु विभिन्न धार्मिक धाराओं के बहुत से लोग तो स्वयं को ही भगवान घोषित कर देते हैं। कुछ कहते हैं कि भगवान के पास जाने की आवश्यकता नहीं, गुरु ही मोक्ष हैं, इसलिए बस गुरु के साथ ही रहना चाहिए। और कुछ अन्य कहते हैं कि कलियुग 432,000 वर्षों तक चलेगा। ऐसे समय में, इतने विभाजनों के साथ, यह कठिन है। आप लोग इसलिए आ रहे हैं क्योंकि उनमें से बहुतों ने स्वयं को ही भगवान बना लिया है।

► यह उत्तर सुनें · 20:53 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1238 गुरुजी, मेरा एक और प्रश्न था। हम शाकाहारी हैं, पर प्याज और लहसुन का सेवन करते हैं। क्या इन्हें भी छोड़ना आवश्यक है?

उत्तर: आप ले सकते हैं। इसमें कोई पाप नहीं है। मंदिर में प्रसाद में वैसे भी प्याज और लहसुन का उपयोग नहीं होता। तो यदि यह आपके वश में है, तो छोड़ दीजिए। यदि यह आपके वश में नहीं है, तो प्याज-लहसुन खाना कोई वध-दोष नहीं है, और यह पाप नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 23:27 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1239 मैं एक बात पूछना चाहता था: क्या हम भी भगवान के विवाह में सम्मिलित हो सकते हैं?

उत्तर: विवाह बहुत गुप्त रूप से होगा। माता वैष्णो देवी, महालक्ष्मी के रूप में, भगवान से विवाह करेंगी। उस समय स्वयं प्रजापति ब्रह्मा, भगवान शिव और अष्ट दुर्गाएँ नृत्य करेंगी। उस क्षण कुछ अच्छे, सच्चे हृदय वाले भक्त उपस्थित रहेंगे, क्योंकि भगवान ने उन्हें पहले ही बुला लिया होगा। जो पहले से वहाँ रह रहे होंगे, वे भी उपस्थित रहेंगे, क्योंकि यह अचानक होगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:58 · 12 मार्च 2023

प्रश्न 1240 क्या भगवान के चारों धाम सुरक्षित रहेंगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, बद्रीनाथ धाम और रामेश्वरम, ये दो धाम... और अन्य दो धाम, द्वारका...

► यह उत्तर सुनें · 27:16 · 12 मार्च 2023

सत्र 71 · प्रश्न 1241–1253

L65 - विश्व सनातन धर्म का तृतीय महासत्संग (सूरत सभा) | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 7 मई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1241 भविष्य पुराण में वर्णित आपदाओं से कौन-से देश सबसे अधिक प्रभावित होंगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। आने वाले समय के लिए भविष्य पुराण में जो लिखा है, उसके अनुसार सबसे अधिक प्रभावित होंगे पूर्व दिशा के देश, जैसे चीन। पूर्व के सभी देशों के नाम और निशान मिलना कठिन हो सकता है। मध्य-पूर्व (मिडिल ईस्ट) के देशों के लिए महाप्रलय (महाबाढ़) का प्रभाव रहेगा। एक ओर रेगिस्तान में अत्यधिक वर्षा होगी, और अंत में तटीय क्षेत्र भी बहुत अधिक नष्ट होंगे। अफ्रीकी देश, ऑस्ट्रेलियाई देश, अमेरिका और यूरोप के 65 से 70% देश प्रभावित होंगे। भूकंप का प्रभाव अधिक रहेगा, और कुछ विनाश बाढ़ से होगा। ऑस्ट्रेलिया का लगभग 65 से 75% भाग जलमग्न हो जाएगा। श्रीलंका जैसा देश समाप्त हो जाएगा; कुछ समय के लिए वह एक छोटे द्वीप के रूप में रह सकता है और फिर पूरी तरह जल में डूब जाएगा। भारत सबसे सुरक्षित देश के रूप में उभरेगा। भारत की भूमि देवताओं द्वारा संरक्षित है, इसीलिए इसे 'देव भूमि' कहा जाता है। प्रभु की कृपा से, यह भारत भूमि... विभिन्न देशों के विषय में जो कुछ कहा गया, वहाँ केवल छोटे-छोटे भूखंड ही शेष रहेंगे, और उन स्थानों पर केवल भक्त ही निवास करेंगे। और वहाँ पुनः सनातन धर्म की स्थापना होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:28 · 7 मई 2023

प्रश्न 1242 मैं एक वीडियो देख रहा था जिसमें दावा किया गया था कि भगवान कल्कि 2024 में प्रकट होंगे और संसार के दुष्ट लोगों का विनाश होगा। क्या यह सही है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। वे पूछ रहे हैं कि क्या भगवान कल्कि 2024 में प्रकट होंगे और क्या संसार के दुष्ट लोगों का विनाश होगा। परंतु मेरे अनुसार, धर्म की स्थापना 2019 में कोरोना के आरंभ के साथ ही शुरू हो गई थी। विनाश बढ़ता जा रहा है और आगे भी बढ़ता रहेगा। भगवान कल्कि 2029 तक गुप्त रहेंगे। परंतु अपनी इच्छाशक्ति से वे सम्पूर्ण ब्रह्मांड में धर्म की स्थापना करेंगे। भगवान कल्कि किसी के सामने प्रकट होकर दर्शन नहीं देंगे। वे गुप्त रूप से अपनी लीला करेंगे, और किसी को पता नहीं चलेगा। इसके विषय में भविष्य पुराण में लिखा है। महर्षि अच्युतानंद ने लिखा है कि यह गुप्त ज्ञान से भी परे है। जब ब्रह्मा भी नहीं जान सकते, तो मनुष्य कैसे जानेंगे? यह गुप्त तत्त्व—प्रभु का प्राकट्य—ब्रह्मा, शंकर, सती, सरस्वती या माता गायत्री तक नहीं जान पाएँगे, तो मनुष्य कैसे जानेंगे? कारण यह है कि साधारण मनुष्य नहीं, बल्कि भक्त मालिका के माध्यम से जानेंगे। जैसे आप सब इसका अनुसरण कर रहे हैं, आज जो भक्त इसका अनुसरण कर रहे हैं, वे अवश्य जानेंगे। इसीलिए मालिका लिखी गई है। वे सम्पूर्ण ब्रह्मांड में भ्रमण करेंगे, और जहाँ-जहाँ भगवान कल्कि के सुदामा महासंघ के भक्त होंगे, वे उन भक्तों को राजा बनाएँगे, सनातन धर्म की स्थापना करेंगे, और फिर भगवान कल्कि की राजधानी भारत के ओडिशा में स्थापित होगी। शास्त्रों में लिखा है कि प्रभु प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होंगे। और यदि होंगे भी, तो किसी को उसका कोई प्रमाण नहीं मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 13:19 · 7 मई 2023

प्रश्न 1243 प्रणाम गुरुदेव। मैं देहरादून से प्रभाकर हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि हिमालय क्षेत्र के लिए जिस विनाशकारी भूकंप का उल्लेख है, वह किस काल में आएगा?

उत्तर: वह इसी युग में होगा। यह भी मालिका में लिखा है। ऐसी हवा चलेगी, 49 प्रकार की हवाएँ एक साथ चलेंगी, और उस समय हिमालय खंड-खंड हो जाएगा। हिमालय में भयंकर भूकंप आएगा। परंतु भक्त बच जाएँगे—वे जो सनातन धर्म के सुधर्म महासंघ और भविष्य मालिका पुराण की धारा में हैं। दूसरों के लिए यह विनाश का कारण बनेगा। दिल्ली से उत्तराखंड, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, इंडोनेशिया, म्यांमार, भूटान और नेपाल तक, एक भयंकर भूकंप से कई करोड़ लोगों के जन-धन की हानि होगी। तो डरने की कोई बात नहीं है। इसीलिए भविष्य पुराण लिखा गया है। हम आपको बता रहे हैं कि वह समय आ रहा है। उस समय से पहले इस धारा में और सनातन धर्म में आ जाइए। यह आपके लिए मंगलकारी होगा। जय जगदम्बे।

► यह उत्तर सुनें · 18:18 · 7 मई 2023

प्रश्न 1244 लगातार कई स्वप्न आने के बाद मैं पूछना चाहती हूँ: मुझे जो ये स्वप्न आ रहे हैं, उनका क्या अर्थ है? मैंने स्वप्न में देखा कि एक सिंह बच्चों से भरे हॉल में घुस आया, जिससे भगदड़ और अफरा-तफरी मच गई।

उत्तर: देखिए माताजी, आने वाले समय में एक ऐसा काल आएगा जब जंगल के जंगली पशु, जैसा हमारे भविष्य पुराण में लिखा है, लोगों के घरों और सभाओं में घुस आएँगे और लोगों को कष्ट देंगे। परंतु जो भक्त मालिका की धारा में हैं, उनका कुछ नहीं होगा। पशु उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे, क्योंकि प्रभु उनकी रक्षा करेंगे। कलियुग में धर्म संकुचित था, परंतु जैसे-जैसे कलियुग समाप्त हो रहा है, धर्म प्रकाशित होगा और बढ़ता ही जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:12 · 7 मई 2023

प्रश्न 1245 महालक्ष्मी और राधा रानी में क्या संबंध है? क्या दोनों एक ही हैं?

उत्तर: महालक्ष्मी और राधा रानी स्वरूप हैं। उनके रूप समान हैं, परंतु नाम अलग-अलग हैं। वे प्रभु की शक्ति और उनकी मूल प्रकृति से प्रकट हुई हैं। महालक्ष्मी वरुण देव की पुत्री हैं और भगवान विष्णु के साथ नित्य निवास करती हैं। तो कोई अंतर नहीं है, जैसे अलग-अलग लीलाओं के लिए अवतार अलग-अलग होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने सर्वप्रथम राधा रानी से विवाह किया था।

► यह उत्तर सुनें · 25:05 · 7 मई 2023

प्रश्न 1246 आदरणीय पंडित जी, मैं उन भक्तों के विषय में पूछना चाहता हूँ जो आपकी धारा में हैं और त्रिसंध्या कर रहे हैं। परंतु अन्य स्थानों पर भी प्रभु के भक्त हैं, जैसे चौरासी, चित्रकूट धाम, और अन्य स्थानों पर जहाँ संत तपस्या कर रहे हैं, जिनके लिए प्रभु का नाम ही सर्वोपरि है। क्या प्रभु इन भक्तों की भी रक्षा करेंगे, या रक्षा केवल उन्हीं की होगी जो इस विशेष धारा में हैं?

उत्तर: उस समय नाम की महिमा सर्वोपरि थी। उस समय तक नाम का प्रभाव कारगर था। प्रभु ने इस दिशा में कार्य आरंभ कर दिया है। गीता में उन्होंने अर्जुन से कहा था... जैसे-जैसे कल्कि अवतार का समय निकट आ रहा है, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कल्कि अवतार के साथ-साथ स्नान, शुचिता, दया, क्षमा और तप जैसे आचरण आवश्यक हैं। इसलिए मनुष्य के लिए इस धारा को अपनाना ही सर्वोत्तम है। जो केवल नाम जप कर रहे हैं, वे भी ठीक हैं, परंतु बात यह है कि युग बदलेगा। युग के साथ-साथ नए युग की धर्म-परंपराओं और सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना ही मानव कल्याण का मार्ग होगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:47 · 7 मई 2023

प्रश्न 1247 भगवान कल्कि से जुड़ा महायुद्ध कब आरंभ होगा?

उत्तर: वह जागृत होगा... और भगवान कल्कि का... 2025 में युद्ध का रणक्षेत्र, शायद विश्वयुद्ध... देखिए, 2010-12 से हमारी मालिका हिंदी में उपलब्ध है। तब से भारत में हजारों चैनल खुल गए हैं। उन्होंने न तो मालिका पढ़ी है और न ही उन्हें कोई ज्ञान है। उनके विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है। परंतु हम भविष्य पुराण से बोलते हैं। लिखा है कि चीन भारत पर आक्रमण करेगा। जब भगवान कल्कि की इच्छा होगी, जब 16 मंडल बन जाएँगे और सभी भक्त दीक्षित हो जाएँगे, तब भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा। पहले पाकिस्तान की ओर से, और तुरंत चीन की ओर से, भारत के विरुद्ध दो मोर्चों पर युद्ध छेड़ा जाएगा। भविष्य मालिका पुराण इसलिए लिखा गया है ताकि आप सत्य युग को जान सकें। आपको धर्म महासंघ, सनातन धर्म, विश्व सनातन धर्म से जुड़ना चाहिए। यह विश्व के लिए, आपके लिए और सबके लिए अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 31:13 · 7 मई 2023

प्रश्न 1248 भक्त कैसे जीवित रहेंगे? भक्तों को भोजन कौन देगा? और युद्ध के महाविनाश में लोग कैसे बचेंगे?

उत्तर: वे सनातन धर्म का पालन करेंगे। यह आपके पास ही होगा... अयोध्या पास ही है। यदि अयोध्या निकट है, तो आप सब अयोध्या मंडल से जुड़ जाइए। प्रभु का नाम जपते हुए हम ब्रह्मांड के कल्याण के लिए कार्य करेंगे। उस स्थान पर, इन 16 मंडलों में, न परमाणु बम, न कोई अन्य बम, न बंदूक, न कोई आपदा प्रभाव डाल पाएगी। आपके लिए अयोध्या मंडल अच्छा है, माताजी।

► यह उत्तर सुनें · 34:23 · 7 मई 2023

प्रश्न 1249 पिताजी, हमें कैसे पता चलेगा कि कहाँ और कैसे जुड़ना है?

उत्तर: हमारे डिस्क्रिप्शन बॉक्स में मोहन नाम के एक व्यक्ति हैं, और मनीष नाम का एक लड़का भी है, जो रजिस्ट्रेशन संभालते हैं। इन सभी लोगों के नंबर वहाँ दिए गए हैं; आप उनसे संपर्क कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:19 · 7 मई 2023

प्रश्न 1250 हम महाराष्ट्र से हैं, तो यहाँ हमें किस मंडल से जुड़ना चाहिए? यह हमें कैसे पता चलेगा?

उत्तर: महाराष्ट्र गणपति मंडल के अंतर्गत आता है। महाराष्ट्र में बहुत से भक्त हैं। यदि आप कृष्णान्य की धारा में उनके साथ अपने अनुभव साझा करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि त्रिसंध्या की धारा और भागवत पाठ से लोगों को कैसी शक्ति प्राप्त होती है। महाराष्ट्र मंडल के लिए बहुत से ऑनलाइन सत्संग भी होते हैं। आप यूट्यूब डिस्क्रिप्शन में दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं; नाम है मनीष। इन सभी मंडलों में भक्तों का एकत्रीकरण 2026 तक चलेगा। उस समय लोगों को हमारे जीवन में त्रिसंध्या की धारा और भविष्य पुराण का महत्व समझ में आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:30 · 7 मई 2023

प्रश्न 1251 क्या हमें कोई विशेष मंत्र जपना चाहिए, या हम 'जय श्री माधव, जय श्री माधव' भी जप सकते हैं?

उत्तर: यदि कोई भक्त पहले से ही भगवान कृष्ण या राम की उपासना करता है, तो उसे वह जारी रखना चाहिए। उसके साथ-साथ राम, कृष्ण या भगवान के किसी भी अवतार का नाम जपने में कोई समस्या नहीं है। परंतु, जैसा कि मालिका में कलियुग के लिए लिखा है, स्वयं भगवान कल्कि माधव नाम के साथ आएंगे, और माधव नाम से ही वे भक्तों का उद्धार करेंगे। उसके बाद वे कल्कि का शरीर धारण करके संपूर्ण विश्व में संहार का कार्य करेंगे। यह दो चरणों में होगा: पहला है भक्तों का उद्धार, और दूसरा है संहार का कार्य तथा भक्तों को विपत्ति से मुक्त करना। इसके लिए 'माधव' नाम का जप करें, मंत्र संध्या करें, भगवद्गीता पढ़ें, और अपने इष्टदेव की उपासना भी करें।

► यह उत्तर सुनें · 39:13 · 7 मई 2023

प्रश्न 1252 जिज्ञासावश, मैंने किसी दूसरे चैनल पर एक वीडियो देखा जिसमें भविष्य के बारे में कुछ दावे किए जा रहे थे। मुझे किस पर विश्वास करना चाहिए?

उत्तर: भागवत पढ़ते रहिए और मंडल तथा धारा से जुड़े रहिए। समय और भक्ति के साथ, भविष्य में जो कुछ होना लिखा है, वह होगा। अब बहुत सारे चैनल आ गए हैं, और वे भी मालिका का प्रचार इधर-उधर करते हैं क्योंकि यही उनका काम है। हमारा उससे कोई लेना-देना नहीं। अपने समय का सदुपयोग कीजिए। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए और अभी धारा से जुड़ जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 40:57 · 7 मई 2023

प्रश्न 1253 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि क्या स्त्रियाँ और बच्चे गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं?

उत्तर: गायत्री मंत्र माता की शक्ति है। यह जगत के लिए पवित्र है और पृथ्वी को धारण करता है। गायत्री मंत्र के जप से... लिखा है कि मंत्र जप का विधान है, और सभी इसका जप कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 49:10 · 7 मई 2023

सत्र 72 · प्रश्न 1254–1271

L66 - 'माधव' नाम कैसे पापों से रक्षा करता है? | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 11 मई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1254 इस समय भगवान माधव का ही नाम क्यों?

उत्तर: युग और अवतार के अनुसार, पृथ्वी पर लोग भगवान के अनेक अनंत रूपों का ध्यान करते हैं। इस युग में, जिसे हम संगम या आद्या शक्ति युग कहते हैं, माधव नाम हमारे लिए सबसे महान, सबसे पवित्र और उद्धार करने वाली धारा है। शास्त्रों के अनुसार, भगवान के जन्म से पहले माता भगवती ने भगवान श्रीकृष्ण का नाम माधव रखा था। किंतु उस समय की परिस्थितियों के अनुसार, वसुदेव बाबा के निर्देश पर वे नंदगाँव गईं और भगवान श्रीकृष्ण का नाम माधव से बदलवाकर श्रीकृष्ण करवा दिया। इससे माता भगवती थोड़ी दुखी हुईं। नाम सबसे बड़ी परंपरा है। जब उन्होंने नाम रखा था, तब भगवान ने समझाया, 'देखो माँ, यह माधव नाम विशेष रूप से कलियुग के लिए सुरक्षित रखा गया है।' इसे परंपरा भी कहते हैं, और भगवान जगन्नाथ की पूजा भी माधव मंत्र से होती है। तो भगवान ने माता भगवती से कहा कि अंत में भक्तों का उद्धार माधव नाम से ही होगा। मालिका ग्रंथ में इसका बार-बार वर्णन है। युग के अनुसार नाम, युग के अनुसार अवतार, और अवतार के अनुसार नाम जपने से भक्तों को मुक्ति मिलती है। अर्थात, उन्हें एक अस्तित्व से दूसरे अस्तित्व में जाने का मार्ग मिल जाता है, और कुछ को मुक्ति, वैकुंठ (दिव्य धाम) या स्वर्ग भी प्राप्त होता है। तो ऐसे समय में यह माधव नाम स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की इच्छा से है, और कलियुग के अंत में इसका प्रचार हो रहा है। इसलिए इस युग में हमें माधव नाम का जप करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 07:23 · 11 मई 2023

प्रश्न 1255 आप गुजरात में सत्र करते हैं; कृपया पटना में भी एक सत्र करने पर विचार करें, ताकि हमें भी आपके दर्शन हो सकें?

उत्तर: दर्शन के साथ-साथ भागवत कथा भी होगी, और यह समय के अनुसार होगा। तो जब भगवान की इच्छा होगी, तब अवश्य होगा। समय के साथ होगा, और जब होगा, तो आप सबको सूचित किया जाएगा। यह पवित्र धारा प्रचारित होगी, पर उस समय से पहले हम आपको बता देंगे। आप धारा में बने रहिए और सत्संग में भाग लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:06 · 11 मई 2023

प्रश्न 1256 पिताजी, सनातन धर्म को कैसे समझना चाहिए? सनातन धर्म क्या है, जीवनशैली कैसी होगी, अभी हम जिस पूजा-पद्धति का पालन करते हैं उसका क्या होगा, और भगवान की सेवा और पूजा किस प्रकार की जाएगी? मैं यह सब जानना चाहता हूँ।

उत्तर: जो प्रथम रूप प्रकट हुआ, वह विश्वरूप, सनातन कहलाता है। भगवान का पहला नाम सनातन था, आदि ब्रह्म सनातन। इस प्रकार, आदिकाल से ब्रह्मांड में रचा गया धर्म सनातन धर्म है। यह हर युग में नदी की तरह निरंतर प्रवाहित होता रहा है, और वही सनातन धर्म कलियुग में भी चल रहा है। सनातन धर्म की परंपरा राजपरंपरा और वैदिक परंपरा से आती है। सनातन धर्म सबसे पहले वेदों को स्वीकार करता है, अर्थात वेद ही सनातन धर्म का सबसे बड़ा संविधान है, और सभी अनुयायी वेदों को स्वीकार करेंगे। चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—सनातन धर्म के अनुसार रहेंगे और संसार का संचालन करेंगे। उन सबके बीच प्रेम और स्नेह होगा। वर्तमान युग में हजारों जातियाँ बन गई हैं, परंतु उस आने वाले युग में केवल चार वर्ण ही रहेंगे, और उनमें प्रेम, संपर्क, पवित्रता, आदान-प्रदान और मेल-जोल होगा। सबमें प्रेम और पवित्रता होगी।

► यह उत्तर सुनें · 20:47 · 11 मई 2023

प्रश्न 1257 जीवनशैली कैसी होगी, और भगवान की पूजा और सेवा की विधि क्या होगी?

उत्तर: सनातन धर्म में लोगों की जीवनशैली सत्य, धर्म, शांति, करुणा, क्षमा और मित्रता पर आधारित होगी। मेरे पास सब कुछ वर्णन करने का समय नहीं है, परंतु जो सनातनी बनते हैं, जो सनातन धर्म में जीते हैं, और जो उसके लिए कार्य करते हैं, उनमें ये गुण अवश्य होने चाहिए: सत्यनिष्ठा, शांति, करुणा, क्षमा और सबके साथ मित्रता—शत्रु को भी मित्र मानना। भगवान की पूजा तीन संध्याओं (त्रिसंध्या) के माध्यम से की जाएगी, और भक्ति तथा भावनात्मक जुड़ाव वैसा ही होगा जैसा भागवत में वर्णित भक्तों का था।

► यह उत्तर सुनें · 22:56 · 11 मई 2023

प्रश्न 1258 इस युग में जिस सच्चे भक्त का उद्धार होना निश्चित है, उसकी पहचान हम कैसे करें?

उत्तर: मान लीजिए आप किसी से कहते हैं, 'देखिए, भविष्य पुराण के अनुसार कलियुग समाप्त हो चुका है। अब धर्म की स्थापना और भक्तों के भगवान से मिलन का समय है।' यदि वह व्यक्ति कहे, 'बिल्कुल सही है, मुझे इसके बारे में सपने आते हैं, मुझे बार-बार इसका आभास होता है,' और उसकी आँखों में आँसू आ जाएँ, भक्ति जाग उठे, और वह आपके पीछे चलने लगे, तो आप जान जाइएगा कि यह आने वाले युग का सच्चा भक्त है जिसका उद्धार होना है। शास्त्रों के अनुसार भक्त का एक और लक्षण यह है कि भक्त सदा मौन और शांत रहते हैं। वे अधिक बात नहीं करते और कुछ उदास भी रहते हैं। वे मन में निरंतर भगवान के संपर्क में रहते हैं। वे बाहरी कर्म करते हैं पर कर्मों को भूल जाते हैं। वे किसी भी वस्तु से, चाहे सामाजिक हो या भौतिक, कोई आसक्ति नहीं दिखाते। वे सदा भीतर ही भीतर नाम जपते और स्तुति गाते हैं, बिना किसी दिखावे के। वे किसी से वाद-विवाद नहीं करते। वे कम खाते हैं और कम सोते हैं। कम खाना, कम सोना, और मन में भगवान की भक्ति और प्रेम में गहराई से डूबे रहना—ये भक्त के लक्षण हैं। ऐसा नहीं है कि कोई मंदिर या पूजाघर में 10 घंटे बैठकर भक्त बन जाता है। वे किसी की निंदा नहीं करते। भक्त की सरलता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, साथ ही वैराग्य का भाव भी। और सबसे महत्वपूर्ण, यदि कहीं भागवत कथा, आध्यात्मिक चिंतन या सत्संग हो रहा हो, तो आप उन्हें वहाँ सबसे पहले पाएँगे। इससे पता चलता है कि उनमें भक्ति है और भक्त के लक्षण हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:50 · 11 मई 2023

प्रश्न 1259 भगवान के स्वरूप का वर्णन क्या है?

उत्तर: भविष्य पुराण पढ़ने से आपको इसकी जानकारी मिल जाएगी। पुस्तक आपको अमेज़न और अन्य संस्थाओं के माध्यम से मिल सकती है। पर इतना मैं आपको बता दूँ: भगवान माधव उतने ही सुंदर और मनोहर होंगे जितने भगवान कृष्ण अपनी 16 कलाओं के साथ थे। भगवान कल्कि 64 कलाओं के साथ आ रहे हैं, इसलिए वे बहुत सुंदर, बहुत पवित्र, बहुत आनंदमय और अपने अनुयायियों के प्रति बहुत समर्पित होंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 28:13 · 11 मई 2023

प्रश्न 1260 गुरुजी, आप बंगाल की वर्तमान स्थिति जानते हैं। यहाँ जो हो रहा है, क्या वह भविष्यवाणियों में लिखा है? भगवान तो आ चुके हैं और इस धारा में हमारे साथ हैं, फिर भी यह सब हो रहा है। अब तो हम मंदिर भी नहीं जा सकते... यहाँ हमारे मंदिर जलाए जा रहे हैं। क्या यह सब भविष्यवाणी में है गुरुजी, भगवान के आगमन के बाद भी?

उत्तर: आप जो कह रहे हैं, ठीक वही लिखा था, और आज वह हो रहा है। आज बंगाल में हो रहा है, पर इसका प्रभाव पूरे भारत और विश्व में, तथा अन्य राज्यों में भी फैलेगा। 2025 में, जब बृहस्पति और शनि का योग होगा, तब सांप्रदायिक हिंसा बहुत बढ़ेगी। पर देखिए, हमें समय के साथ बदलना होगा। आपने कहा कि भगवान का अवतार आ चुका है, फिर इतना सब क्यों हो रहा है? यह बिल्कुल सही है, परंतु लोगों पर यह संकट आने का कारण यह है कि सामान्य मनुष्यों में भगवान के प्रति भक्ति और समर्पण का अभाव है। किंतु मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि माधव का कोई भी भक्त, जिसने माधव की शरण ली है, भविष्य में सुरक्षित रहेगा, चाहे कितनी भी विपत्ति आए। उसे कोई समस्या नहीं होगी। जो भगवान की शरण में रहते हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं है। पर जो भगवान की निंदा करते हैं और सांसारिक भोगों में समय गँवाते हैं, कभी धर्म की बात नहीं करते, उनके लिए हमारे पास कोई स्पष्टीकरण नहीं है। जो धर्म के साथ हैं, उनके लिए यह धर्म की स्थापना का समय है। जो धर्म के विरुद्ध कार्य करते हैं, वे समय के साथ नष्ट हो रहे हैं, पर यह तत्काल नहीं होगा। शिशुपाल से निपटने के लिए भगवान को लगभग 10-12 वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। तो जैसे-जैसे स्थितियाँ बढ़ेंगी, संहार का कार्य आरंभ होगा और बढ़ेगा। मैं बंगाल के सभी भक्तों से कहना चाहता हूँ कि जगन्नाथ संस्कृति के भविष्य मालिका पुराण का अनुसरण करें और धारा तथा सत्संग से जुड़ें। क्योंकि यह धर्म की स्थापना का समय है, हमारी एकता से भगवान की कृपा बढ़ेगी। एक दिन पाप नष्ट होगा और धर्म प्रकाशित होगा। इसमें निश्चित रूप से कुछ समय लगेगा, और भक्तों में भी भक्ति और समर्पण का भाव होना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 34:08 · 11 मई 2023

प्रश्न 1261 जय श्री माधव, पिताजी। मेरा एक प्रश्न है। कहा जाता है कि 2024 में इंटरनेट और अन्य चीज़ें काम नहीं करेंगी। तो सत्संग और भक्तों के संग में क्या बाधा आएगी, और हम भक्तों को क्या करना चाहिए?

उत्तर: मालिका ग्रंथ, भविष्य पुराण के अनुसार, पूरे विश्व में इंटरनेट नहीं रहेगा। यह Kali Yuga है, इसीलिए यह इंटरनेट का युग है। लेकिन एक समय ऐसा आएगा जब इंटरनेट नहीं होगा। आप कभी-कभी देखते हैं कि अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूरोप और यहाँ तक कि हमारे भारत में भी, अगर हम पैसे निकालने बैंक जाते हैं तो पाते हैं कि इंटरनेट डाउन है। इसका कारण यह है कि आने वाले समय में पूरा इंटरनेट ठप हो जाएगा। 16 मंडलों (क्षेत्रों) का निर्माण पूर्ण हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:12 · 11 मई 2023

प्रश्न 1262 मैं भगवान कृष्ण का भक्त हूँ। इस नए युग के आरंभ होने के साथ मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: नया युग आरंभ हो रहा है। समाज में धर्म का प्रभाव बढ़ रहा है। Satya Yuga के आगमन के लिए पूरे विश्व में प्रवचन और धर्म का प्रचार हो रहा है। लोग शाकाहारी बन रहे हैं। पेड़-पौधे वर्ष भर फलों और फूलों से लदे रहते हैं। Kali Yuga के परिवर्तन के ये संकेत दिखाई दे रहे हैं। और Jagannath की Bhavishya Malika तथा भविष्य पुराण के अनुसार हम आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में लोगों को भगवान Madhava की शरण लेनी चाहिए। आपको भविष्य पुराण का पालन करना चाहिए क्योंकि ब्रह्मांड में वही एकमात्र अविनाशी ग्रंथ है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा ग्रंथ नहीं है। तो उसका पालन करके आप भगवान कृष्ण को प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 39:22 · 11 मई 2023

प्रश्न 1263 जय श्री माधव। मेरा प्रश्न यह है कि भारतीय सेना इतनी बड़ी है — भारतीय थलसेना में 14 लाख, अर्धसैनिक बलों में 10 लाख, साथ ही नौसेना और वायुसेना के जवान। तो जब चीन, पाकिस्तान और 13 मुस्लिम देश हमला करेंगे, तो क्या हमारी सेनाएँ जल्दी समाप्त हो जाएँगी, या वे टिक पाएँगी?

उत्तर: बीच में रूस और जर्मनी भी हमारी मदद करेंगे। और उसके बाद विश्व युद्ध, तृतीय विश्व युद्ध होगा। और अंतिम क्षणों में भगवान Kalki भारत की रक्षा करेंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 42:27 · 11 मई 2023

प्रश्न 1264 मेरा प्रश्न यह है कि हमारे सैनिक सीमा पर लड़ रहे हैं। उनकी रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: देखिए, हमारे सैनिकों में शाकाहारी भी हैं; बहुत से लोग शाकाहारी विभाग में काम करते हैं। और व्यक्ति अपने कर्मों के संस्कारों के अनुसार भी खाता है। इसलिए सभी लोगों को धर्म के पक्ष में रहना चाहिए क्योंकि Satya Yuga आ रहा है। उनके जितने लाखों-करोड़ों सैनिकों का उन्होंने संहार किया, वे सब शाकाहारी थे।

► यह उत्तर सुनें · 45:20 · 11 मई 2023

प्रश्न 1265 इन बदलते समय में हमें अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे करना चाहिए और उन्हें आध्यात्मिकता के बारे में कैसे सिखाना चाहिए?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है, मैं आपके प्रश्न को नमन करता हूँ। देखिए, अपने बच्चों को भागवत सिखाइए। उन्हें बलबीर जी की महिमा के बारे में बताइए। वह समय आ रहा है जब हमारे बच्चे Satya Yuga का निर्माण करेंगे। इसलिए बचपन से ही उन्हें हमारी उस पारंपरिक धारा से जोड़िए जिसका प्रचार हम विश्व सनातन धर्म के माध्यम से ऑनलाइन सत्संगों में कर रहे हैं। क्योंकि हमारे बच्चे ही हमारा भविष्य हैं। जो वृद्ध लोग पुनः यौवन प्राप्त करेंगे, वे भी रहेंगे। इसलिए इन छोटे बच्चों को भागवत सिखाना, उन्हें 'तृषा' (ज्ञान की प्यास) में लाना महत्वपूर्ण है, और इसके साथ ही जब तक स्कूली शिक्षा चलती है, तब तक उसे भी जारी रखवाइए। लेकिन उन्हें इस धारा में लाने से हमारे बच्चे पवित्र और शक्तिशाली बनेंगे, ताकि वे अपने शरीर में वह क्षमता, बल और शक्ति विकसित कर सकें जिससे आने वाली बीमारियों, आपदाओं, प्राकृतिक विपदाओं, दुःखों, समस्याओं और अन्न की कमी से लड़ सकें।

► यह उत्तर सुनें · 47:49 · 11 मई 2023

प्रश्न 1266 जब मैं ध्यान करती हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरा सिर चारों दिशाओं में घूम रहा है और मुझे एक दिव्य तत्व दिखाई देता है। इसका क्या कारण है?

उत्तर: आपकी गर्दन का चारों दिशाओं की ओर घूमना इसलिए है क्योंकि चारों दिशाएँ, चारों लोक और चारों ब्रह्मांड — सब हमारा ही क्षेत्र है, और शक्ति (दिव्य ऊर्जा) का प्रकाश हर जगह प्रकट हो सकता है। लेकिन चिंता मत कीजिए, माँ। जो लोग ध्यान में होते हैं, उनके साथ ऐसी अनेक घटनाएँ होती हैं। आपके साथ भी हुआ; यह दिव्य शक्ति का एक उदाहरण है। यह अच्छा है, इसे बढ़ाती रहिए। ठीक है, माँ। जय जय माँ।

► यह उत्तर सुनें · 49:41 · 11 मई 2023

प्रश्न 1267 मैंने आपके एक सत्र से नोट्स बनाए थे जिसमें आपने कहा था कि पहले ओंकार का जप करें, फिर गायत्री मंत्र, और फिर 'ॐ माधवं'। मैंने ऐसा किया, लेकिन फिर महाराष्ट्र मंडल में उन्होंने मुझसे कहा कि यह गलत है और PDF देखिए, जिसमें बहुत लंबी विधि थी जिसमें 'सच्चिदानंद' तीन बार, आदि। मूल, सही विधि क्या है?

उत्तर: सुनिए बेटा, मुझे वास्तव में आपकी आवाज़ ठीक से सुनाई नहीं दे रही है। मैं मोहन से कहूँगा कि वह आपसे बात करें। नीचे हमारे विवरण (description) में जो नंबर है, उससे मोहन से बात कीजिए। वे आपको बताएँगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 51:00 · 11 मई 2023

प्रश्न 1268 कोई अपनी भक्ति कैसे बढ़ा सकता है और भगवान की उपस्थिति कैसे अनुभव कर सकता है?

उत्तर: आप जितना अधिक नाम का जप करेंगे, उतनी ही मन की मलिनताएँ दूर होंगी, और भगवान की भक्ति तथा भगवान का प्रकाश आपके शरीर, आपके मन, आपके सुख और आपकी शक्ति में अनुभव किया जा सकता है। ऐसी भक्ति प्राप्त करने के लिए निरंतर Madhava के नाम का जप कीजिए और शास्त्रों में Madhava के गुणों और महिमा का पाठ कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 52:44 · 11 मई 2023

प्रश्न 1269 क्या अयोध्या में कोई कार्यक्रम या सत्संग होगा?

उत्तर: यह तय है। तिथि हम आपको बताएँगे। यह अवश्य होगा। राम की भूमि में Kalki राम का संदेश अवश्य प्रचारित होगा। और अयोध्या मंडल एक बड़ा मंडल बनेगा, और फिर भक्त एवं लोग Satya Yuga की ओर आगे बढ़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 56:19 · 11 मई 2023

प्रश्न 1270 क्या दक्षिण भारत में, उदाहरण के लिए हैदराबाद में, प्रचार कार्य होगा?

उत्तर: पूर्ण कार्य होगा, इसमें कुछ समय लगेगा। इसीलिए प्रचार कार्य 2023, '24, '25 और '26 तक चलता रहेगा। बीच में शनि का मीन राशि में संयोग होगा, और विनाश का कार्य बढ़ेगा। जो अंत में बचेंगे, वे आएँगे। इसलिए पूरे दक्षिण में — हैदराबाद, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु में — धर्म और Bhavishya Malika के प्रचार का कार्य तथा प्रवचन भी होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 57:15 · 11 मई 2023

प्रश्न 1271 मैं सूरत से हूँ, पिताजी। सत्य युग तक पहुँचने वाली धारा के बारे में मुझे ज़्यादा जानकारी नहीं है। इसमें कैसे जुड़ा जा सकता है?

उत्तर: आप में से जो लोग मेरे साथ सत्संग में हैं, उन्हें मैं यह आश्वासन देता हूँ: जो 'त्रिशान्या' (ज्ञान की प्यास) की धारा में बने रहते हैं, जो सत्संग से जुड़ते हैं, और जो पूरी तरह हमारी धारा का अनुसरण करते हैं, वे सत्य युग के मनुष्य बनेंगे। क्योंकि आज संसार में केवल भविष्य पुराण ही यह धारा प्रदान करता है। उसी के अनुसार हम आपसे कह रहे हैं कि इस धारा से जुड़कर और उसका अनुसरण करके आप सत्य युग के मनुष्य बन सकेंगे। संसार के किसी अन्य मत से आपको कुछ नहीं मिलेगा; यदि मिलना है, तो भविष्य पुराण से ही मिलेगा। जो लोग सत्य युग की धारा, यानी ऑनलाइन सत्संग से जुड़ना चाहते हैं, और विश्व सनातन धर्म से जुड़ना चाहते हैं, उनके लिए इस गूगल मीट के नीचे और यूट्यूब चैनल 'कल्कि अवतार' पर नंबर दिया गया है। प्रवचन 'धर्म ज्ञान' चैनल पर तथा साधना गोल्ड, आस्था और ईश्वर टीवी जैसे अन्य चैनलों पर भी आता है। आप वहाँ भी देख सकते हैं। उनके नीचे भी नंबर दिए गए हैं। उन नंबरों पर संपर्क करके आप जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि धारा से कैसे जुड़ना है और सत्संग में कैसे बने रहना है।

► यह उत्तर सुनें · 58:07 · 11 मई 2023

सत्र 73 · प्रश्न 1272–1284

L67 - कलियुग अंत एवं सत्ययुग आगमन पर विचार | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 1 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1272 मेरा प्रश्न उन लोगों के लिए है जो UPSC (संघ लोक सेवा आयोग) जैसी परीक्षाओं की या रक्षा बलों की तैयारी कर रहे हैं। उन्हें अपनी तैयारी जारी रखनी चाहिए या नहीं?

उत्तर: तैयारी... जब तक संसार है, हम भोजन करते हैं, और सूर्य-चंद्रमा उदय और अस्त होते हैं। UPSC हो या कोई भी अन्य परीक्षा, जब मन और शरीर शुद्ध हो जाएँगे, तब वे सफल होंगे। इसके साथ ही, जो सभी इस आध्यात्मिक मार्ग में सम्मिलित होते हैं, उन पर कृपा होगी। तो अभी परीक्षाओं के लिए तैयारी आवश्यक है, निश्चित रूप से आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 13:58 · 1 जून 2023

प्रश्न 1273 कलि पुरुष (कलियुग का मूर्त रूप) कुछ मनुष्यों को शक्ति देता है, और चूँकि यह भगवान की लीला है, इसलिए उसका बाधाएँ उत्पन्न करना आवश्यक है। उसका उद्देश्य ही इस लीला में विघ्न डालना है, है न?

उत्तर: उसका काम है किसी भी धर्म-कार्य को रोकना। कलि से स्वयं को बचाने के लिए, भागवत पढ़ने के मार्ग का अनुसरण करके आप उससे सुरक्षित रहेंगे। कलि जो रोग और समस्याएँ उत्पन्न करता है... इस संसार में किसी को शांति नहीं है। जो बहुत कमाते हैं, उन्हें भी दुःख है—किसी को शारीरिक कष्ट, किसी को आर्थिक कष्ट, किसी को मानसिक कष्ट, किसी को परिवार से कष्ट, किसी को नौकरी से कष्ट। यह सब कलि ही करता है; वह किसी को शांति से जीने नहीं देता। ऐसे समय में भगवान के मार्ग पर रहकर, कृष्ण आपके साथ रहेंगे और आपको भी शांति मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:12 · 1 जून 2023

प्रश्न 1274 हम 'जय श्री माधव' का जाप करते हैं, भगवान महाविष्णु के अवतार को नमन करते हुए। लेकिन भारत के कई भागों में लोग अलग-अलग देवी-देवताओं की पूजा और उन पर विश्वास करते हैं, जैसे 10 महाविद्याएँ, महादेव, महाकाल या हनुमान जी। यदि हमारी भक्ति उनके प्रति है, तो क्या उनका स्वरूप भी इसमें सम्मिलित होगा, और क्या उन पर कृपा बनी रहेगी? या क्या उन्हें भी इसी विशेष मार्ग का अनुसरण करना होगा? और जो इस मार्ग के बारे में नहीं जानते, लेकिन जिनमें अपार भक्ति है, उनका क्या? उनके लिए क्या उत्तर है?

उत्तर: सबसे बड़ी बात वह है जो भगवान ने गीता में अर्जुन से कही। कोई माँ काली की पूजा करे, कोई दस महाविद्याओं की, कोई माँ दुर्गा की, या अलग-अलग देवताओं की अलग-अलग पूजा करे, लेकिन उनके कर्मों का फल ईश्वर ही देते हैं। जो वास्तव में ज्ञानी हैं और वेदों के मार्ग का अनुसरण करते हैं, वे भगवान विष्णु का अनुसरण करते हैं। क्योंकि जिन्होंने मनुष्यों को जन्म दिया है, वे परम पिता भगवान महाविष्णु हैं, जो किसी न किसी रूप में संसार में आएँगे। भगवान विष्णु या नारायण के किसी भी अवतार की उपासना करके लोग सांसारिक मोह से मुक्ति पाते हैं। उसका फल भी ईश्वर से ही आता है। पिता ही ईश्वर है। इसलिए, अपने परम पिता की शरण लेकर मानवता पर कृपा होगी, और यह जीवन सार्थक होगा। हमारी हिंदू परंपरा में अनेक मार्ग हैं। यह आपका चुनाव है कि आप किसकी पूजा करते हैं, किसकी भक्ति का अनुसरण करते हैं, और अपने कल्याण के लिए किसकी शरण लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 21:28 · 1 जून 2023

प्रश्न 1275 जैसे भगवान कृष्ण और भगवान राम ने अपनी लीला दिखाई, उस समय केवल दिव्य दृष्टि वालों को ही पता था कि वे भगवान हैं। दूसरे, जैसे यशोदा, जब उन्होंने विराट रूप दिखाया तो डर गईं। तो अगर कल्कि अवतार अभी अपनी लीला कर रहे हैं, तो हम भक्त उसे कैसे देख सकते हैं या उसमें कैसे सम्मिलित हो सकते हैं? या क्या हमें बाद में केवल उसके बारे में पढ़ने को ही मिलेगा? क्या हम उन्हें देखने का सौभाग्य पा सकते हैं, और यदि कोई उन्हें खोजने का प्रयास करे, तो क्या वह सफल होगा?

उत्तर: देखिए, इस संसार में भगवान और भक्त का संबंध सत्य पर आधारित है। माता शबरी सत्य युग से भगवान राम की प्रतीक्षा करती रहीं; वे कोई दिव्य व्यक्ति या संत नहीं थीं। ध्रुव और प्रह्लाद को कोई शास्त्र-ज्ञान नहीं था, उनके पास केवल भक्ति थी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कलियुग में जो भगवान की शरण लेते हैं, उन्हें उनके दर्शन हो सकते हैं। आपको स्वप्नों में अनेक संकेत मिलेंगे। फिर आप सोचेंगे, 'मैं यह क्या देख रहा हूँ?' और आपको पता चलेगा कि कुछ होने वाला है। जो इस मार्ग का अनुसरण करते हैं, उन्हें ये अनुभव होते हैं और वे भगवान की महिमा का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:49 · 1 जून 2023

प्रश्न 1276 हम संध्या (सायंकालीन प्रार्थना) करते हैं और भागवत भी पढ़ते हैं। क्या हमें एकादशी का व्रत भी रखना चाहिए? इसे कैसे करना चाहिए?

उत्तर: एकादशी का व्रत रखने से आपका शरीर स्वस्थ और शुद्ध रहेगा। हालाँकि, जो शारीरिक रूप से सक्षम नहीं हैं या जिन्हें कोई रोग है, उन्हें शास्त्र व्रत की अनुमति नहीं देते। जो एकादशी रख सकते हैं, वे अनंत पुण्य प्राप्त कर सकते हैं, अन्यथा से कहीं अधिक।

► यह उत्तर सुनें · 29:31 · 1 जून 2023

प्रश्न 1277 कल्कि अवतार अपने प्रकट, प्रत्यक्ष रूप में कब आएँगे?

उत्तर: जैसा आप सोचते हैं, वैसे नहीं। जब भगवान कृष्ण आए, तो उनके भक्तों ने अपने संबंध और पवित्रता से जाना कि वे भगवान हैं, लेकिन संसार ने नहीं जाना। भगवान ग्वाल-बालों के बीच रह रहे थे, और बहुत से लोगों ने उनकी आलोचना की। कोई भव्य, सार्वजनिक प्रकटीकरण नहीं हुआ। भगवान भक्ति और भाव से बँधे हैं। भगवान इस तरह सार्वजनिक, स्पष्ट रूप में प्रकट नहीं होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:24 · 1 जून 2023

प्रश्न 1278 हम इस आध्यात्मिक मार्ग पर और आगे कैसे बढ़ सकते हैं? हम अपने भगवान को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर: कितना सुंदर प्रश्न है। ऐसा पूछने वाले लोगों को मैं नमन करता हूँ। प्रतिदिन भागवत का दसवाँ स्कंध, 'श्रीमद् गोपी लीला' पढ़िए। इतनी भक्ति, आनंद और शक्ति आपमें आएगी कि संसार की कोई शक्ति आपका अहित नहीं कर सकती। जहाँ भी आप चाहेंगे, भगवान कृष्ण आपको दर्शन देंगे, उनकी महिमा प्रकट होगी, और समय आने पर आपको भी भगवान के दर्शन होंगे। यह कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 33:08 · 1 जून 2023

प्रश्न 1279 क्या सत्संग (आध्यात्मिक सभा) की तिथि घोषित हो गई है?

उत्तर: हाँ, यह 10 से 25 अगस्त के बीच उल्हासनगर, मुंबई में होगा। जो लोग इसमें जुड़े हैं, उन्हें इसके लिए एक समिति बनानी चाहिए। यह तय हो चुका है। नवंबर के अंत में पुणे, महाराष्ट्र में भी प्रवचन होगा। उल्हासनगर में अगस्त के कार्यक्रम की योजना पूर्ण हो चुकी है।

► यह उत्तर सुनें · 35:40 · 1 जून 2023

प्रश्न 1280 कोई कैसे बच सकता है?

उत्तर: ऑनलाइन विवरण (डिस्क्रिप्शन) में दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

► यह उत्तर सुनें · 40:32 · 1 जून 2023

प्रश्न 1281 यह प्रश्न मेरे मन में है: हम देखते हैं कि अनेक अलग-अलग संप्रदाय और आध्यात्मिक गतिविधियाँ हैं। भागवत के माध्यम से भगवान को प्राप्त करने और मोक्ष की खोज का यह मार्ग उनसे किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: हमारा मार्ग आदि शंकराचार्य की 'ब्राह्मणी' परंपरा का अनुसरण करता है। लोग अक्सर अपनी सांसारिक इच्छाओं, कर्म, दुःख और सुख को संभालने के लिए दूसरे संप्रदायों में जाते हैं। भौतिक संसार में भटकते हुए उन्हें न मुक्ति मिलती है और न भगवान। जो वास्तव में मुक्ति और भगवान चाहते हैं, उनके लिए हमारा मार्ग एक सरल समाधान है। आपको कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है; आप अपने घर में बैठे-बैठे ही भगवान को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे एक युग समाप्त हो रहा है और दूसरा आरंभ हो रहा है, हम कृष्ण की शरण लेने और भागवत पढ़ने के इस सच्चे मार्ग का प्रचार कर रहे हैं। इसके माध्यम से लोग तत्त्वज्ञ बनेंगे और भगवान की लीला, महिमा तथा भक्ति मार्ग को गहराई से समझेंगे। जितना अधिक आप स्वयं इसे पढ़ेंगे, उतना ही अधिक समझेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:56 · 1 जून 2023

प्रश्न 1282 चूँकि हम चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं, तो हम दिव्य भक्ति का आनंद कैसे लें और 24/7 भगवान की उपस्थिति का अनुभव कैसे करें?

उत्तर: हर कोई काम में व्यस्त है, और काम करते हुए भगवान को प्राप्त करना ही सबसे बड़ा लक्ष्य है। एक काम कीजिए: सुबह से रात तक अपने सारे कर्तव्य निभाइए, लेकिन फल को भूल जाइए। अपनी बुद्धि को अपने काम में लगाए रखिए, परंतु अपना मन और बुद्धि भगवान कृष्ण से जोड़ दीजिए। इससे आप उनकी उपस्थिति का अनुभव करेंगे। 'त्रिसंध्या' (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) करने और भागवत पढ़ने से आप निष्काम भक्त बन जाएँगे, सारे कर्म बिना आसक्ति के करेंगे। आप भगवान और उनकी भक्ति को प्राप्त करेंगे। कभी-कभी भगवान आपको दर्शन भी दे सकते हैं। तो, अपने सारे काम कीजिए, लेकिन अपना ध्यान भगवान कृष्ण पर रखिए। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता भी मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 47:50 · 1 जून 2023

प्रश्न 1283 एक छोटी बच्ची ने मुझे फोन किया और पूछा, 'मैं मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकती हूँ?'

उत्तर: भागवत पढ़ने और सुनने से, चाहे बच्चे 10, 5 या 4 वर्ष के ही क्यों न हों, वे 50 वर्ष के लोगों से भी अधिक बुद्धिमान बन सकते हैं। उनका ज्ञान और स्मरण शक्ति बढ़ेगी, वे अच्छी पढ़ाई करेंगे, और वे अपने माता-पिता के प्रति अच्छे रहेंगे। यदि आप चाहते हैं कि बच्चा सफल हो, तो उसे भागवत के मार्ग पर लाइए। इसी में आपके परिवार और बच्चों की सबसे बड़ी सुरक्षा और विकास है। आपके बच्चे के सारे नकारात्मक बंधन कट जाएँगे, और वे दुर्घटनाओं तथा अकाल मृत्यु से सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:51 · 1 जून 2023

प्रश्न 1284 आपने सांसारिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन की बात कही। मेरी समस्या यह है कि जब मैं सांसारिक विषयों पर ध्यान देता हूँ, तो माया का जाल मुझे प्रभावित करता है। जब मैं आध्यात्मिक मार्ग पर ध्यान देता हूँ, तो वह पक्ष बहुत प्रबल हो जाता है। लेकिन दोनों को साथ संभालना बहुत कठिन है, और मैं वर्षों से अटका हुआ महसूस करता हूँ, जबकि मुझे लगता है कि मैं ऊँचे आध्यात्मिक स्तर तक पहुँच सकता हूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, भारत के सभी महान ऋषि, जैसे दुर्वासा, वशिष्ठ और राजा जनक, गृहस्थ जीवन में थे। इसे 'गृहस्थ संन्यास' कहा जाता है। भगवान कहते हैं कि यदि कोई अपने सारे सांसारिक कर्तव्य निभाता है परंतु अपना मन उन्हीं में लगाए रखता है और उनकी शरण लेता है, तो वे उसे बहुत शीघ्र अपने पास ले आते हैं। इसलिए, अपने घर के काम प्रसन्नता से कीजिए और अपने परिवार की देखभाल कीजिए। आप हर समय भगवान कृष्ण को अपने साथ अनुभव करेंगे, और आपके पारिवारिक कष्ट स्वयं ही सुलझ जाएँगे। आपका आध्यात्मिक विकास आपके परिवार के विकास के साथ-साथ होगा। भगवान ने मनुष्य को संसार में रहने के लिए बनाया है। अपने सारे कार्य करते हुए निरंतर हृदय से भगवान का नाम जपिए। इस प्रकार आप बहुत कम समय में भगवान कृष्ण को प्राप्त कर सकते हैं और आपको सब कुछ मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:34 · 1 जून 2023

सत्र 74 · प्रश्न 1285–1297

L68 - Google Meet | With Param Pujya Kashinath Mishra Ji | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 4 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1285 एक रेल दुर्घटना हुई है। क्या इसका वर्णन मालिका में है? क्या यह भगवान की लीला है?

उत्तर: वर्तमान समय मनुष्यों के लिए अच्छा नहीं है। इस समय में लोगों का भगवान की शरण लेना आवश्यक है। मेरे विचारों के आधार पर, मेरे अनुभव से, और शास्त्रों के अनुसार, भविष्य में ऐसी और भी बहुत सी घटनाएँ होने वाली हैं। जो हुआ या नहीं हुआ, उस पर विचार करते रहना ठीक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 09:16 · 4 जून 2023

प्रश्न 1286 आपने कहा कि यदि हमें सत्य युग में प्रवेश करना है, तो हमें मालिका में बताए गए मार्ग का अनुसरण करना होगा। लेकिन मुझे लगता है—और यदि मैं गलत हूँ तो कृपया मार्गदर्शन कीजिए—यदि हम कलियुग की गलत बातों और परंपराओं का विरोध नहीं करते, तो चाहे हम कितना भी माधव का नाम जपें, क्या हम फिर भी सत्य युग में प्रवेश कर सकते हैं? यदि हम कलियुग की गलत परंपराओं का विरोध नहीं करते, तो इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। यदि हम कलियुग की गलत परंपराओं के भीतर ही जीते रहें और उन्हें अपने जीवन में अपनाते रहें, तो माधव का नाम जपने का कोई प्रभाव नहीं होगा। किंतु, भक्ति के प्रकाश और 'धारा' (निर्धारित मार्ग) के माध्यम से लोग शुद्ध हो जाएँगे। जैसे पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, वैसे ही हमारी 'धारा संध्या' (सायंकालीन साधना), माधव नाम के जप, और भागवत कथा के श्रवण से लोगों का रूपांतरण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 12:28 · 4 जून 2023

प्रश्न 1287 क्या आप इसका (इस दुष्ट वातावरण का) कोई उपाय बता सकते हैं?

उत्तर: मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मैं बार-बार कहता हूँ कि जो भगवान के सच्चे भक्त हैं... भविष्य पुराण के अनुसार, केवल वे ही आत्माएँ, जो द्वापर युग में भगवान कृष्ण के साथ थीं—यदुवंशी और गोपीवंशी जो द्वारिका में उनके साथ थे—कलियुग के अंत में उनसे मिलेंगी। सच्चे भक्त आनंद अनुभव करेंगे और इसे समझेंगे। लेकिन जिनका विनाश निश्चित है, वे कितना भी समझाने पर नहीं समझेंगे। जिन भक्तों को रामेश्वरम मंडल में आना है, वे निश्चित रूप से आएँगे। बाद में दूसरे लोग विनती करेंगे, 'कृपया हमें भी ले चलिए, हम भविष्य मालिका के मार्ग से जुड़ना चाहते हैं,' पर तब तक उनके लिए इसका कोई उपयोग नहीं रहेगा। उस समय उन्हें विनाश के सिवा कुछ दिखाई नहीं देगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:33 · 4 जून 2023

प्रश्न 1288 मैं गोवा से बोल रहा हूँ। आप कहते आ रहे हैं कि कलियुग समाप्त होने वाला है, संधिकाल चल रहा है, और सत्य युग आएगा। मैंने अपने माता-पिता को इस बारे में बताया, लेकिन वे विश्वास नहीं करते। वे कहते हैं कि कल्कि का आना और 90% जनसंख्या का विनाश काल्पनिक धारणाएँ हैं। इस पर आपका क्या कहना है? क्या यह वास्तव में होगा, या यह केवल एक भ्रम है?

उत्तर: माया सदैव इंद्रियों और भौतिक वस्तुओं के माध्यम से मनुष्य को आकर्षित करती है। जो लोग सत्यनिष्ठ हैं, उनके लिए इसे समझना थोड़ा आसान होता है। लेकिन आपने जो बातें कही हैं, वे बिल्कुल सत्य हैं, और यह वास्तव में एक युग का अंत है।

► यह उत्तर सुनें · 31:34 · 4 जून 2023

प्रश्न 1289 क्या कल्कि अवतार सचमुच आएँगे या नहीं? इस पर आपकी क्या राय है?

उत्तर: अवतार तो हो चुका है। एक परमाणु युद्ध होगा। वे निश्चित रूप से आएँगे; समय चल रहा है। आपको भागवत पढ़ना चाहिए, और आपको अधिक जानकारी मिलेगी। भगवान आपको स्वप्न में भी कुछ बातें प्रकट कर सकते हैं, जिन्हें आप फिर सत्संग में मेरे साथ साझा कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:47 · 4 जून 2023

प्रश्न 1290 लेकिन गुरुजी, आप कह रहे हैं कि सत्य युग 2032 या 2033 से आरंभ होगा। केवल 8-10 वर्ष ही बचे हैं। यह विश्वास करना थोड़ा कठिन है कि इतने कम समय में इतना कुछ हो सकता है, है ना?

उत्तर: देखिए, भगवान ने आपके हृदय में कुछ श्रद्धा रखी है, इसीलिए आपने मुझे फोन किया। कुछ दिनों तक आप 'धारा' और भागवत पढ़िए, फिर आप ही मुझे बताएँगे कि क्या होने वाला है। वह समय आ रहा है जब आपको भी कुछ आभास होगा। मुझे केवल 100 प्रतिशत ही नहीं, बल्कि करोड़ों प्रतिशत विश्वास है कि विश्व का एक अनोखा रूपांतरण निश्चित है। एक नया मानव समाज बनेगा, और भक्तों का एकत्रीकरण पहले से ही चल रहा है। तीसरा विश्व युद्ध 2025 में होगा, और उसके बाद मुझे नहीं पता कि संचार संभव भी हो पाएगा या नहीं। जो मैं अभी आपको बता रहा हूँ, वह आपके आनंद के लिए और आपके मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि के लिए है।

► यह उत्तर सुनें · 35:14 · 4 जून 2023

प्रश्न 1291 मेरा एक प्रश्न है... क्या दिन-रात अंधकार छाया रहेगा?

उत्तर: सूर्य से एक टुकड़ा टूटकर तीन हिस्सों में समुद्र में गिरेगा। उस समय सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। लेकिन भक्तों के लिए कोई कष्ट नहीं होगा, क्योंकि जो होने वाला है उसकी सूचना आपको पहले ही दे दी जाएगी। सभी मंडलों (समूहों/क्षेत्रों) में, थोड़े समय बाद अंधकार समाप्त हो जाएगा और आप सब बहुत आनंद का अनुभव करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:23 · 4 जून 2023

प्रश्न 1292 यह सब आने वाले वर्षों में होने वाला है। मैं जानना चाहता हूँ, क्या हम अब भी जगन्नाथ पुरी मंदिर, वेंकटेश्वर मंदिर और वैष्णो देवी के दर्शन के लिए जा सकते हैं? या उन स्थानों की शक्ति कम हो गई है? हमें वहाँ जाना चाहिए, या घर पर रहकर अपनी 'संध्या' (आध्यात्मिक साधना) करनी चाहिए? कृपया हमें मार्गदर्शन दें।

उत्तर: जब भगवान राम, कृष्ण और परशुराम जैसे अवतार आए, तब भारत के सभी तीर्थस्थल विद्यमान थे। चार धाम और सभी तीर्थस्थलों के दर्शन से पुण्य मिलता है; यह हमारी तीर्थयात्रा है। लेकिन सबसे बड़ी तीर्थयात्रा यह है कि भगवान के अवतार के समय उनके साथ रहें, भागवत पढ़ें और माधव का नाम जपें। इससे आपको देवताओं के समान दिव्य शरीर प्राप्त होगा और आप आनंद का अनुभव करेंगे। यदि समय मिले तो आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं, लेकिन जाने से पहले ध्यान से सोच लें, क्योंकि आजकल सभी सड़कों पर दुर्घटनाएँ होती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:59 · 4 जून 2023

प्रश्न 1293 मेरा प्रश्न है... आज जगन्नाथ मंदिर में एक मृत्यु हुई है। वह क्या है?

उत्तर: आज बहुत ही पवित्र दिन है। इसे देव स्नान पूर्णिमा कहते हैं, जब सभी देवताओं को स्नान कराया जाता है। इस दिन सभी जाति और धर्म के सभी भक्त बड़े आनंद के साथ भगवान के दर्शन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 45:38 · 4 जून 2023

प्रश्न 1294 देश पर आक्रमण होने वाला है, तो हम उससे अपनी रक्षा कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: भारतीय सेना विश्व की सबसे शक्तिशाली सेना है। लेकिन यह धर्म का युद्ध है। कलियुग का युद्ध चल रहा है। उस युद्ध को चलने दीजिए। जब भगवान का समय आएगा, तब नारायण सेना (नारायण की सेना) लड़ेगी। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 47:22 · 4 जून 2023

प्रश्न 1295 अपनी व्यक्तिगत समस्याएँ बताने के बाद मैं जानना चाहता था कि आप क्या समाधान देंगे। क्या मुझे कोई हल मिलेगा? यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मेरे मन से निकल ही नहीं रहा, गुरुजी।

उत्तर: मुझे इस नंबर पर फोन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 51:09 · 4 जून 2023

प्रश्न 1296 मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी और उस भाग की प्रतीक्षा कर रहा था जहाँ प्रलय की तिथियाँ बताई जाएँगी। क्या अगली पुस्तक इन तिथियों के साथ आएगी ताकि हम तैयारी कर सकें? मैं यह सोचकर बहुत डर गया हूँ कि हर गाँव में केवल एक से तीन लोग ही जीवित बचेंगे।

उत्तर: उस पर काम चल रहा है। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि सारा साहित्य और अमूल्य जानकारी एक साथ दे दी जाए; यह उन्हीं तक पहुँचनी चाहिए जो इसके योग्य हैं। काम चल रहा है और इसमें अधिक से अधिक दो महीने और लगेंगे। कृपया थोड़ी और प्रतीक्षा कीजिए, आपको यह पुस्तक में मिलेगा। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 55:11 · 4 जून 2023

प्रश्न 1297 पिताजी, मैं गीत गोविंद की केवल दो पंक्तियाँ सुनना चाहता हूँ।

उत्तर: गीत गोविंद की रचना जयदेव ने श्री वृंदावन में गंगा के तट पर की थी। स्वयं भगवान कृष्ण वहाँ यह गीत सुनने के लिए उपस्थित थे। बाद में, जयदेव के माध्यम से स्वयं भगवान जगन्नाथ ने इसके कुछ अंश लिखे। हर रात, भगवान जगन्नाथ के शयन पर जाने से पहले, इसका गायन होता है।

► यह उत्तर सुनें · 57:04 · 4 जून 2023

सत्र 75 · प्रश्न 1298–1308

L69 - Google Meet | With Param Pujya Kashinath Mishra Ji | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 8 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1298 एक और बात, माधव दुर्गा पाठ के बारे में, मैं वह करती हूँ, लेकिन मेरे पास चंडी वाला संस्करण है। क्या मैं वही पढ़ सकती हूँ? भाषा की समस्या के कारण मुझे वह आसान लगता है, क्योंकि मैं बंगाली पृष्ठभूमि से हूँ। वह संस्कृत में है, लेकिन अभ्यास से आसान हो गया है। तो, क्या मैं वह पढ़ सकती हूँ?

उत्तर: कोई समस्या नहीं, आप वही पढ़ सकती हैं। लेकिन निरंतर माधव का नाम जपती रहें।

► यह उत्तर सुनें · 24:53 · 8 जून 2023

प्रश्न 1299 तो, क्या यह भगवान की ओर से एक संकेत था?

उत्तर: हाँ। आप सब भविष्य पुराण का अनुसरण कर रहे हैं। पहले कोई संबंध होना चाहिए ताकि लोगों में यह विश्वास पैदा हो कि हमें कुछ करना है, हमें बदलना है। तो, आप जैसे लोगों में परिवर्तन की प्रेरणा जगाने के लिए, भगवान अपने भक्तों को ये पूर्वाभास देते हैं। यदि आप भक्त हैं... और फिर जब मैंने कहा, आपका स्वप्न और मेरी बात मेल खा गई, तब मन भी जुड़ जाता है, और भगवान के धर्म का कार्य आगे बढ़ सकता है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 29:46 · 8 जून 2023

प्रश्न 1300 अब जब हम इस धारा से जुड़ गए हैं, तो हमें इसके नियमों का पालन करना होगा, है ना? लेकिन ऐसे बहुत से भक्त हैं जो इस धारा से जुड़े नहीं हैं बल्कि अलग-अलग संस्थाओं से जुड़े हैं। वे भी भक्त हैं और अपना कार्य कर रहे हैं। जैसे, हम भी अलग से हनुमान जी की अपनी पूजा करते हैं, हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं, तो वह भी तो भक्ति का ही एक रूप है, है ना? तो, उसमें और इसमें कोई अंतर है? या उन्हें सही मार्गदर्शन तभी मिलेगा जब वे यहाँ आएँगे, या जहाँ हैं वहीं रहकर भी मिल जाएगा? यह क्या बात है? क्योंकि गाँव में रहने वाले सभी लोगों के पास मोबाइल फोन नहीं है, फिर भी वे भक्त हैं। उन्हें इसके बारे में पता नहीं होगा, लेकिन वे अपनी भक्ति-साधना कर रहे हैं।

उत्तर: भगवान उनकी भी अवश्य सुनेंगे। आप जैसे लोग जो पहले आए हैं, वे भक्ति के पहले चरण में हैं। फिर दूसरा चरण आएगा, फिर तीसरा, फिर चौथा। और पूरे विश्व में जो प्रचार होगा, उससे गाँवों में रहने वाले वे लोग भी, जिनके पास मोबाइल फोन या कुछ भी नहीं है, जान जाएँगे कि यही वह धारा है जिसका अनुसरण करना है। भविष्य पुराण के अनुसार यह प्रचारित किया जा रहा है कि हमें माधव की शरण लेनी चाहिए। वे उस समय करेंगे, लेकिन अभी उनके शरीर शुद्ध हैं। कार्य चरण-दर-चरण हो रहा है। अंततः भारत में 33 करोड़ (330 मिलियन) लोग इस त्रिसंध्या धारा से जुड़ेंगे, भागवत पढ़ेंगे और 16 नामों का जप करेंगे; वे सब कुछ करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 30:53 · 8 जून 2023

प्रश्न 1301 मुझे भी कुछ ऐसे सपने आते थे जिनमें आसुरी शक्तियाँ प्रकट होती थीं और मुझे भय लगता था। फिर अचानक सपने में ही मैं 'जय श्री राम' का जाप करने लगता था। उसकी वजह से मेरा प्रभाव सपने पर हावी हो जाता था और सपना टूट जाता था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: क्योंकि जब हम सचेत और जाग्रत होते हैं, तब हम राम नाम का जाप करते हैं। और यदि नींद के दौरान राम का नाम आ जाए, तो यह शरीर के लिए बहुत अच्छा संकेत है, भक्त होने का संकेत है। तो यह बहुत आनंद की बात है, कोई समस्या नहीं। अब माधव नाम का जाप कीजिए, क्योंकि कलियुग में माधव ही कल्कि होंगे, और हमें भगवान के नाम का जाप करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 33:48 · 8 जून 2023

प्रश्न 1302 मैं एक और बात पूछना चाहता था। इस मार्ग से जुड़ने से पहले मुझे जाग्रत अवस्था में एक दृश्य दिखा था। मैं एक डॉक्टर हूँ, और मैंने खुद को एक नए कार्यस्थल पर जाते देखा, तभी अचानक सड़क धँस गई और मेरी गाड़ी फँस गई। मुझे नहीं पता कि मुझे चोट लगी या नहीं, पर सड़क पूरी तरह नष्ट हो गई थी। उस समय वहाँ कुछ नहीं था, लेकिन अब ठीक उसी स्थान पर एक नया अस्पताल बन गया है, और मैं कल वहीं ज्वाइन करने जा रहा हूँ। इसका क्या संकेत है?

उत्तर: हमारे भक्तों को कुछ नहीं होने वाला। चाहे कुछ भी हो जाए, उन्हें खरोंच तक नहीं आएगी। सबसे महत्वपूर्ण बात है भगवान में हमारी आस्था और त्रिसंध्या का पालन। आप इसे ठीक से करते रहिए। आने वाले समय में सैकड़ों किलोमीटर तक सड़कें नष्ट हो जाएँगी, जिससे यात्रा करना कठिन हो जाएगा। लेकिन हमारे लिए कोई समस्या नहीं है, क्योंकि हमें पहले से जानकारी है कि ऐसा होने वाला है। उस समय के आने से पहले ही हम एक अलग मार्ग ले रहे हैं, ऐसा मार्ग जो हमें सुरक्षा की ओर ले जाएगा और मानव सभ्यता की रक्षा व कल्याण सुनिश्चित करेगा। इसीलिए आप सब मनुष्य से देवता बन रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:04 · 8 जून 2023

प्रश्न 1303 जैसे-जैसे मैं इस आध्यात्मिक मार्ग में अधिक जुड़ता जा रहा हूँ, मुझे लगता है कि अब मैं छल, चालाकी और झूठ जैसे सांसारिक व्यवहारों में नहीं पड़ सकता। इस वजह से लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, मुझसे झूठ बोलते हैं और मेरे विरुद्ध षड्यंत्र करते हैं। मैं क्या करूँ?

उत्तर: भगवान उनसे निपटेंगे। हमारे लोगों को कुछ नहीं होगा, क्योंकि हम धर्म के साथ हैं। आप जैसे शुद्ध मन वाले लोगों के लिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे क्या करते हैं या क्या बाधाएँ खड़ी करते हैं। हमारा मार्ग है सद्गुणी होना, अच्छे कर्म करना और अपना मन भगवान में लगाए रखना। भगवान न्याय करेंगे; न्याय करना हमारा काम नहीं है। मेरा मानना है कि कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। समय बीतने के साथ हमारे भक्त आनंद का अनुभव करेंगे, और पूरा संसार देखेगा कि हर भक्त कैसे बचाया जाता है और पापी कैसे नष्ट होते हैं। वह समय आ रहा है। यह आपके पूर्वजन्मों के कारण भगवान की कृपा है—आपने महान तपस्या की है—इसीलिए भगवान ने विनाश से पहले आपको बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है।

► यह उत्तर सुनें · 38:37 · 8 जून 2023

प्रश्न 1304 कुछ दिनों से मुझे लगता है कि मैं माता राधा रानी और भगवान के दर्शन कर रहा हूँ। क्या यह सच्चा संकेत है, या यह सिर्फ मेरे अपने विचारों का प्रतिबिंब है?

उत्तर: पूज्य भगवान श्रीकृष्ण का समय आ रहा है। तब भक्त एकत्र होंगे, नित्य 'रास' (दिव्य आनंद) होगा, और फिर सच्चे भगवान, राधा रानी के साथ, संसार पर शासन करेंगे। तो, अच्छा समय आ रहा है। इसीलिए माता प्रसन्न हैं, और भगवान भी प्रसन्न हैं। ऐसा समय बहुत लंबे अरसे के बाद आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 41:08 · 8 जून 2023

प्रश्न 1305 मुझे सत्संग (आध्यात्मिक सभा) की मीटिंग का लिंक नहीं मिल पा रहा है।

उत्तर: ठीक है, एक काम कीजिए। मनीष नाम का एक लड़का है और एक और व्यक्ति हैं, और हमारे चैनल के अवतार के नीचे विवरण (डिस्क्रिप्शन) में कई और लोगों के नंबर दिए हैं। 5:30 वाले सत्र के लिंक के लिए उनसे संपर्क कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 43:59 · 8 जून 2023

प्रश्न 1306 गुरुजी, मेरा एक प्रश्न है। इस कलियुग में, क्या परमात्मा की कोई विशेष लीला है? मैं इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि जीवन भर 'ॐ नमः शिवाय' जपने की आदत के बजाय अब मुझसे 'जय श्री माधव' कहने को कहा जा रहा है।

उत्तर: परमात्मा से मिलन का समय आ रहा है। अगले युग में भगवान और भक्तों का प्रत्यक्ष मिलन होगा। भक्त भगवान के साथ बैठेंगे, स्तुति गाएँगे, खाएँगे, खेलेंगे, और चारों युगों से लेकर जीवन-मृत्यु के रहस्यों तक हर विषय पर चर्चा करेंगे। अभी इस धारा से जुड़कर आप भगवान से होने वाले उस अंतिम मिलन की तैयारी कर रहे हैं। और आपने दूसरों को मांसाहार से दूर ले जाकर बहुत अच्छा काम किया है; एक व्यक्ति की सहायता करने से जो पुण्य आपको मिलता है वह अपार है, और इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 46:56 · 8 जून 2023

प्रश्न 1307 मैं पूछना चाहता था, जब मैं सबसे पहली बार जगन्नाथ मंदिर गया, तो लौटते समय मैंने द्वार की ओर देखा और मुझे तीव्र अनुभूति हुई कि मैं पहले भी यहाँ आ चुका हूँ। वह क्या संबंध था?

उत्तर: वह संबंध भक्त और भगवान के बीच का संपर्क है। जगन्नाथ क्षेत्र अनंत युगों से विद्यमान है। भक्त वहाँ सदा भगवान से मिलते आए हैं। आप पूर्वजन्म में उनसे मिले थे, इसलिए जब आप इस जन्म में आए तो आपको अनुभूति हुई कि 'यह मेरा पुराना स्थान है, मैं यहाँ पहले आ चुका हूँ।' इसी तरह भगवान और भक्त का संबंध प्रकट होता है; अच्छे भक्तों को अपने पूर्वजन्मों से ऐसी जानकारी मिलती है।

► यह उत्तर सुनें · 54:28 · 8 जून 2023

प्रश्न 1308 मैं आमतौर पर सुबह दूध पीता हूँ, पर कभी-कभी चाय भी पी लेता हूँ। क्या मेरा उसे पीना ठीक है?

उत्तर: छोड़ दीजिए, बेटा। यह अच्छा नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 57:41 · 8 जून 2023

सत्र 76 · प्रश्न 1309–1320

L70 - मालिका में पुरी के राजा का वर्णन | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 11 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1309 प्रभु जी, क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? मेरा नाम रवींद्र दीवान है, और मैं दिल्ली से हूँ। मेरे परिवार में मेरे अलावा केवल मेरी पत्नी और बेटी हैं। मैं अभी तक उन्हें 'धारा' (आध्यात्मिक धारा/मार्ग) से नहीं जोड़ पाया हूँ। इस विषय पर मैं आपसे कुछ मार्गदर्शन या टिप्पणी चाहूँगा। धन्यवाद।

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। परिवर्तन... और जो भय से बदलते हैं, वे सर्वश्रेष्ठ हैं। तो, आप एक काम कीजिए: कभी उनकी मुझसे बात करवाइए। यह आवश्यक नहीं है, लेकिन एक शुद्ध आत्मा, एक शुद्ध व्यक्ति से बात करना अपने आप में सत्संग बन जाता है। यदि वह न हो, तो उनसे कहिए कि वे कल्कि अवतार चैनल पर मेरे वीडियो सुनें। उनका 'धारा' से जुड़ना आवश्यक नहीं है, उन्हें बस सुनना है। मैंने जो वीडियो जारी किए हैं, वे उन्हें सुनें, और कुछ आवश्यक नहीं। साथ ही, जो पुस्तक मैंने लिखी है, जो हिंदी और कई अन्य भाषाओं में उपलब्ध है, कम से कम एक बार उसे पढ़ने का अनुरोध उनसे कीजिए। क्योंकि हमारी परंपरा, जो कार्य हम कर रहे हैं, वह देवताओं, ऋषियों और संतों का कार्य है। यह न मेरे नियंत्रण में है, न ये मेरे शब्द हैं। आज हम जो संदेश फैला रहे हैं, वह भगवान ने भक्तों के लिए कहा था... भगवान से उनका मिलन होगा... तो, उनसे पढ़वाइए या सुनवाइए। यदि वह काम न करे, तो उनसे श्रीमद्भागवत का 'गोप लीला दर्शन' दो-तीन बार पढ़वाइए। और पढ़ने के बाद, हमारी यह पुस्तक... मार्ग क्या है? इस मार्ग पर चलने और अपने शरीर को शुद्ध करने के लिए उन्हें कितना समय मिलेगा? समय बहुत कम है। तो, अब उनके लिए अच्छा समय है। और केवल इतना ही नहीं, बल्कि बीमारियों, रोज़गार के साथ भी... उनसे कहिए कि समय के साथ वे बदल जाएँगे। वे अच्छे लोग हैं, सब अच्छे हैं, बात बस हमारे समझाने के ढंग की है। नहीं, हमारा परिवार हमारा है। परिवार के लिए सब मिलकर काम करते हैं, आप भी काम कीजिए। जैसा परिवार कहे वैसा कीजिए, और मानवीय तथा भक्तिपूर्ण हृदय से मार्ग का अनुसरण कीजिए। मार्ग पर चलने से किसी को कष्ट नहीं होता। चूँकि हम हिंदू हैं, भागवत पढ़ना आवश्यक है। और हिंदू होने के नाते, वैदिक धारा में 'त्रिसंध्या धारा' का पालन करना भी आवश्यक है। 'माधव' नाम एक सुंदर नाम है जिससे माता राधा रानी, माता द्रौपदी और अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण को पुकारते थे। इसका जाप करने से संसार में सब प्रसन्न होते हैं। तो, इसका पालन कीजिए, और अपने परिवार के सदस्यों का विरोध मत कीजिए। वे जो घर के काम कहें, वे भी कीजिए और भगवान की भक्ति के मार्ग पर भी चलिए। एक समय आएगा जब आपका परिवार भी समझेगा, और सब हमारी परंपरा का सम्मान करेंगे। धर्म संकुचित हो गया है, इसीलिए वह फल-फूल नहीं रहा... लेकिन चिंता मत कीजिए, समय के साथ लोग बदलेंगे। लेकिन बाद में बदलने से क्या लाभ? भविष्य पुराण में लिखा है कि जो बाद में, समय के अंत में बदलेंगे, उन्हें कोई लाभ नहीं मिलेगा। तो, समय समाप्त होने से पहले इसे अपना लेना ही बेहतर है। यदि हम परिवार के साथ हैं, तो हमें परिवार के सारे नियम-कायदों का पालन करते हुए आत्म-अनुशासन के साथ अपनी भक्ति करनी चाहिए। यह आपके लिए अच्छा है, और भगवान भी इससे प्रसन्न होते हैं। बस इतना कीजिए। जय जगत।

► यह उत्तर सुनें · 20:20 · 11 जून 2023

प्रश्न 1310 मैं वैशाली, बिहार से बोल रहा हूँ, पंडित जी। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं जहाँ इस समय रहता हूँ, वहाँ मेरा घर 'आसुरी' (राक्षसी/नकारात्मक) प्रवृत्ति के लोगों से घिरा हुआ है। मेरे मोहल्ले में, तीन-चार जगहों पर... मैंने इसे छोड़ने की कोशिश की, लेकिन फिर मुझे लगा कि मुझे...

उत्तर: लेकिन मलिका में लिखा है कि जो भक्त भविष्य पुराण को एक बार सुन लेते हैं, या एक बार सत्संग में आ जाते हैं, वे क्षण भर में बदल जाएँगे। यदि वे कहें, 'हम धीरे-धीरे बदलेंगे,' तो उनका बदलना कठिन है। फिर भी, आपको प्रयास करना चाहिए। यह मेरा व्यवसाय नहीं है, और इस प्रचार से मुझे धर्म (पुण्य) के अलावा कुछ नहीं मिलता। यह आपके ही भले के लिए है। क्योंकि यदि हम किसी जीव को मारते हैं, तो धर्म, नैतिकता और संविधान का नियम है जो हमें जवाबदेह ठहराता है। यह विचारधारा मनुष्यों के लिए है। लेकिन भगवान के संविधान में, विचारधारा समस्त मानवता, जीव-जगत, पशु-जगत, प्रेत-जगत—सभी लोकों के लिए है। उनकी विचारधारा में, हम गलत कर रहे हैं। हम किसी को मार रहे हैं, किसी को मृत्यु दे रहे हैं, जान-बूझकर मारकर फिर उसे खा रहे हैं। यदि हमारे शरीर में ऐसी आसुरी प्रवृत्तियाँ बनी रहीं, तो हम कभी देवता नहीं बन सकेंगे, हम कभी सत्ययुग में नहीं जा सकेंगे। यदि आप बदलना चाहते हैं, तो आज से बदलिए। यदि नहीं बदलना चाहते, तो जो मार्ग आपको अच्छा लगे उसी पर चलिए। आपका कल्याण उसी में है।

► यह उत्तर सुनें · 27:03 · 11 जून 2023

प्रश्न 1311 वह मंत्र... अगर मुझे उसकी रिकॉर्डिंग मिल जाए तो बहुत बड़ी सहायता होगी। यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

उत्तर: उनका फोन नंबर भी डिस्क्रिप्शन में आ रहा है। आपका जीवन आनंद और पवित्रता से भर जाएगा, और आपके मन को शांति, पवित्रता और प्रकाश मिलेगा। इससे इतना आनंद मिलेगा। इसका पालन करके देखिए, दिन-रात आपको कितनी शांति महसूस होती है। अंत में मोहन बोलेंगे और नंबर भी देंगे। नंबर इसी डिस्क्रिप्शन में है; आप कॉल करके उनसे बात कर सकते हैं, और वे भेज देंगे। ठीक है, बाबा।

► यह उत्तर सुनें · 32:29 · 11 जून 2023

प्रश्न 1312 मैं बस यह जानना चाहता हूँ, क्या तुर्की, जर्मनी और फ्रांस यूरोपीय संघ से अलग हो जाएँगे?

उत्तर: यह बना रहेगा। मैं पहले भी यह कह चुका हूँ, जैसे पाकिस्तान युद्ध छेड़ेगा, वैसे ही यह भी एक पक्ष या मोर्चा लेकर शुरू होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:57 · 11 जून 2023

प्रश्न 1313 आने वाली उथल-पुथल को देखते हुए, क्या किसी के लिए काम के सिलसिले में रूस या यूरोप जैसे देशों में विदेश जाना सुरक्षित है?

उत्तर: जो लोग हमारी धारा, कृष्ण की धारा का अनुसरण करते हैं, भागवत पढ़ते हैं, माधव का नाम जपते हैं, और ऑनलाइन सत्संग से जुड़े रहते हैं—वे दुनिया में कहीं भी जाएँ, चाहे रूस हो, यूरोप हो, सऊदी अरब हो, या कोई और देश, भगवान उन्हें बचाएँगे और भारत वापस ले आएँगे। तो, जाने में कोई समस्या नहीं है। वे अभी जा रहे हैं क्योंकि हमें अपना कर्म (कर्तव्य) तो करना ही है। और आने वाली विपत्ति से बचने के लिए, यानी भविष्य में आने वाली समस्याओं से बचने के लिए, उन्हें 'त्रिसंध्या धारा' और ऑनलाइन सत्संग से जुड़ना चाहिए। इसका पालन करने से, जब तक संसार है तब तक उन्हें कोई असुविधा नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:30 · 11 जून 2023

प्रश्न 1314 पंडित जी, मेरा प्रश्न 2025-26 के विनाश के बारे में था। उसके बाद, सनातन धर्म के सभी लोगों को एकत्र होना था... और एक बात, क्या 2032 के बाद असत्य पूरी तरह समाप्त हो जाएगा?

उत्तर: वे हमारे देश पर राज करेंगे, और जहाँ तक भगवान के भक्तों की बात है... कोई नहीं बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:40 · 11 जून 2023

प्रश्न 1315 आप जिस भविष्य पुराण की बात करते हैं, वह दूसरे कथाकारों द्वारा प्रसिद्ध या प्रचारित क्यों नहीं है?

उत्तर: देखिए, आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। मैंने इस विषय में बार-बार यह निवेदन किया है। भारत में और पूरी दुनिया में जो लोग धार्मिक कार्य करते हैं, वे इस एक ग्रंथ से अवगत नहीं हैं। मैं कथाकारों से निवेदन करता हूँ कि वे इसे पढ़ें और दुनिया को इसके बारे में बताएँ। हमारे संसार में मानवता का कल्याण इसी में है। लेकिन भविष्य पुराण सबके लिए नहीं लिखा गया है। क्योंकि भविष्य पुराण केवल भक्तों के लिए ही लिखा गया है। इसका प्रचार सीमित रहेगा, और भविष्य पुराण केवल भक्तों तक ही पहुँचेगा, और भक्त तथा भगवान का मिलन होगा। अगर वे काम करें, तो कार्य बहुत आसान हो जाएगा। फिर भी यह होकर रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:48 · 11 जून 2023

प्रश्न 1316 ...लेकिन यह जो प्रेम होता है, जब आप किसी से प्रेम कर बैठते हैं... और उसके बाद क्या होता है... क्या आप इस पर कुछ कह सकते हैं?

उत्तर: देखिए, इन बातों के संबंध में... आप जो भी कर्म कर रहे हैं, आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। कोरोना काल में बहुत से डॉक्टर सत्संग की धारा से जुड़े। ओडिशा में भी बहुत से डॉक्टर हैं जिन्हें कोरोना नहीं हुआ; उन्होंने शायद कोरोना मरीजों की सेवा की, और रोग ने उन्हें छुआ तक नहीं। तो, डॉक्टरों द्वारा हमारे देश की सेवा हो रही है। और अगर वे सुरक्षित रहते हैं, तो हमारा देश और अधिक शक्तिशाली होता है क्योंकि पूरा भविष्य डॉक्टरों पर, उनकी सेवा और लोगों के उनके इलाज पर निर्भर है। आपके मन में जो भी विचार की पवित्र धारा है, जो भी आप व्यक्त करना चाहते हैं, उसे व्यक्त कीजिए। इस बारे में भगवान से पूछिए, अपने अंतर्मन से पूछिए। अगर वह अच्छा है, तो भगवान आपका मार्गदर्शन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 46:42 · 11 जून 2023

प्रश्न 1317 मेरे मन में 12 वर्षों से एक प्रश्न है। मैं त्रिसंध्या करती हूँ, भागवत पुराण पढ़ती हूँ, और सब कुछ करती हूँ, लेकिन घर में मुझे इसके लिए अपने पति का सहयोग नहीं मिलता। मैं क्या करूँ?

उत्तर: बदलाव... इसलिए, हर किसी के लिए भगवान उसके 'प्रारब्ध' (पूर्व कर्म) के अनुसार कर्म निर्धारित करते हैं, अपनी मानवीय इच्छा के अनुसार नहीं। इसके लिए हमारा अपना कर्म अच्छा होना चाहिए। और इस जीवन में जो पति आपको मिले हैं—उनकी सेवा करना और पवित्र कर्मों के साथ सब कुछ सँभालना आपका परम धर्म है। उस कर्तव्य का भी पालन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 48:18 · 11 जून 2023

प्रश्न 1318 गुरुजी, मैं 'धारा' (मार्ग) से जुड़ना चाहती हूँ, और मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता थी।

उत्तर: बहुत अच्छा। देखिए, माता जी, यह पूरे संसार के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है। देखिए, मैंने थोड़ी देर पहले कहा था कि यह संदेश भक्तों तक स्वयं ही पहुँचेगा। कोई भी केवल चाहने मात्र से इसे नहीं फैला सकता, क्योंकि भक्तों के लिए यह अमृत है, और भगवान इसे एक-एक भक्त तक पहुँचाएँगे। उन्होंने पहले ही मांसाहार छोड़ दिया था, और उसके बाद उन्हें वीडियो मिला। इसका अर्थ है कि भगवान ने ही उनसे मांसाहार छुड़वाया और वीडियो भी पहुँचाया। देखिए, आप मेरे पास आई हैं; मैं आपके घर में यह मार्ग स्थापित करने आ रहा हूँ। इसीलिए भक्त पर भगवान की सदा कृपा और आशीर्वाद रहते हैं, माता जी। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी पवित्र आत्मा पर उनकी कृपा सदा बनी रहे। भगवान हर कठिनाई में आपकी सहायता करें। और 'धारा' से जुड़ने के लिए, माता जी, हमारे यूट्यूब वीडियो में, वीडियो के नीचे, डिस्क्रिप्शन में एक नंबर है। वहाँ एक नंबर दिया गया है। सत्संग भी प्रतिदिन होता है, अलग-अलग लोग उसे संचालित करते हैं, और प्रतिदिन अपने अनुभवों और विचारों पर चर्चा होती है, किसी को कितना आनंद मिलता है, लोग कैसे बीमारी से बचते हैं, कैसे ठीक होते हैं... सब कुछ बताया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:34 · 11 जून 2023

प्रश्न 1319 वैष्णो माता के आशीर्वाद से हमने एक मंदिर बनवाया है। तो, क्या हम उसमें भगवान कल्कि की साधना कर सकते हैं?

उत्तर: कर सकते हैं। इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 53:19 · 11 जून 2023

प्रश्न 1320 युद्ध होगा, और युद्ध के बाद पूरे संसार में 64 करोड़ की जनसंख्या बचेगी। जब धरती अन्न नहीं उपजाएगी, तो वे क्या खाएँगे-पिएँगे? और संसार की 820 करोड़ की जनसंख्या के संबंध में, क्या भक्तों को छोड़कर सभी को एक साथ उठा लिया जाएगा?

उत्तर: मैं समझाता हूँ। देखिए, 64 करोड़...

► यह उत्तर सुनें · 01:02:08 · 11 जून 2023

सत्र 77 · प्रश्न 1321–1349

L71 - प्रेम - मंदिर में आग लगना एवं द्वारकाधीश मंदिर का ध्वज फटना | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 15 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1321 मैं त्रिपुरा से हूँ। काम के कारण मैं हमेशा दैनिक सत्संग में शामिल नहीं हो पाता, जैसे आज मुझे गुवाहाटी आना पड़ा। कभी-कभी मैं देर तक काम करता हूँ। कृपया मुझे ग्रुप से न निकालिए, क्योंकि मैं बाद में संदेश पढ़ता हूँ और मुझे उन्हें पढ़ना अच्छा लगता है। मैं नियमितता नहीं रख पा रहा हूँ। कृपया मुझे ग्रुप में बनाए रखिए; मुझे आपका सत्संग अच्छा लगता है और मैं यूट्यूब पर रिकॉर्डिंग सुनता हूँ। पंडित जी, यही आपसे मेरी विनती है।

उत्तर: सबसे पहले, क्या आप घर पर त्रिसंध्या (दिन में तीन बार की प्रार्थना) का पालन करते हैं? आपके शरीर की रक्षा के लिए त्रिसंध्या का अभ्यास अनिवार्य है, क्योंकि हमें नहीं पता कि कब और कहाँ कोई आपदा आ जाए। यदि आप लाइव ऑनलाइन सत्संग में शामिल नहीं हो पाते, तो सोने से पहले रिकॉर्डिंग अवश्य सुन लीजिए। हम आपको नहीं निकालेंगे, लेकिन साधना का पालन करना ज़रूरी है। अन्यथा, यदि किसी के साथ कुछ हो जाए, तो वह उपदेशों पर प्रश्न उठा सकता है और कह सकता है, 'आपने हमें मार्ग पर चलने को कहा था, पर अब मैं बीमार हूँ। मैं क्या करूँ?' इससे भगवान का नाम कलंकित होगा। इसीलिए मार्ग का पालन करना महत्वपूर्ण है। यदि आप लाइव नहीं जुड़ सकते, तो रिकॉर्डिंग सुनिए। यह कोई थोपी हुई परंपरा नहीं है; कोई इसका पालन करे या न करे, यह उसकी अपनी इच्छा है। लेकिन इस परंपरा के माध्यम से मनुष्य देवता बन सकता है। यह बहुत अच्छी बात है कि आपने पहले ही चाय छोड़ दी है और पूर्ण शाकाहारी हैं। यदि आप यात्रा में हों और कोई दूसरा भोजन उपलब्ध न हो, तो आप प्याज़-लहसुन खा सकते हैं। त्रिसंध्या का अभ्यास इसलिए दिया गया है ताकि भक्त शक्तिशाली बनें और आने वाली अनेक दुर्घटनाओं से बच सकें। यह एक सिद्ध तथ्य है, बहुत पहले लिखा गया है, कि जो त्रिसंध्या का पालन करेंगे उनकी रक्षा होगी, चाहे दूसरों के साथ कुछ भी हो जाए।

► यह उत्तर सुनें · 26:34 · 15 जून 2023

प्रश्न 1322 मैं उत्तर प्रदेश के देवरिया से वीरेंद्र सिंह हूँ। उत्तर प्रदेश में बन रहे राम जन्मभूमि मंदिर के संबंध में, क्या उस स्थान के लिए भगवान का कोई विशेष संदेश या आदेश है? चूँकि चक्रवात और अन्य अचानक आने वाली आपदाएँ कहीं भी हो सकती हैं, क्या उसके निर्माण को लेकर या वहाँ भगवान के आगमन को लेकर कोई निर्देश है?

उत्तर: राम का जन्मस्थान पहले से ही एक पवित्र तीर्थस्थल है। वहाँ बन रहा मंदिर सत्य युग में राम राज्य के आरंभ का प्रतीक है। इसका निर्माण भगवान का कार्य है, सत्य युग का कार्य है, और इसे रोका नहीं जा सकता। विनाश के जो संकेत मैंने बताए थे, वे चार प्रमुख धामों के लिए थे। किंतु चूँकि अयोध्या में पवित्र कार्य हो रहा है, वहाँ कोई अशुभ संकेत दिखाई नहीं देता। वह क्षेत्र भगवान की इच्छा से एक दिव्य पुनर्निर्माण से गुज़र रहा है, इसलिए वहाँ कोई नकारात्मक संकेत प्रकट नहीं होंगे। संसार के अन्य भागों में आपदाएँ आती रहेंगी, फिर भी भगवान का कार्य चलता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:17 · 15 जून 2023

प्रश्न 1323 मैं बिहार से हूँ, और यहाँ तापमान लगभग 49 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया है, जो पहले कभी नहीं हुआ। क्या यह इस बात का संकेत है कि यहाँ भी कुछ होने वाला है?

उत्तर: हाँ, इस गर्मी की भविष्यवाणी 600 वर्ष पहले भविष्य पुराण में की गई थी। लिखा गया था कि सूर्य की गर्मी दस गुना बढ़ जाएगी। उस समय तापमान लगभग 27-28 डिग्री था, और भविष्यवाणी है कि यह अंततः 70 डिग्री तक पहुँचेगा। बिहार में यह गर्मी धर्म की स्थापना का संकेत है। यह बिहार के लोगों के लिए ईश्वर का संकेत है। एक समय आ रहा है जब भीषण गर्मी होगी पर वर्षा नहीं होगी, जिससे बहुत कष्ट होगा। यह तो केवल शुरुआत है। तापमान बढ़ता ही जाएगा, जिससे अनेक रोग, चक्रवात जैसी आपदाएँ, और भूजल स्तर में गिरावट होगी, जिससे पानी की कमी होगी। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि लोगों ने भगवान विष्णु की पूजा करना छोड़ दिया है और सुबह सूर्य देव को जल अर्पित नहीं करते। सूर्य देव मानवता से क्रोधित हैं। यह सब तो केवल शुरुआत है।

► यह उत्तर सुनें · 35:09 · 15 जून 2023

प्रश्न 1324 कुछ लोग कह रहे हैं कि सितंबर में भारत में गृह युद्ध शुरू होगा। क्या यह सच है?

उत्तर: यह गलत है। सितंबर में भारत में कोई गृह युद्ध नहीं होगा। उस प्रकार के साम्प्रदायिक संघर्ष का समय अभी नहीं आया है। आपको 2025-26 तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। जब से हमने भविष्य मालिका का प्रचार शुरू किया है, तब से कई यूट्यूब चैनलों ने भविष्यवाणियाँ करना शुरू कर दिया है। लेकिन वे गलत हैं, क्योंकि पिछले साल हमारे हिंदी संस्करण प्रकाशित करने से पहले यह पुस्तक हिंदी में उपलब्ध ही नहीं थी। ओड़िया पाठ से उन्हें कैसे पता चलेगा कि सितंबर में गृह युद्ध होगा? यह सच नहीं है। 2025 की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:54 · 15 जून 2023

प्रश्न 1325 गुरुजी, मैं जानना चाहता हूँ कि जब कलियुग समाप्त होगा और सत्य युग आरंभ होगा, तो भारत में शासन और शिक्षा की व्यवस्था कैसी होगी?

उत्तर: कलियुग समाप्त नहीं होगा; वह पहले ही समाप्त हो चुका है। भगवान कृष्ण के गुरु गर्ग मुनि द्वारा लिखित गर्ग संहिता के अनुसार, कलियुग को 4,800 वर्षों के बाद समाप्त होना था। हम अब 'युग संध्या', अर्थात संक्रमण काल में हैं। नए युग में लोग वेद, पुराण और शास्त्रों का अध्ययन करेंगे। शासन राजतंत्र होगा, लोकतंत्र नहीं। मैंने पहले भी कहा है कि भारत के अंतिम प्रधानमंत्री एक योग साधना में लगे संत पुरुष होंगे, और उनका शासन अंतिम संक्रमण का प्रतीक होगा। वर्तमान प्रधानमंत्री, ओडिशा के वर्तमान मुख्यमंत्री, और पुरी के वर्तमान गजपति राजा अपनी-अपनी परंपराओं में अंतिम हैं, जो यह सिद्ध करता है कि कलियुग समाप्त हो चुका है। नए युग में वर्तमान तकनीक का स्थान एक ऐसी तकनीक ले लेगी जो लाखों गुना अधिक शक्तिशाली होगी और मंत्रों की शक्ति पर आधारित होगी, जो मानवता को सुख प्रदान करेगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:52 · 15 जून 2023

प्रश्न 1326 पंडित जी, कहा जाता है कि भगवान कल्कि और माँ वैष्णो हमें साक्षात दर्शन देंगे। समाज के हित में उनका स्वागत करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: यदि आप उनके स्वागत की तैयारी करना चाहते हैं, तो आपको त्रिसंध्या धारा (दिन में तीन बार की प्रार्थना) में बने रहना होगा, भविष्य पुराण के उपदेशों का पालन करना होगा, श्रीमद्भागवत पढ़ना होगा, और अपने जीवन एवं कर्मों में सत्य, शांति, करुणा और क्षमा के गुणों को धारण करना होगा। यदि आप पहले से शाकाहारी नहीं हैं, तो आपको शाकाहारी बनना होगा। इस मार्ग पर चलकर ही आप सच्चे अर्थों में उनका स्वागत करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:00 · 15 जून 2023

प्रश्न 1327 मैं दिल्ली से हूँ और चैतन्य महाप्रभु की विचारधारा का पालन करता हूँ। हम पूर्णतः सात्विक हैं, वैष्णव धर्म का पालन करते हैं, हरिनाम की 64 माला जपते हैं, एकादशी का व्रत रखते हैं, और उनके द्वारा दिए गए सभी नियमों का पालन करते हैं। उन्होंने हमें नाम में रुचि रखना, सभी जीवों पर दया करना, और तुलसी के प्रति निष्ठावान होना सिखाया। क्या इस मार्ग पर चलने से हमें नए युग (सत्य युग) में प्रवेश मिलेगा?

उत्तर: भगवान चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिया गया मार्ग अत्यंत पवित्र है, जिसे उन्होंने उस समय मानवता को बचाने के लिए स्थापित किया था जब पाप चरम पर था। किंतु वह एक अलग समय था। अब कलियुग समाप्त हो चुका है, और भगवान कल्कि के मार्ग का पालन करना आवश्यक है, जो त्रिसंध्या धारा है। भगवान चैतन्य ने त्रिसंध्या का उपदेश नहीं दिया क्योंकि तब उसकी आवश्यकता नहीं थी। परंतु अब, सत्य युग में प्रवेश करने के लिए, सत्य युग के मनुष्यों के लिए निर्धारित साधनाओं को अपनाना होगा। आप अपनी वैष्णव साधनाएँ भक्तिपूर्वक जारी रखें, किंतु आपको त्रिसंध्या धारा भी अपनानी होगी, श्रीमद्भागवत पढ़ना होगा, और 'माधव' नाम का जप करना होगा, क्योंकि भगवान कल्कि का नाम माधव होगा। जो केवल पूर्व मार्ग का पालन करेंगे, उनकी रक्षा तो हो सकती है, किंतु उन्हें भगवान कल्कि का प्रत्यक्ष सान्निध्य नहीं मिलेगा। भगवान कल्कि के भक्त बनने और उनके धर्म-स्थापना के मिशन में भाग लेने के लिए, उनके बताए मार्ग का पालन करना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 45:33 · 15 जून 2023

प्रश्न 1328 जब कलियुग के अंत में सब कुछ नष्ट हो जाएगा, तो क्या नई सृष्टि का अर्थ यह है कि सब कुछ नया होगा—नई पृथ्वी, नया सूर्य, सब कुछ? या यह वर्तमान पृथ्वी पर ही चलता रहेगा? और क्या केवल एक ही भूमि होगी, भारत, या चीन जैसे अलग-अलग देश भी रहेंगे?

उत्तर: सब कुछ नया होगा। कलियुग का कोई भी ढाँचा या स्थापत्य शेष नहीं रहेगा। दिव्य शिल्पी भगवान विश्वकर्मा को पूरे विश्व के लिए नया ढाँचा रचने का आदेश दिया जाएगा। 'अखंड भारत' होगा। संपूर्ण ब्रह्मांड का मूल नाम भारतवर्ष है, किंतु कलियुग में हमारा देश छोटा हो गया। आने वाले युग में संपूर्ण विश्व पुनः अखंड भारत बन जाएगा। चीन और अमेरिका जैसे देश रहेंगे, किंतु केवल इस विशाल भारत के भीतर छोटे राज्यों के रूप में। संपूर्ण ग्रह भारत कहलाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:04 · 15 जून 2023

प्रश्न 1329 क्या त्रिसंध्या कहीं भी की जा सकती है? जैसे, यदि मैं यात्रा में हूँ या बाहर हूँ, तो क्या मैं कहीं भी बैठकर इसे कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, आप विश्व में कहीं भी हों, आपको त्रिसंध्या करनी ही चाहिए। हमारी सुरक्षा सर्वोपरि है। ओडिशा के बालासोर में हुई ट्रेन दुर्घटना जैसी घटनाओं में हमने मृत्यु का भयावह रूप देखा है। अपने प्राण और शरीर की रक्षा के लिए, ताकि हम सत्कर्म कर सकें, त्रिसंध्या अनिवार्य है, चाहे आप कहीं भी जाएँ। यह शरीर को शुद्ध करती है, आपदाओं से रक्षा करती है, और शांति प्रदान करती है। त्रिसंध्या के साथ-साथ आपको भागवत भी पढ़ना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 51:57 · 15 जून 2023

प्रश्न 1330 क्या माँ वैष्णो देवी अब अपने धाम में उपस्थित नहीं हैं? क्या हमें वहाँ तीर्थयात्रा के लिए जाना चाहिए या नहीं?

उत्तर: वैष्णो देवी का धाम एक पवित्र तीर्थस्थल है। वहाँ तीनों देवियाँ—महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती—विराजमान हैं। यह एक पवित्र स्थान है जहाँ भक्तों के उत्थान के लिए माँ की कृपा उपलब्ध है। आपको वहाँ अवश्य तीर्थयात्रा पर जाना चाहिए। जाइए और माँ के दर्शन कीजिए। भक्त जहाँ कहीं भी प्रार्थना करेगा, माँ वहीं दर्शन और आशीर्वाद देंगी। वहाँ जाने में कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 53:18 · 15 जून 2023

प्रश्न 1331 मैं मॉरीशस से हूँ और यह यहाँ मेरा पहला दिन है। मैं किस तरह मदद कर सकता हूँ? मैं शुरुआत कैसे करूँ?

उत्तर: यह बहुत ही सुंदर बात है। भगवान कल्कि जिन 16 मंडलों (दिव्य क्षेत्रों) की स्थापना करेंगे, उनमें से एक मॉरीशस में होगा, जो 'अफ्रीका मंडल' का हिस्सा होगा। इसी उद्देश्य से वहाँ देवताओं और भक्तों ने पहले ही जन्म ले लिया है। आपसे बात करके मुझे आनंद हो रहा है, क्योंकि संभवतः आप मॉरीशस से जुड़ने वाले पहले व्यक्ति हैं। ऐसा लगता है कि भगवान ने वहाँ धर्म की स्थापना का कार्य आरंभ करने के लिए आपको ही चुना है। आपको मॉरीशस के हिंदू भक्तों के बीच भविष्य पुराण का संदेश और त्रिसंध्या की धारा फैलानी होगी। आने वाली विपत्तियों से उनकी रक्षा के लिए यह आवश्यक है, ताकि वहाँ के भक्त और देवता बच सकें। सबसे पहले हमारे समूह से जुड़िए, भविष्य पुराण पढ़िए, और फिर हम गूगल मीट के माध्यम से आगे बात करके आपको अगले कदमों के बारे में मार्गदर्शन दे सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 54:28 · 15 जून 2023

प्रश्न 1332 मैं धनबाद, झारखंड से हूँ। मेरा त्रिसंध्या के बारे में एक प्रश्न है। आपने पहले कहा था कि कोई विशेष समय नहीं है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि हम इसे सुबह, दोपहर और शाम में कभी भी कर सकते हैं?

उत्तर: मैं आपको त्रिसंध्या के निश्चित समय स्पष्ट कर देता हूँ। तीन काल होते हैं: 1. **प्रातः संध्या (प्रातःकालीन प्रार्थना):** यह प्रातः 3:45 से 6:00 बजे के बीच करनी चाहिए। इसे ब्रह्म मुहूर्त संध्या भी कहते हैं। 2. **मध्याह्न संध्या (दोपहर की प्रार्थना):** यह सुबह 11:45 से दोपहर 12:30 बजे के बीच करनी चाहिए। 3. **सायं संध्या (सायंकालीन प्रार्थना):** यह सूर्यास्त के आसपास करनी चाहिए, अर्थात सूर्यास्त से आधा घंटा पहले और आधा घंटा बाद — इस एक घंटे की अवधि के भीतर। जो लोग त्रिसंध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, वे दिव्य प्राणी बनेंगे, सत्य युग के मनुष्य बनेंगे, और इस युग की विपत्तियों तथा समस्याओं से बच जाएँगे। कुछ भी हो जाए, भक्तों की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 58:10 · 15 जून 2023

प्रश्न 1333 मैं धनबाद, झारखंड से हूँ। मुझे किस मंडल (क्षेत्रीय समूह) में शामिल होना चाहिए?

उत्तर: धनबाद बंगाल और ओडिशा के पास है। आप कोलकाता के माता कालिका मंडल से जुड़ सकते हैं, या यदि वह बहुत दूर पड़े, तो आप सीधे ओडिशा में हमारे मुख्य समूह से जुड़ सकते हैं। मंडलों का उद्देश्य धर्म का प्रचार करना है, इसलिए सभी मंडल भक्तों के ही हैं। सबसे अच्छा यही है कि आप अपने सबसे नज़दीकी मंडल से जुड़ें, पर कोई भी चलेगा। सभी मंडलों के बारे में हम समय आने पर और जानकारी देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:58 · 15 जून 2023

प्रश्न 1334 मैं पटना से हूँ। पहला, पटना के लोगों के लिए कौन सा मंडल है? दूसरा, बहुत से लोग 30 जून के बारे में बहुत कुछ कह रहे हैं। 30 जून के बाद क्या होने वाला है, और भगवान कल्कि के आगमन का पहला प्रमाण हमें कब दिखाई देने लगेगा?

उत्तर: 30 जून के बाद कुछ विशेष होने वाला नहीं है। चीज़ें जैसी चल रही हैं, वैसी ही चलती रहेंगी। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि बिहार और उत्तर भारत के लिए एक बड़ा भूकंप नियत है, और बिहार में भीषण बाढ़ भी आएगी, परंतु सबसे प्रचंड विनाश का समय अभी नहीं आया है। 2025 के बाद का काल अजेय विनाश लेकर आएगा। भगवान ने हमें यह वर्तमान समय इसलिए दिया है कि हम 16 मंडलों की स्थापना करें और भक्तों को त्रिसंध्या की धारा में लाकर तैयार करें। छोटे स्तर का विनाश हो रहा है और होता रहेगा, पर 30 जून में कुछ विशेष नहीं है। यूट्यूब पर लोग अपने व्यूज़ बढ़ाने के लिए ऐसी बातें कहते हैं। परंतु मैं आपसे यह कहता हूँ: जो भी व्यक्ति त्रिसंध्या की धारा में है और भागवत पढ़ता है, वह सुरक्षित रहेगा, चाहे आसमान ही क्यों न टूट पड़े। उसकी मृत्यु नहीं होगी। यह प्रमाणित सत्य है। रही बात पटना की, तो यह बिहार का एक पावन क्षेत्र है, और भगवान हनुमान आज भी वहाँ एक पर्वत पर तपस्या करते हुए विद्यमान हैं। आने वाले समय में भक्तों को उनके दर्शन प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:34 · 15 जून 2023

प्रश्न 1335 हम सुबह 5 बजे सत्संग में जुड़ते हैं, पर जब वक्ता बोलना शुरू करते हैं, तो मुझे बहुत नींद आने लगती है और अक्सर सुनते-सुनते सो जाता हूँ। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: जहाँ कहीं भी कोई धर्मपरक कार्य होता है और भगवान की वाणी कही जाती है, वहाँ निद्रा देवी (नींद की देवी) अक्सर बाधा उत्पन्न करने के लिए प्रकट हो जाती हैं। वे ऐसा इसलिए करती हैं ताकि आप सुन न सकें और भक्ति के मार्ग पर जुड़ने से रोके जा सकें। यह कलियुग के प्रभाव का भी असर है। चिंता मत कीजिए। बस भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, कृपया मुझे सोने मत दीजिए। मैं सुनना चाहता हूँ और आपकी शरण लेना चाहता हूँ।' भगवान माधव का नाम जपिए, सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:29 · 15 जून 2023

प्रश्न 1336 कहा जाता है कि मानवता अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित होगी जिससे जनसंख्या में भारी कमी आएगी। ये किस प्रकार के रोग होंगे, और हम स्वयं को इनसे कैसे बचा सकते हैं?

उत्तर: भविष्य पुराण की शिक्षाओं का प्रचार इसीलिए किया जा रहा है ताकि धर्मपरायण मनुष्य ऐसी नियति से बच सकें। इन रोगों और विपत्तियों से स्वयं को बचाने के लिए आपको त्रिसंध्या की धारा का पालन करना होगा, श्रीमद्भागवत पढ़ना होगा, और ऑनलाइन सत्संग से जुड़ना होगा। ऐसा करने से आप विश्व सनातन धर्म (सार्वभौमिक शाश्वत धर्म) का अंग बन जाएँगे, और आपकी रक्षा होगी। यदि आप बीमार पड़ भी गए, तो भी आपकी मृत्यु नहीं होगी, क्योंकि भगवान आपकी रक्षा करेंगे। इसकी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बस उस मार्ग पर चलिए जो मैं आपको दिखा रहा हूँ, और जो भी भक्त ऐसा करेंगे वे आने वाली समस्याओं से सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:27 · 15 जून 2023

प्रश्न 1337 मैं त्रिसंध्या का अभ्यास कर रहा हूँ और सत्संग में भी आ रहा हूँ। हमें कहा जाता है कि क्षमा, करुणा, शांति और प्रेम जैसे गुण अपने भीतर विकसित करें। परंतु मैं पाता हूँ कि छोटे-छोटे नकारात्मक विचार फिर भी उठते हैं। मैं इनसे कैसे निपटूँ?

उत्तर: यह बहुत ही सुंदर बात है कि आप त्रिसंध्या मार्ग का पालन कर रहे हैं। यह भगवान का बहुत बड़ा आशीर्वाद है। यही वह मार्ग है जिसके द्वारा ध्रुव जी ने भगवान को प्राप्त किया और सभी महान ऋषि परम अवस्था को प्राप्त करते हैं। रही बात नकारात्मक विचारों की, तो चिंता मत कीजिए। त्रिसंध्या की धारा का कुछ समय अभ्यास करने के बाद, ये दिव्य गुण धीरे-धीरे आपके भीतर विकसित होने लगेंगे। यह रातोंरात नहीं होगा, क्योंकि हम अभी भी कलियुग में हैं, और इसका प्रभाव मार्ग में प्रतिरोध और बाधाएँ उत्पन्न करता है। पर विश्वास रखिए; भगवान धीरे-धीरे और निश्चित रूप से आपमें यह परिवर्तन ले आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:11 · 15 जून 2023

प्रश्न 1338 पंडित जी, मालिका में लिखा है कि सात वर्षों तक रथ यात्रा (भगवान जगन्नाथ का रथ उत्सव) नहीं होगी। यह अवधि कब से आरंभ होगी?

उत्तर: हाँ, महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है कि सात वर्षों तक भगवान की रथ यात्रा नहीं होगी, और पुरी की वह विशाल सड़क, जहाँ यह होती है, सूनी पड़ी रहेगी। यह महान विश्वयुद्ध के बाद होगा, सत्य युग की स्थापना की ओर ले जाने वाले विनाश के अंतिम चरण के दौरान। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि विश्वयुद्ध का समय 2025-26 में निकट आ रहा है। उसके बाद एक ऐसा समय आएगा जब यह उत्सव नहीं हो पाएगा, क्योंकि भगवान जगन्नाथ, अपने भगवान कल्कि के स्वरूप में, धर्म की स्थापना और सम्पूर्ण ब्रह्मांड में अपने भक्तों को एकत्र करने के कार्य में पूर्णतः लगे रहेंगे। उस समय रथ यात्रा की आवश्यकता नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:49 · 15 जून 2023

प्रश्न 1339 मेरा नाम आकाश है। मैं सत्संग से कैसे जुड़ सकता हूँ? साथ ही, अगर मैं किसी को त्रिसंध्या के बारे में या यह बताना चाहूँ कि भगवान आ चुके हैं, तो मैं उन्हें यह कैसे समझाऊँ?

उत्तर: हमारे 'कल्कि अवतार' और 'धर्म ज्ञान' चैनलों पर यूट्यूब वीडियो के नीचे एक फ़ोन नंबर दिया गया है। आपको उस नंबर पर कॉल करके मोहन नाम के एक युवक से बात करनी चाहिए। वह आपको सत्संग समूह में जोड़ देंगे। मैं अभी मोहन से कह रहा हूँ कि वे आपसे संपर्क करें, क्योंकि हमें मॉरीशस में मंडल स्थापित करना है, और आपकी सहभागिता महत्वपूर्ण है। आपको भविष्य पुराण पुस्तक भी मंगवानी चाहिए, उसे पढ़िए, और भगवान कल्कि के धर्म के प्रचार का कार्य आरंभ कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:37 · 15 जून 2023

प्रश्न 1340 तो क्या मैं इस सत्संग के समाप्त होने के बाद कॉल कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, हाँ, आप अभी तुरंत कॉल कर सकते हैं। आप भविष्य पुराण ग्रंथ भी अपने पास भिजवाने के लिए बुक कर सकते हैं। उसे पढ़िए और भगवान का कार्य आरंभ कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:43 · 15 जून 2023

प्रश्न 1341 मैं आंध्र प्रदेश के एक गाँव में गया था, जहाँ एक शिव मंदिर के सामने नंदी (भगवान शिव के वृषभ) की एक विशाल पत्थर की मूर्ति है। वहाँ के लोग कहते हैं कि यह धीरे-धीरे आकार में बढ़ रही है। क्या आप बता सकते हैं कि इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: हाँ, महापुरुष अच्युतानंद ने मालिका में इस घटना के बारे में लिखा है। उन्होंने लिखा है, 'कलियुग के अंत में पत्थर की मूर्तियाँ जीवंत हो उठेंगी।' मूर्ति का बढ़ना इस बात का प्रमाण है कि उसके भीतर प्राणशक्ति है। यह एक स्पष्ट संकेत है कि कलियुग समाप्त हो चुका है और देवता अपनी जीवंत उपस्थिति प्रकट करने लगे हैं। भक्त ऐसे अनेक संकेत देखेंगे और समझ जाएँगे कि समय आ गया है। यह धर्म की स्थापना का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 01:13:26 · 15 जून 2023

प्रश्न 1342 वहाँ के लोग यह भी कहते हैं कि नंदी के और अधिक बड़े हो जाने के बाद, वह अपना दाहिना पैर तीन बार ज़मीन पर पटकेगा और फिर एक प्रचंड गर्जना करेगा। वे कहते हैं कि जो भी मनुष्य उस गर्जना को सुनेगा, वह जीवित नहीं बचेगा। क्या यह सत्य है?

उत्तर: हाँ, वे जो कह रहे हैं वह सत्य है। जब देवी-देवता जागृत होकर गर्जना करेंगे, तो वह ध्वनि इतनी शक्तिशाली होगी कि जो पापी उसे सुनेंगे वे तत्काल मर जाएँगे—कुछ के मुँह से खून निकलेगा, कुछ बस नष्ट हो जाएँगे। यह भविष्य पुराण में लिखा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्मपरायण और भक्त लोग उस ध्वनि को सुन भी नहीं पाएँगे। वह केवल पापियों को ही सुनाई देगी। यह अनेक स्थानों पर होने वाला है। आपको अपने क्षेत्र में रामेश्वरम मंडल की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:20 · 15 जून 2023

प्रश्न 1343 जब मैं भागवत पढ़ता हूँ या जप करता हूँ, तो मुझे बहुत जम्हाइयाँ आती हैं। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: जम्हाई आने का कारण यह है कि आपके शरीर के भीतर नकारात्मक तत्व या गलत ऊर्जाएँ हैं। जब आप शास्त्र पढ़ने या जप करने जैसे पवित्र कार्यों में लगते हैं, तो ये नकारात्मक ऊर्जाएँ शरीर में नहीं रह पातीं और बाहर निकल जाती हैं। जम्हाई आना इसी शुद्धिकरण प्रक्रिया का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 01:18:30 · 15 जून 2023

प्रश्न 1344 पिछले कुछ दिनों से मुझे लगता है कि मेरी चिड़चिड़ाहट बढ़ गई है। बहुत छोटी-छोटी बातों पर मुझे क्रोध आ जाता है। अभी ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जो बाहरी नकारात्मक शक्तियाँ आपके शरीर को प्रभावित कर रही हो सकती हैं, वे आपको उत्तेजित करने का प्रयास करती हैं। वे आपकी शांति भंग करना चाहती हैं और आपको आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने से रोकना चाहती हैं, इसलिए वे आपके भीतर अधिक क्रोध उत्पन्न करती हैं। यह एक बाधा है। इसका प्रतिकार करने के लिए निरंतर 'माधव' नाम का जप कीजिए। ऐसा करेंगे तो क्रोध शांत हो जाएगा और यह समस्या समाप्त हो जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:19:23 · 15 जून 2023

प्रश्न 1345 (एक 12 वर्ष की बालिका द्वारा पूछा गया) मुझे डर लगता है। क्या हम आने वाले प्रलय में बचेंगे या नहीं?

उत्तर: मेरी प्यारी बच्ची, जो भक्त भगवान जगन्नाथ की शरण लेते हैं, वे पूर्णतः सुरक्षित रहेंगे। उन्हें कुछ नहीं होगा। भगवान के भक्त संसार के सबसे शक्तिशाली लोग हैं, फिर उन्हें भय क्यों होना चाहिए? ध्रुव का उदाहरण देखिए; वे तो छोटे-से बालक थे, फिर भी जंगल के सिंह और बाघ भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सके, क्योंकि उन पर भगवान की कृपा थी। प्रह्लाद को देखिए; उनके अपने पिता ने उन्हें पर्वत से नीचे फिंकवाया और विषैले साँपों से डँसवाया, परंतु वे नहीं मरे क्योंकि वे भगवान के भक्त थे। आप भी भगवान की भक्त हैं, इसलिए आपको कुछ नहीं होने वाला। विनाश पापियों के लिए है, उनके लिए नहीं जिन्होंने भगवान की शरण ले ली है। यदि परमाणु बम भी गिरे, तब भी भक्त सुरक्षित रहेंगे। इसलिए डरिए मत। बस प्रतिदिन अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए, 'माधव' और 'जगन्नाथ' नाम का जप कीजिए, और श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध से 'गोपी लीला' पढ़िए। आप देखेंगी कि भगवान कितने शक्तिशाली हैं और वे किस प्रकार सदा अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:11 · 15 जून 2023

प्रश्न 1346 हम लखनऊ से हैं। हम किस मंडल (क्षेत्रीय समूह) से जुड़ सकते हैं? और क्या कोई सेवा है जो हम कर सकते हैं?

उत्तर: चूँकि आप लखनऊ में हैं, आप अयोध्या मंडल या गोप-मथुरा-वृंदावन मंडल से जुड़ सकते हैं, क्योंकि उत्तर प्रदेश में बड़े मंडल हैं। जहाँ तक सेवा की बात है, संसार के लिए आप जो सबसे बड़ी सेवा कर सकते हैं वह है त्रिसंध्या की धारा से जुड़ना, माधव नाम का जप करना, भागवत पढ़ना, और भविष्य पुराण के संदेश को फैलाने में सहयोग करना। इस सच्चे सनातन धर्म को पृथ्वी पर स्थापित करना एक बड़ा संघर्ष होगा। इस लक्ष्य की दिशा में कार्य करना—लोगों को त्रिसंध्या अपनाने, भागवत पढ़ने और सत्ययुग के मनुष्य बनने में सहायता करना—सबसे बड़ी सेवा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:24:14 · 15 जून 2023

प्रश्न 1347 मुझे अपने भतीजे से बहुत स्नेह है। क्या उसे भी मेरे पुण्यों का लाभ मिलेगा?

उत्तर: हाँ, अवश्य मिलेगा। क्यों नहीं मिलेगा? बड़ों की पवित्रता और अच्छे कर्म सदैव परिवार के बच्चों तक पहुँचते हैं। उन्हें अपने बड़ों का आशीर्वाद मिलता है। जब हम अच्छे कर्म करते हैं, तो उसका लाभ उन तक भी पहुँचता है। यह भगवान का बहुत बड़ा आशीर्वाद है कि इतने छोटे बच्चे अभी से भक्त हैं और जगन्नाथ पुरी के दर्शन कर चुके हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:26:40 · 15 जून 2023

प्रश्न 1348 भविष्य पुराण और भविष्य मालिका में क्या अंतर है?

उत्तर: भविष्य मालिका और भविष्य पुराण एक ही हैं। हिंदी भाषा में हम इसे भविष्य पुराण कहते हैं, और ओड़िया भाषा में मूल ग्रंथ को भविष्य मालिका कहा जाता है। ये एक ही शास्त्र हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:28:48 · 15 जून 2023

प्रश्न 1349 क्या महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखा गया भविष्य पुराण सही है, या यह भविष्य मालिका सही है?

उत्तर: हमारे समय के लिए यही (भविष्य मालिका) सही है। मूल भाषा से रूपांतरित होते समय इसके नाम का हिंदी में अनुवाद बस 'भविष्य पुराण' कर दिया गया।

► यह उत्तर सुनें · 01:29:07 · 15 जून 2023

सत्र 78 · प्रश्न 1350–1360

L72 - चारों धाम से सत्ययुग आगमन के संकेत | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 18 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1350 क्या मुझे केवल अपने प्राण बचाने के लिए महादेव (भगवान शिव) को छोड़ देना चाहिए?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, भगवान शंकर, ब्रह्मदेव और भगवान महाविष्णु सब एक ही हैं। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं भगवान शंकर के सभी भक्तों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि भगवान शंकर के नाम का जप कीजिए। उनका नाम जपते रहिए। जो मंत्र मैं आपको बता रहा हूँ, वही जपिए। भारत और विश्व से जो भक्त मेरी शरण में आते हैं, उन्हें मैं राम नाम और राम नाम का मार्ग देता हूँ, जिससे वे मुक्ति, अर्थात परम अवस्था को प्राप्त करते हैं। वे भक्तों की रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:45 · 18 जून 2023

प्रश्न 1351 क्या गंगा जी वापस स्वर्ग लौट जाएँगी?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। बहुत अच्छा प्रश्न है, ध्यान से सुनिए। शास्त्रों के अनुसार, 5000 वर्षों के बाद माँ गंगा पृथ्वी को छोड़ देंगी। और दूसरी बात यह है कि लोग अपने दिवंगत परिजनों की अस्थियाँ विसर्जित करने गंगा और प्रयाग जाते हैं। विसर्जन के बाद वे यह सोचकर घर पर प्रसन्न बैठ जाते हैं कि उनके पूर्वजों को स्वर्ग मिल गया। लेकिन दिवंगत आत्माएँ किसी मनुष्य शरीर के माध्यम से बोलते हुए कहती हैं, 'मैं अब भी मुक्ति की प्रतीक्षा कर रही हूँ। मेरी मुक्ति कैसे होगी?' यदि माँ गंगा पृथ्वी पर हैं और मोक्ष प्रदान करती हैं, तो फिर ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि युग संध्या (युगों के संधिकाल) के समय एक नया युग आरंभ होने वाला है, और मुक्ति का कार्य इसी चल रही प्रक्रिया का हिस्सा है।

► यह उत्तर सुनें · 51:31 · 18 जून 2023

प्रश्न 1352 सनातन धर्म के अनुयायी और हिंदू तो इसे स्वीकार कर लेंगे, लेकिन बाकी सब का क्या? सभी लोग तो इस पर विश्वास नहीं करेंगे, है न?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है, माता जी। प्रश्न यह है कि सनातन धर्म के अनुयायी और हिंदू इसे स्वीकार कर लेंगे, परंतु सभी नहीं करेंगे। केवल वही भक्त विश्वास करेंगे जो चारों युगों में द्वापर युग में भगवान कृष्ण के साथ थे। लेकिन संसार में विभिन्न धर्मों और मतों के लोग तब विश्वास करने लगेंगे जब उन पर बड़ी विपत्तियाँ आएँगी, और साथ ही जैसे-जैसे भविष्य पुराण का अंग्रेज़ी, जापानी और रूसी भाषाओं में प्रचार हो रहा है, उन्हें इसका संदेश मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:17 · 18 जून 2023

प्रश्न 1353 कहा जाता है कि '24 के चुनाव नहीं होंगे और भूकंप आएँगे। तो क्या यह '24 में होगा या '23 में?

उत्तर: चुनाव और सरकार बनने के बाद हमारे देश में सैन्य आपातकाल लगाया जाएगा। लाल रंग दिखाई देगा, और उस समय भारत में संयुक्त शासन होगा। समय आएगा, हम देखेंगे, और आपको भी इस समय के बारे में जानकारी मिल रही है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:50 · 18 जून 2023

प्रश्न 1354 गुरुजी, क्या कोई स्थान दफ़न हो जाएगा, लोग बह जाएँगे, और क्या महाराष्ट्र की ओर सुनामी आ रही है?

उत्तर: लेकिन अंत में भक्तों को भगवान 'मंडल' (दिव्य मंडली/समूह) के माध्यम से बचाएँगे। वहाँ गणपति मंडल कार्य कर रहा है। और छोटे-छोटे मंडल होंगे। और सुनामी, भूकंप, रोग, महामारी और साम्प्रदायिक हिंसा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:12 · 18 जून 2023

प्रश्न 1355 यदि दिव्य धारा में भक्त बच जाएँगे, तो पशु-पक्षियों और अन्य जीवों की रक्षा कौन करेगा?

उत्तर: भगवान पक्षियों, पशुओं और जीवों की उतनी रक्षा करेंगे जितनी आवश्यक है। फिर उन्हें नया जन्म मिलेगा। भगवान उसी दिशा में कार्य करेंगे। क्योंकि भगवान का कालचक्र नौका को संघर्ष से बचाएगा। प्रदोष चक्र, जो चक्रों में से एक है, विनाश चक्र का रक्षक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:14:28 · 18 जून 2023

प्रश्न 1356 बेंगलुरु और उसके आसपास क्या होगा?

उत्तर: समुद्र अपने अधिकार में ले लेगा। और बेंगलुरु में भी समस्याएँ होंगी। और भारत में जिन तीन स्थानों पर पहली मिसाइल गिरेगी, उनमें से एक चेन्नई (मद्रास) है।

► यह उत्तर सुनें · 01:21:13 · 18 जून 2023

प्रश्न 1357 तो क्या पुणे जैसा शहर भी पूरी तरह पानी में डूब जाएगा? क्या ऐसा है?

उत्तर: समुद्र दो दिनों तक रहेगा। दुष्टों का विनाश होगा, और भगवान भक्तों को बचाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:22:42 · 18 जून 2023

प्रश्न 1358 भगवान ही सब कुछ करते हैं; वही देते हैं, और सब उनकी इच्छा का अनुसरण करते हैं। हम भला उनकी क्या सेवा कर सकते हैं? इस विषय में शास्त्र क्या कहते हैं?

उत्तर: शास्त्र कहते हैं कि भक्त भगवान के नाम, उनके वचनों, उनकी पवित्रता और उस सच्चे ज्ञान का प्रचार कर सकते हैं जिसके लिए भगवान के दिव्य दर्शन का समय आ गया है। वे इस संदेश को अपने राज्य और अपने देश में फैला सकते हैं, ताकि उन शुद्ध भक्तों की सहायता हो सके जो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में फँसे हुए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:25:31 · 18 जून 2023

प्रश्न 1359 हम अनजाने में कई गलतियाँ कर बैठते हैं, बचपन में भी। यदि कोई व्यक्ति अनजाने में पाप कर दे, तो उसका उसके लिए क्या परिणाम होता है?

उत्तर: आपको उस पाप से मुक्ति मिल जाएगी। और समय के अंत में आप भगवान के धाम जा सकते हैं, आप भगवान की शरण ले सकते हैं। अभी समय है, इसलिए उनके नाम का जप कीजिए। और अब से कुछ भी गलत मत देखिए, मत सोचिए, मत मानिए। हर जगह केवल भगवान को देखिए। वे ऐसे कर्मों से सबको मुक्ति देंगे। अभी मुक्ति का समय है। इस समय आप जो भी करेंगे, वह संसार के लिए अच्छा है, आपके लिए अच्छा है, और सबके लिए अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:27:21 · 18 जून 2023

प्रश्न 1360 यदि मन अशांत हो, और बाहरी घटनाएँ उसे प्रभावित करके चिंता उत्पन्न करें, तो कोई कैसे स्थिर और चिंतामुक्त हो सकता है?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है: हम मन को स्थिर, शुद्ध और शांत कैसे बनाएँ? केवल आपका ही मन नहीं, सबका मन विचलित है; किसी का मन स्थिर नहीं है। तो, यदि मन विचलित हो, तो आँखें बंद कीजिए और भगवान को अपने सामने चित्रित कीजिए—बांके बिहारी, कृष्ण, राम, जगन्नाथ, या भगवान कल्कि, माधव। भगवान के स्वरूप को अपनी आँखों के सामने देखिए। उनके नाम के जप और अपने हृदय से जुड़ने के द्वारा आपका मन स्थिर हो जाएगा। भगवान ने गीता में अर्जुन को यही समझाया था। विचलित मन को स्थिर करने के लिए बार-बार उनके नाम का जप और कीर्तन करना चाहिए। ऐसा करने से हमारे शरीर की अशुद्धियाँ धुल जाती हैं, और मनुष्य ऋषि के समान हो जाता है। इसीलिए बार-बार नाम का जप करना चाहिए। यदि समय हो तो श्रीमद्भागवत का दसवाँ स्कंध पढ़िए, जो भगवान की दिव्य लीलाओं के विषय में है। तब संसार के सारे दुख मिट जाएँगे। सभी जन्मों का ज्ञान एक ही सच्चे भगवान हैं। वही कीजिए जिससे आपको शांति मिले।

► यह उत्तर सुनें · 01:29:15 · 18 जून 2023

सत्र 79 · प्रश्न 1361–1381

L73 - श्री जगन्नाथ जी और तुलसीदास जी | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 22 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1361 कहा जा रहा है कि 2024-25 में 'मार्केट कर्कट' नाम की एक बीमारी आने वाली है। कृपया इसके बारे में थोड़ा बताइए? इसके लक्षण क्या हैं और लोगों की मृत्यु इससे कैसे होती है?

उत्तर: देखिए, बात ठीक वैसी नहीं है। 'कर्कट' का अर्थ है कैंसर। कैंसर की बीमारी बहुत तेज़ी से फैलेगी, और इससे बहुत से लोगों की मृत्यु होगी।

► यह उत्तर सुनें · 18:22 · 22 जून 2023

प्रश्न 1362 बजरंगबली (भगवान हनुमान) की एक मूर्ति गिरकर पूरी तरह टूट गई। इसका क्या संकेत है?

उत्तर: कुछ शक्तियाँ ऐसी हैं जो धर्म के प्रचार को रोकने के लिए बाधाएँ उत्पन्न करने का प्रयास कर रही हैं, और यह घटना उसी का परिणाम है। भगवान हनुमान की मूर्ति का गिरना अपने आप में कोई समस्या या अपशकुन नहीं है। यह इन विरोधी शक्तियों के सक्रिय होने का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 20:29 · 22 जून 2023

प्रश्न 1363 मेरे सपनों में मुझे अपने परिवार के साथ पुरी में भगवान जगन्नाथ के दर्शन का अवसर मिलता है। जब मैं उनकी मूर्ति के पास पहुँचता हूँ, तो भगवान का मुख खुल जाता है और मैं उसमें प्रवेश कर जाता हूँ। लेकिन जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मेरा परिवार मुझे पुकार रहा होता है, और भगवान मुझे उनके पास वापस भेज देते हैं। इसका क्या कारण है?

उत्तर: यह एक पवित्र अनुभव है और भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद है। यह पूर्वजन्म के गहरे आध्यात्मिक संबंध का संकेत है, जहाँ संभवतः आपने भगवान की दिव्य लीला के दर्शन के लिए तपस्या की थी। इसे एक महान आशीर्वाद मानिए।

► यह उत्तर सुनें · 22:14 · 22 जून 2023

प्रश्न 1364 आपने कहा था कि पाकिस्तान, चीन और तुर्की सहित मुस्लिम देश भारत पर आक्रमण करेंगे, और कुछ समय के लिए भारत का प्रशासन रूस के अधीन आ जाएगा। क्या रूस हमारा साथ देगा या हमारे विरुद्ध रहेगा? दूसरी बात, आपने कहा था कि युग के अंत में कलियुग का कोई चिह्न शेष नहीं रहेगा, और 35 करोड़ लोग बचाए जाएँगे। ये लोग कौन हैं और कैसे बचेंगे?

उत्तर: आपके पहले प्रश्न के संबंध में, रूस भारत का साथ देगा और सहयोग करके मदद करेगा। सैन्य शासन होगा, और भारत के हित के लिए रूस का प्रशासन सहायता के लिए आएगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। आपके दूसरे प्रश्न के लिए, भारत में जो 30-35 करोड़ लोग शेष रहेंगे, वे वही होंगे जिन्हें दिव्य प्राणी बनने के लिए तैयार किया जा रहा है। मैं लोगों से कहता हूँ कि हमारी पवित्र धारा — विश्व सनातन धर्म — से जुड़ें और उसके सभी अच्छे नियमों का पालन करें। जो ऐसा करेंगे, वे बचेंगे और कलियुग से संक्रमण के समय भगवान की ओर से दिव्य शक्तियों के दर्शन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:00 · 22 जून 2023

प्रश्न 1365 मुझे भगवान जगन्नाथ के बारे में एक और सपना आया। वहाँ बहुत भीड़ थी, और मैं खिचड़ी अर्पित करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन लोगों ने मुझे यह कहकर रोक दिया कि मंदिर बंद हो रहा है। जब मैंने ज़ोर दिया, तो लोगों ने मुझे धक्का दिया और मंदिर के कपाट बंद होने लगे। लेकिन उसी हलचल में मेरे हाथ से खिचड़ी उड़कर भीतर भगवान की ओर चली गई, और उनकी ओर से एक स्वर्ण मुद्रा मेरे पास वापस आ गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत शुभ संकेत है। यह आपके परिवार पर भगवान श्री जगन्नाथ की कृपा है, जो पूर्वजन्म के संबंध को दर्शाती है। हमारी आध्यात्मिक धारा से जुड़े सभी लोग दिव्य आत्माएँ हैं जिनका पूर्वजन्म का संबंध है। यह तथ्य कि आपने सपने में भी अर्पण किया और भगवान ने स्वर्ण मुद्रा के रूप में आशीर्वाद वापस भेजा, आप पर उनकी कृपा का बहुत अच्छा संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 30:24 · 22 जून 2023

प्रश्न 1366 वे (मुस्लिम देश) कब आक्रमण करेंगे?

उत्तर: 2025 का काल एक विनाशकारी समय है जो निकट आ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसी समय वे सब एकजुट हो जाएँगे। उनकी बैठकें इस समय चल रही हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:46 · 22 जून 2023

प्रश्न 1367 आपने कहा था कि भारत में केवल 33 करोड़ मनुष्य ही बचेंगे। इससे संबंधित मुझे एक दृश्य दिखा जिसमें मैंने एक राक्षस देखा, पर मुझे भय नहीं लगा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान भविष्य पुराण की भविष्यवाणियों का प्रमाण दे रहे हैं। इसलिए आपको धर्म के कार्य से जुड़ना चाहिए। आपने जो सपना देखा, वह भगवान द्वारा भेजा गया था। संभवतः यह भगवान की कृपा है कि इन घटनाओं के घटित होने से पहले आपके मन से भय दूर हो जाए।

► यह उत्तर सुनें · 36:52 · 22 जून 2023

प्रश्न 1368 क्या धर्मात्माओं की शक्ति दिन-प्रतिदिन घट रही है जबकि बुरी शक्तियों की ताकत बढ़ रही है?

उत्तर: भगवान की और दिव्य, पवित्र लोगों की शक्ति हमेशा बाहर से दिखाई नहीं देती, पर समय के साथ वह स्वयं को सिद्ध कर देती है। समय के साथ उसका प्रमाण स्पष्ट होगा। आपको उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी। यही भविष्य पुराण में लिखा है, और मैंने इसके बारे में कहा है। एक-एक करके भविष्यवाणियाँ सिद्ध हो रही हैं, और आने वाले समय में और भी सिद्ध होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 40:00 · 22 जून 2023

प्रश्न 1369 क्या महाविनाश 2025 और 2032 के बीच होगा?

उत्तर: हाँ, 2025 और 2032 के बीच। 2025 और 2032 के बीच।

► यह उत्तर सुनें · 46:27 · 22 जून 2023

प्रश्न 1370 आपने कहा था कि भक्त 'मंडल' (समूह/मंडली) में एकत्र होंगे, लेकिन नॉर्थ ईस्ट में हमें ऐसा कोई मंडल दिखाई नहीं देता। हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: 'मंडल' सभी भक्तों का एक संगठन है, भक्तों की एक मंडली। कोलकाता से लगे हुए राज्यों को एक मंडल माना जाएगा। मैं आपको प्रवीण चौधरी का संपर्क नंबर दे सकता हूँ; आप उसे लिख लीजिए और उनसे जुड़कर वहाँ व्यवस्था बनाने में मदद कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 48:14 · 22 जून 2023

प्रश्न 1371 विदेश में रह रहे भारतीयों को कब तक भारत लौट आना चाहिए?

उत्तर: उन्हें हमारे देश लौटना ही पड़ेगा। लेकिन जब वे लौटें, तो यह आवश्यक है कि वे सनातन धर्म की धारा से जुड़ें। भारत के 150 करोड़ लोगों में से धर्म की स्थापना के लिए केवल 33 करोड़ ही शेष रहेंगे। बाकी लोगों के विषय में हमारे पास कोई भविष्यवाणी नहीं है। इसलिए देश लौटना और धर्म के मार्ग पर लौटना आवश्यक है। यह समय संभवतः 2025 से आ रहा है। विदेश में रहने वाले सभी भक्त और लोग अपने देश लौटेंगे; इसके अलावा कोई विकल्प नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:03 · 22 जून 2023

प्रश्न 1372 जब केवल कुछ ही लोग बचेंगे, तो क्या विमान, रेल और बस जैसी परिवहन व्यवस्थाएँ बंद हो जाएँगी, या वे चलती रहेंगी?

उत्तर: लोगों की यात्रा के लिए ये तब तक चलेंगी जब तक सरकार रहेगी। जब सरकार नहीं रहेगी, तब ये बंद हो जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 53:30 · 22 जून 2023

प्रश्न 1373 मैं अपने लड्डू गोपाल (बाल कृष्ण) की मूर्ति को स्नान करा रही थी और मुझे एक नकारात्मक अनुभव हुआ। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: इस मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते हैं। लड्डू गोपाल आपको कल्कि अवतार के रूप में दर्शन देंगे, और चूँकि आपको भगवान के दर्शन होने वाले हैं, इसलिए आपकी परीक्षाएँ होंगी। कलियुग का अंधकारमय प्रभाव लोगों को सत्य के मार्ग पर चलने से रोकने का प्रयास करता है। ये कष्ट हमें भी झेलने पड़ते हैं। प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों ने भगवान को पाने के लिए बड़े-बड़े कष्ट सहे। कष्ट आएँगे, लेकिन अंत में आपको भगवान मिलेंगे। कुछ समय बाद हमारे भक्त देवताओं के समान शक्तिशाली हो जाएँगे। यह कष्ट अस्थायी है और बीत जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 55:09 · 22 जून 2023

प्रश्न 1374 यदि सभी देवताओं ने पृथ्वी पर जन्म ले लिया है, तो स्वर्ग में क्या हो रहा है?

उत्तर: देवता पहले ही पृथ्वी पर आ चुके हैं। धर्म की स्थापना के लिए भगवान के अवतार के समय स्वर्ग में कोई देवता नहीं रहते। यदि वे वहाँ होते, तो इतनी प्राकृतिक आपदाएँ और बीमारियाँ क्यों होतीं? वे मानवता की ठीक से देखभाल नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि उन सबने यहाँ जन्म ले लिया है, और वहाँ नियंत्रण करने वाला कोई नहीं है। जैसे भगवान राम के जन्म से पहले और भगवान कृष्ण के जन्म से पहले, सभी देवताओं ने उनकी लीला में सहायता करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया था।

► यह उत्तर सुनें · 57:10 · 22 जून 2023

प्रश्न 1375 मोक्ष की परिभाषा और व्याख्या क्या है?

उत्तर: मोक्ष मुक्ति की परम अवस्था है। जो इसे प्राप्त करते हैं, वे फल की आसक्ति के बिना अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। वे निरंतर भगवान का स्वरूप देखते हैं और भगवान की उपस्थिति में रहते हैं। वे सत्ययुग के पाँच सिद्धांतों के अनुसार जीते हैं: सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री। वे सांसारिक मामलों में उलझते नहीं हैं। ऐसे लोग एक दिव्य देह प्राप्त करते हैं जो नष्ट नहीं होती और वे शाश्वत आनंद की अवस्था में रहते हैं। वही निर्वाण है, वही मोक्ष है। लेकिन अभी के लिए, मोक्ष का विचार छोड़ दीजिए। यह भगवान के अवतार का समय है। आपका कर्तव्य है एक भक्त के रूप में धर्म का आचरण करना और धर्म की स्थापना में सम्मिलित होना।

► यह उत्तर सुनें · 58:57 · 22 जून 2023

प्रश्न 1376 आप कहते हैं कि भगवान में लीन रहो, लेकिन भगवान भी हमें कर्म करने के लिए कहते हैं। जब हम कर्म में लग जाते हैं, तो भगवान पर हमारा ध्यान कम हो सकता है और हम स्वार्थी बन सकते हैं। यह दोहरा खेल लगता है। हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: यह माया की लीला है। इंद्रियाँ व्यक्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करती हैं। लेकिन मेरे सच्चे भक्त माया को तोड़कर मेरे पास लौट आते हैं। आपको सहज फल की अपेक्षा किए बिना, पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्म करते रहना चाहिए। माया आपको भटकाने और विचलित करने का प्रयास करेगी, लेकिन सच्चा भक्त माया के प्रभाव को भेदकर मुझ तक पहुँचता है। यह एक प्रक्रिया है। जैसे साँप के भीतर की मणि, जो चारों ओर विष होने पर भी अपना प्रकाश बिखेरती है, वैसे ही भक्त की पवित्रता सांसारिक चुनौतियों के बीच चमकेगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:41 · 22 जून 2023

प्रश्न 1377 कर्म के संदर्भ में, यदि किसी का काम मांसाहारी भोजन की दुकान चलाना है, तो क्या वह कर्म सही माना जाएगा?

उत्तर: मारना और खाना शास्त्रीय मार्ग का सबसे बड़ा उल्लंघन है। कोई भी शास्त्र भोजन के लिए पशुओं को मारने, या मांस, मछली और नशीले पदार्थों के सेवन की अनुमति नहीं देता। ऐसा करते हुए धर्म के मार्ग पर रहना संभव नहीं है। जो लोग यह कर रहे हैं, उनके पास अभी भी समय है कि वे इसे छोड़कर धर्म के मार्ग पर आ जाएँ। अभी यह परिवर्तन करना ही एक बुद्धिमान और पवित्र मनुष्य की पहचान है।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:30 · 22 जून 2023

प्रश्न 1378 क्या 'पान' खाना ठीक है या नहीं?

उत्तर: आप मीठा पान खा सकते हैं। मसाला, गुटखा और तंबाकू वाले पान से आपको बचना चाहिए। देवताओं को भी, जैसे भगवान कृष्ण और भगवान जगन्नाथ को, पान अर्पित किया जाता है, लेकिन वह सदैव मीठा पान होता है। तो यदि आप पान खाना चाहते हैं, तो मीठा पान खाइए।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:21 · 22 जून 2023

प्रश्न 1379 अलग-अलग चैनल भविष्य की घटनाओं के लिए अलग-अलग तारीखें बताते हैं। इन तारीखों में कितनी सच्चाई है?

उत्तर: कार्य जैसे होना चाहिए, वैसे ही आगे बढ़ रहा है। इन सब अलग-अलग चैनलों को सुनने से लोगों में भ्रम पैदा हो सकता है। धर्म की स्थापना आरंभ हो चुकी है और 2032 तक चलती रहेगी। विनाश का चरण 2025 से आरंभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:54 · 22 जून 2023

प्रश्न 1380 आपने संध्या की प्रार्थना के लिए तीन समय बताए हैं, लेकिन मेरा कार्यालय शाम 7 बजे तक रहता है, इसलिए मैं उस समय नहीं कर सकता। मैं क्या करूँ?

उत्तर: यदि आप संध्या के समय नहीं कर सकते, तो बाद में 5 मिनट का समय निकालिए। उदाहरण के लिए, रात 11:45 और आधी रात के बीच, 5 मिनट निकालकर अपना जप कीजिए। इससे काम चल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:16:24 · 22 जून 2023

प्रश्न 1381 मैं आपके बताए मार्ग पर चल रहा हूँ। क्या मेरी पुरानी बुरी आदतें, बीमारियाँ और उनके दुष्प्रभाव ठीक हो जाएँगे? इसमें कितना समय लग सकता है?

उत्तर: आपकी सारी पुरानी आदतें समाप्त हो जाएँगी। आप दिव्य मानव बन जाएँगे। तीन महीने के भीतर आपको पूर्ण प्राप्ति का अनुभव होगा। प्रतिदिन प्रार्थना कीजिए और निरंतर माधव का नाम जपिए। इससे आपको शांति मिलेगी, रात में उत्तम नींद आएगी, और आपका संपूर्ण शारीरिक तंत्र स्वस्थ हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:19:01 · 22 जून 2023

सत्र 80 · प्रश्न 1382–1391

L74 - श्री जगन्नाथ क्षेत्र से कलियुग अंत का प्रमाण | पं. काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 25 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1382 मैंने पहले भी पूछा है, मेरे जीवन में एक छोटी-सी रिक्तता है जो अब तक भरी नहीं है। वह परम अभिलाषा क्या है?

उत्तर: यही वह है जिसे 'अनंत युग' कहा जाता है, और इस युग में भगवान अपने भक्तों पर शासन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:08 · 25 जून 2023

प्रश्न 1383 और उनका स्थान कहाँ है?

उत्तर: सुनिए माता जी, इन बातों के विषय में... मेरे भक्त... आपको भी दर्शन होते हैं। यह भगवान की कृपा है, शायद हम पर। धर्म की धारा में रहकर सभी हो जाते हैं... सुधर्म महासंघ और भगवान कल्कि की एक ही संस्था है, जहाँ भक्त और भगवान के मिलन का समय आ रहा है। आप सबके लिए पवित्र धारा में रहने का समय आ गया है। व्यक्ति के रूप में रहिए; आप घर पर बैठे-बैठे केवल इच्छा करने मात्र से भी दर्शन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 32:38 · 25 जून 2023

प्रश्न 1384 हम जो प्रार्थनाएँ करते हैं, जैसे मैं सुबह-शाम जो पूजा करता हूँ... क्या वह एकांत में बैठकर कहीं भी की जा सकती है?

उत्तर: वह भगवान तक पहुँचती है, और भक्तों को आशीर्वाद मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 34:46 · 25 जून 2023

प्रश्न 1385 मैंने कुछ मित्रों को इन मान्यताओं के बारे में बताया, पर वे मेरी बात पर विश्वास नहीं करते। मुझे लगता है कि अब किसी को कुछ बताने या प्रचार करने की आवश्यकता नहीं है। क्या यह उचित है कि मैं बस अपनी साधना करता रहूँ और दूसरों को समझाने का प्रयास न करूँ, वे चाहे मानें या न मानें?

उत्तर: वे भी आपका सम्मान करेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक भक्त के लिए, जो भगवान का सच्चा भक्त है, उसके लिए धर्म की यह धारा उसके भीतर गूँजती है।

► यह उत्तर सुनें · 35:58 · 25 जून 2023

प्रश्न 1386 मेरे परिवार में, मैं और मेरी माँ बहुत श्रद्धा से पूजा करते हैं, दूसरों की तुलना में अधिक, जो इतने नियमित नहीं हैं। क्या मेरी पूजा से परिवार के सभी लोगों को लाभ होगा? क्या उन्हें भी इसका फल प्राप्त होगा?

उत्तर: एक बात अवश्य हो सकती है: आपके सत्संग से वे बदलेंगे और सनातन धर्म के अनुयायी भी बन जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 38:09 · 25 जून 2023

प्रश्न 1387 क्या वह अधिक खतरनाक होगा, या जब शनि मेष राशि में प्रवेश करेगा तब अधिक खतरनाक होगा?

उत्तर: नहीं बाबा। 29 मार्च 2025 को, जब शनि मेष राशि में जाएगा, उस दिन से सबसे विनाशकारी समय आ रहा है। यह लगभग तीन वर्षों तक रहेगा। अमावस्या, संक्रांति, सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण—सब एक ही पक्ष में... यह वर्ष-दर-वर्ष बढ़ता जाएगा, जो शास्त्रीय प्रवाह में एक विसंगति है। यह समय विनाश का, प्रलय के तांडव का संकेत देता है, जिसका प्रचार मैं आज करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:14 · 25 जून 2023

प्रश्न 1388 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मैं तिरुपति बालाजी मंदिर में था। मैंने देखा कि मूर्ति गर्भगृह के बाहर है और मुझे आश्चर्य हुआ कि लोग एक खाली कक्ष में भीड़ क्यों लगा रहे हैं। फिर मैंने पास में विस्फोट होते देखे, और लोग उनमें उड़ रहे थे। इस स्वप्न का क्या अर्थ था?

उत्तर: भगवान, महावीर प्रभु, प्रकट हो चुके हैं। और जैसे बद्रीनाथ धाम और जगन्नाथ धाम से, वैसे ही तिरुपति बालाजी धाम भक्तों को संकेत दे रहा है। समय आ रहा है, भक्त उसकी ओर बढ़ रहे हैं, और इस समय भक्त आकाश में उड़ सकेंगे—यह भी आपने देखा। साथ ही, भगवान यह सिद्ध कर रहे हैं कि 'हम सब मंदिरों को छोड़ चुके हैं और धर्म की स्थापना के लिए अवतार ले चुके हैं।' यही इन सबका अर्थ है।

► यह उत्तर सुनें · 40:21 · 25 जून 2023

प्रश्न 1389 मैं बिहार के भविष्य के बारे में जानना चाहता हूँ और वहाँ क्या होने वाला है, क्योंकि भविष्यवाणियों में इसका उल्लेख नहीं दिखता। मेरे गाँव में क्या होगा, और हम अपनी स्थिति कैसे सुधार सकते हैं और अपने स्थान को सुरक्षित रख सकते हैं?

उत्तर: मैं बिहार की बात करता हूँ... और साथ ही, सभी... अपने पिता के सत्कर्मों को जारी रखिए, पंचायत को अच्छा बनाइए, और लोगों की सहायता कीजिए। इस संसार में, जो 25 वर्षों तक सेवा करेगा, उसका भला होगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:20 · 25 जून 2023

प्रश्न 1390 मैं कोलकाता में रहता हूँ। क्या आप इसके भविष्य के बारे में कुछ बता सकते हैं? क्या इसके विषय में कोई भविष्यवाणी लिखी गई है?

उत्तर: एक बाज़ार चल रहा है जिसमें लोगों को बचाना कठिन होगा... लोग... फिर संसार...

► यह उत्तर सुनें · 44:25 · 25 जून 2023

प्रश्न 1391 मुझे एक झटका सा महसूस हुआ, जैसे कोई कंपन हो, और मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था। वह अनुभूति क्या थी?

उत्तर: देखिए, भगवान के भक्त के लिए, जब भगवान का नाम लिया जाता है, तो उनके शरीर का रोम-रोम ऊर्जा से भर जाता है, और ऐसा लगता है जैसे बिजली का करंट दौड़ गया हो। फिर जब वे उसका स्मरण करते हैं, तो उनका शरीर कांपने लगता है।

► यह उत्तर सुनें · 48:08 · 25 जून 2023

सत्र 81 · प्रश्न 1392–1398

L75 - कल्कि भगवान का स्वरूप कैसा होगा ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 30 जून 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1392 आपने कहा था कि 'त्रिसंध्या' (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) करते समय हमें चतुर्भुज रूप का ध्यान करना चाहिए। तो वह चतुर्भुज रूप हमारी आँखों के सामने कैसे प्रकट होगा?

उत्तर: क्या आपने बांके बिहारी के दर्शन किए हैं? वे विग्रह... उसी रूप को अपने मन में धारण कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:21 · 30 जून 2023

प्रश्न 1393 यदि आपकी अनुमति हो, तो क्या मैं अपने कुछ विचार रख सकता हूँ? (फिर उपयोगकर्ता कहता है: मैं लोगों से कहना चाहता हूँ कि भगवान से मृत्यु के भय से नहीं, बल्कि प्रेम से जुड़ें। मृत्यु तो निश्चित है, और स्वयं भगवान के द्वारा मुक्ति मिलना एक वरदान है। हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए और असहाय पशुओं, विशेषकर हमारी गौ माताओं की सेवा करनी चाहिए।)

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। गौ माता की रक्षा करके पृथ्वी की रक्षा की जा सकती है। यही मानव सभ्यता की नींव है। सत्य युग में गौ माता को सबसे बड़ी पूजा और सम्मान प्राप्त होगा। कलियुग के अंत के लक्षण गायों के कष्टों में दिखाई देते हैं। जब भगवान अवतार लेते हैं, तो वे गौ, ब्राह्मण और भक्तों के कल्याण के लिए ही अवतार लेते हैं। आप जो कह रहे हैं, वह उत्तम है। प्रेम और निष्काम भक्ति के साथ भगवान की शरण में जाने से उनकी कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। जिसे भगवान से प्रेम है, वह कभी मृत्यु से नहीं डरेगा। यद्यपि कुछ लोग मृत्यु के भय से जुड़ रहे हैं, जैसे महाभारत युद्ध के समय कई लोग जुड़े थे, परंतु जो निष्काम हैं, वे भगवान के अपने भक्त हैं। यही हम सबका मार्ग होना चाहिए। भगवान हमारे हैं और सदा हमारे ही रहेंगे। यदि यह भाव हमारे मन में है, तो हम मृत्यु के भय से दूर रहेंगे। इसलिए डरिए मत; प्रेम और भक्ति के साथ भगवान की आराधना कीजिए। जब कोई प्रेम से भगवान के पास आता है, तो वे उसे बहुत शीघ्र अपने पास बुला लेते हैं। बहुत अच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 43:25 · 30 जून 2023

प्रश्न 1394 मेरे मन में यह विचार आया है, और मैं इसे होते हुए देख भी रहा हूँ: पिछले युगों में हम भगवान को खोजा करते थे, लेकिन इस कलियुग में ऐसा लगता है कि स्वयं भगवान अपने भक्तों को खोज रहे हैं। वे जहाँ कहीं भी हों, भगवान उन्हें ढूँढ़ लेते हैं और स्वतः ही अपने से जोड़ लेते हैं। वे उन्हें ऐसा मनमोहक रूप दिखाते हैं कि संसार के सारे रंग उसके आगे फीके पड़ जाते हैं। क्या यही हो रहा है?

उत्तर: जय जगन्नाथ। आपने जो कहा है, वह बिल्कुल सही है। ये धर्म की, शास्त्र-परंपरा की और सर्वोच्च मार्ग की बातें हैं। हम सबको इसी विचारधारा के अनुसार कार्य करना चाहिए। और ऐसे समय में, आप सब जो सत्संग में हैं, इन विचारों को सुनें और विवेक के साथ आत्मसात करें। यह हमारे लिए अच्छा होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:29 · 30 जून 2023

प्रश्न 1395 मैं आध्यात्मिक मार्ग नहीं छोड़ रहा हूँ, लेकिन हमारे परिवार की एक नॉन-वेज की दुकान है। मेरे पिताजी अकेले संभाल नहीं पाते और मुझे मदद के लिए बुलाते हैं। क्या मेरा वहाँ रहना ठीक है? क्या यह उचित है?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार मैं आपसे यह कहूँगा: यदि आपके पास समय है और भगवान की कृपा है, और आप बदलाव चाहते हैं, तो बेटा, कोई दूसरा काम या व्यवसाय ढूँढ़िए। भगवान आपका और आपके परिवार का ध्यान रखेंगे। अपने आप को और अपने पिताजी को इस व्यवसाय से दूर करने का प्रयास कीजिए। हम जितने जीवों को मारते हैं, हमें उतने ही जन्म लेने पड़ते हैं। रोज़ का हिसाब भगवान के पास जाता है। हमें किसी जीव को मारने का अधिकार नहीं है। जिस प्राणी को हम मारते हैं, उसका हृदय भी हमारी ही तरह धड़कता है। यदि ब्रह्म सभी में है, तो हत्या करना सबसे बड़ा पाप है। समय आने पर नया व्यवसाय ढूँढ़िए; भगवान आपकी सहायता करेंगे। यह अच्छी बात है कि इतनी कम उम्र में आपके भीतर ऐसे संस्कार हैं। अपने पिताजी से कहिए, 'बाबा, यह धर्म की बात है।' मैं गरुड़ पुराण से 'कर्म और उसका फल' विषय पर एक सत्र करूँगा। अपने पिताजी को वह सुनवाइए। यदि वे सहमत हों, तो मुझे उनसे बात करने दीजिए। मैं अपना समय देने को तैयार हूँ। अच्छे कर्म आयु बढ़ाते हैं, बुरे कर्म आयु घटाते हैं। अपने परिवार से प्रेम और करुणा के साथ बात कीजिए और दूसरी आजीविका अपनाने का प्रयास कीजिए। भगवान सहायता करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:56 · 30 जून 2023

प्रश्न 1396 मैं एक साल से भागवत पढ़ रहा हूँ, और इसे पढ़ने में मुझे बहुत आनंद मिलता है। आपने कहा था कि रोज़ एक अध्याय पढ़ना आवश्यक है। तो क्या मैं एक अध्याय के बजाय रोज़ दो या तीन अध्याय पढ़ सकता हूँ?

उत्तर: बेटा, आप निरंतर जितने चाहें उतने अध्याय पढ़ सकते हैं, क्योंकि वही हमारा सबसे बड़ा सुख और धन है। वही सबसे बड़ी संपत्ति है।

► यह उत्तर सुनें · 56:21 · 30 जून 2023

प्रश्न 1397 मुझे एक बहुत डरावना सपना आया। मैंने देखा कि मैं गंगा नदी के पास अपनी दादी के घर पर हूँ। अचानक बाढ़ आ गई, और पानी का स्तर बढ़ता ही गया। मेरा पूरा परिवार डूब गया, और केवल मैं ही दीवारों पर चढ़कर बचा। अंत में, मैंने तारों और नक्षत्रों को पानी में तैरते हुए देखा। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: जो भक्ति मार्ग और भविष्यवाणियों का अनुसरण करते हैं... भगवान इस समय जन्म लेने वाले भक्तों को ऐसे अनुभव कराते हैं। वे उन्हें सचेत करते हैं और बताते हैं कि आगे क्या होने वाला है। ऐसी ही भक्ति में बने रहिए। जो कुछ भी होने वाला है, भक्ति मार्ग पर दृढ़ता से टिके रहने वाले सभी भक्तों को उसका आभास करा दिया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 57:42 · 30 जून 2023

प्रश्न 1398 जब संघर्ष आरंभ होगा, तो क्या सभी मंदिर नष्ट हो जाएँगे?

उत्तर: संघर्ष के समय, जिस घर में देवता नहीं होंगे, वह घर भी नहीं बच पाएगा। जहाँ तक मंदिरों की बात है, नए मंदिर बनाए जाएँगे। युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले इस विनाश से बहुत से मंदिर प्रभावित होंगे, लेकिन उनका पुनर्निर्माण होगा। जैसे, भविष्य पुराण में लिखा है कि जगन्नाथ मंदिर का पुनरुद्धार होगा। इसी प्रकार, भगवान कल्कि सभी मंदिरों का उद्धार और पुनरुद्धार करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:10 · 30 जून 2023

सत्र 82 · प्रश्न 1399–1417

L80 - सत्ययुग का ध्वज पंचरंगी ही क्यों ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 9 जुलाई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1399 मुझे माँ काली का बहुत भयानक स्वप्न आया और मैं पूरी तरह डरकर उठा। दो घंटे बाद मुझे फोन आया कि मेरे घर बेटी का जन्म हुआ है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, मैं कुछ समय से यह कहता आ रहा हूँ: पृथ्वी पर पवित्र आत्माएँ जन्म ले रही हैं। और ऐसी आत्माएँ मनुष्य रूप में जन्म ले रही हैं, लेकिन उनकी विशेष क्षमताओं के बारे में हमें जानकारी नहीं है। इसीलिए आज आप भविष्यवाणियाँ सुन रहे हैं, क्योंकि भविष्य में माँ कालिका का धर्म स्थापित होगा। हो सकता है कि माँ का कोई भक्त, या उनकी सभा का कोई सदस्य, या उनका कोई अपना पृथ्वी पर जन्म ले चुका हो। और यदि आपके साथ ऐसा कुछ हुआ है, तो माँ कालिका के जो दर्शन आपको हुए, वह संघर्ष का संकेत है। लेकिन जितने भी देवी-देवता आते हैं, वे सब भगवान कल्कि से मिलने आते हैं, और चंद्र स्वभाव के होने के कारण वे अपनी 'कला' (दिव्य शक्ति) प्राप्त करेंगे। अभी हम किसी को कुछ विशेष नहीं बता सकते। भगवान शंकर और परमेश्वर उन्हें शक्ति प्रदान करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 04:58 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1400 पंडित जी, यह जो ध्वजा भेजी गई है, क्या भक्त अभी इसे लगा सकते हैं, या आगे चलकर कोई समय आएगा जब वे इसे लगा पाएंगे?

उत्तर: जो भक्त ऑनलाइन सत्संग में आते हैं, वे इसे अपने घरों में लगा सकते हैं, लेकिन वह घर पूर्ण रूप से शाकाहारी होना चाहिए। जिस घर में मांस, मछली या कोई भी नशीला पदार्थ आता है, वहाँ उस ध्वजा को लगाने से कोई लाभ नहीं होगा। लेकिन जो घर पूर्ण रूप से शाकाहारी है, अर्थात् परिवार के सभी सदस्य शाकाहारी हैं, और यही सबसे महत्वपूर्ण बात है, उन लोगों के लिए कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 07:11 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1401 जब वह समय आएगा और तकनीक काम करना बंद कर देगी, तब हम संपर्क कैसे करेंगे?

उत्तर: देखिए, वर्तमान युग कलियुग है, इसलिए हमारे लिए इंटरनेट, फोन, सब कुछ आवश्यक है। लेकिन जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, जो लोग मानवता और भक्ति की धारा में रहेंगे—जिस धारा की मैं बात कर रहा हूँ—और जो 'मंडल' से जुड़े रहेंगे, मंडल को सारी सूचनाएँ मिलती रहेंगी। भक्तों को सारी सूचनाएँ मिल जाएँगी। हम ऐसी व्यवस्था करेंगे कि एक अलग ग्रुप में आपको सूचित करेंगे। इसीलिए मंडल बनाया जा रहा है। समय आने पर मंडल का नियंत्रण भी भगवान ही करेंगे, इसलिए कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 08:49 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1402 मैं आने वाले समय के लिए की जाने वाली साधना के बारे में जानना चाहता था। मैं सुबह यह नहीं कर पाता। क्या मैं इसके बदले दोपहर या शाम को दो बार कर सकता हूँ?

उत्तर: देखिए बेटा, उस समय हम पूजा करते हैं, और सम्पूर्ण सृष्टि भी बँधी होती है। इस समय देवताओं को बाँधकर और भगवान की पूजा करके, उनके नाम का जप करके, और धारा में जैसा विधान है वैसे स्तुति-गान करके, हमारे परिवार पर और आप पर भी कल्याणकारी आशीर्वाद आता है। इसलिए सुबह करने का प्रयास कीजिए; हो जाएगा। क्योंकि भगवान ही करा रहे हैं और उनकी कृपा है, इसीलिए आप दो बार कर पा रहे हैं। भगवान की कृपा से आप सही समय पर भी कर पाएँगे। प्रयास करते रहिए, बहुत लाभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:36 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1403 इस समय पृथ्वी पर जो भगवान श्री माधव हैं, उनका स्वरूप कैसा है? कृपया उनके स्वरूप का वर्णन कीजिए ताकि ध्यान करते समय हम वह छवि अपने मन में धारण कर सकें।

उत्तर: भविष्य पुराण में भगवान कल्कि के स्वरूप के बारे में लिखा है। वे एक साधारण मनुष्य की तरह आएँगे, दो हाथ और दो पैर के साथ, बिल्कुल एक आम आदमी की तरह। यह भी लिखा है कि भगवान कल्कि अपनी इच्छा मात्र से, एक सेकंड में, एक ही स्थान से सातों द्वीपों को चूर-चूर कर सकते हैं। उन्हें कहीं जाना नहीं पड़ेगा। लोग सोचते हैं कि भगवान कल्कि को जाकर युद्ध करना पड़ेगा, लेकिन उनमें इतनी शक्ति है कि केवल अपनी इच्छा से वे सप्त द्वीपों को वैसे ही चूर-चूर कर सकते हैं जैसे कोई मिट्टी के घड़े को तोड़ देता है। वे यह एक ही सेकंड में कर सकते हैं। और भगवान कल्कि की आँखों से, उनकी इच्छा से, करोड़ों सूर्यों का प्रकाश निकल सकता है। वे सम्पूर्ण ब्रह्मांड को जलाकर भस्म कर सकते हैं और सभी परमाणु कणों को भी नष्ट कर सकते हैं। उनके पास ब्रह्मांड की शक्ति है।

► यह उत्तर सुनें · 17:46 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1404 मेरा प्रश्न अयोध्या मंडल ग्रुप में जुड़ने को लेकर था; मैंने व्हाट्सएप नंबर पर संदेश भेजा है। साथ ही मैं यह पूछना चाहता था कि श्री माधव के बारे में और अधिक जानने के लिए मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से कब मिल सकता हूँ?

उत्तर: मैं भागवत कथा के लिए उल्हासनगर, मुंबई जा रहा हूँ और वहीं हमारा प्रचार होगा। यह 15 अगस्त से 22 अगस्त तक है। यदि आप आ सकें बेटा, तो आ जाइए। वहाँ बात कर सकते हैं; वहीं मुलाकात होगी। अक्टूबर में पंजाब में भी एक कार्यक्रम है।

► यह उत्तर सुनें · 20:40 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1405 मेरे माता-पिता और मेरे स्वभाव में बहुत अंतर है, जैसे देवता और असुर साथ रह रहे हों। वे बड़े हैं इसलिए मुझे उनकी देखभाल करनी पड़ती है, लेकिन टकराव होता है। ऐसी स्थिति में क्या करना उचित है? सत्य क्या है? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: मैं समझ गया। देखिए, हमारे माता-पिता हमारे देवता हैं। यदि वे कुछ करते हैं, या मांस-मछली खाते हैं, तो भी यह हमारा कर्तव्य और उत्तरदायित्व है। हमारा धर्म है कि हम अपने माता-पिता के साथ समय बिताएँ और उनकी सेवा करें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे सहमत नहीं हैं या मांसाहार करते हैं। उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है; उसमें हमारे लिए कोई पाप नहीं है। बस उनके लिए वह लाकर मत दीजिए और न ही उनके लिए पकाइए। यह मेरा नियम है। यदि वे खाते हैं, तो वह उनका कर्म है। उन्हें बाध्य करना या उन्हें छोड़ देना हमारे अधिकार में नहीं है। हमारा परिवार अपने माता-पिता के साथ आनंदपूर्वक रहे। यदि कोई मांस-मछली खाता है, तो उसमें हमारा कोई भाग नहीं है; वे अपने कर्मों का फल स्वयं भोगेंगे। एक और बात, इस संसार में कोई भी बुरा नहीं है। यदि आप अपने माता-पिता को भगवान की लीलाएँ और श्रीमद्भागवत सुनाएँ, तो शायद, मेरी राय में, वे भी कहेंगे, 'हमें भी मांस-मछली नहीं खाना।' और एक बात और बताता हूँ: परिवार में जो नहीं छोड़ते, उन्हें गरुड़ पुराण पढ़कर सुनाइए। उसे सुनकर हमारे परिवार के जो लोग मांसाहार करते हैं, वे भी उसे छोड़ देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 22:56 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1406 मैं मांसाहार करती थी क्योंकि मुझे पता ही नहीं था कि यह पाप है। मेरे पिछले कर्मों का क्या होगा?

उत्तर: नहीं माता जी, मैं आपको बताता हूँ। रामचरितमानस में लिखा है कि जो कोई भी भगवान की शरण में आता है... देखिए माता जी, आपको ज्ञान ही नहीं था कि पाप क्या है, धर्म क्या है, अधर्म क्या है, क्या खाना है और क्या नहीं खाना है। जिस क्षण से मैंने आपको बताया, यदि आप इसे छोड़ देती हैं, तो भगवान आपके सारे पिछले कर्मों को क्षमा कर देंगे। सभी पापों का फल तो मिलता है, लेकिन आपको पता नहीं था; किसी ने आपको बताया ही नहीं। अब से बदल जाने पर भगवान सारे पिछले कर्म क्षमा कर देंगे। क्योंकि जब सद्ज्ञान का प्रकाश आता है, जब सत्संग होता है, तो विभीषण जैसा राक्षस भी, जो राक्षस था, भगवान राम की शरण में जाकर देवता और अमर हो गया। आप सब भी भगवान कल्कि की शरण में जाकर दिव्य बन जाएँगे। अभी समय है। इसलिए, पिछले कर्मों को भूल जाइए। अब से जैसा मैं कहता हूँ वैसा कीजिए, और आपके सारे पाप धुल जाएँगे। आपका जीवन सार्थक हो जाएगा, और यह मनुष्य जीवन अपने सर्वोच्च मूल्य को प्राप्त कर लेगा। ठीक है माता जी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:26 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1407 भगवान कल्कि की उपस्थिति सार्वजनिक रूप से क्यों ज्ञात नहीं है? वे गुप्त रूप से कार्य क्यों कर रहे हैं?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ और फिर वे छिपकर श्री वृंदावन में रहने चले गए। कुछ लोगों को थोड़ी जानकारी थी, कुछ को बिल्कुल नहीं थी। भगवान अपनी लीलाएँ इसी प्रकार करते हैं, और जब वे गुप्त रूप से कार्य करते हैं, तब शायद उनके श्रेष्ठतम और महानतम भक्तों को इसका ज्ञान होता है। जैसे, ग्वालों ने देखा कि उन्होंने बड़े-बड़े राक्षसों का संहार किया, फिर भी यह देखकर भी वे उनके साथ खेलते थे और अपना जूठा भोजन तक उन्हें खिलाते थे, यह पूरी तरह न समझते हुए कि वे स्वयं भगवान हैं। और पूरे विश्व में विनाश चल रहा है, भक्तों को बचाने का कार्य चल रहा है, भक्तों का विकास भी हो रहा है—सब कुछ हो रहा है। सत्य भी प्रकट हो रहा है। पुण्यात्मा भक्त इसे अपने हृदय में रखते हैं, जैसे आप सब आए हैं और इस विषय पर बात कर रहे हैं। भगवान कल्कि की लीला बाल्य लीला होगी, परंतु अंत में भगवान कल्कि अपनी लीला प्रकट रूप से करेंगे, अर्थात् वे सबके साथ मिलकर एक सुंदर राम राज्य की स्थापना का कार्य करेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 28:35 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1408 मैं एक विद्यार्थी हूँ और NEET परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। आने वाले समय को देखते हुए कृपया बताइए, क्या मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए, और इस समय मुझे और क्या करना चाहिए?

उत्तर: मैं आपको इस बारे में बताऊँगा। यदि मैं कहूँ कि विनाश होगा, तो आप पूछ सकते हैं, 'फिर मैं अपना कर्म क्यों करूँ?' परंतु देखिए, माताजी, हर व्यक्ति, हर सूर्य, हर देवता, हर चंद्रमा, पृथ्वी का हर तत्त्व अपना कर्म कर रहा है। आपका सबसे बड़ा कर्म है NEET की पढ़ाई करना। फिलहाल, आपकी पढ़ाई और आपका काम, जीवन में जो कुछ भी चल रहा है, वह आपको करते रहना चाहिए। और उसके साथ-साथ, अपने शरीर की रक्षा के लिए और अपने मनुष्य जन्म को सार्थक बनाने के लिए आपको धर्म और धारा (मार्ग) का भी पालन करना चाहिए। तो दोनों ही कार्य आवश्यक हैं। विनाश का कार्य चलता रहेगा, माताजी, पृथ्वी रुकेगी नहीं। पढ़ाई महत्वपूर्ण है। जब वह समय आएगा, तब हम उसे स्वीकार करेंगे। आपका मानसिक तत्त्व, अर्थात् आपकी स्मरण शक्ति, बहुत अच्छी होगी, और भगवान की कृपा से आप अच्छा, धर्ममय कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:20 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1409 मैं इंटरनेट सप्लाई का व्यवसाय चलाता हूँ। क्या मुझे यह काम जारी रखना चाहिए, या सब कुछ छोड़कर हरिद्वार चला जाऊँ? यह विचार अक्सर मेरे मन में आता है।

उत्तर: आप जो व्यवसाय चला रहे हैं वह अच्छा है, बेटा। उसे करते रहिए; फिलहाल यह चलेगा। देखिए, जब समय आएगा, तब देखेंगे कि क्या होता है। अभी तो आनंद से करिए। जब समय आएगा... देखिए, यदि विश्व की 70% जनसंख्या समाप्त हो जाएगी, उस समय हमें सोचना पड़ेगा। फिलहाल सब ठीक चल रहा है। अपने शरीर की रक्षा के लिए और धर्म के प्रकाश के लिए मैं त्रिसंध्या धारा (दिन में तीन बार की साधना) बताता हूँ। मैं यह मार्ग इसलिए बताता हूँ ताकि कोई रोग न आए। परंतु जब वह समय आएगा, तब हम उस समय के अनुसार कार्य करेंगे। अभी जो काम आप कर रहे हैं, उससे आपका परिवार चलता है, इसलिए उसे करते रहिए। जो आवश्यक होगा वह हम समय आने पर करेंगे। परंतु हम कर तभी पाएँगे जब हमारा शरीर रहेगा, है न? तो शरीर के लिए वह मार्ग अपनाइए जो मैंने आपको बताया है। और उसके साथ-साथ भगवान की शरण में रहिए और अपना व्यवसाय भी जारी रखिए। यह बहुत अच्छा है। समय के साथ हम बदलेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 35:04 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1410 हम हाल ही में इस मार्ग से जुड़े हैं और पूजा आरंभ की है, परंतु हमें लगता है कि हमने पहले कभी भगवान की ठीक से पूजा नहीं की। अब आरंभ करके, क्या हम सचमुच भगवान के भक्त बन सकते हैं, या बहुत देर हो चुकी है?

उत्तर: देखिए, जब आपका समय आया, तब भगवान ने आपको बुलाया और इस धारा से जोड़ा, और वे आपको मार्ग के बारे में बता रहे हैं। यह भगवान की कृपा है। और यदि आपको यह कृपा, यह अमृत मिल रहा है, तो कोई समस्या नहीं है। आनंद से मार्ग का पालन कीजिए और भगवान की शरण में रहिए। बीते हुए को भूल जाइए। अब से इसका पालन कीजिए। यह आपके लिए और संसार के लिए अच्छा है, और आप इस मनुष्य जन्म का उद्देश्य प्राप्त कर लेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 38:13 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1411 मैं अपने छोटे बच्चे का इस आध्यात्मिक मार्ग पर मार्गदर्शन कैसे कर सकती हूँ?

उत्तर: देखिए, माताजी, बच्चा आपको छोटा लग सकता है, परंतु उस शरीर के भीतर की आत्मा लाखों वर्ष पुरानी है। उसका कोई बंधन नहीं है; वह न छोटी है न बड़ी। पर बात यह है कि यह हमारे परिवार के 'संस्कार' की बात है। यदि पिता और माता धर्म की ओर प्रवृत्त हैं, तो हमारे परिवार के बच्चे भी निश्चित रूप से धर्म की ओर प्रवृत्त होंगे। आपको यह करना चाहिए कि... बच्चे पर जबरदस्ती मत कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 40:29 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1412 क्या इस मार्ग पर प्याज और लहसुन खाना उचित है?

उत्तर: कलियुग का संघर्ष चला गया है, और अंत तक प्याज और लहसुन खाने में कोई समस्या नहीं है। परंतु लोग चाहें तो आज ही इन्हें छोड़ सकते हैं। कृपया इस विषय में पढ़िए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 47:41 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1413 क्या सभी भक्तों के नाम ज्ञात हैं या कहीं दर्ज हैं?

उत्तर: सभी भक्तों के नाम वहाँ हैं। और मेरा यूट्यूब वीडियो, यह जिस तक भी पहुँचे... एक ग्रंथ है जिसका नाम पद्म कल्प ग्रंथ है, जो ब्रह्मा जी के पास, उनके अधिकार में है। ब्रह्मा जी इस ग्रंथ को पढ़ते हैं, और वे हर भक्त का नाम, उसका जन्मस्थान, और पिछले जन्मों में उसके नाम क्या थे, यह सब प्रकट करेंगे। यह सब सुदामा सभा में प्रकट किया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:13 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1414 हम इस समय किराए पर रह रहे हैं और कोई संपत्ति खरीदना चाहते हैं। लेकिन आपने जिन कठिन समय के आने की बात कही है, उसे देखते हुए क्या हमें अभी कोई जगह खरीदनी चाहिए या किराए पर ही रहना चाहिए?

उत्तर: देखिए बेटा, आपकी भावना बहुत अच्छी है। आप ज़मीन खरीद सकते हैं, लेकिन दो साल बाद ज़मीन की कीमत घटने लगेगी। अगर आप खरीदना चाहते हैं तो खरीद सकते हैं, पर 2026 के बाद कीमतें गिरती ही जाएँगी। और अगर आप अपार्टमेंट में रहना चाहते हैं, तो पहली या दूसरी मंज़िल पर रहिए, बहुत ऊपर नहीं। क्योंकि इस समय में, जैसा कि भविष्य पुराण में लिखा है, बड़ी-बड़ी इमारतें ज़मीन में समा जाएँगी। ऐसे समय में भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे। वे उन्हें सुरक्षित रखने के लिए पहले छोटे-छोटे संकेत देंगे। यदि फिर भी वे वहीं बने रहते हैं, तो भगवान एक बार, दो बार, तीन बार चेतावनी देंगे, पर उसके बाद नहीं। तो अगर आप फ्लैट खरीदने की सोच रहे हैं, तो मेरी समझ में, समय के अनुसार चलना बेहतर है। बहुत बड़ा समय आ रहा है। इसलिए, मेरी राय में दो साल प्रतीक्षा करना बेहतर होगा। अगर विश्व युद्ध शुरू हो गया, तो हमारा क्या होगा? सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोग सब गाँवों की ओर भागेंगे। शहर में उन्हें कुछ नहीं मिलेगा, पर गाँवों में लोग कम से कम हमारे खेतों में जो उगता है, उसे खाकर जीवित रह सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 51:29 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1415 जब मैं 'माधव, माधव' का जप करता हूँ, तो मुझे भौंहों के बीच एक तीव्र खिंचाव महसूस होता है, जैसे वहाँ कोई चुंबक रख दिया गया हो। मुझे इससे क्या समझना चाहिए?

उत्तर: यह संकेत, देखिए, यह आपकी कुंडलिनी शक्ति को जागृत करता है। क्योंकि अगर कोई बैठकर एकाग्रता के साथ 'माधव' नाम का जप करता है, तो उसे स्वप्न में भगवान के दर्शन तक हो सकते हैं, इसकी मैं गारंटी देता हूँ। और उसके साथ ही, बड़े से बड़े नकारात्मक तत्वों से भी निपट लिया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:31 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1416 मेरे माता-पिता हमें गाली देते हैं और मांसाहार करते हैं। हम उन्हें यह छोड़ने के लिए कैसे मनाएँ?

उत्तर: उन पर बहुत अधिक दबाव डालना हमारा नियम नहीं है। इसलिए, अगर वे थोड़े स्नेह और प्रेम से आपकी बात मान लेते हैं, तो उन्हें गरुड़ पुराण पढ़कर सुनाइए। ठीक है माता जी, कुछ मत कहिए। माता-पिता जैसा कहें वैसा कीजिए, और आप अपनी व्यक्तिगत साधना जारी रखिए। भगवान की कृपा से वे आपको गाली देना बंद कर देंगे और आपका विरोध भी नहीं करेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 57:02 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1417 यह देखते हुए कि लोग शहरों से पलायन करेंगे, क्या गाँव में एक छोटी संपत्ति बनाना अच्छा विचार है? साथ ही, जिन पर्वतीय क्षेत्रों में संत तपस्या करते हैं, क्या वे भूकंप जैसी घटनाओं से सुरक्षित हैं?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न। भविष्य पुराण में लिखा है कि समय के साथ लोग शहरों से गाँवों की ओर जाएँगे। यह निश्चित रूप से होगा। समय के साथ वे हर तरह से सहायता करेंगे और कृपा करेंगे, यह दिखाते हुए कि भक्त कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। और अगर हम गाँव में घर बना लें, तो समय बदलने पर हम गाँव में रह सकते हैं। छोटा घर बनाना चाहिए, क्योंकि जैसे-जैसे समय बदलता है, हमें भी बदलना होता है। भूकंप के बारे में, देखिए, जब बड़ा भूकंप आएगा, तो वे लोग [संत] बाहर निकलकर दूर चले जाएँगे; वे वहाँ नहीं रुकेंगे क्योंकि पहाड़ी रास्ते बंद हो जाएँगे। और Kali Yuga में, भगवान से मिलने के लिए, वे सब पर्वतों से नीचे उतरकर भगवान कल्कि के साथ मिलकर राम राज्य की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 58:27 · 9 जुलाई 2023

सत्र 83 · प्रश्न 1418–1429

L79 - LIVE | भक्त और भगवान का मिलन | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी एवं आचार्य सलिल जी

दिनांक: 9 जुलाई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1418 लोग संक्षेप में जानना चाहते हैं कि किस मालिका में क्या वर्णित है? अर्थात्, भविष्य कैसा होगा, और किस मालिका में क्या कहा गया है?

उत्तर: भविष्य मालिका सौ भविष्यसूचक ग्रंथों का संग्रह है। यह एक विशाल ग्रंथ-समूह है, और इन सौ ग्रंथों में से प्रत्येक में भविष्यवाणियाँ हैं। इन्हें 'पंचसखा' (भगवान के पाँच सखा) ने ओड़िया भाषा में लिखा था, लेकिन इतनी सांकेतिक भाषा में कि ओड़िया बोलने वाले भी दैवी कृपा के बिना इन्हें आसानी से नहीं समझ सकते। पंचसखा के अलावा, ओडिशा के अन्य महान संतों ने भी भविष्यसूचक पुराण लिखे हैं। इन भविष्यवाणियों का मुख्य उद्देश्य भक्तों को आने वाले समय के लिए तैयार करना है। जब संसार भौतिकता, धन और माया में डूबा होगा, तब बड़े-बड़े भक्त और संत भी परंपराओं में उलझ सकते हैं। ऐसे समय में भगवान का अवतार होगा। भविष्य मालिका के प्रचार-प्रसार से भक्तों को यह अनुभव होगा कि भगवान के आगमन का समय निकट है, जिससे पूरे भारत में एक आध्यात्मिक वातावरण बनेगा। यह भक्ति, भगवान और संसार के बारे में जानकारी देगी, और भविष्यवाणियों को सत्य होते देखकर उनकी श्रद्धा दृढ़ होगी। मालिका का उद्देश्य भक्तों को एकजुट करना और उन लोगों को संदेश देना है जो स्वयं को सुधारना चाहते हैं। इसमें उस महाविनाश का भी वर्णन है जो पृथ्वी पर आएगा, जिसके बाद एक नई मानव सभ्यता का आरंभ होगा। पृथ्वी पर एक 'सुधर्मा सभा' (दिव्य सभा) स्थापित होगी, जिसमें भगवान कल्कि, 33 करोड़ देवताओं, ब्रह्मा और शंकर के साथ विराजमान होंगे। भक्त उन्हें प्रत्यक्ष देख सकेंगे। केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक नया संविधान बनाया जाएगा। विश्व 'विश्व की भारत' बन जाएगा, जिसमें भारत मुख्य देश होगा और अमेरिका, इंग्लैंड और जापान जैसे अन्य देश राज्य होंगे। शासन का केंद्र ओडिशा के जाजपुर में होगा। भगवान के भक्त ही हर देश पर शासन करेंगे। विश्व का एक ही ध्वज होगा, सनातन धर्म का 'पंचरंगी' (पाँच रंगों वाला) ध्वज। नया युग पाँच सिद्धांतों पर आधारित होगा: सत्य, शांति, दया, क्षमा और मैत्री। फिर कोई गृहयुद्ध या संघर्ष नहीं होगा। दया सर्वोपरि होगी; जो लोग अनजाने में गलती करेंगे, उन्हें भी दंड देने के बजाय क्षमा किया जाएगा, ताकि उनकी अंतरात्मा जाग सके। संसार सचमुच एक परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम्) बन जाएगा। सनातन धर्म केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड में भगवान कल्कि द्वारा स्थापित किया जाएगा। दैवी प्रेरणा से लिखी गई भविष्य मालिका, कल्कि पुराण जैसे ग्रंथों में मिलने वाली भविष्यवाणियों का अधिक विस्तृत और परिवर्तित रूप है, जो इस युग के भक्तों के लिए अधिक सरलता से समझने योग्य बनाकर लिखी गई है।

► यह उत्तर सुनें · 03:44 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1419 गुरुदेव, संसार और जिन 'मंडलों' की आप बात करते हैं, क्या ये 16 मंडल भारत में बनेंगे, और क्या ये केवल भारत में ही होंगे?

उत्तर: महापुरुष अच्युतानंद ने स्पष्ट किया है कि सम्पूर्ण विश्व को 16 मंडलों के रूप में माना जाएगा। ये 16 मंडल केवल भारत तक सीमित नहीं होंगे। इन 16 मंडलों के भीतर 64 सिद्ध होंगे जो सृष्टि का नियंत्रण करते हैं। भगवान कृष्ण के समय की 16,000 गोपियों ने भी इन्हीं 16 मंडलों के भीतर जन्म लिया है, भले ही वे अलग-अलग धार्मिक मार्गों में उलझी हुई हों। 16 प्रमुख गोपियों का भी मिलन होगा। इसके अतिरिक्त, इन 16 मंडलों में से प्रत्येक का एक नेता होगा, जिसे 'सरदार' कहा जाता है। ये 16 सरदार 16 मंडलों के प्रमुख होंगे और पृथ्वी का नियंत्रण करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 20:48 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1420 मालिका के संबंध में उन्होंने यह प्रश्न पूछा है: कृपया पंडित जी से पूछिए कि क्या सारी मालिकाएँ केवल उन्हीं के पास हैं, या जो दूसरे लोग इतने भय उत्पन्न करने वाले ढंग से इसका प्रचार कर रहे हैं, उनके पास भी हैं?

उत्तर: ओडिशा में भविष्य पुराण सैकड़ों वर्षों से प्रकाशित होता रहा है और घरों में पढ़ा जाता रहा है, यद्यपि हर कोई इसका वास्तविक अर्थ नहीं समझ सकता। 2014 में, भगवान के दिव्य आदेश से, मैंने हिंदी में इसके संदेश का प्रचार आरंभ किया। उससे पहले हिंदी में कोई संस्करण उपलब्ध नहीं था। मैं अपनी इच्छा से प्रचार नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उनके आदेश से कर रहा हूँ। 2018 के बाद कई अन्य यूट्यूब चैनलों ने हिंदी में इस पर चर्चा शुरू की, लेकिन संभवतः उनके पास प्रामाणिक हिंदी या अंग्रेज़ी पुस्तकें नहीं हैं, क्योंकि इन्हें सबसे पहले हमने ही तैयार किया था। मालिका का उद्देश्य हानि पहुँचाना या भय फैलाना नहीं है। इसका उद्देश्य मानवता को बचाना है। यह वैज्ञानिकों द्वारा खोजी गई एक नई औषधि की तरह है; यदि वह कारगर होती है, तो लोग स्वस्थ होने के लिए उसे लेते हैं। इसी प्रकार, यह पवित्र ज्ञान 'मृत संजीवनी' के समान है। इन सत्यों को सुनकर, उन पर मनन करके और उनकी उपासना करके, लोग स्वयं को बचा सकते हैं और भगवान से मिल सकते हैं। भविष्यवाणियाँ अब इसलिए प्रकट की जा रही हैं क्योंकि समय उपयुक्त है। जो लोग इसका गलत अर्थ निकालकर भय फैला रहे हैं, उन्हें कुछ बातें पता हो सकती हैं, लेकिन वास्तव में यह ज्ञान मानव सभ्यता के उद्धार और कल्याण का सबसे बड़ा साधन है।

► यह उत्तर सुनें · 23:13 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1421 वे जानना चाहते हैं कि भविष्यवाणी की यह धारा (जो भयभीत करने वाली बात दूसरे लोग फैला रहे हैं) सही है या गलत।

उत्तर: भविष्य मालिका ग्रंथ में महान संत अच्युतानंद ने 400 वर्ष पूर्व लिखा था कि काशीनाथ मिश्र नाम का एक ब्राह्मण आएगा और 'हुकुम' (दिव्य अधिकार) के साथ संदेश का प्रचार करेगा। वह मार्ग दिखाएगा और संदेश फैलाएगा। मैं वही व्यक्ति हूँ, और संतों द्वारा मुझे दिए गए उत्तरदायित्व को निभा रहा हूँ। इसलिए डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं सभी भक्तों और सम्पूर्ण मानवता से कह रहा हूँ कि यह एक आनंददायक संदेश है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें पहले से सूचना मिल रही है, जिससे हम सावधानी बरत सकते हैं। यदि आपको पता हो कि किसी कार का एक्सीडेंट होने वाला है, तो कुछ लोग उतर जाएँगे, और जो बैठे रहेंगे वे चालक से सावधानी से चलाने को कहेंगे। मेरा काम यह बताना है कि क्या होने वाला है और साथ ही आपकी रक्षा का उपाय भी बताना है। तृतीय विश्व युद्ध 100% निश्चित रूप से होगा, और यह परमाणु युद्ध होगा। लेकिन क्योंकि लोगों को पहले से जानकारी होगी, इसलिए वे तैयारी कर सकते हैं। जहाँ विज्ञान के पास परमाणु हथियार को रोकने का कोई उपाय नहीं है, वहीं हमारे भविष्य पुराण में इसका आध्यात्मिक उपाय है, और वह है कृष्ण का मार्ग।

► यह उत्तर सुनें · 27:49 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1422 क्या स्वयं कृष्ण ही कल्कि के रूप में आएँगे? और इससे जुड़ा प्रश्न यह है कि क्या कल्कि केवल एक ही रूप होंगे, या जीवन भर उनका नाम कल्कि राम ही रहेगा?

उत्तर: हाँ, भगवान कृष्ण ही वे हैं जो कल्कि हैं। जब पृथ्वी पर अधर्म फैला, तब हमारे प्रभुपाद जैसे महान आत्माओं ने पूरे विश्व में भगवान की चेतना का प्रसार किया, जिससे धर्म को संतुलित करने में सहायता मिली। भगवान कृष्ण के नाम के जप ने पृथ्वी को पवित्र किया है। महापुरुष अच्युतानंद ने इस विषय में लिखा है, 'जब द्वापर युग समाप्त होता है और कलियुग का समय आता है, तब मैं कल्कि लीला प्रकट कर रहा हूँ।' इससे पुष्टि होती है कि द्वापर के स्वामी भगवान कृष्ण ही कल्कि अवतार ले रहे हैं। अच्युतानंद ने यह भी लिखा है कि जो गोपियाँ और ग्वाल-बाल कृष्ण के साथ थे, जिनके पूर्व जन्मों का सौभाग्य है, वे भगवान कल्कि से पुनः मिलेंगे। कृष्ण के भक्त को सहज ही यह अनुभूति, यह सुगंध मिल जाएगी कि उनके कृष्ण भगवान कल्कि के रूप में आ गए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 32:31 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1423 तो, भगवान विष्णु, भगवान कृष्ण और कल्कि राम के बीच क्या संबंध है? पंडित जी, कृपया इसे संक्षेप में समझाइए।

उत्तर: वे सब एक ही हैं; कोई भेद नहीं है। भगवान कृष्ण ने 16 कलाओं के साथ पृथ्वी पर अवतार लिया था। भगवान कल्कि 64 कलाओं के साथ प्रकट होंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि उन्हें चारों युगों के भक्तों को मोक्ष देना है और चारों युगों के राक्षसों का संहार करना है। इस विराट कार्य को पूर्ण करने के लिए भगवान अपने संपूर्ण रूप में आते हैं। कल्कि अवतार चारों युगों में सबसे शक्तिशाली अवतार है। शास्त्र कहते हैं कि भगवान विष्णु गंगा के तट पर, संभल नगर में विजयी होंगे। इसका अर्थ है कि स्वयं महाविष्णु 64 कलाओं के साथ पृथ्वी पर अवतरित होंगे। इसके अतिरिक्त, यह एक गहन रहस्य है कि भगवान कल्कि का स्वरूप संयुक्त रूप होगा। भगवान बलराम उनके दाहिने भाग में निवास करेंगे और भगवान कृष्ण उनके बाएँ भाग में। दोनों एक ही शरीर में आएँगे। भगवान के अवतार का समय आ गया है, और धर्म की स्थापना पहले से ही चल रही है, जो भक्तों के लिए मोक्ष और दुष्टों के लिए विनाश की ओर बढ़ रही है।

► यह उत्तर सुनें · 36:44 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1424 ये कौन सी आत्माएँ (महाभारत काल की) हैं जो इस समय पूरे विश्व में फैली हुई हैं और कलियुग के विनाश में अपनी भूमिका निभाएँगी?

उत्तर: महाभारत की आत्माओं ने, कौरवों और पांडवों दोनों ने, पुनर्जन्म लिया है। कौरव, जो स्वभाव से आसुरी थे, आसुरी वंशों में जन्मे हैं और अब विश्व के विभिन्न स्थानों पर सत्ता और शासन के पदों पर हैं। महाभारत के युद्ध को उसकी परिणति तक पहुँचाने के लिए भगवान कृष्ण, कल्कि के रूप में, तृतीय विश्व युद्ध आरंभ करेंगे। यह युद्ध इन आसुरी आत्माओं का सदा के लिए विनाश करने का कार्य करेगा। ये आत्माएँ भारत में भी जन्मी हैं और यहाँ भी सत्ता के पदों पर विराजमान हैं। उनके विनाश के बाद भगवान नए युग का आरंभ करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:42 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1425 लोग हिंसा (पशु वध) और शाकाहार को लेकर चल रही चर्चा के बारे में और जानना चाहते हैं। क्या भविष्य मालिका में यह उल्लेख है कि शाकाहारी होना अनिवार्य है, और लोग कैसे बदल सकते हैं?

उत्तर: भविष्य मालिका में 32 प्रकार के पापों का उल्लेख है। उनमें से जीव हत्या का पाप इतना गंभीर है कि इसने कलियुग की आयु को उतना कम कर दिया है जितनी वह होनी चाहिए थी। मनुष्य एक 'जीव' है, और जिस पशु को हम मारते हैं वह भी एक जीव है। जब एक जीव किसी कमजोर जीव पर आक्रमण करता है, तो यह अत्याचार है। जिन पशुओं को हम मारकर खाते हैं, उनका हृदय धड़कता है, वे साँस लेते हैं, चलते-फिरते हैं, उनके परिवार होते हैं; अंतर केवल इतना है कि वे हमारी भाषा नहीं बोल सकते। दूसरे जीव की हत्या का यह कृत्य व्यक्ति के भीतर आसुरी प्रवृत्तियों के जागने का परिणाम है। यदि मनुष्य की हत्या पाप है, तो पशु की हत्या भी पाप है। गरुड़ पुराण के अनुसार, जो कोई पशु को मारकर खाता है, उसे उसी पशु के रूप में पुनर्जन्म लेना पड़ता है। उन्हें तामिस्र और रौरव जैसे विभिन्न नरकों में कष्ट भोगना पड़ता है। नरक के मार्ग पर, जिन पशुओं को उन्होंने खाया था, उनकी आत्माएँ तीक्ष्ण शस्त्रों से उन पर आक्रमण करती हैं। भविष्य पुराण स्पष्ट रूप से कहता है कि जो व्यक्ति पशु हत्या का पाप करता है या मांसाहार करता है, उनमें से एक भी व्यक्ति कलियुग से सत्य युग में प्रवेश नहीं कर पाएगा। इसीलिए हम शाकाहारी होने की बात करते हैं। यह नए युग में प्रवेश की पूर्व-शर्त है।

► यह उत्तर सुनें · 44:05 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1426 वे जानना चाहते हैं कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन जैसे देशों के बारे में, जिनका आपने मालिका में कई बार ज़िक्र किया है, क्या वहाँ के लोगों के लिए भी कोई शुभ समाचार है।

उत्तर: हाँ। अंत में पाकिस्तान के आम लोग भारत को अपने बड़े भाई के रूप में स्वीकार करेंगे। वहाँ एक पवित्र धार्मिक परिवर्तन होगा। सनातन धर्म की पवित्रता पाकिस्तान में और बांग्लादेश में भी प्रकट होगी। अंततः, अपनी गलतियों का एहसास होने के बाद, वे सब एक साथ आकर फिर से एक हो जाएँगे। हर देश में अच्छी आत्माएँ हैं, जिनमें अलग-अलग पंथों के लोग भी शामिल हैं। वे बदलेंगे। ज्ञान का विस्तार हो रहा है, और वहाँ कई संत जन्मे हैं जिन्होंने प्रेम की बात की है और संकेत दिया है कि वैश्विक परिवर्तन का समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 52:21 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1427 पहला प्रश्न यह है, पंडित जी, क्या पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मृत्यु के बारे में मालिका में पहले से लिखा गया था? और दूसरा यह कि वर्तमान प्रधानमंत्री को कौन-सी सुरक्षा सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

उत्तर: भविष्य पुराण में महात्मा गांधी से शुरू करके भारत के सभी शासकों का वर्णन है। लिखा गया था कि महात्मा गांधी की मृत्यु गोली लगने से होगी और नाथूराम गोडसे नाम का एक व्यक्ति उनकी हत्या करेगा। इन्हीं ग्रंथों के हमारे विश्लेषण के आधार पर मैंने कहा है कि हमारी सरकार और प्रधानमंत्री को अपनी सुरक्षा मजबूत करने की आवश्यकता है। यह अत्यंत आवश्यक है। मैंने यह इसलिए कहा है क्योंकि भगवान की कृपा से मालिका का विश्लेषण करने पर हमें यह जानकारी मिलती है।

► यह उत्तर सुनें · 55:23 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1428 यह देखते हुए कि वर्तमान विश्व जनसंख्या लगभग 8.5 अरब है, और इस ग्रह पर अरबों अन्य जीव भी हैं, क्या Satya Yuga के आगमन से पहले भगवान द्वारा उन सबका हिसाब किया जाएगा?

उत्तर: भगवान प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं करते। मनुष्य अपने ही कर्मों का फल भोगते हैं। लोग अपने पूर्व कर्मों के आधार पर इस संसार में जन्म लेते हैं और उन कर्मों का फल भोगते या सुख पाते हैं। भगवान कल्कि किसी का वध नहीं करेंगे। लेकिन मानवता पर पाप का भार इतना बढ़ गया है कि पृथ्वी की आयु ही कम हो गई है। लोग अपने ही कर्मों के कारण मरेंगे। विनाश हमारे सामूहिक कर्मों का परिणाम होगा, भगवान का प्रत्यक्ष कार्य नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 57:11 · 9 जुलाई 2023

प्रश्न 1429 एक आखिरी प्रश्न: पूरी दुनिया को भगवान के बारे में कब पता चलेगा? वह कौन-सा वर्ष होगा जब लोग जानेंगे कि भगवान आ चुके हैं?

उत्तर: भक्तों के लिए भगवान का प्राकट्य पहले ही हो चुका है। जो सच्चे भक्त हैं, वे जहाँ कहीं भी हों, उन्हें पहले से ही यह ज्ञान है कि उनके भगवान आ चुके हैं, क्योंकि वे इसका अनुभव कर रहे हैं ('अनुभव')। महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि भगवान के प्राकट्य का अनुभव किया जाएगा। केवल भक्ति और भक्ति मार्ग से ही भक्त उनका प्रकाश देखेंगे, उनका अनुभव करेंगे और उनसे मिलेंगे। भगवान कल्कि पहले ही प्रकट हो चुके हैं; यह प्राकट्य काल 2019 से 2032 तक चलता रहेगा। मैंने कहानियाँ सुनी हैं, उदाहरण के लिए, वृंदावन में एक लड़के की, जो एक भक्त के सामने प्रकट हुआ, कहा कि उसने भगवान को देखा है, और फिर उसके साथ खींची गई तस्वीर से गायब हो गया। यह भगवान कल्कि का एक संकेत था। कई लोग मुझे बताते हैं कि उन्होंने वर्षों पहले मुझे अपने सपनों में देखा था, जहाँ मैं उन्हें मालिका के बारे में बता रहा था। भगवान सबके सामने प्रकट नहीं होंगे। यह एक गुप्त विषय है। जो भक्त अनुभव और भक्ति के मार्ग पर हैं, उन्हें भगवान स्वयं यह ज्ञान देंगे कि वे आ चुके हैं, चाहे स्वप्न के द्वारा या दर्शन के द्वारा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने द्वारका के डूबने से पहले उद्धव को वहाँ से चले जाने की चेतावनी दी थी। Kali Yuga के साधारण, पापी मनुष्य के लिए न तो भगवान प्रकट होंगे और न ही उसे उनकी कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:35 · 9 जुलाई 2023

सत्र 84 · प्रश्न 1430–1447

L85 - क्या मालिका में चन्द्रयान का वर्णन है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 24 जुलाई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1430 भक्तिपूर्ण आत्मा से भगवान श्री कृष्ण से पूछिए, 'क्या भगवान कल्कि का जन्म हो चुका है?'

उत्तर: आपकी अंतरात्मा आपको अवश्य बताएगी। जब वह बता दे, तब मुझसे फिर बात कीजिए, और तब मैं आपके साथ आगे बढ़ूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:56 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1431 आप भगवान के जन्म के बारे में जानना चाहते हैं?

उत्तर: देखिए, आप भी भगवान के भक्त हैं, इसीलिए मैं आपको बता रहा हूँ। भगवान आपको ज़रूर बताएँगे, क्योंकि भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि वे आपको बताएँ। क्योंकि यह एक गुप्त विषय है, इसे सबके सामने इतनी आसानी से कह देना मेरे लिए आवश्यक नहीं है। भविष्य पुराण के अनुसार, सब कुछ प्रकट नहीं किया जाता। और मैं कहता हूँ, भगवान के जन्म के बारे में सबको बताना आवश्यक नहीं है। जो सच्चे भक्त हैं, वे ही आकर ज़रूर पूछेंगे। उनका पहला और सबसे प्रमुख प्रश्न भगवान के बारे में ही होगा, 'प्रभु कहाँ हैं?' और 'क्या प्रभु का जन्म हो चुका है?' मैं भी अपने बचपन में इसी की खोज करते-करते आज यहाँ पहुँचा हूँ। तो यह हमारे जीवन की धारा है, और आपका जीवन भी इसी पवित्र धारा में मिला हुआ है। भगवान से मेरी इतनी ही प्रार्थना है: अपने अंतःकरण और ध्यान के साथ, 'माधव' नाम का 108 बार जप करने के बाद, फिर पूछिए, 'प्रभु, क्या आपका जन्म हो चुका है? क्या आप मुझे दर्शन देंगे, चाहे सूक्ष्म रूप में हो या स्थूल रूप में?'

► यह उत्तर सुनें · 19:52 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1432 तो फिर हम किस प्रकार की पूजा या पाठ कर सकते हैं?

उत्तर: भक्तों के लिए अच्छा समय आ रहा है, अर्थात् पुण्यात्माओं के लिए, संतों के लिए, पवित्र मनुष्यों के लिए अच्छा समय आ रहा है। और बुरे लोगों के लिए बुरा समय आ रहा है। सबके लिए बुरा समय नहीं आ रहा। और इस समय में, जो पुण्यात्मा संत सत्संग की धारा में रहना चाहते हैं, उनके लिए मेरी सलाह है कि वे 'त्रिसंध्या' धारा का पालन करें। अगर आप त्रिसंध्या धारा के बारे में जानना चाहते हैं, तो नीचे जो नंबर दिखाई देता है, कल्कि अवतार के लिए, उस पर संपर्क करें। उनसे संपर्क करके आप ऑनलाइन सत्संग से जुड़ सकते हैं, जैसे ब्रजवासी मंडल, नारी शक्ति युग मंडल, और आपको बहुत से लोग मिलेंगे, 500 से हज़ार लोग, और आप भगवान श्रीकृष्ण को प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:39 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1433 मेरा एक प्रश्न है। बंगाल की वर्तमान स्थिति बहुत हिंसक है। तो क्या आप कृपया बताएँगे कि 2023 में क्या होने वाला है? हम दक्षिण बंगाल में रहते हैं, तो आपका क्या कहना है?

उत्तर: सारा संसार जानता है... और मेरी राय में, मैं इतना ही कहना चाहता हूँ: अगर दुनिया के सारे नास्तिक और अधर्मी लोग एक हो जाएँ, और अगर आप हमारी त्रिसंध्या धारा का, भक्ति की धारा का, और जो कुछ मैं आपको बताता हूँ उसका पालन करें, तो उन लोगों का कुछ नहीं होगा। न कोई दुःख, न कोई समस्या, न कोई चिंता। जो समस्याएँ आ रही हैं और चल रही हैं, उनसे भी आपका कुछ नहीं होगा। तो इस प्रकार, केवल आपके और बंगाल के लिए ही नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए यह 'यज्ञज्ञान' की धारा चलती रहेगी और बढ़ती रहेगी। हमें नए युग के निर्माण का कार्य करना है। इसीलिए मैं सत्संग करता हूँ; मेरा और कोई लक्ष्य नहीं है। मेरी इच्छा सबको क्षणिक सुख देने की नहीं है। मेरी इच्छा है मानवता की रक्षा, मानव सभ्यता में धर्म का प्रकाश, सनातन धर्म की पवित्र धारा का प्रचार, और मैं लोगों को भगवान के आने वाले नए युग में प्रवेश करने के नियम और आवश्यकताएँ बताता हूँ। उसका पालन कीजिए। और ऐसी बहुत सी समस्याएँ होने वाली हैं... उनके लिए कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 28:04 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1434 सत्संग 28 तारीख से 3 तारीख तक हो रहा है। हमारी आने की बहुत इच्छा है, पर किसी कारणवश हम नहीं आ पा रहे हैं क्योंकि सरकार से इतनी छुट्टियाँ नहीं मिल पातीं। तो उसके लिए हम क्या करें? तब हम उसे कैसे सुन सकते हैं?

उत्तर: भगवान से मेरी प्रार्थना है कि आप 'माधव' नाम का जप कीजिए। नहीं तो अपने वरिष्ठ अधिकारी से कहिए, वे आपको छुट्टी दे देंगे। आपको कोई समस्या नहीं होगी। जो काम आप करते हैं, वह काम भी कीजिए; उसमें कोई अनादर नहीं है। लोग चार प्रकार की पूजा एक साथ करते हैं; साथ बैठकर चार अलग-अलग देवताओं का स्मरण करते हैं। इसलिए यह अलग नहीं है। हमारी पवित्र धारा में सब जुड़े हुए हैं। जो आवश्यक है वह कीजिए, और जो आवश्यक नहीं है वह मत कीजिए। ठीक है? और आपको छुट्टी मिल जाएगी। प्रभु के नाम की शरण लीजिए, उसका जप कीजिए, और माँगिए; वे आपको छुट्टी दे देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:09 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1435 मैं दुर्गा स्तुति, माता जी का गीत, हरे कृष्ण, और गायत्री मंत्र करती हूँ। मैं इसे मन ही मन करती हूँ, बोलकर नहीं। तो यह गलत तो नहीं होगा? मैं इसे खड़े होकर करती हूँ।

उत्तर: यह बहुत आनंददायक है, कोई समस्या नहीं है। कीजिए, माता जी, यह काम करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:06 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1436 आपने तीसरे विश्वयुद्ध का जिक्र किया, वह कब होगा?

उत्तर: तीसरा विश्वयुद्ध 2025 के बाद होगा। और उस समय से आगे, सूर्य से सुनामी, सौर ज्वालाएँ, और बहुत से उल्कापिंड पृथ्वी से टकराने वाले हैं। और उस समय हमारे नेटवर्क सिस्टम सब नष्ट हो जाएँगे। तो यह भविष्य में होने वाला है, माता जी। हमें इसके बारे में सोचना नहीं चाहिए। अपना काम कीजिए, और साथ ही जो मार्ग मैं दिखाता हूँ उसका भी पालन कीजिए। समय के साथ, जब वह समय आएगा, तब हम देखेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे। अभी वह समय नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 36:43 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1437 मुझे हमेशा प्रार्थना करने का मन करता है। अगर मैं विष्णु, राम, या राधा की कोई तस्वीर देखती हूँ, तो उसे देखती ही रहती हूँ। यह क्या है? क्या यह पिछले जन्म से है?

उत्तर: इसे पवित्र संबंध कहते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:45 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1438 मुझे इसे कब तक करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जब तक आपका मन कहे, तब तक कीजिए। संध्या का पालन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:58 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1439 क्या बिहार में आपका कोई कार्यक्रम है?

उत्तर: बिहार में कार्यक्रम ज़रूर होगा, प्रवचन भी होगा। भविष्य पुराण का संदेश पूरे बिहार में फैलेगा। समय के साथ यह ज़रूर होगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए। जब प्रभु की इच्छा होगी, तब होगा। फिलहाल, बिहार से बहुत से भक्त ऑनलाइन माध्यम से जुड़े हैं, और समय आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:47 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1440 आपने बिल्कुल शुरुआत में कहा था कि मनुष्य चंद्रमा पर जा रहे हैं। तो उसके बारे में क्या आप कुछ मार्गदर्शन या शिक्षा दे सकते हैं?

उत्तर: और उन्होंने एक यान भेजा है। और भगवान की कृपा से, अगर वह सफल होता है, तो वह भी हमारे भारत के सम्मान के लिए अच्छा होगा। अगर ऐसा होता है, तो कोई अपना कर्म नहीं करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:25 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1441 बहुत से लोग [आने वाली आपदाओं से] डरे हुए हैं। क्या हमें किसी सुरक्षित स्थान पर जाना पड़ेगा?

उत्तर: कहीं जाने की जरूरत नहीं है। भगवान भक्तों की रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 42:09 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1442 इस मार्ग पर चलकर भगवान को पाने या उनके दर्शन होने में कितना समय लगेगा?

उत्तर: नहीं, देखो बाबा। बहुतों ने युगों तक तपस्या करने के बाद भी भगवान को नहीं पाया; वे मर गए और फिर जन्म लिया। युगों-युगों के जन्मों का फल, संचित पुण्य, तभी फलित होता है जब किसी को प्रभु के दर्शन होते हैं। लेकिन आप सबको कम से कम तीन वर्ष त्रिसंध्या की धारा में रहना चाहिए। उतने समय में, अगर आपकी भक्ति सच्ची है, और आप सब कुछ वैसे ही करते हैं जैसा मैं बताता हूँ, तो भला आपको भगवान के दर्शन क्यों नहीं होंगे? निश्चित ही होंगे। समय की प्रतीक्षा कीजिए, और जैसा कहा गया है वैसा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:51 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1443 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें भगवान शिव का तीसरा नेत्र खुला हुआ दिखा, और फिर मेरी नींद टूट गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: वह तब खुलता है जब महाप्रलय होता है। और शायद आप भगवान शिव की उपासना करते हैं, और भगवान शंकर संकेत दे रहे हैं कि भविष्य में महाप्रलय आने वाला है। इसीलिए उनका तीसरा नेत्र खुला, और आपने उसे देखा। और यही प्रलय का संकेत है। जय जगन्नाथ। और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 47:27 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1444 जैसे आप हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं, उसी में एक प्रश्न उठा है। कुछ ज्योतिषीय भविष्यवाणियों के अनुसार कहा गया था कि भयानक परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। लेकिन अब, कुछ जगहों पर स्थिति खराब तो है, फिर भी वह उतनी भयानक नहीं लगती जितनी मालिका के अनुसार होनी चाहिए थी। बहुत लोग कहते हैं कि जो भविष्यवाणी की जा रही है वह उस हद तक हो नहीं रहा, और शायद हो ही न। जब हम उन्हें उत्तर देने का प्रयास करते हैं तो इससे संदेह पैदा होता है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: मैंने जितने भी गूगल मीट किए हैं और जितने भी एपिसोड किए हैं... अच्छे मनुष्य बच जाएँगे। दूसरी ओर, पापियों का विनाश होगा। और मैंने हमेशा यही कहा है, किसी को डरने की जरूरत नहीं है... जो पाप नहीं करते... मैं कल भी कह रहा था, 'सूर्य पश्चिम में उदय हो सकता है... पर्वतों की चोटियाँ हिल सकती हैं...' मैं पापियों के विनाश के लिए लिख रहा हूँ, और अब भी कह रहा हूँ। समय के साथ यह होगा। और यह भगवान... इसमें देर हो सकती है, यह एक साल पहले हो सकता है, यह 2 या 4 साल आगे खिसक सकता है। लेकिन यह काल एक दशक का है, 10 वर्ष। इसी के भीतर हमें सब कुछ देखना है। और इसे कोई नहीं बदल सकता। कल्कि अवतार के इस समय में, सब कुछ काम करेगा, और मालिका का एक भी शब्द... मैंने 2014 में जो कहा था... नाटो के बारे में... जापान, जर्मनी, फ्रांस, मैंने उस समय कहा था, मैं 2014 की बात कर रहा हूँ... पढ़िए, देखिए... वे अलग हो जाएँगे। प्रक्रिया चल रही है, और आने वाले समय में वे अलग हो जाएँगे। मैंने विश्व युद्ध के बारे में कहा है, वह निश्चित रूप से होगा। क्यों नहीं होगा? क्योंकि मनुष्यों ने उसकी तैयारी कर रखी है। और शास्त्रों में यह पहले से लिखा हुआ है। अगर हम इसे टालना चाहते हैं, तो धर्म के मार्ग पर आइए। जो कहते हैं कि इतना भयानक नहीं है, ज्यादा कुछ हो नहीं रहा, होने वाला ही नहीं है... बार-बार भूकंप आ रहे हैं... धरती पर बार-बार भूकंप क्यों आ रहे हैं? और इन भूकंपों का कारण यह है कि भविष्य में एक बड़ा भूकंप आएगा। उस समय, शायद मैं आपसे बात न कर पाऊँ, मतलब गूगल मीट संभव नहीं होगा, नेटवर्क काम नहीं करेगा। इसीलिए मैं आपको पहले से बता रहा हूँ, बदलिए। बदलिए, चाहे दुनिया बदले या न बदले। क्योंकि वे रात के अंधेरे में पाप करते हैं... वे अपनी माँ को मार देते हैं, पुत्र अपने पिता को मार देता है... क्या यह पाप नहीं है? ...जो हुआ है और भविष्य में होगा, एक भी कार्यक्रम चूकेगा नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 48:42 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1445 क्या होगा? धरती पर बार-बार भूकंप क्यों आ रहे हैं?

उत्तर: और इन भूकंपों का कारण यह है कि भविष्य में एक बड़ा भूकंप आएगा। उस समय, शायद मैं आपसे बात न कर पाऊँ, मतलब गूगल मीट संभव नहीं होगा, नेटवर्क काम नहीं करेगा। इसीलिए मैं आपको पहले से बता रहा हूँ, बदलिए। बदलिए, चाहे दुनिया बदले या न बदले। क्योंकि वे रात के अंधेरे में, आधी रात को पाप करते हैं... वे अपनी माँ को मार देते हैं, पुत्र अपने पिता को मार देता है... क्या यह पाप नहीं है?

► यह उत्तर सुनें · 54:28 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1446 अरे, चमत्कार क्या होता है?

उत्तर: चमत्कार तब है जब आप धरती पर आने वाले विनाश को बदल सकें, तब हम उसे चमत्कार मानेंगे। इसे चमत्कार नहीं कहते।

► यह उत्तर सुनें · 55:41 · 24 जुलाई 2023

प्रश्न 1447 मेरा परिवार इसी आध्यात्मिक मार्ग पर नहीं है; वे दूसरे मार्गों पर हैं। उनका क्या होगा?

उत्तर: परिवार में हम देखते हैं कि जब कोई बड़ी बीमारी आती है, तब वे कहेंगे, उस समय, 'संध्या से कुछ नहीं होगा'... 'इलाज से कुछ नहीं होगा।' ऐसा समय आ रहा है। यह भविष्य पुराण में भी लिखा है। क्योंकि जब बीमारी आएगी, तब वे कहेंगे, 'चलो, साथ मिलकर त्रिसंध्या करते हैं। सब घर में आकर बैठो।' और जब तक आप जाएँगे, तब तक वे सब पहले से ही इकट्ठे हो चुके होंगे। तो, जो रोज संध्या नहीं करते, जो घर में इधर-उधर बैठे रहते हैं... मैं सबके परिवार की बात कर रहा हूँ, आपके परिवार की भी... बहुत लोग तो इसका मजाक तक उड़ाते हैं। वे कहेंगे... 'गाँव से आया, सारे लोग नष्ट हो गए, चलो हम भी नष्ट न हो जाएँ।' उस समय कुछ भी काम नहीं आएगा। क्योंकि त्रिसंध्या में सिद्धि पाने के लिए तीन वर्ष का अभ्यास (सिद्धि) चाहिए। तीन वर्ष त्रिसंध्या करने से व्यक्ति मजबूत बनेगा, और उसका आध्यात्मिक शक्ति तंत्र बनेगा। उसमें हमारे शरीर में सभी आपदाओं से लड़ने की शक्ति जागृत होगी। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 57:38 · 24 जुलाई 2023

सत्र 85 · प्रश्न 1448–1459

L86 - कल्कि अवतार का श्री द्वारिकाधीश मंडल ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 27 जुलाई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1448 पंडित जी, मैं कल आना चाहता हूँ। मैं शहर में रहता हूँ जबकि वे गाँव में रहते हैं, और वह कुछ दूरी पर है, बहुत पास नहीं। क्या मैं फिर भी आ सकता हूँ? इसीलिए पूछ रहा हूँ।

उत्तर: हाँ, आइए, आइए। यह शुभ कार्य है, और शुभ कार्य में आने में कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 08:37 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1449 गूगल मीट चल रहा है। और क्या समाचार है?

उत्तर: सत्यनारायण। सब बहुत अच्छा है। प्रभु जी की, आपकी और सभी भक्तों की कृपा से कार्य आगे बढ़ रहा है। जब आप लौटेंगे, तब हम आपको पूरा विवरण देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 09:51 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1450 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें सात या आठ ग्रह एक सीधी रेखा में दिखे, और बृहस्पति अपने ही स्थान पर बहुत तेजी से घूम रहा था। इसका क्या अर्थ था? ठीक उसी क्षण मेरी नींद खुल गई।

उत्तर: यह आने वाले समय का संकेत है जब पापियों का विनाश होगा और सभी 11 ग्रह बादलों में दिखाई देंगे। बृहस्पति भक्तों की रक्षा करेंगे; उनका प्रकाश और प्रभाव महसूस होगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:22 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1451 भविष्य मालिका के अनुसार, किस वर्ष में तकनीक — जैसे इंटरनेट, यूट्यूब, टीवी और सैटेलाइट — का अंत हो जाएगा?

उत्तर: यह निश्चित रूप से होगा। जब होगा, तब दिखाई देगा। और यह अवश्य होगा; इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, क्योंकि यह भगवान का वचन है, और भगवान ने स्वयं अपने चुने हुए माध्यमों के द्वारा, अपने नियमों के अनुसार इसे प्रकाशित किया है।

► यह उत्तर सुनें · 32:55 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1452 मुझे विश्वास नहीं होता, गुरुजी, कृपया बुरा न मानिएगा। मैं 12-13 वर्षों से माँ की सेवा कर रहा हूँ, पर कोई परिवर्तन नहीं है। किस विश्वास के साथ बोलूँ? यदि त्रिसंध्या और जप सहित सब कुछ करने के बाद भी कुछ नहीं बदल रहा, तो क्या लाभ? कभी-कभी लगता है कि अपना जीवन ही समाप्त कर लूँ। इतना सब करने के बाद भी यदि मेरे पाप नहीं धुलते और मुझे सदैव भिखारी की तरह ही जीना पड़े, तो इसका क्या अर्थ?

उत्तर: आप जो कह रहे हैं, वह सही है। घोर कलियुग चल रहा है, इसीलिए भक्तों को इसका सामना करना पड़ता है। लेकिन आपको त्रिसंध्या अवश्य करनी चाहिए; आपको वह मिलेगा जो आप चाहते हैं। एक महीने आजमाइए, फिर बात करते हैं। यदि आपको नौकरी में समस्या है, तो आप डिस्क्रिप्शन में दिए गए नंबर के माध्यम से हमसे संपर्क कर सकते हैं; हमारे बहुत से भक्त हैं और कुछ भी संभव है। कर्म तो करना ही पड़ता है; भगवान भी जब इस संसार में आते हैं, तो कर्म करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के लिए आप हमारे लोगों से बात कर सकते हैं। और साथ ही, माँ भगवती की उपासना कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:51 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1453 मेरी बहन ने मेरे साथ साधना शुरू की थी, पर फिर अचानक छोड़ दी। यदि लोग इस मार्ग को छोड़ देते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप इस मार्ग से जुड़ गए हैं, पर उनके भाग्य में इसे जारी रखना नहीं था। आपको भी उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए, और समय के साथ संभव है कि उन पर भगवान की कृपा हो जाए।

► यह उत्तर सुनें · 48:33 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1454 आपको मालिका की अपनी प्रति कहाँ और कब मिली? मूल वाली?

उत्तर: यह जानने की क्या आवश्यकता है?

► यह उत्तर सुनें · 49:21 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1455 पंडित जी, मैं पूछना चाहता हूँ, मैंने श्रीमद् भागवत पुराण पढ़ना शुरू किया है, प्रतिदिन लगभग 22 पृष्ठ। क्या यह करने का सही तरीका है? साथ ही, गृहस्थ होते हुए यह करते समय क्या मुझे स्थायी ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा? यही मेरी शंका है।

उत्तर: ऐसा कोई नियम नहीं है कि इन शास्त्रों को पढ़ते समय ब्रह्मचर्य का पालन करना ही पड़े। साधना के प्रभाव के कारण किसी व्यक्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन कठिन हो सकता है। इसलिए अपनी सीमा और सामर्थ्य के अनुसार प्रयास कीजिए। यदि कोई समस्या आए, तो भगवान से क्षमा माँग लीजिए। भक्ति के मार्ग पर चलिए और अपने परिवार तथा सांसारिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार आचरण कीजिए। ठीक है, मैंने सब समझा दिया।

► यह उत्तर सुनें · 50:10 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1456 तीन दिन पहले, लगभग रात 2:10 बजे, मुझे एक अनुभव हुआ जिसमें ऐसा लगा मानो मेरी आत्मा मेरे तीसरे नेत्र चक्र से बाहर निकलकर किसी दिव्य पिंड से जुड़ गई हो। मुझे एक अत्यंत प्रबल गुरुत्वाकर्षण शक्ति का अनुभव हुआ, और जागने के बाद भी 10 मिनट तक वह अनुभूति बनी रही। ऐसा लगा मानो मेरी आत्मा शरीर से निकलकर एक झटके के साथ वापस लौटी हो। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह एक संकेत है। यह संकेत किसी महान घटना के आने का चिह्न है। जो विपत्ति आप पर आने वाली थी, वह टल गई है।

► यह उत्तर सुनें · 52:35 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1457 एक मान्यता है कि भगवान (श्रीकृष्ण) का अंतिम संस्कार किया गया था और उनका हृदय अब भगवान जगन्नाथ के पास है। क्या यह सत्य है?

उत्तर: जगन्नाथ दास महाराज ने लिखा है कि अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण का अंतिम संस्कार किया था। जब भगवान मानव शरीर में आते हैं, तो संस्कार किए जाते हैं। इस विषय में हमें अधिक जानने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भगवान परम, निराकार और अनंत ब्रह्म हैं। इन बातों पर विचार करने से हमें कुछ प्राप्त नहीं होगा। इसके बजाय भगवान की लीलाओं का पाठ कीजिए और भक्ति का अभ्यास कीजिए। एक महाविपत्ति आने वाली है।

► यह उत्तर सुनें · 55:58 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1458 जब मैं दूसरे भक्तों के स्वप्न में भगवान के दर्शन के अनुभव सुनती हूँ, तो मुझे रोना आ जाता है। मैं रोकर माँ रानी से पूछती हूँ, 'भगवान मुझे कभी दर्शन क्यों नहीं देते? मेरी क्या भूल है? मैं किस प्रकार उपासना करूँ जिससे मैं भी दूसरे भक्तों की तरह उनके दर्शन कर सकूँ?'

उत्तर: कृष्ण से भी प्रेम कीजिए और उनकी शरण में जाइए, तब सभी देवता आपको अपने दर्शन देंगे। और एक काम कीजिए: नाम भजन कीजिए और भगवान से बात कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 58:42 · 27 जुलाई 2023

प्रश्न 1459 मुझे सुबह लगभग 5 या 6 बजे स्वप्न आया कि दो लोगों की मृत्यु हो गई है, और उनमें से एक मेरे पति थे। मुझे बस इतना दिखाई दे रहा था कि मैं लगातार रो रही हूँ। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: एक महान समय आ रहा है, जैसा कि मैं दूसरों से चर्चा कर रहा था। इसीलिए ऐसे स्वप्न आते हैं। आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। यदि यह किसी बड़ी बात का संकेत भी हो, तो चिंता मत कीजिए; कोई समस्या नहीं है। माँ, एक काम कीजिए: श्रीमद् भागवत कथा सुनिए। ऐसे स्वप्नों का यही मुख्य कारण है। आपके लिए कोई समस्या नहीं है। और जहाँ भी जाएँ, माधव का नाम जपती रहें।

► यह उत्तर सुनें · 59:50 · 27 जुलाई 2023

सत्र 86 · प्रश्न 1460–1470

L87 - द्वारकाधीश का ध्वजादंड टूटा | यह किस बात का संकेत है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 30 जुलाई 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1460 जब मैं पीडीएफ खोलकर अपनी प्रार्थनाएँ करता हूँ, तो वे मुझे कंठस्थ नहीं हो पातीं। कृपया इस विषय में कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: कोई बात नहीं, आरंभ में ऐसा ही होता है। कुछ वर्षों तक ऐसा करने के बाद यह आपके मन में बस जाएगा। अभी कोई समस्या नहीं है। यह समस्या नहीं, यह तो आनंद है।

► यह उत्तर सुनें · 17:47 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1461 आप 16 'मंडलों' (समूहों) के गठन की बात करते हैं। इनमें से कितने भारत में बनेंगे और कितने विदेश में? साथ ही, प्रत्येक मंडल में कितने सदस्य होंगे? कृपया मेरी जिज्ञासा शांत करें और कुछ मार्गदर्शन दें।

उत्तर: कहा जाता है कि भारत में 15 मंडल होंगे और एक मंडल विदेश में। प्रत्येक मंडल के भक्त... भारत के 33 करोड़ भक्तों में से कुछ लोग अफ्रीका मंडल में होंगे। मेरे पास पूरी संख्या नहीं है। इसी व्यवस्था के आधार पर मंडलों का गठन होगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:07 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1462 जो 7 दिनों का अंधकार होने वाला है, वह कब होगा? क्या कोई निश्चित तिथि है?

उत्तर: यह काल 2029 के भीतर प्रतीत होता है। भक्तों के लिए कोई समस्या नहीं होगी। हम बार-बार इस प्रश्न का उत्तर देते हैं। जो लोग धर्म का पालन करते हैं, माँ दुर्गा की स्तुति करते हैं, माधव का नाम जपते हैं, श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, और अपने जीवन में सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास करते हैं, तथा विश्व कल्याण के लिए शुभ कर्म करते हैं, उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। समय आने पर प्रभु कार्य करेंगे। यह प्रभु की इच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:56 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1463 जो ब्राह्मण और पंडित कर्मकांड कराते हैं, विशेषकर उन शहरों में जहाँ पूजा-पाठ कम होता है, क्या उन्हें भगवान से कोई संकेत नहीं मिलना चाहिए ताकि वे अपने क्षेत्र के लोगों को सचेत कर सकें? इतना कम समय बचा है, लोग समझ नहीं पाएँगे, और क्या सभी नष्ट नहीं हो जाएँगे?

उत्तर: देखिए, सभी नष्ट नहीं होंगे। पाप और पापी ही नष्ट होंगे। दूसरी बात, भगवान द्वारा धर्म की स्थापना के विषय में, आपको निश्चित रूप से जानकारी चाहिए। जो लोग भगवान के प्रति भक्ति और प्रेम के साथ जीते हैं, उन्हें भी यह जानकारी मिलनी चाहिए, जैसा आप कहते हैं। यदि आप मेरे बताए अनुसार आचरण करेंगे, तो आपको संकेत या जानकारी अवश्य मिलेगी। फिर आप मुझसे पुनः बात कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 23:07 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1464 जब अंधकार आएगा और सभी कंप्यूटर नष्ट हो जाएँगे, तो भारत में मेरे जैसे लाखों-करोड़ों लोगों का क्या होगा जिनकी आजीविका कंप्यूटर पर निर्भर है? जो नया घर खरीद रहे हैं या जो दिहाड़ी मजदूर हैं, उनका क्या होगा? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, इस कलियुग के काल में सारी व्यवस्थाएँ और विकास कंप्यूटर से नियंत्रित हैं। मेरी बात यह नहीं है। मैं यह कह रहा हूँ कि संसार में एक महान परिवर्तन आ रहा है। जब सौर सुनामी होगी और सोलर फ्लेयर पृथ्वी से टकराएगा, तब सब कुछ संकट में होगा। इसके उपाय के रूप में, मैं मानवता को धर्म की ओर मुड़ने की सलाह देता हूँ। मैं जिस प्रकाश के मार्ग की बात करता हूँ, उस पर चलने से धर्म का प्रकाश फैलेगा, और तब भगवान सबकी देखभाल करेंगे। आपका व्यवसाय चाहे जो भी हो, भगवान की कृपा से अच्छे लोगों के साथ अच्छा होगा और बुरे लोगों के साथ बुरा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:54 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1465 भविष्य मालिका हिंदी भाषा में कब उपलब्ध होगी?

उत्तर: देखिए, माधव (कृष्ण) को प्रेम और भक्ति अर्पित कीजिए। स्वयं को समर्पित कर दीजिए और कहिए, 'प्रभु, मैं आपकी शरण में हूँ।' श्री संध्या और अन्य सभी कर्तव्यों का पालन कीजिए। भगवान से प्रार्थना करने पर किसी न किसी समय आपको दिव्य अनुभव अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:54 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1466 मैं ऋषिकेश, उत्तराखंड से हूँ। आपने कहा था कि यहाँ भूकंप की बहुत संभावना है। क्या हमें यह स्थान अभी छोड़ देना चाहिए, या कुछ समय और रह सकते हैं?

उत्तर: देखिए, भक्तों का कुछ नहीं होगा, चाहे कोई भी भूकंप, विपदा या विनाश क्यों न हो।

► यह उत्तर सुनें · 36:14 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1467 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें दो समूह थे, एक नीले रंग में प्रभु का प्रतिनिधित्व करता हुआ और दूसरा सुनहरे रंग में माता रानी का। स्वप्न में मुझे माता की ओर बुलाया गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, प्रभु और माता अलग नहीं हैं। आप माता रानी की भक्त हैं, इसीलिए वे आपको स्वप्न में बुला रही हैं। जब धर्म की स्थापना होगी, तब प्रभु और माता दोनों एक साथ कार्य करेंगे। आपके लिए दोनों की उपासना करना अच्छा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:13 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1468 मैं सत्य, प्रेम और करुणा के सिद्धांतों पर जीने का प्रयास करता हूँ, लेकिन अपने कार्यस्थल पर बहुत अन्याय और परेशानी का सामना करता हूँ, जिससे कभी-कभी मुझे क्रोध और द्वेष होता है। क्या ये नकारात्मक भावनाएँ मेरी साधना में बाधा उत्पन्न करेंगी? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: भक्तों का कष्टों का सामना करना स्वाभाविक है, क्योंकि यह कलियुग का काल है और इसका प्रभाव प्रबल है। फिर भी, ये कष्ट आपको हानि नहीं पहुँचा सकते, क्योंकि आपने भगवान को समर्पण कर दिया है। निश्चिंत रहिए कि जो गलत करते हैं, उन्हें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:31 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1469 जब भी मैं आँखें बंद करके भगवान विष्णु का मंत्र जपता हूँ, मुझे उनके समुद्र में खड़े होने के दर्शन होते हैं। इस दर्शन का क्या अर्थ है?

उत्तर: यदि भगवान विष्णु आपको जल के बीच में दर्शन दे रहे हैं, तो यह जल प्रलय के समय का संकेत है। इसका अर्थ है कि संसार में महान जल-विनाश हो रहा है, और इससे भी बड़ा विनाश आने वाला है। प्रभु आपको दिखा रहे हैं कि क्या होने वाला है। भक्तों को अक्सर ऐसे विशेष अनुभव प्राप्त होते हैं। प्रभु की कृपा आप पर रहेगी। चूँकि आपने श्री संध्या की साधना से जुड़ाव किया है, आप उनकी कृपा से आगे बढ़ेंगे और नए स्वर्ण युग (सत्य युग) में प्रवेश कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:09 · 30 जुलाई 2023

प्रश्न 1470 मैं दोपहर की प्रार्थना नहीं कर पाता, और देर से उठता हूँ, इसलिए सुबह वाली सुबह 7 बजे करता हूँ। क्या यह स्वीकार्य है?

उत्तर: समय के साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:04 · 30 जुलाई 2023

सत्र 87 · प्रश्न 1471–1482

L92 - विश्व युद्ध में भारत का क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 18 अगस्त 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1471 नेपाल की भविष्य में क्या स्थिति होगी? क्योंकि नेपाल एक दिव्य स्थान है, एक पवित्र भूमि है, और जैसा कि आप जानते हैं, भगवान की क्रीड़ास्थली भी है। मैं इस विषय पर आपके विचार जानना चाहता हूँ।

उत्तर: नेपाल एक पवित्र भूमि है। आज भी वहाँ धर्म का जो सार बचा हुआ है, वह यह है कि वहाँ गोवध नहीं होता। और यही नेपाल की सबसे बड़ी शक्ति है। वहाँ के संवैधानिक नियम पूरे विश्व के लिए एक आदर्श हैं। दूसरी बात यह है कि नेपाल धर्म की भूमि है, माता जनक नंदिनी सीता की जन्मभूमि है। इसने पूरे विश्व में धर्म का प्रचार किया है और धरती माता के लिए तथा मानवता के लिए धर्म के मार्ग को सुधारा है। यह प्रारंभ से ही एक पावन, पवित्र भूमि रही है, और आज भी है। और भगवान की कृपा बनी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 03:05 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1472 दिल्ली एनसीआर क्षेत्र के बारे में, जैसे गुरुग्राम, गाज़ियाबाद और नोएडा, क्या वहाँ भी विनाश होगा, या यह केवल दिल्ली तक ही सीमित रहेगा? और दूसरी बात, क्या दिल्ली पूरी तरह नष्ट हो जाएगी, या उसका कोई छोटा हिस्सा बच जाएगा?

उत्तर: देखिए, भविष्य पुराण के अनुसार, मैं पूरे ब्रह्मांड को, पूरे विश्व को मानता हूँ... परिवर्तन होगा। कुछ स्थानों पर युद्ध और कष्ट के प्रभाव के कारण, वह सब बदल जाएगा। इसमें दिल्ली भी शामिल है। जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं और धर्मपूर्वक जीवन जीते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। प्रभाव उन पर पड़ेगा जो आस-पास या निकट में रह रहे हैं। लेकिन उस समय वहाँ के भक्तों पर भगवान की कृपा रहेगी। दिल्ली में पूरे भारत से बहुत से लोग हैं। अगर मैं सीधे-सीधे कह दूँ, तो लोगों के मन में भय पैदा हो जाएगा। इसीलिए मैंने आपको मुक्ति का मार्ग और सत्कर्म का मार्ग दिखाया। इसीलिए मैंने आपके प्रश्न का उत्तर घुमा-फिराकर दिया।

► यह उत्तर सुनें · 09:19 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1473 हमारे द्वारकाधीश, भगवान श्रीकृष्ण, उनका नाम भविष्यवाणी में नहीं है; उसकी जगह 'हलधर' (हल धारण करने वाले) है, जो बलराम जी का नाम है। मैंने जो पुस्तक अपने मित्रों को दी थी, उसे पढ़ने के बाद उनका भी यही प्रश्न था: 'हलधर' रूप क्यों है और भगवान श्रीकृष्ण का नाम क्यों नहीं? आज अपने प्रवचन में आपने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वे महाविष्णु हैं। मैं इसे संक्षेप में समझना चाहता हूँ ताकि मैं दूसरों को समझा सकूँ।

उत्तर: देखिए, 'हलधर' रूप के विषय में... भविष्य पुराण और भविष्य मालिका के अनुसार, जो भगवान कल्कि आने वाले हैं, वे एक ही रूप में आएँगे। इस रूप में बलराम की शक्ति और कृष्ण की शक्ति समाहित होगी। भगवान कृष्ण और भगवान बलराम, दोनों की शक्तियाँ उनमें होंगी। और माता सुभद्रा, दिव्य स्त्री शक्ति, भी भगवान के साथ होंगी। उन्हीं के स्वरूप से ब्रह्मा और भगवान शंकर प्रकट हुए, और बाद में बाकी सब आए, जैसा कि भागवत शास्त्र में लिखा है। भगवान कृष्ण का प्राकट्य दस अवतारों के बाद हुआ, क्योंकि वे इन दसों के महाप्रभु हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:17 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1474 नहीं, बस यही मेरा एकमात्र प्रश्न था। हमारे कृष्ण, द्वारकाधीश, उनका नाम क्यों नहीं है? बस इतना ही, और कुछ नहीं।

उत्तर: क्योंकि भगवान कृष्ण का प्राकट्य दस अवतारों के बाद हुआ। क्योंकि वे इन दसों के महाप्रभु हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:40 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1475 महाराज जी, मध्य प्रदेश में कौन-सा मंडल है?

उत्तर: महाकालेश्वर मंडल भी मध्य प्रदेश में है। मध्य प्रदेश में एक बड़ा मंडल बनेगा; महाकालेश्वर मंडल बनेगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:31 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1476 मेरी मनोकामनाएँ पूरी हो रही होंगी, है ना?

उत्तर: करते रहिए, क्योंकि यह रुकेगा नहीं। जितना आएगा, उतना जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:51 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1477 मुझे एक स्वप्न आया जिसमें एक बुज़ुर्ग व्यक्ति, जो कभी मेरे प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे, प्रकट हुए और मुझसे कहा, 'श्री संध्या (प्रार्थना) मत करो। अगर करोगे तो यह तुम्हें काँटों की तरह चुभेगी।' फिर मेरी नींद खुल गई। पंडित जी, इसका क्या अर्थ है? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखो बेटा, जो मृत्युलोक से परलोक चले गए हैं, वे मनुष्यों का कल्याण नहीं चाहते। यह त्रिकाल संध्या समस्त पौराणिक सिद्धांतों की सबसे बड़ी परंपरा है। इससे दिव्यता की प्राप्ति होती है, भगवान के दर्शन होते हैं और अमरत्व मिलता है। यह हर समय किया जाता है; देवता भी इसे करते हैं। त्रिकाल संध्या की परंपरा सत्य युग के निर्माण के लिए इतनी शक्तिशाली है कि इससे बड़ा कुछ नहीं है। आपके स्वप्न में यह इसलिए दिखाया गया क्योंकि उनकी पुरानी परंपराएँ अलग थीं, और उन्हें यह पसंद नहीं है। वे क्या समझेंगे? वे तो दिवंगत हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:45 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1478 जो पूर्वज मेरे स्वप्नों में आते हैं, उन्हें मुक्ति नहीं मिली है। उनके लिए मुक्ति का मार्ग क्या है?

उत्तर: यदि आप स्नान करके गया में पिंडदान करें, तो उन सभी को मुक्ति मिल जाएगी और वे फिर कभी आपके स्वप्नों में नहीं आएँगे। वह करा लेना अच्छा रहेगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 37:19 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1479 मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मुकुट धारण किए दो देवताओं ने कहा कि मैंने पाप किया है और मुझे साँपों के बीच फेंक दिया, जो मुझे खाने लगे। जब मैंने 'माधव, माधव' का जाप किया, तो यह सब समाप्त हो गया। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह सब भगवान की इच्छा है। भगवान मुझे बार-बार लोगों के बारे में चीज़ें दिखाते हैं, इसीलिए जो मैं आपको बताता हूँ वह मानवता के कल्याण के लिए है। और जो ऐसे स्वप्न देखते हैं, उनके भविष्य के लिए यह लाभकारी है। आगे क्या करना है, तो इस आध्यात्मिक मार्ग में जुड़ जाइए। आपके लिए अच्छा होगा। माधव का नाम जपने से मनुष्य वह प्राप्त कर सकता है जो अन्यथा अप्राप्य है। चिंता मत कीजिए, बस जाप करते रहिए, भगवान सब संभाल लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 39:18 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1480 क्या निकट भविष्य में कोई 'कथा' (प्रवचन/सत्संग) होने की संभावना है, जहाँ हम मिल सकें?

उत्तर: ओडिशा में दो कथाएँ होने वाली हैं: एक अक्टूबर में और एक नवंबर में। एक नयागढ़ में होगी और दूसरी केंदुझर (क्योंझर) में। सभी भक्त मिलेंगे। अधिकांश ओड़िया भक्तों से जुड़ने का अवसर होगा, क्योंकि यह ओड़िया कथा है। ओडिशा में इस धारा से जुड़े हज़ारों भक्त इसमें सम्मिलित होंगे और वहाँ मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:43 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1481 उनकी तिथियाँ अभी घोषित नहीं हुई हैं, ठीक है न?

उत्तर: एक अक्टूबर में होगा और दूसरा नवंबर में।

► यह उत्तर सुनें · 44:16 · 18 अगस्त 2023

प्रश्न 1482 मैं कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में भीषण आग देख रहा हूँ, और यहाँ अमेरिका में हम अग्नि-वर्षा और तूफ़ानों का अनुभव कर रहे हैं, जैसे वह तूफ़ान जिसने हवाई में पूरे एक शहर को नष्ट कर दिया। क्या यह सब इस बात का प्रमाण है कि भविष्यवाणी किया गया संसार का विनाश आरंभ हो चुका है?

उत्तर: अरे बेटा। भविष्यवाणियों के अनुसार सारे वन जल जाएँगे, और अग्नि इतने प्रचंड रूप से विनाश करेगी कि सम्पूर्ण जलवायु ही बदल जाएगी। इसमें मनुष्यों और जीव-जन्तुओं के संसार की बहुत बड़ी हानि होगी। और यह कार्य भगवान करेंगे। आपने हमें बहुत अच्छी जानकारी दी है।

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 18 अगस्त 2023

सत्र 88 · प्रश्न 1483–1487

L93 - धर्म - संस्थापना के समय में मनुष्य क्यों अनजान है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 20 अगस्त 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1483 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। जब भगवान राम आए, तो उनके साथ रावण राक्षस बनकर आया। जब भगवान कृष्ण आए, तो उनके साथ कंस आया। तो Kali Yuga में जब भगवान Kalki आएंगे, तो उनके साथ राक्षस कौन होगा?

उत्तर: और उससे मेल खाने वाला राक्षस है... 'म' अक्षर Madhava में है, और 'र' अक्षर राम और रावण में है। इसी प्रकार, इस युग में भी Madhava मृत्यु के विरुद्ध लड़ेंगे। इसके बारे में Bhavishya Purana में लिखा है। उसमें कहा गया है, 'कल्कि रूप धारी में Madhava' (Kalki के रूप में Madhava)। इसका अर्थ है कि जो पहले भगवान आएंगे, उनका नाम Madhava होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:40 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1484 पंडित जी, हमारे सनातन धर्म ने अतीत में कभी यह नहीं कहा कि हम पूरे विश्व में सनातन का ध्वज फहराएंगे। अन्य धर्म, जैसे इस्लाम, पूरे विश्व में फैलने का आह्वान करते हैं, लेकिन हमारे सनातन धर्म ने कभी ऐसा नहीं किया। पहली बार मैंने सुना और जाना कि Bhavishya Malika में यह घोषणा है कि पूरे विश्व में सनातन का ध्वज फहराया जाएगा?

उत्तर: ईसाई धर्म से पहले, अगर हम इतिहास देखें, तो विश्व में सबसे पहले कौन सा धर्म था? इतिहास में लिखा है कि हमारे देश में, ईसा से 600 वर्ष पहले, नंद वंश का शासन था। उससे पहले पूरे विश्व में केवल हिंदू ही थे। और इस पर मैं कुछ प्रकाश डालूँगा। जब युधिष्ठिर राजा बने, तो वे सप्तद्वीप के राजा थे। जब भरत राजा थे, तो पूरे ब्रह्मांड का नाम उनके नाम पर भारत रखा गया। वर्तमान समय के कारण भारत छोटा हो गया है। और Bhavishya Purana में लिखा है कि भगवान नारायण Kalki के रूप में पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना करेंगे। और सभी धर्मों के विलय के साथ केवल सनातन धर्म ही रहेगा; कोई दूसरा धर्म नहीं रहेगा। यह लिखा हुआ है, और Malika के वचन परम सत्य (ब्रह्म तत्त्व) हैं, भगवान का वचन हैं। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। पूरा विश्व सनातन धर्म बन जाएगा। जय महाकाल।

► यह उत्तर सुनें · 23:49 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1485 गुरुजी, मेरे भतीजे ने मुझे भविष्य मालिका के बारे में बताया। मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैंने पहाड़, हरियाली और एक नदी देखी। मैंने राम, लक्ष्मण और सीता को चलते हुए देखा, फिर पाँच पांडवों और कृष्ण को चलते हुए देखा। फिर ऐसा लगा मानो मैं और मेरा पूरा परिवार भगवान कृष्ण के पीछे-पीछे चल रहे हैं। नौकरी के कारण मैं माधव के नाम का जप करने के अलावा अधिक साधना नहीं कर पाता। मुझे आश्चर्य है और समझ नहीं आ रहा कि यह स्वप्न क्या था, मैंने क्या देखा, और इसका अर्थ क्या हो सकता है?

उत्तर: माधव स्वयं ही कल्कि हैं। जब आप भगवान कल्कि की उपासना कर रहे हैं, तो आपको पहले राम अवतार के दर्शन हुए और फिर कृष्ण अवतार के। ऐसा इसलिए, क्योंकि त्रेता युग में राम अवतार हुआ और द्वापर युग में कृष्ण अवतार हुआ। अब कल्कि अवतार का समय है, और कल्कि स्वयं कृष्ण ही हैं। और आपका परिवार... जब आपने माधव के नाम का जप किया, तो भगवान ने आपको संकेत दिया कि, 'देखो, ऐसा होने जा रहा है, और तुम्हारा पूरा परिवार मेरे पीछे रहेगा।' आप पूर्वजन्म में भक्त थे, इसीलिए मैं आपको यह जानकारी दे रहा हूँ। इस पर विश्वास करके आपको धर्म और पवित्रता की इस परंपरा का पालन करना चाहिए और भगवान के धर्म-स्थापना के कार्य में लगना चाहिए। इसीलिए उन्होंने आपको यह दर्शन और संकेत दिया। वे सब कुछ प्रकट नहीं करते, पर संकेत देते हैं। जो भी कृष्ण की उपासना करता है, उसे उनके दर्शन होते हैं, उनकी सुगंध का अनुभव होता है, और उनका सार प्राप्त होता है। भगवान ने किसी को भी पीछे नहीं छोड़ा है। वे एक-एक भक्त को चुनते हैं और उन्हें वह दिखाते हैं जो उन्हें उनके पूर्वजन्मों का बोध कराने के लिए आवश्यक है। उन्होंने आपको भी दिखाया है। आप भाग्यशाली हैं। आप भगवान की शरण में आ गए हैं। माधव के नाम और त्रिकाल संध्या के साथ भगवान की शरण में बने रहिए। आपके जीवन की धारा पवित्र थी, और इस जन्म में यह फिर से पवित्र हो जाएगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:51 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1486 जी, मेरा प्रश्न यह है कि यदि किसी व्यक्ति का भाग्य जन्म से ही उसकी नियति द्वारा निर्धारित है, तो आज तक के हमारे अच्छे कर्मों को देखते हुए, और हमसे हुए किसी भी बुरे कर्म को भी देखते हुए, आज आकर सत्य की इस धारा से जुड़ने पर क्या भगवान फिर भी हमें स्वीकार करेंगे? यही मेरा प्रश्न है।

उत्तर: बहुत सुंदर प्रश्न है, बाबा। यह भगवान की कृपा ही है कि हम भविष्य पुराण पर चिंतन कर रहे हैं। और शास्त्रों में लिखा है कि केवल वे ही, जो भक्त हैं, जो पूर्व में भगवान के भक्त थे, भगवान और भविष्य पुराण का अनुसरण करेंगे। और इस समय भगवान उन्हें अवश्य स्वीकार करेंगे। बस, बाबा, जैसा मैंने बताया है वैसे त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव के नाम का जप कीजिए, भागवत पढ़िए, और भगवान की कृपा आप पर अवश्य होगी। आप सत्य के सैनिक बनेंगे और भगवान की शरण में रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:00 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1487 जब छोटे राज्य बनते हैं, जैसे छत्तीसगढ़ से, तो क्या कोई दैवी भविष्यवाणी है कि इन नए राज्यों के नाम भगवान के नाम पर रखे जाएँगे?

उत्तर: मैंने इस विषय में नहीं पढ़ा है। जो मैंने पढ़ा है, उसके अनुसार मैं आपको बता सकता हूँ कि उसमें 16 मंडलों के निर्माण का उल्लेख है। और भारत फिर से आर्यावर्त बनेगा; भारत का नाम आर्यावर्त होगा। और पूरे विश्व में छोटे-छोटे देश और राज्य होंगे। हमारे देश में भी ऐसा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:20 · 20 अगस्त 2023

सत्र 89 · प्रश्न 1488–1515

L94 - सत्ययुग में नए सूर्य एवं चन्द्र की स्थापना | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 20 अगस्त 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1488 अपने ध्यान में मैंने देखा कि माँ काली प्रकट हुईं, और एक और देवी थीं जो गौर वर्ण की थीं, शायद कोई योगिनी माता। मैं डर गया, यद्यपि मैंने उन्हें दिव्य माताओं के रूप में देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह भगवान के लिए धर्म की स्थापना करने वाली देवी माँ का दर्शन है। वे पापियों का संहार करेंगी। आपको और अधिक सजग रहना चाहिए, धर्म के कार्य करने चाहिए, सत्संग और त्रिकाल संध्या के पवित्र मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। यह दर्शन आपके कल्याण के लिए है। यह अच्छी बात है कि आपको माँ और योगिनी माता का दर्शन हुआ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:30 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1489 'माधव' नाम हमारे हृदय से निकले, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, 'माधव' नाम हृदय से निकले, इसके लिए आपको बार-बार त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और भागवत पढ़ना चाहिए। कुछ दिनों तक 'माधव' नाम का जप कीजिए और कहिए, 'प्रभु, मैं आपकी शरण लेना चाहता हूँ, कृपया मुझे अपनी शरण में ले लीजिए।' फिर कुछ समय में, कुछ ही दिनों में, 'माधव' नाम कंठस्थ हो जाएगा और हृदय से निकलेगा। 'माधव' का जप स्वतः होने लगेगा।

► यह उत्तर सुनें · 03:10 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1490 उदाहरण के लिए, क्या आप हमें दिल्ली पर भविष्यवाणी किए गए परमाणु हमले के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: यह सही है, पर धर्म स्थापना का यह कार्य भगवान कल्कि की इच्छा से ही होगा। सभी शास्त्रों में, जैसे भविष्य पुराण में या जगन्नाथ संस्कृति के पंचसखा, जैसे अच्युतानंद महापुरुष के लेखन में, तिथियाँ, तिथि और नक्षत्र बताए गए हैं। पर वास्तव में, मलिका और भविष्य पुराण पर आधारित हमारा मूल सिद्धांत यह है कि सब कुछ भगवान कल्कि के अधीन है। जब वे चाहेंगे तब होगा। अभी 16 मंडलों का कार्य चल रहा है। भक्तों के एकत्र होने के बाद धर्म स्थापना के सभी बड़े कार्य होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 06:50 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1491 क्या यह अच्छा नहीं होता कि कोई आपके साथ हो?

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि वे चाहें और मुझसे कहें, तो हम उनके साथ कार्य कर सकते हैं। इस विषय में मेरे मन में कोई भेदभाव नहीं है। पर यह उनकी इच्छा पर निर्भर है, मेरी नहीं। और फिर, मेरा उनसे कोई संपर्क भी नहीं है, तो यह कैसे होगा?

► यह उत्तर सुनें · 08:08 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1492 क्या आप इसका विश्लेषण करके हमें बता सकते हैं?

उत्तर: कुछ संत हैं जो मेरे संपर्क में हैं। मैं उनसे इस विषय पर चर्चा करूँगा। यदि आवश्यकता हुई, तो मैं आपको अवश्य बताऊँगा।

► यह उत्तर सुनें · 09:57 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1493 मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि यदि जनसंख्या 840 करोड़ है और उसका एक-चौथाई भाग बचेगा, तो क्या इसका अर्थ यह है कि 212 करोड़ लोग शेष रहेंगे?

उत्तर: माधव, देखिए, एक-चौथाई... यदि 840 को 4 से भाग दें, तो 212 करोड़ होता है। तीन गुना करने पर 636 करोड़। 636 करोड़ लोगों तक के लिए कुछ नहीं लिखा है। और चौथा भाग, जो 212 करोड़ है, वे लोग शेष रहेंगे। यह संख्या बढ़ सकती है, और इसके घटने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि जो दैवी भविष्यवाणी दी गई है वह अटल रहेगी। यदि अन्य धर्मों के लोग प्रचार के माध्यम से इस मार्ग पर आते हैं, तो यह संख्या थोड़ी बढ़ सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 11:27 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1494 जगन्नाथ मंदिर के शिखर पर जो पंचरंगी ध्वजा है, वह कब फहराई जाएगी?

उत्तर: कभी-कभी अनेक रंगों की ध्वजाएँ फहराई जाती हैं; कभी सफेद, कभी पीली, हरी और लाल भी फहराई जाती हैं। जब भगवान सुधर्म सभा की स्थापना करेंगे, और जब भगवान कल्कि जगन्नाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करेंगे, तब वह पंचरंगी ध्वजा भगवान के मंदिर पर पुनः फहराई जाएगी। आने वाले युग में यह होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:24 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1495 क्या स्त्रियाँ अपने मासिक धर्म के समय अपवित्र मानी जाती हैं, और क्या वे उस समय धार्मिक कार्य कर सकती हैं?

उत्तर: इस संसार में कुछ भी स्वभाव से अपवित्र या पवित्र नहीं है। स्त्री सदैव पवित्र है। परंतु अपने मासिक धर्म के समय उसे मंदिर या पूजा-कक्ष में नहीं जाना चाहिए, और उस समय उसे भागवत नहीं पढ़ना चाहिए। फिर भी, वह दुर्गा माधव स्तुति और माधव नाम का जप अन्य स्थानों पर, जैसे अपने शयनकक्ष में, कहीं भी, पवित्र मन और पवित्र शरीर के साथ कर सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 15:01 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1496 भगवान कल्कि अपने भक्तों की रक्षा कैसे करेंगे, और हम उनसे कैसे मिल सकते हैं?

उत्तर: उनका उद्देश्य है भक्तों की रक्षा करना और उन्हें यह सिखाना कि Satya Yuga के नियमों का पालन कैसे किया जाए। भगवान Kalki अपने भक्तों से भक्ति के मार्ग से मिलेंगे। आप भक्ति में आइए, भगवान आपको अवश्य अपने दर्शन देंगे। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए और देखिए क्या होता है। उसी मार्ग का अनुसरण कीजिए। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 15:46 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1497 2018 में कुछ होने वाला था, मुझे ठीक से याद नहीं कि वह क्या था। क्या आप स्पष्ट कर सकते हैं?

उत्तर: Malika ग्रंथों और Bhavishya Purana ग्रंथ के अनुसार, उसमें जिस समय का उल्लेख है, वह सब मैं आपको बताता हूँ। और वही मैंने आपको बताया था, शास्त्रों के अनुसार।

► यह उत्तर सुनें · 16:18 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1498 नमस्ते, मेरा एक प्रश्न है। आजकल बहुत से फ़र्ज़ी गुरु हैं। हम कैसे पहचानें कि किस मार्ग या किस व्यक्ति का अनुसरण करना सही है?

उत्तर: अगर आपका हृदय और लोगों का हृदय कहे कि मैं सही हूँ, तो मेरा अनुसरण कीजिए। ऐसे समय में सही, शुद्ध तत्व से शुद्ध संबंध द्वारा जुड़िए, जो आपका कल्याण करेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं गुरु नहीं हूँ। मैं किसी गुरु परंपरा में नहीं हूँ। मैं किसी को मंत्र नहीं देता। मैं बस यह कहता हूँ कि एक विपत्ति आ रही है, और मानवता बचेगी। मैं सबसे निवेदन करता हूँ कि पहले अपने हृदय से पूछिए। अगर आपका हृदय कहे कि यह सही है, तो उसका अनुसरण कीजिए। अगर आपका हृदय विरोध करे, तो वहाँ कभी मत जाइए, क्योंकि भगवान हृदय के भीतर अंतरात्मा में निवास करते हैं, और भगवान ही सारे सत्य प्रकट करते हैं। हृदय ही भगवान का निर्देश है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 17:00 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1499 क्या यह संभव है कि रावण आज भी जीवित हो?

उत्तर: नहीं माताजी, यह कभी संभव नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिसका वध भगवान राम ने किया हो, वह कभी जीवित नहीं हो सकता। उस समय भगवान राम ने विभीषण से रावण के सारे आवश्यक अंतिम संस्कार करवाए थे। विभीषण भगवान राम के निर्देश पर रावण का अंतिम संस्कार पहले ही कर चुके हैं, तो इसमें सोचने की बात ही क्या है?

► यह उत्तर सुनें · 19:24 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1500 कोई महिला पूजा के माध्यम से लोगों को ठीक कर रही हैं और स्वयं कह रही हैं कि रावण की ममी यहाँ है, इसलिए कोई उस ओर नहीं जाता। वे कहती हैं कि उसे जीवित किया जा सकता है, इसीलिए मैंने आपसे पूछा।

उत्तर: नहीं, ऐसा नहीं है। मैं वही मानूँगा जो हमारे शास्त्रों में, रामायण में लिखा है। कोई शरीर या कुछ और हो सकता है, लेकिन रावण का अंतिम संस्कार हो चुका है, और उसका शरीर पंचतत्त्व में विलीन हो चुका है। हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं, और हम उसी का पालन करते हैं। और अगर आपको मेरी बात अच्छी लगती है और आपका हृदय इसे सत्य मानता है, तो आपके लिए भी इसे स्वीकार करना अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:18 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1501 मैंने भागवत पुराण में पढ़ा कि प्रजापति दक्ष के 10,000 पुत्र और 60 पुत्रियाँ थीं। क्या यह सही है?

उत्तर: देखिए, प्रजापति ब्रह्मा देव के पुत्र थे। और इस समय, Kali Yuga में, दक्ष प्रजापति की पृथ्वी पर शायद कोई भूमिका नहीं है। तो उसका क्या किया जा सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 21:26 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1502 मैं पहले शाकाहारी नहीं थी; मैं मांसाहार करती थी। अब मैं इस मार्ग पर चल रही हूँ, लेकिन अतीत में मैंने मांसाहार किया है। क्या वह गिना जाएगा? क्या मेरी रक्षा होगी?

उत्तर: देखिए माताजी, आपने अतीत में जो कर्म किए हैं उन्हें शुद्ध करने के लिए और अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए, आप अब त्रिकाल संध्या कर रही हैं, भागवत पढ़ रही हैं, और Madhava का नाम जप रही हैं। आपके पिछले कर्म भी धुल जाएंगे, अर्थात् आपको पिछले कर्मों से भी सुरक्षा मिलेगी। और इसके साथ ही आप Satya Yuga की मनुष्य भी बन जाएंगी। कोई समस्या नहीं है। सारे पिछले पाप समय के साथ धीरे-धीरे समाप्त हो जाएंगे, और आपको अच्छा, शुद्ध मन प्राप्त होगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 22:55 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1503 मैंने सपना देखा कि मैं भगवान Jagannath की रथ यात्रा में थी। सब भगवान Jagannath को देख पा रहे थे, पर मैं नहीं देख पा रही थी। फिर भगवान Jagannath ने इशारा किया कि मैं दूसरी ओर जाऊँ, और वहाँ मैंने आपको मशाल पकड़े हुए देखा। आपने कहा, 'मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें भगवान Jagannath के दर्शन करवाने में मदद करूँगा।' तो अब कृपया बताइए, भगवान को पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? उन्होंने हमारा मार्गदर्शन करने के लिए आपको चुना है, तो मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माताजी, अब भगवान Jagannath के मनुष्य रूप में अवतार का समय है। Bhavishya Purana के अनुसार, भगवान ने शायद मुझे कुछ संकेत दिए हैं। त्रिकाल संध्या और जिस मार्ग की मैं बात करता हूँ, वही सच्चा मार्ग है। भगवान ऐसे बहुत से लोगों से कहते हैं, 'देखो, इसका अनुसरण करो।' बात मेरा अनुसरण करने की नहीं है, बल्कि जो तत्त्व मुझे प्राप्त हुआ है वह भगवान का तत्त्व है। और आपका मन, बुद्धि और अंतरात्मा जो कहे, आपको उसी का अनुसरण करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 24:03 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1504 उन्हें शीघ्र पाने के लिए मुझे इसके अलावा और क्या करना चाहिए?

उत्तर: 16 नामों का, 10 अवतारों का, दुर्गा माता स्तुति का और माधव के नाम का जप कीजिए। जितना अधिक जप करेंगे, उतने अधिक दर्शन होंगे, और आपको भगवान कृष्ण जगन्नाथ के दर्शन प्राप्त होंगे। और आपको अनुभूतियाँ भी होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 26:19 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1505 मेरा आपसे एक निवेदन है। जब भी गीत गोविन्द का पाठ हो, तो क्या आप कृपया एक घंटे बाँसुरी बजा सकते हैं?

उत्तर: ठीक है, हम इसे अपने यूट्यूब वीडियो में जोड़ सकते हैं। जो यह ऑनलाइन मीट हो रही है, उसमें हम शुरुआत से ही वह बाँसुरी की धुन जोड़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:38 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1506 पंडित जी, क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकती हूँ? मुझे एक स्वप्न आया जिसमें एक अदृश्य शक्ति मेरे साथ थी। जब उस शक्ति ने अपना मुँह खोला, तो कमरे की हर चीज़, यहाँ तक कि एक आदमी भी, उसके मुँह में समा गया। उसके जाने के बाद, एक स्त्री ने मुड़कर मुझे देखा, और मेरा मुँह खुल गया। काले बादल की तरह वह मेरे मुँह में प्रवेश करने लगी। मैं चीखते हुए जाग गई। फिर मेरे मुँह से ये शब्द निकले कि यह 'काल' जल्द ही हिमालय पर आने वाला है। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, अभी हिमाचल में धर्म की स्थापना के कारण प्रलय का बहुत बड़ा प्रभाव है। आपने जो स्वप्न देखा... भगवान के भक्त के लिए, यदि कोई बाहरी या आसुरी तत्व उन पर आता है, तो उन्हें उसे पकड़ने या स्वयं की रक्षा करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। चूँकि आप भक्ति के मार्ग पर हैं और सत्य की उस धारा का अनुसरण करती हैं जिसकी मैं बात करता हूँ, इसलिए आप उस 'काल' (विनाशकारी शक्ति) को ग्रहण कर सकीं।

► यह उत्तर सुनें · 28:48 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1507 पंडित जी, एक बात और। जब भी मैं किसी हत्या या किसी अन्य अनहोनी की खबर सुनती हूँ, मेरी अंतरात्मा बहुत दुखी हो जाती है। मुझे लगता है कि मैं अपना मुँह खोलकर सब कुछ निगल लूँ, पर लगता है जैसे कोई मेरा मुँह दबाकर बंद कर रहा है। मैं कोशिश करती हूँ, पर खोल नहीं पाती। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: समय से पहले कुछ नहीं होगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए, अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:14 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1508 आपके छह वीडियो देखने के बाद मुझे स्वप्न आया कि मैं एक पहाड़ पर हूँ, चारों ओर पानी है। सभी भक्त वहाँ थे, और दुर्गा माता स्तुति का पाठ हो रहा था। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, मेरे यूट्यूब वीडियो उन्हीं तक पहुँचते हैं जो भक्त हैं। भक्तों के उद्धार के लिए भगवान ने आपको स्वप्न में दिखाया: 'देखो, बाकी सब पानी में डूब रहे हैं, पर तुम भक्तों के साथ एक पहाड़ पर हो, और वहाँ दुर्गा माता स्तुति का पाठ हो रहा है।' यह भगवान का संकेत है कि आप इस मार्ग से जुड़ जाइए, क्योंकि भविष्य में यही होने जा रहा है। भगवान भक्तों को संकेत देते हैं। मैं जो कुछ कहता हूँ, भगवान स्वयं जाकर वह कार्य करते हैं। यह हज़ारों लोगों के साथ हुआ है, और आपके साथ भी हुआ है क्योंकि आप भक्त हैं। यदि आपका मन कहे, तो आप इस मार्ग पर आ सकती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:29 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1509 मैं गुजरात से हूँ और आपको फॉलो करता हूँ। मुझे स्वप्न में भविष्य की घटनाएँ दिखने लगी हैं। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: भविष्य बदल रहा है, कलियुग परिवर्तित हो रहा है, और सत्ययुग आ रहा है, इसलिए आप सबको संकेत मिल रहे हैं। इसका कारण भगवान की कृपा है। और यदि आप पर भगवान की कृपा है और आप भगवान की शरण लेना चाहते हैं, यदि आप भगवान कल्कि की शरण में जाना चाहते हैं, तो यह आपकी इच्छा है, आप जा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:02 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1510 गुरुजी, मैं रीवा, मध्य प्रदेश से हूँ। मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैं एक चौराहे पर खड़ी थी, और एक छोटी लड़की ने मुझसे कहा कि वहाँ मत खड़ी हो। फिर एक आदमी ने मुझे मंदिर ले चलने को कहा, पर रास्ते में वह दाढ़ी वाले एक 'मलिक' में बदल गया। वह मुझे एक घर में ले गया, और मुझे लगा कि वह मेरी बलि दे देगा। अंदर, मुझ पर देवी आ गईं और मैं हवा में उठकर घूमने लगी। मैंने कई दिव्य मूर्तियाँ देखीं, जिनमें एक मुस्कुराते हुए गणेश जी भी थे। इस स्वप्न का क्या संकेत है?

उत्तर: आदिशक्ति माँ द्वारा मानव जाति के महाविनाश का समय आ रहा है। भक्त माँ आदिशक्ति द्वारा बचाए जाएँगे। यह भविष्य में होने जा रहा है, और ऐसे दर्शन के माध्यम से आपको समझना चाहिए कि वह समय आ रहा है। शायद भगवान ने आपको यह इसलिए दिखाया ताकि आप त्रिकाल संध्या के उस मार्ग का अनुसरण करें जिसकी मैं बात करता हूँ। उसका पालन करने से आप धन्य होंगी, और आप भी सत्ययुग में जा सकेंगी। क्योंकि जब भगवान किसी को ऐसे संकेत और अनुभव दिखाते हैं, तो इसका अर्थ है कि वह इस कार्य का अंग बनने के योग्य है।

► यह उत्तर सुनें · 36:03 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1511 क्या मैं ऑनलाइन सत्संग समूह से जुड़ सकता हूँ?

उत्तर: नंबर नीचे विवरण (डिस्क्रिप्शन) में दिया गया है। उस नंबर पर मोहन को फोन कीजिए, या वहाँ जो भी हो। वे आपको मध्य प्रदेश मंडल (समूह) के ऑनलाइन सत्संग में जोड़ देंगे। साथ ही पुस्तक पढ़िए; आपको बहुत आनंद मिलेगा। आपको सभी भक्तों का संग भी मिलेगा। इससे आपका संकल्प और विश्वास बढ़ेगा, और भगवान की कृपा भी बढ़ेगी। आप आनंदित रहेंगे। जय जगन्नाथ, जय श्री महादेव।

► यह उत्तर सुनें · 39:46 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1512 बाबा, क्या आप कृपया हमें बंगाली में बता सकते हैं कि वे क्या कह रही हैं?

उत्तर: अभी जो कोलकाता के लोग हमारे साथ बैठे हैं, उन्हीं से मैं आपको बतवाता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 41:39 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1513 प्रभु, मैं एक बहुत ही विचित्र स्वप्न के बारे में पूछना चाहता हूँ। मैंने भगवान जगन्नाथ को उनके कल्कि रूप में और माँ दुर्गा की पूजा होते देखा। भगवान कल्कि ने मुझसे कहा कि अपने भक्तों की रक्षा के लिए किसी से युद्ध करो, और मैंने वैसा ही किया। मैंने एक विशाल राक्षस का संहार भी किया। इस स्वप्न के बाद मुझे विचित्र-सा लग रहा है। छोटी-छोटी गलतियों पर मुझे बहुत क्रोध आ जाता है, यहाँ तक कि लगता है मैं अपने वश में नहीं हूँ। मैं सारी प्रार्थनाएँ करता हूँ, पर इस क्रोध को नियंत्रित नहीं कर पाता। मेरा परिवार आध्यात्मिक नहीं है और मेरी भक्ति का उपहास करता है। भगवान मेरे हृदय में कहते हैं कि 'मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ', पर यह नहीं बताते कि कब। मेरे साथ यह सब क्यों हो रहा है?

उत्तर: आपकी पढ़ाई में अभी समय शेष है, इसलिए पढ़िए और अपने पैरों पर खड़े होइए, क्योंकि धर्म का कार्य करने के लिए अपनी सामर्थ्य भी आवश्यक है। भगवान से प्रार्थना कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, 16 नामों का जप कीजिए, माधव के नाम का जप कीजिए, और भागवत पढ़िए। भगवान आपको आशीर्वाद देंगे, और आपके मन की समस्याएँ अवश्य दूर हो जाएँगी। भगवान की गोपी लीला बार-बार पढ़िए। आपको अपने पैरों पर खड़ा होना ही होगा, क्योंकि धर्म की स्थापना का समय 2032 तक है। हमें उस समय की प्रतीक्षा करनी है। मैं भी भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपको ऐसे स्वप्न न आएँ और भगवान आपको इस कष्ट से मुक्त करें। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 43:55 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1514 नहीं हो पा रहा, प्रभु जी। मैं पढ़ाई नहीं कर पा रहा हूँ।

उत्तर: जो मैंने कहा है, वही कीजिए। 16 नामों का जप कीजिए। भगवान जगन्नाथ आपको आशीर्वाद देंगे। जो कुछ आपके मन में आ रहा है, वह शांत हो जाएगा। आज से ही देखिएगा, ऐसा होगा। मैं भी भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे आपकी रक्षा करें। आपको कुछ समय चाहिए। अभी समय नहीं आया है, इसलिए पढ़िए, अपना स्नातक पूरा कीजिए, कंप्यूटर कोर्स कीजिए। अगर आपको नौकरी चाहिए तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं, हम आपको नौकरी दिलाने में मदद कर सकते हैं। नौकरी मिल जाने पर भगवान की भक्ति और पूजा में लगे रहिए। यह मनुष्य जीवन भगवान के लिए है।

► यह उत्तर सुनें · 53:04 · 20 अगस्त 2023

प्रश्न 1515 पंडित जी, यह जो युद्ध हो रहा है, क्या यह आवश्यक है?

उत्तर: पृथ्वी पर एक अंधकारमय समय आ रहा है, और लोग धर्म की ओर नहीं मुड़ रहे हैं। वे सब 'मेरे-तेरे', हिंसा, क्रोध, अहंकार और पाप में डूबे हुए हैं। लोग पशुओं को मारकर खाते हैं। बूढ़े माता-पिता वृद्धाश्रमों में रहते हैं। गायों का वध होता है। लोगों ने पृथ्वी को पाप के रक्त से नहला दिया है। यदि मनुष्य धर्म की ओर नहीं मुड़े, तो उन्हें उनके कर्मों का फल देने के लिए भगवान और समय नहीं देंगे। जो होगा वह भगवान की इच्छा है। परंतु यदि लोग पाप से विरत हो जाएँ, तो शायद युद्ध भी रुक जाए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 54:31 · 20 अगस्त 2023

सत्र 90 · प्रश्न 1516–1530

L97 - तृतीय विश्व युद्ध के बाद राजतंत्र स्थापित होगा ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 3 सितम्बर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1516 विवाह की व्यवस्था है, तो जब हम विवाह करते हैं, तो सामने वाले व्यक्ति में हमें कौन-से गुण देखने चाहिए?

उत्तर: देखिए, संत तुलसीदास महाराज ने रामचरितमानस रामायण में... लेकिन आज उस विचारधारा में परिवर्तन आ गया है... थोड़ा-सा परिवर्तन... जो सभ्यता के लिए हितकर नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता...

► यह उत्तर सुनें · 09:38 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1517 मेरे दो छोटे प्रश्न हैं... अभी जो हो रहा है वह यह कि हम अक्सर देखते हैं कि वे अधिक धार्मिक हो गए हैं, जैसे उदाहरण के लिए इस्लाम में...

उत्तर: नहीं, नहीं, देखिए... एक समय आएगा जब एक घंटे में 39 लाख बिजलियाँ गिरेंगी। यदि प्रत्येक बिजली एक व्यक्ति की जान ले, तो 39 लाख लोग मर जाएँगे। क्योंकि यह युग परिवर्तन है, लोग धर्म की अवहेलना करते हैं। अधिकतर तो बस सेवा है, देवताओं की उपासना नहीं; न धर्म है, न श्रद्धा। लोग अपने ही माता-पिता की हत्या कर देते हैं। धर्म की स्थापना आवश्यक है। जो सनातन धर्म में विश्वास रखते हैं, जो भक्त हैं, जो भगवान विष्णु के प्रति समर्पित हैं, उनके लिए सत्य और शांति प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 12:33 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1518 मेरा नाम विनोद कुमार है, भिवाड़ी, राजस्थान से। मुझे 2005 और 2006 के बीच एक स्वप्न आया था, जिसमें मैंने एक गाँव के खेत में भगवान श्री हरि की एक मूर्ति देखी। मूर्ति की आँखों पर पट्टी बँधी हुई थी। जब मैं वहाँ गया, तो उन्होंने कहा, 'अब मूर्ति की आँखों से पट्टी हटा दो।' फिर मेरे सामने पट्टी हटा दी गई, और मेरी नींद खुल गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: 2005 तक भगवान कल्कि एक प्रकार से आँखों पर पट्टी बाँधे हुए थे। और शास्त्रों में लिखा है कि कल्कि अवतार 2005 के बाद प्रकट होंगे। यही कारण है कि आपको यह दर्शन हुआ।

► यह उत्तर सुनें · 16:25 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1519 मैं आँखें बंद करके पढ़ रहा था, और मैंने भगवान कृष्ण को उनके बाल रूप में देखा, पूरी तरह नीलमणि जैसे नीले और एक प्रकाश के भीतर, और वे चल रहे थे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: कल्कि अवतार... इस स्वप्न का अर्थ है कि भगवान कल्कि का समय अब चल रहा है, उन भक्तों के लिए जो उनके अवतार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:50 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1520 पिताजी, कुंती देवी को आशीर्वाद देने कौन आए थे, और जब पांडव वनवास में थे, तब धर्मराज भी उनकी परीक्षा लेने आए थे। तो वे कौन थे?

उत्तर: वे भी कर्म से बंधे हुए थे... जो भी देवता पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, वे मनुष्य की रीति के अनुसार ही जीवन जीते हैं। देखिए, इस समय भगवान कल्कि भी मनुष्य रूप में आएंगे तो वे भी आने वाले दुख और पीड़ा का अनुभव करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:10 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1521 मैं लगभग डेढ़ महीने से संध्या कर रहा हूँ और भागवत पढ़ रहा हूँ। मुझे अपने कमरे में एक प्रकाश का दर्शन हुआ, और उसमें मैंने एक व्यक्ति को देखा। वह प्रकाश चंद्रमा जैसा उज्ज्वल था, और मैंने एक चेहरा देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जो भक्ति का अभ्यास करते हैं, भगवान उन्हें दर्शन देते हैं। कुछ लोगों को देवताओं के माध्यम से भगवान का दर्शन होता है, तो आप यह समझ गए हैं। और संसार के लिए, एक स्वतंत्र भारत का निर्माण होगा, और हमारा सुधार होगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:42 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1522 नई पीढ़ी को विवाह करना चाहिए या नहीं, या उन्हें केवल भक्ति में ही रहना चाहिए?

उत्तर: विवाह करना आवश्यक है। सभी को गृहस्थ के रूप में रहना चाहिए और त्रिकाल संध्या का पालन करना चाहिए। मनुष्य के लिए धर्म को थामे रखना और अपना कर्म करना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 33:06 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1523 एक शास्त्र के आठवें अध्याय में भगवान श्री हरि के 24 अवतारों का उल्लेख है। 13वाँ अवतार चक्रधर अवतार है। मैं उनके बारे में जानना चाहता हूँ, ये चक्रधर कौन हैं जिनकी बात की जा रही है?

उत्तर: पहली बात यह है कि जिस दिन से चक्र प्रभु के हाथ में आया, उसी दिन से वे चक्रधर कहलाए। उस समय से आज तक चक्र प्रभु के हाथ में है। कालचक्र पापियों का नाश करता है, और सुदर्शन चक्र भक्तों की रक्षा करता है। इसीलिए प्रभु का यह नाम है।

► यह उत्तर सुनें · 40:33 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1524 जी, मैं भगवान जगन्नाथ की कथा जानना चाहता हूँ। क्या आप पूरी कथा बता सकते हैं कि भगवान जगन्नाथ की मूर्ति कैसे प्रकट हुई, इत्यादि?

उत्तर: इस क्षेत्र में प्रभु, आदि और सनातन ब्रह्म के रूप में, जगन्नाथ बने। भगवान जगन्नाथ के क्षेत्र में कई युग और अनंत कल्प बीत चुके हैं, फिर भी जगन्नाथ जी आज भी वहीं हैं। सभी अवतार भगवान जगन्नाथ से ही उत्पन्न होते हैं। इसका प्रमाण यह है कि जब भगवान कृष्ण ने देह त्यागी, तो उनका तत्व मूर्ति के भीतर स्थापित किया गया। सभी अवतार वापस उन्हीं में समा जाते हैं। जगन्नाथ स्वयं निराकार परम ब्रह्म हैं।

► यह उत्तर सुनें · 41:56 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1525 मैं पूछ रहा था, क्या आप उनकी मूर्ति के बारे में बता सकते हैं, जो लकड़ी की बनी है?

उत्तर: उस पर मैं एक एपिसोड बनाऊँगा, जो कल्कि अवतार श्रृंखला का हिस्सा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:51 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1526 आज सुबह 4:40 बजे मुझे एक सपना आया जिसमें किसी दूसरे देश के हवाई जहाज़ थे, कोई बाहर बंदूक लिए खड़ा था पर उसने हम पर गोली नहीं चलाई, और हमने गेट बंद कर रखा था। मैंने टीवी पर 'आपातकाल' (इमरजेंसी) की घोषणा जैसी एक आवाज़ भी सुनी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, यह संकेत विश्व युद्ध का संकेत है। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, जो भक्ति और पवित्रता के साथ माधव के शरणागत हैं, भगवान ने उन्हें सपने में यह दिखाया है।

► यह उत्तर सुनें · 47:19 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1527 पंडित जी, यदि पूरा परिवार जाता है, तो क्या वे साथ रहेंगे या वहाँ जाने के बाद अलग हो जाएँगे?

उत्तर: सभी सत्य युग के व्यक्ति बन जाएँगे, और आनंद होगा। परिवार के साथ रहने में कोई समस्या नहीं है, पर आपको यह चिंता अपने मन से निकाल देनी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 50:49 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1528 भारत की वर्तमान राजनीति के संदर्भ में, जिस तरह की अभद्र भाषा का प्रयोग हो रहा है, उसे देखकर और सुनकर बहुत पीड़ा होती है। यह कब सुधरेगा? हमें शांति कब मिलेगी? यह सारा तनाव कब शांत होगा?

उत्तर: इस समय संसार के विनाश का कार्य चल रहा है। मनुष्यता से सारी नैतिकता, नियम और सदाचार लुप्त हो रहे हैं। अच्छा समय 2032 के बाद आएगा। तब तक यह दौर बिना किसी बदलाव के चलता रहेगा। बल्कि यह बहुत बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:24 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1529 मेरे बेटे को आँखों की बीमारी है। पिताजी, कृपया अपना आशीर्वाद दीजिए ताकि मेरे बेटे की दृष्टि ठीक हो जाए और वह सब कुछ स्पष्ट देख सके।

उत्तर: अपने बेटे को श्रीमद्भागवत और त्रिकाल संध्या सुनवाइए। संसार के सभी मनुष्य स्वस्थ रहें। सबसे बड़ा तत्व यही है: यदि वह संध्या और भागवत सुनेगा, तो वह सीधे भगवान से जुड़ जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 54:31 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1530 जब भी मैं सही मार्ग पर चलने का प्रयास करता हूँ, बहुत से लोग मुझे पीछे खींच लेते हैं। वे मुझे क्रोधित कर देते हैं, और बाद में मैंने जो किया उसका मुझे पछतावा होता है। तो क्या आप इसके लिए कुछ सलाह दे सकते हैं?

उत्तर: जो व्यक्ति परेशानी दे रहा है, वही मित्र बन जाएगा। देखिए, समय बुरे दौर की ओर बढ़ रहा है, और बहुत कम समय बचा है। इस संसार में एक ही धर्म है, एक ही मार्ग है, सुधर्म महासंघ, और एक ही नियम है, त्रिकाल संध्या। इसका पालन करके आप अपने जीवन और अपने परिवार को जन्म-मृत्यु से बचा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:21 · 3 सितम्बर 2023

सत्र 91 · प्रश्न 1531–1555

L96 - सनातन धर्म का तत्त्व क्या है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 3 सितम्बर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1531 कई दिनों से मुझे स्वप्न में माँ वैष्णो देवी दिखाई दे रही हैं। कभी वे मुझे अपने अष्टभुजा रूप में दर्शन देती हैं, और कभी मुझे भगवान कल्कि और माँ वैष्णो देवी दोनों अर्धनारीश्वर (आधा पुरुष, आधा स्त्री) रूप में दिखाई देते हैं। इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: भगवान दर्शन देते हैं। कहा जाता है कि माँ के दर्शन होते हैं, और यदि कोई बहुत भाग्यशाली हो, तो उसे महादुर्गा के दर्शन होते हैं। माँ दुर्गा ही भगवान माधव कृष्ण हैं; माँ दुर्गा ही वैष्णो देवी हैं। दोनों को एक साथ देखना... मैं बस इतना ही कहूँगा: माँ और भगवान धर्म स्थापना के कार्य में लगे हुए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 10:01 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1532 मुझे एक स्वप्न के बारे में पूछना था। उसमें मैं और मेरे पति चल रहे थे, और आप भी वहाँ थे। किसी ने आपसे पूछा कि भगवान कैसे होते हैं। आपने मक्के के दो बड़े भुट्टे लिए, एक छोटा, उसे खोलकर कहा कि भगवान ऐसे हैं, भगवान विष्णु जैसे। आपने छोटा वाला दिखाकर कहा कि भगवान वैसे ही हो जाते हैं जैसा आप उन्हें सोचना चाहें। फिर आपने मुझसे कहा, 'आओ बेटी, इस मार्ग पर सब नहीं आते।' आपने मुझे चार पवित्र तालाब दिखाए और कहा, 'यहाँ सब नहीं आते। तुम आई हो, तो तुम्हारा स्वागत है।' बस इतना ही आपने कहा। क्या आप इसके बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: इसका अर्थ है कि आपको भगवान के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। यह किसी माध्यम से प्राप्त होगा, और इसी प्रकार भक्तों की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 15:37 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1533 पंडित जी, मेरा कोई प्रश्न नहीं है, बस कुछ जानकारी देनी है। कहा जाता है कि नीम के पेड़ में [बेमौसम] फल नहीं लगते, लेकिन मैंने एक ऐसा पेड़ देखा जिसमें फल लगे थे। इसका क्या महत्व है?

उत्तर: लिखा है कि बरसात के मौसम में नीम के पेड़ में फल और फूल लगेंगे। यह सत्य की स्थापना के लिए सृष्टि के निर्माण का संकेत है। जो नहीं मानते, वे आने वाले समय में यह परिवर्तन देखेंगे। भगवान रक्षा के लिए इसका प्रचार कर रहे हैं। आम के पेड़ों में बेमौसम फल लगेंगे, और धूप वाले दिनों में वर्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:21 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1534 जब मैं श्री राम या हनुमान जी का नाम जप रही होती हूँ, तो आँखें बंद होने पर मेरे मुख से अपने आप माँ दुर्गा का नाम निकलने लगता है। ऐसा अपने आप क्यों होता है? मैं एक नाम का जप शुरू करती हूँ, लेकिन जब आँखें खोलती हूँ तो पता चलता है कि मैं माँ दुर्गा का नाम जप रही हूँ।

उत्तर: सभी अलग-अलग नामों में से, आपको भगवान माधव का नाम जपना चाहिए। क्योंकि इस समय भगवान राम और राधा रानी की उपासना करनी चाहिए। उनके मंत्रों का जप करें।

► यह उत्तर सुनें · 20:34 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1535 क्या भारत में राष्ट्रीय आपातकाल जैसी स्थिति बन सकती है? 2024 में भारत की स्थिति कैसी रहेगी?

उत्तर: गंभीर रहेगी। और उसके साथ ही भारत में भूकंप आएंगे; बड़े भूकंप भी आ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 22:25 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1536 मैंने यह भी पढ़ा कि इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ काम करना बंद कर देंगी। क्या यह 2025 तक हो जाएगा?

उत्तर: उसमें अभी बहुत समय है। उसकी चिंता मत कीजिए; वह अपना काम कर देगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:53 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1537 नासा की वेबसाइट पर लिखा है कि 2025 में एक बड़ा सौर तूफान पृथ्वी से टकराएगा। भविष्य मालिका के अनुसार यह सौर तूफान कब आएगा?

उत्तर: देखिए, यह इसी वर्ष आ सकता है, या '25 में भी आ सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 25:35 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1538 यूनाइटेड किंगडम में, पिछले सप्ताह इंग्लैंड, आयरलैंड और स्कॉटलैंड के सभी हवाई अड्डे एक दिन के लिए बंद कर दिए गए थे क्योंकि कंप्यूटरीकृत ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम फेल हो गए थे। इसका क्या कारण था?

उत्तर: देखिए, वह एक दिन के लिए बंद हुआ था। 2024-25 में आप उसे 2, 3, 4, यहाँ तक कि 5 दिनों तक बंद देखेंगे। इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क सिस्टम सब ठप हो जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:42 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1539 यदि दुर्गा स्तुति का पाठ करते समय कोई गलती हो जाए, तो क्या इसी कारण माँ ने दर्शन दिए? या यह भगवान की ओर से कोई चेतावनी है?

उत्तर: दुर्गा स्तुति... हाँ, इसीलिए थोड़ी समस्या है।

► यह उत्तर सुनें · 29:37 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1540 21 सितंबर की रात मुझे एक सपना आया कि बहुत भारी बर्फबारी हो रही है। मैं सबसे कह रही थी कि अपना सामान प्लास्टिक से ढक लो ताकि वह खराब न हो जाए। फिर अचानक सुबह 3:55 बजे मेरी नींद खुल गई। मैं समझ नहीं पाई कि इस सपने का क्या अर्थ है।

उत्तर: और उससे पहले, यह होगा। यह प्रभु की ओर से एक संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 30:32 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1541 जब मैं 22 वर्ष की थी, तब ब्रह्म मुहूर्त में मुझे एक दृश्य दिखा जिसमें मैंने देखा कि धरती फट गई है। एक सफेद प्रकाश आकाश की ओर उठा, और शंख तथा घंटियों की ध्वनि गूंजने लगी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह इसलिए है कि हमें आने वाले युग को जानने की शक्ति मिले, क्योंकि पूर्ण श्रद्धा और भक्ति माधव के प्रति होनी चाहिए। प्रभु ने आपको यह दिखाया, और आपको अब भी उनके संकेत मिल रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:02 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1542 मुझे सुबह लगभग 6 बजे एक सपना आया जिसमें एक पिताजी कुर्सी पर बैठे थे। उन्होंने कहा, 'आओ बेटी, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।' उन्होंने मुझे अपनी गोद में बिठाया और 'माधव' नाम जपने को कहा। मैंने तीन बार ऐसा किया, और फिर सपना टूट गया। इसका क्या अर्थ है, पिताजी?

उत्तर: इसका अर्थ यह है, बेटी, कि तुम्हें इस महान नाम का जप करना चाहिए। इस समय प्रभु आने वाले युग में मानवता के कल्याण के लिए यही चाहते हैं। माधव नाम का जप मुक्ति देगा और संकटों से उद्धार करेगा। त्रिकाल संध्या करो, भारत के नाम का जप करो, और ऑनलाइन सत्संग में बनी रहो। प्रभु ने यही प्रकट किया है और इससे अधिक कुछ नहीं कहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 35:25 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1543 मेरे नर्मदेश्वर शिवलिंग की मेरी दैनिक पूजा का नियम है। मैंने त्रिकाल संध्या हाल ही में शुरू की है। मेरा प्रश्न यह है कि मैं पहले अपनी दैनिक पूजा करूं या पहले त्रिकाल संध्या?

उत्तर: संध्या सही समय पर करें। उसके बाद आप भगवान शंकर की पूजा कर सकते हैं; कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 37:59 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1544 गुरुजी, यहाँ औरों की तरह मुझे भी पिछले दो-तीन वर्षों में कई अनुभव और दृश्य हुए हैं। मैंने सपनों में दो सूर्यों को मिलते हुए, सूर्य और चंद्रमा को एक साथ, एक उल्कापिंड को गिरते हुए, और भूकंप देखे हैं। इन सबका क्या अर्थ है?

उत्तर: हिमाचल में प्रदीप नाम का एक भक्त है। जब उसके पिता प्रवचन के लिए गए थे, तब उसका परिवार घर पर अकेला था। ठीक उसी समय हिमाचल में सारे रास्ते बंद हो गए, और पानी तथा बिजली कट गई। वह छोटे बच्चों के साथ अकेला था। लेकिन चूँकि वह मार्ग पर था, इसलिए उसके लिए सब कुछ ठीक हो गया। (वक्ता का आशय है कि ये दृश्य चेतावनियाँ हैं और इस मार्ग पर चलने से सुरक्षा मिलती है।)

► यह उत्तर सुनें · 38:47 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1545 कुछ दिन पहले मैंने सपना देखा कि मैं रामचरितमानस पढ़ रहा हूँ। ऐसा दो बार हो चुका है। इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर: बैठकर 5, 7 या 9 दिनों में इसका पाठ पूरा करें, और फिर गायों तथा अन्य जीवों को कुछ दान करें। वह शुभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:01 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1546 पिताजी, मैं यह कैसे करूँ?

उत्तर: नंबर पर संपर्क करें।

► यह उत्तर सुनें · 45:12 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1547 विश्व युद्ध के बारे में क्या?

उत्तर: जब होना होगा, तब देखा जाएगा। यदि भगवान कल्कि चाहें, तो वे इसे भविष्यवाणी किए गए समय से पहले भी करा सकते हैं। समय अलग हो सकता है; यह पहले भी हो सकता है और बाद में भी। हम भगवान नहीं हैं, केवल उनके भक्त हैं। यह निश्चित रूप से होगा, परंतु समय एक वर्ष पहले या बाद खिसक सकता है, या यह ठीक उसी समय पर हो सकता है जो भविष्यवाणी में बताया गया है।

► यह उत्तर सुनें · 46:12 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1548 मैं कई मित्रों और भक्तों को इस बारे में बताता हूँ। कुछ विश्वास करते हैं, पर जो नहीं करते उनके बारे में मैं क्या करूँ?

उत्तर: देखिए, जिन आसुरी प्रवृत्ति के लोगों का विनाश इस धरती पर लिखा है, वे मालिका पर विश्वास नहीं करेंगे। जिसका बचना लिखा है, वही इसे स्वीकार करेगा। आप बस लोगों को सूचित कर दीजिए कि समय आ रहा है। उसके बाद यह उनकी इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 47:24 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1549 घर में बच्चे थोड़ा-बहुत सुनते हैं और कभी-कभी विश्वास भी करते हैं, पर वे धारा से नहीं जुड़ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि वे भी जुड़ें। कृपया आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: वे भजन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:05 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1550 क्या हम पाठ सुबह 4 या 5 बजे कर सकते हैं?

उत्तर: कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:32 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1551 पूरी दुनिया में कई नए हिंदू मंदिर बन रहे हैं, जैसे दुबई, अबू धाबी में, और अयोध्या में विशाल राम मंदिर। जब यह सारा उथल-पुथल होगा, तो क्या इन मंदिरों को भी नुकसान पहुँचेगा?

उत्तर: संरचनाएँ इसे सह नहीं पाएँगी। भगवान विश्वकर्मा के माध्यम से ब्रह्मांड का पुनर्निर्माण करेंगे। लोग भगवान कृष्ण और राम की शरण में आएँगे, और यह एक माध्यम बनेगा, परंतु संरचनाओं में बहुत परिवर्तन होंगे क्योंकि Kali Yuga का कोई तत्व शेष नहीं रहेगा। यह वंश पुराण में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 49:43 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1552 पश्चिम बंगाल के मायापुर में एक विशाल हिंदू मंदिर बन रहा है, जिसमें फोर्ड कंपनी के मालिक जैसे लोगों का बहुत बड़ा निवेश है। क्या वह मंदिर भी नष्ट हो जाएगा?

उत्तर: संरचना कितनी भी बड़ी हो या तत्व कितना भी महान हो, Kali Yuga की सभी परंपराएँ नष्ट हो जाएँगी। और जहाँ तक भगवान के मंदिर की बात है, उसे रखना है या नहीं, यह भगवान की इच्छा है। यह उन्हीं की इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 51:35 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1553 आपने 13 मुस्लिम देशों के एक गठबंधन का ज़िक्र किया था जो भारत से युद्ध करेगा। वे ऐसा कब कर सकते हैं?

उत्तर: इन 13 मुस्लिम देशों ने पाकिस्तान और तुर्की के साथ गठबंधन बनाया है। ये सब मिलकर भारत के विरुद्ध युद्ध करेंगे। युद्ध तब होगा जब भगवान कल्कि की इच्छा होगी, और उस युद्ध में वे नष्ट हो जाएँगे। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसीलिए हम कहते हैं, विश्व के कल्याण के लिए कार्य करें।

► यह उत्तर सुनें · 53:36 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1554 मैं पश्चिम बंगाल से हूँ। मालिका ग्रंथ का हिंदी, अंग्रेज़ी में अनुवाद हो चुका है और अब आपकी अनुमति से बंगाली में हो रहा है। क्या मैं बंगाली अनुवाद को पूरे बंगाल में ऑनलाइन PDF के रूप में उपलब्ध करा सकता हूँ ताकि सभी लोग इसे पढ़ सकें?

उत्तर: सारा कार्य हो जाएगा, क्योंकि इसमें...

► यह उत्तर सुनें · 54:45 · 3 सितम्बर 2023

प्रश्न 1555 महाराष्ट्र के नागपुर में आपका कार्यक्रम कब है?

उत्तर: प्रवचन दोनों जगह होगा, और नासिक में भी होने जा रहा है। अभी पंजाब में कार्यक्रम है, और समय आने पर राजस्थान में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 55:53 · 3 सितम्बर 2023

सत्र 92 · प्रश्न 1556–1568

L98 - श्री अच्युतानंद दास जी के 13 अवतार? | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 26 सितम्बर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1556 भक्ति में प्रगति कैसे की जा सकती है?

उत्तर: यह आनंददायक प्रश्न है। महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है, 'जब चेतना शुद्ध होती है, तब श्रद्धा का जन्म होता है; श्रद्धा से साधना और सिद्धि आती है।' भक्ति के उदय से पहले मन का शुद्ध होना आवश्यक है। श्रीमद्भागवत के पठन और त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों में की जाने वाली प्रार्थना) के अभ्यास से लोगों के मन शुद्ध हो सकते हैं। जब चेतना शुद्ध होगी, तो भगवान के प्रति प्रेम प्रकट होगा। और श्रद्धा के साथ, भगवान से संबंधित ज्ञान, भक्ति और साधना मन में प्रकट होकर दृढ़ हो जाएगी। इसके बाद, अच्छे कर्म करके मनुष्य शीघ्र ही इस संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसलिए सबसे पहले मन को शुद्ध करें। मन के मैल को धोने के लिए शास्त्र, श्रीमद्भागवत पढ़ें और त्रिकाल संध्या करें। इससे भक्ति आएगी। धीरे-धीरे भक्ति से भाव, भाव से समर्पण, समर्पण से मुक्ति आती है, और मनुष्य भगवान तक पहुँच सकता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:10 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1557 हम भगवान के चरणों में कपूर जलाते हैं न, पंडित जी? मुझे उससे 10 मिनट तक बहुत तीव्र सुगंध आ रही थी।

उत्तर: यह बड़े आनंद की बात है, बेटा। यह भगवान की कृपा है। आज तुम्हें यह दिव्य तत्व प्राप्त हुआ, यह सुगंध जो भक्तों को आती है। यह एक संकेत है। और जो लोग विधिपूर्वक भगवान की उपासना करते हैं, उन्हें यह प्राप्त होता है, विशेषकर आप सब जो इस धारा में हैं। बहुत अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:11 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1558 जैसा कि आपने अपने प्रवचनों में कई बार कहा है कि 2025 से युद्ध और महामारी की संभावना है, क्या इसके संकेत 2024 में भी दिखाई देंगे? यानी क्या इसके लक्षण 2024 से शुरू हो जाएँगे?

उत्तर: देखिए, इसके लक्षण भारत में नहीं हैं। पूरे विश्व में, आप समाचारों में पढ़ रहे हैं कि बड़ी-बड़ी बीमारियाँ उभर रही हैं, बहुत घातक बीमारियाँ आ रही हैं। मैंने बार-बार कहा है कि मानव सभ्यता पर एक विपत्ति आ रही है। और इस विपत्ति से बचाने के लिए, मैं उपाय भी बता रहा हूँ, वे नियम, जिनसे भगवान की कृपा प्राप्त हो सकती है। इसके लिए आपका तैयार होना आवश्यक है। क्योंकि जब विपत्ति आती है, तो हमें अपनी रक्षा करनी होती है। और इस समय सबसे बड़ा मार्ग धर्म का मार्ग और यह पवित्र धारा है। जो इसका पालन करेंगे, उनका भगवान भला करेंगे। यह धारा किसी और तत्व में नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र धारा है। इस धारा के माध्यम से भक्त भगवान को देखते हैं, भगवान उनके स्वप्न में आते हैं, वे भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं, अनेक रूप देखते हैं, और उन्हें इतने अलग-अलग अनुभव मिलते हैं। और इसके माध्यम से लोग अनेक विपत्तियों से बचे हैं। और जो विपत्ति भविष्य में आ रही है... देखिए, माताजी, बीमारी कभी भी आ सकती है। मैं कह रहा हूँ कि 2025 से यह बढ़ेगी, और उससे पहले भी होगी। लेकिन इससे अपनी रक्षा करने के लिए हमें कोई उपाय खोजना चाहिए। और आधुनिक संदर्भ में, जितना हम इसका सामना कर सकते हैं, आध्यात्मिक तत्व ही एकमात्र ऐसा तत्व है जिसके द्वारा हम इसका प्रतिकार कर सकते हैं और भगवान की कृपा से बच सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:04 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1559 जब भी मैं त्रिकाल धारा का अभ्यास करता हूँ, दिन में तीन बार के बजाय कुछ छूट जाता है और मैं केवल दो बार ही कर पाता हूँ। साथ ही, मेरा मन अक्सर अपने ही प्रश्नों और समस्याओं से भटक जाता है। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: देखो बेटा, यह सिर्फ तुम्हारा मन नहीं है। इस समय ग्रह और नक्षत्र बदल रहे हैं। सत्य युग की रचना के लिए, सभी नौ ग्रहों की स्थितियाँ बदल रही हैं। और सभी अपने-अपने स्थान के लिए कार्य करने लगे हैं। सत्य युग का गर्भाधान और तैयारी आरंभ हो चुकी है। इसी कारण सभी मनुष्यों के मन अशांत हो गए हैं। कोई भी मनुष्य इस अशांति से मुक्त नहीं है। तो स्थिति और समय ऐसा ही है। इससे मुक्ति पाने के लिए आपको माधव का नाम जपना चाहिए, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, और भागवत जी पढ़नी चाहिए। इससे मन की अशांति दूर हो सकती है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:15 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1560 जैसा कि हमें बताया गया है, सात दिनों तक अंधकार का समय रहेगा। उस समय कौन-सी घटनाएँ घटित होंगी?

उत्तर: देखिए, वह समय अभी नहीं है; वह भविष्य में होने वाला है। भविष्य पुराण में लिखा है कि यह भविष्य में एक शुभ समय पर होना निश्चित है। जब सात दिन और सात रात अंधकार रहेगा, उस समय भगवान कल्कि पृथ्वी पर नए सूर्य देव और चंद्र देव की स्थापना करेंगे। और उस सात दिन के अंधकार के माध्यम से एक नए युग की रचना का कार्य आरंभ होगा। नए चंद्रमा और नए सूर्य की स्थापना के बाद, सत्य युग का वातावरण और जलवायु बनेगी। लेकिन उन सात दिनों के अंधकार के दौरान अनेक उपद्रव और विपत्तियाँ हो सकती हैं। सात दिन वर्षा भी होगी, एक विशाल, विनाशकारी वर्षा होगी, और जल, थल और आकाश में बड़ा परिवर्तन होगा। किंतु भक्तों को इसकी और बचने के उपाय की जानकारी पहले से ही होगी। वे आनंदपूर्वक त्रिकाल संध्या करेंगे और भगवान का नाम जपेंगे। उस समय भक्त समूहों में एकत्र होकर भजन गाएँगे और प्रभु का नाम कीर्तन करेंगे। सात दिन आनंद में बीत जाएँगे। सात दिनों के बाद सत्य युग आरंभ होगा। यह परिवर्तन के उद्देश्य से एक अलग सत्र होगा। यह विनाशकारी नहीं है; यह लोगों के कल्याण के लिए है, नए सूर्य और चंद्रमा की स्थापना के लिए है, और यह सब सत्य युग के पूर्ण आगमन से पहले होगा। जो धर्म में, पवित्रता में, भक्ति में और भगवान की शरण में रहेंगे, उनके लिए कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 23:42 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1561 भविष्य मालिका ग्रंथ 600 वर्ष पहले लिखा गया था, तो क्या इस युग तक यह किसी और के संपर्क में नहीं आया? या यह अभी ही प्रकट हो रहा है? क्या इसे पहले गुप्त रखा गया था, और अब जब आप लोगों ने यह कार्य शुरू किया है, तभी यह सबके सामने आ रहा है?

उत्तर: देखिए, भविष्य पुराण में पंचसखा, महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है कि जब कलियुग समाप्त होगा, जब भगवान कल्कि धरती पर अवतरित होंगे, जब धर्म की स्थापना होगी, जब धरती पर विपत्तियाँ और आपदाएँ आएँगी, और जब सत्ययुग के निर्माण का कार्य आरंभ होगा, ठीक उसी समय भविष्य मालिका का प्रचार होगा। भविष्य मालिका का यह जो प्रचार हो रहा है, वह भगवान की इच्छा से हो रहा है। अर्थात यह भगवान की इच्छा के बिना नहीं है। 600 वर्षों तक लोग इसका प्रचार नहीं कर पाए, क्योंकि भगवान की इच्छा नहीं थी। अब जब भगवान की इच्छा है, तो इसका प्रचार हो रहा है। कलियुग समाप्त हो चुका है; यह धर्म स्थापना का समय है। जो कुछ हो रहा है, वह भगवान की इच्छा से हो रहा है, मेरी इच्छा से नहीं। हाँ, मैं अच्युतानंद जी का शिष्य हूँ, और उन्हीं के आशीर्वाद से मैं भविष्य मालिका के विषय में बोल रहा हूँ। लेकिन जो मुझसे बुलवा रहे हैं और जो सब कुछ कर रहे हैं, वे वही हैं। अब भगवान की इच्छा है कि समय आ गया है। पूरे भारत और विश्व के भक्तों के लिए यह जानना आवश्यक है कि आगे क्या होने वाला है, धर्म कैसे बचेगा, सनातन धर्म कैसे बचेगा। इसी कारण अब इसका प्रचार हो रहा है। अब समय है; यह आवश्यक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:18 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1562 बहुत से ऐसे लोग हैं जो पहले दावा करते थे कि उनका नाम भविष्य मालिका में है, लेकिन अब वही लोग कह रहे हैं कि भविष्य मालिका झूठी है। इन लोगों के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे, पंडित जी?

उत्तर: देखिए, जो लोग कहते हैं कि उनका नाम भविष्य मालिका में है, उनके बारे में मेरा मत यह है कि मैंने ऐसा देखा नहीं है; यह पहली बात। दूसरी बात, मैंने भविष्य मालिका का हिंदी में प्रचार सबसे पहले 2012 में शुरू किया था। आपको 2012 से पहले, बल्कि 2016 से पहले भी कोई वीडियो नहीं मिलेगा। 2018 के बाद जब मैंने इसका व्यापक प्रचार किया, तब लोग इसे पढ़ने-सुनने लगे और फिर आगे प्रचार करने लगे। देखिए, इसका प्रचार होना अच्छी बात है, क्योंकि इससे संदेश भक्तों तक पहुँचता है। लेकिन जो कोई भविष्य मालिका को झूठा कहेगा, हम उसे विधर्मी कहेंगे। वे सनातन धर्म के अंग नहीं हैं। हम उन्हें विधर्मी कहेंगे, क्योंकि भविष्य मालिका कलियुग में रचित सनातन धर्म का अविनाशी ग्रंथ है। द्वापर युग के बाद सनातन धर्म के लिए इतनी महान परंपरा और महत्व का कोई ग्रंथ रचा नहीं गया है। इसमें सब कुछ है: भगवान का अवतार, धर्म की स्थापना, भक्तों का उद्धार, सभी देशों का उद्धार, युग का उद्धार, और युग का परिवर्तन। महापुरुष अच्युतानंद जी ने एक लाख ग्रंथ लिखे हैं। यह ओड़िया भाषा, ओड़िया परंपरा और जगन्नाथ संस्कृति के लिए सम्मान की बात है। यदि कुछ लोग इस सम्मान के विषय में गलत बोलते हैं, तो हम उन्हें सनातन का अंग नहीं मानेंगे, क्योंकि यह सनातन धर्म का मूल तत्व है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:24 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1563 गुरुजी, जो लोग डॉक्टर और इंजीनियर बनना चाहते हैं, उनका भविष्य क्या है? क्योंकि 2 नवंबर 2024 को शनि मीन राशि में प्रवेश कर रहे हैं और 2027-28 तक रहेंगे। तब तक बहुत सी नकारात्मक घटनाएँ होने वाली हैं।

उत्तर: देखिए, शनि का मीन राशि में गोचर 29 मार्च 2025 को है। यह मैं पहले भी कह चुका हूँ। महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है कि यदि भगवान कल्कि चाहें, तो 2025 में जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, तब कठिन समय आएगा, परंतु अंतिम प्रलय नहीं होगी। तो यह सब भगवान पर निर्भर है—वे क्या करेंगे, कब करेंगे, यह उनकी इच्छा के अनुसार होगा। लेकिन होगा अवश्य; इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, हाँ, समय आगे-पीछे हो सकता है। जैसे जब तक हम जीवित हैं, हमें खाना है, अपने परिवार, समाज और संसार को देखना है, वैसे ही हमें अपनी क्षमताओं को भी बनाए रखना है। तो जब विनाश होगा, वह समय अलग है, लेकिन किसी को अपने कर्म से दूर नहीं रहना चाहिए। सभी को अपना कार्य करना चाहिए, पढ़ाई करनी चाहिए। समय के साथ जो भी परिणाम होगा, वह सबके लिए होगा। और हम उसके लिए भी तैयारी कर रहे हैं। आपकी रक्षा, आनंद और शांति के लिए ही मैं आपको इस पवित्र धारा के बारे में, त्रिकाल संध्या के बारे में, और भगवान की शरण में रहने के बारे में बता रहा हूँ। और अपना कार्य भी कीजिए। समय के साथ जो भी होगा, सबको उसका सामना करना पड़ेगा, और हम भी साथ मिलकर सामना करेंगे। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:30 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1564 मेरा बेटा एक वर्ष का है और डॉक्टर कहते हैं कि उसमें कैल्शियम की कमी है, जिससे उसका पैर थोड़ा टेढ़ा हो गया है। डॉक्टर ने अंडे खिलाने की सलाह दी है, लेकिन मैं नहीं खिला रही हूँ। घर में सभी दबाव डाल रहे हैं कि नहीं तो परेशानी होगी। मैं क्या करूँ, पंडित जी?

उत्तर: देखिए माता जी, कैल्शियम के लिए माँ का दूध सबसे बड़ा स्रोत है। बाहरी स्रोतों की तुलना में माँ के दूध से व्यक्ति को अधिक कैल्शियम और पोषक तत्व मिलते हैं। उसके लिए एक काम कीजिए: उसे गोद में लेकर श्रीमद् भागवत जी सुनाइए। भागवत सुनने से उसकी आयु बढ़ेगी, उसके शरीर के तत्व भी मजबूत होंगे, और उस पर भगवान की कृपा होगी। हम मछली, मांस और अंडे के लिए पशुओं की हत्या के विरुद्ध हैं। श्रीमद् भागवत में लिखा है कि जो कोई पशु की हत्या करता है, वह पाप करता है, और उसे उस पाप का फल भोगना पड़ेगा। संसार के शाकाहारी पशुओं को देखिए, जैसे हाथी और घोड़ा—घोड़े के नाम पर 'हॉर्सपावर' कहा जाता है, अर्थात वह सबसे शक्तिशाली है। तो चिकित्सकीय पक्ष अलग है, लेकिन हमारे दर्शन में हम आध्यात्मिक तत्व को ही मनुष्य के लिए सबसे बड़ी व्यवस्था मानते हैं। बच्चे को भागवत सुनाइए और माँ का दूध पिलाइए। इससे भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:21 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1565 जब सात दिन तक अंधकार रहेगा और सूर्य दिखाई नहीं देगा, तो क्या नए सूर्य और चंद्रमा की रचना होगी, या वर्तमान वाले ही रहेंगे?

उत्तर: देखिए, यह मैं पहले भी कह चुका हूँ। आपने जो प्रश्न पूछा है, वह बहुत अच्छा है। क्योंकि जब धरती पर सत्ययुग आएगा, तब एक विशेष वातावरण की आवश्यकता होगी। वर्तमान सूर्य की गर्मी इतनी बढ़ गई है कि इससे मनुष्यों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं—सूखा, बादल फटना, और जलवायु परिवर्तन, जिससे बीमारियाँ भी आई हैं। चंद्रमा की किरणें मंद और कमजोर हो गई हैं, जिससे रात में यात्रा करना कठिन हो गया है। इसलिए भगवान कल्कि नए सूर्य देव की स्थापना करेंगे, जो जनकल्याण के लिए शीतल प्रकाश देंगे। जलवायु ऐसी होगी कि तापमान लगभग 27-28 डिग्री रहेगा। चंद्रमा की किरणों की चमक बढ़ेगी, जिससे लोग रात में भी दिन की तरह आनंदपूर्वक यात्रा कर सकेंगे। ऐसा होने के लिए सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। उस समय पापियों का विनाश होगा, और भक्तों की रक्षा होगी। यह भी लिखा हुआ है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:27 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1566 पंडित जी, मैंने पंचांग में देखा कि अगले वर्ष, 16 अप्रैल 2024 से संवत्सर 'क्रोधी' रहेगा और उत्तर में इसे 'काल युक्त' भी बताया गया है। क्या आप इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?

उत्तर: देखिए माता जी, क्या होगा और क्या नहीं होगा, इस विषय में... भविष्य पुराण मानव जाति के उद्धार के लिए रचा गया था। यह भक्तों के अधिकार, उनके जीवित रहने, उनके उद्धार, उनके सुख और शांति के लिए लिखा गया था। महापुरुष अच्युतानंद जी ने जो लिखा है, उसमें से जो मार्ग मैं बताता हूँ, लोगों को उसका पालन करना चाहिए। जो होना निश्चित है, वह होगा। लेकिन पापियों का विनाश होगा, और धर्म प्रकाशित होगा। जो पाप करते हैं, उन्हें कष्ट झेलना पड़ेगा। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:10 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1567 मैं गुरदासपुर के सत्संग में आ रहा हूँ, तो क्या मुझे आपसे मिलने का अवसर मिलेगा?

उत्तर: हाँ, जो नए लोग आते हैं, उनसे मिलने के लिए मैं कुछ समय निकालता हूँ। आप आ रहे हैं, तो कोई समस्या नहीं है। मैं सभी नए लोगों को एक समूह में एकत्र करके उन्हें समय दूँगा। जिस-जिस के जो भी संदेह होंगे, उन पर हम चर्चा करेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 42:52 · 26 सितम्बर 2023

प्रश्न 1568 भारत और कनाडा के बीच चल रहे वर्तमान तनाव, जिसमें खालिस्तान आंदोलन भी शामिल है, के बारे में — क्या यह स्थिति और बढ़ेगी या इसका समाधान होगा? क्या इस बारे में शास्त्रों में कुछ लिखा है?

उत्तर: यह बहुत महत्वपूर्ण और अच्छा प्रश्न है। देखिए, 2014 से ही मैंने कई वीडियो में कहा है कि भारत के संबंध कनाडा के साथ अच्छे नहीं रहेंगे। और अभी जो यह आंदोलन चल रहा है... देखिए, जब युग बदलता है, तब लोगों में अव्यवस्था उत्पन्न होती है। सांप्रदायिकता और भेदभाव अपने आप पनपते हैं। देखिए, इसका कोई समाधान नहीं होगा, यह मैं शुरू से कह रहा हूँ। भविष्य पुराण के अनुसार, संपूर्ण भारत अखंड भारत बनने वाला है, और भारत पूरे विश्व का नेतृत्व करने वाला है। विश्व में भारत का सम्मान सर्वोच्च होने वाला है। तो यह इसके लिए अच्छा समय है। क्योंकि भगवान इसी देश में हैं... और पंजाब तथा भारत के सभी लोग, भक्तगण, आने वाले समय में धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। भगवान कल्कि के विनाश और धर्म स्थापना का समय चल रहा है। दूसरे परिवर्तनों के होने के लिए हमारे पास ज्यादा समय नहीं है, क्योंकि 2032 तक युग परिवर्तन का समय आ रहा है। सत्ययुग आने वाला है। तो इस विषय में सोचने की आवश्यकता नहीं है। इस मुद्दे के किसी भी समाधान से पहले धर्म की स्थापना और विश्व युद्ध आरंभ हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 49:58 · 26 सितम्बर 2023

सत्र 93 · प्रश्न 1569–1573

L99 - मालिका पुस्तक के साथ कल्कि अवतार के प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 30 सितम्बर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1569 पंडित जी, मैं फरीदाबाद, हरियाणा से बोल रहा हूँ। मेरा एक प्रश्न है। महाराज श्री ने ग्रंथ में जिस तिथि और समय का उल्लेख किया है, क्या वह समय आरंभ होने वाला है, या आरंभ हो चुका है, और वह कब तक चलेगा?

उत्तर: देखिए, 2025 से 2032 तक धर्म स्थापना का महान समय आ रहा है। कुछ लोग अन्य तिथियाँ बताते हैं, लेकिन उसका बहुत महत्व नहीं है, क्योंकि यह भविष्य मालिका ओड़िया में लिखी गई है, और जो लोग भाषा नहीं जानते, वे बस अनुमान लगाते हैं। लेकिन वास्तव में कार्य 2025 से आरंभ होगा। एक ओर भक्तों की रक्षा होगी, और दूसरी ओर पापियों का विनाश होगा। और एक बात और, महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है... यह भविष्य मालिका महापुरुष अच्युतानंद जी और पंचसखा (पाँच मित्रों) ने लिखी है। उन्होंने लिखा है कि 'हमने सारे समय लिख दिए हैं, लेकिन यदि भगवान कल्कि चाहें, तो वे इसे थोड़ा विलंबित कर सकते हैं या पहले भी कर सकते हैं।' ओड़िया में लिखा है: 'लेखी लिवा शक्ति जारा थारे, मोरो शरण', जिसका अर्थ है, 'मैंने जो लिखा है उसे मिटाने की शक्ति जिसमें है, मैं उसकी शरण लेता हूँ।' तो लिखे हुए को बदलने की शक्ति भगवान में है। और जब भगवान कल्कि चाहेंगे, वे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करेंगे, और यह आगे या पीछे हो सकता है। यदि लोग कहते हैं कि अमुक समय पर होगा और वह नहीं होता, तो वह थोड़ा बाद में या पहले हो सकता है, क्योंकि मनुष्य के कहने से कुछ नहीं होगा। यह सब भगवान कल्कि के अधीन है। लेकिन जो अवधि बताई जा रही है, उसी के भीतर कार्य होने वाला है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:26 · 30 सितम्बर 2023

प्रश्न 1570 मेरा एक छोटा-सा प्रश्न है। आपने एक बार मुझसे कहा था कि इस्कॉन भी हमारा ही है, और मैं इससे सहमत हूँ। लेकिन जब मैं उनके पास गया और कहा, 'देखिए, मालिका में ऐसा लिखा है,' तो उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने कहा, 'नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है,' और अपने 42 वर्षों का उल्लेख किया... तो वे वास्तव में इसका समर्थन नहीं कर रहे। तो क्या करना चाहिए?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है, धन्यवाद। देखिए, इस मालिका ग्रंथ में भगवान कल्कि के अवतार का सारा विवरण है, जिसमें उनके माता-पिता के नाम भी शामिल हैं। ग्रंथ में जैसा लिखा है, हम वैसा ही सत्य बोलेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसे-जैसे मालिका का प्रचार हो रहा है, वैसे-वैसे भ्रामक जानकारी भी फैलेगी। यदि हम इसे स्पष्ट कर दें, तो जो सच्चे भक्त भगवान श्रीकृष्ण का अनुसरण करते हैं, उनके लिए मार्ग खुल जाएगा। वे पाखंड से भटकेंगे नहीं, और उनकी शुद्ध भक्ति कलंकित नहीं होगी। दूसरी बात, इस्कॉन भगवान श्रीकृष्ण की परंपरा है। वहाँ से बहुत से लोग, हजारों लोग, हमसे जुड़ चुके हैं, जबकि बहुत से अन्य इसका विरोध कर रहे हैं। कोई बात नहीं। सच्चे भक्त आएँगे। इस्कॉन के हजारों भक्त पहले ही इस धारा से जुड़ चुके हैं। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण की परंपरा के साथ-साथ इस भविष्य पुराण की त्रिसंध्या धारा को अपनाया है। महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है कि भगवान श्रीकृष्ण के भक्त तो बहुत होंगे, लेकिन जिनका पूर्वनिर्धारित भाग्य होगा, वही उन्हें प्राप्त करेंगे। वे कभी गोपी या कपि रहे थे। और वही लोग भविष्य मालिका को शुद्धता और आदर के साथ स्वीकार करेंगे और भगवान की शरण लेंगे। तो समय की प्रतीक्षा कीजिए। आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। इस्कॉन के हजारों भक्त आ चुके हैं, और समय के साथ लाखों और आएँगे, जिनका भाग्य में है। जिनका भाग्य में नहीं है, वे समझ नहीं पाएँगे और इसके विरुद्ध बोलेंगे। कोई बात नहीं। जैसे दूध से मक्खन मथकर निकाला जाता है, वैसे ही भविष्य पुराण सच्चे भक्तों को अलग कर देगा, और उनकी रक्षा होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:06 · 30 सितम्बर 2023

प्रश्न 1571 म्लेच्छ (अपवित्र लोग) भी कहा करते थे कि यदि भगवान कल्कि ईश्वर हैं, तो वे सबके सामने क्यों नहीं आते?

उत्तर: देखिए, इस भविष्य पुराण में अच्युतानन्द जी ने लिखा है कि यह एक बहुत बड़ा रहस्य है। ये पाखंडी कहते हैं कि कल्कि खुले आम सामने आएँगे। क्यों? भक्त करोड़ों जन्मों तक तपस्या करते हैं फिर भी भगवान के दर्शन नहीं पा सकते, और इस युग में क्या आप सोचते हैं कि भगवान इन पाखंडियों के सामने यूँ ही प्रकट हो जाएँगे, उनसे बातचीत करेंगे और उनसे शास्त्रार्थ करेंगे? अच्युतानन्द जी ने इसका खंडन किया है। उन्होंने कहा कि यह ब्रह्मा, शंकर और देवताओं के लिए भी रहस्य ही रहेगा। केवल वही भक्त, जिन्हें किसी तरह भविष्य मालिका प्राप्त हो जाएगी, भगवान से मिलेंगे। भक्त और भगवान का मिलन होगा। भगवान कभी भी असुरों, पापियों या ढोंगियों के सामने प्रकट नहीं होंगे। परंतु भक्तों को किसी न किसी प्रकार भगवान के दर्शन अवश्य होंगे। वे कोई मीडिया की हस्ती, राजनीतिक मंत्री या कोई बड़े नेता नहीं हैं जो आकर अपना परिचय देंगे और कोई बड़ी सभा करेंगे। वे तो हमारे सनातन धर्म के एक पवित्र तत्व हैं, जो वर्णन से परे है। मेरे पास उसका वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। और यह सोचना कि वे इतने बड़े भगवान को इतनी आसानी से देख लेंगे, और मैं उन्हें इतनी आसानी से प्रकट कर दूँगा—यह संभव नहीं है। हाँ, आप लोग अटकलें लगाते हैं, मैंने सुना है। इसीलिए मैं अब भी आपको एक अवसर दे रहा हूँ: यदि आप अच्छे इंसान बनना चाहते हैं, तो ओड़िया लोगों से पुस्तक में जो लिखा है उसे पढ़वाइए, सुनिए, समझिए, और फिर शास्त्रार्थ कीजिए। यदि यह देखने और जानने के बाद भी आप इसके विरुद्ध बोलते हैं, तो हम समझ जाएँगे कि कोई धर्म-विरोधी षड्यंत्र काम कर रहा है। भगवान इस षड्यंत्र का प्रतिकार करेंगे, और धर्म निश्चित रूप से आगे बढ़ेगा, क्योंकि जब धर्म के प्रकट होने का समय आता है, तो उसे कोई शक्ति रोक नहीं सकती। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:35 · 30 सितम्बर 2023

प्रश्न 1572 पिताजी, मैं यह पूछना चाहता था कि मालिका में लिखा है कि महाप्रभु गरुड़ जी (दिव्य पक्षी) पर बैठकर 'बिलात' (ब्रिटेन) जाएँगे। क्या वे सचमुच उन पर बैठकर जाएँगे, या हवाई जहाज से जाएँगे? कृपया यह समझाइए।

उत्तर: देखो बेटा, अभी कलियुग है, इसलिए लोग यंत्रों (जंत्र) से यात्रा करते हैं। परंतु आने वाला युग, सत्ययुग, मंत्रों का युग है। और भगवान कल्कि गरुड़ पर जाएँगे, क्योंकि इसका उल्लेख गरुड़ संवाद और जय फुल मालिका में है। उसमें अच्युतानन्द महाप्रभु ने लिखा है कि भगवान गरुड़ पर जाएँगे। और गरुड़ के पंखों के प्रहार से ब्रिटेन के लाखों गोरे सैनिक मारे जाएँगे। सभी सैनिकों को पराजित करने के बाद भगवान कोहिनूर हीरा (कौस्तुभ मणि) और मयूर सिंहासन, जो द्वारका में भगवान कृष्ण का सिंहासन था और मुगल शासन के दौरान चुराया गया था, वापस लेकर भारत लाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:17 · 30 सितम्बर 2023

प्रश्न 1573 मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैंने एक बहुत विशाल, गोरे रंग के, घुँघराले बालों वाले पुरुष को देखा, जिन्होंने लाल शॉल और लुंगी पहनी थी। मैं रो रही थी, और वे भी रो रहे थे। मैं कह रही थी, 'भगवान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?' क्योंकि मेरे नवजात पुत्र का अभी-अभी देहांत हुआ था। उन्होंने भी कहा, 'मैं भी भगवान को ढूँढ़ रहा हूँ, मुझे वे नहीं मिल रहे।' मैंने उनसे कहा, 'यहाँ एक सत्संग हो रहा है, सत्संग में बैठिए, आपको भगवान अवश्य मिलेंगे।' मुझे इस स्वप्न का अर्थ समझ नहीं आया।

उत्तर: आपने जो कहा उसका कुछ हिस्सा ही मुझे सुनाई दिया... आपकी आवाज़ थोड़ी धीमी है, माताजी। कुछ सुनाई देता है, कुछ नहीं, तो मैं उत्तर कैसे दूँ? मुझे आपकी बात स्पष्ट सुनाई नहीं दे रही, इसलिए मैं उत्तर देने में असमर्थ हूँ। यदि ठीक से सुनाई देता, तो मैं उत्तर देता। आपके विचारों पर हम अगले सत्संग में चर्चा करेंगे। और यदि संभव हो, तो आपके पास जो नंबर है उस पर मोहन से बात कीजिए, और उनसे कहिए कि मेरे साथ कॉन्फ्रेंस कॉल की व्यवस्था कर दें। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 45:42 · 30 सितम्बर 2023

सत्र 94 · प्रश्न 1574–1581

L100 - भगवान कल्कि के अवतार बिरजा क्षेत्र में मालिका में प्रत्यक्ष प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 1 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1574 आपने जो कहा, वह ब्रह्माकुमारियों की बातों से बहुत मिलता-जुलता है। क्या उनका ज्ञान भी मालिका से है, या वे इसे किसी अन्य स्रोत से प्राप्त करते हैं? दूसरी बात, हम संदेश का प्रचार कर रहे हैं, पर इस गूगल मीट पर बहुत ज़्यादा लोग नहीं हैं। यदि हम इसी धीमी गति से चलते रहे, तो भविष्यवाणी के अनुसार हम समय रहते सब तक कैसे पहुँचेंगे?

उत्तर: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी एक पवित्र संस्था है जो पूरे विश्व में धार्मिक कार्य कर रही है। आपके दूसरे प्रश्न, धीमी गति के संबंध में — यह आगे चलकर तेज़ हो जाएगी। जब विनाश आएगा, तब लोग भय और भक्ति के कारण इस मार्ग की ओर मुड़ेंगे। उस समय स्थिति ऐसी होगी कि सब कुछ भगवान की इच्छा के अनुसार होगा। रही बात हमारे छोटे-छोटे प्रयासों की, तो यदि आप चाहें, तो आप उनमें योगदान दे सकते हैं और उनका अनुसरण कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:16 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1575 मैं नासिक से हूँ। मैंने भागवत महापुराण पढ़ना शुरू किया है। मुझे ऐसे अनुभव हुए हैं जिनमें मैंने देवी की पत्थर की मूर्तियों को हिलते हुए देखा है, और बचपन से ही मुझे भविष्य की घटनाओं और युद्धों का पूर्वाभास होता रहा है। इन अनुभवों का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह आपका सौभाग्य है कि आप भागवत पुराण पढ़ रहे हैं और त्रिकाल संध्या (तीन समय की प्रार्थना) कर रहे हैं। समय के साथ, हम सब धर्म स्थापना के कार्य के साथ आगे बढ़ेंगे। आइए, हम सब मिलकर सनातन धर्म के लिए कार्य करें। आप अपना कार्य जारी रखिए और मानवता के उद्धार एवं कल्याण के लिए इस भविष्य पुराण का प्रचार कीजिए, क्योंकि हमारे पास बहुत कम समय है। बहुत सारी बीमारियाँ और आपदाएँ आने वाली हैं।

► यह उत्तर सुनें · 44:17 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1576 क्या मुख्य घटनाएँ 2034-35 में शुरू होंगी? क्या भगवान कल्कि की लीला पहले से ही चल रही है, और क्या उन्होंने अवतार ले लिया है? यदि हाँ, तो वे सबके सामने कब प्रकट होंगे?

उत्तर: भगवान की पूर्ण शक्ति 2032-33 तक प्रकट नहीं होगी। भगवान कल्कि की लीला वास्तव में चल रही है, और शास्त्रों के अनुसार उनका अवतार हो चुका है। परंतु वे 2035 तक सबके सामने प्रकट नहीं होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:56 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1577 भक्तों का समागम धर्म की स्थापना से पहले होगा या बाद में? और धर्म स्थापना में योगदान देने वाले भक्तों को प्रशिक्षण कहाँ से और कब मिलेगा?

उत्तर: उस समय तक 16 मंडल (समूह) बन चुके होंगे, और भक्त एकत्रित हो चुके होंगे। दिव्य माता त्रिकाल संध्या और भागवत के सिद्धांतों के बारे में प्रश्न पूछेंगी। इसीलिए मैं आपको यह सब अभी बता रहा हूँ, ताकि आप तैयारी कर सकें। केवल वही चुने जाएँगे जो उत्तर दे सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:29 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1578 मालिका के अनुसार, इंटरनेट पर होने वाली हमारी ये इलेक्ट्रॉनिक बैठकें कब बंद होंगी? इंटरनेट और बिजली कब जाएगी? साथ ही, पहले क्या होगा—विश्व युद्ध या गृह युद्ध?

उत्तर: देखिए, पूरे विश्व में गृह युद्ध तो पहले से ही चल रहा है। हर देश में साम्प्रदायिकता बढ़ रही है, और यह संघर्ष हर जगह शुरू हो चुका है। उसके बाद विश्व युद्ध होगा। रही बात इलेक्ट्रॉनिक्स की, तो उसका निर्णय भगवान करेंगे। जब तक अच्छे इंसान बच नहीं जाते, तब तक भगवान कोई बहुत बड़ी आपदा नहीं लाएँगे; पहले छोटी-छोटी आपदाएँ आएँगी। इसीलिए हम सबसे कहते हैं कि त्रिकाल संध्या के मार्ग का पालन करें और भागवत पढ़ें, ताकि लोग अच्छे इंसान बन सकें और दिव्य सभा में जाने योग्य हो सकें।

► यह उत्तर सुनें · 53:14 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1579 भगवान कृष्ण की 108 पत्नियाँ थीं। इस बार भगवान कल्कि की कितनी पत्नियाँ होंगी?

उत्तर: उस विषय में, भगवान ने उन्हें अपनी पत्नी नहीं बनाया था। जरासंध ने उन्हें बंदी बना रखा था, और भगवान ने उन्हें मुक्त कराया। तब उन्होंने भगवान की शरण ली। भगवान सम्पूर्ण जगत के स्वामी हैं, और उस अर्थ में हम सभी उनकी पत्नियाँ हैं। इस मानवीय दृष्टिकोण से हम पत्नियों की संख्या के बारे में सोचते हैं, परंतु मेरे विचार से भगवान की अनंत करोड़ों पत्नियाँ हैं, और वे हमारे स्वामी हैं। मैं भी उनकी पत्नी हूँ। इस संसार में एकमात्र सच्चा पुरुष परमात्मा, सनातन भगवान ही हैं, और बाकी सब उनके सेवक हैं। फिर भी, आपके प्रश्न का सीधा उत्तर दूँ तो, इस कलियुग में, कल्कि पुराण के अनुसार, भगवान कल्कि की दो पत्नियाँ होंगी... वास्तव में, भविष्यवाणी ने यह स्पष्ट किया है कि भगवान कल्कि की केवल एक ही पत्नी होंगी, महालक्ष्मी के रूप में माता वैष्णो।

► यह उत्तर सुनें · 55:35 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1580 हम स्वस्थ कैसे रह सकते हैं? दवाइयों का असर कम होता जा रहा है।

उत्तर: रोगों और बीमारियों से राहत पाने के लिए धर्म (सदाचार) को बढ़ाना आवश्यक है। धर्म तब बढ़ेगा जब आप त्रिकाल संध्या का पालन करेंगे। यह एक पवित्र मार्ग है। इस मार्ग के द्वारा मनुष्य सुरक्षा प्राप्त कर सकता है। यह मार्ग मानव शरीर की बड़ी बीमारियों, प्राकृतिक आपदाओं और अकाल मृत्यु से रक्षा के लिए है। हम इसका प्रचार करते हैं, और आप सबको इसका पालन करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 57:07 · 1 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1581 मैंने सपना देखा कि पाकिस्तान भारत पर हमला कर रहा है। मेरा प्रश्न यह है कि जो भयंकर स्थिति आने वाली है, उसमें आपने कहा था कि भक्त खंडगिरि में एकत्र होंगे। लेकिन जब इंटरनेट, नेटवर्क और परिवहन जैसी सेवाएँ सब बंद हो जाएँगी, तो हम वहाँ कैसे पहुँच पाएँगे? जब यात्रा का कोई साधन ही नहीं होगा, तो हम प्रभु से कैसे मिलेंगे?

उत्तर: धर्म उतना ही निकट होगा जितना निकट होना आवश्यक है। मनुष्य दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करेंगे। जब एक तत्व हटाया जाता है, तो दूसरा पवित्र तत्व रचा जाता है। जैसे, प्रभु ने आपको स्वप्न में भारत-पाकिस्तान युद्ध दिखाया, क्योंकि यह भविष्यवाणी में लिखा हुआ है। हमारी धारा में आना एक सीधी-सरल बात है। हमने हाल ही में समाचार में सुना कि अमेरिका पाकिस्तान से हथियार खरीदने और उन्हें अमेरिकी तकनीक से बनाने की योजना बना रहा है। आप बस मार्ग पर चलते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 58:11 · 1 अक्टूबर 2023

सत्र 95 · प्रश्न 1582–1590

L101 - भक्तों के साथ के खंडगिरि में कल्कि लीला प्रकाश होगा। पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 3 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1582 गुरुदेव, इतने सारे भूकंप और विनाश हो रहे हैं, तो क्या अब भी घर बनाना ठीक है?

उत्तर: 2032-33 तक धर्म स्थापना का कार्य चलता रहेगा। हमें इस समय के दौरान जीना है। खुशी-खुशी घर बनाइए; घर बनाने के लिए समय उचित है। घर बनाइए। उसमें कोई समस्या नहीं है। भूकंप होते रहेंगे, सब कुछ होता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:39 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1583 धर्म स्थापना के समय, जगन्नाथ क्षेत्र में चल रही रथ यात्रा और स्नान यात्रा, तथा 12 महीनों में होने वाले प्रभु के 13 पवित्र उत्सव — ये चलते रहेंगे या नहीं?

उत्तर: महर्षि अच्युतानंद ने लिखा है कि छह वर्षों तक भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा नहीं होगी। और नौ वर्षों तक धरती माता मौन रहेंगी। नौ वर्षों तक पृथ्वी पर रथ यात्रा नहीं होगी। इस दौरान विश्व युद्ध चल रहा होगा, और महाविपत्ति बनी रहेगी, इसलिए तब यह नहीं होगी। पूरे विश्व में धर्म की स्थापना करने के बाद, भगवान कल्कि स्वयं तीन बार 'पतित पावन यात्रा' (पतितों के उद्धारक की यात्रा) संपन्न करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:46 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1584 शास्त्रों के अनुसार, प्रभु के माता-पिता कौन होंगे?

उत्तर: देखिए, गुह्य ज्ञान का जितना प्रकट करना चाहिए, उतना मैं प्रकट कर रहा हूँ। उससे अधिक प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। यदि आपका कोई और प्रश्न है, तो पूछिए। मैंने सामने पुस्तकें रखकर सब कुछ समझाया है, इससे अधिक क्या आवश्यक है? देखिए, भगवान ब्रह्मा में भी प्रभु की परीक्षा लेने की शक्ति नहीं है, तो हम कैसे ले सकते हैं? इन सभी गहरे रहस्यों को प्रकट करना हमारे लिए संभव नहीं है। जो आवश्यक था, वह मैंने आपको बता दिया है। मैंने शास्त्रों की चर्चा की है; कल मैंने आपको 'शिवकल्प' शास्त्र के बारे में बताया, 'भविष्य मालिका' के बारे में, 'कल्कि गीता' और 'ज्ञान काल कविता' के बारे में बताया। इन सभी शास्त्रों में जो लिखा है, वही मैं आपको बता रहा हूँ। फिर भी मैं कम ही कहूँगा। जय जगन्नाथ। और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 47:42 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1585 मैंने स्वप्न में आपको और आपके साथ माँ दुर्गा को देखा। मैंने आप दोनों को हमारे घर के केले के पेड़ के सामने देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: मैं भविष्य पुराण के प्रचार के कार्य में लगा हुआ हूँ। आपको देवी दुर्गा के जो दर्शन हुए, उसका अर्थ है कि लोगों को जानना चाहिए कि माँ दुर्गा आज भी कह रही हैं कि पंडित काशीनाथ मिश्र जी आपको जो बता रहे हैं, उसका पालन कीजिए और उसे स्वीकार कीजिए। यह आपके लिए मंगलकारी होगा। इसे माँ का आदेश मानिए। उनके साथ मुझे देखने का अर्थ है कि माँ संकेत दे रही हैं कि जो मैं कह रहा हूँ... मैं पूरे विश्व में सनातन धर्म के प्रचार के कार्य में लगा हुआ हूँ, और लोगों को इस कार्य को शुद्ध हृदय से स्वीकार करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 49:07 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1586 वे जो उग्र रूप धारण करेंगी, क्या वह भविष्य में प्रभु के निर्देश पर होगा? हमें अभी नहीं पता। तो, जब महामारी और यह सब आएगा, तो क्या वह कुछ निश्चित वर्षों के लिए होगा?

उत्तर: वे करेंगी; यह प्रभु की इच्छा है। पर मैं आपको एक बात बताऊँगा: जब तक 16 मंडल (भक्तों के समूह/वृत्त) पूरी तरह से नहीं बन जाते...

► यह उत्तर सुनें · 50:39 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1587 मैं अभी-अभी जुड़ा हूँ, मैं हिमालय क्षेत्र से हूँ। मुझे माँ गिरिजा से जुड़ाव महसूस होता है... उनके ज्ञान के अनुसार... (प्रश्न अधूरा है, पर लगता है कि आध्यात्मिक जुड़ाव के आधार पर मार्गदर्शन माँगा जा रहा है।)

उत्तर: ठीक है, इससे अधिक कुछ आवश्यक नहीं है, मेरे बच्चे। क्योंकि देखिए, प्रभु की कृपा से माँ ने आपका मार्गदर्शन किया है, और आज आप मुझसे बात कर रहे हैं। भविष्य मालिका का अनुसरण कीजिए, और आप 7 दिनों के भीतर भगवान कल्कि से मिलेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 52:07 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1588 प्रणाम, आचार्य जी। क्या आप कृपया सांख्य योग का महत्व समझा सकते हैं, विशेष रूप से वे उपदेश जो भगवान कपिल ने अपनी माता को दिए थे?

उत्तर: माता देवहूति को भगवान कपिल ने समझाया कि संसार एक मायावी बंधन है और केवल ईश्वर ही परम सत्य हैं, जबकि संसार मिथ्या है। कपिल श्रुति में, सांख्य योग के माध्यम से, भगवान कपिल—जो भगवान कृष्ण के अवतार हैं—ने अपनी माता को 'सांख्य योग' का उपदेश दिया। 'योग' का अर्थ है मनुष्य का कर्म, क्योंकि कर्मयोगी वह है जो अपने कर्मों के साथ पवित्र तत्वों को जोड़ता है। यही उन्होंने सांख्य योग के माध्यम से समझाया। सांख्य दर्शन की दृष्टि वह दृष्टि है जो महान ऋषियों और तपस्वियों को प्राप्त होती है।

► यह उत्तर सुनें · 53:34 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1589 राधा अष्टमी पर मैंने एक स्वप्न देखा। हम खड़े थे, और बाईं ओर राधा जी थीं और दाईं ओर कान्हा जी (भगवान कृष्ण)। फिर एक इमारत गिरी, और ऊपर से गोलियाँ आकर गिर रही थीं। उसी समय आकाश में एक लाल रंग का प्रकाश प्रकट हुआ। मुझे इस स्वप्न का अर्थ समझ नहीं आ रहा, और न ही यह कि मैंने इसे क्यों देखा।

उत्तर: जो अनुसरण करते हैं, जो भक्त हैं, या जो प्रभु के अपने जन हैं, प्रभु उन्हें माँ राधा और कृष्ण के रूप में दर्शन देते हैं। रूप अलग-अलग हो सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 57:54 · 3 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1590 लिखा है कि यह ईश्वर की इच्छा से होगा। तो, यदि उनकी इच्छा ही न हो कि यह हो, तो क्या होगा?

उत्तर: इसलिए, धर्म की स्थापना निश्चित रूप से होगी। भक्त अवश्य बचाए जाएँगे, पापी अवश्य नष्ट होंगे, और प्रभु की दिव्य लीला भी आगे बढ़ेगी। इसके प्रति निश्चिंत रहिए। समय की प्रतीक्षा कीजिए और देखिए आगे क्या होता है।

► यह उत्तर सुनें · 59:43 · 3 अक्टूबर 2023

सत्र 96 · प्रश्न 1591–1603

L102 - शून्य में धूमकेतु का दृश्य होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 5 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1591 राधे राधे, गुरुजी। मैं नेपाल से बोल रहा हूँ। क्या मलिका में नेपाल के बारे में कुछ लिखा है? इस समय नेपाल की जनसंख्या लगभग 3 करोड़ है। युद्ध के बाद कितने लोग बचेंगे?

उत्तर: देखिए, पिछले प्रवचन में मैंने कहा था कि नेपाल में भूकंप आएगा, और सचमुच कल या परसों नेपाल में भूकंप आया। भविष्य में नेपाल और उससे लगे बिहार को प्रभावित करने वाला एक बहुत बड़ा भूकंप आने वाला है। महाप्रलय होगी। वहाँ भूकंप से भारी विनाश होगा। इसके साथ ही, सब लोगों में से भक्तजन इसी भविष्य मलिका के माध्यम से बचाए जाएँगे। सटीक संख्या लिखी नहीं है, क्योंकि — एक बात महापुरुष अच्युतानंद की मैं आपको बताऊँ, यह विवादित बात मैं कह नहीं सकता। क्योंकि जब अखंड भारत की बात आती है, तो आप जानते ही हैं। अखंड भारत में 33 करोड़ भक्त बचेंगे। और अखंड भारत के अलावा, विश्व के अन्य देशों में कुल मिलाकर लगभग 31 करोड़ लोग बचेंगे या भक्त बनेंगे। तो इसी विचारधारा के साथ भविष्य पुराण का प्रचार कीजिए। नेपाल में धार्मिक भावना अच्छी है। भगवान बुद्ध का जन्म नेपाल में हुआ था, और भगवान बुद्ध भगवान महाविष्णु के नवें अवतार हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण में भगवान बुद्ध के बारे में रचना है। और नेपाल का जगन्नाथ संस्कृति से पुराना, पवित्र, पारिवारिक संबंध है। यह सिद्ध करता है कि यह सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों से जुड़ाव है। तो इस प्रकार आप नेपाल में भविष्य पुराण का प्रचार कीजिए और भक्तों को बचाइए। समय आने पर हम किसी दिन नेपाल जाएँगे और प्रवचनों के माध्यम से लोगों की विचारधारा बदलने का कार्य करेंगे। समय कम है, लेकिन यदि भगवान की कृपा हुई तो हम अवश्य जाएँगे। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 31:46 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1592 जी, प्रभु जी। मैं कह रहा था कि मेरे दो प्रश्न हैं। पहला प्रश्न यह है कि जैसा आपने बताया, भगवान कल्कि का इस जन्म में नाम माधव है। अब हमें तो 'राधा कृष्ण' कहने की आदत है। अब मैं यह करता हूँ कि सुबह 4 बजे उठता हूँ, और त्रिसंध्या करने से पहले 'राधा माधव, राधा माधव' का जप करता हूँ। इस तरह मेरे मुख से माधव नाम भी निकलता है और राधा नाम भी। तो यदि भूल से हम कृष्ण या राम का नाम ले लें, तो क्या भगवान हमारी प्रार्थना सुनेंगे?

उत्तर: देखो बेटा... (संस्कृत श्लोक का पाठ करते हैं)... 'राधा माधव नि जयंती जमुना कुरे के'। इसका अर्थ है कि जिस पहले दिन माँ राधा रानी भगवान कृष्ण से मिलीं, जिस दिन ब्रह्मा जी ने राधा रानी का विवाह भगवान कृष्ण से कराया, उसी पहले दिन माँ राधा रानी ने भगवान कृष्ण को 'माधव' नाम से पुकारा। उन्होंने कृष्ण को कभी 'कृष्ण' नहीं कहा; वे उन्हें सदा 'माधव' ही कहती थीं। और 'माधव' नाम द्वापर युग में माँ राधा रानी के लिए आरक्षित था। इस युग में भगवान कल्कि ने 'माधव' नाम सबके लिए मुक्त कर दिया है। आप सब भाग्यशाली हैं कि 'माधव' और 'राधा' नाम का जप कर रहे हैं। यह आपका सौभाग्य है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:15 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1593 गुरुदेव, मेरे दो प्रश्न हैं। मैं आयरलैंड से एक विद्यार्थी हूँ, मूल रूप से कोलकाता से। तो गुरुदेव, पिछले महीने मुझे एक बहुत बुरा स्वप्न आया। मैंने देखा कि किसी भयंकर, विकट स्थिति में लोग एक लंबे पुल से नदी में कूदकर अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन जैसे ही वे कूद रहे थे, नदी का पानी सूख रहा था, और वे पत्थरों पर गिरकर मर रहे थे। इसका क्या अर्थ है? यह एक प्रश्न है।

उत्तर: देखो बेटा, आने वाले समय में ऐसी स्थिति आएगी कि न भोजन होगा, न अन्न, न वस्त्र, और न रोगों का इलाज। लोग सोचेंगे, 'जीकर क्या करना है?' ऐसे लोगों के शरीर में जोगिनी देवी प्रवेश करेंगी, और वे स्वयं अपनी मृत्यु को आमंत्रित करेंगे। यह भविष्य पुराण में लिखा है। यह डरावनी बात है, इसलिए मैं इसकी अधिक चर्चा नहीं करता। यह पापी लोगों पर लागू होगा; धर्मपरायण, अच्छे लोगों के लिए ऐसी कोई समस्या नहीं होगी। लेकिन भविष्य में ऐसा समय आ रहा है जब लोग अपनी इच्छा से अपने प्राण त्याग देंगे। और इसका कारण होगा जोगिनी देवी का प्रभाव, जिसके कारण लोग अपनी मानसिक शक्ति और संकल्प खो देंगे। उनका मनोबल टूट जाएगा। जब उन्हें भोजन नहीं मिलेगा और केवल दुख ही मिलेगा, तो वे कहेंगे, 'क्यों जिएँ?' भविष्य में ऐसा समय आ रहा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:12 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1594 दूसरा प्रश्न यह है कि जो भविष्य मलिका पुस्तक आपने रची है, क्या उसका बंगाली अनुवाद उपलब्ध है? हम पढ़ना चाहते हैं।

उत्तर: देखिए, दूसरे प्रश्न का उत्तर देता हूँ। देखिए, आने वाले नवंबर-दिसंबर महीनों में, नवंबर में, कोलकाता के खिदिरपुर स्थित जगन्नाथ मंदिर में भविष्य मलिका पुस्तक के बंगाली संस्करण का विमोचन होगा। हम वहाँ भागवत कथा के लिए जा रहे हैं। उसके बाद आपको बंगाली पुस्तक मिल जाएगी। उसका अनुवाद पूरा हो चुका है, लेकिन हम तब उसका विमोचन करके भक्तों के लिए प्रस्तुत करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:42 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1595 मेरे वास्तव में हैदराबाद से जुड़े दो प्रश्न हैं। हैदराबाद में मैं एक और ध्यान समूह से जुड़ा हूँ जिसका नाम 'शांति वनम' है, जहाँ बहुत लोग आते हैं। मैं सोच रहा था कि वहाँ भी अच्छे लोग आते हैं, जो स्वयं को बेहतर बनाना चाहते हैं, जो योग और ध्यान करते हैं। तो क्या मैं वहाँ इस [भविष्य मलिका] के बारे में बात कर सकता हूँ?

उत्तर: बहुत अच्छा बेटा। देखो, जो लोग ध्यान करते हैं, वे सामान्यतः अच्छे लोग होते हैं। देखो, यदि हम स्वयं संसार की दशा को परखें, तो क्या आज हमारे भविष्य की कोई गारंटी है? यदि गारंटी है, तो प्रतिदिन इतनी विपत्तियाँ क्यों आती हैं? आप देख सकते हैं कि ऐसा हो रहा है। तो ये समय बदलने वाला है। शास्त्रों के अनुसार, कलियुग परिवर्तित हो चुका है, और सत्ययुग का युग आरंभ हो रहा है। इस समय सारे परिवर्तन होंगे। तो सबको बताओ, भविष्य पुराण का प्रचार करो, और लोगों को अच्छा मनुष्य बनने में सहायता करो। यह कार्य करने से मानवता बचेगी। जो शास्त्र जगत के कल्याण के लिए रचा गया था, वह मानव कल्याण के काम आएगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 39:40 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1596 जी, मेरा प्रश्न यह था कि 'धारा' (मार्ग) में जुड़ने से पहले क्या मुझे अवतार के दर्शन हो सकते हैं?

उत्तर: देखो, यह मैं पहले भी कह चुका हूँ बेटा। त्रिकाल संध्या करने से, माधव स्तुति का पाठ करने से, और छह महीने तक श्रीमद्भागवत पढ़ने से, और तुरंत 'धारा' का पालन करने से, तुम्हें कहीं न कहीं दर्शन होंगे — या तो स्वप्न में या प्रत्यक्ष अनुभव के रूप में। उसके बाद तुम उस पर चिंतन कर सकते हो। लेकिन इतना मैं कहूँगा: जो लोग 'धारा' में, पवित्रता में रहेंगे, उन पर भगवान की कृपा होगी कि वे सत्ययुग के मनुष्य बनें। और जिसके भाग्य में होगा, उसे भगवान के दर्शन होंगे। जिसके भाग्य में नहीं होगा, उसे भगवान के दर्शन भले न हों, फिर भी वह सत्ययुग का मनुष्य बनेगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 41:10 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1597 जय जगन्नाथ, पिताजी। आप कैसे हैं?

उत्तर: हाँ, जय जगन्नाथ। बोलिए। (कॉलर कहते हैं: मैं अहमदाबाद से पाल हूँ)। हाँ पाल, मैं तुम्हें जानता हूँ। बोलो। (कॉलर कहते हैं: बहुत दिन हो गए बात किए हुए, आपको देखा नहीं, तो सोचा आपके दर्शन करके आशीर्वाद ले लूँ)। अरे, मैं आज ही कृष्णा से तुम्हारी चर्चा कर रहा था। मैं तुम्हें फोन करने ही वाला था। (कॉलर कल फोन करने को कहते हैं)। हाँ हाँ, कृष्णा को फोन करके मुझसे बात करवा लेना। (कॉलर सहमत होते हैं)। ठीक है। और सब आनंद है? (कॉलर: बिल्कुल आनंद है)। ठीक है। भगवान जगन्नाथ की कृपा तुम्हें सुखी रखे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:17 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1598 आपकी तरह मैंने भी बहुत लोगों को भविष्य मलिका के बारे में बताया है। लेकिन अब वे इसे बहुत हल्के में ले रहे हैं। वे इनकार नहीं करते, लेकिन ऐसी बातें कहते हैं कि 'अगर मरना ही है तो जीवन को भरपूर जी लें,' और बहुत अजीब-सी मुस्कान पास कर देते हैं। तो मुझे गुस्सा आता है और सोचती हूँ कि बताऊँ या न बताऊँ, क्योंकि मुझे बुरा लगता है, जो लोग इसका मज़ाक ही उड़ा रहे हैं उन्हें मैं क्यों बताऊँ? मैं त्रिसंध्या करती हूँ, और जिस कृष्ण मंदिर में मैं जाती हूँ, वहाँ मुझे भगवान कृष्ण के दर्शन भी हुए हैं। मेरी अपनी श्रद्धा है, लेकिन जब मैं दूसरों को बताती हूँ तो वे ऐसी प्रतिक्रिया देते हैं। तो मुझे लगता है कि किसी को न बताऊँ। मैं क्या करूँ? कृपया बताइए।

उत्तर: इस बेटी का यह बहुत अच्छा प्रश्न है। वे पूछ रही हैं कि जब वे लोगों से बात करती हैं तो लोग इसे स्वीकार नहीं करते और कभी-कभी आलोचना भी करते हैं। देखो माँ, भविष्य पुराण में अच्युतानंद और पंच सखा ने लिखा है... (एक पद उद्धृत करते हैं)। इसका अर्थ है कि अच्युतानंद ने कहा है कि यह भविष्य पुराण उन्हीं को बताना चाहिए जो कृष्ण, राम, या भगवान शंकर के सच्चे भक्त हैं, और जो शाकाहारी हैं। उन्हें बताने से कुछ परिणाम मिलेगा। जो आसुरी प्रभाव में हैं, जिनमें घमंड, अहंकार और अभिमान है, उनसे मत बोलो। और एक बात, भविष्य मलिका के विषय में बस इतना ही कह दो: 'समय बदल रहा है, भविष्य मलिका का अनुसरण करो।' और यदि उनके हृदय में रुचि दिखे, तो आगे बता सकती हो; अन्यथा कुछ मत कहो। अच्छे लोगों से बात करो, बुरे लोगों से बात मत करो। और दूसरी बात, यदि कोई रुचि दिखाए, अर्थात् उसका हृदय तुमसे पूछे, 'देखिए, मुझे इसके बारे में बताइए,' तब तुम्हें बताना चाहिए। लेकिन बस संक्षेप में कहो, 'समय बदलने वाला है।' यदि वे फिर पूछें, 'बताइए, क्या परिवर्तन आ रहे हैं?' तब तुम समझा सकती हो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:46 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1599 मैं पूछना चाहता था, क्या खाटू श्याम जी का भी पुनर्जन्म होगा?

उत्तर: देखो, क्या तुम्हें श्याम जी के क्षेत्र से कोई संकेत मिला है? क्या आप सबने कोई संकेत देखा है? (कॉलर: पंडित जी, काँच टूट गया था, समाचार में आया था)। हाँ हाँ, काँच। उनके सामने लगा काँच टूट गया। पता नहीं वह अपने आप कैसे टूटा, यह समाचार में आया था। उस पर चिंतन करो। क्योंकि देखो, खाटू श्याम जी भगवान के सबसे बड़े भक्त हैं। वे बलाल सेन हैं। और बलाल सेन महाभारत के युद्ध में लड़ नहीं पाए थे। और अब, कलियुग के अंत में, भगवान कल्कि उन पर अपनी कृपा करेंगे। वे मनुष्य शरीर में जन्म ले चुके हैं, और वे भारत के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ेंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 47:07 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1600 वे भी तो हैं, तो उनका जन्म कैसे होगा? मेरा मतलब अश्वत्थामा से है।

उत्तर: अश्वत्थामा अमर हैं। सुनिए, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण — ये सब अमर हैं। अश्वत्थामा अमर हैं, अर्थात् उनकी मृत्यु नहीं हुई है। वे इस समय भगवान कल्कि की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और भविष्य मलिका में लिखा है कि अश्वत्थामा भगवान कल्कि की शरण में आएँगे, और भगवान कल्कि उनकी सारी पीड़ा और कष्ट हर लेंगे और उन्हें दिव्य शरीर प्रदान करेंगे। वे भी भारत के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ेंगे। वे अमर हैं; उनका जन्म नहीं होगा। वे जीवित हैं। लेकिन बलाल सेन जन्म ले चुके हैं, अभिमन्यु जन्म ले चुके हैं, बब्रुवाहन जन्म ले चुके हैं, घटोत्कच जन्म ले चुके हैं, एकलव्य जन्म ले चुके हैं — सब जन्म ले चुके हैं। पंच पांडव जन्म ले चुके हैं। वे सब भगवान कल्कि के विनाश और धर्म की पुनः स्थापना के कार्य के लिए तैयार हो रहे हैं। यह सबको पता नहीं होगा; हम आपको भविष्य मलिका से सब कुछ बता रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:27 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1601 पंडित जी, मुझे संध्या करते हुए एक महीना हो गया है। इससे पहले मैंने तीन-चार दिन की और फिर छोड़ दी थी। फिर मुझे एक सपना आया जिसमें एक 12 साल का बालक सबको त्रिसंध्या के बारे में कागज़ बाँट रहा था। डर के मारे मैंने फिर से संध्या करना शुरू कर दिया। इसका क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: भगवान आपसे कह रहे हैं, 'मैं मालिका बाँट रहा हूँ, और आप लोगों ने त्रिसंध्या का मार्ग क्यों छोड़ दिया?' क्योंकि यह परिवर्तन का समय है। और स्वयं भगवान आपसे यह कह रहे हैं। क्योंकि, माँ, यह केवल भाग्यशालियों के लिए है—सबसे भाग्यशाली लोगों के लिए, पैसे के हिसाब से भाग्यशाली नहीं। दुनिया की सबसे बड़ी संपत्ति के मालिक को भी यह सौभाग्य नहीं मिलेगा। यह सबको नहीं मिलता। क्योंकि इस जन्म में तो आपको शायद कुछ छोटा-सा मिले, लेकिन आने वाले अनंत जन्मों तक त्रिसंध्या लोगों को बचाती रहेगी। संध्या कीजिए, प्रभु की शरण में रहिए। समय के साथ-साथ आपको प्रभु के संकेत मिल रहे हैं। आनंद से अपना कार्य कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 50:16 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1602 जी, मेरा एक प्रश्न था। सैन्यकर्मियों, भारत के सैनिकों के विषय में—क्योंकि मैं भी कुछ प्रचार का कार्य कर रहा हूँ, बहुत से लोग फोन करके मुझसे पूछते हैं कि वे विवश हैं। उनके मेस में जहाँ भोजन बनता है, वहाँ मांसाहारी भोजन भी बनता है। ऐसी स्थिति में वे क्या करें?

उत्तर: यह प्रश्न... वास्तव में, उनकी स्थिति को देखते हुए, वे क्या कर सकते हैं? लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ, बेटा? धर्म तो धर्म है; वह सीधा-सरल है। और धर्म कहता है कि किसी जीव की हत्या करना महापाप है। देखिए, भगवान ने हमें जन्म दिया है, और हम स्वयं भी जीव हैं। वेद हमारे शास्त्र हैं, और वेदों में लिखा है कि मनुष्य को सत्त्वगुण (अच्छाई और पवित्रता का गुण) में स्थित होना चाहिए। और सत्त्वगुण में स्थित मनुष्य को भगवान की कृपा प्राप्त होती है। तो इस जटिल प्रश्न का मेरे पास कोई समाधान नहीं है। लेकिन इतना मैं कह सकता हूँ: वे कम से कम माधव का नाम जपें। वे हमारे देश की रक्षा कर रहे हैं। हमारे मन में उनके लिए बहुत आदर है; वे दिन-रात हमारे राष्ट्र की रक्षा के लिए कार्य करते हैं। उन पर भगवान की कृपा हो। वे माधव का नाम जपें, आगे बढ़ें, और देश की सुरक्षा को मजबूत करें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:40 · 5 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1603 हैदराबाद की क्या स्थिति होगी? हैदराबाद में बहुत सारे मुस्लिम लोग हैं। और किस प्रकार की विपत्ति, किस प्रकार की प्राकृतिक आपदा आ सकती है? क्या होगा? क्या लिखा है?

उत्तर: पूरा आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु—ये सभी समुद्री प्रलय, बाढ़, भूकंप और अनजानी बीमारियों से प्रभावित होंगे। एक समय ऐसा आएगा जब समुद्र विशाखापट्टनम में पहाड़ी पर विराजमान देवी तक पहुँच जाएगा। तो धर्म की पुनःस्थापना के इस समय में पंचतत्वों से उत्पन्न आपदाएँ भी रहेंगी। लेकिन सबसे बड़ी राहत यह है कि भविष्य मालिका में रामेश्वरम मंडल (क्षेत्र) के बारे में लिखा है। रामेश्वरम मंडल दक्षिण का प्रतिनिधित्व करेगा। इसका नाम भगवान कल्कि के क्षेत्र के नाम पर होगा। उस क्षेत्र में सभी भक्त एकत्र होंगे। कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के भक्त सब एक क्षेत्र में एकत्र होंगे और भगवान कल्कि के नाम के प्रचार का कार्य करेंगे। तो धर्म की स्थापना निश्चित रूप से होगी। आपदाएँ तो आती रहेंगी, पर उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि भक्तों का धर्म की ओर मुड़ना, मानवता का धर्म की ओर मुड़ना आवश्यक है। क्योंकि मालिका में दो सिद्धांत लिखे हैं: एक है उन पापियों का विनाश जो संसार और सृष्टि के लिए हानिकारक हैं—उनके लिए यह विनाश का कारण है। और दूसरी ओर, उन अच्छे, पवित्र मनुष्यों का उद्धार जो भगवान के भक्त हैं, और उन्हें एक अच्छे स्थान पर स्थापित करना। ये दोनों तत्व भविष्य पुराण में हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:27 · 5 अक्टूबर 2023

सत्र 97 · प्रश्न 1604–1627

L103 - शून्य में धूमकेतु का दृश्य होगा भाग - 2 | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 6 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1604 पंडित जी, मेरा प्रश्न 'श्री सत्य गाथा' नाम के एक यूट्यूब चैनल के बारे में है। उन्होंने एक वीडियो डाला जिसमें दावा किया गया कि भगवान कल्कि, हमारे माधव, इस धरती पर एक विचार या भाव के रूप में आएंगे, मानव रूप में नहीं। उनका तर्क है कि उनका जन्म नहीं होगा, बल्कि वे केवल एक रूप धारण करेंगे, क्योंकि भगवान जगन्नाथ ही सर्वोपरि हैं और सब कुछ देखते हैं। उन्होंने एक श्लोक भी दिखाया। इस पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: भगवान जगन्नाथ स्वयं मानव रूप धारण करेंगे और गुप्त रूप से अपनी लीला करेंगे। भक्त उन्हें कल्कि कहेंगे, जिनका रूप नीला-श्वेत होगा। यह घटना टलेगी नहीं और न ही झूठी सिद्ध होगी; भक्त चार युगों से इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। शास्त्र कहते हैं, 'जगन्नाथ मानव शरीर में संसार में विचरण करेंगे।' भगवान कभी माता-पिता के बिना संसार में नहीं आए। व्यास जी ने लिखा है कि भगवान कल्कि का जन्म संभल गाँव में एक प्रमुख ब्राह्मण के घर होगा। क्या व्यासदेव जी के वचन मिथ्या हैं? जो लोग मालिका को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, उन्हें उसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। मैं तोड़-मरोड़ नहीं करता। न व्यासदेव जी के वचन मिथ्या होंगे, न पंच सखा के। कोई भी पुराण—चाहे कल्कि पुराण हो, विष्णु पुराण हो, या वायु पुराण—मिथ्या नहीं है। हम शास्त्रों के अनुसार बोलते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 14:06 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1605 प्रभु जी, मेरा प्रश्न है, जैसा भविष्य मालिका में लिखा है, क्या माधव श्री का अवतार लेना आवश्यक नहीं है? क्या वे इसके बजाय किसी के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं?

उत्तर: नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। जब भगवान आते हैं, तो वे धर्म की स्थापना के लिए माता-पिता सहित आते हैं। वे बचपन से ही अपने भक्तों के साथ मनुष्य जैसी दिव्य लीलाएँ करते हैं। वे धर्म की स्थापना के लिए मनुष्य की तरह आते हैं। उदाहरण के लिए, प्रह्लाद अवतार में भगवान सीधे वैकुंठ से आए, अवतार लिया, और फिर चले गए। लेकिन कल्कि अवतार को धर्म की स्थापना में कई वर्ष लगेंगे, इसलिए उन्हें मानव शरीर में आना होगा, किसी क्षणिक दिव्य शरीर में नहीं। व्यास जी ने श्रीमद्भागवत में लिखा है कि भगवान कल्कि एक ब्राह्मण परिवार में एक अत्यंत शक्तिशाली मनुष्य के रूप में जन्म लेंगे। इस विषय पर कल्पनाएँ करना अच्छा नहीं है। सनातन धर्म में हमें वही स्वीकार करना चाहिए जो शास्त्रों में लिखा है, न कि अलग-अलग विचारधाराएँ गढ़नी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 17:03 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1606 प्रभु, हम टेलीग्राम पर सुधर्म महासंघ समूह से जुड़े हुए हैं। जैसे-जैसे टेलीग्राम पर जानकारी आती है, क्या हमें परिवार के हर सदस्य के लिए अलग-अलग नाम देने होंगे?

उत्तर: देखिए, आप में से जो लोग सत्संग से जुड़े हैं और ऑनलाइन सत्रों में सम्मिलित होते हैं, वे उन नंबरों पर संपर्क कर सकते हैं जो आपको दिए गए हैं। यदि आवश्यक हो, तो आप उनसे कह सकते हैं कि वे मेरे साथ कॉन्फ्रेंस कॉल की व्यवस्था करा दें। नए लोग भी उन संपर्कों के माध्यम से जुड़ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 19:21 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1607 पंडित जी, इस प्रलय में हमारे आस-पास के मूक प्राणियों का क्या होगा, जैसे कुत्ते, बिल्लियाँ और ऐसे सभी अन्य पशु?

उत्तर: मनुष्यों सहित सभी प्राणी अपने कर्म के अनुसार जन्म लेते हैं। जगत के कल्याण के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना कार्य करें, चाहे वह पशुओं के लिए हो, वनस्पतियों के लिए हो, या मनुष्यों के लिए। सभी जीव अपने पूर्व कर्मों के अनुसार जन्म लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:12 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1608 मुझे एक शंका थी। मैं एक टेलीग्राम समूह में हूँ जहाँ मुझे बताया गया कि यदि कोई मर रहा हो, तो हमें उसके लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए या उसे बचाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे प्रभु पर छोड़ देना चाहिए। मैं इस पर आपका मत जानना चाहता था।

उत्तर: किसी भी मनुष्य या पशु की सहायता करना धर्म (धर्म-कर्तव्य) का कार्य है। परंतु भगवान से हमारी मुख्य प्रार्थना यह होनी चाहिए: 'हे प्रभु, धर्म का प्रकाश हो, और पापियों का विनाश हो।' क्योंकि जो जगत के कल्याण के विरुद्ध हैं, वे केवल दुःख ही लाते हैं। धर्मात्मा और पवित्र लोग इस संसार में बसें, इसीलिए भगवान धर्म की स्थापना करते हैं। तो धर्म के प्रकाश और अधर्म के विनाश के लिए प्रार्थना कीजिए। इस मार्ग पर चलिए और संध्या कीजिए, सब ठीक होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:24 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1609 यह संसार मूल रूप से नश्वर है। नौकरी, व्यापार और जीवन स्वयं एक दिन समाप्त हो जाएगा। भगवान ने ऐसा क्षणभंगुर संसार क्यों बनाया?

उत्तर: आप ज्ञानी हैं जो ऐसा प्रश्न पूछ रहे हैं। भगवान ने यह क्षणभंगुर संसार देवताओं से लेकर मनुष्यों तक, सभी प्राणियों के कर्मों के न्याय के लिए बनाया। यदि प्राणियों को स्थायित्व मिल जाता, तो देवता अहंकारी हो जाते, और मनुष्य, मृत्यु के भय के बिना, पाप में लिप्त हो जाते। यह नश्वरता कर्म के द्वारा परिवर्तन की संभावना देती है। पृथ्वी वह स्थान है जहाँ सभी आत्माओं के कर्मों का न्याय होता है। जीव अपने कर्म के कारण जन्म लेता है, और जब वह कर्म समाप्त हो जाता है, तो वह दूसरा जन्म लेता है। यह संसार कर्म के नियम को बनाए रखने के लिए रचा गया। जिनके पास मुक्ति का मार्ग है, उन्हें मनुष्य जन्म दिया जाता है। जो बुरे कर्म करते हैं, वे छोटे-निम्न प्राणियों के रूप में जन्म लेते हैं। इस व्यवस्था के बिना कोई नियम-व्यवस्था न होती। भगवान के लिए इसकी रचना करना आवश्यक था; यह उनकी इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 24:15 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1610 ब्रह्म क्या है, और उसे कैसे जाना जा सकता है?

उत्तर: गीता में अर्जुन को बताया गया था कि ब्रह्म अविनाशी है; वह ज्योति स्वरूप है। हर कण में जो प्राणशक्ति हम देखते हैं, वह ब्रह्म का ही अंश है। ब्रह्म वह है जिसका कोई रूप नहीं और कोई वर्णन नहीं; वह करोड़ों ब्रह्मांडों में व्याप्त है। भक्तों के लिए प्रभु ब्रह्म से साकार रूप में आकर दर्शन देते हैं। ऋषियों के लिए प्रभु निराकार ब्रह्म की ज्योति के रूप में प्रकट होते हैं। ब्रह्म अविनाशी और अजन्मा है। मानवता की आवश्यकता के लिए प्रभु कभी-कभी पृथ्वी पर अवतार लेते हैं और साकार, मानव रूप धारण करते हैं। मनुष्य में ब्रह्म का पूर्ण वर्णन करने की शक्ति नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 27:33 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1611 अभी जो बच्चे जन्म ले रहे हैं, उनका क्या होगा? जब विनाश आरंभ होगा, तब उनका क्या होगा? मुझे इसी बात की चिंता है।

उत्तर: हर जीव, चाहे मनुष्य हो या कोई और, अपने ही कर्म के कारण इस संसार में आया है। इस जन्म में भले ही हम उनका परिवार हों, पर वे अपने पूर्व कर्मों के कारण ही यहाँ आए हैं। कर्म का नियम ईश्वर के अधीन है। परंतु यह समझिए कि इस समय सत्य युग के आगमन के लिए अनेक अच्छी और ज्ञानी आत्माएँ जन्म ले रही हैं। वे नए युग के लिए अच्छा कार्य करेंगी। किंतु अंततः किसी के साथ क्या होगा, यह उसके कर्म पर निर्भर है, और कर्म ईश्वर के हाथ में है। लोग अलग-अलग परिवारों और धर्मों में जन्म लेते हैं, और सभी अपने कर्म के अधीन हैं।

► यह उत्तर सुनें · 29:36 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1612 पितृ पक्ष (पितरों के पक्ष) के इस समय में कुछ लोग कहते हैं कि नियमित पूजा नहीं करनी चाहिए। यदि हम भगवान को भोग अर्पित करें, तो क्या वे उसे स्वीकार करते हैं?

उत्तर: हाँ माता, वे स्वीकार करते हैं। यदि हम भक्ति के साथ भगवान को प्रसाद अर्पित करें, तो वे उसे अवश्य स्वीकार करेंगे। मैंने ऐसे प्रसंग देखे हैं जहाँ भक्त भोग अर्पित करते हैं और पूरी थाली खाली हो जाती है, क्योंकि भगवान ने उसे स्वीकार कर लिया। जैसा कहा जाता है, 'भगवान जिस रूप में प्रकट होते हैं, वह व्यक्ति की भक्ति और प्रेम पर निर्भर करता है।' यदि आप भक्ति के साथ कुछ भी अर्पित करें—जल, फल, फूल, या केवल अपनी भक्ति—भगवान उसे स्वीकार करते हैं। इसी कारण यह संसार चल रहा है। सूर्य, चंद्रमा, वर्षा, फसलें—सब कुछ उन्हीं की कृपा से फलता-फूलता है। यदि आपमें सच्ची भक्ति है, तो वे आपका अर्पण अवश्य स्वीकार करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:16 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1613 बच्चों वाले पिछले प्रश्न के संदर्भ में, मैंने हाल ही में आठ महीने की एक बच्ची का वीडियो देखा जो अपनी माँ के संस्कृत श्लोकों से जुड़े प्रश्नों का सही-सही उत्तर दे रही थी। क्या ऐसे दिव्य जीव अभी मनुष्य रूप में जन्म ले रहे हैं?

उत्तर: मैं पहले भी कह चुका हूँ: वर्तमान युग समाप्त हो रहा है। अब देवता, यक्ष, गंधर्व, भक्त और ऋषि—सभी अवतार ले रहे हैं। अनेक अच्छे मनुष्य और पवित्र आत्माएँ पृथ्वी पर आ रही हैं। सब कुछ ईश्वर के अधीन है, और लोगों को अपने कर्म के अनुसार फल मिलेगा। जैसे देवता जन्म ले रहे हैं, वैसे ही असुर भी जन्म ले रहे हैं। भगवान सबका उद्धार करेंगे—बच्चों का भी और वृद्धों का भी—पर व्यक्ति के कर्म धर्ममय होने चाहिए। इस समय पृथ्वी पर अनेक पवित्र आत्माएँ जन्म ले रही हैं, क्योंकि युग की यही माँग है।

► यह उत्तर सुनें · 32:48 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1614 आपने एक बार कहा था कि हमारी परंपरा माधवी संप्रदाय है। इससे पहले आपका संप्रदाय कौन-सा था, और आपके गुरु का कौन-सा था?

उत्तर: मेरा संप्रदाय सनातन संप्रदाय है, हिंदू संप्रदाय है। आने वाले सत्य युग में एकमात्र संप्रदाय माधव आचार्य संप्रदाय होगा। भक्त चैतन्य महाप्रभु के सिद्धांतों का पालन करेंगे: नाम जप, पवित्रता, भक्ति और समर्पण। कलियुग में अनेक परंपराएँ बनीं, पर सत्य युग में केवल माधव परंपरा ही रहेगी। भविष्य पुराण माधव आचार्य संप्रदाय के बारे में लिखता है, और भगवान कल्कि का संप्रदाय माधव कहलाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:09 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1615 भविष्य मालिका से जुड़े एक इंस्टाग्राम पेज पर कुछ लोग घटनाओं की विशिष्ट तिथियाँ बता रहे हैं, जैसे अक्टूबर में। क्या यह सच है?

उत्तर: तिथियाँ बताने वाले लोगों से भ्रमित मत होइए। भविष्य पुराण में कहीं भी महापुरुष अच्युतानंद या पंच सखा ने कोई विशिष्ट तिथि नहीं दी है। मैंने भी आपको कभी कोई तिथि नहीं दी है। मैंने केवल इतना कहा है कि कठिन समय आ रहा है, और लोग उससे बचाए जाएँगे। समय ईश्वर के अधीन है; वे कब कार्य करेंगे, यह उनकी इच्छा है। धर्म की स्थापना की प्रक्रिया चल रही है। भक्त बचाए जाएँगे, पापी नष्ट होंगे, और सत्य युग का निर्माण होगा। ऑनलाइन जो तिथियाँ आप देखते हैं, उनके पीछे मत जाइए; वे कहीं लिखी नहीं हैं। लोग अपने लाइक्स और शेयर बढ़ाने के लिए ऐसी बातें कह सकते हैं। आप बस भक्ति के साथ त्रिसंध्या कीजिए और भगवान की शरण में रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 37:56 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1616 यदि किसी व्यक्ति ने जीवन भर गलत काम किए हों, पर अब उसे इस मार्ग के बारे में पता चले और वह इसका ठीक से पालन करने लगे, भले ही भय के कारण—तो क्या भगवान उसे बचाएँगे?

उत्तर: देखिए, रत्नाकर डाकू जैसा महापापी भी महर्षि वाल्मीकि बन गया, क्योंकि पूर्व कर्मों के परिणाम धर्म (धर्ममय जीवन) से धुल सकते हैं। यदि किसी ने बुरे कर्म किए हैं पर अब वह अच्छा बनना चाहता है, तो अभी भी समय है। यदि वह त्रिकाल संध्या करे और इस पवित्र धारा में माधव नाम का जप करे, तो भगवान की कृपा उस पर अवश्य होगी। यही मेरा विश्वास है।

► यह उत्तर सुनें · 39:16 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1617 और उन लोगों का क्या जिन्होंने जीवन भर पूजा-पाठ और अच्छे कर्म किए हैं, पर वे इस नए मार्ग पर नहीं हैं? उनका क्या होगा?

उत्तर: अच्छे व्यक्ति को अच्छा फल अवश्य मिलेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। पर बात यह है कि सत्य युग का उदय हो रहा है। इस नए युग के शास्त्रों के अनुसार, सभी मनुष्यों को त्रिकाल संध्या के मार्ग का पालन करना होगा। समय आने पर उन्हें इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। त्रिकाल संध्या मूलभूत, पवित्र सनातनी परंपरा है। इसमें दस अवतारों का सार, महाविष्णु के 16 नाम, 18 पुराण, देवी माताओं की स्तुतियाँ, और भगवान का परम नाम माधव समाहित हैं। इसका पालन करने से कल्याण, मुक्ति और सांसारिक बंधनों से छुटकारा मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:37 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1618 मालिका कोल्हापुर क्षेत्र (जो अपने महालक्ष्मी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है) के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: भविष्य पुराण कहता है कि कलियुग के अंत में माँ महालक्ष्मी और भगवान कल्कि मिलकर धर्म की स्थापना करेंगे और भक्तों की रक्षा करेंगे। कोल्हापुर की महालक्ष्मी जगन्नाथ क्षेत्र की महालक्ष्मी से भिन्न नहीं हैं; वे एक ही हैं। महालक्ष्मी की जहाँ भी पूजा होती है—चाहे ओडिशा में, कोल्हापुर में, या द्वारका में—वे वही एक देवी हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में प्रकट होती हैं। तो हाँ, शास्त्र महालक्ष्मी की भूमिका के बारे में बताते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:06 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1619 कृष्णा नदी पर कोयना बाँध के पास, हलसिद्धनाथ की भविष्यवाणियाँ 15 वर्षों से कहती आई हैं कि जब बाँध टूटेगा, तब '9 लाख चूड़ियाँ टूटेंगी।' इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: कृष्णा नदी के बाँध के संबंध में भविष्य मालिका कहती है कि भारत और विश्व के सभी बड़े बाँधों को महाभूकंपों और युद्ध के प्रभावों से संकट का सामना करना पड़ेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात जो लिखी है वह यह है कि भक्त बचाए जाएँगे और पापी नष्ट होंगे। जो धर्म का पालन करेंगे वे सुरक्षित रहेंगे, जबकि जो अधर्म का पालन करेंगे उन्हें संकट झेलना पड़ेगा। युग बदल रहा है, और कलि का प्रभाव समाप्त होगा। जो कलि के मार्ग में डूबे हुए हैं, उन पर विपत्ति आएगी। इस समय धर्मात्मा कष्ट भोग रहे हैं, पर आने वाले समय में पापी कष्ट भोगेंगे। यही संसार का नियम है; अंधकार के बाद प्रकाश आता है। अपने कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है।

► यह उत्तर सुनें · 42:12 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1620 जो भक्त अच्छा और भक्तिमय है पर इस गूगल मीट या इस विशेष समुदाय से जुड़ा नहीं है, वह सत्य युग में कैसे प्रवेश कर पाएगा?

उत्तर: अच्छे लोग अच्छे हैं, और ईश्वर की कृपा सदैव उन पर रहती है। पर जिस युग की ओर हम बढ़ रहे हैं, उसमें वही अच्छे लोग समय के साथ इस धारा से जुड़ जाएँगे। मैंने भविष्य मालिका से यही सिखाया है कि 64 करोड़ भक्त बचाए जाएँगे। समय के साथ सभी इस पवित्र परंपरा से जुड़ेंगे। यदि अच्छे लोग आज नहीं जुड़े हैं, तब भी ईश्वर की कृपा उन पर है। पर अंततः संसार के सभी भक्त सत्य युग में भगवान के शासन के अंतर्गत एक साथ आएँगे। भगवान के अलावा वे और कहाँ जाएँगे? सभी आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:31 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1621 क्या नवंबर या दिसंबर 2023 में भारत में किसी बड़ी उथल-पुथल की आशंका है?

उत्तर: नवंबर 2023 में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं। दिसंबर में हमारे देश में कहीं भूकंप आने की संभावना है। लेकिन इसके अलावा कोई बड़ी घटना संकेतित नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 45:53 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1622 पंडित जी, ब्रह्म प्रलय (महान ब्रह्मांडीय विलय) कब होता है?

उत्तर: ब्रह्म प्रलय एक ब्रह्म कल्प पूर्ण होने के बाद होता है, जब भगवान ब्रह्मा शयन करने चले जाते हैं। उस समय वे पृथ्वी का पालन करना बंद कर देते हैं। यह सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग का चक्र पूर्ण होने और एक और सत्य युग बीत जाने के बाद होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:07 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1623 विश्व युद्ध के संबंध में, क्या मालिका में लिखा है कि युद्ध 6 वर्ष और 6 महीने तक चलेगा, और भारत अंतिम 9 महीनों में शामिल होगा?

उत्तर: नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं लिखा है। भविष्य मालिका में कहा गया है कि पाकिस्तान सबसे पहले भारत पर आक्रमण करेगा। भारत ने कभी भी पहले आक्रमण नहीं किया है। फिर यह संघर्ष बढ़ेगा, और चीन इसमें शामिल हो जाएगा। तेरह मुस्लिम देश चीन के साथ एकजुट होंगे, और साथ में तुर्की भी। अमेरिका और नाटो के सदस्य भी जुड़ेंगे, और यह विश्व युद्ध में बदल जाएगा। यही लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 47:51 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1624 क्या इस महीने 14 से 28 तारीख के बीच, एक ही पक्ष में दो ग्रहण — एक चंद्र और एक सूर्य — पड़ रहे हैं?

उत्तर: हाँ, और ऐसा पहले भी हुआ है, पिछले वर्ष भी। ऐसी खगोलीय घटनाएँ, जैसे एक ही पक्ष में दो ग्रहण या अमावस्या और संक्रांति का होना, युग परिवर्तन के संकेत हैं। लोग समझते नहीं कि ये सत्य युग के आगमन के संकेत हैं। इसी कारण पृथ्वी पर बहुत से परिवर्तन होंगे, जो पापियों के लिए दुःखदायी और विनाशकारी सिद्ध होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 49:43 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1625 आपने कहा था कि 64 करोड़ लोग बचेंगे (भारत में 33 करोड़ और विश्वभर में 31 करोड़)। क्या उन सबका शाकाहारी या वीगन होना आवश्यक है?

उत्तर: हाँ। देखिए, आने वाले समय में सरकारें और विश्व स्वास्थ्य संगठन स्वयं घोषित करेंगे कि मछली, अंडा और मांस खाने से रोग होते हैं। सब लोग इन्हें छोड़ देंगे। समय के साथ सब बदल जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 50:56 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1626 जैसे पिछले युगों में राम और कृष्ण जैसे अवतार हुए थे, क्या वही लोग फिर से जन्म लेंगे?

उत्तर: श्रीमद् भागवत पुराण में लिखा है कि भगवान के भक्त और उनके परिवार हर युग में उनके साथ आते हैं। श्रीमद् भागवत महापुराण में इसका वर्णन है। तो जो भक्त और परिवार त्रेता, द्वापर और सत्य युग में भगवान के साथ थे, वे इस समय भी उनके साथ कार्य करेंगे, और वास्तव में वे पहले से ही कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 51:54 · 6 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1627 मैं गीत गोविंद के बारे में जानना चाहता था। इसे सुनने का उपयुक्त समय क्या है, और क्या हम भगवान के लिए इसका ऑडियो बजा सकते हैं?

उत्तर: गीत गोविंद के श्लोक भगवान जगन्नाथ और राधा-कृष्ण को अत्यंत प्रिय हैं, क्योंकि ये उनकी दिव्य रास लीला का वर्णन करते हैं। यह भगवान को बहुत प्रसन्न करता है। आप रात्रि में, अपने पूजा के समय, लगभग 9 से 11 बजे के बीच, जब भी आपके पास समय हो, इसका पाठ कर सकते हैं या भगवान के लिए ऑडियो बजा सकते हैं। भगवान बहुत प्रसन्न होते हैं, और इससे घर और परिवार में बड़ी शांति आती है। भगवान की उपस्थिति का अनुभव होता है।

► यह उत्तर सुनें · 52:53 · 6 अक्टूबर 2023

सत्र 98 · प्रश्न 1628–1646

L104 -श्री कल्कि एवं सुधर्मा महा महा संघ के बारे में तेर जनम शरण में प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 7 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1628 सच्चा गुरु कौन होता है, और कृपया आत्म-साक्षात्कार के बारे में थोड़ा बताइए?

उत्तर: देखिए, यह एक गूढ़ विषय है, फिर भी मैं आपको बताता हूँ। इस संसार में सच्चा गुरु, मेरे मत में... (एक श्लोक उद्धृत करते हैं)... और स्वयं भगवान ही हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ और सच्चे गुरु हैं। और भगवान गुरु कैसे बनते हैं? जब हम भगवान को अपने हृदय में धारण करते हैं और अपने सभी कर्म उन्हें समर्पित कर देते हैं, तब भगवान गुरु के रूप में हमारी अंतरात्मा में खड़े होकर हमें बताते हैं, मार्गदर्शन करते हैं, और हमारे कर्मों को नियंत्रित करते हैं। वही हमारे गुरु हैं। यदि आप ऐसी अवस्था तक पहुँच सकें, तो आप दिव्य सिद्धांतों और भगवान के मार्गदर्शन से अपना मानव जीवन सफल कर सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:19 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1629 मुझे ऐसा लगता है कि मैं बहुत जल्द भगवान से मिलूँगा, और मुझे बहुत रोना आता है। मुझे क्या करना चाहिए? मुझे कुछ समझ नहीं आता।

उत्तर: बाबा, यह भक्त का लक्षण है। जब भगवान की बातों और भगवान के ध्यान से भक्ति जागृत होती है, और आँखों में आँसू आ जाते हैं, तब आत्मा और परमात्मा का सूक्ष्म मिलन हो जाता है। आपका मिलन तो हो ही चुका है, और समय आने पर आपको साक्षात् दर्शन अवश्य होंगे। चिंता मत कीजिए, बाबा। आप त्रिकाल संध्या कीजिए, और उसमें भगवान आपको बहुत कुछ दिखाएँगे। मुझे बताइए कि भगवान आपको क्या दिखा रहे हैं। वे आपके स्वप्न में आएँगे, या भिन्न-भिन्न रूपों में साक्षात् भी प्रकट होंगे। तो उसका अनुसरण कीजिए और व्याकुल होने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जिसे मालिका मिल गई, जिसे भविष्य पुराण मिल गया, उसे भगवान मिल गए। और वही सबसे बड़ा मार्ग है, वह मार्ग जो हमें भगवान तक ले जाता है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:28 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1630 पिताजी, सत्य युग में कौन-सी भाषाएँ प्रचलित होंगी? जैसे इस युग में अनेक भाषाएँ हैं, आदि सत्य युग में कौन-सी भाषा होगी? क्या केवल संस्कृत होगी, या वे भाषाएँ भी होंगी जो हम सब बोलते हैं?

उत्तर: नहीं, माता जी। यह आने वाला आदि सत्य युग देवताओं का युग होगा। और देवता जिस भाषा में बोलते हैं, उसे देवनागरी कहते हैं। देवनागरी भाषा तमिल, तेलुगु, हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और ओड़िया का मिश्रण है। यह इन सबको मिलाकर बना एक भाषिक तत्व है। देवता उसी भाषा में बात करते हैं। और जब देवता पृथ्वी पर आएँगे, तो भगवान पृथ्वी को उनके लिए स्थान बनाएँगे, इसलिए देवनागरी भाषा पूरे विश्व में प्रयोग होगी। यह एक पवित्र भाषा है। स्वर्ग, ब्रह्मलोक और सूर्यलोक में उसी भाषा में वार्तालाप होता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:41 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1631 मेरा प्रश्न यह है कि यदि हम संध्या कर रहे हैं, तो नए भक्तों को इस धारा में लाने के लिए हम क्या कर सकते हैं? क्योंकि लोगों को कई बार बताने पर भी वे जुड़ने में हिचकिचाते हैं। तो क्या किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए बाबा, आपकी भावना बहुत पवित्र है, और हम इस भावना का सम्मान करते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन देखिए बाबा, जब हम खेती करते हैं, तो पहले खेत को अच्छी तरह तैयार करते हैं। खाद डालते हैं और बार-बार जुताई करते हैं, मिट्टी को पलटते हैं। जब भूमि अच्छी तरह तैयार हो जाती है, तब यदि हम बीज बोते हैं तो अच्छी फसल मिलती है, अच्छे बीज निकलते हैं और उत्पादकता अधिक होती है। इसी प्रकार महर्षि अच्युतानंद ने कहा है कि जो भगवान श्रीकृष्ण के भक्त हैं, भगवान राम के भक्त हैं, जो पवित्र धारा में हैं, उन्हें बताइए। शायद उनमें से 100 में से एक या दो ही आएँगे, क्योंकि भक्तों की संख्या बहुत कम है। लेकिन सभी को बताना आवश्यक है। जिनमें जिज्ञासा है, जिनमें इच्छा और संकल्प है, उन्हें बताइए। बहुत अच्छा। भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। आगे बढ़िए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:04 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1632 मेरा पहला प्रश्न यह है कि भारत-पाकिस्तान युद्ध कब शुरू होगा? और तीन-चार दिन पहले कर्नाटक के शिमोगा जिले में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच बड़ा टकराव हुआ। तो क्या यह गृहयुद्ध में बदलेगा? क्या यह उसकी शुरुआत है?

उत्तर: देखिए, भारत-पाकिस्तान युद्ध निश्चित रूप से होगा। और यह युद्ध भगवान कल्कि के आदेश पर होगा। महाभारत युद्ध का एक भाग अभी भी शेष है। भगवान कल्कि के आदेश मात्र से युद्ध आरंभ हो जाएगा। अभी भक्तों का मिलन चल रहा है। 2025 से, ग्रहों की स्थिति और मालिका के अनुसार, युद्ध का समय और परिस्थिति निकट आ रही है। यदि भगवान कल्कि चाहेंगे तो युद्ध अवश्य होगा, या एक-दो वर्ष विलंब हो सकता है, या एक-दो वर्ष पहले भी हो सकता है। यह भगवान पर निर्भर है। रही बात गृहयुद्ध की, तो गृहयुद्ध की परिस्थिति पूरे विश्व में है, केवल भारत में नहीं। इसका कारण है कलि (कलियुग का असुर), उसके दुर्गुण, उसकी हिंसा, और मानव जाति के विनाश के लिए यह कलि का ही एक रूप है। यह गृहयुद्ध हर देश में होगा और धर्म की स्थापना में अत्यंत विनाशकारी रूप ले लेगा। अभी भी समय है कि लोग गृहयुद्ध से दूर रहें, क्योंकि गृहयुद्ध से किसी का लाभ नहीं होगा। भगवान कल्कि कर्म के अनुसार फल देने आ रहे हैं। भगवान सब कुछ देखेंगे—किसने बुरे कर्म किए, किसने अच्छे कर्म किए—उन्हें उनका फल अवश्य मिलेगा। हम चाहने भर से कुछ नहीं बदल सकते। इसलिए लोगों को संसार में शांति बनाए रखनी चाहिए, आनंद से रहना चाहिए, और धर्म को थामे रखना चाहिए, ताकि विपत्ति के समय उन्हें भगवान की रक्षा और कृपा प्राप्त हो। क्योंकि आसुरी प्रवृत्ति के लोग गलत तो अवश्य करेंगे, और भगवान कल्कि भक्तों की रक्षा करेंगे। यह हमारा विश्वास है, और यह भविष्य पुराण में भी लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:52 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1633 अक्टूबर में दो ग्रहण होने वाले हैं। उनका क्या प्रभाव होगा?

उत्तर: देखिए, अमावस्या, संक्रांति, चंद्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण—सब एक ही पक्ष में... यह सब युग परिवर्तन और ग्रह परिवर्तन का हिस्सा है। ग्रह-नक्षत्र इस समय विचलित हैं, और अब उन्हें संभालने वाला कोई नहीं है; सभी देवता और भक्त पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। इसीलिए यह सब हो रहा है। इस कारण संसार पर विपत्तियाँ आएँगी। लेकिन कोई बात नहीं, लोगों को अपना काम करना चाहिए, भगवान की शरण में रहना चाहिए। मुक्ति के लिए हम भविष्य मालिका का प्रचार कर रहे हैं और त्रिकाल संध्या सिखा रहे हैं। वही कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:43 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1634 क्या विनाश के बिना धर्म की स्थापना संभव है? आप कह रहे हैं कि विश्व युद्ध होगा और संसार में विनाश होगा। क्या यह संभव है कि भगवान बिना किसी विनाश के धर्म की स्थापना करना चाहें? क्या ऐसी कोई संभावना है?

उत्तर: देखिए, भगवान कभी विनाश नहीं चाहते। भगवान कभी कुछ अशुभ नहीं चाहते। भगवान सम्पूर्ण सृष्टि में समस्त सुख, मंगल और शांति के स्रोत हैं। लेकिन यदि मनुष्य बुरे कर्म करें, यदि वे जीवों पर अत्याचार करें, यदि वे दूसरे मनुष्यों पर अत्याचार करें, यदि वेदों का अनादर हो, यदि भगवान की निंदा हो, और यदि धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने वालों पर विपत्तियाँ आएँ और उन्हें न्याय न मिले... तुलसीदास महाराज ने इसी के बारे में लिखा है: 'जब जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी। करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी, सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी...' जब संतों, भक्तों, ब्राह्मणों, गौ माता, देवताओं और धरती माता पर अत्याचार होता है, तब भगवान सज्जनों के कष्ट दूर करने के लिए विविध रूपों में अवतार लेते हैं। वे संतों, पवित्र और सत्यनिष्ठ जनों की रक्षा करने आते हैं। वे अच्छे लोगों को अच्छा स्थान देते हैं और जो हानिकारक हैं तथा मानवता को कष्ट देते हैं, उन्हें दंड देते हैं। यदि कोई पाप करे और उसे दंड न मिले, तो पाप बढ़ता ही जाएगा। यदि पाप बढ़ेगा, तो पृथ्वी का संतुलन बिगड़ जाएगा। आज संसार में बार-बार भूकंप आने का कारण मनुष्य का पाप है। हर महीने चक्रवात आने का कारण मनुष्य का पाप है। समुद्र बार-बार भूमि को डुबोता है, नदियों में बेमौसम बाढ़ आती है, पहाड़ों पर भारी वर्षा से घर बह जाते हैं—यह सब मनुष्य के पाप के कारण है। यदि इसे ठीक नहीं किया गया, तो पृथ्वी नहीं बचेगी। और यदि पृथ्वी नहीं बचेगी, तो मानव सभ्यता का प्रश्न ही खड़ा हो जाएगा। इसीलिए यह सब आवश्यक है। भगवान धर्म को देखते हैं और पापियों का विनाश करते हैं। वे अच्छे लोगों का कोई अहित नहीं करते। यदि कोई कलियुग के संविधान के अंतर्गत कुछ गलत करता है, तो संविधान के अनुसार उसे जेल या जुर्माना होता है। इसी प्रकार, भगवान के विधान के अंतर्गत भी वह दंड का भागी होता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:53 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1635 कुल मिलाकर कितने कल्कि अवतार होंगे, कितने अभी आने बाकी हैं, और कितने हो चुके हैं?

उत्तर: शास्त्रों और मालिका के अनुसार, कल्कि अवतार, भगवान का अवतरण, हो चुका है। और भगवान कल्कि ने धर्म की स्थापना भी आरंभ कर दी है। अभी भक्तों के मिलन के लिए भविष्य मालिका का प्रचार हो रहा है। जो वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण और भगवान राम के भक्त थे, उनकी मुक्ति के लिए हम भविष्य मालिका का प्रचार कर रहे हैं। इसके माध्यम से वे भक्त अवश्य बचाए जाएँगे। संसार में सत्ययुग के आगमन का यह पहला चरण है। और आने वाले समय में भगवान द्वारा विस्तृत कार्य किया जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:26 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1636 माधव नाम का अर्थ क्या है? और इस युग में माधव का रंग क्या है? जैसे कृष्ण रूप में वे श्याम रंग में आए थे। तो अब उनका रंग क्या है, और उनके नाम माधव का अर्थ क्या है?

उत्तर: देखिए, 'मा' ब्रह्म का स्वरूप है, मूल प्रकृति का स्वरूप है, अर्थात् माता, माता राधा रानी। और 'धव' का अर्थ है पति या स्वामी। तो 'मा' के स्वामी हैं भगवान श्रीकृष्ण। आप कृष्ण का नाम जपते हैं, आप राधा का नाम जपते हैं, लेकिन एक ही नाम में राधा रानी और कृष्ण दोनों समाहित हैं, और वह नाम है माधव। 'मा' राधा रानी हैं और 'धव' उनके स्वामी, उनके प्रभु, उनके पति, जो कृष्ण हैं। और वह नाम है माधव। माधव नाम संसार का सर्वाधिक पूजनीय, पवित्र और शक्तिशाली नाम है। माता राधा रानी निरंतर भगवान श्रीकृष्ण को माधव नाम से पुकारती थीं। गोपियाँ गोविंद, कृष्ण, दामोदर, मधुसूदन कहती थीं, लेकिन माता राधा रानी सदैव भगवान श्रीकृष्ण को 'माधव' कहकर पुकारती थीं। अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण को माधव नाम से पुकारते थे। माता द्रौपदी भगवान श्रीकृष्ण को माधव नाम से पुकारती थीं, क्योंकि वे जानती थीं कि यह नाम भगवान का सर्वाधिक मुक्तिदायक नाम है। और कलियुग के समस्त भक्तों की मुक्ति के लिए माधव नाम का प्रचार हो रहा है। और माधव, इस समय... (श्लोकों का उद्धरण)... तो माता जी, जब भगवान कल्कि आ चुके हैं, तो भगवान के वर्ण के विषय में लिखा है कि वह 'चंद्र वर्ण' (चंद्रमा के रंग का) होगा। दूध और रक्त के रंग का मिश्रण भगवान कल्कि का वर्ण होगा। 'चंद्र वर्ण', चंद्र देव के रंग जैसा, वही भगवान कल्कि का वर्ण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:25 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1637 क्या महाप्रभु राजस्थान भी आएँगे?

उत्तर: देखिए, वे निश्चित रूप से जाएँगे। यह अखंड भारत भगवान की जन्मभूमि है। यद्यपि उनका जन्म संभल में होगा, मैं सम्पूर्ण अखंड भारत की बात कर रहा हूँ, वर्तमान भारत की नहीं। अखंड भारत भगवान की जन्मभूमि है, और भगवान हर क्षेत्र में जाएँगे। और राजस्थान एक बहुत पवित्र राज्य है, जहाँ धर्म है, जहाँ लोगों का आचरण अच्छा है। वहाँ भगवान हनुमान बालाजी के रूप में विराजमान हैं, और भगवान श्रीकृष्ण का पवित्र स्थान खाटू श्याम भी वहीं है। तो भगवान अवश्य जाएँगे। भगवान के लिए राजस्थान भक्तों की मुक्ति का स्थान है, और उन्हें बचाने के लिए उन्हें वहाँ जाना ही होगा। वे जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:38 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1638 किसी ने मुझसे कहा कि ध्यान करो कि भगवान कल्कि कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। जब मैंने एक दिन ध्यान किया, तो उस रात मेरी माँ को स्वप्न आया कि एक संन्यासी, एक योगी कह रहे हैं कि वे अभी पढ़ने गए हैं। वे पढ़ने गए हैं और अभी अध्ययन कर रहे हैं। उन्हें ऐसा स्वप्न आया। तो इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आपने जो स्वप्न देखा वह सत्य है। जब कभी हमारी भेंट होगी, तब हम इस पर बात करेंगे। मैं इस विषय पर खुलकर चर्चा नहीं कर सकता। लेकिन आपने जो स्वप्न देखा वह सही है, बिल्कुल सही। उसमें कोई असत्य नहीं है। आपको भगवान के और भी दर्शन होंगे, और आप भगवान की लीलाओं के बारे में अवश्य जानेंगे। क्योंकि भगवान ने जो तत्त्व प्रकट किया है... ऐसे भक्त लाखों में एक होते हैं, जैसे आपको यह प्राप्त हुआ। मुझे भी प्रसन्नता होती है क्योंकि यह पूरी तरह मेल खाता है। ठीक है, जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:53 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1639 तो मैं इस धारा (आध्यात्मिक आंदोलन) से कब जुड़ सकती हूँ?

उत्तर: देखिए माता जी, हमारे विवरण (डिस्क्रिप्शन) में जो नंबर दिया गया है... (सहायक से) नंबर दिखा दीजिए बाबा... उनमें से किसी भी नंबर पर फोन कीजिए और ऑनलाइन सत्संग से जुड़ जाइए। वे उस त्रिकाल संध्या की पीडीएफ उपलब्ध कराएँगे जिसकी मैं बात करता हूँ। त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, माता जी, और ऑनलाइन सत्संग में रहिए। असम में भगवान के कार्य में लग जाइए। क्योंकि इस मनुष्य जन्म को सार्थक बनाने के लिए इससे बड़ा कोई धन या संपत्ति नहीं है। हम अपनी मुक्ति के लिए आए हैं। हम बद्ध जीव हैं, और इस बंधन से केवल भगवान ही हमें मुक्त कर सकते हैं। इस समय भगवान को पाना बहुत सरल है। इस धारा का अनुसरण कीजिए, ऑनलाइन सत्संग से जुड़िए, और भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। असम से भगवान के कार्य में जुड़िए, माता जी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 49:45 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1640 गर्ग संहिता में मैंने पढ़ा कि संकर्षण माधव के रूप में आते हैं, और रेवती उनके साथ राधा रानी के रूप में आती हैं। माधव नाम बलराम जी (संकर्षण बलदेव जी) के लिए भी प्रयुक्त होता है। उसमें कहा गया है कि वे असुरों के संहार के लिए कल्कि रूप में भी प्रकट होंगे। मैं इसके पीछे के रहस्य के बारे में पूछना चाहता हूँ।

उत्तर: देखिए माता जी, मैंने आपको बताया था कि ये भगवान कल्कि बलराम, ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर का ही स्वरूप हैं। अर्थात् ये तीनों महान तत्त्व मिलकर भगवान कल्कि बनेंगे। कल्कि के बाल्यकाल में भक्त उन्हें माधव कहकर पुकारेंगे। जब भगवान कल्कि संहार का कार्य करेंगे, उस समय सब उन्हें कल्कि नाम से जानेंगे। यह भविष्य पुराण में लिखा है। और यह भगवान का एक समग्र स्वरूप है। इस समय बलराम भैया अलग से नहीं आएँगे। क्योंकि सौराष्ट्र संहिता नाम का एक ग्रंथ है। उस ग्रंथ में, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण और उनके भक्तों का संवाद है, लिखा है कि भगवान श्रीकृष्ण बाईं ओर होंगे और बलराम दाईं ओर, और दोनों मिलकर कल्कि बनेंगे। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण और माधव, बलराम और राम की यह परंपरा, इसका मूल माधवी परंपरा है। हम माधवी परंपरा से आए हैं, सनातन धर्म उसी से आया है। जगन्नाथ महाप्रभु की गुप्त परंपरा माधवी परंपरा है, भगवान श्रीकृष्ण की परंपरा माधवी परंपरा है। और उसी परंपरा के विषय में उन्होंने गर्ग संहिता में लिखा है। भगवान कल्कि भक्तों को बचाने के लिए माधव नाम के साथ आए हैं। और गर्ग संहिता में एक श्लोक भी लिखा है... (श्लोक का उद्धरण)... जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:45 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1641 मैंने सपने में भगवान जगन्नाथ को माता सुभद्रा और बलराम जी के साथ देखा। आज मैंने सपना देखा कि मैं एक शिवलिंग को साफ़ कर रही हूँ। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: अच्छा है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर। देखिए, माता सुभद्रा ब्रह्मा का स्वरूप हैं, भगवान जगन्नाथ भगवान कृष्ण हैं, और शेषनाग भगवान शंकर के अंश हैं। और आपका स्वयं को भगवान शंकर की पूजा करते हुए देखना इसका अर्थ है कि वे प्रमाण दे रहे हैं कि संहार का समय निकट है। जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा... इसका अर्थ है कि इस समय भगवान किसी न किसी रूप में संहार का कार्य करेंगे। यही इसका सार है। आपको जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा के दर्शन हो रहे हैं और आप शिव जी की पूजा कर रही हैं, यह अद्भुत है। शिव जी को एक बार अच्छे गाय के दूध से स्नान कराइए, अच्छा होगा और और भी आनंददायक होगा। ठीक है, माता जी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 54:50 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1642 मैं जानना चाहता था कि हिमाचल किस 'मंडल' (क्षेत्र/समूह) से जुड़ा होगा? और बाबा भोले (शिव) और माँ काली की क्या भूमिका होगी, क्योंकि हमारे क्षेत्र में उनकी बहुत मान्यता है? साथ ही, जैसा कि आपने बताया कि बहुत से लोग सत्य युग में जाएँगे, तो यदि कोई सत्य युग में नहीं जाना चाहता बल्कि सीधे मुक्ति प्राप्त करना चाहता है और पुनर्जन्म नहीं लेना चाहता, तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, हिमाचल उत्तर प्रदेश के पास है, इसलिए वह श्री वृंदावन मंडल में आएगा। ईश्वर-प्राप्ति के लिए, अर्थात इस जीवन से मुक्ति के लिए, देवता भी प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करते हैं और श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ते हैं। यदि आपको मुक्ति चाहिए, यदि आपको वैकुण्ठ प्राप्त करना है, तो निष्काम भाव से, बिना किसी कामना के कीजिए। प्रतिदिन त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और निरंतर माधव का नाम जपिए। मेरा मानना है कि जो ऐसा करेंगे, उनकी मृत्यु शांतिपूर्ण होगी। एक तरह की मृत्यु वह होती है जिसमें लोग छह महीने या एक साल तक बीमार पड़े रहते हैं, मरने से पहले बहुत कष्ट भोगते हैं। लेकिन जो मार्ग मैं दिखा रहा हूँ, यदि कोई व्यक्ति उसका पालन करता है और भगवान की शरण में माधव का नाम जपता है, तो मुझे विश्वास है कि उसकी मृत्यु शांतिपूर्ण होगी, अर्थात मृत्यु के समय कोई कष्ट नहीं होगा, और मृत्यु के बाद उसे वैकुण्ठ प्राप्त होगा। इससे बड़ा कोई पारंपरिक सिद्धांत कहीं नहीं है। और जो त्रिकाल संध्या करते हैं और मेरे नियमों का पालन करते हैं, वे जानते हैं कि भगवान उनके सपनों में प्रकट होते हैं, वे दिव्य हो जाते हैं। इतना कीजिए, और आपको निश्चित रूप से मुक्ति मिलेगी। यदि आपकी भक्ति और भी अच्छी है, तो यह भगवान कल्कि के अवतार का समय है। भगवान संहार करेंगे और भक्तों की रक्षा करेंगे। भक्तों और भगवान के बीच एक सुंदर राम राज्य स्थापित होगा, और आपको भी वहाँ स्थान मिल सकता है। इसलिए, भगवान की शरण लीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 56:04 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1643 मैं तीन महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ, लेकिन पिछले तीन-चार दिनों से मेरी दाईं आँख बहुत फड़क रही है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: ठीक है, देखिए, त्रिकाल संध्या करते रहिए। कुछ छोटी-मोटी समस्याएँ आ सकती हैं। दाईं आँख का फड़कना पुरुषों के लिए शुभ होता है, और बाईं आँख का फड़कना स्त्रियों के लिए शुभ होता है। चिंता की कोई बात नहीं है। माधव का नाम जपिए और त्रिकाल संध्या जारी रखिए। यह कोई समस्या नहीं होगी, और यह मानिए कि एक विपत्ति टल गई। ठीक है? ठीक है, बाबा। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 58:36 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1644 भक्ति भागवत पढ़ने से अधिक बढ़ेगी या भगवान माधव का नाम जपने से?

उत्तर: देखिए, 'कलौ तद् हरि कीर्तनात्' का अर्थ है कलियुग में भगवान का नाम कीर्तन ही मुख्य है। भागवत पढ़ने से भगवान की महिमा हमारे शारीरिक तंत्र में प्रवेश करती है, और शरीर का हर अंग शुद्ध हो जाता है। जब शरीर का तंत्र शुद्ध होता है और व्यक्ति नाम जपता है, तो फल और भी अधिक होता है। यदि आप केवल नाम जपते हैं, तो शरीर तंत्र को शुद्ध करने के लिए जो तत्व चाहिए वह भागवत से आता है। भागवत पढ़ने से शरीर पूरी तरह शुद्ध हो जाता है, और उस शुद्धता के साथ नाम जपने से और भी आनंददायक फल मिलते हैं। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 59:54 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1645 मैंने सपना देखा कि मैं अपने घर गई, और आँगन में लाल पदचिह्न थे। मेरे लड्डू गोपाल (बाल कृष्ण विग्रह) आए और मेरे पास बैठ गए, कहते हुए, 'मुझे हर जगह अपने साथ ले जाओ।' फिर, जन्माष्टमी से दो दिन पहले, मुझे एक मोरपंख भी मिला। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि यह आप पर भगवान कृष्ण की अनंत कृपा है। और माता जी, आप जहाँ भी जाएँ, लड्डू गोपाल को साथ ले जाइए क्योंकि भगवान अकेले हो जाते हैं। गोपियों और भगवान के बीच जो संबंध है, वही संबंध आपके और भगवान के बीच है। वे आपको छोड़ना नहीं चाहते। यह अद्भुत है। आपको भी प्रणाम, माता जी। भगवान को अपने साथ ले जाइए और उनकी भक्ति में लगी रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:16 · 7 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1646 लड्डू गोपाल को घर लाने के एक साल बाद, मुझे पुत्र हुआ। उसके जन्म से पहले, मैंने सपने में एक हाथी, एक ऊँट और एक बछड़ा देखा। जब मेरा बेटा पैदा हुआ, तो उसके माथे पर 'तिलक' का निशान था। एक पंडित जी ने मुझे बताया कि वह 'देव योनि' से आया है। मुझे समझ नहीं आया कि कोई दिव्य आत्मा मेरे घर क्यों आएगी, लेकिन उसके माथे पर तिलक था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आह, यह अद्भुत है, बहुत अद्भुत है, माता जी। आप उन भक्तों में से एक हैं जिनके घर में भगवान अपने ही भक्तों को भेजते हैं... यह एक भक्त का चिह्न है। जो भगवान के निकट होते हैं, उन्हें ऐसे अनुभव होते हैं। बहुत अच्छा। आपका नाम क्या है, बेटी? गीता। आप कहाँ से बोल रही हैं? दिल्ली। ठीक है, माता जी। भगवान जगन्नाथ की कृपा आप पर बनी रहे। आनंद में रहिए, और भगवान के प्रति आपकी भक्ति और भी बढ़े। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:32 · 7 अक्टूबर 2023

सत्र 99 · प्रश्न 1647–1667

L105 - छतिया बट एवं जाजपुर में कल्कि भगवान का लीला प्रकाश होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 8 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1647 पंजाब से मेरी 14 वर्षीय भतीजी, जिसका नाम भव्या है, एक प्रश्न पूछना चाहती है। अनंत चतुर्दशी की सुबह, लगभग 8:30 बजे, वह अपने घर के बाहर खड़ी थी। लगभग 30 सेकंड तक उसने पास के एक खाली प्लॉट पर एक बहुत बड़ा घर देखा। उसने एक बहुत ही दिव्य, सुंदर माता को भी देखा जिनकी आँखें नीली थीं, जो पीले वस्त्र पहने हुए थीं और जिनके बाल बहुत सुंदर थे। उनके हाथों में एक सुनहरे लड्डू गोपाल (बालकृष्ण) थे, और वे मेरी भतीजी की ओर देखकर मुस्कुरा रही थीं। भव्या जानना चाहती है कि नीली आँखों वाली वह दिव्य, सुंदर माता कौन थीं।

उत्तर: पीले वस्त्रों में वह दिव्य, सुंदर माता वैष्णो माता थीं, जो महालक्ष्मी हैं। चूँकि कलियुग से संक्रमण होकर सत्ययुग (स्वर्ण युग) आ रहा है, इसलिए उसे सुनहरे लड्डू गोपाल दिखाए गए। आपने जिस दूसरी माता का उल्लेख किया, माँ काली, वे संहारकर्ता हैं। अनंत चतुर्दशी पर दोनों के दर्शन प्राप्त होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनंत स्वयं महाकल्कि हैं। चूँकि आपकी भतीजी भगवान कल्कि की भक्त है, इसलिए प्रभु के माध्यम से उसे माता के दर्शन का सौभाग्य मिला। यह उसकी पवित्रता का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 26:00 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1648 गुरुजी, जब भी मैं त्रिसंध्या धारा (दिन में तीन बार की जाने वाली साधना) करने बैठती हूँ, तो एक-दो दिन तो नियमित रूप से कर पाती हूँ, लेकिन फिर कुछ न कुछ ऐसा हो जाता है जिससे मेरा क्रम टूट जाता है और मैं निरंतरता नहीं बनाए रख पाती। कोई विचार, कोई काम या कोई घटना घट जाती है, और कोई न कोई बाधा मुझे नियमित होने से रोक देती है। आपसे जुड़ने से पहले जब मैं नियमित रूप से करती थी, तो मुझे कई चमत्कारी ध्वनियाँ सुनाई देती थीं। लेकिन अब, जब मैं सभी मंत्रों का सही ढंग से उच्चारण करने का प्रयास करती हूँ, तब भी कुछ न कुछ हो जाता है और मेरी साधना में बाधा आ जाती है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: सबसे पहले, अपने हृदय में माधव (प्रभु) के प्रति पूर्ण श्रद्धा जगाइए। दूसरा, प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना कीजिए—और जान लीजिए कि मैं जब बोल रहा हूँ, प्रभु सुन रहे हैं—'हे प्रभु, मैं एक दुःखी मनुष्य हूँ। मेरे पास न ज्ञान है, न ध्यान, न मंत्र, न स्तुति, कुछ भी नहीं। परंतु मैं आपकी शरण लेना चाहता हूँ। कृपया मुझे अपने चरणों में स्थान दीजिए, और आपकी कृपा से मेरी त्रिसंध्या साधना अखंड बनी रहे।' माधव और अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाइए। कलियुग की शक्ति धर्म-कार्य में बाधाएँ उत्पन्न करती है, परंतु मेरा विश्वास है कि प्रभु की कृपा से यह आपके लिए सरल हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:35 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1649 पंडित जी, इस समय पितृ पक्ष (पूर्वजों के सम्मान का पखवाड़ा) चल रहा है। क्या मैं इस समय श्रीमद् भागवत महापुराण की हार्ड कॉपी खरीद सकता हूँ?

उत्तर: यदि आप अभी श्रीमद् भागवत पुराण खरीदते हैं, तो आपके पूर्वज भी प्रसन्न होंगे, यह सोचकर कि उन्हें इसे सुनने को मिलेगा। इस अवधि में वे पूर्ण रूप से सक्रिय रहते हैं, और घर में धार्मिक अनुष्ठान करने से उनकी प्रसन्नता सौ गुना बढ़ जाएगी। इससे बहुत आनंद प्राप्त होगा। आपको इसे खरीदना चाहिए, इसका अध्ययन करना चाहिए, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और माधव की शरण में रहना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:31 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1650 पंडित जी, कुछ दिनों से मैं अपने घर के भीतर एक व्यक्ति को देख रहा हूँ जो पूरी तरह सुनहरे रंग का है। उसके पूरे शरीर से प्रकाश निकलता है। उसके मुख पर न आँखें हैं, न नाक; बस शुद्ध प्रकाश है। उसका पूरा शरीर सुनहरा है, मानो कोई ऋषि सुनहरा वस्त्र पहने हुए हों। कभी मैं उन्हें खड़े हुए देखता हूँ, तो कभी वे मेरे बिस्तर पर ध्यान-मुद्रा में बैठे होते हैं। इसका क्या अर्थ है? मैं त्रिकाल संध्या नहीं करता। पहले मैं भगवान में विश्वास रखता था, लेकिन कुछ घटनाओं के बाद मैं सिद्धियों वाले ऋषियों से मिलने लगा। मैंने एक गुरु धारण किया, और उसके बाद मुझे ये अनुभव होने लगे, जिनमें भूत-प्रेत दिखना भी शामिल है।

उत्तर: आपको जो दर्शन हो रहे हैं, वे संभवतः भगवान के ही हैं जो आपको संन्यासी के रूप में दर्शन दे रहे हैं। संभवतः आने वाले सत्ययुग (स्वर्ण युग) के लिए यह आपका भाग्य है, इसीलिए आपको एक अनोखे रूप में यह दिव्य दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। यदि आप त्रिकाल संध्या करना प्रारंभ करेंगे, तो आपको और भी पूर्ण आध्यात्मिक तत्व प्राप्त होगा। मुझे बताइएगा कि क्या होता है।

► यह उत्तर सुनें · 33:08 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1651 बहुत से लोगों ने धर्म को व्यापार बना लिया है। क्या आप भी वैसे ही हैं, सिर्फ पैसा कमाने की कोशिश कर रहे हैं?

उत्तर: वक्ता प्रश्न को टाल देते हैं, यह कहते हुए कि, 'नहीं, नहीं, आप बताइए आपको क्या लगता है,' और फिर तुरंत किसी दूसरे व्यक्ति को अपना प्रश्न पूछने के लिए बुला लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:42 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1652 हम कल्कि त्रिसंध्या करते हैं और साथ ही 'हरे कृष्ण हरे राम' हरिनाम कीर्तन भी करते हैं। क्या दोनों करना ठीक है? क्या दोनों का जप करने में कोई समस्या है?

उत्तर: त्रिकाल संध्या में वही पद्धति अपनाइए जो मैंने बताई है: श्रीमद्भागवत का पाठ, 16 नामों का जप, 10 अवतार, दुर्गा माधव स्तुति, और माधव का नाम। वह कीजिए, और उसके साथ आप हरि कीर्तन भी कर सकते हैं। इससे आपको अच्छे फल प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:07 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1653 भगवान के 10 अवतारों की जयंती तिथि के अनुसार मनाई जाती है, लेकिन भगवान माधव का जन्मदिन कैलेंडर की तारीख के अनुसार है। क्या भगवान माधव की जयंती तिथि के अनुसार मनाई जाएगी या तारीख के अनुसार?

उत्तर: भगवान का जन्मदिन कब और किस समय होगा, यह सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं है। यह भगवान की इच्छा के अधीन है, और हम उस पर विचार-विमर्श नहीं कर सकते। हमारा लक्ष्य है मानवता का उद्धार, कि लोग त्रिकाल संध्या करें और भागवत पढ़ें ताकि विपत्तियों से बच सकें। ऐसी गोपनीय बातें खुली चर्चा के लिए नहीं होतीं, क्योंकि यह ऐसा विषय नहीं है जिससे सभी को लाभ हो। यदि आपको जानना ही है, तो व्यक्तिगत रूप से बैठकर चर्चा कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:04 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1654 चूँकि पितृ पक्ष चल रहा है, मैं श्रीमद्भागवत पुराण घर लाकर पढ़ना चाहता हूँ। इसकी सही विधि क्या है? विद्यार्थी होने के नाते मैं दीप और पुष्प के साथ पूरा विधि-विधान नहीं कर सकता। क्या मैं इसे वैसे ही पढ़ सकता हूँ जैसे भगवद्गीता पढ़ता हूँ, मेज़ पर स्टैंड रखकर? क्या मैं इसे अभी घर ला सकता हूँ, या पितृ पक्ष के बाद तक प्रतीक्षा करूँ?

उत्तर: पितृ पक्ष में श्रीमद्भागवत पुराण घर लाने से पितर संतुष्ट होंगे। इस समय किया गया कोई भी धार्मिक कार्य उनका आशीर्वाद दिलाएगा। जहाँ तक विधि की बात है, इसे बैठकर पढ़ना चाहिए; मेज़ पर बैठकर पढ़ना नियम नहीं है। स्नान और शुद्धि के बाद, आपको श्रीमद्भागवत की पूजा धूप, दीप, पुष्प या तुलसी — जो भी उपलब्ध हो — अर्पित करके करनी चाहिए, और फिर आप इसे पढ़ सकते हैं। आप इसे ब्रह्ममुहूर्त (लगभग 3:45 बजे प्रातः) से लेकर मध्यरात्रि तक कभी भी पढ़ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:35 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1655 प्रलय के समय छत्तीसगढ़ में क्या होने वाला है?

उत्तर: पंचतत्वों का प्रलय पूरे विश्व में होगा, और छत्तीसगढ़ में भी होगा। पंचतत्वों का प्रभाव हर जगह एक समान रहेगा। हालाँकि, भक्त बच जाएँगे। ओडिशा की देवी समलेश्वरी का 'मंडल' छत्तीसगढ़ तक विस्तारित होगा। देवी के नाम से एक नया मंडल बनेगा, और वह छत्तीसगढ़ तक फैलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:50 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1656 जब मैं त्रिसंध्या करने बैठता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे शरीर की सारी शक्ति निकल गई हो। एक मिनट के भीतर ही मुझे लगता है कि मैं गहरी नींद में चला गया हूँ, और बैठे-बैठे ही मुझे सपने आने लगते हैं। ऐसा लगता है जैसे कोई शक्ति मेरे शरीर से सारी ऊर्जा खींच रही हो। इस पर मैं आपका मार्गदर्शन चाहता हूँ।

उत्तर: जिस स्थान पर आपका घर स्थित है, वहाँ कुछ अशरीरी सत्ताओं या प्रेतात्माओं का प्रभाव है। ये सत्ताएँ आप पर अपना प्रभाव डाल रही हैं क्योंकि वे नहीं चाहतीं कि वहाँ भगवान की त्रिसंध्या हो, क्योंकि इससे उन्हें कष्ट होता है। इसीलिए वे यह परेशानी पैदा कर रही हैं। यह कुछ समय तक होगा, लेकिन फिर ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:45 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1657 मैं महाराष्ट्र से हूँ। मैं बताना चाहता हूँ कि दो अलग-अलग अवसरों पर दो अलग-अलग संतों ने मुझे सपने में दर्शन दिए। मैं कई वर्षों से मांस खाता था, लेकिन अचानक, इन दो सपनों के बाद जिनमें भगवान प्रकट हुए, मैंने मांस खाना पूरी तरह छोड़ दिया। अब मैं हनुमान चालीसा का पाठ भी करता हूँ और भगवद्गीता भी पढ़ता हूँ। इस बारे में आप क्या कहते हैं?

उत्तर: देखिए, भक्त के लिए भगवान किसी न किसी तरह उसे अच्छे स्थान तक पहुँचाते हैं और उसका मार्ग दिखाते हैं। आप भक्त थे, और इसीलिए भगवान की कृपा से आपका सब कुछ सुधर रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 42:06 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1658 मुझे बहुत सपने आते हैं। रात भर मुझे नए-नए घर और इमारतें बनती हुई दिखाई देती रहती हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: लोगों को ये दर्शन इसलिए हो रहे हैं क्योंकि नव-युग का निर्माण शुरू होने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 43:58 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1659 शनिवार को हनुमान जी को 'चोला' (सिंदूर और तेल का लेप) चढ़ाने की सही विधि क्या है? कुछ लोग कहते हैं कि इसे ऊपर से नीचे की ओर लगाना चाहिए, जबकि कुछ कहते हैं कि पैरों से सिर की ओर लगाना चाहिए। सही तरीका क्या है?

उत्तर: यह भक्त की इच्छा पर निर्भर है। वे उनके चरणों में सिंदूर लगा सकते हैं, या सिर से पाँव तक लगा सकते हैं। कितना लगाएँ या कैसे न लगाएँ, इसका कोई कठोर नियम नहीं है। आपका मन जो कहे, वही कीजिए, और भगवान उसे आनंद से स्वीकार करेंगे। इसके लिए कोई विशेष नियम नहीं है। कुछ भक्त भगवान के चरणों में सिंदूर लगाते हैं, कुछ उनके मस्तक पर, और कुछ उनके पूरे शरीर को ढक देते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 45:16 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1660 एक और प्रश्न: माला पर जप करने का सही तरीका क्या है?

उत्तर: आपको त्रिकाल संध्या के समय माला पर जप करना चाहिए। स्नान और शुद्धि के बाद, माला हाथ में लेकर त्रिकाल संध्या के समय जप करने से अच्छा फल मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 46:17 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1661 मेरी एक छोटी बेटी है जो लगभग चार वर्ष की होने वाली है। मैं उसे वैदिक परंपरा में शिक्षा देना चाहता हूँ। लेकिन आधुनिक स्कूल आधुनिक तरीके से पढ़ाते हैं। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: यदि आप वैदिक शिक्षा देना चाहते हैं, तो भारत में बहुत से गुरुकुल आश्रम और शिशु मंदिर हैं। आप उसे वहाँ भर्ती करा सकते हैं। हालाँकि, विशुद्ध रूप से वैदिक शिक्षा की सुविधा व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं है। जहाँ आपको ऐसी सुविधा मिले, वहाँ उसे भर्ती कराइए, और घर पर उसे श्रीमद् भागवत पढ़ाइए। इससे भी उसमें बहुत अच्छा परिवर्तन आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:10 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1662 आपने कहा कि भगवान पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं और सभी देवता भी आ चुके हैं। लेकिन उन अच्छी आत्माओं का क्या जो भगवान के साथ रहना चाहती हैं? जब अब उनकी मृत्यु होती है, तो क्या वे वैकुंठ (दिव्य धाम) जाती हैं? यदि वे दिव्य धाम जाना चाहती हैं, तो वे आत्माएँ कहाँ जा रही हैं?

उत्तर: मैं एक छोटी सी बात समझाता हूँ: 'सकाम कर्म' (फल की आसक्ति सहित किए गए कर्म) और 'निष्काम कर्म' (निःस्वार्थ कर्म) होते हैं। जो लोग इच्छा, आसक्ति और मोह में डूबकर कर्म करते हैं, वे कर्मफल से बँध जाते हैं। दूसरी ओर, जो 'निष्काम कर्म' करते हैं—स्वयं को, अपने परिवार को और सब कुछ भगवान को समर्पित करके फिर बिना किसी फल की अपेक्षा के सभी सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हैं—केवल वही वैकुंठ प्राप्त करते हैं। तो, स्वयं को भगवान को समर्पित कर दीजिए और अपने परिवार के लिए सभी कर्तव्य निभाते रहिए, परंतु अपने कर्मों से किसी फल की इच्छा मत कीजिए। अपने सभी कर्म और उनके फल भगवान के चरणों में अर्पित कर दीजिए। निष्काम कर्म कीजिए, निरंतर भगवान के नाम का जप कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और माधव का गुणगान कीजिए। आप निश्चित ही वैकुंठ प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:53 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1663 मैं पूछना चाहती हूँ, मुझे वैकुंठ नहीं चाहिए; मुझे राधा माधव चाहिए। मैं उन्हें कैसे प्राप्त कर सकती हूँ? मुझे केवल वही चाहिए।

उत्तर: यह बहुत अच्छी इच्छा है। वैकुंठ के भीतर 'गोलोक' नामक एक लोक है। वहीं माता राधा और कृष्ण निवास करते हैं। राधा माधव के सभी भक्त इसी गोलोक धाम में जाते हैं। वहाँ वे प्रतिदिन भगवान कृष्ण और राधारानी के साथ नित्य रास और सत्संग में भाग लेते हैं। वह स्थान ही वैकुंठ है।

► यह उत्तर सुनें · 49:56 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1664 जब हम त्रिसंध्या करते हैं, तो अवतारों के 16 नामों का उल्लेख होता है। यह भगवान के 24 नामों की पूरी सूची नहीं है। केवल 16 नाम ही क्यों हैं, सभी क्यों नहीं?

उत्तर: मैं आपके साथ केवल वही तत्व साझा कर रहा हूँ जो मनुष्यों के सत्य युग में प्रवेश करने के लिए आवश्यक हैं। ये 16 नाम मनुष्यों को दिव्य प्राणियों में बदलने के लिए हैं। धर्म की स्थापना के लिए 10 अवतारों के नामों का जप करने से वही फल मिलता है जो सभी 18 पुराणों को पढ़ने से मिलता है। दुर्गा माधव स्तुति व्यक्ति को माता राधारानी की कृपा प्राप्त करने में सहायता करती है। हमने इसी उद्देश्य से इस प्रक्रिया को सरल बनाया है। यदि आप इसका पालन करेंगे, तो आपको निश्चित ही लाभ प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:57 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1665 हम अक्सर 'माता-पिता' और 'राधा-कृष्ण' कहते हैं। माता का नाम पहले क्यों लेते हैं?

उत्तर: ऐसा कोई नियम नहीं है। माता और पिता में कोई अंतर नहीं है। भगवान के विधान के अनुसार माता का उतना ही अधिकार है जितना पिता का; कोई किसी से कम नहीं है। यदि हमारी माता हमारे पिता का सम्मान करती हैं, तो पिता को पहले पूज्य मानना चाहिए। और हमारे पिता से भी ऊपर परम पिता भगवान हैं, जिनका नाम सभी भक्त जपते हैं। कोई अंतर नहीं है। जैसा आपका मन चाहे, वैसा कहना ठीक है। कोई माता का नाम पहले लेता है, कोई पिता का। इससे सम्मान या स्थान में कोई अंतर नहीं होता।

► यह उत्तर सुनें · 52:05 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1666 मैं हरे कृष्ण महामंत्र का जप करता था। अब जब मैं इस मार्ग से जुड़ गया हूँ, तो मुझे कौन-सा मंत्र जपना चाहिए?

उत्तर: आप वह मंत्र जपते रह सकते हैं, लेकिन साथ ही त्रिकाल संध्या का अभ्यास भी कीजिए। वैष्णव मत का 'हरे कृष्ण हरे राम' जप भी बहुत अच्छा भजन है।

► यह उत्तर सुनें · 53:25 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1667 मेरा अंतिम प्रश्न हत्या, बलात्कार और आगजनी जैसे जघन्य अपराधों के बारे में है। क्या ये भी कर्म का ही एक हिस्सा हैं? क्या ये भगवान की इच्छा से होते हैं?

उत्तर: नहीं, ये चीज़ें भगवान की इच्छा से नहीं होतीं। भगवान ने अर्जुन से कहा था, 'यद्यपि तीनों गुण—सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण—मुझसे ही उत्पन्न होते हैं, किंतु मैं उनमें से किसी में नहीं हूँ।' मनुष्य अपने पूर्व कर्मों से बँधा हुआ है। लोग पाँच इंद्रियों के प्रभाव में आकर, अपने मन को प्रसन्न करने के लिए और शरीर की इच्छाओं की पूर्ति के लिए दुष्कर्म करते हैं। भगवान का इससे कोई लेना-देना नहीं। इसीलिए भगवान ने कर्मों का न्याय करने के लिए यमराज (न्याय के देवता) की स्थापना की। मनुष्य को सुकर्म करना चाहिए। कुकर्म करने से वह पाप और कष्ट का भागी बनता है। जो बुरे कर्म करेंगे उन्हें उसका फल मिलेगा, और जो अच्छे कर्म करेंगे उन्हें अच्छा फल मिलेगा। भगवान इसमें हस्तक्षेप नहीं करते। भगवान ने मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाया, उसे सारी इंद्रियाँ और तीनों गुण दिए। यदि कोई रजोगुण या तमोगुण का मार्ग चुनता है, तो उसे अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। इसमें भगवान शामिल नहीं हैं।

► यह उत्तर सुनें · 54:30 · 8 अक्टूबर 2023

सत्र 100 · प्रश्न 1668–1694

L106 - जगन्नाथ जी का 'छतिया बट' में स्थानांतरण (रूस देश के द्वारा) | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 8 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1668 पिताजी, मेरा एक प्रश्न था। जब भी हम रात में भागवत पढ़ते हैं, तो एक कौआ बहुत ज़ोर से काँव-काँव करता है। ऐसा बहुत होता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: बहुत अच्छा। सुनिए, माता जी। भागवत का यह सार... इसे सुनकर कौआ भी सोचता है कि सुबह हो गई। क्योंकि आप भागवत पढ़ती हैं, वह सोचता है कि सुबह हो गई और कोई पवित्र समय आ गया है। भगवान पूरे ब्रह्मांड को यह संकेत दे रहे हैं। रात में कौए का काँव-काँव करना, विशेषकर भागवत पाठ के समय, इसका अर्थ है कि भक्त बचाए जाएँगे और संहार का युग (काल) प्रकट होगा। काल संकेत दे रहा है कि संहार का कार्य भी होगा। यह भक्तों को विश्वास देता है। कौआ काल (समय/संहार) का प्रतीक है। यह संकेत देता है कि संसार में संहार का कार्य होगा। हम भी यह भागवत सुनते हैं, और यह पापियों के लिए संहार के समय का संकेत है। ठीक है, माता जी।

► यह उत्तर सुनें · 19:55 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1669 मैंने सपने में देखा कि हमारे रायगढ़, छत्तीसगढ़ में बाढ़ आई है, और मैं पानी के नीचे थी। मेरे सामने एक बहुत बड़ा शिवलिंग था जिस पर शेषनाग थे। मैंने भगवान शिव को प्रणाम किया, और मैं पानी से बाहर निकल पाई और बाढ़ से बच गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, माता जी, भविष्य पुराण में लिखा है कि भगवान बलराम, शेषनाग के रूप में, पानी में बह रहे भक्तों को एक-एक करके बचाएँगे। यह भविष्य मालिका में लिखा है। और चूँकि आप त्रिकाल संध्या करती हैं और भगवान की शरण में हैं, इसीलिए भगवान ने आपको यह दर्शन दिया। वे दिखा रहे हैं कि भविष्य में कुछ ऐसा होने वाला है, और भगवान शंकर सभी भक्तों को बचाएँगे। यह भविष्य पुराण में लिखा है। आपको यह दर्शन हुआ, इसका अर्थ है कि भक्त बचाए जाएँगे। ठीक है, माता जी।

► यह उत्तर सुनें · 21:27 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1670 नमस्ते महोदय। मैं जानना चाहता था, यदि भगवान कल्कि आज आते हैं, तो वे कैसे सिद्ध करेंगे कि वे भगवान हैं? पिछले युगों के लोग हमसे अधिक बुद्धिमान थे, और उन्होंने भी भगवान को नहीं पहचाना। कलियुग के लोग उन्हें कैसे पहचानेंगे?

उत्तर: देखिए, जो त्रिकाल संध्या करते हैं या करेंगे, उन्हें भगवान का अनुभव प्राप्त होगा। श्रीमद्भागवत पढ़ने से, 16 नामों का जप करने से, 10 अवतारों का, दुर्गा माधव स्तुति का, और माधव नाम के भजन गाने से, उन्हें किसी न किसी रूप में शिक्षा या अनुभव प्राप्त होगा जो उनकी श्रद्धा को दृढ़ करेगा। छह महीने सत्संग में आने से, उनकी दिव्य शक्ति प्रकट हो जाएगी। तब वे जान जाएँगे कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। इसीलिए हम कहते हैं कि इस मार्ग का पालन कीजिए। आप सभी सिद्धांत समझ जाएँगे; आपको मुझसे कुछ भी नहीं चाहिए होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:48 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1671 पिताजी, मैं जानना चाहता था, माधव गीत पूरे दिन मेरे मन में चलता रहता है, सुबह से लेकर रात को सोने तक। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, जब आप किसी से प्रेम करते हैं, और जब एक आत्मा का किसी अन्य से अनंत काल से संबंध होता है... और इस समय भगवान आने वाले हैं, यह धर्म की स्थापना का समय है। तो भक्त सुबह से शाम तक एक ही बात सोचते रहेंगे—वही चर्चाएँ, वही लीलाएँ, वही भविष्य। और माधव इसका माध्यम हैं। तो, यह एक शुद्ध भक्त का लक्षण है।

► यह उत्तर सुनें · 24:09 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1672 सच्चे संत की पहचान क्या है?

उत्तर: सच्चा संत... वैसे तो संत तो संत ही होता है, उसका विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं होती। परंतु इस कलियुग में सत्य और असत्य के बीच भेद करना आवश्यक हो गया है। जो लोभ, मोह, क्रोध, अहंकार, अभिमान और पाँचों इंद्रियों से मुक्त है, वही संन्यासी है, वही संत है। अच्युतानंद ने इस विषय में लिखा है। इसका अर्थ है कि जो समस्त सांसारिक पदार्थों से दूर हो जाता है, जिसमें भौतिकता के ऊपर आध्यात्मिक शक्ति प्रकट होती है। जिसे कोई अभिमान नहीं, जो सुख में अति प्रसन्न नहीं होता और दुःख में विचलित नहीं होता, जो क्रोध से क्रोधित नहीं होता, न ही कर्मों से, जो पाप से दूर रहता है, संसार के सभी लोगों को अपना मानता है, निरंतर प्रभु की शरण में कार्य करता है, और जिसमें इंद्रियों के प्रति आसक्ति का लेशमात्र भी नहीं है—वही संत, साधु, संन्यासी कहलाता है। कलियुग में यह आवश्यक हो गया है। पिछले युगों में सभी संत समान थे, परंतु कलियुग में हमें कुछ विचलन दिखाई देता है। अपनी अंतरात्मा से पूछिए। यदि आपकी अंतरात्मा कहे कि यह सही है, तो उसे स्वीकार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:02 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1673 मैं उत्तर प्रदेश से हूँ। क्या आप मुझे उत्तर प्रदेश के विषय में कुछ बता सकते हैं जो भविष्य मालिका में लिखा है?

उत्तर: देखिए, उत्तर प्रदेश में श्री वृंदावन धाम और मथुरा हैं, जो प्रभु की लीला-भूमि हैं। यह भक्तों के उद्धार के लिए अत्यंत पवित्र और पावन स्थान है। भविष्य पुराण के अनुसार, उत्तर प्रदेश में श्री वृंदावन मंडल का निर्माण होगा। और जो सच्चे भक्त हैं, वे भविष्य मालिका के माध्यम से भगवान कल्कि की शरण में आएँगे। भविष्य मालिका संसार का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसके माध्यम से कोई भगवान को प्राप्त कर सकता है और भगवान कल्कि की शरण में आ सकता है। भक्तों को संसार के भविष्य और नए युग के निर्माण की जानकारी मिलेगी। तो, पूरे उत्तर प्रदेश में श्री वृंदावन मंडल, मथुरा वृंदावन गो मंडल का निर्माण होगा—वह बन भी रहा है। वहाँ भक्तों की बहुत बड़ी संख्या है, और वही भक्त धर्म की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाएँगे। वे भक्तों की रक्षा करेंगे और पूरे संसार को धर्म-स्थापना का संकेत भी देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:56 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1674 मुझे रात 3 बजे एक स्वप्न आया जिसमें मैं एक बड़े मैदान में था। वहाँ एक तेज प्रकाश हुआ और फिर पूर्ण अंधकार छा गया। सूर्य की दिशा बदल गई, वह पश्चिम में उदय हुआ। फिर सभी पौधे एक विचित्र रंग के हो गए और पूरी तरह सूख गए। कृपया इस स्वप्न का अर्थ स्पष्ट करेंगे?

उत्तर: देखिए, आप लक्ष्मी नारायण मंदिर जाते हैं; आप प्रभु की शरण में हैं। इस समय लक्ष्मी नारायण, अर्थात् महाविष्णु और महालक्ष्मी, दोनों ही अपने धर्म-स्थापना के कार्य के द्वारा पूरे संसार में भक्तों की रक्षा करने आए हैं। भक्तों के पालन-पोषण का एक समय आएगा जब स्वयं महालक्ष्मी प्रसाद तैयार करेंगी और भक्त उसे ग्रहण करेंगे। वह समय भी आ रहा है। तो, यह स्वप्न जो आपने देखा... चूँकि आप इस धारा से जुड़ गए हैं, मैंने पहले भी कहा है कि सत्ययुग में सूर्य पश्चिम में उदय होगा और पूर्व में अस्त होगा। चूँकि आप त्रिकाल संध्या से जुड़ गए हैं, प्रभु ने आपको दिखाया, 'देखो, ऐसा समय आ रहा है, और भविष्य मालिका सत्य है।' इसी कारण प्रभु भक्तों को छोटे-छोटे अनुभव देते हैं, उन्हें दिखाते हैं कि ऐसा समय आ रहा है ताकि वे उसके अनुसार कार्य कर सकें। मेरा उद्देश्य है कि लाखों भक्तों का उद्धार हो। जैसे-जैसे आप प्रभु की शरण में रहेंगे, आपको अनेक सिद्धांत और अनुभव प्राप्त होंगे। 'माधव' नाम इतना शक्तिशाली है, फिर भी उसकी आलोचना होती है। ऐसे शुद्ध भक्तों के उद्धार के लिए प्रभु बार-बार अनुभव देते हैं, और उन्होंने आपको भी एक अनुभव दिया।

► यह उत्तर सुनें · 29:54 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1675 पंडित जी, एक रात मुझे नींद में एक शिवलिंग के दर्शन हुए, पर मैं यह नहीं बता सका कि वह कहाँ का था। कृपया इस विषय में मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, भगवान शंकर पूरे संसार में, हर जगह विराजमान हैं। और आपको भगवान शिव के दर्शन हुए। इस समय भगवान कल्कि शिव के रूप में संहार के कार्य में लगे हुए हैं। इसीलिए नारायण, विष्णु और कृष्ण के भक्तों को भगवान शंकर के दर्शन हो रहे हैं। इसका अर्थ है कि प्रभु इस समय शंकर के रूप में संहार के कार्य में संलग्न हैं, और वे अपने भक्तों को इसका प्रमाण दे रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:07 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1676 प्रभु जी, मैं एक सप्ताह से त्रिकाल संध्या कर रही हूँ। कुछ भाग उड़िया भाषा में हैं, और मेरा उच्चारण हमेशा सही नहीं होता। क्या इसका कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा? मैं इसे श्रद्धा से कर रही हूँ, परंतु मैं जानना चाहती थी कि उच्चारण में गलतियाँ होने से कोई प्रभाव पड़ता है क्या।

उत्तर: कोई समस्या नहीं है, माता जी। देखिए, आपकी श्रद्धा ही सबसे महत्वपूर्ण है। यदि आप सच्चे हृदय से त्रिकाल संध्या करते समय उच्चारण में कुछ गलतियाँ कर देती हैं, तो उसका कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। आपको शुभ फल और भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जैसे-जैसे समय बीतेगा, यह और स्पष्ट होता जाएगा। चूँकि आपने अभी शुरुआत की है, इसलिए कुछ गलतियाँ होंगी, परंतु इसके बावजूद आपको प्रभु की कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 33:58 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1677 मुझे लगभग 3 बजे रात को एक स्वप्न आया जिसमें मैंने प्रभु को उनके बाल रूप में एक पहाड़ी क्षेत्र में देखा। मैं इतना रोया, जितना जीवन में कभी नहीं रोया। मुझे लगा कि प्रभु आ गए थे और मैं उन्हें पहचान नहीं पाया, इसी कारण मेरा हृदय टूट गया। उसके बाद मुझे नींद नहीं आई, यह सोचता रहा कि मुझे ऐसा स्वप्न क्यों आया।

उत्तर: आपने जो स्वप्न देखा, वह सत्य है। आप त्रिकाल संध्या से जुड़े हैं न? चूँकि आप त्रिकाल संध्या से जुड़ गए हैं, इसलिए प्रभु आपको दर्शन दे रहे हैं, यह कहते हुए कि 'मैं आ गया हूँ, मैं पहले ही आ चुका हूँ।' बहुत से लोग आलोचना करते हैं और बहुत कुछ कहते हैं, परंतु प्रभु अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। इसका अर्थ है कि प्रभु प्रकट हो चुके हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:07 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1678 2018 में मैं तिरुपति बालाजी गई थी और मूर्ति को देखकर मैं बेतहाशा रोने लगी। मैं 15 दिनों से त्रिकाल संध्या भी कर रही हूँ। इसे शुरू करने के तीन दिन बाद, मुझे सुबह 4 बजे सपना आया कि गणेश जी की शोभायात्रा निकल रही है, और मैंने उनके साथ भगवान कृष्ण को एक ट्रैक्टर पर बैठे भी देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, एक ओर भगवान गणेश सत्य युग का शुभ संकेत देते हैं। और गणेश तथा कृष्ण को देखने का अर्थ है कि कृष्ण की लीला के प्राकट्य का समय आ गया है। अच्छा है कि आपको यह दर्शन हुआ। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उन्हें अवश्य अनुभव देते हैं, और आगे भी देते रहेंगे, जिससे आप दृढ़ होंगी। जब आप दृढ़ होंगी, तब पूरे विश्व में धर्म स्थापना का कार्य होगा। यदि भक्त ही दृढ़ नहीं होंगे, तो धर्म की स्थापना कैसे होगी? इसीलिए भगवान कोई न कोई अनुभव अवश्य देते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:51 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1679 महाराज जी, वेदांत आश्रम क्या है? मैं इसके बारे में जानना चाहता हूँ। कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: वेदांत आश्रम वह स्थान है जहाँ वेदों का अध्ययन, पठन और चिंतन होता है, और जहाँ भक्तों को वेदों के प्रति जागरूक किया जाता है। उस स्थान को वेदांत आश्रम कहते हैं। लेकिन सच्चा वेदांत आश्रम ब्रह्म लोक में है, और उस वेदांत आश्रम में संपूर्ण विश्व के लिए वेदों की धारा, विश्व की शासन व्यवस्था, और ब्रह्मांड की शासन व्यवस्था के बारे में लिखा हुआ है। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 39:23 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1680 मैं पूछना चाहती थी, हमारा हिंदू सनातन धर्म इतना पूर्ण है, फिर भी इसका प्रचार इतना कम क्यों होता है? दूसरे धर्मों का बहुत प्रचार होता है, लेकिन हमारा उतना नहीं। हमारे अपने कुछ सनातनियों को तो यह भी नहीं पता कि भागवत या भगवद्गीता क्या है। हमारे धर्म के बारे में इतने कम लोग क्यों जानते हैं?

उत्तर: देखिए, माता जी, आप बिल्कुल सही कह रही हैं। पूरे विश्व में हमें कई करोड़ टन लोहा दिखाई देता है, लेकिन सोना कितना है? भगवान का हर एक भक्त सोने के समान है। और देखिए माता जी, अभी कलि युग चल रहा है, इसलिए सनातन धर्म संकुचित हो गया है। लोग वेदों और शास्त्रों का विरोध कर रहे हैं; वे अध्यात्म का विरोध करते हैं। वे भविष्य मालिका जैसे पवित्र ग्रंथ पर भी प्रश्न उठाते हैं। क्योंकि अभी कलि युग है, इसलिए धर्म संकुचित हो गया है। धर्म सनातन है, और अभी कलि युग के प्रभाव से छोटा हो गया है। यह फिर से विस्तार पाएगा, और समय आने पर संपूर्ण विश्व में जहाँ भी देखिएगा, केवल सनातन धर्म ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:30 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1681 पंडित जी, मैं एक सपने के बारे में जानना चाहता था जो त्रिकाल संध्या शुरू करने के 15 दिन बाद मुझे आया। मैंने सपना देखा कि मैं खाटू श्याम में हूँ और मुझे उनके साक्षात् दर्शन हुए। लेकिन उसके तुरंत बाद मैं घर आया और मैंने एक अजीब सा जीव देखा जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था। जब वह चलता था तो खड़खड़ाने जैसी आवाज़ होती थी। मैं और मेरा भाई बहुत डर गए और उसे मारने के लिए उसके पीछे भागे। इसका क्या अर्थ है, गुरुजी?

उत्तर: देखिए, पहले भगवान खाटू श्याम के दर्शन के बारे में... जो खाटू श्याम हैं, वे बर्बरीक हैं। उनका जन्म हो चुका है, और भगवान कृष्ण भी आ चुके हैं। तो भगवान यह सिद्ध कर रहे हैं कि पाँचों बलबीरों का जन्म हो चुका है। इसीलिए आपको साक्षात् दर्शन हुए। और जो जीव आपने देखा, वह काल (विनाश) और कलि का रूप है। भक्त कलि के विरुद्ध धर्म का युद्ध लड़ेंगे। इसी कारण वह आपको अच्छा नहीं लगा और आप उसे मारने के लिए पीछे भागे, और कलि भाग गया। कलि नहीं रहेगा; धर्म प्रकाशित होगा। भगवान भक्तों को स्वप्न के माध्यम से अनुभव देते हैं ताकि वे दृढ़ हो जाएँ। वह जीव मरा नहीं क्योंकि वह असुर है, और असुर इतनी आसानी से नहीं मरेगा। कलि अंत में मरेगा; अभी वह मरा नहीं है। इसीलिए ऐसा दिखाया गया। वह कलि था, कलि की शक्ति। तो एक ओर भगवान ने आपको अपने दर्शन दिए, और दूसरी ओर आपने कलि को भी देखा, अर्थात् उसका समय पूरा हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 42:09 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1682 पंडित जी, मैं लगभग एक महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। इस दौरान अचानक वृंदावन जाने की योजना बनी और मैं चला गया। मैंने गोवर्धन परिक्रमा की और ऐसे स्थानों के दर्शन किए जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। ऐसा लगा कि जिस माधव पथ पर हम हैं, उसी के प्रभाव से मैं इतने अचानक जा पाया। क्या यह इस साधना के कारण है? कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा है। देखिए, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उन्हें किसी न किसी प्रकार का अनुभव देते हैं। इतना ही नहीं, त्रिकाल संध्या करने से भगवान आपके स्वप्न में भी आएँगे और आगे होने वाली बहुत सी बातें आपको बताएँगे। आपको भगवान माधव की कृपा प्राप्त हुई। उन्होंने कहा, 'जाओ, मेरे क्षेत्र के भी दर्शन कर आओ।' क्योंकि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे मेरे लोग हैं। जो इसका विरोध करते हैं, वे पाखंडी हैं, असुर हैं। भगवान अपने भक्तों पर कृपा बरसाते हैं। त्रिकाल संध्या से आपको सब कुछ मिलेगा; आपको कृष्ण मिलेंगे। इतने कम समय में यह त्रिकाल संध्या की पवित्रता और सत्यता का प्रभाव है। संसार में जो कोई भी त्रिकाल संध्या करता है, उसे भगवान से हर समय अनुभव प्राप्त होते हैं। यह अनुभव भक्तों को यह संदेश देता है कि यही सिद्धांत मानने योग्य है; इसी के द्वारा कृष्ण की प्राप्ति हो सकती है। और कोई मार्ग नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 45:22 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1683 मेरा एक प्रश्न था। भागवत पुराण के तृतीय स्कंध में काल-गणना की जो व्यवस्था दी गई है, क्या वह गलत है?

उत्तर: नहीं। 'परमाणु' से शुरू करके आगे, और देवताओं के 12,000 दिव्य वर्ष... यदि आप गणना करें तो वह 432,000 वर्ष आता है। हाँ, यह भागवत में लिखा है। कलियुग की आयु 432,000 वर्ष है, यह सही है, इसमें कोई गलती नहीं है। परंतु पाप और मनुष्यों के कर्मों के कारण कलियुग की आयु प्रभावित हुई है। मैंने बताया है कि किस-किस प्रकार के पापों के कारण कलियुग की आयु का विघटन हुआ है, और कलियुग 5,000 वर्ष तक रहेगा। मैंने इसका प्रमाण दिया है और भविष्य मालिका पुराण में एक-एक करके लिख दिया है।

► यह उत्तर सुनें · 49:04 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1684 बचपन से मुझे एक सपना आता रहा है। एक साँवली आकृति मेरा पीछा करती थी और मैं दौड़कर एक मंदिर में घुस जाता था। अब मैं 47 वर्ष का हूँ और अब यह सपना नहीं आता। लेकिन जिस दिन मैंने त्रिकाल संध्या शुरू की, उसी रात मुझे वही साँवली आकृति दिखाई दी। जब मैंने भगवान जगन्नाथ का चित्र देखा, तो मुझे लगा कि यह वही आकृति है जिसे मैं जीवन भर देखता आया हूँ। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, जिन्होंने यह प्रश्न पूछा है उन्होंने कहा कि बचपन से एक साँवला पुरुष उनके पीछे-पीछे चलता था। जिस दिन उन्होंने भगवान जगन्नाथ को देखा और त्रिकाल संध्या की, उस दिन उन्हें स्पष्ट हो गया कि वह आकृति जगन्नाथ जैसे स्वरूप की थी। ऐसा इसलिए है कि देखिए, जो भी त्रिकाल संध्या करता है, भगवान उसे किसी न किसी रूप में अनुभव कराते हैं। और वही अनुभव भक्त को उसके भक्ति-मार्ग में लाभ पहुँचाता है और उसे दृढ़ बनाता है। यह भविष्य मालिका की सत्यता को प्रमाणित करता है। तो यह बहुत आनंद की बात है। यह त्रिकाल संध्या करते रहिए और भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 51:30 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1685 महाराज जी, मेरे सपनों में एक स्त्री आती थी। वह बुर्का पहने होती थी और मुझे बहुत मारती थी। सपना पाँच मिनट का होता था, लेकिन घंटों जैसा लगता था। जब वह आती थी, तो मुझे बहुत डर लगता था। यह क्या है?

उत्तर: देखिए, दो स्त्रियों ने आत्महत्या की थी, और उनकी अतृप्त आत्माएँ भटक रही हैं और आपको परेशान कर रही थीं। अब वे थोड़ी दूर हैं। माधव का नाम जपिए, त्रिकाल संध्या कीजिए। सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपकर सोइए; वह नहीं आएगी। माधव के नाम से सत्संग कीजिए, निरंतर भागवत पढ़िए। घर में जो पहले से समस्या है, वह दूर हो जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 54:57 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1686 मेरा प्रश्न यह है कि सभी पुराण कहते हैं कि कलियुग 4,32,000 वर्ष का है, लेकिन भविष्य मालिका कहती है कि यह 5,000 वर्ष का है। वेदव्यास ने बहुत पहले लिखा था कि कलियुग 4,32,000 वर्ष का है। यदि भविष्य मालिका सत्य सिद्ध होती है, तो क्या उनके वचन असत्य सिद्ध नहीं हो जाएँगे?

उत्तर: देखिए, इसे अच्छी तरह समझिए। भगवान वेदव्यास स्वयं भगवान हैं, भगवान के अवतार हैं। उन्होंने लिखा है कि कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। यह निर्विवाद है। लेकिन, एक निश्चित समय पर, जब सूर्य, चंद्र और बृहस्पति एक ही राशि में संक्रमण करते हैं, उस समय सत्ययुग आ जाएगा। वह तो 2022-23 में हो भी चुका है। वेदव्यास ने दोनों सिद्धांत प्रस्तुत किए। एक सिद्धांत वह है जो कलियुग के सभी लोग कहते हैं। लेकिन दूसरा सिद्धांत, जो भीतर लिखा हुआ है, वह यह है कि जब सूर्य, चंद्र और बृहस्पति एक राशि में संक्रमण करेंगे, उस दिन कृतयुग (सत्ययुग) आ जाएगा। वह समय तो बीत भी चुका है। इसी कारण मालिका सत्य है, वेदव्यास भी सत्य हैं, और श्रीमद्भागवत सत्य है।

► यह उत्तर सुनें · 56:29 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1687 हमने 15-20 वर्षों से अपने घर के मंदिर में भगवान जगन्नाथ की सेवा की है। हम जगन्नाथ अष्टकम गाते हैं, दिन में दो बार आरती करते हैं और पाँच बार भोग लगाते हैं। हमें त्रिकाल संध्या के बारे में पता नहीं था। क्या हम जो कर रहे हैं वह पर्याप्त है, या हमें त्रिकाल संध्या सीखनी चाहिए?

उत्तर: यह तो बहुत सुंदर है। लेकिन रात में, चूँकि आपके यहाँ भगवान जगन्नाथ हैं, उन्हें गीत गोविंद सुनाइए। स्वयं पाठ कीजिए, भगवान और भी प्रसन्न होंगे। जब भगवान ने राजा इंद्रद्युम्न से पूछा कि वे क्या चाहते हैं, तो उन्होंने माँगा कि भगवान का भोजन कभी न रुके। भगवान जगन्नाथ ने यह वरदान दिया। तो रात में भगवान को थोड़ा गीत गोविंद सुनाइए। जगन्नाथ के भक्त के लिए मालिका सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है, क्योंकि उसने तो जगन्नाथ को पहले ही पकड़ रखा है। और जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा इस समय कल्कि अवतार के रूप में आ रहे हैं। भगवान का अवतार धरती पर हो चुका है, और धर्म स्थापना का समय चल रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 58:35 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1688 श्राद्ध के महीने (पितृ पक्ष) में हम ब्राह्मणों को अन्न दान करते हैं। क्या यह एक प्रभावशाली अभ्यास है?

उत्तर: देखिए, अभी पितृ पक्ष है, पवित्र समय है। इस समय दान, धर्म, पुण्य कर्म, भागवत का पाठ और घर में सत्संग—ये सब आवश्यक हैं। ऐसा इसलिए कि पितर धरती पर आते हैं और देखते हैं कि उनके घरों में कौन-से धार्मिक कर्म हो रहे हैं। जीते जी लोग सांसारिक वस्तुओं में आसक्त रहते हैं, लेकिन मृत्यु के बाद वे धर्म को खोजते हैं। वे समझ चुके होते हैं कि संसार में भगवान के अतिरिक्त कोई सत्य नहीं है। इसलिए इस समय वे सब धरती पर आ चुके हैं और अपने घरों में आते हैं। यदि कोई धार्मिक कर्म नहीं हो रहा होता, तो वे दुखी हो जाते हैं। इसीलिए इस समय मैं भक्तों से निरंतर कहता हूँ कि प्रतिदिन भागवत पढ़िए। पितर प्रतिदिन आएँगे, सुनेंगे और अपनी कृपा बरसाएँगे। इससे समृद्धि और शुभ फल मिलेंगे। ठीक है, कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:07 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1689 दोनों में से, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए या साधना? या दोनों करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए माताजी, साधना की जड़ में आसक्ति है। आसक्ति से लोभ आता है, और लोभ से पाप कर्म होते हैं, जो मनुष्य के पतन का कारण बनते हैं। यदि मनुष्य भक्ति से पूजा करे, तो उसे कृपा मिलती है। लेकिन यदि वह साधना करे, तो कृपा नहीं मिलती, क्योंकि वह भक्ति मार्ग से, शास्त्र मार्ग से, सनातन मार्ग से दूर है। पूर्व युगों में अनेक शास्त्रों में साधना का कोई विधान नहीं था। कलियुग में, क्योंकि लोगों में भक्ति का अभाव है, इसलिए वे साधना की ओर मुड़ते हैं। जिसमें भक्ति है, जो सच्चा भक्त है, उसे त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। वह आनंदपूर्वक भगवान को प्राप्त करेगा, और उसकी सांसारिक इच्छाएँ भी इसी के द्वारा पूरी हो सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:53 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1690 क्या हम त्रिकाल संध्या के साथ थोड़ा ध्यान भी कर सकते हैं?

उत्तर: अवश्य कीजिए, माताजी। त्रिकाल संध्या करना बंद मत कीजिए। यदि आप नहीं करेंगी, तो जो विपत्तियाँ आने वाली हैं, उनमें मानवता की रक्षा कैसे होगी? आज बहुत से लोग इसकी उपेक्षा करते हैं, लेकिन एक समय आएगा जब वे त्रिकाल संध्या का मार्ग माँगेंगे, पर तब उसका कोई लाभ नहीं होगा। अभी सुधरने का समय है। आप कर रही हैं, यह बहुत सुंदर है। करती रहिए और भगवान की कृपा प्राप्त कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:06:04 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1691 चार दिन पहले मुझे भगवान कृष्ण की बहुत याद आ रही थी, और भागवत पढ़ते हुए तथा गीत गोविंद गाते हुए मैं बहुत रोई। मेरी आँखों से बहुत आँसू आते हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह अद्भुत है, माता जी। आपकी भक्ति दूसरे भक्तों के लिए आदर्श है। जो सचमुच भगवान कृष्ण का भक्त होता है, वह जब उनकी कथाएँ या भजन सुनता है, तो स्वाभाविक रूप से आँसू आ जाते हैं। माता जी, आपके लिए भगवान कृष्ण को प्राप्त करने का समय भी आ गया है। भक्त का लक्षण यही है कि वह अपना मन और ध्यान भगवान के चरणकमलों में स्थिर कर दे। यही भक्त का लक्ष्य है। उन अभय चरणकमलों में समस्त तीर्थ और देवता निवास करते हैं। सच्चा भक्त केवल भगवान के चरणों को ही देखेगा, जो हमारा सबसे बड़ा शरणस्थल है। यह बहुत अद्भुत है। आप जैसे भक्तों को इस धरती पर आना चाहिए। आप पर भगवान की कृपा बनी रहे, और आप अपनी भक्ति से संसार को शिक्षा दें।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:01 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1692 मेरा प्रश्न यह है: क्या हमें ये स्वप्न इसलिए आते हैं क्योंकि हम उनके बारे में सोचते रहते हैं, या भगवान हमारी भक्ति से प्रसन्न होकर हमें ये दर्शन देते हैं? यही मैं पूछना चाहती हूँ।

उत्तर: देखिए माता जी, भगवान अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। हजारों, यहाँ तक कि लाखों लोग उनके बारे में सोचते हैं, पर उन्हें स्वप्न नहीं आते। जब कंस का अंत होने वाला था, तब उसे काल (मृत्यु) के दर्शन हुए थे। युद्ध से पहले युधिष्ठिर को स्वप्न में दर्शन हुआ था। तो स्वप्न एक प्रत्यक्ष आध्यात्मिक तत्त्व है। ऐसी बातें अज्ञानी लोग ही कहते हैं। संसार में बहुत लोग भगवान कृष्ण को पुकारते हैं और भजन गाते हैं, पर उन्हें दर्शन नहीं होते। जो भाग्यशाली हैं, जो भगवान के सच्चे भक्त हैं, उन्हें भगवान दर्शन देते हैं, माता जी। स्वप्न ही आधार है।

► यह उत्तर सुनें · 01:10:37 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1693 जब हम अपनी नित्य पूजा के लिए दीया जलाते हैं, तो कभी लौ में कमल बन जाता है, कभी भगवान गणेश, और हमने बांके बिहारी जी के भी दर्शन किए हैं। यह हर दिन होता है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जैसी भक्ति, वैसे ही भगवान के दर्शन, माता जी। अज्ञानी लोग क्या जानें? आपकी भक्ति सबसे बड़ा अनुभव है। और आप सत्य कह रही हैं। मैं जानता हूँ, हमारे आश्रम में भी कई बार जब हवन किया गया, तो अग्नि से भगवान शंकर और ब्रह्मदेव की छवियाँ प्रकट हुईं। मैंने स्वयं देखा है। क्योंकि उनका आवाहन किया गया था, इसलिए वे आए और प्रकट हुए। तो आपकी ऐसी भक्ति है कि आपको ये दर्शन हो रहे हैं। हमने भी यह अनुभव देखा है; यह एक वास्तविकता है।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:43 · 8 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1694 प्रभु जी, मेरा स्वभाव बदलने लगा है। कुछ लोग जैसे भय से या किसी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, वैसा नहीं — मेरे स्वभाव में ऐसा परिवर्तन आया है कि मुझे किसी भी चीज़ की कोई इच्छा ही नहीं रही। इसका क्या अर्थ है? मुझे किसी भी वस्तु की तनिक भी इच्छा नहीं है।

उत्तर: देखिए माता जी, जिसके भीतर आध्यात्मिक ब्रह्म-तत्त्व का प्रकाश प्रकट हो जाता है, उसका सारे संसार से मोह टूट जाता है। जिसके भीतर यह प्रकट नहीं होता, वह मोह में डूबा रहता है और माँगता ही रहता है। आपको ब्रह्म-तत्त्व का प्रकाश प्राप्त हुआ है, अर्थात् आप भगवान के संपर्क में आ गई हैं। जैसे भगवान आपके साथ हैं और आप उनके साथ हैं। फिर सांसारिक वस्तुओं से मोह टूट जाएगा; कुछ भी शेष नहीं रहेगा। यह भक्त के लिए अंतिम अवस्था है। जब संसार से मोह चला जाए, जब आप कुछ देखें और उसमें कोई आसक्ति या सुख अनुभव न हो, तब जान लीजिए कि आप भगवान की हो गई हैं। यह बहुत अच्छा है। यह सबके साथ होना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:38 · 8 अक्टूबर 2023

सत्र 101 · प्रश्न 1695–1717

L107 - भविष्य मालिका में लिखा जा चुका था पं० श्री काशीनाथ मिश्र जी का नाम | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 9 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1695 पंडित जी, मैं जानना चाहता था कि मालिका का दूसरा भाग कब प्रकाशित होगा?

उत्तर: देखिए, यदि भगवान की कृपा बनी रही, तो हम निश्चित रूप से दूसरा भाग लिख रहे हैं। दूसरा भाग अवश्य प्रकाशित होगा। भगवान ने यह दायित्व दिया है। जब उनकी इच्छा होगी, तब मानवता के कल्याण के लिए वह प्रकाशित होगा। उस पर कार्य चल रहा है; वह लगभग पूर्ण है, पर थोड़ा समय लगेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:10 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1696 मेरा प्रश्न यह है कि अभी आप मालिका का प्रचार कर रहे हैं, और हम इंटरनेट के माध्यम से उसे सुन पा रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि जो होना है वह होकर रहेगा, और मैं आपकी बताई त्रिसंध्या का पालन करता हूँ। परंतु कुछ समय बाद, जब ये सब चीज़ें, जैसे इंटरनेट, नहीं रहेंगी, तब हमें मार्गदर्शन कैसे मिलेगा? हो सकता है आप भी न हों, और हम आपसे संपर्क न कर सकें। तब हमें कैसे पता चलेगा कि आगे क्या होने वाला है और हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, वह समय आ रहा है जब भक्त और भगवान एक हो जाएँगे। जो मालिका की त्रिकाल संध्या का पालन करेंगे, उनका आपस में सीधा संवाद होगा। यह सारी सूचना अपने आप आ जाएगी, जैसे वायरलेस सिग्नल। वर्तमान व्यवस्था में आपको डायल करना पड़ता है, पर आने वाले समय में भक्तों को सीधे सूचना मिलेगी। सारे तत्त्व उपलब्ध रहेंगे; कोई कष्ट नहीं होगा। भगवान ही सब करा देंगे। इसकी चिंता मत कीजिए, क्योंकि यह भगवान का काम है—आप सबको कैसे बचाना है। यदि इंटरनेट बंद भी हो जाए, तो भगवान के पास सुपर-इंटरनेट है। उसी के माध्यम से भक्त बचाए जाएँगे और उन्हें ज्ञान मिलता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:46 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1697 मैं महाराष्ट्र के पुणे के बारे में पूछना चाहता हूँ। पुणे में क्या हो सकता है? क्या मालिका में उसके बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका पूरे विश्व के बारे में लिखी गई है। जहाँ तक महाराष्ट्र के पुणे और मुंबई की बात है, वहाँ भीषण बाढ़ आएगी, युद्ध का प्रचंड प्रवाह होगा, भूकंप से विनाश होगा, विनाशकारी रोग और महामारियाँ आएँगी, साम्प्रदायिकता होगी, और लोगों के लिए अन्न की कमी के साथ-साथ हर तरह की समस्याएँ, पीड़ा और कष्ट आएँगे। पापी लोगों का विनाश होगा, और धर्मात्मा लोग प्रकाशित होंगे। एक नए युग का निर्माण होगा। मुंबई और महाराष्ट्र के लोग भी बचे रहेंगे, और गणपति मंडल भगवान के सहयोग और आशीर्वाद से अच्छा कार्य करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:05 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1698 यह सब कब तक चलेगा? यह कितने समय तक चलता रहेगा?

उत्तर: देखिए, पृथ्वी एक दिन में नहीं बनी थी। यह 2032-33 तक चलता रहेगा। वही धर्म की स्थापना का समय है। उसी समय-सीमा के भीतर कार्य हो रहा है। आप घटनाओं को देखिए, अपना कर्म कीजिए, भगवान की शरण लीजिए, और त्रिकाल संध्या का पालन कीजिए। मानवता बच जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:03 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1699 अंत में कितने लोग बचेंगे?

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार 33 करोड़ बचेंगे। देखिए, हमारी गणना है कि देवता तो निश्चित रूप से बचेंगे; इसमें कोई परिवर्तन नहीं है, क्योंकि सभी देवी-देवता संसार में जन्म लेते हैं। करोड़ों ऋषि, संत और दिव्य जीव भी रहेंगे। कुल मिलाकर हम 64 करोड़ कहते हैं। यह भगवान की इच्छा है कि वे 64 करोड़ रखें, 6 करोड़ रखें, या 100 करोड़। यह भगवान पर निर्भर है। परंतु धर्म की स्थापना में तीन-चौथाई लोग बचा लिए जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:29 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1700 प्रभु जी, इज़राइल में युद्ध शुरू हो गया है। हम लोगों को भविष्य मालिका के बारे में बताते हैं, और मैंने आपका वह वीडियो देखा था जिसमें आपने यह भविष्यवाणी की थी कि इज़राइल को अमेरिका का साथ देना पड़ेगा। अब जब यह हो रहा है, तब भी हमारे अपने परिवार के लोग विश्वास नहीं करते कि कल्कि अवतार आ चुके हैं। मुझे लगता है कि मेरे परिवार में केवल मैं ही विश्वास करने वाला हूँ। मुझे उनकी चिंता होती है। चूँकि वे विश्वास नहीं करते, तो क्या मेरा परिवार नष्ट हो जाएगा? क्या मैं बिल्कुल अकेला रह जाऊँगा?

उत्तर: देखिए, पहले इज़राइल के बारे में। मैंने पहले कहा था कि इज़राइल चाहकर भी भारत की सहायता नहीं कर पाएगा, क्योंकि इज़राइल स्वयं अब संकट में है। और अमेरिका उनकी सहायता करके उन्हें अपनी ओर खींच लेगा। 51 मुस्लिम देशों का एकीकरण होगा। जब अमेरिका पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देश की सहायता करेगा, तब इज़राइल हमारी मदद नहीं कर पाएगा। प्रमाण सामने है। अब आपकी दूसरी बात, कि आपका परिवार विश्वास नहीं करता। देखिए बेटा, लोग अपने-अपने कर्म के अनुसार आते-जाते हैं। यदि कोई अच्छे कर्म करता है, सुनता है और विश्वास करता है, तो भगवान अपनी कृपा बरसाते हैं। पर यदि कोई अपने अहंकार में यह समझे कि वह सर्वशक्तिमान है, तो समय आने पर उसका न्याय होगा। भविष्य मालिका में लिखा है कि जो आज विश्वास नहीं करते, वे बाद में जब बचना चाहेंगे तब मार्ग के लिए गिड़गिड़ाएँगे, पर उस समय वे बचाए नहीं जाएँगे। इसीलिए मैं दृढ़ता से कहता हूँ: बदल जाइए, समय नहीं है। किसी और की चिंता मत कीजिए। भगवान हमारे हैं। जो विश्वास करते हैं वे भक्त हैं; जो नहीं करते, उनके लिए कष्ट होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:16 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1701 भगवान सबके सामने कब प्रकट होंगे?

उत्तर: क्यों? आप सबने कौन-सी तपस्या की है? भगवान किसी बंधन में नहीं हैं। नहीं, भगवान भक्ति से ही वश में होते हैं। जो तपस्या करते हैं और भक्ति में जीते हैं, भगवान उन्हें अपने दर्शन देते हैं। सबके सामने प्रकट होने की उन्हें क्या आवश्यकता है? क्या भगवान असुरों की निंदा सुनने और दुष्टों के अत्याचार देखने के लिए प्रकट होंगे? ऐसा नहीं हुआ है। वे अपने भक्तों के सामने प्रकट होते हैं। देखिए, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उन्हें अपने दर्शन देते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:11 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1702 मुझे एक बात जाननी है। कलियुग की अवधि तो बहुत लंबी होनी थी। इतनी लंबी अवधि इतनी कम कैसे हो गई? कारण यह बताया जाता है कि पापों का घड़ा भर गया है, जो सच है, पर मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह कैसे हुआ। कृपया समझाइए।

उत्तर: देखिए, आपको हमारी पुस्तक, भविष्य मालिका, पढ़नी चाहिए। उसमें मैंने 32 प्रकार के पापों का उल्लेख किया है और बताया है कि किस पाप से युग की आयु कितनी घटी। जैसे, गोहत्या और उनकी चरागाह भूमि हड़पने के कारण कलियुग की आयु से 1,00,000 वर्ष कट गए। इस कारण उसकी आयु घटकर 5,000 वर्ष रह गई। आज लोग कहते हैं कि कलियुग तो अभी शैशव अवस्था में है, पर उस ज्ञान से क्या लाभ, यदि उसका उपयोग मानवता के कल्याण के लिए न हो? एक समय आएगा जब सब कहेंगे कि मैं सही था, पर तब लोगों के पास बदलने का समय नहीं होगा। इसलिए इस समय का सदुपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। युग का अंत आ गया है। मैंने यह कहा है, और शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है। प्रमाण आप देख ही रहे हैं, और इससे बड़ा प्रमाण आएगा, पर तब समय शेष नहीं रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:57 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1703 भागवत पढ़ते समय कभी-कभी मैं उलझन में पड़ जाता हूँ और समझ नहीं पाता। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: प्रतिदिन पढ़ने का प्रयास कीजिए। देखिए, भागवत चारों वेदों का सार है। वेदों को सुनकर ही समझा जाता था ('श्रुति')। एक बार पढ़िए, दो बार, तीन बार। बार-बार पढ़ने से और सुनने से, आप अंततः भागवत को समझ जाएँगे। पढ़ते रहिए, और भगवान की कृपा से सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 36:31 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1704 ब्रह्म ज्ञान (दिव्य ज्ञान) कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

उत्तर: ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए, त्रिकाल संध्या के अतिरिक्त संसार में कोई दूसरा मार्ग नहीं है। जिस त्रिकाल संध्या की मैं बात करता हूँ, वही वह मार्ग है।

► यह उत्तर सुनें · 37:16 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1705 गुरुजी, यदि हम राम नाम का जप करें, तो क्या हमारा उद्धार हो सकता है?

उत्तर: देखिए, मैं भी भगवान राम की शरण में हूँ। हनुमान जी मेरे गुरु हैं। युग के अनुसार, वर्तमान अवतार के नाम का आदर करना भक्तों का कर्तव्य है। इस समय महाविष्णु आ रहे हैं, इसलिए उनकी शरण लीजिए। वही राम हैं, वही कृष्ण हैं, वही बुद्ध हैं—वही सब कुछ हैं। और महाविष्णु स्वयं कल्कि राम के रूप में आ रहे हैं। इसलिए कल्कि राम के माधव नाम का जप कीजिए। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 37:30 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1706 कलियुग की आयु कितनी घट गई है?

उत्तर: लिखा है कि यह 5000 वर्ष रहेगा। मैंने इसका विस्तार से वर्णन किया है, 32 प्रकार के पापों की सूची देते हुए। जैसे, पवित्र गंगा में निर्वस्त्र स्नान करने के कारण 12,000 वर्ष कट गए। ब्राह्मण की पत्नी के साथ दुष्कर्म करने के कारण 30,000 वर्ष। पितरों का अनादर करने और अपने माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण 6,000 वर्ष। इस प्रकार कलियुग की आयु घट गई। आपको इसके बारे में पढ़ना चाहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:06 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1707 मैंने सुना है कि जब कोई व्यक्ति मरता है, तो स्वर्ग या नरक जैसा कुछ होता है। मृत्यु के बाद की यात्रा क्या है?

उत्तर: देखिए, लोग कहते हैं कि कोई स्वर्ग चला गया, पर फल तो अपने कर्मों के अनुसार ही मिलता है। गरुड़ पुराण, विष्णु पुराण और श्रीमद् भागवत—सभी में इसका वर्णन है। जो लोग अच्छे कर्म करते हैं, वे स्वर्ग प्राप्त करते हैं। जो बुरे कर्म करते हैं, वे नरक जाते हैं, और नरक के बाद नीच योनियों में जन्म लेते हैं। जो सर्वोत्तम कर्म करते हैं, वे वैकुंठ (विष्णु का दिव्य धाम) प्राप्त करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 40:03 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1708 गुरुदेव, हमें त्रिकाल संध्या कैसे करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या के संबंध में, यूट्यूब पर एक नंबर है। उस नंबर पर संपर्क कीजिए, वे आपको त्रिकाल संध्या की पीडीएफ भेज देंगे। यह बहुत आनंददायक है। जब आप त्रिकाल संध्या करेंगे, तब आप देखेंगे कि भगवान कितने कृपालु हैं।

► यह उत्तर सुनें · 40:57 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1709 मेरा एक और प्रश्न था, पंडित जी। मैं एकादशी का व्रत रखती आ रही हूँ, पर पिछली बार मेरी तबीयत इतनी खराब हो गई कि मैंने रात में ही व्रत तोड़ दिया और अगले दिन पारण की विधि ठीक से नहीं कर पाई। क्या मुझसे कुछ गलत हुआ? क्या मुझे कल व्रत रखना चाहिए? कृपया कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: गृहस्थों के लिए एकादशी व्रत में एक समय भोजन करना चाहिए। पहले उसे भगवान को प्रसाद रूप में अर्पित कीजिए। आप फल और कंदमूल भी ले सकते हैं। यदि बहुत भूख लगे तो सूर्यास्त से पहले खा सकते हैं। निर्जला या पूर्ण उपवास नहीं करना चाहिए। यह पहली बात है। दूसरी बात यह है कि असुरों ने हमेशा धर्म का विरोध किया है। धर्म के सबसे बड़े कार्य को हमेशा बड़े विरोध का सामना करना पड़ा है। पर सच्चे भक्तों को भगवान किसी न किसी प्रकार से स्मरण कराते हैं और उन्हें अपना बना लेते हैं। वे अपने भक्तों की श्रद्धा दृढ़ करने के लिए निश्चित ही कोई न कोई संकेत अवश्य छोड़ते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 43:35 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1710 मैंने उनसे (दर्शन में भगवान से) पूछा, 'प्रभु जी, भक्तों का यह मिलन कब तक होगा?'

उत्तर: उन्होंने मुझे बताया कि यह दिसंबर में होगा। उन्होंने कुछ और बातें भी कहीं, पर अब वे मुझे याद नहीं हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:52 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1711 महाराज जी, मेरा प्रश्न कॉर्पोरेट जगत के लोगों के बारे में है। वे इतने तनाव में रहते हैं कि सप्ताहांत शराब और धूम्रपान में बिता देते हैं, और महामारी जैसे आने वाले समय के संकेतों को पूरी तरह अनदेखा कर देते हैं। इस सोच से कैसे निपटें कि भक्ति तो केवल बुढ़ापे के लिए है?

उत्तर: अज्ञानी दिखावे की खोज में रहते हैं, जबकि ज्ञानी सरल जीवन को पसंद करते हैं। मालिका में लिखा है, 'अंतिम क्षणों में आत्मा बोलेगी।' अंतिम समय में लोग कहेंगे, 'पंडित जी ने हमें बताया था कि यह आने वाला है।' तब वे भागवत पढ़ने और त्रिकाल संध्या करने का प्रयास करेंगे, परंतु उसका कोई लाभ नहीं होगा। शास्त्रों का अभ्यास करने और मंत्र शक्ति का आशीर्वाद पाने का समय अभी है। यदि वे यह समय गँवा देंगे, तो बाद में पछताएँगे और कहेंगे, 'भाई, आप सही थे। हमारा परिवार चला गया, अब कोई मार्ग नहीं बचा। काश हमने पहले विश्वास किया होता।' यह मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 48:48 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1712 मैं त्रिकाल संध्या नहीं कर पाता, परंतु माधव नाम का जप कर पाता हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: नहीं बेटा, त्रिकाल संध्या करना आवश्यक है। त्रिकाल संध्या से हमें शक्ति मिलेगी। माधव नाम के जप से आपको भक्ति मिलेगी। और भागवत पढ़ने से आपको दीर्घायु मिलेगी। सब कुछ आवश्यक है। कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:35 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1713 गुरुजी, इस त्रिकाल संध्या के विषय में, मैं इसे कैसे आरंभ करूँ? और क्या मैं इसे धीरे-धीरे शुरू कर सकती हूँ?

उत्तर: त्रिकाल संध्या में कोई बड़े मंत्र नहीं हैं। इसमें 16 नाम, दशावतार, दुर्गा माधव स्तुति, और भागवत का पाठ सम्मिलित है। यूट्यूब पर दिए गए फ़ोन नंबर पर संपर्क कीजिए, पीडीएफ प्राप्त कीजिए, और आरंभ कीजिए। त्रिकाल संध्या शुरू कीजिए, बेटी। समय बहुत कम है, इसलिए कीजिए। यह बहुत आनंददायक है, आपको शांति देगी, और आपके जीवन को उसका अर्थ मिल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 55:37 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1714 मुझे सभी साधनाओं का पालन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता, परंतु जितना कर सकता हूँ करता हूँ। क्या यह सही है?

उत्तर: देखिए बेटा, आपको सुबह समय मिलेगा, प्रातः 3:30 बजे से 6:30 बजे तक। दिन के मध्य में शायद आपको अधिक समय न मिले। उस समय संध्या का संक्षिप्त रूप कीजिए। 16 नामों में 15-20 सेकंड लगेंगे। माधव नाम का 108 बार जप कीजिए। और यदि 10 अवतारों का श्लोक जपने का समय न हो, तो केवल उनके नाम जपिए: मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, और श्री कल्कि राम।

► यह उत्तर सुनें · 56:30 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1715 गुरु जी, अपनी श्रद्धा के कारण मैं केवल राधा नाम का जप करती हूँ। राधा नाम के जप से क्या भगवान समझेंगे और स्वीकार करेंगे?

उत्तर: देखिए बेटी, माता राधा रानी निरंतर माधव नाम का जप करती हैं। इसका प्रमाण शास्त्रों में है। माता राधा रानी भगवान कृष्ण को 'माधव' कहकर पुकारती थीं। इसलिए माधव नाम का जप कीजिए, और राधा रानी प्रसन्न होंगी। हमारे मन में अपने गुरु के प्रति सम्मान है, परंतु जब बात भगवान की हो, तो भगवान की शरण लेने और भगवान के मार्ग पर चलने के अतिरिक्त मुझे कोई दूसरा मार्ग नहीं दिखता।

► यह उत्तर सुनें · 57:54 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1716 क्या हम ग्रीन लीफ चाय पी सकते हैं? विशेष रूप से, लौंग, तेजपत्ता और काली मिर्च वाली ऑर्गेनिक ग्रीन लीफ चाय?

उत्तर: हाँ, आप अदरक और अन्य मसालों वाली हर्बल ग्रीन लीफ चाय जैसी चीज़ें पी सकते हैं। तुलसी की चाय पीजिए। दूसरी प्रोसेस्ड चाय, जिनमें बुरे गुण होते हैं, शरीर के लिए अच्छी नहीं हैं; वे हानिकारक हैं। हाँ, आप ग्रीन लीफ चाय पी सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 59:27 · 9 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1717 गुरुजी, मैं रामचरितमानस पढ़ता हूँ। यदि मैं अभी भागवत नहीं पढ़ पा रहा हूँ, तो क्या यह ठीक है? और चूँकि मैं कॉलेज जाता हूँ, मुझे त्रिकाल संध्या कैसे करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, आपको रामचरितमानस अवश्य प्रतिदिन पढ़ना चाहिए। परंतु त्रिकाल संध्या और श्रीमद्भागवत का पालन करना, जिस धारा की बात मैं करता हूँ, वह सत्य युग के लोगों के लिए आवश्यक है। यह धारा भगवान की धारा है। जो राम हैं, यह उन्हीं की धारा भी है। यदि आप इसका पालन करेंगे, तो आप धन्य हो जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:26 · 9 अक्टूबर 2023

सत्र 102 · प्रश्न 1718–1735

L108 - जाजनगर में कल्कि जी का जन्म पट्टा मड़ाण में प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 10 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1718 पंडित जी, मेरा आपसे एक प्रश्न है। वास्तव में, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला यह कि विश्व युद्ध किस वर्ष होगा? और दूसरा यह कि इंटरनेट या इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स किस वर्ष काम करना बंद कर देंगे?

उत्तर: देखिए, मैंने यह पहले भी कहा है। महापुरुष अच्युतानंद ने कहा था कि जब शनि मीन राशि में संक्रमण करेंगे, उस समय 'काल' पृथ्वी को ग्रस लेगा। यह युद्ध हो सकता है, कोई क्षुद्रग्रह पृथ्वी से टकरा सकता है, या पंचतत्वों से जुड़ी कोई प्रलय हो सकती है—अग्नि, वायु, हवा, या भूकंप। कुछ भी हो सकता है, यहाँ तक कि महामारी भी। अच्युतानंद ने 600 वर्ष पूर्व उल्लेख किया था कि शनि के मीन संक्रमण के दौरान विभिन्न माध्यमों से आपदाएँ आएँगी। तथापि, एक स्थान पर उन्होंने लिखा कि भगवान ने उन्हें बताया कि क्या लिखना है, और जब भगवान आएँगे, तब धर्म स्थापना का यह कार्य उनकी इच्छा के अनुसार होगा, और युद्ध, महामारी, सब कुछ होगा। समय निकट है। जहाँ तक तिथि की बात है, देखिए, यह भगवान का कार्य है। यह निश्चित रूप से होगा। परंतु यदि हम लोगों को बता दें, तो इससे भय उत्पन्न होगा। उससे संसार को क्या लाभ होगा? बहुत से लोग डर जाएँगे। इसीलिए मैं कहता हूँ, पवित्र मार्ग पर चलिए, सत्कर्म कीजिए, और मानवता के कल्याण के लिए कार्य कीजिए। जब धर्म की स्थापना होनी होगी, तो भगवान जब कार्य करने का निश्चय करेंगे तब वे उसे अवश्य करेंगे। मैं आपको समय बता रहा हूँ: शनि के मीन संक्रमण के दौरान आपदाएँ आ रही हैं। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए। और अपने सभी सांसारिक कर्तव्य निभाते रहिए। आनंद से कार्य कीजिए, भोजन कीजिए, अपने कर्तव्यों का पालन कीजिए, सब कुछ कीजिए। यह हो या न हो, यह भगवान के हाथ में है, परंतु यह अवश्य होगा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। समय में थोड़ा-बहुत आगे-पीछे हो सकता है। इसलिए, भगवान से जुड़िए। भगवान आपको बताएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:26 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1719 मेरा प्रश्न यह है कि जैसे-जैसे मैं त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ, मुझमें सात्विक (शुद्ध) गुण विकसित हो रहे हैं। तो जब तामसिक (अशुद्ध/अंधकारमय) गुण निकलते हैं, तो कुछ असहजता होती है। ऐसा लगता है कि मुझे सब छोड़ देना चाहिए, कि तामसिक गुण ठीक ही थे और उनसे कुछ इतना बुरा तो नहीं हुआ। मेरे मन में यह कौन-सी प्रक्रिया चल रही है?

उत्तर: देखिए, यदि हम अपने मूल स्वभाव की ओर जाएँ, तो मनुष्य सात्विक (शुद्ध) है और सत्व गुण (शुद्धता के गुण) पर आधारित है। इस शुद्धता की अवस्था में हम भगवान की कृपा और संसार की सभी दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त कर सकते हैं। आप इसी मार्ग पर हैं, आपको मेरा प्रणाम। यह बहुत आनंददायक है, बहुत आनंददायक। भगवान आपको और आगे ले जाएँ और आप विश्व कल्याण के निमित्त बनें। मेरे कोटि-कोटि प्रणाम। जय श्री माता।

► यह उत्तर सुनें · 27:29 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1720 पंडित जी, क्या भविष्य मालिका का खंड एक और खंड दो एक साथ प्रकाशित होंगे, या वे अलग-अलग भागों में उपलब्ध होंगे?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका का खंड एक पहले ही प्रकाशित हो चुका है। पहला खंड प्राप्त करने के लिए आप नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। पुस्तक के विमोचन को एक वर्ष से अधिक हो चुका है, अर्थात् यह मानवता के कल्याण के लिए मुद्रित हो चुकी है। दूसरे खंड पर कार्य चल रहा है। जब भगवान की इच्छा होगी, तब आपको वह पुस्तक अवश्य प्राप्त होगी। क्योंकि वह पुस्तक एक अद्वितीय महाग्रंथ है, वह मानवता के उद्धार के लिए सर्वाधिक कल्याणकारी शास्त्र है। आज तक जितने भी शास्त्र आए हैं, उनमें से मेरे मत में यही मानव जाति का सबसे अधिक कल्याण करेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:48 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1721 विदेशियों के बारे में, वे 31 करोड़ लोग जिनके बारे में कहा जाता है कि वे बचेंगे, क्या वे भी इसी मार्ग का अनुसरण करेंगे? क्योंकि उनकी भाषा अलग है। तो उन्हें अपने उद्धार के लिए किस मार्ग पर चलना चाहिए? जैसे, जर्मन या ब्रिटिश जैसे विदेशी शायद त्रिकाल संध्या नहीं कर सकते या भागवत नहीं पढ़ सकते। वे कैसे बचेंगे?

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। सबसे पहले, मैं भगवान बद्रीनाथ के चरणों में और बद्रीनाथ धाम के निवासियों को भी कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ। देखिए, भविष्य मालिका का अनुवाद कई भाषाओं में हो चुका है, जिनमें अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ़्रेंच और हिंदी शामिल हैं। यह ऑनलाइन वेबसाइटों पर भी उपलब्ध है। इन्हीं माध्यमों से विदेश के कई भक्त जुड़े हैं। आने वाले समय में, इन्हीं माध्यमों से, जिन भी भक्तों को भगवान ने अपने कार्य में लगाने के लिए भेजा है, उन सभी तक जो भी आवश्यक है, पहुँच जाएगा। वे आएँगे। कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:48 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1722 क्या यह संभव है कि यदि कोई शुद्ध भक्त भगवान से प्रार्थना करे कि ऐसा विनाश न हो और कोई समस्या न आए, तो क्या वह प्रार्थना स्वीकार हो सकती है? मेरा मतलब है, क्या भगवान इसे रोक सकते हैं ताकि कुछ भी बुरा न हो?

उत्तर: देखिए, भगवान वही कर रहे हैं जो धर्म की स्थापना के लिए आवश्यक है। भगवान ऐसा कुछ नहीं कर रहे जिससे निर्दोष लोगों को बिना कारण दंड मिले। और आपसे मेरा प्रश्न यह है: यदि संसार में पाप कर्म, जीव हत्या और अन्याय बढ़ जाएँ, और यदि देवताओं तथा वेदों का अपमान हो, तो क्या मनुष्यों को इस पर कुछ नहीं करना चाहिए? अभी भी समय है। यदि लोग उस पवित्र मार्ग पर चलें जिसकी हम बात करते हैं—त्रिकाल संध्या करना, श्रीमद्भागवत पढ़ना, शाकाहारी बनना—तो भगवान (विनाश के द्वारा) धर्म की स्थापना को भी रोक सकते हैं। पर लोगों को अच्छा करना होगा। यदि वे बुरा करेंगे, तो भगवान तो केवल अच्छा करने आ रहे हैं। वे अच्छा ही करेंगे। वे किसी को दुःख देने नहीं आ रहे। केवल उन्हीं को दंड मिलेगा जिन्होंने गलत किया है। एक भी ऐसा व्यक्ति, जिसने कोई भूल नहीं की, उसे हानि नहीं होगी। और जब अनंत कोटि ब्रह्मांडों के स्वामी आ रहे हैं, तो न्याय पूरी तरह न्यायसंगत होगा। लोगों के बदलने के लिए अभी भी समय है। रात 12 या 1 बजे वे जीवों को पकड़कर खाने के लिए मार डालते हैं। छोटे बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं... क्या कहूँ? कभी बेटा पिता को मार देता है, बेटा माँ को मार देता है। वृद्धाश्रम बढ़ गए हैं। बुढ़ापे में सहारा बनने के बजाय संतानें शत्रु बन गई हैं। जिन माता-पिता ने जन्म दिया और अपने बच्चों को पालने में इतना परिश्रम किया, बुढ़ापे में उन्हें पीटा जाता है, गाली दी जाती है, मार दिया जाता है और घर से निकाल दिया जाता है। यह पाप कब तक चल सकता है? धरती करोड़ों जीवों के रक्त से भीगी हुई है, यही भूकंपों का कारण है। यदि संसार के रचयिता भगवान, संसार को नष्ट होते देखकर भी न आएँ... और बड़े-बड़े भूकंप होते रहेंगे, जो मानव और पशु सभ्यता को नष्ट कर देंगे। धरती नहीं बचेगी। वे पृथ्वी की रक्षा करने आ रहे हैं। यदि

पृथ्वी बची रहेगी, तो हम उस पर रह सकेंगे। धरती माता रो रही है। लोग पाप में डूबे हुए हैं। भगवान की निंदा बढ़ रही है। और बड़े-बड़े देश अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं। इसलिए संसार में धर्म का प्रकाश अत्यंत आवश्यक है। यदि मानव सभ्यता धर्म की ओर मुड़ जाए, तो भगवान निश्चित ही उनकी रक्षा करेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 31:27 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1723 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा आप आज भागवत कथा में समझा रहे थे, जब कोई व्यक्ति मरता है, तो उसका सूक्ष्म शरीर बनाने के लिए 10 दिनों तक 'पिंडदान' किया जाता है। लेकिन हम यहाँ देखते हैं कि लोग तीन दिन में ही क्रिया-कर्म समाप्त कर देते हैं। क्या यह सही है? पूछने पर लोग कहते हैं कि भगवान राम ने ऐसा किया था, तो हम भी कर रहे हैं, इसमें क्या दिक्कत है?

उत्तर: नहीं, माता जी। इसी कारण पितरों का श्राप धरती पर पड़ रहा है। इसीलिए बच्चे कम उम्र में मर जाते हैं, लड़कियाँ विधवा हो जाती हैं, और घर में मांगलिक कार्य नहीं होते। पितरों के कारण घर में रोग और बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, और गर्भ में ही बच्चे मर जाते हैं। यह सब पितरों का श्राप है, और विधिवत क्रिया-कर्म करना चाहिए। देखिए माता जी, लोग जो कहते हैं उसके विपरीत, भगवान ने तो अपने पिता को सीधे वैकुंठ पहुँचा दिया था। क्या आज धरती पर कोई ऐसा संतान है जो ऐसा कर सके? वैकुंठ तो छोड़िए, यदि वे चार धाम की तीर्थयात्रा भी करवा दें, तो हम मान लेंगे। भगवान राम ने जो किया, उस पर विचार करना हमारा काम नहीं; वे भगवान हैं। वे अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते हैं। उन्होंने अपने पिता को परम गति प्रदान की। पर आज की संतानें तो गाँव के मंदिर तक की सेवा नहीं करतीं। फिर वे भगवान का उदाहरण क्यों देती हैं? भगवान तो भगवान हैं। और उनके पास क्या प्रमाण है कि भगवान ने क्या किया या नहीं किया? तो देखिए माता जी, संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो ऐसी गलत बातें कहकर अपनी भूलों को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। उनके विनाश का समय आ रहा है, और वे विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। थोड़ा ही समय बचा है। जब उनका नाश होगा, तब संसार देखेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:20 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1724 मैं पूछना चाहता था, कहा जाता है कि भगवान के प्रति हमारा समर्पण पूर्ण होना चाहिए और हमें उनसे कुछ नहीं माँगना चाहिए। लेकिन जब हम त्रिकाल संध्या करते हैं और दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करते हैं, तो हम 'कृपां कृपामयी' कहते हैं, जिसका अर्थ है कि हम कृपा माँग रहे हैं, है न? कृपया मुझे यह समझाइए।

उत्तर: देखिए, भगवान के प्रति हमारा पूर्ण समर्पण तब होगा जब हम भगवान को ही अपना पति, अपना परिवार, अपना मित्र, इस संसार में अपना साथी मानें, और अपने सभी गृहस्थ तथा सांसारिक कर्मों को उनके चरणों में समर्पित कर दें। हमें अपने कर्मों के फल की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। 'फल आप दीजिए, प्रभु। आप क्या देंगे, हम नहीं जानते। आप क्या नहीं देंगे, यह जानने की हमें आवश्यकता नहीं। प्रभु, बस हमें अपनी शरण में रखिए।' निरंतर नाम जप करने से शरीर की व्यवस्था में शुद्धता आएगी। और जो कुछ भी हो, उसे भगवान पर छोड़ देना चाहिए। निरंतर नाम जप, शास्त्रों का पाठ और त्रिकाल संध्या करने से आप भगवान के प्रति पूर्ण शरणागत हो जाएँगे। और तब संसार की किसी भी बाधा से कोई मोह या दुःख उत्पन्न नहीं होगा। इसमें कुछ समय लगेगा। जो त्रिकाल संध्या करेंगे, वे ऐसी अवस्था तक पहुँचेंगे और देवताओं के समान शुद्ध, निष्काम भक्त बन जाएँगे। ऐसा करने से भगवान की कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 37:52 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1725 गुरुजी, मैं पूछना चाहता हूँ, क्या चीन के साथ युद्ध होगा? यदि चीन के साथ युद्ध हुआ, तो मैं उसमें अपने देश की सेवा करना चाहता हूँ। क्या तब भगवान मेरे साथ होंगे?

उत्तर: यदि आप देश की सेवा करना चाहते हैं, तो त्रिकाल संध्या और भविष्य मालिका का प्रचार कीजिए। क्योंकि धर्म का एक क्षण धरती पर लोगों को करोड़ों वर्षों तक शांति और सुख दे सकता है। देश सेवा की भावना आदरणीय है, पर क्या किया जाए? वर्तमान समय धर्म के प्रचार का है। यह भगवान द्वारा धर्म की स्थापना का समय है, और पापियों तथा संसार की भूलों को हटाने का समय है। यह कार्य भगवान के हाथों में है; वे इसे करवा लेंगे। हमें तो बस धर्म का आचरण करना है। भविष्य मालिका और भगवान के नाम का प्रचार पूरे संसार में कीजिए। यही देश सेवा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:40 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1726 गुरुजी, मैं उन सात दिन और सात रात के बारे में पूछना चाहता था जिनका आपने उल्लेख किया था, जब अंधकार होगा और सूर्य नहीं होगा। यह किस वर्ष होने की संभावना है?

उत्तर: देखिए, यह 2025 से शुरू होने वाले विनाशकाल में होना निश्चित है, जब शनि मीन राशि में आएँगे और आगे बढ़ेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि भगवान महाविष्णु पृथ्वी के कल्याण के लिए एक नया सूर्य और एक नया चंद्रमा स्थापित करेंगे। इसी कारण सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। जब वह समय आए, तब इसकी चिंता मत कीजिए। अपना कर्तव्य कीजिए, भगवान के प्रति भक्ति रखिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और भगवान की कृपा से भक्त बच जाएँगे, और आप भी बच जाएँगे। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 40:57 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1727 पंडित जी, मेरे पास भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की मूर्ति है। क्या मैं उन्हें अक्षत (चावल) चढ़ा सकती हूँ? मैं हल्दी और कुमकुम लगाती हूँ। क्या मैं चावल चढ़ा सकती हूँ? क्या मैं उनके माथे पर चावल लगा सकती हूँ?

उत्तर: नहीं, नहीं। भगवान के माथे पर आप चंदन, अगर और कुमकुम का तिलक लगा सकती हैं। चावल संत-महात्माओं की परंपरा में चढ़ाया जाता है। भगवान विष्णु तो भगवान हैं। जय श्री माता।

► यह उत्तर सुनें · 41:50 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1728 कल रात मुझे डरावने सपने आ रहे थे, तो मैंने भगवान का नाम लिया, और फिर सपने में मैंने सुदर्शन चक्र और हनुमान जी को देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, हमारी ऑनलाइन सभाओं में बहुत से लोग कहते हैं कि वे हनुमान जी के या भगवान शंकर के भक्त हैं। वास्तव में, सभी की रचना भगवान ने ही की है। और इस समय भगवान शंकर का संहार का कार्य हनुमान जी द्वारा किया जा रहा है। भगवान का नाम लेने से हनुमान जी आपको दिखे, जिसका अर्थ है कि वे आपकी रक्षा करेंगे। वे भक्तों की रक्षा करेंगे। हनुमान जी ने आपको यह दर्शन इसलिए दिया क्योंकि वे उनकी रक्षा करेंगे जो माधव का नाम जपते हैं। राम का नाम उस युग के लिए था; इस युग में हनुमान जी उनकी रक्षा करेंगे जो माधव का नाम जपते हैं। यही उनकी कृपा का प्रमाण है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 42:32 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1729 पिताजी, कल रात मुझे एक सपना आया। सपने में मैंने देखा कि आप मेरे साथ हैं। एक शेर आपके पास आता है, और आप उसे बहुत प्यार से सहलाते हैं, और फिर वह चला जाता है। तो मैं पूछना चाहता था, पिताजी, इसका क्या अर्थ है? मुझे ऐसा क्यों दिखा?

उत्तर: देखिए, भगवान ने मुझे भक्तों की रक्षा करने और संसार के उद्धार के लिए भविष्य मालिका का प्रचार करने का दायित्व दिया है। और भगवान यह आप सबको दिखा रहे हैं। देखिए, संसार में कितने भी प्रभावशाली या शक्तिशाली लोग आ जाएँ, वे हमारे सामने टिक नहीं सकते, अर्थात् वे हमारा अधिकार स्वीकार करते हैं। यदि जंगल का शेर भी इसे स्वीकार करता है, तो मनुष्यों को भी स्वीकार करना चाहिए। इसी में मानवता का कल्याण है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:24 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1730 मेरे पास तीन मूर्तियाँ हैं, पर मैं उनकी सेवा नहीं कर पा रही हूँ। मैं मूर्तियों की सेवा नहीं कर पा रही, नाम जप या कुछ भी नहीं कर पाई। कृपया इन मूर्तियों के बारे में मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मेरे पास भगवान की मूर्तियाँ हैं, राधा कृष्ण की तीन मूर्तियाँ, और एक अकेले कृष्ण जी की। अब मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप अमेरिका में रहती हैं, इसमें कोई समस्या नहीं। देखिए, अमेरिका से भी बहुत से भक्त इस धर्म कार्य से जुड़े हैं। मैं आपको एक बात बताता हूँ: भगवान उनके पास जाते हैं जो उन्हें प्रिय हैं। अर्थात्, भगवान उनके पास जाते हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं और जो उनके निकट हैं। आप भगवान के निकट थीं, इसीलिए आपको अपने जीवन में भगवान की ये मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यदि भगवान हमारे घर आ गए हैं, तो उनका स्वागत कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए। यदि अधिक नहीं, माता जी, तो बस प्रेम, मुस्कान और भक्ति के साथ एक फूल अर्पित कर दीजिए। कहिए, 'प्रभु, आप मेरे हैं और सदा मेरे ही रहेंगे। मैं आपकी शरण में हूँ।' पूजा के लिए किसी विशेष समय की आवश्यकता नहीं है, माता जी। एक घंटे बैठकर पूजा करना आवश्यक नहीं। यदि हम दिन भर घूमते रहें पर मन में कृष्ण, राधा या माधव का नाम जपते रहें, तो हमें वही फल मिलता है जो बैठकर पूजा करने वालों को मिलता है। तो कम से कम, यदि आपको कोई छोटा-सा फल या तुलसी का पत्ता मिल जाए, तो उसे भगवान को अर्पित कर दीजिए। और भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, मुझे अपनी शरण में ले लीजिए।' क्योंकि, माता जी, समय ऐसा है कि धर्म के अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। विनाश के तत्व से पहले, हमारे उद्धार का मार्ग भगवान के अतिरिक्त कुछ नहीं है। आप भगवान की भक्त थीं, इसीलिए भगवान आपके घर आए हैं। तो भगवान का स्वागत कीजिए, उनकी पूजा कीजिए, और उनके साथ रहिए। वे आपको आशीर्वाद देंगे और कल्याण प्रदान करेंगे। ठीक है, माता जी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:56 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1731 मैं आपके विचार जानना चाहता था इस बारे में... जब भी मैं पूजा या प्रार्थना करता हूँ, मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। ऐसा हर बार होता है।

उत्तर: होता है। हम प्रभु से दूर हैं न? तो कभी-कभी उनका स्मरण मन में आ जाता है। जैसे माँ जब अपने बच्चे को याद करती है, तो स्नेह और प्रेम के आँसू उसकी आँखों में आ जाते हैं। भगवान कृष्ण और भगवान राम के साथ हमारा संबंध वैसा ही है। और जब वह जुड़ाव बनता है, जब जीवात्मा परमात्मा से मिलती है, तब आनंद की धारा बहती है। यह शुभ संकेत है और भक्त का लक्षण है। इसे जारी रखिए, बनाए रखिए। और प्रभु का कार्य कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव की शरण लीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 47:58 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1732 मेरी समस्या यह है कि आपने कहा है कि त्रिकाल संध्या में किसी भी प्रकार का नशा नहीं किया जा सकता। लेकिन हमारे यहाँ शराब की अनुमति नहीं है, पर सभी गांजा पीते हैं। क्या आप इस पर मार्गदर्शन देंगे? जब मैं इसे नहीं पीता तो मेरा मन बहुत अशांत हो जाता है, लेकिन जब पीता हूँ तो मुझे पूर्ण शांति मिलती है और मैं प्रभु की लीला में खो जाता हूँ।

उत्तर: सत्य युग में कोई भी मनुष्य शरीर के लिए हानिकारक पदार्थों का सेवन नहीं करेगा। इसके बारे में हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जानते हैं; हम यूट्यूब या गूगल पर खोज सकते हैं कि यह कितना हानिकारक है। और जब सत्य युग की स्थापना हो रही है, तब सभी शाकाहारी बनेंगे, अच्छे मनुष्य बनेंगे, दिव्य मनुष्य बनेंगे, देवतुल्य मनुष्य बनेंगे। कलियुग में रहना अलग बात थी। सत्य युग में जाने के लिए आपको इन चीज़ों से दूर रहना होगा। यदि आप देवतुल्य बन जाते हैं, तो आप तैंतीस कोटि देवताओं में से एक बन सकते हैं और इस धरती पर सत्य युग में मनुष्य के रूप में रह सकते हैं। इसलिए यह कलियुग की बात नहीं है; यह सत्य युग में जाने के लिए आवश्यक है। यदि आपकी अंतरात्मा कहती है कि आप सत्य युग में जाना चाहते हैं और प्रभु के साथ रहना चाहते हैं, तो प्रभु को पाने के लिए आपको कुछ चीज़ें छोड़नी होंगी। यदि आप इसे छोड़ देंगे, तो अच्छा होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 49:47 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1733 पंडित जी, वृंदावन के एक प्रेमानंद महाराज जी हैं। वे कहते हैं कि बस नाम जपते रहो, उसी से उद्धार हो जाएगा। मैं इसके बारे में जानना चाहता था, क्या यह सही है? मतलब, काम करते हुए या कुछ भी करते हुए बस 'जय श्री राधा, जय श्री राधा' जपते रहना।

उत्तर: मेरे मन में उनके लिए सम्मान है। लेकिन बात यह है कि सत्य युग में जाने के लिए, भगवान महाविष्णु जगन्नाथ के आदेश अनुसार, सनातन पंचसखाओं ने एक पवित्र नियम बनाया है। और यह भगवान का दिया हुआ वचन है। मानवता के कल्याण के लिए त्रिकाल संध्या आवश्यक है। धरती पर ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो इस मार्ग का पालन किए बिना सत्य युग का मनुष्य बन सके। यह लोगों को कड़वा लग सकता है। परिवर्तन के साथ, हमें भगवान के अवतार का सम्मान करना चाहिए। और भगवान के अवतार के साथ, सत्य युग का मनुष्य बनने के लिए, हमें 'ब्रह्मज्ञानी' बनना होगा, क्योंकि सत्य युग में सभी ब्रह्मज्ञानी होंगे, सभी देवता होंगे। तो हमें देवतुल्य कर्म करने होंगे। माँ राधा रानी और भगवान कृष्ण का नाम जितना चाहें जपिए, इससे आनंद मिलता है। प्रेमानंद जी जो कहते हैं वह सही है, उससे बहुत आनंद मिलता है। लेकिन इस युग से सत्य युग में जाने के लिए, मैंने जो समय बताए हैं उन पर त्रिकाल संध्या कीजिए। और मैंने जो नियम बताए हैं उनका पालन कीजिए। बाकी समय में माँ का नाम जपिए, भगवान कृष्ण का नाम जपिए। पूरा दिन पड़ा है। त्रिकाल संध्या तो केवल 30 मिनट की है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:44 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1734 मुझे अक्सर अपने आस-पास गरुड़ (चील) दिखाई देते हैं। कभी दो, तीन, चार या पाँच। क्या यह किसी बात का संकेत है? साथ ही, मुझे एक बहुत विशाल महाविष्णु का दृश्य दिखता है, और मैं उनके सामने बहुत से लोगों के साथ खड़ा हूँ, जैसे वह कल्कि की सेना हो। मुझे नहीं पता कि यह भ्रम है या सत्य।

उत्तर: यह अच्छा है। गरुड़ पक्षी भगवान के भक्तशिरोमणि गरुड़ का वंशज है। यदि वे आपके पास आते हैं, तो यह आपके लिए शुभ है। शायद वे समझते हैं कि आप भी भगवान विष्णु, कृष्ण या राम के भक्त हैं। वे आते हैं क्योंकि उन्हें आप पर विश्वास है। यह शुभ संकेत है। और नहीं, आप जो देखते हैं वह सत्य है। भगवान कल्कि पहले ही धरती पर अवतरित हो चुके हैं। धर्म स्थापना का समय चल रहा है। और भक्तों के लिए प्रभु किसी न किसी माध्यम से अपने दर्शन देते हैं, चाहे स्वप्न में हो या किसी अन्य रूप में। यह आपके लिए शुभ है। त्रिकाल संध्या कीजिए, ऑनलाइन सत्संग से जुड़िए, माधव का नाम जपिए, और आपको और अधिक सार प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 54:05 · 10 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1735 5 मई 2003 को एक ग्रह योग बना था जो भगवान राम की जन्मकुंडली से बहुत मिलता-जुलता था, जिसमें लगभग छह ग्रह उच्च के थे। त्रेता युग में जो ऐसा ही योग बना था, वह 2003 में हुआ। (परोक्ष रूप से यह पूछना कि क्या यही कल्कि के जन्म का समय था।)

उत्तर: सुनिए, भगवान के आगमन का समय गुप्त समय होता है। महापुरुष अच्युतानंद ने इस बारे में लिखा है, अर्थात बड़े से बड़े योगी, संत और ऋषि भी भगवान कल्कि की जन्मकुंडली नहीं खोज पाए। यह अत्यंत गोपनीयता से होगा। और भक्त ही उन्हें पहचान पाएँगे। आपने जिस योग का उल्लेख किया वह सही है। लेकिन भविष्य पुराण के अनुसार, भगवान कल्कि का अवतार 2005 के बाद होना था। समय लिखा गया था कि 2005 से आगे कभी भी। और उसके अनुसार भगवान कल्कि का अवतार होना था। शायद भगवान की इच्छा से यह पहले ही हो चुका है। और भक्ति मार्ग तथा त्रिकाल संध्या के अभ्यास से हमें भगवान का सच्चा सार ज्ञात होता है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 56:32 · 10 अक्टूबर 2023

सत्र 103 · प्रश्न 1736–1773

L109 - ''कलि आगत भविष्यांत'' में कल्कि जी के जन्म स्थान का वर्णन | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 11 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1736 मुझे त्रि-संध्या की प्रार्थनाएँ याद नहीं हो पातीं। याद हो भी जाएँ तो भूल जाता हूँ। कुछ भी शुरू करने में मुझे बहुत डर लगता है। शुरू किए हुए तीन महीने हो गए हैं।

उत्तर: ठीक है, इसे एक कॉपी में या कागज़ पर लिख लीजिए। फिर कागज़ से पढ़िए। गलती हो जाए तो कोई बात नहीं; समय के साथ सुधर जाएगी। डरने या दुखी होने की कोई बात नहीं है। माधव का नाम जपिए, सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 07:30 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1737 पंडित जी, मैं एक बात पूछना चाहता था। सुबह मैं सूर्योदय की दिशा की ओर मुख करके त्रि-संध्या करता हूँ। लेकिन जब मैं ऑफिस में होता हूँ, तो मुझे दिशाओं का पता नहीं होता। तो जहाँ भी बैठा होता हूँ, वहीं आपके बताए संक्षिप्त तरीके से कर लेता हूँ। कभी-कभी समय हो तो पूरा करता हूँ। मेरा प्रश्न यह है कि यदि मैं पूर्व दिशा, सूर्य की दिशा की ओर मुख नहीं कर पाता, तो क्या यह दोष माना जाएगा?

उत्तर: देखिए, भगवान का नाम कहीं भी लिया जा सकता है—जल में, थल में, आकाश में, चारों दिशाओं में, किसी भी आसन में बैठकर—और आप भगवान को प्राप्त करेंगे। इसमें कोई दुख नहीं, कोई समस्या नहीं, कोई बाधा नहीं। जहाँ भी बैठें, जिस भी दिशा की ओर मुख हो, अपनी इच्छा के अनुसार बैठिए और उनका नाम जपिए। आप भगवान को प्राप्त करेंगे। इसमें कोई भी समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 08:07 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1738 दरअसल, मेरा एक प्रश्न था। दो दिन पहले एक सत्संग में आपने कहा था कि रूस का राजा भगवान जगन्नाथ को पुरी लाएगा। उस समय भगवान कल्कि उनसे मिलने नहीं जाएँगे। मेरे मन में प्रश्न उठा: इसका क्या कारण है? जब दोनों एक ही दिव्य स्वरूप हैं, तो भगवान कल्कि भगवान जगन्नाथ से मिलने क्यों नहीं जाएँगे?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, भगवान जगन्नाथ के भक्त पूरे भारत और विश्व में हैं, और भगवान जगन्नाथ स्वयं ही कल्कि रूप में अवतरित हुए हैं; कोई भेद नहीं है। लेकिन बात यह है कि केवल भाग्यशाली लोग ही प्रकट ब्रह्म भगवान कल्कि से मिल पाएँगे। यदि भगवान कल्कि वहाँ जाते हैं, तो सभी, पुण्यात्मा और दुष्ट दोनों, उनसे मिल लेंगे। इसका अर्थ है कि अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग भय के कारण भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए आएँगे, और यदि भगवान कल्कि वहाँ होंगे तो वे उन्हें भी देख लेंगे और उनकी शरण ले लेंगे। इसलिए, पापियों से बचाने के लिए भगवान अपनी माया शक्ति से लोगों को छाँटेंगे। छतिया बाट से पहले, जाजपुर के रास्ते में बारचणा नाम का एक स्थान है। भगवान कल्कि वहीं रुकेंगे और कहेंगे, 'भगवान जगन्नाथ की पूजा और अनुष्ठान चल रहे हैं, इसलिए मेरा यहीं रुकना ही बेहतर है।' भक्तों के लिए भगवान कल्कि वहाँ रुकेंगे और बाद में जहाँ जाना होगा वहाँ प्रस्थान करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:51 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1739 पंडित जी, संसार के भविष्य के बारे में कहा जाता है कि भूकंप बढ़ेंगे, पृथ्वी की धुरी खिसक जाएगी, भूगोल पूरी तरह बदल जाएगा, और सूर्य पश्चिम से उदय होगा। महापुरुष अनंत दास जी ने कहा है कि उनकी भविष्यवाणियाँ सत्य होंगी। ऐसी स्थिति में, क्या केवल इस आध्यात्मिक धारा की पवित्र आत्माएँ ही बचेंगी, या अन्य मार्गों की पवित्र आत्माएँ भी बचेंगी? क्या अन्य मार्गों के लोगों को भी प्रभु के दर्शन प्राप्त होंगे, या यह केवल उन्हीं के लिए होगा जो सच्चे मन से अटूट भक्ति के साथ इस मार्ग पर चल रहे हैं?

उत्तर: देखिए, जब भगवान संसार में अवतरित होते हैं, तो वे अत्यंत करुणामय होते हैं। वे दुष्टों का संहार करते हैं और संतों की रक्षा करते हैं। महान संत अच्युतानंद ने ओड़िया में एक पंक्ति लिखी है जिसका अर्थ है कि जो भगवान की शरण में नहीं है, ऐसा एक भी भक्त कलियुग के विनाश काल से नहीं बचेगा। मेरा विश्वास है कि जब तक धर्म की पुनः स्थापना होगी, तब तक सभी भक्त भगवान कल्कि से जुड़ चुके होंगे। एक समय आएगा जब लोगों को कोई दूसरा विकल्प नहीं दिखेगा। कोई धनी हो, प्रतिष्ठित हो या ज्ञानी हो, सभी को भगवान कल्कि की शरण लेनी होगी। उन्हें त्रिकाल संध्या स्वीकार करनी होगी, और 16 नाम, 10 अवतार तथा दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करना आवश्यक हो जाएगा। लोग देखेंगे कि इसे पढ़ने से उन्हें मुक्ति मिल रही है, और यह धीरे-धीरे सब तक फैल जाएगा। भगवान जगन्नाथ की कृपा से भविष्य मालिका का विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद होगा। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 12:30 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1740 प्रभु, मैंने मालिका की एक पंक्ति देखी जिसमें कहा गया है, ''24 से गणना करने वाली मशीनें उलट जाएँगी, कंप्यूटर और मोबाइल काम करना बंद कर देंगे, कारखाने टूट जाएँगे, स्कूल, कॉलेज और कोषागार बंद हो जाएँगे।' तो पंडित जी, क्या यह 2024 में होने वाला है?

उत्तर: 'गणना करने वाली मशीनें' यानी कंप्यूटर। उनकी भविष्यवाणियाँ विफल हो जाएँगी; सुपर कंप्यूटर तक बेकार हो जाएँगे। लेकिन यह 2024 में नहीं हो रहा है। लोग अपनी टीआरपी और सब्सक्राइबर बढ़ाने के लिए भविष्य मालिका के शब्दों को तोड़-मरोड़ देते हैं। मैं ये बातें सुनता हूँ, लेकिन यह इतनी जल्दी नहीं हो रहा है। सबसे बढ़कर, महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि सब कुछ भगवान कल्कि पर निर्भर है और इस पर कि वे कब कार्य करने का निर्णय लेते हैं। उन्होंने कोई निश्चित समय-सीमा नहीं दी है। आज जो बातें प्रचारित की जा रही हैं, वे लोगों में भय उत्पन्न करने के लिए हैं। भविष्य मालिका मुक्ति का मार्ग है; यह भक्तों को शांति और मोक्ष देने के लिए है, भय देने के लिए नहीं। लोग अपने सीमित ज्ञान के आधार पर इसकी व्याख्या करते हैं। सही समय की प्रतीक्षा कीजिए; अभी कुछ समय बाकी है। प्रभु की कृपा और उनकी इच्छा से, यह कब होगा कोई नहीं जानता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:53 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1741 पंडित जी, मेरा एक और प्रश्न था। भगवान नारायण के अब तक के सभी अवतारों में, नरसिंह अवतार को छोड़कर, बाकी सभी काफी शांत और सौम्य रहे हैं। नरसिंह अवतार बहुत उग्र था। कल्कि अवतार कैसा होगा? वे अपने भक्तों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे और जो गलत विचारों तथा बुरे कर्मों में लगे हैं, उनके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

उत्तर: देखिए, अपने भक्तों के लिए भगवान का स्वरूप शांत, नील मेघ के समान सौम्य, पवित्र, सुंदर और मनमोहक है। असुरों के लिए उनका स्वरूप संहारक है। भगवान कल्कि एक महान, तेजस्वी धूमकेतु की भांति दुष्टों के विरुद्ध संहार का कार्य करेंगे। अपने भक्तों को वे माधव, नील माधव के सुंदर रूप में दर्शन देंगे। तो भक्तों के लिए उनका स्वरूप अलग होगा और पापियों के लिए अलग। भगवान का प्राकट्य हमारी भक्ति के अनुसार होता है। संहार के उद्देश्य से भगवान कल्कि कुछ दिनों तक अपना रौद्र रूप बनाए रखेंगे, परंतु अपने भक्तों के लिए वे सरल और सौम्य रूप में प्रकट होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:43 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1742 पंडित जी, मुझे क्षमा करें। हमारी पाँच ज्ञानेंद्रियों और चार कर्मेंद्रियों पर नियंत्रण होना आवश्यक है, है ना? हम प्रेम करना, प्रतीक्षा करना और आज्ञा पालन करना सीखने का प्रयास कर रहे हैं। तो जो उपवास करना है, उसका अर्थ क्या यह भी है कि हमें अपनी इंद्रियों और कर्मेंद्रियों पर भी नियंत्रण प्राप्त करना होगा?

उत्तर: देखिए, यह सही है। उपवास के पीछे के सिद्धांत को मैं आपको बाद में समझाऊँगा। उपवास का उद्देश्य सांसारिक लोभ और इंद्रिय-सुखों की कामना का त्याग करना है। यही इसका वास्तविक अर्थ है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 19:45 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1743 पंडित जी, मैंने यह पहले भी पूछा था: आपने कहा था कि दवाइयाँ काम करना बंद कर देंगी। एक डॉक्टर होने के नाते मैं जानता हूँ कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, जैसे एलोपैथी, अभी भी विकसित हो रहा है और निदान हमेशा सटीक नहीं होते। हमें बचपन से ही आध्यात्मिकता से दूर, एक अंधी दौड़ में धकेल दिया जाता है। तो हममें से जिन्हें यह मार्ग मिल गया है, वे दवाइयों से कैसे निपटें, जो रासायनिक प्रतिक्रियाएँ हैं? क्या हमें संतुलन बनाए रखने के लिए विटामिन लेने चाहिए, या हम धीरे-धीरे उन पर निर्भरता कैसे समाप्त करें?

उत्तर: आपकी सोच बिल्कुल सही है। परंतु हम भगवान की कृपा से आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। इस कलियुग में आधुनिक दवाइयों के बिना लोगों का जीवित रहना कठिन है। हर घर में इनका उपयोग होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दवा लेने के साथ-साथ यदि लोगों में भक्ति और समर्पण हो, जैसे मैं जिस संध्या की बात करता हूँ उसका अभ्यास करें, तो दवा अधिक प्रभावी होगी। इसके अतिरिक्त, भविष्य मालिका में कहा गया है कि एक समय आएगा जब चिकित्सक अपना मार्ग भूल जाएँगे, और आधुनिक चिकित्सा तथा आयुर्वेद दोनों विफल हो जाएँगे। यह कलियुग का अंतिम चरण होगा, जब भगवान संसार को अपने नियंत्रण में लेंगे। उस समय केवल भगवान का नाम-जप और त्रिकाल संध्या ही काम आएगी। वह समय अभी नहीं आया है। यह भगवान पर निर्भर है। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए; वह अवश्य आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:45 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1744 मैं पूछना चाहता था, आपने बताया था कि भविष्य मालिका के अनुसार बहुत सी दिव्य आत्माएँ आएँगी। मैं आत्म-साक्षात्कारी संत श्री आसाराम जी बापू का शिष्य हूँ। क्या भविष्य मालिका में उनके बारे में कुछ लिखा है? मेरा दूसरा प्रश्न है, मालिका में लंदन, यूके के बारे में क्या कहा गया है? क्या वह पूरी तरह जलमग्न हो जाएगा?

उत्तर: नहीं, ऐसा नहीं होगा। आपके पहले प्रश्न के संबंध में, मैं सभी संतों का आदर करता हूँ क्योंकि उन्होंने बहुत से लोगों को बदलने में सहायता की है। परंतु संत आसाराम बापू के बारे में विशेष रूप से मैंने कुछ नहीं पढ़ा है। आपके दूसरे प्रश्न के विषय में, लंदन बना रहेगा। महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि भगवान गरुड़ पर सवार होकर लंदन जाएँगे। वे वहाँ के भक्तों की रक्षा करेंगे, कोहिनूर हीरा और कौस्तुभ मणि को भारत वापस लाएँगे, और अपने देश लौटने से पहले वहाँ के भक्तों को नए युग (सत्य युग) में शासक बनाएँगे। यह जयफुल मालिका में लिखा है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 26:41 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1745 पिताजी, मुझे आज सुबह 4 से 5 बजे के बीच एक स्वप्न आया। मैंने देखा कि मेरी माँ लेटी हुई हैं, उनके सीने से कमर तक कुछ ऐसा फैला था जो खून जैसा दिख रहा था। मेरे बड़े भाई में अचानक मृत्यु के लक्षण दिखाई दिए, जिससे मैं डर गया। दूसरे दृश्य में, मैंने पुराने 25 पैसे के सिक्कों से भरी एक टोकरी देखी। कोई दो ले रहा था, और मैं एक ले रहा था। जैसे ही मैं तीसरा लेने वाला था, मैंने अपनी माँ से कहा, 'नहीं, आप भी लीजिए, वरना मुझे आपकी याद आएगी।' इस स्वप्न के माध्यम से भगवान क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि इस धरती पर एक रोग आने वाला है। और यह 75% तक लोगों को प्रभावित कर सकता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:17 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1746 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। आजकल हम बहुत से प्रेम-विवाह देखते हैं। क्या वे सही हैं?

उत्तर: देखिए बेटा, मुझे प्रेम-विवाह का अधिक विश्लेषण करना पसंद नहीं है। परंतु यदि कोई युगल आपसी सहमति से, हमारे वेदों के अनुसार गांधर्व विवाह की परंपरा में विवाह करता है, तो वह विवाह शास्त्रसम्मत है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:44 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1747 जय जगन्नाथ, पंडित जी। फिलिस्तीन और इज़राइल के बीच चल रहे युद्ध के बारे में मालिका में कुछ है क्या?

उत्तर: देखिए, यह 13 मुस्लिम देशों के एकीकरण की पूर्वसूचना है। दूसरी बात, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, एक स्वतंत्र समीकरण बन रहा है। इस युद्ध के माध्यम से सभी मुस्लिम देश एक हो रहे हैं। दूसरी ओर, भारत और इज़राइल के बीच अच्छे संबंध बने रहेंगे, परंतु यदि अमेरिका उनकी अधिक सहायता करता है, तो वे संभवतः अमेरिका का अनुसरण करेंगे। भविष्य यही संकेत देता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:25 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1748 प्रभु जी, मेरा प्रश्न है कि एक अच्छे भक्त के क्या लक्षण हैं, जिनके द्वारा हम भगवान को प्राप्त कर सकें? भगवान ने हमें मोक्ष का मार्ग दिखाया है, परंतु हम भगवान को कैसे पा सकते हैं? एक अच्छे भक्त में कौन से गुण होने चाहिए?

उत्तर: देखिए माता जी, सर्वश्रेष्ठ गुण यह है कि जब हम अपने सभी सांसारिक सुख, दुःख, धन, मोह, अहंकार और अभिमान भगवान के चरणों में समर्पित कर दें और कहें, 'प्रभु, जो आपकी इच्छा है वही मेरे कल्याण के लिए है।' जब हम ऐसा करते हैं, तो भगवान हमारा पूरा उत्तरदायित्व ले लेते हैं। इसे 'निष्काम भक्त' कहते हैं। इसका अर्थ है बिना किसी व्यक्तिगत कामना के भक्ति करना। अपने सभी सांसारिक कर्मों का फल भगवान के चरणों में अर्पित कर दीजिए, और इस बात की चिंता मत कीजिए कि वे आपको फल देते हैं या नहीं। ऐसा करने से हम भगवान के निकट के भक्त बन सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:30 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1749 यहाँ लोग अपने स्वप्नों की बात करते हैं। जब कोई स्वप्न में कुछ देखता है, तो क्या वह भी भगवान की कृपा का एक रूप है? क्या इसका अर्थ है कि भगवान ने उन्हें किसी बात की पहले से सूचना दे दी है?

उत्तर: देखिए, स्वप्न एक ऐसा तत्व है जो हमारे शरीर, हमारे भविष्य और हमारे पूर्व जन्मों की जानकारी ला सकता है। रावण और कंस ने अपनी मृत्यु से पहले महाकाल (काल और मृत्यु के देवता) को देखा था; हम यह अपने शास्त्रों में पढ़ते हैं। यदि किसी को स्वप्न में भगवान के दर्शन होते हैं, तो वह उनकी कृपा है। कभी-कभी स्वप्न आने वाली किसी समस्या की चेतावनी दे सकता है। इसलिए यह एक पवित्र तत्व है। यदि यह भगवान की कृपा है, तो वे किसी को पहले से सूचना दे सकते हैं। भगवान कृष्ण के जन्म से पहले, वे ब्रह्मा के स्वप्न में प्रकट होकर अपने अवतार की घोषणा कर चुके थे। तो स्वप्न दुःख या सुख से पहले आ सकते हैं, या भगवान की कृपा से, जो व्यक्ति की भक्ति पर निर्भर करता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:24 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1750 पंडित जी, मैं दो वर्षों से आपको सुन रहा हूँ और मैं तथा मेरा परिवार त्रिसंध्या करते हैं। परंतु जब भी मैं कोई विशेष साधना करने का प्रयास करता हूँ, मैं इतना बीमार पड़ जाता हूँ कि मुझे अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। मुझे विचित्र स्वप्न भी आते हैं जिनमें मैं ऐसे शब्द सुनता हूँ जिन्हें मैंने कभी जाना ही नहीं, जैसे 'अखंड' या 'उद्धव'। एक स्वप्न में, एक पुराने घर में एक वृद्ध व्यक्ति ने मुझसे कहा कि बहुत सारे प्राचीन ग्रंथों के बीच 'अस्कंद' को खोजो। इसका क्या अर्थ है? मैं क्या करूँ, क्योंकि जब भी मैं साधना करता हूँ मेरा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है?

उत्तर: सुनिए माता जी। पहली बात, कोई विशेष साधना मत कीजिए। दूसरी बात, ग्रंथों वाला स्वप्न ओडिशा के एक गुप्त स्थान की ओर संकेत करता है जहाँ सभी प्राचीन ग्रंथ रखे हुए हैं। अभी वहाँ कोई नहीं जा सकता, परंतु जब समय आएगा, भक्त जाएँगे। संभवतः वहाँ जाना आपके भाग्य में है। अभी के लिए, उस समय की प्रतीक्षा कीजिए। केवल त्रिकाल संध्या कीजिए। कोई साधना मत कीजिए। साधना कभी-कभी भगवान की कृपा के बजाय उनके क्रोध का कारण बन सकती है, क्योंकि यह अहंकार का प्रतीक है, भगवान को विवश करने का प्रयास है। मनुष्य को दिव्य बनाने के लिए त्रिकाल संध्या पर्याप्त है। इसलिए उस मार्ग पर मत जाइए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:37 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1751 गुरुजी, मैं यह पूछना चाहता था कि 'बेहद का परम ज्ञान' (असीम का परम ज्ञान), जिसमें परम शिव और परम विष्णु जैसी अवधारणाओं की बात होती है, क्या उसका भविष्य मालिका से कोई संबंध है?

उत्तर: ठीक है। देखिए बेटा, मैंने भविष्य मालिका में ऐसी अवधारणाओं के बारे में नहीं पढ़ा है, इसलिए शायद मेरे पास इस विषय में जानकारी न हो। परम विष्णु और परम शिव जैसी अवधारणाएँ ज्ञान मार्ग से संबंधित हैं, जिसका अनुसरण ऋषि-मुनि करते हैं। इस कलियुग में मानव जाति के उद्धार के लिए भक्ति मार्ग आवश्यक है। भक्ति मार्ग पर चलने से आनंद की प्राप्ति होगी। यह मेरा मत है; आगे आपकी इच्छा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:05 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1752 महाराज, मैं कुछ पूछना चाहता हूँ जो शायद बहुत लोग सोचते हैं पर कहते नहीं। हर व्यक्ति ने, मुझ सहित, बहुत से पाप किए हैं, कुछ जान-बूझकर भी। अब मैं वे काम नहीं करता, पर पुराने कर्म मुझे परेशान करते हैं और रात को नींद नहीं आती। मैंने सुना है कि पश्चाताप ही सबसे बड़ा उपाय है और भगवान क्षमा कर देते हैं। क्या हम बच पाएँगे?

उत्तर: देखिए बेटा, बिल्कुल चिंता मत कीजिए। दुखी या तनावग्रस्त मत होइए। दूसरी बात, जैसा तुलसीदास महाराज ने लिखा है, इस संसार में हर वस्तु में दोष है। हर मनुष्य से गलती होती है, जाने या अनजाने में, कभी समय और ग्रह-दशा के वशीभूत होकर। लेकिन बचने का उपाय है। त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और निरंतर माधव का नाम जपिए। आप रत्नाकर या अजामिल से बड़े पापी नहीं हैं, जो महापापी थे। तो आज से चिंता छोड़िए और आनंद से रहिए। जैसा मैंने कहा है वैसा कीजिए, भगवान की कृपा अवश्य आपके साथ रहेगी। ठीक है बेटा?

► यह उत्तर सुनें · 43:13 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1753 प्रणाम गुरुजी। मेरा प्रश्न है, क्या आप मुझे एक समय-सीमा बता सकते हैं कि भगवान कल्कि कब आ सकते हैं और यह कलियुग कब समाप्त होगा?

उत्तर: देखिए, कलियुग में कोई भी मनुष्य या गुरु भगवान से बड़ा नहीं है। रही बात उस समय-सीमा की जो आप जानना चाहते हैं, तो 2025 से 2033 तक का समय काफी कठिन रहेगा। इस दौरान सत्य और असत्य प्रकट होंगे, और संसार पर एक बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1754 प्रणाम पंडित जी। मेरा बेटा सुबह और शाम की संध्या के लिए समय निकाल लेता है, पर दोपहर में नहीं कर पाता। वह स्कूल से दोपहर 2 बजे घर आता है, और जब तक करता है तब तक 2:30 बज जाते हैं। क्या इससे कोई समस्या होगी?

उत्तर: ठीक है माताजी, कोई समस्या नहीं। थोड़ी देर हो जाए तो कोई बात नहीं। बच्चों की गलतियाँ नहीं गिनी जातीं। कोई बात नहीं। उससे कहिए कि घर आने के बाद जब भी समय मिले, तब कर ले।

► यह उत्तर सुनें · 47:05 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1755 मेरा एक और प्रश्न है। जब कलियुग समाप्त होगा, तो जो लोग बचेंगे क्या वे अतीत के बारे में सब कुछ भूल जाएँगे?

उत्तर: नहीं, साधारण लोगों के मन में कुछ भी शेष नहीं रहेगा, माताजी। सभी सत्ययुग के मनुष्य बन जाएँगे और उसी के अनुसार आचरण करेंगे। केवल सबसे बड़े ज्ञानियों और भगवान के सबसे बड़े भक्तों को ही स्मृति बनी रहेगी। साधारण मनुष्यों को कुछ भी याद नहीं रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:45 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1756 तो पंडित जी, क्या लोग अपने सारे रिश्ते भूल जाएँगे, जैसे कि कौन उनकी माँ, पिता, भाई या बहन है?

उत्तर: नहीं, जो लोग अपने परिवार सहित भगवान की शरण में हैं, वे साथ ही रहेंगे। उनके लिए कोई समस्या नहीं होगी। समस्या उनके लिए होगी जो अपने परिवारों से बिछुड़ जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:14 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1757 ट्रक ड्राइवर होने के कारण मुझे ज्यादा समय नहीं मिलता, फिर भी मैं त्रिसंध्या करने का प्रयास करता हूँ। मेरे पास मंदिर नहीं है, केवल एक फोटो है, पर मैं अगरबत्ती जलाकर प्रार्थना करता हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: बड़े आनंद से कीजिए बेटा। भगवान की कृपा अवश्य आपके साथ रहेगी। आप इतनी मेहनत करते हैं, इससे ज्यादा और क्या कर सकते हैं? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:41 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1758 गुरुजी, मैंने दो महीने पहले भविष्य मालिका का अनुसरण शुरू किया और आज से त्रिसंध्या आरंभ की है। मैं बहुत सक्रिय महसूस करती हूँ। मैंने भागवत पुराण पढ़ने की कोशिश की, पर मुझे संस्कृत अच्छी तरह नहीं आती। छोटे बच्चे और घर के कामों के साथ मैं इसे पूरा नहीं पढ़ पाती। ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप कौन सी भाषा अच्छी तरह पढ़ सकती हैं? अगर आप हिंदी या अंग्रेजी पढ़ सकती हैं, तो गोरखपुर प्रेस की भागवत हिंदी में उपलब्ध है, और अंग्रेजी में भी उपलब्ध है। यदि आपके पास साधन हो तो आप मँगवा सकती हैं। अन्यथा, यदि आप पढ़ना चाहती हैं तो मोहन से बात कीजिए, हम आपको एक प्रति भेज देंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 49:14 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1759 पंडित जी, आज के समय में आप इन बातों को कितना भी समझाने की कोशिश करें, लोग केवल अविश्वास ही नहीं करते, बल्कि उपहास करते हैं। वे कहते हैं, 'भले ही हम इस पर विश्वास कर लें, फिर भी हम इसे मानना नहीं चाहते।' इसका क्या कारण है?

उत्तर: देखिए, देवता असुरों को बार-बार समझाने की कोशिश करते हैं, पर वे नहीं समझते, और अंत में नष्ट हो जाते हैं। जैसे-जैसे कलियुग समाप्त हो रहा है, आसुरी प्रवृत्ति वाले नहीं समझेंगे, जबकि संत प्रवृत्ति वाले समझ जाएँगे। मुझे भी सच बोलने के लिए आलोचना सहनी पड़ती है। कोई बात नहीं। जिनके भाग्य में विश्वास करना लिखा है, वे विश्वास करेंगे। अभागे कभी विश्वास नहीं करेंगे। शायद यह उनके भाग्य में नहीं है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 50:32 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1760 पंडित जी, आज सुबह मैंने देखा कि हमारे घर के मंदिर में सभी देवी-देवताओं के चित्र—शेरावाली माता, भगवान दामोदर, राधा पार्थसारथी, एक छोटा शिवलिंग, और भगवान नृसिंह—नीचे गिरे हुए थे। इसका क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: कारण यह है, माताजी... क्या आप और आपके पति त्रिकाल संध्या करते हैं? (हाँ, दिन में तीन बार)। देवी-देवता संकेत दे रहे हैं कि वे अब मंदिरों या घरों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अब धर्म की पुनर्स्थापना के कार्य में लगे हुए हैं। इसमें कोई विपत्ति या समस्या नहीं है। चित्रों को वापस रख दीजिए, अपनी पूजा जारी रखिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और माधव का नाम जपिए। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 51:41 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1761 गुरुजी, मेरा प्रश्न यह है कि जब कलियुग में भगवान कल्कि आएंगे, तो हम उन्हें कैसे पहचानेंगे? बड़े-बड़े भक्त भी उन्हें कैसे पहचान पाएंगे?

उत्तर: देखो बेटा, मनुष्य के पास दूसरे मनुष्यों को पहचानने का ज्ञान और सामर्थ्य होता है। लेकिन भगवान को पहचानने के लिए भक्ति, समर्पण, पूर्व जन्मों के पुण्य (प्रारब्ध) और दिव्य ज्ञान चाहिए। यदि आप भगवान कल्कि को पहचानना चाहते हैं, तो त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए, और समय तथा अनुभव के साथ आप उन्हें अवश्य समझ पाएंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 53:00 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1762 पंडित जी, पिछले 10-15 दिनों में मेरी बेटी अचानक बहुत बीमार हो गई है। वह ठीक से बोल या चल नहीं पाती। डॉक्टरों ने सारी जाँचें कर लीं और कहते हैं कि कुछ भी गड़बड़ नहीं है। क्या आपको लगता है कि किसी शत्रु ने कोई जादू-टोना किया हो सकता है?

उत्तर: ठीक है, माता जी, एक काम कीजिए। घर में भागवत का पाठ कीजिए और उसे त्रिकाल संध्या सुनवाइए। माधव नाम से भगवान कृष्ण की पूजा कीजिए, उन्हें तुलसी अर्पित कीजिए, और फिर वही तुलसी उसे दीजिए। जहाँ तक मुझे दिख रहा है, ऐसा लगता है कि कुछ दुष्ट लोगों ने उसके साथ कुछ किया है। उसके लिए यह कीजिए। माधव का नाम जपिए। ये चीज़ें पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार होती हैं; अन्यथा ऐसा जादू हर किसी पर असर नहीं करता। फिर भी, यदि आपमें भक्ति है, तो भगवान की कृपा रहेगी। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 56:30 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1763 गुरुजी, पिछली दो-तीन रातों से मुझे किसी बहुत विचित्र और अलग तरह के पक्षी की आवाज़ सुनाई दे रही है। यह किसी सामान्य पक्षी की आवाज़ नहीं है।

उत्तर: यह केवल आपके साथ नहीं है; यह आवाज़ पूरे संसार में हर जगह सुनाई देगी। यह काल का संकेत है। यह अलग-सी आवाज़ काल का प्रमाण है कि विनाश का समय निकट आ रहा है। आपको यह इसलिए सुनाई दे रही है क्योंकि यह मानवता के लिए संकेत है कि कोई अनिष्ट आने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 58:36 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1764 पंडित जी, नमस्ते। मैं यह पूछना चाहता था कि वर्तमान युद्ध (इज़राइल में) क्यों हो रहा है?

उत्तर: जो युद्ध चल रहा है... यह सभी मुस्लिम देशों के एकीकरण के लिए हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:39 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1765 क्या आपको कोई अंदाज़ा है कि भगवान कल्कि कब अवतार लेंगे?

उत्तर: भगवान कल्कि इतने साधारण नहीं हैं कि मैं आपको उनका पता बता दूँ। वे कोई स्थानीय नेता नहीं हैं। उन्हें जानने के लिए आपके पास भक्ति होनी चाहिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए, और समय के साथ जो भक्त इस धारा में बने रहेंगे, उन्हें भगवान मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:22 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1766 मेरा प्रश्न यह है कि भगवान कल्कि का व्यक्तित्व कैसा होगा? भगवान राम को बहुत शांत माना जाता है, जबकि भगवान कृष्ण को नटखट और कूटनीतिज्ञ के रूप में देखा जाता है। कल्कि का स्वभाव कैसा होगा?

उत्तर: भगवान कृष्ण सबसे अधिक करुणामय थे। उन्होंने सुदामा को राजा बनाया और पांडवों की रक्षा की। वे कूटनीतिज्ञ नहीं थे; उन्होंने वही किया जो उस समय के लिए आवश्यक था। भगवान कल्कि एक साधारण मनुष्य के रूप में आएंगे, और अपनी इच्छा मात्र से वे कुछ भी रच सकते हैं या नष्ट कर सकते हैं। अंतिम दिनों में वे अपना दिव्य रूप धारण करेंगे, घोड़े पर सवार होकर संसार को शुद्ध करने के लिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:49 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1767 बहुत से लोग कहते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल्कि अवतार हैं।

उत्तर: यदि वे कल्कि अवतार होते, तो पूरा संसार उनके चरणों में क्यों नहीं झुकता? यदि वे कल्कि अवतार होते, तो वे परमाणु बम को अपने हाथ में धूल बना सकते थे। वे पृथ्वी को ब्रह्मांडों के पार ले जा सकते थे या सूर्य और चंद्रमा को रोक सकते थे। यदि वे कल्कि अवतार होते, तो उन्हें चुनाव लड़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। ऐसी बातें मत कहो, बेटा।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:04 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1768 पंडित जी, मैं यह पूछना चाहता था कि भगवान गणेश का कलियुग में धूम्रकेतु नाम से अवतार होने वाला था। क्या वह होगा?

उत्तर: हाँ, अवश्य। गणेश और अन्य सभी देवता पहले ही अवतार ले चुके हैं। वे सब मानव शरीर में आ चुके हैं। सभी देवताओं ने अवतार लिया है, और उनकी शक्तियाँ भगवान कल्कि में समाहित हो चुकी हैं। अब कल्कि के पास सभी देवताओं की शक्तियाँ हैं।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:55 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1769 मैं जानना चाहता हूँ कि अयोध्या में जो राम मंदिर बन रहा है, क्या उस पर भविष्य में, विनाश और प्रलय के समय, कोई संकट आएगा?

उत्तर: कोई संकट नहीं आएगा। उसका निर्माण आने वाले सत्य युग का संकेत है। यह मंदिर भक्तों के उद्धार का सबसे बड़ा प्रतीक बनेगा। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि वे प्रलय के समय इसकी रक्षा करें।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:35 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1770 बाबा, मुझे अंधेरे से बहुत डर लगता है। हमने सात रातों के अंधकार के बारे में सुना है, और मुझे उससे डर लगता है। इस डर पर हम कैसे विजय पाएँ? मुझे माँ काली से भी कुछ डर लगता है।

उत्तर: देखो माता जी, सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। भगवान अपने भक्तों को एक विशेष अंजन देंगे जिसे आँखों में लगाने पर वे उस अंधकार को देख ही नहीं पाएँगे। इसलिए इसकी चिंता मत कीजिए। भगवान का नाम जपिए, कीर्तन कीजिए, और भक्ति में रहिए। समय के साथ भगवान सब सँभाल लेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:14 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1771 गुरुजी, मैं 16 तारीख से संध्या शुरू कर रहा हूँ। मेरी नौकरी है, इसलिए सुबह की संध्या तो मैं दीपक जलाकर ठीक से कर सकता हूँ, पर दोपहर और शाम की उसी तरह नहीं कर पाता, और हो सकता है कि मैं ठीक से शुद्ध भी न हूँ। मैं शाम 7 बजे घर पहुँचता हूँ, तो क्या मैं शाम वाली संध्या 8 बजे कर सकता हूँ?

उत्तर: नहीं बेटा, ऐसा करो: बाहर आप जहाँ कहीं भी हों, माँ गंगा का नाम 'श्री गंगे' तीन बार बोलकर मन ही मन अपने शरीर को शुद्ध कर लो। उसके बाद कहीं भी बैठकर संध्या कर सकते हो। दीपक या धूप जलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हें प्रभु की कृपा और त्रिकाल संध्या का पूरा पुण्य प्राप्त होगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 01:06:14 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1772 कहा जाता है कि जब पत्नी पूजा करती है तो उसका फल पति को भी मिलता है। त्रिकाल संध्या के मामले में, क्या हर किसी को अलग-अलग करनी होगी, या मैं अपने पति की ओर से कर सकती हूँ क्योंकि वे व्यस्त रहते हैं?

उत्तर: हाँ माँ, यह सच है कि पति-पत्नी पुण्य कर्मों के फल में भागीदार होते हैं। लेकिन यह व्यक्तिगत साधना का मार्ग है। आपकी त्रिकाल संध्या की साधना से आपके पति की आयु निश्चित रूप से बढ़ेगी, परंतु उन्हें इसका पूरा आध्यात्मिक लाभ स्वयं नहीं मिलेगा। और जहाँ तक उनके व्यस्त होने की बात है, एक समय आ रहा है जब सब लोग घर में बिना किसी काम के बैठे होंगे। तो फिर अभी से यह साधना क्यों न अपना ली जाए? प्रयास करती रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 01:07:24 · 11 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1773 पंडित जी, भगवद्गीता में कर्म योग का उल्लेख है। यदि हम पाप करते हैं और बाद में भक्ति के मार्ग पर आ जाते हैं, तो जब यह शरीर छूटता है और नया शरीर मिलता है, क्या हमारी आध्यात्मिक यात्रा वहीं से आगे बढ़ती है जहाँ हमने छोड़ी थी?

उत्तर: मैं समझ गया। देखिए, पिछले जन्मों का 'प्रारब्ध' (पूर्व कर्मों का फल) आगे चलता है। किसी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति—चाहे धन हो, सुख हो या सफलता—उसके प्रारब्ध के कारण ही है। इस जीवन के कर्म अगले जीवन की भूमि तैयार करते हैं, यद्यपि लगभग 30% फल इसी जीवन में भोगा जाता है। किंतु भक्तों के लिए भगवान इसी जन्म में उनका कर्म-खाता साफ करने में सहायता करते हैं, ताकि कोई शेष न रह जाए। साधारण लोगों के लिए उनका कर्म ही उनका अगला जन्म निर्धारित करता है। इसलिए प्रारब्ध सबसे महत्वपूर्ण है।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:48 · 11 अक्टूबर 2023

सत्र 104 · प्रश्न 1774–1821

L110 - यशवंत दास मालिका में कल्कि जी के जन्म नाभि मंडल, जाजनग्र में होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 13 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1774 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मैं मांसाहार नहीं करती, लेकिन कभी-कभी हम रिश्तेदारों के यहाँ जाते हैं जहाँ मांसाहार बनता है। क्या हम उनके घर का भोजन कर सकते हैं, खासकर तब जब मैं त्रिसंध्या करती हूँ?

उत्तर: देखिए माँ, अन्न पवित्र होता है। यदि वह किसी अन्य चीज़ से मिश्रित नहीं है और अलग से बनाया गया है, तो आप खा सकती हैं। कोई समस्या नहीं है। उनके घर में मांसाहार पकता है तो इससे हमारा क्या लेना-देना? यदि वे आपको शुद्ध शाकाहारी भोजन परोसते हैं, तो क्या दिक्कत है? कोई बात नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 09:44 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1775 मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि मैं किसी नशे का सेवन नहीं करती, पर मेरी माँ तंबाकू खाती हैं। क्या इससे मेरी त्रिसंध्या साधना पर असर पड़ेगा?

उत्तर: कोई समस्या नहीं माँ, सुनिए। हमें अपने बड़ों और गुरुजनों की आदतों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। आप अपना काम कीजिए। यदि समय के साथ आपके माता-पिता बदल जाएँ, तो उसे भगवान की कृपा समझिए। कोई दिक्कत नहीं है। आप अपनी त्रिसंध्या जारी रख सकती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:26 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1776 हमारे किरायेदार मुसलमान हैं और वे मांसाहार करते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि हमारा घर अपवित्र ही रहेगा, जबकि मैं और मेरी बेटी त्रिसंध्या करते हैं? चूँकि वे हमारी इमारत में ऊपर रहते हैं, मैं सोचती हूँ कि यदि मुझे प्रभु की ध्वजा लगानी है तो क्या हमें किरायेदार बदल देने चाहिए।

उत्तर: कोई समस्या नहीं माँ। इससे आपका क्या लेना-देना? वे अपने घर में करते हैं, आप अपने घर में कीजिए। आप पहली मंजिल पर रहती हैं और किरायेदार ऊपर हैं। आप अपनी पहली मंजिल की खिड़की के पास ध्वजा लगा सकती हैं। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 11:23 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1777 मैंने एक सपना देखा जिसमें मैं एक अंधेरी गुफा में एक अनजान व्यक्ति के साथ थी। उसने आग जलाई, और अचानक एक दुर्गा माधव की मूर्ति प्रकट हुई और आरती शुरू हो गई। उसने मुझसे कहा, 'देखो, आरती इस तरह की जाती है।' इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: महापुरुष सच्चिदानंद ने लिखा है, 'गुफा में दिन-रात भजन गाए जा रहे हैं... वहीं प्रभु अपनी लीलाएँ करते हैं।' खंडगिरि पर्वत पर, जहाँ प्रभु का आश्रम है, वहाँ एक बड़ी गुफा है। पंचसखा ने लिखा है कि गुफा के भीतर भजन और कीर्तन हो रहे हैं, और भगवान कल्कि वहीं अपनी गुप्त लीलाएँ करेंगे। यह बड़े आनंद की बात है कि आपको यह दर्शन हुआ। भगवान के प्रति समर्पित रहिए, आपको प्रभु की कृपा प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:19 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1778 मुझे आपसे फोन पर बात करनी थी। क्या हम कल बात कर सकते हैं? मुझे किस समय फोन करना चाहिए?

उत्तर: हाँ, हम आज भी बात कर सकते हैं। इस गूगल मीट के बाद मैं बात कर सकता हूँ। 11 बजे के बाद फोन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 14:35 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1779 पंडित जी, भगवान कल्कि के गुरु कौन होंगे? उन्हें शिक्षा कौन देगा?

उत्तर: भगवान कल्कि के गुरु भगवान परशुराम होंगे। भगवान परशुराम भगवान कल्कि को 64 कलाएँ प्रदान करेंगे। वे शंख, चक्र, गदा और पद्म सहित सभी दिव्य अस्त्र-शस्त्र देंगे। भगवान कल्कि पूछेंगे, 'हे प्रभु, मैं आपको क्या गुरु दक्षिणा दूँ?' परशुराम जी उत्तर देंगे, 'मुझे किसी दक्षिणा की आवश्यकता नहीं है। बस संसार में धर्म का नाश करने वाले असुरों का संहार करो और एक स्वतंत्र, सत्यनिष्ठ समाज की स्थापना करो। इसी से मैं प्रसन्न हो जाऊँगा। वही मेरी दक्षिणा होगी।' जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:39 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1780 जब हम मालिका का संदेश फैलाते हैं, तो बहुत से लोग हमसे पूछते हैं कि चूँकि अंतिम विनाश निकट है, यदि हम अभी त्रिसंध्या शुरू करें तो क्या हम बच जाएँगे? समय तो बहुत कम बचा है।

उत्तर: अभी समय है। इसीलिए तो हम ये गूगल मीट करते हैं; अन्यथा इनकी आवश्यकता ही नहीं होती। समय है। जो भक्त इसका अभ्यास करेंगे, वे बच जाएँगे। यह मानवता के लिए सबसे बड़ी संजीवनी बूटी है। यदि लोग इसे स्वीकार कर लें, तो संसार और मानव सभ्यता का कल्याण होगा। कोई समस्या नहीं है। आनंद से कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:42 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1781 बागेश्वर धाम और प्रेमानंद महाराज जी जैसे प्रमुख आध्यात्मिक व्यक्तित्व कभी यह नहीं कहते कि भगवान माधव आ चुके हैं और अंतिम विनाश (प्रलय) आरंभ हो गया है। वे ऐसा क्यों नहीं कहते?

उत्तर: सच्चिदानंद दृढ़ता के साथ और मानव जाति को चेतावनी देते हुए कहते हैं, 'बड़े से बड़े योगी और ऋषि भी भगवान को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते। जब वे ही नहीं समझ सकते, तो इस संसार में कौन जानेगा?' संसार के बीच साधारण मनुष्य के रूप में जन्मे लोग भगवान कल्कि को कैसे पहचानेंगे? अतीत में क्या हुआ और भविष्य में क्या होगा, यह सबको ज्ञात नहीं है। केवल वे ही आएँगे जो द्वापर युग में भगवान कृष्ण के, त्रेता युग में भगवान राम के, और सत्य युग में महाविष्णु के भक्त थे। इन भक्तों के अतिरिक्त और कोई नहीं आएगा। भगवान कल्कि के विषय में रेत के एक कण जितना संकेत समझ पाना भी कठिन होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:33 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1782 मैंने अभी त्रिकाल संध्या के 100 दिन पूरे नहीं किए हैं; अभी केवल दो सप्ताह हुए हैं। क्या मैं इसे जारी रख सकता हूँ?

उत्तर: हाँ बाबा। त्रिकाल संध्या करते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:30 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1783 गुरुजी, जो लोग यह कर सकते हैं, उनके लिए आयु की क्या सीमा है?

उत्तर: आयु का कोई प्रतिबंध नहीं है। बच्चों से लेकर बिस्तर पर पड़े लोगों तक, कोई भी कर सकता है। यह सबके लिए खुला हुआ अमृत है। जो भी इसे पिएगा, उसे आनंद मिलेगा। जो नहीं पिएँगे, उनके साथ क्या होगा, यह समय बताएगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:45 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1784 मैं एक विद्यार्थी हूँ और मुझे अभी-अभी इसके बारे में पता चला है। मैं सुबह और शाम त्रिसंध्या कर सकता हूँ, लेकिन दोपहर में करना मेरे लिए कठिन होगा। क्या कोई उपाय है?

उत्तर: देखिए माँ, दोपहर के समय इसमें केवल तीन मिनट लगेंगे। आपको पूरी त्रिसंध्या नहीं करनी है। बस 'दुर्गा माधव' 12 बार जपिए, 16 नाम... इसमें अधिक से अधिक एक मिनट लगेगा। और भगवान के दस अवतार: मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, श्री बुद्ध और श्री कल्कि। बस इतना कीजिए और माधव नाम का 108 बार जप कीजिए। आप इसे कहीं भी दो-तीन मिनट में कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 22:13 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1785 पंडित जी, जैसा मालिका में कहा गया है, क्या 2024 से सभी स्कूल और कॉलेज बंद हो जाएँगे?

उत्तर: मैंने कभी यह नहीं कहा कि ऐसा कुछ 2024 में होगा। खंड प्रलय हो रहा है और होता रहेगा। 2025 के बाद संसार के लिए एक महान विपत्ति आ रही है। ग्रहों की स्थिति के कारण यह 2025 में भी हो सकता है, जिससे पृथ्वी पर अनेक विनाशकारी घटनाएँ होंगी। यह विनाश 2032-33 तक चलता रहेगा। भगवान एक ओर भक्तों की रक्षा करेंगे और दूसरी ओर असुरों का संहार करेंगे। इसलिए डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपना कर्तव्य कीजिए, धर्म को थामे रखिए, और आनंद के साथ त्रिकाल संध्या कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:24 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1786 हम दिल्ली एनसीआर में रहते हैं और बहुत डरे हुए हैं कि एक बड़ा भूकंप आने वाला है। हमने समाचार में देखा कि यह 28 तारीख के आसपास आ सकता है, और हमें लगता है कि यह इस अक्टूबर के अंत में आएगा। क्या यह सच है?

उत्तर: देखिए माँ, इतना बड़ा भूकंप अभी नहीं आने वाला है। लेकिन भूकंप निश्चित रूप से आएँगे। बड़े भूकंप के लिए अभी समय है। कम से कम 2026-27 के बाद, संसार में एक बड़ा भूकंप आएगा। अभी जो भूकंप आ रहे हैं, वे लगभग 6.0-7.5 तीव्रता के होंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो लोग त्रिकाल संध्या के समय माधव नाम का जप करते हैं, भगवान माधव उनकी रक्षा करेंगे। तो भय क्यों? हम माधव की शरण में हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:22 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1787 मुझे अपने परिवार के लिए डर लगता है क्योंकि केवल मैं ही त्रिसंध्या करता हूँ। मेरे माता-पिता और भाई पूजा करते हैं, पर यह नहीं करते।

उत्तर: कोई बात नहीं। एक-दो बड़ी घटनाओं के बाद, वे भी समय के साथ बदल जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:41 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1788 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मैंने देखा कि लोग गंदे कपड़ों में कीचड़ में संघर्ष कर रहे हैं, जबकि मैं दौड़ते हुए और 'जय श्री' का जप करते हुए आसानी से खड़ी चढ़ाइयाँ चढ़ रहा था। मैंने माँ काली की एक मूर्ति भी देखी जिसके सामने धन और एक कटार रखी थी, और लोग लालच के कारण वहीं रुक गए थे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, माँ काली संहार का कार्य करेंगी। और आपने माधव नाम का प्रभाव देखा। माँ काली भक्तों की रक्षा भी करेंगी; कोई समस्या नहीं है। सारा धन जगदंबा के अधीन चला जाएगा। अभी भी वे संहार में लगी हुई हैं, और भक्त माधव नाम से बच रहे हैं। आप अपने स्वप्न में माधव का नाम जप रहे थे, जिसका अर्थ है कि आप पर माधव की कृपा है। भक्ति में बने रहिए, और आपको भगवान की और अधिक कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 27:00 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1789 मालिका कहती है कि अंत में भारत में केवल 33 करोड़ लोग बचेंगे जो त्रिसंध्या मार्ग का पालन करते हैं। क्या ये 33 करोड़ लोग 33 करोड़ देवी-देवता बनेंगे और सत्य युग के बीज होंगे?

उत्तर: देखिए, सभी देवी-देवताओं ने साधारण मनुष्यों के रूप में मानव शरीर में जन्म लिया है। वही मनुष्य त्रिसंध्या के द्वारा अपने शरीर को शुद्ध करेंगे, और फिर भगवान की योगमाया शक्ति के द्वारा उनमें दिव्यता प्रवेश करेगी। तब वे लोग अमर और अजर हो जाएँगे और सत्य युग के निवासी बनेंगे। यह मालिका में लिखा है। 33 करोड़ देवी-देवता पृथ्वी पर मानव रूप में जन्मे हैं। जो लोग हमसे जुड़ रहे हैं, वे संभवतः वही आत्माएँ हैं। दिव्यता अभी प्रकट नहीं हुई है। शरीर की शुद्धि त्रिकाल संध्या और भागवत पढ़ने से होगी। भगवान कल्कि की कृपा से वे दिव्य बन जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:43 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1790 इस कलियुग में देवी राधा रानी की क्या भूमिका होगी? क्या वे कोई संहारक लीला करेंगी, या भगवान के साथ उनकी कोई और भूमिका होगी?

उत्तर: देखिए, राधा रानी महालक्ष्मी हैं; कोई भेद नहीं है। नाम अलग-अलग हैं, और वे युग के अनुसार अलग-अलग रूपों में आती हैं। वे स्वयं योगमाया हैं। वे भक्तों की रक्षा के लिए भगवान के कार्य में अवश्य सहयोग करेंगी। नाम भिन्न होगा; इस बार वे माँ महालक्ष्मी होंगी। वे भगवान के साथ रहेंगी, भक्तों की रक्षा करेंगी, और सारे संसार को सुखी करेंगी। माँ महालक्ष्मी के प्राकट्य और भगवान के साथ उनकी उपस्थिति से, संसार आनंदमय और प्रसन्न हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:47 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1791 कुछ लोग भविष्य मालिका के अनुसार कह रहे हैं कि नवंबर 2024 में एक भयंकर महामारी आने वाली है। क्या ऐसा होगा?

उत्तर: देखिए, मालिका में इसके लिए कोई विशेष वर्ष नहीं बताया गया है। एक सीमित समयावधि दी गई है। मालिका में जगन्नाथ मंदिर से जुड़े संकेतों, प्रकृति में परिवर्तनों और तीसरे विश्वयुद्ध के बाद संसार में आने वाले महान परिवर्तन का उल्लेख है। जो लोग निश्चित तिथियाँ बताते हैं, वे अपने चैनल की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं। सब कुछ भगवान पर निर्भर है। किसी मनुष्य के कह देने भर से कुछ नहीं होगा। इसीलिए हम कोई तिथि नहीं देते। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:54 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1792 मुझे संध्या धारा का विवरण कहाँ से मिलेगा?

उत्तर: यह फोन नंबर जो स्क्रीन पर दिख रहा है, आप इस नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। वे आपको त्रि संध्या धारा की पीडीएफ दे देंगे। आप त्रिसंध्या का अभ्यास कीजिए और फिर मुझे बताइए कि क्या होता है। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 33:33 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1793 कुछ महीने पहले, अपराधों की खबरें देखकर मुझे बहुत क्रोध आता था और लगता था कि धर्म की स्थापना का कार्य मुझे अपने हाथ में ले लेना चाहिए। ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? करते रहिए। आने वाले समय में जो निर्णय लेना होगा, वह प्रभु लेंगे। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 34:00 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1794 जब भगवान विष्णु अवतार लेते हैं, तो शेषनाग और माता लक्ष्मी भी उनके साथ अवतरित होते हैं। इस बार जब प्रभु कल्कि रूप में आएंगे, तो शेषनाग और माता लक्ष्मी का नाम और रूप क्या होगा?

उत्तर: इस बार शेषनाग भगवान कल्कि के दाहिनी ओर होंगे, और भगवान कृष्ण (महाविष्णु) उनके बाईं ओर होंगे। माता वैष्णो देवी महालक्ष्मी के रूप में भगवान कल्कि से विवाह करेंगी, और भगवान ब्रह्मा खंडगिरि आश्रम में यह विवाह संपन्न कराएंगे। शेषनाग प्रभु के दाहिने कंधे पर और भगवान कृष्ण उनके बाएं कंधे पर होंगे। महापुरुष अच्युतानंद ने यह बार-बार लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:57 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1795 सीता-राम या राधे-श्याम की तरह, भगवान कल्कि अपनी संगिनी के साथ किस नाम से जाने जाएंगे?

उत्तर: इस बार भगवान कल्कि 'कल्कि राम' होंगे। उनका विवाह माता महालक्ष्मी से होगा, किंतु भक्त उन्हें 'कल्कि राम' नाम से ही पूजेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:44 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1796 माता महालक्ष्मी ने कहाँ जन्म लिया है? हमें माधव महाप्रभु के बारे में तो पता है, पर माता लक्ष्मी के बारे में नहीं।

उत्तर: माता महालक्ष्मी का जन्म जगन्नाथ क्षेत्र में होगा। महान पंचसखा ग्रंथों में यह वर्णित है, यद्यपि अधिक विस्तार से नहीं, कि माता महालक्ष्मी जगन्नाथ क्षेत्र में जन्म लेंगी।

► यह उत्तर सुनें · 38:25 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1797 आप माधव महाप्रभु को जानते हैं, तो क्या आप घर में पूजा के लिए उनके चरणों का फोटो दे सकते हैं?

उत्तर: कोई समस्या नहीं, इस विषय में मुझसे निजी तौर पर बात कीजिए। अपना नाम बताइए, हमने ऑनलाइन बात की थी। हम आगे बात कर सकते हैं। धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:54 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1798 मैं भागवत पढ़ रहा था और मैंने देखा कि द्वापर युग के अंत में जिन अपशकुनों का वर्णन है, वे अब घटित हो रहे हैं। क्या इसका कोई महत्व है?

उत्तर: देखिए बाबा, यह ब्रह्मांडीय परिवर्तन का समय है, युगों के बीच का संधिकाल (युग संधि)। ऐसे समय में अनेक अपशकुन प्रकट होते हैं। भक्त इसे समझते हैं, परंतु आसुरी प्रवृत्ति के लोग नहीं समझते। यह सब होना ही है। हम तो बस मानवता का कल्याण चाहते हैं। यह ग्रंथ मानवता और भक्तों को बचाने के लिए ही लिखा गया था। इसलिए आइए, हम सब मिलकर कार्य करें। आनंद होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:35 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1799 यदि किसी परिवार का केवल एक ही सदस्य सत्य युग में जाता है, तो क्या उसके माता-पिता और पूर्वजों की मुक्ति नहीं होगी? कहा जाता है कि जिसे प्रभु के दर्शन होते हैं, वह 21 पीढ़ियों का उद्धार कर देता है।

उत्तर: जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, उस परिवार की 21 पीढ़ियों तक मुक्ति प्राप्त होती है। यह शास्त्रों में लिखा है। इसीलिए हम त्रिकाल संध्या को महत्व देते हैं। उनकी मुक्ति अवश्य होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:44 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1800 सत्य युग में जाने वाले लोगों की संख्या कितनी होगी? और जब आप 33 'कोटि' कहते हैं, तो क्या इसका अर्थ 33 करोड़ (330 मिलियन) है?

उत्तर: हमारी गणना के अनुसार, 33 करोड़ देवी-देवता होंगे, और 33 करोड़ मनुष्य भी होंगे। हाँ, 33 कोटि का अर्थ 33 करोड़ ही है।

► यह उत्तर सुनें · 42:30 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1801 सत्य युग कब शुरू होगा?

उत्तर: सत्य युग तो शुरू हो चुका है। रात में कोयल का गाना, पेड़ों का बेमौसम फल देना, और लोगों में भक्ति का जागना — ये सब इसके संकेत हैं। सत्य युग आरंभ हो चुका है, परंतु अभी उसका प्रभाव एक से दो प्रतिशत है। यह प्रभाव बढ़ता जाएगा, और कलियुग का प्रभाव घटता जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:03 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1802 मेरे पास श्रीमद् भागवत पुराण की छपी हुई प्रति नहीं है, इसलिए मैं उसे मोबाइल पर पढ़ता हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: बिल्कुल। कीजिए बाबा, यह तो बहुत आनंददायक है। अवश्य कीजिए। जय जगन्नाथ। बड़े आनंद के साथ कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 43:40 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1803 भागवत को संस्कृत में पढ़ना अधिक प्रभावी होगा, या हिंदी में पढ़ना भी उतना ही प्रभावी है?

उत्तर: किसी भी भाषा में पढ़ें — संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिंदी, कन्नड़, तमिल, गुजराती, मराठी, पंजाबी, राजस्थानी — सार वही मिलेगा, फल वही मिलेगा, और धर्म भी वही मिलेगा। जिस भाषा में आपको अच्छा लगे, उसी में पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 44:13 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1804 त्रिसंध्या में अधिकतम कितना समय लगना चाहिए?

उत्तर: त्रिसंध्या में तीनों समय मिलाकर कम से कम 30 मिनट लगेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 44:41 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1805 युद्ध और बाकी सब जो हो रहा है, इस वर्तमान स्थिति में भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: देखिए माँ, सबसे पहले तो भारत में अन्न और फलों के दाम बढ़ेंगे। बहुत सी समस्याएँ आ रही हैं। युद्ध के कारण जलवायु में भी बहुत परिवर्तन होगा। भारत में भी इसका प्रभाव पड़ेगा। लेकिन भगवान इस देश में हैं न? भगवान बहुत रक्षा करेंगे। जो भक्त इस मार्ग से जुड़ेंगे, उन पर भगवान की कृपा रहेगी, और वे उन्हें नए युग में ले जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:01 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1806 इज़राइल का युद्ध किस दिशा में जा रहा है? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: इज़राइल का युद्ध इसलिए हो रहा है क्योंकि इससे सभी मुस्लिम देशों के एकीकरण का समीकरण बनेगा। और इसी के माध्यम से यह भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले विश्व युद्ध का कारण बनेगा।

► यह उत्तर सुनें · 46:46 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1807 हमारे बच्चे उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते हैं। वर्तमान परिस्थिति में क्या उनके लिए भारत में पढ़ना बेहतर रहेगा?

उत्तर: मेरी राय में, आज भारत एक महाशक्ति है। विदेश में पढ़ने या भारत में पढ़ने में कोई अंतर नहीं है। लेकिन इस समय सामाजिक और वैश्विक माहौल ठीक नहीं है। देश में किसी अच्छे संस्थान में पढ़ने से भी अच्छे परिणाम मिलेंगे। यहाँ वे अधिक शांति में रहेंगे। उस माहौल में जाकर दो-चार साल पढ़कर फिर लौट आने से क्या लाभ? वह तो समस्या ही बनेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 47:27 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1808 कभी-कभी मेरी कक्षाएँ दोपहर 12 से 1 बजे के बीच होती हैं। क्या मैं पूरी त्रिसंध्या सुबह 11:30 से 12 बजे के बीच कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, यदि आपको 11 से 12 के बीच समय मिलता है, तो उसी समय कर लीजिए। धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:39 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1809 मैं वही हूँ जिसने कल बिहार से पक्षी की आवाज़ के बारे में फोन किया था। आज एक बड़ी ट्रेन दुर्घटना हो गई। वह काल की ही आवाज़ थी न?

उत्तर: सुनिए, जो आवाज़ आती है वह पक्षी की नहीं है; वह काल है, महाकाल है। वह विकृत स्वर में लोगों को चेतावनी देता है कि 'मैं आ गया हूँ।' परंतु उसे केवल भक्त ही सुन सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 49:14 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1810 क्या इसका अर्थ यह है कि दूसरे लोग उसे नहीं सुन सकते?

उत्तर: आप सुन सकते हैं, यह अच्छी बात है। आप माधव के भक्त हैं, इसीलिए आप सुन सकते हैं। आसुरी प्रवृत्ति के लोग क्या सुनेंगे? उनकी तो मृत्यु वैसे भी निश्चित है।

► यह उत्तर सुनें · 50:00 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1811 क्या इसका अर्थ यह है कि विश्वयुद्ध के दौरान इज़राइल पूरी तरह नष्ट हो जाएगा?

उत्तर: नहीं, इज़राइल नष्ट नहीं होगा। इस विषय पर बात करना एक कूटनीतिक मामला है और सरकारी रहस्य है। लेकिन इतना जान लीजिए: इस युद्ध में इज़राइल नष्ट नहीं होगा। यह सब 13 मुस्लिम देशों के एकजुट होने के लिए हो रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 51:46 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1812 क्या इज़राइल भारत का साथ देगा या नहीं?

उत्तर: मैं यह पहले भी कह चुका हूँ: चाहकर भी वह भारत की मदद नहीं कर पाएगा, क्योंकि अमेरिका इसमें बाधा खड़ी करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 52:20 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1813 अब नवरात्रि शुरू हो रही है, तो क्या हम दुर्गा सप्तशती का पाठ कर सकते हैं?

उत्तर: बिल्कुल कीजिए। अगर माँ दुर्गा देवी प्रसन्न हो गईं, तो वे आपकी रक्षा करेंगी, क्योंकि संहार का सारा कार्य माँ दुर्गा देवी ही करेंगी। आनंद और प्रसन्नता के साथ कीजिए, माताजी।

► यह उत्तर सुनें · 53:01 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1814 मैं हर साल दुर्गा सप्तशती का पाठ करती हूँ और व्रत भी रखती हूँ। मैंने त्रिकाल संध्या शुरू कर दी है। इसके साथ-साथ क्या मैं दुर्गा सप्तशती का पाठ और व्रत जारी रख सकती हूँ?

उत्तर: मेरी राय में, उपवास करना आवश्यक नहीं है। कुछ आहार लीजिए, जैसे फल, और अपना काम भी कीजिए। उपवास मेरे नियमों में नहीं है, क्योंकि इस कलियुग में मनुष्य में उपवास करने जितनी शक्ति नहीं है। इसलिए उपवास से दूर रहना ही बेहतर है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:29 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1815 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें भगवान कृष्ण बैठे थे और मैं उन्हें रक्षा सूत्र बाँध रही थी। यह किस बात का संकेत है?

उत्तर: द्वापर युग में कभी आपके मन में भगवान कृष्ण को अपना भाई बनाने की इच्छा रही होगी। भगवान ने आपकी वह इच्छा पूरी कर दी। आपने स्वप्न में बाँध दिया, तो वह कार्य पूर्ण हो गया। भगवान ने आपके स्वप्न में वह इच्छा पूरी कर दी।

► यह उत्तर सुनें · 54:18 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1816 मैं अपना अनुभव साझा करना चाहती थी। जब से मैंने त्रिसंध्या शुरू की है, पूजा के समय मेरे दीपक की लौ हर दिन अलग-अलग आकार बनाती है—चंद्रमा, कमल, गुलाब या तितली। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माताजी, आपकी भक्ति ऐसी है कि भगवान उसमें निश्चित रूप से प्रकट होते हैं। यह केवल एक भक्त ही जानता है। यह बहुत अच्छा है। जो समय आपने स्वप्नों में देखा था, वह आ रहा है, और उससे पहले भगवान ने आपको जोड़ लिया, क्योंकि आप वही भक्त थीं और यह भगवान की इच्छा थी। अब आगे बढ़िए, भगवान के कार्य में लगिए, उनका नाम जपती रहिए, और भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 57:55 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1817 मैंने स्वप्न में दो बड़े साँप देखे, एक काला और एक सफेद। मैंने बिना डरे काले साँप का सिर कुचल दिया। सफेद साँप शांति से बैठा था, उसके सिर पर एक काला निशान था, और उससे भी मुझे डर नहीं लगा। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माताजी, काला साँप काल था। आपने काल का नाश कर दिया। इसका अर्थ है कि आपके धर्म, भक्ति और त्रिकाल संध्या के द्वारा, अथवा माधव की कृपा से, नकारात्मक शक्तियों का नाश होगा। सफेद साँप आप पर भगवान की कृपा है; भगवान आपका ध्यान रख रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 59:59 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1818 जब मैं माला पर जप कर रहा होता हूँ और किसी कारण से वह बीच में रुक जाता है, तो बाद में जप फिर से शुरू करने में कोई समस्या है क्या?

उत्तर: कोई समस्या नहीं। क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? माधव नाम का निरंतर जप कीजिए। जो भी हो, सब ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:07 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1819 जब मैं त्रिसंध्या शुरू करूँ, तो एक बार में कितनी देर तक करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, दुर्गा माधव स्तुति, 16 नाम, 10 अवतार और 108 बार माधव नाम—इसमें लगभग 10-15 मिनट लगेंगे। तीन संध्याएँ हैं: प्रातः, दोपहर और सायं। तीनों करने से कुल की सात पीढ़ियों को मुक्ति मिलती है और सीधे वैकुंठ में प्रवेश मिलता है। जो भी करेगा, उसे यह अवश्य प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:21 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1820 क्या मैं इसे अपनी दुकान पर बैठे-बैठे कर सकता हूँ?

उत्तर: कहीं भी। बस में, कार में, सड़क पर, यात्रा करते हुए, आप कर सकते हैं। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:02 · 13 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1821 इस त्रिकाल संध्या की PDF मुझे कहाँ से मिलेगी?

उत्तर: स्क्रीन पर जो नंबर दिख रहा है, हमारा नंबर, उस पर संपर्क कीजिए। वे आपको भेज देंगे और समझा भी देंगे, ठीक वैसे ही जैसे मैं समझाता हूँ। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:10 · 13 अक्टूबर 2023

सत्र 105 · प्रश्न 1822–1847

L111 - मालिका में एवं तत्त्वबोधिनी में कल्कि जी के जन्मस्थान का प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 14 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1822 आज सुबह मैंने एक सपना देखा। मैंने बाज़ार में एक विधवा को देखा, थोड़ी देर उसके पास बैठा, और फिर पीले वस्त्रों में एक सुंदर साधु को पीले सिंह के साथ देखा। वह साधु 'देवेश' या 'देवेंद्र' जैसा कोई नाम कह रहे थे। मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ कि इसका क्या अर्थ है।

उत्तर: यह बहुत अच्छा सपना है। आपने जो विधवा देखी, वह उन अनेक स्त्रियों का प्रतीक है जो विधवा होने वाली हैं, क्योंकि संसार में एक महायुद्ध आने वाला है। और आपने जो साधु देखा, वे स्वयं भगवान शंकर हैं। देवेश का अर्थ है देवों के देव, जो भगवान शंकर महादेव हैं, संहारकर्ता। उनके दर्शन का अर्थ है कि वे संहार के कार्य में लगे हुए हैं। इसका मतलब है कि एक महान विश्वयुद्ध होने वाला है, जिससे अनेक माताएँ विधवा हो जाएँगी। यूक्रेन को देखिए, कितनी ही स्त्रियाँ विधवा हो गईं। अब यही सीरिया में हो रहा है, और और भी युद्ध के मोर्चे खुलने वाले हैं। यही संसार में होने वाला है। यह विनाशकारी और प्रलयकारी समय का दर्शन है, और भगवान शंकर के दर्शन का अर्थ है कि संहार के समय संहारकर्ता अपने कार्य में लगे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 09:26 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1823 मुझे अकेले रहने में बहुत डर लगता है। मुझे लगता है जैसे कोई मुझे मारने आ रहा है। पहले मुझे सपने आते थे कि कोई मुझे धक्का दे रहा है। अब वह तो नहीं दिखता, पर जब मैं सोती हूँ तो लगता है कोई मुझे मारने आ रहा है।

उत्तर: आपको यह बताने में मुझे संकोच हो रहा है क्योंकि इससे आप डर सकती हैं। एक अदृश्य शक्ति, आपके गाँव की या आसपास की कोई स्त्री जिसका देहांत हो चुका है, आपको परेशान कर रही है। उसकी मृत्यु ऊँचाई से गिरने से हुई थी, शायद किसी दुर्घटना में। जब आपने त्रिकाल संध्या शुरू नहीं की थी, तब वह आपके सपनों में अधिक बार आती थी, पर अब यह कम हो गया है। एक काम कीजिए: सोने से पहले अभय नरसिंह मंत्र, 'तव कर कमल वरे नखम् अद्भुत शृंगं दलित हिरण्यकशिपु तनु भृंगं केशव धृत नरहरि रूप,' कम से कम 21 बार जपिए। यह जप कर सो जाइए, फिर वह नहीं आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 12:41 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1824 मेरी एक चचेरी बहन थी। वह मुझसे छोटी थी पर रिश्ते में बड़ी थी। उसका कम उम्र में ही देहांत हो गया; वह दूध में गिरकर मरी थी।

उत्तर: हाँ, इसीलिए मैं सीधे कहना नहीं चाहता था। मैंने पहले आपसे पूछा क्योंकि ऐसी बातें कहने में मुझे अच्छा नहीं लगता। बस इतना जान लीजिए: लोग आते हैं और जाते हैं। हमारा असली परिवार तो माधव का परिवार है। हम भगवान से आए हैं और भगवान के पास ही लौटेंगे, इसलिए दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। एक काम कीजिए: उसे मुक्ति नहीं मिली है और वह भटक रही है। किसी पवित्र स्थान पर, जैसे हरिद्वार में, गंगा के तट पर, या किसी अच्छे तीर्थस्थल पर उसका श्राद्ध करवा दीजिए। ऐसा करने से उसे मुक्ति मिल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 14:17 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1825 मेरे परिवार में कोई भी त्रिकाल संध्या करने को तैयार नहीं है। वे वृंदावन के किसी बाबा का वीडियो देखते हैं जिन्होंने कहा है कि कुछ बड़ा नहीं होगा, 2026 में बस कुछ छोटी-मोटी घटनाएँ होंगी, और उससे ज़्यादा कुछ नहीं।

उत्तर: सुनिए, चाहे श्री वृंदावन हो, बद्रीनाथ हो, या जगन्नाथ धाम, इस धरती पर कोई भी मनुष्य, यहाँ तक कि कोई देवता भी मालिका के वचन को बदल नहीं सकता, क्योंकि यह भगवान विष्णु का वचन है। बहुत लोग बहुत कुछ कहेंगे, मानव सभ्यता को भ्रमित करके विनाश की ओर ले जाएँगे। मानवता विनाश की ओर बढ़ रही है, और फिर भी वे ऐसी बातें कहते हैं। बस देखते जाइए कि आने वाले समय में क्या होता है। आप त्रिकाल संध्या करते रहिए, माधव की कृपा आप पर बनी रहेगी। दूसरे जो कहते हैं, उसमें मत उलझिए।

► यह उत्तर सुनें · 15:31 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1826 गुरुदेव, मैंने अभी-अभी आपको सुनना शुरू किया है। मैं त्रिकाल संध्या कैसे करूँ? और आने वाले समय में हम अपनी रक्षा कैसे करें? क्या अन्न की कमी होने वाली है? भगवान का नाम जपने के अलावा, हम भगवान के भक्तों को और क्या करना चाहिए?

उत्तर: युग के अनुसार नाम, स्तुति और मंत्र अलग-अलग होते हैं। कलियुग में जो नाम और कीर्तन किया जा रहा था, उसे करने में कोई आपत्ति नहीं है; आप वह भी कर सकते हैं। पर सत्ययुग के मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक है। त्रिकाल संध्या के लिए आपको 16 नाम, दशावतार स्तुति, दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करना है, श्रीमद्भागवत पढ़ना है, और माधव का नाम जपना है। हमारे विवरण (डिस्क्रिप्शन) में दिए गए नंबर पर संपर्क कीजिए; वे आपको त्रिकाल संध्या की सारी सामग्री भेज देंगे। उसे पढ़िए और त्रिकाल संध्या कीजिए। किसी घर में त्रिकाल संध्या करने से सात पीढ़ियों तक मुक्ति मिलती है, और जो करता है उसे वैकुंठ (भगवान का धाम) प्राप्त होता है। सत्ययुग में प्रवेश करने के लिए, यदि हमारे पास धर्म, कर्म, पवित्रता, भक्ति और भगवान कल्कि पर विश्वास है, तो भगवान की कृपा से हम जाएँगे। इसके अलावा इस समय कोई और तत्व नहीं है जिसे मानव समाज को स्वीकार करना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल; कल नहीं तो परसों।

► यह उत्तर सुनें · 17:24 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1827 मैं पूछना चाहती हूँ, जिन लोगों ने परिवार में आत्महत्या जैसा कृत्य किया है, क्या उन्हें भी त्रिकाल संध्या से मुक्ति मिलती है?

उत्तर: सुनिए माता जी, कोई व्यक्ति एक दिन के कर्म से नीच योनि में, जैसे भूत-प्रेत योनि में, नहीं पहुँचता। यह स्थिति कई वर्षों के कर्म से प्राप्त होती है। कोई भी अपनी इच्छा से आत्महत्या नहीं करता; व्यक्ति इस जन्म में अपने पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार आत्महत्या करता है। लोगों के कर्म उनके प्रारब्ध से निर्धारित होते हैं। फिर भी, एक दिन भी त्रिकाल संध्या करने से उन पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। यदि वे कष्ट में थे, तो इसे सुनने से उनका धर्म बढ़ेगा। लंबे समय तक सुनने के बाद, उन्हें मुक्ति मिल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:32 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1828 मैंने आपको बताया था कि मैं दूसरों पर निर्भर हूँ, और मेरे परिवार के साथ 40 वर्षों से काला जादू और ऐसी चीज़ें हो रही हैं। मेरे एक भाई को तो मुक्ति भी नहीं मिली है। अब मैं आपकी शरण में हूँ। मैं यहाँ रह नहीं सकती, मैं अत्यंत मानसिक पीड़ा में हूँ। कृपया बताइए क्या करूँ, यह कभी रुकता ही नहीं।

उत्तर: सुनिए माता जी, भक्त जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही अधिक कष्ट झेलना पड़ता है। छोटे भक्त को अधिक कष्ट नहीं होता। भगवान अंत तक परीक्षा लेते हैं, जैसे उन्होंने माता द्रौपदी की परीक्षा ली थी। इसलिए शोक मत कीजिए। माधव की शरण में रहिए। एक दिन सूर्य अवश्य उदय होगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:13 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1829 मेरे भाई के बारे में, जो माया के प्रभाव में है और गलत लोगों पर भरोसा करता है... वह त्रिकाल संध्या के मार्ग पर नहीं है। उसने शुरू करने के लिए हाँ कह दी है और उसे ग्रुप में जोड़ भी दिया गया है, पर अभी शुरू नहीं किया है।

उत्तर: जैसे ही वह जुड़ जाएगा, संसार का कोई भी तंत्र, चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:55 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1830 और गुरुदेव, मेरे बड़े भाई के बारे में जिन्हें मुक्ति नहीं मिली है... मैंने सब कुछ करके देख लिया। उनका श्राद्ध गया में किया गया, और मैंने उनके लिए एकादशी का व्रत भी रखा। वे अब भी परिवार में मौजूद हैं, मेरी बहन के घर पर, और हमेशा रोते रहते हैं। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप सही कह रही हैं, उन्हें मुक्ति नहीं मिली है। कर्मकांड ठीक से नहीं हुए। मैं समझता हूँ कि आप अमेरिका में हैं और पिंडदान करने यहाँ नहीं आ सकतीं। मुझे सोचने दीजिए कि उनकी आत्मा की शांति के लिए क्या किया जा सकता है। मुझे थोड़ा समय दीजिए। फिलहाल, यदि आप सात दिन श्रीमद्भागवत का पाठ करें और प्रार्थना करें, 'हे प्रभु, मेरे भाई को इस स्थिति से मुक्त कीजिए,' तो इससे सहायता मिलेगी। हम किसी के लिए वैकुंठ (सर्वोच्च धाम) की माँग नहीं कर सकते, पर उनकी वर्तमान स्थिति से मुक्ति के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। साथ ही, प्रतिदिन किसी गाय को या किसी भी छोटे जीव को, आपके पास जो भी फल हों, खिलाइए। कोई औपचारिक संकल्प की आवश्यकता नहीं है; आप जहाँ भी हैं वहीं से कीजिए, काम हो जाएगा। यदि हम भगवान की कृपा माँगें, तो वह होती है।

► यह उत्तर सुनें · 22:22 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1831 आपके गुरदासपुर सत्र में आपने बताया था कि घर पर हमारी दैनिक पूजा के दौरान हवन करना चाहिए। कृपया इसकी विधि समझाइए?

उत्तर: यह पंच महायज्ञ है, जो पंचभूत (पाँच तत्व), दश दिक्पाल (दस दिशाओं के देवता), भगवान महाविष्णु और ग्राम देवता को संतुष्ट करने के लिए किया जाता है। आप सारे कठोर नियमों के साथ हवन नहीं कर पाएँगे, इसलिए बस इतना सरलता से कीजिए: गाय के शुद्ध देसी घी और लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों से लगभग 10-15 मिनट तक हवन कीजिए। सबसे पहले भगवान महाविष्णु को आहुति दीजिए, फिर भगवान शंकर को, फिर भगवान ब्रह्मा को, फिर माता पार्वती को, माता महालक्ष्मी को, और उसके बाद ग्राम देवता और पंचभूतों को। जितनी आहुतियाँ दे सकें, दीजिए। भगवान प्रसन्न होंगे। सारी वैदिक विधियों का पालन करना कठिन है, और इस कलियुग में यह आवश्यक भी नहीं है। इतना करने से ही फल मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:31 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1832 किस प्रकार की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए?

उत्तर: आप सागौन की लकड़ी या शीशम की लकड़ी का उपयोग कर सकते हैं। एक और भी है... मुझे उसका हिंदी नाम नहीं पता... साल का वृक्ष, जो बहुत बड़े, मोटे पेड़ होते हैं। खैर, नीम और बेल को छोड़कर आप किसी भी लकड़ी का उपयोग कर सकते हैं। मैं उस दूसरे पेड़ का हिंदी नाम पता करके आपको बता दूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:41 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1833 मेरी बेटी के लिए एक 'शांति' (शांति-अनुष्ठान) बताई गई है। कहते हैं कि उसका जन्म 'तीसरे पद' में हुआ है, जो माता-पिता के लिए 'दोष' माना जाता है। क्या यह सच है?

उत्तर: मेरी बात सुनिए, बेटा। बेटी, गाय और भूमि सौभाग्य से ही प्राप्त होती हैं। जब मेरा जन्म हुआ, तो एक ज्योतिषी ने मेरे माता-पिता से कहा था कि मैं अपनी माँ की मृत्यु का कारण बनूँगा और वे कम उम्र में ही चल बसेंगी। लेकिन मेरी माँ 77 वर्ष तक भली-भाँति जीवित रहीं और उन्हें उत्तम गति प्राप्त हुई। ऐसा कोई 'दोष' नहीं होता। क्या आपकी पत्नी, बच्ची की माँ, भागवत पढ़ती हैं और त्रिकाल संध्या करती हैं? उनसे कहिए कि श्रीमद्भागवत पढ़ें और त्रिकाल संध्या करें। कोई समस्या नहीं होगी। आनंद से रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 28:15 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1834 गुरुजी, मुझे बहुत डर लगता है। मैं जहाँ भी जाता हूँ, मुझे लगता है कि कोई मेरे साथ है, मुझे देख रहा है। मैं अकेला नहीं रह पाता। और जब मैं फोन पर रील्स देखता हूँ, तो भगवान की रील्स से ज्यादा भूत-प्रेतों की रील्स आती हैं।

उत्तर: सुनिए, आपका कोई परिचित युवक, शायद कोई मित्र या आपके गाँव का कोई जान-पहचान वाला, जिसकी अकाल मृत्यु हुई थी, वही यह परेशानी दे रहा है। आप 15 दिनों से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं न? वह चला जाएगा; अब और नहीं आएगा। त्रिकाल संध्या करते रहिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, और सोने से पहले 108 बार माधव नाम का जप कीजिए। जो छाया की तरह आपके पीछे लगी रहती है, वह चली जाएगी। आपको लगता है न कि कोई आपके साथ चलता है, आपके साथ आता है, आपके साथ बैठता है? यह बहुत लोगों के साथ होता है, लेकिन अब जब आप भगवान की शरण में आ गए हैं, तो यह चला जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:31 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1835 और मेरा छोटा बच्चा, जो तीन साल का है, जब मैं उसे प्रार्थना करने को कहता हूँ तो वह भी भगवान से डरता है।

उत्तर: हाँ, अगर घर में कोई प्रेतात्मा की उपस्थिति है, तो उसका असर बच्चों पर भी पड़ता है। तो उसे भी माधव का नाम दीजिए। आप 15 दिनों से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। सोने से पहले माधव नाम का जप कीजिए और सीधे भगवान से कहिए, 'प्रभु, कृपया इसे मुझसे हटा दीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 33:04 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1836 आपने गोपी गीत का उल्लेख किया था। क्या हम इसे अपने पितृ कुल और ससुराल कुल, दोनों के पूर्वजों के लिए सात दिनों तक पाठ कर सकते हैं, इस भाव से कि कोई भी आत्मा जो किसी योनि से मुक्त न हुई हो, उसे मुक्ति मिले?

उत्तर: हाँ, भागवत कथा... नहीं, गोपी गीत, आपके मायके और ससुराल दोनों पक्षों के लिए? हाँ, बिल्कुल, आप कर सकती हैं। कोई समस्या नहीं है। यह करना बहुत ही आनंददायक बात है।

► यह उत्तर सुनें · 33:49 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1837 मैं लगभग सवा महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। पहले ऐसा नहीं लगता था, लेकिन अब मुझे अपनी ही छाया से एक तरह का डर लगता है। अगर मैं अपने हाथ या पैर की छाया देखता हूँ, तो एक पल के लिए चौंक जाता हूँ, फिर समझ आता है कि यह तो मेरी ही छाया है। पहले कभी ऐसा नहीं होता था।

उत्तर: क्या आप नियमित रूप से त्रिकाल संध्या करते हैं? दोपहर की संध्या भी अवश्य कीजिए। केवल ऑडियो सुनना पर्याप्त नहीं है। क्या आप भागवत पढ़ते हैं? आप भगवद्गीता पढ़ते हैं? देखिए, यही गलती आप सब कर रहे हैं। डेढ़-दो महीने से मैं भगवद्गीता की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं श्रीमद्भागवत महापुराण की बात कर रहा हूँ। रात को सोने से पहले श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़िए, और फिर मुझे बताइए कि क्या होता है।

► यह उत्तर सुनें · 35:03 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1838 मुझे जुलाई में एक स्वप्न आया था जिसमें महाप्रलय था, नदी की बहुत ऊँची लहरें थीं और इतना तेज प्रकाश था कि मेरी आँखें उसे देख नहीं पा रही थीं। मुझे ऐसे स्वप्न कई बार आ चुके हैं। दूसरी बात, मुझे बार-बार एक छोटा बच्चा दिखाई देता है। पहले मुझे लगा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं स्कूल में शिक्षिका थी, लेकिन फिर वही बच्चा दोबारा आया और बोला, 'मैं भगवान हूँ।' कृपया मार्गदर्शन कीजिए कि इसका क्या अर्थ है।

उत्तर: सुनिए, माताजी, अगर भगवान स्वप्न में आकर अपना दर्शन देते हैं, तो समझिए कि भगवान की कृपा से वे आपको बाल रूप में अपना दर्शन दे रहे हैं। और जो प्रलय आपने देखा, वह संकेत करता है कि भविष्य में भीषण बाढ़ें आने वाली हैं। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उन्हें स्वप्न में ऐसे दर्शन दिखाते हैं। वे उन्हें दर्शन देते हैं। यह आनंद की बात है कि वे आपको अपना दर्शन दे रहे हैं और जो होने वाला है वह दिखा रहे हैं। यह बहुत अच्छा है; यह उन्हीं के साथ होता है जो त्रिकाल संध्या करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:02 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1839 जब मैं भागवत पुराण पढ़ती हूँ, तो कथाएँ याद रहती हैं, लेकिन पात्र याद नहीं रहते, जैसे ऋषि-मुनि, उनका विवाह किससे हुआ, या उनकी संतानें कौन थीं। मैं उलझ जाती हूँ।

उत्तर: सुनिए, माताजी, भागवत का एक दूसरा नाम 'श्रुति' है, अर्थात यह वेदों से उत्पन्न हुई है। आप श्रीमद्भागवत की सारी बातें एक ही दिन में याद नहीं रख पाएँगी। आपको याद रहे या न रहे, समझ आए या न आए, फिर भी आपको पूरा फल मिलेगा। बस पढ़ती रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 39:40 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1840 मैं एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ। जब मैं त्रिकाल संध्या पूरी करती हूँ, तो अक्सर मुझे अपने गेट पर एक स्लेटी रंग की बिल्ली मिलती है। वह शांति से बैठकर देखती रहती है, और जब मैं बाहर आती हूँ तो भाग जाती है। और आज ही रात, एक काला कुत्ता मेरे घर के ठीक सामने आया, अपने अगले पंजे आगे करके सिर झुकाया, और फिर चला गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: ये देवी-देवता हैं। जो भक्त भगवान की शरण में हैं, उन्हें देखने के लिए वे अलग-अलग रूपों में आते हैं। पहले आपको लगा होगा कि यह रोज़ क्यों हो रहा है, लेकिन अब यह सामान्य नहीं लगता। वे अपने रूप बदलकर आते हैं। ऐसा होता है, माताजी, क्योंकि वर्तमान समय में सभी देवता अपना असली रूप छिपाकर पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। वे भक्तों को देखते हैं और उनके घर जाते हैं। यह चलता रहेगा, और भविष्य में आप उन्हें उनके प्रकट रूप में देखेंगी, और आपको पता चलेगा कि आपके घर कोई देवी आई हैं।

► यह उत्तर सुनें · 40:29 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1841 हमारे परिवार में लोग कहते हैं कि 'पितृ दोष' है। यह क्या होता है? जैसे, हमारे बड़े परिवार में दो-तीन शादियाँ टूट चुकी हैं, और कुछ लोग कहते हैं कि यह किसी पुराने पितृ दोष की वजह से है। कृपया समझाइए?

उत्तर: आपके पति के दादाजी (उनके पिता के पिता) का देहांत कैसे हुआ था? क्या वृद्धावस्था में किसी बीमारी से हुआ था? उनकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिली है; यही दिखाई दे रहा है। आपके पति के दादाजी की आत्मा मुक्त नहीं हुई है। इसका समाधान करने के लिए घर पर सात दिन का श्रीमद्भागवत का पाठ कराइए। पूरा पाठ पूर्ण कीजिए और उन्हें सुनाइए। वे चले जाएँगे और मुक्ति पा लेंगे। समस्या उनके पिता के पिता को लेकर है। उन्हीं के नाम से भागवत कथा कराइए। सात दिन तक कीजिए, और साथ ही अपनी सात पीढ़ियों तक के सभी पूर्वजों के लिए प्रार्थना कीजिए। परिवार के सभी सदस्य साथ बैठकर पूरी भागवत पूर्ण कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 42:57 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1842 मुझे पहाड़ों में एक गुफा का सपना आया, जहाँ कोई सो रहा है और आने वाले समय में जागने वाला है। कृपया बताइए कि यह क्या था।

उत्तर: अश्वत्थामा इस समय एक गुफा में तपस्या की अवस्था में हैं। युद्ध के समय वे भगवान कल्कि की शरण में आ जाएँगे। अश्वत्थामा एक मनुष्य हैं, महाभारत युद्ध के द्रोणाचार्य के पुत्र। उन्हें श्राप मिला था और वे कलियुग में मुक्ति प्राप्त करेंगे। यह सत्य है कि उनका समय आ रहा है। जब समय आएगा, तब वे जागेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 45:06 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1843 अपने वीडियो में आपने कहा था कि 'मृत्यु तीन बार अपना नाम बोलेगी,' और वह दो बार बोल चुकी है। क्या वर्तमान युद्ध ही तीसरी बार है जब मृत्यु अपना नाम बोल रही है, या यह भविष्य में होगा?

उत्तर: नहीं, भविष्य में इससे कहीं बड़ा युद्ध होगा। एक विशाल तृतीय विश्व युद्ध होने वाला है।

► यह उत्तर सुनें · 46:22 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1844 मैंने सुना है कि एक-दो साल में सभी वैज्ञानिक यंत्र काम करना बंद कर देंगे। अगर ऐसा हुआ, तो हम आपसे संपर्क कैसे करेंगे?

उत्तर: ऐसा एक-दो साल में नहीं होने वाला। लोग किताबें पढ़कर अपनी TRP (दर्शक संख्या) बढ़ाने के लिए ऐसी बातें कहते हैं। इतने कम समय में ऐसा नहीं होने वाला।

► यह उत्तर सुनें · 46:48 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1845 मेरे घर रोज़ एक कौआ आता है। क्या इसका कोई अर्थ है? यह एक महीने से भी अधिक समय से हो रहा है। हम उसे रोटी देते हैं, और वह खाता है। अगर हम भूल जाएँ, तो वह अंदर आकर काँव-काँव करता है। वह मेरे हाथ से भी रोटी ले लेता है।

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करती हैं? आपके जीवन में जो नकारात्मक ग्रह प्रभाव हैं, राहु और केतु का 'दोष' है, वह दूर हो रहा है। कौए को खिलाने से राहु और केतु से उत्पन्न कष्ट कम होते हैं। भगवान माधव अपनी कृपा से कौए को आपके पास भेज रहे हैं। उसे खिलाने से आपके लिए शुभ होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:44 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1846 मेरे बच्चे ने मुझसे आपसे यह पूछने को कहा है: जैसे भगवान के पास घोड़ा है, क्या उनके साथ तोता भी होगा?

उत्तर: जब भगवान आएँगे, तब अनेक पक्षी और पशु उनके साथ होंगे और उनका सान्निध्य पाकर आनंदित होंगे। सत्ययुग में सभी जीव बोल सकेंगे, इसलिए वातावरण स्वतंत्र होगा। यह आवश्यक नहीं कि भगवान किसी विशेष जीव को अपने पास रखें। भगवान कल्कि जो चाहें कर सकते हैं, यहाँ तक कि अपने घर से ही, बिना घोड़े की आवश्यकता के। घोड़ा अंत में उनका वाहन बनेगा, जब वे धर्म की स्थापना के लिए कल्कि अवतार धारण करेंगे। लेकिन भगवान के साथ कौन होगा, यह निश्चित नहीं है, क्योंकि जब युग बदलेगा, तब सभी जीव, बाघ और सिंह सहित, बोल सकेंगे। यह भगवान पर निर्भर है कि वे किसे अपने साथ रखते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:41 · 14 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1847 मैं कल होने वाले ग्रहण के बारे में पूछ रहा था। क्या इसका प्रभाव बिहार में या भारत में कहीं और पड़ेगा?

उत्तर: मैं इस समय वास्तव में प्रवचन के लिए पंजाब में हूँ, लेकिन हाँ, ग्रहण का प्रभाव बिहार में पड़ने की संभावना है। ग्रहण के समय बाहर न निकलने का प्रयास करें। साथ ही, ग्रहण के दौरान भोजन न करें। आपको वह भोजन करना चाहिए जो ग्रहण शुरू होने से तीन घंटे पहले बनाया गया हो।

► यह उत्तर सुनें · 50:58 · 14 अक्टूबर 2023

सत्र 106 · प्रश्न 1848–1873

L113 - सम्बल ग्राम में 10,000 ब्राह्मणों के द्वारा 7 अश्वमेध यज्ञ हुआ था | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 15 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1848 गुरुजी, प्रणाम। कल रात 12 से 1 बजे के बीच मुझे एक सपना आया जिससे मैं बहुत डर गया। पहले मैंने कुछ काला देखा, फिर एक चेहरा देखा। मुझे ठीक से पता नहीं कि वह माँ काली थीं या नहीं। उस समय मुझे नींद में बहुत भारीपन महसूस हुआ, और ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर ऊपर उठ रहा हो। नींद में ही मैं ज़ोर-ज़ोर से 'जय श्री माधव' का जाप करने लगा। यह सपना रात 12 से 1 बजे के बीच आया। उसके बाद जब भी मैं सोने की कोशिश करता, तो झटके से जाग जाता। यह क्या था? मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, भागवत पुराण पढ़ता हूँ, और माधव का नाम जपता हूँ। इतना सब करने के बावजूद मैं समझ नहीं पाया कि वह माँ काली थीं या कुछ और। मैं बहुत उलझन में हूँ। मुझे ऐसा क्यों लगा कि मेरा शरीर भारी हो रहा है और कोई चीज़ मुझे ऊपर खींच रही है?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा सपना देखा। मैंने पहले भी कहा है कि जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं, उनकी परीक्षा माँ काली या जगदम्बा लेंगी। उन्होंने आपकी परीक्षा ली। और यह तथ्य कि आपने सपने में माधव का नाम लिया, यह सिद्ध करता है कि आप परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। क्योंकि अगर आप सपने में यह न कह पाते और कष्ट भोगते, अगर उस क्षण माधव का नाम आपको न सूझता, तो जगदम्बा जान जातीं कि आप माधव के भक्त नहीं हैं। जब आपने माधव का जाप किया, तो वे चली गईं। यह सपने में ली गई परीक्षा है। भविष्य में प्रत्यक्ष परीक्षाएँ होंगी, लेकिन भक्तों की अधिक परीक्षा नहीं ली जाएगी। माँ सबसे पहले भक्तों के घर उनकी सुरक्षा देखने आती हैं। यह आनंद की और अत्यंत सुखद बात है कि आप सपने में माधव का नाम ले सके, जिसका अर्थ है कि आपका मंत्र सिद्ध हो गया है। इसीलिए आप सपने में भी उसे बोल पाए। रही बात शरीर के भारी होने की, तो देखिए, जब बाहरी तत्वों का प्रभाव होता है, तो वे शरीर को उठाकर ले जा सकते हैं। लेकिन माधव ने आपको रोक लिया। सपना अच्छा था, शुभ था। हाँ, यह शुभ था, और आप परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुए।

► यह उत्तर सुनें · 06:52 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1849 पंडित जी, मेरा एक व्यक्तिगत प्रश्न है। मेरे घर में बहुत कलह है। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ और भागवत पुराण पढ़ता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे घर में कुछ शांति स्थापित हो ताकि मैं अपनी भक्ति पर ध्यान लगा सकूँ। लेकिन जैसे ही मैं माला लेकर जाप शुरू करता हूँ, मेरे माता-पिता में जोरदार झगड़ा शुरू हो जाता है। मेरी शादी होने वाली है, और झगड़ा शादी को लेकर है। मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ। क्या मैं अपनी भक्ति पर ध्यान दूँ या उनका झगड़ा शांत करने की कोशिश करूँ? वे मुझे बीच में मध्यस्थ बना देते हैं। मेरी माँ, ब्राह्मण होते हुए भी, इतनी उग्र हो जाती हैं कि बहुत गालियाँ देने लगती हैं, और घर का माहौल बहुत खराब हो जाता है। फिर मेरा भक्ति करने का मन नहीं करता, क्योंकि आप जानते हैं कि अगर घर में कलह हो, तो कोई माधव का नाम कैसे ले सकता है?

उत्तर: सुनो, बेटा। यह सिर्फ़ तुम्हारे घर में नहीं, हर घर में होता है। इस पर ज़्यादा ध्यान मत दो। तुम्हें अपने माता-पिता के बीच संतुलन बनाना होगा। तुम बीच में हो, तो दोनों का ध्यान रखो। अगर तुम एक का पक्ष लोगे, तो दूसरा तुमसे नाराज़ हो जाएगा। इसलिए दोनों पक्षों में संतुलन बनाकर उनसे बात करो। यह हर घर में होता है, बेटा। यह कलियुग का प्रभाव है। यह हर घर में कलह पैदा करता है, संसार में दुख पैदा करता है, और लोगों को आपस में लड़ाता है। यह कलि का काम है। तुम्हारे माता-पिता पवित्र हैं। उन्हें शांत करो, संतुलन बनाए रखो। बेटा, हज़ार में से 999 घरों में ऐसा होता है। मुझे पता है कि सिर्फ़ तुम्हारा घर ऐसा नहीं है। हमें इसी के साथ जीना है। हम क्या कर सकते हैं? जो लोग हमें इस घर में लाए हैं, हमें उनकी बात सुननी है, उनकी आज्ञा माननी है, उनकी सुननी है, और उन्हें संतुलित करना है। और जब नई बहू आएगी, तो उसे भी संतुलित करना होगा। क्योंकि, बेटा, आजकल संसार में शांति नहीं है। और दूसरी बात, हर घर में कलह है। बड़े-बड़े झगड़े होते हैं। जो भी गालियाँ दी जाती हैं, वह हर घर में होता है। बस माधव से 'जय श्री माधव' कहो।

► यह उत्तर सुनें · 09:10 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1850 पंडित जी, जब मैं पूजा-प्रार्थना के लिए बैठता हूँ, तो मुझे बहुत ज़्यादा पसीना आने लगता है और शरीर बहुत गर्म हो जाता है। पूजा समाप्त होने के बाद तो और भी ज़्यादा गर्मी लगती है। इस तीव्र गर्मी का क्या कारण है?

उत्तर: आपके घर में जो अन्य आसुरी शक्तियाँ या नकारात्मक ऊर्जाएँ हैं, वे आप पर असर डाल रही हैं। इसीलिए आपको पसीना आ रहा है। वे आप पर टिक नहीं सकतीं। वे आप पर ठहर नहीं पाएँगी और कुछ ही दिनों में चली जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 11:30 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1851 पहले एक प्रश्न और साथ ही एक निवेदन। अभी जो भाई ओड़िया में बोल रहे थे... कृपया उनसे हिंदी में बोलने का निवेदन कर दीजिए। जब वे ओड़िया में बोलते हैं तो हमें कुछ भी समझ नहीं आता।

उत्तर: अरे, आज उनका जन्मदिन था और वे आशीर्वाद माँग रहे थे। मैंने उनसे कहा कि प्रभु की कृपा में बने रहें और भगवान उन्हें सत्य, धर्म और न्याय सिखाएँगे। प्रसन्न रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 12:54 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1852 मेरा प्रश्न विवाह के विषय में है। आज के समय में अच्छा लड़का या अच्छी लड़की मिलना संभव ही नहीं लगता। तो क्या अविवाहित रहकर भगवान को समर्पित हो जाना बेहतर है, या गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना चाहिए?

उत्तर: नहीं, गृहस्थ के मार्ग पर ही चलना चाहिए। आपको विवाह करना चाहिए। आपको अच्छी लड़की मिलेगी, और अच्छा लड़का भी मिलेगा। इस संसार में सब कुछ उपलब्ध है, बेटा। देखिए, यदि आप भगवान के प्रति समर्पित हैं, तो भगवान आपके लिए अच्छा विवाह भी करा देंगे। तो विवाह कीजिए, सांसारिक जीवन जीजिए, और भगवान की शरण में रहिए। यह भी ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 13:22 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1853 पंडित जी, पिछले दो दिनों से मुझे स्वप्न में तुलसी दिख रही है, सफ़ेद तुलसी।

उत्तर: अरे, जय जगन्नाथ! बहुत आनंद की बात है। जय जगन्नाथ, बहुत आनंद की बात है कि आपको सफ़ेद तुलसी दिख रही है। मालिका में लिखा है... [एक पद का पाठ करते हैं]... इसका अर्थ है कि भगवान कल्कि गरुड़ पर सवार होकर लंदन जाएँगे, ब्रिटेन जाएँगे। सफ़ेद तुलसी वहीं है। फिर वे उसे भारत वापस लाएँगे। वह एक वृक्ष है, और भगवान उस वृक्ष को हमारे भारत में वापस लाएँगे। अच्छा है कि आपने उसे स्वप्न में देखा; प्रभु आपको दिखा रहे हैं। बहुत अच्छा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:04 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1854 पंडित जी, यह दो दिन पहले की बात है। रात लगभग 11:15-11:30 बजे मैं सोने जा रहा था और अर्ध-निद्रा की अवस्था में था। मैंने एक काले व्यक्ति को देखा, जिसका रूप बहुत डरावना था। मैं डर गया, बिस्तर पर उठकर बैठ गया, फिर लेट गया और 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण' जपते हुए सो गया। वह काला व्यक्ति कौन था? मुझे काला व्यक्ति क्यों दिखा?

उत्तर: देखिए बेटा, वह काला व्यक्ति कोई रूप नहीं, बल्कि एक छाया है। आप ऊपर की मंज़िल पर सोते हैं या नीचे की मंज़िल पर? ... आप भूतल पर रहते हैं। क्या आपकी खिड़की से लगभग 50-60 मीटर दूर कोई वृक्ष है? ... हाँ, एक वृक्ष है। उस वृक्ष में एक अतृप्त आत्मा रहती है। वह अचानक आपके घर में प्रवेश कर गई। फिर आपने प्रभु का नाम जपा और वह चली गई। आपको प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और भागवत का पाठ करना चाहिए। रात को सोने से पहले भगवान नृसिंह महाप्रभु के 'तव कर कमल वरे' मंत्र का कम से कम 11 बार जप करके सोइए। संभवतः वह दोबारा आपके घर नहीं आएगी। देखिए, वह अचानक आई थी; वह हमेशा नहीं आती। यह पहली बार था। वह भूल से आ गई थी; उसके पास प्रवेश का कोई मार्ग नहीं था। वह रास्ता भटक गई, आपके घर आ गई, और फिर लौट गई। चिंता करने की कोई बात नहीं है; वह दोबारा नहीं आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 15:12 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1855 आज मैं यूँ ही बैठा था तो मेरे मन में एक विचार आया, या यूँ कहें कि ऐसा लगा मानो भगवान ने यह विचार मेरे मन में डाला हो। सत्ययुग में भगवान श्रीराम ने छिपकर बालि का वध किया। द्वापर युग में जब श्रीकृष्ण नदी के किनारे सो रहे थे, तो एक शिकारी ने उनके पैर के तलवे में बाण मारा। ये दोनों कथाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं, है ना? तो मेरे मन में एक प्रश्न उठा: जब स्वयं भगवान भी अपने कर्म से नहीं बच सकते — अर्थात् उन्होंने प्रकृति के नियम को

नहीं तोड़ा — वे भगवान हैं, वे कुछ भी कर सकते थे। उन्होंने नियम नहीं तोड़ा क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा था, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'। उन्होंने स्वयं को उस सिद्धांत से अलग नहीं किया। तो पंडित जी, इस युग में एक मनुष्य कैसे यह आशा कर सकता है कि जो होना निश्चित है उससे वह बच जाएगा?

उत्तर: देखिए बेटा, भगवान राम द्वारा छिपकर बालि का वध करने के विषय में... वह बाण सात ताड़ के वृक्षों को भेदकर फिर बालि को लगा था। बालि की मृत्यु से पहले प्रभु ने उससे पूछा, 'यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें तुम्हारा जीवन लौटा सकता हूँ।' पर बालि ने मना कर दिया और कहा, 'मुझे इसकी आवश्यकता नहीं, प्रभु। मैं आपको अपने सामने देख रहा हूँ। मरने के लिए इससे उत्तम समय हो ही नहीं सकता।' इस प्रकार उसे मुक्ति मिल गई। परंतु उसके पुत्र अंगद को प्रभु ने वरदान दिया: 'जैसे मैंने तुम्हारे पिता के साथ यह किया है, वैसे ही जब मैं द्वापर युग में कृष्ण रूप में जन्म लूँगा, तब तुम जरा सवर नामक शिकारी के रूप में जन्म लोगे। तुम्हारे पिता के प्रति किए गए मेरे कर्म का फल तुम्हारे द्वारा पूर्ण होगा, क्योंकि मैं कर्म से परे नहीं हूँ।' पर बात यह है कि भगवान रामचंद्र या भगवान कृष्ण संसार को यह दिखाते हैं कि कर्म करना ही पड़ता है, और वे स्वयं भी उसके अधीन हैं। परंतु इस युग में भगवान मनुष्यों को अनेक अवसर देते हैं और बहुत कुछ क्षमा भी करते हैं। विभीषण ने भगवान राम से मिलने से पहले अनेक आसुरी कर्म किए थे। पर जब प्रभु ने विभीषण को अपनी शरण में लिया, तो उन्होंने उसे राजा बना दिया और अमरत्व प्रदान किया। और कलियुग के अंत में विभीषण भगवान कल्कि से मिलने आएँगे, और भगवान कल्कि उन्हें सीधे वैकुंठ भेज देंगे। तो यदि भक्तों से कोई भूल हो जाए, तो प्रभु उन्हें क्षमा कर देते हैं। प्रभु दया और क्षमा के सागर हैं। इसकी चिंता मत कीजिए। यदि हमसे कुछ हो गया है, तो हमारी त्रिकाल संध्या और भगवान का नाम जप उसे भी हल कर देगा। वे अपने भक्तों का उद्धार अवश्य करेंगे। प्रभु कहते हैं, 'यदि कोई दस लाख ब्राह्मणों की हत्या करके भी मेरे पास आए, तो भी यदि वह मेरी शरण ले तो मैं उसका त्याग नहीं करूँगा।' उन्हें क्षमा करने का अधिकार है। इसलिए शरण लेनी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:00 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1856 मेरा आपसे एक निवेदन था। आपका प्रवचन रात 9:30 बजे निर्धारित होता है, लेकिन आप 10:00 बजे आते हैं।

उत्तर: हाँ, ऐसा नहीं होना चाहिए। मैं इसके लिए पहले ही खेद व्यक्त कर चुका हूँ और क्षमा माँग चुका हूँ। क्या करें? हम पंजाब में हैं, प्रवचन चल रहा है, और लोगों से मिलने में देर हो जाती है। इसीलिए थोड़ी देर हो जाती है। हम कोशिश करेंगे कि ऐसा न हो। ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो समय हमने लोगों को दिया है, उसी समय हमें आना चाहिए। लेकिन क्या करें? आप पवित्र आत्माएँ हैं, बड़े और विशाल हृदय वाले हैं, और मुझे विश्वास है कि आप इसे अच्छे भाव से लेंगे। मैं भरसक प्रयास करूँगा कि आगे ऐसा न हो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:28 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1857 पंडित जी, परसों आपने भागवत प्रवचन में कहा था कि जब भगवान श्रीकृष्ण इस धरा से विदा हुए, तब कलियुग के 1200 वर्ष बीत चुके थे। भगवान श्रीकृष्ण इस पृथ्वी पर 125 वर्ष रहे। तो क्या इसका अर्थ यह है कि भगवान कृष्ण का जन्म भी कलियुग में हुआ था?

उत्तर: देखिए, संस्कृत भागवत में लिखा है... [श्लोक का पाठ करते हैं]। इसका अर्थ यह है: जब भगवान श्रीकृष्ण विद्यमान थे, तब सप्तर्षि मघा नक्षत्र में संचरण कर रहे थे। उस समय कलियुग के 1200 वर्ष बीत चुके थे। इसका अर्थ यह हुआ कि जब तक भगवान कृष्ण उपस्थित थे, कलि प्रवेश नहीं कर सका। उसकी आयु तो बढ़ रही थी, पर वह अपना प्रभाव नहीं फैला सका। कलियुग का आगमन हो चुका था, लेकिन जैसा कि श्रीमद्भागवत में लिखा है, जब तक भगवान कृष्ण के चरण-चिह्न पृथ्वी पर थे, कलि प्रवेश नहीं कर सका। और जब भगवान इस पृथ्वी को छोड़कर अपने धाम चले गए, तब कलि का प्रभाव फैलने लगा। उसकी आयु बढ़ रही थी, पर वह कुछ कर नहीं सकता था; वह अपाहिज की तरह बैठा था। भगवान के जाने के बाद उसका प्रभाव बढ़ा, लेकिन जब तक भगवान यहाँ थे, उसका कोई असर नहीं था क्योंकि भगवान उपस्थित थे। बेटा, यही इसका सार है।

► यह उत्तर सुनें · 24:33 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1858 पंडित जी, बदरीनाथ में बहुत से संत आते हैं, और मैंने उनसे कुछ सुना। मैंने भागवत भी पढ़ी है। पूरे भागवत पुराण में कहीं भी माता राधा का नाम नहीं है। साथ ही, शुकदेव गोस्वामी ने कोई भी श्लोक 'र' अक्षर से आरंभ नहीं किया। बीच में भले ही आ जाए, पर कोई श्लोक 'र' अक्षर से शुरू नहीं होता। जब मैंने संतों से पूछा, तो उन्होंने कहा कि शुकदेव गोस्वामी जब भी राधा जी का नाम लेते थे, वे समाधि की अवस्था में चले जाते थे। क्या यह सच है? मैंने स्वयं भी देखा है कि कोई श्लोक 'र' से आरंभ नहीं होता और भागवत पुराण में माता राधा का नाम नहीं है।

उत्तर: देखिए, यह सत्य है कि उनका नाम भागवत में नहीं है, मैं यह स्वीकार करता हूँ। लेकिन ग्रंथ का नाम है 'श्रीमद् भागवत महापुराण'। 'श्री' का अर्थ है माता राधा, और 'मद्' का अर्थ है भगवान। दोनों के नामों को मिलाकर ही 'भागवत' नाम बना है। पर यह सत्य है कि माता राधारानी के बारे में लिखा नहीं गया है। इसमें भगवान के वंश और उनकी लीलाओं का वर्णन है। भगवान के साथ उनकी नित्य दिव्य लीलाओं का वर्णन इसमें नहीं है। उसके लिए एक अलग ग्रंथ है जिसका नाम है 'गीत गोविंद'। श्रीमद् भागवत की मुख्य नायिका माता राधारानी ही हैं, इसीलिए उनके नाम पर इसका नाम 'श्रीमद् भागवत' पड़ा। तो यही माता राधारानी का सार है। उनका नाम आरंभ में है, भीतर नहीं। और जो आप कह रहे हैं कि शुकदेव जी समाधि में चले जाते थे... देखिए, माता की पवित्रता और भक्ति जिनके पास है, वही उन्हें जान सकते हैं। यह भक्ति का विषय है। हम इसका वर्णन नहीं कर सकते या शास्त्रों से सिद्ध नहीं कर सकते, पर लिखा नहीं गया है। पहला नाम ही 'श्रीमद् भागवत' है, और माता राधारानी उसमें हैं। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 26:35 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1859 पिताजी, स्वप्न में काला साँप देखने का क्या अर्थ है?

उत्तर: स्वप्न में काला साँप किसी आने वाले संकट का संकेत है, शनि की खराब दशा (शनि दशा), या शुक्र (शुक्र महादशा या अंतर्दशा), या राहु-केतु की दशा का संकेत मिलता है। इसीलिए आपको काला साँप दिखाई दिया। त्रिकाल संध्या करें, माधव का नाम जपें, और निरंतर माधव की शरण में रहें। कोई परेशानी नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 29:10 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1860 यह इज़राइल युद्ध अभी चल रहा है। क्या आपको लगता है कि मध्य पूर्व में रहना सुरक्षित है?

उत्तर: मैंने पहले भी कहा है कि यह सुरक्षित नहीं है। देखिए, बहुत अच्छा प्रश्न है। इज़राइल के साथ जो युद्ध शुरू हुआ है, उसमें कुछ समय लगेगा। सभी मुस्लिम देश एकजुट होंगे और यह तय करेंगे कि अगर किसी भी मुस्लिम देश पर हमला होता है, तो वे सब मिलकर लड़ेंगे। वह निर्णय अभी तक नहीं हुआ है। मार्च 2025 में ग्रहों का संयोग (मीन संक्रांति) है। तब तक प्रतीक्षा कीजिए। कोई बड़ी समस्या नहीं होगी। समस्या बढ़ने से पहले सब लोग भारत आ जाएंगे। मलिका में लिखा है कि विदेशों के सभी लोग, चाहे वे अमेरिका से हों, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस या कहीं और से, समय आने पर आनंद और प्रेम के साथ अपने देश भारत लौट आएंगे। थोड़ा समय प्रतीक्षा कीजिए। स्थिति अभी उतनी बुरी नहीं है। वे सब एकजुट होने की प्रक्रिया में हैं। फिर एजेंडा घोषित होगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 29:48 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1861 मेरा एक और व्यक्तिगत प्रश्न है। मेरे जीवन में बहुत समस्याएँ हैं, संभवतः मेरी पत्नी के पक्ष से किए गए काले जादू के कारण। हम अपने परिवार से अलग हो गए हैं, सब कुछ कट गया है। अब इतनी समस्याएँ हैं कि हमें संतान के लिए सही परिस्थिति भी नहीं मिली। क्या हम अब प्रयास कर सकते हैं? आप कह रहे हैं कि आने वाले कुछ वर्षों में स्थिति बहुत बुरी होगी। तो क्या ऐसी स्थिति में हमें संतान के लिए प्रयास करना चाहिए?

उत्तर: हाँ, संतान के लिए प्रयास कीजिए। आपकी उम्र कितनी है? 37, 38? ... मैं 48 का हूँ। कोई बात नहीं। अगर आपको संतान चाहिए, तो प्रयास कीजिए। इसके लिए मैं आपको बताऊँगा कि क्या करना है। किसी और समय मुझसे अलग से बात कीजिए। मैं खुले में नहीं कहूँगा। मुझसे बात कीजिए, मैं बताऊँगा कि क्या करना है, फिर प्रयास कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 31:11 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1862 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। जो इज़राइल युद्ध चल रहा है, क्या यह धर्म युद्ध है? आपने भविष्यवाणी की है कि बड़ा युद्ध 2025-26 में होगा। तो क्या वह शुरू हो गया है? क्या यह उसकी शुरुआत होगी, या यह वह नहीं है जो भविष्यवाणी में लिखा था?

उत्तर: यह मैंने 10 दिन पहले भी कहा था। समीकरण बनाने के लिए कई युद्ध मोर्चे खुलेंगे। यह सभी मुस्लिम देशों को एकजुट करने के लिए हो रहा है। वे सब एक हो जाएंगे। और जब भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा, तो वह युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा। यह विश्व युद्ध नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 32:48 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1863 कल ही पितृ पक्ष समाप्त हुआ है। तो क्या 'पितृ दोष' नाम की कोई चीज़ होती है? और अगर होती है, तो उसके लिए अनुष्ठान कैसे करने चाहिए? अगर मुझे पितृ दोष है, तो मुझे कैसे पता चलेगा, और कौन से अनुष्ठान करने चाहिए?

उत्तर: क्या आपके पिता जीवित हैं? ... हाँ, मेरे पिता जीवित हैं। आपके पिता के पिता? ... वे जीवित नहीं हैं। मेरी माँ भी नहीं हैं। पितृ दोष आपके दादा जी के लिए दिख रहा है। आपकी माँ को मुक्ति मिल गई है; उनके लिए कुछ नहीं दिख रहा। आपके पिता के पिता मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। थोड़ा पितृ दोष दिखाई दे रहा है। उसे दूर करने के लिए या तो गया में पिंडदान कीजिए, या फिर घर पर सात दिन का भागवत पाठ करवाइए। ऐसा करने से वे उससे मुक्त हो जाएंगे। ... क्या मुझे यह करना चाहिए? मेरे पिता इस समय बीमार हैं और इसे करने की स्थिति में नहीं हैं। अगर मैं करूँ, तो क्या वह प्रभावी होगा? आप अकेले यह सब कैसे करेंगे? आपको सात दिनों में भागवत का पूरा पाठ पूर्ण करना होगा। आपको प्रतिदिन गाय और अन्य पशुओं को भोजन कराना होगा। अपने जान-पहचान के दो-तीन लोगों को साथ लीजिए। उस दौरान मांस, मछली, मदिरा या दांपत्य संबंध नहीं होने चाहिए। सात दिन आपको ज़मीन पर सोना होगा। ऐसा करने से घर के सभी पितर... एक दिखाई दे रहे हैं, और उनसे पहले दो पीढ़ी पूर्व की एक स्त्री भी दिखाई दे रही हैं। वे सब मुक्त हो जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:43 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1864 मैं शंकराचार्य जी का अद्वैत वेदांत पढ़ रहा था। उसमें लिखा है कि सत्य के बारे में कोई कह नहीं सकता; वह अनिर्वचनीय है। और आत्मा को 'असंग' कहा गया है, अर्थात उसे किसी की आवश्यकता नहीं; वह स्वयं में पूर्ण है। वह एक है, अर्थात दूसरा कोई नहीं है। अद्वैत का अर्थ एक या दो नहीं है; इसका अर्थ है कि कोई है ही नहीं। उसके बारे में बात भी नहीं की जा सकती। यह कृपा का विषय है। बाकी सब उनके हाथ में है; हमारे हाथ में कुछ नहीं है। यही उनके अद्वैत दर्शन में लिखा है। क्या आप इस पर थोड़ा प्रकाश डालेंगे?

उत्तर: देखिए, हमारे पूज्य शंकराचार्य जी हमारे सनातन धर्म के प्रमुख हैं। उन्होंने जो भाष्य लिखे हैं, वे हमारे लिए पूजनीय परंपरा हैं। उनका विश्लेषण करने का, शास्त्रों और सनातन धर्म के अनुसार, मुझे कोई अधिकार नहीं है। मैं ऐसा नहीं कर सकता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:44 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1865 महाराज जी, यूक्रेन और रूस के बीच जैसी स्थिति है, क्या वैसी स्थिति हमारे भारत में भी आएगी?

उत्तर: देखिए, अगर मैं बता दूँ तो लोग डर जाएँगे। मैं क्यों कहूँ? मैं बस इतना ही कहूँगा: कलियुग का अंत आ गया है, और सत्ययुग आ रहा है। लोगों को त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और धर्म की ओर मुड़ना चाहिए। अगर मैं बता दूँ कि भारत में क्या होने वाला है, तो सब डर जाएँगे, तो बताने का क्या फायदा? भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध निश्चित रूप से होगा। उस कार्यक्रम में कोई बदलाव नहीं होगा। यह पहले से निर्धारित है। उस समय देखिए क्या होता है। भगवान की शरण में जाइए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:22 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1866 पंडित जी, मेरे पिताजी का 2018 में देहांत हो गया था। अभी पूरा पितृ पक्ष बीता है, और हमारे पैतृक घर में श्राद्ध भी किया गया। मैं दिल्ली में रहता हूँ। कल रात मुझे सपना आया कि वे कहीं से आ रहे हैं, और मैं और मेरी पत्नी बाहर थे। मुझे फोन आता है कि 'तुम्हारे पिताजी कहीं और चले गए हैं, और तुम घूम रहे हो?' फिर मैंने उनसे फोन पर बात की, और वे नाराज़ थे। बाद में हमने उन्हें घर आने को कहा, पर वे नहीं आए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: पितृ पक्ष में क्या आपने अपने पिताजी के लिए पिंडदान किया था? ... नहीं, मेरे बड़े भाई और माताजी ने पैतृक घर में किया था। मैंने नहीं किया। इसीलिए आपके पिताजी नाराज़ हैं। आप दिल्ली में भी कर सकते थे। देखिए, पिंडदान न भी करें तो चलेगा, पर घर में यह आपका और आपकी पत्नी दोनों का कर्तव्य है... चाहे मुख्य श्राद्ध कोई भी भाई करे, हर घर में शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाना चाहिए जो उनके पूर्वजों को पसंद था और उसे बाहर अर्पित करना चाहिए। आप लोगों ने वह नहीं किया। श्राद्ध का कर्म मुख्य घर में हुआ, पर आपको भी करना चाहिए था। इतना तो कम से कम करना चाहिए था। जिन पिता ने आपको जन्म दिया... आपको करना चाहिए। कल या परसों भी, उनका पसंदीदा अच्छा भोजन बनाइए, क्षमा माँगिए, और उनके लिए बाहर रख दीजिए। शायद वे स्वीकार कर लें, और उनकी नाराज़गी दूर हो जाए। वह भोजन किसी को मत दीजिए। कोई और आकर अपने आप खा लेगा—कुत्ता, गाय, या किसी भी रूप में कोई भी। बस उसे बाहर रख दीजिए। और हर साल जब आपके पिताजी का श्राद्ध होता है, तब भी अपनी पत्नी से कहिए कि उनके पसंदीदा व्यंजनों का शुद्ध भोजन बनाकर बाहर रखे, जल अर्पित करे और उनसे स्वीकार करने की प्रार्थना करे।

► यह उत्तर सुनें · 38:20 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1867 महाराज जी, जब मैंने जून के अंत में त्रिकाल संध्या शुरू की थी, तो अगस्त तक सब ठीक चला। मेरा मन शांत और पवित्र था। मैंने भागवत पढ़ना भी शुरू किया था। पर कुछ समय से मेरा मन बहुत अशांत हो गया है। मुझे कॉलेज जाना पड़ता है और बहुत से लोगों से मिलना पड़ता है। अब नवरात्रि शुरू हुई है, आज मैंने माँ दुर्गा की पूजा की, और बहुत अच्छा लगा। भगवान के प्रति जो भक्ति और भाव पहले था, वह आज लौट आया। इसका क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: देखिए, भक्ति ऐसा तत्व है, और कलि का तत्व इस भक्ति का विरोध करता है। तो, अगर आप हार मान लेते हैं तो कलि आप पर विजय पा लेता है। पर अपने मन को नियंत्रित कीजिए, मन पर लगाम लगाइए। भगवान की शरण में रहिए। फिर से त्रिकाल संध्या शुरू कीजिए। इससे मनुष्य का जीवन सार्थक हो सकता है। और त्रिकाल संध्या के द्वारा, मेरे विचार से, मनुष्य सत्ययुग में जाने के योग्य बनता है। तो, कीजिए। कलि इसका विरोध करेगा, करने नहीं देगा, बाधाएँ डालेगा। इसे छोड़िए मत। मन को एकाग्र करके फिर से संध्या कीजिए। भगवान की शरण में रहिए। आपका कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:57 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1868 मेरे बहनोई की 2020 में मृत्यु हो गई थी, पर हमें संदेह है कि वह स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी बल्कि हत्या थी। मैं इसी बारे में पूछना चाहता हूँ: क्या वह स्वाभाविक मृत्यु थी, या उनकी हत्या की गई थी? डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें ब्रेन हैमरेज हुआ था, पर उनके शरीर पर मारपीट के निशान थे। तो ऐसा लगा कि उनकी स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई बल्कि उन्हें मारा गया। क्या यह सच है, पंडित जी?

उत्तर: क्या वे किसी प्रकार का नशा करते थे? ... मैं आपको इस बारे में बताऊँगा, पर मुझसे अकेले में बात कीजिए। अगर मैं इस बारे में खुले में बात करूँ... देखिए, मैं यहाँ भविष्य मालिका और धर्म का प्रचार करने के लिए हूँ। अगर आप पूछ रहे हैं, तो मुझसे व्यक्तिगत रूप से बात कीजिए। मैं यह सार्वजनिक रूप से नहीं कहूँगा। मैंने बस नशे के बारे में पूछा था... हाँ, गुरुजी। ... मैं आपसे बाद में बात करूँगा। और उस दिन वहाँ दो और लोग थे। मैं बस इतना ही कहूँगा, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। मुझे सब दिखता है। आप एक काम कीजिए, आपके पास मोहन का नंबर है... हाँ, मेरे पास भैया जी का नंबर है। ... मैं आपको बता दूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:29 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1869 पंडित जी, कुछ दिन पहले मुझे एक सपना आया। एक काँच का बक्सा था जो पानी से भरा हुआ था। उसके अंदर एक काला साँप था और कई पतले सफ़ेद साँप थे। मुझे साँपों से बहुत डर लगता है। लेकिन थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि वह काला साँप कहीं चला गया है। तो मैं घर में सबसे कह रही थी, 'देखो, वह कहीं चला गया है। कहीं ऐसा न हो कि वह पड़ोसी के घर में घुसकर किसी को काट ले।' इसका क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करती हैं? ... हाँ, दो साल से कर रही हूँ। देखिए, आपके घर में जो धार्मिक अनुष्ठान और त्रिकाल संध्या हो रही है, उसके कारण आपका 'काल दोष' (काल/मृत्यु का दोष) और आने वाला संकट टल गया है। ठीक है? अब सब अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:27 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1870 पंडित जी, मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई है। कृपया उसे अपना आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: पुत्र हुआ है? बहुत आनंद की बात है, बहुत ही आनंदमय। भगवान उसे एक अच्छा व्यक्ति, एक अच्छा मनुष्य और संसार के लिए सुख का स्रोत बनाएँ। ... उसका जन्म वामन जयंती के दिन हुआ है। यह बहुत अच्छा है, बेटा। वह अवश्य ही भक्त होगा। आप तो पहले से ही भगवान की शरण में हैं। ... जब मैं गर्भवती थी, तब मैंने त्रिकाल संध्या शुरू कर दी थी। ... तब तो निश्चित ही किसी दिव्य शक्ति ने जन्म लिया है। क्योंकि जो त्रिकाल संध्या सुनते हुए जन्म लेता है, वह अवश्य ही कोई दिव्य, पवित्र आत्मा है जो पृथ्वी पर आई है। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1871 बाबा, मुझे लगता है कि मैं परीक्षा में असफल हो गई। मुझे एक सपना आया जिसमें माता ने मुझसे कहा, 'राधे श्याम बोलो।' लेकिन मैंने कहा, 'राधे राधे।' माता ने फिर कहा, 'राधे श्याम बोलो,' और मैंने फिर कहा, 'राधे राधे।' 'राधे माधव' भी मेरे मुँह से नहीं निकला। क्या मैं परीक्षा में असफल हो गई?

उत्तर: नहीं, नहीं। राधा और श्याम एक ही हैं। आप असफल नहीं हुईं। पर एक काम कीजिए: माता जो कहती हैं, 'राधे श्याम,' आप 'राधा माधव' कहिए। आप असफल नहीं हुई हैं। इसमें कोई असफलता नहीं है क्योंकि माता राधारानी स्वयं भगवान ही हैं; कोई भेद नहीं है। लेकिन वर्तमान युग के अनुसार 'राधा माधव' या 'अनंत माधव' या केवल 'माधव' का जप करना चाहिए। तो इसमें कोई असफलता नहीं है। बस थोड़ा-सा सुधार कर लीजिए क्योंकि स्वयं माता आकर आपसे कह गईं कि इस युग में 'राधा माधव' का जप करना चाहिए। तो वही कीजिए। आप बिल्कुल असफल नहीं हुई हैं। माता राधारानी का नाम तो मुख से निकला, तो उसमें भी आप उत्तीर्ण हो गईं। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं तन-मन से माधव का नाम जप सकूँ। ... आपको मेरा आशीर्वाद है। भगवान जगन्नाथ आपसे जप करवाएँ।

► यह उत्तर सुनें · 46:33 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1872 मैं नासिक से बोल रही हूँ। 2014 में, जब मैं 10वीं कक्षा में थी, हमें उस कमरे में जहाँ हम सोते थे, कुमकुम लगा हुआ एक नींबू मिला। ऐसा दो-तीन बार हुआ। उसके तुरंत बाद मेरे दादाजी का देहांत हो गया, और मेरे पिताजी बीमार रहने लगे। क्या आप इस बारे में कुछ बता सकते हैं? मेरे पिताजी को सात साल तक दिमाग की गंभीर समस्या रही। इस साल हमने उनके दिमाग का ऑपरेशन करवाया, और अब वे ठीक हैं। लेकिन मेरी बहन का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है। वह बहुत दुबली हो गई है और उसे पीठ तथा कंधों में समस्या है।

उत्तर: यह आपके पड़ोस के किसी व्यक्ति या किसी रिश्तेदार ने किया है। उन्होंने आपके घर पर तांत्रिक क्रिया, एक बुरा टोना-टोटका किया, जिसके कारण परिवार में दुर्भाग्य आया। क्या आप त्रिकाल संध्या करती हैं? ... मैंने अभी-अभी शुरू की है। तीनों समय कीजिए। घर के सारे दोष, मेरी राय में, सामान्य स्तर पर आ जाएँगे। और अपने परिवार के सभी सदस्यों से कहिए कि भागवत पढ़ें और त्रिकाल संध्या करें। सब सुखी रहेंगे, बेटी। क्योंकि आजकल बहुत से बुरे लोग बुरे काम करते हैं। और किसी का कुमकुम लगा नींबू रखना आपके घर पर किया गया एक तांत्रिक टोटका है। नींबू वाला टोटका नींबू को मस्तिष्क के रूप में अभिमंत्रित करके किया गया था, इसीलिए आपके पिताजी का मस्तिष्क प्रभावित हुआ। वे अब भी प्रयास कर रहे हैं, पर आप सब त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव की शरण लीजिए, और प्रार्थना कीजिए, 'हे माधव, हमारी रक्षा कीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 47:53 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1873 पिताजी, आज सुबह मुझे सपना आया कि जैसे-जैसे बादल बन रहे थे, उनके साथ पूरा ब्रह्मांड बन रहा था। फिर मैं एक सड़क पर चल रहा था और मैंने दो बिल्कुल सफ़ेद घोड़ों को अपनी ओर आते देखा। मैं छिप गया, लेकिन उनमें से एक घोड़ा मेरे पास आया, मेरे साथ खेलने लगा, और ज़बरदस्ती मुझे अपने ऊपर बिठा लिया। उसकी लगाम लाल थी। वह मुझे मेरे स्कूल ले गया। मैं डर के मारे जाग गया, पिताजी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखो बेटा, सफ़ेद रंग तुम्हारे लिए शुभ संकेत है। सपने में सफ़ेद घोड़ा देखना अच्छा है। क्या तुम त्रिकाल संध्या करते हो? ... हाँ, मेरा पूरा परिवार करता है। तो फिर आनंद से करो, कोई समस्या नहीं है। यह सपना शुभ है, बिल्कुल भी अशुभ नहीं। इसका सार यह है कि यह भगवान के अवतार का समय है, धर्म की स्थापना का समय है। भगवान धर्म की स्थापना के लिए सफ़ेद घोड़े पर सवार होंगे। तो, हो सकता है तुमने भगवान के किसी दूत को सपने में देखा हो। अन्यथा यह शुभ स्वप्न है। उसने तुम्हें पकड़ लिया, इसका अर्थ है कि वह भक्तों के पास भी जाता है। भगवान का वाहन उनके पास भी जाता है। क्योंकि भगवान कल्कि अपना कार्य करने के लिए सफ़ेद घोड़े पर सवार होंगे। बहुत अच्छा है, बेटा।

► यह उत्तर सुनें · 50:57 · 15 अक्टूबर 2023

सत्र 107 · प्रश्न 1874–1904

L112 - बलराम दास मालिका में कल्कि जी के जन्मस्थान का प्रमाण | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 15 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1874 कुछ साल पहले मेरे बड़े भाई और उनकी पत्नी का देहांत हो गया। तब से घर में लगातार समस्याएँ आ रही हैं। हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: क्या आपने उनका श्राद्ध ठीक से किया था? ऐसा लगता है कि 'पुष्कर दोष' (मृत्यु से संबंधित एक ज्योतिषीय दोष) हो सकता है। जब इसका ठीक से समाधान नहीं होता, तो परिवार में एक के बाद एक मृत्यु होती रहती है। संस्कार किसी अच्छे ब्राह्मण से कराए जाने चाहिए थे; लगता है कुछ त्रुटियाँ रह गईं। इसके निवारण के लिए आपको 'पुष्कर' अनुष्ठान कराना चाहिए। इससे आपके घर में शांति और उन्हें मुक्ति मिल सकती है। यदि आपने अभी तक नहीं किया है, तो माधव का नाम जपिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और श्रीमद्भागवत का पाठ कीजिए। जब आपको ओडिशा आने का अवसर मिले, तो विरजा क्षेत्र में उनके लिए पिंडदान कीजिए। उससे उन्हें मुक्ति मिलेगी। साथ ही, आप छठे स्कंध के आठवें अध्याय से श्री नारायण कवच को एक पत्ते पर लिखकर, उसे पीले कपड़े में लपेट सकते हैं, इससे स्थिति पर कुछ नियंत्रण आ सकता है। लेकिन पहले वही कीजिए जो मैंने सुझाया; वह अधिक लाभकारी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 10:16 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1875 मेरे विवाह को 15 वर्ष हो गए हैं। मेरे पति के बड़े भाई का बचपन में ही, छह-सात वर्ष की आयु में, देहांत हो गया था। हाल ही में मैंने उन्हें स्वप्न में देखा। पिछले पितृ पक्ष में हमने उनके लिए कर्मकांड किए थे। आज सुबह से मेरे मन में एक विचार आ रहा है: यदि मेरे पति उनके लिए भागवत पुराण का पाठ करें, तो क्या वे अपने पितृ रूप से मुक्ति पा सकते हैं?

उत्तर: सात दिनों में संपूर्ण भागवत का पाठ कीजिए। प्रतिदिन गाय या अन्य पशुओं को भोजन कराइए। सात दिनों में भक्ति के साथ संपूर्ण भागवत पढ़िए। इस अवधि में आपको पलंग पर नहीं, बल्कि ज़मीन पर साधारण चटाई बिछाकर सोना होगा। आप और आपके पति, दोनों को यह करना चाहिए। उनके लिए सात दिनों में संपूर्ण भागवत पाठ पूरा कीजिए। सबसे पहले कलश (पवित्र घट) की स्थापना करके उसका पूजन कीजिए। किसी को बुलाने की आवश्यकता नहीं है; आप स्वयं कर सकते हैं। माधव का नाम जपिए और कहिए, 'हे माधव, हम उनके लिए भागवत पढ़ रहे हैं। कृपया उन्हें मुक्ति प्रदान कीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 13:39 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1876 कई वर्षों से मैं सुबह 4 बजे उठना चाहती हूँ, पर उठ ही नहीं पाती। कल से नवरात्रि शुरू हो रही है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं तभी से शुरू कर सकूँ। मैं 4 बजे की त्रिकाल संध्या के बाद दोबारा सोना नहीं चाहती, पर जागते रहने की शक्ति नहीं है। मैं सच में उठना चाहती हूँ, इसलिए प्रार्थना करती हूँ कि प्रभु मेरी इच्छा पूरी करें, ताकि मैं 4 बजे उठ सकूँ और 5 बजे अपने बच्चों को भी जगा सकूँ ताकि वे समय पर अपनी त्रिकाल संध्या कर सकें।

उत्तर: बेटी, आपको रात 12 या 12:30 बजे सोने की आदत बदलनी होगी। रात 10 या 11 बजे तक सो जाने का प्रयास कीजिए। इतनी देर से सोना आपके शरीर के लिए अच्छा नहीं है। इसके लिए प्रयास कीजिए। आप जितना अधिक परिश्रम करेंगी, आपके शरीर को उतने ही अधिक विश्राम की आवश्यकता होगी। सब ठीक हो जाएगा, आप आनंदपूर्वक उठ सकेंगी।

► यह उत्तर सुनें · 14:57 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1877 पंडित जी, हम सुन रहे हैं कि आज जगन्नाथ पुरी मंदिर में ब्राह्मणों के बीच विवाद हुआ, और उसके परिणामस्वरूप रत्न सिंहासन पर रक्त की बूँदें गिरीं। क्या इसका उल्लेख भविष्य मालिका में है?

उत्तर: हाँ, 'रक्त चिता पड़ि बाजे रत्न सिंहासन' (रत्नजड़ित सिंहासन पर रक्त की बूँदें गिरेंगी)। यह पहले भी हो चुका है, और अब फिर हुआ है। जब भी कोटि ब्रह्मांड के स्वामी भगवान जगन्नाथ के रत्न सिंहासन के पास, या मुख्य मंदिर के भीतर कहीं भी रक्त गिरता है, तो यह संकेत करता है कि युद्ध के कारण संसार में रक्त की नदियाँ बहेंगी। यह विश्व के लिए विनाशकारी संकेत है। मालिका के वचन एक बार फिर सत्य सिद्ध हुए हैं। यह पहले एक बार हुआ था, और अब फिर हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 15:55 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1878 हाल ही में मैंने प्रेमानंद जी का एक प्रवचन सुना जिसमें उन्होंने ब्रह्मचर्य के लाभ बताए, जो बिल्कुल सही है। आज की पीढ़ी अनुचित फ़िल्में देखती है और हस्तमैथुन में लिप्त होकर अपना वीर्य नष्ट करती है। उनका आचरण पशुओं से भी बदतर है। वे इन आदतों से कैसे उबर सकते हैं और भगवान के प्रति भक्त तथा आकर्षित कैसे हो सकते हैं? चूँकि हमारा अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, वे आध्यात्मिक मार्ग पर कैसे आगे बढ़ सकते हैं?

उत्तर: बेटा, कलि (इस युग के दानव) के रूप हैं — कामना, वासना, मदिरा, और मांस-मछली का सेवन। जो ऐसे कर्मों में लिप्त होते हैं, उन्हें 'म्लेच्छ' (बर्बर) कहा जाता है। प्रेमानंद जी ने जो कहा वह अद्भुत है; मैंने भी वह एपिसोड देखा और बहुत आनंद आया। हमारे युवाओं के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए भगवान की कृपा चाहिए, साथ ही योग, प्राणायाम और त्रिकाल संध्या जैसे अभ्यास भी। ब्रह्म मुहूर्त (सूर्योदय से पूर्व का समय) में न उठने से प्रायः ब्रह्मचर्य में समस्याएँ आती हैं। इसलिए ब्रह्म मुहूर्त में उठकर त्रिकाल संध्या करने से, जो युवा यह आदत विकसित कर लेंगे, वे आनंदपूर्वक इन बुराइयों पर विजय पा सकेंगे। परंतु यह कलियुग है, और लोग इसी की प्रकृति को दर्शाते हैं। फिर भी, बहुत से लोग अच्छे हैं, और समय के साथ, जैसे-जैसे प्रभु का कार्य आगे बढ़ेगा, वे और बेहतर होते जाएँगे। जो ऐसे कर्मों में लिप्त होते हैं, उन्हें म्लेच्छ कहा जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 17:25 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1879 कल मुझे एक स्वप्न आया। बारिश होने के बाद मैं और मेरे पति समुद्र किनारे की सैरगाह (प्रोमेनेड) पर टहलने गए। मैंने देखा कि पूरे शहर का पानी समुद्र की ओर बह रहा है, और लोग कह रहे थे कि जल्द ही बाँध के द्वार खोले जाएँगे, जिससे और भी अधिक पानी आएगा। जब हम घर लौटे, तो वह हमारा वर्तमान घर नहीं था, बल्कि कोई दूसरा घर था। वहाँ बहुत शांति थी, आसपास थोड़ा समुद्री जल था और उसमें कमल खिले हुए थे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखो बेटी, एक समय आएगा जब समुद्र का जल सुनामी लेकर आएगा, और दूसरी ओर बारिश से बाँध भरे हुए होंगे। बाँधों का पानी और समुद्र का पानी लोगों के लिए तबाही मचा देगा। जो स्थान तुमने देखा, वह वैकुंठ है (दिव्य धाम), वह स्थान जहाँ भक्तों को रखा जाएगा। खिले हुए कमल यह दर्शाते हैं कि तुम वहाँ प्रभु के सान्निध्य में शांति और आनंद से रहोगी। इसीलिए तुम्हें यह दिखाया गया।

► यह उत्तर सुनें · 20:06 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1880 मेरा बेटा 13 वर्ष का है और इस समय छात्रावास (हॉस्टल) में है। हमारे पिछले घर में लोग कहते थे कि उस पर किसी प्रेत या काले जादू का प्रभाव है, क्योंकि उसे बहुत गुस्सा आता था। अब हॉस्टल में रहने से वह कुछ ठीक है, लेकिन मुझे उसकी बहुत चिंता रहती है। लोग कह रहे हैं कि वह अब भी उसी प्रभाव में है।

उत्तर: नहीं, तुम्हारे पुराने घर के बारे में लोग जो कह रहे थे, वह सही है। उस स्थान पर बहुत परेशानी है। वहाँ लगभग दो अतृप्त आत्माओं का प्रभाव है। एक किसी अविवाहित व्यक्ति की है, और दूसरी किसी ऐसे की है जिसकी बचपन में मृत्यु हो गई थी। तुम्हारे बेटे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उससे त्रिकाल संध्या करवाओ, भजन गवाओ, भागवत पढ़वाओ, और निरंतर माधव का नाम जपवाओ। उसे कुछ नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:11 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1881 महीने की 1 तारीख को मैंने अपने पिता जी का श्राद्ध पूजन करवाया। उस रात मैं आपकी मीटिंग सुनते-सुनते सो गई। जब मैं जागी, तो मैंने दो परछाइयाँ देखीं—एक काली और एक सफेद। जैसे ही मैंने आँखें खोलकर उन्हें देखा, वे गायब हो गईं। मैं समझ नहीं पाई कि वे कौन थे।

उत्तर: मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे पिता जी को अभी तक मुक्ति नहीं मिली है। और तुम्हारे परिवार का एक और पूर्वज है जिसे भी मुक्ति नहीं मिली है। वे दोनों तुम्हें 'दर्शन' देने आए थे। तुम्हें नाभि गया जैसे स्थान पर किसी अच्छे ब्राह्मण के द्वारा उनका पिंडदान करवाना चाहिए। यदि तुमने पहले ही करवा लिया है, फिर भी अगर वे दोबारा स्वप्न में दिखें, तो मुझे बताना। हम समाधान निकालेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 22:15 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1882 कुछ समय पहले, जब मैंने भविष्य मालिका के बारे में जानना शुरू ही किया था, मुझे एक स्वप्न आया। ऐसा लगा जैसे मैं जाग रहा हूँ, और कोई आत्मा मेरे शरीर पर कब्ज़ा करने की कोशिश कर रही है पर कर नहीं पा रही। ऐसा लगा जैसे कोई और मुझ पर नियंत्रण पाने का प्रयास कर रहा है। स्वप्न में मैं अपनी माँ के कमरे में गया और वे बेहोश थीं, मेरे पिता जी वहाँ नहीं थे, और चारों ओर पूरी तरह अंधेरा था। मेरे मन में बार-बार वह भविष्यवाणी घूम रही थी कि सात दिनों तक अंधकार रहेगा और केवल भक्त ही देख पाएँगे। मुझे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है। फिर स्वप्न में ही मैंने ज़ोर-ज़ोर से प्रभु का नाम जपना शुरू किया और अचानक मैं अपने बिस्तर पर वापस था, और वह अनुभूति समाप्त हो गई। यह क्या था और ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर: कभी-कभी जब लोग उस तरह का ताबीज़ छोड़ जाते हैं, तो उनसे जुड़ी शक्तियाँ वहीं रह जाती हैं। यही समस्या है। कोई तुम्हारी ओर किसी आसुरी तत्व को भेज रहा था, लेकिन माधव की कृपा से तुम्हें कुछ नहीं हुआ। वह ताबीज़ इसी उद्देश्य से लाया गया था। अभी ऐसा लगता है कि कोई समस्या नहीं है, पर माधव का नाम जपते रहो। अगर फिर कुछ हो, तो मुझे बताना। अभी कोई परेशानी नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 24:22 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1883 मेरी उम्र अब 50 वर्ष से अधिक है, और मैंने जीवन भर संघर्ष किया पर कोई उन्नति नहीं हुई। मेरे बच्चे अब बड़े हो गए हैं, लेकिन उनकी भी उन्नति नहीं हो रही। हमने हमेशा अपनी प्रार्थनाएँ की हैं और अब भी करते हैं, फिर भी सफलता नहीं मिल रही।

उत्तर: उन्नति होगी। माधव का नाम जपो, त्रिकाल संध्या करो, और घर में भागवत पढ़ो। उन्नति होगी। बेरोज़गारों को रोज़गार मिलेगा। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 27:47 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1884 आजकल हम देखते हैं कि महिलाएँ और लड़कियाँ भी भागवत कथा सुनाती हैं। क्या यह शास्त्र-सम्मत है? मैं विवाद खड़ा करने के लिए नहीं पूछ रही, पर मैंने ऐसा होते देखा है और जिज्ञासा है, विशेषकर यह देखते हुए कि मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को परंपरागत रूप से कुछ धार्मिक कार्यों से रोका जाता है।

उत्तर: शास्त्रों के अनुसार माता, पिता और संतान—सभी को धार्मिक कर्म करने का अधिकार है। मैं विवाद खड़ा नहीं करना चाहता... मैं उस पर टिप्पणी नहीं करूँगा क्योंकि लोग नकारात्मक कमेंट करेंगे। मुझे उससे क्या मिलेगा? यदि कोई अच्छा कार्य कर रहा है, तो उसकी सराहना होनी चाहिए। हम धार्मिक कार्य की प्रशंसा करते हैं। क्या उचित है और क्या नहीं... खैर, यह कलियुग है। सत्ययुग में सब कुछ नया हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:26 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1885 मैं तीन महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ और भागवत पढ़ रहा हूँ। मेरे पिता का देहांत '98 में हुआ, माँ का फरवरी 2023 में, और मेरे भाई का, जो बहुत शराब पीता था, 2021 में। कुछ लोगों ने कहा कि वह कुछ शक्तियों की पकड़ में था। अब मेरा छोटा भाई भी शराब पीता है और बहुत अकेलापन महसूस करता है। मैं जो ये साधनाएँ कर रहा हूँ, क्या उनका लाभ मेरे परिवार को मिलेगा? और क्या आप देख सकते हैं कि हमारे परिवार में कोई 'पितृ दोष' है?

उत्तर: देखिए, आपकी माँ और पिता से संबंधित मुझे कोई दोष नहीं दिखता। आपके भाई के विषय में, तांत्रिक ने जो कहा वह सही लगता है; वह बंधन में जकड़ा हुआ प्रतीत होता है। घर पर त्रिकाल संध्या करने और भागवत पढ़ने से आपके पितरों को भी भगवान की कृपा प्राप्त होती है, इसलिए इसे करते रहिए। अगर समस्या बनी रहे तो मुझे बताइएगा। जो शराब पीता है, उससे बात कीजिए। वह रातोंरात नहीं बदलेगा। बस उससे कहिए कि वह आपकी बात सुने और रोज़ भागवत का एक अध्याय पढ़े। धीरे-धीरे वह बदल जाएगा। जब संतान सत्कर्म करती है, तो उसका पुण्य माता-पिता और पितरों को जाता है। आपकी त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ का श्रेय उन्हें मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 29:59 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1886 मेरे दिवंगत ससुर मेरे पति के सपने में आए और बोले कि वे केसर लेने जा रहे हैं। उसके बाद हमने केसर का एक डिब्बा खरीदा और श्राद्ध कर्म किया, लेकिन अब वह केसर का डिब्बा गायब है। साथ ही, हमारे परिवार में सब लोग भगवान के भक्त हैं, फिर भी घर में लगातार झगड़े और कलह होते रहते हैं। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: सुनिए, हमारे पितर पितृ लोक में निवास करते हैं। कुछ मुक्ति पाते हैं, कुछ प्रेत बन जाते हैं, कुछ वैकुंठ जाते हैं, कुछ स्वर्ग—वे अपने कर्म के अनुसार जाते हैं। आपके ससुर पितृ लोक में हैं। श्राद्ध से कुछ दिन पहले वे अक्सर सपने में आकर अपनी इच्छा बताते हैं और फिर चले जाते हैं। इसीलिए वे सपने में आए। उन्होंने आपको अपने श्राद्ध की और केसर में अपनी रुचि की याद दिलाई। आपने केसर लाकर श्राद्ध कर्म किया। शांति है, वहाँ कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 32:51 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1887 और मेरा बेटा, पंडित जी... हम भगवान के भक्त हैं, लेकिन उसे बहुत गुस्सा आता है। वह न पूजा करता है, न पढ़ाई। वह अपनी बहनों पर बहुत गुस्सा करता है, चिड़चिड़ा रहता है, गाली-गलौज करता है और हमारी बात नहीं सुनता।

उत्तर: आपका बेटा कितने साल का है? (अगले महीने 18 का हो जाएगा)। जिन मित्रों के साथ वह रहता है... वही समस्या है। यह उसके दोस्तों का प्रभाव है। और कोई आध्यात्मिक दोष नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 34:13 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1888 मेरे पिता अस्वस्थ हैं। वे लगभग तीन महीने से भोपाल के एम्स अस्पताल में हैं, और उन्हें कोई आराम नहीं मिल रहा। कुछ लोग कहते हैं कि हमारे घर में दोष है, कुछ लोग कुछ और कहते हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है। मैं त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ।

उत्तर: अभी उनकी स्थिति कैसी है? (उन्हें खून चढ़ाना पड़ता है, डॉक्टर कहते हैं कि अप्लास्टिक एनीमिया है)। ठीक है बेटा, इलाज जारी रखिए। आप जो भागवत पाठ कर रहे हैं, वह उनके लिए अर्पित कीजिए। भगवान माधव से उनके स्वस्थ होने की प्रार्थना कीजिए और शांति से इलाज चलने दीजिए। उनकी कुंडली में मुझे बुध ग्रह का प्रभाव दिख रहा है जो यह बीमारी दे रहा है। कोई बात नहीं, बस उनसे कहिए कि वे माधव का नाम जपें।

► यह उत्तर सुनें · 35:18 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1889 कल सुबह, जब मैं संध्या कर रही थी और आँखें बंद करके हरिनाम जप रही थी, तब मुझे एक दृश्य दिखाई दिया। मैंने एक रथ देखा जिसमें आगे पाँच सफेद घोड़े थे और पीछे दो। ऐसा लगा मानो स्वयं भगवान कल्कि उस पर सवार हों, हाथ में तलवार लिए हुए। उसके जाने के बाद मैंने श्वेत महाकाली का रूप देखा—खुले केश, बाहर निकली लाल जीभ, और मुंडमाला पहने हुए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि भगवान कल्कि की लीला का संहारक पक्ष विश्व के विभिन्न भागों में पहले से ही चल रहा है। यह धर्म की पुनः स्थापना के लिए माता कालिका, दुर्गा और माधव की लीला है। भगवान प्रमाण दे रहे हैं। संहार का कार्य हो रहा है, प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि गुप्त रूप से, और भगवान अपने भक्तों को ये संकेत देते हैं क्योंकि माँ काली और भगवान कल्कि दोनों ही संहार के कार्य से जुड़े हुए हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:04 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1890 त्रिकाल संध्या शुरू करने के अगले दिन मुझे एक सपना आया। मैंने अपने पुराने घर में चार-पाँच लोगों को देखा। उनमें से एक, जो बीच में खड़ा था, पुराने ज़माने की पगड़ी पहने हुए था। उसने कहा, 'जो अवतार होने वाला था, वह मैं ही हूँ। और एक अवतार और होगा।' इसका क्या अर्थ था?

उत्तर: देखिए, मैं इतना ही बताऊँगा: भगवान कल्कि अपने वर्तमान अवतार में पगड़ी पहनेंगे। यह एक संकेत है। भगवान कल्कि हमेशा हाथ में तलवार नहीं रखेंगे, पर पगड़ी हमेशा पहनेंगे। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उनसे बात कर रहे हैं और उन्हें अपने अवतार के बारे में बता रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:34 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1891 मेरी माँ को एक सपना आया। उन्होंने एक खेत में तीन-चार साल की एक छोटी बच्ची को देखा। वह बच्ची अर्धनग्न थी, सिर्फ ऊपर का कपड़ा पहने हुए थी। यह किस बात का संकेत था?

उत्तर: क्या आपके परिवार के इतिहास में किसी छोटी बेटी की मृत्यु हुई थी? (नहीं)। देखिए बेटा, कभी-कभी सपनों में दूसरे तत्व भी आ जाते हैं, जैसे दूर के परिचित या फिर प्रेत आत्माएँ भी। इसका आपके परिवार से कोई संबंध नहीं लगता। जो छोटी बच्ची आपने देखी... उस बच्ची की शायद उसी खेत में मृत्यु हुई होगी, शायद साँप के काटने से या किसी और कारण से, और वह सपने में आ गई।

► यह उत्तर सुनें · 39:47 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1892 मेरे भाई सेना में हैं। उन्हें कौन-सी त्रिकाल संध्या करनी चाहिए? साथ ही, उन्हें स्मार्टफोन रखने की अनुमति नहीं है, सिर्फ साधारण फोन, इसलिए वे कहते हैं कि वे भागवत नहीं पढ़ पाते। उन्हें क्या करना चाहिए?

उत्तर: उन्हें वही त्रिकाल संध्या करनी चाहिए जो हमने बताई है। अगर वे भागवत नहीं पढ़ पाते, तो कोई बात नहीं। वे बस माधव नाम, 16 नाम, 10 अवतार, और दुर्गा माधव स्तुति का पाठ करें। इतना पर्याप्त है।

► यह उत्तर सुनें · 41:00 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1893 आज सुबह मुझे एक सपना आया जिसमें सात-आठ लोग आए और उन्होंने सबको मार डाला। मैं पलंग के नीचे छिपकर बच गया। मेरे हाथ में लकड़ी की एक मूर्ति थी जो मेरे भाई जैसी दिखती थी, पर उसका सिर कटा हुआ था, और लकड़ी से खून बह रहा था। फिर उस मूर्ति ने मुझसे कहा, 'मैं अब भी तुम्हारे साथ हूँ।' क्या हमारे घर में कोई समस्या या दोष है?

उत्तर: देखिए, आपके भाई जीवित हैं, तो कोई समस्या नहीं है। और मुझे आपके परिवार में कोई पितृ दोष भी नहीं दिखता। देखिए, कभी-कभी यूँ ही सपने और अलग-अलग तत्व आ जाते हैं। इसका आपसे कोई संबंध नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 41:37 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1894 मेरे पिताजी त्रिकाल संध्या करने में विश्वास नहीं करते; वे कहते हैं कि वे हमारी कुलदेवी माँ काली की पूजा करते हैं। क्या आप देख सकते हैं कि हमारे घर में माँ काली का वास है?

उत्तर: अरे, माँ काली तो संहार का कार्य करेंगी! वे तो पहले से ही माधव के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं। देखिए, अगले वर्ष हिमाचल में भारी विनाश आने वाला है। तब उन जैसे लोग सुधर जाएँगे। आपके पिताजी भी मान जाएँगे... हाँ, माँ कालिका... हाँ, पहले आपके घर में बहुत से लोग झाड़-फूँक के लिए आते थे। माँ वहाँ कभी-कभी वास करती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:49 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1895 मैं पिछले अगस्त में इस धारा से जुड़ा था, और सब ठीक चल रहा था। पर जुलाई से, जब से हम हैदराबाद में नए घर में आए हैं, मैं सुबह की संध्या समय पर नहीं कर पा रहा हूँ। यह यहाँ आने के बाद ही शुरू हुआ। साथ ही, जब हम पहली बार यहाँ आए, तो मुझे नींद में अक्सर बहुत डर लगता था। ऐसा लगता था जैसे मैं लकवाग्रस्त हूँ, न बोल पा रहा हूँ न हिल पा रहा हूँ, और मुझे अजीब आवाज़ें सुनाई देती थीं। यह तभी रुकता था जब मैं माधव का नाम जपता था या जब मुझे मन में आपका सत्संग सुनाई देता था।

उत्तर: इस घर के बारे में आपको कैसा लगता है? (मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता, पिताजी। एग्ज़ॉस्ट फैन भी अपने आप चालू-बंद होता रहता है)। मैं क्या कहूँ... अगर मैं सच बता दूँ, तो आप डर जाएँगे। मैं कह नहीं सकता। बस, जब सही समय आए, तो कोई अच्छा घर देखकर वहाँ चले जाइए। तब तक माधव का नाम जपते रहिए, त्रिकाल संध्या करते रहिए, और भागवत पढ़ते रहिए। जो माधव का भक्त है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चिंता मत कीजिए, बस आनंद से रहिए। परिवार के साथ त्रिकाल संध्या जारी रखिए; आपको शांति मिलेगी। संसार में जो भी तत्व हों, वे कहीं भी हों, जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, वहाँ से सारी नकारात्मक शक्तियाँ दूर हो जाती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 43:49 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1896 मैंने गलती से श्रीमद्भागवत महापुराण के बजाय श्रीमद्भगवद्गीता खरीद ली। क्या यह ठीक है? साथ ही, चूँकि मैं एक विद्यार्थी हूँ और घर से दूर रहता हूँ, क्या मैं अपने फोन पर PDF से भागवत पढ़ सकता हूँ?

उत्तर: श्रीमद्भगवद्गीता आनंद से पढ़िए, लेकिन श्रीमद्भागवत महापुराण हमारा मुख्य ग्रंथ है। फोन पर शास्त्र पढ़ना शास्त्र का अनादर है। यदि किसी को कठिनाई या कोई समस्या हो, तो वह एक-दो दिन उस तरह पढ़ सकता है। लेकिन यदि आप निरंतर पढ़ना चाहते हैं और उसका पूरा लाभ पाना चाहते हैं, तो पुस्तक को लकड़ी की चौकी पर रखकर, फूल, धूप और दीप अर्पित करके, भक्तिपूर्वक पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 47:21 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1897 त्रिकाल संध्या शुरू करने के बाद मुझे कई दर्शन हुए। मैंने हनुमान जी को देखा, फिर शिव और पार्वती को उनके संयुक्त स्वरूप में देखा। मैंने अपने पितृतुल्य भगवान सूर्यनारायण को देखा, जो अपने रथ से मुझे धनुर्विद्या सिखा रहे थे। मैंने माता चामुंडेश्वरी को देखा, जो पापियों का संहार करेंगी। फिर मैंने सपने में दो ऋषियों को देखा। एक ने मुझे मेरे कर्म के आधार पर सशर्त अमरत्व का वरदान दिया और महाभारत के कर्ण के दिव्य कवच और कुंडल भी दिए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह अद्भुत है। त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव की शरण में रहिए। जय जगन्नाथ... ठीक है बेटा, अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो और प्रसन्न रहो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:59 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1898 मेरे पति के बड़े भाई का 2 दिसंबर को देहांत हो गया। दो महीने बाद उनके बेटे की हालत बहुत बिगड़ गई; वह मानसिक रूप से अस्थिर हो गया है। इसका क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: आपको यह देखना होगा कि अंतिम संस्कार ठीक से हुआ था या नहीं, और मृत्यु के समय 'पुष्कर दोष' (एक अशुभ ज्योतिषीय योग) था या नहीं। जहाँ तक मुझे दिख रहा है, उन्हें मुक्ति नहीं मिली है। आपको उनकी मुक्ति की व्यवस्था करनी होगी। (हमने सब कुछ ठीक से किया था, पिंडदान भी।) जिस दिन उनका देहांत हुआ, उस दिन कोई 'दोष' था क्या? (हाँ, था।) उसके लिए जो अनुष्ठान होने चाहिए थे, वे ठीक से नहीं हुए। पंडित ने ठीक से नहीं किया। किसी अच्छे ब्राह्मण से दोबारा करवाइए। उनसे कहिए कि पुष्कर दोष का पूरा अनुष्ठान ठीक ढंग से करें।

► यह उत्तर सुनें · 51:25 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1899 पिछले 20-25 दिनों से मेरा भागवत पाठ बंद है। इस कारण मुझे ऐसा लगता है मानो मेरी त्रिकाल संध्या से आत्मा ही निकल गई हो। भागवत पाठ के बिना वह नीरस और निर्जीव लगती है।

उत्तर: कोई आत्मा नहीं निकली है। आप आनंदपूर्वक अपनी त्रिकाल संध्या कीजिए और भागवत पढ़िए। देखिए, जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, उन्हें एक दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। उनके शरीर के तंत्र विकसित होते हैं, घर के सारे दोष दूर होते हैं, और सारी समस्याएँ हल हो जाती हैं। लेकिन विहित कर्तव्यों का पालन निष्ठा के साथ करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 53:10 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1900 मैं कॉलेज जाती हूँ, तो क्या मैं कॉलेज में त्रिकाल संध्या का संक्षिप्त रूप कर सकती हूँ और घर आकर पूरा रूप कर सकती हूँ? साथ ही, मुझे भागवत पुराण का कौन-सा संस्करण खरीदना चाहिए? दुकान पर क्या माँगूँ ताकि वे मुझे सही वाला दें?

उत्तर: हाँ, हाँ, उससे काम चल जाएगा। आपको गोरखपुर गीता प्रेस का श्रीमद्भागवत महापुराण माँगना चाहिए। गोरखपुर गीता प्रेस का संस्करण।

► यह उत्तर सुनें · 54:21 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1901 आज सुबह त्रिकाल संध्या पूरी करने के बाद मैं भागवत पढ़ रहा था। लगभग 5:45 बजे बाहर से एक मधुमक्खी आई। वह आकर मेरे लड्डू गोपाल की मूर्ति के पास बैठी, और फिर सीधे जलते हुए दीपक में जा गिरी, जहाँ वह भस्म होकर मर गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: वह एक भटकती हुई आत्मा थी। वह मरकर वहाँ आई और भगवान की शरण लेते हुए दीपशिखा में विलीन हो गई। (तो मेरी संध्या के दौरान मुझे कोई दोष नहीं लगा?) नहीं, इसमें आपका कोई दोष नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 55:17 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1902 एक सप्ताह पहले मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैंने देखा कि मेरा छोटा भाई मेरा हाथ पकड़कर मुझे नदी किनारे की रेत पर ले जा रहा है। फिर मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा काला साँप हमारे पास से गुज़रा। मैं डर गया, पर मेरा भाई मुझे आगे ले जाता रहा। मुझे इसका अर्थ समझ नहीं आया।

उत्तर: साँप किस रंग का था? (काला)। क्या आप कभी नदी में स्नान करने जाते हैं? (नहीं)। क्या आप नदी पर जाते हैं? (नहीं)। कभी नदी पर मत जाइएगा, ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 56:16 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1903 ऐसा भी होता है कि हमारे घर में कोई घटना होने से पहले मुझे उसका पूर्वाभास या संकेत मिल जाता है, पर मैं उसे स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाता। क्या हमारे परिवार में कोई पितृ दोष है?

उत्तर: [त्रिकाल संध्या] करने से आपको पूरा संकेत मिलेगा और आप जान पाएँगे कि क्या होने वाला है और क्या नहीं। आपके घर में... नहीं, कोई पितृ दोष नहीं है, कुछ भी नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 57:26 · 15 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1904 मैं पूछना चाहती हूँ, क्या हम उन्हीं कपड़ों में त्रिकाल संध्या कर सकते हैं जो शौचालय या स्नानघर जाते समय पहने थे, या हमें कपड़े बदल लेने चाहिए?

उत्तर: देखिए बेटी, वे कपड़े बदल लेने चाहिए। माताओं को पवित्रता बनाए रखनी चाहिए। माता घर की लक्ष्मी होती है; वह परिवार के विकास का प्रतीक है। इसलिए माताओं को स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। त्रिकाल संध्या करने से पहले कपड़े बदल लेना ही उत्तम है।

► यह उत्तर सुनें · 58:35 · 15 अक्टूबर 2023

सत्र 108 · प्रश्न 1905–1935

L114 - एकाम्र वन खंडगिरि में कल्कि लीला का प्रकाश होगा | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 16 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1905 गुरुजी, मैं उत्तर प्रदेश के एक गाँव से हूँ। मैंने अनजाने में पीपल के पेड़ के पास मूत्र त्याग कर दिया, पहले मुझे ध्यान नहीं आया। घर लौटने के बाद से मुझे दो स्वप्न आए जो मुझे याद नहीं रहते, और मेरा सिर भारी रहता है तथा मन बेचैन रहता है। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: पीपल एक दिव्य वृक्ष है जहाँ स्वयं भगवान का निवास होता है। उसके पास ऐसी छोटी-छोटी गलतियाँ भी नहीं करनी चाहिए। लगता है भगवान ने संकेत के रूप में आपको दो बार स्वप्न में पीपल का वृक्ष दिखाया। उपाय के रूप में, भगवान विष्णु, भगवान नारायण या भगवान कृष्ण को एक लड्डू प्रसाद के रूप में अर्पित कीजिए। प्रसन्न मन से उनसे क्षमा माँगिए, सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 05:42 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1906 विदेशों में जो आग, बाढ़ और विनाश हो रहा है, उसके संदर्भ में ऐसा लगता है कि हमारी देवभूमि (भारत) के 95% लोग नहीं जानते कि दुनिया में क्या हो रहा है। यहाँ के लोगों को यह सब कब पता चलेगा?

उत्तर: इन घटनाओं के बारे में सभी को पता नहीं चलेगा। लेकिन जिन भक्तों को सत्य युग की प्रजा बनना है, उन्हें अवश्य पता चलेगा। वे सावधानी बरतेंगे और भगवान की भक्ति की ओर मुड़ेंगे। संसार भर के भक्त और अच्छे, पवित्र लोग बच जाएँगे। उन्हें आभास हो जाएगा कि कुछ होने वाला है, जिससे वे सावधानी बरतेंगे और सुरक्षित स्थान पर चले जाएँगे। यह जानकारी केवल भक्तों को मिलेगी, सभी को नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 09:40 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1907 पंडित जी, मैं लकवे के कारण चार साल से बिस्तर पर हूँ। मेरा हाथ ठीक हो गया है, पर पैर अभी भी पूरी तरह काम नहीं करता। मैं फिजियोथेरेपी करा रहा हूँ, पर नई-नई समस्याएँ आती रहती हैं, जैसे डॉक्टर का छोड़ जाना या दूसरी दिक्कतें। मुझे लगता है किसी ने मुझ पर कुछ कर दिया है (जैसे जादू-टोना)। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: लकवे के लिए आपको फिजियोथेरेपी लेनी चाहिए। चूँकि आपके सामने लगातार बाधाएँ आ रही हैं, तो क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? आपको करनी चाहिए। मैं तो केवल भगवान का नाम लेता हूँ, जैसे हनुमान चालीसा। चूँकि आपको लगता है कि आपके विरोधी लोगों ने कुछ किया है, इसलिए आपको त्रिकाल संध्या शुरू कर देनी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 11:07 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1908 मैं दिवाली की छुट्टियों में जगन्नाथ पुरी जा रहा हूँ। क्या मैं संबलपुर और बिरजा देवी मंदिर के भी दर्शन कर सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, कर सकते हैं। वह वहाँ से लगभग 100 किलोमीटर है। आप दर्शन कर सकते हैं; कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 13:14 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1909 मैंने दो दिन पहले त्रिकाल संध्या शुरू की है। पहले मुझे जल्दी उठने में बहुत कठिनाई होती थी, पर आज सुबह 5 बजे मैंने स्वप्न में माँ की आरती सुनी और तुरंत जाग गई। पहली बार मैंने सुबह 6 बजे तक अपनी प्रार्थना पूरी कर ली। यह बहुत अलग और अद्भुत अनुभव था। (निहित प्रश्न: इस अनुभव का क्या अर्थ है?)

उत्तर: जो भक्त माधव की शरण लेते हैं और त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान स्वयं उनकी देखभाल करते हैं। धीरे-धीरे, समय के साथ, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 13:38 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1910 मैं श्रीमद् भागवत अपने फोन पर पढ़ता था, पर आपके एक एपिसोड में आपने कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिए। मैं पहले ही 600 से अधिक पृष्ठ पढ़ चुका हूँ। जब मुझे पुस्तक मिल जाए, तो क्या मुझे शुरू से पढ़ना चाहिए या जहाँ छोड़ा था वहीं से आगे बढ़ना चाहिए?

उत्तर: आप जहाँ छोड़ा था वहीं से आगे पढ़ सकते हैं। फिर भी, यदि आपको नई पुस्तक मिलती है, तो शुरू से पढ़ना आरंभ करना अधिक अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 14:45 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1911 मैं और मेरी पत्नी तीन महीने से अधिक समय से इस आध्यात्मिक धारा से जुड़े हुए हैं और सभी नियमों का पालन करते हैं। लेकिन घर में बहुत कलह है क्योंकि मेरी पत्नी मेरे माता-पिता से लगातार झगड़ा करती रहती है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: अपनी पत्नी से मेरी बात कराइए। मैं उनसे बात करूँगा और उन्हें सब कुछ समझाऊँगा। जो त्रिकाल संध्या करता है, वह अच्छा और शुद्ध हो जाता है। यदि फिर भी उनके मन में कुछ खटक रहा है, तो मैं उनसे बात करके उसे सुलझा दूँगा। कॉल की व्यवस्था करने के लिए मोहन से समन्वय कर लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 15:36 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1912 इस आध्यात्मिक धारा से जुड़ने से पहले मैंने अज्ञानवश बहुत से पापकर्म किए। अब जब मैं सही और गलत को समझता हूँ, तो मुझे अपनी गलतियों का एहसास होता है। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ और भागवत पढ़ता हूँ। क्या भगवान मेरे पिछले कर्मों के लिए मुझे क्षमा करेंगे?

उत्तर: भगवान की शरण में रहकर त्रिकाल संध्या और भागवत का पाठ करते रहिए। कुछ समय लगेगा, पर भगवान अवश्य क्षमा करेंगे। अब जब आप इस धारा से जुड़ गए हैं, तो भगवान जानते हैं कि आप अपने पुराने कर्मों को दोहराएँगे नहीं और धर्म की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में भगवान की कृपा होती है। कुछ समय लगेगा, पर आपके सारे कर्म फिर से शुद्ध हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:40 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1913 मैंने देखा है कि आप बहुत सी बातें गुप्त रखते हैं और सब कुछ नहीं बताते। ऐसा क्यों? यदि नए लोग सब कुछ जान जाएँ, तो शायद वे और आसानी से जुड़ जाएँ।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है, और आपकी समझ सही है। यह सोशल मीडिया है, और सामाजिक मर्यादाओं तथा जुड़ने वाले लोगों की भिन्न-भिन्न मानसिकता के कारण हर बात खुले तौर पर नहीं कही जा सकती। मेरा कार्य धर्म का प्रचार करना है, और मैं केवल वही बताता हूँ जो मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक है और जो लोगों को जानना चाहिए। जो बातें उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं, उनकी चर्चा मैं नहीं करता। यदि आप किसी विशेष विषय पर बात करना चाहते हैं, तो विवरण (description) में दिए गए नंबर पर कॉल करके मुझसे व्यक्तिगत रूप से बात करने का समय तय कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 18:12 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1914 मुझे एक विचित्र अनुभव हुआ। जब मैं सुबह की पूजा कर रहा था, तो एक मकड़ी पूरे समय मेरे साथ रही। बाद में मैं बाहर गया और विग्रहों के पास एक लाइट जलती छोड़ गया। जब लौटा तो वह लाइट बंद थी, पर पंखा चल रहा था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: लाइट और पंखा अपने आप चल रहे थे? आपको अपने घर के मंदिर में एक छोटा पंखा लगाना चाहिए और उसे विग्रह की ओर चलाते रहना चाहिए। देवताओं को भी तो गर्मी लगती है। भगवान के लिए एक छोटा पंखा अच्छा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:00 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1915 क्या मुझ पर कोई 'पितृ दोष' है? मुझे कोई बड़ी समस्या तो नहीं हुई, पर बचपन से ही दूसरे लोगों के कारण मानसिक कष्ट झेलना पड़ा है। मेरे पिता हमें छोड़कर चले गए, और मैं अपनी माँ के साथ नानी के घर रहता हूँ।

उत्तर: आपको इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। क्या आप हर दिन त्रिकाल संध्या करते हैं? यदि करते हैं, तो कोई समस्या नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:10 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1916 'जीव' (प्राणी) और 'आत्मा' में क्या अंतर है?

उत्तर: 'जीव' का अर्थ है प्राणी—मनुष्य से लेकर छोटी-सी चींटी तक। जब तक 'आत्मा' उसके भीतर निवास करती है और उसे सक्रिय रखती है, तब तक वह 'जीव' कहलाता है। जब आत्मा शरीर छोड़ देती है, तो 'जीव' निष्क्रिय हो जाता है, अर्थात् उसकी मृत्यु हो जाती है। आत्मा वह दिव्य तत्व है जो शरीर में निवास करके उसे जीवन देता है। जब आत्मा चली जाती है, तो 'जीव' निर्जीव हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 22:41 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1917 मैं और मेरी माँ त्रिकाल संध्या करते हैं, पर मेरे पिता नहीं करते। क्या आप कोई उपाय बता सकते हैं जिससे वे भी शुरू करें?

उत्तर: कोई बात नहीं कि आपके पिता अभी नहीं कर रहे। क्या आप सुबह उन्हें प्रणाम करते हैं? यह बहुत सुंदर बात है कि आप उनसे इतना प्रेम करते हैं। माधव से प्रार्थना कीजिए और उनसे कहिए कि वे आपके पिता को अपनी शरण में ले लें। माधव यह कर देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:41 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1918 मैं बहुत सी समस्याओं का सामना कर रहा हूँ। मेरे पिता की मृत्यु 2015 में हुई, संभवतः आत्महत्या से, यद्यपि रिपोर्ट में हार्ट अटैक बताया गया। उनके व्यापारिक साझेदारों ने उन्हें धोखा दिया, हमने सब कुछ खो दिया, और अब उन्होंने मेरी माँ पर एक झूठा मुकदमा दर्ज करा दिया है, जो अब भी चल रहा है। यद्यपि इस धारा से जुड़ने के बाद मुझे कुछ शांति मिली है, फिर भी कानूनी मामला सुलझ नहीं रहा। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आपकी माँ के विरुद्ध मुकदमा झूठा है, विशेषकर इसलिए कि मेडिकल रिपोर्ट में मृत्यु का कारण हार्ट अटैक बताया गया है। चिंता मत कीजिए। चूँकि आपने माधव की शरण ले ली है, यह मुकदमा खारिज हो जाएगा। अपनी माँ से भी कहिए कि वे चिंता न करें। इस मुकदमे में आपकी विजय होगी; कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 25:27 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1919 मेरी राशि मकर है। एक ज्योतिषी ने मुझे बताया कि मार्च 2025 तक मुझ पर 'साढ़े साती' है और उसके बाद मेरा अच्छा समय शुरू होगा। मैंने महसूस किया है कि मेरे काम अटक जाते हैं। आपकी क्या सलाह है?

उत्तर: ऐसा प्रतीत होता है कि आप पर 'मंगल दोष' है, जिसके कारण कामों में बाधाएँ आती हैं। इसके निवारण के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव का नाम जपिए। आपके काम अटकना बंद हो जाएँगे और आगे बढ़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:12 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1920 आपने एक बार कहा था कि पांडवों के अस्त्र-शस्त्र 'विराट नगर' में मिलेंगे। एक विराट नगर पंजाब में है और दूसरा राजस्थान में। वे किसमें मिलेंगे?

उत्तर: यह एक गुप्त विषय है जिस पर हमें निजी रूप से बात करनी चाहिए। पांडवों ने भगवान के आदेश पर अपने अस्त्र-शस्त्र छिपाए थे, और वे कलियुग के महायुद्ध में फिर से प्रयोग किए जाएँगे। भगवान कल्कि ही आदेश देंगे कि ये अस्त्र-शस्त्र उन्हें दिए जाएँ। ये अस्त्र-शस्त्र केवल एक ही स्थान पर नहीं हैं; कुछ ओडिशा में हैं, कुछ पंजाब में और कुछ राजस्थान में।

► यह उत्तर सुनें · 30:35 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1921 मेरी छोटी मौसी का हाल ही में निधन हो गया, जिससे मैं बहुत विचलित हो गया। मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैंने देखा कि पृथ्वी धीरे-धीरे धँस रही है और एक आवाज़ सुनाई दी, 'धर्म का पालन करने वालों के सिवा, मैं किसी भी अधर्मी को जीवित नहीं रहने दूँगा।' मैं यह आपके साथ साझा करना चाहता था।

उत्तर: आपका स्वप्न सत्य का ही प्रतिबिंब है। आने वाले समय में पृथ्वी पर एक भी पापी नहीं बचेगा। मैं शुरू से यही कहता आ रहा हूँ। मानवता के लिए एकमात्र मार्ग धर्म ही है। जो लोग बचना चाहते हैं, उन्हें धर्म को थामना होगा, सत्कर्म करने होंगे और भगवान कल्कि की शरण लेनी होगी। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे, तो वे समय को उत्तरोत्तर और अधिक बुरा होते हुए देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:12 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1922 जब मैंने महाप्रभु के लिए दीया जलाया, तो लौ में एक 'फूल' बन गया। साथ ही, मेरे पड़ोसी बहुत ईर्ष्यालु हैं और मुझे बहुत परेशान करते हैं। और क्या आप मेरे नए मंदिर के लिए भगवान का एक चित्र दे सकते हैं?

उत्तर: जहाँ भक्त होते हैं, वहाँ असुर भी होंगे। इस संसार में सभी मनुष्य मूलतः अच्छे हैं, परंतु माया के प्रभाव में आकर वे दूसरों का बुरा सोचने लगते हैं। जहाँ तक चित्र की बात है, आप भगवान कृष्ण, भगवान राम या भगवान जगन्नाथ का चित्र रख सकते हैं। सभी एक ही हैं। इनमें से किसी की भी उपासना करने से भगवत्प्राप्ति होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात है त्रिकाल संध्या करना और माधव के नाम का जप करना।

► यह उत्तर सुनें · 36:40 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1923 उन लोगों का क्या, जो आपका विरोध करते हैं और गलत जानकारी फैलाते हैं? क्या उन्हें कभी पश्चाताप होगा और यह एहसास होगा कि आप पर संदेह करना उनकी भूल थी?

उत्तर: भविष्य मालिका ग्रंथ में उल्लेख है कि इसके संदेश के प्रचार के कारण मुझे बहुत निंदा सहनी पड़ेगी। मैं इससे प्रभावित नहीं होता; मेरा कार्य मानवता के कल्याण के लिए है। मैं सभी का भला चाहता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वे अच्छे इंसान बनें। उनका क्या होगा, यह भगवान पर निर्भर है। मेरा कर्तव्य है कि मैं मृत्यु पर्यंत इस कार्य को जारी रखूँ। मेरी सबसे बड़ी शांति इस बात में है कि हजारों लोग भागवत पढ़ने लगे हैं, त्रिकाल संध्या कर रहे हैं और अपने परिवारों को सुधार रहे हैं। समय और भगवान सत्य को सिद्ध कर देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 38:17 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1924 आपने एक प्रवचन में कहा था कि विवाह केवल एक ही बार करना चाहिए। मैं अपनी पत्नी से चार वर्षों से अलग रह रहा हूँ और हमारा तलाक प्रक्रिया में है। क्या तलाक हो जाने के बाद मैं पुनर्विवाह कर सकता हूँ?

उत्तर: मेरा कथन उनके लिए था जिनकी पत्नी पहले से मौजूद है। नियम यह है कि पहली पत्नी के रहते हुए दूसरी पत्नी नहीं लानी चाहिए। यदि आपको कानूनी तलाक मिल जाता है, तो आप अपने परिवार और गृहस्थी के लिए निश्चित रूप से पुनर्विवाह कर सकते हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 41:45 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1925 मेरे दो प्रश्न हैं: पहला, क्या लव और कुश (भगवान राम के पुत्र) द्वापर युग में पुनर्जन्म लेकर आए थे, या अब कलियुग में जन्म ले चुके हैं? दूसरा, क्या यह सच है कि लोकनिंदा के कारण माता सीता को धरती में समाना पड़ा?

उत्तर: आपके दूसरे प्रश्न के विषय में — यह अत्यंत पीड़ादायक विषय है, और इस पर चर्चा न करना ही उचित है। जहाँ तक लव और कुश की बात है, वे महान भक्त थे जिन्होंने भगवान के पुत्रों के रूप में जन्म लिया। उस जीवन के बाद, वे ऋषियों के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे। वे पहले भक्त थे, जिन्होंने पुत्रों की भूमिका निभाई, और हाँ, उन्होंने भक्तों के रूप में पृथ्वी पर पुनः जन्म लिया है। माता सीता से संबंधित विषय पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा, क्योंकि यह दुःखद विषय है।

► यह उत्तर सुनें · 43:15 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1926 मेरे हाल के स्वप्नों का क्या अर्थ है? मैंने एक वैष्णव भक्त को देखा, फिर एक गौमाता को, फिर मैं सीढ़ियाँ चढ़ रहा था और एक तेज प्रकाश वाले स्थान पर पहुँचा, और अंत में मैंने स्वप्न देखा कि मेरे चारों ओर गोलीबारी हो रही है और बम फट रहे हैं, जबकि मैं सुरक्षित निकल गया।

उत्तर: गौमाता के दर्शन धर्म के प्रसार का संकेत हैं। माता वैष्णो देवी के दर्शन का अर्थ है कि धर्म की स्थापना के समय देवी भक्तों की रक्षा करेंगी। सीढ़ियाँ भगवान के धाम तक ले जाती हैं, और आपको उनकी दिव्य ज्योति के दर्शन हुए। गोलीबारी और बम आने वाले महायुद्ध का संकेत हैं। जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भविष्य की विपत्तियों की झलक दिखाई जाती है ताकि वे तैयार रह सकें।

► यह उत्तर सुनें · 45:18 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1927 मेरे पास 'सुख सागर' की एक प्रति है, जिसमें केवल श्रीमद्भागवत के अर्थ हैं, मूल श्लोक नहीं। क्या मैं इसे पढ़ सकता हूँ?

उत्तर: हाँ, आप सुख सागर पढ़ सकते हैं; इसमें कोई समस्या नहीं है। यह भागवत के समान ही है। हालाँकि, गीता प्रेस, गोरखपुर का श्रीमद्भागवत महापुराण भी बहुत अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 47:35 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1928 मेरे रिश्तेदार लगातार झूठ बोलकर मेरी आलोचना करते हैं, जिससे मुझे बहुत क्रोध आता है और मैं उनके बारे में बुरा सोचने लगता हूँ। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, पर क्या मेरा क्रोध उसके फल को नष्ट कर देगा?

उत्तर: सब कुछ भगवान पर छोड़ दीजिए। जो लोग आपको नापसंद करते हैं, उनसे दूरी बनाए रखिए और इस स्थिति को माधव को समर्पित कर दीजिए। वे सब संभाल लेंगे। इस कलियुग में लोग दूसरों को सुखी नहीं देख सकते। अपने क्रोध पर नियंत्रण रखिए, अपनी प्रार्थना जारी रखिए, और विश्वास रखिए कि माधव धर्म की विजय अवश्य सुनिश्चित करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:12 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1929 कोलकाता में सत्संग कब होगा?

उत्तर: मैं 20 नवंबर से 26 नवंबर तक खड़गपुर के जगन्नाथ मंदिर में रहूँगा। आप वहाँ आ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 50:03 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1930 मेरा बच्चा त्रिकाल संध्या करता है। मैं दुविधा में हूँ, क्या मुझे उसके लिए 'गुरु दीक्षा' की व्यवस्था करनी चाहिए?

उत्तर: मेरी राय में, और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। बस उसे त्रिकाल संध्या सिखाते रहिए, उसे भागवत सुनवाइए, और माधव के नाम का जप करवाइए। कल्कि अवतार आ रहे हैं, और यह धर्म की स्थापना का समय है। इस आध्यात्मिक 'धारा' में बने रहने मात्र से वह स्वतः ही भगवान की शरण में आ जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:41 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1931 आपने सिखाया था कि महाभारत युद्ध से पहले भगवान ने लोगों को धर्म के मार्ग पर आने के लिए 18 वर्ष का समय दिया था। अब, यदि इस प्रचार के माध्यम से 50% लोग धर्म के मार्ग पर आ जाएँ, तो क्या आने वाले विनाश की मात्रा कम हो जाएगी?

उत्तर: हाँ, यदि 50% लोग धर्म के मार्ग पर आ जाएँ, तो विनाश आधा कम हो जाएगा। निश्चित रूप से कम होगा। जहाँ धर्मात्मा लोग होते हैं, वहाँ विनाश कैसे हो सकता है?

► यह उत्तर सुनें · 51:17 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1932 मैं अपने रिश्तेदारों को ये शिक्षाएँ समझाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन कुछ लोग समझते ही नहीं, जिससे मुझे दुख होता है। इस भावना का मैं क्या करूँ?

उत्तर: दुखी मत होइए। आप अपना कर्म कर रहे हैं। यदि वे नहीं सुनते तो यह उनका नुकसान है। आप तो संसार का कल्याण चाहते हैं, फिर दुखी क्यों होना? हम यह अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के कल्याण के लिए कर रहे हैं। दूसरे इसे स्वीकार करें या न करें, यह उनका कर्म है। हमें अपना कर्म करते रहना है। दुखी मत होइए; आनंदित रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 51:53 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1933 अंग्रेज़ों ने भारत से मयूरासन (पीकॉक थ्रोन) और कौस्तुभ मणि कैसे और कब चुराई थी?

उत्तर: जब अंग्रेज़ हमारे देश पर शासन कर रहे थे, तब उन्होंने इन अमूल्य, दुर्लभ वस्तुओं को देखा और अपने देश ले गए। लेकिन भगवान कल्कि गरुड़ पर सवार होकर ब्रिटेन जाएँगे और कौस्तुभ मणि तथा मयूरासन को वापस हमारे राष्ट्र में लाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:45 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1934 इतने कम समय में इतना अधिक बदलाव लाने का प्रयास करना बहुत तीव्र है, और लोगों का व्यवहार अक्सर मुझे बहुत क्रोधित कर देता है। इससे कैसे निपटा जाए?

उत्तर: जिन्हें बदलना है, वे बदलेंगे। जो इस परिवर्तन के लिए ही जन्मे हैं, वे अवश्य बदलेंगे। जो नहीं हैं, वे कुछ भी कहने पर नहीं बदलेंगे। जिस व्यक्ति के भाग्य में बदलना लिखा है, वह एक मिनट में बदल सकता है। सब कुछ पहले से निर्धारित है। हर किसी का इतिहास भगवान के पास है, और घटनाएँ उनकी योजना के अनुसार ही घटित होती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 55:13 · 16 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1935 'सफेद तुलसी' का क्या महत्व है, जिसे इंग्लैंड ले जाया गया था?

उत्तर: जिस देश में सफेद तुलसी रहती है, वह देश अत्यधिक समृद्धि, धन और विकास का आनंद लेता है। विदेशी इसे हमारे देश से ले गए। इसे वापस हमारे राष्ट्र में लाया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 56:28 · 16 अक्टूबर 2023

सत्र 109 · प्रश्न 1936–1963

L115 - देवी मां और योगिनी गण का संहार | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 18 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1936 पंडित जी, आज सुबह मुझे एक सपना आया। सपने में हमारे दो कमरे हैं, और एक कमरे में मुझे साँप दिखाई देते हैं। मैं अपने पति से कह रही हूँ कि उन्हें बाहर निकालो। जब वे एक साँप को बाहर फेंककर वापस आते हैं, तो दूसरा आ जाता है। वे एक के बाद एक आते रहते हैं, और हम उन्हें बाहर फेंकते रहते हैं। कभी वे छोटे होते हैं, कभी बड़े। इस सपने का क्या अर्थ है? साँप काले थे।

उत्तर: देखिए माताजी, क्या आप त्रिकाल संध्या करती हैं? इसीलिए भगवान आपको ये चीज़ें दिखा रहे हैं। 'काल' अब पृथ्वी पर आ रहा है। काल हर घर में प्रवेश कर चुका है। इस समय केवल वही लोग इसे देख सकते हैं जो धर्म का पालन करते हैं। चूँकि आप त्रिकाल संध्या करती हैं, इसलिए आप इसे देख पाईं और आप इसे हटा रही हैं, इसलिए यह आपको हानि नहीं पहुँचाएगा। यदि सपने में इसने आपको हानि पहुँचाई होती, तो आपके लिए इसका कुछ और अर्थ होता। लेकिन यह कुछ नहीं करता; बस आता है और चला जाता है। कारण यह है कि काल पूरे संसार में, समस्त मानव सभ्यता में प्रवेश कर चुका है। और यह काल लोगों के लिए बहुत बड़ी विपत्ति लाने वाला है। आपके लिए कोई समस्या नहीं है। सब ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:53 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1937 पंडित जी, आपके चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। आज रात करीब 2 बजे मुझे एक सपना आया। सपने में मैंने अपने कान में माता जी की गर्जना सुनी, जैसे उनकी प्रचंड साँसें चल रही हों, और लगातार नगाड़े बज रहे थे। मैं 2 बजे जाग गया और माधव मंत्र तथा दशावतार स्तोत्र का जाप करने लगा। यह क्या था? क्या माताजी मुझे कुछ बताना चाह रही थीं? कृपया इस पर अपने विचार साझा करें।

उत्तर: देखिए, माताजी हर घर में जा रही हैं, और भक्तों को उनके दर्शन हो रहे हैं। इसका कारण यह है कि माताजी संहार के कार्य में लगी हुई हैं। देखिए आज संसार में कितना विनाश बढ़ रहा है, और लोग भारी क्षति उठा रहे हैं। माताजी प्रमाणित कर रही हैं कि समय अच्छा नहीं है। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें ये दर्शन होते हैं। जो नहीं करते, जो भक्त नहीं हैं और जिन्होंने माधव की शरण नहीं ली है, उन्हें कुछ भी पता नहीं चलेगा। इससे आप सबको यह अनुभव होता है कि यह पावन मार्ग जिसका हम प्रचार करते हैं—त्रिकाल संध्या, माधव नाम का जाप, और भागवत जी का पाठ—शुद्ध और सत्य है। ऐसा समय आ रहा है, और भक्तों को इसकी एक झलक मिल रही है, जो होने वाला है उसका पूर्वाभास मिल रहा है। आपको माताजी के दर्शन इसलिए हो रहे हैं क्योंकि वे पृथ्वी पर अपने कार्य में लगी हुई हैं। इसमें कोई दुख नहीं है; यह तो आनंद की बात है। माताजी को प्रणाम कीजिए और जैसा मैंने कहा है वैसे त्रिकाल संध्या कीजिए। ऐसा बुरा समय आ रहा है, इसीलिए भक्तों को उनके दर्शन हो रहे हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:39 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1938 पंडित जी, मैं बरेली से अभिषेक हूँ। मुझे इधर कुछ बहुत ही अशुभ सपने आ रहे हैं। मैंने एक विशाल कोमोडो ड्रैगन जैसे जानवर को उत्पात मचाते देखा, और एक दूसरा सपना एक दंगे के बारे में जिसमें मेरे परिवार पर हमला हुआ लेकिन फिर वे बच गए। संध्या धारा शुरू किए और भागवत पुराण पढ़ते हुए मुझे 15 दिन हो गए हैं, लेकिन मुझे भगवान माधव का कोई दिव्य सपना नहीं आया, केवल ये विचलित करने वाले सपने आए हैं। क्या यह कोई चेतावनी है कि मेरा अंतिम समय आ गया है?

उत्तर: अरे बेटा, तुम ऐसा क्यों सोचते हो? नकारात्मक मत सोचो। देखो, ऐसा समय केवल तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि पूरे संसार के लिए आ रहा है। जो तुम देख रहे हो, वह बाहर प्रकट होगा। यदि सपने में तुम खुद को मरते हुए देखते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम्हारा कोई परिचित मरने वाला है। तो, इसका तुम पर कोई असर नहीं है; यह पापियों के लिए है। जो दंगा तुमने देखा, वह दूसरे लोगों के साथ होगा। यही दिखाया जा रहा है। तुम्हें अपनी भक्ति से माधव के दर्शन होंगे। भगवान बस तुम्हें यह एहसास करा रहे हैं कि बुरा समय आ रहा है। जो तुमने बताया है, वह होने वाला है। जंगली जानवर घरों में घुसकर लोगों को मारेंगे। रही दूसरी बात, मैं पहले कह चुका हूँ और इससे अधिक नहीं कहना चाहिए क्योंकि यह राष्ट्रहित का विषय है। लेकिन इतना ही—धर्म को थामे रखो और त्रिकाल संध्या करो।

► यह उत्तर सुनें · 15:48 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1939 हमारी पहले बात हो चुकी है। आपने मालिका में उल्लेख किया था कि 33 करोड़ भक्तों के बारे में लिखा है और वे कहाँ से होंगे। मैं अपने बारे में पूछना चाहता था। मैं बरेली से अभिषेक चौहान हूँ। क्या मैं भगवान के लिए कोई विशेष व्यक्ति हूँ? क्या मेरा कोई विशेष योगदान है? मैं एक बड़े संयोग से त्रि संध्या धारा से जुड़ा और उससे भी पहले से मुझे सपने आने लगे थे।

उत्तर: ठीक है बेटा। माधव की शरण लो, माधव का गुणगान करो, और तुम्हें उनके दर्शन होंगे। ठीक है? समय की प्रतीक्षा करो। कुछ भी बुरा नहीं होगा; तुम्हारे लिए अच्छा ही है। सब आनंदमय होगा। जय जगन्नाथ। यदि कुछ विशेष होता, तो मैं तुम्हें कहता कि यह करो या वह करो। लेकिन जब ऐसा कुछ नहीं है, तो मैं क्या कहूँ? ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 17:55 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1940 पिताजी, आज सुबह मुझे एक दिव्य सपना आया। मैंने भगवान माधव को एक मंदिर के पीछे एक गड्ढे में पगड़ी पहने मांगुर मछली (कैटफिश) के रूप में देखा। मैंने उनके सिर पर हाथ फेरा, और वे अंतर्धान हो गए। फिर मैंने एक आवाज़ सुनी जो 'वासुदेव' को पुकार रही थी, और मेरा बेटा वासुदेव आया और बोला कि माताजी बुला रही हैं। हम दूसरे मंदिर गए जहाँ मैंने देवी को देखा, लगभग छह फुट ऊँची और तेज प्रकाश बिखेरती हुई। उनके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं था और उन्होंने कमल की लंबी माला पहनी हुई थी। वे गर्भगृह से बाहर आईं और मेरे सामने खड़ी हो गईं। मैंने 'दुर्गा माधव' का जाप किया और प्रणाम किया, फिर वे मेरी बाईं ओर चली गईं और अंतर्धान हो गईं, और मैं सुबह 5 बजे जाग गया। कृपया इस बारे में बताइए?

उत्तर: देखिए, पहली बात, भगवान का पगड़ी सहित मत्स्य रूप में दर्शन यह दर्शाता है कि भगवान अब 'जल प्रलय' ला रहे हैं। पूरे विश्व में महाप्रलय और जल से जुड़ा विनाश होने वाला है। यही संकेत है, क्योंकि मत्स्य अवतार में भगवान सृष्टि का प्रलय करते हैं। इस बार यह सार्वभौमिक प्रलय नहीं होगा, लेकिन जलप्रलय होगा। दूसरी बात, माताजी के दर्शन, जहाँ उन्होंने आपकी ओर देखा और फिर चली गईं, इसका अर्थ है कि वे सभी भक्तों के घरों में जा रही हैं। ऐसा होता है; माताजी भक्तों के घर जाती हैं और उनकी परीक्षा लेती हैं कि वे माधव का नाम जपते हैं या नहीं। यह सब प्रमाण के रूप में होता है और केवल भक्तों के साथ ही होगा। हमसे जुड़े भक्त सत्य युग के लिए कार्य कर रहे हैं, और भगवान तथा माताजी उन्हें यह आश्वासन देते हैं कि वे सही मार्ग पर हैं। और विनाश का समय आ रहा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:48 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1941 पंडित जी, मैं सूरत से बोल रही हूँ। छह महीने से हम आपसे जुड़े हुए हैं। हम त्रिसंध्या भी कर रहे हैं और भागवत भी पढ़ रहे हैं। अब हम दसवें स्कंध तक पहुँच गए हैं। सपनों में कुछ-कुछ चीज़ें दिखती हैं, लेकिन आज तक हमें माधव भगवान के दर्शन नहीं हुए। ऐसा लगता है कि जब तक आपकी कृपा नहीं होगी, तब तक हम उन्हें देख नहीं पाएँगे। तो कृपया हमारे लिए भी भगवान से विनती कीजिए, ताकि वे हमारी सुनें और हमें दर्शन दें।

उत्तर: ठीक है, माता जी। आपको भगवान के दर्शन अवश्य होंगे। बस कुछ समय प्रतीक्षा कीजिए, आगे चलकर आपको दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 22:29 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1942 और मेरी तरफ़ से एक कमी है। मेरी सुबह की माधव त्रिसंध्या थोड़ी देर से होती है। मैं इसे सुबह 6 से 6:30 बजे के बीच करती हूँ। क्या यह कोई समस्या है? मैं सिर्फ़ उठकर नहीं, बल्कि स्नान करने के बाद पूजा करना पसंद करती हूँ, इसीलिए समय लग जाता है।

उत्तर: आप उठते ही भी कर सकती हैं। बस माँ गंगा का स्मरण कीजिए, 'श्री गंगे, श्री गंगे' कहते हुए तीन बार सिर पर जल छिड़किए, और त्रिसंध्या कर सकती हैं। वैसे स्नान के बाद करना भी ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 23:09 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1943 तो मैं उठते ही थोड़ा गंगाजल छिड़ककर कर सकती हूँ। मुझे भगवान के दर्शन कब तक होंगे? मेरी उन्हें देखने की बहुत तीव्र इच्छा है।

उत्तर: होंगे, माता जी, अवश्य होंगे। समय के साथ हो जाएगा। प्रतीक्षा कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:52 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1944 पंडित जी, मैंने इंटरनेट पर कुछ चैनल देखे हैं जो कहते हैं कि इस भविष्य मालिका में कोई सच्चाई नहीं है। वे आपके बारे में बहुत सी नकारात्मक बातें कह रहे हैं और ऐसे कई वीडियो डाले हैं, आपका नाम लेकर भी। वे दावा करते हैं कि शंकराचार्य जी भी कहते हैं कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है। इन दावों के पीछे की वास्तविकता क्या है?

उत्तर: हर युग में असुरों ने दैवी कार्यों और सनातन धर्म के विरुद्ध काम किया है। भविष्य मालिका भगवान की वाणी है। मेरा आपसे निवेदन है कि आप अपनी अंतरात्मा से पूछिए: मैं सच बोल रहा हूँ या झूठ? लाखों-करोड़ों लोग मर रहे हैं, बाढ़ आ रही है, बीमारियाँ फैल रही हैं, और जगन्नाथ क्षेत्र से संकेत प्रकट हो रहे हैं। क्या ये संकेत विपत्तिकारक नहीं हैं? यदि नहीं, तो सनातन का अर्थ क्या है? वे क्या कहते हैं, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मालिका में लिखा है कि पंडित काशीनाथ मिश्र धर्म का प्रचार करेंगे, और वही मैं कर रहा हूँ। यही मेरा मुक्ति का मार्ग है। ऐसे लोग बोलते रहेंगे; नहीं तो धर्म और अधर्म का युद्ध कैसे होगा? मानव सभ्यता की रक्षा का दायित्व हम पर है। जो बुरा बोलते हैं, वे स्वयं बुरे हैं। हमारा काम धर्म का प्रचार करना है। उन्होंने तो मालिका को उसकी मूल ओड़िया भाषा में पढ़ा तक नहीं है, तो उन्हें कैसे पता होगा? हमने ही सबसे पहले इसे विश्व में प्रचारित किया। यदि आपकी अंतरात्मा कहती है कि वे सही हैं, तो आप इस मार्ग को छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं। यदि आपको लगता है कि हमारा मार्ग सही है, तो बने रहिए। चुनाव आपका है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:22 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1945 प्रणाम, पंडित जी। मैं अपना अनुभव साझा करना चाहती हूँ। गुरदासपुर में आपकी सभा के दौरान, मैं प्रवचन सुन रही थी तभी मुझे भगवान की उपस्थिति महसूस हुई और चंदन की सुगंध आई। कुछ मिनट बाद मेरे घर में शॉर्ट सर्किट हो गया। मुझे लगा कि कोई बड़ी घटना होने वाली है, जैसे पूरा घर आग की चपेट में आ जाएगा। लेकिन सिर्फ़ दो चीज़ें जलीं, और बाकी पूरा घर सुरक्षित रहा। मुझे लगता है कि भगवान ने हमें बचा लिया। यह मेरी आस्था है।

उत्तर: यह बहुत बड़े आनंद की बात है, माता जी। देखिए, सच्चे भक्त को भगवान संकेत अवश्य देते हैं। इस संसार में बहुत से लोग सत्य के बजाय असत्य के पीछे भागेंगे। यह कलियुग है। लेकिन भगवान अपने सच्चे भक्तों को ऐसे अनुभव देते हैं। आपका अनुभव सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। यह बड़े आनंद की बात है। आपकी श्रद्धा और भक्ति से भगवान आपको अपनी प्राप्ति में सहायता करें, और आपके परिवार पर भगवान की कृपा बनी रहे। यही भगवान से मेरी प्रार्थना है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:30 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1946 महाराज जी, मेरा एक प्रश्न था। कल रात मुझे एक सपना आया। मुझे पूरा याद नहीं है, लेकिन मैं श्रीमद् भागवत पुराण पढ़ती हूँ और संध्या धारा का पालन करती हूँ। मैं अक्सर भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर 'श्रीवत्स' चिह्न का ध्यान करती हूँ। सपने में मुझे धुंधला-सा याद है कि मैंने भगवान की मूर्ति पर श्रीवत्स चिह्न देखा। इसका क्या महत्व है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि भगवान विष्णु श्रीवत्स चिह्न धारण करते हैं, और उसे देखना स्वयं भगवान को देखने के समान है। भगवान की कृपा से आपको यह दर्शन हुआ। यह बड़े आनंद की बात है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:07 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1947 पंडित जी, आप तो सब कुछ देख सकते हैं, तो क्या आप देख सकते हैं कि माधव जी मुझसे कितना प्रेम करते हैं? क्या मुझ पर उनकी कृपा है? और अगर मुझमें कोई कमी है जिसे मैं सुधार सकूँ, तो कृपया बताइए ताकि मैं उन्हें जल्दी प्राप्त कर सकूँ।

उत्तर: ठीक है, माता जी। अपनी भक्ति को और अधिक बढ़ाइए। माधव जी की कृपा आप पर है, और बनी रहेगी। आपमें भक्ति, श्रद्धा और समर्पण है। सब कुछ ठीक है। आप जो कुछ भी कर रही हैं, सही कर रही हैं। ऐसी कोई गलती नहीं है जिसे मुझे बताना पड़े। आनंदपूर्वक भगवान का गुणगान कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:57 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1948 पंडित जी, ये जो सब बीमारियाँ आ रही हैं, क्या ये हम सब भक्तों में भी फैलेंगी?

उत्तर: देखिए, माता जी, जब बाढ़ आती है तो वह अमीर और गरीब में भेद नहीं करती। भक्त अपने धर्म के कारण महान हैं, और उनका स्थान ऊँचा है। फिर भी, बीमारियाँ शरीर में आएँगी, कुछ समय रहेंगी, और फिर चली जाएँगी। लेकिन पापियों के लिए तो यह आएगी और उनका विनाश कर देगी। ठीक है, माता जी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:52 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1949 पंडित जी, एक महीने पहले मेरे बेटा हुआ है, लेकिन उसे बहुत जल्दी नज़र लग जाती है और वह बहुत परेशान रहता है। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है? मैं उसके कान में माधव नाम का जाप करती हूँ, लेकिन वह बहुत रोता है और बहुत व्याकुल रहता है।

उत्तर: आप बच्चे को जहाँ सुलाती हैं, क्या वहाँ पास में कोई खिड़की है? उस खिड़की को बंद रखिए और पर्दा लगा दीजिए। उस पर बाहरी दृष्टि का प्रभाव पड़ रहा है। इसके लिए भगवान को चढ़ाया हुआ फूल या तुलसी पत्र उसके पास रखिए। और उसके माथे पर काला टीका लगाइए। कुछ नहीं होगा। अगर फिर भी ऐसा हो, तो मुझे बताइएगा, मैं आगे सलाह दूँगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 34:32 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1950 पंडित जी, मेरा दूसरा प्रश्न यह है: दुर्गा माधव स्तुति में क्या देवी दुर्गा को माधव की पत्नी कहा गया है? यदि हाँ, तो हमें इसे कैसे समझना चाहिए? कई शिव भक्त नाराज़ हो सकते हैं।

उत्तर: देखिए, माँ दुर्गा ही माँ राधा रानी हैं। वे 'प्रकृति स्वरूपिणी' हैं। अर्थात् प्रकृति, योगमाया, भगवान की ब्रह्मांडीय शक्ति है। वही योगमाया शक्ति राधा रानी हैं, और माधव कृष्ण हैं। उनकी दिव्य लीला के लिए यह लिखा गया है। माँ दुर्गा स्वयं माँ राधा रानी थीं, योगमाया शक्ति की अधिष्ठात्री। क्योंकि भगवान से एक प्रकृति स्वरूप हैं और दूसरे परम ब्रह्म हैं। दोनों मिलकर महाविष्णु बनते हैं। और जो प्रकृति स्वरूप हैं, वे माँ राधा रानी हैं, जो माँ दुर्गा भी हैं। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:48 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1951 पंडित जी, मेरा एक व्यक्तिगत प्रश्न है। मुझे धारा से जुड़े छह महीने हो गए हैं, लेकिन मेरे परिवार में और कोई नहीं जुड़ा है। हमारे घर में बहुत झगड़े होते हैं, मुख्य रूप से इसलिए कि मेरे देवर काम नहीं करते। मेरे पति उन्हें मैकडॉनल्ड्स की फ्रैंचाइज़ी खुलवाने में मदद करना चाहते हैं और मुझसे समर्थन चाहते हैं। मैं हिचकिचा रही हूँ क्योंकि मुझे पता है कि वहाँ मांस और मछली परोसी जाती है। क्या हमें सिर्फ उनकी मदद के लिए यह कदम उठाना चाहिए, या हमें अपने सिद्धांतों पर अडिग रहकर इसका विरोध करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माताजी, क्या आपके पति इस मार्ग का अनुसरण करते हैं? यह बहुत बुरा समय है। आने वाले युग में होटल और रेस्टोरेंट से जुड़े व्यवसाय अच्छे नहीं चलने वाले हैं। यदि आप अभी बहुत सारा पैसा लगाएँगे, तो कुछ दिन चल सकता है, लेकिन आपदाएँ आ रही हैं—बीमारियाँ, युद्ध, प्राकृतिक आपदाएँ—जिनके कारण व्यवसाय लंबे समय तक बंद रहेंगे। उनके लिए बेहतर होगा कि वे वैरायटी स्टोर, दवा की दुकान, या किराने की दुकान खोलें। ऐसे व्यवसाय अंत तक चलेंगे और बंद नहीं होंगे। उसमें धर्म भी होगा और रोज़गार भी। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 36:51 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1952 मेरा नाम विनोद है, दिल्ली से। मुझे त्रिसंध्या से जुड़े एक सप्ताह हुआ है। मैंने कुछ महीने पहले आपसे बात की थी और आपके निर्देशों का पालन कर रहा हूँ। मैं बहुत बड़ी मुसीबत में हूँ; सब कुछ बर्बाद हो गया है, मेरा व्यवसाय बंद हो गया है, और मेरे पास कुछ नहीं बचा। मैं नहीं जानता कि अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे करूँ। जो भी काम करने की कोशिश करता हूँ, उसमें घाटा हो जाता है।

उत्तर: ठीक है। देखिए, अभी जो समय आप पर चल रहा है, वह बहुत अच्छा नहीं है। तो आप एक काम कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए और निरंतर माधव के नाम तथा दुर्गा माधव स्तुति का जाप कीजिए। फिर भगवान की कृपा से आपको कोई अच्छा काम मिलेगा और आजीविका चलेगी। दुखी मत होइए। प्रतीक्षा कीजिए; समय के साथ यह अवश्य होगा। आपको श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ना चाहिए। कीजिए। भगवान दया करेंगे। प्रतीक्षा कीजिए। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 39:55 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1953 मैं दिल्ली से गीता हूँ। दो दिन पहले मैंने सपने में दो साँप देखे जो बहुत दयनीय हालत में थे। किसी ने कहा कि ये मेरे पितर हैं और मुझसे कहा कि इन्हें ले जाकर इनकी सेवा करो। मैंने ऐसा किया और वे ठीक हो गए। लेकिन फिर एक शत्रु आया और उसने उन पर हमला कर दिया। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माताजी, आपके पितृ-लोक से संबंधित कुछ दोष हैं, इसीलिए आप अपने पितरों को कष्ट में देख रही हैं। अपने पूर्व कर्मों के कारण वे उसी अवस्था में लौट आते हैं। वह हमला उनके कर्म के प्रभाव को दर्शाता है। अपने पितरों की मुक्ति के लिए घर पर सात दिनों के भीतर श्रीमद्भागवत का पूर्ण पाठ पूरा कीजिए। यह अनुष्ठान उनकी मुक्ति की प्रार्थना के साथ कीजिए। आपके परिवार के सदस्य मिलकर स्वयं करें, किसी पंडित को बुलाए बिना। कीजिए और भगवान की शरण लीजिए। उसके बाद बताइएगा कि क्या होता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:22 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1954 मैं सतीश कुमार मिश्रा हूँ। मैं कुछ परेशानी में हूँ। मेरा एक मित्र दूसरे मित्र से सेकंड-हैंड कार खरीदना चाहता था। मैंने बस उन दोनों को मिलवा दिया। उनके बीच पैसों का लेन-देन हुआ, लेकिन बेचने वाले ने पैसे ले लिए और कार नहीं दी। अब खरीदने वाला मुझे ज़िम्मेदार ठहरा रहा है और मुझसे पैसे माँग रहा है। मैं बीच में फँस गया हूँ। इससे कैसे निकलूँ?

उत्तर: देखिए, माधव की शरण लीजिए और भगवान से प्रार्थना कीजिए। आजकल किसी के भी बिचौलिए मत बनिए। दूसरों के लिए काम मत कीजिए, क्योंकि Kali Yuga के प्रभाव से सभी मनुष्य स्वार्थी और कपटी हो गए हैं। मित्रों से कम व्यवहार रखिए और अपने परिवार तथा भगवान की भक्ति को अधिक समय दीजिए। समय अच्छा नहीं है। खैर, माधव की शरण लीजिए। प्रार्थना कीजिए कि भगवान की कृपा और आपकी भक्ति से यह मामला सुलझ जाएगा। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 43:56 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1955 मैं अपने पिताजी के बारे में पूछना चाहती हूँ। दस साल से उनका स्वास्थ्य खराब है; उनका दाहिना हिस्सा ठीक से काम नहीं करता, और वे ठीक से चल नहीं पाते। मैं और मेरी माँ धारा में हैं, लेकिन मेरे पिताजी हनुमान जी के बहुत बड़े भक्त हैं। उनकी बीमारी का अब तक कोई इलाज नहीं है। क्या किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए माताजी, मेरे पास सबसे बड़ा तत्व त्रिकाल संध्या है। यदि कोई त्रिकाल संध्या करे और माधव के नाम का जाप करे, तो मेरी राय में, समस्या चाहे जो भी हो, कुछ न कुछ सुधार अवश्य होगा। और यदि कष्ट किसी बाहरी तत्व के कारण है, जैसे कोई तांत्रिक क्रिया, तो वह बहुत आसानी से दूर हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:45 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1956 मैं नागपुर से हूँ। मैंने सपना देखा कि मैं भगवान शंकर के मंदिर में गई। नारंगी वस्त्र पहने एक 22 वर्षीय पुजारी बाहर आए और मुझे नीम का फल देते हुए बोले, 'यह लो, इससे तुम्हारी सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी,' और वे बहुत प्रसन्न थे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, भगवान जगन्नाथ की मूर्ति के लिए पवित्र काष्ठ ('दारु') नीम के वृक्ष से बनता है। यह एक आध्यात्मिक संकेत है और आप पर भगवान की कृपा है। क्या आप त्रिकाल संध्या धारा से जुड़ी हैं? भगवान जगन्नाथ का शरीर नीम के वृक्ष से बना है। भगवान शंकर के मंदिर से मिला यह दर्शन आपके लिए भगवान विष्णु की शरण लेने का साक्षात् आशीर्वाद जैसा है। ठीक है, माताजी।

► यह उत्तर सुनें · 47:38 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1957 बहुत समय से मैं अपने पति को वह सब बताने की कोशिश कर रही हूँ जो आप कल्कि पुराण के बारे में कहते हैं, लेकिन उन्हें बिल्कुल भी विश्वास नहीं है। उनका निर्यात का व्यवसाय अच्छा नहीं चल रहा, इसलिए उनका पूरा ध्यान काम पर है और वे और कुछ सुनना नहीं चाहते। मैं क्या करूँ?

उत्तर: हाँ माताजी। अभी देखिए, मध्य पूर्व में समस्याएँ हैं, अमेरिका के साथ, और कनाडा के साथ हमारे व्यापार में। समय ही ऐसा है। फिर भी, यदि आप चाहती हैं कि आपके घर की आर्थिक स्थिति सुधरे, तो मोहन से बात कीजिए। उनसे कहिए कि पंडित जी ने महालक्ष्मी सूत्र भेजने को कहा है। आप और आपके पति उसका पाठ कीजिए। उससे आपके घर की आर्थिक स्थिति बदल जाएगी। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:06 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1958 पंडित जी, आप कहते हैं कि श्रीमद्भागवत बिस्तर पर बैठकर नहीं पढ़ना चाहिए। हम दिल्ली में छोटे घरों में रहते हैं, और पैरों में दर्द के कारण डॉक्टर ने मुझे ज़्यादा देर ज़मीन पर बैठने से मना किया है। इसलिए मैं रोज़ पीठ के पीछे सहारा लेकर, पैर सीधे रखकर पढ़ती हूँ। क्या इसमें कोई समस्या है? क्या मैं इसी तरह पढ़ना जारी रख सकती हूँ?

उत्तर: श्रद्धा ही सबसे बड़ी शक्ति है, माताजी। यदि आप पढ़ती हैं, तो कोई असुविधा नहीं, कोई समस्या नहीं। आप पढ़ सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 52:51 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1959 एक बात और, जब मैं पहली बार जुड़ी थी तब मुझे बहुत सपने आते थे और वे मुझे याद भी रहते थे। अब कोशिश करने पर भी मुझे अपने सपने याद नहीं रहते। मैं उन्हें बताना चाहती हूँ, लेकिन याद ही नहीं आते। क्या कुछ गड़बड़ है या डरने की कोई बात है?

उत्तर: कोई समस्या नहीं, माताजी। बहुत सारे सपने आते हैं। जो सपना आपके लिए आवश्यक है, भगवान उसे आपको याद करा देंगे। जो आवश्यक नहीं हैं और जिनका कोई अर्थ नहीं है, वे याद न रहें तो कोई बात नहीं। जो महत्वपूर्ण हैं, भगवान उन्हें अवश्य याद दिलाएँगे। कोई समस्या नहीं। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 53:40 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1960 पंडित जी, मैं पूछना चाहती थी कि दशावतार स्तोत्रम्, दुर्गा माधव स्तुति, और भगवान विष्णु के 16 नाम जो त्रिसंध्या धारा में हैं—ये किस ग्रंथ में लिखे हैं? क्या ये Bhavishya Malika में हैं या किसी और शास्त्र में? मैं इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि मैंने दुर्गा माधव स्तुति पहली बार सुनी है।

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या का सार श्रीमद्भागवत पुराण सहित सभी शास्त्रों से लिया गया तत्व है। यह वह साधना है जो देवता, यक्ष और गंधर्व अपने-अपने लोकों में प्रतिदिन करते हैं। स्वर्ग से लेकर वैकुंठ तक हर जगह त्रिकाल संध्या की जाती है। Kali Yuga से मुक्ति के लिए यह एक पवित्र तत्व है। जो इस मार्ग का अनुसरण करेंगे, उनके लिए Satya Yuga में जाना सरल होगा। इसीलिए हम इस तत्व का प्रचार करते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 54:58 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1961 पिताजी, मैं चंडीगढ़ से हूँ। हम गुरदासपुर में आपकी सभा में आए थे। लौटते समय बस से आ रहे थे, तेज़ बारिश के दौरान हमारी बस का बहुत बुरा एक्सीडेंट हो गया और वह लगभग पलट ही गई थी। बहुत भयानक आघात था, और मैं अब भी काँप रही हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि हमसे कोई गलती हुई, या माधव जी ने हमें बचा लिया। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: पहले यह बताइए, आप सब ठीक तो हैं? किसी को चोट तो नहीं आई? (वे कहती हैं कि एक खरोंच तक नहीं आई)। देखिए माँ, भगवान ने आप सबको उस दुर्घटना से बचाया। क्योंकि आप उस बस में थीं, इसलिए लोग बच गए। यदि धर्म की नौका पर एक भी धर्मात्मा व्यक्ति हो, तो दूसरे भी बच जाते हैं। आज ही हमारे वादकों की बस का टायर फट गया, फिर भी कुछ नहीं हुआ। उन्होंने मुझसे कहा, 'देखिए, माधव हमें बचा रहे हैं।' माँ, आप जहाँ भी संकट में होंगी, भगवान आपको बचाएँगे। आप भगवान के प्रवचन में आई थीं, तो आपको क्या हो सकता है? भगवान आपके साथ हैं। कोई भय नहीं है। आनंद से जाइए, माधव का नाम जपिए, आपको कुछ नहीं होगा। आप एक बड़ी विपत्ति से बच गईं। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 56:13 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1962 पंडित जी, कल मैंने सपना देखा कि अकाल के समय में मैं और मेरी पत्नी भोजन की तलाश कर रहे थे। हमें आलू और टमाटर से भरी एक गाड़ी मिली, हमने कुछ लिए और उन्हें बोने के लिए एक खेत में गए। हमें एक ऐसी जगह मिली जो आधी पानी में और आधी सूखी थी, और हमने वहीं उन्हें बोना शुरू किया, तभी करीब 4:30 बजे सुबह मेरी नींद खुल गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखो बेटा, आने वाले समय में भोजन की कमी होगी—आलू, टमाटर, अनाज, गेहूँ। इसी कारण लोग परेशानी में पड़ेंगे। यह स्वप्न उसी की पुष्टि करता है। भविष्य मालिका में भी लिखा है कि भविष्य में लोगों को खाने को अन्न नहीं मिलेगा। जो भक्त भगवान का नाम जपते हैं, उन्हें ऐसे समय आने से पहले ही ऐसे दर्शन और सूचनाएँ मिल जाती हैं। इसमें तुम्हारे लिए कोई नकारात्मक बात नहीं है। ऐसा समय आ रहा है। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 58:20 · 18 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1963 पंडित जी, जब मैं ध्यान करने का प्रयास करता हूँ, तो मेरा मन भटकता रहता है। मैं एकाग्र नहीं हो पाता।

उत्तर: देखो, बार-बार माधव का नाम जपने से मन स्थिर और शांत हो जाएगा। तुम कब से त्रिकाल संध्या कर रहे हो? (वे कहते हैं ढाई-तीन महीने से)। ठीक है, कोई बात नहीं। दिन में जब भी खाली समय मिले, मन ही मन माधव का नाम जपो और भीतर भगवान कृष्ण का ध्यान करो। लगभग एक महीने तक ऐसा करने के बाद तुम्हारा मन स्थिर हो जाएगा। चंचलता दूर हो जाएगी। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:00:26 · 18 अक्टूबर 2023

सत्र 110 · प्रश्न 1964–1985

L116 - बार बार भूकंप आना किस आपदा का संकेत है ? | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 24 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1964 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि जब माँ अपने भक्तों की परीक्षा लेंगी, तो वे 'ब्रह्म एकाक्ष मंत्र' (ब्रह्म का एकाक्षर मंत्र) पूछेंगी। क्या यह मंत्र 'ॐ' है, 'क्लीं' है, 'क्रीं' है, या हमसे कौन सा मंत्र पूछा जाएगा?

उत्तर: देखिए, 'ब्रह्म एकाक्ष' दो प्रकार का होता है: एक जो उच्चारण करके जपा जाता है (जप) और एक जो नहीं जपा जाता (अजपा)। उड़िया शास्त्रों के अनुसार ब्रह्म के सार का जप भीतर ही भीतर किया जाता है। बाहरी रूप से, मैं आपको जो बताता हूँ वह है 'माधव' नाम। 'माधव' नाम ही ब्रह्म का अक्षर है। कलियुग से मुक्ति के लिए इसी का जप कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 12:10 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1965 मेरा एक प्रश्न है। नए वर्ष, 2024 में क्या होगा?

उत्तर: नया वर्ष भक्तों के लिए आनंददायक होगा। उनकी धार्मिक भावनाएँ बढ़ेंगी, और अधिक लोग धर्म की ओर बढ़ेंगे। 2024 में 2023 की तुलना में अधिक लोग धर्म की ओर मुड़ेंगे, हालाँकि कुछ लोग भटकेंगे भी। साथ ही, पंचतत्वों का महाप्रलय मानवता को कष्ट देगा, विशेषकर बाढ़, अग्नि और भूकंप। विश्व भर में शत्रुता बढ़ेगी। लोग और राष्ट्र युद्ध की ओर बढ़ेंगे, और कई नए युद्ध-मोर्चे खुलेंगे। तो, ऐसा समय आ रहा है। जहाँ समय बिगड़ रहा है, वहीं लोग धर्म की ओर भी मुड़ रहे हैं। एक ओर धर्म बढ़ता है, दूसरी ओर पाप भी बढ़ता है। ऐसा ही चलता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 13:06 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1966 बीकानेर में दुर्गा अष्टमी के दिन सुबह 9 से 10 बजे के बीच एक भयानक ध्वनि हुई। बहुत से लोग इसे 'भैरवी डाक' (भैरवी की पुकार) कह रहे हैं, जो ओडिशा में भी सुनी गई थी। वह ध्वनि क्या थी? वह बिजली जैसी लगी, पर शायद वह बिजली नहीं थी।

उत्तर: देखिए, 'भैरवी डाक' अभी हुई ही नहीं है। आपने जो सुना, वह सब देवी-देवताओं का एक-दूसरे को पुकारना था, धर्म की स्थापना के लिए अपनी ध्वनियाँ कर रहे थे। यदि सच्ची भैरवी पुकार हुई होती, तो लोग मर जाते। माँ भैरवी की महागर्जना अभी पृथ्वी पर उतरी नहीं है। अभी तो गाँवों, नगरों और देशों की अलग-अलग माताएँ आपस में संवाद कर रही हैं। जब काल भैरवी की गर्जना का समय आएगा, तो लोग उसे सुनते ही मर जाएँगे। कुछ काले पड़ जाएँगे, कुछ बहरे हो जाएँगे, कुछ मर जाएँगे, कुछ पागल हो जाएँगे, और कुछ बेहोश हो जाएँगे। यह अभी नहीं हुआ है; यह भविष्य में होगा। अभी वह समय नहीं आया है। भक्त उसे नहीं सुनेंगे; केवल पापी सुनेंगे। माँ की पुकार पापी सुनेंगे, जो तड़पेंगे, जबकि भक्त आनंद में रहेंगे। यह अभी नहीं हुआ है, पर होगा।

► यह उत्तर सुनें · 14:37 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1967 मैं जानना चाहता हूँ कि भक्ति के मार्ग पर दिव्य दृष्टि खोलने के लिए त्रिकाल संध्या के अभ्यास के अतिरिक्त और क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप केवल त्रिकाल संध्या से ही प्रगति कर सकते हैं। आप स्वयं इसका अभ्यास करते हैं, तो आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि यह आपके मन में पवित्रता का तत्व लाती है। मेरी दृष्टि में ऐसा कोई अन्य अभ्यास नहीं है जो आपको मानवीय अवस्था से दिव्य अवस्था तक ले जा सके। वही एकमात्र मार्ग है। उसी साधना को थामे रहिए। यदि आप दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या करेंगे, तो भगवान की कृपा आप पर रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 16:46 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1968 जो लोग श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, नाम जप करते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं और सुधर्म संघ के अंग हैं—क्या वे सब सच्चे भक्त माने जाते हैं?

उत्तर: नहीं। देखिए, भक्त और अभक्त का भेद अंततः भगवान ही करते हैं। फिर भी, मैं यह कह सकता हूँ कि बहुत से लोग भय के कारण त्रिकाल संध्या करते हैं और साथ ही साथ गलत कर्मों में भी लगे रहते हैं। यदि उनके दुष्कर्म त्रिकाल संध्या के शुद्धिकारक प्रभाव से अधिक भारी पड़ जाएँ, तो वे भक्त कैसे बन सकते हैं? इसलिए उनमें से सभी सच्चे भक्त नहीं हैं। हज़ारों लोग अभ्यास कर रहे हैं, बहुत बड़ी संख्या में। अभी का मार्गदर्शन यह है कि सब लोग तीन वर्ष तक त्रिकाल संध्या करें। उस अवधि के बाद स्पष्ट हो जाएगा कि सच्चे भक्त कौन हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:40 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1969 गुरुजी, मेरा एक और प्रश्न है। आपने करुणा, क्षमा और शांति जैसे गुणों की बात की। कॉलेज के विद्यार्थी होने के नाते हम मित्रों के साथ मौज-मस्ती और हँसी-मज़ाक करते हैं। हम इस 'शांति' का अभ्यास कैसे करें?

उत्तर: शांति का अर्थ है कि आपके शब्दों से शांति का वातावरण निकलना चाहिए। यह आपकी भाषा, कर्म और आचरण में झलकनी चाहिए—घर में, समाज में और अपने शिक्षण संस्थान में। शांत, सौम्य और पवित्र व्यक्ति की पहचान उसकी वाणी से होती है। इसलिए अपने शब्दों पर संयम रखिए। आवश्यकता हो तभी बोलिए। राम, कृष्ण और सबसे महान नाम माधव का जप कीजिए। और त्रिकाल संध्या कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 18:46 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1970 मैं दो महीने पहले माधव प्रभु के परिवार से जुड़ी हूँ और मांसाहार छोड़ दिया है। परंतु मेरी बेटी अब भी अंडे खाती है, और मुझे परिवार के लिए उन्हें पकाना और संभालना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मैं त्रिकाल संध्या ठीक से कैसे करूँ? साथ ही, मैं अपने परिवार को इस मार्ग पर आने के लिए कैसे राज़ी करूँ, क्योंकि वे इस पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं?

उत्तर: सबसे पहले, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने ऐसे कठिन वातावरण में भी अपने सिद्धांतों को थामे रखा। आप जैसे लोग जो भगवान की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं, विरले ही होते हैं। एक समय आएगा... कोलकाता के लोग भगवान जगन्नाथ के भक्त हैं और चैतन्य महाप्रभु की परंपरा को जानते हैं। यदि जगन्नाथ मंदिर में मछली और अंडे नहीं चढ़ाए जाते, तो आपके परिवार को भी सोचना चाहिए, 'जब भगवान ही नहीं खाते, तो हम क्यों खाएँ?' यदि वे फिर भी जारी रखें, तो पृथ्वी पर जो महाविपत्ति आ रही है, उसके कारण वे अंततः इसे छोड़ ही देंगे। आपने शुरुआत कर दी है। अपनी त्रिकाल संध्या जारी रखिए। इसे अपने कमरे में, छत पर, या जहाँ भी कोई एकांत स्थान मिले, वहाँ कीजिए। कोई बात नहीं। हर व्यक्ति को अपने ही कर्मों का फल भोगना पड़ेगा। अंडा खाना भ्रूण की हत्या करने के समान है (भ्रूण हत्या)। यह पाप गर्भ में पल रहे बच्चे का गर्भपात कराने के बराबर है। लोग अंततः समझ जाएँगे। दुखी मत होइए और किसी पर दबाव मत डालिए। अगले महीने खेरपुर में एक प्रवचन है। यदि आप और आपका परिवार वहाँ आ सकें, तो मुझे विश्वास है कि उनमें से कुछ का हृदय अवश्य बदलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:58 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1971 गुरुजी, आप कहाँ रहते हैं? मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता हूँ।

उत्तर: आप तो अभी मुझे देख ही रहे हैं! देखो बेटा, मैं 2 मार्च से अयोध्या में रहूँगा, श्रीमद्भागवत और भविष्य पुराण पर सात दिवसीय प्रवचन के लिए। तब आप आ सकते हैं, हम मिलकर बात कर सकते हैं। दिसंबर में गुजरात में भी कार्यक्रम होंगे, और जनवरी में दिल्ली और राजस्थान में। यूपी में श्री वृंदावन में प्रवचन होगा। मार्च तक का कार्यक्रम तय है। यदि सुविधा हो और साधन हों, तो आपका स्वागत है, आ जाइए। अन्यथा आप हमारे प्रतिनिधियों से बात करके व्यवस्था कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 23:11 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1972 मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, और मुझे वापस अपने गाँव लौटना पड़ा। मैं आपसे कैसे मिल पाऊँगा?

उत्तर: कोई बात नहीं। समय आने पर हम अवश्य मिलेंगे। अभी के लिए त्रिकाल संध्या का अभ्यास कीजिए और इसका संदेश दूसरों तक पहुँचाइए। सबको इसके बारे में बताइए। किसी भी धर्म या मत के लोग त्रिकाल संध्या कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:05 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1973 [जब मैं त्रिकाल संध्या का संदेश फैलाने की कोशिश करता हूँ,] लोग कहते हैं कि यह सब झूठ है। [मुझे क्या करना चाहिए?]

उत्तर: हाँ, यह सच है। सभी लोग धर्मात्मा नहीं होते, और न ही सबके भाग्य में यह मार्ग स्वीकार करना लिखा होता है। हर कोई संत नहीं होता। जो लोग इसे झूठ कहते हैं, वे एक तरह से अपने दृष्टिकोण से सही ही हैं। 70% लोग इसे नकार देंगे। शायद केवल 15% लोग ही इसे स्वीकार करेंगे, और वही भाग्यशाली हैं। दूसरे क्या कहते हैं, इसकी चिंता मत कीजिए। आप बस अपना अभ्यास जारी रखिए। हम फिर मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:38 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1974 कलियुग में सुदर्शन चक्र कब प्रकट होगा, और उसका उद्देश्य क्या होगा?

उत्तर: सुनिए। सुदर्शन चक्र तो पहले से ही प्रकट है; भक्त उसे अपनी अंतर्दृष्टि से, ज्ञान और भक्ति की आँख से देख सकते हैं। जहाँ कहीं भगवान का संहार होता है, वहाँ काल चक्र कार्य कर रहा होता है। यह कभी खुले रूप में दिखाई नहीं देता। शायद अरबों में से किसी एक भक्त को ही कभी इसका प्रत्यक्ष दर्शन हुआ है। यह गुप्त रूप से चलता है, संहार करता रहता है, और आगे भी करता रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:17 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1975 मैं नौकरी करता हूँ, और अपनी ड्यूटी के समय के कारण मैं दिन में केवल एक बार ही संध्या कर पाता हूँ, तीन बार नहीं। साथ ही, मुझे दशावतार स्तोत्र और विष्णु सहस्रनाम याद नहीं हो पाते, इसलिए मैं उन्हें पुस्तक से पढ़ लेता हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: सुनिए। पाठ के लिए आप उन्हें लिख सकते हैं, पीडीएफ का उपयोग कर सकते हैं, या प्रिंटआउट लेकर पढ़ सकते हैं। यदि आप नियमित रूप से बैठकर पढ़ेंगे, तो धीरे-धीरे वह याद हो जाएगा। परंतु त्रिकाल संध्या (तीनों समय की संध्या) आपको अवश्य करनी चाहिए। हम दिन में तीन-चार बार भोजन करते हैं, और हर बार लगभग 15 मिनट लगाते हैं। इस प्रार्थना को आध्यात्मिक भोजन समझिए — ऐसा भोजन जो आपको पवित्र करेगा और सत्ययुग का मनुष्य बनने के लिए तैयार करेगा। यह भी आपको ग्रहण करना ही चाहिए। बहुत अच्छा है कि आप एक बार कर रहे हैं, पर बाकी दो समय भी करने का प्रयास कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 27:37 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1976 'दुर्गा माधव स्तुति' में ऐसा लगता है कि माधव के स्वरूप को दुर्गा का स्वरूप बताया गया है। क्या आप 'दुर्गा माधव' का अर्थ स्पष्ट करेंगे?

उत्तर: देखिए, माँ दुर्गा योगमाया हैं (दिव्य माया शक्ति)। इसी योगमाया की शक्ति से भगवान धर्म की स्थापना करते हैं। माधव कृष्ण हैं। कृष्ण और माँ योगमाया दोनों मिलकर सारे विश्व में धर्म की स्थापना करेंगे। इसीलिए हम 'दुर्गा माधव स्तुति' का पाठ करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 29:13 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1977 क्या इस बार भगवान माधव अपने भक्तों को 'विश्वरूप दर्शन' (अपने विराट स्वरूप का दर्शन) देंगे?

उत्तर: देखिए, विश्वरूप का दर्शन केवल अर्जुन को ही प्राप्त हुआ था। शास्त्रों के अनुसार, शायद उस संपूर्ण, भव्य स्वरूप को और किसी ने कभी नहीं देखा। कलियुग समाप्त हो जाएगा, पर लोगों को भगवान का विश्वरूप, उनका वास्तविक स्वरूप देखने को नहीं मिलेगा। हाँ, यदि कोई गहरी भक्ति के साथ भगवान की शरण में जाए, तो बात अलग है। हमने अर्जुन जैसी तपस्या या धर्माचरण नहीं किया है, इसलिए सभी भक्तों को एक साथ यह दर्शन मिलना संभव नहीं है। और फिर, अभी भगवान को वह स्वरूप प्रकट करने की आवश्यकता भी नहीं है। उस समय अर्जुन के लिए यह आवश्यक था, इसलिए भगवान ने दिखाया। तो ऐसी अपेक्षा मत रखिए। बस त्रिकाल संध्या, भक्ति और माधव नाम का जप करते रहिए, सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:26 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1978 (अंतर्निहित) मुझे भगवान और माँ के कई स्वप्न और दर्शन हुए हैं। इन अनुभवों का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह आपकी पवित्रता का चिह्न है। जिनमें सच्ची भक्ति होती है, उन्हें भगवान का दर्शन अवश्य होता है। परंतु ये अनुभव एक पवित्र रहस्य हैं। मेरे विचार से इनका बहुत अधिक प्रचार करना उचित नहीं है। नाम जप और त्रिकाल संध्या करते रहिए। भक्तों को ऐसे दर्शन होते हैं, पर यह एक सार्वजनिक मंच है। यदि आप ये बातें खुले में साझा करेंगे, तो कुछ लोग समझेंगे, पर बहुत से नहीं समझेंगे। कुछ अच्छा कहेंगे, कुछ बुरा कहेंगे। इन अनुभवों को निजी रखना ही बेहतर है।

► यह उत्तर सुनें · 31:40 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1979 मैं लगभग छह-सात महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। पहले कुछ महीने सब ठीक था, पर हाल ही में मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती। जाँच में कुछ नहीं निकलता, और दवा से भी लाभ नहीं होता। मैंने दवा बंद कर दी है और अपने अभ्यास पर ध्यान दे रहा हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, शरीर में जो भी रोग हम भोगते हैं, वह हमारे 'प्रारब्ध' (पूर्वजन्मों के कर्म) के कारण होता है। त्रिकाल संध्या करते रहिए, श्रीमद्भागवत पढ़िए, और जो निर्देश मैंने दिए हैं उनका पालन कीजिए। मेरे विचार से, समय के साथ आपको भगवान की कृपा प्राप्त हो सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 42:10 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1980 आप गौ माता की रक्षा पर बल देते हैं, पर मेरे देश नेपाल में लोग अधिकतर भैंस पालते हैं क्योंकि वे अधिक दूध देती हैं। इस विषय में शास्त्र क्या कहते हैं, और आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: कलियुग के प्रभाव के कारण सभी देशों में भैंस पालना अधिक प्रचलित हो गया है। यह बस इस वर्तमान युग का लक्षण है। सत्ययुग में गौ माता की सेवा, पूजा और देखभाल अधिक प्रचलित होगी।

► यह उत्तर सुनें · 43:10 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1981 मैंने एक सपना देखा जिसमें मैं एक होटल की पहली मंज़िल पर था, और हर कमरे के बाहर 20-30 साँप थे। मैं उनके बीच से चला, और उनमें से किसी ने भी मुझे काटने या नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं की। मैंने पहले कभी इतने साँपों का सपना नहीं देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि 'काल' (समय और मृत्यु का स्वरूप) संसार में हर जगह विचरण कर रहा है। वह भक्तों को हानि नहीं पहुँचाएगा, परंतु पापियों का विनाश करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:48 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1982 (अप्रत्यक्ष) मेरी माँ ने एक साँप का सपना देखा, और उसी दिन हमारे परिवार में कबूतरों से जुड़ी दो अलग-अलग अशुभ घटनाएँ घटीं। इन परस्पर जुड़ी घटनाओं का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, वर्तमान समय अच्छा नहीं है। साँप, जो 'काल' (समय/मृत्यु) का ही एक रूप है, उसे देखना लोगों के लिए समस्याओं का संकेत देता है। यह आने वाले समय का संकेत है, इस बात का चिह्न है कि संसार पर विपत्ति आ रही है। जिन भक्तों को ऐसे स्वप्न या दृश्य दिखाई देते हैं, मेरा मानना है कि यह उनके लिए एक चेतावनी है। यह आगे आने वाले बदलते, कठिन समय की चेतावनी है। ऐसे शकुन घर के भीतर और बाहर दोनों जगह प्रकट हो सकते हैं, और यदि परिवार के किसी एक व्यक्ति को ऐसा स्वप्न आता है, तो यह सबके लिए संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 44:47 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1983 जैसे-जैसे ये कठिन समय निकट आ रहा है, हम अपनी भक्ति कैसे बढ़ा सकते हैं?

उत्तर: जैसा कि मैंने कहा है, त्रिकाल संध्या का अभ्यास करके और श्रीमद्भागवत का पाठ करके आप भक्ति के नौ रूपों ('नवधा भक्ति') को प्राप्त करेंगे। इसमें ज्ञान, प्रेम और हरिनाम-संकीर्तन के द्वारा की गई भक्ति सम्मिलित है। यदि आप शीघ्रता से अपनी भक्ति बढ़ाना चाहते हैं, तो श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध से 'गोपी लीला' (गोपियों की लीलाओं) के अध्यायों को बार-बार पढ़िए। एक महीने तक इसका पाठ करने के बाद आपकी भक्ति बहुत बढ़ जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 46:26 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1984 क्या भगवान कन्नौज आएँगे?

उत्तर: मुझे निश्चित रूप से नहीं पता, परंतु वे कन्नौज अवश्य जाएँगे क्योंकि यह एक पवित्र स्थान है। भगवान भारत के सभी तीर्थस्थलों का भ्रमण करेंगे, जिनमें कन्नौज भी शामिल है। परंतु समझिए, भक्त की भक्ति की शक्ति सर्वोपरि है। हमें भविष्य के लिए मार्गदर्शन और सुरक्षा मिल रही है। इसलिए माधव का नाम जपते रहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि भगवान शारीरिक रूप से कहाँ प्रकट होंगे। जहाँ भी कोई भक्त भक्ति से नाम जपता है, भगवान वहीं उपस्थित हैं। यह किसी राजनीतिक दौरे जैसा नहीं है; यह एक दिव्य संबंध है। जहाँ सच्ची भक्ति होती है, भगवान स्वयं वहाँ जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 47:33 · 24 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1985 नवरात्रि के सातवें दिन, जब मैं माँ काली की मूर्ति को माला अर्पित कर रही थी, तो उनके हाथ से एक चूड़ी गिरकर टूट गई। फिर दूसरी चूड़ी गिरी, पर वह अखंड रही। मैंने उसे आशीर्वाद के रूप में रख लिया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसके द्वारा माँ एक संकेत दे रही हैं। इसका अर्थ है कि आने वाले समय में संसार में अनेक स्त्रियाँ विधवा होंगी, और बहुत से लोग मरेंगे। परंतु उन्होंने आपको आशीर्वाद दिया। जो चूड़ी गिरी पर टूटी नहीं, वह इस बात का संकेत है कि भक्तों की रक्षा होगी। आपकी भक्ति बचेगी, और भक्त का पति भी बचेगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:50 · 24 अक्टूबर 2023

सत्र 111 · प्रश्न 1986–2011

L117 - श्री जगन्नाथ संस्कृति की उत्पत्ति ? | पण्डित काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 30 अक्टूबर 2023 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 1986 पंडित जी, मेरा ब्रह्म ज्ञान (दिव्य ज्ञान) के विषय में एक प्रश्न है। भगवद्गीता में भगवान कहते हैं कि जो भी मृत्यु के समय मुझे स्मरण करता है, वह सीधे मेरे धाम को प्राप्त करता है। परंतु हमारे सद्गुरु, जिनका नाम मैं नहीं लेना चाहता, इस समय एक मामले के सिलसिले में जोधपुर जेल में हैं। वे ब्रह्म ज्ञानी संत हैं, और वे कहते हैं कि ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति को सीधे मोक्ष मिल जाता है। तो पंडित जी, जीवन के अंत में नारायण या राम का नाम जपकर भगवान के धाम को प्राप्त करने वाले व्यक्ति की स्थिति ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने से अलग है, या दोनों एक ही हैं?

उत्तर: देखिए, पहले शास्त्रों के अनुसार चलते हैं। शास्त्रों के अनुसार, शुकदेव जी ने ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया था। शुकदेव जी श्रीमद्भागवत के प्रथम श्रोता थे, और उन्हीं की पवित्र धारा के माध्यम से आज हम भागवत सुन रहे हैं। उन्हें भगवान शिव से ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हुआ था। सुमेरु पर्वत पर लोमश मुनि ने भी ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया; वे अमर हैं। काग भुशुंडी का भी वर्णन है कि वे अमर हैं और सुमेरु पर्वत पर निवास करते हैं, उन्होंने भी ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया है। तो जो ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसकी मृत्यु नहीं होती। वे इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकते हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं, अर्थात् वे देवताओं से भी परे हैं। परंतु जब बात मुक्ति या मोक्ष की आती है, तो वह अलग है। यदि किसी को मोक्ष मिलता है, तो वह गोलोक वैकुंठ जाता है। और मोक्ष कैसे प्राप्त होता है? कहा जाता है कि अनेक जन्मों तक शुभ कर्मों के फल संचित करने के बाद, जब कर्म शुद्ध हो जाते हैं — ऋषि-मुनि और संत हर जन्म में कर्म करते हैं और प्रयास करते हैं। वे उस कर्म को अगले जन्म में ले जाते हैं, और फिर अगले जन्म में। उसके बाद, अंतिम जन्म में जब मृत्यु आती है, यदि अंतिम क्षण में राम या कृष्ण या भगवान का नाम होठों पर आ जाए, तो मुक्ति प्राप्त होती है। उसके लिए बार-बार जन्म लेना पड़ता है और बार-बार कर्म करना पड़ता है। परंतु गीता यह भी कहती है कि यदि कोई व्यक्ति, संसार में रहते हुए भी, मुझसे प्रेम करता है, सब कुछ मुझे समर्पित कर देता है, और सदैव फल की आसक्ति के बिना निष्काम कर्म करता है, और निरंतर भगवान का नाम जपता है, तो जब उसकी मृत्यु होती है, तो उसे भी सहज ही, बहुत कम समय में, एक ही जन्म में मुक्ति मिल जाती है। उसे वैकुंठ या गोलोक में स्थान मिलता है। यह कर्म के माध्यम से भगवान की कृपा है। इसलिए कर्म आवश्यक है। कोई कितना भी ज्ञान प्राप्त कर ले या कितना भी बड़ा विद्वान बन जाए, उससे गोलोक वैकुंठ या मोक्ष प्राप्त नहीं होता। ब्रह्म ज्ञान, जैसा मैंने कहा, देवताओं से परे है। मुक्ति प्राप्त करने के लिए हमें कर्म करना होगा, और वह कर्म भगवान कृष्ण से जुड़ा होना चाहिए। जो कृष्ण से जुड़े हैं, जो कृष्ण से प्रेम करते हैं और उनके भक्त हैं, और जो निरंतर कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानते हैं, उनकी मृत्यु होने पर वे कृष्ण के धाम को प्राप्त करते हैं, जिसे मुक्ति कहते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 07:07 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1987 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मेरा नाम जयेश है। मैंने आपसे पहले अपनी मकर राशि के बारे में बात की थी; मेरे ज्योतिषी कहते हैं कि 2025 में अच्छा समय आएगा, पर आप कहते हैं कि 2025-26 में खतरनाक समय आएगा। मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि मैं इस्कॉन से भी जुड़ा हूँ, और वहाँ एक दर्शन है जो मुझे कभी समझ नहीं आता। वे कहते हैं कि विष्णु और महाविष्णु भी श्रीकृष्ण से आते हैं, पर मैंने हमेशा यही सुना है कि श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के अवतार हैं। तो इसमें थोड़ा विरोधाभास लगता है।

उत्तर: देखिए, शास्त्र कहता है, 'एते चांश-कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' (ऊपर वर्णित सभी अवतार या तो भगवान के अंश हैं या अंशांश हैं, परंतु भगवान श्रीकृष्ण स्वयं आदि पुरुषोत्तम भगवान हैं)। स्वयं भगवान कौन हैं? महाविष्णु। और इसमें कोई भेद नहीं है। यह हमारी मानवीय अज्ञानता के कारण है कि कुछ लोग ऐसी बातें कहते हैं, पर वास्तव में जो कृष्ण हैं, वही विष्णु भी हैं। उनमें कोई भेद नहीं है। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:00 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1988 पंडित जी, मैं मैत्री संध्या करता हूँ। अपने सपनों में मैंने कई बार खुद को आकाश में उड़ते हुए देखा है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, हमारी त्रिकाल संध्या की परंपरा मानवता को कलियुग से सत्ययुग तक ले जाने वाला एक पवित्र तत्व है। दूसरा, यह मनुष्य के लिए मोक्ष (मुक्ति) और वैकुंठ (भगवान का धाम) प्राप्त करने की सबसे बड़ी परंपरा है। जो लोग इस सिद्धांत का पालन करेंगे, वे भविष्य और वर्तमान के बारे में जान जाएँगे। और जब सत्ययुग स्थापित होगा, तब लोगों को यात्रा करने के लिए किसी परिवहन व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होगी। लोग इच्छानुसार कहीं भी जा सकेंगे, जल पर चलकर या आकाश में उड़कर। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं कि समय बदलने वाला है; यह उन्हें भविष्य दिखाता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:18 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1989 मेरी बहन, पांचाल, की सगाई में बाधाएँ आ रही हैं। ऐसा क्यों हो रहा है, पंडित जी? वह स्त्री संध्या करती है और भागवत भी पढ़ती है।

उत्तर: थोड़ा-सा मंगल दोष (एक ज्योतिषीय दोष) है। उसके लिए एक काम कीजिए। उससे कहिए कि वह भगवान कृष्ण की गोपी लीला (गोपियों के साथ की दिव्य लीलाओं) के बारे में पढ़े। और साथ ही, बाल गोविंद (बालकृष्ण) की छवि को हृदय में रखकर, जैसा मैंने बताया है वैसे त्रिकाल संध्या करे, और थोड़ी गोपी लीला पढ़े। और यदि संभव हो, तो उससे कहिए कि वह गाय को कुछ खिलाए।

► यह उत्तर सुनें · 13:55 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1990 तो, मैं यह जानना चाहती थी कि यह कब तक होगा, या होगा भी या नहीं।

उत्तर: होगा। देखिए, मैडम, यह इसी वर्ष, 2024 तक हो जाएगा। कोई समस्या नहीं है। बस इतना कीजिए, और हो जाएगा। शायद जल्दी ही हो जाए। हाँ, एक प्रस्ताव आएगा और वह तय हो जाएगा। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:32 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1991 मेरा प्रश्न यह है, और यह मुझे हमेशा परेशान करता है — इस Kali Yuga में, क्या केवल किसी कर्म का विचार मन में आने से ही पाप लगता है? जैसे, यदि हमें शराब पीने की इच्छा हो और हम अपने मन को शांत कर लें, या यदि स्त्री की कामना जागे और हम अपने मन को शांत कर लें। या फिर पाप तभी लगता है जब हम वह कर्म कर लें? कृपया मार्गदर्शन कीजिए, महाराज जी।

उत्तर: देखिए, जैसे यह विचार आपके मन में आता है, वैसे ही इस भौतिक संसार में बहुत से लोगों के मन में भी आता है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जब हम सड़क पर गाड़ी चला रहे होते हैं, तो बहुत सारे वाहन चल रहे होते हैं, और दुर्घटना की संभावना हमेशा बनी रहती है, पर सबके साथ दुर्घटना नहीं होती। यदि दुर्घटना होने से पहले गाड़ी को अच्छे से नियंत्रित कर लिया जाए, तो वह बच जाती है। इसी प्रकार, मनुष्य का कर्म और उसकी मानसिकता उसी चलती हुई गाड़ी के समान है। हमारे मन के तीन पहलू होते हैं: एक 'सुमन' (अच्छा मन), एक 'विमन' (विमुख मन), और एक 'कुमन' (बुरा मन)। 'सुमन' हमेशा अच्छे कर्म करना चाहता है। 'विमन' सफलता से विमुख रहता है, और 'कुमन' बुरे कर्मों की ओर ले जाता है। यदि हम अपने मन की पवित्रता से उस गाड़ी को इस तरह नियंत्रित कर सकें कि कोई बुराई न हो, तो बिलकुल भी पाप नहीं लगता, क्योंकि यह एक स्वाभाविक बात है। ऐसे विचार तो ऋषियों और संतों के मन में भी आते हैं, और वे उन्हें नियंत्रित कर लेते हैं, जैसे आप करते हैं। इसलिए प्रसन्न रहिए, इसमें कोई पाप नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:03 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1992 मैंने जोधपुर जेल में बंद ब्रह्मज्ञानी गुरु के बारे में पहला प्रश्न सुना। मैं उन्हें जानता हूँ और उनके प्रवचन सुने हैं; वे अच्छे गुरु हैं और उन्होंने अनाथालय और वृद्धाश्रम खोलने जैसी बहुत सारी समाजसेवा की है। तो क्या ऐसा है कि कोई गुरु अच्छे लोगों को ज्ञान देने का कार्य भी कर रहा हो, तब भी उस गुरु को अपना प्रारब्ध भोगना ही पड़ता है?

उत्तर: देखिए, गुरु तो गुरु है। गुरु को भगवान के समान आदर देना चाहिए। इस संसार में हर गुरु का सम्मान होना चाहिए, क्योंकि गुरु परंपरा मानवता की सहायता करती है और लोगों को दिशा देती है। इस धरती पर ऐसे कई पवित्र गुरु आए हैं जिन्होंने बहुत सारे परिवर्तन लाए और लोगों को बदला। मैं सभी गुरुओं का सम्मान करता हूँ। और मैं यह भी चाहता हूँ कि जो कोई भी किसी गुरु परंपरा में है, यदि उसकी अंतरात्मा कहती है कि यह सही है, तो वह प्रसन्नतापूर्वक उसका पालन करे। और गुरु के नियमों का पालन करने से उनमें भगवान श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम विकसित होगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:58 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1993 पंडित जी, Bhavishya Malika पुस्तक में लिखा है कि यह पहला भाग है। दूसरा भाग कब आएगा?

उत्तर: दूसरा भाग तैयार हो रहा है। आपको मिल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:18 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1994 2022 के बाद, जब धर्म की स्थापना होगी और Satya Yuga आरंभ होगा... अन्य Satya Yuga में भी राक्षस थे, तो क्या इस Satya Yuga में भी राक्षस होंगे?

उत्तर: नहीं, तब राक्षस थे। यह बहुत ही मूल्यवान और अच्छा प्रश्न है। देखिए, युग चक्र अलग है। चार युग होते हैं: सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। और एक और युग होता है, भक्तों और भगवान का युग, जिसे हम अनंत युग कहते हैं, जिसे संगम युग भी कहा जाता है। वह अनंत युग Kali Yuga के बाद आता है। यह चारों युगों के भक्तों का समागम है। इसमें न कोई राक्षस होता है और न कोई पाप। इसमें केवल भक्त और भगवान होते हैं। दोनों के साथ मिलकर यह युग एक हज़ार वर्ष तक चलता है। इसे अनंत युग कहते हैं। और अनंत युग में कोई राक्षस नहीं होंगे। सब भगवान विष्णु के प्रेमी भक्त होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:51 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1995 पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि श्रीमद्भागवत के दो-तीन अध्याय पढ़ने से मुझे जितना आनंद मिलता है, उतना ही आनंद भगवान श्रीराम के कुछ भजनों से या उनकी किसी छोटी-सी लीला से भी मिल जाता है। तो मैं क्या करूँ? क्या मैं रामचरितमानस और भगवान श्रीराम की लीलाओं को अधिक महत्व दूँ, या श्रीमद्भागवत को? मुझे थोड़ी दुविधा है।

उत्तर: भगवान श्रीराम का नाम जपने से मनुष्य को शांति मिलती है। यह एक पवित्र तत्व है। राम का नाम शांति का कारण है। आपको रामचरितमानस पढ़ना चाहिए, इससे बहुत आनंद मिलता है। हर सनातनी को इसे पढ़ना चाहिए क्योंकि यह हमारी पवित्र धरोहर है, जो भगवान की कृपा से प्राप्त हुई है। किंतु भागवत पढ़ने से मनुष्य की आयु बढ़ेगी। और जिस युग की ओर हम बढ़ रहे हैं, उसमें हर घर में भागवत पढ़ा जाएगा। सब भागवत पढ़ेंगे और Satya Yuga के मनुष्य बनेंगे। इसलिए, युग के अनुसार हमें आचरण करना आवश्यक है। यदि कोई Satya Yuga का मनुष्य बनना चाहता है, तो उसे भागवत पढ़ना ही होगा। इसीलिए मैं आपसे कह रहा हूँ, यह समय की आवश्यकता है। क्योंकि Satya Yuga आ रहा है। यदि आप पहले से ही इसे पढ़ना आरंभ कर देंगे, तो भगवान की कृपा बढ़ेगी। राम की कृपा भी रहेगी, और भागवत पढ़ने के साथ-साथ 'राम' का जप भी करते रहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:00 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1996 मेरे मित्र और रिश्तेदार, इतना सब बताने के बाद भी, वही कारण देते हैं: '2012 के लिए भी तो यही भविष्यवाणी की गई थी।' तो मैं उन्हें कैसे समझाऊँ?

उत्तर: मैं आपको 2012 के बारे में बताता हूँ। हमारे पास आपसे कहीं अधिक जानकारी है। 2012 में एक क्षुद्रग्रह (asteroid) पृथ्वी की ओर बढ़ रहा था, और NASA तथा सभी वैज्ञानिक निश्चित थे कि वह टकराएगा, जिससे महाविनाश होगा और मानव समाज समाप्त हो जाएगा। यह जानकारी विश्व के सभी देशों में ज्ञात थी। पर भगवान ने उसे रोक दिया। NASA समझ ही नहीं पाया। भगवान Kalki ने उसी दिन रात 12 बजे पृथ्वी की रक्षा की और उस क्षुद्रग्रह को दूर रखा। फिर वह क्षुद्रग्रह पृथ्वी के पास से होकर निकल गया, जो NASA को पता नहीं चला। हमें यह पता है। तो जो लोग कहते हैं कि 2012 में कुछ नहीं हुआ, उनके लिए हमारे पास प्रमाण है। उस दिन भगवान ने इस पृथ्वी को बचाया, इसीलिए आज हम यहाँ हैं। और अगली बार यह क्षुद्रग्रह पृथ्वी से टकराएगा। मैंने 14 महीने पहले इसका उल्लेख किया था। देखिए, भक्तों के लिए ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। भगवान के प्रति भक्ति और शास्त्रों में श्रद्धा ही महत्वपूर्ण है। जो भक्त नहीं हैं, Kali Yuga के 'ज्ञानी लोग', वे तरह-तरह की बातें कहेंगे। पर हमारे पास जानकारी है कि 2012 में भगवान ने पृथ्वी की रक्षा की थी, जो NASA को पता नहीं चला। तो समय की प्रतीक्षा कीजिए। उस समय विनाश होगा। तब लोग क्या कहेंगे? हमारा किसी से कोई विवाद नहीं है। हम मानव सभ्यता का कल्याण चाहते हैं। भगवान मानवता का उद्धार चाहते हैं। इसीलिए हम यह कार्य कर रहे हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:49 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1997 पंडित जी, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, कहते हैं कि वेंकटेश्वर स्वामी Kali Yuga के अवतार हैं। आप कहते हैं कि Kalki अवतार जगन्नाथ मंदिर से आ रहे हैं। तो फिर वेंकटेश्वर स्वामी के अवतार का प्रयोजन क्या है? वे क्यों हैं? कृपया पहले इसका उत्तर दीजिए।

उत्तर: वेंकटेश्वर स्वामी, तिरुपति जी, जो बद्रीनाथ में हैं — वे सब जगन्नाथ ही हैं। वे सब एक ही हैं। और यदि किसी शास्त्र में लिखा है कि वेंकटेश्वर स्वामी ही जगन्नाथ हैं, तो वह आपको समझाने के लिए और आपके भक्ति-भाव की पवित्रता के लिए है। भगवान संसार में अनेक रूपों में विद्यमान हैं, पर वे एक ही हैं। और वे ही Kalki अवतार हैं। इसमें क्या अंतर है? इधर-उधर की बातें क्यों सोचना? भगवान के अनेक नाम हैं, अनेक अवतार हैं, अनेक रूप हैं, और अनेक धाम हैं। पर जब वे अवतार लेते हैं, तो वे सब उन्हीं की दिव्य शक्ति से होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 24:58 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1998 पिताजी, परसों मुझे ब्रह्ममुहूर्त में एक स्वप्न आया। मैं एक बड़े हॉल में बैठा था, और मुझसे Trisandhya का पाठ करने को कहा गया, जो मैंने किया। थोड़ी देर बाद, एक माता-स्वरूपा महिला, जो शिक्षिका जैसी लग रही थीं, उन्होंने मुझसे कहा कि वहाँ उपस्थित सब लोगों को Trisandhya सिखाओ। जब मैंने उन्हें सिखाना शुरू किया, तो मैं बार-बार अटक रहा था। फिर मेरी अचानक नींद खुल गई।

उत्तर: देखिए, आने वाले समय में दिव्य माँ भक्तों की Trisandhya की परीक्षा लेंगी, और शायद उन्होंने आपकी परीक्षा ले भी ली है। वह समय आएगा जब सभी भक्त एक हॉल में बैठाए जाएँगे और उनकी परीक्षा ली जाएगी। यह सब विनाश के अंतिम समय में होगा। तो भगवान ने आपको यह दिखाया है। ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न सत्य होते हैं, और ऐसी परीक्षा होगी। इसीलिए हम लोगों से कहते हैं कि त्रिकाल संध्या का अभ्यास करें और आनंद से रहें। यह मानवता के कल्याण के लिए है, यह भगवान की कृपा है, एक वरदान है। आप उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए। दूसरा भाग, जो दूसरों को सिखाने का था जहाँ आप अटक गए, उसका अर्थ है कि धर्म प्रचार के कार्य में शायद आपको कुछ और या कुछ बेहतर करने की आवश्यकता है। दिव्य माँ ने आपको बस यही दिखाया है।

► यह उत्तर सुनें · 27:09 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 1999 कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं यह कार्य ठीक से कर सकूँ, मेरी ओर से कोई त्रुटि न हो।

उत्तर: श्री माधव, जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 28:44 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2000 महोदय, जब से मुझे Bhavishya Malika के बारे में पता चला है, विवाह में मेरी रुचि ही समाप्त हो गई है। मैं विवाह योग्य आयु की हूँ, और मेरी बड़ी बहन भी। अब हमें विवाह करने में कोई रुचि नहीं है। ऐसा लगता है कि हमें Trisandhya करने और प्रभु की सेवा के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना चाहिए। क्या आप हमें बता सकते हैं कि भगवान माधव ने हमारे लिए क्या योजना बनाई है?

उत्तर: देखिए, बेटी, मैं आपको बताता हूँ। अपने सांसारिक कर्तव्य निभाइए, विवाह कीजिए, सब कुछ कीजिए। क्योंकि ईश्वर-प्राप्ति गृहस्थ जीवन के माध्यम से ही होती है। गृहस्थ का जीवन वैराग्य का सर्वोच्च रूप है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। इसलिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, विवाह कीजिए, और प्रसन्नता से रहिए। घर में अपने पारिवारिक कर्तव्यों का पालन कीजिए, सबके साथ अच्छे संबंध बनाए रखिए, और जब समय मिले, तो मैत्रिक संध्या का अभ्यास कीजिए, जैसा मैंने बताया है।

► यह उत्तर सुनें · 28:54 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2001 भगवान माधव ने हमारा विवाह-प्रस्ताव कहाँ तय किया है?

उत्तर: आपका विवाह-प्रस्ताव... देखिए, बेटा, प्रयास करते रहिए। आपके माता-पिता हैं। भगवान की कृपा से हो जाएगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 29:58 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2002 मेरा एक प्रश्न था। जैसा कि मालिका में कहा गया है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने पूर्व जन्म में पितामह भीष्म थे, और लाल बहादुर शास्त्री द्वापर युग में युधिष्ठिर थे। तो पिताजी, आप भी इतना बड़ा कार्य कर रहे हैं, मालिका पर प्रवचन दे रहे हैं। आप भी पहले भगवान के साथ रहे होंगे, द्वापर युग या त्रेता युग में। क्या आपके पास ऐसी कोई जानकारी है?

उत्तर: देखिए, बेटा, इस विषय पर सार्वजनिक रूप से चर्चा करना अच्छा नहीं है। इस पर हम कभी अलग से चर्चा करेंगे। क्योंकि देखिए, कुछ गुप्त बातें होती हैं जिन पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, विशेषकर आज के सोशल मीडिया के साथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:19 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2003 मेरा एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। कुछ दिन पहले मैंने इसी गूगल मीट में सुना था कि एक महिला को 'श्वेत तुलसी' का स्वप्न आया था। आपने कहा था कि महाप्रभु जी आगे चलकर लंदन से श्वेत तुलसी लाएँगे। श्वेत तुलसी को पहचानने के लिए उसके क्या लक्षण हैं?

उत्तर: देखिए, श्वेत तुलसी का पौधा दूध जैसा होता है। यह सत्य युग के आरंभ का एक तत्व है। जब नित्य युग आरंभ होगा, तब उस तत्व को भारत आना ही होगा। वह देखने में सामान्य तुलसी के पौधे जैसा ही लगता है, पर पत्ते थोड़े बड़े होते हैं, और उसका रंग पूरी तरह दूध जैसा होता है। उसकी उपस्थिति से संसार में कल्याण, सुख और शांति आती है।

► यह उत्तर सुनें · 31:47 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2004 क्या उसके पत्ते सफेद होते हैं?

उत्तर: देखिए, उसके पत्ते तो देवताओं के लिए भी दुर्लभ हैं। कोई बात नहीं, जब वह आएगी तब उस पर बात करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:55 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2005 मैंने हाल ही में एक नर्मदेश्वर शिवलिंग मँगवाया है, और उसके साथ एक पंचमुखी रुद्राक्ष भी आया। क्या लड़कियाँ रुद्राक्ष धारण कर सकती हैं?

उत्तर: मेरे सिद्धांतों के अनुसार लड़कियों के रुद्राक्ष धारण करने का कोई विधान नहीं है। यदि वे उसकी पूजा कर सकें तो बेहतर है। मेरे मत में रुद्राक्ष धारण करना हर किसी के लिए नहीं है। केवल वे ही रुद्राक्ष धारण करने के योग्य हैं जो त्रिसंध्या करते हैं और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। परंतु आजकल यह एक फैशन बन गया है, और सब लोग पहनते हैं। फिर भी मेरे विचार से रुद्राक्ष की पूजा करना और उसे भगवान शंकर के पास रखना ही बेहतर है। यह बहुत अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 33:25 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2006 पिछले महीने मैंने आपसे अपने बेटे और अपने घर के बारे में बात की थी। लेकिन अब नवरात्रि के दौरान, दीपक की लौ में हर दिन बहुत अजीब-अजीब आकृतियाँ बन रही थीं। एक रात मैंने जो धूप जलाई थी, उसके धुएँ ने एक बड़ा गोल घेरा बना लिया जो पूरे घर में घूमता रहा, पर जब मैंने उसे रिकॉर्ड करने की कोशिश की तो वह गायब हो गया। फिर, जब मैं अपने बेटे को उसके हॉस्टल से लेने के लिए निकल रही थी, तो रासलीला दर्शाती मेरी राधा-कृष्ण की मूर्तियों की पूरी सजावट तेज आवाज के साथ गिर गई। मूर्तियाँ तो ठीक रहीं, पर बाकी सब गिर गया। यह नवरात्रि ऐसे संकेतों से भरी रही है, और दो बार पूजा के बाद जब मैं अपने घर के मंदिर से बाहर आई तो मेरे कपड़े फट गए। मेरे घर में हो रही इन सब अजीब घटनाओं का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह किसी बुरे समय का संकेत है। चिंता मत कीजिए, आप त्रिकाल संध्या करती हैं, इसलिए भगवान से प्रार्थना कीजिए। क्या आपका कोई शत्रु है? यदि वे कुछ कर भी रहे हों, तो चूँकि आप त्रिकाल संध्या कर रही हैं, उसका प्रभाव आप तक नहीं पहुँच सकता और न ही आपको हानि पहुँचा सकता है। त्रिकाल संध्या ऐसा शक्तिशाली तत्व है जो किसी भी तपस्या से बड़ा है। इसीलिए उनका प्रभाव आप तक नहीं फैल सकता। संध्या करती रहिए, और दिन में दो बार श्रीमद्भागवत का पाठ कीजिए। अपने नियमित अभ्यास के अनुसार भागवत का एक अध्याय पढ़िए, और भगवान कृष्ण का दशम स्कंध दो बार पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 34:23 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2007 पंडित जी, आपने अपने प्रवचन में कहा था कि भगवान जगन्नाथ तीन धर्मों के प्रतीक हैं। क्या आप इसे विस्तार से बताएँगे?

उत्तर: तीन धर्म नहीं, वे अनंत कोटि ब्रह्मांडों के सभी धर्मों के प्रतीक हैं। इसीलिए वर्ष में एक बार पतित पावन रथ यात्रा होती है। जाति, धर्म या संप्रदाय चाहे जो भी हो, किसी भी धर्म या मत के लोग उनके रथ की रस्सी पकड़कर उसे खींच सकते हैं। वे उनके दर्शन कर सकते हैं और उनका प्रसाद पा सकते हैं। इसीलिए भगवान जगन्नाथ सबको दर्शन देने के लिए मंदिर से बाहर आते हैं। ब्रह्मांड में किसी भी जाति या धर्म के लोग उनके दर्शन कर सकते हैं। इसीलिए वे सभी धर्मों के संगम हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:13 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2008 पंडित जी, आपने ईसाई धर्म के प्रतीक, क्रॉस, का भी उल्लेख किया था। वह भगवान जगन्नाथ में कहाँ है?

उत्तर: देखिए, यह बताना मेरे लिए आवश्यक नहीं है। मैंने किसी विशेष धर्म का नाम नहीं लिया था। भगवान ही ब्रह्मांड हैं, और उनके गुण तथा महिमा सर्वव्यापी हैं। वे संसार के एकमात्र ऐसे देवता हैं जो रथ यात्रा में बाहर निकलते हैं, और सभी धर्मों के लोग भगवान का रथ खींचते हैं, उनके दर्शन करते हैं और भेंट अर्पित करते हैं। वे बाहर इसलिए आते हैं क्योंकि पुराणों में लिखा है कि भगवान सभी ब्रह्मांडों के समस्त मनुष्यों के उद्धार के लिए मंदिर छोड़ते हैं, क्योंकि अनेक लोग विभिन्न कारणों से मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाते। बस यही इसका सार है। इस पर अधिक सोचना आवश्यक नहीं है। जितना समझ सकें, उतना समझिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:09 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2009 पंडित जी, आपने कहा था कि यदि लोग अब भी पाप करना बंद कर दें और धर्म के मार्ग पर चलें, तो भगवान को धर्म की पुनः स्थापना के लिए हस्तक्षेप नहीं करना पड़ेगा (अर्थात् विनाश का चरण नहीं आएगा)। क्या ऐसा संभव है?

उत्तर: यह पूरी तरह सत्य है। यदि लोग सत्यनिष्ठा की ओर मुड़ जाएँ, यदि जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और भगवान का नाम जपते हैं तथा धर्म में जीते हैं, वे सत्य युग की ओर बढ़ें... यदि सब ऐसा करें, तो सत्य युग स्थापित हो जाएगा। क्यों नहीं होगा? भगवान सदा क्षमाशील हैं। अभी भी समय है।

► यह उत्तर सुनें · 39:13 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2010 पंडित जी, भगवान तो पहले ही पृथ्वी पर आ चुके हैं, तो फिर यह भक्ति...

उत्तर: भगवान आएँगे या नहीं... वे आने ही वाले हैं। मैं इतना ही कहूँगा: मालिका ग्रंथों के अनुसार सत्य युग में संक्रमण होने ही वाला है, भगवान के दर्शन होने ही वाले हैं, और भगवान तथा भक्तों का मिलन होने ही वाला है। उसके लिए भक्ति, समर्पण और अपने अंतरात्मा का दर्शन आवश्यक है। इस विचारधारा पर मैं आगे विचार नहीं करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:51 · 30 अक्टूबर 2023

प्रश्न 2011 महाराज जी, बहुत लोगों के मन में एक प्रश्न उठ रहा है: हाल ही में हुए चंद्र ग्रहण का अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर क्या महत्व है? कृपया हमारा मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, इस समय जो चंद्र ग्रहण हुआ... ऐसी चीज़ें पहले के युग परिवर्तनों के समय भी होती थीं, और अब भी हो रही हैं। और आप बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं: एक बड़ा विश्व युद्ध होने जा रहा है। बस इतना ही। हमें इससे क्या लेना-देना? हम अकेले आए हैं, अकेले जाएँगे। चलिए अच्छे कर्म करें, भगवान की शरण लें, मार्ग पर चलें, और मानवता तथा समूचे विश्व के कल्याण के लिए कार्य करें। ठीक है। इस विषय में, हम लोगों को क्यों बताएँ? लोगों को यह बताना कि क्या होगा, हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य मानवता का उद्धार है। यही हमारा उद्देश्य है। अगर हम दूसरी बातें बताएँगे, तो लोग बातें करेंगे और डर जाएँगे। तो उसकी क्या आवश्यकता है? इसीलिए हम नहीं बताते। हम केवल वही बताते हैं जो आपके लिए आवश्यक और हितकर है।

► यह उत्तर सुनें · 40:26 · 30 अक्टूबर 2023

सत्र 112 · प्रश्न 2012–2041

L119 - विश्व के लिए 2024 कैसा होगा? | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 2 जनवरी 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2012 मेरा एक प्रश्न है और एक निवेदन है। प्रश्न यह है कि पिछले एक सप्ताह से कोविड का एक नया JN वेरिएंट सामने आया है जिसमें 4,000 से अधिक मामले हैं। क्या फिर से लॉकडाउन होगा?

उत्तर: पहले, गूगल मीट के बारे में जो निवेदन था, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं भागवत कथा के आयोजनों में बहुत व्यस्त रहा हूँ। मैं राजकोट में था, फिर दिल्ली में कार्यक्रम है, फिर राजस्थान, तो मैं पूरी तरह व्यस्त हूँ। मैं फरवरी में गूगल मीट पर आने का प्रयास करूँगा। अब आपके प्रश्न की बात करें तो जनवरी और फरवरी उतने बुरे नहीं हैं, और मार्च भी नहीं। लेकिन अप्रैल, मई और जून में कुछ बदलाव आ सकते हैं। हो सकता है हो, हो सकता है न हो, लेकिन इस समय यह कोई बड़ी समस्या नहीं होगी। जो कुछ होना है वह वर्ष 2025 और 2026 में होगा; हमें लगता है कि यह 2026 में हो सकता है। तो इन चार महीनों—अप्रैल, मई, जून और जुलाई—में थोड़ा सावधान रहें।

► यह उत्तर सुनें · 09:32 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2013 आप कहते हैं कि हमें दान करना चाहिए, लेकिन दान किसे करें? कभी-कभी सड़क पर लोग पैसे मांगते हैं, लेकिन वे उसका उपयोग शराब या नशे में कर सकते हैं। वैसा दान अच्छा नहीं है, है न? वह तामसिक दान बन जाता है। तो दान के लिए सही व्यक्ति की पहचान कैसे करें?

उत्तर: देखिए, दान तब करना चाहिए जब आपका विवेक कहे। अपने विवेक से पूछिए, और यदि वह सहमत हो, तो बिना किसी समस्या के दीजिए। और ऐसे लोगों को खोजिए जो दिव्यांग हों, विकलांग हों, जिनके पास कोई साधन न हो, या जिनमें काम करने की शक्ति न हो। ऐसे लोगों की सहायता कीजिए और वरिष्ठ नागरिकों की भी सहायता कीजिए। अपने विवेक से परामर्श करके दान कीजिए। गौ-कल्याण के लिए और अन्य पशुओं तथा जीवों के लिए दान कीजिए। इस तरह कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 12:09 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2014 गुरुजी, मेरा प्रश्न है, मेरे दो छोटे बच्चे हैं जो 9 वर्ष के हैं। वे अभी त्रिसंध्या (दिन में तीन बार की प्रार्थना) नहीं कर सकते क्योंकि बच्चों का मन चंचल होता है। तो मैं उनके लिए इसका क्या करूँ? माँ के लिए उसके बच्चे अनमोल होते हैं। अगर मैं करूँ, तो क्या मेरे बच्चों को पुण्य मिलेगा?

उत्तर: देखिए, माँ का पुण्य अवश्य मिलेगा, लेकिन केवल लगभग 10%, उससे अधिक नहीं। माँ का कर्तव्य यह है कि जब आप त्रिसंध्या करें, तो अपने बच्चों को अपने पास बैठाकर सुनाएँ। उन्हें भगवान की लीलाओं और महिमा के बारे में बताइए। धीरे-धीरे बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव बन जाएगा। एक बार जुड़ाव हो गया, तो वे और-और मांगते रहेंगे। बड़ों को बदलने में जितना समय लगता है, उससे कम समय में हम बच्चों को बदल सकते हैं, क्योंकि बच्चे के मन की पवित्रता और उनके मानसिक बल की गति बहुत तेज़ होती है। वे बहुत जल्दी बदलते हैं। तो अपने बच्चों को साथ बैठाइए, उन्हें सिखाइए, और सुनने दीजिए। उनके लिए अच्छा होगा, और वे भी समय के साथ बदल जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 13:17 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2015 नमस्ते पंडित जी, मेरा प्रश्न उन पापी आत्माओं के बारे में है जिनके शरीरों का भगवान नाश करेंगे, और उनके बारे में जो भगवान की शरण लेंगे। उनके शरीर नष्ट होने के बाद उनकी क्या गति होगी? मैं इसके बारे में जानना चाहता हूँ।

उत्तर: जिनकी अपमृत्यु (अकाल या अस्वाभाविक मृत्यु) होती है, उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी। वे भूत-प्रेत बनकर भटकेंगे, क्योंकि मनुष्य के लिए अस्वाभाविक मृत्यु से बचना कठिन है। उनके लिए चाहे जितने शुद्धिकरण संस्कार या श्राद्ध किए जाएँ, उन्हें उसका लाभ मिलना कठिन है। अधिकतर पापी ही अस्वाभाविक मृत्यु का सामना करते हैं। जो संत-महात्मा भगवान की शरण लेते हैं, उनकी कभी अस्वाभाविक मृत्यु नहीं होती। हाँ, मृत्यु होती है, मरणशील के लिए मृत्यु निश्चित है, लेकिन अस्वाभाविक मृत्यु केवल पापियों की होती है। और जिनकी अस्वाभाविक मृत्यु होती है, उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी; वे प्रेत, भूत और पिशाच बनकर भटकेंगे। और जिनकी स्वाभाविक मृत्यु होती है, वे ठीक रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 15:23 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2016 पंडित जी, मैं एक प्रश्न पूछना चाहता था जो बहुत समय से मन में है। भविष्य मालिका ग्रंथ में संत आसाराम जी बापू के बारे में कुछ कहा गया है? वे अभी जेल में हैं; वे कब रिहा होंगे?

उत्तर: देखिए, यह न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में है। यह कलियुग है, और इस युग में मामला न्यायालय में विचाराधीन है, इसलिए मैं उस पर टिप्पणी नहीं कर सकता। हाँ, अगर हम कभी साथ बैठें, तो बात कर सकते हैं, पर इस मंच पर नहीं। फिर भी, हमारी कामना है कि भगवान विश्व के उन सभी संत-महात्माओं की रक्षा करें जिन्होंने समाज के लिए अच्छा कार्य किया है। और एक बात मैं कह सकता हूँ: जो भी किसी भी प्रकार की मुश्किल में है, यदि वह प्रतिदिन 'माधव' नाम का जप करे, तो भगवान उसे आशीर्वाद देंगे, उस पर उनकी कृपा होगी, और सब कुछ सहज हो जाएगा। आप इसका अनुभव स्वयं कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 16:33 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2017 पिछले प्रश्न के संदर्भ में 'म्लेच्छों' (अशुद्ध लोगों) के बारे में आपने कहा कि यदि उनकी मृत्यु भगवान के हाथों होती है, तो वह अस्वाभाविक मृत्यु होगी और उन्हें अच्छी गति नहीं मिलेगी। लेकिन हमने देखा है कि जब कृष्ण और राम ने राक्षसों का संहार किया, तो उन राक्षसों को मुक्ति मिली। तो यदि किसी की मृत्यु भगवान के हाथों होती है, तो उसे मुक्ति नहीं मिलेगी? उसे अच्छी गति नहीं मिलेगी?

उत्तर: देखिए माताजी, जब भगवान ने रावण, कंस और कुंभकर्ण जैसे राक्षसों का वध किया... वह बात अलग थी। उदाहरण के लिए, रावण अपने तीसरे जन्म में भगवान के द्वारपाल के रूप में था। लेकिन बात यह है कि इस समय जो लोग मरेंगे, उनकी मृत्यु देवी माँ और जोगिनी माताओं के हाथों होगी; भगवान स्वयं नहीं करेंगे। वे किसी माध्यम से करवाएँगे। उनकी मृत्यु सीधे भगवान के हाथों नहीं होगी। यह पाँच तत्वों के माध्यम से होगी: रोग, महामारी, आपदा, बाढ़ और अग्नि। यदि किसी की मृत्यु सीधे भगवान के हाथों होती है, तो वह अलग बात है, लेकिन अभी ऐसा नहीं हो रहा है। इस समय भगवान धर्म की स्थापना के लिए आए हैं, और जब धर्म की स्थापना होती है, तो सभी को मुक्ति नहीं मिलती। उदाहरण के लिए, महाभारत युद्ध में जो भी मरे, उन सभी को मुक्ति नहीं मिली, क्योंकि मुक्ति अपने कर्मों पर आधारित होती है। इस युग में 'म्लेच्छों' का संहार होगा। 'म्लेच्छ' कोई जाति नहीं है; यह उनके लिए है जो बुरे कर्म करते हैं, जिनकी नीयत बुरी है, और जो बुराई फैलाते हैं। उनके लिए भगवान, पाँच तत्वों और देवी माँ के माध्यम से, संहार का कार्य करेंगे, इसलिए मुक्ति निश्चित नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 17:37 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2018 पंडित जी, मैंने मालिका के एक हिंदी-ओड़िया संस्करण में पढ़ा कि जब माता जी परीक्षा लेंगी, तो वे 'एकाक्षर' मंत्र, अष्टांग योग और ऐसी अन्य साधनाओं की परीक्षा लेंगी, जिनके बारे में हम नहीं जानते। हम तो केवल त्रिसंध्या कर रहे हैं। यदि हमें ये अन्य साधनाएँ नहीं आतीं, तो हम कैसे बचेंगे?

उत्तर: माताजी, इसीलिए हम त्रिकाल संध्या (त्रिसंध्या) का प्रचार करते हैं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उनकी परीक्षा लेने के लिए देवी माँ स्वप्न में भी आती हैं। यही मंत्र की परीक्षा होगी। लोग यह नहीं जानते और भिन्न-भिन्न बातें कहते हैं, लेकिन ऐसा कुछ नहीं होगा। देवी माँ केवल त्रिकाल संध्या के बारे में ही पूछेंगी। जो इसका पाठ कर सकेंगे, माँ उनकी रक्षा करेंगी।

► यह उत्तर सुनें · 20:03 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2019 पंडित जी, एक बात और थी। वहाँ एक मंत्र लिखा था: 'हरे कल्कि हरे कल्कि, कल्कि कल्कि हरे हरे। हरे अनंत हरे अनंत, अनंत अनंत हरे हरे।' लेकिन हम जो मंत्र जप रहे हैं वह 'हरे माधव' वाला है, जैसे 'हरे कृष्ण'। इन मंत्रों में क्या अंतर है?

उत्तर: माताजी, देखिए, मैं बताता हूँ। साधना में दुर्गा माधव स्तुति, 16 अवतारों के 16 नाम, भगवान के 10 अवतारों का मुख्य श्लोक, और भागवत जी से माधव नाम शामिल है। यही विधान है।

► यह उत्तर सुनें · 21:12 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2020 (मिश्रित ओड़िया/हिंदी से भावानुवाद) आनंद नाम के किसी व्यक्ति ने भगवान के 'धाम' के बारे में अपनी इच्छा के अनुसार लिखा है। यदि कोई अपनी इच्छा से कार्य करता है, तो भगवान का उससे क्या लेना-देना? इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जो चीज़ें लोग अपनी इच्छा से बनाते हैं, वे भगवान की इच्छा हो सकती हैं या नहीं हो सकतीं; हम नहीं जानते। लेकिन आनंद ने कहा है कि लोग उनके 'धाम' के बारे में अपने निर्णय स्वयं कर सकते हैं, जैसे कि वह कोई खेलघर हो। आपको इसे उसी तरह समझना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 22:11 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2021 पंडित जी, आपने बताया था कि विभिन्न पापों के कारण कलियुग की आयु हज़ारों वर्ष घट गई है। इस तर्क से तो कलियुग किसी भी चक्र में अपनी पूरी आयु कभी पूरी ही नहीं कर पाएगा, क्योंकि इस युग में पाप तो हमेशा चरम पर रहता है और धर्म क्षीण रहता है?

उत्तर: देखिए, जब कोई मनुष्य बुरे कर्म करता है तो उसकी आयु घट जाती है, और जब वह अच्छे कर्म करता है तो उसकी आयु बढ़ जाती है। रावण को 220 युगों तक जीने का वरदान था, लेकिन अपने पापकर्मों के कारण वह एक ही युग में, कुछ ही वर्षों में मर गया। इसी प्रकार, कलियुग के पाप हर कोई नहीं करता। लेकिन चूँकि गलत करने वालों की संख्या अधिक है, इसलिए कलियुग की आयु घट गई है। अच्युतानंद ने इस विषय में पहले ही लिख दिया है। इसी कारण कलियुग समाप्त हो चुका है। यह खत्म हो गया है। सत्ययुग के आने में थोड़ा समय लगेगा, लगभग 10-12 वर्ष। इसीलिए आप बेमौसम की घटनाएँ देखते हैं, जैसे आम और फूल बिना मौसम के आ जाते हैं। दुनिया के पेड़-पौधों में, मनुष्यों में और पशुओं में बदलाव आ रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 23:30 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2022 यह कहने में मुझे थोड़ी शर्म आ रही है, लेकिन मैं कुछ बुरी संगत में था और मुझे कुछ बुरी आदतें लग गईं, जैसे हस्तमैथुन करना या अश्लील वीडियो देखना। मैं इसे कैसे छोड़ूँ?

उत्तर: बाबा, देखिए, मनुष्य के लिए सबसे बड़ा सिद्धांत है ब्रह्मचर्य। बुराई बहुत तेज़ी से फैलती है। इसीलिए आपको बुरी संगत से दूर रहना चाहिए। इस पर विजय पाने के लिए यह समझिए कि 100 बूँद रक्त से वीर्य की एक बूँद बनती है, और वही व्यक्ति के मन, कर्म, चरित्र और भविष्य को गढ़ती है। इसलिए जब भी आपके मन में कोई बुरा विचार आए, बैठकर भगवान का ध्यान कीजिए। भगवान के 16 नामों का जप कीजिए। आपका मन स्थिर हो जाएगा और आप एक अच्छे इंसान बन जाएँगे। सब कुछ ठीक हो जाएगा। जब भी मन में कोई बुरा विचार आए, बस आँखें बंद करके बैठ जाइए और 16 नामों का जप कीजिए। सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:47 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2023 हमें भविष्य मालिका के बारे में किससे बात करनी चाहिए?

उत्तर: भविष्य मालिका के बारे में आपको केवल उन्हीं लोगों को बताना चाहिए जो भक्त हैं, जिनमें गहरी रुचि है और जानने की इच्छा है। जो सुनते ही तुरंत और अधिक जानने की उत्सुकता महसूस करें और आपसे बताने को कहें। उन्हें थोड़ा बताइए, और यदि वे और अधिक जानना चाहें, तो केवल उन्हीं को बताइए जिनमें सुनने के लिए सही भाव, सही मनोवृत्ति, पवित्रता और प्रेमपूर्ण भक्ति हो।

► यह उत्तर सुनें · 27:38 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2024 और हमें प्रतिदिन कितना भागवत पढ़ना चाहिए?

उत्तर: प्रतिदिन कम से कम एक अध्याय पढ़ना आवश्यक है। यदि आप इससे अधिक कर सकें, तो यह बहुत आनंददायक है, और आप अवश्य ऐसा कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 27:42 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2025 प्रणाम गुरुजी। जब देवी माँ हमारी परीक्षा लेंगी, तो उन लोगों का क्या होगा जो उत्तर जानते तो हैं पर बोल नहीं सकते?

उत्तर: जो बोल नहीं सकते पर सुन सकते हैं, देवी माँ उन्हें भी आशीर्वाद देंगी।

► यह उत्तर सुनें · 28:38 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2026 2024 की बिल्कुल शुरुआत में ही भूकंप और सुनामी की चेतावनियाँ जारी हो चुकी हैं। और क्या-क्या होने की संभावना है?

उत्तर: 2026 में बड़े भूकंपों की तैयारियाँ चल रही हैं। 2024 में 2023 की तुलना में अधिक भूकंप आएँगे, और बड़े भूकंप भी धरती पर आ सकते हैं। कई जगहों पर ज्वालामुखी फटेंगे — पुराने भी और नए भी। इसके साथ ही बाढ़, वायु से जुड़ी आपदाएँ, अग्नि से जुड़ी आपदाएँ, सांप्रदायिक हिंसा और महामारियाँ होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 28:59 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2027 जैसा आपने कहा, विश्वयुद्ध के दौरान भारत के कुछ शहरों जैसे दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और बैंगलोर पर हमला होगा। बड़े शहर नष्ट हो जाएँगे, लेकिन छोटे कस्बों का क्या होगा?

उत्तर: देखिए, बड़े हों या छोटे, युद्ध के प्रभाव में पहले बड़े शहरों पर प्रहार होगा, लेकिन उसके बाद छोटे कस्बे भी नहीं बचेंगे। और सबसे बड़ी बात यह है कि पंचतत्वों का प्रलय भी चलता रहेगा — भूकंप, बाढ़, अग्नि। उनके प्रभाव से पूरी दुनिया के लोग संकट में होंगे। जो भक्त हैं, जो त्रिकाल संध्या करते हैं और भगवान की शरण लेते हैं, वे 16 मंडल भक्तों के बीच रहकर बच जाएँगे। फिर सत्ययुग का निर्माण होगा, और वे ही सत्ययुग के लोग होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:58 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2028 मेरा दूसरा प्रश्न उन विद्यार्थियों के लिए है जो इस समय कॉलेजों या स्कूलों में हैं। विश्वयुद्ध के दौरान क्या ये सभी स्कूल और कॉलेज बंद हो जाएँगे या नष्ट हो जाएँगे?

उत्तर: बाहरी आक्रमणकारियों द्वारा स्कूलों और कॉलेजों पर हमले होंगे। फिर भी, स्कूल-कॉलेज कभी बंद नहीं होंगे। वे ऑनलाइन भी नहीं होंगे; विद्यार्थी घर पर पढ़ेंगे। शिक्षा जारी रहेगी। धर्म की अंतिम स्थापना तक पढ़ाई में कोई रुकावट नहीं आएगी। हाँ, रुकावट का अर्थ यह है कि स्कूल आना-जाना बंद हो जाएगा, और कुछ जगहों पर परीक्षाएँ स्थगित हो सकती हैं। लेकिन शिक्षा अंत तक चलती रहेगी, क्योंकि बच्चे घर पर रहकर भी पढ़ेंगे। अंतिम क्षणों में परेशानी होगी, क्योंकि तब उन्हें सत्ययुग का नया ज्ञान पढ़ना होगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:56 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2029 गुरुजी, जो लोग त्रिसंध्या नहीं करते, केवल भगवान का नाम जपते हैं, क्या वे बचेंगे?

उत्तर: नहीं। मैं जो आपसे कह रहा हूँ, उसमें कोई बदलाव नहीं होगा। त्रिकाल संध्या तो करनी ही होगी। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो सत्ययुग का व्यक्ति बने और जिसके पास त्रिकाल संध्या का सार न हो। त्रिकाल संध्या सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है; सभी को इसे स्वीकार करना होगा और इसका पाठ करना होगा। इसके द्वारा परिवार का कल्याण होगा, बच्चों का कल्याण होगा, घर का कल्याण होगा, और नौकरी से लेकर पारिवारिक जीवन तक हर चीज़ में शांति रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 31:54 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2030 कल रात मुझे एक सपना आया जिसमें मैं देवकीनंदन ठाकुर जैसे किसी व्यक्ति से कह रहा था कि भगवान कल्कि पृथ्वी पर अवतार ले चुके हैं और विद्या अध्ययन के लिए महेंद्र पर्वत चले गए हैं। मैं यह बड़े विश्वास के साथ कह रहा था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। यह भगवान की इच्छा है कि जो लोग धर्म प्रचार के लिए महान कार्य कर रहे हैं, उन सभी तक भगवान कल्कि का सार पहुँचे। आपने जो देखा कि भगवान कल्कि विद्या अध्ययन के लिए महेंद्र पर्वत गए हैं, वह सही है। भविष्य पुराण और कल्कि पुराण में लिखा है कि भगवान कल्कि महेंद्र पर्वत पर परशुराम से मिलेंगे, जो उन्हें समस्त ज्ञान प्रदान करेंगे और उनके गुरु बनेंगे। यह चल रहा है, गुप्त रूप से हो रहा है, इसलिए इसे जान पाना कठिन है। लेकिन भगवान ने आपको यह संकेत दिया है।

► यह उत्तर सुनें · 33:05 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2031 मैं यह जानना चाहता था कि यदि परिवार के सभी सदस्य त्रिसंध्या न कर रहे हों, तो क्या किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए, जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, वह घर सुख, शांति और समृद्धि से भर जाता है। उन लोगों के जीवन की रक्षा देवी माँ करती हैं और उन्हें देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। संतानें अच्छी निकलती हैं। परिवार बेरोज़गारी, ग्रह-बाधा या तंत्र-मंत्र जैसी सभी समस्याओं से सुरक्षित रहता है। घर में देवताओं का आवाहन करने से बड़ी कोई शक्ति नहीं है। परिवार के सभी लोगों से यह करवाइए। परिवार का कल्याण होगा, और पूरे संसार के लोग सुखी हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 35:23 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2032 अभी हम वैवस्वत मनु के 28वें कलियुग में हैं। आगे आने वाले कलियुगों के लिए, 71वें तक, क्या उनकी अवधि भी केवल 5,000 वर्ष ही होगी, या समय के अनुसार आयु घटती-बढ़ती रहती है?

उत्तर: देखिए, इस युग में पाप बहुत तेज़ी से फैला। अगले युग में वह तेज़ी से फैलेगा या धीरे-धीरे, यह भगवान पर निर्भर करता है। इस युग में जो हो रहा है, वह पहले से लिखा हुआ है, परंतु भविष्य में जो होगा, वह भगवान की इच्छा के अनुसार होगा। अगली बार कलियुग रहेगा भी या नहीं, यह भी भगवान पर निर्भर है। पर मेरे विचार से युगों का चक्र चलता रहता है। युग की अवधि मनुष्य के कर्मों से प्रभावित होती है। यह सब भगवान के नियंत्रण में है, हमारे नहीं। परंतु इस विशेष युग में कलियुग का पाप अत्यधिक फैल गया, और इसी कारण यह समाप्त हो गया है।

► यह उत्तर सुनें · 36:45 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2033 मेरा एक प्रश्न है। इस त्रिकाल संध्या में किस भगवान की पूजा की जाती है?

उत्तर: भगवान महाविष्णु की पूजा की जाती है, और भगवान के सभी प्रमुख अवतारों की पूजा की जाती है। यह भक्ति, समर्पण और नाम-जप के माध्यम से होती है। इसमें कोई मूर्ति या फूल-पत्र का कर्मकांड नहीं है; यह केवल मंत्रों के द्वारा भगवान की शरण में जाना है।

► यह उत्तर सुनें · 38:08 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2034 पंडित जी, जब सत्ययुग आएगा, तो हम उसे कैसे पहचान पाएँगे? सत्ययुग के क्या लक्षण होंगे?

उत्तर: देखिए, सत्ययुग आ रहा है। इसीलिए भारत और विश्व में सनातन धर्म का प्रकाश फैल रहा है। राम मंदिर बन रहा है, लोगों में धार्मिक भावनाएँ जाग रही हैं, और चारों धामों का कायाकल्प हो रहा है। साथ ही, आप बेमौसम की घटनाएँ देखते हैं, जैसे वृक्षों का साल भर फल और फूल देना। यह सत्ययुग के आगमन की शुरुआत है। आने वाले समय में विश्व भर के सभी पेड़-पौधे साल भर हरे-भरे रहेंगे और फल देंगे। चारों धामों का विकास और लोगों का धर्म की ओर मुड़ना — ये सब सत्ययुग के आगमन के माध्यम हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:43 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2035 मैं अपने एक सपने के बारे में पूछना चाहता हूँ। मैंने देखा कि हर ओर पानी ही पानी है, जो साँपों से भरा हुआ है, और मुझे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा था। फिर 10-15 गौ माता आईं और उन्होंने मुझे बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: बाबा, आपके सपने में आपको वैतरणी नरक दिखाया गया, जो साँप और मगरमच्छ जैसे जीवों से भरा हुआ है, जो पापियों को काटते हैं। आपने कुछ अच्छे कर्म किए होंगे, या यह भगवान की कृपा है कि गौ माताओं ने आपको रास्ता दिखाया और इस नरक से बचा लिया। आपको भगवान की त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। आपने अच्छा सपना देखा; उसके माध्यम से आपने नरक भी देखा और उससे मुक्ति भी। इसलिए त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और भगवान माधव की शरण लीजिए। आपका जीवन सार्थक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:18 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2036 मेरा एक और प्रश्न है। 10-12 गाँवों में मैं अकेला हूँ जो भविष्य मालिका सुनकर भक्त बना है। क्या दूसरे लोग भी इसमें जुड़ सकते हैं?

उत्तर: हाँ, आपको दूसरे अच्छे भक्तों, संतों और शुद्ध हृदय वाले लोगों को बताना चाहिए। क्योंकि जब हम बच रहे हैं, तो हमें संसार को और दूसरे अच्छे लोगों को भी बचाने में सहयोग करना चाहिए। आपको इसका प्रचार करना चाहिए। यह बहुत अच्छी बात है कि आप भविष्य मालिका का अनुसरण करते हैं और त्रिकाल संध्या करते हैं। भगवान ने यह देखा और गौ माताओं से आपको नरक से बचवाया। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे नरक में नहीं जाते; उनका जीवन धन्य हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 42:11 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2037 भगवान ने सबको सपने में कुछ न कुछ बताया है, कि वे उन्हें ले जाएँगे। पर मुझे उन्होंने कुछ नहीं बताया। तो क्या इसका मतलब है कि वे मुझे नहीं ले जाएँगे?

उत्तर: वे आपको क्यों नहीं बताएँगे? भगवान की शरण लीजिए। क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? करते रहिए। सोने से पहले माधव का नाम जपिए। माधव आपको दर्शन देंगे, या आपको भविष्य की किसी घटना का दर्शन होगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:20 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2038 मैंने एक सपना देखा जिसमें मुझे माँ लक्ष्मी का 21-22 फुट ऊँचा स्वरूप दिखाई दिया। उन्होंने स्वयं को माधव कहा, मेरे सिर पर हाथ रखा, और मुझे एक गुफा के भीतर रहने को कहा, और उसके प्रवेश द्वार पर अपनी पूरी हथेली रख दी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि माँ योगमाया, माँ राधा रानी और भगवान कल्कि — सब एक ही हैं। जब कोई महाविपत्ति आती है, तो भगवान उन भक्तों को पहले से संकेत दे देते हैं जो त्रिकाल संध्या करते हैं। इसका अर्थ है 'तुम मेरे हाथ के नीचे हो', यानी 'मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।' इसे भगवान का आशीर्वाद समझिए। त्रिकाल संध्या करते रहिए और धर्म के प्रचार के लिए काम कीजिए। भगवान का आशीर्वाद आपके साथ रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:01 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2039 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। मैं नौकरी करता हूँ और रोज़ ऑफिस जाना पड़ता है। क्या हम दोपहर में ऑफिस में बैठे-बैठे निर्धारित स्तोत्रों का पाठ कर सकते हैं?

उत्तर: हाँ, इसमें कोई समस्या नहीं है। आप ऑफिस में बैठकर, रास्ते में, गाड़ी में, या कहीं भी कर सकते हैं। कोई दिक्कत नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 46:05 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2040 मैं भुवनेश्वर श्री क्षेत्र मंडल से जुड़ना चाहता हूँ। उसके लिए मुझे क्या करना होगा?

उत्तर: यदि आप कल्कि मंडल से, यानी 16 मंडल भक्तों से जुड़ना चाहते हैं, तो इस वीडियो के नीचे डिस्क्रिप्शन में दिए गए नंबर पर संपर्क कीजिए। यह नंबर 'कल्कि अवतार' चैनल पर उपलब्ध है। साथ ही, संस्कार टीवी पर रोज़ 8:00 से 8:30 तक जो भागवत कथा आती है, उसके नीचे भी एक नंबर होता है, जिसका आप उपयोग कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:13 · 2 जनवरी 2024

प्रश्न 2041 और क्या हम चलते-फिरते कल्कि महामंत्र का जप कर सकते हैं?

उत्तर: निरंतर माधव नाम का जप कीजिए। माधव स्वयं ही कल्कि हैं। किसी और महामंत्र की आवश्यकता नहीं है। १६ नाम, १० अवतार, दुर्गा माधव स्तुति, श्रीमद्भागवत जी का पाठ, और निरंतर माधव नाम का जप — यही आपको करना चाहिए। कल्कि मंत्र वह नहीं है जो आप समझते हैं; वह 'एकाक्षर' (एक अक्षर वाला) मंत्र है। उसका पालन करना आपके लिए अच्छा रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 48:20 · 2 जनवरी 2024

सत्र 113 · प्रश्न 2042–2064

L120 - भक्तों के लिए 2024 कैसा होगा? | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 16 जनवरी 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2042 मेरा एक प्रश्न था। जैसा कि आप हाल की भागवत कथा में बता रहे थे, जैसे फरीदाबाद वाली और उससे पहले वाली में, कि सब कुछ ८ या १० वर्षों में होने वाला है। तो क्या इसका अर्थ यह है कि अब से और ८-१० वर्ष लगेंगे, या फिर २०२१ से २०३२ तक की कुल अवधि में सब पूर्ण हो जाएगा?

उत्तर: बहुत आनंद की बात है, धन्यवाद। आप भगवान की कथा सुन रही हैं, और सबसे बड़ी बात, समय के साथ आप पर भगवान की कृपा है। यह बहुत सुंदर बात है कि हम जो प्रचार कर रहे हैं, उसका सार आप ग्रहण कर पा रही हैं। पर देखिए माता, भविष्य पुराण में जो लिखा है, उसके अनुसार मीन शनि (शनि का मीन राशि में गोचर) के बाद महाविनाश का समय आएगा। शनि का मीन राशि में संयोग, जो २०२५ से २०२९ तक है, उसमें बहुत सी नई-नई चीज़ें प्रकट होंगी: बाढ़, अग्नि प्रलय, भूकंप, परमाणु युद्ध... यह ८ वर्ष हो सकते हैं, १० वर्ष हो सकते हैं, या उससे पहले भी हो सकता है। क्योंकि भगवान का आगमन निश्चित बताया गया है, और वही होने वाला है। भगवान ने कलम से नहीं लिखा है... मैं जो लिख रहा हूँ, वह भगवान मुझे बता रहे हैं और मैं लिख रहा हूँ। भक्तों के उद्धार और रक्षा के लिए भगवान बहुत से परिवर्तन कर सकते हैं। जब उद्धार होगा, तब उन्हें कोई हानि न पहुँचे, इसके लिए भगवान समय ले सकते हैं, समय दे सकते हैं, इस कार्य को सिद्ध करने के लिए चीज़ों को आगे या पीछे कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 04:00 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2043 पंडित जी, मैं यह पूछना चाहती हूँ कि कुछ दिन पहले मेरे साथ एक बहुत डरावनी घटना हुई। मैं रात को सो रही थी, और लगभग २ बजे मुझे एक बहुत भयानक आवाज़ सुनाई दी। मैं अब तक उलझन में हूँ कि वह माता जी थीं जो मुझे सचेत करने आई थीं या कोई बुरी आत्मा थी। तो पंडित जी, कृपया मुझे बताइए। और मुझसे जो भी भूल हुई हो, उसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ।

उत्तर: देखिए, हर मनुष्य, हर देवता, सभी से भूल होती है। भूल का अर्थ है सीखना और आगे बढ़ना, मानव जीवन की बेहतरी के लिए कुछ सुधार करना। इसमें कोई बुराई नहीं है; आपसे कोई भूल नहीं हुई। और देखिए, यदि आपके मन में ऐसे विचार आते हैं, तो भगवान विष्णु से, भगवान कल्कि से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, यदि मुझसे कोई भूल हुई हो तो कृपया क्षमा कीजिए।' भगवान आपको क्षमा कर देंगे, यह कोई समस्या नहीं है। पर बात यह है कि आधी रात को जो हुआ, वह माता जी थीं। वे हर घर में जा रही हैं और सच्चे भक्तों को सचेत भी कर रही हैं, ताकि वे त्रिकाल संध्या करना आरंभ करें और भगवान की शरण लें। क्योंकि भक्तों के उद्धार का समय अब आ गया है, और सभी देवी-माताएँ और देवता चाहते हैं कि भक्त जहाँ कहीं भी हों, उन्हें छोटे या आवश्यकता पड़े तो बड़े अनुभवों के माध्यम से, या किसी और साधन से, भगवान की शरण में लाया जाए।

► यह उत्तर सुनें · 06:45 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2044 क्या आपने त्रिकाल संध्या करना आरंभ कर दिया है? की है या नहीं?

उत्तर: पंडित जी, मैं सितंबर में संध्या के लिए माधव परिवार से जुड़ी थी। लगभग डेढ़ महीने तक मैंने त्रिकाल संध्या की, पर पंडित जी, बीच में मेरा मन बहुत अशांत हो गया और करने का मन नहीं किया। फिर मैंने दोबारा आरंभ किया, पर मुझे इतनी कठिनाइयाँ आती हैं; कभी स्नान नहीं हो पाता, कभी कुछ और आ जाता है, और छूट जाती है। कोई बात नहीं, दिन में दो बार भी कर सकें तो कीजिए, बेटी। हाँ, आरंभ में कुछ अड़चनें आएँगी, पर आप देखिएगा, समय के साथ यह नियमित हो जाएगी। और इससे आपको इतनी शक्ति मिलेगी कि लोग आनंद से सही समय पर उठकर त्रिकाल संध्या करेंगे। शुरू में थोड़ी परेशानी होती है, पर फिर सब ठीक हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 08:13 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2045 लोग हमसे भविष्य मालिका के अतिरिक्त शास्त्रीय प्रमाण माँगते हैं कि पाप के कारण युग की आयु घट जाती है। यदि मुझे इसका उत्तर मिल जाए, तो उन्हें समझाना आसान हो जाएगा।

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका अंततः सनातन धर्म का ही ग्रंथ है, जिसे सनातन भगवान के शाश्वत पंचसखाओं ने रचा है। यह हमारे अठारह पुराणों की ही तरह एक पुराण है। हाँ, यदि आप अन्यत्र देखना चाहें, तो हमारे श्रीमद्भागवत में भी इसका उल्लेख है। जब कलियुग समाप्त होने को होगा, तब लोगों में आपसी समझ नहीं रहेगी। जाति या पंथ का कोई विचार नहीं रहेगा; कोई भी किसी भी जाति या धर्म में विवाह कर लेगा। पुरुष पुरुष से विवाह करेंगे, और स्त्री स्त्री से। साथ ही, अज्ञानी, असुर-प्रभावित और बलशाली लोगों का समाज में सम्मान होगा। गो माता का दूध कड़वा लगेगा। जब कलियुग के अंत के ऐसे लक्षण प्रकट होंगे... और आज ये सारे लक्षण संसार में दिखाई दे रहे हैं। यदि फिर भी हमें पूर्ण रूप से आश्वस्त होकर पूरी श्रद्धा से कार्य करना है, तो देखिए, यह जगन्नाथ संस्कृति का गुप्त ग्रंथ है, भविष्य मालिका। इसका परम उद्देश्य मानवता का उद्धार है; इसके द्वारा केवल मनुष्य का ही उद्धार होगा, इसीलिए इसे लिखा गया। पर कलियुग के अंत का प्रमाण गर्ग संहिता, सूर्य सिद्धांत और मनुस्मृति में भी है। श्लोक कहता है, 'चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तत्कृतं युगम्, तस्य तावच्छती संध्या संध्यांशश्च तथाविधः', अर्थात् ४४०० वर्षों के बाद, संध्या काल मिलाकर यह ४८०० वर्ष हो जाता है, जिसके बाद कलियुग समाप्त होगा और सत्ययुग आरंभ होगा। कलियुग अब अपने ५१२८वें वर्ष में है। लोगों को जागरूक होना चाहिए। हमारे घर में यदि कोई छोटी-सी समस्या हो जाए, तो हम बैठकर बार-बार उसकी चर्चा करते हैं। अब तो हर दिन पूरी पृथ्वी पर समस्याएँ हैं। और देखिए, राम मंदिर जैसा पवित्र कार्य हो रहा है, और उसमें भी बाधाएँ आ रही हैं। यह कलि का प्रभाव है। इसलिए समय को समझकर और भविष्य मालिका का अनुसरण करके, आपका और संसार का कल्याण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:35 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2046 मैंने पूरी त्रिकाल संध्या कंठस्थ कर ली है, केवल दशावतार (दस अवतार) वाला भाग छोड़कर, जो मुझसे याद नहीं हो पा रहा। इस कारण मैं सुधर्म महासंघ से नहीं जुड़ पा रही हूँ। मुझे कुछ स्वप्न आए: पहले, मुझे अपनी गर्दन पर भार महसूस हुआ और मैं २:३० बजे दूध की गंध के साथ जागी। बाद में, मैंने स्वप्न देखा कि एक लंबा सुनहरा साँप मेरा पीछा कर रहा है, और मैं दौड़कर एक सुनहरे घर में चली गई। सुनामी आई, पर घर में पानी की एक बूँद भी नहीं आई, और साँप बाहर पहरा देता रहा। तो मैं उलझन में हूँ। मैं सब कुछ कर रही हूँ, पर त्रिकाल संध्या के उस एक भाग के कारण महासंघ से नहीं जुड़ पा रही। क्या मुझसे कहीं कोई भूल हो रही है? वह क्या है? मुझे समझ नहीं आ रहा।

उत्तर: देखिए माता, आपने जो पहला स्वप्न देखा, वह माता जी थीं जो आपको ठीक से त्रिकाल संध्या करने के लिए सचेत कर रही थीं। इसीलिए उन्होंने आपको २:३० बजे जगाया और फिर माधव नाम का जप करने पर आपको शांति और नींद मिली। कारण यह है कि वे चाहती हैं कि आप त्रिकाल संध्या में दस अवतारों का श्लोक पढ़ें। यदि आप कंठस्थ नहीं पढ़ पातीं, तो कहीं से देखकर पढ़िए, क्योंकि यह महत्वपूर्ण है। हाँ, पढ़िए,

यही अच्छा है। और दूसरा स्वप्न, सुनहरे रंग का साँप... देखिए माता, वह सत्य है। भगवान ने आपकी रक्षा की; उस घर में पानी नहीं आया, और आप उसी के भीतर रहीं। और जब तक पानी नहीं उतरा, भगवान... क्योंकि भगवान अनंत हैं, भगवान ही नाग भी हैं। क्योंकि शेषनाग अनंत ही भगवान हैं, और भगवान कल्कि भी शेषनाग अनंत तथा भगवान महाविष्णु हैं, जो भगवान श्रीकृष्ण का ही स्वरूप हैं। इसीलिए उन्होंने आपकी रक्षा की। उस साँप ने आपको हानि नहीं पहुँचाई; उसने आपकी रक्षा की, जो बहुत बड़ा आशीर्वाद है। पर माता, देखिए, दशावतार का यह श्लोक आपको पढ़ना चाहिए। देखिए माता, मैं आपको सरल भाषा में बताता हूँ। त्रिकाल संध्या करने के लिए ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करना आवश्यक नहीं है, क्योंकि कुछ लोगों को शारीरिक कष्ट होते हैं या वे भिन्न परिस्थितियों में होते हैं। आप बिना स्नान किए, अपने बिस्तर पर बैठकर, मन से गंगा स्नान करके और तीन बार 'श्री गंगे' कहकर कर सकती हैं। इस प्रकार आप त्रिकाल संध्या कर सकती हैं। दोपहर में तो हम सामान्यतः स्नान करते ही हैं, तो तब कर सकते हैं। और संध्या के समय भी इसी तरह, पहले तीन बार माँ गंगा का नाम लीजिए और फिर त्रिकाल संध्या कर सकती हैं, आप कहीं भी हों। स्नान करने या सारे विधि-विधान निभाने की आवश्यकता नहीं है। भाव ही सबसे महत्वपूर्ण है। आप कर रही हैं, यह बहुत अच्छी बात है। भगवान ने आपको रक्षा और अनुभव दिए हैं। इससे बड़ा सत्य और क्या हो सकता है, माता? आनंद की बात है।

► यह उत्तर सुनें · 12:28 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2047 मैं यह कहना चाहती थी कि मैंने त्रिकाल संध्या करना आरंभ कर दिया है और भागवत पुराण पढ़ना भी शुरू कर दिया है। पर भगवान के लिए यह सब आरंभ करने के बाद भी मुझे बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मेरे घर में लगातार कलह रहती है। मैं सोचती रहती हूँ कि किसी दिन सब ठीक हो जाएगा, पर हो ही नहीं रहा।

उत्तर: देखिए माता, जब भी आप कोई शुभ या धर्म का कार्य करती हैं, बाधाएँ आएँगी। और जो भक्त सत्ययुग के लिए कार्य कर रहे हैं, उनके सामने बाधाएँ पहले आती हैं। पर आप करती रहिए, किसी से मत डरिए। यदि समस्याएँ बढ़ें, तो मन ही मन माधव नाम का जप कीजिए। मैं यह नहीं कह रहा कि ज़ोर से जप कीजिए ताकि सब सुनें; मन ही मन जप कीजिए। आप देखिएगा, समय के साथ सारी समस्याएँ सुलझ जाएँगी। थोड़ा समय लगेगा, क्योंकि भोजन पकाने में भी कुछ समय लगता है, तभी हम खा पाते हैं। उसी तरह, किसी भी शुभ कार्य को सिद्ध होने में कुछ समय लगेगा ही, है न? कुछ समय बाद सब ठीक हो जाएगा। तो आप जो कर रही हैं, करती रहिए। कलह के समय माधव नाम का जप कीजिए। सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:20 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2048 पंडित जी, मेरे घर में बहुत कलह है, शांति नहीं है। मैं दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या करती हूँ और भागवत भी पढ़ती हूँ, फिर भी घर में शांति नहीं है। देखिए, बच्चों का भी पढ़ाई में मन नहीं लगता।

उत्तर: देखिए माता, पूरे संसार में जो कलह है, वह कलि के कारण है। कलियुग का स्वभाव ही है कलह उत्पन्न करना, रोग फैलाना, लोगों को शय्या पर डाल देना, हर घर में बिना कारण झगड़ा कराना, जीवों की हत्या कराना, पाप कराना, मदिरापान कराना और विवाद भड़काना। और आप सत्ययुग का कार्य कर रही हैं। हाँ, आरंभ में ऐसी बातें हो सकती हैं। पर जब ऐसा समय आए, तब माधव नाम का जप कीजिए, और समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। पर देखिए, आपके घर में सब लोग तो त्रिकाल संध्या नहीं करते न? यही कारण है। जैसे समान विचार वाले लोग साथ बैठते हैं तो आनंद आता है। यहाँ, चूँकि सब त्रिकाल संध्या नहीं करते, इसलिए उनके मन और स्वभाव में कलि का प्रभाव बना रहता है। इसी कारण छोटी-छोटी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। देखिए, भक्त उसी को कहते हैं: सारी समस्याएँ देखते हुए भी उन्हें कभी समस्या न माने, बल्कि भगवान का कार्य करता रहे, भगवान का नाम जपता रहे, और सांसारिक बातों को एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दे। तभी आपको शांति मिलेगी। क्योंकि यदि हम उसमें उलझ गए, तो हमें क्या मिलेगा? कभी-कभी यही क्रोध कारण होता है कि पुत्र का पढ़ाई में मन नहीं लगता। क्रोध जहाँ भी जन्म लेता है, पहले वह उसी व्यक्ति को कष्ट देता है जिसे वह आता है, और फिर उसका प्रभाव आसपास वालों को कष्ट देता है। जैसे

आग लगती है तो पहले वही स्थान जलता है, और फिर उसका प्रभाव पूरे संसार पर पड़ता है। यही सिद्धांत है। इसलिए अपने क्रोध से दूर रहिए। मन में जो थोड़ा-सा क्रोध उठता है, वही बच्चों की पढ़ाई में कठिनाई का कारण है। उसे भूल जाइए। क्योंकि भक्त का मन निर्मल होता है। सरल हृदय और पवित्रता के साथ भगवान की शरण में जाइए। अपने कर्तव्यों की उपेक्षा मत कीजिए; अपने सारे कर्म कीजिए, भगवान का नाम जपिए, और शांति मिलेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:50 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2049 पंडित जी, आप कहते हैं कि दान करना चाहिए। हमें कैसे पता चलेगा कि हमने जो दान किया है, वह उचित दान हुआ है?

उत्तर: देखिए माता, जब आपके हृदय में विवेक विराजमान हो... विवेक भगवान का ही एक अंश है। हाँ, यदि आप दान करना चाहती हैं, तो मैं आपसे कहता हूँ, प्रतिदिन गो माता को, छोटे जीव-जंतुओं को, जो भी हो, थोड़ा-थोड़ा दान कीजिए। इससे आपको पुण्य मिलेगा। हाँ, यदि आप बड़ा दान करना चाहती हैं, तो दान करने से पहले अच्छी तरह सोचिए। वहाँ दान कीजिए जहाँ धर्म हो, जहाँ पवित्रता हो, उन लोगों को जो वास्तव में धर्म के कार्य में लगे हैं। देखिए, कुछ बहुत बड़ी संस्थाएँ हैं जिनके पास सारे साधन हैं, पर मुझे कोई सेवा दिखाई नहीं देती। और सेवा का अर्थ है कि जिस विशेष प्रयोजन के लिए किसी से धन एकत्र किया जाता है, उसे उसी प्रयोजन में लगाया जाना चाहिए। और जहाँ उसका सही उपयोग नहीं होता, वहाँ दान देने वाले भी उस कर्म के भागी बनते हैं। इसलिए अपने ही मन और विवेक से पूछिए, 'क्या मुझे सचमुच इस व्यक्ति को दान करना चाहिए?' यदि आपका मन हाँ कहे, यदि आपका विवेक सहमत हो, तो दे दीजिए माता, कोई समस्या नहीं। और भगवान के भक्त को अनुभव होता है, चिंता मत कीजिए। भगवान की शरण लेकर और चिंतन करके, आपको सही मार्ग मिल जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:27 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2050 पंडित जी, यदि मेरे परिवार में मेरे पति माला पर जप नहीं करते, पर मैं 'जय श्री माधव' की माला करती हूँ, तो क्या मैं वह माला उन्हें दे सकती हूँ? क्या उन्हें भी उसका लाभ मिलेगा?

उत्तर: आप पूछ रही हैं कि आप जो जप करती हैं, उसका प्रभाव आपके पति को मिलेगा या नहीं, है न? हाँ माता, अवश्य मिलेगा, पर बहुत अधिक नहीं मिलेगा। उन्हें १०% तक प्रभाव मिलेगा; ९०% आपका ही रहेगा। क्योंकि जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, उस घर के पितरों पर और सारी समस्याओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है; त्रिकाल संध्या से घर पवित्र हो जाता है। और जैसे-जैसे आप त्रिकाल संध्या करती हैं, उसमें आपके पति की रक्षा भी सम्मिलित है। पर आपके पति की रक्षा और भी अधिक होगी... क्या आप भागवत पढ़ती हैं? हाँ, पढ़िए, और अपने पति से कहिए कि वे कम से कम माधव नाम का जप करें, दिन में शायद ११ बार, या जब भी कहीं जा रहे हों, मन ही मन जप कर सकते हैं। यदि वे ऐसा करें, माता, तो उन्हें भी इससे अच्छा फल मिलेगा। और समय के साथ वे भी त्रिकाल संध्या करने लगेंगे। वे कहेंगे, 'मुझे भी त्रिकाल संध्या चाहिए।' क्योंकि समस्याएँ तो देखिए... अभी २०२४ है। २०२५ में, जैसा शास्त्रों में लिखा है, रोग और समस्याएँ आ रही हैं। तो लोग अपनी रक्षा कैसे करेंगे? और त्रिकाल संध्या के अतिरिक्त... देखिए, पहले हमने देखा है कि दवाओं से रोग ठीक नहीं हुए। और अब जो रोग आ रहे हैं, एक साथ दो-चार प्रकार के, उनका किसी भी चिकित्सा पद्धति में इलाज नहीं होगा। यह भी भविष्य पुराण में लिखा है। इसी कारण समय के साथ सब लोग समझ जाएँगे। आपके पति भी आ जाएँगे। तो पहले उन्हें नाम दीजिए, उन्हें माधव नाम जपने दीजिए। माधव नाम के जप से परिवार में शांति आएगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:57 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2051 पंडित जी, जब कोई स्त्री मासिक धर्म में होती है, तो उसे भागवत का पाठ नहीं करना चाहिए। तो जो पुण्य हमें पढ़ने से मिलता है, क्या उस समय सुनने से भी वही पुण्य मिलेगा?

उत्तर: अवश्य मिलेगा, माताजी। माताएँ और इस संसार में, चाहे माता हो या पुरुष, हर किसी को कोई न कोई समस्या रहती ही है। लेकिन बात यह है कि उस समय मंदिर नहीं जाना चाहिए, और घर के पूजा-गृह में पूजा करने का नियम या रिवाज नहीं है। लेकिन अगर कोई पाठ कर रहा है, तो आप दूर बैठकर सुन सकती हैं। और भागवत के अलावा आप त्रिकाल संध्या के मंत्रों का जप भी कर सकती हैं, क्योंकि जप के लिए किसी भी शास्त्र में मनाही नहीं है। मनाही पूजा के लिए है, मूर्ति पूजा के लिए है, भागवत ग्रंथ पढ़ने के लिए है, क्योंकि भागवत में भगवान विराजमान हैं, और उस समय हम उसे स्पर्श नहीं कर सकते। इसलिए वह वर्जित है। लेकिन आप त्रिकाल संध्या के अन्य मंत्रों का जप कर सकती हैं और भागवत सुन सकती हैं। कोई समस्या नहीं है; इससे भी आपको पुण्य फल मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:10 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2052 मुझे एक और बात पूछनी है। दो दिन पहले मैंने स्वप्न देखा कि मैं सुबह 4:30 बजे गंगा में स्नान कर रही हूँ और पूजा कर रही हूँ। मुझे यह संकेत मिला, इसका क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: आपने स्वप्न देखा कि आप सुबह 4:30 बजे गंगा में स्नान कर रही हैं और माँ गंगा की पूजा कर रही हैं। ठीक है, देखिए माताजी, आप माता दुर्गा माधव स्तुति पढ़ती हैं ना? क्योंकि एक शास्त्र में लिखा है कि माँ गंगा भी एक देवी हैं। और जैसे माँ दुर्गा पूजा से प्रसन्न होती हैं, वैसे ही वे भी प्रसन्न होती हैं। गंगा स्नान से जो पुण्य मिलता है, वह पुण्य आपके भाग्य में मिलना लिखा है, इसीलिए आप इसे दुर्गा माधव स्तुति में देखती हैं। माँ गंगा प्रसन्न हुई और उन्होंने आपको यह दिखाया। यदि संभव हो, यदि आपके पास गंगाजल है, तो मन में उनका स्मरण करके अपने पूरे शरीर पर छिड़क लीजिए, और पाँच मिनट माँ गंगा की स्तुति कीजिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 25:16 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2053 मेरा प्रश्न यह था कि हम सबको 'नाम जप' करने को कहा जाता है। मुझे समझ नहीं आता कि इससे हमें लाभ कैसे होता है। केवल भगवान का नाम जपने से इतना लाभ कैसे हो सकता है?

उत्तर: देखिए, भगवान कृष्ण ने गीता में अर्जुन से कहा था कि किसी को भी मोक्ष प्राप्त करने के लिए, किसी भी व्यक्ति को अपना मन शुद्ध करने और भगवान के प्रति भक्ति जगाने के लिए, नाम और मन में स्थित तत्व के बीच बार-बार होने वाला संबंध मन के मैल को दूर करता है। और जब मन का मैल दूर हो जाता है, तब मनुष्य के मन में भगवान के प्रति श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और समर्पण जागता है। इसीलिए किसी भी मनुष्य के लिए... देखिए, दस्यु रत्नाकर पहले वाल्मीकि नहीं थे। लेकिन देवर्षि नारद ने उनसे राम नाम जपने को कहा। परंतु वे 'राम' भी नहीं जप सके, इसलिए उन्हें उल्टा 'मरा मरा' जपना पड़ा। इसी को जपते-जपते वे महर्षि वाल्मीकि बन गए और रामायण की रचना की, और संसार के सभी मुनियों-ऋषियों में सर्वोपरि हो गए। इसलिए नाम जप से व्यक्ति की भक्ति, श्रद्धा और प्रेम जागृत होते हैं। और भगवान को प्राप्त करने के लिए पहले नाम जप आवश्यक है। इसीलिए मैं कहता हूँ, निरंतर नाम जप कीजिए। क्योंकि जो भी भक्त नाम जप करता है, भगवान उस पर कृपा करते हैं। और यदि आप भी करेंगे, तो आपको भी कृपा मिलेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:43 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2054 मेरा एक प्रश्न था... अभी 2024 है, और मैंने ज़्यादातर यही सुना है कि भविष्य मालिका को कोई गंभीरता से नहीं लेता। उनका तर्क है कि युग इतने वर्षों का होता है और कुछ नहीं होने वाला, सब कुछ सामान्य ही रहेगा।

उत्तर: बेटा, जो ग्रंथ ओडिशा में रचा गया, भविष्य पुराण, वह एक पुराण है। वह सत्य है। वह भगवान के भक्तों के उद्धार के लिए रचा गया था, और मेरे मत में उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। हाँ, देखिए, जिन लोगों में भक्ति नहीं है, जिनमें दिव्य ज्ञान नहीं है, वे शास्त्रों पर विश्वास नहीं करेंगे। उनसे मुझे कुछ नहीं कहना। लेकिन जो भक्त हैं, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें प्रतिदिन अनुभव होते हैं। और यदि मैं आपको बताऊँ, पूरे संसार में, यदि उत्तरी ध्रुव पर ज्वालामुखी फट रहा है, लगभग 1.5 किलोमीटर ऊँचा, और यदि 10-15 ऐसे फट जाएँ, और उत्तरी ध्रुव पिघल जाए, तो पृथ्वी का संतुलन क्या होगा? हम अपनी आँखों से आपदाएँ देखते हैं, फिर भी कहते हैं कि कुछ नहीं होगा। यह कैसे हो सकता है? शास्त्र ने इस बारे में लिखा है। अच्युतानंद ने लिखा, जब उन्हें भगवान की कृपा से दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई, उन्होंने लिखा कि उत्तर की बर्फ पिघलेगी, अर्थात बर्फ के पर्वत पिघलेंगे और पूरी पृथ्वी को जलमग्न कर देंगे। और आज हम उसका प्रमाण देख रहे हैं। पृथ्वी पर बार-बार भूकंप आते हैं, बाढ़ें आती हैं जहाँ समुद्र अपने तट लाँघ जाता है, हर दूसरे महीने बवंडर आते हैं, और लोग बादल फटने से परेशान हैं। रेगिस्तान में बाढ़ आ रही है। पृथ्वी पर एक मूलभूत परिवर्तन हो रहा है, और जगन्नाथ मंदिर से सारे संकेत मिल चुके हैं। यदि हम सनातनी हैं, तो हमें जगन्नाथ संस्कृति पर विश्वास करना होगा। जो विश्वास नहीं करते, समझिए उनके भाग्य में नहीं है। इसलिए जो लिखा है, वह होगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:29 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2055 भागवत में लिखा है... मन से 'मैं' और 'मेरा' का भाव कैसे हटाएँ?

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। 'मैं, मेरा, तू, तेरा'... राम मंदिर का जो कार्य चल रहा है, उसमें भी लोग 'मैं, मेरा, तू, तेरा' में उलझ गए हैं, जबकि वह एक पवित्र कार्य है और सभी प्रसन्न हैं। कलि का प्रभाव किसी को नहीं छोड़ता। तो कोई बात नहीं। देखिए, 'मैं, मेरा, तू, तेरा' से छुटकारा पाने के लिए, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, जो माधव नाम का जप करते हैं, और जो शुद्ध मन से निरंतर भगवान को अपने हृदय में विराजमान करते हैं... जब भगवान हृदय में विराजमान हो जाएँगे, तब 'मैं, मेरा, तू, तेरा' समाप्त हो जाएगा। जब तक वे विराजमान नहीं होते, अर्थात भक्ति के द्वारा भगवान कुछ समय के लिए आते हैं, और फिर अपनी ही माया और मोह के कारण हम उन्हें फिर भूल जाते हैं। सुबह से शाम तक, शाम से सुबह तक, 24 घंटे, जब भगवान हमारे हृदय में विराजमान रहते हैं, और हम जानते हैं कि यह शरीर तो केवल एक माध्यम है, एकमात्र सत्य भगवान हैं, तब संसार के सभी तत्वों से 'मेरा' और 'तेरा' आपके मन से चला जाएगा। यह कीजिए: निरंतर भगवान की शरण में रहिए, 24 घंटे भगवान का ध्यान अपने हृदय में रखिए, और सोचिए कि यह मानव जीवन केवल एक माध्यम है। भगवान ने मोक्ष का यह अवसर दिया है कि कुछ अच्छे कर्म करें। यदि मैं 'मैं, मेरा, तू, तेरा' में उलझ गया, तो मेरा जीवन व्यर्थ चला जाएगा। फिर एक समय आएगा जब पूरा संसार मिथ्या लगेगा, और केवल भगवान ही सत्य लगेंगे। और संसार की सारी दुर्लभ वस्तुएँ, सारी सुंदरता आपको ऐसी लगेगी मानो उसका कोई मूल्य ही नहीं। क्योंकि सुंदर और कुरूप में भेद होता है, इसीलिए मनुष्य 'मैं, मेरा, तू, तेरा' में फँस जाता है। और जब पूरा संसार सुंदर नहीं लगेगा, केवल भगवान ही सुंदर लगेंगे, तब यह भाव नहीं रहेगा। ऐसी स्थिति तक पहुँचने के लिए निरंतर नाम जप कीजिए और विश्वास कीजिए कि यह जीवन थोड़े समय के लिए है। मैं अपना सारा समय भगवान के नाम जप में लगाऊँगा। और शेष समय, अपनी शारीरिक शक्ति से, अपने कार्य के द्वारा, मैं अपने परिवार, माता-पिता की सेवा और परिवार के लिए जीविका अर्जन में लगूँगा। तब आपको भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:05 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2056 जैसे भगवान सत्य युग और त्रेता युग में आए, अपने दर्शन दिए, और अपनी लीलाएँ कीं, क्या भगवान कलियुग में भी उसी प्रकार आएँगे और अपनी लीलाएँ करेंगे?

उत्तर: देखिए, 'लीला' का अर्थ क्या है? लीला का अर्थ है कि हर युग में भक्त भगवान से प्रार्थना करते हैं, तपस्या करते हैं, और वरदान प्राप्त करते हैं। और भक्तों को जो वरदान मिले हैं, उन्हें पूर्ण करने के लिए भगवान आते हैं और भक्तों से मिलते हैं, जिसे लीला कहते हैं। क्योंकि भगवान संसार के सुख-दुःख से परे हैं; वे उनमें सहभागी होते हैं, परंतु उनसे प्रभावित नहीं होते। इसलिए इस कलियुग में भी भगवान कल्कि और भक्तों के बीच एक बहुत बड़ी लीला होगी, और नित्य रास भी होगा। जैसे राम अवतार और कृष्ण अवतार में उन्होंने एक परिवार बनाया, इसीलिए आज हम हिंदू और सनातनी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहते हैं। भगवान सभी भक्तों के साथ उसी परंपरा को फिर से लाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:35 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2057 मैं आपसे एक निवेदन कर रही हूँ। मैं कभी भगवान के भागवत सत्संग में नहीं गई हूँ। मेरी इच्छा है कि अयोध्या में 2 मार्च से 8 मार्च तक जो भगवान राम का आयोजन हो रहा है, उसमें जाऊँ। उसके लिए मुझे चाहिए कि आप मेरे लिए भगवान से प्रार्थना करें। जय श्री माधव।

उत्तर: माताजी, आप जा सकती हैं। देखिए, जो नंबर हमारे यूट्यूब पर है, जो लोग अयोध्या कथा में आना चाहते हैं... देखिए, वहाँ बहुत सारे लोग जाएँगे, कोई बात नहीं, हमें उसकी व्यवस्था करनी है। तो बस संपर्क कीजिए, मतलब बात कर लीजिए। क्योंकि यदि आप जा रही हैं, तो उसी के अनुसार आपके ठहरने और भोजन की व्यवस्था हमारे सुधर्म महासंघ या अयोध्या मंडल द्वारा की जाएगी। कोई कष्ट नहीं होगा। बस यदि आप जाना चाहती हैं, तो पहले से संपर्क कीजिए और अपना नाम दर्ज करा लीजिए। ठीक है, माताजी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:03 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2058 मैं सुधर्म संघ के बारे में जानना चाहती हूँ। मैं इसमें कैसे जुड़ सकती हूँ, और यह क्या है? मैं इसमें नई हूँ। जब से मुझे इसके बारे में पता चला, कुछ दिनों से मैं त्रिकाल संध्या कर रही हूँ, और मैं जुड़ना चाहती हूँ। मैं क्या कर सकती हूँ?

उत्तर: देखिए, माताजी, पहले मैं आपको सुधर्म महासंघ के बारे में बताऊँगा। सुधर्म महासंघ का अर्थ है देवताओं और भगवान का संघ। जब भगवान पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, और सभी देवता, यक्ष, गंधर्व और सिद्ध आते हैं, तब भगवान सुधर्म महासंघ का गठन करते हैं। और इस समय, कलियुग के अंत में, भगवान कल्कि और सभी भक्तों तथा देवताओं के बीच यह सुधर्म महासंघ बन रहा है। इसकी नींव 16 मंडल हैं, और 16 मंडलों से आगे सुधर्म महासंघ है, जो देवताओं और भगवान का सबसे बड़ा संगठन है, केवल वैश्विक स्तर पर नहीं, बल्कि असंख्य ब्रह्मांडों तक फैला हुआ। और कलियुग के अंत में इस संगठन का कार्य यह होगा कि ब्रह्मा जी, शंकर जी, और सनातन भगवान आदि विष्णु कल्कि तथा देवताओं की उपस्थिति में सुधर्म महासंघ का एक संविधान तैयार किया जाएगा। वह संविधान पूरे विश्व में लागू होगा, जिसमें भारत विश्व गुरु बनेगा, और पूरे विश्व में सत्य युग की स्थापना होगी। सुधर्म संघ यह कार्य करेगा। यदि आप सुधर्म संघ से जुड़ना चाहती हैं, माताजी, तो यूट्यूब वीडियो के नीचे जो नंबर दिखता है, उसे देखिए और संस्कार टीवी पर भी। हमारी कथा टीवी पर प्रतिदिन रात 8:00 से 8:30 बजे तक प्रसारित होती है, श्रीमद् भागवत कथा। उसके नीचे भी एक नंबर है। उस नंबर पर संपर्क करके, हमारे सुधर्म महासंघ के जो लोग ऑनलाइन सत्संग कराते हैं, उनके साथ आप जुड़ सकती हैं। आप सभी भक्तों के अनुभवों की जानकारी पा सकती हैं और और अधिक प्रोत्साहन प्राप्त कर सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:27 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2059 प्रभु जी, मेरा आपसे एक प्रश्न था। आने वाले समय में आप अपनी भागवत और इस भविष्य मालिका का प्रचार करने मथुरा कब आएँगे, प्रभु जी?

उत्तर: देखिए, मथुरा में मथुरा मंडल है, गोप वृंदावन मथुरा मंडल। वहाँ बहुत से भक्त हैं जो त्रिकाल संध्या से जुड़े हैं और भगवान की शरण लेना चाहते हैं। आप भी यूट्यूब पर नीचे विवरण में नंबर देखिए, उस नंबर पर संपर्क कीजिए, और मथुरा मंडल में राकेश से संपर्क कीजिए। उनसे संपर्क कीजिए, और जब भी कुछ होगा, वे आपकी पूरी सहायता करेंगे। ठीक है, बेटा? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:36 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2060 हम भगवान की लीलाओं के दर्शन कैसे कर पाएँगे?

उत्तर: माताजी, आप त्रिकाल संध्या कीजिए। सात दिन और कीजिए, और आपको भगवान की लीलाओं के कुछ दर्शन होंगे। और समय के साथ आपको उनकी कृपा भी प्राप्त होगी। समय की प्रतीक्षा कीजिए और भक्ति से त्रिकाल संध्या कीजिए। आपको भगवान की लीलाओं के दर्शन अवश्य होंगे। ठीक है, माताजी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:07 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2061 जो त्रिकाल संध्या करते हैं, क्या वे सत्य युग को प्राप्त करेंगे?

उत्तर: देखिए, कोई भी मनुष्य, चाहे वह असुर ही क्यों न हो, यदि वह त्रिकाल संध्या करता है, तो उसे प्रभु की संपूर्ण कृपा प्राप्त होगी। यदि आप भी करेंगे, तो आपको भी प्राप्त होगी। और मैं आपको एक बात बताऊँ: इस पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य के लिए सत्य युग में जाने का सबसे बड़ा शक्ति-स्रोत त्रिकाल संध्या ही होगी। पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य सत्य युग में नहीं जाएगा जो त्रिकाल संध्या नहीं कर रहा है। और मैं सबसे निवेदन करता हूँ कि त्रिकाल संध्या करें, प्रभु की कृपा प्राप्त करें, सत्य युग के मनुष्य बनें, और दिव्य कृपा से अपने जीवन को सार्थक बनाएँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:55 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2062 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह था कि जब हम त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं, और प्रभु का नाम जपते हैं, तो क्या प्रभु हमारी त्रिकाल संध्या को स्वीकार करते हैं? मेरा मतलब है, क्या वे हमारी सुनते हैं?

उत्तर: देखिए, माता जी, जब आप त्रिकाल संध्या करती हैं, तो प्रभु आपके मन के एक-एक भाव को आनंदपूर्वक सुनते हैं। और वे केवल सुनते ही नहीं; वे आपके दुःख, आपके कष्ट और आपकी विपत्तियों को भी काट देते हैं। और त्रिकाल संध्या के द्वारा स्वप्न में प्रभु के दर्शन भी होते हैं। क्या आपको स्वप्न में प्रभु के दर्शन हुए हैं? मुझे दो स्वप्न आए हैं, लेकिन मैं कुछ समय बाद बताऊँगी। ठीक है, कल गूगल मीट में बता देना। देखिए, यदि आपको प्रभु के दर्शन हो रहे हैं, तो क्या इसका अर्थ यह नहीं कि वे सुन रहे हैं? वरना रात में स्वप्न में आप उन्हें कैसे देखतीं? त्रिकाल संध्या क्या करती है, इसमें कोई संदेह नहीं है। देखिए, महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती ही योगमाया हैं, माँ दुर्गा हैं। और उन्होंने आपको अपने दर्शन इसलिए दिए क्योंकि आप त्रिकाल संध्या करती हैं। क्योंकि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, प्रभु उन्हें कभी निराश नहीं करते। वे उन्हें किसी न किसी रूप में दर्शन या अनुभूति देते हैं, और यह नियमित रूप से और निरंतर होता रहता है। और आप कर रही हैं, माता जी, तो चिंता मत कीजिए। आपको प्रभु की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। जो भी त्रिकाल संध्या करता है, आप सहित, उसे प्रभु की कृपा प्राप्त होती है। प्रभु उनकी पीड़ा और दुःख को भी सुनते और समझते हैं। ठीक है, माता जी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:03 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2063 पंडित जी, मुझे एक समस्या है। मैं बाथरूम में बहुत समय बिताती हूँ, और उसके कारण मैं त्रिकाल संध्या नहीं कर पाती।

उत्तर: देखिए, माता जी, यदि आप ठीक समय पर नहीं भी कर पातीं, तो भी त्रिकाल संध्या करने से आपका सब कुछ अवश्य ठीक हो जाएगा। देखिए, माता जी, जो भी त्रिकाल संध्या करता है, प्रभु उसे आशीर्वाद देते हैं और उसकी सारी समस्याओं का समाधान करते हैं। लेकिन देखिए, यदि आप सही समय पर नहीं कर पातीं, तो दूसरे समय पर कर लीजिए, पर करना बंद मत कीजिए। यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। लेकिन एक काम कीजिए, नारायण कवच का पाठ कीजिए। मैं कुछ दिनों में नारायण कवच की पीडीएफ उपलब्ध कराने का प्रयास करूँगा; यह सभी भक्तों के उद्धार के लिए आवश्यक है। घर पर इसका पाठ कीजिए। नारायण कवच पढ़िए ताकि आपके शरीर के तत्वों में कुछ परिवर्तन हो। लेकिन त्रिकाल संध्या भी कीजिए, बंद मत कीजिए। नारायण कवच भी पढ़िए। आपके शरीर में जो छोटी-सी समस्या है, जिसके कारण ऐसा हो रहा है... अपने हृदय में माधव नाम का जप कीजिए। यदि त्रिकाल संध्या में देर हो जाए, तो कोई बात नहीं। जब समय मिले तब कर लीजिए। उसकी एक रिकॉर्डिंग है। उस रिकॉर्डिंग को सुनिए। यदि आप नहीं कर पातीं, तो किसी समय धीरे-धीरे उसे सुन लीजिए, शायद सोते समय। उसका प्रभाव अवश्य होगा। क्योंकि त्रिकाल संध्या करने से आप जिस समस्या का सामना कर रही हैं, उससे शायद बाहर निकल सकें। लेकिन यदि आप नहीं कर पातीं, तो रिकॉर्डिंग है। जो नंबर दिया गया है, उस पर संपर्क कीजिए। उनके पास त्रिकाल संध्या की रिकॉर्डिंग वाले छोटे स्पीकर हैं। उसे सुनिए। ठीक है, माता जी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:34 · 16 जनवरी 2024

प्रश्न 2064 मैंने आज सुबह समाचार देखा। साउथ वेस्ट आइलैंड्स में 800 साल पुराना ज्वालामुखी फटना शुरू हो गया है। वहाँ के लोगों को निकाला गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: 800 साल पुराना ज्वालामुखी फट गया... यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। देखो, बेटा, महाभारत युद्ध होने से पहले, रावण की मृत्यु से पहले, उस युग में भी ज्वालामुखी बार-बार फटते थे, क्योंकि वह पृथ्वी पर युग परिवर्तन का समय था। और इस समय, कलियुग से सत्य युग में संक्रमण के लिए, ज्वालामुखी बार-बार फटेंगे। और ज्वालामुखी विस्फोटों के साथ, पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन और बहुत बड़े भूकंप होंगे। यह समीकरण

उसी कारण से बन रहा है। आपने बहुत अच्छी जानकारी साझा की है। और जो लोग इस सत्संग में मुझसे जुड़े हैं, आप भी इसका थोड़ा विश्लेषण कीजिए। गूगल पर खोजिए कि एक वर्ष में कितनी बार ज्वालामुखी फटते हैं। 10 साल पहले ऐसा नहीं था, 5 साल पहले भी नहीं था। और पिछले 4-5 वर्षों से यह बढ़ता जा रहा है। यह प्रलय काल का संकेत है। आप सब त्रिकाल संध्या कीजिए ताकि मानव सभ्यता के कल्याण के लिए भगवान की पवित्र कृपा बनी रहे। इसीलिए हम इसका प्रचार करते हैं। बहुत से लोग इसका विरोध करते थे, लेकिन आज लोगों को इसके अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। त्रिकाल संध्या करने के बाद आज लोग प्रसन्न हैं। 10-15 वर्षों से बिछड़े हुए परिवार फिर से मिल गए हैं। 10-15 वर्षों से निःसंतान लोगों को संतान प्राप्त हुई है। बड़ी समस्याओं से परेशान लोग उनसे मुक्त हो गए हैं। और अब हर कोई मेरे पास और हमारे पास त्रिकाल संध्या के नियम सीखने आता है। इसलिए, समय बिगड़ता जा रहा है। अब समय नहीं बचा है। इस समय को समझकर आप त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव की शरण लीजिए। अब कलियुग नहीं है; यह सत्य युग के आने का समय है। और इस समय में हम पूरे विश्व में बड़े भौगोलिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवर्तन देख रहे हैं। इसका विश्लेषण कीजिए, समय के बारे में सोचिए, प्रभु की शरण में जाइए, और प्रभु की कृपा प्राप्त कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:26 · 16 जनवरी 2024

सत्र 114 · प्रश्न 2065–2098

L121 - तृतीय विश्व युद्ध की तैयारी | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 3 मार्च 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2065 पंडित जी, भारत-पाकिस्तान युद्ध किस वर्ष होना निश्चित है?

उत्तर: देखिए, सुनिए। मालिका शास्त्र के अनुसार, भविष्य पुराण के अनुसार, भारत-पाकिस्तान युद्ध मीन शनि चलन (शनि का मीन राशि में संचरण) के दौरान होगा। और 29 मार्च को, शाम 5:29 बजे, शनि का संचरण होगा। सब कुछ भगवान पर निर्भर है। देखिए, युद्ध तो केवल एक माध्यम है, परंतु पंचतत्वों की प्रलय भी आएगी। निकट भविष्य में बड़ी बीमारियाँ भी आ रही हैं। वे एक-दो महीने में आ सकती हैं, या छह महीने में। निश्चित रूप से ऐसा लगता है कि वे अगले वर्ष आएँगी; इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, मानवता के उद्धार के लिए, जो कुछ मैंने आपसे कहा है, वह सब कीजिए। उसी में सबका कल्याण है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:04 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2066 जी, पंडित जी, मैं कह रहा था कि यह बहुत अद्भुत था कि आप प्रवचन के लिए आए, और आपको देखकर मेरा हृदय बहुत प्रसन्न होता है। पंडित जी, मुझे इस आध्यात्मिक धारा पर सात महीने हो गए हैं, और अब मुझे कोई समस्या नहीं आती। इस मार्ग पर चलते हुए और भागवत कथा का पाठ करते हुए मुझे बहुत अच्छा लगता है। अयोध्या में यह मेरा दूसरा सम्मेलन है। मैं आपका प्रवचन सुनने आया था और आपके बिल्कुल पास बैठा था। मैं आपसे कुछ कहना चाहता था, लेकिन वहाँ बहुत लोग थे, और आप भी बहुत थके हुए थे, इसलिए मैं संकोच कर गया। तो, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, पंडित जी...

उत्तर: हाँ, सुनो, बेटा। हम कल बात कर सकते हैं, कोई बात नहीं। हम अवश्य व्यक्तिगत रूप से बात करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 02:49 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2067 मेरा एक प्रश्न है, पिताजी। मालिका में कहा गया है कि यह घटना तब होगी जब शनि मीन राशि में होंगे और वह गुरुवार होगा। लेकिन 29 मार्च शनिवार है, गुरुवार नहीं। कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: मैं यह पहले ही समझा चुका हूँ। भगवान इसे आगे या पीछे कर सकते हैं। भविष्य मालिका में अच्युतानंद ने लिखा है, 'जो मैं लिख रहा हूँ, प्रभु उसे बदल सकते हैं।' वे इसे आगे या पीछे कर सकते हैं, और दिन भी बदल सकते हैं। और यदि शनि का बड़ा संचरण शनिवार को होता है, तो यह और भी बुरा होगा। गुरुवार को होता तो मानव कल्याण के लिए होता, लेकिन शनिवार को शनि का संचरण और अधिक शक्तिशाली तथा विनाशकारी हो जाता है। यह प्रभु की इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 04:39 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2068 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह था कि मैं विद्यालय में संध्या करती हूँ, इसलिए मुझे बैठकर ही 'जयघोष' करना पड़ता है। क्या यह गलत है? क्या मैं कोई भूल कर रही हूँ?

उत्तर: कोई बात नहीं, आप इसे कुर्सी पर बैठकर, खड़े होकर, वाहन में, कहीं भी कर सकती हैं। त्रिकाल संध्या के मंत्र शक्तिशाली हैं, और यह भगवान विष्णु की आराधना है। आप इसे कहीं भी कर सकती हैं। आपको लाभ मिलेगा; कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 06:05 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2069 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें शेषनाग जी थे और उनके ऊपर एक छत्र था, और मैं वहाँ अकेली एक प्राचीन-सी दिखने वाली कोठरी में थी। वे पाँच फनों वाले नाग थे और उन पर सोने का छत्र था। वे अपनी जीभ निकाले मेरी ओर आ रहे थे, कुछ कहने ही वाले थे, तभी मेरा स्वप्न टूट गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका में लिखा है, 'अनंत मस्तक उड़ि छत्र', जिसका अर्थ है कि भक्त अनंत (शेषनाग) के सिर पर सोने का छत्र थामे खड़े होंगे। अनंत ही संपूर्ण विश्व के शासक होंगे। इस समय अनंत और माधव की दिव्य लीला होगी, और अनंत माधवी ही कल्कि हैं। आपने जो देखा, वह सोने का छत्र, स्वर्ण युग (सत्य युग) का सूचक है। माता जी, यह दिव्य शक्ति आपको प्रकट हुई। आप भाग्यशाली हैं। साथ ही, त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव की शरण लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 07:22 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2070 क्या गौतम बुद्ध भगवान के अवतार थे?

उत्तर: बेटा, गौतम बुद्ध भगवान के नौवें अवतार हैं। धर्म की स्थापना के लिए हुए दस अवतारों में से वे नौवें हैं। यह संस्कृत भागवत पुराण में पूर्ण रूप से वर्णित है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 09:44 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2071 पिताजी, मैं यह पूछना चाहती हूँ, आपने बताया था कि जब सात दिनों तक अंधकार छाया रहेगा, तब भगवान सबको 'अंजन' देंगे। वह क्या है, पिताजी? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: देखो बेटी, Kali Yuga के अंत में, धर्म की अंतिम स्थापना के समय, जब सभी भक्तों की रक्षा होनी है, Satya Yuga के आरंभ से ठीक पहले, सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा। उस समय भगवान भक्तों को 'अंजन' या कोई मंत्र देंगे—मैं उसे प्रकट नहीं करना चाहता—जिसके द्वारा भक्त उस अंधकार से सुरक्षित रहेंगे। उन्हें युग परिवर्तन के उस पवित्र तत्व का बोध हो जाएगा। भक्त बड़े उत्साह के साथ कार्य करेंगे, और उन्हें किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होगी। Bhavishya Malika में लिखा है कि भगवान Kalki ऐसा एक तत्व प्रदान करेंगे, जिसे मैंने 'अंजन' कहा, जिसके द्वारा भक्त देख सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 11:02 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2072 तो यह सभी 64 करोड़ लोगों को नहीं मिलेगा, पिताजी?

उत्तर: सभी 64 करोड़ को नहीं मिलेगा, बेटी। सुनो, केवल वही भक्त, जो भगवान के निकट हैं, जो भगवान के निर्देश पर पूरे विश्व में Sanatana Dharma का प्रचार करेंगे, उन्हीं को यह शक्ति प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 12:24 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2073 जी पिताजी, पर जब हम अभी यह किसी को बताते हैं, तो वे प्रेम से सुन तो लेते हैं, पर विश्वास नहीं करते।

उत्तर: देखो, Kali Yuga के लोग किसी पर विश्वास नहीं करते। और सुनो बेटी, जो भक्त हैं, वे विश्वास करेंगे। जो भक्त नहीं हैं, उन्हें चाहे कितना भी बताओ, वे विश्वास नहीं करेंगे। वे सुनेंगे नहीं और कहेंगे, 'देखते हैं क्या होता है।' क्योंकि बेटी, धर्म कभी दिखाई नहीं देता; वह कभी रुकता नहीं। धर्म और भक्ति स्वतःस्फूर्त होते हैं। भक्तों ने तो पहले ही जन्म ले लिया है। तुम उन्हें बताओ या न बताओ, वे किसी न किसी तरह भगवान की शरण में आ ही जाते हैं और उसे स्वीकार कर लेते हैं। पर Kali Yuga के लोग देखेंगे, समझने की कोशिश करेंगे, और सुनेंगे। उनके लिए समय ही बताएगा। हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 12:45 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2074 कृपया मुझे जीवन में कोई ऐसा मार्ग दिखाइए जिस पर मैं चल सकूँ। मैं संन्यासी का जीवन जीना चाहता हूँ और भगवान को प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं भगवान का हो जाना चाहता हूँ।

उत्तर: बहुत अच्छा। देखो, सबसे बड़ा संन्यास 'गृहस्थ संन्यास' है, जिसमें विवाहित रहते हुए और परिवार के साथ रहते हुए भी भगवान की शरण ली जा सकती है। इसमें बहुत थोड़े समय और थोड़े प्रयास से प्राप्ति संभव है। इसलिए तुम एक काम करो: त्रिकाल संध्या करो, भागवत पढ़ो, और Madhava का नाम जपो। सुधर्म महासंघ से जुड़ो, जो विश्व सनातन धर्म का ऑनलाइन सत्संग है। कम से कम इस समय, इससे बड़ा कोई संन्यास नहीं है। यही तुम्हें भगवान तक ले जाएगा। जिसकी तुम खोज कर रहे हो वह तुम्हें मिल जाएगा, और तुम्हें शांति भी मिलेगी। Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 14:33 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2075 ब्रह्माकुमारियों ने भी कुछ तिथियाँ दी थीं... जैसे आपने 2032 की तिथि दी है। बुरा मत मानिएगा, पर मान लीजिए उस समय Satya Yuga नहीं आया, तो क्या आप फिर कहेंगे कि यह 2042 में आएगा? ऐसा तो नहीं है कि आप पैसे कमाने के लिए कुछ भी कह रहे हैं, या Bhavishya Malika कोई किताब भर है... किसी के भी मन में यह संदेह आ सकता है।

उत्तर: देखिए, यह पुत्र जो कह रहा है वह बहुत अच्छी बात है। मुझे उससे बात करने दीजिए। 4,32,000 वर्ष नहीं हुए हैं; 5,129 वर्ष हुए हैं, बेटा। देखो, जो हम कहते हैं वह शास्त्रों में लिखा है। हमने Bhavishya Malika का अंग्रेज़ी, हिंदी और कई अन्य भाषाओं में अनुवाद भी किया है। यदि तुम सत्य जानना चाहते हो, तो ओडिशा सरकार के संग्रहालय में 600 वर्ष पहले लिखे गए 'शिव कल्प ग्रंथ' जैसे ग्रंथ रखे हैं। मैं तुम्हें केवल वही बता रहा हूँ जो उन ग्रंथों में लिखा है। आओ और स्वयं देखो, तब तुम्हें विश्वास हो जाएगा। धर्म अपनी ही धारा में बहता है। यदि कोई बुरा करता है, तो उसे बुरा फल मिलता है। यदि कोई अच्छा करता है, तो भगवान उसे अच्छा फल देते हैं। हमेशा सकारात्मक सोचो। अच्छा सोचने के लिए, जो अच्छा है उसके पीछे जाओ, उसकी जाँच करो, और सत्य पर शोध करो। एक दिन तुम्हें सत्य मिल जाएगा। समय के साथ जो होना है, वह भगवान करेंगे। यह मनुष्य के हाथ में नहीं है। ठीक है? Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 15:44 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2076 मेरा एक छोटा सा प्रश्न है। मैं अपनी नौकरी के सिलसिले में तीन-चार दिन के लिए बाहर जा रही हूँ। मैं पूरी कोशिश करूँगी कि तीनों समय त्रिकाल संध्या कर सकूँ, पर हो सकता है कि शाम को मुझे समय न मिले। तो मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: बेटी, यदि समय न मिले, तो तुम यह कर सकती हो। कम से कम दो मिनट तो देने ही होंगे। 16 नामों वाले मंत्र में कुछ ही सेकंड लगेंगे। फिर तुम्हें 36 बार 'दुर्गा माधव' का जप करना है। और फिर भगवान के अवतार: श्री मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, श्री बुद्ध, Kalki। और फिर 108 बार 'Madhava' नाम का जप करो। यदि समय न हो तो यह दो-तीन मिनट में कर लो। यदि समय हो, तो पूरी प्रार्थना करो।

► यह उत्तर सुनें · 19:50 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2077 मुझे तीन स्वप्न आए थे, और मैं उनके बारे में जानना चाहता था। एक स्वप्न में मैंने 14-16 वर्ष के एक बालक को पगड़ी पहने देखा; मुझे लगा कि वे भगवान Madhava हैं। दूसरे स्वप्न में मैंने स्वयं को कृष्ण अवतार में देखा, गोपियों के बीच खेलते हुए। तीसरे स्वप्न में मैंने देखा कि भगवान राम और लक्ष्मण आए हैं और मेरा हाथ पकड़कर मुझे कहीं ले जा रहे हैं। मैंने यही देखा।

उत्तर: बेटा, Kali Yuga समाप्त हो चुका है, और Satya Yuga आरंभ होने वाला है। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भगवान के दिव्य दर्शन होते हैं—भगवान Kalki, भगवान राम और भगवान कृष्ण के। इसीलिए तुम्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आगे बढ़ो और भगवान पर विश्वास बनाए रखो। समय के साथ तुम समझ जाओगे कि तुमने जीवन में सबसे बड़ा मार्ग अपनाया है। क्योंकि यह तत्व ऐसा है कि जिनके भाग्य में यह नहीं है, वे इसकी परीक्षा लेते हैं। जिनके भाग्य में यह है, वे इसे अपनाते हैं और भगवान की कृपा पाते हैं। जय श्री Madhava।

► यह उत्तर सुनें · 21:03 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2078 मैं पूछना चाहता था, क्या जो लोग मांसाहार करते हैं और मदिरा पीते हैं, उनका भी उद्धार हो सकता है? और प्रभु, एक और बात, भगवान के नाम की महिमा क्या है, और उसका मूल्य क्या है?

उत्तर: देखो बेटा, जो लोग मांसाहार करते हैं, हम उसे जीव हत्या कहते हैं। हर जीव में भगवान की दिव्यता है। इसलिए जो जीवों की हत्या करते हैं, उन्हें कभी मुक्ति नहीं मिलेगी, और Kali Yuga की विपत्तियाँ उन्हें निगल जाएँगी। तुम्हारा दूसरा प्रश्न भगवान के नाम के महत्व के बारे में है। भगवान के नाम का महत्व यह है कि जो भी दुखी है, भगवान उसे सारे दुखों से मुक्त कर देते हैं। जिस पर भी कोई बड़ी विपत्ति आती है, भगवान का नाम उसे उस विपत्ति से बाहर निकाल देता है। और भगवान के नाम का सबसे बड़ा सार यह है कि इस भवसागर में जन्मे मनुष्यों के लिए, उनकी मुक्ति हेतु भगवान के नाम से बड़ा कोई धन या उपलब्धि नहीं है। जो मनुष्य जन्म लेकर भी भगवान का नाम नहीं जपता, उसका जीवन शव के समान है। भगवान व्यासदेव ने श्रीमद्भागवत में यह बार-बार कहा है। Jai Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 23:01 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2079 मैं आपसे कुछ अनुभवों के बारे में पूछना चाहती थी जो मुझे अर्धनिद्रा की अवस्था में हुए। रात 2:45 बजे मुझे बहुत ज़ोर का एक विस्फोट सुनाई दिया, और अगले दिन मैंने विस्फोटों की खबर देखी। एक और बार, रात 11:11 बजे, मुझे बहुत तेज़, भयानक चीख सुनाई दी, जैसे जिसे आप 'भैरवी डाक' (भैरवी की पुकार) कहते हैं। मुझे इनका अर्थ समझ नहीं आया। ये सकारात्मक हैं या नकारात्मक? मुझे डर लगा।

उत्तर: देखो बेटी, Bhavishya Malika में लिखा है कि आकाश से बड़ी गर्जनाएँ होंगी, और उस ध्वनि से लोग मर जाएँगे। कई लोगों की श्रवण शक्ति चली जाएगी, और कई अचेत हो जाएँगे। दूसरी बात, भैरवी की ध्वनि के विषय में, Malika में लिखा है कि माता भैरवी पापी लोगों के विनाश के लिए तीन बार महागर्जना करेंगी, और वे मर जाएँगे। यह भी Malika में लिखा है। और जो माता तुमने पीले वस्त्रों में नृत्य करते देखी, वह पूरे विश्व में Sanatana Dharma के प्रसार का प्रतीक है। तुमने सत्संग के लिए भक्तों के एकत्र होने का एक पवित्र दर्शन किया है।

► यह उत्तर सुनें · 24:36 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2080 मेरे पास सत्संग तक जाने के साधन नहीं हैं। मैं उसे घर से ही देखती हूँ। तो क्या प्रभु मुझे अपनी धारा में नहीं लेंगे?

उत्तर: क्यों नहीं लेंगे? वे ज़रूर लेंगे। तुम कहाँ रहती हो, बेटी? दिल्ली-फरीदाबाद में प्रवचन हुआ था, तुम क्यों नहीं आई? ठीक है, कोई बात नहीं। मेरी बात सुनो, मोहन नाम का एक पुत्र है, उससे बात करो। उसका नंबर YouTube वीडियो के नीचे दिया है। उससे कहो, 'मुझे प्रवचन में आना है, पर मेरे पास आर्थिक साधन नहीं हैं। मैंने पंडित जी से बात कर ली है।' चंडीगढ़ में एक प्रवचन हो रहा है, जो तुम्हारे पास पड़ेगा। वह तुम्हारे लिए व्यवस्था कर देगा; वह तुम्हारे यात्रा खर्च का प्रबंध कर देगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 29:04 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2081 आपने पूछा था कि क्या मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ, लेकिन स्पीकर म्यूट था, इसलिए मैं उत्तर नहीं दे पाई। मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ। मैं लगभग डेढ़ महीने पहले जुड़ी थी। मुझे स्वप्न आते हैं जिनमें मैं शिवलिंग की पूजा कर रही होती हूँ, और कोई भगवान शिव के वेश में आता है, अपना हाथ आगे बढ़ाता है और कहता है, 'आज से मैं तुम्हारा गुरु हूँ। हे आदि-राम युग की आदिशक्ति, जाग्रत हो!' ऐसा मेरे साथ हुआ है।

उत्तर: देखिए, बेटी, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें ऐसी चीज़ें दिखाई देती हैं। भगवान राम लला की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा सोमवार को हुई थी, जो भगवान शंकर का दिन है। यह प्रमाण है कि भगवान, शंकर के रूप में, विनाश और धर्म की स्थापना का कार्य करेंगे। वे भक्तों की रक्षा भी करेंगे। इसका अर्थ है कि त्रिकाल संध्या के माध्यम से आपको भगवान की कृपा प्राप्त हुई है। त्रिकाल संध्या करती रहिए, उनकी शरण में रहिए, भगवान आपकी अवश्य रक्षा करेंगे। यह आपका सौभाग्य है।

► यह उत्तर सुनें · 30:07 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2082 मैं छह महीने से इस मार्ग से जुड़ी हूँ। आपने एक बार बताया था कि भविष्य मालिका का प्रचार एक निश्चित समय तक ही होगा। अभी कुछ लोग इस पर विश्वास करते हैं और बहुत से नहीं करते। तो हमें कब तक इसका प्रचार करते रहना चाहिए, और कब मौन हो जाना चाहिए?

उत्तर: देखिए, बेटी, यह प्रचार का कार्य भगवान की इच्छा से होता है, हमारी इच्छा से नहीं। जब तक भगवान की इच्छा है, तब तक यह शायद चलता रहेगा, क्योंकि सत्य युग की ओर धर्म के प्रसार के लिए यह प्रचार बढ़ेगा, घटेगा नहीं। हाँ, भविष्य मालिका के बारे में मैंने जो कहा था वह यह है कि जब तक इंटरनेट और यह सब है, तब तक यह चलता रहेगा। उसके बाद यह भक्तों के माध्यम से होगा। ठीक है, बेटी?

► यह उत्तर सुनें · 31:23 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2083 मेरा प्रश्न यह है कि यदि 'माधव' नाम के बजाय मैं त्रिकाल संध्या में 'राधा' नाम का जप करूँ तो? मैंने 'माधव' जपना शुरू किया था, लेकिन 'राधा' नाम बार-बार मन में आता है, और मुझे रोना आता है कि मैं राधा रानी से दूर नहीं रह सकती। तो क्या यह ठीक रहेगा?

उत्तर: देखिए, बेटी, माँ राधा रानी और कृष्ण का नाम आनंद से जपिए; उसमें कोई समस्या नहीं है। लेकिन तीनों संध्याओं में आपको 'माधव' नाम का 108 बार जप करना ही होगा। 'माधव' नाम में दोनों तत्व समाहित हैं—राधा रानी और कृष्ण। यदि आप दोनों की एक साथ उपासना करना चाहती हैं, तो 'माधव' का जप कीजिए। आप केवल राधा रानी का नाम भी जप सकती हैं, लेकिन 'माधव' का जप करना ही होगा क्योंकि युग बदल रहा है। सत्य युग आ रहा है, और भगवान कल्कि माधव के रूप में आ रहे हैं। इसलिए सभी को 'माधव' नाम का सम्मान करना ही होगा। किसी भी युग में, उस युग का अवतार भक्तों को सबसे प्रिय होता है। इससे कृपा बढ़ेगी। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 32:21 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2084 मैं आने वाले 13 दिन के 'पक्ष' के बारे में पूछना चाहता था। यह पहले कब हुआ है, और इसके बाद क्या होता है?

उत्तर: देखिए, सामान्य पक्ष 15 दिन का होता है। लेकिन जब 13 दिन का पक्ष होता है, तो यह सत्य युग के आगमन का संकेत देता है और पापियों के लिए विनाश का संकेत होता है। ओड़िया में लिखा है, 'जब 13 दिन का पक्ष होगा, तब भगवान कल्कि विनाश के कार्य के बारे में सोचेंगे।' पिछले पाँच वर्षों में यह कई बार हुआ है और फिर होगा। यह बदलते समय, सत्य युग के आगमन और पापियों के विनाश का संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 34:35 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2085 मैंने सुना है कि इसके होने के बाद विनाश की गति तेज़ हो जाएगी।

उत्तर: हाँ, गति तेज़ हो रही है। यह उचित समय पर होगा। भगवान इसे सावधानी से कर रहे हैं क्योंकि अभी सभी भक्तों की रक्षा नहीं हुई है।

► यह उत्तर सुनें · 35:24 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2086 पंडित जी, मैं माधव को अपना सखा मानती हूँ। तो मेरा प्रश्न यह था कि जब मेरे सखा का विवाह होगा, तो क्या मैं जा सकती हूँ? और जाने के लिए मुझे क्या करना होगा?

उत्तर: देखिए, बेटी, सखा के रूप में हो, साथी, स्वामी या परिवार के रूप में—भगवान ही सब कुछ हैं। हमें अपने सांसारिक कर्तव्य निभाने चाहिए। भगवान को अपना सखा, भक्त या सेवक मानिए—जो भी आपके हृदय में है, उसी भाव में रहिए। क्योंकि ये सब भक्ति-भाव के अलग-अलग तत्व हैं, पर सार एक ही है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 35:45 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2087 गुरुजी, मैं बैंगलोर से हूँ और मुझे हिंदी नहीं आती। मुझे एक स्वप्न आया जिसमें शिवलिंग और आदिशेष थे। उसमें भगवान मुझे आदेश दे रहे थे, 'माधव नाम का जप करो।' माँ दुर्गा भी वहाँ थीं। उसके बाद मुझे जगन्नाथ जी के दर्शन हुए जो मेरी माँ को महाप्रसाद दे रहे थे। मैंने वैकुंठधाम भी देखा।

उत्तर: बेटी, आपने स्वप्न में जो देखा वह दुर्गा माधव हैं। इसका अर्थ है कि भगवान विष्णु, जो माधव हैं, वही भगवान शंकर और भगवान ब्रह्मा भी हैं, क्योंकि वे कल्कि अवतार में एक ही शक्ति के रूप में आ रहे हैं। माँ दुर्गा उनके साथ हैं। यह स्वप्न आपसे कह रहा था कि माधव नाम का जप करो, क्योंकि इस समय केवल वही सुरक्षित रहेंगे जो 'माधव' का जप करते हैं। आप बहुत भाग्यशाली हैं। त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव नाम का जप कीजिए, और आपको भगवान की और भी अधिक कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 36:46 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2088 मेरी माँ पढ़ना नहीं जानतीं, इसलिए वे त्रिकाल संध्या का ऑडियो सुनती हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर: हाँ, ऑडियो सुनिए। जो स्वयं त्रिकाल संध्या करता है और जो उसे सुनता है, दोनों एक समान हैं। कोई अंतर नहीं है। उन्हें एक ही फल, अर्थात एक ही परिणाम मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 38:51 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2089 मेरा प्रश्न यह है कि मुझे श्री प्रेमानंद जी के दर्शन करने जाने की प्रेरणा मिल रही है। क्या हमारे लिए उन्हें भविष्य मालिका के बारे में बताना उचित होगा? क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि मालिका का प्रचार केवल आप ही करेंगे। इससे मेरे विचारों में द्वंद्व पैदा होता है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, प्रेमानंद जी पूजनीय और आदरणीय संत हैं जो अच्छा मार्ग दिखाते हैं। भविष्य मालिका के बारे में बताने या न बताने की बात भगवान की इच्छा पर निर्भर है। यदि भगवान आपको उन्हें बताने की प्रेरणा देते हैं, तो बताइए। यदि नहीं, तो जैसा आप चाहें वैसा कीजिए। यह भगवान की इच्छा से चलता है, न मेरी, न आपकी। मैं प्रेमानंद जी का सम्मान करता हूँ; वे भक्तों को अच्छी दिशा दिखाते हैं। जाइए और उनके दर्शन कीजिए; यह बहुत आनंददायक है।

► यह उत्तर सुनें · 40:04 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2090 मैं एक और बात साझा करना चाहता था। मेरी आध्यात्मिक यात्रा हनुमान जी से शिव जी तक, फिर कृष्ण तक, फिर जगन्नाथ तक, और अब माधव जी तक पहुँची है। लेकिन जब से मैंने त्रिकाल संध्या करना, भागवत पढ़ना और माधव जी के नाम का जप करना शुरू किया है, तब से जिस तरह का गहरा अनुभव और प्रेरणा मुझे मिल रही है, वह अत्यधिक बढ़ गई है। ऐसा लगता है कि मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह सीधे हृदय से आ रहा है।

उत्तर: देखिए, बेटा, जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं, वे देवताओं के समान शक्तिशाली हो जाएँगे। उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त होगा और वे साक्षात भगवान को प्राप्त करेंगे। इसीलिए मैं इस मार्ग का प्रचार करता हूँ। बड़ी विपत्तियाँ और बीमारियाँ आ रही हैं, और उनसे रक्षा के लिए यह परंपरा पृथ्वी पर सबसे बड़ा तत्व है। जो भी मनुष्य त्रिकाल संध्या करेगा, वह भगवान को अवश्य प्राप्त करेगा। और भी अधिक भक्ति के साथ इसे जारी रखिए। आप संसार के सभी तत्वों को जान जाएँगे, और आपको स्वतः ही भगवान के दर्शन हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:41 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2091 मैं अपनी आध्यात्मिक साधना में बहुत अकेला महसूस करता हूँ, बात करने के लिए कोई नहीं है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप एक काम कीजिए। पहला, प्रतिदिन त्रिकाल संध्या कीजिए। और दूसरा, प्रतिदिन भागवत पढ़िए। ये दो काम कीजिए। समय के साथ, दिव्य मार्ग में आपकी जो भी इच्छा है, भगवान उसे पूरा करेंगे। बस इतना ही कीजिए। और जब समय आएगा, तो आपको अपनी नौकरी में ऐसी जगह पद मिल सकता है जहाँ आपको यह मार्ग और भक्ति प्रचुर मात्रा में मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 46:37 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2092 मैं चाय पीने की अपनी आदत से कैसे छुटकारा पा सकती हूँ? कृपया मुझे सलाह दीजिए।

उत्तर: देखिए बेटी, प्रयास करती रहिए। चाय की जगह आप जड़ी-बूटियों से काढ़ा बना सकती हैं। आप उसमें मसाले डालकर चाय की तरह पी सकती हैं। जिसे बहुत ठंड लगती है, उसके लिए लौंग की चाय लाभदायक होती है। तो कोई बात नहीं, बस प्रयास करती रहिए। चाय उतनी हानिकारक नहीं है, लेकिन सत्य युग में लोग चाय नहीं पिएँगे, इसीलिए मैं कह रहा हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 47:34 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2093 पंडित जी, निरंतर माधव का नाम जपने से क्या हमें भी भगवान के दिव्य दर्शन होंगे और उनका प्रेम प्राप्त होगा?

उत्तर: देखिए बेटी, आपको त्रिकाल संध्या करनी होगी। त्रिकाल संध्या के साथ माधव का नाम जपने से आप भगवान को प्राप्त करेंगी। निरंतर माधव का नाम जपिए, और आपको भक्ति प्राप्त होगी, बेटी।

► यह उत्तर सुनें · 49:34 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2094 गुरुजी, क्या हम संध्या प्रार्थना में गणपति बप्पा की आरती और हनुमान चालीसा जोड़ सकते हैं?

उत्तर: हाँ, यह तो बहुत सुंदर है। कीजिए। हनुमान चालीसा बहुत आनंददायक है। और भी अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 50:57 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2095 मैं अब भी धूम्रपान करता हूँ और उसे छोड़ नहीं पाया हूँ। क्या मुझे पहले धूम्रपान छोड़कर फिर त्रिकाल संध्या शुरू करनी चाहिए, या त्रिकाल संध्या शुरू करके फिर छोड़ने का प्रयास करना चाहिए?

उत्तर: शुरू कीजिए। पहले त्रिकाल संध्या कीजिए, और समय के साथ यह आदत छूट जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 51:54 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2096 पिताजी, अनंत युग में 1000 वर्ष की अवधि के बाद भक्त कहाँ जाएँगे? क्या उन्हें मुक्ति मिलेगी, या वे वैकुंठ जाएँगे?

उत्तर: जो वैकुंठ से आए हैं, वे वैकुंठ लौट जाएँगे। जो नहीं आए हैं, उनमें से कुछ स्वर्ग के सुखों के लिए, कुछ अपनी इच्छाओं के लिए, जो चाहेंगे वह प्राप्त करेंगे। और कुछ अन्य लोग रह जाएँगे जो उस युग को संपूर्ण सत्य युग में परिवर्तित करेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 53:12 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2097 मेरा एक प्रश्न है। मैंने स्वप्न में देखा कि हनुमान जी और मैं एक युद्ध लड़ रहे थे। पहले मुझे लगा कि शायद बलराम जी हैं, लेकिन फिर मुझे समझ आया कि वे हनुमान जी थे। इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर: देखिए बेटा, मैं इस पर क्या टिप्पणी कर सकता हूँ? हनुमान जी स्वयं भगवान राम के ग्यारहवें रुद्र अवतार हैं। हम मनुष्य उनसे कैसे लड़ सकते हैं? मैं इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:58 · 3 मार्च 2024

प्रश्न 2098 जैसे भगवान राम और भगवान कृष्ण के चरणों में शंख, चक्र और कमल जैसे चिह्न थे, क्या भगवान माधव के भी वे सभी चिह्न होंगे?

उत्तर: देखिए, जब भी भगवान आते हैं, उनके सभी चिह्न भी आते हैं। लेकिन अच्युतानंद ने लिखा है कि कलियुग में ये सभी भक्तों को दिखाई नहीं देंगे; केवल कुछ ही उन्हें देख पाएँगे। लिखा है कि उनके दाहिने चरण में धनुष और गदा का चिह्न होगा, लेकिन वह सबको दिखाई नहीं देगा। यह भी अच्युतानंद ने लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 55:27 · 3 मार्च 2024

सत्र 115 · प्रश्न 2099–2136

L122 - त्रिकाल संध्या का तत्त्व | पण्डित श्री काशीनाथ मिश्र जी

दिनांक: 4 मार्च 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2099 चंडीगढ़ सभा के बाद बेंगलुरु और टोरंटो में सभाएँ हैं। क्या यह अंतिम सभा है? क्या इसके बाद और भी होंगी?

उत्तर: नहीं, यह चलता रहेगा। मानवता के उद्धार के लिए पूरे भारत और विश्व में सत्संग और कथाएँ होती रहेंगी। ये रुकेंगी नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 17:50 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2100 क्या आप कभी हरियाणा के सोनीपत और पानीपत जैसे जिलों में प्रवचन देने आएँगे?

उत्तर: देखिए, पिछले महीने फरीदाबाद में एक प्रवचन हुआ था, जो हरियाणा के पास है। और भविष्य में निश्चित रूप से और प्रवचन होंगे, लेकिन कब, यह मैं नहीं कह सकता। धर्म का प्रचार पूरे विश्व में होगा, और हरियाणा भारत में एक बहुत ही पवित्र स्थान है। समय आने पर यह अवश्य होगा, लेकिन अभी इस बारे में कोई निर्णय नहीं हुआ है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 18:33 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2101 मेरा प्रश्न यह है कि यदि हम त्रिकाल संध्या करें, तो क्या भगवान कल्कि हमें प्रत्यक्ष दर्शन देंगे?

उत्तर: देखिए, मैं शास्त्रों के आधार पर बोलता हूँ। जब भगवान कृष्ण आए थे, तब उस समय जितने भी भक्त उपस्थित थे, सामान्य लोगों सहित सभी ने उनके दर्शन किए थे। अब युग बदलने वाला है। इस परिवर्तन के बाद जब भगवान कल्कि का शासन होगा, तब जो भी जीवित बचेंगे, वे सभी निश्चित रूप से उनके दर्शन करेंगे। उससे पहले भी, जब धर्म की भव्य स्थापना आरंभ होगी, तब सभी भक्त एकत्रित होंगे और उस समय भी भगवान के दर्शन प्राप्त करना संभव होगा।

► यह उत्तर सुनें · 19:20 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2102 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मैं अपने गुरु का नाम जपती थी, लेकिन जब से मैंने 'माधव' का जप आरंभ किया, मैंने वह बंद कर दिया। फिर मुझे स्वप्न आया जिसमें मेरे गुरु रो रहे थे। मैं उलझन में हूँ कि मुझे अपने गुरु का नाम जपना चाहिए या माधव का नाम। दूसरा, मेरा बेटा 'माधव' का जप करता है, भागवत पढ़ता है और केवल भजन ही सुनता है। पढ़ाई में उसकी रुचि समाप्त हो गई है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आपके बेटे के विषय में — उसके मन में एक चंचलता है, चंद्रमा से संबंधित एक पीड़ा है, जिसके कारण उसका मन भटकता रहता है और एकाग्र नहीं हो पाता। उससे कहिए कि वह भागवत पढ़े और त्रिकाल संध्या करे, सब ठीक हो जाएगा। रही आपके पहले प्रश्न की बात, तो मैंने कभी किसी को अपने गुरु का नाम जपने से मना नहीं किया। आप अपने गुरु का नाम जप सकती हैं और अपने गुरु की पूजा कर सकती हैं। इसमें कोई नियम या विरोध नहीं है। मैं तो बस यह सलाह देता हूँ कि त्रिकाल संध्या करें, माधव का नाम जपें और भागवत पढ़ें, साथ ही अपनी गुरु-परंपरा का पालन भी करती रहें। इसमें कोई टकराव या समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 20:43 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2103 पिताजी, मुझे कुछ स्वप्न आए हैं और मैं आपका मार्गदर्शन चाहता हूँ। एक में, मैंने आकाश में दो सूर्य देखे और अपने चचेरे भाई से कह रहा था कि भविष्य मालिका की एक भविष्यवाणी सच हो गई है, पर वह मेरी बात मानने को तैयार नहीं था। दूसरे में, मुझे माँ दुर्गा और हनुमान जी के दर्शन हुए। और तीसरे में, मैंने आपको व्यास-पीठ पर बैठकर प्रवचन देते देखा। कृपया इनका अर्थ बताकर मेरा मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, एक समय आएगा जब दो सूर्य उदय होंगे; यह भविष्य मालिका में लिखा है। दूसरी बात, भगवान आपकी श्रद्धा और भक्ति बढ़ाने के लिए आपको भविष्य की घटनाओं से अवगत करा रहे हैं। रही व्यास-पीठ पर हनुमान जी को देखने की बात, तो इसका कारण यह है कि हनुमान जी ही धर्म की स्थापना करने वाले हैं और सभी भक्तों की रक्षा करने वाले हैं। मैं तो केवल नाम के लिए वहाँ बैठता हूँ; असली कर्ता तो हनुमान जी और भगवान हैं। सार यह है: त्रिकाल संध्या का पालन करें, नियमों का पालन करें, भक्ति में डूब जाएँ, और साथ ही अपने पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों को भी निभाएँ।

► यह उत्तर सुनें · 22:33 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2104 मैं अयोध्या में हूँ। क्या मैं कल आपसे मिल सकता हूँ? क्या हम एक मिनट बात कर सकते हैं?

उत्तर: कल बताइए, एक मिनट बात कर लेंगे। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:17 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2105 पंडित जी, 256 भक्तों का एकत्रीकरण कब होगा?

उत्तर: 256 भक्तों को एकत्र करने की प्रक्रिया इस समय चल रही है। समय-सीमा तो भगवान ही जानते हैं; आने वाले समय में यह निश्चित रूप से पूर्ण होगी।

► यह उत्तर सुनें · 24:36 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2106 एक यज्ञ शेष है। वह कहाँ होगा और उसमें कौन सम्मिलित होगा?

उत्तर: यह एक दैवीय विषय है जो भगवान की इच्छा से ही होगा। हमारा काम तो आपको मानवता के कल्याण के लिए और सत्य युग में प्रवेश करने के लिए पवित्र सिद्धांत बताना है। आप उनका पालन करें, सब कुछ यथासमय हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:05 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2107 कहा जाता है कि भगवान का नाम, जैसे 'राम' या 'कृष्ण', एक बार भी जपने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। लेकिन भारत में बहुत से लोग ये नाम जपते हुए पाप भी करते हैं। उनके पाप कैसे क्षमा हो सकते हैं? क्या यह सच्चे भक्त संतों के साथ अन्याय नहीं होगा और क्या इससे पापियों को इस सिद्धांत का दुरुपयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा?

उत्तर: देखिए, यदि कुछ बार नाम जपने से ही सबको मुक्ति मिल जाती, तो जगन्नाथ पुरी, प्रयाग या द्वारका जैसे पवित्र स्थानों में भटकती आत्माएँ या भूत-प्रेतों का प्रभाव न होता। मेरा व्यक्तिगत मत यह है कि कुछ बार नाम जपने से व्यक्ति के कर्मों में कुछ परिवर्तन आ सकता है। लेकिन अपने कर्म, अपनी भक्ति की सीमा, और उसे भगवान के प्रति कितना समर्पण करना है — यह केवल वही व्यक्ति जानता है। उसके अलावा, उसके सभी पूर्व जन्मों के कर्मों को केवल भगवान ही जानते हैं। मेरी राय में, केवल वे ही लोग जो निष्काम भक्ति करते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं और माधव की शरण लेते हैं, वास्तव में भगवान की कृपा प्राप्त करेंगे और उनका जीवन धन्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:35 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2108 भक्तों का एकत्रीकरण कब तक पूर्ण होगा?

उत्तर: 16 मंडलों के भक्तों का एकत्रीकरण अंत तक चलता रहेगा। मंडल बन चुके हैं, लेकिन एकत्रीकरण चलता रहेगा क्योंकि विभिन्न स्तरों के भक्त हैं। जब उनका समय आएगा, वे भगवान की शरण में आएँगे, और मिलकर धर्म स्थापना का कार्य आगे बढ़ेगा। यह मेरे नियंत्रण में नहीं है; यह भगवान के नियंत्रण में है और भक्तों के कर्मों पर निर्भर है।

► यह उत्तर सुनें · 27:28 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2109 प्रातःकालीन संध्या के लिए, क्या केवल हाथ-मुँह धो लेना पर्याप्त है?

उत्तर: आप हाथ-मुँह धोकर कर सकते हैं। यदि वह भी न कर सकें, तो मन ही मन गंगा स्नान करके, हृदय में तीन बार माँ गंगा का नाम लेकर और भगवान के चरणकमलों की शरण लेकर भी कर सकते हैं। महत्व मन की पवित्रता का है। यह कोई मंदिर का कर्मकांड नहीं है; यह एक भजन है जिसे कोई भी, कहीं भी, किसी भी स्थिति में कर सकता है। इस कलियुग में हर कोई घर पर बैठकर त्रिकाल संध्या नहीं कर सकता, क्योंकि लोग सदा व्यस्त रहते हैं। इसलिए कोई कठोर नियम नहीं हैं। आप जहाँ भी हों और जिस भी स्थिति में हों, वहीं कर सकते हैं। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 28:11 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2110 सत्य युग में भगवान को प्राप्त करना सरल होगा या कठिन?

उत्तर: देखिए, जो लोग सत्य युग में प्रवेश करेंगे, वे भगवान को प्राप्त करके ही प्रवेश करेंगे। उस समय कुछ भी नया प्राप्त नहीं होगा। उस युग में कोई गलत काम नहीं करेगा, बुरा नहीं सोचेगा, झूठ नहीं बोलेगा, और न ही बुरे कर्म करेगा। वे देवताओं या महान सिद्ध संतों के समान होंगे। तो, जो प्रवेश करेंगे, वे पहले ही भगवत्-प्राप्ति कर चुके होंगे। वहाँ कोई बुरा व्यक्ति नहीं होगा, केवल अच्छी और पवित्र आत्माएँ होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 29:23 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2111 क्या भगवान कल्कि ने अवतार ले लिया है? क्या उनका जन्म मनुष्य रूप में हुआ है?

उत्तर: यदि आप आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ना चाहते हैं, सत्य युग में प्रवेश करना चाहते हैं और भगवान कल्कि का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं, तो एक नियम है जिसका पालन हर एक व्यक्ति को करना ही होगा। वह नियम है त्रिकाल संध्या, अर्थात् दिन की संधियों पर तीन बार प्रार्थना करना।

► यह उत्तर सुनें · 31:29 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2112 आप अपने पुत्र सतीश मिश्रा को कल्कि क्यों कहते हैं?

उत्तर: मेरी बात सुनिए। हमें जो विषय चल रहा है, उसी के अनुसार बात करनी चाहिए। मैं यह कहना चाहता हूँ: यदि आप त्रिकाल संध्या करना चाहते हैं, तो आप इसका पालन कर सकते हैं। यदि आप भगवान की शरण लेना चाहते हैं, तो मैं आपको मार्ग बता रहा हूँ। यह आपकी पसंद है। आपको 100% स्वतंत्रता और अधिकार है। आप इसका पालन करें या न करें। लेकिन मनुष्यों की सहायता करना और पृथ्वी पर धर्म की रक्षा करना मेरा कर्तव्य और मेरा मिशन है। मैं वही कर रहा हूँ। यह आपकी इच्छा है; आप करें या न करें। यह आपकी राय है, आपका निर्णय है। मैंने कभी किसी को बाध्य नहीं किया। मैं तो बस एक ब्राह्मण के रूप में अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। यदि आपकी रुचि है, तो आप इसका पालन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 32:10 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2113 गुरुजी, मैं जानना चाहता था, भविष्य मालिका में लिखा है कि जो बचेंगे वे 'क्षीर सागर' में स्नान करने के बाद सत्य युग में प्रवेश करेंगे। चूँकि वह सागर पृथ्वी पर नहीं है, तो क्या वह यहाँ प्रकट होगा?

उत्तर: देखिए, यह हमारे हाथ में नहीं है। लिखा है कि भक्त सागर में स्नान करने के बाद दिव्य जीवन प्राप्त करेंगे। बस इतना ही। इस पर मेरी कोई और टिप्पणी या राय नहीं है। समय आने पर, भगवान की इच्छा से, भक्तों को यह अवसर प्रदान किया जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:11 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2114 आपने जिस 'जय श्री माधव' जाप की बात कही, क्या उसे एक स्थान पर बैठकर ही करना होता है, या हम काम करते हुए या चलते-फिरते मन ही मन कर सकते हैं?

उत्तर: हाँ, आप कर सकते हैं। यह बिल्कुल ठीक है। इसमें कोई समस्या नहीं है। आप इसे कहीं भी, किसी भी समय और किसी भी परिस्थिति में कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:32 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2115 पंडित जी, जो व्यक्ति अशिक्षित है और संध्या की प्रार्थनाओं को समझ नहीं सकता, क्या उसे केवल 'जय श्री माधव' जपने से जीवन में कुछ सुरक्षा मिल सकती है?

उत्तर: देखिए, यहाँ जुड़े हुए सभी लोग जानते हैं कि माधव का नाम जपने से कैसे परिवर्तन होते हैं। दूसरी बात, सत्य युग में प्रवेश करने के लिए त्रिकाल संध्या अनिवार्य है। जो पढ़ नहीं सकते, उनके लिए आप प्रार्थनाओं को ऊँचे स्वर में पढ़कर सुना सकते हैं या उचित समय पर उन्हें त्रिकाल संध्या की रिकॉर्डिंग सुनवा सकते हैं। सुनने मात्र से भी उन्हें लाभ मिलेगा और वे सत्य युग में प्रवेश कर सकेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:01 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2116 हम जानते हैं कि महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य हर युग में घटित होते हैं। क्या कथा हर बार एक जैसी ही होती है?

उत्तर: हर युग में, सत्य, त्रेता और द्वापर युगों में नैमिषारण्य जैसे पवित्र स्थानों पर प्रवचन और सत्संग होते रहे हैं, और आज भी हो रहे हैं। अभी जो प्रवचन कुछ सिद्धांतों और विषयों पर आधारित होकर हो रहे हैं, वे उनके समान ही हैं जो पहले हुआ करते थे। अंतर केवल इतना है कि तब ऋषि-मुनि और संत उन्हें कर रहे थे, और अब हम कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:27 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2117 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें एक शक्तिशाली राक्षस ने मुझे पकड़ लिया, परंतु जैसे ही मैंने माधव का नाम जपा, उसने मुझे छोड़ दिया और भाग गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: आपने स्वप्न में जो देखा, वह नाम की शक्ति का प्रमाण है। हमारे सिद्धांत मानवता के महान कल्याण के लिए हैं। शास्त्रों के अनुसार, हम रक्षा के लिए माधव का नाम जपने की सलाह देते हैं। जो कोई भी संकट के समय भक्तिपूर्वक इस नाम का जाप करेगा, उसे निश्चित रूप से इसका लाभ मिलेगा। माधव से बड़ा कोई नाम नहीं है, इसीलिए हम इसका प्रचार करते हैं। इसी प्रकार, लोगों को बीमारी, आपदाओं और आर्थिक या पारिवारिक समस्याओं से बचाने के लिए त्रिकाल संध्या से बड़ा कोई साधन नहीं है। हमने वर्षों से बिछड़े हुए परिवारों को इसके कारण फिर से मिलते देखा है। यह मार्ग भक्तों के लिए है, और जो भक्तिपूर्वक साधना करेंगे, वे निश्चित रूप से परिणाम देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 38:27 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2118 हम त्रिकाल संध्या तो करते हैं, परंतु सत्संग में सम्मिलित नहीं हो पाते। आप कहते हैं कि जो सत्संग में आते हैं, वही सच्चे भक्त हैं। हम क्या करें?

उत्तर: सत्संग में सम्मिलित होने का प्रयास कीजिए। यदि नहीं कर सकते, तो रिकॉर्डिंग सुनिए। हमें धर्म के मार्ग पर चलना ही चाहिए। यदि आपके पास समय नहीं है, तो सत्संग को रिकॉर्ड कर लीजिए और बाद में जब आप खाली हों, शायद सोने से पहले, उसे सुन लीजिए। यह भी एक विकल्प है। और त्रिकाल संध्या करते रहिए। भक्ति स्वतंत्रता के भाव से की जा सकती है; मैं किसी को बाध्य नहीं कर सकता। परंतु, यदि हमारे पास साधन उपलब्ध हैं, तो हमें उनका पूरा उपयोग करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 40:21 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2119 अनुभूति और प्रत्यक्ष दर्शन में क्या अंतर है? हम आंतरिक अनुभूति, स्वप्न और प्रत्यक्ष, ठोस अनुभव के बीच भेद कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: प्रत्यक्ष अनुभव वह है जब आपके मन का कोई द्वंद्व या प्रश्न सुलझ जाता है, चाहे वह शास्त्रों के माध्यम से हो या किसी अन्य व्यक्ति के वचनों के माध्यम से। वही प्रत्यक्ष अनुभव है। परंतु चाहे वह प्रत्यक्ष अनुभव हो या स्वप्न, माता जी, वे सब एक ही हैं। ये सभी भक्ति से ही जन्म लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:13 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2120 मैंने जिस व्यक्ति का मार्गदर्शन किया, वे दो महीने से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं और भागवत पढ़ रहे हैं, परंतु वे प्रार्थनाएँ कंठस्थ नहीं कर पा रहे और हमारे संगठन से नहीं जुड़ पा रहे। क्या आने वाले विनाश के समय उन्हें कोई हानि होगी?

उत्तर: कोई समस्या नहीं है। यदि वे कंठस्थ नहीं कर पाते, तो कोई बात नहीं। उनसे कहिए कि वे बस प्रतिदिन प्रार्थनाएँ पढ़ लिया करें। समय के साथ और भगवान की कृपा से, शायद वे कंठस्थ कर लें। यदि नहीं भी कर पाए, तो भी केवल पढ़ने मात्र से उन्हें पूरा लाभ मिलेगा। कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 45:03 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2121 मुझे तीन स्वप्न आए और मैं उनका अर्थ जानना चाहता हूँ: एक में भगवान माधव के दर्शन हुए, दूसरे में भगवान राम और लक्ष्मण मुझे हाथ पकड़कर ले जा रहे थे, और तीसरे में मैं कृष्ण के समय में गोपियों के साथ था।

उत्तर: देखिए, मुझे आपकी आवाज़ स्पष्ट सुनाई नहीं दे रही है। इस विषय पर हम कल बात करेंगे। अभी प्रवचन आरंभ होने का समय हो गया है।

► यह उत्तर सुनें · 45:48 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2122 साईं बाबा की पूजा करनी चाहिए या नहीं?

उत्तर: आपका मन क्या कहता है? (प्रश्नकर्ता उत्तर देते हैं कि उनका मन कहता है नहीं, क्योंकि साईं बाबा शास्त्रों में नहीं हैं।) देखिए, आपका मन ही सबसे महत्वपूर्ण है; उसी के पास सबसे अच्छा उत्तर होता है। जो आपका मन कहता है, वही कीजिए। हमारी सनातन धर्म की परंपरा में हमें भगवान महाविष्णु, भगवान कृष्ण, भगवान राम और अपने धर्म के अन्य देवी-देवताओं की पूजा करनी चाहिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 47:03 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2123 गुरुजी, आने वाले खंड प्रलय से स्वयं की रक्षा करने और उससे लाभ पाने के लिए हम क्या सावधानियाँ बरत सकते हैं?

उत्तर: देखिए, सबसे महत्वपूर्ण बात है भक्ति करना। भक्ति से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 48:30 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2124 गुरुजी, जब मैंने त्रिकाल संध्या शुरू की थी, तब मुझे हर दिन स्वप्न में भगवान के दर्शन होते थे। अब यह बहुत कम होता है। इसका क्या कारण हो सकता है?

उत्तर: देखिए, शुरुआत में भगवान आपको ये अनुभव इसलिए देते हैं ताकि आपका विश्वास बने। हम अक्सर कहते हैं कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें दर्शन और आंतरिक अनुभव होंगे। यह आरंभ में आपकी आस्था स्थापित करने के लिए होता है। एक बार जब आपका विश्वास दृढ़ हो जाता है, तो उसकी आवश्यकता नहीं रहती। भगवान को सबकी देखभाल करनी होती है। इसलिए नए साधकों को प्रमाण देने, उनका संकल्प मज़बूत करने और उनका मन दृढ़ करने के लिए वे स्वप्न में दर्शन देते हैं। उसके बाद, आपको बस अपने भक्ति-मार्ग पर चलते रहना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 49:36 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2125 भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते थे, जो सभी आचार-नियमों का पालन करते थे, जबकि भगवान कृष्ण नटखट थे। भगवान कल्कि (माधव) का स्वभाव कैसा होगा?

उत्तर: भगवान कल्कि वैसे ही होंगे जैसे भगवान राम थे, क्योंकि उनका नाम भी माधव राम या कल्कि राम है। परंतु भगवान राम की तरह, जो एक कठोर मर्यादा से बँधे थे, भगवान कल्कि किसी ऐसी मर्यादा से बँधे नहीं होंगे, क्योंकि...

► यह उत्तर सुनें · 50:49 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2126 आपने एक बार कहा था कि भविष्य में इंटरनेट बंद हो जाएगा। क्या वह कभी फिर से शुरू होगा, या हमेशा के लिए चला जाएगा?

उत्तर: वक्ता ने इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

► यह उत्तर सुनें · 51:34 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2127 कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे केवल भगवान का ही हो जाना चाहिए, पर कभी मैं अपने परिवार से जुड़ाव महसूस करती हूँ। मैं सब कुछ त्यागकर केवल प्रभु की होना चाहती हूँ। मैं क्या करूँ?

उत्तर: माताजी, मेरा मानना है कि आपको अपने पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को ठीक से निभाते हुए भक्ति के माध्यम से भगवान की भी होना चाहिए। जिसमें सच्ची भक्ति होती है, वह स्वतः ही भगवान का अपना हो जाता है। नाम-जप करके, त्रिकाल संध्या करके, माधव नाम का जप करके और भागवत पढ़कर अपनी भक्ति बढ़ाइए। साथ ही, अपने घर-गृहस्थी और परिवार के सभी कर्तव्य भी पूरे कीजिए। सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भगवान को प्राप्त करना बहुत सरल है; भगवान ने इसी उद्देश्य से संसार की रचना की है। यदि आप संसार में रहते हुए भगवान की उपासना करेंगी, तो आपको भगवत्-प्राप्ति और सांसारिक सुख—दोनों मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:00 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2128 मैंने कुछ दिन पहले त्रिकाल संध्या शुरू की है, पर मुझे उसे सही समय पर करने का समय नहीं मिल पाता।

उत्तर: माताजी, जैसा मैंने बताया है, यदि आपके पास पूरी त्रिकाल संध्या के लिए समय नहीं है, तो आप संक्षिप्त रूप कर सकती हैं। जब समय कम हो, तब माधव नाम का 108 बार जप कीजिए, 16 नामों वाले दुर्गा माधव मंत्र का 36 बार जप कीजिए, और दस अवतारों के नाम एक-एक बार लीजिए। इसमें केवल लगभग ढाई मिनट लगते हैं। तो जब समय न हो तब यह कीजिए, और जब समय हो तब जैसा बताया गया है वैसा पूरा अनुष्ठान कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 53:24 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2129 भक्ति-भाव, स्मरण और समग्र भक्ति बढ़ाने के लिए 'माधव' नाम का जप करने का सर्वोत्तम तरीका क्या है?

उत्तर: माधव नाम का जप यदि आप निष्काम भाव से करें—बिना किसी व्यक्तिगत कामना के—और निरंतर उसे भीतर ही भीतर जपने का प्रयास करें, तो एक समय आएगा जब आपकी भक्ति स्वाभाविक रूप से बढ़ जाएगी। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे भगवान की कृपा बढ़ेगी और उनमें आपका विश्वास पूर्ण एवं दृढ़ होगा, आपकी भक्ति और भी बढ़ेगी। भक्ति विश्वास से ही बढ़ती है।

► यह उत्तर सुनें · 53:57 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2130 'माधव' नाम का जप तेज़ी से करना चाहिए या धीरे-धीरे?

उत्तर: जिस प्रकार आपका मन कहे, उसी प्रकार जप करने पर प्रभु प्रसन्न होते हैं। जैसा आपका मन कहे वैसा कीजिए—तेज़ी से जपिए, धीरे जपिए, मन में जपिए, या हृदय में जपिए। आप जैसे भी करेंगे, आपको उसका फल मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 55:26 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2131 तीन-चार महीने पहले मुझे एक स्वप्न आया था जिसमें भगवान जगन्नाथ ने मुझसे पुरी आने को कहा, परंतु कोशिश करने के बावजूद मैं जा नहीं पाया/पाई।

उत्तर: देखिए, यदि भगवान जगन्नाथ ने आपको स्वप्न में पुरी आने को कहा है, तो आपको उनके दर्शन के लिए जाना चाहिए। यदि अभी नहीं जा सकते, तो जब भी समय मिले और परिस्थितियाँ अनुकूल हों, तब चले जाइए। कोई बात नहीं। आप घर से ही उपासना करके भी उन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 56:08 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2132 मैंने सुना है कि संगठन से जुड़ने के लिए आपकी दो सभाओं में सम्मिलित होना पड़ता है। क्या यह अनिवार्य है?

उत्तर: जी हाँ, दो सभाओं में सम्मिलित होना आवश्यक है, क्योंकि सात दिवसीय प्रवचनों में भविष्य मालिका की पवित्र विचारधारा पर चर्चा होती है। सम्मिलित होने से भक्त इन सिद्धांतों का सार ग्रहण कर लेते हैं, इसीलिए हमने यह नियम रखा है। आप यह आवश्यकता जब भी समय मिले तब पूरी कर सकते हैं—एक वर्ष में, दो वर्ष में, या पाँच वर्ष में भी। कोई जल्दबाज़ी नहीं है; लोग जब सक्षम हों तब कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 57:22 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2133 हम जानते हैं कि आने वाला समय कितना भयंकर होगा। इस बारे में सोचकर ही हमारा हृदय भय से धड़कने लगता है, और चिंता होती है कि क्या होगा और क्या हम बचेंगे या नहीं। हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: वक्ता इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाए क्योंकि कनेक्शन टूट गया और दूसरे व्यक्ति ने बोलना शुरू कर दिया।

► यह उत्तर सुनें · 58:48 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2134 कुछ प्रचारक कहते हैं कि 'अनंत युग' आरंभ हो चुका है और बल मुकुंद देव नामक राजा के राज्यकाल के 39वें वर्ष में समाप्त होगा। कृपया इसे समझाइए।

उत्तर: मालिका में जो लिखा है वह यह है: 'सत्य का युग आएगा, परंतु कोई जान नहीं पाएगा।' यह गरुड़ और भगवान कृष्ण के संवाद से है। इसका अर्थ है कि कलियुग के चलते हुए ही सत्ययुग आरंभ हो जाएगा, परंतु अधिकांश लोग इसे समझ नहीं पाएँगे। केवल सच्चे भक्त, जिनमें आध्यात्मिक अधिकार है, वही समझ पाएँगे। जिनमें यह अधिकार नहीं है, वे इसे समझ नहीं सकेंगे; वे तर्क करेंगे, वाद-विवाद करेंगे, और मालिका की भविष्यवाणियों की बात करने वालों की आलोचना भी करेंगे। केवल भक्त ही जान पाएँगे कि युग बदल गया है।

► यह उत्तर सुनें · 59:38 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2135 हम कोलकाता से हैं और त्रिकाल संध्या बांग्ला में करते हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर: जी हाँ, बांग्ला में करना भी ठीक है। इसमें कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:01:17 · 4 मार्च 2024

प्रश्न 2136 बाबा, मैं संध्या की प्रार्थना बहुत तेज़ी से पढ़ता/पढ़ती हूँ। क्या यह ठीक है, या मुझे धीरे-धीरे करना चाहिए?

उत्तर: जिस तरह आपके मन को सही लगे, उसी तरह कीजिए। इसमें कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:02:04 · 4 मार्च 2024

सत्र 116 · प्रश्न 2137–2159

L124- 2024 का राष्ट्रीय निर्वाचन धर्म की जीत

दिनांक: 7 अप्रैल 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2137 मेरा एक प्रश्न है। आपकी भविष्य मालिका के अनुसार, क्या इसका अर्थ यह है कि आप और मैं, और हम सब, मरने वाले हैं?

उत्तर: नहीं, बिल्कुल नहीं। मैंने ऐसी बात कभी नहीं कही। देखिए, मैं हमेशा एक ही बात कहता हूँ: लोगों को धर्म की ओर मुड़ना चाहिए। धर्म का अर्थ है अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करना, जब समय और अवसर मिले तब भगवान का नाम लेना, और 'मेरा-तेरा' में उलझे बिना संसार के कल्याण की कामना करना। भागवत पुराण पढ़िए, त्रिकाल संध्या कीजिए। जो लोग सत्य, धर्म, न्याय, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री का आचरण करते हैं, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। परंतु दुष्ट लोग बच नहीं पाएँगे। बृहस्पति की आने वाली 'अतिचार गति' धर्म को बढ़ावा देगी। बृहस्पति की ऐसी गतियाँ प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के समय भी हुई थीं, जिनसे संसार में बहुत दुर्भाग्य आया, परंतु धर्म बचा रहा और आज भी विद्यमान है। तो जो लोग समय के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें धर्म को थामे रखना चाहिए। भविष्य पुराण मानवता के कल्याण के लिए लिखा गया था, लोगों को व्यथित करने के लिए नहीं। यह ऐसे ही है जैसे जब हम बीमार होते हैं तो दवा लेते हैं और डॉक्टर के पास जाते हैं। ये सभी सिद्धांत आपके उद्धार के लिए हैं, मानवता के उद्धार के लिए हैं, लोगों के मरने के लिए नहीं। परंतु जो अधर्म में रहते हैं, जो संसार पर बोझ हैं, जो अत्याचारी हैं, जो संसार के लिए बुरा सोचते हैं और केवल अपना ही सोचते हैं—उनके लिए कोई स्थान नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 09:22 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2138 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि आपने मालिका से बताया था कि पिछले युगों की गोपियाँ, तपस्वी और वानर भगवान की शरण में आएँगे और आने वाले सत्ययुग में उन्हें श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा, भगवान से मिलन आदि होगा। यह बहुत पवित्र विचार है। परंतु, उदाहरण के लिए, जो उनमें नहीं थे उनका क्या? क्या भगवान उन्हें अपनी शरण में नहीं जोड़ते? मेरा अर्थ है, जो गोलोक वैकुंठ धाम से आए, उनकी संख्या तो उतनी ही रहती है ना? जो भक्त पिछले युगों में थे, वही इस युग में भी होंगे। क्या इसका अर्थ यह है कि कोई नए भक्त नहीं जुड़ेंगे? यही प्रश्न है, कृपया स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: देखिए, आपका प्रश्न बहुत अच्छा है। मैं समझाता हूँ। युग चक्र और काल चक्र गतिमान हैं। काल चक्र के साथ बहुत से लोग अच्छे बनते हैं, और कुछ बुरे भी बन जाते हैं। गोपियाँ, तपस्वी, वानर, और जो भक्त भगवान महाप्रभु बुद्ध देव के साथ थे, जो गोलोक से आए थे—वे निश्चित रूप से बचेंगे और उन्हें उच्च स्थान भी मिलेंगे। कुछ भक्त राजा बनेंगे, कुछ भगवान के मंत्रिमंडल के सदस्य बनेंगे, और कुछ समस्त ब्रह्मांड में धर्म की स्थापना का कार्य करेंगे। यह होगा। परंतु उनके साथ-साथ, जो लोग समय के साथ शास्त्रों, पुराणों और सनातन धर्म की प्रक्रियाओं के माध्यम से अच्छे बनते हैं, वे भी भगवान की शरण में आएँगे। वे भी सत्ययुग में जाएँगे, और सत्ययुग से वे वैकुंठ तक भी जा सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 11:49 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2139 एक बहुत बड़े संत हैं, उनका नाम प्रेमानंद महाराज है, और मैं उनके प्रवचन सुनता हूँ। मैं लगभग एक वर्ष से आपसे भी जुड़ा हूँ। उनके प्रवचनों में, और इस्कॉन के प्रवचनों में, और भागवत पुराण में भी, कलियुग का वर्णन 4,32,000 वर्षों का है, परंतु आप कहते हैं कि यह 5,000 वर्ष है। यह बड़ा विरोधाभास है।

उत्तर: देखिए, आज मैं आपको जो बता रहा हूँ, एक समय आएगा जब संपूर्ण संसार, संपूर्ण ब्रह्मांड इसे मानेगा। क्योंकि मैं शास्त्रों से कहता हूँ। शास्त्र ही हमारा इतिहास हैं, हमारा भविष्य हैं, हमारा वर्तमान हैं, और मानव जीवन का समाधान हैं। आज मैं आपको जो बता रहा हूँ वह शास्त्रों के अनुसार है, और एक समय आएगा जब शास्त्रों के सभी विद्वान भी इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करेंगे। बस थोड़ा समय लग सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 13:44 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2140 बाबा, मैं सत्संग धारा से जुड़ना चाहता हूँ। मैं क्या करूँ? कृपया मार्गदर्शन कीजिए, बाबा।

उत्तर: देखिए, इस यूट्यूब वीडियो के नीचे मोहन नाम के एक लड़के का नंबर है। उससे बात कीजिए, वह आपको बताएगा कि आपको किन नियमों का पालन करना है। उन नियमों का पालन कीजिए, इसी में आपका कल्याण है। देखिए, यह ज्ञान मानवता के उद्धार के लिए है। भगवान ने इस ज्ञान को गुप्त रूप से रचा और यह भी लिखवाया कि कलियुग के अंत में इस भविष्य पुराण का प्रचार होगा, जो हम कर रहे हैं। यह मानवता के लिए सबसे बड़ा कल्याणकारी ज्ञान है, सबसे बड़ा अमृत है। कीजिए, और आवश्यकतानुसार मोहन से संपर्क कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:18 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2141 पिताजी, मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ता हूँ और माधव का नाम जपता हूँ—ये तीनों करता हूँ। लेकिन मैं सभा में सम्मिलित नहीं हो पाता। क्या मुझे भगवान के दर्शन नहीं होंगे?

उत्तर: देखिए, सुनिए। मैंने आप लोगों से कहा है कि मोहन से बात कीजिए, और मोहन आपकी मुझसे बात करवा देंगे। मैंने कह दिया है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:17 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2142 पिताजी, मेरा प्रश्न है, मैं राजस्थान से हूँ, और हमारे यहाँ यह परंपरा बहुत मजबूत है कि गुरुवार को बाल नहीं धोते और कुछ अन्य काम भी नहीं करते। क्या ये सब मान्यताएँ आज के समय में लागू होती हैं?

उत्तर: देखिए, माताजी, गुरुवार महालक्ष्मी का दिन है। महालक्ष्मी के दिन यदि कोई बाल धोता है, तो उसमें सिर की मैल को त्यागना होता है। हमारे सनातन धर्म के नियमों के अनुसार, गुरुवार को बाल नहीं धोने चाहिए। हम दूसरे दिनों में कर सकते हैं। यदि कोई आवश्यकता हो या आपात स्थिति हो, तो किया जा सकता है। लेकिन आपके राजस्थान की यह परंपरा अच्छी है। हमें उस नियम का पालन करना चाहिए। सत्य युग में सनातन धर्म के सभी नियमों का पालन करना होगा। अभी समय ठीक नहीं है, इसलिए समय के साथ हमें इसका पालन करना पड़ेगा। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:18 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2143 पंडित जी, मैं अभिषेक हूँ। मैं अपने शहर में मालिका का प्रचार करने जा रहा हूँ। पंडित जी, कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए ताकि मैं भगवान का यह कार्य कर सकूँ। मुझे भीतर से प्रबल प्रेरणा मिलती है कि मैं यह प्रचार कार्य करूँ ताकि धर्म की स्थापना शीघ्र हो सके और भक्तगण एकजुट हो सकें।

उत्तर: मेरा आशीर्वाद। मैं आपकी भावना का बहुत आदर करता हूँ, और आप पर भगवान की कृपा बनी रहे। यदि सभी भक्त इसी तरह मिलकर कार्य करें, तो संसार में सत्य और धर्म का प्रसार बहुत तेजी से होगा, जिससे मानवता का कल्याण होगा। तो यह कार्य अवश्य कीजिए। लेकिन देखिए, आपको मुरादाबाद या संभल जाने की आवश्यकता नहीं है। वे भी सुनते हैं। आपको अपने निवास स्थान के आसपास के क्षेत्र में कार्य करना चाहिए। बहुत दूर जाना आवश्यक नहीं है। अपने सामर्थ्य के अनुसार, जहाँ भी आसपास कोई स्थान हो, धार्मिक केंद्र हो, कोई मंदिर हो, या कोई अच्छी धार्मिक संस्था हो, वहाँ आप बहुत छोटे-छोटे पर्चे बाँट सकते हैं। बस इतना कहिए कि युग समाप्त हो रहा है, सत्य युग आ रहा है, और इस समय त्रिकाल संध्या कीजिए। अधिक जानना चाहते हैं तो अपने कल्याण के लिए भविष्य मालिका का अनुसरण कीजिए। ऐसे छोटे-छोटे पर्चे बाँटिए, जिनमें बहुत कम खर्च होगा। आसपास के स्थानों में कीजिए; दूर जाना आवश्यक नहीं है। लोग जहाँ रहते हैं वहीं यह कार्य करें तो अच्छा होगा। आप भी कीजिए। आप पर भगवान की कृपा है और मेरी शुभकामनाएँ हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 19:25 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2144 जय श्री राधा माधव, गुरुजी। मैं जानना चाहता हूँ, आपने कहा था कि यदि हम त्रिकाल संध्या करें और श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ें, तो हमें अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे। मैं छह महीने से लगातार यह कर रहा हूँ। क्या मैं कुछ गलत कर रहा हूँ, जिसके कारण मुझे उत्तर नहीं मिल रहे, या इसका कोई और कारण है?

उत्तर: देखिए, जब आप मिठाई खाते हैं, तो उसका स्वाद तभी ठीक से मिलता है जब आप बैठकर खाते हैं। यदि कोई चलते-फिरते मिठाई खाए, तो उसे असली स्वाद नहीं मिलता। उसी तरह, यदि त्रिकाल संध्या सही समय पर की जाए और उसके सभी नियमों का पालन किया जाए, तो मेरा मानना है कि छह महीने तो छोड़िए, एक महीने में ही भगवान के दर्शन हो सकते हैं, और भगवान उन्हें भविष्य की घटनाओं के बारे में बताएँगे। यदि आपके साथ ऐसा नहीं हुआ है, तो चिंता मत कीजिए, भगवान आप पर कृपा करेंगे। दूसरी बात यह है कि त्रिकाल संध्या के सभी नियमों का पालन होना चाहिए: 16 नामों का जप, दशावतार, दुर्गा माधव स्तुति, और श्रीमद्भागवत का पाठ। और भगवान पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए, अटल भक्ति होनी चाहिए, और 'मैं, मेरा, मुझे' का भाव, हिंसा, क्रोध और अहंकार का त्याग करना चाहिए। ऋषि-मुनियों ने युगों तक तपस्या की और फिर भी उन्हें भगवान के दर्शन नहीं हुए, लेकिन आप सब को इस युग में मिलने वाले हैं। कीजिए, आपको अवश्य मिलेंगे। कई हजारों, बल्कि लाखों लोगों को दर्शन हुए हैं, और आपको भी हो सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:33 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2145 पंडित जी, रंग पंचमी के दिन महाकाल मंदिर में जो घटना हुई, उसके बारे में वहाँ के एक पंडित ने कहा कि महाकाल अब जाग चुके हैं, और केवल वही बचेंगे जो सत्य के मार्ग पर चलते हैं, क्योंकि महाकाल स्वयं विनाश के लिए अवतरित हुए हैं। कृपया इस पर प्रकाश डालिए और बताइए कि क्या भगवान महाकाल वास्तव में जाग चुके हैं।

उत्तर: बहुत ही आनंददायक प्रश्न, बेटी, आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। यह आवश्यक है। देखिए, मैं चंडीगढ़ में था और भागवत कथा के दौरान मैंने इस विषय पर कहा था। महाकाल मंदिर में जिस समय आग लगी, वह ब्रह्म मुहूर्त का समय था। जगन्नाथ मंदिर में भी ब्रह्म मुहूर्त में आग लगी थी, और लगभग 20-25 दिन पहले जगन्नाथ मंदिर से ब्रह्म मुहूर्त में ही एक पत्थर गिरा था। और महाकालेश्वर मंदिर में ब्रह्म मुहूर्त में आग लगी, वही समय जब देवताओं की पूजा होती है। इसका कारण यह है कि भगवान कल्कि, भगवान शंकर का रुद्र (विनाशकारी) रूप हैं। और भगवान

शंकर ने सिद्ध कर दिया है कि 'मैं भी विनाश के लिए निकल पड़ा हूँ।' मेरे सेवक, जो मेरी सेवा करते हैं, जो मेरी पूजा करते हैं, उन्हें कष्ट हुआ, वह घटना उनके साथ घटी। यह 13 लोगों के साथ हुआ, जो भगवान के निकट हैं, और 13 की संख्या सत्य युग की संख्या है। धर्म की कोई भी स्थापना 1, 7, 13, 27 जैसी संख्याओं से जुड़ी होती है—ये बहुत शक्तिशाली और प्रभावशाली संख्याएँ हैं। और यह उसी दिन हुआ। मैंने पहले कहा था कि माता वैष्णो देवी 2018 में विनाश और धर्म की स्थापना के लिए आई थीं, इसीलिए पूरे विश्व में बीमारियाँ फैलीं। और भगवान शंकर ने अपना स्थान छोड़ दिया है। ओडिशा में, भगवान शंकर की सबसे बड़ी पीठ, मणि बाबा, उनका त्रिशूल, जो मंदिर के शिखर पर था, वह भी कुछ दिन पहले हवा में उड़ गया, पिछले दो-तीन महीनों के भीतर। तो, भगवान शंकर विनाश के लिए निकल पड़े हैं। यह मानवता के लिए एक चेतावनी है। उज्जयिनी क्षेत्र से, महाकालेश्वर से यह संदेश है कि मानव सभ्यता एक महायुद्ध की ओर बढ़ रही है। पापी जलकर भस्म हो जाएँगे, और धर्मात्मा बच जाएँगे। शंकर भक्तों की रक्षा करेंगे और पापियों का अवश्य विनाश करेंगे। यह समय का प्रमाण है। कोई माने या न माने, यह भविष्य पुराण के सिद्धांतों के अनुरूप है। यही सत्य है।

► यह उत्तर सुनें · 23:17 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2146 मेरा प्रश्न है, जैसे कलियुग के लिए 16 अक्षरों वाला महामंत्र 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण... हरे राम हरे राम...' था, वैसे ही क्या हम अपने प्रभु का कल्कि महामंत्र माला पर जप सकते हैं? भक्त कहते हैं कि महामंत्र का जप करने से भक्ति बढ़ती है। क्या यह सही है? क्या हम कल्कि महामंत्र का जप कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, माताजी, जो महामंत्र भगवान चैतन्य महाप्रभु ने प्रचारित किया, उसका जप सभी को करना चाहिए। हमारी सनातन वैष्णव परंपरा में यह आवश्यक है। लेकिन इस समय, युग के अंत में, एक नया युग आरंभ होने वाला है, और भगवान कल्कि आ रहे हैं। उनका नाम माधव होगा। माधव ही कल्कि हैं, और कल्कि ही माधव हैं। यदि अनंत ब्रह्मांडों के स्वामी आ रहे हैं, तो हमें उनका स्वागत करना चाहिए और उनके नाम का जप करना चाहिए। क्योंकि भगवान आ रहे हैं, और यदि हम भक्त हैं, तो जिस नाम से वे आ रहे हैं, उस नाम का सम्मान करना चाहिए। और 'माधव' नाम सबसे बड़ा तत्त्व है, वह शक्ति है जो मानवता को कलियुग से सत्य युग में ले जाएगी। अच्युतानंद और पंचसखा ने भविष्य पुराण में यही लिखा है। इसीलिए हम इस नाम का प्रचार कर रहे हैं। आप भी त्रिकाल संध्या के समय और जब भी आपका मन करे, माधव नाम का जप कीजिए। लेकिन महामंत्र का जप भी कीजिए; उसे मत छोड़िए।

► यह उत्तर सुनें · 26:10 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2147 पिताजी, प्रश्न यह है कि जीव हत्या (पशु वध) को रोकने के लिए हम अपने स्तर पर क्या कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, गरुड़ पुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण, और विष्णु पुराण की भविष्य मालिका स्पष्ट रूप से कहती है कि जो जीव की हत्या करता है, उसे कभी दोबारा मनुष्य जन्म नहीं मिलता। इतना ही नहीं, उसे एक पूरे कल्प तक यम की यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। हमें यह मनुष्य जीवन मुक्ति के मार्ग के लिए मिला है। इसलिए, जो मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं, उन्हें जीव हत्या से बचना चाहिए। आप इस प्रकार के शीर्षक लिखकर लोगों में बाँट सकते हैं। यदि आप एक व्यक्ति को भी शाकाहारी बना देते हैं, तो आपको 100 वर्षों की तपस्या का फल मिलेगा। इससे मनुष्य जीवन का बहुत कल्याण होता है। कोई अरबपति हो सकता है, लेकिन यदि उसके पास और कुछ नहीं है, और वह एक, दो या पाँच लोगों को शाकाहारी बना दे, तो उसका जीवन सफल हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 28:04 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2148 पिताजी, अहमदाबाद से दो लड़कियाँ हैं, 14 और 15 वर्ष की, जिन्हें त्रिकाल संध्या करना, भागवत पढ़ना और आपके मालिका के वीडियो देखना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन उनके माता-पिता उन्हें सख्ती से इसका पालन नहीं करने देते। इसलिए दोनों लड़कियाँ छिपकर स्ट्रीम देखती हैं। वे आपसे आशीर्वाद चाहती हैं, प्रभुजी।

उत्तर: देखिए, मैं एक बात कहूँगा। आप इस बारे में मोहन से बात कर सकते हैं, लेकिन मैं एक बात बताऊँगा। धर्म का पालन करना इतना सरल नहीं है। यदि माता-पिता विरोध करते हैं, तो अपने माता-पिता का विरोध नहीं करना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा कि कोई अपने माता-पिता का विरोध करे। हाँ, यदि माता-पिता स्वयं धर्म के विरुद्ध नहीं हैं, तो छिपकर इसका पालन किया जा सकता है। क्योंकि धर्म का पालन करने से न केवल व्यक्ति का कल्याण होता है, बल्कि संसार का भी कल्याण होता है। यदि बच्चे धर्म का पालन करते हैं, तो उनके माता-पिता को भी लाभ होता है, और परिवार को भी लाभ होता है। जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, वहाँ सारे दोष दूर हो जाते हैं। मेरा आशीर्वाद उनके साथ है, भगवान का आशीर्वाद उनके साथ है। वे त्रिकाल संध्या करें। समय आने पर भगवान उनके माता-पिता को भी जोड़ दें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:59 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2149 गुरुजी, मेरा प्रश्न यह है कि पिछले कुछ दिनों से मैं त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहा हूँ। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बन रही हैं जिनके कारण मैं यह नहीं कर पा रहा। ऐसा लगता है जैसे माया मुझे मोहित कर रही है। मैं सभा के सत्संग में भी सम्मिलित नहीं हो पा रहा हूँ, और मेरा मोबाइल फोन भी खराब हो गया है। मेरे साथ ये परिस्थितियाँ बन रही हैं।

उत्तर: देखिए, मोबाइल फोन के बारे में मैं क्या कहूँ, बेटा? आपने स्वयं ही कह दिया। देखिए, जब कोई माया में गलतियाँ करता है, या धर्म से भटक जाता है, या जब मन में बुरे विचार आते हैं, तब फोन भी टूट जाता है। तो आप समझ गए। अब से ऐसा मत कीजिए और ठीक से त्रिकाल संध्या कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। क्योंकि धर्म का पालन करने में माया कठिनाइयाँ और बाधाएँ उत्पन्न करती है। यह लोगों को उनके मार्ग से भटका भी सकती है। लेकिन ऐसा होता है, बेटा। मनुष्य जीवन में पाँच इंद्रियाँ हैं, और इन इंद्रियों को वश में करने के लिए भगवान दंड देते हैं। आपको जान लेना चाहिए कि आपको दंड मिला है। यदि आप सुधरते नहीं और उसी मार्ग पर चलते रहते हैं, तो बात अलग है। जो हो गया सो हो गया, आगे बढ़िए। त्रिकाल संध्या कीजिए। यदि आप त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहे हैं, तो दिन भर माधव का नाम जपिए। जब आपका धर्म बढ़ेगा, तो आप फिर से त्रिकाल संध्या कर पाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:36 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2150 मैं आपको बताना चाहती थी कि मुझे दो दिन पहले एक सपना आया। पूरा वातावरण विचित्र हो गया, उसका रंग समझ में नहीं आ रहा था। लोग इधर-उधर भाग रहे थे। जमीन इतनी सूखी थी कि उसमें बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई थीं, इतनी बड़ी कि उनमें पेड़ गिर जाए। पूरी धरती ऐसी दरारों से भरी थी। भूकंप आ रहे थे, और अचानक एक बाँध टूटा और बाढ़ आ गई। मैं उस बंजर भूमि पर खड़ी थी, लोगों को भागते हुए देख रही थी। जैसे ही मैंने आकाश की ओर देखा, एक विशाल उल्कापिंड बड़ी तेजी से आया। किसी ने मुझे खींचकर एक ओर कर दिया ताकि मैं कुचली न जाऊँ। जैसे ही मुझे खींचा गया, उसके ठीक बाद दूसरा उल्कापिंड आया, और मैं उसके नीचे कुचल गई। जैसे ही यह हुआ, मेरा सपना टूट गया। ऐसा क्यों हुआ? यह मैं आपसे जानना चाहती हूँ।

उत्तर: देखिए, माताजी, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, जो भक्त हैं, भगवान उन्हें दिखाते हैं कि ऐसा समय आने वाला है। आज एक युवक भारत की महान परंपराओं के लोगों के पास भविष्य मालिका का प्रचार करने गया। पूरा संसार सही मार्ग पर नहीं है। महाविनाश से पहले, मानवता के कल्याण के लिए ब्रह्मांड में भविष्य पुराण के सिद्धांतों के अतिरिक्त कोई सनातन सिद्धांत नहीं है, यह मैं आज आपसे कह रहा हूँ। जो लोग आज भविष्य मालिका को अस्वीकार करते हैं, वे आपके चरणों में गिरकर मुक्ति माँगेंगे क्योंकि वह समय आ रहा है। क्योंकि मनुष्य देखकर ही सीखता है। लेकिन अच्युतानंद ने भक्तों को पहले ही बता दिया। और जिन भक्तों को ऐसे सपने आते हैं, उन्हें दिखाया जा रहा है कि क्या होने वाला है। मैंने पहले कहा है कि आकाश से इतने उल्कापिंड गिरेंगे कि घर, परिवार और शहर जल जाएँगे। जंगल जलेंगे, भूकंप आएँगे, अग्नि-प्रलय, वायु-प्रलय, और युद्ध होगा। 2025, 26, 27 में महाविनाश और महामारी का समय आ रहा है। यह मानवता के लिए महासंकट का समय होगा। मैं आपसे अभी कह रहा हूँ, कोई मुक्ति नहीं होगी। यही होने वाला है, और यही आपको दिखाया जा रहा है। भगवान की शरण में रहिए। भक्तों को सशक्त होना चाहिए ताकि धर्म की स्थापना हो और असुरों पर विजय हो। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 41:19 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2151 पंडित जी, जहाँ तक मुझे पता है, 29 मार्च 2025 को शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे, लेकिन...

उत्तर: शनिवार, 29 मार्च 2025 को शाम 5:30 बजे शनि का मीन राशि में गोचर होगा। और अच्युतानंद जी ने शनि के इस मीन राशि में गोचर के विषय में लिखा है: 'मीन शनि गुरु बारे पड़िहि, अंक ध्रुब ध्रुब भाद्र मासरे, 13 दिन पाक धरिबा ग्रास।' इसका अर्थ है कि शनि के मीन राशि में रहने के समय भाद्र मास में ऐसा समय आएगा जब पृथ्वी को विपत्ति अपनी चपेट में ले लेगी। तीसरा विश्व युद्ध, रोग और आपदाएँ शनि के मीन राशि में रहने के समय आ रहे हैं। मानवता की रक्षा के लिए संसार में भविष्य मालिका के अतिरिक्त और कोई सिद्धांत नहीं है। समय आएगा और लोग इस पर विचार करेंगे, परंतु उससे पहले मानवता का उद्धार आवश्यक है। हमें किसी बड़ी परंपराओं से मतलब नहीं है; हमें मतलब है मानवता के कल्याण से, मानव सभ्यता के कल्याण से और भक्तों के उद्धार से। जिन्हें अच्छा बनना है, वे अच्छे बन जाएँ। और जो गोलोक से, चारों युगों से अच्छे जीव बनकर आए हैं, वे भी अच्छे हैं। क्योंकि समय बहुत बुरा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:22 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2152 असम में क्या होगा, पिताजी?

उत्तर: देखिए, असम राज्य में माँ कामाख्या का निवास है। 'कामाख्या मंडल' नाम से भक्तों का एक समूह बनेगा। और माँ कामाख्या देवी भक्तों की रक्षा करेंगी तथा राक्षसों के घरों में घुसकर उनका शिकार करके उनका वध करेंगी। वे उन्हें नहीं छोड़ेंगी। असम में इतनी भयंकर बाढ़ और भूकंप आएँगे, जैसे पहले कभी नहीं देखे गए। परंतु भक्त अवश्य बच जाएँगे। और यह भविष्य मालिका भक्तों के उद्धार के लिए ही प्रचारित की जा रही है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:08 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2153 गुरुजी, मुझे एक अनुभव बताना है। बचपन से ही मैं पास के एक हनुमान जी के मंदिर में जाता रहा हूँ। ऐसा लगता है कि हनुमान जी मुझे भविष्य के संकेत दे रहे हैं कि पाप बढ़ रहा है। क्या यह कोई संकेत है, गुरुजी?

उत्तर: भक्तों को संकेत मिलते हैं। उनके मन में विचार आते हैं और भगवान उन्हें स्वप्न में चीज़ें दिखाते हैं। भक्तों के लिए यह एक अच्छी चेतावनी है। यदि आपको भगवान से संकेत मिलता है, तो आपको उसका अनुसरण करना चाहिए। त्रिकाल संध्या करें, और धर्म एवं सत्य का मनुष्य बनने के लिए भगवान माधव का नाम जपें और भागवत पढ़ें। आपका कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 47:43 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2154 जय श्री माता पिता श्री। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ और दो-तीन महीने से भविष्य मालिका का पालन कर रहा हूँ। मैं सब कुछ मानता हूँ। मैंने मांस-मछली छोड़ दी है, लेकिन फिर भी हर दो-तीन दिन में तीन-चार सिगरेट पी ही लेता हूँ। इसे कैसे छोड़ूँ?

उत्तर: देखिए, यह बहुत अच्छी बात है कि आपने मांस-मछली छोड़ दी। बहुत उत्तम। देखिए, आपने मांस, मछली, सब कुछ छोड़ दिया। बस सिगरेट बची है। जब ऋषि-मुनि ईश्वर-प्राप्ति के लिए तपस्या करने जाते थे, जिसका अर्थ है मानव जीवन का कल्याण, अपना कल्याण, तो वे अन्न, घर, सब कुछ त्याग देते थे। कितना बड़ा त्याग! जब आपके मन में सिगरेट की तलब उठे, तो स्वयं से कहिए, 'ऋषियों ने महीनों, वर्षों, यहाँ तक कि जन्मों तक अन्न और सब कुछ त्याग दिया। मेरे लिए तो यह छोड़ना बहुत छोटी बात है।' यदि आप ऐसा सोचकर एक-दो मिनट बैठकर माधव का नाम जपेंगे, तो तलब चली जाएगी। स्वयं से कहिए, 'यह मेरे लिए अच्छा नहीं है, और मुझे भगवान को प्राप्त करना है, सत्य युग में जाना है और दिव्य मानव बनना है। इसलिए यह मेरे लिए बुरा है।' माधव की कृपा से धीरे-धीरे हो जाएगा। बहुत अच्छा है बेटा, छोड़ दीजिए। क्योंकि धर्म त्याग से ही प्राप्त होता है। आपने इतने बड़े त्याग किए हैं; यदि यह छोटा-सा त्याग नहीं कर पाते, तो बैठकर माधव का नाम जपिए। उस समय मुँह में एक चॉकलेट या एक लौंग डाल लीजिए, मन भटक जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 48:58 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2155 पंडित जी, आप मालिका में कहते हैं कि जब भगवान माधव को भगवान परशुराम से शक्ति प्राप्त होगी, तो वे अकेले ही बलराम और सबकी शक्ति धारण करेंगे। परंतु मैंने यूट्यूब के एक ओड़िया चैनल, प्रार्थना टीवी पर देखा, जहाँ वे प्रचार करते हैं कि बलराम जी और कल्कि जी दोनों आएँगे, और दोनों को एक यज्ञ से दो घोड़े मिलेंगे, अर्थात् दो आएँगे। पर आप कहते हैं कि कल्कि जी अकेले आएँगे। कृपया इसे थोड़ा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: अच्युतानंद ने अपने वाल्मीकि कल्प ग्रंथ में लिखा है: 'दक्षिण स्कंधरे बलराम, बाम भागे रहिबे चक्रधर।' इसका अर्थ है कि भगवान कृष्ण बाएँ कंधे पर और बलराम दाएँ कंधे पर होंगे, और दोनों मिलकर कल्कि बनेंगे। यह भी लिखा है: 'श्वेत मूर्ति, श्वेत बास, श्वेत अश्व बाहन... शंख चक्र धर देव।' इसका अर्थ है कि शंख, चक्र, गदा, पद्म, हल और मूसल धारण करके भगवान कल्कि एक ही रूप में आएँगे। और श्रीमद्भागवत में भगवान वेदव्यास ने लिखा है कि भगवान कल्कि देवदत्त नामक घोड़े पर सवार होकर और नंदक नामक तलवार धारण करके संहार करेंगे। बलराम संहार नहीं करेंगे। यह वेदव्यास जी ने लिखा है, और उन्होंने जो लिखा है वही अंतिम है। दूसरों को कितना ज्ञान है, मुझे नहीं पता। मैं मालिका का प्रचार करने के योग्य हूँ; यह अधिकार मुझे अच्युतानंद ने दिया है, मेरा नाम लिखा हुआ है। तो जो ज्ञान हमारे पास है, वह हमारे प्रभु और गुरु की कृपा से है। और दूसरे जो इधर-उधर कहते हैं... जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:33 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2156 मैं फरीदाबाद से बोल रहा हूँ। सभा में सम्मिलित होने के बाद मुझे एक स्वप्न आया। मैंने देखा कि एक युवक अपनी उम्र के कई अन्य युवाओं के साथ एक कमरे में प्रवेश कर रहा है। वह एक दरवाज़े पर रुका, फिर कमरे में आया। उसने किनारी वाली धोती और पीला अंगरखा (ऊपरी वस्त्र) पहना हुआ था। वह एक छोटी चौकी पर बैठ गया। मैं उसके सामने बैठा था पर कुछ कह नहीं पा रहा था। वह बस देख रहा था। मन ही मन मुझे लगा कि वे प्रभु हैं, पर मैं बोल नहीं पाया। कुछ समय बाद उन्होंने कहा, 'सब ठीक हो जाएगा।' यह प्रातःकाल का स्वप्न था, पंडित जी। कृपया इसके बारे में बताइए। वे युवा रूप में थे।

उत्तर: देखिए, प्रातःकाल का स्वप्न मधुर स्वप्न होता है। और प्रभु ने आकर आपको अच्छा आशीर्वाद दिया। त्रिकाल संध्या कीजिए। यह प्रभु की कृपा है, और आपको माधव के दर्शन प्राप्त हुए हैं। इससे बढ़कर कुछ नहीं है। आप भाग्यशाली हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 55:21 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2157 मुझे आपसे एक प्रश्न पूछना था। आपने अपने प्रवचन में कहा था कि जो 33 करोड़ बचेंगे, वे देवता होंगे। चूँकि हम सुधर्म संघ से जुड़े हैं, तो क्या हम भी उन देवताओं की उसी श्रेणी में आते हैं जिनकी आप बात करते हैं? यही प्रश्न था।

उत्तर: क्योंकि जो सुधर्म संघ में जुड़ते हैं, वे या तो देवता हैं, या गोलोकवासी हैं, या वृंदावनवासी हैं, या अयोध्या में भगवान राम के साथ के वानर थे, या सत्य युग में ऋषि-मुनि थे। उनके अतिरिक्त और कोई नहीं है। यह बिल्कुल सही है। इसका एक ही अर्थ है: जो सुधर्म संघ में जुड़ते हैं, भविष्य मालिका पर विश्वास करते हैं और संध्या करते हैं, वे उन्हीं देवताओं की श्रेणी में हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 56:41 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2158 पंडित जी, मुझे एक प्रश्न पूछना था। मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मैं पूरी तरह खून से सना हुआ था और मेरे हाथ में तलवार थी। मैं अपने घर के दरवाज़े के बाहर बैठा था, यह देखने की प्रतीक्षा में कि अब कौन आएगा। मेरे भीतर इस प्रकार की प्रवृत्ति थी, जबकि यह मेरा स्वभाव नहीं है। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: देखिए, एक समय आएगा जब लोग घरों में घुसकर दूसरों को सताएँगे और परेशान करेंगे। भगवान ने आपको दिखाया है कि उस समय क्या होगा। यदि आवश्यकता पड़ी, तो हमें भी लड़ना होगा। वह समय आएगा, और यह निकट भविष्य में होने वाला है। भगवान ने आपको यह पहले से दिखाया, क्योंकि विनाश का समय आ रहा है। विनाश से पहले भक्तों को चेतावनियाँ मिलती हैं। ऐसी बातें देखकर त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और प्रभु की शरण लेनी चाहिए। यदि आप चाहें, तो जाइए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 57:38 · 7 अप्रैल 2024

प्रश्न 2159 पंडित जी, यह मेरा प्रश्न नहीं है, किसी और का है। मैं आपको बस एक बात बताना चाहता हूँ। एक व्यक्ति पहली बार आपके चंडीगढ़ के प्रवचन में आया था। जब आप व्यास गद्दी पर विराजमान थे, तो उन्होंने आपको फन फैलाए हुए नाग देवता के रूप में देखा। वे त्रिकाल संध्या भी नहीं करते थे, पर अब शुरू कर दी है। हमें बाद में पता चला, वरना हम उनका परिचय आपसे करवा देते। हमने उन्हें त्रिकाल संध्या की विधि बता दी है और उन्होंने पिछले कुछ दिनों में शुरू कर दी है। और हर सप्ताह मंगलवार को, रात लगभग 2-2:30 बजे, उन्हें हनुमान जी के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, भक्ति के समर्पण में कोई नाग लोक से आया है, कोई सूर्य लोक या चंद्र लोक से। कोई भक्त हैं, कोई देवता हैं, कोई गोलोकवासी हैं। जैसे-जैसे वे अपनी भक्ति के अनुसार आते हैं, हर भक्त की अलग पहचान होती है। और भक्तों को दूसरे भक्तों के दर्शन होते हैं; वे एक-दूसरे को पहचान लेते हैं, और उनका हृदय इसे स्वीकार कर लेता है। भक्ति का यह भाव भगवान की कृपा है। यह बहुत बड़ी बात है कि उन्हें यह दर्शन हुआ।

► यह उत्तर सुनें · 58:35 · 7 अप्रैल 2024

सत्र 117 · प्रश्न 2160–2186

L125- 2025 के मीन - शनि के योग बारे में मालिका में पहले से प्रकाश था | पंडित काशीनाथ मिश्रा

दिनांक: 11 अप्रैल 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2160 पिताजी, आपने 2032 की समय-सीमा का उल्लेख किया था न? तो मान लीजिए कुछ ऐसी महान आत्माएँ हैं जिनमें इस घटना को रोकने की पर्याप्त शक्ति है। साथ ही, मूल भविष्य मालिका किसी के पास नहीं है। तो क्या यह वास्तव में 2032 तक हो जाएगा?

उत्तर: देखिए, श्रीमद् रामचरितमानस में महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम के अवतार के विषय में पहले ही लिख दिया था। श्रीमद्भागवत में भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध और भगवान चैतन्य महाप्रभु के अवतारों का वर्णन है। श्रीमद्भागवत में कल्कि अवतार का भी उल्लेख है, और भविष्य मालिका में भी। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। जिसे बदलने की आवश्यकता है, वह केवल मानवता है। त्रिकाल संध्या करने से लोग बच जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:21 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2161 पिताजी, जय श्री माधव। मेरा प्रश्न यह है कि जब हम आपकी सभा में आए थे, तब यह बताया गया था कि आपने 2032 तक धर्म की स्थापना की बात कही है। लेकिन उस समय मुझे प्रभु की ओर से एक संकेत महसूस हुआ कि यद्यपि 2032 लिखा है, पर सारा महाविनाश और आपदाएँ वास्तव में 2030 तक समाप्त हो जाएँगी। मुझे पूर्वाभास हुआ था कि 2032 से चीज़ें शांत हो जाएँगी, पर 2030 तक का समय अधिक भयावह होगा, और उसके बाद हल्का हो जाएगा। मैं बस आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि वह क्या था।

उत्तर: देखिए माताजी, शास्त्रों में कहा गया है कि 2025 से 2032 तक का समय धर्म की स्थापना का काल है। और अच्युतानंद ने कहा है, 'लेखा लिभा शक्ति जार, अठर मु शरण', जिसका अर्थ है, 'मैं यह महाप्रभु परमेश्वर के निर्देश पर लिख रहा हूँ।' प्रभु समय-रेखा को आगे या पीछे कर सकते हैं; यह उनकी इच्छा है। परंतु जो लिखा है, वह अवश्य होगा। धर्म की स्थापना होगी, शनि का मीन राशि में गोचर भी हो रहा है, और आने वाला समय अच्छा नहीं है। इसलिए इस संसार में त्रिकाल संध्या ही मानवता की मुक्ति का मार्ग है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:26 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2162 पिताजी, आज सुबह मुझे एक स्वप्न आया। एक भूरे रंग का दरवाज़ा था, और उसके पीछे से मुझे पायल की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मेरी बहन कह रही थी कि वहाँ माधव जी नृत्य कर रहे हैं, मत जाओ। तो मैं नहीं गई। फिर मैं दूसरे कमरे में गई, और वहाँ एक मेज़ पर तीन चेहरे थे जिन्हें मैं अपने हाथों से मार रही थी। उनमें से एक चेहरा मुझे डराने की कोशिश कर रहा था, और मेरी नींद खुल गई। मैं माधव जी का स्मरण कर रही थी। मैं जानना चाहती थी कि इस स्वप्न का क्या अर्थ है।

उत्तर: देखिए, जब धर्म की स्थापना हो रही होती है, तब सभी देवी-देवता जाग्रत हो जाते हैं, और प्रभु भी जाग्रत हो जाते हैं। जैसे आपने त्रिकाल संध्या को अपनाया है और धर्म की स्थापना की ओर बढ़ रही हैं, प्रभु आपको स्वप्न में यह दिखा रहे हैं। वे तीन राक्षस कलियुग के तीन तत्वों के प्रतीक हैं—जैसे माया, मोह और अहंकार—जो आपका विरोध कर रहे हैं, और आप उन्हें पीट रही हैं। इसका अर्थ है कि आप धर्म का प्रकाश फैलाने के लिए अधर्म के विनाश के कार्य में लगी हुई हैं। ऐसा लगता है कि भविष्य में आप धर्म की ओर और आगे बढ़ने वाली हैं। इसीलिए प्रभु ने आपको पहले से संकेत दिया और स्वप्न में यह दिखाया। भक्तों को अक्सर ऐसी बातें दिखाई देती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:33 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2163 हम श्रीमद्भागवत महापुराण का अध्ययन कर रहे हैं, पर उसके अलावा अपने जीवन को बेहतर बनाने, भक्ति बढ़ाने और संशय दूर करने के लिए हमें और कौन-सी पुस्तकें पढ़नी चाहिए? हमें कौन-सी पुस्तकें पढ़नी चाहिए?

उत्तर: यदि कोई जीवन में आगे बढ़ना चाहता है, तो उसके लिए त्रिकाल संध्या करना अनिवार्य है। भागवत जी पढ़ना आवश्यक है। माधव के नाम का जप करना चाहिए। समय कम है, और उसका इसी प्रकार उपयोग होना चाहिए। आप अन्य शास्त्र पढ़ें या न पढ़ें, कोई अंतर नहीं पड़ता। केवल त्रिकाल संध्या करने से, माधव के नाम का जप करने से, और भागवत जी का एक अध्याय पढ़ने से मानवता का सबसे बड़ा कल्याण हो जाएगा। कोई भी अधूरा कार्य या समस्या हल हो जाएगी। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 21:41 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2164 मैं एक बात पूछना चाहता था। आपने कहा था कि केवल वही लोग मालिका और त्रिकाल संध्या को समझ पाएँगे जो पूर्व में प्रभु के भक्त रहे हैं। मैं 13 दिनों से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। मेरा प्रश्न यह है कि यदि हम पूर्वजन्म में भक्त थे और हमारे पास पुण्य थे, तो प्रभु ने हमें पहले संकेत क्यों नहीं दिया, जब हम पाप कर रहे थे? हमें मालिका और त्रिकाल संध्या के बारे में अब जाकर ही क्यों पता चला?

उत्तर: देखिए, मनुष्य अपनी इच्छा से कर्म करता है, और उसके कर्म ही उसे नियंत्रित करते हैं। प्रभु ने मनुष्य को ज्ञान, बुद्धि और इंद्रियाँ दी हैं ताकि वह देख सके कि क्या सत्य है, क्या अच्छा और क्या बुरा है। मनुष्य को सुधारने के लिए प्रभु ने बहुत पहले शास्त्रों की रचना की। हमने जो कर्म किए, वे अपनी स्वतंत्र इच्छा से किए; इसमें प्रभु का कोई दोष नहीं। प्रभु की कृपा आप पर है, इसीलिए आप धर्म की ओर मुड़ रहे हैं। लोगों ने अतीत में जो भी कर्म किए हैं, त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ के द्वारा वे कर्म निष्फल हो जाएँगे, और लोग पुण्यवान तथा पवित्र मनुष्य बन जाएँगे। कोई समस्या नहीं है; अभी समय है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:37 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2165 पिताजी, यह जो शनि का मीन राशि में गोचर है, उसके बारे में कहा जाता है कि वह गुरुवार को पड़ेगा और फिर शनिवार को। यह विरोधाभास क्या है? इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका किससे संबंध है? बेटा, स्वर्ग के देवताओं के लिए शनि का मीन राशि में गोचर गुरुवार को पड़ेगा। पृथ्वी पर वह शनिवार को पड़ेगा। समझे?

► यह उत्तर सुनें · 24:36 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2166 मैं पूछना चाहता हूँ कि यदि देवता जाग्रत हो गए हैं, तो क्या सभी देवी-देवता जाग्रत हो गए हैं? और यदि ऐसा है, तो क्या सभी राक्षस आदि भी जाग्रत हो गए हैं?

उत्तर: देखिए, राक्षस मनुष्यों के बीच दिखाई दे रहे हैं। लोग राक्षसों की तरह व्यवहार कर रहे हैं—रात 1 बजे तक नाचना-गाना, शराब पीना, मांस खाना, और सनातन धर्म को भूल चुके हैं। इन राक्षसों के लिए, जो जीवों की हत्या करते हैं और संसार के लिए विपत्ति हैं, देवी-देवता जाग्रत हो गए हैं। वे अपना कार्य करेंगे। महाकालेश्वर में, ब्रह्म मुहूर्त में प्रभु के पवित्र सेवकों पर जो अग्नि-प्रलय हुई, वह युग परिवर्तन का संकेत है, प्रभु के विनाश का संकेत है। ओडिशा में, भगवान शंकर के एक महान मंदिर के शिखर पर स्थित त्रिशूल हवा में उड़ गया। यह विनाश का संकेत है। त्रिशूल प्रलय लाएगा। अब समय नहीं बचा है। आप समझें या न समझें, पृथ्वी पर आपको बचाने वाला कोई नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:15 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2167 मेरा प्रश्न चारों युगों के भक्तों के बारे में है। संसार में अनेक भक्त हैं, पर चारों युगों के प्रभु के प्रिय भक्तों के लक्षण क्या हैं? और हम उन्हें कैसे पहचान सकते हैं?

उत्तर: भारत में और पूरे विश्व में, वे सभी सनातनी जो भविष्य मालिका से प्रेम करते हैं, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, जो माधव से प्रेम करते हैं—वे ही सबसे बड़े भक्त हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे किस महान परंपरा से हैं। अच्युतानंद ने कहा है कि जो लोग भविष्य मालिका सुनकर हृदय में आनंद अनुभव करते हैं, यह सोचकर कि 'मेरे प्रभु आ रहे हैं', और जो दिन-रात अपना मन उसमें डुबोए रखते हैं—वे ही भक्त हैं। बस यही एकमात्र लक्षण है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:59 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2168 मैं ढाई महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ और उसकी शक्ति का एक अनुभव साझा करना चाहता हूँ। मेरे चाचा वेंटिलेटर पर थे, और मैंने उनके लिए प्रार्थना की, और वे ठीक हो गए। मेरा प्रश्न यह है कि मैं प्रयागराज से हूँ पर किसी संघ से नहीं जुड़ पाया हूँ। मैं यह कैसे कर सकता हूँ? साथ ही, श्रीमद्भागवत महापुराण को कैसे पढ़ना चाहिए? मुझे नहीं पता कि कहाँ से शुरू करूँ या कैसे करूँ।

उत्तर: देखिए, श्रीमद्भागवत महापुराण के लिए गोरखपुर गीता प्रेस का संस्करण पढ़ें। आप इसे प्रातः 3:40 बजे से रात 12 बजे के बीच कभी भी पढ़ सकते हैं। मानसिक रूप से गंगा स्नान करें, हाथ-पैर धोएँ, और फिर पढ़ें। आपको एक अध्याय से शुरू करना चाहिए, 'भागवत माहात्म्य' से आरंभ करते हुए। शुरू करने से पहले, आप गाय को कुछ दान कर सकते हैं। यदि आपके पास साधन नहीं है, तब भी आप पढ़ सकते हैं। विश्व सनातन धर्म के सुधर्म महासंघ से जुड़ने के लिए, विवरण में एक नंबर है। उस नंबर पर आप मोहन नाम के युवक से संपर्क कर सकते हैं और सभी भक्तों से मिल सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:08 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2169 पिताजी, मुझे स्वप्न आया कि एक साँप ने मेरे दाहिने पैर में काट लिया, और मैं रो रहा था। मेरे बड़े भाई, जो इसी मार्ग पर हैं, उन्होंने मुझे उठाया। बाकी सब, यहाँ तक कि मेरा अपना परिवार भी, मुझे ऐसे अनदेखा कर रहे थे मानो वे मुझे जानते ही न हों। मैंने और मेरे भाई ने 'माधव, माधव' का जप शुरू किया, और तभी स्वप्न टूट गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, स्वप्न में साँप का काटना धर्म के प्रकाश का संकेत है और धर्म की ओर बढ़ने का शुभ संकेत है। काला साँप शुभ संकेत है। साँप का काटना अच्छा है। देखिए, विपत्तियाँ आएँगी, और उस समय आप दोनों माधव के नाम से बच गए। आप यह स्वप्न में देख रहे हैं। आने वाले समय में, माधव के नाम का जप करने से आप बड़ी विपत्तियों से बचेंगे। माधव ने सिद्ध कर दिया है कि संसार पर चाहे कैसी भी आपदाएँ आएँ, सभी भक्त उनके नाम से बच जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:30 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2170 पिछली बार जब आप लाइव थे, उसी रात मुझे एक स्वप्न आया। मैंने देखा कि आकाश में चारों ओर से तारे गिर रहे हैं, और उन तारों से पूरी पृथ्वी पर प्रकाश फैल गया। ज़मीन पर गर्मी अत्यधिक बढ़ गई, और पृथ्वी आग की तरह जल रही थी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भविष्य मालिका में लिखा है, 'झंझा झंझा कुंज होइ', जिसका अर्थ है कि नक्षत्रों के समूह पृथ्वी पर गिरेंगे, जिसमें नगर, वन और घर जल जाएँगे। आप यही देख रहे हैं। भविष्य मालिका का अनुसरण करें, त्रिकाल संध्या करें, और माधव के नाम का जप करें। आप बच जाएँगे। क्योंकि जब किसी भक्त को दर्शन होता है, तो उस पर विश्वास करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 32:21 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2171 गुरुजी, भविष्य मालिका में काशी, वाराणसी के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: देखिए, काशी-वाराणसी एक 'मंडल' (आध्यात्मिक क्षेत्र) बनेगा, भक्तों का क्षेत्र। लाखों-लाखों भक्त विश्व सनातन धर्म और सुधर्म महासंघ से जुड़ेंगे। वे त्रिकाल संध्या करेंगे, माधव का नाम जपेंगे, और अन्य भक्तों के लिए भविष्य मालिका का प्रचार करेंगे। यह अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 33:17 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2172 गुरु, मुझे एक और स्वप्न आया जिसमें मैंने उत्तर प्रदेश में बहुत से बादल फटते हुए देखे। इस स्वप्न का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, यह सब भविष्य में होने वाला है। जो लोग भविष्य मालिका सुनते और पढ़ते हैं, माधव में विश्वास रखते हैं, और त्रिकाल संध्या करते हैं, भगवान उन्हें दर्शन देकर बताते हैं कि क्या होने वाला है। भविष्य में ऐसा विनाश होगा, इसलिए भगवान उसे पहले ही दिखा देते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:54 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2173 पंडित जी, मैं अच्युतानंद दास जी महाराज के बारे में पूछना चाहता था। उनके 13 जन्म हुए। क्या वे भगवान की इच्छा से हुए, या उन्होंने भगवान को पाने के लिए वे जन्म लिए?

उत्तर: देखिए, मनुष्य, देवता, और ब्रह्मांड के सभी ऋषि मनुष्य रूप में आते हैं। अच्युतानंद सनातन 'पंच सखा' में से एक थे। धर्म स्थापना के कार्य के लिए भगवान ने उन्हें 13 बार भेजा। कलियुग के अंत और सत्ययुग के आगमन के लिए 13 की संख्या बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, धर्म स्थापना की पवित्रता को आगे बढ़ाने के लिए अच्युतानंद ने 13 बार जन्म लिया। भगवान की इच्छा के बिना किसी का आना कठिन है। वे भगवान की इच्छा से आए और भगवान की इच्छा से ही अपने सभी कार्य पूर्ण किए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:34 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2174 पिताजी, जब मेरी माँ पूजा करती हैं और भगवान के माथे पर तिलक लगाती हैं, तो वहाँ अलग-अलग चिह्न बन जाते हैं, जैसे ॐ, स्वस्तिक, शंख और त्रिशूल। इसका क्या प्रमाण है? यह क्या दर्शाता है?

उत्तर: प्रमाण यह है कि आपकी माँ की पूजा के समय भगवान उस तत्व के माध्यम से अपनी सूक्ष्म दिव्य शक्ति के साथ आते हैं और प्रमाणित करते हैं, 'मैं तुम्हारी पूजा स्वीकार करता हूँ।' ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:42 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2175 पिताजी, आज बिहार में सुबह घना, बेमौसम कोहरा था। साथ ही, मेरे खेत में मुझे एक बैंगन और एक लौकी मिली, जिनमें एक ही डंठल से दो-दो फल लगे हुए थे। कृपया इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर: देखिए, दिन में कोहरा, जबकि सर्दी भी नहीं है... अच्युतानंद ने इस बारे में लिखा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में दिन में कोहरा छा जाएगा, और अचानक अंधेरा हो जाएगा। यह तो केवल शुरुआत है। यह युग परिवर्तन, धर्म स्थापना, और पापियों के विनाश का संकेत है। और एक ही डंठल पर दो फल दिखना ग्रहों की स्थिति के कारण प्राकृतिक परिवर्तन है। आजकल आप प्रकृति, पेड़-पौधों और पशुओं में बहुत से परिवर्तन देखते हैं। यह युग परिवर्तन के कारण हो रहा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:48 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2176 हम भैरवी गर्जन के बारे में जानना चाहते हैं। जब यह होगा, तो क्या भक्तों को पहले से चेतावनी मिलेगी, या यह अचानक होगा?

उत्तर: ठीक है, सुनिए, माता जी। शनि के मीन राशि में गोचर के कुछ समय बाद, देवी भैरवी की गर्जना तीन बार होगी। उस गर्जना में लोगों की छाती फट जाएगी, और वे मर जाएंगे। कुछ बहरे, विकलांग या गूंगे हो जाएंगे। जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें वह ध्वनि सुनाई नहीं देगी। त्रिकाल संध्या के अतिरिक्त किसी के लिए कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसे करना ही होगा। जो नहीं करेंगे, वे माता भैरवी के संहार के समय विनाश का सामना करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:07 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2177 पिताजी, मुझे एक स्वप्न आया जिसमें ऐसा लगा कि भगवान के दोनों हाथ टूटे हुए या गायब थे, और श्री जी (राधा) का एक हाथ नहीं था। सब उन्हें कपड़े में लपेट रहे थे, और हम रो रहे थे, पूछ रहे थे, 'हमारे भगवान को कहाँ ले जा रहे हो?' इसका क्या अर्थ था?

उत्तर: देखिए, माता जी, भगवान के न हाथ हैं, न पैर, न शरीर; वे निराकार हैं। वे अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं। लेकिन यह स्वप्न यह दर्शाता है कि मानव सभ्यता के लिए ऐसा दुःखद समय आ रहा है। लोग गहरे कष्ट में होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:44 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2178 पंडित जी, आपने कहा था कि दिसंबर 2025 से विनाश तीव्र हो जाएगा। मैं अपने परिवार को यह समझाने की कोशिश करता हूँ, पर वे तर्क देते हैं। पहला, वे कहते हैं कि शास्त्रों में प्रलय का वर्णन अलग तरह से है। दूसरा, वे कहते हैं कि यह सब भगवान की इच्छा है, तो जो होना है, वह होगा। मैं उन्हें कैसे समझाऊँ?

उत्तर: देखिए, अपने परिवार को सिखाइए कि शास्त्र कलियुग के अंत के बारे में क्या कहते हैं। यह अपने पूरे 4,32,000 वर्ष नहीं चलेगा, बल्कि 5,000 वर्ष बाद ही समाप्त हो जाएगा। रही बात 'जो होना है वह होगा' की—ऐसा वे कहते हैं जो भक्त नहीं हैं। भक्त तो कहेगा, 'भगवान आ रहे हैं, तो हम उनकी शरण में जाएंगे।' बचना मुख्य बात नहीं है। मुख्य बात है भगवान के दर्शन करना और उनकी शरण लेना। यही मनुष्य के लिए सबसे बड़ा कार्य है। यह समझाइए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:54 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2179 नमस्ते, पंडित जी। आने वाले युग परिवर्तन के साथ, व्यवस्था पूरी तरह अलग होगी। इसलिए, मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं लगा पाता, यह सोचकर कि 'यह शिक्षा कहाँ काम आएगी?' अगले युग की व्यवस्था अलग होगी, तो फिर पढ़ाई क्यों करें?

उत्तर: देखिए, युग परिवर्तन अपने मार्ग पर चल रहा है, और मनुष्य अपने मार्ग पर है। हम हर दिन भोजन करते हैं और अपने कर्तव्य (कर्म) निभाते हैं। बच्चों के लिए पढ़ाई एक कर्तव्य है। उस कर्तव्य को मत छोड़िए। अपना कर्म कीजिए। भविष्य में जो कुछ भी होगा, उसके लिए त्रिकाल संध्या है और भगवान की शरण है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:59 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2180 पिताजी, मैं मीन राशि वाले लोगों के बारे में पूछना चाहता था। जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे—मेरी छोटी बेटी की चंद्र राशि मीन है। क्या उसे कोई कष्ट होगा?

उत्तर: देखिए, आने वाले समय में चीजें ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार नहीं चलेंगी। वे धर्म के अनुसार चलेंगी। इसलिए, अपने बच्चे को त्रिकाल संध्या और भागवत जी सुनाइए और सिखाइए। ग्रहों की स्थिति का मनुष्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा। जिसके पास धर्म है, वह आनंदित रहेगा। जिसके पास धर्म नहीं है, उसका बुरा समय आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:58 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2181 गुरुजी, चार दिनों से मुझे प्रलय के सपने आ रहे हैं। मैं हिमाचल से हूँ। मैं देखती हूँ कि पहाड़ गिर रहे हैं और मैं अपनी जान बचाने के लिए भाग रही हूँ। जब पानी की लहरें मेरे ऊपर आईं, तो मैं एक मंदिर के पास बैठ गई, माधव का नाम जपने लगी, और लहरें बिना कोई हानि पहुँचाए मेरे ऊपर से निकल गईं। फिर मैंने भगवान कृष्ण का बाल रूप देखा। मुझे यह सपना हर रात आता है और उनकी बाँसुरी भी सुनाई देती है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, भक्त के लिए भगवान अपनी उपस्थिति का आभास अवश्य कराते हैं। यह आपका सौभाग्य है कि आपको कन्हैया जी के दर्शन हो रहे हैं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भगवान के दर्शन होते हैं और माधव नाम से वे सभी विपत्तियों से बच जाते हैं। आने वाले समय में माधव नाम के बिना कोई नहीं बचेगा। हिमाचल और उत्तराखंड में इतने बादल फटेंगे कि लोग विनाश की अंतिम अवस्था देखेंगे। अभी भी समय है कि सभी मनुष्य अपने और अपने परिवार के प्राणों की रक्षा के लिए भगवान की शरण में आ जाएँ।

► यह उत्तर सुनें · 45:47 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2182 मैं अपने परिवार और मित्रों को इन शिक्षाओं के बारे में बताने की कोशिश करती हूँ, पर वे समझते नहीं। मेरे पिताजी अब भी मांसाहार करते हैं। वे मुझे डाँटते हैं, मूर्ख कहते हैं और मुझ पर हँसते हैं। मेरे सहपाठी कहते हैं, 'तो फिर हम पढ़ाई क्यों करें?' मैं इसे कैसे सँभालूँ?

उत्तर: देखिए माता जी, लोग अभी विश्वास नहीं करते। 2025, 26, 27 में बीमारियाँ आएँगी, तब वे स्वयं ही पूछते हुए आएँगे। जो सुनना नहीं चाहते, उन्हें मत बताइए। पर बुरा समय आ रहा है। हिमाचल और उत्तराखंड का भूगोल पूरी तरह बदल जाएगा। मैं यह आपको पहले ही बता रहा हूँ। उस समय वे कहेंगे कि आप सच बोल रही थीं, पर तब क्या लाभ? उस समय से पहले ही भगवान की शरण ले लेनी चाहिए। यदि लें तो लें, न लें तो कोई बात नहीं। आप इसकी चिंता मत कीजिए। आप बस अपना अभ्यास जारी रखिए और केवल उन्हीं को बताइए जो अच्छे भक्त हैं और जिनकी रुचि है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 47:51 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2183 पंडित जी, मैं डेढ़ साल से अधिक समय से आपके सत्संग से जुड़ा हूँ। घर में सभी शाकाहारी हैं, पर वे माधव नाम का जप नहीं करते। मेरी पत्नी काली माता की पूजा करती हैं और मेरी बात नहीं सुनतीं। मैं क्या करूँ?

उत्तर: देखो बेटा, कोई माने या न माने, किसी पर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। हमें अपना काम करना है; समय बहुत निकट है। ठीक है। उन्हें जैसे हैं वैसे रहने दीजिए। हमें किसी पर जबरदस्ती नहीं करनी है, ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 50:17 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2184 पिताजी, भागवत महापुराण पढ़ते समय क्या उसे हिंदी में पढ़ना चाहिए, या अन्य भाषाओं में, जैसे अंग्रेज़ी में भी पढ़ा जा सकता है?

उत्तर: देखिए, भाषा से शास्त्र का सार नहीं बदलता। सार वही रहता है। आपको जो भाषा अच्छी लगे, जिसमें पढ़ने में आप सहज हों, उसी भाषा में पढ़िए। आपको वही फल मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:24 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2185 पिताजी, हमें प्रतिदिन भागवत महापुराण कितना पढ़ना चाहिए? मेरा मतलब है, कितने श्लोक?

उत्तर: प्रतिदिन पढ़िए। वेदव्यास जी ने कहा है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक भागवत पढ़नी चाहिए। चूँकि सत्ययुग आ रहा है, हम प्रतिदिन भागवत पढ़ेंगे। हमारा कर्म है भागवत पढ़ना, भगवान की पूजा करना, उनके नाम का जप करना और आनंद में रहना। यदि आप एक अध्याय पढ़ सकें, तो वह अच्छा है। एक अध्याय।

► यह उत्तर सुनें · 51:58 · 11 अप्रैल 2024

प्रश्न 2186 पंडित जी, मैं इंदौर में रहता हूँ, उज्जैन के पास। आप यहाँ, हमारे क्षेत्र में कब आएँगे?

उत्तर: देखिए, उज्जैन में भागवत कथा होगी, और वहाँ भविष्य पुराण का भी प्रचार होगा। मैंने अभी तिथि नहीं दी है, पर सारी व्यवस्थाएँ तैयार हैं। जब मैं तिथि दूँगा, तो हमारे ऑनलाइन चैनलों और सत्संग के माध्यम से समाचार फैला दिया जाएगा। तब आप सब आकर मिल सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 52:29 · 11 अप्रैल 2024

सत्र 118 · प्रश्न 2187–2210

L127- 2025 में बृहस्पति देव के अतिचारी गति से विश्व में धर्म का प्रकाश होगा | पंडित काशीनाथ मिश्रा

दिनांक: 19 अप्रैल 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2187 नवरात्रि की पूजा के दौरान मैंने जो नारियल रखा था, वह नवमी के दिन फोड़ने पर खराब निकला। मुझे इससे अच्छा नहीं लगा। नौ दिनों तक रखा हुआ नारियल खराब निकला। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माता जी, इसमें आपका कोई दोष नहीं है। माँ दुर्गा अपने भक्तों को ही यह संकेत देती हैं, सबको नहीं। चूँकि आप भक्ति में हैं माता जी, इसीलिए माँ दुर्गा ने संकेत दिया है कि संसार के लिए समय अच्छा नहीं है। आपके साथ कुछ बुरा नहीं होगा। संसार के लिए समय अच्छा नहीं है, माँ दुर्गा यही सिद्ध कर रही हैं। इसलिए दुर्गा माधव स्तुति कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और माधव की शरण लीजिए। आप बच जाएँगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 05:19 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2188 मेरी माँ को त्रिकाल संध्या पूरी करने का समय नहीं मिलता। तो वे इसे कैसे करें? वे दिन में तीन बार नहीं कर सकतीं।

उत्तर: देखो बेटा, त्रिकाल संध्या में तीनों संध्याओं को मिलाकर कुल 30 मिनट लगते हैं। 24 घंटे के दिन में हम अपना काम और अपने कर्तव्य करते हैं। ये 30 मिनट दीजिए, जो जीविका से लेकर जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करेंगे। यदि कोई कष्ट या समस्या हो, तो उस समय हम त्रिकाल संध्या का संक्षिप्त रूप कर सकते हैं। जैसे, माधव नाम का 108 बार जप, षोडश नाम मंत्र, दस अवतारों के नाम (मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम आदि), और 'दुर्गा माधव, दुर्गा माधव' 36 बार। यह थोड़े समय में, एक-दो मिनट में हो सकता है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 06:20 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2189 पंडित जी, परसों मुझे एक सपना आया जिसमें तीन-चार लोग मुझसे पूछ रहे थे कि क्या मैं भविष्य मालिका के बारे में जानती हूँ। मैंने कहा हाँ, और उन्होंने मुझसे उसके बारे में बताने को कहा। मैं बहुत खुश हुई और मैंने उनसे कहा कि जितने अधिक लोगों को इकट्ठा कर सको, कर लो, मैं उन सबको इसके बारे में बताऊँगी। जैसे ही मैं बोलने वाली थी, मेरी नींद खुल गई। और कल हमारे घर एक संत भोजन के लिए आए, तो मैंने उन्हें भविष्य मालिका की पुस्तक दी और उसके बारे में बताया। इस सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, उन पाँच लोगों को सनातन 'पंचसखा' (भगवान के पाँच सखा) माना जा सकता है। वे भविष्य मालिका का सार इसलिए पूछ रहे हैं ताकि आपकी श्रद्धा दृढ़ हो, और ताकि भक्तगण मानवता के कल्याण के लिए भविष्य मालिका का प्रचार करें। जो भविष्य मालिका को जानते हैं, वे बच जाएँगे। यह उसी सिद्धांत का प्रमाण है, माता जी। यह बहुत आनंददायक है, यह अच्छा है। इसे पढ़िए और मानव सभ्यता के कल्याण के लिए इसके विचारों को बाँटिए, ताकि मानवता का उद्धार हो सके। जय।

► यह उत्तर सुनें · 07:41 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2190 जय श्री पंडित जी, आने वाली चैत्र पूर्णिमा मंगलवार को पड़ रही है। ग्रुप पर एक वीडियो आया था जिसमें इसके बारे में कुछ कहा गया था, पर वह बहुत स्पष्ट नहीं था। तो, इस चैत्र पूर्णिमा को क्या होने वाला है?

उत्तर: देखिए, चैतन्य पूर्णिमा अच्छा समय है। यह संसार के लिए लाभकारी है। इसलिए यह लोगों के लिए अच्छा है; इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। जब पूर्णिमा आती है, तो वह संसार के आनंद के लिए आती है। अमावस्या की रात तांत्रिकों के लिए अच्छी होती है, उनके लिए जो तंत्र-मंत्र की साधना करते हैं। मनुष्यों के लिए पूर्णिमा अच्छी है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:13 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2191 जय श्री माधव, पिताजी। कृपया विस्तार से बताइए कि 'शुद्ध मांस' वाले लोग कौन होंगे, और वे माता के 'खप्पर' में कैसे जाएँगे?

उत्तर: 'शुद्ध मांस' उन लोगों को कहा जाता है जो भगवान की पूजा तो करते हैं, लेकिन साथ ही मछली, मांस और शराब का सेवन भी करते हैं, और भगवान की पूजा करते हुए भी अनैतिक कर्मों में लिप्त रहते हैं। शास्त्रों में उनके बारे में लिखा गया है; उन्हें 'शुद्ध मांस' कहा जाता है। इसका अर्थ है कि धर्म की स्थापना के समय वही लोग नष्ट होंगे। उन्हें 'म्लेच्छ' भी कहा जाता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:41 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2192 मेरा प्रश्न यह है कि यदि गोहत्या रुक जाए, मांस का सेवन रुक जाए, और सरकार ऐसा कानून बना दे—यदि ये बड़े पाप रुक जाएँ, तो क्या 1% भी संभावना है कि कलियुग की आयु बढ़ाई जा सके, या यह लीला रुक सके?

उत्तर: आपने बहुत आनंद की बात कही है, बेटा, बहुत अच्छी बात कही है। देखिए, माता, गौ माता की हत्या के कारण कलियुग की आयु 1,00,000 वर्ष कम हो गई। यदि गौ माता की रक्षा हो, और भारत में रक्षा हो, तो भारत में आयु बढ़ेगी। और यदि यह पूरे विश्व में हो जाए, तो कलियुग की आयु थोड़ी बढ़ाई जा सकती है। यह सही है, यह बिल्कुल सही है। लेकिन लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि, देखिए, हमें आशा है कि आने वाले समय में भारत में ऐसी स्थिति बनेगी और ऐसे कानून बनेंगे। लेकिन विश्व के लोग नहीं मानेंगे; वे असुर परंपरा के हैं। इसलिए धर्म की स्थापना अवश्यंभावी है। हाँ, यदि वे धर्म की ओर मुड़ जाएँ और गोहत्या रुक जाए, तो इसे बढ़ाया जा सकता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:38 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2193 मैंने आपकी पुस्तकें पढ़ी हैं और आपको इंस्टाग्राम पर देखा है। सच कहूँ तो, यह सब देखने के बाद भी मुझे ऐसा नहीं लगता कि ऐसा कुछ होगा। कथाएँ वगैरह तो ठीक हैं, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि इनमें से कुछ वास्तव में होगा।

उत्तर: आप बहुत अच्छा बोलते हैं, बेटा। ठीक है, कोई बात नहीं। मैं आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूँ। लेकिन समय की परीक्षा लीजिए, और फिर मुझे बताइए कि आगे क्या होता है। क्योंकि जगन्नाथ मंदिर से मिल रहे संकेत सृष्टि के विनाश की ओर इशारा कर रहे हैं। महाकालेश्वर मंदिर से मिल रहे संकेत भी विनाश के हैं; वहाँ के सेवक आग में जल गए, एक की मृत्यु हो गई, और 13 जल गए। पूरा विश्व युद्ध की ओर बढ़ रहा है। 2025, '26, '27 में विश्व युद्ध होगा। धरती पर कोई नहीं है जो इसे रोक सके। कोई बदलाव नहीं होगा। हमने जो कुछ कहा है, वह एक-एक करके होगा। जो कहा गया था वह हो चुका है, और जो कहा जा रहा है वह होगा। मैं बस आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूँ। अगर ऐसा नहीं होता, तो यह विश्व के कल्याण के लिए है। लेकिन मुझे ऐसा नहीं दिखता। समय की प्रतीक्षा कीजिए, फिर अगले वर्ष बात करेंगे कि क्या हो रहा है। फिर 2026 और 2027 में बात करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:56 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2194 मैं यह पूछ रहा था कि यदि हम प्रातः 5:00 बजे संध्या करें, तो क्या स्नान करना अनिवार्य है, या हम केवल हाथ-मुँह धोकर, या बिस्तर पर बैठे-बैठे भी कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, जब आप अपने कार्यस्थल पर होते हैं और उस समय त्रिकाल संध्या करनी होती है, तो आप मानसिक गंगा स्नान कर सकते हैं। सुबह आप स्नान करके कर सकते हैं। लेकिन यदि आप स्नान नहीं कर सकते क्योंकि आपका शरीर या स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो उस समय भी स्नान आवश्यक नहीं है। संध्या मंत्र का जाप कीजिए। मंत्र जपने से पहले तीन बार माता श्री गंगा का नाम उच्चारण कीजिए और मानसिक गंगा स्नान कीजिए। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:46 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2195 महाराष्ट्र के नागपुर में भागवत सभा (कथा) कब होगी?

उत्तर: नागपुर में कथा अवश्य होगी। नागपुर में भी बहुत से लोग त्रिकाल संध्या करते हैं। हम प्रयास करेंगे, शायद 2025 में, हम देखेंगे। यदि भगवान की कृपा रही, तो हम कर सकते हैं। एक कार्यक्रम की योजना है, लेकिन मैंने अभी उसकी तिथि नहीं दी है। यह अवश्य होगा, और जब हम इस माध्यम से संपर्क में आएँगे, तो हम सूचना दे देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:48 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2196 भविष्य मालिका और भगवद् गीता करुणा, प्रेम और शांति अपनाने को कहती हैं। लेकिन कुछ लोग हमारे साथ दुष्टतापूर्ण व्यवहार करते हैं, और वे हमें भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करने को विवश कर देते हैं। तो ऐसे समय में क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, माता, आपको लोगों को उनके कर्मों के अनुसार उत्तर देना चाहिए। जो गलत करते हैं, उनके लिए अच्युतानंद ने नारियल जैसा बनने को कहा है। नारियल भीतर से मीठा और कोमल होता है, लेकिन बाहर से कठोर। तो, बुरे लोगों के साथ आपको उनके व्यवहार के अनुरूप उनके सामने दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए। और जो अच्छे लोग हैं, संत हैं, संसार के सरल लोग हैं, उनके उद्धार के लिए आपको सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास करना चाहिए। बुरों के लिए बुरा, और अच्छों के लिए अच्छा—यही धर्म है, यही सनातन है। सनातनी एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में धर्मयुद्ध के लिए भाला रखते हैं। भगवान परशुराम ने, ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बावजूद, ब्राह्मणों से कहा, 'तुम पूजा-पाठ करोगे, लेकिन धर्म का विरोध करने वालों का नाश करने के लिए तुम्हें हाथ में शस्त्र भी रखना होगा।' जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:42 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2197 और भी बहुत से संत हैं, जैसे आसाराम बापू या राम रहीम, जो जेल गए। तो इसकी क्या गारंटी है कि आपकी भविष्य मालिका या आप स्वयं धोखेबाज़ नहीं हैं?

उत्तर: इस धरती पर ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ है जो सनातन धर्म के अंतिम ग्रंथ को गलत सिद्ध कर सके, यह पहली बात। और दूसरी, न मैं धोखेबाज़ हूँ, न ही मैं किसी परंपरा से गोद लिया गया हूँ। मेरा निर्माण सनातन से ही हुआ है। और जब तक धरती पर सनातन धर्म की स्थापना नहीं हो जाती, मैं कार्य करता रहूँगा। इस धरती पर किसी में शक्ति नहीं है जो मुझे रोक सके। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:20 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2198 त्रिकाल संध्या करने के बाद मैं हनुमान चालीसा और कालाष्टक का पाठ करता हूँ। आपके द्वारा बताया गया नारायण पाठ मेरे पास है, लेकिन मुझे उसे पढ़ना नहीं आता, इसलिए मैं उसके स्थान पर बटुक भैरव कवच का पाठ करता हूँ। क्या यह ठीक है? और दिन में मैं एक इलेक्ट्रिक काउंटर से प्रतिदिन लगभग चार-पाँच हज़ार बार माधव नाम का जाप करता हूँ।

उत्तर: कीजिए, कोई बात नहीं। हाँ... बहुत आनंद की बात है, बहुत आनंद की बात। कीजिए, अच्छा है। जितना अधिक जाप करेंगे, उतना ही आपके लिए मंगलकारी है। क्योंकि जो माधव नाम का जाप करते हैं, वे सभी सांसारिक तत्वों से बच जाएँगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 22:30 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2199 पंडित जी, जगन्नाथ पुरी में सभा कब होगी?

उत्तर: जगन्नाथ पुरी में सभा होगी। अच्युतानंद ने जगन्नाथ पुरी के बारे में लिखा है कि जब श्रीक्षेत्र मंडल (जगन्नाथ क्षेत्र) में भक्तों की संख्या एक लाख तक पहुँच जाएगी, और जब जगन्नाथ मंदिर के सामने का समुद्र 22 सीढ़ियों से आगे आकर फिर पीछे लौट जाएगा, तब वहाँ एक विशाल सभा होगी। सभी भक्त आएँगे। हम उसी समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:35 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2200 मुझे भगवान पर पूर्ण विश्वास है, और मैं कहता हूँ कि मुझे भगवान के अलावा किसी की आवश्यकता नहीं है। क्या यह कहना कि मुझे भगवान पर पूर्ण विश्वास है और किसी और की आवश्यकता नहीं है, मेरा अहंकार है?

उत्तर: देखिए, इस संसार में भगवान ही सब कुछ हैं। यदि आपको भगवान पर पूर्ण विश्वास है, तो यह आपकी भक्ति का प्रमाण है। यह हनुमान जी, प्रह्लाद और ध्रुव के विश्वास जैसा है। वह अहंकार नहीं है; वह हमारे मन की पवित्रता और हमारे पूर्वजों की संस्कृति है। यह हम पर भगवान की कृपा है। बहुत अच्छा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:24 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2201 भक्तों को भगवान के 'सगुण' (साकार) रूप के दर्शन कब होंगे? जब वे अपनी दिव्य लीला आरम्भ करेंगे, तब भक्तों को उनका रूप कब देखने को मिलेगा?

उत्तर: देखिए, 'सगुण' रूप है। 'सगुण' रूप के दर्शन भक्तों को मिलेंगे, सबको नहीं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, जो माधव की शरण में हैं, जो भविष्य मालिका का पालन करते हैं, और जो चारों युगों में भगवान कृष्ण के साथ थे और जिन्होंने फिर से जन्म लिया है—केवल उन्हीं लोगों को भगवान के 'सगुण' रूप के दर्शन अवश्य होंगे। अच्युतानंद कहते हैं कि भक्त चार युगों से कल्कि अवतार के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और उन्हें उनके दर्शन अवश्य होंगे। बस थोड़ा समय लगेगा। भक्तों को मालिका का पालन करना चाहिए और भगवान की शरण लेनी चाहिए, तो उन्हें भगवान मिल जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:14 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2202 मैंने LIC और SBI में 5 साल की पॉलिसी ली है। तो क्या मुझे 5 साल तक भुगतान करते रहना चाहिए या इसे बंद कर देना चाहिए?

उत्तर: देखिए, आपने 5 साल के लिए पॉलिसी ली है। आने वाले समय में परिवार की सुरक्षा आवश्यक होगी। यदि लोगों को कोई समस्या आती है, तो परिवार को अच्छी रकम मिल जाएगी। तो जो लोग 5 साल के लिए बीमा लेते हैं, उनके लिए यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। समस्या अभी आई नहीं है। पर मैं आपको एक बात बताऊँगा: 2025 और '26 में आने वाली घटनाओं को देखिए। उसके बाद हम फिर से विचार करेंगे। जब तीसरा विश्व युद्ध शुरू होगा, तो वह यूक्रेन-रूस युद्ध जैसा होगा, जो सालों से चल रहा है। विश्व युद्ध भी वैसे ही चलेगा, लगभग पाँच से छह साल तक। तो, समय की प्रतीक्षा कीजिए। अभी कोई निर्णय मत लीजिए। आगे का समय देखकर हम कार्य करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:26 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2203 हम त्रिकाल संध्या करते हैं और श्रीमद् भागवत भी पढ़ते हैं। पर मेरे मन में थोड़ा द्वंद्व था: जो पहले की सारी पूजा-अर्चना और अनुष्ठान हम करते आए हैं, क्या उन्हें जारी रखें या नहीं? क्योंकि सब मिलाकर बहुत हो जाता है, पर भगवान की त्रिकाल संध्या करने से मुझे बहुत संतोष मिलता है।

उत्तर: देखिए, केवल त्रिकाल संध्या करने से और ब्रह्म मुहूर्त से लेकर रात 12 बजे तक कभी भी भागवत जी का एक अध्याय पढ़ने से ही आपको भगवान की कृपा प्राप्त होगी। और जब भी समय मिले, माधव का नाम जपिए। इससे आपको भगवान की कृपा मिलेगी। आनंदित रहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:05 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2204 मैं दो-तीन महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ, पर घर में अब भी शांति की कमी है और माहौल चिड़चिड़ा बना रहता है। ऐसा क्यों होता है? संध्या करने के बाद भी ऐसी समस्याएँ क्यों बनी रहती हैं?

उत्तर: देखो बेटा, तुम अकेले ही करते हो न? (प्रश्नकर्ता पुष्टि करते हैं कि वे करते हैं, पर उनकी माँ किसी दूसरे गुरु को मानती हैं।) देखो बेटा, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। अगर तुम्हें भूख लगती है, तो तुम खाते हो, और तुम्हें तृप्ति मिलती है। इसी तरह, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें उसका लाभ मिलता है। उस घर के पितरों को भी लाभ मिलता है। पर अगर परिवार के सदस्य अलग-अलग मार्गों का अनुसरण करते हैं, तो घर में टकराव होता है। इसीलिए ऐसा है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:53 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2205 मुझे एक मित्र से मालिका के बारे में पता चला और मैंने इस पर शोध करना शुरू किया। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। फिर मुझे भगवान कल्कि में रुचि हुई। पर जब मैंने ऑनलाइन खोजा, तो मुझे बहुत से लोग मिले जो खुद को कल्कि बताते हैं। तो हम सामान्य लोग कैसे पहचानें कि असली कल्कि कौन है और नकली कौन?

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। अच्युतानंद ने भी इस बारे में लिखा है। उन्होंने कहा है कि जब कलियुग समाप्त होगा और भगवान कल्कि अपना कार्य आरम्भ करेंगे, तब 12 कल्कि प्रकट होंगे और स्वयं को कल्कि बताएँगे। पर एक बात है: जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भगवान कल्कि के दर्शन मिलेंगे, और भगवान कल्कि उन्हें सही मार्ग दिखाएँगे। समय की प्रतीक्षा कीजिए, संध्या कीजिए, और माधव की शरण में रहिए। माधव आपको बचाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:00 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2206 ब्रह्माकुमारी कहते हैं कि सत्य युग 2032 में शुरू होगा और वे ध्यान जैसी अच्छी बातें सिखाते हैं। पर वे यह भी कहते हैं कि हमारे शास्त्र गलत हैं और लोग केवल भौतिक लाभ के लिए भक्ति करते हैं। ऐसे संगठनों के बारे में भविष्य मालिका क्या कहती है?

उत्तर: देखिए, संसार में केवल एक ही धर्म रहेगा: सनातन धर्म। कोई अन्य धर्म या मत नहीं रहेगा। और भविष्य मालिका पुराण में लिखा है कि भगवान कल्कि सभी धर्मों का न्याय करेंगे। जो शास्त्रों और वेदों का विरोध करते हैं, उनका कोई स्थान नहीं होगा। बिल्कुल कोई स्थान नहीं। धर्म अपने मार्ग पर चलेगा, और भगवान वेदों के आधार पर धर्म की स्थापना करेंगे। सनातन धर्म आगे बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:01 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2207 मैंने सुना है कि जब कल्कि की दिव्य लीला समाप्त हो जाएगी, तब भक्तों को 1000 वर्ष की आयु वाला नया, युवा शरीर मिलेगा। क्या यह सभी 64 करोड़ भक्तों को मिलेगा, या केवल कुछ चुने हुए लोगों को?

उत्तर: देखिए, सभी मनुष्यों में परिवर्तन होगा। पर भक्त, जो भगवान के निकट हैं, उन्हें दिव्य जीवन, दिव्य यौवन और दिव्य शक्ति प्राप्त होगी। और संसार में जो 64 करोड़ लोग शेष रहेंगे, उन सबकी आयु 1000 वर्ष हो जाएगी, और सब लोग विश्व के कल्याण के लिए कार्य करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:42 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2208 जिस तरह इस वर्ष अयोध्या मंदिर बना, क्या हम उसी तरह जल्द ही मथुरा मंदिर बनते देख सकते हैं?

उत्तर: मैं भगवान से आशा करता हूँ, भगवान की कृपा से ऐसा हो। भगवान की कृपा से यह बनेगा। जब तक भगवान की इच्छा नहीं होगी, तब तक यह नहीं होगा। हमें समय की प्रतीक्षा करनी होगी। वह समय आएगा जब संसार के सभी सनातन स्थलों का पुनर्निर्माण विश्वकर्मा जी द्वारा किया जाएगा। वह समय आ रहा है। मथुरा के भगवान की भूमि वापस मिलनी चाहिए। भगवान कृपालु हों और सभी भक्तों की आशाएँ पूर्ण करें, यही भगवान से मेरी प्रार्थना है। पर इसमें शायद कुछ और समय लगेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:33 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2209 भविष्य मालिका बलराम जी के बारे में क्या कहती है?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका में भगवान कल्कि ऐसे रूप में आएँगे जिसमें बलराम भी सम्मिलित हैं। एक शरीर में योगमाया शक्ति के रूप में माता सुभद्रा होंगी, और दूसरे शरीर में भगवान कल्कि आएँगे, जिनका नाम भगवान कल्कि, कल्कि माधव होगा। तो इस प्रकार भगवान अपने भाई के साथ एक ही शरीर में आ रहे हैं और धर्म की स्थापना करेंगे, और वे कल्कि कहलाएँगे। इसलिए, समय आने पर भगवान कल्कि अवतार लेंगे। जो भगवान बलराम हैं वही कल्कि हैं, जो भगवान कृष्ण हैं वही भी कल्कि हैं। वे एक ही हैं। ठीक है? जय। जय।

► यह उत्तर सुनें · 38:50 · 19 अप्रैल 2024

प्रश्न 2210 त्रिकाल संध्या के बाद करने के लिए आपने और कौन से दो पाठ बताए थे? और जैसा आपने कहा कि केवल भक्तों को ही दिव्य शरीर मिलेगा, हम भी उन भक्तों में होना चाहते हैं। हम उनमें से एक कैसे बन सकते हैं? हम त्रिकाल संध्या करते हैं, महा भागवत पढ़ते हैं, और प्रतिदिन माधव का नाम जपते हैं।

उत्तर: ठीक है, ऐसी ही भक्ति जारी रखिए, और भगवान की कृपा अवश्य आपके साथ रहेगी। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उनके लिए अच्छा समय आ रहा है। अर्थात्, बुरे में से अच्छा निकलेगा। और जो बुरे कर्म करते हैं और संसार का बुरा सोचते हैं, उनके लिए अच्छा नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 39:54 · 19 अप्रैल 2024

सत्र 119 · प्रश्न 2211–2227

L128 - विश्व में क्या परमाणु युद्ध होने वाला है? कब? | पंडित काशीनाथ मिश्रा

दिनांक: 22 अप्रैल 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2211 आपने कहा था कि दिसंबर 2025 से भारत में एक भयंकर युद्ध शुरू होगा, तो एक विद्यार्थी होने के नाते मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि जब चीन और 13 मुस्लिम देश हम पर हमला करेंगे, तब हमारे देश के सभी स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों का क्या होगा?

उत्तर: आपने अच्छा प्रश्न पूछा है। देखिए, सभी युवाओं से मेरा निवेदन है कि त्रिकाल संध्या करें और साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखें। क्योंकि शिक्षा हम मनुष्यों के लिए, विशेषकर युवाओं के लिए, सबसे आवश्यक चीज़ है। इसलिए अपनी पढ़ाई को अधिक महत्व दें। त्रिकाल संध्या करने से आप शरीर और पंचतत्वों से उत्पन्न होने वाले रोगों और महामारियों से सुरक्षित रहेंगे। मैंने आपको बताया है कि '25, '26, '27 में भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा। यह शनि के मीन राशि में गोचर के कारण है, जो भविष्य मालिका में लिखा हुआ है। तो इसके अनुसार युद्ध अपना मार्ग लेगा, लेकिन शिक्षा नहीं रुकेगी। शिक्षा चलती रहेगी। इसलिए पढ़ाई करें और साथ ही त्रिकाल संध्या भी करें, जिससे बेहतर पढ़ाई, अच्छी नौकरी और अच्छा भविष्य मिलेगा — आध्यात्मिक रूप से भी और इस कलियुग में भी। तो साथ-साथ अपनी पढ़ाई जारी रखें। इसकी चिंता न करें क्योंकि यह अपने समय पर होगा और यह भगवान के हाथ में है। यह शास्त्रों में लिखा है, और हम इसे मानवता के कल्याण के लिए बता रहे हैं। देखिए, रोग और बीमारियाँ कई बार आई हैं, और लोगों ने कष्ट झेला है। अभी भी रोगों ने लोगों का पीछा नहीं छोड़ा है। पूरे विश्व में युद्ध जैसी स्थिति बन रही है, और वैश्विक स्तर पर समीकरण बदल रहे हैं। इसके साथ ही हमें खाना भी है, पढ़ना भी है, और धार्मिक सिद्धांतों को थामकर आगे भी बढ़ना है। यही आपका कर्तव्य है।

► यह उत्तर सुनें · 12:06 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2212 तो पंडित जी, जब हमारे सभी शत्रु देश हम पर मिसाइलों या रॉकेटों से हमला करेंगे, तो क्या हमारे स्कूल और कॉलेज क्षतिग्रस्त नहीं होंगे, जिससे शिक्षा बाधित होगी?

उत्तर: देखो बेटा, रोग और बीमारियाँ भी आ रही हैं, और समय बदल रहा है। इसलिए हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। जो त्रिकाल संध्या करते हैं और भगवान की शरण में रहते हैं, उन्हें कुछ नहीं होगा। दूसरी बात, मिसाइल हमले होंगे, यह होगा, वह होगा। समय के साथ यह होना ही है। जो होना निश्चित है, वह होगा। हम भविष्य में मरेंगे, फिर भी आज खाना तो खाते ही हैं न? इसलिए अपना कर्म करो और भगवान की शरण में रहो ताकि तुम्हारा जीवन बच सके। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 14:12 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2213 पंडित जी, छोटे शहरों का क्या होगा?

उत्तर: देखिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि छोटा शहर है या बड़ा शहर। जो धार्मिक हैं, वे बचेंगे। यह धर्म और अधर्म की बात है। जो धर्म से जीते हैं वे बचेंगे, और जो अधर्म से जीते हैं वे नष्ट हो जाएँगे। पृथ्वी पर एक नई, धार्मिक सनातनी सभ्यता का निर्माण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:52 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2214 मैं पूछ रहा था, खबरें आ रही हैं कि 2025 में एक सौर तूफान आएगा, जिससे इंटरनेट पूरी तरह बंद हो जाएगा। नासा के सभी स्पेस स्टेशन और सैटेलाइट पिघल जाएँगे और काम करना बंद कर देंगे। ऐसे में 2025 में इंटरनेट समाप्त हो जाएगा। तो भविष्य में हम आपसे कैसे जुड़े रहेंगे?

उत्तर: देखिए, 2025 में कुछ बहुत बड़ा नहीं होगा; यह 2025 से शुरू होगा। इतना बड़ा कुछ नहीं होगा; स्थिति ऐसे ही चलती रहेगी, और छोटी-मोटी प्राकृतिक आपदाएँ आएँगी। लेकिन '25 में शनि के मीन राशि में गोचर से तीन महीने पहले, विश्व का एक नया स्वरूप दिखाई देगा। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें इस चिंता में नहीं पड़ना चाहिए कि क्या होगा। मैं बस एक ही बात कहता हूँ: धर्म को थामे रखिए। जो भी होगा, भगवान देख लेंगे। भगवान बचाएँगे भी और शुद्ध भी करेंगे। इसलिए बचने के लिए और भगवान के चरणों तक पहुँचने के लिए धर्म आवश्यक है। धर्म संचित कीजिए और धार्मिक कर्म कीजिए। पढ़ाई कीजिए, अच्छे इंसान बनिए, माता-पिता की सेवा कीजिए, विश्व के कल्याण के लिए काम कीजिए, और धर्म को थामे रखिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:21 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2215 गुरुजी, आपने सात दिन और सात रात के अंधकार काल का उल्लेख किया था। वह कब होगा?

उत्तर: क्या आपको अंधकार चाहिए? नहीं, नहीं चाहिए। देखिए, मैंने नहीं कहा; यह शास्त्रों में लिखा है। सात दिन और सात रात तक अंधकार रहेगा, जिस दौरान भगवान आदि विष्णु सनातन एक नए सूर्य देव और एक नए चंद्र देव की रचना करेंगे। उस समय महाविनाश भी होगा। उस समय भक्त बच जाएँगे। पापी नष्ट हो जाएँगे। जो पृथ्वी पर बोझ बन गए हैं, वे नष्ट हो जाएँगे। अच्छे लोग बचे रहेंगे। तो चिंता किस बात की? बस धर्म को थामे रखिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:41 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2216 रामचरितमानस में प्रयुक्त 'कांड' (जैसे लंका कांड) और अन्य शास्त्रों में प्रयुक्त 'स्कंद' के अर्थ में क्या अंतर है?

उत्तर: अर्थ स्कंद में लिखा है। उसमें मोक्ष का तत्व, मानवता का कल्याण समाहित है। 'कांड' का अर्थ है भगवान के कर्म। 'कर्म कांड' का अर्थ है कर्म। भगवान राम ने जो कर्म किए, वे सात 'कांडों' में विभाजित हैं। तुलसीदास महाराज ने प्रत्येक 'कांड' को अलग-अलग लिखा, भगवान के कर्मों को 'कांड' के रूप में समझाते हुए। और 'स्कंद' का अर्थ है शास्त्र का वह सार जो लिखा गया है; वह 'स्कंद' में लिखा है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:30 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2217 मुझे एक सपना आ रहा है जिसमें एक संत मुझे मंदिर में बुला रहे हैं और कह रहे हैं कि शुक्रवार को मांसाहार खाना बंद कर दो। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए माता जी, वे कह रही हैं कि कोई देवी आपसे शुक्रवार को इसे छोड़ने के लिए कह रही हैं। देखिए, अच्युतानंद ने स्पष्ट लिखा है, और भागवत में भी रचित है, कि जो मछली, मांस खाते हैं, शराब पीते हैं, या नशा करते हैं, वे नरक में जाएँगे। नरक का अर्थ है अपने कर्मों का फल, और नकारात्मक कर्म वे हैं जिनकी शास्त्रों और सनातन धर्म में अनुमति नहीं है। जो मनुष्य ये कर्म करते हैं, वे नरक जाते हैं। यह भगवान और देवी की कृपा है कि वे आपको यह बता रही हैं। इस कृपा को समझिए, माता जी। सपने में आपने जो माता का स्वरूप देखा, चाहे वे माँ सरस्वती हों,

महालक्ष्मी हों या भुवनेश्वरी, यह एक पवित्र दर्शन है। लिखा है कि कलियुग के महायुद्ध के दौरान भुवनेश्वर के लिंगराज क्षेत्र में महाविनाश होगा। भक्तों को बचाने के लिए देवी स्वयं आकर आपसे कह रही हैं, 'बेटी, अपना मार्ग बदलो।' माता जी, मांसाहार पूरी तरह छोड़ दीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए। हर जीव अपने कर्म के अनुसार इस पृथ्वी पर आया है। हमारे जीवन की धारा भगवान की कृपा के अधीन होनी चाहिए। जब भगवान की कृपा प्राप्त होती है, तो देवी स्वयं बुलाती हैं। इसका अर्थ है, माता जी, कि आपको अपना मार्ग सुधारना चाहिए। यदि आप नहीं सुधारेंगी, तो एक समय आता है जब बहुत से लोग अपने सपनों में देवी या देवताओं को देखते हैं जो उन्हें बदलने के लिए कहते हैं। यदि वे नहीं सुनते, तो कुछ दिनों बाद उन्हें कोई बड़ी बीमारी हो जाती है या दुर्घटना हो जाती है, और फिर वे नष्ट हो जाते हैं। मैंने यह देखा है। क्योंकि देवी आपसे एक बार कह रही हैं, इसका अर्थ है कि उनकी कृपा आप पर है। बस इस कृपा को स्वीकार कर लीजिए। यदि नहीं कर सकतीं, तो समझ लीजिए कि यह आपके भाग्य में नहीं है। ठीक है, माता जी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:25 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2218 मैं कह रहा था, क्या यहाँ भी महामारी आने वाली है? यहाँ कब आएगी?

उत्तर: महामारी तो आ चुकी है, आपने देखा नहीं? महामारी पहले भी आ चुकी है। यह 2025 से शुरू होगी। '26 से '32 तक महामारी का विनाश पृथ्वी पर सात बार प्रहार करेगा। लगभग दो बार तो हो चुका है, और पाँच बार और रोग आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:52 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2219 मेरा प्रश्न त्रिकाल संध्या के विषय में है। आपने एक त्रिकाल संध्या बताई है, और गीता प्रेस की एक पुस्तक 'नित्य पूजा प्रकाश' भी है जिसमें त्रिकाल संध्या का वर्णन है। मैं समझना चाहता था कि दोनों में क्या अंतर है।

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या का उल्लेख हर शास्त्र में है। श्रीमद्भागवत में भी त्रिकाल संध्या के बारे में रचना है। लेकिन जिस त्रिकाल संध्या की मैं बात करता हूँ, उसके मंत्र अलग हैं। त्रिकाल संध्या के समय कौन-से मंत्र जपने चाहिए, जो मैं बताता हूँ, वह अन्य ग्रंथों में अलग तरह से लिखा हो सकता है। लेकिन मैं जो बताता हूँ वह यह है कि युग के अनुसार त्रिकाल संध्या के मंत्र भी भिन्न होते हैं। उसी के अनुसार मैं वर्तमान युग के अनुसार मंत्र बताता हूँ, और हम वह बताते हैं जो मानव मोक्ष के लिए आवश्यक है। जिस त्रिकाल संध्या का मैं वर्णन करता हूँ, उसमें 'माधव' नाम का 108 बार जप करना चाहिए, 16 नामों का एक बार, दुर्गा माधव स्तुति का एक बार, भगवान के दशावतार श्लोक का एक बार, और दिन में श्रीमद्भागवत महापुराण का एक अध्याय एक बार पढ़ना चाहिए। यह मानवता को सत्ययुग में ले जाएगा। बस उसका पालन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:21 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2220 मैं एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ। कल चावल पकाते समय प्रेशर कुकर की सीटी निकल गई, और गर्म भाप और पानी हम पर गिरा, लेकिन ऐसा लगा जैसे ठंडी फुहार पड़ी हो, और हमें एक भी छाला नहीं पड़ा। हम एक साल से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह बहुत ही आनंददायक है, माता जी। अपनी भक्ति देखिए। त्रिकाल संध्या मनुष्य को मृत्यु से दूर रखती है, आपदाओं से दूर रखती है, रोजगार देती है, शांति और सुख देती है, और जीवन को आध्यात्मिक तत्व से पूर्ण रूप से आलोकित करती है। त्रिकाल संध्या ही मानवता को बचाती है। भगवान ने अपनी कृपा दिखाई और आपको यह अनुभव दिया। इसलिए इसे थामे रखिए और भगवान की भक्ति में चलिए। आप भविष्य की आपदाओं से भी सुरक्षित रहेंगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:22 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2221 क्या त्रिकाल संध्या करने से हम भगवान से मिल सकते हैं? इसे करने का असली उद्देश्य क्या है? क्या यह सत्य युग में प्रवेश करने के लिए है? लेकिन अगर कोई सत्य युग में नहीं जाना चाहता, केवल भगवान से मिलना चाहता है, तो? क्या त्रिकाल संध्या करने से हम भगवान से मिल सकते हैं?

उत्तर: देखिए माता जी, त्रिकाल संध्या करने से आपको सात दिन या एक महीने के भीतर भगवान के दर्शन होंगे। पहले भगवान आपको स्वप्न और अनुभव देंगे। त्रिकाल संध्या कीजिए और मुझे बताइए कि आपको क्या अनुभव होते हैं। और मेरा विश्वास है कि जो भी मनुष्य त्रिकाल संध्या करेगा, वह निश्चित ही भगवान को प्राप्त करेगा। इसमें कोई परिवर्तन नहीं है। यही परम तत्व है, भगवान की मुक्ति का और भगवान की प्राप्ति का तत्व। यदि आप भगवान को प्राप्त करना चाहते हैं, तो त्रिकाल संध्या कीजिए। इसमें आपको भगवान के दर्शन भी होंगे, और उस दर्शन के साथ, समय आने पर भक्त भगवान से एकाकार भी हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:48 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2222 आप प्रवचन देते हैं और भविष्य मालिका की बात करते हैं, और बहुत से लोग कहते हैं कि आप यह कहकर लोगों को डराते और धमकाते हैं कि सब कुछ नष्ट हो जाएगा। आप ऐसा क्यों करते हैं?

उत्तर: आपने बहुत अच्छी बात कही, बेटा। मैं डराता या धमकाता नहीं हूँ। देखिए, जगन्नाथ संस्कृति में एक ग्रंथ रचा गया है जिसे भविष्य पुराण कहते हैं। और भगवान के नित्य पंच सखाओं ने इस ग्रंथ की रचना की, जो सनातन धर्म का अंतिम ग्रंथ है। और उस ग्रंथ में लिखा है कि मानवता को धर्म की ओर मुड़ना होगा। यदि लोग धर्म की ओर नहीं मुड़ेंगे, तो उन लोगों के लिए एक विपत्ति आ रही है जो अधर्मी, अन्यायी, भ्रष्ट और पाप में डूबे हुए हैं। और लिखा है कि पापी भी बचेंगे, और धर्मात्मा भी बचेंगे। जो धर्म का आचरण करते हैं, उन्हें बचना चाहिए। जो पाप करते हैं, उन्हें भी सही मार्ग दिखाया जाना चाहिए। उन्हें भी बदलकर अच्छा मनुष्य बनना चाहिए। मैं बस यही कहता हूँ। मैं कभी किसी को डराता नहीं हूँ। मैंने पहले भी यह कहा है कि यह भविष्य पुराण मानवता की मुक्ति और कल्याण के लिए रचा गया था। इसमें एक चेतावनी है कि ऐसी घटनाएँ होने वाली हैं, इसलिए लोगों को धर्म और पवित्रता को अपनाना चाहिए। इसमें डराने का प्रश्न कहाँ है? ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 28:51 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2223 पिताजी, मैं त्रिकाल संध्या करना चाहता हूँ। इसे करने के लिए कुछ मंत्र हैं, तो वे मंत्र मुझे कैसे मिल सकते हैं?

उत्तर: वे मंत्र... हमारे यूट्यूब पर जो नंबर दिखाया गया है, उस नंबर पर लोगों से संपर्क कीजिए। वे एक PDF भेज देंगे। देखिए बेटा, एक दिन, दो दिन, तीन दिन, पाँच दिन त्रिकाल संध्या कीजिए और देखिए कि आपके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन आता है और कितनी शांति मिलती है। सारी चिंताएँ समाप्त हो जाएँगी। और सबसे बड़ा विश्वास पैदा होगा कि इस संसार में भगवान ही हमारे रक्षक हैं। ठीक है? नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क करके इसे प्राप्त कर लीजिए। वे PDF में दे देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:42 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2224 क्या जमशेदपुर में सत्संग होगा?

उत्तर: जमशेदपुर में सत्संग जरूर होगा। बिहार में, छपरा में एक सत्संग होने वाला था, लेकिन किसी की मृत्यु हो जाने के कारण प्रवचन रद्द हो गया। वह 1 तारीख से निर्धारित था। हम भविष्य में जरूर करेंगे। कृपया समय की प्रतीक्षा कीजिए। मानव जीवन के उत्थान के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए। जब प्रवचन होगा, तो मैं आपको जरूर बताऊँगा। अगले महीने बेंगलुरु में एक प्रवचन है और ओडिशा के झारसुगुड़ा में एक। दो स्थानों पर प्रवचन हैं। यदि आप चाहें, तो आ सकते हैं। ठहरने और भोजन की सारी व्यवस्था है। आप आकर प्रवचन में भी सम्मिलित हो सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:51 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2225 मेरा प्रश्न यह है, मैं गुजरात से हूँ। मेरा परिवार और मेरे आसपास के लोग बहुत अच्छे हैं और धर्म का पालन करते हैं। लेकिन समस्या यह है कि जब मैं उन्हें पृथ्वी की वर्तमान स्थिति और भविष्य मालिका में जो लिखा है, उसके बारे में बताता हूँ, तो वे नहीं जुड़ते क्योंकि वे सब अपने-अपने धार्मिक मार्गों से जुड़े हुए हैं। बहुत से लोग ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाओं से जुड़े हैं, जो कलियुग के अंत की बात भी करती हैं, और वे कहते हैं कि वे उन्हीं के साथ रहेंगे और बच जाएँगे। मुझे लगता है कि शायद वे अंत तक इसे नहीं समझ पाएँगे। मुझे इन सभी अच्छे लोगों की चिंता है जो समझ नहीं पा रहे हैं। उनका क्या होगा? कृपया उनके लिए कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका में लिखा है कि भगवान श्री नारायण केवल सनातन धर्म की स्थापना करेंगे। कलियुग के कारण धर्म बँट गया। सनातन के भीतर कई धर्म और संप्रदाय उभर आए, और संसार में भी कई अलग-अलग धर्म बन गए। लेकिन एक समय आ रहा है जब सभी धर्म एक ही धर्म, सनातन धर्म में विलीन हो जाएँगे, जिसके नेता भगवान कल्कि होंगे। जिस संस्था से भक्त जुड़ेंगे, उसका नाम 'सुधर्म महा महा संघ' होगा। इससे जुड़कर भक्त अमर हो जाएँगे और इस धरती पर सत्य युग के नागरिक के रूप में रहेंगे। जिसके भाग्य में होगा, वही आएगा। जिनके भाग्य में नहीं है, वे लाख बार कहने पर भी नहीं आएँगे। इसलिए, समय की प्रतीक्षा कीजिए। आप अच्छा कार्य कर रहे हैं, त्रिकाल संध्या कर रहे हैं; यह भगवान की बहुत बड़ी कृपा है। त्रिकाल संध्या करने का सौभाग्य केवल उन्हीं को मिलता है जिन पर भगवान विष्णु और भगवान शंकर की कृपा होती है, और आपको वह प्राप्त हुई है। आप लोग भाग्यशाली हैं। जो नहीं समझ पा रहे हैं, शायद भगवान उन पर कृपा करेंगे, और वे भी समझ जाएँगे। यदि नहीं समझ पाते, तो इसका अर्थ है कि यह उनके भाग्य में नहीं है। हम प्रयास करके किसी का भाग्य नहीं बदल सकते।

► यह उत्तर सुनें · 37:38 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2226 पंडित जी, मैं त्रिकाल संध्या की प्रार्थनाएँ याद करने का प्रयास कर रही हूँ। मैं बहुत पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, और कुछ हिस्से भूलती रहती हूँ। मैं इसे कैसे याद कर सकती हूँ?

उत्तर: कोई बात नहीं, माता जी। सुनिए, इसे किसी पुस्तक से पढ़िए। इसे एक कागज पर लिख लीजिए और उसी से पढ़िए। समय के साथ याद हो जाएगा, कोई दिक्कत नहीं। यह अच्छी बात है कि आप त्रिकाल संध्या कर रही हैं। वृंदावन भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी की पावन भूमि है, और आप भी वहीं हैं। त्रिकाल संध्या करने से वहाँ के लोग और भक्त भी राधा रानी और कृष्ण को प्राप्त कर सकेंगे। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:52 · 22 अप्रैल 2024

प्रश्न 2227 मैं यह पूछना चाहता था कि एक ओर आसक्ति है, और दूसरी ओर उससे बाहर निकलने की इच्छा। जब मैं गीता पढ़ता हूँ, तो मैं विरक्त होने लगता हूँ। मुझे भोग या नींद के प्रति कोई आसक्ति महसूस नहीं होती। लेकिन जब मैं अपनी पढ़ाई करता हूँ—मैं एक विद्यार्थी हूँ—जब मैं कोई विषय पढ़ता हूँ, तो लगता है कि मैं फिर से सांसारिक भोगों और विषयों में उलझ रहा हूँ।

उत्तर: पढ़ाई कीजिए, शास्त्र पढ़िए, और साथ ही त्रिकाल संध्या भी कीजिए। त्रिकाल संध्या आपको बचाएगी, सत्य युग के योग्य बनाएगी, और आपके शरीर को शक्तिशाली बनाएगी। शास्त्र पढ़ने से ज्ञान और भक्ति जागृत होगी। अपनी पढ़ाई, अपनी शिक्षा, और अपने सामाजिक तथा पारिवारिक कर्तव्य जारी रखिए। उन्हें भी पूरा कीजिए। आपका कल्याण इसी में है। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:49 · 22 अप्रैल 2024

सत्र 120 · प्रश्न 2228–2265

L130 - ईरान और यूक्रेन में युद्ध रुकेगा या तीव्र होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्रा

दिनांक: 28 अप्रैल 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2228 पंडित जी, मैं बरेली से अभिषेक हूँ। जब मैं ध्यान करता हूँ, तो मुझे अपना बड़ा भाई दिखाई देता है जिसने 2017 में आत्महत्या कर ली थी। वह मेरे सपनों में आता है और बहुत परेशान लगता है, जैसे उसे मुक्ति न मिली हो। मैं उसे किसी मंदिर की जेल में बंद देखता हूँ, और वह मुझसे कहता है कि वह बहुत कष्ट में है। फिर दो पंडित आते हैं और मुझे खीर और हलवा देते हैं। मुझे इतनी दया आती है कि मैं वह हलवा और खीर उसे खाने को दे देता हूँ। सपने में भी मैं उससे कहता हूँ, 'तुमने आत्महत्या की, जो बहुत बड़ा पाप है। तुम अपने कर्मों का फल भोग रहे हो, लेकिन सब ठीक हो जाएगा।' तो पंडित जी, मैं पूछना चाहता हूँ, क्या मैं उसके नाम से 'संकल्प' लेकर श्रीमद्भागवत महापुराण का पाठ कर सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, यह बहुत अच्छी बात है। आप संकल्प लेकर सात दिनों तक स्वयं भागवत पढ़ सकते हैं ताकि उसकी मुक्ति के लिए प्रयास हो। यह पहली बात है। दूसरी बात, उसकी मुक्ति के लिए... आप जानते हैं न कि घर पर त्रिकाल संध्या कैसे की जाती है? जिन पूर्वजों को मुक्ति नहीं मिली होती, वे अक्सर सपनों में आते हैं या अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं। त्रिकाल संध्या के प्रभाव से, वह जो लंबे समय तक आपसे संवाद करने या अपनी उपस्थिति का आभास कराने में समर्थ नहीं था, उसे कुछ पुण्य प्राप्त हुआ। इसीलिए वह आपके सपने में आकर कुछ कह पाया। तो, चिंता मत कीजिए। सात दिनों तक घर के सभी सदस्य लहसुन का त्याग करें, संकल्प लें, और उसकी मुक्ति के लिए भागवत का पाठ करें। उसकी मुक्ति अवश्य होगी। यह बहुत अच्छा कार्य है; इसे कीजिए। साथ ही, त्रिकाल संध्या के माध्यम से उसकी पवित्रता बढ़ रही है, और उसकी आत्मा को आगे बढ़ने की शक्ति मिल रही है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 06:23 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2229 पिताजी, श्रीमद्भागवत महापुराण में सात दिवसीय पाठ की बहुत लंबी और विस्तृत विधि बताई गई है, जैसे ब्राह्मणों को आमंत्रित करना और एक विशेष तरीके से संकल्प लेना। तो हम इसे कैसे करें कि पूरी विधि का लाभ मेरे भाई तक पहुँचे?

उत्तर: देखिए, भागवत में कहीं नहीं लिखा है कि आपको अपने घर पर कथा कहने के लिए ब्राह्मण बुलाना ही पड़ेगा। आप स्वयं कर सकते हैं। जो पुण्यात्मा हो, सात दिनों तक कामना और वासना से दूर रहकर, भगवान माधव के चरणों में स्वयं को समर्पित करके, पूरा परिवार मिलकर सात दिनों में भागवत कथा पूर्ण कर सकता है। पूरा पढ़िए और संकल्प लीजिए। एक तिपाई पर एक छोटा मिट्टी का घड़ा रखिए, कुछ भोग जैसे घी भोग के साथ। उसे वहाँ रखिए। उसके ऊपर एक और छोटा मिट्टी का घड़ा रखिए। वह सात दिनों तक सुनने के लिए वहाँ रहेगा। उससे कहिए कि आकर सुने। फिर भागवत का पाठ कीजिए। वह चला जाएगा, और उसकी मुक्ति हो जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 08:41 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2230 पंडित जी, मैंने आपकी सलाह पर त्रिकाल संध्या शुरू कर दी है। मैं जानना चाहता हूँ कि कितने दिनों में हमें इसका प्रभाव दिखाई देगा?

उत्तर: देखिए, यदि आपमें भक्ति, समर्पण और पवित्रता है, तो सात दिन यह संध्या करने के बाद भी आपको इसका कुछ आभास अवश्य होगा। आपको करना चाहिए। मेरे मत से, एक महीने के भीतर 'दर्शन' भी हो सकते हैं। भगवान अक्सर स्वप्न में भविष्य की बातें प्रकट करते हैं। आपको अवश्य अनुभव होगा। आपको भी प्राप्त होगा। इसे पूर्ण नियम और भक्ति के साथ कीजिए। यह 'साधना' नहीं है (किसी विशेष उद्देश्य के लिए की जाने वाली आध्यात्मिक साधना)। यह एक 'धारा' है (एक प्रवाह या बहाव)। यह वैसी साधना नहीं है जिसमें मनुष्य की अपेक्षाएँ होती हैं। यहाँ कोई अपेक्षा नहीं है। यह मानवता की मुक्ति के लिए और लोगों को सत्य युग के लिए तैयार करने के लिए एक धारा है।

► यह उत्तर सुनें · 10:01 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2231 पंडित जी, मैंने गुरु मंत्र लिया है। तो क्या यह (त्रिकाल संध्या) मुझे गुरु मंत्र से करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए बेटा, जिन्होंने गुरु मंत्र लिया है, उनके गुरु मंत्र का समय अलग होता है। आपका गुरु मंत्र त्रिकाल संध्या के समय पर नहीं है। तो त्रिकाल संध्या के समय त्रिकाल संध्या कीजिए। और अपना गुरु मंत्र वैसे कीजिए जैसे आपके गुरुदेव ने आपको बताया है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 11:01 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2232 मुझे मार्गदर्शन चाहिए। मैं तो नहीं खाता, पर बाकी लोगों के लिए, कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए कि मांसाहार क्यों नहीं खाना चाहिए?

उत्तर: देखिए, बहुत अच्छा प्रश्न है: मांसाहार क्यों न खाएं? देखिए, 'जीव भूत सनातनः' (जीव सनातन है)। श्रीमद्भगवद्गीता के पुरुषोत्तम योग में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था, 'जीव भूत सनातनः'। जिस किसी में भी जीवन है, जो चलता है, खाता है, पीता है, कर्म करता है, चाहे वह बोल न सके, वह सनातन है। अपने-अपने कर्म के अनुसार किसी को पशु का जन्म मिलता है, किसी को छोटे जीव का, और किसी को मनुष्य का। तो एक सनातन जीव दूसरे सनातन जीव को कैसे खा सकता है? यह पहला सिद्धांत है। दूसरा, हर जीव में आत्मा है, और उसी आत्मा के कारण जीव अपना कर्म करता है। और कर्म के फल के कारण चौरासी लाख योनियों में जन्म मिलता है—कोई मछली बनता है, कोई बकरी, मुर्गी, हाथी, घोड़ा, बाघ, बिल्ली, यहाँ तक कि वनस्पति भी। ऐसे जन्म अपने कर्म के अनुसार मिलते हैं। कौन-से कर्म? जिन्होंने जीवों की हत्या की है, पाप किए हैं, दूसरों को कष्ट दिया है, गलत किया है, देवताओं की पूजा नहीं की, भगवान की उपासना नहीं की, धर्म का पालन नहीं किया, और धर्म का विरोध किया—उन्हें ऐसे जन्म मिलते हैं। जब वह जीव अपने कर्म का फल भोग रहा है, तो मनुष्य को क्या अधिकार है कि वह उसे उसके कर्मचक्र से वंचित करके उसे खा जाए? इसीलिए शास्त्र कहते हैं कि छप्पन कोटि (56 करोड़) जीव-जंतुओं में ब्रह्म का अधिकार, भगवान का अधिकार विद्यमान है। और जिस शरीर में भगवान का अधिकार निवास करता है, उसे मारकर खाने से हमें 'ब्रह्म-हत्या' का पाप लगता है, और ब्रह्म-हत्या के पाप का कोई प्रायश्चित नहीं है। इसलिए एक जीव का दूसरे जीव को खाना नियम नहीं है। नियम तो यह है कि एक जीव दूसरे जीव की सहायता करे। श्रीमद्भागवत और पुराणों में लिखा है कि मनुष्य को सभी जीव-जंतुओं का ध्यान रखना चाहिए और सबके साथ सहयोग करना चाहिए। पर हम आक्रमणकारी कैसे बन गए? हम आतंकवादी कैसे बन गए? हम उपद्रवी कैसे बन गए? यह आसुरी गुण है। जिसमें आसुरी गुण होता है, वही जीवों की हत्या करता है। सच्चे सनातनी ने कभी किसी जीव की हत्या नहीं की और न ही ऐसा करने वालों के कर्म से कभी जुड़ा। इसलिए एक जीव को दूसरे जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए। शास्त्रों और पुराणों में लिखा है कि हर जीव में जीव तत्व है, ब्रह्म तत्व है। तो जो ब्रह्म की हत्या करते हैं, उन्हें आसुरी और नीच योनियों में भटकना पड़ता है और चौरासी लाख जन्मों तक यम की यातना सहनी पड़ती है, महान दुःख भोगना

पड़ता है। इसलिए मनुष्य भी एक जीव है और दूसरा प्राणी भी जीव है; वे बस अपने कर्म के कारण बड़े या छोटे हैं। हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए, उनकी रक्षा करनी चाहिए, जैसे पिता और पुत्र का संबंध होता है। यह सब Kali Yuga के कारण हो रहा है, पर भविष्य में यह नहीं चलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 11:27 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2233 पर एक बात है। अगर कोई पहले मांसाहार करता था, पर अब छोड़ चुका है और धर्म के मार्ग पर चल रहा है, तो क्या उसके किए हुए पाप कभी मिटते हैं?

उत्तर: देखिए, जैसे एक दिन दवा लेने से रोग ठीक नहीं होता—उसमें कई दिन लगते हैं—वैसे ही मनुष्य के कर्मों की शुद्धि के लिए कई दिनों तक त्रिकाल संध्या, सत्कर्म, दान, धर्म, पुण्य, जप, चिंतन, कीर्तन और स्मरण करना पड़ता है। इनसे पाप कम होता है, और एक समय ऐसा आता है जब मनुष्य पूर्णतः निष्कलंक हो जाता है। यह एक दिन में नहीं होता; इसमें समय लगता है। ऐसा करने से, हमारे आचरण से और हमारे कर्मों से, धर्म का प्रभाव धीरे-धीरे पाप पर भारी पड़ने लगता है।

► यह उत्तर सुनें · 14:55 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2234 गुरुजी, मेरा प्रश्न यह था कि आप कहते हैं कि 33 करोड़ देवता हैं, जबकि कुछ लोग कहते हैं कि 33 'मुख' (प्रमुख/प्रकार के) देवता हैं। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर: देखिए, सृष्टि को चलाने के लिए—केवल यह लोक ही नहीं, बल्कि अनगिनत ब्रह्मांड, जिनमें पाताल लोक, रसातल लोक, तलातल लोक, भूतल लोक, भू लोक, भुवर् लोक, स्वर् लोक, जन लोक, सूर्य लोक, चंद्र लोक, स्वर्ग लोक, और यक्ष-गंधर्वों के लोक शामिल हैं—इतने सारे लोकों में अपने-अपने कर्म के अनुसार निवास करने वाले समस्त जीवों के लिए भगवान ने 33 करोड़ देवताओं की रचना की है। और अच्युतानंद ने अपने ग्रंथ 'शून्य पंजर ग्रंथ' में लिखा है—'छप्पन कोटि जीव जंतु, कोटि 33 देव'—अर्थात 56 करोड़ जीव-प्रजातियाँ और 33 करोड़ देवता। उन्होंने 33 करोड़ देवी-देवताओं के बारे में लिखा है। इन 33 करोड़ देवताओं में अगर हम गिनें, तो आठ वसु हैं, 16... 64 सिद्ध हैं, 16 हजार ऋषि जो देवता बने... 16 हजार... तो इस तरह जोड़ 33 करोड़ हो जाता है। लोग यह नहीं जानते। ये 33 करोड़ देवी-देवता केवल पृथ्वी पर नहीं हैं; वे भगवान की कृपा और आशीर्वाद से, दिव्य शक्ति से, ब्रह्म की शक्ति से समस्त ब्रह्मांड की देखरेख करते हैं, उसका पालन और संचालन करते हैं। यह भी शास्त्रों में लिखा है। ओडिशा की जगन्नाथ Bhavishya Malika में अच्युतानंद ने 33 करोड़ देवी-देवताओं का उल्लेख किया है। यह अनेक शास्त्रों में लिखा है; यह यूँ ही बना हुआ नहीं है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 15:51 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2235 जब हम एकादशी का व्रत शुरू करना चाहें, तो उसके क्या नियम हैं, और हम उसे ठीक से कैसे शुरू कर सकते हैं? क्या एक दिन पहले से खाना बंद करना पड़ता है, या कैसे करना चाहिए?

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? (हाँ, हाँ, बाबा।) ठीक है, सुनिए। अगर आप एकादशी का व्रत रखना चाहते हैं, तो कोई समस्या नहीं। आनंदपूर्वक ब्रह्म मुहूर्त में उठिए, बिस्तर छोड़िए, स्नान कीजिए, भगवान और सूर्य देव को प्रणाम कीजिए, जल अर्पित कीजिए, कुछ समय त्रिकाल संध्या कीजिए, मंत्र जप कीजिए, अर्थात ब्रह्म Madhava का नाम लीजिए। फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार आप एक समय एक बार भोजन कर सकते हैं, या तो सुबह और दोपहर के बीच या सूर्यास्त से पहले। आप 'अन्न प्रसाद' (अन्न से बना भोजन), फल, कंद-मूल ले सकते हैं; आप कुछ भी खा सकते हैं। बाकी समय आप जल पी सकते हैं। पर आपको केवल एक ही बार भोजन करना है, दूसरी बार नहीं। फिर अगले दिन आप सामान्य रूप से आगे बढ़ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:54 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2236 बाबा, क्या हम दशमी (एकादशी से एक दिन पहले) को चावल खा सकते हैं? और दशमी को किन चीज़ों से बचना चाहिए?

उत्तर: देखिए, अन्न महालक्ष्मी का वरदान है। भगवान Jagannath प्रतिदिन अन्न ग्रहण करते हैं। सभी देवता अन्न ग्रहण करते हैं। अन्न में कोई दोष नहीं है। कोई भी—साधु, संत, ऋषि—परंपरा के अनुसार अन्न प्रसाद ले सकते हैं। अन्न महालक्ष्मी द्वारा दिया गया तत्व है; आप उसे खा सकते हैं। पर जो अन्न आप खाएँ, वह कच्चा अन्न होना चाहिए। जैसे, बाज़ार में मिलने वाला उसना (पारबॉयल्ड) चावल नहीं खाना चाहिए। जो चावल उबाला न गया हो, वह कच्चा चावल कुटवाकर पकाकर खाया जा सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 19:00 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2237 आपने कहा कि Madhava ही Kalki हैं और Kalki ही Madhava हैं, और आपने 'Madhava' नाम जपने की सलाह दी। तो एक दिन में हमें कितनी माला करनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, Kali Yuga के कारण लोग माला तक सीमित हो गए हैं, यह सोचते रहते हैं कि कितना जपें और कितना नहीं। देखिए, भगवान की उपासना का कोई नियम नहीं है। आप जितना अधिक जपेंगे, आपके लिए उतना ही मंगलकारी है। Kali Yuga के कारण यह माला तक सीमित हो गया है, अर्थात हम 16 माला, 5 माला, या 8 माला करते हैं। इससे क्या होता है कि मन में अहंकार और घमंड आ जाता है: 'मैं इतनी माला करता हूँ।' पर अगर आप अनगिनत बार करेंगे, तो मन में भाव आता है, 'शायद कुछ छूट गया हो, थोड़ा और कर लूँ।' इससे अधिक भक्ति आती है, और श्रद्धा और भक्ति बढ़ती है। गिनती पर निर्भर रहने के बजाय, अर्थात हिसाब-किताब का सहारा लिए बिना, खुले मन से नाम जपिए, जब भी समय मिले। इससे मनुष्य का कल्याण होगा, और भगवान भी देखेंगे कि आपने उनके नाम जपने के लिए कोई नियम नहीं बनाया, जैसे कि इतना जपूँगा या उतना। ऐसा नहीं होना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:55 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2238 जब मैं श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ता हूँ, तो उसमें लिखा है कि भगवान शंकर, भगवान विष्णु, और सभी... सारे देवता एक ही हैं, कि 'आप महान हैं, आप महान हैं।' तो मुझे समझ नहीं आता कि किसकी उपासना करूँ।

उत्तर: हम मनुष्य हैं; हम इस धरती पर मोक्ष के लिए आए हैं। देवता महान हैं, इससे हमें क्या लेना-देना? यह सब ज्ञान मार्ग है। देखिए, भगवान शंकर भगवान महाविष्णु के ही अंश हैं, और भगवान ब्रह्मा भी। प्रलय के समय भगवान शंकर संहार करते हैं—वे ही भगवान विष्णु हैं। सृष्टि के समय वे भगवान ब्रह्मा के रूप में सृष्टि की रचना करते हैं—वे ही भगवान विष्णु हैं। और पालन के समय भगवान विष्णु नारायण के रूप में पालन करते हैं—वे ही भगवान विष्णु हैं। हम भेद क्यों देखें? हमें बिलकुल भी भेद नहीं देखना चाहिए। सारे देवता—ब्रह्मा, विष्णु, महेश—एक ही हैं। और सभी की भागवत में महिमा गाई गई है। हमें उससे क्या? हमें तो उनकी कृपा पाने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर हम उस सिद्धांत पर चलें, तो सब एक ही हैं। बस सृष्टि के संचालन, सृजन और संहार के लिए भगवान विभिन्न रूपों में प्रकट हुए हैं। हमें उससे क्या? भगवान शंकर जो भी हैं, वे भगवान हैं। भगवान ब्रह्मा जो भी हैं, वे भगवान हैं। वे एक ही हैं, ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 21:10 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2239 बाबा, आपके चरणों में मेरा प्रणाम। द्वापर युग में जब महाभारत हुआ, तो 64 करोड़ लोग मरे थे। और यहाँ Kali Yuga में 64 करोड़ बचने वाले हैं। इसका क्या महत्व है, बाबा?

उत्तर: महाभारत युद्ध में 64 करोड़ मरे थे, और इस जन्म में, इस युग में 64 करोड़ बचने वाले हैं। हाँ, देखिए, धर्म की स्थापना की संख्या एक युग से दूसरे युग में अलग-अलग होती है। यह धर्म की स्थापना की संख्या है। जहाँ तक उस समय कितने मरे थे, मैंने शास्त्रों में उसे पूरी तरह नहीं पढ़ा है। अगर आप कहते हैं, तो बेटा, देखिए, जो 64 करोड़ मरे, वे अपने कर्म के कारण आए थे। और यह महाभारत युद्ध की बात है। इस युग में महाभारत युद्ध का एक भाग अभी भी शेष है। और उस शेष युद्ध में, जिन्हें मरना था पर नहीं मरे, वे सब भविष्य में मरेंगे। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 22:47 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2240 पंडित जी, मैं यह पूछना चाहता था कि चूँकि Kali Yuga का अंत शुरू हो चुका है, और जब 'मीन शनि' योग बनेगा... जो लोग भक्ति में हैं और त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, उनका कोई अहित नहीं होगा। पर जैसे-जैसे Kali Yuga का अंत निकट आ रहा है, क्या कलि लोगों से पाप करवाएगा? क्या यह उन लोगों के मन को प्रभावित करेगा जो भक्ति में नहीं हैं और उनसे अपने आप पाप करवाएगा, या उन्हें पाप करने के लिए विवश करेगा? मैं कुछ ऐसा ही पूछना चाहता था।

उत्तर: जो जीव बुरे कर्म करते हैं या जानबूझकर अपने कर्मों में गलती करते हैं, भगवान ने उन्हें पहले ही चेतावनी दे दी है। युग समाप्त हो रहा है, समय बदल रहा है, और रोग, बीमारियाँ, युद्ध, सांप्रदायिकता, और संसार में दुःख-पीड़ा सब बढ़ रहे हैं। यह मानवता के लिए एक चेतावनी है। और अगर चेतावनी के बाद भी वे अपने आप को नहीं सुधारते, तो जीव को निश्चित रूप से अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। हर जीव अपना कर्म स्वयं भोगता है। जो भक्त सत्कर्म करते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं, दान, धर्म और पुण्य करते हैं, और Madhava की शरण लेते हैं, भगवान Madhava उनकी रक्षा करेंगे और उन्हें Satya Yuga का मनुष्य बनाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:53 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2241 जब हम त्रिकाल संध्या नहीं करते और भागवत महापुराण पढ़ते हैं... अभी 2024 है। मैंने देखा है कि जब तक 2025 आता है, कलि हमारे मन पर प्रभाव डालकर हमसे पाप कर्म करवाता है। तो जो लोग त्रिकाल संध्या आदि करते हैं, वे पाप नहीं करेंगे। लेकिन जैसे-जैसे युग का अंत निकट आएगा, जैसे 2026, 2027 में, तो क्या कलि जानबूझकर लोगों से पाप करवाएगा, चाहे वे करना न चाहें? यह कैसे होगा? कलि का प्रभाव किस तरह काम करेगा?

उत्तर: कलि का प्रभाव ऐसा है कि धर्मात्मा लोग भी अपना मार्ग भटक गए हैं। पुण्यात्मा लोग भी कुकर्मों में लिप्त हो रहे हैं। इसका कारण है कलियुग की कामना, वासना और लोभ। कलि का पहला रूप है रोग और लोभ। वह मनुष्य के मन में लोभ पैदा करेगा, उसे कामना और वासना में डुबोएगा, नशे में डुबोएगा, और मनुष्य के शरीर में क्रोध व अहंकार फैलाकर सांप्रदायिक शक्तियों और सामाजिक तत्वों के माध्यम से लोगों को भ्रम की स्थिति में ला देगा। कुछ अच्छे लोग भी बुरे कर्म कर बैठेंगे, और वे कर भी रहे हैं। कलि के इस प्रभाव से बचने के लिए, कलि के मल से बचने के लिए, अच्युतानंद और पंचसखा ने भविष्य पुराण की रचना की, जिसका हम प्रचार कर रहे हैं। और जो मनुष्य त्रिकाल संध्या करेंगे, उन पर भगवान की कृपा होगी, और कलि का प्रभाव उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। वे समस्त सांसारिक और भौतिक तत्वों से परे रहेंगे। उनमें कोई लोभ, मोह या माया नहीं रहेगी। वे बस भगवान की शरण में रहकर कर्म करते रहेंगे। इसलिए त्रिकाल संध्या करने से मानव सभ्यता से कलि का यह मल दूर होगा, और कलि का प्रभाव भी समाप्त होगा। इसीलिए आप सब त्रिकाल संध्या कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 25:26 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2242 बात यह है कि जब कोई मनुष्य किसी दूसरे जीव को खाता है, तो वह पाप है। लेकिन जंगल में या तालाब में और भी जीव होते हैं, जहाँ बड़े जीव छोटे जीवों को खाते हैं। क्या वे बचेंगे? जब एक जीव दूसरे जीव को खा रहा है, तो वे कैसे बचेंगे?

उत्तर: देखिए, कुछ जीवों ने ऐसे बुरे कर्म किए हैं कि उन्होंने ऐसी योनि में जन्म लिया है जिसे दूसरे जीव खाएँगे, और उसी के माध्यम से उनका कर्म क्षय होगा। और दूसरा जीव जो खा रहा है, उस जीव में न ज्ञान है, न बुद्धि, न विवेक, न अनुभव, न चिंतन। वह आहार के लोभ में दूसरे को खा जाता है। इसी प्रकार, कुछ मनुष्य जिन्होंने बुरे कर्म और महापाप किए हैं, वे मछली या अन्य छोटे-बड़े जीवों के रूप में जन्म लेते हैं। उन्हें दूसरे जीव कई बार खाएँगे, और उसी से उनका कर्म क्षय होगा, और तब वे चौरासी लाख योनियों को पार करेंगे। तो, यह मनुष्यों के लिए नहीं है। जो दूसरे पशु ऐसा करते हैं, वे अज्ञानी हैं। और उस कर्म में दोनों जीवों का कर्मफल माना जाता है। जो खाता है उसका विचार होता है, और जो खाया जाता है उसके कर्म का भी विचार होता है। फिर वे नया जन्म लेते हैं। कर्मफल के अनुसार ही जन्म मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 27:36 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2243 मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए, पिताजी।

उत्तर: हाँ बेटी, तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। आनंद से रहो, त्रिकाल संध्या करो, और माधव की शरण में रहो।

► यह उत्तर सुनें · 29:09 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2244 पिताजी, मैं यह पूछना चाहती थी कि भागवत में ज्ञान और प्रेम दोनों की चर्चा है। लेकिन जब उद्धव व्रज में गोपियों से मिलने जाते हैं, तो कहा जाता है कि ज्ञान से प्रेम श्रेष्ठ है। तो मैं आपके श्रीमुख से सुनना चाहती हूँ कि प्रेम ज्ञान से कैसे श्रेष्ठ है।

उत्तर: देखिए, ज्ञान एक बाज़ार की तरह है, एक मंडी जहाँ अनेक चीज़ों का ज्ञान है। हर ज्ञान दूसरे ज्ञान से जुड़ा हुआ है। आप जितना एक ज्ञान का विश्लेषण करेंगे, उसमें से दूसरा ज्ञान निकलता जाएगा। लेकिन प्रेम एक ऐसा तत्व है जहाँ न 'मैं' है, न 'मेरा', न 'तू', न 'तेरा', न कोई भौतिक तत्व, न लोभ, न मोह, न अहंकार—कुछ भी नहीं। वहाँ केवल त्याग है। और मनुष्य त्याग से भगवान को प्राप्त करता है। कैसा त्याग? कामना, वासना, मोह, अभिमान, अहंकार, लोभ और समस्त इंद्रियों का दमन—अर्थात त्याग। यही प्रेम का लाभ है—त्याग। ज्ञान में त्याग नहीं होता। वह बिल्कुल ऐसे है जैसे किसी बाज़ार में जाएँ जहाँ 100 प्रकार की सब्ज़ियाँ बिक रही हों। हम उतना ही ला सकते हैं जितना हमारे थैलों में समा जाए। सब कुछ नहीं ला सकते, और हमारा मन उन सब चीज़ों की चाह में अतृप्त रह जाएगा जो हम नहीं ला पाए। ज्ञान बिल्कुल ऐसा ही तत्व है। इसलिए जो लोग ज्ञान में भटकते रहते हैं, उनके मन को कभी संतुष्टि नहीं मिलती। उन्हें कभी निर्वाण नहीं मिलता, कभी मुक्ति, मोक्ष या भगवान नहीं मिलते। भगवान प्रेम से मिलते हैं। और प्रेम का दूसरा रूप है त्याग। जब मनुष्य समस्त सांसारिक मोह का त्याग करके भगवान के चरणों में प्रेम अर्पित करता है, तब भगवान की प्राप्ति होती है।

► यह उत्तर सुनें · 29:26 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2245 क्या मैं बजरंग बाण का पाठ कर सकती हूँ?

उत्तर: अवश्य! बजरंग बाण का पाठ करने से घर से भूत-प्रेत जैसी सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। बजरंग बाण हनुमान जी का अमोघ अस्त्र है। जब तुलसीदास महाराज ऐसे रोग से बीमार पड़े जो ठीक नहीं हो रहा था, तब उन्होंने बजरंग बाण की रचना की। बजरंग बाण भक्तों के उद्धार के लिए है, उन्हें सारी बाधाओं से बचाने के लिए है। लेकिन उसके साथ-साथ त्रिकाल संध्या का तत्व मानवता के उद्धार के लिए है।

► यह उत्तर सुनें · 31:28 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2246 पिताजी, कृपया हमें अपना आशीर्वाद दीजिए। मैं और मेरी बेटी, हम दोनों इस धारा में हैं।

उत्तर: ठीक है, अच्छा है बेटी। तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। जय जगन्नाथ। तुम्हारा कल्याण हो। प्रसन्न रहो और धर्म कर्म करो।

► यह उत्तर सुनें · 32:13 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2247 फिर मैं बस यह पूछना चाहती थी: हम भगवान के प्रति अपना प्रेम कैसे बढ़ाएँ कि हम भी उनके प्रेम में दीवाने हो जाएँ? यह हम कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, जब आप निरंतर नाम जप करेंगी, तो नाम का आपके शरीर और भौतिक तत्वों से बार-बार संपर्क होने से बहुत सारी मलिनता धुल जाएगी। आप भगवान को पहचानने के योग्य हो जाएँगी। और भगवान को पहचानने के बाद मनुष्य के सारे मोह छूट जाते हैं। और जब मनुष्य कहता है, 'मैं असहाय हूँ, मैं निराश्रित हूँ,' तब भगवान के प्रति प्रेम, भक्ति और समर्पण जागेगा। उस अवस्था तक पहुँचने के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए और नाम जप कीजिए। कुछ दिन करने के बाद धीरे-धीरे आपके मन में उसका प्रभाव आएगा। आगे बढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 32:33 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2248 प्रभु जी, मैं यह पूछना चाहती थी कि जब से मैंने यह शुरू किया है, मेरा बाहर की चीज़ें जैसे पिज़्ज़ा, बर्गर वगैरह खाने का मन ही नहीं करता। बिल्कुल भी खाने का मन नहीं करता। जैसे मैंने उन्हें पूरी तरह छोड़ ही दिया हो। मुझे उनकी कोई इच्छा नहीं होती। क्या यह एक अनुभव है?

उत्तर: नहीं, यह तो बहुत सुंदर बात है। देखिए, जब सात्विक भाव आता है, तो मनुष्य सनातनी का भोजन ही खाएगा। यह बाहरी भोजन, विदेशियों का भोजन, राक्षसों का भोजन, हमारे लोग इसलिए खा रहे हैं क्योंकि कलियुग है। लेकिन युग परिवर्तन के साथ लोग सात्विक भोजन खाएँगे, जिससे शरीर को कोई हानि नहीं होती। तो यह अच्छा है, बेटी। त्रिकाल संध्या का तत्व आपके शरीर पर प्रभाव डाल रहा है। इसीलिए आप जान पा रही हैं कि क्या सत्य है, क्या अच्छा है और क्या बुरा है। यह बड़ा ज्ञान है, है न? त्रिकाल संध्या मनुष्य के मन को प्रभावित करती है, और उससे संयम एवं आत्म-नियंत्रण भी आता है।

► यह उत्तर सुनें · 33:40 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2249 मेरा प्रश्न यह है कि क्या हम तुलसी कंठी माला (गले में तुलसी की माला) पहन सकते हैं, या हमें नहीं पहननी चाहिए?

उत्तर: देखिए, हर सनातनी को तुलसी माला पहननी चाहिए। लेकिन तुलसी माला पहनने पर कुछ नियमों का पालन भी करना होता है। पहला, जो लोग तुलसी माला पहनते हैं, उन्हें अपनी बहन, पत्नी या माता के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से शारीरिक संपर्क नहीं करना चाहिए। उन्हें किसी दूसरी स्त्री के शरीर का स्पर्श तक नहीं करना चाहिए। क्योंकि जैसे माता तुलसी पवित्र हैं, वैसे ही हमें भी वह पवित्रता बनाए रखनी होगी। दूसरा, जो लोग तुलसी माला पहनते हैं, उन्हें नित्यक्रिया के समय, अर्थात मनुष्य की प्राकृतिक दैनिक क्रियाओं के समय, उसे उतारकर अलग स्थान पर रख देना चाहिए, क्योंकि वह पवित्र है। तीसरा, जो लोग तुलसी माला पहनते हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या भी करनी चाहिए। और सूर्य देव को जल अर्पित करना सनातनी परंपरा का एक महान सिद्धांत है। क्योंकि तुलसी माला शरीर को पवित्र करती है, इसलिए हमारे कर्म भी उसी के अनुरूप होने चाहिए। हर सनातनी को तुलसी माला पहननी चाहिए। यह हमारे लिए आवश्यक है। इसका मन पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है।

► यह उत्तर सुनें · 34:42 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2250 पिताजी, कृपया मुझ पर और मेरे परिवार पर अपना आशीर्वाद बनाए रखिए।

उत्तर: ठीक है, बेटी। भगवान करे कि आप सब धर्म के सिद्धांतों और भगवान के सारे नियमों का भली-भाँति पालन करें। ऐसा करने से आपको भगवान की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। मेरा आशीर्वाद संसार के हर मनुष्य के साथ है। लेकिन बेटी, एक बात यह है कि हमें भगवान की शरणागति में और आगे बढ़ना चाहिए, ताकि हमारा हृदय तन, मन और आत्मा से भगवान में लीन हो जाए। वही कीजिए। तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। आगे बढ़ो।

► यह उत्तर सुनें · 36:13 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2251 पिताजी, आपको मेरे अनंत प्रणाम। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए ताकि मैं उनकी सेवा कर सकूँ...

उत्तर: ठीक है, आपको मेरा पूरा आशीर्वाद है। माधव की शरण में रहिए, भागवत पढ़िए और त्रिकाल संध्या कीजिए। मेरा आशीर्वाद सदैव आपके साथ है।

► यह उत्तर सुनें · 37:03 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2252 नारायण कवच और माधव नाम — इनमें से अधिक शक्तिशाली कौन है?

उत्तर: धर्म में नाम ही सबसे अधिक शक्तिशाली है। नारायण कवच आपको विपत्तियों से बचाएगा। 'माधव' नाम मनुष्य को जीवन-चक्र और जीव होने के बंधन से मुक्त कर देगा। नारायण कवच आपको भौतिक तत्वों से बचाएगा, जबकि 'माधव' नाम आपको समस्त सांसारिक तत्वों और जीवन-चक्र के बंधन से मुक्त कर देगा। यही अंतर है।

► यह उत्तर सुनें · 38:00 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2253 पिताजी, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मेरी पढ़ाई अच्छी चले और मैं अच्छे से पढ़ सकूँ।

उत्तर: ठीक है, मैं भी भगवान से प्रार्थना करूँगा कि वे आपको आशीर्वाद दें। लेकिन एक काम कीजिए: जैसा मैंने समझाया है, वैसे नियमों और धारा का पालन कीजिए। आपकी पढ़ाई अच्छी चलेगी। और बेटी, अपनी पढ़ाई के लिए निरंतर माधव नाम का जप करते हुए पढ़िए। आपको भगवान की कृपा अवश्य प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 38:40 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2254 हम छतिया बाटा में दर्शन के लिए गए थे और वहाँ से तुलसी माला ली, जिसे हम पहने हुए हैं। गर्मी का मौसम है, इसलिए... हम आमतौर पर नहीं पीते, लेकिन पिछले कुछ दिनों से हम बाहर से छाछ खरीदकर पी रहे हैं, नमकीन वाली, क्योंकि पेट में बहुत जलन होती है। क्या ऐसा करना ठीक है?

उत्तर: आजकल बाहर का भोजन अच्छे से नहीं बनता, इसीलिए आपको जलन हो रही है। लेकिन देखिए, कोई भी सात्विक भोजन करने में कोई समस्या नहीं है। कोई निषेध नहीं है। आप सात्विक भोजन ले सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 39:18 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2255 पंडित जी, मैं कॉलेज का छात्र हूँ। मैं सुबह और शाम को त्रिकाल संध्या कर पाता हूँ, लेकिन दोपहर में नहीं कर पाता। कृपया इसका कोई समाधान बताइए।

उत्तर: देखो बेटा, अगर दोपहर में तुम्हें समय नहीं मिलता... त्रिकाल संध्या में लगभग 10 मिनट लगते हैं। तो दोपहर के लिए मैं तुम्हारे वास्ते इसे छोटा कर सकता हूँ। 16 नामों वाले श्लोक में एक मिनट लगेगा। 'दुर्गा माधव, दुर्गा माधव' 36 बार, 'माधव' नाम 108 बार, और दस अवतारों के नाम: मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, श्री बुद्ध, कल्कि। यह तुम खड़े-खड़े दो से ढाई मिनट में कर सकते हो। अगर सचमुच समय नहीं है, तो यही करो। और उस समय सूर्य देव को भी प्रणाम करो, ताकि सूर्य देव तुम्हें रोग और विपत्तियों से बचाएँ और तुम्हें ज्ञान व बल दें। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 39:57 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2256 मैंने एक साँप देखा और बाद में एक कछुए को सड़क पार करने में मदद की। इसका क्या अर्थ है? कृपया बताइए।

उत्तर: आपके खाते में एक पुण्य कर्म जुड़ गया है। आपने एक जीव को बचाया, इसलिए यह पुण्य कर्म जुड़ गया। भगवान ने देखा कि आप त्रिकाल संध्या कर रहे हैं और वे जीवों के प्रति आपका भाव देखना चाहते थे, और आपने उसे सिद्ध कर दिया। बहुत अच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 42:11 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2257 मेरा दूध का व्यवसाय है। पहले मैं अंडे बेचता था, लेकिन अब बंद कर दिया है। क्या मुझे दूध का व्यवसाय जारी रखना चाहिए?

उत्तर: दूध का व्यवसाय जारी रखिए। दूध से शुरुआत कीजिए। वही शुद्धता है, सत्य युग की धारा है।

► यह उत्तर सुनें · 42:29 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2258 मेरा नाम निलेश है। मैं बस एक बार आपके मुख से अपना नाम सुनना चाहता हूँ।

उत्तर: ठीक है, अच्छा। निलेश, अपने पुण्य कर्म बढ़ाओ। आगे बढ़ो और भगवान का काम करो।

► यह उत्तर सुनें · 43:04 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2259 गुरुजी, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मैं चार दिन पाठ करती हूँ, फिर बीमार पड़ जाती हूँ और आगे नहीं कर पाती। मैं संध्या का पाठ नहीं कर पाती। मैं बीमार क्यों पड़ जाती हूँ? मुझे नहीं पता ऐसा क्यों होता है। मैं बहुत बीमार रहती हूँ।

उत्तर: देखो बेटी, बीमारी चाहे जो भी हो, त्रिकाल संध्या के लिए तुम्हें स्नान करने की आवश्यकता नहीं है। त्रिकाल संध्या के लिए बड़े स्नान या शौच-शुद्धि की कोई जरूरत नहीं है। अगर तुम बीमार पड़ जाओ, तो उस समय भी करो। क्योंकि देखो, जब बीमारी आती है, तो मानो कलि तुम्हें खा रहा है। त्रिकाल संध्या करने से तुम्हारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा प्रवेश करेगी, भगवान और देवताओं की कृपा आएगी। मत रोको। उस समय भी करो, कहीं भी — लेटे-लेटे, बैठे-बैठे, खड़े होकर नहीं — जैसे चाहो, पर त्रिकाल संध्या मत रोको। अगर त्रिकाल संध्या की प्रार्थनाओं का पाठ न कर सको, तो उस समय माधव नाम का जप करो।

► यह उत्तर सुनें · 43:38 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2260 कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मैं यह कर सकूँ। मैं कई बार नहीं कर पाता।

उत्तर: वे आपको आशीर्वाद देंगे। आप प्रयास करते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 44:58 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2261 पिताजी, मैं यह कहना चाहती थी कि मुझे त्रिकाल संध्या करते हुए 10 महीने हो गए हैं, लेकिन मुझे फिर से बहुत गुस्सा आने लगा है। छोटी-छोटी बात पर मुझे बहुत गुस्सा आता है।

उत्तर: देखिए, कलि का प्रभाव पड़ रहा है। आपने 10 महीने संध्या की है, यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन जब आपको गुस्सा आए, तो सोचिए कि यह शरीर एक दिन नष्ट होने वाला है। तो किस पर और किसलिए गुस्सा करूँ? शरीर नश्वर है; एक दिन यह पंचतत्त्व में मिल जाएगा। तो इस शरीर के बारे में क्यों सोचना? यह शरीर ही सब कुछ पैदा करता है। तो, इस शरीर को भूल जाइए। कहिए, 'यह शरीर रहेगा नहीं, मैं गुस्सा क्यों करूँ? हे प्रभु, मुझे मुक्ति दीजिए और मुझे ले चलिए।' इस अवस्था तक पहुँचने के लिए त्रिकाल संध्या जारी रखिए। और जब गुस्सा आए, तो बैठ जाइए और सीधे माधव की ओर देखिए। कहिए, 'प्रभु, इस संसार में मेरा कोई नहीं है। माया मुझे खाए जा रही है। मुझे माया से दूर रखिए।' और जिन लोगों पर आपको गुस्सा आता है, उस जगह से थोड़ा दूर हटकर 10-15 मिनट अकेले बैठ जाइए। गुस्सा चला जाएगा। और कहिए, 'संसार मिथ्या है। हम तो यहाँ बस अपना कर्म करने आए हैं, तो किस पर गुस्सा करें? हमें अपना कर्म करके चले जाना है। अगर हम गुस्सा करेंगे, तो यह हमारे कर्म में बाधा पैदा करेगा।' बस यह सोचिए कि हमारा कर्म... यह क्रोध ही सबसे बड़ा बंधन है। यह हमें आगे बढ़ने से रोक रहा है। तो इसे कैसे नियंत्रित करें? कहिए, 'यह एक तत्त्व है जो मुझे परेशान होने पर मजबूर कर रहा है। मैं वह तत्त्व नहीं हूँ। मैं दिव्य तत्त्व का हूँ।' यह लगातार सोचिए। और जो क्रोध शरीर से आता है, कहिए, 'यह शरीर नश्वर है, क्रोध कहाँ जाएगा? लोभ, मोह और माया कहाँ जाएँगे?' यह सब सोचिए। क्योंकि शरीर क्षणभंगुर है; एक दिन यह अग्नि में जलाया जाएगा और पंचतत्त्व में मिल जाएगा। जो क्रोध आप महसूस करते हैं, वह आपके कर्म के साथ जाएगा। इसलिए यह हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। इसका त्याग कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:27 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2262 जब कोई हमारे घर आता है, तो कहता है, 'आपके घर में बहुत पॉजिटिविटी है।' लेकिन मैंने एक बात नोट की है: जब से हम इस घर में शिफ्ट हुए हैं, कुछ भी सकारात्मक नहीं हुआ है। घर के बच्चे भी आपस में लड़ते हैं, और गलतफहमियाँ बहुत बढ़ गई हैं। तो, इस घर में कोई भी प्रगतिशील काम नहीं हुआ है। क्या आप कृपया इस बारे में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: देखिए, अगर आपको घर में नकारात्मकता महसूस होती है, तो घर के सभी सदस्यों को साथ बैठकर भागवत की चर्चा करनी चाहिए। एक व्यक्ति पढ़े और बाकी सुनें। घर में कोई कलह नहीं होगी। बच्चों के बीच जो लड़ाइयाँ हो रही हैं, वे भी रुक जाएँगी। सबको बिठाकर भागवत सुनाइए, और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएँ एक-एक करके समझाइए। बस देखिए उनमें कितनी पवित्रता आ जाएगी। और उसके साथ सभी देवी-देवता भी आ जाएँगे, और घर की नकारात्मकता सकारात्मकता में बदल जाएगी। और अगर आप सब त्रिकाल संध्या करें, तो मेरे विचार से कोई नकारात्मकता होनी ही नहीं चाहिए। सारी नकारात्मकता चली जाएगी। और सभी बच्चों को बिठाकर भागवत सुनाइए। बच्चे भी अच्छे और आदर्शवान बनेंगे। अगर आप उन्हें नहीं सुनाएँगे, तो क्या होगा? लोग आसुरी तत्त्वों से परेशान हैं। तो, उन्हें भागवत सुनाइए। सभी बच्चों को बिठाइए; वे थोड़े और संस्कारी बनेंगे। और इसे सुनने से बच्चे आपस में नहीं लड़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:42 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2263 मेरे पिताजी आईसीयू में थे। आज उन्हें डिस्चार्ज कर दिया गया। कृपया उनके लिए भगवान से प्रार्थना कीजिए कि सब कुछ ठीक हो जाए। उन्होंने एंजियोग्राफी भी सुझाई है। तो, मेरी आपसे विनती है कि कृपया उनके लिए प्रार्थना कीजिए कि वे ठीक हो जाएँ और उन्हें कोई परेशानी न हो। कृपया, कृपया भगवान से प्रार्थना कीजिए।

उत्तर: जो भी हमारे साथ ऑनलाइन जुड़े हुए हैं, मैं आप सबसे निवेदन करता हूँ कि आप सब इनके पिताजी के लिए भगवान से प्रार्थना कीजिए। लेकिन एक बात के लिए और भी प्रार्थना कीजिए: कि इनके पिताजी के ठीक होने के बाद, हम भी भविष्य में अच्छे कर्म करें। तो, मैं सबसे निवेदन करता हूँ कि प्रार्थना कीजिए कि इनके पिताजी पर भगवान की कृपा हो, उन पर धर्म का प्रकाश पड़े, और इनके पिताजी को आध्यात्मिक शक्ति, धर्म का तत्त्व और भगवान की कृपा प्राप्त हो। यही मेरी सबसे विनती है।

► यह उत्तर सुनें · 49:22 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2264 अगर माता-पिता की सहमति से प्रेम विवाह किया जाए, तो क्या फिर भी यह पाप है? और आजकल अंतरजातीय विवाह भी होते हैं। उसके बाद, जब पति-पत्नी पूर्वजों के लिए कोई अनुष्ठान करते हैं, तो क्या पूर्वजों को मुक्ति मिलती है?

उत्तर: देखिए बेटी, हमारे वेदों की धारा के अनुसार... देखिए, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—सब भगवान के बनाए हुए हैं, सब एक हैं। लेकिन विवाह में वेदों ने कहा है कि ऊँची जाति का पुरुष किसी भी नीची जाति की स्त्री से विवाह कर सकता है। यह विवाह भी वेद-सम्मत है क्योंकि जब नीची जाति की कन्या ऊँची जाति में विवाह करती है, तो उसकी जाति ऊपर उठ जाती है। जाति का पतन नहीं होता क्योंकि सांसारिक धर्म पति के अनुसार निभाया जाता है। लेकिन अगर स्त्री ऊँची जाति की है, तो उसका नीची जाति में विवाह करना नियम नहीं है। उसमें कुल धर्म का उल्लंघन होता है, उससे 'वर्ण संकर' होता है, और उस सांसारिक व्यवस्था में पूर्वजों को मुक्ति नहीं मिलती, और उससे वेदों के नियमों का भी उल्लंघन होता है। तो, ऊँची जाति के पुरुष नीची जाति में विवाह कर सकते हैं, लेकिन ऊँची जाति की स्त्रियों का नीची जाति में विवाह करना—जैसे, अगर कोई ब्राह्मण स्त्री किसी शूद्र या क्षत्रिय से विवाह करती है, तो वह क्षत्रिय हो जाती है। उसकी जाति का पतन हो रहा है। और यह पतन उस जन्म की निंदा है जो व्यक्ति को सांसारिक वैदिक धारा में अपने कर्म के अनुसार मिला है। अर्थात्, ऊँची जाति में जन्म लेने के बाद, वह दूसरी जाति में जा रही है। इसमें कुल धर्म का नाश होता है। हर जाति एक है। भगवान जगन्नाथ के मंदिर में 36 प्रकार के सेवक उनकी सेवा करते हैं; हर जाति के लोग सेवा करते हैं। हर जाति का सम्मान होना चाहिए। लेकिन विवाह अपनी ही जाति और गोत्र के अनुसार होना चाहिए, जैसा हमारी वैदिक धारा में लिखा है। उसका पालन करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 50:22 · 28 अप्रैल 2024

प्रश्न 2265 हमारा प्रश्न यह है कि जब हमारे माता-पिता हमें सत्संग के लिए अनुमति नहीं देते, तो कभी-कभी हमें थोड़ी चिड़चिड़ाहट महसूस होती है। तो, क्या हमें उनकी बात माननी चाहिए? अगर मानते हैं, तो वह भी एक तरह का धर्म है कि हम अपने माता-पिता की आज्ञा मान रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर, अगर हम उनकी बात मानते हैं, तो एक तरह से हम धर्म के मार्ग पर नहीं चल रहे क्योंकि हम सत्संग में नहीं जा रहे। क्या आप कृपया इस पर प्रकाश डाल सकते हैं?

उत्तर: देखो बेटी, मनुष्य के मन में जो यह चिड़चिड़ाहट आती है, वह सब इंद्रियों के कारण है, क्योंकि हमने अभी तक ज्ञान तत्त्व का अनुभव नहीं किया है। जब हमें यह एहसास होगा कि हमारे पास बहुत कम समय है, और इस थोड़े से समय में हमें अपने पारिवारिक कर्तव्यों और सांसारिक कर्तव्यों को निभाते हुए भी भगवान की शरण में रहना है, और फिर हमें चले जाना है, तब ये सब बातें चली जाएँगी। इसलिए बेटी, अगर तुम्हारे मन में कोई द्वंद्व या चिड़चिड़ाहट आए, तो बैठकर भगवान का नाम जपो। और उसमें यह सोचो कि यह शरीर भगवान की शरण में जाने के लिए,

कर्म बंधन से मुक्ति पाने के लिए आया है। इसलिए भगवान ही हमारे सबसे बड़े स्वामी, मालिक, मित्र और सगे-संबंधी हैं। तो, उनकी आराधना करो। उनकी आराधना करने से तुम्हारे मन में यह विचार हमेशा आएगा: संसार सब माया है, तो मैं किस पर गुस्सा करूँ? मेरा मन किस पर प्रभावित हो? अगर संसार मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है, तो एक समय आएगा जब ब्रह्म के सत्य में तुम्हारी आस्था स्थापित हो जाएगी। फिर संसार में जो भी हो, तुम कहोगी, 'छोड़ो, मुझे इससे क्या लेना-देना? मुझे तो जाना है।' जो लोग यात्रा पर होते हैं, वे रास्ते में नहीं ठहरते, क्योंकि उनका समय बर्बाद हो जाएगा। एक समय आएगा जब तुम्हारा मन भी इस अवस्था तक पहुँच जाएगा, जब तुम भगवान के प्रेम, भक्ति और भाव में लीन हो जाओगी। तो, लगातार प्रयास करो और प्रार्थना करो, 'प्रभु, मुझे माया से दूर रखिए। संसार मिथ्या है।' इसी माया के कारण मनुष्य के मन में कई तरह के प्रश्न और भेद उठते हैं। वास्तव में, कोई भेद नहीं है, कोई प्रश्न नहीं है। तो, भगवान से माँगो, 'हे प्रभु, मुझे वह सत्य दीजिए।' भगवान से माँगो, और भगवान सब कुछ करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 53:52 · 28 अप्रैल 2024

सत्र 121 · प्रश्न 2266–2288

L131: क्या अमेरिका और चीन मिलकर भारत के विरुद्ध समझौता करेंगे? भविष्य मालिका में क्या लिखा हुआ है।

दिनांक: 2 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2266 पिताजी, मैं कह रहा था कि भविष्य मालिका के अनुसार यह सबसे पहले भक्तों तक पहुँचती है। तो, वृंदावन में बहुत सारे भक्त हैं, जैसे प्रेमानंद जी महाराज, जो राधा के बहुत बड़े भक्त हैं। भविष्य मालिका उन तक पहुँचने से पहले हम जैसे गृहस्थों तक कैसे पहुँच गई? हम तो उनसे बड़े भक्त हैं नहीं।

उत्तर: देखिए, कौन पूर्ण भक्त है और कौन नहीं, यह भविष्य पुराण में लिखा है। और कौन भक्त है और कौन नहीं, इसकी परीक्षा का समय आ रहा है। 2025 से 2029 के बीच कई बीमारियाँ आएँगी। जिन महान परंपराओं, जिन महान भक्तों की हम बात करते हैं, उन्हें लड़ने के लिए त्रिकाल संध्या को थामना पड़ेगा; नहीं तो समय उनके साथ नहीं रहेगा, यह मैं पहले ही बता रहा हूँ। दूसरी बात, जो सच्चे भक्त हैं, वे भविष्य मालिका को समझेंगे। जो भक्त नहीं हैं, वे न इसे समझेंगे, न इसका सम्मान करेंगे, और न ही इसे कुछ मानेंगे। मैंने भारत की महान परंपराओं को भविष्य मालिका भेजी थी; मुझे पता है मुझे क्या प्रतिक्रिया मिली। इसीलिए मेरे पास पूरी जानकारी है कि क्या होने वाला है और क्या नहीं। लेकिन सच्चा भक्त वही है, जैसा अच्युतानंद ने कहा है, 'अनन्य जाहि महिमा प्रकाश जा।' इसका अर्थ है कि भगवान श्रीकृष्ण के सच्चे भक्तों को भविष्य मालिका में बड़ा आनंद मिलेगा। वे इसे स्वीकार करेंगे, समझेंगे, और इसका पालन भी करेंगे। इसलिए, भगवान जहाँ इसका प्रचार चाहेंगे, वहाँ इसका प्रचार अवश्य होगा। वृंदावन और मथुरा में बहुत से लोग हैं जो भविष्य मालिका में विश्वास करते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं, और मंडल बना चुके हैं। और जिन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है, जो योग्य नहीं हैं—अर्थात् जिन्हें भक्त के रूप में भविष्य मालिका पर अधिकार नहीं है—उन तक पहुँचने पर भी उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। इससे क्या फर्क पड़ता है? हमारा काम है प्रचार करना और भक्तों को बचाना। जो भक्त है वह समझेगा; जो भक्त नहीं है वह नहीं समझेगा।

► यह उत्तर सुनें · 08:28 · 2 मई 2024

प्रश्न 2267 पंडित जी, मैंने एक सपना देखा जिसमें मैंने 8 या 10 भुजाओं वाली माँ दुर्गा, भगवान और माँ सरस्वती को एक साथ देखा। भगवान लुका-छिपी का खेल खेल रहे थे और मैं उन्हें पकड़ नहीं पा रही थी। बाद में, मुझे वॉशरूम में महाप्रभु बलभद्र का प्रतिबिंब दिखाई दिया, और अब भी दिखाई देता है। कृपया इस पर प्रकाश डालिए। क्या हमें इसे अपवित्र मानना चाहिए क्योंकि प्रतिबिंब बाथरूम में दिखाई देता है? या यह भगवान की कोई लीला है?

उत्तर: आपने जो सपना देखा, वह दुर्गा और माधव दोनों की लीला है। माँ दुर्गा, महालक्ष्मी, योगमाया, कभी सरस्वती का रूप लेती हैं, कभी माँ महालक्ष्मी का, और कभी माँ महाकाली का, अपनी इच्छा के अनुसार। वे पूरे ब्रह्मांड में अनंत रूपों में प्रकट होती हैं। यह दुर्गा और माधव द्वारा धर्म की स्थापना का समय है, इसीलिए आपको यह सपना आया। और आपने भगवान को देखा पर पकड़ नहीं पाई, और बाथरूम की बात... हमारे लिए बाथरूम बाथरूम है, हमारे लिए वह अशुद्ध है। लेकिन परम तत्त्व एक है। भगवान सदा सर्वत्र हैं; भगवान पृथ्वी के कण-कण में हैं। इसलिए, यह मन की पवित्रता और भगवान की कल्पना की बात है। अपनी त्रिकाल संध्या को मजबूत कीजिए, भागवत जी पढ़िए, और जैसे-जैसे समय के साथ आप आगे बढ़ेंगी, आपको और भी कई सपने आएँगे जिनमें भगवान, देवी-देवता आपको आने वाले समय के बारे में बताएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 11:18 · 2 मई 2024

प्रश्न 2268 पंडित जी, आजकल जब मैं बोलने की कोशिश करती हूँ तो मेरा दम घुटने लगता है। पहले ऐसा नहीं होता था। मुझे माँ दुर्गा के अनुभव भी होते हैं, और मुझे लगता है कि वे हमेशा मेरे साथ हैं। लेकिन मुझे यह घुटन महसूस होती है। इसका क्या मतलब है?

उत्तर: माताजी, यह बहुत अच्छी बात है। अगर आपको घुटन महसूस होती है, तो डॉक्टर से जाँच करवाइए ताकि अगर कोई समस्या हो तो उसका पता चल सके। ईसीजी भी करवाइए। लेकिन एक बात है, भक्ति के साथ-साथ कर्म भी आवश्यक है। आप पर भगवान की कृपा है, इसीलिए भगवान बार-बार आपको दर्शन देते हैं और अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। यह आपकी भक्ति का प्रभाव है, और इसी कारण भगवान आपकी अवश्य रक्षा करेंगे। लेकिन चिकित्सकीय जाँच भी करवाइए कि आपको घुटन क्यों महसूस होती है। यह खाँसी, सर्दी या दर्द के कारण भी हो सकता है; उसकी भी जाँच करवाइए। और माधव की त्रिकाल संध्या कीजिए; आपको माँ की रक्षा और कृपा अवश्य मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 15:32 · 2 मई 2024

प्रश्न 2269 मैं महाराष्ट्र से हूँ, मैंने आपका आशीर्वाद लेने के लिए आपसे बात की।

उत्तर: ठीक है माताजी, आशीर्वाद तो अवश्य है। लेकिन आप सबको धर्म, पवित्रता और मेरी विचारधारा का पालन करना चाहिए ताकि आपको भगवान की कृपा निश्चित रूप से मिले, और उस कृपा से आप और आपका परिवार आगे बढ़ सके।

► यह उत्तर सुनें · 18:46 · 2 मई 2024

प्रश्न 2270 मेरा एक प्रश्न मेरे जीवन से जुड़ा है। उस पुस्तक में लिखा है कि इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ काम करना बंद कर देंगी। क्या इसका यह भी मतलब है कि हमारा करियर खत्म हो जाएगा? मैं एमबीए कर रहा हूँ, क्या इसका मतलब है कि बहुत से लोग बेरोजगार हो जाएँगे?

उत्तर: देखो बेटा, वह समय अभी नहीं आया है। स्थिति 2025 से बननी शुरू होगी। लेकिन भगवान ने हमें जन्म दिया और हमारा कर्म भी दिया। अगर पूरे संसार में बदलाव होगा, तो हम भी बदलेंगे। अगर पूरे संसार में इलेक्ट्रॉनिक्स काम नहीं करेंगे, तो हम इलेक्ट्रॉनिक्स का क्या करेंगे? लेकिन वह समय अभी नहीं है। 2032-33 धर्म की स्थापना का समय है। तो अभी बस पढ़ाई करो, काम करो, और अपना कर्म करो। जैसे-जैसे समय के साथ दुनिया बदलेगी, हम भी बदलेंगे। मान लो आज सोने का भाव 5000 है, लेकिन एक समय आएगा जब कोई 1 रुपये में भी सोना नहीं खरीदेगा। समय के अनुसार काम आवश्यक है। अपना काम करो; तुमने पढ़ाई की है, तो अच्छी नौकरी लो। जब दुनिया बदलेगी, तो हम नए बदलावों के साथ अगले युग में चले जाएँगे, और वहाँ हमें भगवान की कृपा मिलेगी और हम आनंद में रहेंगे। यह समय के साथ चलता है। तुम अपना काम करो, अपना कर्तव्य करो। और कर्तव्य के साथ-साथ धर्म का भी पालन करो ताकि यह शरीर बच सके और अगले युग में प्रवेश कर सके।

► यह उत्तर सुनें · 19:11 · 2 मई 2024

प्रश्न 2271 गुरुजी, पिछले दो-तीन दिनों से मुझे एक सपना आ रहा है जिसमें मैं देखती हूँ कि एक व्यक्ति राक्षस की तरह मेरा पीछा कर रहा है और मैं डर के मारे उससे भाग रही हूँ। और दूसरा एक व्यक्ति मुझे ज़ोर से पुकारता है, 'देवी कन्या, देवी कन्या'। यह रुक-रुक कर होता रहा है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: सुनिए, यह कलि (Kali Yuga के असुर) का प्रभाव है। आप त्रिकाल संध्या (Trisandhya) कर रही हैं, इसीलिए कलि आपका पीछा कर रहा है और आपको डरा रहा है, मानो कह रहा हो, 'मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।' पर आपको देवताओं की कृपा प्राप्त हो रही है, जैसे वे कह रहे हों, 'यह तो देवी कन्या है, इसके पीछे जाने से क्या लाभ?' देवता पृथ्वी पर आ चुके हैं, वे त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, और आप भी उनसे जुड़ गई हैं। तो यह प्रमाण है कि त्रिकाल संध्या के द्वारा कलि असुर और उसका प्रभाव पापी लोगों का नाश कर सकता है, पर भक्तों का वह कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

► यह उत्तर सुनें · 21:13 · 2 मई 2024

प्रश्न 2272 पिताजी, मैं अपने सपनों में यह भी देखती हूँ कि लोग एक ओर गौ-हत्या कर रहे हैं। मुझे बहुत क्रोध आता है और मैं पूछती हूँ, 'तुम गाय क्यों काट रहे हो?' और वे बार-बार मुझसे कहते हैं, 'देवी कन्या, हमें बचाओ! देवी कन्या, हमें बचाओ!' इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान की कृपा से भविष्य में कुछ हो सकता है, इसलिए मैं इस पर खुलकर चर्चा नहीं करूँगा, माँ। दूसरी बात, जो गौ माता की हत्या करते हैं, वे असुर हैं। एक ओर भगवान उनका पाप दिखा रहे हैं, और आप पाप के देवता को भी देख रही हैं। साथ ही धर्म का प्रकाश भी प्रकट हो रहा है, क्योंकि देवता आपको यह अनुभव कराते हैं कि, हाँ, यह किया जा सकता है। एक समय आएगा जब आप सब दिव्य शक्ति के साथ संसार में जो लोग गौ माता की हत्या करते हैं और पाप करते हैं, उन्हें दंड देकर नष्ट कर सकेंगे। तो, समय ही सबसे बड़ा कारक है। भगवान के चरणों में बने रहिए; आपने अच्छा सपना देखा है। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 22:54 · 2 मई 2024

प्रश्न 2273 मेरा प्रश्न यह है, आचार्य जी: जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होगा, तो Bhavishya Malika के अनुसार, क्या चीन 13 मुस्लिम देशों के साथ मिलकर उसी समय भारत पर आक्रमण करेगा, या युद्ध समाप्त होने के बाद आक्रमण करेगा?

उत्तर: नहीं, यह उसी समय, एक साथ होगा। पहले पाकिस्तान आक्रमण करेगा, और उसके साथ ही एक-दो दिन के भीतर चीन आक्रमण करेगा। वे मिलकर लड़ेंगे, और फिर 13 मुस्लिम देश भी उनसे जुड़ जाएँगे और उसी समय भारत के विरुद्ध लड़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:31 · 2 मई 2024

प्रश्न 2274 प्रणाम, पिताजी। मेरा प्रश्न यह है कि जब हम त्रिकाल संध्या (Trisandhya) करते हैं, तो दशावतार स्तोत्र में हम 'केशव धृत-बुद्ध-शरीर' गाते हैं। क्या यह भगवान बुद्ध की बात है या गौतम बुद्ध की? बहुत भ्रम है, क्योंकि भागवत में भी भगवान बुद्ध का वर्णन है।

उत्तर: देखिए, जो बुद्ध मध्यकाल में आए, जिन्हें गौतम बुद्ध भी कहा जाता है, वे कोई अलग बुद्ध नहीं हैं। क्योंकि Kali Yuga में केवल एक ही बुद्ध आए। इस युग में भगवान के तीन अवतार हैं: बुद्ध देव, चैतन्य भगवान, और Kalki। तो, ये वही हैं; Bhavishya Malika में यह स्पष्ट है। जो गौतम बुद्ध हैं, वही बुद्ध हैं; कोई अंतर नहीं है। बात उसी बुद्ध अवतार की है, जो कीकट नगर में अंजना के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर आए। वे हमारे भगवान थे, एक अवतार जो धर्म की रक्षा करने और पशु-हत्या का विरोध करने आए थे। कुछ दिनों तक धर्म फैला, पर उसके बाद लोग पाप में डूब गए। अब वे बौद्ध धर्म को एक अलग दिशा में ले जा रहे हैं। पर एक समय आएगा जब बौद्ध धर्म के अच्छे संत भी भगवान Kalki की शरण लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:26 · 2 मई 2024

प्रश्न 2275 आपने मुझे पहचाना? मैं उल्हासनगर से निलेश बोल रहा हूँ।

उत्तर: निलेश, हाँ, हाँ। आपने केवल जगन्नाथ (Jagannath) कहने के लिए फोन किया। मैं आपको सुन रहा हूँ। कैसे हो, बेटा?

► यह उत्तर सुनें · 27:47 · 2 मई 2024

प्रश्न 2276 मुझे रात 3 से 4 बजे के बीच एक सपना आया। मैं भगवान के दर्शन के लिए तरस रही थी, और सपने में वे काली टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहनकर मेरे घर आए। मैंने उन्हें साधारण भोजन परोसा, जिसे उन्होंने प्रसन्नता से खाया। उन्होंने कहा कि हमारा संबंध जन्म-जन्मांतर का है। उनके घुटनों में दर्द था, तो मैंने उनके पैर दबाए। इसका क्या अर्थ है, पिताजी?

उत्तर: माँ, क्या आप त्रिकाल संध्या (Trisandhya) कर रही हैं? मैंने आपसे कहा था कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भगवान के दर्शन होंगे। और शास्त्रों के अनुसार, भगवान Kalki की आयु 17 वर्ष है, और उन्हें काले वस्त्र पहनना प्रिय है। इसीलिए उन्होंने आपको उसी रूप में दर्शन दिए। आप भाग्यशाली हैं। अपने भाग्य को बढ़ाने के लिए भक्ति में बनी रहिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। जो इसे करते हैं, उन्हें भगवान Jagannath के दर्शन हुए हैं; फिर उनके मंदिर जाने की क्या आवश्यकता है? त्रिकाल संध्या इतनी बड़ी शक्ति है कि जो ऋषि हज़ारों वर्षों में प्राप्त नहीं कर सके, वह Kali Yuga में एक व्यक्ति कुछ दिनों या एक महीने में प्राप्त कर सकता है—उसे भगवान के दर्शन और उनका सान्निध्य मिल सकता है। आपको भगवान Kalki के अवतार के मानव रूप में दर्शन हुए हैं। आप बहुत भाग्यशाली हैं।

► यह उत्तर सुनें · 31:42 · 2 मई 2024

प्रश्न 2277 पिताजी, मैं एक बहुत महत्वपूर्ण अनुभव साझा करना चाहती हूँ। कुछ दिन पहले मैं अपने कान्हा जी के सामने, जिन्हें मैं अपना भाई मानती हूँ, रो रही थी कि मैं बस उनसे मिलना चाहती हूँ। उसी रात एक सहेली का फोन आया और उसने पूछा कि क्या मैं वृंदावन जाना चाहूँगी, और अब मैं जून में जा रही हूँ। यह उनके सामने रोने के तुरंत बाद हुआ।

उत्तर: हाँ, बेटी, बहुत अच्छा। देखिए, यह सपना नहीं था, यह वास्तविक है। सच में, वृंदावन का क्षेत्र द्वापर युग से है। इस समय भगवान Kalki ने संभल में जन्म लिया है, जिसे हम बौद्ध वृंदावन कहते हैं। क्योंकि जहाँ भी भगवान निवास करते हैं, वही वृंदावन है। आप पर भगवान की कृपा है। Bhavishya Malika की रचना 600 वर्ष पहले इसलिए हुई थी ताकि जब भगवान कृष्ण आएँ, तो भक्त उन्हें पहचान सकें। आप बहुत छोटी हैं; त्रिकाल संध्या (Trisandhya) कीजिए, Madhava की शरण में रहिए। भविष्य में आप भी भगवान के धर्म-स्थापना के कार्य में योगदान दे सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:43 · 2 मई 2024

प्रश्न 2278 पंडित जी, मुझे आपसे थोड़ी निजी बात करनी है, क्या मैं कर सकता हूँ?

उत्तर: अगर हम व्यक्तिगत बात करेंगे, तो सब सुनेंगे, फिर वह निजी बातचीत कैसे हुई? देखिए, अगर आप व्यक्तिगत रूप से बात करना चाहते हैं, तो नीचे एक नंबर है, उस नंबर पर मोनू नाम के लड़के को फोन कीजिए। उसे बताइए कि मैंने आपसे फोन करने को कहा है, कि आपको कोई निजी बात करनी है। वह मुझसे संपर्क करेगा और आपके लिए फोन पर बात करवा देगा। अगर बात निजी नहीं है, तो आप यहीं बात कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:20 · 2 मई 2024

प्रश्न 2279 पंडित जी, मैं आकाश ठाकुर बोल रहा हूँ। जैसा आपने कहा कि 2026 में भारत और चीन या पाकिस्तान के बीच युद्ध हो सकता है, तो मैं सोच रहा था कि अपने देश की सेवा के लिए, क्या मैं एक साधारण नागरिक के रूप में अपने देश की रक्षा करने जा सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, देश की सेवा करना हर नागरिक का कर्तव्य है। आपकी भावना बहुत अच्छी है। पर यह समय देश-सेवा का, मुक्ति का, और धर्म-कर्म का है। भक्तों को भी बचाना आवश्यक है, तो यह भी देश-सेवा ही है। जाइए और अपनी क्षमता के अनुसार सेवा कीजिए। और त्रिकाल संध्या (Trisandhya) कीजिए, क्योंकि मानव जीवन की रक्षा सबसे बड़ा प्रश्न है। आने वाली बीमारियों और आपदाओं से मानवता की रक्षा के लिए त्रिकाल संध्या आवश्यक है। इसलिए त्रिकाल संध्या कीजिए, और अपनी क्षमता के अनुसार इस प्रकार देश-सेवा कीजिए कि आपका परिवार, आपके माता-पिता, और आपका शरीर—सब आनंद और सुख की स्थिति में रहें।

► यह उत्तर सुनें · 39:00 · 2 मई 2024

प्रश्न 2280 पिताजी, मेरा एक प्रश्न है जो बहुत से लोगों का है। हम जो गृहस्थ जीवन में हैं, पति-पत्नी के रूप में, इस Kali Yuga के काल में, हम संभोग की क्रिया पर नियंत्रण नहीं रख पाते। तो, जो गृहस्थ जीवन में हैं, उनके लिए इसमें कोई दोष है या नहीं? कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। श्रीमद्भागवत पुराण में लिखा है, सनातनियों के लिए एक नियम है। नियम यह है कि आवश्यकतानुसार संतान होने के बाद पति-पत्नी को काम और वासना में नहीं रहना चाहिए। परंतु आधुनिक जीवन में लोग उस क्रिया से दूर नहीं रह पाते, क्योंकि आज का वातावरण उन्हें भटका देता है। फिर भी जितना हो सके, कुछ दूरी बनाए रखने का प्रयास कीजिए। सभी पति-पत्नियों को इस काम और वासना से थोड़ा दूर रहना चाहिए, क्योंकि यही हमारा सनातन नियम है, चूँकि यह व्यक्ति के ब्रह्मचर्य का नाश करता है। जितना कम संपर्क हो, उतना अच्छा। Satya Yuga आ रहा है, इसलिए आप सबको भी धीरे-धीरे आत्म-संयम की ओर बढ़ना चाहिए। यह अच्छा नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 40:27 · 2 मई 2024

प्रश्न 2281 अगर मैं किसी से कहता हूँ कि मांस और शराब छोड़ दो, तो उन्हें लगता है कि यह तो साधु-संतों का काम है, और वे अपने समाज में इसे नहीं छोड़ सकते। अगर मैं समझाने की कोशिश करता हूँ कि भविष्य में क्या होने वाला है, तो वे समझने को तैयार ही नहीं होते। उन्हें लगता है कि होगा तो सही, पर अभी बहुत समय है। मैं उनसे कैसे पेश आऊँ?

उत्तर: देखिए, हम उन भक्तों को खोज रहे हैं जिन्होंने चार युगों तक भगवान के साथ कार्य किया है, ताकि वे भगवान के संपर्क में आ सकें। जो भक्त निःस्वार्थ भाव से आते हैं, बिना यह सोचे कि होगा या नहीं होगा, वही सच्चे भक्त हैं। हम किसी से यह नहीं कहते कि विनाश आ रहा है, इसलिए तुम धर्म की ओर मुड़ जाओ। भविष्य मालिका उन भक्तों के उद्धार के लिए है जो चारों युगों में भगवान की लीलाओं में उनके साथ थे। जिन लोगों से आप बात करते हैं, उनके भाग्य में यह नहीं है; वे अभागे हैं। विनाश तो निश्चित रूप से होगा। भगवान ने उसे रोक रखा है क्योंकि भक्तों का उद्धार अभी नहीं हुआ है। जब यह बढ़ेगा, तब वे चारों ओर विनाश देखेंगे, पर तब कोई लाभ नहीं होगा। भक्त उससे पहले आ जाएँगे। बस भक्तों को खोजिए और उनसे बात कीजिए; दूसरे लोगों से चर्चा करना अच्छा नहीं है। असुरों को बताने से क्या लाभ?

► यह उत्तर सुनें · 42:49 · 2 मई 2024

प्रश्न 2282 गुरुजी, जब मैंने पिछले नवंबर में त्रिकाल संध्या शुरू की थी, तो मुझे भगवान श्रीनाथजी, भगवान जगन्नाथ और माता लक्ष्मी के स्वप्न आए। एक स्वप्न में तो माता लक्ष्मी ने त्रिकाल संध्या ठीक से न करने पर मुझे तलवार से धमकाया भी। पर अब, सच कहूँ तो, मैं बहुत आलसी हो गया हूँ और सुबह की संध्या नहीं कर पाता। मुझे लगता है कि भगवान को पहले मुझसे जो आशा थी, वह अब कम होती जा रही है।

उत्तर: देखिए, माता महालक्ष्मी ही दुर्गा हैं और काली भी हैं। उन्होंने आपके गले पर वह तलवार इसलिए रखी क्योंकि विनाश आ रहा है। त्रिकाल संध्या कीजिए। जो लोग इसे नहीं करेंगे वे पृथ्वी पर नहीं बचेंगे, मैं बार-बार चेतावनी दे रहा हूँ। संसार को त्रिकाल संध्या के सिद्धांत को स्वीकार करना ही पड़ेगा। इसलिए आने वाली विपदा से बचने के लिए इसे सही समय पर कीजिए। आप कहते हैं कि आपके पास समय नहीं है... यही तो मृत्यु पर विजय पाने का तत्व है! मृत्यु पर विजय पाने के लिए त्रिकाल संध्या ही एकमात्र तत्व है; और कोई नहीं। मनुष्य को इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। जो नहीं करेंगे वे विनाश देखेंगे। जैसे पहले आपको भगवान के दर्शन हुए थे, वैसे ही फिर होंगे। त्रिकाल संध्या कीजिए, आलस मत कीजिए, आप युवा हैं, आगे बढ़िए। भगवान की कृपा आप पर बनी रहे।

► यह उत्तर सुनें · 45:29 · 2 मई 2024

प्रश्न 2283 पिताजी, मुझे यह पूछना था, मुझे एकादशी का व्रत शुरू करना है। क्या मैं 4 तारीख को आने वाली एकादशी से शुरू करूँ, या निर्जला एकादशी से शुरू करूँ?

उत्तर: अभी शुरू कीजिए, आज रात से ही शुरू कीजिए। समय मत गँवाइए। क्योंकि, बेटा, जैसे हम जीने के लिए रोज भोजन करते हैं, यह भोजन नहीं है, यह अमृत है। इसे पीजिए। इससे आपकी रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 49:27 · 2 मई 2024

प्रश्न 2284 मेरा एक प्रश्न है। आपने कहा था कि अंत में 64 करोड़ लोग बचेंगे। फिर, एक वीडियो में आपने लोगों को चेताया, 'अभी समय है, अपने को सुधार लो।' जब यह पहले से ही निश्चित है कि 64 करोड़ भक्त बचेंगे, तो उन्हें चेतावनी देने से क्या लाभ?

उत्तर: बिल्कुल, सब कुछ भगवान की इच्छा से ही होगा। पर शास्त्र कहते हैं कि उनके अर्थ को तोड़-मरोड़कर नहीं, बल्कि कलियुग के लोगों के सामने स्पष्ट और दृढ़ता से रखना चाहिए। आप जितनी दृढ़ता से कहेंगे, उतना ही अधिक भला होगा। कलियुग के लोग आलसी, लोभी, कामी हैं और सदा सुख ही चाहते हैं। उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए शास्त्रों का स्पष्ट वर्णन करना ही होगा। हम यही करते हैं। जिनके भाग्य में होगा, वे स्वीकार करेंगे। अभागे तो सुनते भी नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 49:54 · 2 मई 2024

प्रश्न 2285 पिताजी, अभी पाँच मिनट पहले मैंने दीपक जलाया। मैंने मंदिर में एक मोरपंख रखा था, वह दीपक पर गिर गया और जलने लगा। मेरी बेटी रोने लगी, 'मम्मी, भागो, आग लग गई!' यह किस बात का संकेत है, पिताजी?

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करती हैं? जैसे-जैसे आप त्रिकाल संध्या करती हैं, भगवान कृष्ण आपको प्रमाण दे रहे हैं कि मोर मुकुट अब काम नहीं करेगा; अब विनाश होगा। आपके घर में मोर मुकुट का जलना आप भक्तों के लिए एक चेतावनी है कि भगवान आगे विनाश का कार्य करेंगे। आपको कोई कष्ट नहीं होगा, चिंता मत कीजिए। आप त्रिकाल संध्या करती हैं, फिर डर किस बात का? जो कोई त्रिकाल संध्या करता है, उसे कोई भय नहीं। सुख से रहिए। रात को बैठकर 108 बार भजन कीजिए और माधव की कृपा प्राप्त कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 51:05 · 2 मई 2024

प्रश्न 2286 मैं यह पूछ रही थी, पिताजी, मेरे एक परिचित के पास दो बिल्लियाँ हैं, एक काली है और एक सुनहरे रंग की। क्या मैं उन्हें गोद ले सकती हूँ?

उत्तर: देखिए, पशुओं की देखभाल करनी चाहिए, पर उनसे मोह मत कीजिए। हर पशु का सम्मान करना, उनका पालन करना, उन्हें खिलाना—यह मनुष्य का कर्तव्य है। पर मोह मत कीजिए; अपना मोह भगवान से रखिए। हाँ, कर्म के लिए आप उनका पालन कर सकती हैं, अर्थात उनकी सेवा के लिए। पशुओं की सेवा करना भी अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 52:43 · 2 मई 2024

प्रश्न 2287 पंडित जी, पहले मैं बहुत भक्ति करता था, पर अब कर्तव्य और पढ़ाई है। जब मैं भक्ति करता हूँ तो कर्तव्यों से ध्यान हट जाता है, और जब काम करता हूँ तो भक्ति पर ध्यान कम हो जाता है। मैं दोनों एक साथ कैसे कर सकता हूँ? और जब मैं भक्ति नहीं कर रहा होता, तो मुझे नहीं पता कि भगवान क्या सोच रहे हैं। वे तो मौन रहते हैं, बोलते तो नहीं, है ना?

उत्तर: भगवान बोलते हैं, भगवान सुनते हैं, भगवान खाते हैं। क्या मैंने आपको नहीं बताया था, पिछले महीने पंजाब की एक बेटी ने भगवान को खिचड़ी खिलाई थी? ऐसा कहाँ है कि भगवान सुनते या खाते नहीं? आपको अपनी भक्ति बढ़ानी होगी। अपना काम और पढ़ाई भी कीजिए। त्रिकाल संध्या से भक्ति बढ़ेगी। 24 घंटे के दिन में 30 मिनट की त्रिकाल संध्या आपका जीवन बचा सकती है। जो परीक्षा या इंटरव्यू में असफल हो जाते हैं, वे भी इसे करके नौकरी के योग्य बन गए हैं। आपको दिन में 30 मिनट देने हैं। ऐसा करने से व्यक्ति के उद्धार के साथ-साथ भगवान उसकी भौतिक आवश्यकताएँ भी पूरी करते हैं। त्रिकाल संध्या कीजिए, भक्ति आएगी, और भगवान की कृपा बनी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 54:15 · 2 मई 2024

प्रश्न 2288 पंडित जी, डेढ़ साल पहले मैं काम-वासना में पड़ गया था और बहुत बुरे कर्म किए। भगवान की कृपा से मैंने उनकी कथाएँ सुनीं और पाप करना छोड़ दिया। मैंने दीक्षा भी ली और मेरी भक्ति अच्छी चल रही थी, पर काम-वासनाओं ने मुझे फिर सताया। बड़ा पाप तो नहीं हुआ, पर हस्तमैथुन जैसे छोटे पाप होते रहते हैं। क्या मुझ जैसे नीच और अधम व्यक्ति का भी उद्धार हो सकता है या नहीं?

उत्तर: देखिए बेटा, भगवान सबका उद्धार करते हैं। वे पापियों का, धर्मात्माओं का और भक्तों का, सबका उद्धार करते हैं। इसीलिए भविष्य मालिका कहती है कि यह ग्रंथ सबके उद्धार के लिए है। आप पापी नहीं हैं। कभी-कभी व्यक्ति गलत कर्म कर बैठता है, पर व्यक्ति बुरा नहीं होता, आत्मा बुरी नहीं होती। अभी समय है। त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव की शरण में रहिए। समय के साथ वह बुरी आदत बदल जाएगी, और आप फिर से अच्छे बन जाएँगे। कोई बात नहीं, बेटा। भगवान को अपना गुरु बनाइए, भगवान के शिष्य बनिए, तब आपका उद्धार होगा। इसलिए त्रिकाल संध्या कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 56:06 · 2 मई 2024

सत्र 122 · प्रश्न 2289–2321

L132: ज्यादा धूप और सऊदी में बारिश का कारण क्या है? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 5 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2289 यह जलवायु परिवर्तन क्यों हो रहा है?

उत्तर: यह युग परिवर्तन के कारण हो रहा है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि सत्य युग, त्रेता युग और द्वापर युग के अंत में पृथ्वी पर मौसम में बड़े परिवर्तन हुए थे। आज हम जो स्थिति देख रहे हैं—बढ़ती गर्मी, बेमौसम बारिश, रेगिस्तानों का हरा होना—यह उसी का संकेत है। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि सनातन धर्म पूरे विश्व में स्थापित होगा, और उसके प्रकाश से रेगिस्तानी क्षेत्र भी हरे-भरे, सुंदर और पवित्र हो जाएँगे। यह युग परिवर्तन का संकेत है। तापमान बढ़ रहा है, बड़े-बड़े जंगलों में आग लग रही है, और यह तब तक चलता रहेगा जब तक मानव सभ्यता से अधर्म, पाप, भ्रष्टाचार और अत्याचार समाप्त नहीं हो जाते। यह युग परिवर्तन मानवता के लिए बड़े परिवर्तन और बड़ी विपदाएँ भी लाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 02:11 · 5 मई 2024

प्रश्न 2290 मुझे यह पूछना था... मेरे पिताजी की एंजियोग्राफी हो रही है। कृपया यहाँ उपस्थित सभी लोगों से मेरे और मेरे पिताजी के लिए प्रार्थना करने को कहिए, ताकि सब कुछ ठीक हो जाए और उन्हें कोई परेशानी न हो।

उत्तर: ठीक है। इस सत्संग से जुड़े सभी लोगों से कहता हूँ, इनके पिताजी अस्पताल में हैं और कुछ कष्ट में हैं। मैं सभी भक्तों से निवेदन करता हूँ कि इनके पिताजी के कल्याण और सफल उपचार के लिए भगवान से प्रार्थना करें। भगवान की कृपा उन पर बनी रहे। यह मानव सेवा है; यहाँ 'अपने' और 'पराए' कुछ नहीं होते, सभी अपने हैं। तो मैं आप सबसे प्रार्थना करने का निवेदन करता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 07:16 · 5 मई 2024

प्रश्न 2291 मेरा एक प्रश्न है। मैं अक्सर अपने मन और हृदय के बीच उलझ जाती हूँ। अब मैं भक्ति का आनंद ले रही हूँ, और मेरी माँ भी इस धारा से जुड़ गई हैं। जब मैं प्रभु का ध्यान करती हूँ, तो अच्छा लगता है, और नकारात्मक विचार पहले की तुलना में बहुत कम आते हैं। लेकिन कभी-कभी, ध्यान करते समय जब मन अच्छा लग रहा होता है, तभी अचानक प्रभु के बारे में या किसी और चीज़ के बारे में कोई नकारात्मक विचार मन में आ जाता है। जब मैं अपने हृदय में झाँककर देखती हूँ, तो वहाँ ऐसा कुछ नहीं दिखता, केवल प्रभु ही दिखते हैं। मैं उलझ जाती हूँ कि अगर मेरे हृदय में ऐसा कुछ है ही नहीं, तो यह विचार अचानक आया कहाँ से?

उत्तर: जब कोई द्वंद्व या कोई भी विचलित करने वाली बाहरी नकारात्मकता आपके मन में प्रवेश करे, उसी समय बैठकर 'माधव' नाम का 108 बार जप करें। माधव की शरण लें — भगवान कृष्ण के रूप में या भगवान राम के रूप में, जो भी रूप आपको प्रिय हो — और 108 बार जप करें। फिर भक्ति का भाव लौट आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 08:27 · 5 मई 2024

प्रश्न 2292 प्रेम और भक्ति में क्या अंतर है?

उत्तर: प्रेम और भक्ति में अंतर यह है कि जब भगवान के प्रति प्रेम पहले आता है, तो भक्ति उसके पीछे-पीछे आएगी। हम जिससे प्रेम करते हैं, उससे जुड़ जाते हैं। पहले यह समझिए कि इस संसार में भगवान ही एकमात्र हैं जो आपको मुक्ति देंगे। भगवान के प्रति प्रेम जगाइए, उनकी महिमा का गुणगान कीजिए, और शास्त्रों में उनकी दिव्य लीलाओं को पढ़िए। जैसे-जैसे आप पढ़ते रहेंगे, समय के साथ और भगवान की कृपा से, भक्ति माता (भक्ति की देवी) आकर आप में निवास करेंगी, और भक्ति उत्पन्न होगी। शास्त्रों में भक्ति प्राप्त करने के तीन उपाय बताए गए हैं: पहला है मूर्ति पूजा, दूसरा है शास्त्रों का पठन, और तीसरा है प्रभु की दिव्य लीलाओं और महिमा का चिंतन या पठन। इन्हीं तीन तत्वों से भक्ति आती है। आप शास्त्र पढ़ सकते हैं, प्रभु की मूर्ति की पूजा करके अपनी भक्ति अर्पित कर सकते हैं, या प्रभु की महिमा का गान और उनके नाम का जप करके भक्ति प्राप्त कर सकते हैं। नाम जप में समय लगेगा; यह एक दिन या एक महीने में नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 09:52 · 5 मई 2024

प्रश्न 2293 हमारे घर में व्यापार और बीमारियों को लेकर बहुत सारी समस्याएँ आ रही हैं। कृपया आशीर्वाद दीजिए कि सब कुछ ठीक हो जाए।

उत्तर: ठीक है, एक काम कीजिए। घर पर सात दिन की भागवत कथा (श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ) कराइए। पूरा परिवार एक साथ मिलकर माधव नाम का जप करे। इससे आपके परिवार की समस्याएँ दूर होंगी। मेरा आशीर्वाद पूरी तरह आपके साथ है। अपने घर में सभी परिवारजनों के साथ सात दिन का भागवत पाठ आयोजित कीजिए। गौ माता को प्रतिदिन रोटी खिलाइए। मन और शरीर की पवित्रता के साथ सात दिन भागवत पढ़िए। सांसारिक भावों से दूरी बनाकर प्रभु से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, कृपया हमारे परिवार की स्थिति ठीक कर दीजिए।' जिस भूमि पर आपका घर बना है, उसकी मिट्टी में थोड़ा दोष है, जिसके कारण यह हो रहा है। यह कीजिए, यही उपाय हो सकता है। साथ ही, माधव नाम का जप कीजिए, और सभी से कहिए कि व्यापार में सुधार के लिए माँ महालक्ष्मी के नाम का 108 बार जप करें।

► यह उत्तर सुनें · 11:37 · 5 मई 2024

प्रश्न 2294 मेरा प्रश्न यह है कि यहाँ कनाडा में गौ माता पर बहुत क्रूरता की जाती है, केवल मांस खाने वालों द्वारा ही नहीं, बल्कि डेयरी उद्योग में भी। तो मेरे मन में यह दुविधा है: दूध पीकर और चीज़ (पनीर) खाकर, जो बच्चों के लिए आवश्यक हैं, क्या हम गौ माता पर और अधिक क्रूरता में योगदान दे रहे हैं? क्या हम इसके लिए ज़िम्मेदार हैं? हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। पहला, प्रतिदिन भगवान कृष्ण से प्रार्थना कीजिए। कहिए, 'प्रभु, कृपया जल्द से जल्द धर्म की स्थापना कीजिए और गौ माता को इस क्रूरता से बचाइए।' यह भगवान के हाथ में है, और जब भक्त प्रार्थना करते हैं, तो भगवान अवश्य कुछ करेंगे। दूसरा, गौ माता के दूध से बने पदार्थ, जैसे चीज़, का सेवन करने से आप पर कोई पाप नहीं लगता, क्योंकि गौ माता एक माँ है। जैसे हमारी माँ हमें दूध पिलाकर पालती है, वैसे ही गौ माता जीवन भर अपना दूध देकर मानवता का पालन करती है। इसमें कोई पाप नहीं है। जो लोग गलत करते हैं, वह उनका कर्म है; उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं। आप चीज़ खा सकते हैं और दूध पी सकते हैं; इसमें कोई पाप नहीं। लेकिन भगवान से धर्म की शीघ्र स्थापना और गौ माता की रक्षा के लिए प्रार्थना कीजिए। जब तक सनातन धर्म की स्थापना नहीं होती, इस धरती पर गौ हत्या रोकना कठिन रहेगा। इसलिए भगवान की शरण लीजिए; समय निकट है। यदि कभी समय मिले, तो गौशाला में थोड़ी सेवा भी कर सकते हैं। इससे सनातनी हिंदू के रूप में हमारी धार्मिक शक्ति मज़बूत होती है।

► यह उत्तर सुनें · 13:39 · 5 मई 2024

प्रश्न 2295 पंचरंगी ध्वजा (पाँच रंगों वाले झंडे) के पाँच रंगों का क्या अर्थ है?

उत्तर: ये सत्य, शांति, दया, क्षमा और मैत्री का प्रतीक हैं। सत्य, शांति और दया होगी — अर्थात् लोग गलती करें तब भी उन पर दया, सभी जीवों पर दया, और पशुओं की हत्या का विरोध। क्षमा का अर्थ है कि बड़े से बड़े पापी को भी क्षमा किया जा सकता है। और मैत्री का अर्थ है कि सारा विश्व एक परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम्)। यह सनातन धर्म का ध्वज है। भगवान कृष्ण ने द्वापर युग में इसी ध्वज के साथ धर्म की स्थापना की थी। यही ध्वज, सुधर्म महासंघ के माध्यम से, पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना करेगा। इसलिए भगवान कल्कि का ध्वज यही पंचरंगी ध्वज होगा। भक्तों को सबसे पहले इसे अपने घरों में फहराना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 17:09 · 5 मई 2024

प्रश्न 2296 भविष्य मालिका के बारे में जानने से पहले, मेरी एक गुरु में श्रद्धा थी। क्या अब, भविष्य मालिका को जानने और इस धारा में आने के बाद भी, मैं उनसे दीक्षा ले सकता हूँ?

उत्तर: वर्तमान समय में, मैं यही कहूँगा कि समय कम है। भगवान कृष्ण या भगवान कल्कि की शरण लेनी चाहिए। किसी अन्य परंपरा के लिए मानवता को बचाना कठिन होगा। मुक्ति के लिए भगवान कल्कि की शरण लीजिए, उनके नाम का जप कीजिए, और त्रिकाल संध्या कीजिए। अब समय नहीं बचा है। महान परिवर्तन का समय आ रहा है। 2025 से 2032 तक का काल मानव सभ्यता के लिए एक बड़ी परीक्षा होगी, और इस दौरान कोई अन्य परंपरा आपकी रक्षा नहीं कर पाएगी। यदि आप अपने जीवन का उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं, तो आपको त्रिकाल संध्या करनी ही होगी।

► यह उत्तर सुनें · 18:17 · 5 मई 2024

प्रश्न 2297 मुझे त्रिकाल संध्या करते हुए चार महीने हो गए हैं, लेकिन मुझे कोई आध्यात्मिक अनुभव या प्रभु के दर्शन नहीं होते। मुझे लगता है कि मुझमें कोई कमी है। जब मैं दूसरों के अनुभव सुनता हूँ, तो सोचता हूँ कि मेरे साथ ऐसा क्यों नहीं हो रहा।

उत्तर: ठीक है। यदि आप प्रभु के दर्शन चाहते हैं, तो भगवान कृष्ण की 'द्वारिका विजय' पढ़िए। श्रीमद्भागवत में 'द्वारिका आगमन' नाम का एक अध्याय है। उसे हर महीने पढ़िए। और भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए। देखिए, जब तक आप माधव की पूर्ण शरण नहीं लेते और उन पर विश्वास नहीं करते, तब तक प्रभु के दर्शन कैसे होंगे? तो इसके साथ-साथ 'माधव' नाम का 108 बार जप कीजिए। आपको प्रभु के दर्शन अवश्य होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:34 · 5 मई 2024

प्रश्न 2298 जब मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ, तो कभी-कभी मुझे नींद आने लगती है। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मुझे नींद न आए, लेकिन जैसे ही आँखें बंद करती हूँ, मुझे दृश्य दिखाई देने लगते हैं। मुझे इससे बहुत बुरा लगता है। क्या यह किसी नकारात्मकता के कारण है, या यह कि मैं त्रिकाल संध्या की शक्ति को सहन नहीं कर पा रही हूँ?

उत्तर: देखिए, जब आप त्रिकाल संध्या करते हैं, तो देवता आते हैं, और निद्रा देवी भी आती हैं। देवताओं के प्रभाव से कुछ लोगों को जम्हाइयाँ आती हैं, और कुछ को नींद आने लगती है। यह बहुत अच्छा, सकारात्मक संकेत है। करते रहिए, क्योंकि इसका आप पर प्रभाव हो रहा है। जैसे-जैसे आप त्रिकाल संध्या करती रहेंगी, भगवान की कृपा से आगे चलकर ऐसा होना बंद हो जाएगा। शुरुआत में कुछ दिनों तक ऐसा होता है। यह नकारात्मकता नहीं है; यह शुभ संकेत है। करती रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:10 · 5 मई 2024

प्रश्न 2299 मैं बस प्रभु के दर्शन करना चाहता हूँ। मुझे दर्शन कैसे होंगे?

उत्तर: आपको प्रभु के दर्शन अवश्य होंगे। प्रभु संध्या के समय स्वप्न में दर्शन देते हैं। वे निश्चित रूप से देंगे, बस सही समय की प्रतीक्षा कीजिए। जिसे दर्शन चाहिए, वह सोने से पहले 'माधव' नाम का 108 बार जप करे और माधव से दर्शन माँगे। फिर मुझे बताइए कि क्या होता है। आपको दर्शन अवश्य होंगे। जिसे भी दर्शन चाहिए, वह सोने से पहले 'माधव' नाम का 108 बार जप करे और कहे, 'भगवान माधव, कृपया मुझे दर्शन दीजिए।' दर्शन निश्चित हैं, और होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 22:20 · 5 मई 2024

प्रश्न 2300 जब मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ, तो मुझे बहुत जम्हाइयाँ आती हैं, और आँखों से लगातार आँसू बहते रहते हैं, रुकते ही नहीं। मुझे लगता है कि शायद मुझसे कोई गलती हो रही है, इसीलिए ऐसा होता है।

उत्तर: यह केवल आपके साथ ही नहीं होता; मेरे साथ भी होता है, मेरी बच्ची। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि देवता शरीर में प्रवेश करते हैं। आप कोई गलती नहीं कर रही हैं; यह अच्छी बात है। 33 करोड़ देवी-देवता मनुष्यों के शरीर में प्रवेश करेंगे, उन्हें देवता बनाएँगे, और सत्य युग की रचना करेंगे। जो त्रिकाल संध्या करेंगे, उनमें से प्रत्येक देवता बनेगा। त्रिकाल संध्या के समय 33 करोड़ देवी-देवताओं की शक्ति आती है, इसीलिए जम्हाइयाँ आती हैं। यह बहुत आनंददायक है। यह शुभ संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 23:09 · 5 मई 2024

प्रश्न 2301 क्या महामारी वैशाख के महीने में आ रही है? क्या यह 13 दिन के पक्ष के बाद आ रही है?

उत्तर: वैशाख के महीने में एक महामारी आएगी। उसके बाद, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, 29 मार्च 2025 को शाम 5:20 बजे शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे (मीन शनि)। इस संक्रमण से पहले या इसके दौरान, जो साढ़े तीन साल तक चलेगा, एक बहुत ही विनाशकारी रोग आएगा। 64 प्रकार के रोग होंगे। सात बार मृत्यु की ध्वनि पृथ्वी पर मानव सभ्यता को विचलित करेगी। कोरोना के साथ हमने एक बार मृत्यु की ध्वनि सुनी। इसके बाद जो मृत्यु की ध्वनि आएगी, वह सच्ची मृत्यु होगी। जब रोग आता है, तो वह भगवान की जिम्मेदारी है। वे एक ओर भक्तों और त्रिकाल संध्या करने वालों की रक्षा करेंगे, और दूसरी ओर पापियों को दंड देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:34 · 5 मई 2024

प्रश्न 2302 जैसे भगवान राम रघुकुल में जन्मे और भगवान कृष्ण यदुकुल में, वैसे ही भगवान माधव किस कुल में जन्म लेंगे?

उत्तर: माधव सूर्यवंश में अवतार लेंगे। और उनका पुराना गोत्र, सारे नियम, और ग्रहों की स्थिति — सब कुछ पहले की ही तरह मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:46 · 5 मई 2024

प्रश्न 2303 मैं बहुत समय से आपसे बात करने की कोशिश कर रहा/रही हूँ। आज मैंने आपका आशीर्वाद माँगने का साहस जुटाया है।

उत्तर: ठीक है। आप पर भगवान कृष्ण और भगवान जगन्नाथ की कृपा बनी रहे। पृथ्वी पर आने वाली समस्याओं से स्वयं की रक्षा के लिए प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ करें। यही मेरा आशीर्वाद है। मेरा आशीर्वाद श्रीमद्भागवत का पाठ ही है, क्योंकि मानवता के कल्याण का यह एक तत्व छिपा हुआ था, जिसे अब मैंने प्रकट किया है। आशीर्वाद तो सदैव है, परंतु जैसा मैं कहता हूँ वैसा करें, तो आप धन्य हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:52 · 5 मई 2024

प्रश्न 2304 मैं एक स्वप्न में हुए अनुभव के बारे में पूछना चाहता/चाहती हूँ। मैंने भगवान माधव के चरण पकड़े हुए थे, और उन्होंने आकाश में मुझे अपना संपूर्ण विराट रूप दिखाया। उसके तुरंत बाद मुझे माँ दुर्गा के दर्शन हुए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाया था, और अब उन्होंने आपको दिखाया है। माँ दुर्गा देवी के दर्शन का अर्थ है कि भगवान विराट रूप धारण करके धर्म की स्थापना करेंगे। ऋषि आनंद ने लिखा है, 'वे विराट रूप धारण करेंगे।' भगवान ने आपको विराट रूप में दर्शन दिए; आप बहुत भाग्यशाली हैं।

► यह उत्तर सुनें · 30:46 · 5 मई 2024

प्रश्न 2305 मेरे भाई और पिता बहुत मेहनत करते हैं, पर उनके काम में सफलता नहीं मिलती। उन्हें क्या करना चाहिए?

उत्तर: भगवान समान कर्मों वाले लोगों को एक ही नाव में रखते हैं। अगर उन्हें अपने परिश्रम का फल नहीं मिल रहा, तो उनसे कहिए कि त्रिकाल संध्या करें और माधव का नाम जपें। तब उन्हें फल मिलेगा। जिन लोगों के पास कुछ नहीं था, उन्होंने त्रिकाल संध्या और पवित्रता के द्वारा अपने जीवन में बड़ी उन्नति और विकास देखा है। इसलिए उनसे कहिए कि ऐसा करें। पहले माधव का नाम जपें, फिर आगे बढ़कर यह भी करें। सब कुछ करने से निश्चित ही फल मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 32:34 · 5 मई 2024

प्रश्न 2306 आपने कहा कि भगवान सूर्यवंश में जन्म लेंगे। लेकिन सूर्यवंशी तो राजपूत होते हैं। आपने यह भी कहा कि वे ब्राह्मण के रूप में जन्म लेंगे, पर ब्राह्मण तो सूर्यवंशी नहीं होते, है न?

उत्तर: भगवान पहले एक ब्राह्मण कुल में जन्म लेंगे। जिस परिवार में उनका जन्म होगा, वह ब्राह्मण परिवार होगा। जिस दिन से भगवान का जन्म होगा, वह वंश सूर्यवंश बन जाएगा। यह भविष्य पुराण में लिखा है। भगवान जिस भी कुल या जाति में जन्म लें, उनका वंश सूर्यवंश ही रहता है। भविष्य पुराण में लिखा है कि भगवान ब्राह्मण कुल में जन्म लेंगे, और जब वे जन्म लेंगे, तब उनका वंश सूर्यवंश के रूप में प्रसिद्ध हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 33:50 · 5 मई 2024

प्रश्न 2307 मैं धारा में हूँ, पर अभी मेरे लिए प्याज और लहसुन छोड़ना संभव नहीं है। मैं कंठी माला पहनना चाहता/चाहती हूँ। क्या मैं ऐसा कर सकता/सकती हूँ?

उत्तर: हाँ, अगर आप कंठी माला पहनना चाहते हैं, तो पहन सकते हैं। प्याज और लहसुन मांसाहार नहीं हैं, परंतु मंदिरों में इनका उपयोग नहीं होता। जो लोग इन्हें खाते हैं, वे भी कंठी माला पहन सकते हैं। नियम के अनुसार, जब आप प्याज और लहसुन खा रहे हों, तब माला उतारकर अलग रख देनी चाहिए। खाने के बाद आप उसे फिर से पहन सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 34:54 · 5 मई 2024

प्रश्न 2308 क्या भगवान का जन्म हो चुका है?

उत्तर: आपकी यह अनुभूति कि वे आ चुके हैं, सत्य है। प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करें और सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपें। माधव आपको स्वप्न में दर्शन देंगे और बताएँगे कि वे आए हैं या नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 35:58 · 5 मई 2024

प्रश्न 2309 मैंने यह इसलिए पूछा कि भगवान का जन्म हुआ है या नहीं, क्योंकि मैं जानना चाहता/चाहती था/थी कि अखंड पर्वत पर उनकी बाल लीलाएँ कब होंगी, और भक्त उनमें कब सम्मिलित हो सकेंगे।

उत्तर: मैंने आपसे कहा, सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपें और पूछें, 'प्रभु, क्या आप आ गए हैं?' यदि भगवान आपको स्वप्न में बताएँ, तो मुझे बताइएगा। सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपें और माधव से पूछें। वे आपको स्वप्न में बताएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:00 · 5 मई 2024

प्रश्न 2310 आपके आशीर्वाद से अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ और दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या कर पाता/पाती हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दें कि मुझे कन्हैया के माधव रूप के दर्शन हो सकें। वे मुझे अन्य रूपों में दर्शन देते हैं, पर जब से मैंने उनसे माधव रूप माँगा है, तब से वे मुझे दिखाई नहीं दिए।

उत्तर: ठीक है, माधव से माँगिए, और माधव आपको अपने माधव रूप में दर्शन देंगे। आपको कल्कि माधव के दर्शन होंगे। जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 38:40 · 5 मई 2024

प्रश्न 2311 क्या विश्वयुद्ध टाला जा सकता है? युद्ध बहुत बुरी चीज़ है।

उत्तर: विश्वयुद्ध तब टल सकता है जब मनुष्य गौ माता का वध करना बंद कर दें। जब मनुष्य गायों को मारना बंद कर देंगे, तब युद्ध रुक जाएगा। यदि नहीं करेंगे, तो भगवान निश्चित रूप से युद्ध आरंभ करेंगे। मनुष्य के पापों का घड़ा भर चुका है। इसलिए यह मनुष्यों पर निर्भर करता है कि युद्ध होगा या नहीं। पर मेरे विचार से, मनुष्य अहंकारी, घमंडी हो गया है और पाप, भ्रष्टाचार, पशु-हत्या, मदिरा और काम-वासना में डूब चुका है। धर्म की स्थापना आवश्यक है। यदि धर्म की स्थापना नहीं हुई, तो यह धरती टुकड़ों-टुकड़ों में टूट जाएगी। इसलिए तारणहार धर्म की स्थापना अवश्य करेंगे। यह अब भी मनुष्यों के हाथ में है; यदि वे बदल जाएँ और गौ-हत्या रुक जाए, तो शांति होगी। यदि नहीं, तो भगवान उन्हें नहीं छोड़ेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 40:03 · 5 मई 2024

प्रश्न 2312 संतों का सम्मेलन कब होगा, और किस वर्ष में?

उत्तर: Kali Yuga में सभी संत बँटे हुए हैं। कोई किसी को नहीं मानता; एक-दूसरे के विरुद्ध बोलते हैं। हर कोई स्वयं को सबसे बड़ा ज्ञानी समझता है। जब भगवान आएँगे, तब वे सब भय के कारण एक साथ आ जाएँगे। जब उत्तर भारत में, हिमालय में एक महाविनाश, एक महा ताण्डव होगा, और भगवान Kalki का विनाशकारी रूप देखने के बाद, सभी संत एकत्र होंगे। अभी तो कलि के प्रभाव के कारण उनमें आपस में नहीं बनती।

► यह उत्तर सुनें · 42:50 · 5 मई 2024

प्रश्न 2313 मैंने आपके चैनल पर सुना कि सभी देवी-देवता अब तीर्थ स्थानों को छोड़ चुके हैं। क्या अब उनके दर्शन करने में कोई पुण्य है?

उत्तर: देखिए, देवी-देवता अपने स्थान छोड़ चुके हैं; यह शास्त्रों में लिखा है। परंतु स्थान की अपनी महिमा होती है; तीर्थ स्थान की अपनी पवित्रता होती है। इसलिए मंदिरों में जाना और तीर्थ स्थानों के दर्शन करना सनातनी परंपरा है। आपको उसका भी पालन करना चाहिए। और जो [उनके चले जाने के विषय में] लिखा है, वह भी सही है।

► यह उत्तर सुनें · 44:00 · 5 मई 2024

प्रश्न 2314 उज्जैन में होली के दिन Mahakal मंदिर में हुई हाल की अग्नि दुर्घटना के विषय में, वहाँ के पुजारी कह रहे थे कि Mahakal अब जाग गए हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: मैं 2018 से कहता आ रहा हूँ कि भगवान शंकर अपने विनाशकारी रूप में संहार के कार्य में लग चुके हैं। यह उसका प्रमाण है। उज्जैन में, भगवान के मंदिर में जो हुआ—तेरह ब्राह्मणों का अग्नि में जलना—यह संकेत है कि धरती विश्वयुद्ध में जलने वाली है। मनुष्यों को अपने मार्ग सुधारने चाहिए और सचेत हो जाना चाहिए। यह उनके ही हित में होगा; अन्यथा बुरा समय आ रहा है। स्वयं को सुधारने के लिए भगवान की शरण लेनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 44:53 · 5 मई 2024

प्रश्न 2315 हमें कहा जाता है कि व्यायाम करें, फिर त्रिकाल संध्या करें। पर जब मैं बैठता हूँ, तो पैरों में तेज़ झुनझुनी होती है, और मैं 15-20 मिनट से अधिक नहीं बैठ पाता। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप त्रिकाल संध्या किसी भी स्थिति में कर सकते हैं। आप कुर्सी पर बैठकर, ज़मीन पर लेटकर, या बिस्तर पर लेटकर कर सकते हैं। आप किसी भी वाहन में यात्रा करते हुए भी कर सकते हैं। यदि पैरों में दर्द हो, तो कुर्सी पर बैठ जाइए या पैर फैलाकर कीजिए। पैर सीधे करके बैठिए और कीजिए। इसमें क्या समस्या है?

► यह उत्तर सुनें · 45:57 · 5 मई 2024

प्रश्न 2316 मेरे भाई, मेरी माँ और मैं इस धारा से जुड़े हुए हैं, पर मेरे पिताजी नहीं। मेरे माता-पिता की प्रबल इच्छा है कि हमारे पितरों के लिए कुछ करें ताकि उन्हें मुक्ति मिल सके। हम क्या कर सकते हैं?

उत्तर: जो जुड़े नहीं हैं, भगवान उनकी सहायता करें कि वे इस धारा से जुड़ जाएँ। और जो जुड़े हुए हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। उस परिवार में शांति आएगी, उन्हें भगवान की कृपा मिलेगी, और वे प्रगति करेंगे। वे युग-परिवर्तन के विनाश से भी सुरक्षित रहेंगे। इसलिए समय ही सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

► यह उत्तर सुनें · 47:09 · 5 मई 2024

प्रश्न 2317 मेरे दादाजी के लिए श्राद्ध करने हेतु कोई विशेष उपाय या स्थान हैं?

उत्तर: हाँ, आप श्राद्ध कर सकते हैं। आप प्रयाग में, गंगा नदी पर, नाभि गया, बोध गया, पाद गया, या गोदावरी पर भी कर सकते हैं। आप कहीं भी श्राद्ध कर सकते हैं। आपके पिताजी कर्म कर सकते हैं, और आप उनकी सहायता कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 48:03 · 5 मई 2024

प्रश्न 2318 क्या सभी दिव्य योद्धाओं का जन्म हो चुका है? मुझे लगता है कि मैं उनमें से एक हूँ। क्या प्रद्युम्न जी का जन्म हो चुका है?

उत्तर: सभी देवताओं, यादवों, गोपों और गोपियों का जन्म हो चुका है। पर आपको कैसे लगता है कि आप प्रद्युम्न हैं? वे इतने महान योद्धा थे कि उनमें समुद्र को सुखा देने की शक्ति थी। क्या आपमें ऐसी शक्ति है? उनमें क्षण भर में ब्रह्मांड में कहीं भी जाने की क्षमता थी। क्या आपमें ऐसी कोई क्षमता है? अच्छा है कि आपको ऐसा लगता है। पर आने वाले समय के लिए आपको त्रिकाल संध्या करनी होगी और Madhava की शरण लेनी होगी।

► यह उत्तर सुनें · 49:47 · 5 मई 2024

प्रश्न 2319 त्रिकाल संध्या आरंभ करने से पहले 15 दिन तक शाकाहारी रहना आवश्यक है क्या?

उत्तर: नहीं, कोई भी किसी भी समय त्रिकाल संध्या आरंभ कर सकता है। परंतु इसे आरंभ करने के साथ ही पशु-हत्या, मछली-मांस का सेवन, मदिरा, तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों का त्याग करना होगा। अन्यथा त्रिकाल संध्या का प्रभाव नहीं होगा; उसका प्रभाव शरीर में प्रवेश नहीं करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:17 · 5 मई 2024

प्रश्न 2320 क्या 64 महामारियाँ आएँगी या 7 महामारियाँ? मैंने अलग-अलग संख्याएँ सुनी हैं।

उत्तर: 64 प्रकार की बीमारियाँ होंगी। महामारी सात बार आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 51:47 · 5 मई 2024

प्रश्न 2321 मेरी श्रद्धा दृढ़ है कि भगवान मनुष्य रूप में आ चुके हैं। लेकिन कुछ अधर्मी सोशल मीडिया पेज नकारात्मकता फैलाते हैं और यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि यह सब धोखा है। भगवान से व्यक्तिगत प्रमाण मिलने के बावजूद, मेरा मन कभी-कभी इससे विचलित हो जाता है और सोचता है, 'वे तो बस मनुष्य जैसे ही दिखते हैं।' मैं इस माया से कैसे निपटूँ और इस संशय को कैसे पार करूँ?

उत्तर: आपकी श्रद्धा दृढ़ होनी चाहिए। यदि हम अपने मन में द्वंद्व रखेंगे, तो भगवान उस द्वंद्व को और बढ़ा देंगे, क्योंकि वे सदा अपने भक्तों की परीक्षा लेते हैं। वशिष्ठ जैसे महान ऋषि भी भगवान कल्कि को पहचान नहीं पाएँगे, तो एक साधारण मनुष्य कैसे पहचानेगा? इसीलिए भविष्य मालिका लिखी गई। इसलिए इस द्वंद्व को अपने मन से निकाल दीजिए। स्वयं से कहिए, 'माधव, आप जो भी हैं—लकड़ी का टुकड़ा, पत्थर, पौधा—आप पर मेरी श्रद्धा अटल है।' आपको भगवान की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। मन से द्वंद्व हटाइए और आगे बढ़िए। माधव के अतिरिक्त कोई भी इस पृथ्वी पर धर्म की स्थापना नहीं करेगा। समय को समझिए। समय हमारे हाथ में नहीं है। जाइए और भगवान की शरण लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 54:06 · 5 मई 2024

सत्र 123 · प्रश्न 2322–2338

L133: क्या परमाणु युद्ध में धरती का संपूर्ण विनाश होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 10 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2322 क्या आने वाले परमाणु युद्ध से मानव सभ्यता पूरी तरह मिट जाएगी? क्या मानव सभ्यता पूर्ण रूप से नष्ट हो जाएगी?

उत्तर: परमाणु युद्ध अवश्य होगा, लेकिन मानव सभ्यता मिटेगी नहीं। ऐसा इसलिए क्योंकि द्वापर और Kali Yuga के अंत में 'खण्ड प्रलय' अर्थात् आंशिक विनाश होता है, पूर्ण प्रलय नहीं। मानव सभ्यता सुरक्षित रहेगी, संसार का कल्याण होगा, और एक सुंदर वातावरण बनेगा। तो आने वाला परमाणु युद्ध विनाश तो लाएगा, परंतु मानव सभ्यता का मूल बच जाएगा। समस्त मानवता नष्ट नहीं होगी। संसार के प्रत्येक देश में मानव सभ्यता बची रहेगी। सबसे अधिक भारत में बचेगी, क्योंकि यह देवभूमि है, जहाँ भगवान और देवी-देवता निवास करते हैं। विदेशी शत्रु भारत पर जितना अधिक आक्रमण करेंगे, भगवान की कृपा से उतने ही अधिक भक्त और लोग बचेंगे। एक ओर भारतीय सेना लड़ेगी, और दूसरी ओर देवता तथा भक्त भी लड़ेंगे, और मानवता का उद्धार होगा। इसलिए इस आने वाली विपत्ति से डरने की आवश्यकता नहीं है। यह परिवर्तन भगवान की इच्छा से और लोगों के कर्मों के फलस्वरूप हो रहा है, ताकि संसार में सनातन धर्म की पूर्ण स्थापना हो सके। यह परिवर्तन स्वतंत्रता लाएगा, भक्तों की रक्षा करेगा, पापियों का विनाश करेगा, और समस्त संसार में सनातन धर्म की पुनःस्थापना करेगा। इसलिए लोगों को परमाणु युद्ध से डरने की आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 01:10 · 10 मई 2024

प्रश्न 2323 पिताजी, कृपया आशीर्वाद दीजिए कि हमें शीघ्र ही भगवान के दर्शन हों।

उत्तर: आप पर भगवान की कृपा हो। त्रिकाल संध्या कीजिए और आगे बढ़ते रहिए; सब ठीक होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:48 · 10 मई 2024

प्रश्न 2324 पिताजी, संध्या करते समय कभी-कभी मन भटक जाता है। क्या करना चाहिए?

उत्तर: त्रिकाल संध्या एक प्रकार की तपस्या है, और Kali Yuga में लोगों के लिए तपस्या करना कठिन है। Kali Yuga के बाहरी और नकारात्मक तत्व मन को अवश्य भटकाएँगे। इसकी चिंता मत कीजिए। बस करते रहिए। करते-करते एक समय ऐसा आएगा जब आपकी स्थिरता, भक्ति और श्रद्धा बढ़ जाएगी, और आप देखेंगे कि भगवान आपके सामने ही खड़े हैं। ऐसा भी होता है। इसलिए आरंभ में बस आगे बढ़ते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 15:04 · 10 मई 2024

प्रश्न 2325 भागवत में नारद मुनि के पूर्व जन्म का उल्लेख है। उस जन्म से पहले, क्या वे हमारी तरह सामान्य मनुष्य थे, या वे पहले से ही नारद मुनि थे? या उस जन्म के बाद भगवान की कृपा से वे नारद मुनि बने?

उत्तर: अपने पूर्व जन्म में, जैसा कि भागवत माहात्म्य में वर्णित है, नारद महामुनि एक दासी के पुत्र के रूप में जन्मे थे। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया। पिता की मृत्यु के बाद उनकी माता एक ब्राह्मण जमींदार के घर काम करती थीं। उनकी माता का भी देहांत हो गया, किंतु उनकी मृत्यु से पहले, ब्राह्मण के घर चातुर्मास्य के समय संतों की सेवा करके नारद को एक बीज मंत्र और ब्राह्मणों की कृपा प्राप्त हुई। उस कृपा से उन्होंने बाद में त्रिकाल संध्या के माध्यम से तपस्या की। एक हजार दिव्य वर्षों के पश्चात्, ब्रह्मा की निद्रा (ब्रह्म प्रलय) के समय, नारद भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में जन्मे। तो वे मनुष्य से देवता बने, और देवता से भगवान के अवतार बने। प्रह्लाद भी कभी मनुष्य थे और उन्होंने इंद्र पद प्राप्त किया। ध्रुव भी कभी मनुष्य थे और गोलोक वैकुंठ में शिशुमार चक्र के राजा बने। इस प्रकार मनुष्य देवता बनते हैं, देवता मनुष्य बनते हैं, और मनुष्य मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 16:11 · 10 मई 2024

प्रश्न 2326 मेरी नानी बीमार हैं। कृपया उन्हें आशीर्वाद दीजिए ताकि वे शीघ्र स्वस्थ हो जाएँ।

उत्तर: मेरा आशीर्वाद सदा है, किंतु बात यह है कि आपको अपनी नानी को दिन के तीन नियत समयों पर त्रिकाल संध्या सुनानी चाहिए। अन्य समय में उन्हें श्रीमद्भागवत सुनाइए। इसके माध्यम से, और यदि वे बोल सकती हैं, तो उनसे 'माधव' नाम का जप करने को कहिए। ऐसा करने से मनुष्य की आयु बढ़ती है और विपत्तियों से रक्षा होती है।

► यह उत्तर सुनें · 18:49 · 10 मई 2024

प्रश्न 2327 पिताजी, मेरा कोई भी काम नहीं बन रहा है। मैं बीमार रहता हूँ और मुझे मधुमेह है। मैं कैसे ठीक होऊँगा?

उत्तर: हम अपने ही कर्मों से रोग को अपने ऊपर लाते हैं। प्रत्येक मानव शरीर में हर रोग मौजूद है, लेकिन जब हमारा कर्म, विशेष रूप से हमारा धर्म (धर्माचरण), घट जाता है—जैसे पीने के पानी की कमी शरीर को हानि पहुँचाती है—तब रोग उत्पन्न होता है। रोग से रक्षा के लिए हमें त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, 'माधव' नाम का जप करना चाहिए, श्रीमद्भागवत पढ़ना चाहिए, सत्संग में जाना चाहिए, धर्म का पालन करना चाहिए, दान देना चाहिए, और जप-कीर्तन करना चाहिए। यह सब कीजिए। सबसे महत्वपूर्ण है 'माधव' नाम का जप। जितना अधिक आप इसका जप करेंगे, उतनी ही अधिक कृपा समस्त मानवता को मिलेगी, और आपको भी मिलेगी। इसलिए 'माधव' नाम का जप कीजिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। मुझे विश्वास है कि इससे वह व्यक्ति भी, जिसमें कोई शक्ति नहीं है, अत्यंत शक्तिशाली बन सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 19:29 · 10 मई 2024

प्रश्न 2328 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा एक महान संत कहते हैं, यदि कोई आपके गुरु या भगवान के विरुद्ध बोले, और आप सक्षम हैं, तो आपको उसे वहीं और उसी समय दंड देना चाहिए। लेकिन हम देखते हैं कि बहुत से लोग आपके और भगवान कल्कि के बारे में बुरा कहते हैं, और जो सक्षम हैं वे उन्हें दंड नहीं देते। इस पर आपका क्या विचार है?

उत्तर: देखिए, वह उनका भाव है, उनके पवित्र वचन हैं। मैं उस पर टिप्पणी नहीं करूँगा, क्योंकि ऐसी चर्चाओं में पड़ना Satya Yuga की उचित परंपरा नहीं है। परंतु इतना अवश्य कहूँगा: इस संसार में मनुष्य को 'मैं, मुझे, मेरा, तुम, तुम्हारा' की धारणाओं का त्याग करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति ऐसी बातें कहता है या किसी के गुरु की आलोचना करता है, तो वह भी इसी 'मैं, मुझे, मेरा, तुम, तुम्हारा' की श्रेणी में आता है। यह संसार के लिए हितकर नहीं है, और Satya Yuga के लोगों में यह गुण नहीं होगा। हमने आरंभ से ही कहा है कि लोगों को बोलने का यह ढंग बदलना होगा और सभी को एक सुंदर भाई-बहनों के परिवार के रूप में देखना होगा। किसी भी गुरु की आलोचना नहीं होनी चाहिए; हर गुरु सम्माननीय है। इसे इसी दृष्टिकोण से समझिए।

► यह उत्तर सुनें · 20:54 · 10 मई 2024

प्रश्न 2329 मैं और मेरा बेटा एक ज़ॉम्बी फ़िल्म देख रहे थे, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को काटता है और उसे नरभक्षी बना देता है। मेरे बेटे ने पूछा कि क्या ऐसा वास्तव में या भविष्य में हो सकता है।

उत्तर: देखिए, यह एक काल्पनिक, गढ़ी हुई कहानी है। इसका सनातन जीव-विज्ञान के सिद्धांतों या किसी वास्तविक आपदा से कोई संबंध नहीं है। इस प्रकार की कहानियाँ विदेशों में अधिक प्रचलित हैं, और वे उन्हें मनोरंजन के लिए बनाते हैं। ऐसा कोई रोग नहीं आ रहा है, और वैसा कुछ नहीं होगा। इससे डरिए मत और इसके बारे में सोचिए मत। यह केवल लोगों के मनोरंजन के लिए है। ऐसा कोई रोग नहीं आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 23:13 · 10 मई 2024

प्रश्न 2330 मेरा कोई प्रश्न नहीं है, मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए कि भगवान के प्रति हमारी भक्ति निरंतर बढ़ती रहे और हमसे कोई अपराध न हो सके। कृपया आशीर्वाद दीजिए कि हमारी भक्ति बढ़े।

उत्तर: यह बहुत सुंदर है। मेरा आशीर्वाद सदा आपके साथ है। जब आप त्रिकाल संध्या करें, तो भगवान से माँगिए, 'हे प्रभु, मुझे शुद्ध और अविचल भक्ति प्रदान कीजिए, ऐसी भक्ति जो सांसारिक माया और आसक्ति से मुक्त हो।' भगवान अवश्य कृपालु होंगे। आपको मेरा आशीर्वाद है; भगवान निश्चित ही अपनी कृपा बरसाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:35 · 10 मई 2024

प्रश्न 2331 भगवान के दो मंत्र हैं: एकाक्षर मंत्र और कल्कि महामंत्र। इन दोनों में से मुझे किसका जप करना चाहिए? और क्या इसे संकल्प लेकर विधिवत साधना के रूप में करना चाहिए, या किसी भी समय सहज रूप से जपा जा सकता है?

उत्तर: देखिए, मैं न एकाक्षर मंत्र की सलाह देता हूँ, न कल्कि मंत्र की। मैं त्रिकाल संध्या और 'माधव' नाम की सलाह देता हूँ। एकाक्षर (एक अक्षर वाला) मंत्र ही 'माधव' नाम है। भगवान एक ही हैं, दूसरा कोई नहीं। वही एक भगवान आदि, सनातन विष्णु हैं, और वही हमारे माधव हैं। इसलिए निरंतर 'माधव' नाम का जप कीजिए। उसी में आपको अपनी साधना मिलेगी और आप अपने जीवन का उद्देश्य पूर्ण करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:28 · 10 मई 2024

प्रश्न 2332 हमारा रिश्ता बिगड़ता जा रहा है। क्या यह सुधरेगा या नहीं? हम इसे सुधारना चाहते हैं।

उत्तर: अगर आप इसे सुधारना चाहते हैं, तो त्रिकाल संध्या कीजिए। प्रतिदिन सोने से पहले श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंध से गोपी लीला का पाठ कीजिए। और सुखी गृहस्थ जीवन के लिए कृष्ण और राधा रानी से प्रार्थना कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 27:36 · 10 मई 2024

प्रश्न 2333 मेरा प्रश्न यह है कि क्या हम श्री श्री ठाकुर अनुकूलचंद्र की उपासना कर सकते हैं?

उत्तर: ठाकुर अनुकूलचंद्र का उल्लेख वास्तव में भविष्य मालिका में है। लिखा है: 'मनोर कीर्ति प्रकाशिबा, अनुकूल नाम धरिबा, देशे बिदेशे भक्त आसिबे, सत्संग करिबे।' अच्युतानंद ने ठाकुर अनुकूल बाबा के बारे में लिखा कि वे पूरे विश्व में एक बहुत अच्छी परंपरा स्थापित करेंगे, सत्संग करेंगे और मानवता का उत्थान करेंगे। अच्युतानंद ने यह भी लिखा कि अनुकूल बाबा के कुछ भक्त भगवान कल्कि को प्राप्त करेंगे। देखिए माता जी, भारत देवताओं, संतों और सिद्ध पुरुषों की भूमि है। अलग-अलग समय पर अनेक सिद्ध संत और ऋषि भारत में जन्म लेते हैं और मानवता के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। परंतु वे भगवान के माध्यम हैं। इस समय स्वयं भगवान आ रहे हैं, भगवान का कोई भक्त नहीं, धर्म की स्थापना के लिए। इसलिए आपको भगवान की शरण में रहना चाहिए। यदि आप अनुकूल बाबा की परंपरा में, उनकी गुरु परंपरा में हैं, तो जैसा आप चाहें, आदरपूर्वक उसके नियमों का पालन करती रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 28:42 · 10 मई 2024

प्रश्न 2334 संध्या धारा करने और भागवत पढ़ने के अलावा, अपने धर्म बल को और बढ़ाने के लिए हम और क्या कर सकते हैं?

उत्तर: माता जी, 'धर्म बल' बढ़ाना बहुत अच्छी बात है। ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिए। मनुष्य के लिए यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। यह मानव शरीर क्या है? यह पंचतत्वों—जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी—से बना है और एक दिन मिट्टी में ही मिल जाएगा। आप पूछ रही हैं कि भक्ति कैसे बढ़ाई जाए, यह बहुत उत्तम है। देखिए माता जी, जब भी आप बैठें, भगवान की महिमा, नाम और रूप को अपने मन में विस्तार दीजिए और उनका चिंतन कीजिए। निरंतर 'माधव' नाम का जप कीजिए। 'माधव' का जप कभी मत रोकिए; हृदय में जप करती रहिए। आपकी भक्ति बढ़ेगी, और माधव की कृपा बढ़ेगी। अच्युतानंद ने कहा है कि 'माधव' नाम के जप से लोग जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाएँगे। हमारे सामने दो मार्ग हैं: एक यह कि जीवन चक्र में बार-बार जन्म लेते रहें, दुःख, सुख और विपत्तियों में भटकते रहें। दूसरा यह कि जीवन चक्र से परे जाकर वैकुंठ प्राप्त करें। जो वैकुंठ प्राप्त करना चाहते हैं और विपत्तियों, दुःख तथा रोग से रक्षा चाहते हैं, उन्हें निरंतर माधव नाम का जप करना चाहिए। इससे बड़ा कोई नाम नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 30:24 · 10 मई 2024

प्रश्न 2335 मेरी बेटी ढाई साल की है। मेरे परिवार में इस आध्यात्मिक मार्ग पर केवल मैं ही हूँ। घर के दूसरे सदस्य मेरी बेटी को अंडा खिलाते हैं, और मैं उन्हें रोक नहीं पाती। मुझे क्या करना चाहिए? क्या यह उसके लिए सही है या गलत?

उत्तर: देखिए माता जी, जो लोग उसे अंडा खिलाते हैं, पाप उन्हीं को लगेगा। वह तो मासूम बच्ची है; उसे क्या पता? कर्मफल उन्हीं को जाएगा जो खिलाते हैं। आपको उनसे लड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि लड़ाई से घर में कलह होगी। इसके बजाय, अपनी बच्ची को श्रीमद्भागवत सुनवाइए ताकि वह स्वयं मना कर दे, कि 'मुझे यह नहीं खाना।' उसे त्रिकाल संध्या सुनवाइए, क्योंकि परिवर्तन 'संस्कार' से आता है। बच्ची को ये 'संस्कार' दीजिए ताकि वह अपने मन से ही इसका विरोध करे और आपको लड़ना न पड़े। अगर आप लड़ेंगी, तो आपको परेशानी होगी। इसलिए बच्ची को ये 'संस्कार' दीजिए और जो मैंने कहा है, उसका पालन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 32:58 · 10 मई 2024

प्रश्न 2336 मेरे घर में मुझे भक्ति करने से बहुत रोका जाता है। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरी भक्ति बढ़े और मेरे परिवार के सदस्य भी भक्ति मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित हों और मेरा साथ दें।

उत्तर: आपको मेरा आशीर्वाद है। त्रिकाल संध्या कीजिए और 'माधव' नाम का जप कीजिए। अगर घर के लोग आपत्ति करते हैं, तो उनसे धर्म की बातें मत कीजिए। बस अपना कर्म कीजिए। परिवार के सदस्यों के साथ शांति से रहिए। किसी से लड़ना अच्छा नहीं है। धर्म का काम शांत मन से होता है। आप कीजिए। आपको मेरा आशीर्वाद है।

► यह उत्तर सुनें · 34:47 · 10 मई 2024

प्रश्न 2337 लोग कहते हैं कि पूजा का फल पाने के लिए गुरु से दीक्षा लेनी ('गुरुमुख' होना) आवश्यक है। मैंने अभी तक दीक्षा नहीं ली है। क्या मेरे लिए यह आवश्यक है?

उत्तर: मेरे मत से, धर्म स्थापना के इस समय में मनुष्य को भगवान कल्कि, कृष्ण और राम की शरण में जाना चाहिए। जो करना होगा, भगवान करेंगे। इस समय, जैसा भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है: 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज... अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।' (सब धर्मों को छोड़कर केवल मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूँगा, शोक मत करो।) भगवान कृष्ण ने कहा कि सभी धर्म, मार्ग, जाति और सिद्धांत छोड़कर उनकी शरण लो। और अब स्वयं भगवान आ रहे हैं। इसलिए किसी और की शरण आवश्यक नहीं है। इसे भूल जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 35:56 · 10 मई 2024

प्रश्न 2338 2021 में जब 13 दिन का पक्ष पड़ा था, तब कोविड-19 महामारी अपने चरम पर थी। मैंने सुना है कि इस वर्ष जून में फिर से 13 दिन का पक्ष आ रहा है। चूँकि ऐसी घटना महाभारत युद्ध से पहले भी हुई थी, तो क्या इसका अर्थ यह है कि फिर से कोई बड़ी बीमारी या आपदा आने वाली है?

उत्तर: 13 दिन का पक्ष वास्तव में संसार में युद्ध, विनाश और मृत्यु का संकेत है। यह संकेत देता है कि पृथ्वी पर कोई बड़ी विपत्ति आ रही है। परंतु हमें इसके बारे में क्या सोचना चाहिए? हम सब भगवान के कार्य से जुड़े हैं, हम त्रिकाल संध्या करते हैं, और हम सत्य युग के मार्ग पर चलते हैं। जो इस मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं है। समस्या उनके लिए है जो नहीं चलते। इसलिए भगवान की शरण लेनी चाहिए। अच्युतानंद ने यह भी लिखा है कि जब यह 13 दिन का पक्ष आएगा, तब भगवान का विनाश कार्य बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:19 · 10 मई 2024

सत्र 124 · प्रश्न 2339–2369

L134: आगे उत्तर मेरु में बर्फीला प्रलय होगा | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 13 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2339 गुरुजी, मेरी दो बार शादी हो चुकी है, और अब मैं पोस्ट-ग्रेजुएशन कर रही हूँ। मैं अपने भविष्य के बारे में जानना चाहती थी।

उत्तर: देखिए, अच्छे से पढ़िए, आपका भविष्य अच्छा होगा। साथ ही, भगवान माधव की कृपा पाने के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 07:04 · 13 मई 2024

प्रश्न 2340 मैं पूछना चाहती थी, आपने बताया था कि अगर हम स्नान नहीं कर पाते, मान लीजिए सुबह 5 बजे, तो हम माँ गंगा का ध्यान करके त्रिसंध्या शुरू कर सकते हैं। लेकिन जब लड़कियाँ मासिक धर्म में होती हैं, तो हमें अशुद्ध माना जाता है। क्या उस समय भी हम माँ गंगा का नाम ले सकते हैं और उनका स्मरण कर सकते हैं?

उत्तर: माता जी, मासिक धर्म के दौरान मंदिर जाना वर्जित है, परंतु भगवान का नाम लेना वर्जित नहीं है। उस समय आप भागवत का पाठ नहीं कर सकतीं, परंतु त्रिकाल संध्या मंत्र का जप कर सकती हैं। आप उचित समय पर कर सकती हैं, पर मंदिर या पूजा कक्ष में नहीं; अपने शयनकक्ष या किसी अन्य अलग स्थान पर कीजिए। आप माँ गंगा का स्मरण कर सकती हैं, और भगवान माधव के नाम का स्मरण तथा भजन कर सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 08:53 · 13 मई 2024

प्रश्न 2341 गुरुजी, जब सत्ययुग (स्वर्ण युग) आएगा, तब भगवान विष्णु अपने क्षीर सागर को पृथ्वी पर लाएँगे। क्या बचे हुए सभी 64 करोड़ लोग भगवान विष्णु से मिल पाएँगे, या केवल कुछ चुने हुए लोग ही?

उत्तर: केवल वे ही भगवान विष्णु से मिलेंगे जो चारों युगों में भगवान के भक्त रहे हैं। सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग के भक्त; स्वर्ग में निवास करने वाले देवता; अपने-अपने लोकों में निवास करने वाले यक्ष और गंधर्व; सूर्य लोक और ब्रह्म लोक में निवास करने वाले—ये चुने हुए भक्त और देवता इस समय पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं। ये भगवान कल्कि की सहायता करेंगे। जो अन्य लोग जीवित बचेंगे, वे भगवान कल्कि के दर्शन के योग्य बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 11:13 · 13 मई 2024

प्रश्न 2342 क्या जाजपुर में कोई आयोजन होगा? क्या हम आ सकते हैं?

उत्तर: आप प्रवचन के लिए आ सकते हैं। जाजपुर के प्रवचन के लिए नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क करें। संपर्क करने के बाद आप आ सकते हैं। कोई भी आ सकता है। जाजपुर की भागवत कथा के लिए जो भी भक्त आना चाहें, यह सभी के लिए निमंत्रण है। आपको अपना नाम और आने वाले लोगों की संख्या बतानी चाहिए, ताकि आयोजक आपके ठहरने की व्यवस्था कर सकें। आपको एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। आपके ठहरने और भोजन की व्यवस्था विश्व सनातन धर्म संगठन द्वारा की जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 12:25 · 13 मई 2024

प्रश्न 2343 मुझे कुछ पूछना था। कल सुबह जब मैंने त्रिसंध्या शुरू की, तो मुझे अचानक माँ काली से डर लगने लगा। जब मैंने आँखें बंद कीं, तो मुझे ऐसा लगा जैसे वे मेरे सामने प्रकट होने वाली हैं। इसलिए मैंने प्रार्थना पूरी करने के लिए आँखें खोल दीं। जब यह समाप्त हुई, तो डर चला गया। ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर: माँ काली की कृपा व्यक्ति की भक्ति पर निर्भर करती है। आपको माँ काली का स्मरण हुआ, क्योंकि हम त्रिकाल संध्या इसलिए करते हैं कि योगमाया, यानी माँ काली, सभी भक्तों की जो परीक्षा लेंगी, उसमें उत्तीर्ण हो सकें। उस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए यह त्रिकाल संध्या आवश्यक है। इसीलिए आपको उनका स्मरण हुआ या उनकी उपस्थिति का अनुभव हुआ। यह अच्छी बात है। जो माँ काली को समझते हैं, उन पर वे कृपा करती हैं और आशीर्वाद देती हैं। इससे मानवता को बल मिलता है। इस कारण यह अच्छा है कि आपके मन में यह विचार या भाव आया। इसमें कुछ भी गलत नहीं है; बल्कि यह तो अच्छी बात है।

► यह उत्तर सुनें · 13:56 · 13 मई 2024

प्रश्न 2344 मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मैं आपके चरण स्पर्श करते हुए यह कह रही हूँ।

उत्तर: माँ, आपको मेरा आशीर्वाद है। भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। लेकिन आपको त्रिकाल संध्या और मेरे बताए हुए पवित्र मार्ग का सभी नियमों के साथ पालन करना होगा, ताकि भगवान महाविष्णु और माँ महाकाली, माँ दुर्गा का आशीर्वाद आप पर, आपके परिवार पर और आपके घर पर बना रहे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:41 · 13 मई 2024

प्रश्न 2345 पंडित जी, पिछली किसी बैठक में आपने बताया था कि भागवत कथा से एक विशेष प्रसंग को एक महीने तक पढ़ने से भगवान के दर्शन हो सकते हैं। कृपया फिर से बताइए कि वह प्रसंग कौन-सा है?

उत्तर: आपको भगवान कृष्ण के द्वारका गमन का प्रसंग पढ़ना चाहिए। इसे एक महीने तक पढ़िए और भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए—कृष्ण मत कहिए, माधव कहिए—'प्रभु, मुझे अपने दर्शन दीजिए।' आपको दर्शन प्राप्त होंगे। निश्चित रूप से प्राप्त होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:17 · 13 मई 2024

प्रश्न 2346 मैं नासिक से बोल रही हूँ। मुझे और मेरी बहन को यह संदेश फैलाकर सेवा करने का अवसर मिला। हमने फिर से नियमित रूप से त्रिकाल संध्या शुरू कर दी है। हम बस अपना आभार व्यक्त करना चाहते हैं और यही चाहते हैं कि भगवान की कृपा और आशीर्वाद हम पर बना रहे। हमें बस उनके चरणों में स्थान चाहिए।

उत्तर: माँ, आपको निश्चित रूप से मिलेगा। आपकी भक्ति, आपकी सेवा और आपके कर्म अवश्य ही भगवान की कृपा दिलाएँगे। आपने आज अच्छा कार्य किया है, और इसके लिए मेरी ओर से आपकी प्रशंसा है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी कृपा आप पर बनी रहे। आनंद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:15 · 13 मई 2024

प्रश्न 2347 मैं त्रिसंध्या करती हूँ और भागवत भी पढ़ती हूँ, लेकिन जब मैं माधव का नाम जपती हूँ, तो बीच में मेरा ध्यान भटक जाता है। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माँ, जब हम यह करते हैं, तो कलियुग की माया और प्रभाव मौजूद होता है, इसी कारण व्यक्ति का ध्यान टूट जाता है। कभी भक्ति कम हो जाती है, कभी हम भूल जाते हैं, कभी नींद आती है या जम्हाई आती है। ये बातें होती हैं। आपकी ओर से कुछ भी गलत नहीं है; बल्कि यह तो अच्छा संकेत है। जैसे आप भगवान का नाम जपती हैं, वैसे ही जपती रहिए। एक समय आएगा जब आप पूर्ण भक्ति के साथ यह करेंगी। भगवान महाविष्णु और माँ दुर्गा देवी के स्वरूप को अपने मन में रखकर यह त्रिकाल संध्या कीजिए, आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 18:43 · 13 मई 2024

प्रश्न 2348 पिताजी, मेरा परिवार धीरे-धीरे इस मार्ग से जुड़ रहा है। कृपया हमें आशीर्वाद दीजिए कि मेरा परिवार ठीक से इससे जुड़ जाए, और कृपया अपना आशीर्वाद हम पर बनाए रखिए।

उत्तर: मैं समस्त मानवता के कल्याण की कामना करता हूँ। आप भी प्रार्थना कीजिए और मैं भी प्रार्थना करूँगा कि हमारा पूरा परिवार इस मार्ग पर एक साथ आए। माँ, मेरा आशीर्वाद पूरी तरह आपके साथ है। माधव की शरण लीजिए, और माधव आपकी इच्छा पूर्ण करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:46 · 13 मई 2024

प्रश्न 2349 पिताजी, मैं बस यही चाहती हूँ कि भगवान के चरणों के प्रति मेरा प्रेम बढ़े, और इसके लिए मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए।

उत्तर: आपको मेरा आशीर्वाद है। पूर्ण भक्ति के साथ त्रिकाल संध्या कीजिए। भागवत पढ़िए। सुबह से शाम तक, जब भी समय मिले, अपने हृदय और मन में माधव का नाम जपिए। इसके द्वारा आप भगवान के चरणों में पूर्ण समर्पण प्राप्त कर सकती हैं। और निरंतर, माधव की शरण में, केवल यही माँगिए: 'प्रभु, मुझे शुद्ध भक्ति प्रदान कीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 20:42 · 13 मई 2024

प्रश्न 2350 गुरुजी, भगवान विष्णु के 10 अवतार हैं। इनमें से हम श्री राम और श्री कृष्ण का नाम सबसे अधिक क्यों जपते हैं? अन्य अवतारों की तुलना में उनकी पूजा अधिक क्यों की जाती है?

उत्तर: देखिए माँ, भगवान राम और कृष्ण के अवतार 'लीला अवतार' हैं। इन अवतारों में भगवान ने अपने भक्तों के साथ 'लीलाएँ' कीं। अन्य अवतार विशेष प्रयोजनों पर अधिक केंद्रित थे: धर्म की स्थापना के लिए मत्स्य अवतार, पृथ्वी को आधार देने के लिए कूर्म अवतार, पृथ्वी को बचाने के लिए वराह अवतार, प्रह्लाद को बचाने के लिए नृसिंह अवतार, और युद्ध के माध्यम से धर्म की स्थापना के लिए परशुराम अवतार। राम अवतार एक 'लीला अवतार' था, जिसमें शासन और भक्तों के साथ संवाद शामिल था। राम के बाद बलराम आए, वे भी धर्म की स्थापना के लिए। फिर सदाचार को बढ़ावा देने और पशु बलि का विरोध करने के लिए बुद्ध अवतार आया, जो गुरु परंपरा के भीतर ही रहा। बुद्ध के बाद कल्कि अवतार आएगा, और राम राज्य की स्थापना होगी। भगवान के अवतार में जितनी अधिक 'लीला' होती है, उतना ही अधिक लोगों का हृदय उनकी ओर खिंचता है, जैसा कि राम और कृष्ण के साथ है।

► यह उत्तर सुनें · 21:42 · 13 मई 2024

प्रश्न 2351 पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि हमारे यहाँ बहुत सारे चमगादड़ आते हैं। वे छत पर, ऊपर के कमरे में और खुले आँगन में उड़कर आते हैं। इसका क्या महत्व है?

उत्तर: देखिए, चमगादड़ों का आना शुभ है। यह अच्छा संकेत है; इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। कहा जाता है कि जहाँ वे निवास करते हैं, वहाँ माता लक्ष्मी भी निवास करती हैं। अनिष्ट दूर हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 24:01 · 13 मई 2024

प्रश्न 2352 मैं त्रिसंध्या करती हूँ। पहले विष्णु सहस्रनाम भी पढ़ती थी, लेकिन जब से त्रिसंध्या शुरू की है, घर के कामकाज के साथ उसे संभाल नहीं पा रही हूँ। मैं बहुत कष्ट से गुज़र रही हूँ, गुरुदेव। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मेरा बेटा भी भटक गया है, और जीवन बहुत कठिन है।

उत्तर: सुनिए, आपके घर में 'पितृ दोष' है। आपके घर की मिट्टी में दोष है। घर पर परिवार के सभी सदस्यों के साथ सात दिन का भागवत पाठ कराइए। बाहर से किसी को मत बुलाइए, और एक पैसा भी खर्च नहीं होगा। सात दिनों में पूरी भागवत पढ़ लीजिए। सारे दोष दूर हो जाएँगे। अपने घर में माधव का नाम जपिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:28 · 13 मई 2024

प्रश्न 2353 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है: भविष्य मालिका किसे सुनानी चाहिए?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। भविष्य मालिका केवल उन्हीं को बतानी चाहिए जिनके हृदय में सुनने की सच्ची जिज्ञासा और इच्छा हो। जो सच्चे मन से बार-बार सुनने के लिए कहें, उन्हीं के साथ इसे साझा करना चाहिए। सबको बताना आवश्यक नहीं है, क्योंकि यह भक्तों का शास्त्र है और केवल भक्तों के लिए ही लिखा गया है।

► यह उत्तर सुनें · 27:49 · 13 मई 2024

प्रश्न 2354 पिताजी, हम त्रिसंध्या करते हैं, लेकिन पिछले दो महीनों से हम अपने ही परिवार के सदस्यों से बहुत परेशान हैं। इतनी पूजा-पाठ के बावजूद घर में लगातार कलह का वातावरण रहता है। हम बहुत दुखी हैं।

उत्तर: ठीक है, घर की अशांति के लिए एक काम कीजिए। सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपिए। और 11 बार अभय नृसिंह महाप्रभु का स्तोत्र पढ़िए: 'तव कर कमल वरे नखम् अद्भुत शृंगं... जय जगदीश हरे।' यह मानसिक रूप से गंगा स्नान करके या पैर धोकर सिर पर जल छिड़ककर कीजिए। माधव से प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, मुझे शांति दीजिए।' आपको अवश्य मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 29:17 · 13 मई 2024

प्रश्न 2355 पिताजी, मैं घर पर होने वाले सात दिन के भागवत कथा पाठ के बारे में पूछना चाहता हूँ। क्या हमें भाग 1 और भाग 2 दोनों पढ़ने चाहिए, या पूरे बारह स्कंध?

उत्तर: आपको पूरा पढ़ना चाहिए। अध्यायों को परिवार के सभी सदस्यों में बाँट दीजिए। यह 'अखंड पाठ' होना चाहिए जो दिन-रात चलता रहे। सात दिनों तक पाठ के साथ-साथ आपको सात्विक भोजन करना होगा और बिस्तर पर नहीं, ज़मीन पर सोना होगा। आरंभ में और अंत में माधव का नाम जपिए। ऐसा करने से घर की सारी समस्याएँ दूर हो जाती हैं, और मानवता की रक्षा होती है।

► यह उत्तर सुनें · 30:39 · 13 मई 2024

प्रश्न 2356 महाराज जी, मैं बहुत परेशान हूँ। मेरा भाई शराब पीता है, और मैं बहुत चिंतित हूँ। वह किसी की नहीं सुनता।

उत्तर: देखिए, माता जी, लोग अपने कर्म के अनुसार जन्म लेते हैं, और वे अपने कर्म अवश्य करेंगे। कोई उन्हें रोक नहीं सकता। यदि आपको शांति चाहिए, तो त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए, भागवत पढ़िए, और माधव से प्रार्थना कीजिए। आपको अच्छा फल मिलेगा। आप त्रिकाल संध्या कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। आप देखेंगी कि भविष्य में सब सुधर जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:59 · 13 मई 2024

प्रश्न 2357 पिताजी, मैं सभी नियमों का पालन करता हूँ, माला पर जप भी करता हूँ। अगर रात में नींद न आए, तो क्या मैं माला पर जप कर सकता हूँ? क्या इसके लिए अलग माला रखनी चाहिए, या कोई दूसरी इस्तेमाल करूँ?

उत्तर: माला पर जप करने की परंपरा कलियुग के लिए थी। मेरी परंपरा में हम गिनती नहीं करते। आप जितनी देर बैठ सकें, मंत्र या नाम का जप कीजिए; उसे गिनिए मत। सत्ययुग आ रहा है, और सभी मनुष्य हर समय नाम जपेंगे, गिनकर नहीं। माला एकाग्रता में सहायता करती है, इसलिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन आप बिना माला के भी मन से जितनी बार चाहें जप कर सकते हैं। बस उसे गिनिए मत, क्योंकि भक्ति से भगवान की आराधना करने में गिनती की आवश्यकता नहीं होती।

► यह उत्तर सुनें · 32:53 · 13 मई 2024

प्रश्न 2358 पिताजी, कभी-कभी मेरा मन पूजा-प्रार्थना में नहीं लगता। ऐसा लगता है जैसे मेरे साथ कोई संशय या माया है। मुझे समझ नहीं आता।

उत्तर: कलियुग का प्रभाव बार-बार भक्तों को परेशान करता है, भ्रम पैदा करता है, और मन को चंचल बना देता है। ऐसा होता रहेगा। हमें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। जैसा मैंने बताया है, वैसे नियमों का पालन कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए और भागवत पढ़िए। जब भी आपका मन भटके, आँखें बंद कीजिए, भगवान महाविष्णु के स्वरूप का ध्यान कीजिए, और माधव का नाम जपिए। उसी में सब कुछ मिल जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 34:48 · 13 मई 2024

प्रश्न 2359 पिताजी, आज सुबह त्रिसंध्या से पहले मुझे एक स्वप्न आया। मैंने देखा कि भूकंप में एक ऊँची इमारत बहुत ज़ोर से हिल रही है, और फिर एक बाढ़ ने आसपास के सारे घर और लोगों को बहा दिया। लेकिन उस इमारत के सभी लोग बच गए, यहाँ तक कि वे बच्चे भी जिन्हें त्रिसंध्या के बारे में पता तक नहीं था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: संध्या के कारण, जहाँ भी कोई धर्मात्मा व्यक्ति निवास करता है, वहाँ के अन्य लोग भी बच जाते हैं। यह स्वप्न मानवता के लिए आने वाली विपत्तियों की चेतावनी है। स्वप्न में जो लोग बचे, वे भविष्य में त्रिकाल संध्या करके बचेंगे। भगवान एक-दो बार क्षमा कर सकते हैं, लेकिन हर बार नहीं। जब भक्त की रक्षा होती है, तो इमारत की भी रक्षा होती है। यही त्रिकाल संध्या का सिद्धांत है। जब तक नाव पर एक धर्मात्मा व्यक्ति है, वह नाव नहीं डूबेगी। जब तक किसी स्थान पर एक धर्मात्मा व्यक्ति है, वहाँ विनाश नहीं आएगा। यह निश्चित है।

► यह उत्तर सुनें · 36:02 · 13 मई 2024

प्रश्न 2360 पिताजी, मेरी परीक्षाएँ चल रही हैं। कल मेरी परीक्षा है। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि वह अच्छी हो।

उत्तर: माता जी, आपको मेरा आशीर्वाद, प्रशंसा और धन्यवाद। आप आगे बढ़ें, और आप पर प्रभु की कृपा बनी रहे। निरंतर माधव का नाम जपती रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 38:53 · 13 मई 2024

प्रश्न 2361 मेरी भी कल परीक्षा है, और मेरी परीक्षा का समय सुबह 11:30 से दोपहर 1:00 बजे के बीच है। उस समय मैं त्रिकाल संध्या कैसे करूँ? क्या मैं मन ही मन माधव का नाम जप सकता हूँ? मैं परीक्षा छोड़ नहीं सकता।

उत्तर: कोई बात नहीं। आप अपनी परीक्षा समाप्त होने के बाद संध्या कर सकते हैं। परीक्षा से पहले माधव का नाम लेकर जाइए। परीक्षा अच्छी जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:10 · 13 मई 2024

प्रश्न 2362 हम जितना अधिक पूजा-पाठ और धर्म की ओर बढ़ते हैं, उतनी ही अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन मैं देखती हूँ कि जो लोग धार्मिक नहीं हैं, वे ज़्यादा सुखी हैं। ऐसा क्यों है?

उत्तर: देखिए माताजी, मनुष्य को अपने पूर्व कर्मों का फल भोगना पड़ता है। जिन्होंने अपने पिछले जन्म में दान नहीं दिया या पुण्य कर्म नहीं किए, वे इस जन्म में कष्ट भोगते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ, अच्छे कर्म कीजिए, जैसे प्रतिदिन गाय को खिलाना। हमें अपने पूर्व कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। आप जो त्रिकाल संध्या और पूजा कर रही हैं, उसका फल अवश्य मिलेगा। यह युग का अंत है, इसलिए कलि का प्रभाव प्रबल है और वह भक्तों को भी परेशान करता है। लेकिन चिंता मत कीजिए। भक्ति के साथ माधव का नाम जपिए, और आपकी समस्याएँ दूर हो जाएँगी। 10 घंटे पूजा करना आवश्यक नहीं है। भक्ति के साथ 10 मिनट की प्रार्थना भी आपको पूरा फल देगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:58 · 13 मई 2024

प्रश्न 2363 मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है ताकि मैं भोपाल में इस संदेश को पूरी तरह फैला सकूँ। ऐसा लगता है कि समय बहुत कम है, और मैं चाहता हूँ कि नए भक्त इसके बारे में जान सकें।

उत्तर: भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। आपको मेरी सराहना और मेरा आशीर्वाद। भगवान आपका कल्याण करें। आनंद।

► यह उत्तर सुनें · 42:15 · 13 मई 2024

प्रश्न 2364 गुरुजी, मेरी 14 वर्षीय बेटी ठीक नहीं हो रही है। बहुत इलाज कराने के बावजूद उसकी एलर्जी की समस्या ठीक नहीं हो रही। वह जो भी खाती-पीती है, उससे उसके पूरे शरीर पर चकत्ते हो जाते हैं। कृपया उसे आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: ठीक है। क्या वहाँ नृसिंह महाप्रभु का कोई मंदिर है? अगर नहीं, तो किसी भी पवित्र मंदिर में जाइए, जैसे भगवान शंकर का मंदिर। भगवान को अर्पित किया हुआ बेल पत्र लीजिए और उसे उसके शरीर के उन हिस्सों पर लगाइए जहाँ एलर्जी है। दूसरा, 16 नामों का जप कीजिए। साथ ही, उसे त्रिकाल संध्या सुनवाइए या करवाइए। माधव से प्रार्थना कीजिए कि यह बीमारी उसे छोड़ दे, क्योंकि सब कुछ भक्ति से ही होता है। कैंसर जैसे रोग भी त्रिकाल संध्या से ठीक हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 42:43 · 13 मई 2024

प्रश्न 2365 बहुत से लोग त्रि संध्या कर रहे हैं, लेकिन उनके कर्म सही नहीं हैं, और उनके मन में छल-कपट है। क्या भगवान उनकी भी रक्षा करेंगे?

उत्तर: देखिए, सभी मनुष्य कलियुग के प्रभाव में हैं; उनमें छल, कलह और अहंकार है। लेकिन निरंतर त्रिकाल संध्या करते रहने से वे लोग अंततः संत और देवता बन जाएँगे। इसमें समय लगता है। त्रिकाल संध्या मंत्र की शक्ति इन नकारात्मकताओं को दूर कर देगी, और वह व्यक्ति धर्मात्मा बन जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 13 मई 2024

प्रश्न 2366 माधव महाप्रभु ने कहा है, 'तुम धर्म में रहो, और मैं कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा।' एक विद्यार्थी के रूप में, धर्म में बने रहने के लिए मैं कौन-से कर्म कर सकता हूँ?

उत्तर: सबसे बड़ा धर्म है अपने माता-पिता का आदर करना, उनकी सेवा करना और उनकी आज्ञा मानना। इस पहले धर्म का पालन कीजिए। दूसरा धर्म है त्रिकाल संध्या। तीसरा धर्म है समाज में भगवान के पवित्र नाम का प्रचार करना। आप पढ़ाई कर रहे हैं, इसलिए बस इतना ही कीजिए, और आपका धर्म और पवित्रता बढ़ेगी।

► यह उत्तर सुनें · 46:23 · 13 मई 2024

प्रश्न 2367 मेरे माता-पिता के बीच बिना किसी कारण के छोटी-छोटी मामूली बातों पर बहुत लड़ाई-झगड़े होते हैं। क्या आप इसका कोई उपाय बता सकते हैं?

उत्तर: क्या ऐसा किसी विशेष दिन, जैसे शनिवार या मंगलवार को ज़्यादा होता है? (प्रश्नकर्ता: नहीं, यह हर दिन होता है)। ठीक है, कोई बात नहीं। अगर आपके माता-पिता के बीच ऐसा होता है, तो उनसे त्रिकाल संध्या करवाइए। उनके मन पर पड़ने वाले बाहरी नकारात्मक प्रभाव दूर हो जाएँगे, और फिर आप शांति से रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 47:36 · 13 मई 2024

प्रश्न 2368 मेरे दो बच्चे पूजा-पाठ में विश्वास नहीं करते। वे दिन में सोते हैं और रात में जागते हैं। हमारी आर्थिक स्थिति भी अस्थिर है। साथ ही, मेरी छोटी बेटी बार-बार बीमार रहती है—त्वचा की समस्याएँ और आँखों में सूजन, जो इलाज से ठीक नहीं हुई।

उत्तर: जो दिन में सोता है और रात में जागता है, वह शांत नहीं रह सकता। उनसे त्रिकाल संध्या करवाइए या भागवत पढ़वाइए; इससे उनके मन में पवित्रता आएगी, और समय के साथ वे बदल जाएँगे। आर्थिक समस्या भी हल हो जाएगी। अगर वे विश्वास नहीं करते, तो उनसे कहिए कि अपने ही भले के लिए बस माधव का नाम जपें। जो रात में जागते हैं, उनसे माता लक्ष्मी प्रसन्न नहीं होतीं। आपकी बेटी के स्वास्थ्य के बारे में—सभी बीमारियाँ कर्म के कारण होती हैं। कर्म से बचने का एक ही उपाय है त्रिकाल संध्या। जो इसे करते हैं, वे संसार के सबसे सुखी व्यक्ति होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 48:41 · 13 मई 2024

प्रश्न 2369 जो प्रातःकालीन दिनचर्या बताई गई है, उसे करते हुए कभी-कभी मुझे देर हो जाती है, और त्रि संध्या सुबह 6:00 या 6:30 बजे के बीच होती है। क्या इसमें कोई समस्या है?

उत्तर: कोई समस्या नहीं। समय पर करने की कोशिश कीजिए, लेकिन अगर न हो पाए, तो भगवान समझते हैं। बस इतना ध्यान रखिए कि आप इसे करें ज़रूर।

► यह उत्तर सुनें · 51:11 · 13 मई 2024

सत्र 125 · प्रश्न 2370–2394

L135: महा बीमारी से उद्धार का मार्ग - त्रिकाल संध्या | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 16 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2370 पंडित जी, कलियुग के प्रभाव के कारण मानवता उसके प्रभावों में अधिक से अधिक उलझती जा रही है। यह स्वाभाविक है कि उनका 'धर्म बल' लगभग शून्य हो जाएगा। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनमें यह बल नहीं है। भविष्य मालिका क्या कहती है कि ऐसे लोग अपना 'धर्म बल' कैसे बढ़ा सकते हैं?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। धर्म का बल बढ़ना ही चाहिए। जब तक मनुष्य में 'धर्म' नहीं है, तब तक वह सुरक्षित नहीं है। और मानवता की रक्षा ही सबसे बड़ा 'धर्म' है। अपना 'धर्म बल' बढ़ाने के लिए हमें तीन काम करने होंगे। पहला, त्रिकाल संध्या। दूसरा, भागवत जी का पाठ। तीसरा, छोटे-छोटे दान करना। यह बहुत सरल है। त्रिकाल संध्या में दिन में 30 मिनट लगेंगे। भागवत जी के पाठ में कम से कम 10 मिनट लगेंगे। आप भागवत जी को ब्रह्ममुहूर्त यानी सुबह 3:45 बजे से लेकर रात 12 बजे तक कभी भी पढ़ सकते हैं। इसके साथ ही, अपनी कमाई में से एक रोटी, पाँच रुपये, दो रुपये, एक रुपया, या 50 पैसे—जो भी आपके सामर्थ्य में हो—किसी गाय, किसी पशु, या किसी दुखी और भूखे व्यक्ति को दान कीजिए। इससे आपका 'धर्म' बढ़ेगा, और जब 'धर्म' बढ़ता है, तो रोग हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे, कोई आपदा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी, और पंचतत्वों का विनाश भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। 'धर्म' ही सबसे शक्तिशाली है, और उसी में धार्मिकता निहित है।

► यह उत्तर सुनें · 10:34 · 16 मई 2024

प्रश्न 2371 मेरा प्रश्न यह है कि मैंने सुना था कि माँ 'योगांध सिद्धांत' के आधार पर एक परीक्षा लेंगी। हम उस परीक्षा में कैसे उत्तीर्ण हो पाएँगे? मुझे इस बात का थोड़ा डर लग रहा था।

उत्तर: वे आपकी प्रत्यक्ष रूप से भी परीक्षा लेंगी और अप्रत्यक्ष रूप से भी। अर्थात्, माँ रोगों और बीमारियों के माध्यम से सूक्ष्म रूप से आपकी परीक्षा लेंगी, और प्रत्यक्ष रूप से भी परीक्षा लेंगी। वह समय अभी नहीं आया है; उसे मैं बाद में समझाऊँगा। लेकिन अभी सूक्ष्म परीक्षा चल रही है। सूक्ष्म रूप से बीमारियाँ फैलती हैं, सूक्ष्म रूप से सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं, और सूक्ष्म रूप से अनजानी समस्याएँ भी खड़ी होती हैं। यह सब माँ की परीक्षा है। ऐसा 'युग' परिवर्तन के समय होता है। इससे बचने के लिए आप सबको त्रिकाल संध्या के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ हैं। ऐसा करने से आप उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकते हैं और अपनी आत्मा तथा अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:26 · 16 मई 2024

प्रश्न 2372 गुरुजी, मुझे अपनी माँ के बारे में पूछना था। वे बहुत बीमार रहती हैं। वे बहुत पाठ और प्रार्थनाएँ करती हैं, लेकिन बीमारी के कारण उनका अभ्यास बीच में टूट जाता है। उन्हें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, माँ। आपकी माँ की बीमारी का इलाज आध्यात्मिक सिद्धांतों में है। मनुष्य चाहे जितना जप करे, पूजा करे या धार्मिक कर्म करे, वह त्रिकाल संध्या के सिद्धांत के समान नहीं है। तो, अपनी माँ को त्रिकाल संध्या सुनवाइए, या उनसे पढ़वाइए। फिर मुझे बताइए कि ऐसा करने से आपको क्या परिणाम मिलते हैं। वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग उपलब्ध हैं। नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क कीजिए, त्रिकाल संध्या की रिकॉर्डिंग लीजिए, और अपनी माँ को सुनवाइए। उससे लाभ हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 14:06 · 16 मई 2024

प्रश्न 2373 पिताजी, मेरा एक प्रश्न है। मेरी माँ का देहांत हो चुका है। मेरे पिताजी और बाकी परिवार, मेरे भाई और भाभी, मुझसे ज़्यादा संपर्क नहीं रखते। इस कारण मेरा मन बहुत दुखी रहता है। मैं पूछना चाहता हूँ कि मैं इस स्थिति से कैसे बाहर निकल सकता हूँ।

उत्तर: देखिए, दुःख हर मनुष्य के जीवन में आता है। लेकिन एक काम कीजिए: हम एक दिन इस संसार में आए थे, और एक दिन चले जाएँगे। इस बीच कई रिश्ते बनते हैं और कई टूटते हैं। मानव जीवन का लक्ष्य है इस जीवन से मुक्ति, अर्थात् जीवन-चक्र के बंधन से छुटकारा। जीवन-चक्र का बंधन अर्थात् चौरासी लाख योनियों में बार-बार भटकना। एक और सिद्धांत यह है कि इन चौरासी लाख योनियों में न भटककर परमार्थ की ओर बढ़ा जाए। जो लोग महान बनते हैं, जो परीक्षाओं में अच्छे परिणाम लाते हैं, वे किसी को अपना समय नहीं देते। इसी प्रकार, जो व्यक्ति मुक्ति की ओर बढ़ता है, वह छोटी-छोटी बातों, सामाजिक बातों या भौतिक वस्तुओं को नहीं देखता। वे सदा भगवान से जुड़े रहते हैं, और जुड़े रहकर अपने जीवन और अपनी आत्मा का कल्याण करते हैं। इसलिए आपको भी त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। सारे मोह टूट जाएँगे, सारी माया टूट जाएगी, सारे दुःख टूट जाएँगे। और साथ ही, परमार्थ की ओर बढ़ने को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बनाइए। इसके लिए निरंतर प्रयास कीजिए। यही इस जन्म में आपके जीवन का सबसे बड़ा कल्याण होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 15:19 · 16 मई 2024

प्रश्न 2374 हमने आपके प्रवचनों में सुना है कि अंत समय में जो लोग बचेंगे, उनका भी बाद में न्याय होगा। क्या आप इसे थोड़ा विस्तार से समझा सकते हैं?

उत्तर: माँ, अगर हमने अनजाने में गलतियाँ की हैं, ऐसी गलतियाँ जिनका हमें ज्ञान ही नहीं था, तो उन गलतियों का न्याय नहीं होता। न्याय उसी क्षण से शुरू होता है जब हमें ज्ञान हो जाता है, जब हमें कर्म और अकर्म का ज्ञान हो जाता है। और यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में सत्य, धर्म और पवित्रता के आधार पर कर्म करता रहता है, तो उसके पिछले कर्म भी नष्ट हो जाते हैं। इसलिए अपने उद्धार के लिए कभी यह मत सोचिए कि आपने कितनी मालाएँ जपीं या कितने अच्छे कर्म किए। बल्कि सदा यह सोचिए कि सब कुछ अच्छा करना है और सब कुछ सत्य के आधार पर रखना है। भगवान एक दिन हाथ बढ़ाकर हमें ले लेंगे। वे समय आने पर हमें अवश्य ले लेंगे। इसी विश्वास के साथ कर्म कीजिए, इसमें कोई दोष नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 17:31 · 16 मई 2024

प्रश्न 2375 मेरा बस एक ही प्रश्न था, कि 'पंचभूत प्रलय' (पाँच तत्वों का महाप्रलय) के समय वृंदावन का क्या होने वाला है, पिताजी?

उत्तर: देखिए, पंचभूत प्रलय के समय भगवान के चार प्रमुख धामों में, और उनके परमधाम श्री वृंदावन में भी, पंचभूतों का प्रलय होगा। बालाजी में भी होगा। उज्जैन में तो कुछ हद तक शुरू भी हो चुका है। ज्योतिर्लिंगों में होगा, सभी देवी क्षेत्रों में होगा, और सभी धर्म क्षेत्रों में होगा। लेकिन वृंदावन के विषय में, माँ, भविष्य मालिका में लिखा है कि वृंदावन में पहले जल प्रलय होगा। हमने दो साल पहले देखा, और एक साल पहले भी, कि वृंदावन में यमुना नदी में बाढ़ आई। भविष्य में यमुना में ऐसी बाढ़ आएगी कि मानवता को और श्री वृंदावन को बहुत बड़ी क्षति पहुँचेगी। तब वृंदावन के सभी भक्त स्वीकार करेंगे और सोचेंगे कि कुछ होने वाला है, क्योंकि यह बांके बिहारी की भूमि है, तो यहाँ यमुना इतनी क्रोधित क्यों है? तब वृंदावन के निवासी, वहाँ रहने वाले भक्त, भविष्य मालिका की युग परिवर्तन और कल्कि संबंधी भविष्यवाणियों को समझेंगे। भविष्य में यमुना का जलस्तर 30 से 50 फुट तक बढ़ सकता है, और ऐसे प्रलय के बाद वृंदावन में धर्म की पुनः स्थापना होगी। जय।

► यह उत्तर सुनें · 19:35 · 16 मई 2024

प्रश्न 2376 सर, पंडित जी, मैं कोलकाता का निवासी हूँ, मूलतः बिहार से हूँ। मेरा प्रश्न यह है कि क्या इस भविष्य मालिका में माँ ज्वाला (ज्वाला देवी) का कोई वर्णन है?

उत्तर: हाँ, ज्वाला के बारे में लिखा है। ज्वालामुखी देवी के बारे में एक रचना है, वह देवी जिनका मुख अग्नि का है। भारत में कई स्थानों पर उनकी सूक्ष्म शक्ति के रूप में या मंदिरों में उनकी पूजा होती रही है। एक समय आएगा जब उनके मुख से अग्नि निकलेगी, और सारा संसार, उसके लोग और सृष्टि उसकी चपेट में आ जाएँगे। बहुत से लोग अग्नि में जलेंगे। और अग्नि प्रलय में सबसे अधिक क्षति कोलकाता नगर को होगी, अर्थात् युद्ध और अग्नि देव तथा अग्नि माता का विनाशकारी कार्य वहाँ सबसे अधिक होगा। यह भी लिखा है। बस इतना ही। जय।

► यह उत्तर सुनें · 22:21 · 16 मई 2024

प्रश्न 2377 पंडित जी, मैं अयोध्या से आकाश हूँ। पिछले ढाई-तीन महीने से मैंने भविष्य मालिका के बारे में जाना है और त्रिकाल संध्या भी शुरू कर दी है। जब मैं अपने परिवार वालों से कहता हूँ कि वे भी त्रिकाल संध्या करें क्योंकि आने वाला समय बहुत बुरा है, और जब मैं उन्हें भविष्य मालिका की बातें बताता हूँ, तो वे मुझ पर हँसते हैं और कहते हैं कि ऐसा कुछ नहीं होगा। कृपया इसका कोई उपाय बताइए।

उत्तर: इसके बारे में भविष्य पुराण में भी लिखा है। नंबर एक का भक्त एक बार सुनेगा और उसके पीछे दौड़ पड़ेगा। लेकिन जो भक्त नंबर दो, तीन से लेकर दस तक के हैं, वे तब तक नहीं समझेंगे जब तक उन्हें प्रतीकात्मक रूप से पीछे से मार न पड़े। दूसरी बात, अगर आपके परिवार वाले नहीं मानते, तो उनसे कहिए कि भविष्य मालिका नहीं, श्रीमद् भागवत जी पढ़ें। कुछ दिन भागवत जी पढ़ने के बाद उनके मन में 'धर्म' का प्रभाव आएगा, उन्हें भगवान की कृपा मिलेगी, और तब वे खुद पूछेंगे, 'भविष्य मालिका क्या कहती है? बताइए।' इस तरह आप उन्हें मना सकते हैं। लेकिन भविष्य मालिका की ज़्यादा बात मत कीजिए। बस उनसे भागवत जी पढ़ने को कहिए। इससे परिवर्तन आएगा। फिर मन और शरीर की शुद्धता के साथ वे कहेंगे कि भविष्य मालिका सही है।

► यह उत्तर सुनें · 23:37 · 16 मई 2024

प्रश्न 2378 मेरा एक और छोटा-सा प्रश्न था, पंडित जी। मैं 'सीताराम सीताराम' जपता हूँ और उनका नाम लेता हूँ। इस कारण मैं 'माधव' नाम नहीं जप पाता। तो क्या मैं केवल 'सीताराम सीताराम' ही जपूँ?

उत्तर: देखिए, 'सीताराम सीताराम' दिन भर और रात भर, हर समय जपिए। लेकिन त्रिकाल संध्या के समय प्रयास कीजिए, चाहे कठिन लगे, कि 'माधव' भजन करें। क्योंकि लिखा है कि इस युग में भक्तों का उद्धार 'माधव' नाम में है। और माधव स्वयं ही कल्कि हैं। जो भगवान राम हैं, वही माधव भी हैं। इसलिए भगवान का नाम 'युग' के अनुसार जपा जाता है। और युग बदल रहा है, इसलिए माधवनाथ के नाम को भी थामे रखिए, ताकि जैसे ही माधव आएँ, हम उन्हें थाम सकें, और हमारा जीवन सरल हो जाए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:01 · 16 मई 2024

प्रश्न 2379 मैं 'माधव' नाम की महिमा जानना चाहता था।

उत्तर: 'माधव' नाम की महिमा। बहुत अच्छा। 'माधव' नाम में तीन अक्षर हैं: 'मा', 'ध' और 'व'। 'मा' का अर्थ है माँ, माँ राधारानी। उनके स्वामी, उनके पति हैं 'धव', अर्थात् कृष्ण। 'मा' ब्रह्म का स्वरूप हैं, प्रकृति की मूल हैं, ब्रह्म स्वरूपा हैं, योगमाया हैं। यह माधव नाम का पहला अक्षर है। और 'धव' हैं कृष्ण। लक्ष्मी का 'ध', राधारानी के पति को संस्कृत में 'धव' कहा जाता है। इसलिए माधव नाम बनता है। दोनों मिलकर राधा-कृष्ण हैं। संसार में वे योगमाया हैं। विष्णु का चक्र संहार करता है, लेकिन जो चक्र माँ दुर्गा देवी धारण करती हैं, वह राधा चक्र है। वही चक्र पापियों का संहार करेगा। इसलिए 'माधव' नाम का सार महान है, और जो 'माधव' नाम का जप करेंगे, वे इस संसार के जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएँगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 26:09 · 16 मई 2024

प्रश्न 2380 पिताश्री, मुझे यह कहना था कि मेरे घर में बहुत कलह है। छोटी-छोटी बातों पर सबसे कलह हो जाती है। तुच्छ बातों पर लोग एक-दूसरे पर क्रोधित हो जाते हैं। अगर इसका कोई उपाय है, तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। हर घर में, हर परिवार में कलह है। पति-पत्नी में नहीं बनती। पिता-पुत्र में, पिता और संतानों में नहीं बनती। घर में छोटी-छोटी बातों पर कलह हो जाती है, जो आग की तरह फैलती है। और उनके बीच की लड़ाई भारत और पाकिस्तान की लड़ाई जैसी होती है। इसका कारण यह है कि Kali Yuga हर घर में प्रवेश कर चुका है और लोगों को परेशान कर रहा है। कलियुग को जड़ से उखाड़कर बाहर फेंकने के लिए घर के सभी लोग साथ बैठकर भागवत जी पढ़ें। एक व्यक्ति पढ़े और बाकी सब सुनें। केवल भगवान की 'गोप-लीला', और कुछ नहीं। यह 10-15 दिन तक कीजिए। देखिए घर में कितनी शांति आती है। उसके बाद परम शांति आएगी, और उसके बाद आपको मुक्ति भी प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 27:44 · 16 मई 2024

प्रश्न 2381 गुरुदेव, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मलिका में प्रयागराज के बारे में क्या वर्णन है? और दूसरा, कहा जाता है कि 33 करोड़ देवी-देवताओं ने भी जन्म ले लिया है। वे कैसे होंगे? क्या वे हमारे बीच में हैं?

उत्तर: प्रयागराज सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है। मलिका में अच्युतानंद ने लिखा है कि भगवान जगन्नाथ प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त (भोर से पूर्व के समय) में प्रयागराज में स्नान करते हैं। और प्रयागराज क्षेत्र 'धर्म' का प्राकट्य बनेगा। जहाँ तक आपके दूसरे प्रश्न की बात है, क्या 33 करोड़ देवताओं ने पृथ्वी पर जन्म ले लिया है? मेरे मत में, शास्त्रों के अनुसार, भविष्य पुराण के अनुसार, और सभी प्रमाणों के अनुसार, सभी देवताओं ने, भगवान ने, यक्षों, गंधर्वों, ऋषियों, संतों और सिद्ध पुरुषों ने — सबने पृथ्वी पर जन्म ले लिया है। और इस समय 'धर्म' की स्थापना का कार्य बढ़ रहा है। सभी भक्तों और देवताओं के मिलन का समय त्रिकाल संध्या के माध्यम से है, माधव से मिलने के लिए। सब मनुष्य रूप में आए हैं। वे पुनः देवता बनेंगे, और देवताओं से सत्य युग के दिव्य जन बनेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 29:12 · 16 मई 2024

प्रश्न 2382 तो मेरा प्रश्न यह था कि माधव जी के दर्शन करने का सबसे सरल उपाय क्या है?

उत्तर: सबसे सरल उपाय, बहुत अच्छा। देखिए, मनुष्य जीवन सरल है। और मन में सबसे बड़ी सरलता है भगवान पर विश्वास। सबसे बड़ी सरलता है मन में भगवान पर पूर्ण विश्वास, अर्थात् भगवान ही पिता हैं, माता हैं, भाई हैं, मित्र हैं, रक्षक हैं, और देने वाले भी हैं। तो भगवान के प्रति सरलता का अर्थ है पूर्ण विश्वास। सरलता का अर्थ है कि कोई शास्त्र, कोई तर्क, कोई प्रमाण आवश्यक नहीं है। बस यह विश्वास कि 'वे ही मेरे प्रभु हैं।' और जब मन कहे कि 'मेरे प्रभु केवल मेरे ही हैं, और वे ही मुझे यहाँ लाए हैं और वे ही मुझे ले जाएँगे,' तब माधव आपको ले जाएँगे। आप माधव के निकट हो जाएँगे। इसका माध्यम है त्रिकाल संध्या, क्योंकि सत्य को जानने के लिए त्रिकाल संध्या भी आवश्यक है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 31:07 · 16 मई 2024

प्रश्न 2383 मेरा एक प्रश्न है। आपकी भविष्य मलिका और त्रिकाल संध्या से जुड़े हुए मुझे लगभग डेढ़ महीना हो गया है। मेरी समस्या यह है कि मुझे बहुत गुस्सा आता है। जैसा आपने कहा, कलियुग हर घर में है। मेरे गुस्से के कारण माता-पिता से मेरी बहुत लड़ाई होती है। इस कारण मैं हर चीज़ में पिछड़ जाता हूँ — चाहे पढ़ाई हो या त्रिकाल संध्या। मैं त्रिकाल संध्या याद नहीं कर पा रहा हूँ, और पढ़ाई में भी दिक्कत आ रही है। कृपया मेरी मदद करें।

उत्तर: कम से कम तीन महीने तक कृष्ण की 'गोप-लीला' (ग्वालों की दिव्य लीलाएँ) पढ़िए। आपको गुस्सा नहीं आएगा। करके देखिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 32:24 · 16 मई 2024

प्रश्न 2384 पिताजी, मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए और कुछ नहीं।

उत्तर: बड़ा आनंद है। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है, सत्यनारायण। राजस्थान के लोगों के कल्याण के लिए कार्य करो। आप सब राजस्थान में भविष्य मलिका के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं; वह कार्य जारी रखिए और उसे आगे बढ़ाइए, ताकि वहाँ के लोग भगवान कल्कि से जुड़ सकें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:29 · 16 मई 2024

प्रश्न 2385 पंडित जी, मेरी पाँच वर्ष की एक बेटी है। मैं उसे त्रिकाल संध्या सिखाने की कोशिश करती हूँ, पर वह ध्यान नहीं देती। वह बहुत चंचल है और सुनती नहीं। कृपया इसका कोई उपाय बताइए।

उत्तर: माता-पिता बच्चों को कई कहानियाँ सुनाते हैं, और कभी-कभी भूत-प्रेत की कहानियाँ भी सुनाते हैं, जिससे वे डर जाते हैं। तो अपनी बेटी से कहिए, 'देखो, तुम्हें अपने जीवन में आगे बढ़ना है, सभी विपत्तियों से लड़ना है, अच्छी कमाई करनी है, और अच्छा भोजन करना है।' बच्चे भोजन से ललचाते हैं। 'और अगर तुम अच्छे से पढ़ना चाहती हो और एक महान मनुष्य बनना चाहती हो, तो त्रिकाल संध्या करो, जिससे तुम्हारे साथ कुछ भी बुरा नहीं होगा। देखो, हमारे कितने पूर्वज और हमारे गाँव के कितने लोग दुर्घटनाओं और कठिनाइयों में चले गए। यदि तुम जीवन की पूरी धारा का अनुसरण करके आगे बढ़ना चाहती हो, तो त्रिकाल संध्या करो।' वह बैठकर सुनेगी। पहले उसे सुनाइए और भगवान कृष्ण की महिमा के बारे में बताइए। ऐसा करने से वह ध्रुव और प्रह्लाद जैसी बालिका बनेगी। जय।

► यह उत्तर सुनें · 34:08 · 16 मई 2024

प्रश्न 2386 पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि जब हम श्री भागवत महापुराण पढ़ते हैं, तो क्या अंतिम पृष्ठ पर लिखी आरती प्रतिदिन पढ़नी होती है, या केवल पूरी पुस्तक समाप्त होने के बाद?

उत्तर: नहीं, नहीं, उसे प्रतिदिन पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। 'फल श्रुति' (फल का वर्णन) प्रतिदिन पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। बस भागवत का एक अध्याय पढ़िए। और यदि समय हो, तो 'गोप-लीला' भी पढ़िए। आपको बहुत अच्छा लगेगा और उसमें आनंद मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:44 · 16 मई 2024

प्रश्न 2387 मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए था। मैंने बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है, लेकिन श्रद्धा और प्रेम अभी तक मेरे भीतर विकसित नहीं हुए हैं। मेरा वातावरण भी अच्छा नहीं है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: देखिए, यदि आप अपने हृदय में श्रद्धा और प्रेम के भाव चाहते हैं, तो ये भाव भगवान शंकर और माता पार्वती प्रदान करते हैं। आपको उनकी कृपा प्राप्त होती है। शास्त्र कहता है, 'भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ' (श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप भवानी और शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ)। श्रद्धा माता पार्वती देवी हैं, और विश्वास भगवान शंकर हैं। तो प्रतिदिन भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का 11 बार जप कीजिए: 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥' इस श्लोक का जप करने से श्रद्धा और विश्वास आएँगे, और आपको भगवान राम की कृपा प्राप्त होगी। जय।

► यह उत्तर सुनें · 36:39 · 16 मई 2024

प्रश्न 2388 इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ कब काम करना बंद कर देंगी?

उत्तर: आप कब चाहते हैं कि ऐसा हो? जल्दी? जब तक इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ काम करती हैं, तब तक हम भी काम करते हैं। पहले त्रिकाल संध्या करके मजबूत बनिए, फिर इलेक्ट्रॉनिक्स का आप पर कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन इलेक्ट्रॉनिक्स के बारे में, देखिए, इस सप्ताह 'सोलर सुनामी' है, अर्थात् सूर्य पर चक्रवात हो रहा है। और अमेरिका जैसे क्षेत्रों में, उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में, लोगों ने आकाश में प्रकाश देखा है क्योंकि उसकी किरणें आ रही हैं। अभी ये छोटी-छोटी बातें हैं। एक समय आएगा जब सभी मशीनें गिर जाएँगी और काम करना बंद कर देंगी। वह समय निश्चित रूप से आएगा। वह आ रहा है। अगले तीन-चार वर्षों तक इतनी बड़ी समस्या नहीं होगी। हमें आगे बढ़ना है, प्रभु की कृपा हम पर बनी रहे, मानवता का कल्याण हो। लेकिन वह समय निश्चित रूप से आएगा। इसलिए अपने कर्मों को सुधारिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और दिव्य जन बनिए ताकि हम आने वाली समस्याओं से लड़ सकें।

► यह उत्तर सुनें · 37:59 · 16 मई 2024

प्रश्न 2389 पिताजी, हम त्रिकाल संध्या करते हैं, हम सब कुछ करते हैं, हम आध्यात्मिक भी हैं, लेकिन कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालिए कि हम भीतर से शांत कैसे हो सकते हैं।

उत्तर: बहुत अच्छा। देखिए, भीतर से शांत होने के लिए हृदय में बार-बार माधव का नाम जपना चाहिए। हृदय के साथ माधव के नाम का घर्षण हृदय को कोमल और शुद्ध बना देगा। और जब भी समय मिले, उसे व्यर्थ गँवाए बिना, आँखें बंद करके हृदय में माधव का नाम जपिए, ऊपरी तौर पर नहीं। दो-तीन महीने ऐसा करने के बाद मन कहेगा, 'नहीं, मुझे गुस्सा नहीं करना है।' फिर आप शांति से बैठकर काम करेंगे, या फिर वह स्थान छोड़ देंगे। उस अवस्था तक पहुँचने के लिए ऋषि-मुनियों ने अपनी इंद्रियों को वश में करने के लिए लंबे समय तक तपस्या की। लेकिन इस युग में तपस्या नहीं है; गृहस्थ होना ही तपस्या है। इसलिए नाम जपिए। माधव का नाम जपिए। आपको इसका फल अवश्य मिलेगा, बहुत अच्छा फल। जय।

► यह उत्तर सुनें · 39:34 · 16 मई 2024

प्रश्न 2390 यदि कोई भगवान का शुद्ध भक्त हो और वह प्रार्थना करे कि यह विनाश न हो, आपने 2032 वर्ष का उल्लेख किया था, तो क्या उसे टाला जा सकता है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा और भावुक प्रश्न है। कभी-कभी मेरा हृदय भी कहता है कि संसार में कोई परिवर्तन न हो, लेकिन बात यह है कि किसी एक व्यक्ति के चाहने से सत्य युग नहीं आ सकता। 'युग चक्र' निश्चित रूप से चलेगा: सत्य, त्रेता, द्वापर, और कलि। कलि के बाद अनंत युग आएगा। यही युगों का चक्र है। जैसे मनुष्य जीवन की अवस्थाएँ होती हैं, वैसे ही युगों में भी ऐसे परिवर्तन होते हैं। तो यह युग परिवर्तन निश्चित रूप से होगा क्योंकि यह 'युग चक्र' है; यह घूमता है। यह अवश्य आएगा। हमें 'धर्म' के साथ जीना है और उस उद्देश्य को पूरा करना है जिसके लिए हमें यह मनुष्य जीवन मिला है। उसके लिए, मनुष्य जीवन के कल्याण हेतु ब्रह्मांड में त्रिकाल संध्या से बड़ा कोई सिद्धांत नहीं है। त्रिकाल संध्या देवताओं के लिए थी, और आज भगवान की कृपा से हम इसे मनुष्यों के लिए बाँट रहे हैं, ताकि वे देवता बन सकें और परम सत्य की ओर बढ़ सकें।

► यह उत्तर सुनें · 41:01 · 16 मई 2024

प्रश्न 2391 पिताजी, हम यह पूछना चाहते थे कि क्या आने वाले समय में हरियाणा में, रोहतक, दिल्ली या सोनीपत के आसपास कोई सम्मेलन होगा?

उत्तर: देखिए, कुरुक्षेत्र में तो निश्चित रूप से होगा। कुरुक्षेत्र में सम्मेलन अवश्य होगा; उसकी योजना है। इसके अलावा और कहाँ प्रवचन हो सकता है, यह भगवान की इच्छा पर निर्भर है, माँ। लेकिन 'धर्म' का प्रचार अवश्य होगा। सुधर्म महासभा का प्रचार होगा, और भविष्य मालिका का प्रचार निश्चित रूप से होगा।

► यह उत्तर सुनें · 43:11 · 16 मई 2024

प्रश्न 2392 आप नासिक कब आएँगे?

उत्तर: नासिक में एक सम्मेलन होने जा रहा है। हमने अभी तारीख नहीं दी है, लेकिन नासिक में सम्मेलन अवश्य होगा, शायद इसी वर्ष। हम इसकी घोषणा ऑनलाइन करेंगे, और आपको निश्चित रूप से सूचित करेंगे। कृपया ऑनलाइन सत्संग और यूट्यूब चैनल देखते रहिए; वहाँ आपको जानकारी मिल जाएगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:44 · 16 मई 2024

प्रश्न 2393 मेरा एक और प्रश्न है। मुझे बताया गया था कि भगवान राम को किसी सेवा की आवश्यकता नहीं थी, इसीलिए वे वन चले गए। लेकिन भक्तों के मन में उनकी सेवा करने की इच्छा होती है। 'सेवा' की इस इच्छा को हम कैसे समझें?

उत्तर: देखिए, बाबा। 'सेवा' का अर्थ है अपना मन अर्पित करना। 'सेवा' का अर्थ है त्याग करना। 'सेवा' का अर्थ है अपने जीवन को सशक्त बनाने के लिए आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढ़ना, उनमें लीन हो जाना, उन सिद्धांतों का बार-बार चिंतन करना—यही सेवा है। कोई त्याग से सेवा करता है, कोई भगवान के प्रति समर्पण से, कोई शास्त्र पढ़कर, और कोई कर्म से। तो, आपके हृदय की भावना सही है। हर कोई भगवान की सेवा करना चाहता है; मैं भी चाहता हूँ। यदि अवसर मिले, तो कोई उसे नहीं छोड़ता। जैसे-जैसे आपकी इच्छा बढ़ेगी, वैसे-वैसे आपकी भक्ति भी बढ़ेगी। और एक समय आएगा जब भगवान की सेवा करना स्वाभाविक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:30 · 16 मई 2024

प्रश्न 2394 पिताश्री जी, मैं आपके चरणों में, बड़ी माँ के श्रीचरणों में, और माधव महाप्रभु जी के श्रीचरणों में अनंत प्रणाम करता हूँ। मुझे आपका और बड़ी माँ का आशीर्वाद चाहिए था।

उत्तर: मैं ठीक हूँ। बहुत अच्छा। धन्यवाद।

► यह उत्तर सुनें · 46:20 · 16 मई 2024

सत्र 126 · प्रश्न 2395–2419

L136: सुधर्मा महा महा संघ सारे विश्व में धर्म संस्थापना का कार्य करेगा। | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 19 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2395 मेरा प्रश्न यह है कि त्रिसंध्या में शुरुआत में गायत्री मंत्र आता है, फिर गुरु स्तुति में तीन श्लोक हैं। पूजा के समय नैवेद्य और धूप के लिए भी यही बात कही गई है। तो, गायत्री मंत्र भगवान माधव का ध्यान करके जपना चाहिए या सूर्यदेव का ध्यान करके? और गुरु स्तुति, क्या वह भी भगवान माधव का ध्यान करके करनी चाहिए? यह कैसे होना चाहिए?

उत्तर: त्रिकाल संध्या में मैं चार बातों पर ध्यान केंद्रित करता हूँ। पुस्तिका में बहुत सारी बातें हैं, लेकिन वे सब आवश्यक नहीं हैं। बस गायत्री मंत्र, 16 नाम, 10 अवतार, दुर्गा माधव स्तुति करिए, और माधव का नाम 108 बार जपिए। इतना ही पर्याप्त है। और अंत में भगवान महाविष्णु की स्तुति कीजिए। यह इसलिए क्योंकि लोगों के पास ज्यादा समय नहीं होगा। जिनके पास समय है वे और अधिक कर सकते हैं, लेकिन इतना करने से भी पूरा लाभ मिलेगा। गायत्री मंत्र भगवान माधव का ध्यान करके जपना चाहिए। सामान्यतः लोग सूर्यदेव का ध्यान करके गायत्री मंत्र जपते हैं। इसके लिए, भगवान महाविष्णु की शरण में अपनी प्रार्थना रखिए। वे देवों के देव हैं, देवताओं के सृजनकर्ता हैं, और देवताओं के स्वामी हैं, आदि विष्णु सनातन। माधव की शरण में जाइए और सब कुछ उन्हें अर्पित कर दीजिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 04:57 · 19 मई 2024

प्रश्न 2396 पिताजी, मैं यह कहना चाहता था कि हम डेढ़ महीने से त्रिसंध्या कर रहे हैं। डेढ़ महीना हो गया है, और अभी तक हमें दिव्य दर्शन नहीं हुए हैं।

उत्तर: आप 1.5 महीने से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, कोई अनुभव हो रहा है? अच्छा लगता है या बुरा? कैसा महसूस होता है? (प्रश्नकर्ता: बहुत अच्छा लगता है, पिताजी)। अच्छा है। कोई नकारात्मकता नहीं है, मनुष्य का मन प्रसन्न रहता है, और सारे काम आनंदमय लगते हैं, है न? हाँ। ठीक है, यदि आपको भगवान के दर्शन नहीं हुए हैं और आप दर्शन करना चाहते हैं, स्वप्न में भी, तो रात को सोने से पहले माधव का नाम 108 बार जपिए। कहिए, 'माधव जी, कृपया मुझे अपने दर्शन दीजिए।' यदि न मिले, तो मुझसे बात कीजिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 06:46 · 19 मई 2024

प्रश्न 2397 हाँ पिताजी, मेरा एक और प्रश्न है। एक दिन, सुबह के समय, मुझे साँपों से भरा एक स्वप्न आया।

उत्तर: नागलोक के प्रकाशित होने के समय, नागलोक के प्राणी भी भगवान के भक्तों की, माधव की शरण में आ रहे हैं। तो, नागलोक का दर्शन अच्छा है, चिंता मत कीजिए। उसे भी एक वैकुंठ कहा जाता है—पाताल वैकुंठ या नागलोक, जहाँ नाग लोग निवास करते हैं। यह ठीक है। लेकिन जैसा मैंने आपको बताया है, वैसा कीजिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 07:48 · 19 मई 2024

प्रश्न 2398 प्रणाम, पिताजी। मेरा प्रश्न सुधर्म महासंघ के बारे में था। उसमें सदस्यता पाने के लिए भक्तों में कौन-से गुण होने चाहिए, पिताजी?

उत्तर: सुधर्म महम् संघ देवताओं के अथवा सनातन महाविष्णु के संगठन के रूप में पृथ्वी पर आ रहा है। सुधर्म महासंघ का सदस्य बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है त्रिकाल संध्या। त्रिकाल संध्या के साथ, मनुष्य सत्युग के आने वाले कार्यक्रमों में प्रवेश पा सकते हैं। और इसके माध्यम से लोग सुधर्म महासंघ से जुड़ सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 08:50 · 19 मई 2024

प्रश्न 2399 मेरा एक प्रश्न था। भगवान ने किसी तरह मुझे संकेत दिया कि वे मुझसे बात करना चाहते हैं, और मैंने उनसे बात करने की कोशिश की, लेकिन मैं नहीं कर पा रही हूँ।

उत्तर: देखिए, ऋषि, संत और नारद महामुनि जैसे महान प्राणियों को भगवान के दर्शन होते हैं। केवल दर्शन होने से, और फिर भगवान की कृपा से, वे महान ऋषियों के रूप में जन्म लेते हैं और भगवान के अवतार का हिस्सा बनते हैं। इसलिए, दर्शन होना ही सबसे महत्वपूर्ण बात है। यदि भगवान आपसे बात करना चाहते हैं, माँ, तो उचित समय पर भगवान भक्तों की वह इच्छा भी पूरी करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात है सही समय की प्रतीक्षा करना और जो मार्ग मैंने बताया है उसका पालन करना।

► यह उत्तर सुनें · 09:47 · 19 मई 2024

प्रश्न 2400 पंडित जी, मुझे यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए, लेकिन पता नहीं क्यों, मैं आने वाले इस खंड प्रलय की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ। कृपया मुझे इसके बारे में बताइए। क्या मेरा यह कहना या यह प्रश्न पूछना सही है? मेरी यह सोच सही है या गलत? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, जिन भक्तों को भगवान के धर्म-स्थापना के कार्य में लगना होता है, उन्हीं को ऐसी अनुभूतियाँ और पूर्वाभास होते हैं। यदि आपको भी हो रहे हैं, तो यह शुभ संकेत है। भगवान की शरण में रहिए और अपनी भक्ति बढ़ाइए। क्योंकि एक समय आएगा जब पृथ्वी पर बड़ी-बड़ी यांत्रिक शक्तियों से भी अधिक प्रभावशाली भक्ति की शक्ति होगी। तो, अपनी भक्ति बढ़ाइए, भगवान के चरणों में पूर्ण समर्पण में रहिए। आने वाले समय में, भक्तों के उद्धार के साथ-साथ भक्तों का कार्य भी आगे बढ़ेगा। उस समय आप सबको भी अच्छा कार्य करने को मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:59 · 19 मई 2024

प्रश्न 2401 अगले प्रधानमंत्री कौन होंगे?

उत्तर: देखिए, हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री, मैंने यह पहले भी कहा है, वे अंतिम प्रधानमंत्री हैं और रहेंगे। उनके बाद और कोई नहीं आ सकता, क्योंकि भविष्य पुराण में लिखा है कि कलियुग के अंत में, जिस समय सत्ययुग की नींव रखी जाएगी, उस समय भारत में एक पवित्र व्यक्ति, जो योग साधना करता है, सत्ता में होगा। यही प्रमाण है। और राम राज्य की स्थापना तथा भगवान राम लला के आगमन जैसी घटनाएँ भविष्य मालिका के सिद्धांतों के अनुरूप इस विश्वास को और भी मजबूत करती हैं। तो वर्तमान प्रधानमंत्री, माननीय मोदी जी ही रहेंगे, और कोई नहीं आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:13 · 19 मई 2024

प्रश्न 2402 पिताजी, मैं आपसे एक स्वप्न साझा करना चाहती हूँ। मुझे वह पूरी तरह याद नहीं है, पर इतना याद है: कैलाश पर्वत पर भगवान शिव का आधा शरीर जल गया था। और उनकी पीड़ा... बहुत सारे पशुओं का वध हो रहा था, और ऐसा लग रहा था जैसे उनका शरीर आधा कटा हुआ है, समझिए, बाईं या दाईं ओर से आधा कटा हुआ, और वे बहुत चीख रहे थे। भगवान विष्णु को मैंने ज्यादा नहीं देखा, बस उन्हें रोते हुए देखा। और भगवान शिव बहुत पीड़ा में थे, जोर-जोर से चीख रहे थे, चिल्लाकर पीड़ा सह रहे थे।

उत्तर: देखिए, माताजी, महाकालेश्वर मंदिर में आग लग गई थी, जहाँ 13 पुजारी थे। उनका घाव अभी भरा नहीं है। और हमें जो समाचार मिला, उसके अनुसार शायद एक व्यक्ति का देहांत हो गया है। तो आप इसे भगवान शंकर की पीड़ा मान सकती हैं। भक्तों को इसके दर्शन होते हैं। जब भक्तों के साथ कुछ होता है, तो भगवान उसे महसूस करते हैं। ठीक है? जय।

► यह उत्तर सुनें · 13:20 · 19 मई 2024

प्रश्न 2403 मैं पूछ रहा हूँ, मैं धारा में तो हूँ, लेकिन समय की कमी के कारण मैं मालिका का प्रचार नहीं कर पा रहा हूँ। तो क्या इसका प्रचार करना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, आवश्यक है या नहीं, यह मैं नहीं कहूँगा। मनुष्य इस पृथ्वी पर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने के लिए आया है। और अपने कर्मों के द्वारा हमें भगवान के पास लौटना है। जो अच्छे कर्म करेंगे, उन्हें टिकट पहले मिलेगा। इसलिए मानव जीवन को सफल बनाने के लिए सभी को धर्म के कार्य करने चाहिए और उनका प्रचार करना चाहिए। यदि आपके सामर्थ्य में हो और आपके पास समय हो, तो उसके लिए थोड़ा कार्य करना भी अच्छा रहेगा। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 14:33 · 19 मई 2024

प्रश्न 2404 इस खंड प्रलय में, हमारे श्री राम लला, जहाँ वे हमारे श्री अयोध्या धाम में विराजमान हैं, उन पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ेगा क्या?

उत्तर: देखिए, मेरी राय में, राम लला और मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कलियुग के अंत और सत्ययुग के आरंभ में हुई है। शायद यह राम लला की इच्छा से हुआ है। और यदि राम लला चाहें, तो प्रलय करते हुए भी वे उस क्षेत्र को बचा सकते हैं, जहाँ से वे पूरे विश्व में सत्ययुग का प्रभाव फैला रहे हैं। सब कुछ उनकी इच्छा है। लेकिन चूँकि यह सत्ययुग के आरंभ में हुआ है, यह संभवतः सत्ययुग का संकेत है, और भगवान इसकी रक्षा करेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 15:43 · 19 मई 2024

प्रश्न 2405 पिताजी, आपके और भगवान के आशीर्वाद से, मैं और मेरी बेटी शिरूर, पुणे की सभा में आए थे। उस समय मैंने आपके और भगवान के चरणों में प्रार्थना की थी कि मेरे परिवार के सभी सदस्य धारा से जुड़ जाएँ। आपके और भगवान के आशीर्वाद से, मेरे बेटे को छोड़कर सभी जुड़ गए हैं। मेरा बेटा अभी तक नहीं जुड़ा है। हालाँकि, वह कांदिवली की सभा में आया था, और उसने वह सब किया जो हम धारा में करते हैं, जैसे त्रिसंध्या, और उसने शोभायात्रा में भी भाग लिया। उसने सब कुछ किया। लेकिन वह अभी पढ़ाई कर रहा है, इसलिए वह अभी तक धारा से नहीं जुड़ा है। मेरी इच्छा है कि आप अपना आशीर्वाद दें, और भगवान के आशीर्वाद से वह भी जल्द ही जुड़ जाए। यह आपकी और भगवान की बहुत बड़ी कृपा होगी। क्या आप कृपया उसका नाम, कृष्णा, एक बार बोल सकते हैं?

उत्तर: आपका बेटा भी जुड़ जाएगा। माधव से प्रार्थना कीजिए, मैं भी प्रार्थना करूँगा। समय के साथ वह आगे बढ़ेगा। ठीक है, कृष्णा समय आने पर जुड़ जाएगा। यह हमारी इच्छा और माधव की कृपा है।

► यह उत्तर सुनें · 17:13 · 19 मई 2024

प्रश्न 2406 जब मैं भगवान की त्रिसंध्या करती हूँ, तो कभी-कभी मेरा ध्यान भटक जाता है। ऐसा लगता है कि मेरा मन भगवान में नहीं लग रहा है। तब मुझे क्या करना चाहिए? मुझे बहुत चिंता होती है।

उत्तर: देखिए, जब आपका ध्यान भटके, तो उसके लिए दुखी मत होइए। क्योंकि कलियुग के अंत में हर मनुष्य का ध्यान भटका हुआ है। इससे आपको कोई हानि नहीं है। लेकिन कुछ दिनों तक त्रिकाल संध्या करने के बाद आपको दृढ़ता, विश्वास प्राप्त होगा, और आपका मन नहीं भटकेगा। शुरुआत में ऐसा होता है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 18:46 · 19 मई 2024

प्रश्न 2407 जय जगन्नाथ। यदि कोई अनुष्ठान करना चाहे, तो वह महामंत्र का होना चाहिए या माधव नाम का? और क्या हम महामंत्र का कीर्तन (सामूहिक जप) कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, महामंत्र का कीर्तन किया जा सकता है। इसे नाम संकीर्तन कहते हैं, और यह भी अनुष्ठान ही माना जाता है। लेकिन आप माधव नाम का अनुष्ठान भी कर सकते हैं। माधव नाम का आठ प्रहर या 24 प्रहर का संकीर्तन किया जा सकता है। जो आपका मन चाहे। महामंत्र भी अच्छा है, और माधव नाम भी अच्छा है। कलियुग से मुक्त होने के लिए माधव नाम अनिवार्य है। और महामंत्र चैतन्य महाप्रभु ने भक्तों के उद्धार के लिए दिया था; यह प्रेम का मंत्र है, जिसका जप करने से मानव जीवन सफल हो जाता है। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 19:36 · 19 मई 2024

प्रश्न 2408 पिताजी, मेरा प्रश्न यह था कि मेरे परिवार के सदस्य मांसाहार करते हैं। और जहाँ मैं रहती हूँ, वहाँ केवल मैं ही इस धारा से जुड़ी हूँ। मेरे परिवार के सदस्य मांसाहार करते रहते हैं, और मुझे उससे बहुत घृणा होती है। मैं उन्हें खाते हुए देख भी नहीं सकती। लेकिन वे खाते हैं, और उसी रसोई में पकाते हैं, और मुझे सब कुछ संभालना पड़ता है। मुझे अच्छा नहीं लगता, फिर भी मुझे उनके साथ खाना पड़ता है। मैं मांसाहार नहीं करती, लेकिन मुझे उनके साथ बैठकर उसी रसोई में खाना पड़ता है। क्या यह किसी प्रकार से गलत है?

उत्तर: यह बिल्कुल भी गलत नहीं है, माताजी। यह आपके लिए एक प्रकार की तपस्या है, और इसके लिए भगवान आप पर और भी अधिक कृपा बरसाएँगे। जो खाते हैं उनसे लड़िए मत, कुछ कहिए मत। उन्हें उनके मार्ग पर चलने दीजिए। आप अपने मार्ग पर चलिए। भगवान की कृपा अवश्य आपके साथ रहेगी। इसमें कोई गलती नहीं है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 20:35 · 19 मई 2024

प्रश्न 2409 पंडित जी, चूँकि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी फिर से प्रधानमंत्री बनने वाले हैं, लोग कहते हैं कि भविष्य मालिका में लिखा है कि मई 2026 में उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद अगले प्रधानमंत्री एक योगी, अविवाहित और हिंदू होंगे। क्या यह सत्य है, प्रभु जी, कि 2026 के बाद योगी जी प्रधानमंत्री बन सकते हैं?

उत्तर: नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मोदी जी ही रहेंगे। देखिए, शास्त्रों में लिखा है, और प्रमाण भी सामने आ रहा है कि वे ही रहेंगे। और वे धर्म के उत्थान के लिए जितना कार्य कर रहे हैं, उससे उनकी आयु बढ़ रही है। और उनकी आयु बढ़ने के कारण उन पर आने वाले संकट टल रहे हैं। जो धर्म के कार्य, धार्मिक अनुष्ठान करते हैं और मंदिर बनवाते हैं, उनकी आयु बढ़ती है। उनकी आयु भी बढ़ रही है। तो चिंता मत कीजिए, वे ही रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:57 · 19 मई 2024

प्रश्न 2410 पिताजी, मुझे अपने जीवन की कठिनाइयों से पार पाने के लिए आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है। मैं यह भी जानना चाहती थी कि जब भी मैंने जाने या अनजाने में कोई झूठ बोला या कोई बहाना बनाया, तो अब मुझे एहसास हो रहा है—जब से मैंने त्रिसंध्या करना और भागवत पढ़ना शुरू किया है—कि वे बातें सच हो जाती हैं। पिछले 25-30 वर्षों से मैंने यह अनुभव किया है कि मेरे बहाने और झूठ, चाहे मजाक में कहे गए हों या क्रोध में, सच हो जाते हैं। इस जीवन में जो कठिनाइयाँ मैं झेल रही हूँ, वे इसी कारण हैं। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, माताजी, मनुष्य अपने पूर्व जन्म के कर्मों का फल इस जीवन में भी भोगता है। और भक्तों को जाने से पहले अपने सारे कर्मों का हिसाब चुकता करना पड़ता है। आपके पूर्व जन्म के कर्मों का फल और पूर्व जन्म के पुण्य ही कारण हैं कि आपको भगवान और यह सत्संग प्राप्त हुआ है। तो चिंता मत कीजिए, माताजी। यदि आपके पारिवारिक जीवन या सांसारिक जीवन में दुख है, तो त्रिकाल संध्या के साथ-साथ, चैतन्य महाप्रभु का एक श्लोक है, 'तृणादपि सुनीचेन...'। उस श्लोक का सोने से पहले 108 बार और बिस्तर से उठने के बाद 11 बार जप कीजिए। भगवान की कृपा आप पर होगी, और आपकी सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:59 · 19 मई 2024

प्रश्न 2411 गुरुजी, मेरा प्रश्न यह था कि यह प्रलय कब आएगी? मेरा मतलब है, भक्तों को उनके कार्य कब सौंपे जाएंगे? उनका पूर्ण एकीकरण कब होगा?

उत्तर: भविष्य पुराण के अनुसार, भक्तों का एकीकरण बिल्कुल अंत तक चलता रहेगा। धर्म की स्थापना तो आरंभ हो ही चुकी है। यह 2021 में कोरोना के आगमन के साथ शुरू हुई। 2025 में, शनि के मीन राशि में गोचर के साथ, यह और आगे बढ़ेगी। तो यह धीरे-धीरे होगा, एक ही दिन में नहीं। धर्म स्थापना का कार्य 2032-2033 तक धीरे-धीरे चलता रहेगा। इस अवधि में सभी भक्तों का एकीकरण होगा, और सत्य युग भी आ जाएगा। मानवता का उद्धार और पापियों का विनाश, पृथ्वी पर एक नए युग के निर्माण का कार्य भगवान कल्कि कर रहे हैं और यह आगे बढ़ता रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:04 · 19 मई 2024

प्रश्न 2412 पंडित जी, मैं यह पूछना चाहता था, मैं पिछले पांच महीनों से यह कर रहा हूं, और सुबह-शाम अपना काम करते हुए माधव का नाम जपता हूं। लेकिन मुझे अभी तक किसी प्रकार का आध्यात्मिक अनुभव नहीं हुआ है। हां, मेरे जीवन में एक बड़ा बदलाव जरूर आया है। न कोई आसक्ति बची है, न कोई लालसा। लेकिन फिर भी मुझे कोई अनुभव नहीं होता। मैं हर दिन सोने से पहले यह मांगता हूं, पर अब तक मुझे कोई अनुभव नहीं मिला।

उत्तर: दिन में माधव का नाम जपिए, और रात को सोने से पहले 11 बार जपिए और माधव से दर्शन देने की प्रार्थना कीजिए। आपको मिलेगा। जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:23 · 19 मई 2024

प्रश्न 2413 आपकी वेबसाइट पर, रामचरितमानस के उत्तरकांड के संबंध में... गीता प्रेस से मेरी जो प्रति है, उसमें इतने पृष्ठ ही नहीं हैं। आपने अपनी वेबसाइट पर रामचरितमानस से जो प्रमाण दिया था, उसमें आपने पृष्ठ संख्या 99 या ऐसा कुछ बताया था, लेकिन मेरी पुस्तक में इतने पृष्ठ नहीं हैं। क्या आप कृपया दोहा संख्या या कुछ और बता सकते हैं?

उत्तर: जो लोग वेबसाइट पर सामग्री अपलोड करते हैं, वे मुझे सुनकर करते हैं। मुझे देखना पड़ेगा कि उसमें क्या है और क्या नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 28:16 · 19 मई 2024

प्रश्न 2414 सत्र जल्द ही समाप्त होने वाला है। अंत में, क्या आप कृपया एक बार 'राम आएंगे' गीत गा सकते हैं? और कृपया इसे यूट्यूब पर अपलोड कर दीजिए।

उत्तर: ठीक है, मैं एक पद गाऊंगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:58 · 19 मई 2024

प्रश्न 2415 हम यह कहना चाहते थे कि हमारी मौसी को संतान नहीं हो पा रही है। क्या करना चाहिए? उनकी शादी को 15 साल हो गए हैं।

उत्तर: देखिए माता जी, उनसे कहिए कि पहले त्रिकाल संध्या करें। दोनों शाकाहारी बनें और त्रिकाल संध्या करें। त्रिकाल संध्या करने के बाद मुझे बताइए कि उन्हें सपने में क्या दिखता है। उसके बाद मैं उन्हें समाधान बताऊंगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 29:36 · 19 मई 2024

प्रश्न 2416 जी गुरुजी। मैं यह कह रही थी कि बचपन से ही मुझे आध्यात्मिक अनुभव होते थे और मैं भगवान कृष्ण से बात करती थी। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें माधव के रूप में स्वीकार करूं। मैं नहीं कर पा रही थी, लेकिन फिर मैंने किया। और अब ऐसा लगता है कि वे हर दिन मुझसे कहते हैं कि उनसे मिलो। लेकिन मेरे घर में कोई भी इस मार्ग पर नहीं है, और मुझे किसी से सहायता नहीं मिल पाती। मैं किसी भी काम में बिल्कुल ध्यान नहीं लगा पाती। 24 घंटे बस यही चाहती हूं कि उनसे मिलूं।

उत्तर: देखिए, यह सच है, मैं समझता हूं। एक काम कीजिए: भगवान कृष्ण की गोपी लीला (गोपियों के साथ की दिव्य लीलाएं) पढ़िए। और माधव से कहिए कि आपको अपना दर्शन दें। भगवान अपने सबसे बड़े भक्तों की सबसे ज्यादा परीक्षा लेते हैं। तो शायद आपकी परीक्षा ली जा रही है। लेकिन गोपी लीला पढ़िए, और आपको उनका दर्शन मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:32 · 19 मई 2024

प्रश्न 2417 पंडित जी, मैं यह कहना चाहती थी कि मैं भगवद्गीता पढ़ती हूं, भागवत नहीं। तो क्या भगवद्गीता पढ़ना सही है या गलत? क्योंकि गीता पढ़ते समय मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इस संसार से परे जा रही हूं, इसका अतिक्रमण कर रही हूं।

उत्तर: गीता ज्ञान है। गीता का ज्ञान सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। परंतु श्रीमद्भागवत महापुराण में राम की कथा है, उसमें गीता है, उसमें भागवत है, विष्णु पुराण है, ब्रह्म पुराण है—उसमें सभी पुराणों का सार है। और भविष्य मालिका के अनुसार, श्रीमद्भागवत सत्य युग के मनुष्यों का निर्माण करेगा। इसलिए, यदि आप भगवद्गीता पढ़ती हैं, तो पढ़ती रहिए। लेकिन भागवत पढ़ने से भगवान के चरणों की समीपता, कृपा और दिव्य अमृत की प्राप्ति होती है।

► यह उत्तर सुनें · 32:49 · 19 मई 2024

प्रश्न 2418 मेरे तीन प्रश्न हैं। पहला: क्या सुधर्म महा महासंघ गुप्त रूप से बनेगा? क्या यह एक गुप्त संगठन होगा? और क्या यह धर्म स्थापना के सभी चरणों के अंत में, लगभग 2032 में बनेगा? दूसरा: मैं चाहता हूं कि मेरे पिता और माता, जो वरिष्ठ नागरिक हैं, सत्य युग में आएं। वे भागवत पढ़ते हैं और त्रि संध्या करते हैं, तो मैं उन्हें सत्य युग में कैसे ले जा सकता हूं? तीसरा: मैंने सुना था कि हमें रसायनों से तिलचट्टे नहीं मारने चाहिए, लेकिन वे मेरे बाथरूम में आते ही रहते हैं। मैं माधव से क्षमा मांगते हुए स्प्रे करता हूं, लेकिन मुझे बहुत डर लगता है कि कहीं मैं किसी परीक्षा में असफल तो नहीं हो रहा या पाप तो नहीं कर रहा। यह मुझे मानसिक रूप से परेशान कर रहा है।

उत्तर: 1. पहला प्रश्न, सुधर्म महासंघ कब बनेगा? सुधर्म महासंघ भगवान कल्कि का संगठन है। भक्त इसमें शामिल होंगे, और इसके माध्यम से सभी भक्तों का एकीकरण होगा। उसी माध्यम से सभी भक्तों को सत्य युग में प्रवेश का अधिकार मिलेगा। सुधर्म महासंघ पूरे विश्व पर शासन करेगा और धर्म स्थापना का कार्य करेगा। यह भविष्य पुराण से है। 2. दूसरा, यदि आपके पिता और माता त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं, और दान करते हैं, और यदि वे त्रिकाल संध्या के तीन वर्ष पूरे कर लेते हैं, तो उनका उद्धार हो जाएगा। 3. तीसरा, तिलचट्टे मारने के संबंध में, उस पाप से आप गाय को खिलाकर मुक्ति पा सकते हैं। लेकिन माधव की शरण लीजिए ताकि वे आएं ही नहीं। भक्ति के साथ प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, कृपया उन्हें हमारे घर में मत आने दीजिए।' इसलिए, भगवान का नाम जपिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और दान कीजिए। पाप धुल जाएंगे, और पुण्य बढ़ेगा। हम सब सत्य युग में प्रवेश के योग्य बन जाएंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:27 · 19 मई 2024

प्रश्न 2419 पिताजी, मेरा प्रश्न मेरी स्कूल की सहेली के बारे में है। मैंने उसे त्रि संध्या के बारे में बताया, और वह कर रही है। लेकिन उसके परिवार में और कोई नहीं कर रहा। तो वह बार-बार पूछती है कि क्या उसका पूरा परिवार आने वाले युग में बच सकता है।

उत्तर: देखिए, जो त्रिकाल संध्या कर रहा है, वह देवता बन चुका है। यह उनके पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के कारण है कि वे त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। यदि परिवार के सदस्य इस मार्ग पर आना चाहते हैं, तो पहले उनसे भागवत पढ़ने को कहिए। भागवत पढ़ने से ज्ञान और भक्ति का उदय होगा। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के उदय के साथ, वे भी त्रिकाल संध्या पर आ जाएंगे, वे भगवान को, सत्य युग के आगमन के संकेतों को समझ पाएंगे, और उन्हें भगवान कल्कि के अवतरण की जानकारी मिलेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:58 · 19 मई 2024

सत्र 127 · प्रश्न 2420–2441

L137: धरती पर आगे भूकंप का प्रभाव आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 23 मई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2420 भगवान क्यों चले जाते हैं और वापस लौट जाते हैं? अगर वे हमारे साथ रहें तो बेहतर होगा। और एक दूसरा प्रश्न, पंडित जी: हमारे जीवन में जो समस्याएं आती हैं, उन्हें देखकर हम कभी-कभी डर जाते हैं। तब हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जीवन की हर धारा में, देवताओं को भी समस्याएं होती हैं, ऋषि-मुनियों और संतों को भी समस्याएं होती हैं, और मनुष्यों को भी समस्याएं होती हैं। यह पूर्वनिर्धारित है। तो हर जीवन में समस्याएं आती हैं, और आपके जीवन में भी आती हैं। लेकिन जो माधव की शरण में हैं, उनकी शरण में रहते हुए हमें डरना क्यों चाहिए? और मेरे अनुमान में, मेरा विश्वास है कि आप सब त्रिकाल संध्या करते हैं, इसलिए समस्याओं से मत डरिए। समस्याओं का सामना कीजिए, और उनके साथ-साथ अपने कर्तव्यों का पालन कीजिए। भगवान की शरण में मन लगाकर अपने कर्म कीजिए, और बड़ी से बड़ी समस्याएं भी हल हो जाएंगी। इसीलिए आप त्रिकाल संध्या करते हैं, और त्रिकाल संध्या का सार आपको सुरक्षा और शक्ति देगा। इसलिए, डरिए मत। किसी भी समस्या से मत डरिए, बस अपना काम कीजिए, और भगवान उसे आगे ले जाएंगे। त्रिकाल संध्या करने में कोई भय नहीं है। हां, अगर हम कुछ गलत करते हैं, किसी बुरे पाप में फंस जाते हैं, तो उसका दंड हमें मिलेगा। लेकिन अगर हम धर्म और सत्य में रहते हुए त्रिकाल संध्या करते हैं, तो इस धरती की कोई शक्ति हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:53 · 23 मई 2024

प्रश्न 2421 मुझे दो दिनों में दो स्वप्न आए। एक में, प्रभु के भक्त एकत्रित हुए थे और किसी को खोज रहे थे। दूसरे स्वप्न में, मैंने देखा कि धरती नीचे से फट गई है और उसमें से बहुत सारा सोना और अनाज निकल रहा है। कृपया बताइए इसका क्या अर्थ है।

उत्तर: देखिए, आने वाले समय में सभी भक्त एक साथ एकत्रित होंगे; इसीलिए आपको भक्तों का स्वप्न दिखा। और धरती फटने से जो बहुमूल्य तत्व निकलते हैं, वे भक्तों के लिए हैं। आज जो भक्त निर्धन हो गए हैं, जिनके लिए यह आवश्यक है, प्रभु ने उनके लिए ही इसे रखा है। सारा धन—सोना, हीरे, रत्न और जवाहरात—भक्तों को ही प्राप्त होगा। भक्त महान बनेंगे। यही सार है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:33 · 23 मई 2024

प्रश्न 2422 पिताजी, मेरी कॉलेज की परीक्षाएँ आने वाली हैं। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने सभी पेपर अच्छे अंकों से पास कर लूँ।

उत्तर: ठीक है, आपको मेरा आशीर्वाद है। आप त्रिकाल संध्या कीजिए और पढ़ाई भी कीजिए। आपको भगवान की कृपा और अच्छा परिणाम अवश्य प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:37 · 23 मई 2024

प्रश्न 2423 कल जब मैं सुबह की त्रिकाल संध्या कर रहा था, तब कुछ हुआ। मेरी आँखें खुली थीं और मन कहीं और था, लेकिन जब मैंने अचानक आँखें बंद कीं, तो मुझे एक बंदर दिखाई दिया। बंदर देखने के एक सेकंड बाद, मुझे दो-तीन मिनट तक रोमांच हुआ और मुझे वही बंदर दिखता रहा। मुझे ऐसा लगा जैसे एक-दो मिनट के लिए हनुमान जी आए हों। क्या आप कृपया इसे समझा सकते हैं?

उत्तर: देखिए, 'चार जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा'। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, हनुमान जी उन पर अपनी पूर्ण कृपा करते हैं। और जो संध्या करते हैं, वे भक्ति के माध्यम से अपनी इच्छा अनुसार हनुमान जी के दर्शन भी कर सकते हैं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, यदि वे हनुमान जी को देखना चाहते हैं, तो उन्हें त्रिकाल संध्या के बाद हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। यह हनुमान जी की कृपा है।

► यह उत्तर सुनें · 17:33 · 23 मई 2024

प्रश्न 2424 और प्रभु जी, आज हनुमान जी भी मेरे सपने में आए। मैं उनके साथ बहुत प्रसन्न था; ऐसा लग रहा था जैसे मैं उनके साथ खेल रहा हूँ, वे मुझे अपने दर्शन दे रहे थे। मैं बहुत प्रसन्न था। और मेरा तीसरा प्रश्न यह है कि जैसे हम लोगों में त्रिकाल संध्या बाँट रहे हैं, वैसे ही पशुओं के लिए हमें क्या करना चाहिए ताकि वे भी सत्य युग में जा सकें? हमारे घर में एक मादा कुत्ता है, और उसे देखकर मुझे लगता है कि हमें उसके लिए भी कुछ करना चाहिए ताकि वह भी सत्य युग में जा सके। कृपया बताइए कि हम उनके लिए क्या कर सकते हैं।

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। पशु और जीव-जंतु, बिना त्रिकाल संध्या किए भी, युग परिवर्तन के साथ आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन बात यह है कि यदि आप किसी जीव को मुक्ति देना चाहते हैं, किसी जीव का उद्धार करना चाहते हैं, तो उन्हें त्रिकाल संध्या सुनवाने से वे भी धार्मिक हो जाएँगे। एक समय आएगा जब सभी पशु और जीव-जंतु भी बोलेंगे। पहले गौ माता बोलेंगी, और उसके बाद अन्य जीव भी बोलेंगे। वे भी मंत्रों का जाप करेंगे। अभी नहीं। शुरुआत में गौ माता अवश्य बोलेंगी। उनके सामने आप 'माधव, माधव' का जाप करते रह सकते हैं ताकि उसका कुछ अंश उनके कानों में पड़े, और वे भी उसके माध्यम से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

► यह उत्तर सुनें · 18:25 · 23 मई 2024

प्रश्न 2425 मैं एक महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता थी।

उत्तर: ठीक है। आनंद के साथ और समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। साथ ही भागवत जी का पाठ भी कीजिए। मेरा आशीर्वाद और भगवान की कृपा आपके साथ अवश्य है। मैं चाहता हूँ कि आप सभी का उद्धार हो। मानवता का उद्धार ही माधव का कार्य है। माधव की सेवा और मानवता की सेवा एक ही हैं। इसीलिए हम चाहते हैं कि सनातन धर्म के सभी अनुयायी, जो पवित्र और शुद्ध आत्माएँ भारत में और विश्व में इस धरती पर आई हैं, उन्हें सही मार्ग दिखाया जाए, जिसके माध्यम से वे भगवान को प्राप्त कर सकें और परम सत्य की ओर बढ़ सकें। यही हमारा लक्ष्य है। आप करते रहिए; भगवान की कृपा आपके साथ है। आगे बढ़िए और इस मार्ग को पूरा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:21 · 23 मई 2024

प्रश्न 2426 पिताजी, क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? आपने कहा था कि पूरे विश्व में सुधर्म सभा के 16 मंडल होंगे। त्रिकाल संध्या सुनने के बाद हम तीन महीने तक सत्संग सुनते हैं। क्या हम भी उन 16 मंडलों में से किसी एक में शामिल हो सकते हैं? जैसे, हम अयोध्या के पास हैं, तो सत्संग सुनने के बाद क्या अयोध्या मंडल का समूह ही वह होगा जो प्रभु से मिलने जाएगा?

उत्तर: हाँ, यह सही है। अयोध्या मंडल भक्तों का एक बड़ा मंडल बनेगा। भविष्य पुराण में अयोध्या मंडल के बारे में यही लिखा है। अयोध्या मंडल में बहुत से भक्त हैं जो त्रिकाल संध्या करते हैं। आपको भी करना चाहिए और प्रभु की कृपा प्राप्त करनी चाहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:30 · 23 मई 2024

प्रश्न 2427 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। अपने एक वीडियो में आपने कहा था कि जो लोग मालिका का विरोध करते हैं, उनकी मृत्यु निश्चित है। आपने कहा था कि उनकी मृत्यु निश्चित है। लेकिन कुछ अच्छे लोग भी हैं जो मालिका का विरोध करते हैं, पर वे अच्छे लोग हैं। तो उनका क्या होगा?

उत्तर: देखिए, जब युग बदलता है, तो सभी को उस युग परिवर्तन के सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ता है। जब विनाश आ रहा है, तो मनुष्य को उस विनाश का सामना करने के लिए शक्ति चाहिए। और यह भविष्य पुराण (मालिका) प्रभु के निर्देश पर उनके नित्य पंच सखा द्वारा लिखा गया था। नित्य पंच सखा स्वयं प्रभु के ही स्वरूप हैं। और भविष्य पुराण में एक-एक करके लिखा है कि पापियों का विनाश कैसे होगा। यह भी लिखा है कि जो लोग भविष्य पुराण पर विश्वास नहीं करते, भविष्य मालिका का सम्मान नहीं करते, और उसकी आलोचना करते हैं, उन्हें केवल विनाश ही देखने को मिलेगा। इसमें कोई परिवर्तन नहीं है। क्योंकि यह प्रभु का सिद्धांत है, मेरा नहीं। मैं तो बस एक ब्राह्मण हूँ जो इसे बाँट रहा है, इसमें मेरी और कोई भूमिका नहीं है। और जो इसका सम्मान करते हैं, आदर करते हैं, और इसका पालन करते हैं, वे सत्य युग के लोग हैं। और जो विश्वास नहीं करते, पालन नहीं करते, दूसरों की आलोचना करते हैं, और इधर-उधर की बातें करते हैं, उनका भाग्य भविष्य पुराण में लिखा है: माँ कालिका उनसे निपटेंगी। और आप जानते हैं कि माँ काली का न्याय कैसा होता है, मैं क्या कहूँ? और मैं यह दृढ़ता से कहता हूँ: यह ग्रंथ धरती के परिवर्तन और मानवता के कल्याण के लिए भगवान की कृपा से रचा गया है। यदि कोई व्यक्ति अपनी ही नाव डुबो दे, तो इसमें भगवान का क्या दोष? जो अपनी नाव स्वयं डुबोते हैं, वे स्वयं ही डूबेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:03 · 23 मई 2024

प्रश्न 2428 मैं तीन महीने से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। पंडित जी, मुझे काम के लिए यात्रा करनी पड़ती है और मैं संध्या नहीं कर पाता। कृपया इस विषय में मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: हम जहाँ भी हों, संध्या आवश्यक है। समय बहुत कम है। हम नहीं कह सकते... 5129 वर्ष बीत चुके हैं, और मनुष्य में सुधार नहीं हुआ। और अब अधिक से अधिक 10-11 वर्षों के भीतर एक महान परिवर्तन होगा। सत्य युग का आगमन तो हो चुका है, लेकिन कलि के प्रभाव के कारण उसका प्रभाव फैल नहीं पाया है। ऐसे समय में त्रिकाल संध्या सभी के लिए आवश्यक है। त्रिकाल संध्या अमृत का घड़ा है। जो इसका पान करेंगे वे बच जाएँगे; वे सत्य युग में जाएँगे। आज मैं यह कह रहा हूँ, लेकिन एक समय आएगा जब भारत में हर कोई कहेगा, 'हाँ, आपको भी त्रिकाल संध्या करनी चाहिए।' लेकिन तब उसका क्या लाभ होगा? अभी कीजिए, जब समय है। यह बहुत अच्छा है कि आप कर रहे हैं। आप जहाँ भी जाएँ, इसे जारी रखिए। रोकिए मत। जय।

► यह उत्तर सुनें · 27:31 · 23 मई 2024

प्रश्न 2429 मेरा एक और प्रश्न था। इधर कुछ समय से, जब मैं किसी आध्यात्मिक गुरु, किसी महान गुरु को देखता हूँ, तो मेरे मन में यह भाव आता है... जैसे निषादराज ने भगवान राम के चरण धोकर चरणामृत पिया था, वैसे ही मुझे किसी गुरु के चरण धोकर वह चरणामृत पीने की इच्छा होती है। कृपया इस विषय में बताइए।

उत्तर: यह एक अच्छी, संत प्रवृत्ति है। यह शुद्ध हृदय का लक्षण है। ब्रह्म सभी में है—चाहे गुरु हो, लड़का हो, या लड़की, ब्रह्म सभी में है। हमें सभी के प्रति भक्ति और सम्मान रखना चाहिए। यह अच्छा लक्षण है; इसमें कोई पाप नहीं है। यह बहुत आनंददायक है, और इससे आपका धर्म भी बढ़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:17 · 23 मई 2024

प्रश्न 2430 और दूसरी बात, पिताजी, मैं अपने माता-पिता को, जो कुछ वृद्ध हैं, अपने साथ सत्य युग में ले जाना चाहता हूँ। क्या यह संभव है? कृपया इस विषय में कुछ बताइए।

उत्तर: देखिए, सबसे पहले तो मैं आपके कार्यों की सराहना करता हूँ। आप जैसा भक्त, अपनी भक्ति और पुण्य की शक्ति से, किसी दूसरे पतित मनुष्य का उद्धार कर सकता है। आप यह कर पाए, यह बहुत अच्छा है। क्योंकि यदि हममें श्रद्धा हो, तो भगवान अवश्य आएँगे। आपने बहुत अच्छा कार्य किया है, मेरे पुत्र। और दूसरी बात, यदि आप अपने माता-पिता को सत्य युग में ले जाना चाहते हैं, तो अपने माता-पिता को त्रिकाल संध्या सुनवाइए, या उनसे कहिए कि वे समय पर त्रिकाल संध्या करें। साथ ही उन्हें भागवत जी का एक अध्याय पढ़कर सुनाइए या पाठ कीजिए, जो भी आप कर सकें। और माधव के पास जाकर कहिए, 'माधव, मैं कुछ भी नहीं हूँ, मैं आपकी शरण में हूँ, कृपया मेरा उद्धार कीजिए।' मेरी दृष्टि में, वे अवश्य सत्य युग में जाएँगे। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा; आपको अच्छा परिणाम मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:42 · 23 मई 2024

प्रश्न 2431 पिताजी, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि भगवान शिव मेरे स्वप्न में आए और बोले, 'तुम्हें तो शिवलिंग पर जल चढ़ाना भी नहीं आता। मैं तुम्हें बताऊँगा कि शिवलिंग पर जल कैसे चढ़ाया जाता है।' फिर इतना कहकर वे चले गए। लेकिन मुझे कभी पता ही नहीं चला कि शिवलिंग पर जल कैसे चढ़ाया जाता है। तो कृपया, क्या आप मुझे बता सकते हैं, पिताजी?

उत्तर: देखिए, भगवान को अपने हृदय में स्थापित करके उनके चरणों में उनका नाम जपने से आपको भगवान के दर्शन होते हैं; भगवान प्रकट होते हैं। देवर्षि नारद ने जब पहली बार तपस्या की, जब उन्होंने त्रिकाल संध्या के माध्यम से तपस्या की, तो भगवान ने उन्हें सूक्ष्म दर्शन दिए, स्थूल यानी शारीरिक दर्शन नहीं। तो, भगवान को अपने हृदय में स्थापित कीजिए, मन में भगवान का नाम जपिए, और आपको दर्शन प्राप्त होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:50 · 23 मई 2024

प्रश्न 2432 पिताजी, मेरा एक प्रश्न है। मेरा एक बेटा है जो दो साल सात महीने का है। मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ और भागवत जी का पाठ करती हूँ। लेकिन कभी-कभी जब मैं पूजा पर बैठती हूँ, तो वह मुझे बहुत परेशान करता है, और तब मुझे उस पर बहुत गुस्सा आता है। तो, अगर प्रार्थना करते समय मुझे उस पर गुस्सा आता है, तो क्या अपने बच्चे पर गुस्सा करने के कारण भगवान भी मुझ पर नाराज़ होंगे?

उत्तर: देखिए, बच्चों को खाना प्रिय होता है। बच्चे को खाना दे दीजिए, खिलौना दे दीजिए, या जिस चीज़ की उसे ज़रूरत है वह दे दीजिए, और फिर अपना काम कीजिए। गुस्सा करने से आपको क्या मिलेगा? वे आपके ही अंश से, आपके ही रक्त से आए हैं; हमें तो उनका उद्धार करना है। गुस्से से क्या हासिल होगा? उसकी ज़रूरत के अनुसार उसे संभालिए, और फिर आगे बढ़िए। अगर बीच में रुकना भी पड़े, तो कोई बात नहीं। फिर से शुरू कर दीजिए। उसकी भी देखभाल कीजिए और अपनी संध्या भी कीजिए। गुस्सा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:41 · 23 मई 2024

प्रश्न 2433 पंडित जी, जैसा कि आपने पिछले एक वीडियो में बताया था कि भगवान ब्रह्मा और भगवान शंकर भी भगवान की लीला को नहीं जान पाएंगे। लेकिन कहा जाता है कि हरि और हर एक हैं, भगवान शिव को सबसे बड़ा वैष्णव कहा जाता है, और भगवान विष्णु को सबसे बड़ा शैव कहा जाता है। तो भगवान शंकर भगवान की लीला को कैसे नहीं जान सकते?

उत्तर: नहीं, आपने जो कहा वह सही है। भगवान शंकर भगवान विष्णु के अंश हैं, और भगवान ब्रह्मा भी भगवान विष्णु के अंश हैं; कोई अंतर नहीं है। जो भगवान विष्णु की उपासना करता है उसे भगवान शंकर प्राप्त होते हैं, और जो भगवान शंकर की उपासना करता है उसे भगवान विष्णु प्राप्त होते हैं। भक्त और भगवान के बीच की लीला के संबंध में, अच्युतानंद ने भाव से लिखा है: 'ब्रह्मा अगोचर ना जानन्ति इन्द्र चन्द्र' (ब्रह्मा, इन्द्र और चन्द्र भी इस रहस्य को नहीं जानते)। उन्होंने लिखा कि भक्तों और भगवान के बीच जो लीला होगी, उसे भगवान शंकर और ब्रह्मा भी नहीं समझ पाएंगे कि क्या हो रहा है। लिखा है कि वे नहीं जान पाएंगे कि भगवान किस प्रकार की लीला, किस प्रकार का कार्य कर रहे हैं; वे इसका पता नहीं लगा पाएंगे। लेकिन तत्व एक ही है; वे सब एक ही हैं, कोई अंतर नहीं है। और सभी भगवान हैं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तीनों ही भगवान हैं। सभी हमारे पूजनीय हैं। लेकिन बात भक्त और भगवान के बीच की लीला की है, जिसे कुछ देवता, ब्रह्मा और भगवान शंकर भी नहीं समझ पाएंगे। यही लिखा है, इसी भाव से लिखा गया है। इसकी बारीकियों में जाने की आवश्यकता नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:14 · 23 मई 2024

प्रश्न 2434 पिताजी, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए था।

उत्तर: ठीक है, माताजी। धर्म का आचरण कीजिए, अच्छे कर्म कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत जी का पाठ कीजिए। भगवान की कृपा और मेरा आशीर्वाद निश्चित रूप से आपके साथ रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:09 · 23 मई 2024

प्रश्न 2435 महोदय, कृपया मुझे भी अपना आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: ठीक है माताजी, आपको मेरा आशीर्वाद है। लेकिन भगवान की शरण में रहिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और भगवान की कृपा तथा मेरा आशीर्वाद निश्चित रूप से आपके साथ है। जय जगन्नाथ। जो उनकी शरण लेते हैं, उन पर भगवान की कृपा सदैव रहती है। आप भगवान की शरण में हैं; आपको उनकी सारी कृपा और मेरी प्रसन्नता प्राप्त होगी। जय।

► यह उत्तर सुनें · 38:29 · 23 मई 2024

प्रश्न 2436 पिताजी, मैं जानना चाहती हूँ कि जो बातें हमारे जीवन में नहीं होतीं, वे हमारे सपनों में क्यों आती हैं? ऐसी घटनाएँ, जो हमारे सामान्य जीवन का हिस्सा नहीं हैं, सपनों में क्यों घटित होती हैं?

उत्तर: देखिए माताजी, आध्यात्मिक सपने होते हैं और भौतिक सपने भी होते हैं। जिसके भीतर भौतिक जिज्ञासा और भौतिक इच्छाएँ हैं, उसे भौतिक चीज़ों से जुड़े सपने आते हैं। जो आध्यात्मिक तत्वों, आत्मा और आध्यात्मिक भक्ति में लीन रहता है, उसे दिव्य दर्शन और आध्यात्मिक सपने आते हैं। दोनों ही प्रकार के सपने सत्य होते हैं। भौतिक तत्वों के आधार पर हम जो सपने देखते हैं वे भी सच होते हैं, और आध्यात्मिक सपने भी सच होते हैं। तो, मानव जीवन की धारा में अनेक प्रकार के सपने होते हैं, लेकिन हर सपना सच नहीं होता, और हर सपना मनुष्य की मुक्ति की ओर नहीं ले जाता। लेकिन अगर आपको कोई अच्छा सपना आता है जो आपके जीवन की धारा से जुड़ा हुआ है, तो उस पर चिंतन कीजिए, और वह सपना समय के साथ अवश्य सत्य सिद्ध होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:05 · 23 मई 2024

प्रश्न 2437 मैं बद्रीनाथ गया था, और वहाँ सूर्य के चारों ओर एक गोलाकार, इंद्रधनुष जैसा घेरा था। मैंने उसकी फोटो खींची और पोस्ट की। मुझे इससे क्या समझना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जब सूर्य के चारों ओर घेरा (परिवेश) दिखाई देता है, तो जहाँ भी वह दिखता है, वहाँ विनाश आता है। कोई विपत्ति आती है। सूर्य के चारों ओर घेरा बनता है, चंद्रमा के चारों ओर घेरा बनता है। जिस स्थान पर यह दिखाई देता है, यह संकेत है कि उस स्थान पर या उसके आसपास के किसी स्थान पर कोई विपत्ति आने वाली है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:44 · 23 मई 2024

प्रश्न 2438 पिताजी, कृपया आशीर्वाद दीजिए। मुझे और मेरे परिवार को आपका आशीर्वाद चाहिए, बस आपका आशीर्वाद।

उत्तर: मैं आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। आपके परिवार में धर्म की वृद्धि हो, और आप धर्मयुक्त कर्मों से प्रगति करें। आपका परिवार भी बढ़े, और आप पर भगवान की कृपा बनी रहे। शांति और सुख के साथ-साथ धर्म भी बढ़ता रहे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:54 · 23 मई 2024

प्रश्न 2439 मेरे बेटे को 65% अंक मिले हैं, पिताजी। अब मुझे उसके दाखिले की व्यवस्था देखनी है, लेकिन मेरी नौकरी की स्थिति के कारण चीज़ें कठिन हो गई हैं। अभी मुझे कोई रास्ता नहीं दिख रहा कि उसका दाखिला कैसे होगा, पैसे कहाँ से आएंगे। कुछ भी नहीं बन पा रहा।

उत्तर: देखिए, माधव का नाम जपिए। त्रिकाल संध्या कीजिए। सब व्यवस्था हो जाएगी। कोई समस्या नहीं होगी। बस करके देखिए, सब ठीक हो जाएगा। लेकिन उनकी शरण में जाइए, और सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:51 · 23 मई 2024

प्रश्न 2440 मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए, पिताजी।

उत्तर: आपको मेरा आशीर्वाद है। अपनी प्रार्थना कीजिए, संध्या कीजिए, आशीर्वाद रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:58 · 23 मई 2024

प्रश्न 2441 पिताजी, मैं तीनों समय त्रिकाल संध्या करता हूँ, लेकिन सुबह वाली पहली संध्या के लिए मुझे उठने में परेशानी होती है। मैं जल्दी उठ नहीं पाता। इसके लिए मैं क्या करूँ?

उत्तर: भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए। कहिए, 'प्रभु, मुझे समय पर जगा दीजिए ताकि मैं प्रातःकालीन संध्या सही समय पर कर सकूँ।' आपको उनकी कृपा अवश्य मिलेगी। एक समय ऐसा आएगा जब आप सो ही नहीं पाएँगे; ब्रह्म मुहूर्त (भोर से पहले का समय) में आपकी नींद अपने आप खुल जाएगी। करते रहिए, हो जाएगा। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 44:06 · 23 मई 2024

सत्र 128 · प्रश्न 2442–2460

L138: क्या कल्कि अवतार का जन्म हो गया है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 3 जून 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2442 जय श्री माधव, प्रभु जी। जब हम संध्या करते हैं, तब भी हमसे जाने-अनजाने में बहुत से पाप हो जाते हैं। उसके लिए भगवान जो दंड देंगे वह तो ठीक है, लेकिन बच्चों का क्या? उनका क्या होगा, जबकि उनका कोई दोष नहीं है?

उत्तर: इस संसार में न कोई बच्चा है और न कोई बड़ा। हमारे शरीर के भीतर जो आत्मा है, वह असंख्य युगों पुरानी है। जो जीव बालक के रूप में आते हैं और फिर इस धरती पर बड़े होते हैं, वे भी अपने कर्म के अनुसार ही जन्म लेते हैं और अपने कर्मों का फल भोगेंगे। इसलिए इस दृष्टि से बच्चा, बड़ा या वृद्ध में कोई भेद नहीं है। परंतु जो त्रिकाल संध्या करते हैं, माधव की शरण लेते हैं और भागवत जी का पाठ करते हैं, उनके पाप धीरे-धीरे क्षीण होते जाएँगे और वे सत्ययुग के मनुष्य बन सकेंगे। यह शास्त्रों में लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:47 · 3 जून 2024

प्रश्न 2443 गुरुदेव, मैं इस समय इस मार्ग पर चल रहा हूँ, और मुझे अचानक प्रेरणा हुई। चूँकि मेरी गर्मी की छुट्टियाँ चल रही हैं, मैं पुरी में भगवान जगन्नाथ और माँ बिरजा के दर्शन के लिए जाना चाहता हूँ। मेरे परिवार के सदस्य भी जाना चाहते हैं। तो मैं आपकी अनुमति चाह रहा था। मेरे मन में आया कि मैं तभी जाना चाहता हूँ जब भगवान मुझे बुलाएँ।

उत्तर: आपको इस मार्ग से जुड़े कितने महीने हुए हैं? (प्रश्नकर्ता: दो, सवा दो महीने।) रुकिए। आप आगे विचार करने के बाद आएँगे। अभी केवल दो महीने ही हुए हैं। कम से कम छह महीने बीत जाने दीजिए, फिर हम विचार करेंगे। देखिए, धरती पर बड़ी बीमारियाँ, रोग और आपदाएँ आने वाली हैं। 2025 में एक महत्वपूर्ण ज्योतिषीय घटना घट रही है। सभी के लिए त्रिकाल संध्या करना आवश्यक है। मानवता का कल्याण इसी में है, और मानव जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता इसी में मिलेगी। उनकी सेवा करने में बड़ा आनंद है। कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:05 · 3 जून 2024

प्रश्न 2444 मैं यह पूछना चाहता था कि यदि भगवान आ ही चुके हैं, तो वे इतनी देर क्यों लगा रहे हैं? धरती पर पाप बढ़ रहा है, और भगवान तो सब कुछ देख ही रहे होंगे। आज भी अच्छे लोग कष्ट और परेशानियाँ झेल रहे हैं। तो वे जल्दी कुछ क्यों नहीं करते? अच्छे लोगों के साथ अच्छा और बुरे लोगों के साथ बुरा क्यों नहीं होता? अच्छे लोगों को सब परेशान करते हैं, पुलिस और अदालतें भी। वहीं गलत काम करने वाले अपनी ताकत दिखाते हैं और सब पर नियंत्रण रखते हैं। क्या भगवान यह नहीं देख रहे? मेरा सीधा सवाल है: भगवान कब तक अच्छे लोगों का कष्ट देखते रहेंगे? मैं बुरा हो सकता हूँ, मेरे साथ बुरा हो तो कोई बात नहीं, पर अच्छे लोग भी क्यों कष्ट पा रहे हैं? भगवान किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

उत्तर: देखिए, यह अच्छा प्रश्न है। यह प्रश्न सबके मन में है। अच्छे लोग कष्ट पा रहे हैं, असुरों का प्रभाव बढ़ रहा है, और पापी अपनी शक्ति और धन का प्रदर्शन करते जा रहे हैं। बात यह है कि हर जीव अपने कर्म के अनुसार आया है। हमें नहीं पता कि हमने पूर्व जन्मों में कौन से कर्म किए थे। जो लोग अभी पाप कर रहे हैं, उनके पूर्व जन्मों के अच्छे कर्म अभी समाप्त नहीं हुए हैं, इसलिए वे प्रभावशाली हैं। भक्त हर युग में भक्त ही होता है; यदि पूर्व जन्म का कोई कर्म शेष रह गया था, तो वह अभी उसका भुगतान कर रहा है। हाँ, एक बात निश्चित है: पापी भक्तों और अच्छे लोगों के विरुद्ध लड़ेंगे। मेरी दृष्टि में, जो माधव की शरण में रहेंगे और त्रिकाल संध्या करेंगे, उनकी विजय अवश्य होगी। समय लगेगा, पर विजय निश्चित है। हम अपने पूर्व कर्मों का भुगतान करने आए हैं। इसीलिए भक्तों को भी दुःख झेलना पड़ता है, जैसे देवता कभी-कभी शाप के कारण धरती पर जन्म लेते हैं और कष्ट भोगते हैं। मानव जीवन में सुख और दुःख 'प्रारब्ध' (पूर्व कर्मों पर आधारित भाग्य) के कारण होते हैं। असुर कलियुग के कारण शक्तिशाली हैं, पर उनके विनाश का समय आ रहा है। जो सच्चे अर्थों में भगवान की शरण लेंगे, अंत में उनकी विजय अवश्य होगी।

► यह उत्तर सुनें · 43:22 · 3 जून 2024

प्रश्न 2445 प्रभु जी, मेरा एक प्रश्न है। मेरी बहुत प्रबल इच्छा है कि मैं भगवान जगन्नाथ की पावन भूमि के दर्शन करूँ और सुधर्म महासंघ के लोगों के दर्शन करूँ। कृपया मुझे इसका कोई उपाय बताइए।

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? (प्रश्नकर्ता: जी हाँ प्रभु जी, करता हूँ।) क्या आप भागवत जी पढ़ते हैं? (प्रश्नकर्ता: पंडित जी, मुझसे एक छोटी-सी भूल हो गई। मैं समझ नहीं पाया और गीता ले आया। मैं कल भागवत महापुराण मँगवा लूँगा।) भागवत जी पढ़िए। आपको भगवान का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। संध्या के साथ-साथ भागवत जी पढ़ने से भक्त भगवान की उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं। वह कीजिए, और आगे हम भगवान के निर्देश के अनुसार करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 47:43 · 3 जून 2024

प्रश्न 2446 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न था। मैंने सुना है कि मीन-शनि योग, जिसके बारे में आप कहते हैं कि वह मार्च 2025 में होगा, वह गुप्त रूप से 2 नवंबर 2024 को घटित होगा। क्या यह सही है?

उत्तर: आपने गलत सुना है। यह 29 मार्च 2025 को शाम 5:30 बजे होगा। कुछ विशेष स्थानों पर एक, दो या पाँच घंटे तक का अंतर हो सकता है, लेकिन होगा उसी दिन। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 51:31 · 3 जून 2024

प्रश्न 2447 मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें समुद्र से एक विशाल लहर आती दिखी। मैं और एक अन्य पंडित जी एक पलंग पर बैठे थे। वे डर गए थे, पर मैंने उनसे कहा कि डरिए मत, भगवान माधव हमारी रक्षा करेंगे। मैंने आकाश में बहुत से कौए उड़ते हुए भी देखे। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: कौओं को काल (समय/मृत्यु) का दूत कहा जाता है। समुद्र का जल यह संकेत करता है कि महाप्रलय (जल प्रलय) का समय निकट आ रहा है। भगवान आपको दिखा रहे हैं कि इस जल प्रलय से कितना विनाश होगा। जो माधव का नाम जप रहे हैं, वे आने वाली आपदा से सुरक्षित रहेंगे और सत्ययुग के लिए बचा लिए जाएँगे। यह शास्त्रों में लिखा है, और यह बहुत अच्छा है कि आपने इसे स्वप्न में देखा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 52:26 · 3 जून 2024

प्रश्न 2448 प्रभु जी, मैं जानना चाहता हूँ कि आपके और आचार्य सलिल के बीच क्या विवाद है?

उत्तर: देखिए, संसार में विवाद जमीन, संपत्ति या आपसी नकारात्मकता को लेकर होते हैं। मेरे पास वैसा कुछ भी नहीं है; कोई विवाद नहीं है। पर यदि किसी को मेरी कही बात पसंद नहीं आती, तो उसे बोलने का अधिकार है। हमारा देश स्वतंत्र है। हर कोई मुझसे सहमत नहीं होगा। भविष्य मालिका का प्रचार करना मेरा कर्तव्य है, मेरे कर्म में लिखा है, इसलिए मैं वही करता हूँ। मेरे गुरुदेव ने मुझे यह करने का आशीर्वाद दिया। कुछ लोगों को यह कार्य पसंद है, कुछ को नापसंद। पर मेरे मन में सबके लिए आदर है। इससे मुझे कोई सरोकार नहीं। भगवान आ चुके हैं, और वे मेरे कर्मों का न्याय कर रहे हैं। यदि मैं जगत के कल्याण के लिए सही कार्य कर रहा हूँ, तो मुझे विश्वास है कि भगवान मुझे धर्म का प्रचार करने के लिए और आशीर्वाद देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:52 · 3 जून 2024

प्रश्न 2449 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि जब भी मैं अपने घर में भविष्य मालिका की बात करता हूँ, मेरे परिवार के सदस्य कभी संतुष्ट नहीं होते। मैं उन्हें समझाने की कोशिश करता हूँ, पर वे समझ नहीं पाते। मैंने उनसे कहा कि कलियुग की आयु केवल 5000 वर्ष है, पर वे कहते हैं कि यह 4,32,000 वर्ष है और जो पुस्तक में लिखा है वह झूठ है।

उत्तर: जब मथुरा और वृंदावन में यमुना नदी में बाढ़ आएगी, तब सब मान जाएँगे। हम उसी समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। महाप्रलय और एक बड़ी आपदा भी आने वाली है।

► यह उत्तर सुनें · 56:34 · 3 जून 2024

प्रश्न 2450 पंडित जी, ऐसा क्यों है कि मैं तो समझ पाता हूँ, पर मेरे परिवार के सदस्य नहीं समझ पाते?

उत्तर: देखिए, जिनके भाग्य में समझना नहीं लिखा है, वे नहीं समझेंगे। किसी को पहले समझना है, किसी को बाद में। नंबर एक का भक्त होगा, और नंबर दो का भक्त होगा; उसी हिसाब से सब चलेगा। पर मथुरा और वृंदावन के सभी भक्त, जब भविष्य में यमुना नदी का रौद्र रूप देखेंगे, तब कहेंगे, 'हाँ, विनाश होगा।' हमने आपको यह पहले ही बता दिया है। आप अच्छे हैं, इसीलिए आप समझ गए।

► यह उत्तर सुनें · 57:26 · 3 जून 2024

प्रश्न 2451 पंडित जी, मैं समझता हूँ, लेकिन जब मैं अपने उन मित्रों को समझाने की कोशिश करता हूँ जिनका आचरण बुरा है और जो गंदी भाषा बोलते हैं, तो मैं उन्हें समझाता हूँ कि यह सब बंद करो और राधे नाम का जप करो। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: जो लोग भविष्य मालिका को नहीं समझते या उस पर विश्वास नहीं करते, उनसे दूर रहिए। छह-सात दिन पहले जगन्नाथ मंदिर के पास एक बड़ी अग्नि-दुर्घटना हुई। मेघनाद पाचेरी और गुंडिचा मंदिर की चारदीवारी का पलस्तर सब गिर गया। लोगों को समझना चाहिए कि जगन्नाथ क्षेत्र में यह विनाश क्यों हो रहा है। जब पानी उनकी अपनी नाक और कानों तक पहुँचेगा, तब वे समझेंगे। समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 57:57 · 3 जून 2024

प्रश्न 2452 पंडित जी, आप भागवत जी से प्रमाण देते हैं कि कलियुग समाप्त हो चुका है। लेकिन भागवत जी में यह भी लिखा है कि इसके पाठ के लिए कोई शुल्क नहीं लेना चाहिए। फिर भी बहुत से कथावाचक लाखों रुपये लेते हैं और फिर भी कहते हैं कि कलियुग अभी बाल्यावस्था में है। आपको प्रमाण क्यों दिख जाता है और उन्हें क्यों नहीं?

उत्तर: देखिए, प्रमाण भागवत माहात्म्य में है और श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कंध में है। जो लोग भागवत कथा के लिए धन स्वीकार करते हैं, वे नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। वे शास्त्रों का दुरुपयोग कर रहे हैं और निश्चय ही उन्हें उसके सामने उत्तर देना पड़ेगा जिसने उनकी रचना की है। वह समय आएगा जब यह सारे संसार के सामने प्रमाणित हो जाएगा, और वही लोग अपने मुँह से कहेंगे, 'हाँ, कलियुग समाप्त हो चुका है, विनाश का चरण चल रहा है। हमें भी शरण दीजिए, हमें बचाइए।'

► यह उत्तर सुनें · 59:35 · 3 जून 2024

प्रश्न 2453 जय श्री माधव, गुरु जी। मेरा प्रश्न यह है कि त्रिसंध्या करने से क्या मेरे परिवार की रक्षा होगी, भले ही वे स्वयं यह न कर पाएँ?

उत्तर: देखिए, आपके परिवार की रक्षा भगवान के हाथ में है। जब कोई व्यक्ति त्रिसंध्या करता है, तो उसके पूर्वजों को उसका लाभ मिलता है, और करने वाले को प्रत्यक्ष फल मिलता है। परिवार को भी कुछ सकारात्मक प्रभाव मिलता है। किंतु कलियुग की विपत्तियों से पूर्ण रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि परिवार का हर सदस्य त्रिसंध्या करे।

► यह उत्तर सुनें · 01:03:01 · 3 जून 2024

प्रश्न 2454 मेरा प्रश्न यह है कि लोग कहते हैं कि भगवान कल्कि कलि पुरुष (कलि नामक असुर के रूप) का वध करने आएँगे। क्या यह सच है?

उत्तर: हाँ, लोग कहते हैं कि भगवान कल्कि कलि असुर का वध करने आएँगे। देखिए, कलियुग में करोड़ों कलि-असुर हैं। उन सबका विनाश करने के लिए भगवान कल्कि धर्म की स्थापना करेंगे, भक्तों की रक्षा करेंगे और पापियों का नाश करेंगे। यह केवल एक असुर की बात नहीं है; करोड़ों हैं जिनका विनाश आवश्यक है। जब तक वे असुर पृथ्वी पर हैं, सत्ययुग नहीं आ सकता। इसलिए उनका विनाश आवश्यक है, क्योंकि धर्म सिकुड़ गया है और पाप बढ़ गया है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:04:03 · 3 जून 2024

प्रश्न 2455 जगन्नाथ संस्कृति में एक कथा है कि जब भगवान श्रीकृष्ण को बाण लगा, तो बाद में उनके शरीर का दाह-संस्कार किया गया और उनका हृदय अजला रह गया। क्या यह कथा सत्य है, या वे भागवत में वर्णित अनुसार अपने भौतिक स्वरूप में सीधे अपने दिव्य धाम चले गए?

उत्तर: देखिए, जगन्नाथ संस्कृति में लिखा है कि कृष्ण ही जगन्नाथ हैं। क्योंकि भगवान कृष्ण महाविष्णु हैं, और जगन्नाथ भी वही हैं। एक श्लोक कहता है कि एक समय आप भगवान कृष्ण के रूप में यमुना के तट पर गोपियों के साथ विराजमान थे, और अब आप नीलाचल क्षेत्र में निवास करते हैं। जो कृष्ण हैं, वही जगन्नाथ हैं। 'जगन्नाथ संस्कृति' ग्रंथ, जो स्कंद पुराण का भाग है, स्पष्ट रूप से कहता है कि जगन्नाथ ही आदि, सनातन ब्रह्म हैं। सभी देवता जगन्नाथ के शरीर से पृथ्वी पर उत्पन्न होते हैं और फिर उसी में विलीन हो जाते हैं। यही सत्य है। जैसे गोलोक वैकुंठ है, वैसे ही पृथ्वी पर भी एक वैकुंठ है, जो जगन्नाथ का क्षेत्र है। सभी अवतार भगवान जगन्नाथ से उत्पन्न होते हैं और उन्हीं में विलीन होते हैं, और वही हुआ। जय।

► यह उत्तर सुनें · 01:05:50 · 3 जून 2024

प्रश्न 2456 कुलदेवता या देवी की उपासना करने से क्या मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है?

उत्तर: किसी भी देवी-देवता की उपासना करने से मनुष्य को भौतिक सुख प्राप्त होता है। और यदि हम किसी देवता की उपासना करते हैं, तो उस उपासना का फल भगवान कृष्ण ही प्रदान करते हैं, जैसा गीता में कहा गया है। तो फिर सीधे भगवान कृष्ण की शरण में क्यों न आएँ? इस प्रकार देवताओं की कृपा के साथ-साथ हमें महाविष्णु की कृपा भी प्राप्त होती है, और हमारा जीवन अधिक सरल और आनंदमय हो जाता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:08:35 · 3 जून 2024

प्रश्न 2457 प्रभु, मैं जानना चाहता हूँ कि हमें कैसे पता चले कि हम भक्ति के सही मार्ग पर हैं, कि जो हम कर रहे हैं वह सही है, या कि हम पर भगवान की कृपा है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, त्रिकाल संध्या करना, भागवत जी पढ़ना, और माधव नाम का जप करना... जो भी मनुष्य इस मार्ग पर चलता है वह साधारण नहीं है; उसे ऋषि, मुनि या देव समझिए। यह पहला संकेत है। दूसरा, त्रिकाल संध्या करते समय जम्हाई आना या आँखों में आँसू आना — यह दूसरा संकेत है कि भगवान आपकी उपासना स्वीकार कर रहे हैं और आप परमात्मा से जुड़ रहे हैं। तीसरा, जब भगवान आपके स्वप्न में आकर आपका मार्गदर्शन करें, तब आप जान जाएँगे कि वही आपके रक्षक हैं और आपको सही मार्ग पर ले जा रहे हैं। ये तीनों तत्व आपको त्रिकाल संध्या में मिलेंगे। इसे कीजिए और आगे बढ़िए। समय के साथ सब कुछ प्रमाणित हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:09:32 · 3 जून 2024

प्रश्न 2458 जो लोग त्रिसंध्या करते हैं और इस मार्ग पर हैं, यदि वे 'खंड प्रलय' के दौरान देह त्याग दें, तो उनका क्या होगा? क्या उनका जन्म सत्ययुग में होगा?

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या के मार्ग पर केवल वही देव, भक्त, ऋषि और संत चलते हैं जिन्होंने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। भगवान ने उनके लिए ही यह मार्ग तैयार किया है ताकि वे उन्हें प्राप्त कर सकें। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे भगवान के लोग हैं। जब महाप्रलय होगा, तो मेरे विचार में, वे मरेंगे नहीं। वे सत्ययुग में जाएँगे और भगवान के प्रत्यक्ष संपर्क में रहेंगे। सत्ययुग के बाद वे वैकुंठ जाएँगे। केवल ऐसी ही आत्माएँ त्रिकाल संध्या करती हैं; बाकी लोग तो इसकी आलोचना करते हैं या प्रश्न उठाते हैं। जो भक्त ब्रजवासी, गोपी और गोप बनकर पृथ्वी पर आए हैं, वे त्रिकाल संध्या करते हैं और माधव नाम का जप करते हैं। उन्हें कुछ नहीं होगा। वे आगे बढ़कर भगवान की शरण में और फिर वैकुंठ जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:11:18 · 3 जून 2024

प्रश्न 2459 आपकी सभा नेपाल में कब तक हो सकती है?

उत्तर: नेपाल में सभा अवश्य होगी। वहाँ भविष्य पुराण की शिक्षाओं और भगवान कल्कि की लीलाओं का प्रचार होगा। नेपाल एक दिव्य भूमि है, भगवान बुद्ध की भूमि। वहाँ भी भक्त हैं, और उन्हें बचाना आवश्यक है। इसी कारण नेपाल में अनेक सभाएँ होंगी ताकि भक्तों के उद्धार का कार्य हो सके। यह भगवान जगन्नाथ की इच्छा है। समय आने पर यह निश्चय ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 01:12:54 · 3 जून 2024

प्रश्न 2460 पिताजी, मैं लुधियाना से हूँ। यहाँ अधिकांश लोग गुरु नानक देव जी या पीर-फकीरों को मानते हैं। मुझे दूसरे भक्तों को ढूँढ़ने में बहुत कठिनाई होती है, और संध्या करने में मुझे बहुत परेशानी होती है। अगर किसी को पता चल जाए तो वे मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं बड़ी मुश्किल में हूँ। कृपया बताइए कि मैं भक्तों को कैसे ढूँढ़ूँ।

उत्तर: बेटी, किसी को मत बताओ। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिन्हें आना है, वे आ जाएँगे। इसीलिए हम ये ऑनलाइन बैठकें करते हैं। जब भगवान के सारे भक्त बच जाएँगे, तब मेरा कार्य पूर्ण हो जाएगा। दूसरी बात, सिख समुदाय और गुरु नानक देव हमारे लिए पूजनीय हैं। गुरु नानक देव स्वयं भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने आए थे और उन्होंने अपने ग्रंथों में कल्कि अवतार के बारे में लिखा है। उन्होंने लिखा है कि सभी धर्मों और संप्रदायों के भक्त एकत्र होंगे। जो भक्त नहीं हैं, वे नहीं समझेंगे। हमारा कार्य भक्तों को बचाना है। किसी को समझाना आवश्यक नहीं है। आप बस वही कीजिए जो मैंने आपसे कहा है। माधव की शरण में आइए। वह समय आएगा जब रोग और विपत्तियाँ आने पर सब उद्धार माँगेंगे। उस समय आप कह सकती हैं, 'अब कोई आवश्यकता नहीं है।'

► यह उत्तर सुनें · 01:13:57 · 3 जून 2024

सत्र 129 · प्रश्न 2461–2494

L139: क्या भगवान कल्कि की लीला शुरू हो चुकी है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 6 जून 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2461 जय श्री माधव, पिताजी। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए था।

उत्तर: ठीक है, कोई बात नहीं। मेरा आशीर्वाद सदैव आपके साथ है। जैसा आपको बताया गया है, वैसा ही करते रहिए, और आपको भगवान की और अधिक कृपा प्राप्त हो। जय।

► यह उत्तर सुनें · 03:45 · 6 जून 2024

प्रश्न 2462 भगवान की दिव्य लीला, उनकी गुप्त लीला चल रही है। क्या मनुष्य इस लीला को समझ सकता है, जिसे अत्यंत गुप्त बताया गया है?

उत्तर: भगवान की दिव्य लीला केवल भक्तों के लिए ही अनुभव की वस्तु है; यह सबके लिए अनुभव नहीं है। फिर भी, आपने पूरे विश्व में परिवर्तन देखे हैं, जैसे अयोध्या जैसे स्थान में हुआ परिवर्तन। यह प्रचंड Kali Yuga का प्रभाव है और विनाश का संकेत है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 04:13 · 6 जून 2024

प्रश्न 2463 Trisandhya करने के बाद मुझे नींद आती है और जम्हाइयाँ आती हैं। यह क्या हो रहा है, पिताजी?

उत्तर: देखिए, जब आप Trisandhya करेंगे, तो आपको जम्हाई आएगी, नींद आएगी, और आँखों में आँसू आएंगे। ये तीनों ही बातें दिखाई देंगी। जम्हाई आने का कारण यह है कि जब हमारा शरीर आध्यात्मिक तत्व से जुड़ता है, तो यह हमारे शरीर में आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रवेश का संकेत है। दूसरा, आँखों से आँसू उसी के प्रभाव के कारण आते हैं। तीसरा, कभी-कभी नींद भी आती है, क्योंकि निद्रा देवी बाधा उत्पन्न करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि Trisandhya तपस्या का मार्ग है, और Kali Yuga में तपस्या करना कठिन है। इसलिए, इस सरल धारा के माध्यम से मनुष्य भगवान को प्राप्त करेगा। यह घटना घटित होती है।

► यह उत्तर सुनें · 05:36 · 6 जून 2024

प्रश्न 2464 पिताजी, मुझे दो बार एक सपना आया है। मुझे पता है कि भविष्य में Kali Yuga समाप्त होगा। तो, जब मुझे यह पहले से ही पता है, तो मुझे बार-बार ये सपने क्यों दिखाई देते हैं? मैंने देखा कि आकाश में बादल फट रहे हैं, और सब लोग इधर-उधर भाग रहे हैं। ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा हो कि एक घंटे में दुनिया समाप्त हो जाएगी। सपने में मैंने ज़ोर से "जय श्री माधव" का जाप करना शुरू कर दिया, और तीन-चार अन्य आवाज़ें भी उसमें शामिल हो गईं। जब मुझे पहले से ही पता है कि यह होने वाला है, तो मुझे यह क्यों दिखाई दे रहा है?

उत्तर: ठीक है, माता। सही समय पर Trisandhya कीजिए। और एक बात, जो सपना आप देख रही हैं, वह इस बात का संकेत है कि आपको यह संदेश अन्य भक्तों तक पहुँचाना है। ऐसा समय आ रहा है, और इसी तरह संसार के भक्त बचाए जाएँगे। भगवान बार-बार कुछ लोगों को, जिनके माध्यम से कोई कार्य होना है, यह अनुभव कराते हैं कि क्या होने वाला है, ताकि वे अन्य भक्तों को बचाने में सहायता कर सकें। जय।

► यह उत्तर सुनें · 06:33 · 6 जून 2024

प्रश्न 2465 हम भारत में नहीं हैं। Trisandhya के लिए हमें स्थानीय समय का पालन करना चाहिए या भारतीय समय का?

उत्तर: जो विदेश में रहते हैं, उनके लिए मैंने जो समय बताया है, वह हमारे देश के मानक समय के अनुसार है। जो अन्य देशों में, विदेश में रहते हैं, उन्हें उस स्थान के स्थानीय समय का पालन करना होगा—कब सूर्य उदय होता है, कब सूर्य अस्त होता है, और कब मध्याह्न होता है। हमें उसी स्थान के समय का पालन करना है जहाँ हम रहते हैं। सूर्य की गति, ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति, और स्थानीय समय के अनुसार Trisandhya करना आवश्यक है। भारत में, मैंने जो समय बताया है उसी समय कीजिए। जो विदेश में रहते हैं, वे ब्रह्म मुहूर्त, मध्याह्न और संध्या (अर्थात सूर्यास्त से पहले) के अपने स्थानीय समय का पालन करें। ये तीन समय हैं। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 08:02 · 6 जून 2024

प्रश्न 2466 ओडिशा में अब भाजपा की सरकार बन रही है, तो क्या इस बार श्री पटनायक सत्ता में नहीं रहेंगे?

उत्तर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। देखिए, भविष्य पुराण में लिखा था कि Kali Yuga के अंत में, स्वर्गीय बीजू पटनायक के पुत्र, श्री नवीन पटनायक, पूरे भारत में अपनी कीर्ति और सम्मान सिद्ध करेंगे, और लोग उन्हें पसंद करेंगे। यह भी लिखा था कि तेलंगाना में शासन होगा, जो कि हो भी चुका है। और श्री नवीन पटनायक के शासन के बारे में Bhavishya Malika में जो लिखा था, वह भी घटित हो चुका है। अब, Satya Yuga के आरंभ के लिए और ओडिशा से भगवान Kalki की दिव्य लीला के प्राकट्य के लिए, आध्यात्मिक तत्व में परिवर्तन आवश्यक है। यह हो रहा है क्योंकि यह भगवान की इच्छा है। आगे जो कुछ भी होगा, वह भगवान की इच्छा से होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 09:16 · 6 जून 2024

प्रश्न 2467 गुरुजी, कुछ दिनों से मैं सुबह 3:30 बजे जाग जाती हूँ, और ऐसा लगता है कि मेरे सामने किसी प्रकार की वायु है। यह एक महीने से हो रहा है। यह क्या समस्या है? ऐसा लगता है जैसे एक गर्म हवा हमेशा मेरे पास रहती है।

उत्तर: देखिए, माता, यह बहुत अच्छा है। प्रातः 3:45 बजे देवताओं का संचार आरंभ होता है, उनका प्रभाव शुरू होता है, और वे भगवान की आराधना करने लगते हैं। आप ठीक उसी समय जागती हैं, इसका अर्थ है कि देवता आपको भी जगा रहे हैं, यह कहते हुए कि उस समय उनके साथ Trisandhya कीजिए। कुछ अच्छा होने वाला है। संभवतः यह भगवान की इच्छा है। यदि आप उस समय जागती हैं, तो उसी समय Trisandhya कीजिए। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 10:47 · 6 जून 2024

प्रश्न 2468 मैं जयपुर से मुक्ता हूँ। मैं जानना चाहती हूँ, जिन तीन समयों पर हम Trisandhya करते हैं, उनके अलावा आपने 'माधव' नाम के जाप का उल्लेख किया है। तो, माला पर जाप करने के अलावा, क्या हम अन्य कार्य करते हुए मन ही मन नाम का जाप कर सकते हैं? क्या हम ऐसा कर सकते हैं, या इसमें कोई समस्या है?

उत्तर: देखिए, Trisandhya के समय, वही मंत्र जपिए जो मैंने आपको बताए हैं। अन्य समयों में, आप माधव, या कृष्ण, या राम का नाम जप सकते हैं। यह अधिक आनंददायक होगा और हमारे लिए पवित्रता बनाए रखेगा। दूसरी बात यह है कि 'माधव' नाम का जाप करना चाहिए क्योंकि Kali Yuga में भगवान Kalki का नाम माधव है। जिस रूप और नाम में भगवान अवतरित हुए हैं, अवतरित होने वाले हैं, या शास्त्रों में अवतरित होने का लिखा है, वह यही है। इसलिए, 'माधव' नाम का जाप कीजिए। इसे भीतर ही भीतर जपना और भी अच्छा है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 12:10 · 6 जून 2024

प्रश्न 2469 मेरी NDA की परीक्षा आने वाली है, और मैंने इसके लिए बहुत मेहनत की है। मैं देश की सेवा करना चाहती हूँ। क्या मेरा चयन होगा?

उत्तर: आप देश की सेवा करना चाहती हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण और पवित्र आकांक्षा है। यह बहुत अच्छा है, और बेटियों का राष्ट्र की सेवा में जुड़ना नए युग की शक्ति के समान है। पर एक बात, माता, देखिए: NDA की तैयारी कीजिए, समय पर Trisandhya कीजिए, और निरंतर माधव का नाम जपिए। आपको निश्चित रूप से कृपा प्राप्त होगी, और भगवान की कृपा प्राप्त करके आपकी मनोकामना भी पूर्ण होगी।

► यह उत्तर सुनें · 13:23 · 6 जून 2024

प्रश्न 2470 पिताजी, मैं हिमाचल प्रदेश से हूँ। आने वाले प्रलय के संबंध में हिमाचल प्रदेश के बारे में क्या लिखा गया है?

उत्तर: देखिए, हिमाचल प्रदेश गढ़वाल क्षेत्र में है, और हिमालय पर्वत शृंखला में बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। मैंने यह पहले भी कहा है और फिर कह रहा हूँ। बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ मैदानों में बदल जाएँगी, और भौगोलिक स्थिति में बड़े परिवर्तन होंगे। परंतु भक्तों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। पापियों और दुष्कर्मियों के विनाश के लिए यह संकट उत्पन्न करेगा। शास्त्रों में कहा गया है कि हिमालय शृंखला में पंचतत्वों का महाप्रलय होगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 14:02 · 6 जून 2024

प्रश्न 2471 मैं एक सलाह देना चाहती हूँ। वीडियो का विषय था कि कल्कि की लीला शुरू हो चुकी है। आपने उसके बारे में बातें बताईं, पर पंडित जी, सभी लोगों को विषय से जुड़े प्रश्न पूछने चाहिए। इसके बजाय वे अपने निजी प्रश्न ही पूछते रहते हैं। उन्हें जो विषय चल रहा है, उससे संबंधित प्रश्न पूछने चाहिए।

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है। बेटी, आपने अच्छी सलाह दी है। यह आवश्यक है कि प्रश्न उसी विषय पर हों जो मैं प्रस्तुत करता हूँ। देखिए, मेरा सत्संग मानवता के कल्याण और मुक्ति के लिए, सत्य युग की स्थापना के लिए, और लोगों को सही मार्ग दिखाने के लिए है। परंतु लोग अभी भी अपने भौतिक और पारिवारिक मामलों में उलझे हुए हैं। यह युग परिवर्तन का समय है, मानव सभ्यता के लिए महाविपत्ति का समय है। बहुत कम लोग सोचते हैं कि हमें क्या करना चाहिए। वे इस बारे में ज़्यादा सोचते हैं कि आज या कल क्या होगा। ठीक है। मानव जीवन में लोग अपने परिवार और सांसारिक विषयों के बारे में सोचेंगे ही, पर उसके साथ आध्यात्मिक तत्व को भी जोड़ना चाहिए, क्योंकि एक समय आ रहा है जब आध्यात्मिक शक्ति से बड़ा कुछ नहीं होगा, जो हमारी और हमारी सभ्यता की रक्षा करेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:58 · 6 जून 2024

प्रश्न 2472 पंडित जी, अब 2024 है। इस पूरे वर्ष में कौन-कौन सी घटनाएँ होने वाली हैं? कृपया हमें पूरे विस्तार से सब कुछ बताइए—क्या होगा, कैसे होगा, सारी जानकारी?

उत्तर: देखिए, 2024 के बारे में लिखा है कि मानवता में बड़े परिवर्तन आएँगे। सांप्रदायिक शक्तियाँ अपनी स्थिति मज़बूत करेंगी। पूरे विश्व में शासन-व्यवस्था में अराजकता दिखाई देगी। देशों के बीच संघर्ष की नींव तैयार होगी। महँगाई और अकाल बढ़ेंगे। लोग दुर्घटनाओं से आकस्मिक मृत्यु का सामना करेंगे और बिना कारण भी, जैसे हृदयाघात से। कैंसर जैसी बीमारियाँ फैलती रहेंगी। इसीलिए मैं आपको त्रिसंध्या के बारे में बता रहा हूँ। 2024 विनाश के उत्सव की नींव बनेगा। विनाश का कार्य 2025 में आरंभ होगा। ऐसे समय में भगवान की शरण लेने के अलावा कुछ नहीं है। हर घर में त्रिसंध्या और भागवत का पाठ होना चाहिए ताकि लोगों की रक्षा हो सके। यह कलह और विश्वासघात का समय होगा। मोह में खोए लोग अपने जीवन के वास्तविक सार की ओर नहीं बढ़ पाएँगे। यह समय भगवान कल्कि की उस गुप्त लीला का समय है जो धर्म स्थापना की नींव रखने के लिए है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:44 · 6 जून 2024

प्रश्न 2473 जब मैं सुबह और दोपहर में त्रिसंध्या करता हूँ, तो मेरा मन और आत्मा उतने प्रसन्न नहीं होते जितने शाम को करने पर होते हैं। साथ ही, मुझमें एक दोष है: मुझे बहुत जल्दी क्रोध आ जाता है। कृपया इसका उपाय बताइए। छोटी-छोटी बातों पर मुझे बहुत गुस्सा आ जाता है।

उत्तर: देखिए, यह संसार भौतिक संसार है। हम यहाँ रहने के लिए नहीं आए हैं, न ही लड़ने के लिए आए हैं। यह संसार नश्वर है। हमें अपने कर्म करने हैं और उन्हीं के द्वारा मुक्ति प्राप्त करनी है। बस यह सोचिए, "यह संसार मेरा नहीं है। भगवान ने मुझे अच्छे कर्म करने और फिर चले जाने के लिए भेजा है।" जब आप ऐसा सोचेंगे, तो "मैं, मेरा, तुम, तुम्हारा" की शक्ति कम हो जाएगी, और आपका ध्यान भगवान पर बना रहेगा। यदि हमें यहाँ रहना ही नहीं है, तो फिर लड़ाई क्यों?

► यह उत्तर सुनें · 20:25 · 6 जून 2024

प्रश्न 2474 सुबह और दोपहर में ऐसा लगता है कि मैं पूरी एकाग्रता से संध्या नहीं कर पाता, पर शाम को ठीक रहता है। कृपया इसका कारण बताइए।

उत्तर: ठीक है, बाबा। यह माया और कलियुग के प्रभाव के कारण है। इसी वजह से मन में द्वंद्व उठता है। इसकी चिंता मत कीजिए। यह विरोध आता रहेगा, पर फिर भी हमें करना है।

► यह उत्तर सुनें · 21:29 · 6 जून 2024

प्रश्न 2475 त्रिसंध्या कब करनी चाहिए? बहुत से लोग कहते हैं कि कुछ समय पर नहीं करनी चाहिए।

उत्तर: देखिए, पहली संध्या ब्रह्म मुहूर्त से लेकर सूर्योदय के आधे घंटे बाद तक है। मध्याह्न सुबह 11:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक है। और सायंकालीन संध्या सूर्यास्त से आधा घंटा पहले से सूर्यास्त के आधे घंटे बाद तक है। इन्हीं समयों में करनी चाहिए। जय जगत।

► यह उत्तर सुनें · 21:54 · 6 जून 2024

प्रश्न 2476 मासिक धर्म के दौरान क्या हम भागवत PDF से पढ़ सकते हैं?

उत्तर: नहीं। उस समय आप त्रिसंध्या के स्तोत्रों का जप कर सकती हैं, पर मंदिर या पूजा-घर में नहीं। पढ़ना संभव नहीं है। परंतु उस समय आप अलग स्थान पर बैठकर मन ही मन त्रिसंध्या के मंत्रों का जप कर सकती हैं, जैसे भगवान महाविष्णु के सहस्रनाम, दशावतार और दुर्गा माधव स्तुति।

► यह उत्तर सुनें · 22:46 · 6 जून 2024

प्रश्न 2477 अपने भक्ति भाव को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

उत्तर: देखिए, भक्ति भाव बढ़ाने के लिए मैं सदैव कहता हूँ कि माधव के नाम का जप और गोपी लीला का पाठ भक्ति लाएगा। रामचरितमानस का सुंदरकांड पढ़िए, गोपी लीला पढ़िए, और भगवान की महिमामयी लीलाओं तथा भक्त और भगवान के संबंध के बारे में जो शास्त्र हैं, उन्हें पढ़िए। इन्हें पढ़ने से परिवर्तन आएगा क्योंकि शास्त्र भक्ति के ज्ञान का मार्ग हैं। इसलिए जब भी समय मिले, भगवान के नाम का जप कीजिए। मन को सांसारिक चीज़ों से हटाकर अध्यात्म में लगाइए; भक्ति प्रकट होगी। उदाहरण के लिए, प्रह्लाद जैसे भक्त के बारे में सोचिए—उन्होंने कितना कष्ट सहा, पर उनका कुछ नहीं बिगड़ा क्योंकि भगवान उनके साथ थे। इसी प्रकार जानिए कि "मेरे भगवान मेरे साथ हैं, यह सब माया है।" इसलिए अपना मन भगवान में लगाइए और बार-बार उनकी महिमा तथा उनकी लीलाओं का चिंतन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 23:31 · 6 जून 2024

प्रश्न 2478 त्रिसंध्या का प्रातःकाल का समय सुबह 4 से 6 बजे तक है, पर मैं 7 या 8 बजे के आसपास कर पाती हूँ। दोपहर वाली कभी भूल जाती हूँ या देर से करती हूँ। साथ ही, जब मैं त्रिसंध्या करती हूँ तो मेरा तीन साल का बच्चा मुझे परेशान करता है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: भगवान से प्रार्थना कीजिए, "प्रभु, मुझे समय पर त्रिसंध्या करने की शक्ति दीजिए।" भगवान आपको आशीर्वाद दें। कोई समस्या नहीं है; हम बच्चे को गोद में लेकर भी त्रिसंध्या कर सकते हैं। और यदि बीच में बच्चे कुछ परेशानी करें, तो आप रुककर, उन्हें संभालकर, फिर आगे कर सकती हैं। कोई दिक्कत नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि आप अपने बच्चे की परेशानी को अनदेखा करें। आप उन्हें गोद में लेकर, उनके पास बैठकर, या उनकी समस्या सुलझाकर कर सकती हैं। उसमें कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:29 · 6 जून 2024

प्रश्न 2479 वायु पुराण के अनुसार चारों युगों की कुल आयु 43,20,000 वर्ष है, पर भोगकाल केवल 12,000 दिव्य वर्ष है। जैसे पाप के कारण कलियुग की आयु घटाई गई, क्या वैसा ही सत्य युग, त्रेता युग और द्वापर युग के साथ भी हुआ? और यदि हुआ, तो किस कारण से, जबकि उन युगों में इतना पाप नहीं था?

उत्तर: जय जगन्नाथ। बहुत अच्छा प्रश्न। सत्य युग का भोगकाल ऋषियों और तपस्वियों के अभिमान, अहंकार, शाप और स्वेच्छाचार के कारण घटाया गया। वे समुद्रों को सुखा देते थे और अपने वचनों से मनुष्यों को जला देते थे। उनके अभिमान के कारण सत्य युग का नाश हुआ। त्रेता युग में यह कामवासना थी, जो बहुत बढ़ गई। द्वापर युग में लोगों में सदाचार और विचारों की शुद्धता नहीं रही, जिससे उसका अंत हुआ। और कलियुग में धर्म के चार स्तंभ—सत्य, शौच, दया और क्षमा—लुप्त हो गए। इसीलिए कलियुग की आयु भी घट गई, और केवल 5,000 वर्ष शेष रहे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 27:18 · 6 जून 2024

प्रश्न 2480 जय श्री माधव, पिताजी। मैं कई शारीरिक रोगों से पीड़ित हूँ। एक ठीक होता है तो दूसरा शुरू हो जाता है। मैं त्रिसंध्या करता हूँ, पर मेरा प्रारब्ध समाप्त होता नहीं दिखता। पिताजी, मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है।

उत्तर: देखिए, त्रिसंध्या करने से आपके भाग्य में लिखे पाप और कर्म धीरे-धीरे कटते जाएँगे। एक काम कीजिए: श्रीमद्भागवत से 'नारायण कवच' का पाठ कीजिए। यह एकादश स्कंध में एक रचना है, जिसे पढ़ने से व्यक्ति के प्रारब्ध कर्म कट जाते हैं और रोग व बीमारियाँ भी ठीक होती हैं। इसे दिन में किसी भी समय पढ़िए। भागवत का नारायण कवच अत्यंत शक्तिशाली है। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 30:41 · 6 जून 2024

प्रश्न 2481 मैं गाज़ियाबाद से दुर्गेश हूँ। पिछले जुलाई में मेरे पति का देहांत हो गया। सब कहते हैं कि मेरे बुरे कर्मों के कारण मेरे साथ ऐसा हुआ। क्या यह सच है?

उत्तर: आपका कोई भी कर्म बुरा नहीं है। यह आपके पति की कुंडली में मंगल दोष के कारण हुआ। इसमें आपका कोई दोष नहीं है। हर किसी का जन्म और मृत्यु उसके अपने कर्मों के अधीन है। वे अपने कर्म लेकर आए थे, उनके कर्म समाप्त हुए और उनका देहांत हो गया। इसमें आपका कोई दोष नहीं है, माता। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि उनकी कुंडली में मंगल दोष था। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:04 · 6 जून 2024

प्रश्न 2482 अगर उनकी कुंडली में मंगल दोष था, तो हमें यह कैसे पता चल सकता था?

उत्तर: ज्योतिषियों को दिखाने से पता चल जाता। कारण था बुध और मंगल का प्रभाव—बुध दोष और मंगल दोष दोनों। इन्हीं के कारण बीमारी आई, और सही समय पर उसका उपचार नहीं हो सका, जिससे उनकी मृत्यु हुई।

► यह उत्तर सुनें · 33:42 · 6 जून 2024

प्रश्न 2483 मुझे आज आपका आशीर्वाद चाहिए। आज मेरा जन्मदिन है, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए।

उत्तर: मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि आप धर्म, अर्थ, कर्म और मोक्ष की ओर प्रगति करें। आप अपने परिवार और अपने संसार को सुख दें, और आपके हृदय में भगवान के प्रति भक्ति जागे। मेरा आशीर्वाद। जय।

► यह उत्तर सुनें · 36:44 · 6 जून 2024

प्रश्न 2484 कई महीनों से मेरे मन में अच्छे कर्म करने की इच्छा हो रही है, जैसे वेद पढ़ना या संस्कृत सीखना। पिछले कुछ दिनों से मैं उस जगन्नाथ अष्टकम का पाठ करने के बारे में सोच रहा था जिसका आपने उल्लेख किया था। आज मैं उसे घर ले आया और पाठ कर रहा हूँ। ये विचार मेरे भीतर से आ रहे हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जय जगन्नाथ। अर्थ यह है कि त्रिसंध्या के द्वारा आपका मन शुद्ध हो गया है। सच्चे कर्म का सार आपके मन में प्रकाशित हो रहा है, और आप आध्यात्मिकता की ओर बढ़ रहे हैं। यह भगवान की कृपा के कारण है। भगवान की कृपा के बिना किसी भी मनुष्य में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता। किसी व्यक्ति का आध्यात्मिक शक्ति की ओर आकर्षित होना बहुत अच्छी बात है। यही मानव जीवन का लक्ष्य है। बहुत अच्छा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:42 · 6 जून 2024

प्रश्न 2485 आज ओडिशा में दो स्थानों, भद्रक और बालासोर में बहुत तेज़ आवाज़ सुनाई दी। कृपया हमें इसके बारे में बताइए, वह क्या था?

उत्तर: देखिए, मैंने इसका उल्लेख पहले किया था। आज दोपहर 2 बजे भद्रक और बालासोर में एक मिनट में तीन बार तेज़ आवाज़ सुनाई दी। सरकार ने अभी तक इसे स्पष्ट नहीं किया है। मालिका में लिखा है कि अंतरिक्ष से एक महान, भयानक ध्वनि आएगी। एक समय आएगा जब इतनी तेज़ आवाज़ सुनाई देगी कि लोग मर जाएँगे, अंधे हो जाएँगे और अपनी श्रवण शक्ति खो देंगे। यह एक संकेत है। भविष्य पुराण में लिखा था कि अंतरिक्ष से पृथ्वी पर तेज़ आवाज़ें आएँगी। यह कल्कि की दिव्य लीला के अंतर्गत देवी-देवताओं की ध्वनि हो सकती है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 39:07 · 6 जून 2024

प्रश्न 2486 हमें श्री माधव का नाम जपने के लिए कहा जाता है। हम माधव को कैसे प्रसन्न कर सकते हैं? उनके प्रति मेरा प्रेम हर दिन बढ़ता है, लेकिन कभी-कभी लगता है कि प्रभु सुन नहीं रहे, और मुझे गुस्सा आ जाता है। हम उन्हें और अधिक कैसे प्रसन्न कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, माधव यह चाहते हैं कि आप ऐसे कर्म करें जो सही हों और वेदों के अनुसार हों। अच्छे कर्मों में त्रिसंध्या, अपने माता-पिता की सेवा और शास्त्रों का पठन शामिल है। जब आप अच्छे और सही कर्म करते हैं, तो भगवान आपके निकट आते हैं। इसलिए अपने कर्तव्यों का पालन करें, भक्ति करें, और स्वयं को भगवान को समर्पित कर दें, ताकि भगवान समझें, "मैं ही इनका एकमात्र सहारा हूँ।" जब भगवान इसे स्वीकार कर लें, तो अपने जीवन का उद्देश्य पूर्ण समझिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:38 · 6 जून 2024

प्रश्न 2487 कई दिनों से मुझे लग रहा है कि मुझे भविष्य मालिका का प्रचार करना चाहिए। कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए। मैं पुणे, महाराष्ट्र से हूँ, और यह प्रेरणा मेरे भीतर से आ रही है। जय श्री माधव।

उत्तर: देखिए, माता, ऐसी प्रेरणा केवल सबसे भाग्यशाली लोगों के मन में ही आती है। भगवान आपकी इच्छा पूरी करें। मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ। भविष्य मालिका का पूरे ब्रह्मांड में प्रचार होना आवश्यक है क्योंकि लोग अंधकार में हैं। अपने हृदय की इच्छा पर कार्य कीजिए, माता। इसके लिए आपको इधर-उधर भागने की ज़रूरत नहीं है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन व्यवस्थाएँ हैं। उनके माध्यम से आप भविष्य मालिका का संदेश दुनिया को, अपने रिश्तेदारों को, और अपने उन परिचितों को दे सकती हैं जिनकी रुचि है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:05 · 6 जून 2024

प्रश्न 2488 आपने कहा था कि बीजू पटनायक के पुत्र नवीन पटनायक मुख्यमंत्री चुने गए थे और वे कलियुग के अंतिम शासक हैं। तो सत्ययुग में शासक कौन होगा?

उत्तर: कलियुग के अंतिम शासक, स्वर्गीय बीजू पटनायक के पुत्र, ओडिशा में हैं। मैंने यही कहा था। अब सत्ययुग आरंभ हो चुका है। शास्त्रों में लिखा है कि भगवान कल्कि ओडिशा की भूमि से अवतार लेंगे, और धर्म का पहला प्रकाश वहीं प्रकट होगा। वे पहले अपने ही घर, ओडिशा से धर्म की स्थापना करेंगे, और फिर उसे पूरे विश्व में विस्तारित करेंगे। सत्ययुग के राजा की नींव ओडिशा से ही बनाई जा रही है। भविष्य में पूरी दुनिया से संत ओडिशा आएँगे, और धर्म के प्रचार का कार्य बढ़ेगा। यह भगवान की इच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 43:40 · 6 जून 2024

प्रश्न 2489 नए मुख्यमंत्री के बारे में क्या?

उत्तर: देखिए, संभवतः शास्त्रों में सबके बारे में लिखा है, लेकिन मैंने उसे पढ़ा नहीं है। हालाँकि, मैंने भविष्य पुराण में पढ़ा है कि धर्म सबसे पहले ओडिशा से उठेगा। अच्युतानंद ने लिखा है कि उत्कल (ओडिशा) से पूरे विश्व के लिए धर्म का प्रभाव उत्पन्न होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:29 · 6 जून 2024

प्रश्न 2490 मांसाहार छोड़ने के कितने दिनों बाद मुझे त्रिसंध्या शुरू करनी चाहिए? कृपया बताइए, गुरुजी।

उत्तर: देखिए, अब जब आपने मांसाहार छोड़ दिया है, तो आप त्रिसंध्या शुरू कर सकते हैं। कोई प्रतीक्षा अवधि आवश्यक नहीं है। जिस दिन आप जुड़ें, उसी दिन से शुरू कर सकते हैं। त्रिसंध्या के द्वारा आध्यात्मिक तत्व और भक्ति बढ़ेगी। आपने बहुत बड़ा त्याग किया है। कलियुग में मांसाहार छोड़ना सबसे बड़ी चुनौती है। मैं इसके लिए आपकी सराहना करता हूँ। क्योंकि सत्ययुग में कोई भी मांसाहार नहीं करेगा। जो अभी इसे छोड़ देंगे, वे सत्ययुग की मानवता की ओर बढ़ेंगे। यह अद्भुत है। आज से ही शुरू कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 46:28 · 6 जून 2024

प्रश्न 2491 मैं इस धारा में हूँ, और प्रभु ने मुझे बहुत सारे अनुभव दिए हैं। मेरी एक प्रार्थना है और माधव जी से एक छोटी-सी शिकायत भी है। कृपया आप उनसे कहिए कि वे हमारे साथ कुछ और सुंदर लीलाएँ करें? क्योंकि उन्होंने हाल में कोई बड़ी लीला नहीं की है।

उत्तर: देखिए, जब संसार की सारी समस्याएँ हम पर आएँगी, तब भक्त जानेंगे कि माधव क्या हैं। क्योंकि माधव अमृत हैं, उनका नाम संजीवनी बूटी है। यह धारा उन्हीं तक पहुँचती है जिनके भाग्य में लिखा है, जो भगवान की कृपा से सत्य युग की रचना करने के लिए इस पृथ्वी पर आए हैं। आप सब वही हैं जिन तक यह तत्त्व जाता है। मैं तो केवल इसका प्रचार करता हूँ, पर आप सबसे अधिक भाग्यशाली हैं क्योंकि भगवान ने पहले ही आपके भाग्य में यह लिख दिया है। कई युगों तक तप और सत्कर्म करने के बाद अब आप भगवान के कार्य से जुड़े हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 50:13 · 6 जून 2024

प्रश्न 2492 पंडित जी, आपकी भविष्य मालिका पुस्तक का दूसरा भाग कब प्रकाशित होगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, मैंने उसे छपाई के लिए तैयार रखा है, लेकिन जब तक भगवान की इच्छा नहीं होगी, मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा।

► यह उत्तर सुनें · 51:46 · 6 जून 2024

प्रश्न 2493 आपने कहा है कि सत्य युग आ रहा है और कलियुग समाप्त हो चुका है। इसका अर्थ है कि अमेरिका को जाना ही होगा, है न? तो रूस-यूक्रेन युद्ध विश्व युद्ध में कब बदलेगा, और अमेरिका पानी में कब डूबेगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा है। देखिए, विश्व युद्ध कुछ समय तक होगा। उसके बाद, जब भगवान कल्कि अपनी लीला रचेंगे, उस समय अमेरिका और यूरोप जल में डूब जाएँगे। यूक्रेन, रूस और अमेरिका के बीच जो युद्ध चल रहा है, वह चलता रहेगा; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। और विश्व में कई नए युद्ध-मोर्चे खुलेंगे। एक समय आएगा जब भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच युद्ध शुरू होगा, और वह युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 52:05 · 6 जून 2024

प्रश्न 2494 पिता जी, मैं भागवत पढ़ती हूँ और संध्या भी करती हूँ। लेकिन जब मुझे देखने के लिए वर पक्ष आते हैं, तो जो मुझे पसंद आते हैं वे मुझे मना कर देते हैं, और जो मुझे पसंद नहीं आते वे हाँ कह देते हैं। पिछले दो वर्षों से ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: गोपी लीला पढ़िए। आपका विवाह एक अच्छे लड़के से होगा। छह महीने तक यह कीजिए; छह महीने के भीतर हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:20 · 6 जून 2024

सत्र 130 · प्रश्न 2495–2516

L140: सम्बल ग्राम में भगवान कल्कि | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 10 जून 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2495 पंडित जी, मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, फिर भी मेरा स्वास्थ्य खराब ही रहता है। ऐसा क्यों?

उत्तर: मेरे प्रभु, कितना आनंद, कितना आनंद। देखिए, मेरे बच्चे, त्रिकाल संध्या का सार है लोगों को मृत्यु से बचाना। जो बड़ी बीमारियाँ आ रही हैं, जैसे कोरोना जैसी बीमारियाँ, कैंसर जैसी बीमारियाँ, हार्ट अटैक जैसी बीमारियाँ, किडनी फेल होने जैसी बीमारियाँ—बड़ी बीमारियाँ पृथ्वी पर आ रही हैं, 64 प्रकार की बीमारियाँ जिन्हें हम महामारी कहते हैं। त्रिकाल संध्या आपको इन महामारियों से बचाएगी, और लोग मरेंगे नहीं। दूसरी बात, हमारे शरीर में जो रोग होता है उसे 'व्याधि' कहते हैं। यह पूर्व जन्म के कर्म के कारण होती है। वह व्याधि स्वाभाविक है। लेकिन जो महामारियाँ मृत्यु तक ले जाती हैं, त्रिकाल संध्या का सार लोगों को उनसे बचाता है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब कोई तीन वर्ष तक त्रिकाल संध्या करता है, तो उसका मंत्र सिद्ध हो जाता है। और एक बात और बताऊँ, जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं वे बीमार तो पड़ सकते हैं, लेकिन कभी मरेंगे नहीं। कीजिए, आपको प्रभु की कृपा प्राप्त होगी। कम से कम तीन वर्ष की त्रिकाल संध्या आवश्यक है। दूसरी बात, त्रिकाल संध्या के द्वारा आप आने वाली महामारियों और प्रकृति के पंचतत्वों की आपदाओं से सुरक्षित रहेंगे, और सत्य युग में जाएँगे। डरिए मत। कीजिए और प्रभु की कृपा प्राप्त कीजिए। और दूसरी बात, जो 16 नामों का भजन आपने पढ़ा, दिन में जब भी समय मिले, उसका जप कीजिए। इससे रोग और व्याधि में कुछ राहत मिलेगी, और आपको प्रभु की कृपा प्राप्त होगी। जय!

► यह उत्तर सुनें · 10:10 · 10 जून 2024

प्रश्न 2496 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि हम क्या करें कि यदि प्रभु कृपा करें तो हमें भक्तिपूर्वक उनके चतुर्भुज नारायण रूप के दर्शन हो सकें? और मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि हम जानते हैं कि प्रभु के पार्षदों का भी चतुर्भुज रूप होता है, तो हम प्रभु के रूप और उनके रूप में भेद कैसे करें? कृपया समझाइए।

उत्तर: जय जगन्नाथ, कितना आनंद। यदि आप प्रभु के चतुर्भुज रूप के दर्शन करना चाहते हैं, तो प्रतिदिन सोने से पहले 'शान्ताकारं भुजगशयनम्...' मंत्र का कम से कम 32 बार जप कीजिए। इसका जप करके फिर सो जाइए। मेरे अनुमान से आपको प्रभु की कृपा प्राप्त होगी और स्वप्न में प्रभु के दर्शन हो सकते हैं। आप पहले से ही त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, और यह करने से और भी अच्छा होगा। दूसरी बात, भगवान एक हैं, लेकिन उनके अनंत रूप हैं। प्रभु भक्तों को उनके रूप-विषयक इच्छाओं के अनुसार दर्शन देते हैं। प्रभु एक ही हैं; कोई भेद नहीं है। जो विष्णु हैं वही राम हैं, वही कृष्ण हैं, और वही जगन्नाथ हैं। बस युग और समय के अनुसार वे भिन्न-भिन्न अवतार लेते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:26 · 10 जून 2024

प्रश्न 2497 पिता श्री जी, मैं अगरतला, त्रिपुरा से दीपमाला हूँ। मैं कल झारसुगुड़ा के आयोजन के लिए आ रही हूँ। मैं आपके आशीर्वाद की प्रार्थना कर रही हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि कल मेरी यात्रा शुभ और मंगलमय हो।

उत्तर: गोविंद (प्रभु) आपके साथ हैं, कोई समस्या नहीं है। आपके आने में कोई समस्या नहीं है, और आपके आने की सारी व्यवस्था अच्छी तरह हो जाएगी। तो आराम से आइए, आनंद से आइए। प्रभु की ओर से कोई समस्या नहीं है। जिसके पास प्रभु का नाम, भजन, त्रिकाल संध्या और प्रभु की कृपा है, उसे कुछ नहीं होगा। तो आनंद से आइए। फिर, यह झारसुगुड़ा की कथा, प्रभु की जो सात दिन की कथा चल रही है, यदि कुछ दिनों का भी समय मिले, तो आकर सुनिए। सत्संग में सभी देवता भी आते हैं। आज यहाँ कथा के दौरान माँ समलेश्वरी और एक अन्य देवी, दोनों देवियाँ, अचानक मानव शरीर में प्रकट हुईं और सब कुछ प्रकट कर दिया। ऐसी पवित्रता है इन आयोजनों की। तो आइए, प्रभु की कृपा आपके साथ है। कोई समस्या नहीं, केवल आनंद। जय!

► यह उत्तर सुनें · 15:32 · 10 जून 2024

प्रश्न 2498 मुझे डर लगता है कि कहीं मैं प्रभु के मार्ग से भटक न जाऊँ, इसलिए मैं बहुत डरा हुआ हूँ।

उत्तर: नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। देखिए, मेरे बच्चे, माया और कलियुग का प्रभाव लोगों पर, यहाँ तक कि भक्तों पर भी पड़ता है और संदेह पैदा करता है। लेकिन देखिए, जिसे प्रभु स्वीकार कर लेते हैं, वह कहाँ जाएगा? इसलिए प्रभु का नाम जपिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और किसी बात से मत डरिए, क्योंकि ब्रह्मांड में इससे बड़ा कोई सिद्धांत नहीं है। लोगों को जिस भी चीज़ की आवश्यकता है, त्रिकाल संध्या के द्वारा प्रभु की कृपा प्राप्य है। तो कीजिए, कोई समस्या नहीं है। प्रभु की कृपा आपके साथ रहे। जय!

► यह उत्तर सुनें · 17:45 · 10 जून 2024

प्रश्न 2499 पंडित जी, मैं लगभग एक वर्ष से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। मेरा कोई प्रश्न नहीं है, लेकिन मैं एक अनुभव साझा करना चाहता हूँ। पिछले 3-4 वर्षों से मुझे खुजली की गंभीर समस्या थी और 7-8 वर्षों से सीने में दर्द था। मैंने बहुत इलाज कराए, लेकिन कोई काम नहीं आया। एक वर्ष पहले जब से मैंने त्रिकाल संध्या शुरू की, खुजली और सीने का दर्द दोनों पूरी तरह समाप्त हो गए। त्रिकाल संध्या का जो अमृत आप बाँट रहे हैं, वह अनेक जीवों का कल्याण कर रहा है।

उत्तर: देखिए, मेरे बच्चे, जैसा आप कह रहे हैं, देखिए, यह त्रिकाल संध्या, जो कोई भी इसे सच्ची भक्ति से जपता है, चाहे कितना भी बड़ा दुःख, समस्या, आपदा, रोग या प्रेत-बाधा हो, बड़ी से बड़ी बीमारियाँ भी त्रिकाल संध्या के सार से ठीक हो जाती हैं। और आप पर प्रभु की कृपा है, क्योंकि देखिए, प्रभु कुछ भक्तों को आशीर्वाद देते हैं जो फिर शेष समाज को मार्ग दिखाते हैं। आपके अनुभव से अनेक लोगों का उद्धार होगा। यह बहुत आनंद की बात है। त्रिकाल संध्या के विषय में, पिछले वर्ष भी एक बेटी और बहुत से लोगों ने मुझे फोन करके बताया कि असाध्य रोग ठीक हो जाते हैं, बेरोज़गारों को नौकरी मिल जाती है, और जो बाधाओं में फँसे हैं वे उनसे मुक्त हो जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह प्रभु की कृपा है, सबसे बड़ा शॉर्टकट, अर्थात् थोड़े समय में सीधे भगवान की कृपा और साक्षात्कार प्राप्त करने का मार्ग। यह प्रभु की ही कृपा है कि हम इसे बाँट पा रहे हैं, और आप जैसे भक्तों का प्रकाश और आप जैसे भक्तों के अनुभव संसार का कल्याण करेंगे। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 18:39 · 10 जून 2024

प्रश्न 2500 पिता जी, मेरा एक प्रश्न है। मेरा बेटा तीन वर्षों तक बहुत बीमार रहा, इसलिए हमने बलि की मन्नत मानी थी। अब हमने वह सब छोड़ दिया है। इस मन्नत का समाधान कैसे करें?

उत्तर: देखिए, माता जी, प्रभु की कृपा से सब ठीक हो जाएगा। समय पर कीजिए, माधव का नाम जपिए, और इसी में आपको जो भी चाहिए, सब मिल जाएगा। संसार में जो कुछ भी संभव नहीं है, त्रिकाल संध्या का सार उन सबसे परे है। यह प्रभु का सार है, मेरा नहीं। तो कीजिए, माता जी। समय पर कीजिए, भक्ति के साथ कीजिए, और अपना ध्यान प्रभु पर रखिए। प्रभु भी आप पर ध्यान देंगे। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 21:03 · 10 जून 2024

प्रश्न 2501 पिताजी, मैं यह पूछना चाहता था कि प्रभु इस समय कहाँ हैं और क्या कर रहे होंगे?

उत्तर: देखो बेटा, यह मन, भक्ति और अनुभव की बात है, पर तुमने अच्छा प्रश्न पूछा है। देखो, जैसा मैंने कहा है, भगवान कल्कि संभल में विराजमान हैं। धर्म की स्थापना आरंभ हो चुकी है। सामान्य लोगों के लिए यह एक रहस्य है। भक्तों के लिए यह एक अनुभव है। भक्तों के लिए यह एक सुंदर और पवित्र सिद्धांत है। तो प्रभु यहीं हैं, परंतु वे अपना कार्य संपूर्ण ब्रह्मांड में कर रहे हैं। बेटा, हमें उन्हें देखना नहीं है। हमें बस उनके चरणों में जाना है, उनकी शरण लेनी है, उनका नाम जपना है और सदा उनका स्मरण करना है। वे भी तुम्हें याद रखेंगे। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 22:17 · 10 जून 2024

प्रश्न 2502 पिताजी, मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए था।

उत्तर: बेटा, आशीर्वाद तो है ही, सदैव है। पर एक बात है, मेरा आशीर्वाद तब अधिक प्रभावी और बेहतर होगा जब तुम वह करोगे जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। माधव का नाम जपो। माधव तुम्हें आशीर्वाद देंगे, और दे ही रहे हैं। इस संसार में जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे कभी पराजित नहीं होते। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 23:21 · 10 जून 2024

प्रश्न 2503 पंडित जी, मैं बार-बार आपके दर्शन और भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए आने का प्रयास करता हूँ, पर हर बार कोई न कोई विघ्न आ जाता है। कृपया कोई उपाय बताइए।

उत्तर: देखो बेटा, जब विघ्न आते हैं, तो भक्ति बढ़ती है। जब विघ्न आते हैं, तो हमारी साधना और प्रगाढ़ होती है। जब विघ्न आते हैं, तो प्रभु के प्रति हमारा आकर्षण भी बढ़ता है। तो चिंता मत करो, आगे चलकर सब कुछ अवश्य ठीक होगा। चिंता मत करो। त्रिकाल संध्या करो, और प्रभु तुम्हारे स्वप्न में दर्शन देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:22 · 10 जून 2024

प्रश्न 2504 पिताजी, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं निष्ठा के साथ त्रिकाल संध्या कर सकूँ।

उत्तर: बेटा, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। समय पर त्रिकाल संध्या करो, और भगवान तुम्हें आशीर्वाद देंगे। त्रिकाल संध्या वही कर पाते हैं जिन पर भगवान की कृपा होती है। जिन पर भगवान की कृपा नहीं होती, वे जानते हुए भी नहीं कर पाते; वे भूल जाते हैं, या समय गड़बड़ा जाता है। तो चिंता मत करो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। प्रयास करते रहो। भगवान तुम्हारी सहायता करेंगे और आशीर्वाद देंगे। तुम भी इसे कृपापूर्वक और समय पर करो। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 25:45 · 10 जून 2024

प्रश्न 2505 मेरी भक्ति बढ़ती रहे। और क्या कहूँ? मैं आपके चरण स्पर्श करता हूँ। जय श्री माधव।

उत्तर: उनकी कृपा तुम पर बनी रहे, और तुम धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ो। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 27:38 · 10 जून 2024

प्रश्न 2506 पंडित जी, मेरा प्रश्न उन लोगों के बारे में है जो भारत में अपनी ज़मीन बेचकर अमेरिका और जर्मनी जैसे दूसरे देशों में जा रहे हैं। चूँकि दूसरे देशों में विनाश अधिक भयंकर होगा, वे वहाँ कब तक सुरक्षित रह पाएँगे? क्या वे भारत लौट पाएँगे? उनका क्या होगा?

उत्तर: देखिए माताजी, भविष्य पुराण में लिखा है कि जो लोग विदेश में रह रहे हैं, उन्हें अपने देश, अपनी मातृभूमि लौटना पड़ेगा। वे वहाँ रह नहीं पाएँगे। वह समय 2025 से आरंभ होगा, पर 2026 में और बढ़ेगा। 2027 तक शायद वहाँ रहना कठिन हो जाएगा। यह शास्त्रों में लिखा है; यह भगवान की इच्छा है। पर मेरे विचार से, आगे चलकर लोग विदेश में रह नहीं पाएँगे। और भारत जैसी पवित्र भूमि में भक्त बचेंगे। भक्त विदेश में भी बचेंगे। तो ठीक है। जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं और भगवान कल्कि की शरण में रहते हैं, वे जहाँ भी हों, भगवान उन्हें आशीर्वाद देंगे। पर भविष्य पुराण में स्पष्ट लिखा है कि विदेश में रहने वाले अपने देश, अपने गाँव लौटेंगे। यह अवश्य होगा; समय आ रहा है। इसलिए, यदि आप भारत छोड़ना चाहते हैं, तो मत छोड़िए। जाएँगे भी तो लौटकर आना ही पड़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:03 · 10 जून 2024

प्रश्न 2507 पंडित जी, मैं ओम प्रकाश हूँ। आज अपनी छत पर आपका प्रवचन सुनते समय मुझे एक अद्भुत अनुभव हुआ। मुझे चंदन की सुंदर सुगंध आने लगी, और मैं समझ गया कि स्वयं प्रभु पधारे हैं।

उत्तर: देखो, तुम भाग्यशाली हो। बेटा, प्रभु ऐसे ही आते हैं। जब गोविंद आते हैं, तो अनेक भक्तों को, हजारों-लाखों भक्तों को यह अनुभव होता है। चंदन की सुगंध, अगर की सुगंध, एक दिव्य सुगंध प्रकट होती है। इसका अर्थ है कि प्रभु पधार चुके हैं। और तुम सत्संग में सम्मिलित थे, उसे देख रहे थे, इसलिए प्रभु का प्रकाश और भी अधिक प्रकाशित हुआ। यह बहुत अच्छा है बेटा। ऐसे ही प्रभु की शरण में रहो, क्योंकि प्रभु इसी प्रकार प्रकट होते हैं। कलियुग में प्रभु के लिए अपने संपूर्ण स्वरूप में दर्शन देना कठिन है, परंतु ऐसे प्रभावों और घटनाओं के माध्यम से भक्तों को सूचना मिल जाती है कि प्रभु आ रहे हैं। हजारों भक्तों को यह अनुभव हुआ है कि जहाँ कुछ भी नहीं है, वहाँ भी चंदन की सुगंध आती है। तभी समझ लो कि गोविंद पधार गए हैं। तुम भी भाग्यशाली हो। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 29:33 · 10 जून 2024

प्रश्न 2508 पंडित जी, मैं 13 दिन के पक्ष के बारे में जानना चाहता था। मैंने सुना है कि इस 13 दिन के पक्ष के दो महीने बाद बड़ी घटनाएँ आरंभ होंगी। क्या यह सही है?

उत्तर: 13 दिन का पक्ष आ रहा है, संभवतः जून के महीने में। 13 दिन का पक्ष एक महत्वपूर्ण समय है। जब युग बदलता है, जब धर्म की स्थापना होती है, जब प्रभु अवतार लेते हैं, तो यह भक्तों के लिए शुभ होता है। वर्तमान पक्ष 15 दिन का होता है। सत्य युग में पक्ष 13 दिन का होगा, 15 का नहीं। और भविष्य पुराण में लिखा है कि जब 13 दिन का पक्ष आएगा, तब भगवान कल्कि संसार के पापियों के संहार का संकल्प लेंगे, और उनकी लीला और तीव्र होगी। यह मानव सभ्यता के लिए संकेत है कि वह स्वयं को सुधारे, सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास करे, और भगवान कल्कि के चरणों में, माधव के चरणों में समर्पित हो जाए। समय कम है। 13 दिन का पक्ष एक अत्यंत विनाशकारी समय लेकर आएगा। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 31:16 · 10 जून 2024

प्रश्न 2509 पंडित जी, मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी जी को भी भविष्य मालिका की जानकारी हो गई है, क्योंकि वे जहाँ भी जाते हैं, सबसे पहले 'जय जगन्नाथ' कहते हैं। लगता है उन्हें इसके बारे में पता है।

उत्तर: देखो बेटा, वे एक भक्त हैं। भक्त सदैव प्रभु का कुछ न कुछ स्मरण करते हैं, कुछ न कुछ अनुभव करते हैं, और कुछ न कुछ महसूस करते हैं। हाँ, यह शास्त्रों में भी लिखा है। मैं इसे प्रकट नहीं करना चाहता, परंतु अच्युतानंद द्वारा लिखित एक ग्रंथ, जिसका नाम 'चौंसठी पटल' है, उसके 22वें अध्याय में, पृष्ठ 90 पर लिखा है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री एक दिन आकर जाजपुर में रहेंगे। वह समय आएगा, भगवान कल्कि के साथ। उस समय कोई स्वतंत्र शासन-व्यवस्था या ऐसा कुछ नहीं होगा। यह लिखा हुआ है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:48 · 10 जून 2024

प्रश्न 2510 यह प्रश्न नहीं, बल्कि एक समस्या है। मेरा 3 वर्ष का बेटा जन्म से ही लगातार बीमार रहता है। मुझे समझ नहीं आता कि वह हमेशा इतना बीमार क्यों रहता है।

उत्तर: देखिए, अपने बेटे को प्रतिदिन भागवत महापुराण पढ़कर सुनाइए। यह पहली बात है। दूसरी, 16 नाम, 'औषधे चिन्तयेत् विष्णुम्' मंत्र — यह उससे सुबह से शाम तक जब भी समय मिले, मन ही मन जपवाइए। और उसे त्रिकाल संध्या भी सुनवाइए। मेरे विचार से, व्याधि मनुष्य को उसके पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार आती है; वह जन्म के समय मानव शरीर से जुड़कर आती है, क्योंकि हम अपने पूर्व जन्म के कर्मों का फल इस जीवन में भोगते हैं। परंतु इस मार्ग पर चलने से सुधार होगा, परिवर्तन आएगा, और उसे प्रभु की कृपा प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 33:59 · 10 जून 2024

प्रश्न 2511 मेरी एक छोटी-सी नौकरी है और मैं दोपहर लगभग 12:30 बजे निकलता हूँ। क्या मैं दोपहर का भोजन करने के बाद दोपहर की त्रिकाल संध्या कर सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, आप भोजन करने के बाद भी कर सकते हैं। रास्ते में चलते-चलते मन ही मन कर सकते हैं। यात्रा करते हुए कर सकते हैं। यहाँ तक कि लेटे-लेटे भी। यदि कोई बिस्तर पर पड़ा है, लकवाग्रस्त रोगी है, तो वह भी लेटे-लेटे कर सकता है। कोई कठोर नियम नहीं है। एकमात्र नियम है भक्ति, और दूसरा नियम है प्रभु के प्रति समर्पण। उपयुक्त समय पर त्रिकाल संध्या के मंत्रों का जाप करने से मनुष्य देवताओं के समान दिव्य हो जाएगा। उस समय देवता भगवान विष्णु की उपासना करते हैं, और मनुष्य उसी समय प्रभु की स्तुति करके उन्हीं के समान हो जाता है। ठीक है। जय श्री माधव!

► यह उत्तर सुनें · 35:19 · 10 जून 2024

प्रश्न 2512 मैं दिन भर मन ही मन 'माधव माधव' का जाप करती हूँ। दुर्गा माधव स्तुति में हम 'जय दुर्गा माधव' कहते हैं। तो मेरे मन में एक विचार आता है: क्या मैं दिन भर 'दुर्गा माधव, दुर्गा माधव' का जाप कर सकती हूँ? क्या यह उचित है?

उत्तर: कर सकती हैं, माँ। जो दुर्गा हैं, वही राधा रानी हैं, और माधव ही कृष्ण हैं। यह 'दुर्गा माधव' सिद्धांत... मैं कृष्ण धर्म का, राधा और कृष्ण के नामों का प्रचार कर रहा हूँ। लेकिन यह सबसे पवित्र नाम है। भगवान विष्णु के अनंत युगों में से, भूत, वर्तमान और भविष्य के सभी युगों में 'दुर्गा माधव' नाम सबसे सर्वोच्च और शक्तिशाली नाम है, जिसके द्वारा भक्त प्रभु को प्राप्त करते हैं। जय!

► यह उत्तर सुनें · 36:26 · 10 जून 2024

प्रश्न 2513 पिता श्री, मैं एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ। जब से मैंने त्रिकाल संध्या शुरू की है, मेरे जीवन भर के बुरे सपने बंद हो गए हैं। साथ ही, मैंने पूछा था कि क्या मासिक धर्म के दौरान इसे किया जा सकता है और मुझे हाँ कहा गया था। मुझे इस बात का अपराध-बोध होता था, लेकिन एक बार मैं बहुत अधिक पीड़ा में थी और मैंने इसे करने का निश्चय किया, और जैसे ही मैंने 'औषधे चिन्तये विष्णुम्' प्रार्थना शुरू की, पीड़ा तुरंत गायब हो गई। मैं प्रभु की कृपा से अभिभूत हो गई। (अंतर्निहित प्रश्न: क्या सचमुच ऐसा करना ठीक है?)

उत्तर: जैसी भक्ति, वैसी ही प्राप्ति। प्रभु भक्त को पहचानते हैं। देखो बेटी, प्रभु हमारे भीतर ही हैं। हाँ, स्त्रियाँ मासिक धर्म के दौरान मंदिर नहीं जा सकतीं या भागवत नहीं पढ़ सकतीं, लेकिन त्रिकाल संध्या एक ध्यान है, एक स्तोत्र है, एक आध्यात्मिक धारा है। हर मनुष्य का इस पर अधिकार है। वे इसे किसी भी समय, किसी भी स्थान पर पढ़ सकते हैं। यह इतनी महान है कि त्रिकाल संध्या के द्वारा तुम्हारे बुरे सपने चले गए। त्रिकाल संध्या के द्वारा प्रभु ने तुम्हारी पीड़ा ठीक कर दी। देखो बेटी, त्रिकाल संध्या एक मृत्यु संजीवनी है। भविष्य में भक्त इसके द्वारा बड़ी बीमारियों और महान विपत्तियों से बचेंगे। इसलिए लोगों को कम से कम त्रिकाल संध्या को समझना चाहिए, और मानवता का कल्याण होगा। तुमने जो अनुभव साझा किया है, मेरी बेटी, वह कई अन्य भक्तों और लोगों को मार्ग दिखाएगा। बहुत अच्छा। जय जगन्नाथ। धन्यवाद।

► यह उत्तर सुनें · 37:28 · 10 जून 2024

प्रश्न 2514 पंडित जी, कृपया मुझे कंठी माला धारण करने के नियम और विधि बताइए।

उत्तर: कंठी धारण करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण विधि यह है कि पहले कंठी को भगवान श्री कृष्ण, राम या जगन्नाथ के चरण कमलों में अर्पित करें। इसे एक दिन के लिए जगन्नाथ के चरणों में रखें। यह कैसे करें? घी, केला, गुड़, दही और दूध से पंचामृत तैयार करें। कंठी को इस तरल में मिलाएँ, फिर उसे धोकर एक दिन के लिए जगन्नाथ या कृष्ण के चरणों में रखें। उसके बाद प्रभु के 16 नामों ('औषधे चिन्तये विष्णुम्') का पाठ करते हुए कंठी माला धारण करें। इसके उपयोग के संबंध में, शौचालय जाते समय, स्त्री के मासिक धर्म के दौरान, जिस घर में मृत्यु हुई हो वहाँ जाते समय, या किसी घर में संतान के जन्म के बाद के सूतक काल में कंठी उतार देनी चाहिए। उन समयों में इसे अलग रखें और अन्य समय में इसका उपयोग करें। यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति के साथ सोती है, तो सोने से पहले उसे उतारकर अलग रख देना चाहिए। जो अकेले सोते हैं, उनके लिए कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 40:15 · 10 जून 2024

प्रश्न 2515 पंडित जी, हम नियमित रूप से राम नाम का जाप करते हैं। क्या आने वाले समय में हमें इससे लाभ होगा?

उत्तर: बहुत लाभ होगा, बेटा, बहुत। राम हमारे हैं। राम हमारे हृदय में हैं, कण-कण में हैं। लेकिन राम नाम का निरंतर जाप करते रहो। त्रिकाल संध्या के समय माधव के नाम का भी जाप करो, क्योंकि माधव ही राम हैं; उनमें कोई भेद नहीं है। तो, अपने हृदय में निरंतर राम नाम का जाप करो, और संध्या के समय माधव के नाम का।

► यह उत्तर सुनें · 42:41 · 10 जून 2024

प्रश्न 2516 दूसरी बात, मैं यह पूछना चाहता था: आने वाले कुछ महीनों में क्या स्थिति सामान्य रहेगी, या अगले तीन से पाँच महीनों में इसके और बिगड़ने की आशंका है?

उत्तर: देखिए, मैं आपको एक बात बताता हूँ। 2025 में, 30 मार्च को शाम 5:30 बजे शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे। इस गोचर के बाद, यह संसार, मानव सभ्यता, जो धन के पीछे भाग रही है और 'मैं, मेरा, मुझे' में फँसी है, जहाँ लोग अनेक धर्मों और संप्रदायों में भटक रहे हैं—उसे कोई मार्ग नहीं मिलेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि भगवान कल्कि का अवतार और धर्म की स्थापना का कार्य आरंभ हो जाएगा। और एक बात और, इसमें देर हो सकती है, लेकिन प्रकृति और पंचतत्वों में ऐसा समय आएगा जब आप अपनी आँखों से महान घटनाएँ देखेंगे—ऐसी बातें जो आपने न देखी हैं, न सोची हैं, न सुनी हैं। जो शास्त्रों में लिखा है, वह आप देखेंगे। इसी कारण मानव सभ्यता के लिए भविष्य मालिका लिखी गई थी। इसीलिए हम यह सत्संग कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य आपको अपना शिष्य बनाना या गुरु बनना या कोई लेन-देन करना नहीं है। हमारा उद्देश्य मानवता का कल्याण और मोक्ष है और सभ्यता को गुप्त ज्ञान बाँटना है। इसलिए, बुरा समय आ रहा है, अच्छा समय नहीं। पूरे विश्व में अराजकता फैलेगी। ऐसी अराजकता पहले कभी नहीं देखी गई। सब कुछ उलट-पुलट हो जाएगा। कोई किसी की नहीं सुनेगा। मनुष्य अपने स्वार्थ के अलावा कुछ नहीं समझेगा। और विनाश के तत्वों के साथ-साथ सामाजिक और सांप्रदायिक तनाव भी बढ़ते जाएँगे। समय आ रहा है। जय जगन्नाथ। सावधान रहिए, प्रभु के चरणों में रहिए, और अपना कर्तव्य कीजिए। यदि भगवान हैं, तो भक्त हैं; यदि भक्त हैं, तो भगवान हैं। सत्य युग की रचना के लिए भक्तों को एकत्र किया जाएगा। यही इस सत्संग का कारण है। भगवान कल्कि संभल नगर में हैं, और कल्कि लीला आरंभ हो चुकी है।

► यह उत्तर सुनें · 43:21 · 10 जून 2024

सत्र 131 · प्रश्न 2517–2545

L142: मीन शनि चलन समय में भारत, चीन, और पाकिस्तान का महा युद्ध होगा | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 20 जून 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2517 मेरा प्रश्न यह है कि जब युद्ध होगा, तब सब अपने-अपने देशों में चले जाएँगे। तो हम प्रभु से कैसे मिलेंगे?

उत्तर: देखिए, वर्तमान मनुष्य की ज्ञान शक्ति, धैर्य, स्मरण शक्ति और वस्तुओं को जानने की शक्ति बहुत कम है। उस समय मनुष्य की शक्ति देवता के समान हो जाएगी। दिव्य शक्ति प्राप्त करने के बाद मनुष्य और भक्त प्रभु से मिल सकेंगे। भविष्य मालिका का प्रचार पूरे विश्व में हो रहा है। जैसे-जैसे विपत्तियाँ बढ़ेंगी, लोग आने को विवश होंगे; वे दूर-दूर से दौड़े चले आएँगे। महान संत भी आएँगे, महान परंपराओं से, ओडिशा में भगवान कल्कि की शरण लेने। जय।

► यह उत्तर सुनें · 10:23 · 20 जून 2024

प्रश्न 2518 जी पिता जी, मेरा प्रश्न यह है कि जब प्रभु की 'माया' अपने प्रचंड रूप में फैलेगी, तो क्या सुधर्म महामाहा संघ से जुड़े भक्तों का मन भी विचलित होगा, या वे स्थिर रह पाएँगे?

उत्तर: देखिए, भक्त का मन तब विचलित होता है जब वह इच्छा, काम, मोह, माया और इंद्रियों के प्रभाव में आ जाता है। जो भक्त शरण में हैं और समर्पित हैं, उनका मन कैसे दूषित हो सकता है? इसलिए प्रभु की शरण में रहिए, प्रभु की भक्ति में रहिए, ताकि समय के साथ हम विचलित न हों, संघर्ष में न पड़ें, और अपना मार्ग न भूलें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:15 · 20 जून 2024

प्रश्न 2519 गुरुजी, मेरी प्रभु के 'दर्शन' की बहुत तीव्र इच्छा है।

उत्तर: देखिए माँ, जो प्रभु के दर्शन चाहते हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या, 16 नाम, दस अवतार और दुर्गा माधव स्तुति के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। जिन्हें स्वप्न में भी प्रभु के दर्शन होते हैं, सुनिए, उन्हें भी समय आने पर प्रभु के दर्शन होंगे। मैंने पहले भी कहा है, इस मार्ग के बारे में जानने के लिए नीचे दिए गए नंबर पर कॉल कीजिए। इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 12:10 · 20 जून 2024

प्रश्न 2520 भविष्य मालिका का प्रचार करने वाले कई लोग कह रहे हैं कि '13 दिन' इसी महीने जून में किसी तारीख से शुरू होंगे। इस पर आप क्या कहेंगे? आप कभी-कभी कहते हैं कि यह अगले वर्ष शुरू होगा, लेकिन कई लोग कह रहे हैं कि यह इसी महीने जून में शुरू होगा।

उत्तर: देखिए, दिन आ रहे हैं, और उसमें एक संकेत है। तो, ठीक है। जैसा मैं कहता हूँ, त्रिकाल संध्या कीजिए, प्रभु की शरण में रहिए। बुरा समय आ रहा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:52 · 20 जून 2024

प्रश्न 2521 प्रणाम, पंडित जी। मेरा एक प्रश्न था। आपके प्रकाशन से जो भविष्य मालिका पुराण मुझे मिला, उसके पहले पृष्ठ पर तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी का उल्लेख है। मेरी शंका यह थी कि क्या भविष्य मालिका पुराण में पहले और दूसरे विश्व युद्ध के बारे में कुछ कहा गया है?

उत्तर: हाँ, उनके बारे में भी लिखा है, और तीसरे विश्व युद्ध के बारे में भी।

► यह उत्तर सुनें · 13:36 · 20 जून 2024

प्रश्न 2522 जय जगन्नाथ। मैं यह पूछना चाहता था, मैं श्रीमद्भागवत का नारायण कवच हिंदी में पढ़ रहा हूँ। क्या हिंदी में पढ़ूँ या संस्कृत में, दोनों एक ही बात है, या मुझे संस्कृत वाला ही पढ़ना चाहिए?

उत्तर: नारायण कवच किसी भी भाषा में पढ़ा जा सकता है, चाहे हिंदी हो या संस्कृत। इसका लाभ मनुष्यों को, भक्तों को मिलता है, और आपको भी लाभ होगा। प्रतिदिन नारायण कवच का पाठ करें; कलियुग से सत्ययुग में जाने के लिए यह एक महान परंपरा है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 14:10 · 20 जून 2024

प्रश्न 2523 मुझे न्यास (अंगुलियों से किया जाने वाला अनुष्ठानिक स्पर्श) आदि सारी विधियाँ समझ में नहीं आतीं।

उत्तर: भगवान के लिए हमें वह सब करना आवश्यक नहीं है। वह अनिवार्य नहीं है। वह उन सेवकों, पुजारियों और ब्राह्मणों के लिए आवश्यक है जो यजमानों के लिए अनुष्ठान कराते हैं। बस भक्ति ही पर्याप्त है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:40 · 20 जून 2024

प्रश्न 2524 महाराज जी, मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें दो सूर्य थे, एक आगे और एक पीछे। पहले लालिमा जैसी आभा थी, फिर दो सूर्य दिखाई दिए। फिर अचानक मुझे ध्यान आया कि यह तो भविष्य मालिका में लिखा है। क्या मेरा स्वप्न सत्य है?

उत्तर: यह सत्य है। देखिए, समय के साथ बहुत से ग्रह और नक्षत्र पृथ्वी के निकट आएँगे। जैसे-जैसे सूर्यदेव प्रकट होंगे, उनका प्रकाश भी आएगा, और लोग उसे देखेंगे। यह भविष्य में होगा, अंतिम समय में, अभी नहीं। अंतिम समय से ही यह सारा प्रकाश दिखाई देगा। यह भविष्य मालिका में लिखा है, और यह प्रमाणित होगा। यह सत्य है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:59 · 20 जून 2024

प्रश्न 2525 मुझे एक 'अभेद कवच' मिला है। क्या मैं इसका पाठ कर सकता हूँ?

उत्तर: आप कर सकते हैं, कोई समस्या नहीं। आप पाठ कर सकते हैं। आप 'क्षण पंजर' का पाठ कर सकते हैं। और आप भगवान के सारे 'चौसा भजन' भी गा सकते हैं। लेकिन त्रिकाल संध्या के बिना पृथ्वी पर बचे रहना कठिन है।

► यह उत्तर सुनें · 15:59 · 20 जून 2024

प्रश्न 2526 पिताजी, मेरा यह प्रश्न है। मेरी बहन का विवाह होना है, और ज्योतिषी ने 'मंगल दोष' बताया है। इसका उपाय क्या है?

उत्तर: 'मंगल दोष' के लिए प्रतिदिन अभय नृसिंह, भगवान नृसिंह के स्तोत्रों का पाठ करें और हनुमान चालीसा पढ़ें। इससे सब ठीक हो जाएगा। त्रिकाल संध्या करने से सब कुछ संभल जाता है, और कुछ की आवश्यकता नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 16:29 · 20 जून 2024

प्रश्न 2527 पिताजी, मेरा एक और प्रश्न है। हम किसान हैं, और 15 दिनों से हम अपने खेत में एक बाघ देख रहे हैं। क्या यह वास्तविक है या स्वप्न? (प्रश्नकर्ता पुष्टि करते हैं कि यह वास्तविक है।)

उत्तर: देखो बेटा, मैं समस्त मानव समाज से एक बात कहना चाहता हूँ। भविष्य मालिका में लिखा है कि सभी जंगली जानवर रिहायशी इलाकों में आएँगे और मनुष्यों को परेशान करेंगे। इसलिए थोड़े धैर्य के साथ काम करो। यह और बढ़ेगा; वे घरों में भी घुसेंगे। यह लिखा हुआ है। जैसे मनुष्य जंगल में घुसकर जंगली जानवरों को मारते हैं, वैसे ही जानवर भी हमारे क्षेत्रों में घुसेंगे। यह कलियुग का दुष्प्रभाव है। विनाश के समय ऐसा ही होता है: जंगली जानवर घरों में घुसकर मनुष्यों को परेशान करते हैं। यह बढ़ेगा। इसलिए कुछ संयम और आत्मनियंत्रण के साथ काम करो। माधव की कृपा से। जय।

► यह उत्तर सुनें · 16:50 · 20 जून 2024

प्रश्न 2528 पिताजी, क्या आप प्रवचन के लिए उज्जैन आ रहे हैं?

उत्तर: प्रवचन के लिए जाऊँगा, लेकिन शायद कनाडा वाले प्रवचन के बाद। कनाडा में प्रवचन जुलाई में है, 22 से 30 तारीख तक। उसके बाद मैं उज्जैन और जम्मू की ओर प्रवचन के लिए जाऊँगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:37 · 20 जून 2024

प्रश्न 2529 और पिताजी, आपका स्वास्थ्य ठीक है?

उत्तर: चल रहा है। भगवान जगन्नाथ की कृपा से। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 19:18 · 20 जून 2024

प्रश्न 2530 कल शाम मैं ध्यान कर रहा था और मैंने भगवान कृष्ण का बाल स्वरूप और नंदी पर बैठे भगवान शिव को देखा। वह एक ही स्वरूप था, कभी कृष्ण का मुख दिखता, कभी शिव का, और पीछे एक बड़ा मोरपंख था। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: बैल धर्म का प्रतीक है। और भगवान ने धर्म को थामकर धर्म की स्थापना आरंभ कर दी है। और भगवान शंकर भगवान के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:32 · 20 जून 2024

प्रश्न 2531 माधव का ध्यान करने के लिए कौन-सा स्वरूप उपयुक्त है?

उत्तर: माधव का ध्यान करने के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप कोई भी स्वरूप अपने मन में लाइए - भगवान कृष्ण, जगन्नाथ, राम - और माधव का ध्यान कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 20:24 · 20 जून 2024

प्रश्न 2532 मेरा स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता है, मुझे घबराहट होती है, और पैर की सर्जरी के बाद से दर्द बना हुआ है। मैं बहुत परेशान हूँ। साथ ही, मेरे बेटे का एक्सीडेंट हुआ था और वह शादी के लिए तैयार नहीं है। मैं बहुत चिंतित हूँ।

उत्तर: देखिए, आपको घर में शास्त्रों का पाठ फिर से करना चाहिए। घर में सब कुछ ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:55 · 20 जून 2024

प्रश्न 2533 2025 में शनि का गोचर मीन राशि में हो रहा है, और खतरनाक युतियाँ बन रही हैं। क्या 2025 में ही भारत के लिए युद्ध की स्थिति बन सकती है? क्या पहले पाकिस्तान हमला करेगा, उसके बाद चीन और 13 मुस्लिम देश? क्या युद्ध 2025 में पूरी तरह से साकार होगा?

उत्तर: देखिए, शनि का गोचर 2027 तक है, 2025 और 2026 से होते हुए। यह 2025 में हो सकता है, 2026 में हो सकता है, या 2027 में। इस गोचर के समय के दौरान, यह होगा। यह भविष्य मालिका में लिखा हुआ है। उनके वचन कभी गलत नहीं हुए। उन्होंने जो भी कहा वह हुआ है, और यह भी भविष्य में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:13 · 20 जून 2024

प्रश्न 2534 पिताजी, मेरा एक प्रश्न है। आपने बताया कि आपकी सभा कांगड़ा में है। कौन-सा कांगड़ा? वह जो हिमाचल प्रदेश में है?

उत्तर: यह कनाडा में होगी।

► यह उत्तर सुनें · 23:21 · 20 जून 2024

प्रश्न 2535 कल रात मैंने बहुत बुरा सपना देखा। मैं एक मुस्लिम इलाके में पहुँच गई जहाँ माँस बेचा जा रहा था। एक महिला ने मुझे मटन दिया। फिर दृश्य बदल गया, और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं गोमांस का एक बड़ा टुकड़ा काट रही हूँ। मैं भयभीत होकर जाग गई। मैंने यह क्यों देखा जबकि मैं आध्यात्मिक मार्ग पर हूँ और इन चीज़ों से इतनी दूर हूँ?

उत्तर: कलियुग के प्रभाव के कारण आपने यह बुरा सपना देखा। क्योंकि आप भगवान के धर्म-मार्ग पर हैं, इसलिए यह बुरा सपना आया ताकि आपका मन भटके और आप मार्ग से विचलित हो जाएँ। इससे विचलित मत होइए। त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव की उपासना कीजिए। सब कुछ ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:59 · 20 जून 2024

प्रश्न 2536 मेरा प्रश्न यह है कि मालिका के वचन सत्य हैं या असत्य।

उत्तर: देखिए, भागवत, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण और महाभारत में जो भी लिखा गया था, वह सब सत्य हुआ। यह भी एक पुराण है। पुराण मनुष्य जाति के लिए ज्ञान के नेत्र हैं। जैसे, शबरी ने लोगों से सुना था कि शास्त्रों में लिखा है कि राम एक दिन आएँगे। उन्होंने प्रतीक्षा की और राम को प्राप्त किया। तो, शास्त्रों में जो भी लिखा है वह होगा। कोई परिवर्तन नहीं होगा। भक्तों की रक्षा होगी, और पापियों का विनाश होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 26:07 · 20 जून 2024

प्रश्न 2537 पिताजी, मैं झारसुगुड़ा की सभा में आया था और आपने मेरी माँ को आशीर्वाद दिया था। इस महीने उनकी सर्जरी है, इसलिए मुझे एक बार फिर आपके आशीर्वाद की आवश्यकता थी।

उत्तर: सर्जरी बड़ी बात है, लेकिन अपनी माँ को त्रिकाल संध्या और भागवत सुनवाइए। उन्हें और अधिक पवित्र होने दीजिए। आपको मेरा पूर्ण आशीर्वाद है। आनंद में रहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:18 · 20 जून 2024

प्रश्न 2538 पिताजी, मैं दिन में तीन बार संध्या करता हूँ, लेकिन मेरी माँ को इतना पढ़ना-लिखना नहीं आता कि वे इसे कर सकें। वे इसे कैसे कर सकती हैं?

उत्तर: देखिए, नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क कीजिए। आपको एक स्पीकर मिल सकता है। अपनी माँ के लिए दिन में तीन बार स्पीकर चलाइए। नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क कीजिए, वे आपको बताएँगे कि इसे कहाँ से और कैसे प्राप्त करना है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:40 · 20 जून 2024

प्रश्न 2539 क्या यह सत्य है कि भगवान कल्कि के साथ-साथ तीनों युगों के योद्धा भी भक्तों के साथ इस युग में जन्म ले चुके हैं?

उत्तर: हाँ, वे सभी पृथ्वी पर जन्म ले चुके हैं, और वे सब मिलकर भारत की रक्षा करने, अखंड भारत बनाने, सनातन धर्म की स्थापना करने, और भगवान कल्कि की शरण लेने का कार्य करेंगे। वे सब मिलकर यह करेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 31:21 · 20 जून 2024

प्रश्न 2540 पंडित जी, आने वाले समय में जो यह युद्ध होने वाला है, भारत-पाकिस्तान युद्ध, उसका कारण क्या होगा? युद्ध का कारण क्या होगा?

उत्तर: देखिए, महाभारत का युद्ध इसलिए हुआ क्योंकि भूमि का बँटवारा नहीं हो सका, और दुर्योधन ने एक इंच भूमि भी नहीं छोड़ी। तीसरा विश्व युद्ध भी भूमि के लिए ही होगा। वह भूमि कश्मीर है, और युद्ध उसी के लिए होगा। यह शास्त्रों में लिखा है, और ऐसा ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:26 · 20 जून 2024

प्रश्न 2541 हमने जाना है कि सभी युगों के योद्धाओं ने जन्म लिया है। कर्ण और अर्जुन जैसे पिछले युगों के योद्धा अत्यंत शक्तिशाली थे। उनकी तुलना में कलियुग के लोग तो कीड़े-मकोड़े समान हैं। तो फिर चारों युगों के योद्धाओं की आवश्यकता क्यों है? क्या वे आपस में लड़ेंगे?

उत्तर: नहीं, वे आपस में नहीं लड़ेंगे। वे सभी भगवान के भक्त थे। इस बार भगवान 'राम राज्य' की स्थापना करेंगे, और वे उन्हीं भक्तों और योद्धाओं को 1000 वर्षों तक सुख देंगे। सभी भक्तों, योद्धाओं, संतों और ऋषियों का मिलन होगा। भगवान ने सबको बुलाया है ताकि उन्हें राम राज्य में वह सुख मिले जो उन्हें चारों युगों में नहीं मिला। जय।

► यह उत्तर सुनें · 34:31 · 20 जून 2024

प्रश्न 2542 मासिक धर्म के दौरान, क्या हम लड्डू गोपाल (कृष्ण के बाल स्वरूप) की 'सेवा' कर सकते हैं?

उत्तर: नहीं, आप भजन गा सकती हैं, लेकिन सेवा नहीं कर सकतीं। आपको मूर्ति को स्पर्श नहीं करना चाहिए और न ही भगवान के मंदिर जाना चाहिए। लेकिन आप मंदिर के बाहर या घर में पूजा कक्ष के बाहर अकेले बैठकर भजन गा सकती हैं। आप ग्रंथों को स्पर्श नहीं कर सकतीं और न ही ग्रंथ पढ़ सकती हैं। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 36:06 · 20 जून 2024

प्रश्न 2543 कुछ दिनों से मुझे अपने भीतर एक ही समय में सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों महसूस हो रही हैं।

उत्तर: देखिए माताजी, त्रिकाल संध्या करने से नकारात्मकता चली जाती है, जादू-टोना चला जाता है, मंत्र-तंत्र चले जाते हैं, और ग्रह दोष चले जाते हैं। यह भगवान का महान तत्व है। इस तत्व का प्रचलन भगवान की कृपा से हो रहा है। जो मनुष्य भाग्यशाली होते हैं, उन्हें यह तत्व प्राप्त होता है या वे इसका पालन करते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 36:28 · 20 जून 2024

प्रश्न 2544 गुरुजी, गोलोक धाम, वैकुंठ धाम और साकेत धाम में क्या अंतर है?

उत्तर: सात वैकुंठ हैं। उनमें से गोलोक वैकुंठ भक्तों और भगवान का धाम है। जो अमरत्व प्राप्त करते हैं, वे गोलोक जाते हैं। अन्य वैकुंठ अलग हैं। गोलोक में वे मनुष्य निवास करते हैं जो निर्वाण प्राप्त करते हैं। वहाँ राधा रानी और कृष्ण की नित्य 'रास लीला' होती है। गोलोक मंडल को 'ध्रुव लोक' भी कहा जाता है और यह 'ब्रह्म लोक' के ऊपर है।

► यह उत्तर सुनें · 37:30 · 20 जून 2024

प्रश्न 2545 यदि सभी देवता पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं, तो स्वर्ग में कौन है?

उत्तर: इस युग में सभी देवता अवतरित हो चुके हैं, और पृथ्वी स्वर्ग बन जाएगी। देवताओं के अवतरित होने का कारण है पंच तत्वों का असंतुलन: जलवायु परिवर्तन, कमजोर कृषि, कीट प्रकोप, समुद्र के जलस्तर का बढ़ना, और बेमौसम बाढ़। जब देवता अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते, तब यह स्थिति उत्पन्न होती है। भविष्य में देवताओं की पुनः स्थापना होगी, और वे सत्य युग में अपने कर्तव्यों का भार संभालेंगे। तब संसार में कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 38:27 · 20 जून 2024

सत्र 132 · प्रश्न 2546–2563

L144: विश्व में एटॉमिक वार का खतरा 600 साल पहले लिख दिया गया था। | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 4 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2546 पंडित जी, आपने कहा था कि इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ काम करना बंद कर देंगी। यदि इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ काम करना बंद कर देंगी, तो हम आपस में कैसे मिल पाएँगे?

उत्तर: देखिए, यह युग जिसमें हम हैं, यह यंत्र शक्ति का युग है। इसीलिए मनुष्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से एक-दूसरे से जुड़ते हैं। लेकिन जो युग आने वाला है, वह मंत्रों का युग है। सत्य, त्रेता और द्वापर युगों में लोहे के कारखाने नहीं थे, लेकिन लोहे से बनी सभी वस्तुएँ मौजूद थीं। सोना, चाँदी और हीरे तक थे। उस युग में मशीनें नहीं थीं, तो यह कैसे हुआ? उन्होंने लोहे को आकार कैसे दिया? उस समय मंत्रों की शक्ति बहुत प्रबल थी। मंत्र शक्ति के द्वारा... जैसे, इस युग में व्यक्ति अपनी आँखों से 100-200 मीटर तक देख सकता है, या सीधी सड़क पर एक किलोमीटर तक। लेकिन यंत्रों की शक्ति से हम 10,000 किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति से बात कर सकते हैं। उसके लिए यंत्रों का उपयोग होता है। इसी प्रकार, उस युग में मंत्रों के प्रयोग से लोग पूरे विश्व में सबसे जुड़ सकेंगे। तो कोई समस्या नहीं है। यह एक महान तकनीक है जो समय के साथ आगे बढ़ेगी। यह तकनीक का युग है; वह पवित्रता का युग होगा। पवित्रता की कमी के कारण इस युग के लोग स्वर्ग नहीं जा सकते। उस युग में वे स्वर्ग जाएँगे। अभी वे बड़ी कठिनाई से चंद्रमा तक जाते हैं, लेकिन उस युग में अपनी मंत्र शक्ति, पवित्रता और धर्म के बल पर मनुष्य सूर्य लोक, चंद्र लोक, मंगल लोक, पितृ लोक—सभी लोकों में जा सकेंगे। युग परिवर्तन के साथ लोगों पर महान पवित्रता और भगवान की कृपा बरसेगी; उनके लिए साधनों की कोई कमी नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 08:21 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2547 पिताजी, पिछले वर्ष कोलकाता में आपकी सभा से हम केवल एक महीने से चूक गए और हमें इसका गहरा खेद है। हमारी विनम्र प्रार्थना है कि आप निकट भविष्य में कोलकाता में एक और सभा करें। क्या आप कृपया ऐसा करेंगे?

उत्तर: यह आनंद का सुझाव है। मैं इसे ध्यान में रखूँगा। यदि मुझे भगवान की कृपा प्राप्त हुई, तो मैं अवश्य बंगाल जाऊँगा और फिर से प्रवचन करूँगा तथा मानवता के उद्धार और कल्याण के लिए कार्य करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 10:59 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2548 भगवान माधव को सत्य अनंत माधव क्यों कहा जाता है?

उत्तर: देखिए, इसके बारे में मेरे पास विस्तृत जानकारी नहीं है, लेकिन इतना मैं आपको बता सकता हूँ: भविष्य मालिका में लिखा है, 'सत्य जे अनंत नाम ही...' (जिनका नाम सनातन सत्य है)। नित्य पंच सखा, और उनमें से ठाकुर अभिराम परमहंस ने भविष्य पुराण में लिखा है कि भगवान कल्कि का नाम सत्य अनंत होगा। और जब इसके साथ 'माधव' जुड़ता है, तो धर्म की स्थापना होगी, भक्तों का उद्धार होगा, और वे प्रेमपूर्वक माधव नाम का जप करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 12:03 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2549 इसकी क्या गारंटी है कि आप ठग नहीं हैं?

उत्तर: यह आपको तभी पता चलेगा जब आप स्वयं आकर देखेंगे; दूर से बात करके पता नहीं चल सकता। हम वास्तव में क्या कर रहे हैं, यह जानने के लिए आपको आकर मिलना होगा, ठीक है न? केवल बात करने से क्या पता चल सकता है? देखिए, ठग वह होता है जिसके पास गुरु परंपरा नहीं होती—हमारे पास है। दूसरा, हमारे कोई शिष्य नहीं हैं। तीसरा, भविष्य मालिका में मेरा नाम लिखा है कि इसका पूरे विश्व में प्रचार करना है। इसी कारण मैं इसका प्रचार कर रहा हूँ। इसमें ठगी कहाँ है? 600 वर्ष पहले अच्युतानंद ने तत्त्वबोधिनी ग्रंथ के पृष्ठ 19 पर लिखा था। वहाँ लिखा है कि पंडित काशीनाथ मिश्र भविष्य मालिका को 'डिंडिम' (डंके की चोट) के साथ पूरे विश्व में फैलाएँगे। मैं वही कार्य कर रहा हूँ। यह कार्य मुझे बहुत आनंददायक लगता है क्योंकि मेरा नाम लिखा गया था, और मैं वही कार्य कर रहा हूँ। जीवन में इससे बड़ा सुख और शांति और क्या मिल सकती है? इसलिए मैं अपना कार्य कर रहा हूँ। कोई क्या सोचता है, इससे मुझे कोई आपत्ति या समस्या नहीं है। क्योंकि धर्म का प्रचार सबसे पवित्र कर्तव्य है। बाधाएँ आएँगी, विरोध होगा, और लोगों में मतभेद रहेंगे। उससे हमें कोई लेना-देना नहीं, क्योंकि धर्म के प्रचार का अधिकार सबको है। और अच्युतानंद तथा नित्य पंच सखा ने मुझे यह कर्तव्य 600 वर्ष पहले दिया था। मैं इस धरती पर आया हूँ, और भगवान ने मुझे शक्ति दी है, इसलिए मैं यह कर रहा हूँ। इसमें क्या समस्या है? जय।

► यह उत्तर सुनें · 12:53 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2550 मैं राजस्थान से बोल रही हूँ। पिछले एक वर्ष से मैं आपसे जुड़ी हूँ, और शुरू में मैंने विश्वास किया और मुझे कई अनुभव भी हुए। लेकिन पिछले एक महीने से मेरी त्रिकाल संध्या छूट गई है क्योंकि मेरी माँ का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था। अब वे थोड़ी ठीक हैं, लेकिन हमें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मेरी माँ त्रिकाल संध्या नहीं करतीं, केवल मैं करती हूँ, और घर में समस्याएँ बढ़ने के बाद पिछले 15-20 दिनों से मुझसे भी यह छूट गई है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: संसार के हर परिवार में रोग, बीमारी, विपत्ति, दुख, और यहाँ तक कि आकस्मिक मृत्यु भी होगी। यह समय अच्छा नहीं है। इसलिए अपनी माँ से कहिए कि वे भी त्रिकाल संध्या करें ताकि जैसे आप आनंद में रहेंगी, वैसे ही आपकी माँ भी रहेंगी। यदि हमारे परिवार में... आपको सुनना होगा... यदि हमारे परिवार में दो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और चार नहीं करते, तो जब विपत्ति आएगी, तो वह उन बाकी चार लोगों को प्रभावित करेगी। ऐसा समय अभी शुरू नहीं हुआ है, लेकिन जल्द ही शुरू होगा। इसलिए अपनी माँ को त्रिकाल संध्या के बारे में बताइए, उन्हें समझाइए, क्योंकि भविष्य में यह रोग और बीमारी पृथ्वी पर कई रूपों में फैलेगी। कई प्रकार की बीमारियाँ फैलेंगी जिनकी कोई दवा नहीं होगी। इसीलिए सबको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। केवल आप अकेली धर्म का पालन करें, इससे काम नहीं चलेगा। फिर भी, अभी समय है। अपनी माँ से कहिए कि वे माधव नाम का जप करें, तब भविष्य में भगवान अपनी कृपा दिखा सकते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 15:03 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2551 मैं घर पर अकेली रहती हूँ, इसलिए मैं सभा में नहीं आ पाती। कोई साथ हो तभी आ सकती हूँ। तो मैं क्या करूँ?

उत्तर: देखिए, भाव से माधव को कह दीजिए, वे व्यवस्था कर देंगे। समय के साथ सब हो जाएगा। चिंता मत कीजिए। प्रभु को कह दीजिए, वे कर देंगे। वे ऐसी व्यवस्था कर देंगे कि समय अनुकूल हो जाएगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 17:07 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2552 मेरी भी इच्छा है कि मुझे प्रभु के दर्शन हों। यह कैसे हो सकता है?

उत्तर: देखिए, यह सब भाव की बात है। जैसा मैंने आपको बताया है वैसा कीजिए, और आगे जो होना होगा वह होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:38 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2553 क्या केवल नाम जप से ही सत्य युग तक की यात्रा पूरी हो सकती है?

उत्तर: देखिए, मैं आपको भविष्य मालिका का सार बताना चाहता हूँ। भविष्य मालिका पुराण मूल रूप से ओड़िया में था; हमने उसका हिंदी, अंग्रेज़ी और 17-18 अन्य भाषाओं में अनुवाद किया है। भविष्य मालिका में 600 वर्ष पूर्व लिखा गया था कि ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो संध्या न करता हो। जो नाम जप करते हैं, मैं उन सबका सम्मान करता हूँ, परंतु सच्चाई यह है कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, जो माधव की शरण नहीं लेते, जो भगवान कल्कि के प्रति समर्पित नहीं होते, वे शायद भाग्यशाली नहीं हैं। और अपने ही कर्मों के कारण वे अपना विनाश स्वयं कर लेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:14 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2554 क्या त्रिकाल संध्या बिल्कुल अनिवार्य है, या यह नाम जप के द्वारा भी हो सकती है?

उत्तर: त्रिकाल संध्या अनिवार्य है। यह भगवान कल्कि द्वारा भक्तों के उद्धार के लिए दिया गया वरदान है। आने वाली बीमारियों, आपदाओं और विपत्तियों से बचाने के लिए—64 प्रकार की बड़ी बीमारियाँ आ रही हैं, बड़ी-बड़ी आपदाएँ आ रही हैं—इन सबसे बचने के लिए, अगर वे त्रिकाल संध्या नहीं करेंगे तो वे बचेंगे नहीं। एक समय आएगा जब सब करेंगे। मैं केवल भारत की बात नहीं कर रहा; पूरा विश्व करेगा। उन्हें करना ही पड़ेगा। अगर नहीं करेंगे, तो वे अपना मार्ग स्वयं चुन लेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 19:08 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2555 मेरी माताजी 60 वर्ष की हैं और बहुत बीमार हैं। उन्हें मधुमेह है और साथ ही भूत-प्रेत जैसी बाहरी बाधाओं से भी पीड़ित हैं। उनके लिए क्या किया जा सकता है, पंडित जी?

उत्तर: आपके घर के पास से प्रतिदिन एक पुरानी आत्मा गुजरती है। वह और आगे जाती है। क्या आगे कोई जलाशय है? वह प्रतिदिन उस नदी तक जाती है। इसीलिए उसका प्रभाव महसूस होता है। देखिए, एक काम कीजिए। घर में त्रिकाल संध्या कीजिए। माताजी को कहिए कि वे करें। त्रिकाल संध्या के साथ-साथ भागवत पढ़िए। यह ऐसी बीमारी है जिसका इस कलियुग में कोई इलाज नहीं मिला है। इतना मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ: जो भी त्रिकाल संध्या करेगा और भागवत पढ़ेगा, उस पर कोई विपत्ति नहीं आएगी। उनका स्वास्थ्य निश्चित रूप से सुधरेगा। कोई नकारात्मकता नहीं रहेगी। और वह भूत—यह भूत-प्रेत का प्रकोप नहीं है, यह एक आत्मा है जो रात 2 से 3 बजे के बीच वहाँ से गुजरती है। जहाँ तक मैं देख पा रहा हूँ, वही उसका रास्ता है। वह उसी रास्ते से गुजरती है और उसका प्रभाव आपकी माताजी पर पड़ता है। वह रोज़ आती-जाती है। जैसे ही आप शुरू करेंगे, वह भी नहीं आएगी। माधव का नाम जपिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। अगर फिर भी उसका घर में आना बंद न हो, तो मैं आपको आगे बताऊँगा कि क्या करना है। ठीक है? सब ठीक हो जाएगा, चिंता मत कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए और भागवत पढ़िए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 20:19 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2556 मैं गाज़ियाबाद से दुर्गेश हूँ। मैंने 2018 में एक घर खरीदा था। हम खुशी-खुशी वहाँ रहने गए और नवरात्रि में गृह प्रवेश भी किया। लेकिन जब से मेरे पति यहाँ आए, वे मधुमेह से बीमार पड़ गए। अब उनका देहांत हो गया है। सब कह रहे हैं कि शायद घर में कोई दोष है। क्या यह सच है?

उत्तर: देखिए, अगर मैं आपको बताऊँगा तो आप डर जाएँगी। इसलिए एक बात सुनिए। हाँ, घर में समस्या है। इसीलिए मालिक ने उसे बेचा। दोष मिट्टी में है। चाहे आप उस पर निर्माण करें, खरीदें या बेचें, मिट्टी का दोष कैसे जाएगा? उस घर की मिट्टी अच्छी नहीं है। तो, एक काम कीजिए। उसी घर में रहिए, प्रतिदिन भागवत पढ़िए। माधव का नाम जपिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। सब ठीक हो जाएगा। सब ठीक रहेंगे। वहाँ रहने में कोई समस्या नहीं है। देखिए, मनुष्य अपने कर्म के अनुसार कष्ट भोगता है, पर अच्छे कर्म करके वह बुरा कर्म भी निष्फल किया जा सकता है। इसलिए घर में प्रतिदिन त्रिकाल संध्या कीजिए। अपने बच्चों को भी करने के लिए कहिए। आगे का समय अच्छा नहीं है। आप पहले कीजिए। भागवत पढ़िए ताकि घर का दोष कुछ हद तक निष्फल हो जाए और आप शांति से रह सकें। ठीक है? मिट्टी में एक-दो फुट का भी फर्क पड़ सकता है। ऐसा कीजिए, आपके लिए अच्छा होगा। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 24:28 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2557 पिताजी, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, आपने कहा था कि आने वाले दिनों में रूस भारत पर शासन करेगा। स्थिति कैसी होगी? हम रूसी समूहों में मालिका का संदेश फैला रहे हैं, तो क्या आप कुछ तथ्य दे सकते हैं जो हम उनके साथ साझा करें ताकि उनका विश्वास दृढ़ हो? दूसरा, जब हम माधव का नाम जपते हैं, तो क्या हमें मन से जपना चाहिए या जिह्वा से? क्या इसमें कोई अंतर है, क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि मानसिक जप श्रेष्ठ है?

उत्तर: जय जगन्नाथ, बहुत अच्छा प्रश्न है। भगवान के नाम जप के संबंध में, दोनों विधियों में—जिह्वा से जप और हृदय में जप—सबसे श्रेष्ठ है हृदय में जप करना। पर यह तुरंत नहीं होता। पहले कुछ दिनों तक मुख से जप करने के बाद, यह अपने आप अभ्यास बन जाता है। उसके बाद हृदय में जप स्वतः होने लगता है, चाहे आप चल रहे हों, गाड़ी चला रहे हों, काम कर रहे हों या भोजन कर रहे हों। हृदय में जप करना बहुत अच्छा है, और ऐसा करने से हम दिन-रात जप कर सकते हैं। सोते समय भी जप नहीं रुकता। परंतु त्रिकाल संध्या के मंत्र के उच्चारण का प्रभाव शरीर पर आता है, इसलिए यदि उसका उच्चारण स्वर में किया जाए तो व्यक्ति के लिए अधिक लाभकारी होता है। दूसरा, महापुरुष अच्युतानंद ने लिखा है कि विश्व की सभी प्रमुख सीमाओं पर युद्ध होगा। उस समय भारत में बड़े सांप्रदायिक दंगे होंगे, और रूस आकर कमान संभालेगा। यह बलपूर्वक नहीं होगा। उस समय चीन, पाकिस्तान, कई मुस्लिम देश और अमेरिका—सभी भारत से युद्ध कर रहे होंगे। भारत रूस को आने का निमंत्रण देगा। तो रूस आकर प्रशासन संभालेगा, अर्थात देश की रक्षा के लिए सैन्य शासन। यह भी लिखा है कि उस समय भारत में एक भिन्न वंश के लोग सत्ता में होंगे। भगवान जगन्नाथ महाप्रभु का स्थानांतरण रूसी सरकार के राजा और रानी द्वारा इन शासकों के साथ मिलकर किया जाएगा। इस प्रकार, रूस निश्चित रूप से भारत की सहायता के लिए आएगा। यह एक गठबंधन सरकार होगी; वे हमारी सहायता करेंगे और सारा प्रशासन तथा हमारे देश की रक्षा संभालेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 28:42 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2558 पिताजी, मेरी सगाई के बारे में जो मैंने आपको बताया था, जो तीन सप्ताह पहले हुई थी, वह टूट गई है। मैं चिंतित हो रही थी और सोच रही थी कि इसे कैसे ठीक करूँ। पर कृपया बताइए, क्या यह रिश्ता ठीक हो सकता है या नहीं? अगर नहीं, तो मैं आगे बढ़ जाऊँगी।

उत्तर: देखो बेटी, इस संसार में भगवान की इच्छा सदैव हमारे कल्याण के लिए होती है। अगर कोई रिश्ता टूटता है, तो समझो कि उससे बेहतर आ रहा है। वह और भी अच्छा हो सकता है। पर हमें ज़िद नहीं करनी चाहिए कि 'नहीं, मुझे वही रिश्ता चाहिए।' ठीक है, वह रिश्ता भी बन सकता है अगर तुम भगवान की भक्ति में लगो। पर ऐसा कहने के बजाय, भगवान से प्रार्थना करो, 'प्रभु, जो मेरे लिए सर्वोत्तम रिश्ता हो, वही तय कीजिए।' इसके लिए भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के दशम स्कंध से गोपी लीला पढ़ो। माधव का नाम जपो और त्रिकाल संध्या करो। अच्छा रिश्ता आएगा और तुम्हारा विवाह होगा। आज से एक वर्ष के भीतर तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे स्थान पर होगा। कोई समस्या नहीं होगी। बस भगवान की इच्छा की प्रतीक्षा करो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:02 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2559 हमारा एक खेत है, और वहाँ हमें रोज़ एक बाघ दिखाई देता है। हम उससे अपनी रक्षा कैसे करें?

उत्तर: आप त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए, और माधव से कहिए, 'प्रभु, इस जंगली जानवर से हमारी रक्षा कीजिए।' मेरे विचार से, यदि आपकी भक्ति सच्ची है, तो बाघ आपकी दिशा में नहीं आएगा और अपना रास्ता बदल लेगा। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 36:06 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2560 पिताजी, इस वर्ष खेती के लिए वर्षा कैसी रहेगी?

उत्तर: इस बार वर्षा खेती के लिए अच्छी नहीं रहेगी। या तो अत्यधिक वर्षा हो सकती है या बहुत कम वर्षा। ऐसा ही समय है जिसमें हम हैं। इसलिए भगवान की शरण लिए बिना, आगे चलकर कृषि के लिए बड़ी समस्याएँ होंगी। यह केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:13 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2561 मैं यह पूछना चाहता था कि यह जो Kali Yuga चल रहा है, वह कब समाप्त होगा? कुछ लोग 2025 कहते हैं, कुछ अब कह रहे हैं कि यह 2024 में समाप्त हो सकता है, या 2029 में, या 2032 में।

उत्तर: कुछ भी समाप्त नहीं होने वाला है। यह 2032 तक चलता रहेगा। लोग भविष्यवाणियाँ करते हैं, पर वैसा नहीं होगा। कुछ भी पूरी तरह समाप्त नहीं होगा। यह धीरे-धीरे होगा। 2025 से 2032 तक का समय अच्छा नहीं है। युग तो पहले ही बदल चुका है, और नए युग की स्थापना चल रही है। इसका अर्थ है कि Satya Yuga का आगमन हो रहा है। जैसे हम मानवता के कल्याण के लिए त्रिकाल संध्या, Madhava के नाम और भागवत के पठन का प्रचार कर रहे हैं, इस संक्रमण काल में जो लोग इन साधनाओं को अपनाएँगे, वे Satya Yuga में जाएँगे। जो नहीं अपनाएँगे, वे इस परिवर्तन में बह जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 38:37 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2562 क्या इसकी कोई निश्चित तिथि है?

उत्तर: हम तिथि नहीं बताते, क्योंकि वह भगवान के अधीन है। पर मैं आपको समय-सीमा बता सकता हूँ: 2025 से 2032 तक महान परिवर्तन का काल है। त्रिकाल संध्या कीजिए, अपने मनुष्य जीवन का कल्याण खोजिए, भगवान की शरण लीजिए, और आप बच जाएँगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 40:02 · 4 जुलाई 2024

प्रश्न 2563 क्या आप आने वाली गुप्त आषाढ़ नवरात्रि के बारे में कुछ बता सकते हैं? क्या हम कोई अनुष्ठान कर सकते हैं, जैसे दश विष्णु नाम का अनुष्ठान?

उत्तर: नवरात्रि में देवी माँ की पूजा की जाती है। और यदि नवरात्रि में भगवान विष्णु की पूजा की जाए तथा भागवत कथा का पाठ किया जाए, तो यह बहुत शुभ है। देवी माँ बहुत प्रसन्न होती हैं। आप इसे घर पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ कर सकते हैं या अकेले भी कर सकते हैं। यह आपके लिए लाभकारी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 40:30 · 4 जुलाई 2024

सत्र 133 · प्रश्न 2564–2584

L146: द्वापरयुग में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को जगन्नाथ जी के रत्न भंडार के बारे में क्या बताए थें?

दिनांक: 14 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2564 पिताजी, मैं यह पूछना चाहता था कि आपने अभी जिस प्रलय की बात कही, या भगवान अभी जो कार्य कर रहे हैं, उसके संदर्भ में गोवा की क्या स्थिति होगी?

उत्तर: Bhavishya Malika पूरे विश्व के लिए लिखी गई है, केवल गोवा राज्य के लिए नहीं। पाँच प्रकार की आपदाएँ गोवा में भी आएँगी। वहाँ लोग बाढ़, अग्नि, भूकंप और सांप्रदायिक समस्याओं जैसे तत्वों से परेशान होंगे। समुद्र में भी परिवर्तन होंगे। यह सब धर्म की स्थापना का ही अंग है। देखिए, अभी भी बड़े-बड़े पर्वतों की चोटियाँ टूट रही हैं। जब महाभारत का युद्ध हुआ था, और जब भगवान कृष्ण ने पृथ्वी छोड़ी थी, तब भी ऐसी ही स्थिति हुई थी। यह परिवर्तन का समय है। हर जगह सुरक्षित रहने के लिए त्रिकाल संध्या करनी होगी, भगवान की शरण लेनी होगी, और धर्म को समझना होगा। मैं कहता हूँ कि सभी धर्म मिलकर एक धर्म, सनातन धर्म बन जाएँगे। और गोवा में, पाँचों प्रकार की आपदाओं के साथ-साथ रोग और महामारियाँ भी आएँगी, ठीक वैसे ही जैसे शेष विश्व में आएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 11:24 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2565 मेरा प्रश्न यह है कि जैसा हम समाचारों में देखते हैं, Jagannath मंदिर में चंदवा पर रक्त के धब्बे दिखाई देना और पुजारियों के बीच झगड़े — इसका क्या कारण है?

उत्तर: देखिए, Jagannath मंदिर पूरे विश्व में सनातन धर्म की आस्था का मुख्य केंद्र है। दूसरा, शास्त्रों के अनुसार Jagannath मंदिर चार धामों में से एक है। तीसरा, स्कंद पुराण के अनुसार Jagannath क्षेत्र को वैकुंठ कहा जाता है — आदि वैकुंठ या मर्त्य वैकुंठ (पृथ्वी पर वैकुंठ)। यहाँ भगवान Jagannath की महाविष्णु के रूप में पूजा होती है। जब भगवान Jagannath Kalki रूप धारण करेंगे, तब बड़े संकेत सबसे पहले Jagannath मंदिर से ही प्रकट होंगे, जैसे ध्वजा का गिरना, पत्थरों का गिरना, रत्न भंडार पर प्रश्न उठना, रत्न भंडार का कलंकित होना, महाप्रसाद का बार-बार न बनना, और पुजारियों के बीच झगड़े। ये सब बातें — रत्न सिंहासन पर रक्त के धब्बे, मंदिर पर कौओं का बैठना, और अशुभ पक्षियों का मंदिर के चारों ओर मँडराना — ये सब Kali Yuga के अंत और भगवान के अवतार के संकेत हैं। ये सारे संकेत पहले ही प्रकट हो चुके हैं, और परिवर्तन आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 14:02 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2566 जय श्री Madhava, प्रभु जी। मैं यह कह रहा था कि आने वाले विश्व युद्ध में बहुत से लोग मारे जाएँगे। कभी-कभी इसके बारे में सोचकर बहुत भय लगता है। यह कैसे होगा? और भारत में रहने वाले मुसलमान भी बहुत अत्याचार करेंगे। कृपया इस बारे में कुछ बताइए। सोचकर बहुत कष्ट होता है।

उत्तर: देखिए, यह पृथ्वी हमने नहीं बनाई। जब पृथ्वी पर लाखों-करोड़ों लोग थे, तब हमें पता ही नहीं था कि हम कब आए और कब जाएँगे। इसलिए यह पृथ्वी उन प्रभु के अधीन है जो इसे चलाते हैं। कौन रहेगा और कौन जाएगा, यह धर्म और अधर्म का विषय है। यदि हम इन विचारों में उलझ गए, तो हमें शांति नहीं मिलेगी। हमें अपने कर्म बदलने होंगे और संसार को बदलने का प्रयास करना होगा। यदि हम धर्म का पालन करें, पवित्रता बनाए रखें और अच्छे कर्म करें, तो भविष्य में हमें कोई समस्या नहीं होगी। और मानवता के लिए भी कोई समस्या नहीं होगी। मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह Kali Yuga के कर्म छोड़कर Satya Yuga के कर्म अपनाए। इसमें त्रिकाल संध्या करना, शराब, मांस और नशे का त्याग करना, और भागवत का पाठ करना शामिल है। Satya Yuga आ रहा है। जो मनुष्य स्वयं को बदल लेंगे, वे भी नए युग में आगे बढ़ेंगे, चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न हो।

► यह उत्तर सुनें · 16:01 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2567 मेरा नाम राहुल है, और मैं दिल्ली से बोल रहा हूँ। आपने कहा था कि दिल्ली पर संकट आएगा। तो पिताजी, यह संकट कब आने की संभावना है?

उत्तर: देखिए, इस संसार में मनुष्यों के लिए वैसे कोई संकट है ही नहीं। यह हमारे अपने कर्मों का फल है जिसे हम संकट कहते हैं। पर देखिए, संसार में जो भी आपदा या समस्या आए, हमें धर्म को थामे रहना चाहिए। रही बात कब आएगी की, तो मैं पहले भी कह चुका हूँ कि 'मीन सदी चालना' काल के दौरान महान परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न होगी। और धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए 2032 तक Satya Yuga आ जाएगा। इसलिए डरने की कोई बात नहीं है। बात इतनी है कि त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और Madhava का नाम जपिए। Satya Yuga का मनुष्य बनकर और Satya Yuga के कर्म करके यह मनुष्य जीवन बच जाएगा। जो आपदा आने वाली है वह आएगी और चली जाएगी; वह तीव्र होगी, बहुत अधिक। पर हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने कर्म सुधारने चाहिए। तो दिल्ली में आपदा अवश्य आएगी। मैं अनुमानित तिथि नहीं बता सकता क्योंकि यह भगवान के हाथ में है। पर बात यह है कि समय दिखाई दे रहा है। देखिए आगे क्या है और धर्म की ओर बढ़िए। आप और आपका परिवार सुरक्षित रहेगा।

► यह उत्तर सुनें · 17:34 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2568 हमारे पुनासा बाँध के पास एक और बाँध बना है, इंदिरा सागर बाँध। वह कब टूटेगा, पंडित जी? क्या वह अब टूटेगा? या कभी नहीं टूटेगा? यही मैं जानना चाहता था।

उत्तर: यदि वह नहीं टूटा, तो भी पानी तो ऊपर से बह सकता है न? तो पानी ऊपर से बह सकता है। उसके टूटने के बारे में मेरे पास जानकारी नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 20:02 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2569 मैं जानना चाहता हूँ कि 'नारायण कवच' के संबंध में, हम या तो उसका पाठ कर सकते हैं या उसका ऑडियो सुन सकते हैं। क्या पाठ करने के बजाय सुनना भी वही बात है, या पाठ करना बेहतर है? कृपया थोड़ा समझाइए।

उत्तर: जब कोई भोजन करता है, तो उसी का पेट भरता है। जो केवल दूसरे को खाते हुए देखता है, उसका पेट नहीं भरता। हाँ, जो लोग शारीरिक रूप से दिव्यांग हैं या जिनके पास बहुत कम समय है और जो समय नहीं दे पाते, उनके लिए कभी-कभी सुन लेना भी चल जाएगा। पर स्वयं पाठ करने से अधिक फल मिलता है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 20:51 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2570 पिताजी, पढ़ाई को लेकर मेरी अपनी माँ से बहुत झगड़े होते हैं। मुझे इसके बारे में क्या करना चाहिए? मैं सब कुछ करता हूँ, पर वे मानती ही नहीं, और हमारा हमेशा झगड़ा हो जाता है। ये झगड़े पढ़ाई को लेकर होते हैं, और बहुत तीखे हो जाते हैं।

उत्तर: देखो बेटा, जैसे हम सुबह से शाम तक तीन-चार बार भोजन करते हैं, वैसे ही पढ़ाई भोजन के समान है। जैसे प्रकाश की किरण स्वयं को सूर्य से अलग नहीं कर सकती, वैसे ही जो छोटे बच्चे अभी नौकरी में नहीं हैं, उन सबके लिए पढ़ाई आवश्यक है। संसार में क्या परिवर्तन आएँगे या नहीं आएँगे, यह अलग बात है; तुम बच्चों को उसके बारे में नहीं सोचना चाहिए। भगवान द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलो। भगवान ने यह मार्ग आनंद से जीने के लिए दिखाया है। इसलिए पढ़ो और अपने माता-पिता का सम्मान करो। हर दिन अपने माता-पिता को प्रणाम करो। यह हमारे सनातन धर्म की परंपरा है। ऐसा करने से तुम्हारी आयु बढ़ेगी और तुम्हारा भविष्य सुखमय होगा। जय। और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 21:56 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2571 पिताजी, मैं जयपुर से अलका हूँ। आपने कहा था कि मुझे एक अनुभव होगा, और मैं आपको उसके बारे में बताना चाहती हूँ। जिस रात मैं लौटी, उसी रात मुझे एक सुंदर महल जैसी जगह का स्वप्न आया। गहने पहने हुए एक बंदरिया आई और मेरे साथ 'माधव' का जाप करने लगी। उसने मुझसे माधव की दिव्य लीला के बारे में बताने को कहा। फिर मेरा पालतू कुत्ता भी आया और ज़ोर से बोला, 'माधव, माधव', जिससे मैं चौंक गई और मेरी नींद खुल गई। मैं यह अनुभव साझा करना चाहती थी।

उत्तर: देखिए, सत्य युग में सबसे पहले बंदर बोलेंगे। यह भविष्य मालिका में लिखा है। बंदर और गायें बात करेंगी। और आपने वह दृश्य देखा—एक सुंदर वातावरण में, पशु, चाहे आपका पालतू कुत्ता हो या बंदर, बात कर रहे थे और 'जय श्री माधव' कह रहे थे। सब 'जय श्री माधव' कहेंगे और सब बात करेंगे। यह सत्य युग का संकेत है, और यह आपके लिए एक प्रमाण है कि वह अवश्य आएगा। मालिका में लिखा है कि सभी जीव बात करेंगे, यहाँ तक कि पेड़-पौधे भी बात करेंगे। कोई किसी को हानि नहीं पहुँचाएगा। हर जगह शांति होगी। मनुष्य बड़ी शांति और सुख से रहेंगे, पृथ्वी पर बुरे समय और बुराई को समाप्त करके एक सुंदर नई दुनिया बनाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:20 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2572 मेरा प्रश्न यह है कि जगन्नाथ पुरी धाम की महिमा पुराणों में वर्णित है। क्या भविष्य में भी वह महिमा अक्षुण्ण बनी रहेगी?

उत्तर: कलियुग में भगवान दारु ब्रह्म (काष्ठ रूप परब्रह्म) के रूप में हैं। दूसरे युग में, जगन्नाथ क्षेत्र में भगवान की प्रकट रूप में पूजा होती है। जगन्नाथ क्षेत्र की महिमा बनी रहेगी। थोड़े समय के लिए, छह वर्षों तक, भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा रुक जाएगी; यह भविष्य पुराण में लिखा है। और कुछ दिनों के लिए भगवान जगन्नाथ क्षेत्र के बाहर रहेंगे। आपदाएँ आएँगी। उसके बाद भगवान कल्कि विभीषण को बुलाएँगे और उनसे कहेंगे कि जगन्नाथ मंदिर के पास के समुद्र के जल को सोख लें। वे अगस्त्य महामुनि को भी बुलाएँगे, जो भगवान के सामने प्रकट होंगे, और उनसे कहा जाएगा कि जगन्नाथ क्षेत्र को जल से मुक्त करें। अगस्त्य मुनि ऐसा करेंगे। उसके बाद जगन्नाथ की महिमा पुनः स्थापित होगी। यह महिमा अनंत काल के लिए है; यह अनंत युगों तक बनी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 26:13 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2573 पिताजी, सत्संग सुनते समय मुझे मूर्छा जैसी क्यों लगती है?

उत्तर: इतने भावुक मत होइए। थोड़ा और धैर्य के साथ सुनिए। भक्ति भाव होना अच्छा है, पर इतने भावुक मत होइए। माधव का नाम जपिए, फिर ऐसा नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:04 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2574 पिताजी, हम अपने परिवार के सदस्यों को इस धारा (मार्ग) में कैसे लाएँ?

उत्तर: देखिए, न कोई किसी का परिवार है, न कोई किसी का मित्र है, न कोई किसी का रिश्तेदार। सब कर्म के बंधनों के कारण एक साथ आए हैं। इस जन्म में वे परिवार बन गए हैं, पर सबके कर्म एक जैसे नहीं होते। इसलिए, जिन्हें आना है वे आएँगे, और जिन्हें नहीं आना, वे नहीं आएँगे। यदि ज़रूरी हो तो एक बार कह दीजिए। ज़्यादा मत कहिए, ज़्यादा बहस मत कीजिए, और ज़्यादा तर्क-वितर्क मत कीजिए। जो भक्त हैं वे आएँगे, और जो नहीं हैं वे नहीं आएँगे। परिवार तो माधव परिवार है। माधव परिवार पूरे विश्व में एकजुट होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:28 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2575 महाराज, हमारी कुंडली में 'पितृ दोष' क्यों होता है, और भविष्य के लिए इसका उपाय क्या है?

उत्तर: पितृ दोष कुंडली में नहीं होता। पितृ दोष तब होता है जब पूर्वजों का देहांत हो जाता है और उनका श्राद्ध या उनके 'दशा' कर्म ठीक से नहीं किए जाते। दूसरा, जब 'अस्थि विसर्जन' सही विधि से या उचित ब्राह्मण द्वारा नहीं किया जाता, तो पितृ दोष हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है। आपके जीवन में भी है। इसलिए, पितृ दोष से मुक्ति पाने के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए। साथ ही, जाजपुर में नाभिगया क्षेत्र में एक बार आकर 'पिंड दान' कीजिए। आपके सभी पूर्वजों को मुक्ति मिल जाएगी। त्रिकाल संध्या करने से भी मुक्ति मिलती है, पर एक बार पिंड दान भी कीजिए। समस्या हल हो जाएगी; दोष नहीं रहेगा। आपकी जो समस्या है, वह इस कर्म से दूर हो सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 29:29 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2576 मैं इसे (पीडीएफ) आपको कैसे भेजूँ?

उत्तर: मैं आपको एक नंबर दूँगा। वह है 9936... वही है। यदि आप उस नंबर पर पीडीएफ व्हाट्सएप कर दें, तो मैं उसे पढ़ लूँगा। पढ़ने के बाद देखूँगा कि उसमें शास्त्रों के कौन-से सत्य लिखे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 33:17 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2577 मैं छह-सात महीनों से त्रिकाल संध्या कर रही हूँ और मुझे एक दिव्य अनुभव भी हुआ। पर मुझे नहीं पता कि मेरे घर में क्या समस्या है। मेरे सपनों में मुझे बुरी चीज़ें, डर, और कोई मेरा गला दबा रहा हो, ऐसा अनुभव होता है।

उत्तर: घर में सोने से पहले भागवत का एक अध्याय पढ़िए। नरसिंह महाप्रभु का स्तोत्र 'तव कर कमल वरे' 11 बार जपिए। माधव से प्रार्थना कीजिए, 'मेरी रक्षा करो, मेरे परिवार की रक्षा करो। हे प्रभु, यहाँ जो भी दोष या बाधा है उसे दूर करो।' देखिए, उससे यह ठीक हो जाना चाहिए। जय जगन्नाथ। और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 36:08 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2578 जैसे मेरी बहन ने गोवा के बारे में पूछा, वैसे ही मैं पूछना चाहती थी कि अगर मुंबई और गोवा में महाप्रलय जैसी कोई आपदा आने वाली है, तो महाराष्ट्र में कौन-सी जगह सुरक्षित रहेगी? क्या हमें मुंबई या गोवा छोड़कर किसी सुरक्षित जगह जाना होगा?

उत्तर: देखिए, अब पृथ्वी पर कोई जगह सुरक्षित नहीं है। सिर्फ़ मुंबई या गोवा ही नहीं, पृथ्वी पर कोई भी जगह सुरक्षित नहीं है। भविष्य मालिका में लिखा है—कल मैं 'चौंसठी पटल ग्रंथ' पढ़ रहा था—अच्युतानंद ने लिखा है कि जब लोगों को पता चलेगा कि भगवान कल्कि ने जाजपुर में अवतार लिया है, तो वे सब वहीं रहने के लिए आ जाएँगे, पर उससे कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए, अपना धर्म बढ़ाइए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और माधव का नाम जपिए। पृथ्वी पर आप कहीं भी हों, भगवान की कृपा से हम आगे बढ़ सकते हैं और आने वाली आपदाओं से लड़ने के लिए अपने शरीर की और अपनी शक्ति को पूर्ण रूप से प्रकट कर सकते हैं। तो, त्रिकाल संध्या कीजिए, पोथी (पवित्र ग्रंथ) पढ़िए, और माधव की शरण में रहिए। हर जगह असुरक्षित है; सुरक्षित केवल वही है जिसके पास धर्म है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 38:04 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2579 मैं रोज़ त्रिकाल संध्या और जप करता हूँ, पर मुझे स्वास्थ्य की समस्या है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: कोई बात नहीं। देखिए, संध्या के माध्यम से संसार के सारे रोग और बीमारियाँ भी दूर हो जाती हैं। भक्ति के साथ, श्रद्धा के साथ, माधव की शरण में कीजिए। कीजिए। भक्त अजर-अमर हो जाएँगे। भक्त संसार में सबसे अधिक सम्मानित होंगे। इसलिए, त्रिकाल संध्या के सार से सब कुछ बदल जाता है। कीजिए और आगे बढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 40:43 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2580 मेरा नाम पूजा है। मैं त्रिकाल संध्या कर रही हूँ, पर मुझे नहीं पता कि भागवत कैसे पढ़ूँ क्योंकि मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ। मैं इसे पढ़ नहीं सकती, और इससे मुझे चिंता होती है।

उत्तर: त्रिकाल संध्या के लिए एक स्पीकर है। वृंदावन के, मथुरा के राकेश को कहिए, राकेश को बताइए। वे आपके लिए इसकी व्यवस्था कर देंगे। आप उस पर सुन सकती हैं। ठीक है? और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 42:10 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2581 मेरे घर के ऊपर लकड़ी रखी है, और उसमें से चींटियाँ गिर रही थीं। जैसे ही वे गिरतीं, आपस में लड़ने लगतीं। यह मैंने 5 जुलाई की रात को देखा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: क्या आप त्रिकाल संध्या करते हैं? (श्रोता: हाँ, पंडित जी।) संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए। कोई समस्या नहीं है। जय। और कोई है?

► यह उत्तर सुनें · 43:03 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2582 मेरा प्रश्न यह है कि मुझे इस मार्ग से जुड़े छह-सात महीने हो गए हैं, लेकिन अन्य भक्तों की तरह मुझे सपनों में सत्य युग या प्रलय का कोई अनुभव नहीं हुआ। और भी कई अनुभव हुए हैं, पर सपनों में वैसा कुछ नहीं।

उत्तर: देखिए, श्रद्धा के साथ त्रिकाल संध्या कीजिए। आँखें बंद करके, पूर्ण विश्वास और भक्ति के साथ सात दिन तक कीजिए। अपनी भक्ति को डगमगाने मत दीजिए। किसी और विचार में भटके बिना, बस माधव को अपने सामने रखिए। सात दिन में आपको बड़ा परिवर्तन दिखाई देगा, एक महान दर्शन होगा।

► यह उत्तर सुनें · 45:07 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2583 मेरे हृदय में भक्ति का भाव जागता ही नहीं है। मैं मन को स्थिर करके भगवान में लगाने की कोशिश करता हूँ, पर कर नहीं पाता।

उत्तर: अगर नहीं हो रहा है, तो भगवान श्रीकृष्ण की 'गोपी लीला' पढ़िए। दो महीने तक पढ़िए, भाव आ जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 45:54 · 14 जुलाई 2024

प्रश्न 2584 गोपी लीला, वह क्या है?

उत्तर: ठीक है, ठीक है, बढ़िया। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 46:12 · 14 जुलाई 2024

सत्र 134 · प्रश्न 2585–2595

L147: 13 दिन के पक्ष में 'रथ यात्रा', मानवों के लिए अमंगल का संकेत! | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 19 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2585 तो यह 13 दिन का पक्ष, मीन संक्रांति (सूर्य का मीन राशि में प्रवेश) से पहले, संसार के लिए दुःखदायी क्यों है?

उत्तर: यह काल दुःखदायी इसलिए है क्योंकि 600 वर्ष पूर्व नित्य पंच सखा ने भविष्य मालिका में लिखा था कि जब मीन संक्रांति से पहले 13 दिन का पक्ष आएगा, तब स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। यह परिवर्तन का काल होगा। इस मीन शनि से पहले का समय, जो 25 मार्च से हो रहा है, मानव सभ्यता के लिए अच्छा नहीं है। शास्त्रों में और संत अच्युतानंद ने इसके बारे में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 02:30 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2586 तो क्या भगवान कल्कि पृथ्वी पर धर्म की स्थापना के बारे में विचार करेंगे?

उत्तर: यह भी लिखा है। इसका अर्थ है कि जब यह 13 दिन का काल आएगा, तब भगवान कल्कि भक्तों की रक्षा करने और पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करने का चिंतन करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 05:23 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2587 मेरा एक प्रश्न है। हमारे घर में गणपति जी की मूर्ति है, और उनके साथ हमने रिद्धि-सिद्धि के रूप में एक सुपारी रखी थी। कई वर्षों बाद वह फट गई है। इसका क्या संकेत है?

उत्तर: यह एक संकेत है। यह रिद्धि, सिद्धि और गणेश महाप्रभु के जन्म का संकेत नहीं देता, बल्कि यह सिद्ध करता है कि हमारा अपना जन्म भी हुआ है, और भगवान की इस विराट योजना में सब कुछ, यहाँ तक कि जड़ वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं। हम धर्म में भगवान के साथ रहेंगे। जय श्री माधव जी।

► यह उत्तर सुनें · 14:18 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2588 पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि हमें अपने सारे काम भगवान पर पूर्ण विश्वास के साथ करने चाहिए। लेकिन कभी-कभी वह विश्वास मन में अहंकार जैसा लगने लगता है, जैसे 'भगवान मेरी रक्षा कर रहे हैं, वे सब सुन रहे हैं।' ऐसा क्यों होता है कि यह विश्वास कभी-कभी अहंकार जैसा लगने लगता है?

उत्तर: मनुष्य को घेरने वाली इंद्रियाँ बहुत बलवान और शक्तिशाली होती हैं। इंद्रियों के भीतर गर्व, अहंकार, अहम्, मान, लोभ, मोह और माया छिपे रहते हैं। इंद्रियाँ हमेशा हमारे शरीर पर राज करना चाहती हैं। उन्होंने बड़े-बड़े संतों पर और बड़े-बड़े देवताओं तक पर राज किया है और उन्हें कष्ट दिया है। और चूँकि यह कलियुग का काल है, इसलिए ऐसा हो रहा है। पर एक काम कीजिए: प्रार्थना कीजिए, 'माधव, मेरे मन के सारे मैल को धो दीजिए। मुझे इंद्रियों के प्रभाव से दूर रखिए।' तब आपको भगवान की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। और जैसे-जैसे आप भक्ति का अभ्यास करते रहेंगे, आपकी भक्ति की धारा पूर्ण बनी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 15:00 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2589 पंडित जी, मैं खंडवा जिले से हूँ। जब हम आरती और पूजा करते हैं, तो भगवान को रोटी आदि का भोग लगाते हैं। एक बिल्ली आकर उसे खा जाती है। मुझे इससे क्या समझना चाहिए?

उत्तर: बिल्ली का आकर भोग खा जाना... यह कब से हो रहा है? बहुत समय से या अभी हाल ही से? (प्रश्नकर्ता: लगभग दो महीने से हो रहा है, पंडित जी।) ठीक है, तो दो महीने से हो रहा है। देखिए, बिल्ली 'काल' (समय/मृत्यु) का प्रतीक है। हमारी हिंदू परंपरा में बिल्ली के रास्ता काटने के बाद उस रास्ते से जाना शुभ नहीं माना जाता। तो यह 'काल' आकर आपका प्रसाद ग्रहण कर रहा है। एक कारण कोई दोष या बाधा हो सकती है, इसीलिए वह आपके घर आ रही है, लेकिन वह आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकती। अर्थ यह है कि माधव आपकी रक्षा करेंगे, इसलिए चिंता मत कीजिए। एक काम कीजिए: रात को सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपिए। इससे आप जो अनुभव कर रहे हैं, उसमें परिवर्तन आ सकता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:29 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2590 पंडित जी, मैं पाकिस्तान से बोल रहा हूँ। मैं 'माधव नाम' भजन गाता हूँ और जप भी करता हूँ, लेकिन मुझे त्रिकाल संध्या समझ नहीं आती क्योंकि मुझे हिंदी नहीं आती, केवल सिंधी आती है।

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या भगवान महाविष्णु का दशावतार स्तोत्र है, जिसकी रचना जयदेव ने की, और सहस्रनाम, जो दुर्गा माधव स्तुति है। आपको इसका पाठ करना चाहिए। हम इसे आपकी भाषा में उपलब्ध कराएँगे। स्क्रीन पर एक नंबर दिखाई देता है; उस नंबर पर मनीष से संपर्क कीजिए, और हम आपको यह लिखित सिंधी में देंगे। भविष्य मालिका की रचना भी सिंधी में हुई है, लेकिन अभी वह प्रकाशित नहीं हुई है। हम वह करवा देंगे। और सुनिए बेटा, आप पाकिस्तान में रहते हैं। भविष्य में भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष होगा, लेकिन उससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। आपको धर्म को थामे रखना है। यदि पाकिस्तान के लोगों को बदलना है, तो वे भी धर्म की ओर आ सकते हैं। इस संसार में जो भी अच्छे कर्म करता है, वही अच्छा इंसान है। तो मानवता में परिवर्तन लाने के लिए काम कीजिए। वहाँ जो हिंदू रहते हैं, उनसे भी कहिए कि वे त्रिकाल संध्या का पाठ करें। इसका पाठ करने से भगवान उन्हें आने वाली आपदाओं से बचाएँगे, और संसार के सभी अच्छे मनुष्य बच जाएँगे। जो सनातन धर्म के पवित्र मार्ग पर चलना चाहते हैं, उन्हें यह सिखाइए, पर किसी को बाध्य मत कीजिए। केवल वही, जो अपनी इच्छा से इसे स्वीकार करें।

► यह उत्तर सुनें · 19:09 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2591 महालक्ष्मी के संबंध में, क्या कुछ दिनों में कोई विशेष योग/साधना करना उचित है? मुझे क्या करना चाहिए, पिताजी?

उत्तर: हाँ, कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:53 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2592 पंडित जी, भगवान 'साकार' हैं या 'निराकार'?

उत्तर: देखिए, 'निराकार' और 'साकार' — ये दोनों ही भगवान के स्वरूप हैं। 'निराकार' का अर्थ है कि भगवान का कोई आकार नहीं है। जब प्रभु मनुष्य का शरीर धारण करते हैं, तब वे 'साकार ब्रह्म' (स्वरूप सहित भगवान) हैं। जब प्रभु महाविष्णु के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्मांड में, हर जीव में, हर चराचर में विराजमान रहते हैं, तब उन्हें 'निराकार' कहा जाता है। उनका कोई आकार नहीं है। जहाँ भी देखिए, वहीं प्रभु हैं। जैसा कहा गया है, 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' — अर्थात् प्रभु सर्वत्र समान रूप से व्याप्त हैं; मैं जानता हूँ कि वे प्रेम से प्रकट होते हैं। इसका अर्थ है कि भगवान शंकर माता भवानी से कहते हैं कि प्रभु सर्वत्र विद्यमान हैं, और जहाँ भी भक्त की भक्ति, प्रेम और भाव होता है, वहाँ वे प्रकट हो जाते हैं। इस प्रकार वे 'साकार' हैं। तो, 'निराकार' का अर्थ है प्रभु का निराकार, अकल्पनीय प्रकाश या तत्त्व, और 'साकार ब्रह्म' तब है जब प्रभु पृथ्वी पर मानव रूप धारण करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 22:30 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2593 हमारे घर के मुख्य द्वार पर, एक बार मुझे ठीक बाहर एक मरा हुआ कबूतर मिला। और उसी दिन, घर के भीतर दो मरी हुई छिपकलियाँ मिलीं। इसका क्या संकेत है?

उत्तर: देखिए, कबूतर का संबंध शनि महाप्रभु से है, और घर के सामने कबूतर का मरना शुभ संकेत नहीं है। इसके लिए एक काम कीजिए: सात दिनों तक घर में भागवत का पाठ कीजिए और परिवार के साथ समय बिताइए। साथ ही, कुछ ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों को भोजन कराइए, और पशु-पक्षियों को भी खिलाइए। इससे आपका सौभाग्य जागेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:58 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2594 पिताजी, हमारे घर के मंदिर में बहुत समय से साईं बाबा की एक तस्वीर है। क्या हमें उसे हटा देना चाहिए या रखना चाहिए? और ऋद्धि-सिद्धि की सुपारी जो चटक गई है, क्या हमें उसे बदल देना चाहिए या वही रखनी चाहिए?

उत्तर: पहले, जो सुपारी चटक गई है उसे लेकर किसी पवित्र जल में विसर्जित कर दीजिए, क्योंकि घर में टूटी हुई दिव्य वस्तु रखना घर के लिए अच्छा नहीं होता। दूसरी बात, सत्य साईं बाबा या शिरडी साईं बाबा की तस्वीर के विषय में — उसे आपको हटाना नहीं चाहिए। यदि वह घर में है, तो रहने दीजिए। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:01 · 19 जुलाई 2024

प्रश्न 2595 पिताजी, मैं एक अनुभव साझा करना चाहती थी। कुछ दिन पहले, मैं परेशान थी और मैंने कलि (वर्तमान अंधकारमय युग के मूर्त रूप) को चुनौती दी, कहा, 'तू दुष्ट है, मेरे सामने आ।' आधी रात को, मुझे एक भयानक दृश्य दिखा जिसमें वह मेरा गला घोंटने की कोशिश कर रहा था। मैंने 'माधव नाम' पुकारा और वह लुप्त हो गया, पर अगले पूरे दिन मेरा शरीर अत्यंत पीड़ा में रहा। मैं डर गई थी कि वह फिर आएगा, लेकिन नरसिंह स्तोत्र का पाठ करने के बाद मैं ठीक हो गई। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह तो अद्भुत है, माता। कलि आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। कलि कुछ नहीं कर पाएगा, क्योंकि आप सब माधव की शरण में हैं। आपके पास त्रिकाल संध्या है, जो 'ब्रह्म तत्त्व' (परम दिव्य तत्त्व) है। जो व्यक्ति इसका अभ्यास करता है, वह देवता के समान है। संसार का कोई कलि, कोई अशुभ ग्रह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

► यह उत्तर सुनें · 26:00 · 19 जुलाई 2024

सत्र 135 · प्रश्न 2596–2613

L148: Internet Apocalypse कंप्यूटर सिस्टम अचल होने का कारण क्या है? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 21 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2596 जय श्री पंडित जी, जय श्री माधव। पंडित जी, मुझे कभी-कभी रात में बहुत बुरे, डरावने सपने आते हैं। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? मुझे समझ नहीं आता। मैं काफ़ी महीनों से संध्या कर रहा हूँ।

उत्तर: भगवान और उनके दस अवतारों का वर्णन पढ़िए, जैसे भगवान राम का अवतार। वह पढ़िए। साथ ही, 108 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए और भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, कृपया यहाँ से बाधाओं को दूर कीजिए।' देखिए इससे क्या परिवर्तन आता है, फिर हम आगे विचार करेंगे। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 17:55 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2597 जय श्री माधव, गुरु जी। हम दो महीने से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। अपने सपनों में मुझे लगभग 15-16 वर्ष के एक बालक के दर्शन होते हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: वे स्वयं प्रभु हैं। आपको भगवान कल्कि के दर्शन हो रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार यही उनकी आयु है, और आप उन्हें उसी आयु में देख रहे हैं। उसी आयु में प्रभु अपने भक्तों का उद्धार करने आते हैं। यह बहुत अच्छी बात है कि जब भी आप नाम जपते हैं, आपको ये दर्शन होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:52 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2598 मैंने आपको गुजरात के देवायत पंडित के बारे में एक PDF भेजी थी। उन्होंने एक श्लोक लिखा था: 'माघ मासे सिते पक्षे अष्टम्यां रवि वासरे, रुधिरास्राविणी स्नात्वा तदा कल्कि भविष्यति।' मुझे यकीन नहीं है कि इसका अर्थ सही निकाला गया है या नहीं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि माघ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को, रविवार के दिन, प्रभु सम्पूर्ण संसार में धर्म की स्थापना करने के लिए प्रकट होंगे। आपने जो साझा किया है वह एक पवित्र सत्य है। देवायत पंडित ने भी मानवता की रक्षा के लिए गुजरात की पवित्र भूमि पर जन्म लिया और भगवान कल्कि के विषय में लिखा। उन्होंने यह भी लिखा कि दासी विश्वनाथ नाम का एक व्यक्ति मंत्र देगा और प्रभु के माता-पिता के नाम प्रकट करेगा, और सम्पूर्ण भारत में इस संदेश का प्रचार करेगा — यही कार्य मैं कर रहा हूँ। आपका योगदान बहुत मूल्यवान और पवित्र है।

► यह उत्तर सुनें · 22:24 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2599 मेरा एक प्रश्न है। गुजरात के भाई ने अभी एक विशेष तिथि का उल्लेख किया। वह तिथि कब आ रही है?

उत्तर: देखिए, यह शुक्ल पक्ष में अष्टमी के दिन, रविवार को होगा। इसके लिए गणना की आवश्यकता है, परंतु हमारे अनुमान के अनुसार ऐसा समय 2025 और 2032 के बीच आएगा, और भगवान कल्कि प्रकट होंगे। जिस दिन भगवान कल्कि आएँगे, वह निश्चित हो चुका है। मेरे लिए उसे स्पष्ट रूप से बताना उचित नहीं है। बात यह है कि जब प्रभु ही सब कुछ करने वाले हैं, तो हम क्यों प्रकट करें? यदि हम पहले से बता देंगे, तो लोग सतर्क हो जाएँगे। इसलिए, भक्तों का उद्धार और पापियों का संहार प्रभु का कार्य है, और हमें उसका सम्मान करना चाहिए। वह समय अवश्य आएगा, और जो लिखा है वह बदलेगा नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 27:37 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2600 पंडित जी, मैं माही हूँ। मैंने त्रिकाल संध्या कंठस्थ कर ली है।

उत्तर: बहुत अच्छा। आपको यह अवश्य करना चाहिए। यही जीवन के उद्धार का परम तत्त्व है, जो ऋषियों, संतों और देवताओं की परंपरा के लिए भी दुर्लभ था। आप मनुष्य भी त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। इसे समझिए, अपना समय आनंद में बिताइए, और आपको प्रभु की कृपा अवश्य प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 29:24 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2601 मैं गुजरात से बोल रही हूँ। एक साल से मैं त्रिकाल संध्या कर रही हूँ, भागवत पढ़ रही हूँ और माधव नाम का जप कर रही हूँ, फिर भी कुछ ठीक नहीं लगता। मुझे नहीं पता आगे क्या होने वाला है। क्या मेरी स्थिति कभी बदलेगी, या ऐसी ही बनी रहेगी?

उत्तर: देखिए माँ, यदि आर्थिक समस्या है, तो हमारे यूट्यूब चैनल से महालक्ष्मी स्तोत्रम् दिन में तीन बार — सुबह, दोपहर और शाम — पढ़िए। आर्थिक उन्नति हो सकती है। दूसरी बात, त्रिकाल संध्या से मनुष्य धर्मनिष्ठ बनता है। समय आगे बढ़ रहा है, और हम संसार में विनाश देख रहे हैं। परिवर्तन का समय आ रहा है। यह समय अच्छा नहीं है। यदि आपको कोई समस्या या दुःख है, तो महालक्ष्मी स्तोत्रम् का पाठ कीजिए और माधव को अपनी बात बताइए। वे आपको आशीर्वाद देंगे। भक्ति के साथ आप भगवान से जो भी माँगेंगे, वे वह प्रदान करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 30:30 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2602 प्रणाम गुरुजी। जैसे पिछली कॉल करने वाली ने बाधाओं का सामना करने की बात कही, मुझे भी वैसा ही लगता है। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ और भागवत पढ़ता हूँ, फिर भी मेरी कठिनाइयाँ घट नहीं रहीं, बढ़ रही हैं। मैं क्या करूँ?

उत्तर: समाधान यह है: जिस किसी को भूत-प्रेत की बाधा हो, घर में समस्याएँ हों, या जो काले जादू से परेशान हो, उसे सुबह, दोपहर और शाम की संध्या के समय नृसिंह महामंत्र का 11 बार जप करना चाहिए। रात को सोने से पहले भागवत का एक अध्याय पढ़िए। परिवर्तन अवश्य होगा। साथ ही, सोने से पहले माधव नाम का जप कीजिए। इससे ऐसी समस्याएँ ठीक होती हैं, और आपकी भी ठीक होगी। हमारे सिद्धांत ही मनुष्य को पवित्र बनाते हैं। पवित्र बनिए, अपने कर्तव्यों का पालन कीजिए, और धर्म के मार्ग पर चलिए। किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 32:14 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2603 जय श्री माधव, पिताजी। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मुझे भी भगवान का कुछ अनुभव हो, मैं उनके वचनों का पालन कर सकूँ, और आपकी सभा में आने की कृपा प्राप्त हो।

उत्तर: अवश्य। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपको उनकी कृपा प्राप्त हो, जिससे आप प्रवचन में आ सकें और भागवत के मार्ग पर चलने योग्य बनें। जय।

► यह उत्तर सुनें · 34:05 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2604 मेरा नाम नीलम है, पंजाब से। मैं चाहती हूँ कि मेरा बड़ा बेटा भी इस आध्यात्मिक मार्ग से जुड़ जाए। मेरा छोटा बेटा और मैं पहले से ही इस मार्ग पर हैं। मैं क्या करूँ?

उत्तर: ठीक है माँ। अपने बड़े बेटे से कहिए कि वह भागवत जी पढ़े। यदि वह एक बार में एक अध्याय पढ़ेगा, तो वह इस मार्ग में आ जाएगा। आपको उसे कहना पड़ेगा। इससे उस पर कृपा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 34:59 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2605 सावन का महीना शुरू हो रहा है, जब हम व्रत रखते हैं तो क्या हम एक समय अन्न खा सकते हैं, या केवल फलाहार ही करना चाहिए? साथ ही, हम तुलसी कंठी पहनते हैं पर प्याज भी खाते हैं; और क्या सावन में 'कढ़ी' जैसी चीज़ें बनाना वर्जित है?

उत्तर: देखिए, आप एक समय भोजन (प्रसाद) ले सकते हैं। दूसरी बार आप रोटी या पराठा जैसा सूखा भोजन ले सकते हैं। कलियुग में धर्म का पालन करने के लिए उपवास उतना आवश्यक नहीं है। मैं कहता हूँ, त्रिकाल संध्या कीजिए और समय पर भोजन कीजिए ताकि शरीर मजबूत बना रहे। जो भी व्यक्ति नवरात्रि जैसे व्रत रखता है, वह एक समय अन्न का भोजन ले सकता है और दूसरे समय फल, प्रसाद या कोई अन्य हल्का भोजन ले सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 36:08 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2606 आज गुरु पूर्णिमा है। पिताजी, कृपया हमें आशीर्वाद दीजिए कि हम निरंतर भगवान के नाम का जप कर सकें।

उत्तर: आपको मेरा आशीर्वाद है कि भगवान आपको भक्ति प्रदान करें। पर भगवान ही गुरु हैं; हम तो उनके सेवक हैं। आप भी सेवक हैं। गुरु ही भगवान हैं, मेरे बच्चे। फिर भी, मैं आपके लिए यही कामना करता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 37:37 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2607 मेरा एक प्रश्न है। मालिका में वर्णन है कि जब भगवान अपना अवतार लेंगे, तो वे खंडगिरि में सभी भक्तों को दर्शन देंगे। पर हम जैसे लोग जो शायद खंडगिरि न जा पाएँ, क्या हमें भगवान का दर्शन मिलेगा?

उत्तर: देखिए, भक्त को भगवान का दर्शन भजन, पूजा और तपस्या के द्वारा मिलता है। भगवान का दर्शन पाना पूर्व जन्म के कर्मों का फल है। जो भक्त भगवान के बहुत निकट हैं, उन्हें उनका साक्षात् दर्शन होगा। जो दूर हैं, वे जहाँ हैं वहीं अपना भजन करेंगे और फिर भी उनका दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:30 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2608 सत्संग से जुड़े मुझे तीन महीने हो गए, पर भगवान ने एक बार भी सपने में दर्शन नहीं दिए। मुझे कोई आध्यात्मिक अनुभव नहीं हुआ।

उत्तर: इस प्रश्न के तुरंत बाद एक और प्रश्न आ गया, और वक्ता ने इस विशेष अंश का सीधा उत्तर नहीं दिया।

► यह उत्तर सुनें · 40:00 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2609 मैंने भागवत महापुराण मँगवाया था। वह तब आया जब मैं अशुद्ध (मासिक धर्म में) थी और उसे छू नहीं सकती थी। मैंने अपने बेटे से उसे सँभालने को कहा, और अगरबत्ती जलाते समय उससे वह थोड़ा जल गया। मैं क्या करूँ?

उत्तर: कोई बात नहीं, यह कोई समस्या नहीं है। मनुष्य का शरीर अशुद्धि के कालों से गुजरता है। अगरबत्ती से थोड़ा जल गया, यह ठीक है। यह कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 40:48 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2610 एक भक्त ने 'भक्त माल' नाम के एक सीरियल के बारे में बताया। यह किस चैनल पर आता है, भाई? यदि आप बता दें तो सहायता होगी।

उत्तर: यह यूट्यूब चैनल 'स्वामी करुण दास जी' पर है। यह प्रतिदिन रात 8 बजे आता है। यह 1 जुलाई से शुरू हुआ है, और एपिसोड रिकॉर्ड किए हुए हैं, इसलिए आप उन्हें कभी भी देख सकते हैं। यह निःशुल्क है। चैनल का नाम है स्वामी करुण दास जी।

► यह उत्तर सुनें · 43:14 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2611 महाराष्ट्र के एक संत, गगनगिरि महाराज ने 20 वर्ष पहले लिखा था कि 2025 में मुंबई एक महाप्रलय (बाढ़) में डूब जाएगी। कुछ अच्छे संत इन बातों को जानते हैं, पर भविष्य मालिका उन नकली संतों और गुरुओं के बारे में क्या कहती है जो घूम रहे हैं? वे मालिका की बात क्यों नहीं करते?

उत्तर: वे त्रिकाल संध्या नहीं करते। सभी परंपराओं की परीक्षा होगी। ओडिशा में महानदी के तट पर और अन्य स्थानों पर पाखंडियों और विधर्मियों की परीक्षा होगी और वे नष्ट होंगे। कौन मानता है और कौन नहीं, इससे हमें कोई मतलब नहीं। हमारा काम है संदेश को फैलाना। 2025 के विषय में, मुझे प्रमाण भेजिए। मेरी राय में, 2025 में समुद्र में लहरें उठ सकती हैं, पर सब कुछ तभी नहीं होगा। वह बाद में होगा।

► यह उत्तर सुनें · 44:28 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2612 गुजरात के उस संत के विषय में जिन्होंने भविष्य के बारे में लिखा था... मुझे पुस्तक का नाम समझ नहीं आया। कृपया बताइए?

उत्तर: देवायत पंडित ने भविष्य पर एक शास्त्र लिखा; 'भविष्य शास्त्र' उनका ग्रंथ है। जिस युवक ने इसका उल्लेख किया था, वे लाइन पर हैं। मैं उनसे कहूँगा कि वे हमारे ऑनलाइन ग्रुप में पुस्तक का नाम पोस्ट कर दें। ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 46:44 · 21 जुलाई 2024

प्रश्न 2613 पंडित जी, आपकी कृपा से मैं महाप्रभु के मार्ग पर चल रहा हूँ। एक महीने पहले मैंने महालक्ष्मी स्तोत्रम् कंठस्थ किया, और मैं संध्या कर रहा हूँ, भागवत पढ़ रहा हूँ और नाम जप कर रहा हूँ। बस आपका आशीर्वाद चाहिए कि यह चलता रहे।

उत्तर: तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। आगे बढ़ो। धर्म कार्य करना सबके भाग्य में नहीं होता। केवल भाग्यशाली लोगों को ही यह करने को मिलता है। भगवान तुम्हें धर्म कार्य करने की शक्ति दें। आगे बढ़ो, अच्छा करो। जय।

► यह उत्तर सुनें · 47:57 · 21 जुलाई 2024

सत्र 136 · प्रश्न 2614–2630

L149: मोदी जी का अंतिम समय जाजनग्र (जाजपुर) में बीतेगा: मालिका में प्रमाण | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 26 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2614 पंडित जी, मेरा एक प्रश्न है। हम श्रीमद्भागवत महापुराण और महाभारत जैसे शास्त्रों में पढ़ते हैं कि द्वापर युग में महाभारत युद्ध में 'यवनों' ने कौरव सेना की ओर से भाग लिया था। जिन लोगों को हम आज 'यवन' कहते हैं, उनके बारे में कहा जाता है कि वे कलियुग में आए। तो फिर द्वापर युग में वे लोग कौन थे, यदि ये लोग कलियुग में आए?

उत्तर: जो बुरे कर्म करते हैं, जो धर्म का पालन नहीं करते, जो जीवों की हत्या करते हैं, पाप करते हैं, संसार को दूषित करते हैं, और अपनी शक्ति से संसार को कष्ट देते हैं — उन्हें ऐसा कहा जाता है। यह किसी अलग समूह की बात नहीं, बल्कि उनके कर्मों की बात है। जब मनुष्य देवता की तरह आचरण करता है, तो वह समस्त मानवता के लिए सुख का स्रोत बन जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 04:27 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2615 जय जगन्नाथ, पंडित जी। मेरा प्रश्न नरेंद्र मोदी जी के विषय में है। भविष्य मालिका में लिखा है कि भारत का अंतिम राजा अपने शासन के 13वें वर्ष में सैन्य शासन लागू करेगा। मोदी जी का प्रधानमंत्री के रूप में 13वाँ वर्ष 2027 होगा, तभी सैन्य शासन लागू होना चाहिए। युद्ध 2025-26 के बीच शुरू होने की भविष्यवाणी है। तो हम पूछ रहे हैं, क्या भविष्य मालिका में लिखा है कि यह नरेंद्र मोदी की ओर संकेत करता है?

उत्तर: सरकार के भीतर बहुत बड़ी समस्या आएगी। भविष्य मालिका के अनुसार, एक पवित्र व्यक्ति जो राजयोग का अभ्यास करता है, भारत का शासन संभालेगा। उसके बाद बनने वाली सरकार केवल एक या दो वर्ष ही चलेगी, उससे अधिक नहीं। उसे कलि का शासन कहा जाता है। हमारी वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को पूर्ण शासन नहीं माना जाता, क्योंकि राजा पूरा कार्यकाल पूरा नहीं करता। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि कलियुग का शासन आएगा। मालिका कहती है कि योग का अभ्यास करने वाला व्यक्ति भारत पर शासन करेगा। इस समय कौन सत्ता में है, उस पर मैं टिप्पणी नहीं करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 06:56 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2616 जी, पंडित जी। बादल तो बहुत हैं, पर हमारे बाँध अभी भी खाली हैं। ऐसा क्यों है कि इतने बादलों के बावजूद केवल बूँदाबाँदी हो रही है, ठीक से वर्षा नहीं हो रही?

उत्तर: इस हल्की, छितरी हुई वर्षा का एक कारण है। मैं यह पहले भी कह चुका हूँ। शास्त्रों के अनुसार, जब भगवान की मूर्तियाँ गिरती हैं, तो पृथ्वी पर सूखा, अकाल और शासन में परिवर्तन होते हैं। आपको आकाश में बादल दिखेंगे, पर वर्षा नहीं होगी। ऋषि आनंद ने बहुत पहले लिखा था: देवराज इंद्र पृथ्वी की ठीक से देखभाल नहीं करेंगे। इस कारण खेती के समय वर्षा नहीं होगी, और गर्मी के मौसम में बाढ़ आएगी। ऐसा समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 09:04 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2617 जय श्री माधव, पंडित जी। मोदी जी की सरकार के विषय में — पिछले चुनाव में उन्हें पूर्ण बहुमत नहीं मिला, जो उनके लिए बड़ी चुनौती है। विपक्षी दल हर मुद्दे पर उन पर दबाव बनाएँगे। आगे वे कैसे संभालेंगे और काम करेंगे?

उत्तर: भारत में सनातन धर्म और उसका शासन पुनः स्थापित होगा। मालिका के अनुसार, केवल भारत में नहीं, बल्कि पूरी पृथ्वी पर बहुत बड़ा परिवर्तन आ रहा है। इस काल में स्थितियाँ बहुत अस्थिर रहेंगी; जो आज सत्य है, वह कल बदल जाएगा। समय अच्छा नहीं है; यह कलि का समय है। केवल वही बचेंगे जो धर्म को थामे रहेंगे। इस समय राजनीतिक क्षेत्र में भारी अस्थिरता और बड़े परिवर्तन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 11:06 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2618 जय श्री माधव, पिताश्री। पिछले सोमवार को, प्रातः प्रार्थना के समय, मैं बालकनी में गया और पूर्ण चंद्रमा देखा। देखते-देखते, उसके चारों ओर के बादल शंख के आकार में बदल गए, और चंद्रमा उसके भीतर था, और फिर बादल विलीन हो गए। यह किस बात का संकेत था?

उत्तर: शंख धर्म की स्थापना का चिह्न है। जब भगवान धर्म की स्थापना करते हैं, तब शंख की ध्वनि सुनाई देती है। किसी भक्त का ऐसा दृश्य देखना आने वाली धर्म-स्थापना का संकेत है। जो आपने देखा, वह पूरी पृथ्वी के लिए संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 12:53 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2619 जय श्री माधव, पंडित जी। मैं उसी मार्ग पर चल रहा हूँ जो आपने दिखाया है। मुझे मार्गदर्शन चाहिए। माधव एक गुप्त अवतार हैं। यदि हम उन्हें पहचानने और उनके दर्शन का सौभाग्य पाना चाहें, पर प्रार्थना के बाद संपूर्ण श्रीमद्भागवत न पढ़ सकें, तो कौन-सा विशेष अध्याय पढ़ना चाहिए?

उत्तर: आपको प्रतिदिन भागवत पढ़ना ही होगा। भारत और संसार में जितने लोग बचेंगे, उन सभी को भागवत शास्त्र पढ़ना होगा; यह आवश्यक है। ऐसा कोई नहीं होगा जो बचे और इसे न पढ़े। मैंने आपसे कहा है कि त्रिसंध्या (तीनों समय की प्रार्थना) दिव्य कार्य है, और उसके साथ आपको श्रीमद्भागवत पढ़ना चाहिए। तो भागवत पढ़िए, अपने कर्तव्य निभाइए, मार्ग पर चलिए, और समय आने पर आपको उनके दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 14:17 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2620 मेरा संत सम्मेलन के विषय में एक प्रश्न है। हम साधु-संतों को निमंत्रण देने महाराष्ट्र गए थे, पर कुछ कह रहे हैं कि सितंबर में पितृ पक्ष (पूर्वजों के सम्मान का काल) होने के कारण वे आने की पुष्टि नहीं कर सकते। इस विषय में क्या किया जाए?

उत्तर: देखिए, हम सभी को जगन्नाथ संस्कृति को जानने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं। भारत की सभी परंपराएँ इस बात पर सहमत हैं कि कलियुग समाप्त हो रहा है। इसी कारण यह सम्मेलन धर्म को आगे बढ़ाने और लोगों को आने वाले समय के बारे में बताने के लिए हो रहा है। हम भारत के सभी संतों और साधुओं को सादर आमंत्रित कर रहे हैं ताकि शास्त्रों पर चर्चा हो सके। जिनके पास समय होगा, वे आएँगे। जो नहीं आ सकेंगे, उनके लिए आगे और भी सम्मेलन होंगे, क्योंकि यह युग-परिवर्तन का काल है। इस काल में ऐसे सम्मेलन, अनुष्ठान और धर्म प्रचार का कार्य चलता रहेगा। जो आना चाहेंगे, वे आएँगे। जो नहीं आ सकेंगे, उनसे हम बाद में संपर्क करने का प्रयास करेंगे और फिर से निमंत्रण देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:23 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2621 मैं यह जानना चाहता था कि क्या मालिका में ऐसा कोई उल्लेख है कि अमेरिका की अंतिम राष्ट्रपति एक महिला होंगी, जैसे भारत में नरेंद्र मोदी नेता हैं?

उत्तर: देखिए, उनके चुनाव के संबंध में... और किसी महिला के शासन करने के विषय में... मैंने शास्त्रों से इसे स्पष्ट नहीं किया है।

► यह उत्तर सुनें · 19:17 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2622 जय श्री माधव, पिताश्री। मेरे पूजा स्थान में, जब मैं हमारी गणेश जी की मूर्ति पर चंदन का तिलक लगाती हूँ, तो गणेश जी की सूंड से लेकर उनके मस्तक तक एक आकृति बन गई है जो बांसुरी बजाते हुए भगवान कृष्ण जैसी दिखती है। क्या यह अपने आप ही प्रकट हो रहा है, या इसका कोई विशेष कारण है?

उत्तर: देखिए, भगवान गणेश देवताओं में से हैं। जैसे-जैसे आप उनकी भक्तिपूर्वक पूजा करती हैं, वे आपको प्रमाण दे रहे हैं कि अब धर्म की स्थापना होगी, और भगवान कृष्ण ही सब कुछ करने वाले हैं। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 20:07 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2623 पिताश्री, मेरा एक और प्रश्न था। मेरा छह वर्ष का बेटा पिछले कुछ दिनों से बहुत जल्दी, लगभग 2:00 या 3:00 बजे रात को जाग जाता है। वह बस देर तक उठकर बैठा रहता है और कहता है कि उसे नींद नहीं आ रही। वह इतनी जल्दी क्यों जाग जाता है?

उत्तर: देखिए, बच्चे के खान-पान और सोने के समय का सही प्रबंधन करना ज़रूरी है। यदि कोई रात 10 बजे सोता है, तो वह जल्दी जाग जाएगा। रात सोने के लिए होती है। इसे एक निश्चित दिनचर्या के अनुसार व्यवस्थित करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:18 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2624 जय श्री माधव, पिताश्री। मैं सभी नियमों का सही ढंग से पालन कर रहा हूँ, लेकिन तड़के सुबह, लगभग 4:00 बजे, मुझे स्वप्न में ऐसे अनुभव होते हैं जिनमें कोई मुझे ज़ोर से दबा रहा होता है। जब मैं रक्षा के लिए माधव का नाम जपता हूँ, तो वह मुझे और भी अधिक कष्ट देता है, मेरी पीठ में अपने नाखून गड़ाता है। यह बहुत वास्तविक लगता है। क्या आप कोई उपाय बता सकते हैं?

उत्तर: देखिए, यह कलि का प्रभाव है। भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए और कहिए, 'प्रभु, मेरी भक्ति की रक्षा कीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 22:46 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2625 गुरुजी, भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध कब होगा?

उत्तर: युद्ध पहले भी कई बार हुआ है, और आगे भी होगा। लेकिन तुम्हें उससे सरोकार नहीं रखना चाहिए। अपनी पढ़ाई से प्रेम करो, योग्यता प्राप्त करो, और अच्छे से पढ़ो। इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। अपनी शिक्षा पर ध्यान दो।

► यह उत्तर सुनें · 23:34 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2626 गुरुजी, मेरा स्कूल जाने का मन नहीं करता।

उत्तर: देखो, हर किसी के अपने कर्तव्य होते हैं जिन्हें निभाना होता है। तुम्हें अपने पाठ पढ़ने चाहिए, स्कूल जाना चाहिए, प्रतिभाशाली बनना चाहिए, और अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। अपनी पढ़ाई से प्रेम करो, योग्यता प्राप्त करो, और अच्छे से पढ़ो। तुम्हारा ज्ञान महत्वपूर्ण है।

► यह उत्तर सुनें · 23:47 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2627 जय श्री माधव, पिताश्री। जब भी मैं पूजा करने बैठता हूँ, मेरे मन में अपवित्र विचार आने लगते हैं। कृपया कोई उपाय बताइए ताकि ऐसा न हो और मैं अपनी भक्ति पर ध्यान लगा सकूँ।

उत्तर: इसके लिए, अपनी पूजा आरंभ करने से पहले, बैठकर 108 बार भगवान का नाम जपिए। इससे आपके मन को सहायता मिलेगी। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 24:44 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2628 पिताश्री, हम सुन रहे हैं कि कुछ राज्यों में कुछ नए वायरस फैल रहे हैं। क्या ये वायरस निकट भविष्य में कोरोना की तरह विकराल रूप ले सकते हैं, या जैसा मालिका में लिखा है, उससे भी बड़े वायरस अभी आने बाकी हैं?

उत्तर: 2025 तक वैसा समय नहीं आएगा। कोरोना जैसी एक बड़ी घटना भगवान की इच्छा से 2025 के लिए नियत है। अभी के लिए, यह उतना बड़ा नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 25:12 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2629 नमस्ते, पिताश्री। पूर्णिमा के दिन, जब मैं ध्यान कर रहा था और माधव का नाम जप रहा था, मैंने एक छोटे बच्चे को देखा जिसके पीछे पीली रोशनी थी और वह मुस्कुरा रहा था। इसी प्रकार, कल मुझे भगवान कृष्ण के बाल रूप के दर्शन हुए। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जो त्रिसंध्या करते हैं और माधव की शरण में हैं, भगवान उनके साथ हैं। आपको उनके दर्शन हो रहे हैं क्योंकि आपने उनकी शरण ली है।

► यह उत्तर सुनें · 26:03 · 26 जुलाई 2024

प्रश्न 2630 जय माधव, पिताश्री। मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है। इस मार्ग से जुड़े मुझे पाँच महीने हो गए हैं, लेकिन मुझे एक भी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अनुभव नहीं हुआ। मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ। कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: मैं आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। माधव का नाम जपते रहिए। ठीक है? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:10 · 26 जुलाई 2024

सत्र 137 · प्रश्न 2631–2642

L150: भगवान बलभद्र और श्री कृष्ण एक ही शरीर में कल्कि रूप धारण करेंगे | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 28 जुलाई 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2631 मेरा प्रश्न यह है कि आप कहते हैं कि श्रीक्षेत्र (पुरी) में एक महाप्रलय होगी और सभी बड़ी घटनाएँ वहीं घटित होंगी। ऐसा क्यों है कि भगवान सभी विपत्तियों की शुरुआत अपने ही क्षेत्र से कर रहे हैं? हम पापियों के कर्मों के कारण हमारे भगवान अपनी ही भूमि पर यह क्षति क्यों सह रहे हैं?

उत्तर: द्वापर युग में, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा धर्म की स्थापना करने और पावन महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद, उनका द्वारका धाम सुरक्षित था। परंतु जब पाप बढ़ गया, तो भगवान ने अपने ही क्षेत्र को, अपनी 'लीला भूमि' को समुद्र में डुबो दिया। जब भगवान धर्म की स्थापना के लिए निकलते हैं, तो सबसे पहले वे अपने ही क्षेत्र से संकेत देते हैं ताकि मानव सभ्यता को संदेश मिल जाए। अपने ही क्षेत्र में विनाश एक संकेत है। इसीलिए उन्होंने सब कुछ अपने ही क्षेत्र से आरंभ किया है, इसकी शुरुआत की है, और यह प्रमाण दे रहे हैं कि युग बदल रहा है, कि 'मेरा अवतार हो चुका है। हे मनुष्यों, आओ और मेरी शरण लो।'

► यह उत्तर सुनें · 13:55 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2632 मेरा एक प्रश्न था। हम बोल और सुन सकते हैं, परंतु जो लोग मूक और बधिर हैं, उनका क्या? वे न बोल सकते हैं, न सुन सकते हैं। उनका उद्धार कैसे होगा? यह प्रश्न बार-बार मेरे मन में आता है।

उत्तर: देखिए, इस धरती पर जीव अपने कर्म के अनुसार जन्म लेते हैं। कोई पशु के रूप में जन्म लेता है, कोई मनुष्य के रूप में, और मनुष्य जीवन में भी किसी को निष्क्रिय जीवन मिलता है। जीव अपने कर्म के अनुसार आते हैं। इसलिए भगवान ने उन्हें उनके अपने कर्म के आधार पर जन्म दिया है, और भगवान ही उनका उद्धार करेंगे। उन्हें अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक जीव, यहाँ तक कि भगवान को भी अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है। इसी कर्म के अनुसार जीव और मनुष्य जन्म लेते हैं—कोई अच्छा है, कोई बुरा है, कोई पागल है। उसी के अनुसार, उनके उद्धार में किसी के लिए समय लगेगा, तो किसी का इसी जन्म में हो सकता है। यह भगवान का निर्णय है। इसलिए जीव अपना कर्म स्वयं भोगता है। उसके बारे में सोचने के बजाय, आप अपने लिए अच्छे कर्म करते रहिए। समय आने पर अच्छा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:56 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2633 यहाँ आसपास लोग कहते हैं कि हम घर में मंजीरा नहीं बजा सकते और शंख नहीं फूँक सकते, क्योंकि इससे राक्षस जाग जाते हैं। तो क्या हम इन्हें बजा सकते हैं? क्या हम मंजीरा और शंख बजाते हुए 'माधव' नाम के भजन गा सकते हैं?

उत्तर: देखिए, शंख बजाने से घर में और अधिक पवित्रता आती है। और 'माधव' नाम के भजन गाने से, जो वहाँ रहते हैं, जो सुनते हैं, और जिनका उद्धार होता है, उन सभी को भगवान की कृपा प्राप्त होती है। करते रहिए, यह अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 17:35 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2634 गुरुजी, मेरा प्रश्न भगवान बलराम और भगवान कल्कि के बारे में है। मैंने कहीं पढ़ा है कि बलराम घोड़े पर सवार होंगे और कल्कि काले घोड़े पर, और बलराम के घोड़े का नाम कनक या अनम है... कुछ ऐसा ही मैंने पढ़ा था।

उत्तर: भविष्य पुराण, श्रीमद् भागवत महापुराण, और भगवान वेदव्यास द्वारा संकलित सभी शास्त्रों में यह उल्लेख नहीं है कि बलराम जी अलग से आएँगे। मालिका में अच्युतानंद ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जब भगवान कल्कि आएँगे, तब बलराम उनके शरीर में समाहित होंगे। बहुत विचार के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि वे विलीन हो जाएँगे, और वे एक ही रूप में आएँगे। यह भागवत में, महाभारत में, पुराणों में, कल्कि पुराण में और मालिका में लिखा है। और ऐसा ही होगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:31 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2635 मेरा एक प्रश्न था। मैं दिन में तीन बार त्रिसंध्या करती हूँ और भागवत भी पढ़ती हूँ। तो क्या मेरा परिवार सुरक्षित है? मेरा मतलब है, क्या मेरा परिवार सुरक्षित रहेगा? हमारे घर में हम सब माधव नाम का जाप करते हैं।

उत्तर: त्रिसंध्या से वातावरण पवित्र होता है, और आपका शरीर भी दिव्यता और पवित्रता की ओर बढ़ रहा है। भागवत पढ़ना बहुत अच्छा है। परंतु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपका परिवार आया कहाँ से? आपका परिवार वास्तव में आपका है ही नहीं। देखिए, जिस परिवार के साथ आप हैं, वह कर्म के कारण है। यह ऐसा है जैसे वर्षा होने पर यात्री एक पेड़ के नीचे एक साथ आश्रय ले लेते हैं। वर्षा रुकने पर सब अपने-अपने गंतव्य की ओर अलग-अलग चले जाते हैं। संसार ऐसा ही है। कर्म के अनुसार सभी जीव एक घर में एकत्र होते हैं। कर्म समाप्त होने पर वे अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं। कोई किसी से नहीं मिलता; कोई साथ नहीं जाता। इसीलिए प्रत्येक जीव के लिए त्रिसंध्या करना आवश्यक है। जो त्रिसंध्या करेंगे, उन्हें फल मिलेगा, जो सुनेंगे, उन्हें फल मिलेगा, और जो पढ़ेंगे और उसका अभ्यास करेंगे, उन्हें फल प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:00 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2636 मैं कुछ अनुभव साझा करना चाहता था। मुझे चंदन की तीव्र सुगंध आई, एक पवित्र यज्ञ में नाग जैसी आकृति दिखाई दी, और मेरा जन्मदिन नाग पंचमी को है। आपने बताया था कि चंदन की सुगंध महाप्रभु की उपस्थिति का संकेत देती है। क्या आप इन अनुभवों पर कुछ कहेंगे?

उत्तर: देखिए, जो माधव की शरण लेते हैं, उन्हें भगवान की शक्ति का अनुभव होगा। चंदन की सुगंध आएगी। जान लीजिए कि भगवान आ गए हैं। अभी उनके स्वरूप में दर्शन देने का समय नहीं आया है, परंतु वे अवश्य देंगे, एक स्थान पर, सही समय पर। यह भगवान का संकेत है। इस प्रकाश के माध्यम से, इस संकेत के माध्यम से, भगवान के प्रति अपना प्रेम बढ़ाइए।

► यह उत्तर सुनें · 26:01 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2637 गुरुदेव, मेरे दो मुख्य प्रश्न थे। पहला, मैं 'बड़ी माता' (महान माता), महाप्रभु की माता के बारे में जानना चाहता था।

उत्तर: देखिए, मैं आपको बताता हूँ... माता... दूसरी बात, भगवान के साथी, भक्त, या परिवार — सब देवी-देवता हैं। और इस समय पृथ्वी पर जितने भी भक्त हैं, वे भी मानव शरीर में देवी-देवता ही हैं। तो, भगवान जिसकी आवश्यकता होती है, उसी के साथ, परिस्थिति के अनुसार, अपना कर्म करते हैं। निर्णय उसी आधार पर होता है।

► यह उत्तर सुनें · 28:34 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2638 2,999 भक्तों और उनके एकत्र होने के विषय में — क्या वे सभी सुधर्म महा महासंघ में आ चुके हैं, या यह समय के साथ पूरा होगा?

उत्तर: अभी वे सब नहीं आए हैं। अब तक, मेरे अनुमान के अनुसार, भगवान के सबसे निकटतम भक्तों में से लगभग 200 आ चुके हैं।

► यह उत्तर सुनें · 30:11 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2639 मेरा प्रश्न यह है कि क्या भगवान हमारे 'प्रारब्ध कर्म' (पिछले कर्मों का वह भाग जो वर्तमान जीवन में फल दे रहा है) में हस्तक्षेप करते हैं? यदि करते हैं, तो किस सीमा तक? और यदि नहीं करते, तो क्यों नहीं?

उत्तर: सब कुछ भाग्य के अनुसार ही होगा। परंतु जो जन्म लेने के बाद अच्छे बन जाते हैं... भगवान उनकी सहायता करते हैं। इसलिए जो भी मनुष्य भगवान का नाम जपता है और उनकी शरण लेता है, उसका भाग्य बदल सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 32:14 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2640 हम पूछना चाहते हैं, भारत के भीतर युद्ध जैसी स्थिति कब उत्पन्न होगी?

उत्तर: मुख्य रूप से शनि के गोचर के बाद, 2025-26 में। उथल-पुथल जारी रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 34:42 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2641 पिताजी, क्या भगवान कल्कि ने इस समय अपनी दिव्य लीला आरंभ कर दी है? जो खंड प्रलय और महाप्रलय होने वाले हैं, क्या ये सब बातें अब होने लगी हैं?

उत्तर: देखिए, शुरू हो चुका है। कल्कि की लीला के कारण ही संसार में बेमौसम बारिश हो रही है, बड़े-बड़े पहाड़ ढह रहे हैं, और पूरे विश्व में आप महामारी और विनाश देख रहे हैं। यह धर्म की स्थापना के लिए अधर्म का विनाश है। और यह और बढ़ेगा। शनि के गोचर (संक्रमण) के बाद इसका प्रभाव और भी बढ़ जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 35:35 · 28 जुलाई 2024

प्रश्न 2642 मुझे भगवान कल्कि के विवाह के बारे में कुछ जानकारी चाहिए।

उत्तर: भगवान नरसिंह और माता महालक्ष्मी (अर्थात कल्कि और उनकी अर्धांगिनी) का विवाह ओडिशा के एक नगर में, भगवान के आश्रम में होगा। स्वयं ब्रह्मा जी यह विवाह संपन्न कराएंगे। भगवान शंकर इस विवाह में तांडव नृत्य करेंगे, लक्ष्मी-नारायण के समक्ष अपना आनंद प्रकट करते हुए। माता भवानी और आठ दुर्गाएँ भी वहाँ भगवान कल्कि का सम्मान करने के लिए उपस्थित रहेंगी। केवल कुछ ही, अत्यंत पवित्र, शेष बचे हुए भक्त, लगभग 10-15 लोग—बहुत से लोग इस विवाह को नहीं देख पाएंगे—केवल वे ही विवाह समारोह के अंग बनेंगे। और इस दिव्य विवाह के बाद वे संसार में अपना कार्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:53 · 28 जुलाई 2024

सत्र 138 · प्रश्न 2643–2661

L152: क्या मालिका में लिखा है पंडित काशीनाथ मिश्र जी का नाम? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 5 अगस्त 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2643 पंडित जी, कोलकाता में जो रेल इंजन रखा हुआ है, वह अपनी जंजीरों से कब मुक्त होगा?

उत्तर: देखिए, इसके बारे में भविष्य मालिका में लिखा है। पंचसखा ने लिखा है कि कोलकाता के बेदरा हाट (सियालदह) में एक रेल इंजन खड़ा है, जिसे 'पागल इंजन' कहा जाता है। वह अपने आप चल पड़ता था, किसी नियम का पालन नहीं करता था, इसलिए अंग्रेजों ने उसे लोहे की जंजीरों में जकड़ दिया। वही इंजन जगन्नाथ क्षेत्र में आएगा, जब जगन्नाथ क्षेत्र पर विदेशियों का संकट उत्पन्न होगा। उस समय रूसी सेना, भारतीय सेना और भारत सरकार जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियों को उस रेल इंजन और उसके डिब्बों में रखकर ओडिशा के चौपड़वार नामक स्थान पर ले जाएंगे। यह कब होगा, यह भगवान कल्कि करेंगे। भगवान कल्कि ही तय करेंगे कि यह कब होगा। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान की इच्छा से यह 2032 से पहले कभी, धर्म की स्थापना के काल में होने की संभावना है।

► यह उत्तर सुनें · 17:22 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2644 पंडित जी, मैं आपको स्पष्ट रूप से सुन नहीं पाया... हमें ऐसा लगता है कि आप भगवान के पिता हैं। क्या ऐसा है?

उत्तर: देखिए, मेरा काम भविष्य मालिका का प्रचार करना है, और मैं वही कर रहा हूँ। यदि आपको कुछ चर्चा करनी है, तो मैं उज्जैन जा रहा हूँ भागवत कथा के लिए और वंश मालिका के प्रचार के लिए। आप वहाँ आ सकते हैं, और हम चर्चा करेंगे। और यदि आपके कोई व्यक्तिगत विषय हैं जिन पर आप बात करना चाहते हैं, तो वहाँ कर सकते हैं। कथा उज्जैन में हो रही है, और उसके बाद दिल्ली में होगी। आप वहाँ भी आ सकते हैं। पूरे भारत में लगभग 15 कथाएँ नियोजित हैं। लेकिन मेरा काम है भविष्य मालिका का प्रचार करना, भक्तों को बचाना, और त्रिकाल संध्या का वितरण करना।

► यह उत्तर सुनें · 19:32 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2645 पिताजी, ऐसा क्यों हुआ? घर पर बैठकर शास्त्र पाठ करते समय मुझे अचानक फूलों और दूध की इतनी सुंदर सुगंध क्यों आई?

उत्तर: देखिए, यह सुगंध दिव्य सुगंध है। जब कोई भी भगवान कल्कि की पवित्र साधना, त्रिकाल संध्या करता है, तो उसे भगवान की प्रत्यक्ष कृपा मिलती है, और भगवान की उपस्थिति भी प्रकट होती है। जब भगवान अपने भक्तों के पास आते हैं, तो वे एक सुंदर सुगंध लेकर आते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर हैं। आप बहुत भाग्यशाली हैं। जो भक्त त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें इसका फल मिलता है। इतना ही नहीं, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें वैकुंठ (दिव्य धाम) की भी प्राप्ति होगी; इसका प्रमाण है। इसीलिए मैं त्रिकाल संध्या की वकालत करता हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 21:16 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2646 मेरे घर में ठाकुर जी (विग्रह) हैं, और जब मैं भजन गाती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं उन्हें गोद में उठाकर नाच रही हूँ, और कभी-कभी लगता है कि वे मेरे साथ नाच रहे हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह 'भाव' (गहरी अनुभूति) है और भक्ति का प्रमाण है। जैसी भक्ति, वैसा ही प्रेम, और भगवान उसी अनुरूप प्रकट होते हैं। यह भक्ति का पवित्र तत्व है, माता जी। ऐसी ही भक्ति बनाए रखिए, ताकि भगवान आपके समक्ष साक्षात् प्रकट हों।

► यह उत्तर सुनें · 23:04 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2647 पिताजी, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मेरी त्रिकाल संध्या की साधना बार-बार छूट जाती है; मैं इसे नियमित रूप से नहीं कर पाती। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माता जी, प्रयास करके त्रिकाल संध्या कीजिए। भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, मुझसे यह त्रिकाल संध्या सही ढंग से हो जाए। कृपा कीजिए।' मैं भी आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। आपको भी प्रयास करना चाहिए। जब समय न हो, तो संक्षिप्त रूप में कीजिए। जैसे, 'दुर्गा माधव' का छह बार जप, दस अवतारों के नामों का एक बार, 'माधव' नाम का 108 बार, और भगवान का 16 नामों वाला मंत्र। और भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, कृपा कीजिए।' मैं आशीर्वाद देता हूँ कि आपकी संध्या साधना बनी रहे।

► यह उत्तर सुनें · 24:51 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2648 पिताजी, एक स्वप्न में कहा गया कि भगवान 17वें चिह्न तक पहुँच गए हैं। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: लिखा है कि जब भगवान कल्कि 17 वर्ष के होंगे, तब वे प्रकट होंगे। 17वें चिह्न के बारे में जो स्वप्न आपने देखा, वह सही है। सत्य प्रकट होगा, और भक्तों का उद्धार होगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:07 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2649 पंडित जी, मैं बड़ी दुविधा में हूँ। मैं गृहस्थ जीवन जी रहा हूँ, और त्रिकाल संध्या करना तथा इस जीवन से उस मार्ग की ओर बढ़ना बहुत कठिन हो रहा है। कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: देखिए, बेटा, मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। भगवान आपको और शक्ति दें। देखिए, पारिवारिक ढाँचा और सांसारिक कर्तव्य बाधा नहीं हैं। भगवान राम के गुरु वशिष्ठ का परिवार था, अगस्त्य और अंगिरा का भी था। ब्रह्मा देव और भगवान शंकर का भी परिवार है, और स्वयं भगवान का भी परिवार है। लोग परिवार में रहते हुए भी अत्यंत पवित्र बन सकते हैं। तो, भगवान की कृपा आप पर हो। जो त्रिकाल संध्या आप नहीं कर पा रहे हैं, कृपया उसे कीजिए। भागवत जी का पाठ कीजिए। मैं खेरपुर, कोलकाता जा रहा हूँ भागवत कथा के लिए। वहाँ मिलकर बात करेंगे। जय जगन्नाथ जी, जय माधव।

► यह उत्तर सुनें · 27:22 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2650 जो त्रिकाल संध्या करते हैं, क्या उन्हें भगवान के दर्शन होंगे?

उत्तर: जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वह भविष्य मालिका में सुरक्षित है। जो माधव का नाम जपते हैं, जो भागवत जी पढ़ते हैं, और जो सुधर्म संघ में हैं, उन्हें होंगे। क्योंकि सुधर्म महासंघ पूरे विश्व पर शासन करेगा। संसार में कोई अन्य सरकार या राजा नहीं रहेगा। भक्त छोटे-छोटे प्रांतों के राजा बनेंगे। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, जापान, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, कनाडा—इन सभी देशों में भक्त सुधर्म महासंघ के अधीन शासन करेंगे। इसलिए सुधर्म महासंघ के लोग भगवान के निकट रहेंगे और भगवान के साथ मिलकर कार्य करेंगे। उन्हें निश्चित रूप से उनके दर्शन होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:51 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2651 पिताजी, मैं जानना चाहता हूँ कि आप जिस 'माधव' नाम के जप की बात करते हैं, उसे करने का सही तरीका क्या है? कृपया समझाइए।

उत्तर: देखिए, माधव नाम के लिए आप इस तरह अपनी उँगलियों पर एक-एक करके, 108 बार तक गिन सकते हैं। आप 'माधव', 'माधव माधव', 'श्री माधव', या 'अनंत माधव'—जो भी आपके मन को अच्छा लगे, वह जप कर सकते हैं। और जब आप कोई काम नहीं कर रहे हों, तब मन ही मन माधव का नाम जपिए। लिखा है कि भगवान कल्कि का नाम माधव है। पंचसखा ने बार-बार यह स्पष्ट किया है। जो माधव का नाम जपता है, वह वैकुंठ (दिव्य धाम) को प्राप्त होता है और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। वह इस मृत्युलोक से अमरलोक को प्राप्त करता है। और इस युग में जो माधव का नाम जपेंगे, वे भगवान कल्कि के निकट परिवार के अंग बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:01 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2652 क्या केवल मन ही मन जपते रहना ठीक है?

उत्तर: हाँ, उससे काम हो जाएगा। मन में जपती रहिए, माताजी। इस संसार-सागर की सारी समस्याएँ और विपत्तियाँ आपके लिए बहुत सरल हो जाएँगी। इसके विषय में लिखा है: 'माधव माधव...' पूरी दुनिया के भक्त 'माधव माधव' जपेंगे, और यह प्रचारित होगा कि माधव ही भगवान कल्कि हैं। फिर भी सब उन्हें पहचान नहीं पाएँगे, और कुछ लोग उनकी निंदा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 32:24 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2653 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, जब मैं भागवत पढ़ती हूँ, तो शुरू करते समय कवर सूखा रहता है, पर जब मैं समाप्त करती हूँ तो उस पर बनी लड्डू गोपाल जी की तस्वीर थोड़ी गीली हो जाती है। कृपया यह समझाइए। दूसरा, आपने कहा था कि भगवान का एक 'पर्सनल' (निजी) भक्त होगा। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: 'पर्सनल' भक्त के विषय में—'पर्सनल' जैसा कुछ नहीं है। ऋषियों, मनुष्यों, भक्तों और देवताओं ने कठिन परिश्रम और तपस्या से भगवान की कृपा प्राप्त की है। एक ऐसा भक्त होगा जो भगवान के निकट होगा और पूरे विश्व में भविष्य मालिका का प्रचार करेगा। अच्युतानंद ने 64 पटल में इसके विषय में लिखा है। तो बात 'पर्सनल' होने की नहीं है; भक्तों को उनके कर्म के अनुसार पद दिए जाते हैं—किसी को प्रचार के लिए, किसी को युद्ध के लिए, किसी को अन्य भक्तों को बचाने के लिए, किसी को नाम-जप के लिए, और किसी को भगवान की सेवा के लिए। जहाँ तक भागवत ग्रंथ की बात है, जब आप भागवत जी पढ़ती हैं और लड्डू गोपाल की तस्वीर गीली हो जाती है, तो यह भगवान की कृपा-वर्षा का संकेत है। यह आपकी भक्ति और आपके कर्मों पर गंगा-जमुना जैसे पवित्र अमृत की वर्षा है। यह बड़े आनंद की बात है; यह भगवान का प्रमाण है। यह बहुत ही आनंद की बात है।

► यह उत्तर सुनें · 33:29 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2654 पिताजी, मैं विदेश जाने की कोशिश कर रही हूँ, पर बात बन नहीं रही। क्या मुझे भारत में ही रहकर काम करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माताजी, आपके मन में जो भी है, वह भगवान से कहिए और परिश्रम कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव का नाम जपिए, और आपकी इच्छा पूरी होगी। आपके लिए भगवान की जो भी इच्छा होगी, वही अच्छा होगा—चाहे विदेश हो या भारत। जो भी होगा, आपके भले के लिए होगा। आपके मन में कोई द्वंद्व या संदेह नहीं होना चाहिए। भगवान से कहिए, 'हे प्रभु, जहाँ मेरे लिए अच्छा हो, वहीं मुझे स्थापित कीजिए।' भगवान वैसा ही करेंगे, क्योंकि वे भक्त की पीड़ा समझते हैं, उसकी पुकार सुनते हैं, और उसे आशीर्वाद भी देते हैं। अपनी भक्ति के साथ आगे बढ़िए, त्रिकाल संध्या के साथ अपना काम कीजिए, और भगवान माधव से उनकी कृपा माँगिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:23 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2655 मेरे सपने में नरेंद्र मोदी ने मुझसे कहा, 'अर्जुन जैसे बनो।' मैंने अपने चारों ओर कलियुग का अंत होते देखा, हर तरफ विनाश और युद्ध। मेरे सपने का क्या अर्थ है?

उत्तर: भगवान ने अर्जुन से कहा था, 'सर्व धर्मों को त्यागकर मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा।' नरेंद्र मोदी भी एक भक्त हैं; भविष्य मालिका में उनके विषय में लिखा है। और एक भक्त दूसरे भक्त से कह रहा है कि सब कुछ त्यागकर अर्जुन जैसा निष्काम भक्त बन जाओ। यदि आपकी यह प्रवृत्ति है, तो मैं सभी भक्तों से कहना चाहता हूँ: जैसे अर्जुन ने अपने कुल और संबंधियों को भुलाकर भगवान की शरण ली, वैसे ही आप भी अपने पारिवारिक कर्तव्य निभाइए, पर अर्जुन की तरह पूर्ण समर्पण के साथ। वही आपके लिए मंगलकारी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:32 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2656 मालिका कहती है कि काशी (वाराणसी) भगवान विश्वनाथ के त्रिशूल पर स्थित है और उसका विनाश नहीं हो सकता। पर यहाँ बहुत से पापी हैं। वे कैसे बचेंगे, विशेषकर वे जो विश्वनाथ के भक्त हैं पर भगवान माधव को जानते नहीं या उनका उपहास करते हैं?

उत्तर: पहली बात, भविष्य मालिका कहती है कि काशी-वाराणसी में एक 'मंडल' (समूह) बनेगा, जो मालिका के माध्यम से भक्तों को बचाएगा। दूसरी बात, भगवान कल्कि स्वयं भगवान शंकर ही हैं। भगवान शंकर संहार के कर्ता हैं, और भगवान कल्कि इस समय दोनों कार्य कर रहे हैं: संहार और भक्तों की रक्षा। भगवान शंकर अपना धाम पहले ही छोड़ चुके हैं। जिस दिन उज्जैन में उनके सेवक के स्थान पर आग लगी, उसी दिन भगवान शंकर ने विनाश आरंभ करने के लिए अपना त्रिशूल छोड़ दिया। क्योंकि उन्होंने अपना स्थान छोड़ दिया, इसलिए उत्तराखंड और हिमालय जैसे स्थानों पर, जहाँ भगवान निवास करते हैं, महाविनाशकारी तांडव हो रहा है, और उसका प्रभाव और कार्य पूरे विश्व में फैलेगा। इसलिए काशी-वाराणसी मंडल में भक्त बचाए जाएँगे, और पापी निश्चित रूप से नष्ट होंगे। भगवान शंकर, कल्कि रूप में, महाप्रलय भी लाएँगे, भक्तों की रक्षा करेंगे और पापियों का संहार करेंगे। जो धर्म में नहीं हैं, उन्हें रक्षा नहीं मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 39:15 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2657 मैं आपके चरणों में सौ लाख करोड़ प्रणाम करता हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं आपसे मिल सकूँ।

उत्तर: देखिए, मेरा आशीर्वाद सदा आप पर है, मेरे पुत्र। इसीलिए हम मानव सभ्यता के कल्याण और मानवता के उद्धार पर ये चर्चाएँ कर पा रहे हैं। तो मेरा आशीर्वाद पूरी तरह आपके साथ है। माधव का नाम जपिए, आपको कृपा मिलेगी, और आपके जीवन में जो भी आवश्यक है, भगवान उसे पूरा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 41:31 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2658 कोलकाता में आपके कार्यक्रम के विषय में—मैं आ रहा हूँ। मेरा नाम सिद्धार्थ है। कृपया मुझसे थोड़ी बात कीजिएगा, क्योंकि आपसे बात करने की मेरी बहुत इच्छा है।

उत्तर: जय श्री माधव, जय जगन्नाथ। बड़े आनंद की बात है। हम अवश्य मिलेंगे और बात करेंगे। यह मेरे मन में रहेगा, चिंता मत कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 42:16 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2659 मैंने बहुत से भागवत कथावाचकों को सुना है, पर आपको सुनने के बाद मुझे लगता है कि भागवत का सच्चा सार आपके शब्दों से प्रकट होता है, जो मुझे औरों से अनुभव नहीं हुआ। आपकी कथा इतनी प्रभावशाली क्यों है?

उत्तर: देखिए, जो भागवत मैं सुना रहा हूँ, वह भगवान की प्रेरणा और कृपा से है। उनकी कृपा से भागवत का पूर्ण सार, जो इस समय मानव सभ्यता के लिए अत्यंत आवश्यक है, प्रकट हो रहा है। भागवत कथा, उसका सार और उसका पूर्ण सत्य—ये मानव सभ्यता के लिए सबसे लाभकारी तत्व हैं। यह मुझे भगवान की उपासना से प्राप्त हुआ है। भागवत के सारे तत्व—जैसे भक्ति, क्रम-भक्ति, सद्यः मुक्ति, मनुष्य की मुक्ति, मानवता का कल्याण, भगवान उद्धव की विचारधारा, कलियुग का अंत—ये सारे तत्व भागवत में अत्यंत जीवंत हैं। यह दुःख की बात है कि यदि आज तक इसका सही प्रचार हुआ होता, तो पूरा विश्व सनातन धर्म से भर गया होता। कोई बात नहीं। भगवान कल्कि के आगमन और धर्म की स्थापना के साथ, हर घर में भागवत पढ़ी जाएगी। सब भागवत पढ़ेंगे। जो भागवत पढ़ेंगे, वे मृत्यु को जीत लेंगे और मानव सभ्यता के सबसे सुखी लोग बनेंगे। और त्रिकाल संध्या के माध्यम से लोग सत्य युग के दिव्य प्राणी बनेंगे। मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ। हम आपकी पवित्रता का सम्मान करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 43:29 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2660 मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए, पिताजी। मैं अपने बेटे को छोड़ने जा रहा हूँ। क्या काम पूरा होने के बाद मैं आपकी सेवा में लौट सकता हूँ?

उत्तर: भगवान करें सब कुछ आनंदपूर्वक हो। भगवान की कृपा आप पर बनी रहे, और आप आनंद में रहें, मेरे पुत्र। क्या आप संत-सभा में आ रहे हैं? पहले अपना कर्तव्य आनंद से पूरा कीजिए, मेरे पुत्र। आपके परिवार पर भगवान की कृपा है। आपका काम सहजता से पूरा हो जाने के बाद, फिर यदि कोई आवश्यकता हो तो हम बात कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:57 · 5 अगस्त 2024

प्रश्न 2661 मैं पहले 'जय श्री माधव' का जप करता था, लेकिन अब मेरा मन केवल 'माधव माधव' जपने की ओर खिंचता है, और कभी-कभी 'श्री माधव'। कृपया बताइए, मुझे क्या जपना चाहिए?

उत्तर: देखिए, माता गोपी और उद्धव जैसे भक्त भगवान को उनके नामों से पुकारते थे: गोविन्द, दामोदर, माधव, मधुसूदन। भगवान के नामों का जप करने में प्रेम का भाव आता है। 'श्री' जोड़ने से आदर का एक स्तर जुड़ जाता है, एक परंपरा है। औपचारिक पूजा के समय, जैसे त्रिकाल संध्या में, या जब कोई तपस्या कर रहा हो, तब 'श्री' की आवश्यकता होती है। लेकिन भक्ति-भाव से, गोपी-भाव में या सखा-भाव में, केवल 'माधव' जपने से माधव बहुत प्रसन्न होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 47:51 · 5 अगस्त 2024

सत्र 139 · प्रश्न 2662–2675

L153: भारत के पड़ोसी देशों के साथ आगे युद्ध की स्थिति बनेगी | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 8 अगस्त 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2662 पिताजी, मुझे आपसे कुछ पूछना था। बंगाल में हिंदू माताओं, भाइयों और बहनों की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, क्या भविष्य में शेष भारत में भी ऐसा ही कुछ होगा?

उत्तर: देखिए, बंगाल में हिंदुओं के साथ जो हो रहा है... पूरे विश्व में हिंदुओं पर एक बड़ा संकट आएगा। जो विश्वयुद्ध होगा, अच्युतानंद ने लिखा है कि वह युद्ध धर्म के कारण होगा। अर्थात् हिंदुओं, मुसलमानों और ईसाइयों के बीच। यद्यपि सभी धर्म मूलतः सनातन ही हैं, अलग-अलग मत हैं, लेकिन मुख्य संघर्ष हिंदू, मुस्लिम और ईसाई के बीच के मतभेदों के कारण होगा। और यह केवल युद्ध ही नहीं होगा; सांप्रदायिक शक्तियाँ भी होंगी। लेकिन देखिए, भारत कुछ हद तक सुरक्षित स्थान है। भारत में भाईचारा है, और लोकतांत्रिक व्यवस्था है। क्योंकि हमने इतिहास में देखा है कि जब-जब अधार्मिक लोग सरकार में रहे हैं, तब-तब ऐसे विद्रोह और विपत्तियाँ हुई हैं। लेकिन हमारे देश में, मुझे नहीं लगता कि ऐसी विपत्ति होगी। जब तक यह सरकार है, ऐसी स्थिति संभव नहीं है। हाँ, छोटी-मोटी घटनाएँ होंगी। इसीलिए हमें भगवान की शरण लेनी चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:03 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2663 पंडित जी, कई वर्षों से मुझे एक अजीब सपना आता है जिसमें हमारे यहाँ बहुत हिंसा हो रही है। बहुत से लोग हम पर हमला करने के लिए हमारे घर में घुस आते हैं, और हम भाग रहे हैं, छत पर जा रहे हैं, छिप रहे हैं, लेकिन सब मिलकर हम पर हमला करते हैं। यह सपना मुझे कई वर्षों से आ रहा है, और जब आता है तो मैं बहुत डर जाती हूँ।

उत्तर: देखिए, माता जी, यह एक संवेदनशील विषय है। मैं इस पर सोशल मीडिया पर बात नहीं कर सकता। एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में, मैं संविधान को जानता हूँ, और देश की अखंडता, संप्रभुता और सम्मान को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि हमारे देश में क्या होने वाला है, और आप सब भी जानते हैं। मैं इस पर विस्तार से चर्चा नहीं कर सकता। लेकिन जो लोग माधव की शरण लेते हैं और त्रिकाल संध्या करते हैं, उन पर कोई विपत्ति नहीं आएगी, ऐसा मेरा मत है।

► यह उत्तर सुनें · 20:49 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2664 बांग्लादेश की हिंसा के बारे में सुनकर हमें बहुत डर लग रहा है। हम बंगाल में रहते हैं, और कल यहाँ भी बड़ा हंगामा हुआ था। कहा जाता है कि आने वाला समय बहुत भयंकर होगा। बहुत से लोग यह कहते हैं, लेकिन दूसरे लोग विश्वास नहीं करते। जब हमला होगा, तो क्या हमें बचाने वाला कोई नहीं होगा?

उत्तर: देखिए, मैं एक बात कहना चाहता हूँ। एक ओर धर्म का उत्थान होगा, और दूसरी ओर पापियों का विनाश। भविष्य में ये दोनों ही बातें होंगी। शनि के मीन राशि में गोचर के दौरान पृथ्वी पर 11 ग्रहों की बाधक दृष्टि के कारण, ऐसी स्थिति केवल बांग्लादेश में नहीं, बल्कि पूरे विश्व में फैलेगी। और भारत भगवान का देश है; इस भूमि पर बहुत से भक्त जन्मे हैं। इसलिए हमें भगवान कल्कि की शरण लेनी होगी और साथ ही अपना कर्म भी करते रहना होगा। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें अपना काम करना है। जहाँ भी भगवान के भक्त हैं, भगवान किसी न किसी रूप में उनकी रक्षा करेंगे। यह मेरा विश्वास है।

► यह उत्तर सुनें · 22:11 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2665 पंडित जी, जब भारत में युद्ध होगा, तो क्या तुर्की भी अपने 14 लाख सैनिकों को भारत के विरुद्ध लड़ने के लिए लाएगा? और कौन-कौन से अन्य इस्लामिक देश भारत के विरुद्ध होंगे? कृपया उनके बारे में बताइए।

उत्तर: देखिए, भारत के विरुद्ध विश्व के सभी मुस्लिम देश एकजुट होकर युद्ध करेंगे। कुछ लड़ेंगे, कुछ हथियार और गोला-बारूद देंगे, और कुछ समर्थन देंगे। मुख्य भूमिका ईरान और तुर्की निभाएँगे। चीन और पाकिस्तान भी मुख्य भूमिका में होंगे। अमेरिका का पूरा समर्थन पाकिस्तान को जाएगा, और चीन को भी। भारत के पक्ष में रूस होगा। और कुछ समय बाद जर्मनी आएगा; जापान अनुरोध करके जर्मनी को लाएगा। यह लिखा हुआ है। और फ्रांस भी भारत के साथ होगा। यही स्थिति उत्पन्न होने वाली है।

► यह उत्तर सुनें · 23:37 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2666 मेरा प्रश्न त्रिकाल संध्या के संबंध में है। त्रिकाल संध्या में गायत्री मंत्र का जप बिना दीक्षा के नहीं किया जा सकता, ऐसा शंकराचार्य जी ने कहा है, जो वेद और शास्त्रों के अनुसार बोलते हैं। शास्त्रों के विरुद्ध आचरण करने से धर्म की हानि होती है। तो क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर: देखिए, आपने अच्छा प्रश्न पूछा है। उत्तर यह है कि शास्त्रों के अनुसार अब कलियुग बदल रहा है और सत्ययुग आ गया है। कलियुग के धर्म-नियमों का सत्ययुग में विस्तार होगा। सत्ययुग में सभी एक ही जाति के हो जाएँगे, सभी ब्रह्मज्ञानी हो जाएँगे और ब्राह्मण की तरह कर्म करेंगे। इस युग-परिवर्तन के कारण, मानवता की रक्षा के लिए जैसा मैं कह रहा हूँ वैसा करना आवश्यक है। यदि कोई सोशल मीडिया से या किसी पुस्तक से सीखता है, तो वही स्रोत उसका गुरु बन जाता है। गुरु मन की बात है। ध्रुव और प्रह्लाद ने बिना औपचारिक गुरु के भगवान को प्राप्त किया था। हम गुरु परंपरा का सम्मान करते हैं, लेकिन मंत्र जप करना और भगवान की शरण लेना प्रत्येक सनातनी का अधिकार है। गायत्री मंत्र सीखने के लिए आप जिसे भी सुनें या जो भी पुस्तक पढ़ें, उन्हें ही अपना गुरु मानिए। शास्त्रों के अनुसार, व्यक्ति जिसका अनुसरण करता है, वही उसका गुरु बन जाता है। इसमें गुरु परंपरा का उल्लंघन कहाँ है?

► यह उत्तर सुनें · 25:05 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2667 जय श्री माधव, पंडित जी। मैं इस आध्यात्मिक मार्ग पर और आगे बढ़ने के लिए आपका आशीर्वाद चाहती हूँ। इन दिनों मुझे ऐसा कोई अनुभव नहीं हो रहा है, लेकिन लगभग 25-30 वर्ष पहले मुझे भगवान विष्णु के दर्शन हुए थे। मैं चाहती हूँ कि आप मुझे आशीर्वाद दें और बताएँ कि आगे कैसे बढ़ूँ। मैं साधना करती हूँ और नाम जप करती हूँ, इसलिए मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है।

उत्तर: आपको मेरा आशीर्वाद है। धर्म का कार्य कीजिए और भगवान का प्रकाश प्राप्त कीजिए। लेकिन एक बात है, आपको त्रिकाल संध्या और भागवत का पाठ वैसे ही करना होगा जैसा मैंने बताया है। 'मैं, मेरा, तुम, तुम्हारा' का भाव कभी-कभी मनुष्य में आ जाता है; उसका त्याग करना चाहिए। मैं सभी जुड़े हुए लोगों से कहना चाहता हूँ, यदि हम 'मैं, मेरा, तुम, तुम्हारा' के तत्व को छोड़ दें और त्रिकाल संध्या करें और भागवत पढ़ें, तो हमें भगवान की पूर्ण कृपा प्राप्त होगी। देखिए, माता जी, एक समय आ रहा है जब देवी-देवता बोलेंगे, और मनुष्य उनके साथ बैठकर बातचीत करेंगे। बहुत अच्छा समय आ रहा है, और भक्त बच जाएँगे। आप जैसे भक्त को भगवान और अधिक भक्ति प्रदान करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:58 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2668 पंडित जी, मुझे पूछना था, क्या हम किसी को भागवत उपहार में दे सकते हैं?

उत्तर: अवश्य दे सकते हैं। भागवत का दान करने से हज़ार गायों के दान का पुण्य फल मिलता है। माता जी, हज़ार गायों का दान कोई नहीं कर सकता, लेकिन भागवत का दान करने से वह पुण्य मिल जाता है। हालाँकि, आपको भागवत उन्हीं लोगों को देनी चाहिए जो शाकाहारी हों, जो उसका सम्मान करें, और जो प्रतिदिन उसका पाठ करें। क्योंकि भागवत भगवान का जीवंत स्वरूप है, इसकी प्रतिदिन पूजा और पाठ होना चाहिए। जो ऐसा कर सकते हैं, उन्हें देने से आपको बहुत पुण्य मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:37 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2669 पंडित जी, मैं मुंबई से हूँ और मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, आपने कहा था कि मुंबई में बाढ़ आएगी, और लगातार बारिश से वर्तमान स्थिति बहुत खराब है। आपने जिस महाप्रलय की बात कही थी, जिसमें मुंबई डूब जाएगी, वह कब होगा? मुझे डर लगा कि कहीं यह अभी न हो जाए। दूसरा, आपने कहा था कि प्रधानमंत्री मोदी जाजपुर जाएँगे। वे वहाँ कब जाएँगे और कब समझेंगे कि माधव महाप्रभु आ चुके हैं?

उत्तर: देखिए, जब तक मनुष्य अपने ही सामर्थ्य पर भरोसा करता है, तब तक भगवान का कार्य पूर्ण रूप से संपन्न नहीं हो सकता। भविष्य मालिका में लिखा है कि नरेंद्र नाम का एक व्यक्ति विश्वभर में प्रशंसित होगा और धर्म की स्थापना में बहुत सहायता करेगा। एक समय आएगा जब वह सरकार में नहीं होगा, और तब, अपने कर्मों को धोने के लिए गंगा स्नान करके, वह जाजपुर जाएगा और प्रभु की शरण लेगा। यह समय के साथ, प्रभु की कृपा से होगा। मैं तिथि नहीं बताऊँगा, लेकिन सत्ययुग का आगमन 2030 से निश्चित रूप से होगा। मुंबई के संबंध में, यह सब एक ही दिन में नहीं होगा। अभी जो 5-10 फीट की बाढ़ है, वह बढ़कर 20, 30, यहाँ तक कि 50 फीट हो जाएगी। सुनामी और बवंडर भी आएँगे। यह लोगों के लिए चेतावनी है कि वे सुरक्षित स्थानों पर चले जाएँ। महान परिवर्तन के ये संकेत पूरे विश्व में दिखाई दे रहे हैं, जो मानवता को धर्म की ओर मुड़ने का आग्रह कर रहे हैं। बाद में कोई संकेत नहीं होंगे, केवल विनाश होगा। यह होगा, लेकिन हम तिथि नहीं देंगे। यह एक क्रमिक प्रक्रिया है।

► यह उत्तर सुनें · 30:28 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2670 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, हम कांवड़ यात्रा में बहुत से लोगों को अपनी भक्ति दिखाने के लिए भारी कलश उठाते हुए देखते हैं। क्या कलियुग में इस प्रकार की दिखावटी भक्ति भगवान स्वीकार करते हैं? दूसरा, हमने सुना है कि लगभग 2029 में सब कुछ समाप्त हो जाएगा और एक नया युग आरंभ होगा। तब भक्त कैसे बचेंगे, और क्या पृथ्वी पर केवल 64 करोड़ लोग ही बचेंगे?

उत्तर: देखिए, लोग धर्म और भक्ति का पालन बहुत अलग-अलग तरीकों से करते हैं। सभी भक्त भगवान विष्णु को प्राप्त नहीं करेंगे, केवल वे ही करेंगे जो त्रिकाल संध्या करते हैं। जो सत्ययुग में प्रवेश करना चाहते हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या करनी ही होगी। भगवान को प्राप्त करने के लिए सबसे बड़ा मार्ग है दूसरों का भला करना और पाप से बचना। आने वाली सत्ययुग की परंपरा में, सभी 'ब्रह्म कर्म' करेंगे—सभी त्रिकाल संध्या करेंगे और हर घर में यज्ञ भी करेंगे। हमें भगवान पर विश्वास रखना होगा और 'मैं' और 'तुम' की भावना का त्याग करना होगा। ऋषियों को भगवान प्राप्त करने में युगों लग गए, लेकिन यह भगवान कल्कि के अवतार का युग है। उनकी शरण लेने से बड़ा कुछ भी नहीं है। केवल त्रिकाल संध्या ही आपकी रक्षा कर सकती है, और भागवत मनुष्य को दिव्य बना सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 33:46 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2671 पंडित जी, एक महीने पहले मैंने रात के 10 बजे सपने में सूर्य देखा। इसका क्या अर्थ है, गुरुजी?

उत्तर: देखो बेटा, मैंने पहले भी कहा है कि एक समय आएगा जब तीन, यहाँ तक कि छह सूर्य उदय होंगे। लेकिन वे सूर्य देव नहीं हैं; वे अलग-अलग खगोलीय पिंड हैं जो पृथ्वी के निकट होंगे। यह आधी रात में होगा। अभी वह समय नहीं आया है, लेकिन आएगा। भगवान के भक्तों के लिए, प्रभु उन्हें पहले से दिखा देते हैं कि समय बदलने वाला है। भविष्य मालिका का अनुसरण करना और प्रभु की शरण लेना तुम्हारे अपने कल्याण के लिए है। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 37:04 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2672 मैं इस्कॉन के एक मित्र से भगवान कल्कि के अवतार के बारे में बात कर रहा था, लेकिन उसने कहा कि कलियुग तो अभी ठीक से शुरू भी नहीं हुआ है। मैंने आपकी शिक्षाओं के बिंदुओं से उससे तर्क किया, जैसे राजा परीक्षित का धर्म के पैर टूटे हुए देखना और नारद मुनि का वर्तमान युग को 'घोर कलियुग' कहना। वह उत्तर नहीं दे सका पर अपनी बात पर अड़ा रहा। शास्त्रीय प्रमाणों के बावजूद जो लोग यह नहीं मानते कि कलियुग समाप्त हो रहा है, उनसे हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर: बेटा, तुमने बहुत अच्छा काम किया। देखो, जिनमें शास्त्रों का ज्ञान नहीं है या जो किसी गलत परंपरा में फँसे हुए हैं—अर्थात् जिन्होंने शास्त्रों का सही अध्ययन नहीं किया—वे समझ नहीं सकते। भगवान ज्ञान के मार्ग से नहीं, बल्कि विश्वास के मार्ग से मिलते हैं। भविष्य मालिका पर विश्वास करना पड़ता है। जो भगवान कल्कि के सच्चे भक्त हैं, जो गोलोक वैकुण्ठ से आए हैं, वे अवश्य विश्वास करेंगे। जो नहीं करते, मालिका कहती है कि वे भक्त नहीं हैं। कलियुग तो समाप्त हो ही चुका है। संकेत चारों ओर हैं: नीम के पेड़ों पर फूल, उनसे दूध बहना, जगन्नाथ मंदिर से ध्वजा का गायब हो जाना। ये ऐसे प्रमाण हैं जिन्हें कोई नकार नहीं सकता। नित्य पंच सखा (भगवान के पाँच सखा) ने जो लिखा है, उसे झुठलाया नहीं जा सकता। जो अभी विश्वास नहीं करते, वे भगवान का संहारक रूप देखेंगे और तब विश्वास करेंगे, परंतु तब बहुत देर हो चुकी होगी। यदि वे कृष्ण के सच्चे भक्त होते, तो वे भविष्य मालिका की उपासना करते, क्योंकि यह स्वयं कृष्ण का ही वचन है। हम उनके लिए नहीं हैं जो विश्वास नहीं करेंगे; हम सच्चे भक्तों को बचाने के लिए हैं। इस अमृत के पान करने वालों को भगवान ने पहले ही चुन लिया है।

► यह उत्तर सुनें · 38:14 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2673 पंडित जी, मैं कोलकाता से हूँ और वहाँ आपकी सभा में शामिल होने की मेरी बहुत इच्छा है। परंतु कुछ बाधाओं के कारण लगता है कि मैं नहीं आ पाऊँगा। कृपया मुझे आशीर्वाद दें कि मैं सभी बाधाओं को पार कर वहाँ पहुँच सकूँ।

उत्तर: देखो, माधव का नाम जपो और भक्ति से प्रार्थना करो, 'प्रभु, कृपया मुझे प्रवचन तक पहुँचा दीजिए।' यदि कई दिन नहीं आ सकते, तो दो-तीन दिन आ जाना। माधव का नाम जपो, और तुम्हें भगवान की कृपा अवश्य प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 46:25 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2674 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, मैं भुवनेश्वर में आपके आश्रम गया था और मुझे एक गिलास पानी दिया गया जो बहुत अलग-सा लगा, सामान्य पानी जैसा नहीं। वह किस प्रकार का जल था? दूसरा, जब मैं सुबह त्रिकाल संध्या करता हूँ, तो मेरा मन मुझे जल्दी-जल्दी पूरा करने, मंत्रों को तेज़ी से बोलने के लिए उकसाता है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: आपके पहले प्रश्न का उत्तर: खंडगिरि स्थित वैकुण्ठधाम आश्रम पवित्र सरस्वती और गंडकी नदियों के संगम पर स्थित है। वहाँ का जल इसी पवित्र संगम का है, इसीलिए वह आपको अलग लगा। भक्तों के मोक्ष के लिए यह सबसे पवित्र जल है। आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर: त्रिकाल संध्या जल्दी करने की प्रवृत्ति कलियुग का थोड़ा-सा प्रभाव है, एक बाहरी प्रभाव जो मन को भटकाता है। परंतु चिंता मत कीजिए, आगे ऐसा नहीं होगा; आपका मन स्थिर हो जाएगा। वास्तव में, जल्दी करना एक अच्छा संकेत है। इसका अर्थ है कि आपका मंत्र 'सिद्ध' (पूर्ण एवं शक्तिशाली) हो रहा है। मंत्र की शक्ति के कारण ही यह जल्दी होता है, इसलिए यह बहुत अच्छी बात है। करते रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 47:27 · 8 अगस्त 2024

प्रश्न 2675 मेरा प्रश्न बांग्लादेश में हिंदुओं की वर्तमान दयनीय स्थिति को लेकर है। एक तस्वीर वायरल हो रही है जिसमें एक मंदिर में आग लगाई जा रही है और भगवान जगन्नाथ की मूर्तियाँ ज़मीन पर पड़ी हैं। वहाँ रह रहे हिंदू, या अन्य स्थानों पर ऐसे अत्याचार झेल रहे लोग कैसे बचेंगे और सुरक्षित रहेंगे? बांग्लादेश में हमारे भक्तों सहित बहुत से लोग यह पूछ रहे हैं।

उत्तर: देखिए, हिंदुओं को, या किसी भी धर्म के लोगों को, वर्तमान समस्या से बचने के लिए माधव का नाम जपना चाहिए, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, भागवत पढ़ना चाहिए, और निरंतर माधव का नाम जपना चाहिए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि वे ऐसा करेंगे तो उन्हें कोई समस्या नहीं होगी। आज जो संकट उत्पन्न हुआ है, वह भी समाप्त होगा। भगवान किसी न किसी रूप में बदला लेंगे; वे कुछ भी कर सकते हैं। प्रभु स्वयं प्रकट होकर उनकी रक्षा कर सकते हैं। उनके पास कोई और विकल्प या सहायता का स्रोत नहीं है। इसलिए उन्हें भगवान की शरण लेनी ही होगी। जो कल्कि माधव की शरण लेंगे, भगवान उन्हें बचाएँगे। जो इस मार्ग पर चलेंगे, वे अवश्य बचेंगे। मेरी राय में, उन्हें कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 54:44 · 8 अगस्त 2024

सत्र 140 · प्रश्न 2676–2689

L154: विश्व में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ेगा | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 11 अगस्त 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2676 मैं सबका कल्याण चाहता हूँ और भगवान का प्रचार करना चाहता हूँ, सबसे यह कहना चाहता हूँ कि सब कुछ छोड़कर ध्यान और भक्ति पर ध्यान दें। लेकिन मैं आजीविका के लिए गाड़ी चलाता हूँ और यह करना कठिन लगता है, फिर भी मैं प्रयास करता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखो, तुम्हें मनुष्य जीवन का सौभाग्य मिला है। इस मनुष्य जीवन को सार्थक कैसे बनाया जाए? मनुष्य की रचना धर्म से हुई है। जो आत्मा श्रेष्ठतम कर्म करती है, उसे मनुष्य जन्म मिलता है। जो मनुष्य निकृष्टतम कर्म करता है, वह नरक में कष्ट भोगता है। जो कम पाप करते हैं, वे पशु और कीट-पतंगों के रूप में जन्म लेते हैं। तो, हमें यह मनुष्य जीवन धर्म के माध्यम से मिला है। तुम्हें धर्म के प्रचार के लिए कुछ समय समर्पित करना चाहिए। यदि तुम मानवता की सेवा करोगे, तो भगवान भी तुम पर कृपा करेंगे। संसार के बदलने में अधिक समय नहीं बचा है। भारत के लोगों को भी सनातन धर्म की परंपराओं, वेदों के सिद्धांतों का पालन करना होगा और जीव हत्या से दूर रहना होगा। क्योंकि यदि लोग पशु हत्या से दूर नहीं रहे तो भारत में भी एक महान, विनाशकारी तांडव होगा। मेरे शब्द संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए एक चेतावनी हैं। मेरे शब्द संपूर्ण ब्रह्मांड के परिवर्तन के लिए हैं, क्योंकि भगवान ने ब्रह्मांड को सनातन से बनाया है, और इसे पुनः सनातन बनना ही है। विश्वभर के भक्तों की रक्षा सबसे बड़ा विषय है। भगवान ने भारत में अवतार लिया है, और वे भारत की रक्षा अवश्य करेंगे। परंतु जो अधर्म के मार्ग पर चलेंगे, उनकी रक्षा नहीं होगी। इसलिए, जब भी समय मिले, धर्म का प्रचार करो। इससे मानव सभ्यता का कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 14:33 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2677 जैसा हम बांग्लादेश में हो रहा देख रहे हैं, क्या वैसा भारत में भी होगा? अपने देश की माताओं, बहनों, मंदिरों और गुरुओं की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना धर्म है या अधर्म? और मेरा दूसरा प्रश्न है, क्या हमें अपने प्रिय माधव जी का चतुर्भुज रूप देखने को मिलेगा?

उत्तर: भगवान के रूप के दर्शन के विषय में, मैंने पहले भी कहा है कि यह भक्ति का विषय है। जो नियमित रूप से ऑनलाइन सत्संग में आते हैं, उनके विचारों और मन में हम इस पर चिंतन करेंगे। लेकिन मुख्य बात यह है कि यह भारत और संसार में सभी के लिए मोक्ष का समय है। इस समय सभी के लिए त्रिकाल संध्या करना आवश्यक है। सभी के लिए धर्म को थामे रखना आवश्यक है। केवल वे ही बचेंगे जो धर्म को थामे रहेंगे; जो नहीं रहेंगे, उनके लिए महाविपत्ति का समय आ रहा है। जो परिवर्तन हम बांग्लादेश में देख रहे हैं, वही हमने पाकिस्तान में देखा, और वही परिवर्तन हमने अफगानिस्तान में भी देखा। यह महान परिवर्तन का समय है। धर्म की शक्ति जितनी बढ़ेगी, यह उतना ही अधिक होगा। और जैसे पाकिस्तान दयनीय स्थिति में है, बांग्लादेश उससे भी बड़ी दुर्दशा का सामना करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:53 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2678 मैं पश्चिम बंगाल से एक विद्यार्थी हूँ। मैंने NEET मेडिकल परीक्षा की तैयारी की थी, लेकिन प्रश्नपत्र लीक हो गया, और कड़ी मेहनत के बावजूद मुझे सीट नहीं मिल पाई। हाल ही में एक भयावह घटना हुई जिसमें कोलकाता में रात्रि ड्यूटी पर तैनात एक महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी गई। कृपया मुझे बताइए कि

महिलाओं के साथ बार-बार ये बलात्कार की घटनाएँ क्यों होती हैं? क्या भगवान इसका न्याय नहीं करेंगे? ऐसा क्यों होता है? क्या हमारे लिए कोई सुरक्षा नहीं है? हमें क्या करना चाहिए? हमें डर लगता है। हम अपना करियर कैसे बनाएँ?

उत्तर: तुमने बहुत अच्छा प्रश्न उठाया है। देखो, कलियुग में असुरों की संख्या बढ़ गई है। भविष्य मालिका में लिखा है कि मांस खाने और पशुओं की हत्या करने से मनुष्य पशु जैसे हो जाएँगे। पशु का मांस खाने से मनुष्य में पशुवत् व्यवहार उत्पन्न होगा। और जो पशु हैं, मनुष्य नहीं, वही ऐसे जघन्य, पापपूर्ण कृत्य करते हैं जो निंदा से परे हैं। सरकार को संशोधन लाने चाहिए, और उसने बड़े संशोधन लाए भी हैं, फिर भी ऐसा होता है क्योंकि लोग अपने भोजन, जीवनशैली, वातावरण और कलियुग के असुरों के प्रभाव के कारण आसुरी हो गए हैं। इन समयों में, केवल धर्म ही तुम्हारी रक्षा कर सकता है, मेरे प्यारे। यदि कोई भी स्त्री त्रिकाल संध्या करे और माधव का नाम जपे, तो उसके साथ ऐसा नहीं होगा। प्रभु किसी न किसी रूप में उसकी रक्षा करेंगे। भगवान उसकी रक्षा करेंगे क्योंकि त्रिकाल संध्या ऐसा सिद्धांत है। आज सुबह मुंबई से एक बेटी ने मुझसे बात की; उसके पति एक बड़ी दुर्घटना से बच गए। उसने कहा कि लगा जैसे उन्हें नया जीवन मिल गया। लेकिन हर कोई त्रिकाल संध्या नहीं करता। देखो, धर्म और कर्म दोनों आवश्यक हैं। कलि के असुरों के इस साम्राज्य में केवल धर्म ही हमारी रक्षा कर सकता है। दूसरी बात, मेडिकल परीक्षा में गड़बड़ी, NEET प्रश्नपत्र का मामला, कलियुग के कारण हो रहा है। यह और बढ़ता जाएगा। लोगों को पता ही नहीं चलेगा कि क्या हो रहा है। सभी को उनकी योग्यता के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा क्योंकि कलियुग ने जकड़ लिया है और वह हर मेहनत पर अपना प्रभाव जमाना चाहता है। यही समय का स्वभाव है। इसलिए, हर माता और बहन को माधव का नाम जपना चाहिए और त्रिकाल संध्या करनी चाहिए; उन्हें भगवान की रक्षा अवश्य मिलेगी। कोई उनका अहित नहीं कर पाएगा। जहाँ तक मुझे पता है, हमसे जुड़ी एक बेटी ने मुझे फोन किया। वह जम्मू, कश्मीर में रहती है। उसने कहा कि उसे रात 11 बजे घर जाना था। जिस ऑटो-रिक्शा में वह बैठी, उसमें उसी की उम्र की एक युवा बेटी भी थी। चालक ने किसी को फोन करके कहा, 'मैं आ रहा हूँ, तुम रुको।' उसका रवैया कुछ अलग लग रहा था। डरकर उसने त्रिकाल संध्या की और उससे उतार देने को कहा, पर उसने नहीं उतारा। फिर, प्रभु से प्रार्थना करने पर, उसने उसे ऐसी सड़क पर उतार दिया जहाँ कोई नहीं था। फिर अपने आप एक और ऑटो आया, उसे बिठाया और सुरक्षित पहुँचा दिया। धर्म मोक्ष देता है, और पाप विनाश लाता है। लोगों को धार्मिक बनना होगा और माधव की शरण लेनी होगी। यदि स्त्रियाँ धर्म का पालन नहीं करेंगी, तो असुरों की शक्ति से वे कितना लड़ पाएँगी?

► यह उत्तर सुनें · 18:29 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2679 (यह एक अनुभव-कथन है) मैं मथुरा वृंदावन से ईशान हूँ। कल मैं एक वाद-विवाद प्रतियोगिता में जाने के लिए कार में था। ड्राइवर तेज़ गति से चला रहा था। किसी कारण से मेरा 'माधव माधव' का जाप रुक गया। अचानक हाईवे पर एक मोटरसाइकिल हमारे सामने आ गई। हमारे ड्राइवर ने उनसे बचने के लिए ज़ोर से गाड़ी मोड़ी। बहुत नज़दीक से बचाव हुआ; कुछ इंच का फर्क होता तो कोई हमें नहीं बचा सकता था। बाकी सब हिल गए, लेकिन मैं अपनी सीट से हिला तक नहीं। फिर, भीतर से 'माधव माधव' नाम आने लगा। बाद में मुझे एहसास हुआ कि भगवान माधव ने मुझे बचाया। उस क्षण न मेरा परिवार, न मेरी शिक्षा, न मेरा भविष्य का धन मुझे बचा सकता था। मैं उनकी कृपा से लंबे समय से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ, और उन्होंने मुझे बचाया। यदि भगवान माधव सुन रहे हैं, तो धन्यवाद।

उत्तर: त्रिकाल संध्या के माध्यम से व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होगी और न ही वह रोग से मरेगा। वह बच जाएगा। ब्रह्मांड में कोई भी शत्रु, चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, उसका अहित नहीं कर सकता। क्योंकि यह एक दिव्य सिद्धांत है, एक दिव्य कार्य है, जिसे मैं भगवान की कृपा से मानव सभ्यता में बाँट रहा हूँ। इससे बड़ा कोई सिद्धांत, परंपरा या गुरु नहीं है। एक समय आएगा जब लोग त्रिकाल संध्या करना चाहेंगे, लेकिन तब तक समय बिगड़ चुका होगा, और उसका कोई लाभ नहीं होगा। अभी इसे अपनाने का समय है, ताकि तुम्हारा कल्याण सुनिश्चित हो सके।

► यह उत्तर सुनें · 26:12 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2680 पिछले जन्म में या इसी जन्म में किए गए पापों और महापापों के कारण मुझे बहुत पश्चाताप होता है। कभी-कभी जीवन सार्थक नहीं लगता। मुझे लगता है कि मैंने गलतियाँ की हैं, और कभी-कभी मेरे मन में आत्महत्या के विचार भी आते हैं। क्या भगवान मेरे पाप क्षमा करेंगे, या मुझे उनका फल भोगना पड़ेगा?

उत्तर: तुम्हारे ऊपर भगवान की कृपा है, और भगवान स्वयं तुम्हें बचाना चाहते हैं, इसीलिए तुम हमसे जुड़े हो। दूसरी बात, हमें मनुष्य जन्म मिला है, और इस मनुष्य जीवन में अभी भी समय है। एक वर्ष में व्यक्ति वैकुण्ठ (स्वर्ग) प्राप्त कर सकता है। कई जन्मों के कर्म धर्ममय जीवन के एक ही दिन में धुल सकते हैं। देखो, आजकल समाज में जो आत्महत्याएँ होती हैं, वे कलियुग के प्रभाव के कारण हैं। जो आत्महत्या करते हैं, उन्हें फिर कभी मनुष्य जन्म नहीं मिलता। आत्मा को उससे कोई लाभ नहीं होता। आत्महत्या कलि, भूत-प्रेतों के प्रभाव में की जाती है, या क्रोध के आवेश में की जाती है। परंतु जो भी आत्मा आत्महत्या करती है, उसे फिर कभी मनुष्य जन्म नहीं मिलता, और उसे नरक के सिवा कुछ नहीं मिलता, जहाँ वह डूबती ही रहती है। इसलिए, यह विचार अपने मन से निकाल दो। त्रिकाल संध्या करो, माधव का नाम जपो। यदि नौकरी या किसी और चीज़ में समस्या है, तो सोचो कि आगे कैसे बढ़ा जाए। आत्महत्या करना कायर का काम है, और इससे व्यक्ति को कोई लाभ नहीं होता, केवल दुःख मिलता है। भूत-प्रेत भी उन्हें जगह नहीं देते, कहते हैं, 'तुम आत्महत्या करके आए हो, कहीं और जाकर बैठो, हमारे साथ नहीं बैठ सकते।' नरक की यातना के सिवा कुछ नहीं है। और आत्महत्या ऐसा कर्म है कि करोड़ों वर्षों तक, यहाँ तक कि अनंत वर्षों तक मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा। इसलिए बुद्धिमान लोग कभी आत्महत्या नहीं करते।

► यह उत्तर सुनें · 29:11 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2681 क्या भगवान का नाम जपने से मेरे पाप धुल जाएँगे?

उत्तर: त्रिकाल संध्या कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए और माधव का नाम जपिए। भागवत गीता पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 31:47 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2682 मेरी दादी का देहांत हो गया। उनके गले में तुलसी और रुद्राक्ष की माला थी। क्या उन्हें वैकुंठ (स्वर्ग) में स्थान मिलेगा?

उत्तर: नहीं, उन्हें मुक्ति नहीं मिली। उनका श्राद्ध (अंतिम संस्कार की क्रियाएँ) विधिपूर्वक कीजिए। देखिए, आत्महत्या उन्हीं घरों में होती है जहाँ भूत-प्रेतों का प्रभाव होता है, या जहाँ 'पितृ दोष' होता है। तो उनकी अंतिम क्रियाएँ ठीक से कीजिए। केवल गले में तुलसी की माला होने से मुक्ति की गारंटी नहीं होती।

► यह उत्तर सुनें · 32:03 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2683 मैं भगवान भोलेनाथ (शिव) के बारे में जानना चाहती हूँ। आने वाली आपदाओं में उनकी क्या भूमिका है? मुझे वे बार-बार दिखाई देते हैं। मैं माधव की भक्त हूँ, लेकिन आज एक पंडित जी ने मुझसे पूछा, 'आपने महादेव की पूजा करनी क्यों बंद कर दी?' मैंने तो कभी उनकी पूजा की ही नहीं। उन्होंने कहा, 'इस जन्म में नहीं, तो पिछले जन्म में की होगी।' मुझे भगवान शिव त्रिशूल लिए खड़े दिखाई देते हैं, पूछते हैं कि मैंने उनकी भक्ति क्यों छोड़ दी। मैं थोड़ी विचलित हो गई हूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: भगवान शंकर भगवान के अवतार हैं, 'अंश अवतार' हैं। ब्रह्मा देव और शंकर भगवान, दोनों ही भगवान के अंश से उत्पन्न हुए हैं। वे सब एक ही हैं, अलग नहीं हैं। देखिए, यदि आपका मन कहता है, तो भगवान शंकर का नाम भी जपिए, उनकी पूजा भी कीजिए। लेकिन सत्य युग में जाने के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए। इसमें कोई समस्या नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 32:49 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2684 मेरी माँ पूछ रही थीं कि एक स्त्री होने के नाते क्या वे नारायण शिला (शालिग्राम) पर 'जलाभिषेक' कर सकती हैं और उसे स्पर्श कर सकती हैं या नहीं?

उत्तर: कोई भी स्त्री भक्ति और पवित्रता के साथ भगवान की पूजा कर सकती है। नारायण शिला, जिसे शालिग्राम कहते हैं, के विषय में मैंने कुछ जगहों पर देखा है कि स्त्रियों को उसकी पूजा करने से मना किया जाता है; उनके घरों में यह परंपरा नहीं है। लेकिन मेरा सिद्धांत यह है: जब नारायण ने भगवान कृष्ण के रूप में जन्म लिया, तब सभी गोपी माताएँ उनकी पूजा कर रही थीं। वे तो उनके साथ दिव्य रास नृत्य तक कर रही थीं और उनकी पूजा कर रही थीं। मीरा बाई ने भगवान कृष्ण की पूजा की और सशरीर उन्हें प्राप्त किया। इसलिए हर मनुष्य को, हर स्त्री को भगवान विष्णु, नारायण की पूजा करने का अधिकार है। भविष्य मालिका कहती है कि भगवान विष्णु की पूजा न होने के कारण कलियुग की आयु में से 17,000 वर्ष काट दिए गए। इसलिए मेरे सिद्धांतों के अनुसार और भविष्य मालिका के सिद्धांतों के अनुसार, सभी को भगवान विष्णु की पूजा करने का अधिकार है। इसमें कोई समस्या नहीं है। आप प्रसन्नता से कर सकती हैं। धर्म में रहिए, सत्कर्म कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए। मेरा आशीर्वाद और भगवान का आशीर्वाद आपके साथ है।

► यह उत्तर सुनें · 34:44 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2685 (यह एक अनुभव है) परसों मैं गोवर्धन परिक्रमा के लिए गया था। पूरी रात जागता रहा। सुबह त्रिकाल संध्या करने के बाद मैंने माधव जी से प्रार्थना की कि मुझे सकुशल दिल्ली घर पहुँचा दें। मैं थका हुआ था और बाइक चलाते-चलाते ही सो गया। सुबह करीब 7 बजे मेरे आगे एक बड़ा ट्रक था। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गया। पीछे से एक कार के हॉर्न ने मुझे जगा दिया। मैं ट्रक से बस एक फुट की दूरी पर था। भगवान माधव ने मेरी कितनी रक्षा की। मैंने तुरंत उन्हें धन्यवाद दिया और कहा, 'प्रभु, मैंने आपसे माँगा था, और आपने किसी और के माध्यम से मेरी जान बचा ली।'

उत्तर: जो लोग माधव का नाम जपते हैं और त्रिकाल संध्या करते हैं, उनकी कभी अकाल मृत्यु नहीं होती। अकाल मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि भगवान अपने भक्तों के साथ चलते हैं। माधव का नाम मनुष्य को ब्रह्मांड की सबसे बड़ी विपत्तियों से बचा सकता है। तो माधव का नाम जपिए और भक्ति में रहिए। भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। आगे से, यदि आपको नींद आए या कोई समस्या हो, तो कृपया रुक जाइए, बेटा। भगवान ने एक बार आपको बचा लिया। तो हमें यह दोबारा नहीं करना चाहिए। हम भगवान की भक्ति में रहेंगे और ऐसी गलतियाँ नहीं करेंगे जिन्हें सुधारना कठिन हो। हाँ, भगवान हैं, हम त्रिकाल संध्या करते हैं, हम माधव का नाम जपते हैं, और भगवान निश्चय ही हमारी रक्षा करेंगे। लेकिन भगवान ने आपको एक बार चेतावनी दे दी है, इसलिए दोबारा ऐसा मत कीजिए। समझदारी से काम लीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 36:45 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2686 मैंने आपके चैनल पर एक वीडियो देखा जिसमें कहा गया था कि आने वाले सत्य युग में सभी को 16 वर्ष का नया शरीर मिलेगा। क्या यह सब सचमुच होगा? क्या शास्त्रों में जो लिखा है वह झूठ है?

उत्तर: शास्त्रों में भगवान के अवतारों के विषय में जो कुछ लिखा है, वह हर युग में हुआ है। भगवान ने शास्त्रों में जो भी वचन दिया है, वह आदिकाल से हर युग में सत्य सिद्ध हुआ है। आने वाले समय में, जो लोग माधव की शरण में रहेंगे, त्रिकाल संध्या करेंगे, भागवत गीता पढ़ेंगे, शाकाहारी बनेंगे, और सुधर्म महासंघ के सदस्य बनेंगे, केवल वही युवावस्था प्राप्त करेंगे। यह मैंने पहले भी कहा है, और फिर से कह रहा हूँ। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। यह निश्चित रूप से होगा, लेकिन भक्त होना आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 39:31 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2687 हम बहुत परेशान हैं। हमने कर्ज लेकर यह अनार का बगीचा लगाया है। लोग ड्रोन से नजर रखकर फसल चुराना चाहते हैं। इसका क्या समाधान है? हम बहुत तनाव में हैं।

उत्तर: देखिए, कलियुग के अंत में—या यूँ कहिए कि कलि तो जा चुका है—चोरों की संख्या बहुत बढ़ जाएगी। यह भविष्य मालिका में लिखा है। तो एक काम कीजिए: माधव का नाम जपिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और अपने खेतों में बैठकर कीजिए। आपको भगवान की सुरक्षा प्राप्त होगी। यह हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 44:31 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2688 मुझे भगवान का अनुभव कब होगा? मैं महसूस करना चाहती हूँ कि वे मेरे साथ हैं। मैं सबके अनुभव सुनती हूँ, लेकिन मुझे अपना अनुभव चाहिए।

उत्तर: ये सभी सिद्धांत—त्रिकाल संध्या, भागवत गीता पढ़ना, और माधव का नाम जपना—एक ही दिव्य सिद्धांत हैं। इन सबका पालन कीजिए। आपको भगवान की पूर्ण कृपा प्राप्त होगी, आपका जीवन सार्थक होगा, और आपका मनुष्य जीवन दिव्य बन जाएगा। त्रिकाल संध्या के अलावा और कोई मार्ग नहीं है। आपको भागवत गीता पढ़नी ही होगी; इसे हर घर में पढ़ा जाना चाहिए। तो भागवत पढ़िए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और माधव का नाम जपिए। बेटी, आपको भगवान की पूर्ण कृपा प्राप्त होगी। भक्ति के साथ कीजिए और बुरे लोगों से दूर रहिए।

► यह उत्तर सुनें · 45:34 · 11 अगस्त 2024

प्रश्न 2689 क्या आप हमें मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के बारे में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: विशेष रूप से इसके बारे में नहीं लिखा है, लेकिन मध्य प्रदेश के बारे में लिखा है। मध्य प्रदेश के हर जिले में विपत्तियाँ, आपदाएँ, रोग, बीमारियाँ, भूकंप, बाढ़, अग्निकांड और महामारियाँ बढ़ेंगी। लोगों के लिए रक्षा है त्रिकाल संध्या। केवल वही बचेंगे जो त्रिकाल संध्या करेंगे। एक गाँव में केवल दो, चार या पाँच लोग बचेंगे; बाकी सब अपने कर्मों के अनुसार अपने रास्ते चले जाएँगे। महान परिवर्तन का समय आ रहा है। हम प्रतिदिन धरती पर कंपन देख रहे हैं। यह परिवर्तन चक्रवाती रूप ले लेगा और तेज हो जाएगा। मानवता को धर्म की ओर मुड़ना ही होगा। त्रिकाल संध्या और भागवत गीता का पाठ मानवता की रक्षा कर सकते हैं। पूरे विश्व पर महाविपत्ति का समय मंडरा रहा है। इस समय धर्म के अलावा और कोई मार्ग नहीं है, माधव की शरण में जाने के अलावा मानवता के लिए और कोई रक्षा नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 47:35 · 11 अगस्त 2024

सत्र 141 · प्रश्न 2690–2702

L155: माता और कन्याओं के ऊपर अत्याचार क्यों हो रहा है ? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 18 अगस्त 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2690 मैं यह पूछना चाहता था कि जो लोग धार्मिक हैं लेकिन फिर भी स्त्रियों का अनादर करते हैं और बुरे कर्म करते हैं, उन्हें क्या गति प्राप्त होगी? क्योंकि जैसा आप कहते हैं, भगवान का नाम एक बार लेने से ही सारे पाप धुल जाते हैं। तो ऐसे लोग जो स्त्रियों के साथ गलत करते हैं, उनके लिए भगवान न्याय कैसे करेंगे?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका में इस विषय पर एक रचना है। जो लोग माताओं और बेटियों के साथ कामुक और पापपूर्ण कृत्य करते हैं, उनका विनाश योगिनी माता द्वारा रोग और महामारी से होगा, और उसके बाद उन्हें नरक की गति प्राप्त होगी। देखिए, इस पाप की कोई क्षमा नहीं है। पाप का स्वभाव ही ऐसा है कि जो माताओं और बेटियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, वे नरक में जाएँगे। यम पुराण और गरुड़ पुराण में लिखा है कि ऐसे लोगों को अपने पापों का भोग नरक में एक पूरे कल्प तक भोगना पड़ेगा। और कलियुग में उनकी अप्राकृतिक मृत्यु होगी। इसलिए ऐसे कर्म करके मनुष्य अपनी ही मृत्यु का काम करता है और अपने ही विनाश को निमंत्रण देता है। क्योंकि यदि शरीर ही चला गया, तो संसार में और क्या रह गया? इसीलिए जो ऐसे पाप करते हैं, उन्हें क्षमा नहीं मिलेगी। यह भविष्य मालिका में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 15:11 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2691 जय श्री माधव, पंडित जी। एक न्यूज़ चैनल के इंटरव्यू में आपने एक बार कहा था कि आप भगवान परशुराम से मिल चुके हैं। हम विस्तार से जानना नहीं चाहते, बस हमारा एक ही प्रश्न है कि क्या आप बता सकते हैं कि वे किस रंग के वस्त्र पहनते हैं? वे दिखने में कैसे हैं? क्या आप यह बता सकते हैं, पंडित जी?

उत्तर: देखिए, भगवान परशुराम भगवा रंग के वस्त्र धारण करते हैं और उनकी जटा है। कलियुग के मनुष्य उनके दर्शन को सह नहीं पाएंगे, क्योंकि उनका दिव्य स्वरूप है। भगवान परशुराम त्रेता, द्वापर और कलियुग तक तपस्या में हैं, और उनमें इतनी शक्ति और प्रभाव है कि उनके सामने खड़ा होना कठिन है। यदि कोई अपने तप के बल से उनके सामने आ भी जाए, तो वह जलकर भस्म हो जाएगा। केवल भगवान कल्कि ही उनके सामने खड़े हो सकते हैं। भगवान कल्कि और उनकी भेंट हो चुकी है, और कल्कि की लीला इस समय चल रही है।

► यह उत्तर सुनें · 16:59 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2692 पंडित जी, मुझे यह पूछना था, मेरी शादी को सात साल हो गए हैं और हमें कोई संतान नहीं है। मैं इस समय दवाई ले रही हूँ। साथ ही, गाँव में हमारे घर में मेरी माँ को रात में एक काली छाया दिखाई देती है और पैरों की आहट सुनाई देती है, जिससे वे ठीक से सो नहीं पातीं। यह कैसी समस्या है?

उत्तर: देखिए, आपके घर में 'पितृ दोष' है, इसीलिए पितर भी आते-जाते रहते हैं। घर में एक काम कीजिए: अपनी माँ से कहिए कि वे भागवत जी का पाठ करें। भागवत जी का पाठ करने के बाद प्रतिदिन भगवान माधव के नाम से त्रिकाल संध्या करें। यदि इससे कोई लाभ न दिखे, तो मुझे बताइएगा। इससे आपको निश्चित रूप से लाभ होगा। दूसरी बात, आपको संतान नहीं है। आपकी आयु क्या है? ... सुनिए, एक काम कीजिए। कल से श्रीमद्भागवत महापुराण से 'गोपी लीला' का पाठ शुरू कीजिए — पति-पत्नी दोनों, सुबह और रात को सोने से पहले। और त्रिकाल संध्या कीजिए। फिर जो होता है मुझे बताइए। यदि आप इसी मार्ग पर बने रहेंगे, तो आपको निश्चित रूप से भगवान की कृपा प्राप्त होगी। सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 18:45 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2693 पंडित जी, मुझे यह पूछना था कि इस्कॉन वाले कह रहे हैं कि कलियुग के समाप्त होने में अभी बहुत समय बाकी है।

उत्तर: देखो बेटा, इस्कॉन भगवान कृष्ण परंपरा का एक बहुत ही पवित्र अंग है। उन्होंने पूरे विश्व में कृष्ण धर्म का प्रचार किया है। प्रभुपाद जी ने बहुत अच्छा कार्य किया है, उस पर मेरी कोई टिप्पणी नहीं है। लेकिन मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ: मैं एक पंडित हूँ, ब्राह्मण हूँ, और मैंने शास्त्रों का अध्ययन किया है। शास्त्रों के अनुसार लिखा था कि कलियुग 5000 वर्षों के बाद समाप्त होगा। अब 5130 वर्ष हो चुके हैं। मैंने मनुस्मृति, गर्ग संहिता, सूर्य सिद्धांत, निर्णय सिंधु, सनातन पंचसखा की भविष्य मालिका, और गर्ग संहिता — ये सभी शास्त्र पढ़े हैं। शास्त्रों के साथ-साथ हमारे पास भविष्य पुराण है, जो भविष्य मालिका है, जिसका मैंने उसकी मूल ओड़िया भाषा से, उसका अर्थ भली-भाँति समझकर, हिंदी और अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है। भारत में अधिकांश लोग युग परिवर्तन के समय के बारे में जानते ही नहीं हैं। लेकिन वास्तव में कलियुग समाप्त हो चुका है। इसका प्रमाण प्रकट होता जा रहा है और आगे भी होता रहेगा। इसके लिए हमने भारत के सभी साधु-संतों के साथ एक सम्मेलन की व्यवस्था की है। जगन्नाथ में सभी संतों के साथ एक बैठक है, जहाँ इस पर चर्चा होगी। संत इस पर विचार-विमर्श करने के बाद एक संकेत देंगे और भारत के हिंदुओं के लिए तथा संपूर्ण मानव सभ्यता के लिए युग परिवर्तन का प्रमाण भी प्रस्तुत करेंगे। इसलिए, युग परिवर्तन हो चुका है। 4400 वर्ष और 400 वर्ष की युग संध्या के साथ कलियुग समाप्त होगा और सत्ययुग आएगा। यह शास्त्रों में लिखा है। तो, कलियुग समाप्त हो चुका है। अधिक से अधिक कलियुग 2032 तक रहेगा, और सत्ययुग का आगमन 2032-33 में होने जा रहा है। इसलिए, शास्त्रों में जो लिखा है उसका पालन करना मानवता के लिए अच्छा होगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:24 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2694 पंडित जी, मुझे यह पूछना है, मैं बहुत समय से एक अच्छे गुरु की तलाश में हूँ। महाभारत का अध्ययन करने के बाद, मुझे भगवान परशुराम से बेहतर कोई गुरु नहीं मिला। तो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि चूँकि कलियुग समाप्त हो चुका है और हम संध्याकाल के बाद के समय में हैं, तो इस युग में हम भगवान परशुराम से शिक्षा कैसे प्राप्त कर सकते हैं? मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि भगवान कल्कि, भगवान विष्णु के रूप में, मेरे स्वप्न में आए और मुझे संकेत दिया कि मैं उनकी ओर से युद्ध करूँगा। उस संकेत के बाद से मेरा हृदय उत्साह से भरा हुआ है। तो मैं पूछना चाहता हूँ, मैं उनसे शिक्षा कैसे प्राप्त कर सकता हूँ, क्योंकि आप भी जानते हैं कि वे सबसे बड़े गुरु हैं?

उत्तर: देखिए, भगवान परशुराम त्रेता और द्वापर युग में आए थे। द्वापर युग में उन्होंने कर्ण और कई अन्य शिष्यों को शिक्षा दी थी। लेकिन कलियुग में वे किसी को शिक्षा नहीं देंगे; वे केवल भगवान कल्कि के गुरु बनेंगे। यह शास्त्रों में लिखा है। दूसरी बात, जिन्होंने महाभारत युद्ध में युद्ध किया था — सप्तरथी, पांडव, पाँच युवा योद्धा — वे अपनी कलाएँ भगवान कल्कि से प्राप्त करेंगे। यह भविष्य मालिका में लिखा है। वह भी तब होगा जब सुधर्मा सभा बैठेगी, अभी नहीं। भगवान से कलाएँ प्राप्त करने के बाद उनकी शक्ति आएगी। इसलिए, यदि आप परशुराम जी को अपना गुरु बनाना चाहते हैं, तो दशावतार श्लोक से 'क्षत्रिय-रुधिर-मये जगद्-अपगत-पापम्...' मंत्र का तीनों संध्याओं में 11-11 बार जाप कीजिए। और मन में भगवान परशुराम को अपना गुरु स्वीकार करके अपना कार्य आगे बढ़ाइए। यदि आपकी भक्ति सच्ची है, तो आपको उनके दर्शन होंगे, और आप यह मान सकते हैं कि उन्होंने आपको स्वीकार कर लिया है। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 24:36 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2695 मैं अकेली रहती हूँ, तो मुझे क्या करना चाहिए? दर्शन का समय भी आ गया है।

उत्तर: देखिए माता जी, सुनिए। इस बारे में मोहन से बात कीजिए। मुझसे बात करने से कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि मोहन से बात करने पर इसके बारे में कुछ किया जा सकता है। हाँ, एक बात यह है कि भगवान के दर्शन भक्ति से, कर्म से, और अपनी दृढ़ श्रद्धा से प्राप्त होते हैं। ऐसी भक्ति, श्रद्धा और दृढ़ता से आपको किसी दिन भगवान के दर्शन हो सकते हैं। ठीक है।

► यह उत्तर सुनें · 27:32 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2696 पिताजी, मेरा प्रश्न एक सहेली की ओर से है। मेरे आपसे दो प्रश्न हैं। पहला यह कि उसके घर में बहुत तंत्र-मंत्र होता है, जो उसकी भाभी करती है, जिसके कारण उसका भाई पूरी तरह उसके वश में है। तो इसके लिए उसे क्या करना चाहिए? और दूसरा प्रश्न यह है कि उसे अपने घर में मजबूरी में मांसाहारी भोजन पकाना पड़ता है। वह त्रिकाल संध्या और सब कुछ करती है। तो इसके लिए उसे क्या करना चाहिए? क्या इससे उसे पाप लगेगा?

उत्तर: देखिए माता जी, पाप तो पाप ही है। धर्म का पालन करना बहुत कठिन है। जो संयुक्त परिवार में रहते हैं, उन्हें बहुत परेशानी होती है। इसलिए, जो व्यक्ति यह कर रहा है, उसे कहिए कि त्रिकाल संध्या करे और प्रार्थना करे कि भगवान उन्हें सद्बुद्धि दें ताकि वे उस पर दबाव न डालें। भक्ति के साथ भगवान से प्रार्थना कीजिए। यदि उसकी भक्ति दृढ़ हो जाएगी, तो उसे निश्चित रूप से भगवान की कृपा प्राप्त होगी। और 'प्रेत दोष' तथा 'भूत दोष' के लिए, जब तक हम शाकाहारी नहीं बनते, हम कुछ नहीं कर सकते। तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। एक बार शाकाहारी बन जाएँ, फिर हम उपाय बता सकते हैं, क्योंकि हमारा मार्ग धर्म पर आधारित है। इसकी नींव धर्म पर है। धर्म के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को, हम जो भी बताते हैं और वह करता है, उसे निश्चित रूप से फल मिलता है, क्योंकि हमारे पवित्र सिद्धांत उसी पर आधारित हैं।

► यह उत्तर सुनें · 28:17 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2697 मेरा प्रश्न यह था कि पहले मेरे मन में कामनाएँ और वासना रहती थी, जिसके बारे में मैंने एक बार आपसे पूछा था। आपने मुझे भगवान राधा माधव की लीलाओं का पाठ और मनन करने की सलाह दी थी। भगवान की कृपा से कुछ सुधार हुआ है। लेकिन कभी-कभी मेरा मन अशांत और व्याकुल हो जाता है। उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, मन चंचल है, नदी की तरह। वह बहता है, है ना? जैसे नदी जल से भरी होती है, वैसे ही मन विचारों से भरा हुआ तत्व है, और वह इधर-उधर भटकता है। जिन्होंने भगवान को अपना मान लिया है और पूरी तरह भगवान के शरणागत हो गए हैं, उन पर ऐसे प्रभाव नहीं पड़ते। इसलिए, कुछ दिन और अपनी भक्ति जारी रखिए। जैसा मैंने आपसे कहा है वैसा कीजिए, और अधिक परिवर्तन आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 30:06 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2698 हम भक्ति करना चाहते हैं, पिताजी, लेकिन हमें करने नहीं दिया जाता। हर दूसरे दिन इतनी बाधाएँ खड़ी कर दी जाती हैं कि हम भगवान की भक्ति से दूर हो जाते हैं। पिताजी, आपके चरणों में हमारी यही प्रार्थना है कि हमें भगवान की भक्ति की कृपा प्राप्त हो। और पिताजी, हम आपके दर्शन भी करना चाहते हैं, लेकिन हमें घर से निकलने नहीं दिया जा रहा।

उत्तर: देखिए, मैं आपको एक बात बताता हूँ। जब तंत्र-मंत्र का प्रभाव हो, तो जो मंत्र मैंने आपको बताया है, उसे और तीव्र करके और अधिक जाप कीजिए। यह पहली बात। दूसरी, जब हम भागवत कथा में जाते हैं, तो वहाँ भगवान को जो पुष्प माला अर्पित की जाती है, उस माला को घर में रखने से तंत्र-मंत्र की बाधाएँ नहीं आतीं। तो मैं क्या कर सकता हूँ? देखिए माता जी, इस समस्या के लिए हमारे पास भगवान में भक्ति और श्रद्धा है। जितना अधिक करेंगे, उतना अच्छा है। यदि आपको परेशानी हो, तो भागवत जी लेकर बैठिए और पाठ कीजिए, और माधव का नाम जपिए। तंत्र करने वाले 24 घंटे उसका प्रयोग करते हैं। वे 24 घंटे मंत्रों का प्रयोग करते हैं। तो, कुछ दिनों तक 24 घंटे का युद्ध होगा। युद्ध के बाद वे पीछे हटेंगे। वे इतनी जल्दी पीछे नहीं हटेंगे। और हमारा धर्म — जितना धर्म किसी के पास होता है, वह इन चीज़ों को शरीर में प्रवेश नहीं करने देता। लेकिन पिछले जन्म और इस जन्म के कर्मों के कारण व्यक्ति कष्ट भोगता है। तो, जो मंत्र मैंने बताया है उसका पाठ कीजिए और माधव का नाम जपिए। और दूसरी बात, कथा के दौरान भगवान को अर्पित की गई पुष्प माला, यदि वह घर में रखी जाए, तो उस घर पर कोई विपत्ति नहीं आएगी। कभी-कभी वह अपवित्र हो जाती है, वह अलग बात है। तो माता जी, देखिए, एक ओर धर्म और असुरों के बीच युद्ध चल रहा है। जितनी अधिक हमारी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ेगी, उतना ही वे युद्ध में पराजित होंगे। तो इसमें समय लगेगा, यह इतनी जल्दी नहीं होगा। अपनी भक्ति जारी रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 32:21 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2699 मैंने चार बार तुलसी का पौधा लगाया, और चारों बार वह सूख गया। रात में कोई जीव आकर उसे खा जाता है। साथ ही, मेरे घर में एक चूहा घूमता है। जब से मैंने दीक्षा ली है और इस मार्ग पर आई हूँ, वह सोते समय मेरी उँगली और यहाँ तक कि अंगूठे को भी काट लेता है। बहुत खून निकलता है। तो इसका क्या उपाय है? और मैं दिन-ब-दिन बीमार होती जा रही हूँ, कमज़ोर होती जा रही हूँ और मेरा वज़न घटता जा रहा है। तो मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: उँगली कौन काटता है? चूहा? यदि चूहे बहुत हैं, तो रेस्क्यू टीम को, सरकार की एनिमल हेल्पलाइन को बुलाइए और उन्हें घर से हटवाइए। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनकी संख्या बहुत अधिक हो जाती है और उन्हें भोजन नहीं मिलता। घर में चूहों की संख्या बहुत बढ़ गई है। यदि बढ़ गई है, तो उन्हें ले जाकर कहीं बाहर छोड़ देना चाहिए। यदि बहुत अधिक हो जाएँ, तो वे मनुष्यों को प्रभावित करने लगते हैं। देखिए, आपके घर में ग्रह दोष के कारण चूहे बढ़ गए हैं। जब घर में ऐसे जंगली जीवों की संख्या बढ़ती है, तो राहु और केतु का प्रभाव आता है। इसलिए, अपने घर में भागवत का पाठ कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और इन चूहों के लिए हेल्पलाइन को बुलाकर उन्हें हटवाइए। या फिर, उन्हें मारे बिना घर से निकालने के उपाय कीजिए। फिर सब ठीक हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:49 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2700 आपके प्रवचनों के अलावा मेरा मन किसी और चीज़ में नहीं लगता। ऐसा क्यों हो रहा है?

उत्तर: यह ठीक है, यह भगवान का आशीर्वाद है कि आपका मन और भाव इसकी ओर खिंचते हैं। यह भगवान की कृपा है। आपके पूर्व जन्म के संस्कार अच्छे हैं। यह करते रहिए, लेकिन आवश्यक सामाजिक कर्तव्य भी निभाते रहिए। बहुत अच्छा।

► यह उत्तर सुनें · 37:38 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2701 पिताजी, मेरा एक प्रश्न है। कुछ दवाइयाँ मांसाहारी होती हैं, जिनके बारे में हमें पता नहीं होता। मैंने सुना है कि कैप्सूल वाली दवाइयाँ मांसाहारी होती हैं। मुझे बुखार था, तो मेरी माँ ने मुझे दी और मैंने ले ली। मैं पूछना चाहती थी, क्या इस कारण भगवान मुझसे नाराज़ हैं?

उत्तर: नहीं, देखिए, दवा को लेकर भगवान नाराज़ नहीं होते। क्योंकि यह Kali Yuga है, दवा तो लेनी ही पड़ती है। मैंने किसी को दवा लेने से मना नहीं किया है। तो इसके लिए आप पर भगवान की ओर से कोई प्रभाव नहीं है, कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं है। भगवान से प्रार्थना कीजिए कि आपका शरीर स्वस्थ रहे ताकि आपको दवा न लेनी पड़े।

► यह उत्तर सुनें · 39:11 · 18 अगस्त 2024

प्रश्न 2702 गुरुदेव, मेरा एक प्रश्न है। Bhavishya Malika में भारत के हर राज्य का उल्लेख है, लेकिन उत्तर-पूर्व के कुछ राज्यों के बारे में क्या? जैसे, मैं त्रिपुरा से हूँ। क्या त्रिपुरा के बारे में कुछ लिखा है? क्योंकि त्रिपुरा के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। मैं पूछ रहा हूँ कि वहाँ के भक्तों का क्या होगा।

उत्तर: उत्तरांचल (उत्तरी क्षेत्र) के बारे में लिखा है। मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा — ये सभी राज्य उत्तरी क्षेत्र में हैं। इन सभी राज्यों के लिए उत्तर दिशा में क्या होगा, वह लिखा है। देखिए, Bhavishya Malika में पूरे विश्व के बारे में लिखा है: 'पंच प्रलय' (पाँच प्रकार के प्रलय), बाढ़, अग्नि, महामारी, विश्व युद्ध, चीन की ओर से एक महायुद्ध, उत्तर से एक युद्ध, उत्तरांचल की ओर से — सब कुछ लिखा है। इससे बचाव है Trisandhya (त्रिकाल संध्या)। जो भक्त बचना चाहते हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, भागवत जी का पाठ करना चाहिए, और माता की शरण में रहना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 40:43 · 18 अगस्त 2024

सत्र 142 · प्रश्न 2703–2708

L156: भगवान कल्कि करेंगे परमाणु से सुरक्षा | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 23 अगस्त 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2703 नमस्ते जी, मेरा प्रश्न भगवान Kalki और भगवान परशुराम के विषय में था...

उत्तर: यह तो शास्त्रों में लिखा हुआ एक गुप्त तत्त्व है। भगवान Kalki, भगवान परशुराम को अपना गुरु बनाएँगे। उनसे उन्हें आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, पाशुपतास्त्र और लक्ष्मीपति धनुष जैसे अनेक दिव्य अस्त्र प्राप्त होंगे। परंतु यह दिव्य लीला गुप्त रूप से होगी, और इसके बारे में किसी को पता नहीं चलेगा। शास्त्र कहते हैं कि भगवान Kalki, भगवान परशुराम से ज्ञान और कलाएँ ऐसे सूक्ष्म रूप में प्राप्त करेंगे जिसे कोई नहीं देखेगा। यह एक गुप्त तत्त्व है, इसलिए इस पर बहुत अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है। परंतु यह विश्वास रखिए कि भगवान परशुराम और Kalki की गुप्त भेंट हुई हो या न हुई हो, Kalki की दिव्य लीला चल रही है। जो हो चुका है और जो होने वाला है, उस पर आप चिंतन और मनन कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 14:07 · 23 अगस्त 2024

प्रश्न 2704 नमस्ते जी, मैं पूछना चाहता था, गौ सेवा से जीवन में क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर: देखिए, गौ सेवा सभी मनुष्यों के लिए सबसे बड़ी सेवा है। चूँकि हम देवी-देवताओं की प्रत्यक्ष सेवा नहीं कर सकते, इसलिए हमारी प्राचीन सनातन धर्म परंपरा में गौ सेवा को सर्वोच्च कर्म माना गया है। जो व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के, निःस्वार्थ भाव से गौ माता की सेवा करता है, उसे भगवान की कृपा प्राप्त होती है और वह वैकुंठ (दिव्य धाम) को प्राप्त करता है। परंतु गौ माता के दिए हुए दूध को बेचने का कोई विधान नहीं है। महान संत अच्युतानंद और पंचसखा ने गौ माता के विषय में लिखा है कि जो गौशाला बनाकर सेवा करना चाहें, वे कर सकते हैं, परंतु उसका दूध व्यापार के लिए बेचने का कोई विधान नहीं है। पहले बछड़े को भरपेट दूध पीने देना चाहिए। बछड़े के पीने के बाद जो दूध बचे, वह किसी देवता को अर्पित करें या गरीब, दुःखी, रोगी और बीमार को बिना कोई पैसा लिए दे दें। धर्म वहीं है, और उसी को गौ माता की सच्ची सेवा कहते हैं। उसमें कोई स्वार्थ नहीं होता। जो भी गौ माता की सेवा करेगा, उसे तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होगी, और वह व्यक्ति सहज ही पुण्यात्मा मनुष्य बन जाएगा और वैकुंठ प्राप्त कर सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 16:30 · 23 अगस्त 2024

प्रश्न 2705 जी, मेरा प्रश्न है, हम भगवान Madhava के दर्शन करना चाहते हैं। हम आपसे विनती करते हैं, प्रभु जी...

उत्तर: देखिए, देखिए, देखिए। मैंने आप सबसे पहले भी कहा है। आप में से जो सत्संग में आते हैं, ऐसी चर्चाएँ ऑनलाइन मीटिंग में नहीं होतीं। इसलिए ऐसी बातें आप प्रत्यक्ष सत्संग के लिए रखिए। आप में से जो ब्रज मंडल में रहते हैं, और जैसे-जैसे भक्त मंडल बनते जा रहे हैं, उन मंडलों के भीतर इस पर चर्चा कीजिए। मैं ऑनलाइन सत्संग में ऐसी चर्चाएँ नहीं रखता।

► यह उत्तर सुनें · 19:14 · 23 अगस्त 2024

प्रश्न 2706 जिस घर में हम रहते हैं, वहाँ कुछ भी अच्छा नहीं होता। क्या हमारे घर में कोई बुरी शक्ति है?

उत्तर: देखिए, यह कहना आवश्यक नहीं है। क्या आप उस घर में भागवत महापुराण पढ़ते हैं? जब आप भागवत महापुराण पढ़ते हैं, तो उसे फिर से पढ़ना शुरू कीजिए। और एक काम और कीजिए: आप सब मिलकर Trisandhya (त्रिकाल संध्या — दिन के तीनों संधिकालों की प्रार्थना) कीजिए। कोई समस्या या दोष नहीं बचेगा। यदि आप भक्ति भाव से करेंगे, तो आपकी सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी। ऐसा हज़ारों-लाखों लोगों के साथ हुआ है और बहुत फलदायी रहा है। आपके लिए भी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 22:12 · 23 अगस्त 2024

प्रश्न 2707 मैंने 'ज्योत' (दिव्य ज्योति/दीपक) जलाई थी, और एक लौ दो हो गई। इसका क्या अर्थ है, पंडित जी?

उत्तर: देखिए माँ, जैसी भक्ति होती है, वैसा ही भगवान के प्रकाश का प्रकट होना होता है। भक्त अपने भक्ति भाव से भगवान के दर्शन करता है। यह आपका भाव है जिसके कारण आपने यह परिवर्तन देखा। और यह अच्छा है, क्योंकि यदि भक्त को अपनी भक्ति के साथ भाव और अनुभव न मिलें, तो उसकी श्रद्धा दृढ़ कैसे होगी? तो यह एक अच्छा अनुभव है। बस अपनी भक्ति बनाए रखिए, और आगे भी आपको अपनी भक्ति से प्रत्यक्ष अनुभव मिलते रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:29 · 23 अगस्त 2024

प्रश्न 2708 मेरा प्रश्न था, 16 मंडलों के सभी भक्त कब एकत्र होंगे?

उत्तर: देखिए, 16 मंडलों के भक्तों का एकत्रीकरण तभी होगा जब उन मंडलों के भीतर सभी भक्तों का उद्धार पूरा हो जाएगा। हर मंडल में किसी में 10 लाख, किसी में 12 लाख, किसी में 5 लाख, किसी में 6 लाख भक्त हैं, जैसा शास्त्रों में लिखा है। जब उनकी संख्या पूरी हो जाएगी, उसके बाद एकत्रीकरण होगा। इसमें समय लगेगा क्योंकि Kali Yuga के प्रभाव के कारण भक्तों को एकत्र करना एक बड़ी समस्या है।

► यह उत्तर सुनें · 24:29 · 23 अगस्त 2024

सत्र 143 · प्रश्न 2709–2715

L158: विश्व साधु संत महा महासभा - श्री जगन्नाथ पुरी | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 19 सितम्बर 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2709 जब हम श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़कर पूरा कर लेते हैं, तो क्या हम इसे फिर से पढ़ सकते हैं? और आपने कहा था कि भगवान द्वारा एक परीक्षा ली जाएगी, वह कैसी परीक्षा होगी? कृपया बताइए, जो उसमें उत्तीर्ण नहीं हो पाएँगे, उनका क्या होगा?

उत्तर: देखिए, उत्तीर्ण न हो पाने की धारणा सनातन विचारधारा में नहीं है। और भगवान कभी भी उस तरह धर्म की स्थापना नहीं करते जैसे उपद्रवी असुर करते हैं। भगवान पहले चेतावनी देते हैं और धर्म का उपदेश करते हैं। अब, अगले महीने की 3 तारीख को विश्व सनातन धर्म दिल्ली में भागवत कथा करेगा और भविष्य पुराण की विचारधारा पर चर्चा करेगा। अनेक संतों के साथ विश्व सनातन धर्म के कार्यकर्ता पहले दिल्ली के हर घर में जाकर भागवत पाठ, वेदों की रक्षा और Trisandhya (त्रिकाल संध्या) का प्रचार करेंगे। वह समय आ रहा है जब हमारे कार्यकर्ता और संत भारत के हर घर में जाकर लोगों को मार्ग दिखाएँगे। हमारे पास लगभग तीन से चार वर्ष हैं, और उतने समय में सब लोग इन नियमों को अपना लेंगे। और जब देवी माता परीक्षा लेंगी, तब वे सभी भक्त जो सच्चे सनातनी हैं, भागवत और त्रिकाल संध्या के विषय में उत्तर दे सकेंगे। इसका अभियान पहले ही शुरू हो चुका है, और दिल्ली में भी अगले महीने की 2 तारीख से काम शुरू होगा। लगभग 50 संतों के समूह दिल्ली की हर गली और कॉलोनी में जाकर भागवत का प्रचार करेंगे, क्योंकि युग परिवर्तन और विपत्ति का समय निकट आ रहा है। वे प्रचार करेंगे कि भागवत पढ़ें, वेदों की रक्षा करें, गौ माता की रक्षा और सेवा करें, सनातनी संतों का सम्मान करें, और सभी संप्रदायों को एक करें। इस प्रचार के द्वारा भक्तों का उद्धार होगा। जब परीक्षा होगी, तब भक्त इसी ज्ञान की धारा के अनुसार उत्तर देंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 13:57 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2710 पंडित जी, मैं पूछना चाहता था, मेरे गाँव में मैं बड़े-बुजुर्गों और कुछ जानकार लोगों को बार-बार बताता हूँ, पर वे नहीं मानते कि युग समाप्त हो रहा है। वे कहते हैं कि Kali Yuga 432,000 वर्षों का है, इसलिए अभी ऐसा कुछ नहीं होने वाला; दुनिया ऐसे ही चलती रहती है। मैं उनसे कहता हूँ कि यह परम सत्य है, चाहे आप मानें या न मानें, पर वे स्वीकार नहीं करते। मैं क्या करूँ?

उत्तर: देखिए, Jagannath धाम में जो संत सम्मेलन हुआ था, उसमें यह निर्णय लिया गया कि युग पहले ही समाप्त हो चुका है। Jagannath संस्कृति और Bhavishya Malika की विचारधारा के अनुसार संतों ने इस पर सहमति दी है। यदि आप चाहें, तो उन्हें 'Kalki अवतार' चैनल पर 15, 16 और 17 तारीख का प्रसारण दिखाइए, जो विश्व सनातन धर्म के पुनर्जागरण के लिए Jagannath धाम में हुए सम्मेलन के बारे में है। उन्हें दिखाइए कि संत Bhavishya Malika और युग परिवर्तन को स्वीकार कर रहे हैं। साधारण लोग अज्ञानता के कारण विश्वास नहीं करते। संत घर-घर जाकर समझाएँगे, तब वे मानेंगे। ठीक है। यदि आज नहीं मानते, तो कल मान जाएँगे। जिसके भाग्य में मानना लिखा है, वह मानेगा। परंतु संत इस पर पहले ही विचार-विमर्श कर चुके हैं। इसीलिए हमने Jagannath धाम में पूरे विश्व के संतों के साथ एक सम्मेलन किया, जहाँ सनातन धर्म के एकीकरण और भविष्य पर चर्चा हुई, और प्रमाण मिले। वह वीडियो देखिए और उन्हें दिखाइए। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 23:05 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2711 हमारे गाँव में एक पीपल का पेड़ है। पहले उस पर कभी चमगादड़ नहीं बैठते थे, लेकिन पिछले पाँच, छह या आठ दिनों से वे रोज़ आकर वहाँ बैठ रहे हैं। इसका क्या कारण है, पिताजी?

उत्तर: देखो बेटी, समय अच्छा नहीं है। यह उसी का प्रमाण है, और आगे विपत्ति आएगी। भगवान संकेत दे रहे हैं। भक्तजन तो यह पहले से जानते हैं, लेकिन जो नहीं जानते, उनके लिए यह एक संकेत है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:27 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2712 मैं यह पूछना चाहता था कि भगवत्-प्राप्ति कैसे हो सकती है? इसे पाने के लिए क्या करना पड़ता है?

उत्तर: हमारी परंपरा में भगवत्-प्राप्ति के जो नियम हैं, उनके अनुसार मनुष्य को भागवत पढ़नी चाहिए। प्रतिदिन भागवत का एक अध्याय अवश्य पढ़ना चाहिए। त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। तीन संध्याएँ इस प्रकार हैं: ब्रह्म मुहूर्त संध्या प्रातः 3:45 से 6:30 बजे तक, मध्याह्न संध्या सुबह 11:30 से दोपहर 12:30 बजे तक, और सायं संध्या शाम 6:30 से 7:30 बजे तक। त्रिसंध्या इन्हीं समयों के भीतर करनी चाहिए। त्रिसंध्या के मंत्र निश्चित हैं; जो मंत्र वितरित किए जाते हैं, वही जपने चाहिए। इससे भगवत्-प्राप्ति होती है। साथ ही 'माधव' नाम का 108 बार जप। जगन्नाथ जी के उपदेशों में लिखा है कि जो माधव का नाम जपेंगे, वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाएँगे। इसलिए ऐसा करने से भगवत्-प्राप्ति और निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त होगा। जीवन-चक्र से भी बचाव होगा। अब युग परिवर्तन का समय है, और भगवान कल्कि का धर्म-स्थापना का कार्य चल रहा है। भगवान पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं। इसलिए मानवता के कल्याण के लिए त्रिकाल संध्या, भागवत का पठन और माधव नाम का जप अत्यंत आवश्यक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:06 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2713 मेरी एक विनती थी। मेरे घर में बहुत बीमारियाँ हैं। मैं माधव नाम का जप कर रहा हूँ और सब कुछ कर रहा हूँ, लेकिन कारण समझ नहीं आ रहा। क्या आप कोई उपाय बता सकते हैं? मेरी वृद्ध माताजी गिर गईं, मैं बीमार हूँ, मेरी पत्नी बीमार है, हम बहुत परेशानी झेल रहे हैं।

उत्तर: देखिए, असल में हो यह रहा है कि परेशान करने के लिए कोई तंत्र-मंत्र (जादू-टोना) भेजा गया है, इसी कारण ऐसा हुआ है। दूसरी बात, आपके पूर्वज भी शांत नहीं हैं। आपको रात में सोने से पहले 10 मिनट भागवत का एक अध्याय अवश्य पढ़ना चाहिए। यह आपको करना ही है। माधव नाम का जप कीजिए। फिर भी शांति न मिले, तो जब वडोदरा में कथा होगी, तब मैं आपको व्यासपीठ से फूल और तुलसी दूँगा। उन्हें ले जाकर अपने घर में रख लीजिए, फिर कोई तंत्र काम नहीं करेगा और कोई समस्या नहीं रहेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:38 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2714 कुछ दिन पहले माताजी मेरे सपने में आईं और मेरी परीक्षा लेना चाहती थीं। उन्होंने कहा, 'त्रिकाल संध्या सुनाओ।' जैसे ही मैंने 'ॐ' से शुरू किया, मेरी नींद खुल गई। फिर मुझे एक और सपना आया। इन सबका क्या अर्थ है? मुझे समझ नहीं आ रहा।

उत्तर: देखो बेटा, माँ भगवती ने तुमसे त्रिकाल संध्या के बारे में पूछा और तुम उत्तर नहीं दे पाए। इसका कारण यह है कि यही त्रिकाल संध्या आने वाली विपत्तियों से मनुष्य की रक्षा करेगी, जिसकी परंपरा का हम प्रचार कर रहे हैं। इसका प्रमाण ऋग्वेद में है। त्रिकाल संध्या में 16 नाम, 10 अवतार, दुर्गा माधव स्तुति, 'माधव' का 108 बार जप और भागवत का एक अध्याय पढ़ना सम्मिलित है। जो यह करेंगे, वे बच जाएँगे। जो नहीं करेंगे, उनके लिए इस पृथ्वी पर रहना बहुत कठिन होगा, क्योंकि युग बदल रहा है। सत्य युग आ रहा है। इसलिए त्रिकाल संध्या करो। माँ भगवती तुम्हारी परीक्षा ले रही हैं। भविष्य में रोग और बीमारी से तुम्हारा जीवन जा सकता है। क्योंकि माँ भगवती ने पूछा है, इसका अर्थ है कि तुम्हारे लिए यह करना आवश्यक है। वे चाहती हैं कि तुम यह करो। यह माँ भगवती और माधव की कृपा है। त्रिकाल संध्या करो। नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क करो और त्रिकाल संध्या आरंभ करो। यह तुम्हारे ही भले के लिए होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:26 · 19 सितम्बर 2024

प्रश्न 2715 एक प्रश्न है, पंडित जी। 2015 में मैं राजस्थान के मुरीधर जी का प्रवचन सुन रहा था। उन्होंने कहा था कि भगवान अवतरित हो चुके हैं और 2026 में पीएम मोदी अपने पद से स्वयं हट जाएँगे। उन्होंने कहा था कि 2029 तक सब कुछ व्यवस्थित हो जाएगा। तो मैं पूछना चाहता हूँ, क्या मोदी जी 2026 में अपने पद से हट जाएँगे? क्या ऐसा कुछ है?

उत्तर: देखिए, मैं यह बताऊँगा। वर्तमान सरकार के सामने बाहरी संकट हैं। कम से कम अगले 13 महीने से दो साल तक इस सरकार को समस्याओं का सामना करना पड़ता रहेगा। इन समस्याओं का परिणाम क्या होगा, यह भगवान ही जानते हैं। लेकिन हम उनके विचारों पर चर्चा नहीं करेंगे, क्योंकि देश में एक अच्छी सरकार चल रही है, इसलिए हमें उस पर टिप्पणी करना उचित नहीं लगता। हम सनातनियों की रक्षा और सुरक्षा चाहते हैं, इसलिए मैं इस पर चर्चा नहीं करूँगा। दूसरी बात, भगवान कल्कि अवतरित हो चुके हैं, जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, और अब कल्कि की लीला चल रही है। भगवान कल्कि जिसे सत्ता में चाहते हैं, वही सत्ता में है। सब कुछ उन्हीं की इच्छा से होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:49 · 19 सितम्बर 2024

सत्र 144 · प्रश्न 2716–2738

L159:अब बचने का एक ही उपाय - हर घर भागवत, हर घर त्रिसंध्या पाठ | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 10 अक्टूबर 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2716 पंडित जी, मैं वर्तमान में रामानंद संप्रदाय से हूँ। जब मुझे भविष्य मालिका के बारे में पता चला, तो मैंने त्रिकाल संध्या करना और माधव नाम का पाँच बार (पाँच माला) जप करना शुरू कर दिया। मैं सीता राम नाम का भी जप करता हूँ, जो मैं बहुत लंबे समय से कर रहा हूँ, इसलिए उसमें मेरी बहुत श्रद्धा और प्रेम है। यद्यपि भगवान एक ही हैं और दोनों नाम भगवान के ही हैं, फिर भी सीता राम नाम से मेरा प्रेम अधिक है। लेकिन त्रिकाल संध्या के समय मैं सुबह, दोपहर और शाम को माधव नाम की पाँच माला करता हूँ। तो क्या भगवान मुझे स्वीकार करेंगे या नहीं?

उत्तर: देखिए, यह बहुत सुंदर बात है कि आप राम नाम का जप करते हैं। राम नाम की कृपा से, भगवान श्रीराम की कृपा से ही आपको त्रिकाल संध्या और भागवत महापुराण प्राप्त हुआ है। वह कीजिए, और साथ ही राम नाम का जप भी जारी रखिए। त्रिकाल संध्या के समय माधव नाम का जप कीजिए। आपको भगवान की प्राप्ति निश्चित होगी, आपके जीवन का लक्ष्य अवश्य पूर्ण होगा, और आप सत्य युग के मानव बनने के योग्य भी बनेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 05:21 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2717 आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। पंडित जी, आपके जन्मदिन पर मुझे एक सपना आया। मैं आपके साथ बैठा था, और आप मुझे बैठने का एक तरीका सिखा रहे थे और दीवार पर मुझे कुछ दिखा रहे थे। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था। यह सपना आपके जन्मदिन पर आया।

उत्तर: ठीक है, देखिए, आपको जो भी सपना आता है, वह एक जुड़ाव का सूत्र है। भगवान यही चाहते हैं। सपनों में भगवान बहुत लोगों को मुझे दिखाते हैं, क्योंकि मैं धर्म प्रचार का कार्य करता हूँ। मैं त्रिकाल संध्या और भागवत पुराण का प्रचार करता हूँ। इसी कारण, भगवान की कृपा से, वे कभी-कभी मुझे भक्तों के पास भेज देते हैं। और जो सिद्धांत मैं बताता हूँ, वे भगवान के सिद्धांत हैं, मेरे नहीं। मैं आप ही की तरह एक साधारण मनुष्य हूँ। मानवता के कल्याण के लिए भगवान ने मुझे यह दायित्व दिया है। शायद भगवान की इच्छा के बिना सत्संग और सत्कर्म करना कठिन है। जो कार्य हम कर रहे हैं... आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, भागवत पुराण पढ़ना चाहिए और प्रतिदिन माधव नाम का जप करना चाहिए, एक समय-सारणी और नियम का पालन करते हुए। यह आप सबके लिए मंगलकारी होगा। और जो यह करेंगे, वे निश्चित रूप से सत्य युग के मानव बनेंगे। यह केवल एक मान्यता नहीं है; यह शास्त्रों पर आधारित सिद्धांत है। यह परम सत्य है। इसका पालन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 06:30 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2718 पंडित जी, आपने कहा था कि सत्ता परिवर्तन होगा और त्रिजटा के वंशज सत्ता में बैठेंगे। लेकिन वर्तमान राजनीतिक स्थिति को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि सत्ता परिवर्तन होगा। यह कैसे संभव होगा?

उत्तर: मैंने कब कहा कि सत्ता परिवर्तन होगा? सुनिए, मैंने कहा था कि 13 महीने बाद, शनि के मीन राशि में गोचर के कारण, भारत और विश्व में सरकार, प्रशासन और जन आंदोलनों के बीच संघर्ष होगा। भारत में, ओडिशा में, और विश्व भर में शासन कर रही सभी सरकारों के लिए संकट होगा। मैंने यह नहीं कहा कि इससे सत्ता परिवर्तन होगा, बल्कि यह कहा कि सरकारों के लिए संकट होगा। महँगाई बढ़ेगी, और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। भविष्य मालिका में यह भी लिखा है कि विश्व युद्ध के समय—जो अभी हुआ नहीं है—थोड़े समय के लिए त्रिजटा के वंशजों को शासन या सत्ता मिल सकती है। तो वह समय अभी आया नहीं है। दूसरी बात, जब 13 महीने बाद शनि का मीन राशि में गोचर होगा, जो अगले मार्च में, 29 मार्च को है, तब वह सभी सरकारों, सभी प्रशासनों के लिए संकट, जन आंदोलन, सांप्रदायिक दंगे, ग्रह स्थितियों में परिवर्तन, पंचतत्वों से प्राकृतिक आपदाएँ, रोग और महामारियाँ लाएगा। किसी भी देश में जो भी सरकार शासन कर रही होगी, उसे संकट का सामना करना पड़ेगा। आप यह भविष्य में देखेंगे। यह पूरे विश्व के बारे में है, केवल भारत के बारे में नहीं। तो समय की प्रतीक्षा कीजिए। हमें इसे समय के साथ परखना है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 08:52 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2719 भविष्य मालिका में लिखा है कि सत्य युग 2032 में आरंभ होगा। यह विशेष वर्ष, 2032, कैसे निकाला गया? कृपया उस पर बताइए।

उत्तर: हरिदास ग्रंथावली में महापुरुष हरिदास, जो ओडिशा के नित्य पंच सखा में से एक अच्युतानंद के 11वें अवतार थे, उन्होंने अपने ग्रंथ में 2032 का उल्लेख किया है। हम आपको उन्हीं की गणना के अनुसार बता रहे हैं। लेकिन हम यह भी कह रहे हैं कि इसमें अंतर हो सकता है। यह दो-तीन वर्ष पहले भी हो सकता है और दो-तीन वर्ष बाद भी। यह भगवान पर निर्भर है। लेकिन ग्रंथ में लिखा है कि सत्य युग के आगमन का समय 2032 से आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:59 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2720 पंडित जी, मैं कल की उस घटना के बारे में पूछना चाहता था जिसमें सीहोर में एक शिवलिंग पर बिजली गिरी और वह टूट गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: देखिए, भविष्य पुराण में लिखा है कि पहले देवताओं के मंदिरों पर बिजली गिरेगी। दो-तीन वर्ष पहले जगन्नाथ मंदिर का ध्वज बिजली गिरने से जल गया था। और ओडिशा में शंकर भान का एक बहुत प्रसिद्ध मंदिर है, बाबा मणिकेश्वर का मंदिर; उसका शिखर बिजली गिरने से टूटकर गिर गया। तो शिवलिंग पर बिजली गिरने का यह प्रमाण यह बताता है कि सभी देवता संहार के कार्य के लिए प्रस्थान कर चुके हैं; वे मंदिरों में नहीं हैं। श्लोक कहता है, 'कालो दश सहस्राणि विष्णु त्यजति मेदिनीम्', अर्थात् सभी देवी-देवता पृथ्वी छोड़ चुके हैं और मानव रूप में आ गए हैं, भगवान कल्कि के निर्देशों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसीलिए देवताओं के मंदिरों में अशुभ संकेत दिखाई दे रहे हैं। भगवान शंकर के मंदिर में जो हुआ... मैं कल दिल्ली के प्रवचन में कह रहा था कि लोग अपने घरों में सो रहे होंगे, और बिजली उनके घरों के भीतर गिरकर उन्हें लगेगी, और बड़ी संख्या में लोग मरेंगे। मानव सभ्यता के लिए आगे यह एक महान विपत्ति है। इसीलिए त्रिकाल संध्या, भागवत के पठन और माधव नाम के जप के द्वारा हम आने वाली ऐसी महाविपत्तियों से रक्षित होने के योग्य बनेंगे। इसीलिए हम इसका प्रचार करते हैं। यदि अच्छे और संत स्वभाव के लोग इसका पालन करें, तो वे अपना जीवन सार्थक बना सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:04 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2721 मैं भागवत पढ़ता हूँ और त्रिकाल संध्या भी करता हूँ तथा माधव नाम का जप करता हूँ। अगर त्रिकाल संध्या के लिए समय नहीं मिलता, तो मैं उसे सुनता हूँ। लेकिन मेरे पूर्व कर्म, पाप और महापाप मुझे आत्महत्या की ओर धकेल रहे हैं। इससे मुझे मुक्ति कैसे मिलेगी? यह मुझे बहुत परेशान कर रहा है।

उत्तर: देखिए हेमंत, मैं आपको एक बात बताता हूँ। आत्महत्या करना सबसे बड़ा पाप है। पापों से मुक्ति पाने के लिए भगवान के नाम का जप करना चाहिए। भगवान की शरण लेने से, त्रिकाल संध्या करने से और भागवत पढ़ने से सारे पाप धुल जाते हैं। त्रिकाल संध्या करने से, भागवत पढ़ने से और माधव नाम का जप करने से सारे पाप दूर हो जाते हैं। इसलिए त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, आपके पाप दूर हो जाएँगे। पापों के कारण आत्महत्या करना आवश्यक नहीं है। क्योंकि जो आत्महत्या करते हैं, उन्हें फिर कभी मनुष्य जन्म नहीं मिलता; वे भूत-प्रेत बनकर भटकते हैं। इसलिए ऐसा पाप कर्म स्वयं कभी मत कीजिए, इसके बारे में सोचिए भी मत। आपके पापों के नाश के लिए हम आपको त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ और माधव नाम दे रहे हैं। इसे कीजिए, आप बच जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 14:46 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2722 क्या मुझे गरुड़ पुराण पढ़ना चाहिए? मैंने उसमें तरह-तरह के दंड देखे हैं, और उससे मुझे डर लगता है। क्या मैं बच पाऊँगा? मैंने अतीत में पाप और महापाप किए हैं, तो क्या मुझे भी यमदूतों के हाथों वही भोगना पड़ेगा?

उत्तर: देखिए हेमंत, मैंने आपसे क्या कहा? मैंने कहा कि त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए और माधव नाम का जप कीजिए। आपका कर्म शुद्ध हो जाएगा। कोई समस्या नहीं होगी। इसका पालन कीजिए और आत्महत्या के बारे में कभी मत सोचिए।

► यह उत्तर सुनें · 16:23 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2723 ठीक है, लेकिन क्या मुझे बाद में इसका फल नहीं भुगतना पड़ेगा, पंडित जी?

उत्तर: नहीं, आपको भटकना या भुगतना नहीं पड़ेगा। बस यह कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 16:55 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2724 जी, मैं वह कर रहा हूँ। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि मेरे सारे पाप यहीं कलियुग में ही नष्ट हो जाएँगे?

उत्तर: हाँ, हाँ, सब कुछ क्षमा हो जाएगा। और आपके घर में एक प्रेत बाधा है, इसी कारण आपके मन में ऐसे विचार आ रहे हैं। इसके लिए अपने घर में माधव नाम का कीर्तन कीजिए और सात दिन का भागवत पाठ कीजिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 17:01 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2725 पंडित जी, क्या त्रिकाल संध्या और श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ — दोनों करना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, जो सत्ययुग में जाना चाहते हैं, जो आने वाले पंचभूतों द्वारा प्रलय, रोग, महामारी, विश्वयुद्ध और साम्प्रदायिक शक्तियों से स्वयं को बचाना चाहते हैं, और जो भगवान की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए यह आवश्यक है। और यदि मनुष्य ऐसा करेंगे, तो भगवान उनकी रक्षा करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:07 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2726 मेरा एक प्रश्न है। शास्त्रों में माता रमा का वर्णन है, जो भगवान कल्कि की पत्नी हैं। लेकिन भविष्य मालिका में माता रमा के अवतार के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है। ऐसा क्यों है?

उत्तर: भविष्य मालिका में माता रमा के अवतार के बारे में लिखा गया है। लिखा है कि वे जगन्नाथ क्षेत्र में अवतार लेंगी। संभवतः वे अवतार ले चुकी हैं, लेकिन अभी उनका दर्शन सार्वजनिक रूप से सबको उपलब्ध नहीं होगा। उनका दर्शन सुधर्मा सभा में होगा। यह ग्रंथ में लिखा है। बस समय की प्रतीक्षा कीजिए, आपको सारे प्रमाण मिल जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:25 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2727 मेरा एक प्रश्न है। मेरे गाँव की स्थिति यह है कि 95% से अधिक लोग मांस खाते हैं और शराब तथा अन्य नशों के आदी हैं। जब भी हम उपदेशों का प्रचार करने की कोशिश करते हैं, हमारा उपहास किया जाता है। इसलिए मेरे मन में हमेशा एक संदेह बना रहता है: यह स्थान कैसे बचेगा? क्या होगा? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: जब आप प्रचार कर रहे हों, तो जो आपका विरोध करते हैं, उनसे बात मत कीजिए। और देखिए, एक समय आएगा जब लोग स्वयं कहेंगे, 'हम भी त्रिकाल संध्या करना चाहते हैं, हम भी भागवत पढ़ना चाहते हैं, कृपया हमारी सहायता कीजिए।' अभी भी समय है। अज्ञानी मनुष्य अपने अज्ञान के कारण भगवान की कृपा और आशीर्वाद को समझ नहीं पाते। तो कोई बात नहीं। अज्ञानियों को अज्ञान से बाहर निकालना हमारा काम और कर्तव्य है। देखिए, यह चर्चा अच्छे और सद्गुणी लोगों के साथ कीजिए। जो सद्गुणी नहीं हैं, जो क्रूर स्वभाव के हैं और जो उपहास करते हैं, उनके विनाश का समय आएगा। और अपने विनाश से पहले वे भी लौटकर आएँगे, लेकिन उस समय वे बच नहीं पाएँगे। बस सद्गुणी लोगों को खोजिए और उनसे चर्चा कीजिए। उन गलत लोगों से चर्चा मत कीजिए जो सनातन धर्म में विश्वास नहीं करते। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:35 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2728 प्रणाम पंडित जी। मैं हरे कृष्ण मंत्र का जप करता हूँ: 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे'। यह इन उपदेशों के साथ कैसे मेल खाता है?

उत्तर: आप उस महामंत्र का जप पूरे दिन और पूरी रात, जब चाहें, कर सकते हैं। लेकिन त्रिकाल संध्या के समय — जैसे ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः 3:45 से 6:30 बजे तक, मध्याह्न काल में 11:30 से 12:30 बजे तक, और सूर्यास्त के समय, सूर्यास्त से आधा घंटा पहले से आधा घंटा बाद तक — त्रिकाल संध्या के समय आपको माधव नाम का ही जप करना चाहिए। क्योंकि माधव नाम ही कलियुग से मुक्ति और सत्ययुग में प्रवेश का मंत्र है। आप महामंत्र का भी जप कर सकते हैं और माधव नाम का भी जप कर सकते हैं। महामंत्र का जप कीजिए, लेकिन त्रिकाल संध्या के समय माधव नाम का जप कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत का एक अध्याय पढ़िए। आपको जीवन का सबसे बड़ा आध्यात्मिक लाभ, धर्म का सबसे बड़ा सार प्राप्त होगा। और इसके माध्यम से व्यक्ति का सामाजिक और पारिवारिक जीवन भी शांतिपूर्ण और सुखी हो जाता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:19 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2729 बाबा पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि जब सुधर्मा महासंघ अपने भौतिक रूप में एकत्र होगा, तो क्या सभी भक्त उसमें शामिल होंगे, या केवल देवी-देवता?

उत्तर: देखिए, मैंने पहले भी कहा है कि भारत में केवल 33 करोड़ देवी-देवता ही बचेंगे, जो मनुष्य शरीर में आए हैं। जैसे आपके बीच देवी-देवता हैं, वैसे ही भारत के वे 33 करोड़ देवी-देवता ही बचने वाले होंगे। वे दिव्यता प्राप्त करेंगे। और सुधर्मा सभा में सभी बैठेंगे, चर्चाएँ होंगी, और सभी को भगवान की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:45 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2730 पिताजी, मैं सभी नियमों का पालन करती हूँ, लेकिन दिल्ली की सभा में आपने कहा था कि 70% लोगों को भगवान की सुरक्षा नहीं मिलेगी क्योंकि वे नियमों का पालन नहीं करते। और पिताजी, कभी-कभी, यद्यपि मैं प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करती हूँ, समय थोड़ा आगे-पीछे हो जाता है। तो क्या मैं भक्त नहीं हूँ?

उत्तर: देखो बेटी, अगर अनजाने में या विवशता के कारण समय आगे-पीछे हो जाता है, तो भगवान तुम्हें उसके लिए क्षमा कर देंगे। लेकिन एक काम करो: त्रिकाल संध्या के लिए सही समय पर करने का प्रयास करो। और तुम निश्चित रूप से भक्त हो। तुम भक्त हो, इसीलिए त्रिकाल संध्या कर रही हो; तुम भक्त हो, इसीलिए तुम्हें भगवान के दर्शन हो रहे हैं। तुम बहुत अच्छी भक्त हो। बस करती रहो, समय पर करने का प्रयास करो, और अपने सामाजिक कर्तव्यों का भी पालन करो। अगर भगवान की कृपा तुम्हारे साथ है, तो सब ठीक होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:54 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2731 पिताजी, मेरा एक और प्रश्न है। मेरे परिवार वाले मुझे भक्ति करने से रोकते हैं। कुछ लोग मेरी आलोचना करते हैं, मेरे बारे में बुरा बोलते हैं और मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। तब, पिताजी, मुझे भी गुस्सा आ जाता है और मैं कुछ कड़वे शब्द बोल देती हूँ, जिसके लिए बाद में मुझे पछतावा और दुःख होता है। लेकिन वे लोग पहले मुझे परेशान करते हैं, तभी मैं बोलती हूँ। फिर मुझे याद आता है कि मुझे सत्य और प्रेम की धारा में रहना है, और मुझे बहुत पछतावा होता है।

उत्तर: देखिए, हर युग में भक्तों को विरोध का सामना करना पड़ा है। लेकिन सच्चा भक्त किसी से बहस नहीं करता। अगर कोई आपके विरुद्ध बोले या आपका विरोध करे, तो उससे कुछ मत कहिए। क्योंकि हमारा लक्ष्य है भगवान से मिलना। जैसे हनुमान जी, उन्हें बहुतों ने रोका, लेकिन वे अपने लक्ष्य पर अडिग रहे। इसी तरह, हमारा लक्ष्य है भगवान को प्राप्त करना। अगर परिवार का कोई सदस्य विरोध करे, तो उनसे इस विषय पर चर्चा मत कीजिए। अगर वे कुछ कहें भी, तो वह जगह छोड़ दीजिए और अपना काम करते रहिए। हमें किसी से लड़ना नहीं है। सब भगवान के हैं। अपने कर्मों के कारण वे भगवान को समझ नहीं पा रहे, और आपके कर्मों के कारण आप समझ पाए हैं। इसलिए, अगर वे अज्ञानतावश कुछ कहें, तो उनसे कभी बहस मत कीजिए। वे जो भी कहें, बस कह दीजिए, 'हाँ, आप जो कह रहे हैं वह सही है,' और अपना काम करते रहिए। किसी से भी टकराव मत रखिए। भगवान से अपना जुड़ाव बनाए रखिए। एक समय आएगा जब सब समझ जाएंगे, लेकिन तब तक समय नहीं बचेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:25 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2732 पंडित जी, गायत्री की एक त्रिकाल संध्या होती है, जो उपनयन (जनेऊ संस्कार) के बाद करनी होती है। क्या वह भी त्रिकाल संध्या मानी जाती है?

उत्तर: त्रिकाल संध्या में आपको गायत्री मंत्र तीन बार जपना होता है। यह बहुत आनंददायक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:04 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2733 जय श्री माधव, पंडित जी। पिताजी, मैंने अपने अनुभवों की कुछ तस्वीरें साकेत भैया को भेजी थीं, जैसा आपने पिछली बैठक में मुझसे कहा था। क्या आपने उन्हें देखा?

उत्तर: हाँ, साकेत ने भेजी थीं।

► यह उत्तर सुनें · 32:22 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2734 एक पोस्ट थी, 'एकाक्षर भावे जे अर्थी, से देखिब देवकर लीला।' क्या यह 'एकाक्षर' नाम 'ओंकार' है?

उत्तर: 'एकाक्षर भाव' माधव नाम है। 'एकाक्षर तत्त्व' माधव तत्त्व है। 'एकाक्षर तत्त्व' त्रिकाल संध्या है। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, माधव नाम जपते हैं, और भागवत पढ़ते हैं, वे इस 'एकाक्षर तत्त्व' का धन प्राप्त करेंगे और भगवत्-प्राप्ति करेंगे, अर्थात् वे भगवान की दिव्य लीला के साक्षी बनेंगे। जैसा शास्त्रों में लिखा है, वैसा ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:35 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2735 मैं जानना चाहता था, कभी-कभी त्रिकाल संध्या के समय मेहमान आ जाते हैं या हम किसी दूसरे काम में व्यस्त होते हैं। तो, क्या यह ज़रूरी है कि संध्या करने के लिए हमें एक जगह बैठना ही पड़े, या उस समय काम करते-करते मन ही मन भी कर सकते हैं?

उत्तर: आप काम करते हुए भी कर सकते हैं। आप मन ही मन कर सकते हैं, बैठकर कर सकते हैं, यात्रा करते हुए कर सकते हैं, ऑफिस में बैठे-बैठे कर सकते हैं। आप कहीं भी कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 35:43 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2736 क्या आने वाले वर्ष 2025 में महामारी और लॉकडाउन होगा?

उत्तर: शनि का मीन राशि में गोचर हो रहा है। '25 से '27 के आधे तक शनि मीन राशि में रहेंगे। उसके बाद उसकी त्वरित गति... 2025 से 2028 के बीच बहुत सारे परिवर्तन होंगे। मैं यह नहीं कहूँगा कि यह '25 में आएगा क्योंकि यह भगवान की इच्छा है। लेकिन '25 और '28 के बीच, आप सब रोग, बीमारी, आपदाएँ और विश्व युद्ध, सब कुछ देखेंगे जो शास्त्रों में लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:44 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2737 पिताजी, जब हम त्रिकाल संध्या कर रहे होते हैं और बीच में कोई काम आ जाता है, तो वह बीच में रुक जाती है। क्या हमें फिर से शुरू से करना चाहिए?

उत्तर: कोई बात नहीं। अगर बीच में रुक जाए, तो आप जहाँ से छोड़ा था वहीं से फिर शुरू करके पूरा कर सकते हैं। अगर कोई काम करना है, तो वह काम करते हुए भी संध्या जारी रख सकते हैं। क्योंकि देखिए, यह त्रिकाल संध्या ही हमें बचाएगी। त्रिकाल संध्या के माध्यम से हमें जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलेगी। इसलिए हमें यह करनी ही है। भोजन इस शरीर के लिए है, लेकिन त्रिकाल संध्या अनंत तत्त्वों की रक्षा और अनंत वर्षों के जीवन के लिए है। तो कीजिए, और अगर रुक जाए, तो फिर से कीजिए और पूरा कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:53 · 10 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2738 पिताजी, मेरा एक छोटा-सा प्रश्न है। 2,99,000 भक्त भगवान से कब मिलेंगे? युद्ध से पहले या युद्ध के बाद? क्या आप इस बारे में थोड़ा संकेत दे सकते हैं?

उत्तर: देखिए, तृतीय विश्व युद्ध से पहले... 2,99,999 नहीं, वह 256 है। कारण बताया गया है... पाँच नित्य पंचसखा... 256। ये 256 भक्त, नित्य पंचसखा, पाँच पांडव, और 64 सिद्ध — सब विश्व युद्ध के दौरान भगवान कल्कि से मिलेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:59 · 10 अक्टूबर 2024

सत्र 145 · प्रश्न 2739–2753

L160 : युग अंत का समय | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 20 अक्टूबर 2024 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2739 भैया, अगर गृहयुद्ध होता है, और अगर हम त्रिकाल संध्या करें, भागवत पढ़ें, और नाम जप करें, तो क्या हम हर गृहयुद्ध से बच जाएंगे?

उत्तर: मेरा विश्वास है कि सिर्फ़ आप ही नहीं, बल्कि कोई भी व्यक्ति, कोई भी मनुष्य जो धर्म कार्य करता है, उसे भगवान की कृपा अवश्य मिलेगी। और जो भागवत जी पढ़ते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं, और त्रिकाल संध्या के साथ-साथ नाम जप भी करते हैं, वे सीधे भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते हैं। इसके माध्यम से उन्हें आने वाली आपदाओं से अवश्य सुरक्षा मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 03:45 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2740 और भैया, पहले हमें पता नहीं था कि हमने गलत कोरोना वैक्सीन लगवा ली है, क्योंकि अब वह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी नुकसान पहुँचा रही है; वह शरीर की इम्यूनिटी को खा रही है। तो अब, जो आपने सुझाया है — पाठ करना, नाम जप करना, त्रिकाल संध्या करना — क्या उससे यह भी ठीक हो जाएगा?

उत्तर: देखिए, मेरा विश्वास, शास्त्रीय परंपरा के अनुसार, यह है कि जो हो गया उसे भूल जाइए। और जो कुछ हमारे शरीर में है या जो भी आपदा हमारी ओर आ रही है, त्रिकाल संध्या करने, भागवत पढ़ने, और माधव नाम जपने से व्यक्ति शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त करेगा और रोगों से भी सुरक्षा पाएगा। आने वाली बड़ी बीमारियों से भी आपको सुरक्षा मिलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 04:36 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2741 तो, अब हम अपने भारत में भी देख रहे हैं कि दूसरे समुदायों के लोग हमें किस तरह नुकसान पहुँचा रहे हैं; यह हम रोज़ देखते हैं। तो क्या हमें शस्त्र आदि चलाना सीखने की ज़रूरत है?

उत्तर: देखिए, आत्मरक्षा के लिए शस्त्र-विद्या का ज्ञान सबके लिए आवश्यक है। शास्त्र का ज्ञान भी सबके लिए आवश्यक है, और विश्व-कल्याण के सिद्धांत भी आवश्यक हैं। मानवता की और स्वयं की रक्षा के लिए शास्त्रों में लिखा है और हमारे संविधान में भी है। तो अपनी रक्षा के लिए शस्त्र-प्रशिक्षण सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। परंतु इस समय, त्रिकाल संध्या करके, भागवत पढ़कर और माधव नाम का जप करके — यह केवल मेरी मान्यता नहीं है, यह भगवान का सिद्धांत है, ब्रह्म तत्त्व है — जो लोग यह करते हैं, भगवान अपनी कृपा और आशीर्वाद से उनकी रक्षा करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 05:28 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2742 और भैया, त्रिकाल संध्या के विषय में, जब हम उसे पढ़ते हैं तो वह हो जाती है। पर वे कहते हैं कि जब हम रोज़ का सत्संग करते हैं तो हमें वह याद नहीं रहती। मतलब, पूरी तरह याद नहीं हो पाती।

उत्तर: कोई बात नहीं। कागज़ से पढ़कर, देखकर पढ़ना ठीक है। कंठस्थ होना आवश्यक नहीं है। समय के साथ आपको याद हो जाएगी, क्योंकि वेदों का सार बार-बार सुनने से मन में बस जाता है। वेदों का दूसरा नाम 'श्रुति' (जो सुनी जाती है) है। शास्त्रों की रचना श्रुति के सिद्धांत से हुई है, और यह भी वहीं से रची गई है। इसलिए जैसे-जैसे आप कागज़ या पुस्तक से पढ़ते रहेंगे, वह अंततः मन की शक्ति से, स्वतः ही, बिना पुस्तक के आपके मन के भीतर बैठ जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 06:32 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2743 पहले मैं इसे ठीक से करता था, पर अब ऐसा लगता है कि करने की इच्छा ही नहीं होती। आजकल सुबह और शाम मैं ठीक से करता हूँ और अच्छा लगता है, पर दोपहर में संध्या करने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं होती। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, कलियुग के प्रभाव के कारण त्रिकाल संध्या न करने का मन होता है। यह कलियुग का, बाह्य इंद्रियों का और कलि के मल के बाहरी प्रभाव का असर है, जिससे त्रिकाल संध्या करने वालों का मन कभी-कभी भटक जाता है, और कभी वे करते ही नहीं। पर देखिए, अभ्यास के साथ कीजिए। और त्रिकाल संध्या के साथ-साथ भागवत जी पढ़िए। एक समय ऐसा आएगा जब आप इसे कभी नहीं छोड़ेंगे, कभी नहीं भूलेंगे। कलि कुछ नहीं कर पाएगा। और इसे करते रहने से मनुष्य सत्ययुग में जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 07:36 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2744 मेरा मन 'माधव' नाम में उतना नहीं लगता जितना 'राम' नाम में लगता है। क्या मैं राम नाम का जप कर सकता हूँ?

उत्तर: सीताराम नाम का जप कीजिए; सीताराम भजन कीजिए। राधे श्याम भजन भी कर सकते हैं। परंतु त्रिकाल संध्या के समय 'माधव' नाम का 108 बार जप करना आवश्यक है। बाकी समय में आप राम नाम का जप कर सकते हैं, सीताराम भजन कर सकते हैं, कोई बात नहीं। यह सब एक ही हरि नाम है; कोई भेद नहीं है। पर बात यह है कि इस युग के लिए... लिखा है कि कलियुग में भगवान 'माधव' नाम के रूप में अवतरित होंगे। इसी कारण मैं कहता हूँ कि त्रिकाल संध्या के समय माधव नाम का जप कीजिए। बाकी समय में आप अपनी इच्छा के अनुसार भगवान के जिस भी नाम का जप करना चाहें, कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 08:37 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2745 भविष्य मालिका के अनुसार मैंने सुना था कि ज्योतिष बंद हो गया है। तो पंडित जी, जब हम कुंडली के लिए किसी ज्योतिषी से परामर्श करते हैं — जैसे मेरे बड़े भाई की शादी होने वाली है और उन्हें 'मंगलिक दोष' है — तो क्या हमें यह सब देखकर विवाह आगे बढ़ाना चाहिए, या बस कर देना चाहिए?

उत्तर: वह उसी के अनुसार चलेगा। ज्योतिष का समय आ रहा है; भविष्य में चीज़ें ज्योतिष के अनुसार चलेंगी। तो ऐसी कोई समस्या नहीं है। आप ज्योतिष से परामर्श ले सकते हैं। ग्रंथ में इस तरह के ज्योतिष की बात नहीं है। लोग जो भविष्यवाणियाँ करते हैं, जैसे गणना आधारित भविष्यवाणियाँ, वैज्ञानिक भविष्यवाणियाँ, भूगर्भीय भविष्यवाणियाँ — वे भविष्यवाणियाँ काम नहीं करेंगी। आप ज्योतिषी से परामर्श करके विवाह कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 09:37 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2746 पंडित जी, आपको त्रिकाल संध्या कहाँ से मिली? मतलब, त्रिकाल संध्या आप तक कैसे पहुँची? क्या यह भगवान के माध्यम से आप तक पहुँची? आपने इसे कैसे प्राप्त किया?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। देखिए, त्रिकाल संध्या का सिद्धांत ऋग्वेद से है... [संगीत]... तो, भगवान की कृपा से मैं यह संध्या बाँट रहा हूँ।

► यह उत्तर सुनें · 10:50 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2747 मैं और मेरी पत्नी पिछले कुछ महीनों से नियमित रूप से त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। हमारा तीन साल का बेटा और सात साल की बेटी है। हम उसे अपने साथ सिखाने की कोशिश कर रहे हैं। वह हमारे साथ धीरे-धीरे पढ़ती तो है, पर उसे अभी याद नहीं हो पाती क्योंकि वह बच्ची है। तो पंडित जी, हमें इस बात की थोड़ी चिंता थी।

उत्तर: देखिए, जब आप पति-पत्नी त्रिकाल संध्या करें, तो बच्चों को जगाकर बैठाइए और सुनवाइए। क्योंकि अभी वे छोटे बच्चे हैं, शायद पढ़ नहीं सकते, तो बस उन्हें सुनने दीजिए। और अपनी बेटी से, रात को सोने से पहले, भागवत जी की कम से कम चार-पाँच पंक्तियाँ पढ़वाइए। उसकी आदत बनवाइए। समय के साथ वह इसमें आगे बढ़ जाएगी। कोई बात नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 12:17 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2748 मुझे एक और बात पूछनी थी। हम कुरुक्षेत्र में रहते हैं। कुरुक्षेत्र का भगवान कृष्ण से सीधा संबंध रहा है। तो क्या भगवान कल्कि भी अपने समय में सबसे मिलने यहाँ आएँगे?

उत्तर: देखिए, भगवान ज़रूर जाएँगे। वे कुरुक्षेत्र ज़रूर जाएँगे। यह बहुत पवित्र स्थान है, भगवान कृष्ण की लीलाओं की पावन भूमि, धर्म की स्थापना की भूमि। भगवान अवश्य जाएँगे, और भक्तों के साथ लीलाएँ होंगी। समय के साथ, समय आने की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 13:16 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2749 मेरा प्रश्न यह था, गुरुजी, कि जब भगवान का जन्म हुआ, तो भगवान की पहली लीला कौन-सी थी जिससे सबको पता चला कि वे ही भगवान हैं?

उत्तर: देखिए, जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं... [संगीत]... सबके अनुभव बहुत अलग-अलग होते हैं। अगर मैं इस बारे में कुछ कहूँ, तो उसका कोई मूल्य नहीं है। अपने स्वयं के अनुभव से, भगवान के बारे में सोचिए, सोचिए कि भक्ति कैसे करनी है। भगवान सब कुछ प्रकट कर देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 14:21 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2750 पंडित जी, कृपया हमें ब्रह्म तत्त्व के बारे में बताइए।

उत्तर: देखिए, ब्रह्म तत्त्व वह है जो भगवान से उत्पन्न होता है, जिसके द्वारा भगवान से मिलन होता है। जिस सिद्धांत के द्वारा भगवान की प्राप्ति, या ईश्वर-साक्षात्कार होता है और भगवान की कृपा मिलती है, उसे ब्रह्म तत्त्व कहते हैं। यह भगवान से उत्पन्न होता है। और ब्रह्म तत्त्व, त्रिकाल संध्या, आप इसे ब्रह्म कर्म कह लीजिए या ब्रह्म तत्त्व। त्रिकाल संध्या वही सिद्धांत है जो भगवान विष्णु की पूजा है, जिसमें भगवान विष्णु के 16 नाम हैं, राधा रानी और कृष्ण की स्तुति है, माधव (महाविष्णु) के परम पवित्र नाम का जप है, और भगवान की लीलाओं के सबसे महान पुराण ग्रंथ का पाठ है, जिसे महापुराण कहा जाता है। इसलिए यह ब्रह्म तत्त्व का एक महान अंग है। और ब्रह्म तत्त्व का प्रचार सिद्ध संतों द्वारा ठीक इसी उद्देश्य से किया जाता है कि भगवान की प्राप्ति हो, जो ऋग्वेद में रचित है।

► यह उत्तर सुनें · 15:45 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2751 2025 में क्या आने वाला है?

उत्तर: देखिए, 2025 का अर्थ है शनि का मीन राशि में प्रवेश का समय, लगभग 29-30 मार्च के आसपास। इस संचार के दौरान ग्रहों की जो स्थिति बनती है, उसमें 11 खगोलीय पिंड शामिल हैं। बृहस्पति, मंगल, शनि, राहु, केतु—ये सभी ग्रह, सभी नौ ग्रह (नवग्रह) और शनि के दो उपग्रह, पृथ्वी पर बाधक दृष्टि डालेंगे। इस कारण से महाजल प्रलय, अग्नि प्रलय, अंतर्राष्ट्रीय युद्ध, परमाणु युद्ध, और साथ ही साम्प्रदायिक तत्वों का भी बहुत प्रभाव होगा। और पाँचवाँ, इस ग्रह-स्थिति के द्वारा सबसे बड़े अन्न-अभाव का समय निर्मित हो रहा है। लेकिन आजकल मैं देख रहा हूँ कि बहुत से लोग भविष्य मालिका का प्रचार कर रहे हैं और तारीखें दे रहे हैं। हम कहते हैं कि यह 2025 से शुरू होगा और सत्य युग का आगमन 2032 तक हो जाएगा। इसलिए इस पर निर्णय भगवान लेंगे, और जो भविष्यवाणियाँ मनुष्य करते हैं वे सही नहीं होंगी। भगवान इधर-उधर परिवर्तन अवश्य करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 17:26 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2752 'माधव' नाम का जप कैसे सिद्ध किया जा सकता है?

उत्तर: 'माधव' नाम को कैसे सिद्ध करें? बहुत सुंदर। ठीक है, यदि आप 'माधव' नाम को सिद्ध करना चाहते हैं, तो आपको श्रद्धा चाहिए और दूसरा, अपार भक्ति चाहिए। यदि आपमें श्रद्धा और भक्ति है, तो 'माधव' नाम को सिद्ध होने में समय नहीं लगेगा। तो सबसे पहले माधव पर श्रद्धा रखिए और भक्ति का अभ्यास कीजिए। त्रिकाल संध्या सही समय पर कीजिए। स्वप्न में जो भी निर्देश आएँ, उनका पालन कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:57 · 20 अक्टूबर 2024

प्रश्न 2753 मैं पूछना चाहता था, क्या शरीर से सारे रोग नष्ट हो जाएँगे? मैं कमर दर्द से परेशान हूँ। गोलियाँ ले रहा हूँ, लेकिन आराम नहीं मिल रहा। तो क्या त्रिकाल संध्या रोग नष्ट करने में मेरी सहायता करेगी?

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या एक ऐसा सिद्धांत है जिसके द्वारा बड़े-बड़े रोग ठीक होते हैं। त्रिकाल संध्या एक ऐसा सिद्धांत है जिसके द्वारा भगवान की कृपा प्राप्त होती है। और रोग क्यों होते हैं? क्योंकि मनुष्य ने मनमानी की है। बात केवल आपकी नहीं है; पूरे संसार में सभी रोगी हैं। कारण यह है कि मनुष्य ने धर्म, नीति, वेद, शास्त्र और भगवान की उपेक्षा की है। जिस भगवान ने हमें इस पृथ्वी पर बनाया, यदि हम उनकी उपासना करें, तो भगवान हमारे सारे दुःख सुनेंगे। और यदि आप त्रिकाल संध्या समय पर करें और भोजन समय पर करें, तो मेरी राय में आप देखेंगे कि आपको कितना आराम मिलता है। आप स्वयं कहेंगे। आपको यह करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 20:38 · 20 अक्टूबर 2024

सत्र 146 · प्रश्न 2754–2760

L161 : मीन शनि योग - महापरिवर्तन का समय! | केवल 48 दिन | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 9 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2754 नमस्ते, मैं दो वर्षों से आपसे जुड़ा हुआ हूँ। एक महीने पहले मेरा ऑपरेशन हुआ था, और उसके कारण डॉक्टर ने मुझे ज़मीन पर बैठने से मना किया है। मैं ज़मीन पर बैठकर त्रिकाल संध्या करता था और भागवत महापुराण पढ़ता था, लेकिन मुझे बंद करना पड़ा है। क्या मैं बिस्तर पर बैठकर कर सकता हूँ?

उत्तर: आप बैठकर कर सकते हैं। आप कहीं भी आराम से बैठकर कर सकते हैं; आपको वही लाभ मिलेगा। ठीक है, धन्यवाद। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 34:08 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2755 जय श्री माधव। आपने कहा था कि जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, वे भी मीन शनि संचार के दौरान प्रभावित होंगे और सह नहीं पाएँगे। मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि जब मैं प्रचार करता हूँ और बहुत से लोगों को इसके बारे में बताता हूँ—मैं आजीविका के लिए गाड़ी चलाता हूँ फिर भी सबको बताता हूँ—तो लोग ऐसी बातें कहते हैं कि मैं विचलित हो जाता हूँ। मुझे लगने लगता है कि मैं उन्हें बता रहा हूँ या वे मुझे बता रहे हैं। मुझे लगता है कि उन्हें बताकर मैं मूर्ख बन गया हूँ।

उत्तर: देखिए, जो लोग त्रिकाल संध्या नहीं करते, जो भागवत महापुराण नहीं पढ़ते... क्योंकि जब धर्म की स्थापना होगी, तो धर्म और अधर्म के बीच न्याय होगा। हमारे सनातन धर्म के अनुसार भगवान का गुणगान करना, भागवत पढ़ना और दान करना नियम है। जो ऐसा नहीं करते, उनके लिए जो दैविक प्रलय आ रही है वह हानिकारक होगी। दूसरी बात, जब आप प्रचार करते हैं तब जो लोग नकारात्मक बोलते हैं, उनके बारे में मैंने बार-बार कहा है कि जो लोग शास्त्र या धर्म में विश्वास नहीं रखते, उनके साथ चर्चा, वाद-विवाद या बहस करने का कोई अर्थ नहीं है। हमें बस जो कहना है वह कह देना है। कोई कुछ कहे तो बस कह दीजिए, 'ठीक है बाबा, आप अपनी जगह सही हैं।' और एक बात और, यदि गाड़ी का चालक स्टीयरिंग छोड़ दे, तो गाड़ी अपने गंतव्य तक नहीं पहुँचेगी। भगवान ने धर्म के प्रचार और रक्षा के लिए कुछ लोगों को चुना है। यदि वे भी प्रभावित हो जाएँ, धर्म के मार्ग से भटक जाएँ और विचलित हो जाएँ, तो धर्म की नैया को अपने गंतव्य तक पहुँचने में समस्या होगी। इसलिए, भगवान ने हमें भेजा है, तो हम अपना काम करेंगे। जो नहीं मानेंगे, उनसे हमारा कोई विवाद नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 34:57 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2756 मेरा आपसे एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या हम श्रीमद् भागवत पढ़ सकते हैं? क्योंकि घर पर माता-पिता के साथ हमारी कुछ समस्याएँ हैं।

उत्तर: देखिए, सबसे बड़ी समस्या जन्म और मृत्यु है, और सबसे बड़ी चुनौती परिवार को आपदाओं से बचाना है। घर पर जो भौतिक समस्याएँ हैं वे हमारे हाथ में हैं; हम उन्हें सुलझा सकते हैं। लेकिन दैविक समस्याएँ, जो धर्म की कमी से उत्पन्न होती हैं, उन्हें रोकने की शक्ति हमारे पास नहीं है। इसीलिए हमारे लिए भागवत पढ़ना आवश्यक है। आज से ही हर घर में भागवत पढ़ना शुरू कीजिए, क्योंकि मार्च महीने से समय अच्छा नहीं रहेगा। भगवान ने मानवता के लिए मुक्ति का मार्ग दिखाया है: त्रिकाल संध्या और भागवत, जो मानव सभ्यता का सबसे बड़ा कल्याण करेंगे। इसलिए, घर में समस्याएँ हों तब भी शास्त्र मत छोड़िए और शास्त्र का मार्ग मत छोड़िए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 38:14 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2757 पिताजी, मैं लगभग एक वर्ष से आपकी विचारधारा से जुड़ा हूँ। मैंने अपनी माँ, पिता, चाचा और चाची को इसके बारे में कई बार बताया है, लेकिन फिर भी वे मेरी बात नहीं सुनते। मुझे उनकी बहुत चिंता होती है कि महाप्रलय में उनके साथ कुछ न हो जाए, लेकिन वे मेरा विश्वास नहीं करते। उन्होंने कभी मेरी बात पर भरोसा नहीं किया, चाहे मैंने कितनी ही बार समझाने की कोशिश की हो।

उत्तर: देखिए, आपने अपना कर्तव्य कर दिया। वे मानें या न मानें, यह उनके पूर्व जन्मों पर निर्भर करता है। हमने सभी शास्त्रों में पढ़ा है कि भगवान के जो भक्त वैकुंठ (भगवान का धाम) प्राप्त करते हैं, उन्हें कई करोड़ जन्म लेने पड़ सकते हैं। तो जो मानते हैं, मानते हैं; जो नहीं मानते, उन्हें कुछ मत कहिए। हमारा संसार भगवान से जुड़ा है। सामाजिक माया के माध्यम से भगवान ने हममें से हर एक को एक संसार दिया है जिसके लिए हम अपने कर्म करते हैं। इसलिए, अपने परिवार, अपने पिता और अपनी माता के प्रति अपने कर्तव्यों में कमी मत कीजिए, चाहे वे आपकी बात मानें या न मानें। यदि उनके पूर्व जन्म के भाग्य में है, तो वे त्रिकाल संध्या और भागवत पढ़ पाएँगे। यदि उनके पूर्व जन्म के कर्म या भाग्य में नहीं है, तो शायद यह पवित्र ज्ञान उन्हें नहीं भाएगा। तो परिवार में शांति बनाए रखिए, किसी को बाध्य मत कीजिए। अपने कर्तव्य निष्काम भाव से कीजिए। माता-पिता के आदर और सेवा का अपना कर्तव्य कीजिए। हर आत्मा अपनी ही मुक्ति के लिए जन्म लेती है। सभी आत्माएँ वैकुंठ नहीं पातीं, सभी नरक नहीं जातीं, सभी स्वर्ग नहीं जातीं, और सभी निम्न योनियों में जन्म नहीं लेतीं। यह सब अपने-अपने कर्म के अनुसार होता है; सभी कर्म से बंधे हैं। इसलिए, आप अपने कर्तव्य करते रहिए। उन्हें बताना आपकी इच्छा या आपका कर्तव्य था, और आपने बता दिया। वे स्वीकार करें या न करें, यह उनके कर्म के अधीन है। इसके लिए दुखी मत होइए, चिंता मत कीजिए। धर्म को थामे रहिए, आपका कल्याण होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 40:06 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2758 पंडित जी, कल मुझे रास्ते में मोर पंख मिला। मैं उसे घर ले आया। मुझे उसका क्या करना चाहिए? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, मोर पंख भगवान को प्रिय है। यदि किसी को मोर पंख मिलता है, तो इसका अर्थ है कि उसके लिए कोई शुभ समाचार आ रहा है, या भगवान की कृपा प्राप्त होने का समय निकट आ रहा है। इसलिए, उस मोर पंख को अपने घर के पूजा स्थान के पास रखिए और उसकी पूजा कीजिए। आपका कल्याण होगा। जय जगन्नाथ। और कोई?

► यह उत्तर सुनें · 42:57 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2759 जय श्री माधव, पंडित जी। मेरे आपसे दो प्रश्न हैं। मैं 15 वर्ष का हूँ और 10वीं कक्षा में हूँ। जिन दिनों मेरा स्कूल रहता है, क्या मैं दूसरी त्रिकाल संध्या संक्षिप्त रूप में कर सकता हूँ, और क्या मैं इसे मन ही मन कर सकता हूँ?

उत्तर: बिल्कुल, आप कर सकते हैं। आप मन ही मन कर सकते हैं। आप त्रिकाल संध्या कर सकते हैं। इसमें कोई समस्या नहीं है, यानी आपके लिए यह गलत नहीं है। आप कर सकते हैं। मैं यह भी कहूँगा कि जब भी आपको समय मिले, पूरी त्रिकाल संध्या कीजिए। यदि तीन नियत समयों के अतिरिक्त आपको समय मिले, तो आप तब भी कर सकते हैं, क्योंकि यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। त्रिकाल संध्या एक ऐसी साधना है जिसके द्वारा लोग महाविपत्तियों से बचते हैं। इतना ही नहीं, वे अपना कल्याण और अपनी आत्मा का कल्याण प्राप्त करते हैं। मैंने जो द्वितीय खंड की पुस्तक लिखी है, उसमें मैंने विभिन्न शास्त्रों से त्रिकाल संध्या के प्रमुख महत्व को उजागर किया है। आप सब उसे पढ़िए और लोगों को दिखाइए कि भागवत, वायु पुराण, कूर्म पुराण, अग्नि पुराण और भविष्य मालिका में त्रिकाल संध्या के बारे में क्या लिखा है। क्योंकि मानवता के कल्याण के लिए त्रिकाल संध्या से बड़ी कोई परंपरा नहीं है। भगवान को प्राप्त करना, घर बैठे भगवान विष्णु को प्राप्त करना—त्रिकाल संध्या सनातन धर्म की सर्वोच्च परंपरा है। यह परंपरा लुप्त हो गई थी और अब फिर से इसका प्रचार हो रहा है। बहुत से भक्त जुड़े हैं जो त्रिकाल संध्या का प्रचार करते हैं। यह मानव कल्याण के लिए एक महान, पुण्य कार्य है। इसे करने से आपका भी कल्याण होगा और दूसरों का भी। जय।

► यह उत्तर सुनें · 43:50 · 9 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2760 पंडित जी, मैं बहुत लंबे समय से, 2020 से आपसे जुड़ा हुआ हूँ। मेरा नाम विकास कुमार है, दिल्ली से। इधर हम ओडिशा से आपके बारे में बहुत अजीब बातें और खबरें सुन रहे हैं। बहुत से लोग कह रहे हैं कि आपने ओडिशा छोड़ दिया है, और तरह-तरह के आरोप लग रहे हैं, जिसमें यह भी है कि आप पैसे लेकर चले गए। हमने आपको बहुत करीब से देखा है और जब ये घटनाएँ घट रही थीं तब हम आपके साथ थे। हमें तो यह भी याद है कि जब आर्थिक सहायता की पेशकश की गई थी तब आपने यह कहकर मना कर दिया था कि सब कुछ भगवान की इच्छा से होगा। हमारा मानना है कि ये आरोप निराधार हैं। हमने एक समिति बनाई ताकि सभी हिंदी भाषी अनुयायियों से पता किया जा सके कि क्या किसी से कभी आपके नाम पर पैसे माँगे गए, और एक भी व्यक्ति सामने नहीं आया। यह सिद्ध करता है कि आपका चरित्र पानी की तरह निर्मल है। हमें नहीं पता कि ओडिशा में ये अफवाहें क्यों फैल रही हैं या उनका उद्देश्य क्या है। मैं यह सबके सामने कह रहा हूँ ताकि वे सच जानें और आपकी सत्यनिष्ठा पर कोई संदेह न रखें, जो पहले की तरह ही उज्ज्वल और निर्मल है। इस पर आपका क्या कहना है?

उत्तर: मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। शास्त्रों में लिखा है: 'धर्म सिकुड़ गया है, तप नहीं रहा, और सत्य दूर चला गया है।' यह कलियुग के अंतिम चरण की लड़ाई है। इस समय केवल मैं ही नहीं, भारत में जो कोई भी धर्म के प्रचार के लिए आगे कदम बढ़ाएगा, उसे बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। लेकिन धर्म की लड़ाई लड़ाई है, और इसे लड़ना ही होगा। यदि हम धर्म छोड़ दें, तो मृत्यु के बाद हमें मुक्ति कौन देगा? यदि हम धर्म का प्रचार बंद कर दें, तो यह भविष्य मालिका कैसे फैलेगी? यदि हमने भविष्य मालिका का ओड़िया और अन्य भाषाओं से अंग्रेजी में अनुवाद न किया होता, तो इसके माध्यम से संसार में जो परिवर्तन आ रहा है वह कैसे होता? तो लोग बातें करेंगे। जब से मैंने धर्म का प्रचार शुरू किया है, तब से वे बातें कर रहे हैं। यह आदत है। हर युग में धर्म के विरोधियों ने धर्म को आगे नहीं बढ़ने दिया। थोड़ा संघर्ष और कष्ट हुआ, लेकिन धर्म का प्रचार बढ़ा और उसकी रक्षा हुई। यह कलियुग का अंत है, अर्थात कलियुग जा रहा है और सत्य युग आ रहा है। जो धर्म का कार्य करते हैं, उनके लिए बाधाएँ आएँगी। लेकिन बाधाओं के बावजूद, मेरी राय में, यदि हम धर्म में, सत्य और न्याय में बने रहें, तो भगवान हमें उससे बचाएँगे और हमें अपना कार्य जारी रखने की प्रेरणा देंगे, जो हम आज कर रहे हैं। हमारा कोई शत्रु नहीं, कोई मित्र नहीं, कोई निंदक नहीं, कोई प्रशंसक नहीं। हमारा एक ही लक्ष्य है—शास्त्र, पवित्रता, और मानव के अज्ञान को दूर करना। मानवता को अज्ञान और अंधकार से बचाना ब्राह्मणों और गुरुओं का कर्तव्य है। यह कार्य करने के लिए भगवान अलग-अलग समय पर अलग-अलग लोगों को भेजते हैं। हमारा मानना है कि शायद प्रभु की

इच्छा है कि हम यह कार्य करें। संसार में सब हमारे मित्र हैं। हमने कोई गुरु-शिष्य परंपरा नहीं बनाई; हमने किसी को शिष्य नहीं बनाया। लेकिन सब हमारे मित्र हैं, और सबके कल्याण के लिए हम शास्त्रों का प्रचार करते हैं। यह कार्य मानवता के कल्याण के लिए है। आज भारत में हज़ारों-लाखों लोग भागवत पढ़ रहे हैं और त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, विदेशों में भी। एक समय आएगा जब आप देखेंगे कि पूरी दुनिया में लोग—एक दिन में 10 लाख, 15 लाख, 50 लाख, 1 करोड़ लोग—पूछेंगे, 'त्रिकाल संध्या क्या है? हमें दीजिए। भागवत कहाँ मिलेगी? हमें पढ़नी है।' उस समय तक यही हमारा कार्य है। और अपने मन में हम मानते हैं कि हम सही कर रहे हैं। संसार ने राधा रानी, भगवान कृष्ण, संत ज्ञानदेव, संत तुकाराम, तुलसीदास महाराज या प्रभुपाद को भी नहीं छोड़ा। संसार ने कभी किसी को निंदा से नहीं बख्शा। तो हमारी भी निंदा होती है, लेकिन सज्जन आगे बढ़ते हैं, और धर्म का भी प्रचार होता है। जब मैंने 2018 में मीन शनि चलन के बारे में बोला था, तब किसी को इसके बारे में पता नहीं था। आज इसकी व्यापक चर्चा है। लोग भविष्य मालिका पढ़कर इसकी बात करते हैं। इसके बावजूद संदेश फैलता है, लोग धर्म की ओर मुड़ रहे हैं, वे अधर्म छोड़ रहे हैं। वे स्वयं समझ रहे हैं कि यह अच्छा नहीं है क्योंकि आगे का समय अच्छा नहीं रहेगा। तो जितनी अधिक नकारात्मकता होगी, उतनी ही अधिक पवित्रता प्रकट होगी। यदि अंधकार न हो तो प्रकाश कैसे चमकेगा? इसलिए यह भगवान की इच्छा है कि जितनी नकारात्मकता आएगी, उससे 100 गुना अधिक सकारात्मकता संसार में आएगी। हमारा काम धर्म का प्रचार करना है। हम यह हर राज्य में करते हैं, केवल ओडिशा में नहीं। हम अपना 95% समय अन्य राज्यों और देशों में बिताते हैं। तो हमें परवाह नहीं कि कौन क्या कहता है। धर्म सदा सत्य पर आधारित होता है। धर्म की जीत के कारण ही मैं फिर से आप सबके साथ यहाँ हूँ, धर्म का प्रचार कर रहा हूँ और लोगों को धर्म से जोड़ रहा हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि जैसा भगवान ने नियत किया है, मैं संसार और मानवता के कल्याण में योगदान दे सकता हूँ। आज का समय समाप्त हो गया है, तो हम सत्संग यहीं समाप्त करेंगे। अगले गुरुवार को हमारा एक और सत्संग होगा और हम चर्चा करेंगे कि भागवत शास्त्र के अनुसार कलियुग कैसे समाप्त हो चुका है और उस शास्त्र के आधार पर मनुष्य को किसका पालन करना चाहिए। मेरा लक्ष्य है कि एक समय आएगा जब संसार में सब त्रिकाल संध्या करेंगे और हर घर में भागवत पढ़ी जाएगी। और मेरे अनुमान से उनकी संख्या 64 करोड़ होगी। जब तक वह नहीं होता, हम यह कार्य जारी रखेंगे। यह सब भगवान की इच्छा है; उनके आशीर्वाद के बिना कुछ नहीं होता। यदि हमें उनका आशीर्वाद है, तो हम यह कार्य कर पाएँगे, और मानवता भी बचेगी। सबको धन्यवाद। जय जगन्नाथ। जय राधा रानी। जय श्री कृष्ण।

► यह उत्तर सुनें · 45:59 · 9 फ़रवरी 2025

सत्र 147 · प्रश्न 2761–2769

L163 : नीलचक्र से ध्वजा गिरना | आगामी विनाश का संकेत? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 16 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2761 हम आपसे पूछना चाहते हैं कि आपके पास इतनी शक्ति कैसे है? ब्रह्मांड में और कोई नहीं है जो घटनाओं की सटीक तारीख और समय बता सके। यह कैसे संभव है? यह शक्ति कहाँ से आती है? क्या ऐसा हो सकता है कि भगवान आपको सीधे बताते हों?

उत्तर: जय जगन्नाथ। देखिए, मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, लेकिन बात यह है कि इनमें से कोई भी मेरे अपने विचार नहीं हैं। मैं एक साधारण मनुष्य हूँ, जो भगवान की कृपा से इस धरती पर मुक्ति के लिए तड़प रहा है, प्रतिदिन अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा है और धर्म का प्रचार कर रहा है। भगवान मेरे मन में जो डालते हैं, जो मेरे मन में आता है, मैं वही कहता हूँ। क्योंकि मालिका शास्त्र में एक स्थान पर अच्युतानंद जी ने लिखा है कि कोई भी मनुष्य सटीक तिथियों और समय को समझ नहीं पाएगा। लोग कहेंगे कि यह इस दिन होगा या उस दिन, लेकिन कोई मनुष्य इसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता। केवल जब भगवान अपनी कृपा करेंगे, तभी कोई व्यक्ति इसे कह पाएगा। तो, यह भगवान की कृपा से होता है; इसमें मेरा कुछ नहीं है। मैं तो बस वही कहता हूँ जो मेरे मन में आता है, और यदि भगवान की कृपा है, तो वह हो जाता है। इसका अर्थ है कि मैं एक साधारण मनुष्य हूँ; मुझमें कोई विशेष गुण नहीं है, कोई शक्ति नहीं है, कुछ भी नहीं। हालाँकि, मेरा भगवान में दृढ़ विश्वास है, और वही विश्वास सफलता और पवित्रता को सिद्ध करता है। यदि आप भी ऐसे ही विश्वास के साथ भगवान की शरण लें, तो आपकी वाणी में और सभी लोगों की वाणी में सत्य प्रकट होगा। तो, यह सब भगवान का दिया हुआ वरदान है; यह उनकी इच्छा से होता है। वे किसी को भिखारी बनाते हैं, किसी को राजा, किसी को ज्ञानी और किसी को अज्ञानी। यह सब भगवान की कृपा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:52 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2762 मेरे मन में बहुत बेचैनी है क्योंकि मैं ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर पा रहा हूँ और मुझे बहुत कामवासना होती है। क्या आप इसके लिए कुछ मार्गदर्शन दे सकते हैं? मैंने पिछली बार आपसे पूछा था, और आपने मुझे भागवत पढ़ने को कहा था, जो मैं पढ़ता हूँ, हालाँकि कभी-कभी छूट जाता है। क्या आप इसके लिए कुछ और बता सकते हैं?

उत्तर: देखिए, यह त्रिकाल संध्या अमृत की जड़ है। मैं आपको अपने जीवन के बारे में बताता हूँ। अभी 10 दिन पहले मुझे टाइफाइड हुआ था। टाइफाइड जैसी बीमारी में लोग आमतौर पर घर पर आराम करते हैं और सोते हैं। लेकिन मेरे जीवन में मलेरिया और टाइफाइड जैसी बीमारियाँ कई बार हुई हैं, फिर भी मैं कभी सिर्फ सोया नहीं या बिस्तर पर नहीं पड़ा रहा। मैं तब भी प्रवचन के लिए जाता हूँ, अपना काम करता हूँ, और सामान्य भोजन करता हूँ। मुझे वह विशेष परहेज़ वाला भोजन करने की ज़रूरत नहीं पड़ती जो लोग बुखार में दवा के कारण करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब व्यक्ति के पास त्रिकाल संध्या, भक्ति और भगवान की कृपा होती है, तो उसकी रक्षा होती है। हर शरीर में सभी प्रकार के रोग होते हैं, लेकिन बीमारी तभी आक्रमण करती है जब हमारा कर्म गलत होता है। इसलिए, आप उसी त्रिकाल संध्या को जारी रखिए, भागवत पढ़िए, और आप पहले से ही 108 बार माधव नाम का जप करते हैं। यदि फिर भी आपको यह समस्या रहती है, तो जब भी आपको अधिक समय मिले, फिर से माधव नाम का जप कीजिए। इससे आपका कल्याण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:36 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2763 मैंने अपने सपनों में श्री कृष्ण, राधा रानी और अपने गुरु को देखा है। तीन साल से, त्रिकाल संध्या के बारे में जानने से भी पहले, मुझे विनाश के सपने आते रहे हैं — जैसे आकाश से आग के गोले, इमारतों का गिरना, और भूकंप। तो मैं क्या कहूँ? क्या यह भगवान की लीला है, या क्या है? महाराज जी, कृपया बताइए।

उत्तर: देखो बेटा, त्रिकाल संध्या के माध्यम से भगवान कृष्ण और राधा रानी के दर्शन होते ही हैं। कभी-कभी भगवान शंकर, माँ दुर्गा देवी, या योगमाया के दर्शन होते हैं। विनाश के दृश्य भी दिखाई देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि त्रिकाल संध्या लोगों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है और उन्हें भगवान के दर्शन भी कराती है। इसी आधार पर, मुझसे जुड़े कई साधारण भक्तों को ऐसे दर्शन कई बार हुए हैं, और आपको भी हुए हैं। यह आपका अपना पवित्र अनुभव है। इसके अलावा, जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें भविष्य में आने वाली समस्याओं की जानकारी भी मिलेगी। इसीलिए आपको ये चीज़ें दिखाई दे रही हैं। त्रिकाल संध्या जारी रखिए। समय अच्छा नहीं है। शाकाहारी भोजन, त्रिकाल संध्या, और माधव नाम आपको बचाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:33 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2764 पंडित जी, मेरा एक आध्यात्मिक प्रश्न है। आपने अभी कहा कि आत्मा कभी नहीं मरती। जब मैं भागवत पढ़ता हूँ, और कभी-कभी अष्टावक्र गीता या योग वासिष्ठ, तो उनमें कहा गया है कि सब कुछ माया है। मेरा प्रश्न यह है: चूँकि हम कभी नहीं मरते, हमारा सच्चा 'मैं' तत्व अमर है, तो यदि कोई व्यक्ति त्रिकाल संध्या कर रहा है, भागवत पढ़ रहा है, और माधव नाम का जप कर रहा है, लेकिन किसी कारण से सत्ययुग में नहीं जा पा रहा क्योंकि उसकी स्मृति अभी भी कलियुग की है... और यदि वह सत्ययुग में चला भी जाता है, तो उसकी स्मृति भी सत्ययुग जैसी हो जाएगी। तो पंडित जी, मोक्ष की जड़ क्या है? यदि हमारा 'मैं' तत्व कभी नहीं मरता, तो मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकता है? मैं बस यही जानना चाहता हूँ। मैं थोड़ा ज्ञान मार्ग की ओर मुड़ गया हूँ, तो क्या आप कृपया मार्गदर्शन करेंगे?

उत्तर: सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। गीता में भगवान ने एक बात कही। अर्जुन ने पूछा, 'भगवन्, मोक्ष कैसे प्राप्त हो सकता है?' भगवान ने उत्तर दिया, 'सर्वधर्मान् परित्यज्य।' इसका अर्थ यह नहीं है कि कर्म का त्याग कर दो। इसका अर्थ है कि अपने मन के सारे परस्पर विरोधी विचार, द्वंद्व और प्रश्न भूल जाओ, और एक मूर्ख की तरह, एक अज्ञानी की तरह मेरी शरण में आ जाओ, और मैं तुम्हें मुक्ति दूँगा। इसीलिए ज्ञानियों के लिए मोक्ष प्राप्त करना बहुत कठिन है। और इस अर्थ में 'मूर्ख' कैसे बना जाता है? जब व्यक्ति में भगवान के प्रति पूर्ण विश्वास और पूर्ण भक्ति हो। इसलिए, भक्ति मार्ग चुनिए। अपने सारे सांसारिक कर्तव्य निभाइए, लेकिन किसी से या किसी वस्तु से आसक्ति मत रखिए। हम सब सबके लिए अपने कर्तव्य निभाते हैं, और आपको भी निभाने चाहिए, लेकिन इस आसक्ति के बिना कि क्या होगा या क्या नहीं होगा। चाहे बड़ा दुःख आए या बड़ा सुख, विचलित मत होइए। बस भगवान के प्रति पूर्ण, अनन्य भक्ति के साथ अपने कर्म करते रहिए। अनन्य भक्त का अर्थ है — एक मार्ग, एक धारा, एक भगवान — और वह हैं हमारे कृष्ण। सारी सांसारिक बातें भूलकर अपने कर्तव्य निभाते रहिए; तब आपको मोक्ष प्राप्त होगा। मोक्ष की ओर पहले चरण ये हैं: पहला, भक्ति; दूसरा, ज्ञान; तीसरा, वैराग्य; और चौथा तत्व है भागवत महापुराण। जो भागवत महापुराण का अनुसरण करते हैं, उन्हें वैकुंठ प्राप्त होता है। तो, आप तो पहले से ही कर रहे हैं। इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। बस भगवान के प्रति अपनी भक्ति बनाए रखिए और भौतिक वस्तुओं से दूर रहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:36 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2765 त्रिकाल संध्या क्या है? मुझे नहीं पता। क्या आप कृपया इसे थोड़ा समझा सकते हैं?

उत्तर: देखिए माताजी, त्रिकाल संध्या का अर्थ है दिन के तीन संधिकालों में प्रार्थना करना। पहली है ब्रह्म मुहूर्त संध्या, जो सुबह 3:45 बजे से सूर्योदय तक है। सबसे उत्तम समय वह है जब आकाश में तारे दिखाई देते हैं। दूसरी है मध्याह्न संध्या, सुबह 11:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक। तीसरी है सायं संध्या, जो सूर्यास्त से 5-10 मिनट या आधे घंटे पहले तक की जाती है। इन तीन समयों पर भगवान महाविष्णु के 16 नामों का, महाविष्णु के दस अवतारों का एक श्लोक, माँ राधा रानी, भगवान कृष्ण और दुर्गा माधव की प्रार्थना, और 'माधव' नाम का 108 बार जप किया जाता है। इसमें लगभग छह से सात मिनट लगते हैं। जो व्यक्ति यह तीनों समय करता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है और वैकुंठ प्राप्त करता है। उसे जीवन की सारी समस्याओं से भी राहत मिलती है। इसके लिए आप दिल्ली में हमारे भक्तों से संपर्क कर सकती हैं या इस यूट्यूब वीडियो के नीचे दिए गए किसी भी नंबर पर संपर्क कर सकती हैं, और वे आपको एक PDF भेज देंगे। उसे पढ़िए और साथ ही भागवत का एक अध्याय भी पढ़िए। सत्य की ओर जाने के लिए और धरती पर आने वाली आपदाओं से स्वयं की रक्षा करने के लिए, त्रिकाल संध्या सबसे बड़ा कवच है। तो, आपको यह करना चाहिए। यह व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल देती है। भागवत में स्वयं भगवान ने उद्धव से कहा था कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उनका शरीर जीवित होते हुए भी मृत शरीर के समान है। शास्त्रों में लिखा है कि यह मनुष्य के लिए अनिवार्य है। यह हमारी रक्षा है; यह भगवान की कृपा है। तो बेटी, उनसे संपर्क कीजिए, त्रिकाल संध्या की सामग्री लीजिए, और करना शुरू कीजिए। आपको निश्चित रूप से अनुभव होंगे, शायद भगवान के, राधा रानी के, कृष्ण के, या भगवान शंकर के दर्शन — जिस भी देवता की आप उपासना करती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:44 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2766 पंडित जी, हमारे जो बच्चे देश से बाहर पढ़ाई या नौकरी कर रहे हैं, उन्हें हम कब वापस आने के लिए कहें?

उत्तर: देखिए, अभी वह समय नहीं है। दुनिया बदलेगी; यह बदलती रहती है। लेकिन हमारे पास त्रिकाल संध्या है। वह उन्हें दीजिए। उनसे कहिए कि वे त्रिकाल संध्या करें और भागवत पढ़ें। जब समय आएगा, मैं आपको बता दूँगा। अभी के लिए, बहुत कुछ भगवान की इच्छा पर निर्भर है। मानव सभ्यता का भविष्य अच्छा नहीं दिख रहा, लेकिन जब तक हम भगवान की लीला को प्रकट होते नहीं देख लेते, हम प्रतीक्षा कर रहे हैं। अभी समय नहीं है। उन्हें अपने कर्तव्य और अपनी पढ़ाई जारी रखने दीजिए। बस उनसे त्रिकाल संध्या करवाइए और भागवत पढ़वाइए। ऐसा करने से उन्हें भगवान की कृपा मिलेगी। कोई समस्या नहीं होगी। वे जहाँ भी होंगे, उन्हें भगवान की कृपा प्राप्त होगी। यह मेरा विश्वास है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:23 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2767 मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, लेकिन मेरा अनुभव यह है कि जब मैं सो रहा होता हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे कोई पीछे से मेरा गला पकड़कर दबा रहा है। एक और बार ऐसा लगा जैसे कोई मेरी छाती पर बैठकर मेरा गला दबा रहा है। और रात में मुझे लगातार पायल की आवाज़ सुनाई देती है। यह क्या हो रहा है?

उत्तर: मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ बेटा। सुनो। तुम कहाँ हो? नागपुर, महाराष्ट्र। क्या तुम अपने खुद के घर में रहते हो? ठीक है, अपने घर में — क्या तुम्हारे परिवार, रिश्तेदारों, या सोसाइटी के पड़ोसियों में किसी महिला की कम उम्र में मृत्यु हुई है? नहीं? ठीक है, तुमने नया घर बनाया। देखो, जब त्रिकाल संध्या की जाती है, तो आसपास जो आत्माएँ होती हैं, वे भी इसकी ओर खिंची चली आती हैं। वे मुक्ति चाहती हैं। सुनो, वे मुक्ति की इच्छा रखती हैं। इसलिए, रात को सोने से पहले एक बार और त्रिकाल संध्या करो। कुछ नहीं होगा। और सोने से पहले 108 बार माधव नाम का जप करो। कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 40:29 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2768 और पंडित जी, पायल की आवाज़ सिर्फ मुझे ही सुनाई देती है, घर में और किसी को नहीं। यह किस बात का संकेत है? क्या आप मुझे ठीक से बता सकते हैं? मेरा मतलब है, मेरा गला पीछे से क्यों पकड़ा जाता है?

उत्तर: पायल की आवाज़ का अर्थ है कि कोई युवा स्त्री आत्मा वहाँ से गुज़र रही है और वह आवाज़ कर रही है। यह किसी बात का संकेत नहीं है। जब कोई धर्मपरायण व्यक्ति कोई धार्मिक कार्य करता है, तो यह ऐसा ही है जैसे हमारे घर में अच्छा भोजन बनता है तो उसकी सुगंध बाहर तक फैलती है। बाहर के लोग उसे सूँघकर कहते हैं, 'अच्छा भोजन बन रहा है।' उसी तरह, जब तुमने त्रिकाल संध्या का धार्मिक अभ्यास शुरू किया, तो वह आत्मा भी उसे सुनने के लिए खिंची चली आती है, क्योंकि वह भी इसके माध्यम से मुक्ति प्राप्त कर सकती है। हाँ, त्रिकाल संध्या में पितरों को पूर्ण मुक्ति मिलती है, और जो भी आत्माएँ सुनती हैं, उन्हें भी मुक्ति मिलती है। चिंता मत करो। सोने से पहले एक बार त्रिकाल संध्या कर लो। कुछ नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:00 · 16 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2769 मेरा एक और प्रश्न था, पंडित जी। इस सृष्टि में पहले कौन आए, भगवान श्री कृष्ण या भगवान नारायण? क्योंकि इस्कॉन वाले कहते हैं कि सब श्री कृष्ण के अंश हैं।

उत्तर: देखिए, भगवान नारायण को आदिदेव कहा जाता है, मूल विष्णु। भगवान नारायण के सभी अवतार धरती पर प्रकट हुए हैं — अनंत अवतार हुए हैं, जिनमें धर्म की स्थापना के लिए 10 मुख्य अवतार प्रमुख हैं: मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि। इसलिए एक शास्त्र में लिखा है, 'एते चांशकलाः पुंसः, कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।' इसका अर्थ है कि ये सब भगवान के अंश या कलाएँ हैं, लेकिन कृष्ण स्वयं परम भगवान हैं। भगवान कृष्ण ही भगवान विष्णु हैं। जो भगवान कृष्ण हैं, वही नारायण हैं। जो जगन्नाथ हैं, वही कृष्ण हैं। इसलिए कोई भेद नहीं है। भगवान के अनेक अवतार हैं। भगवान कृष्ण ही नारायण हैं, भगवान कृष्ण ही जगन्नाथ हैं, भगवान कृष्ण ही राम हैं। वही सभी अनंत अवतार हैं। हमें इन भेदों में नहीं पड़ना चाहिए। इस्कॉन धर्म भी कृष्ण धर्म है, अर्थात यह भगवान नारायण का सनातन धर्म ही है। और हम जिसकी बात करते हैं, वह भी सनातन धर्म है। तो धर्म में कोई भेद नहीं है; मन के भेद ही लोगों को भटकाते हैं। लेकिन भगवान तो भगवान हैं। उनके अनेक नाम हैं और अनेक अवतार हैं। 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता।' भगवान कृष्ण स्वयं ही विष्णु हैं। चिंता मत कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 42:59 · 16 फ़रवरी 2025

सत्र 148 · प्रश्न 2770–2774

L164 : Earthquake | भूमि पर प्रलय | मानव समाज के लिए चेतावनी | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 17 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2770 हम त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों में प्रार्थना) करते हैं, लेकिन सबसे बड़ी समस्या मन की अशुद्धि है। मन की अशुद्धियों को कैसे दूर करें? कृपया बताइए। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि मन ही सब कुछ नियंत्रित करता है; यह मोक्ष दिला सकता है या पाप के द्वारा नरक तक ले जा सकता है। मेरा एक अनुभव भी है: जब शाम को ऑनलाइन संध्या होती है और मंत्र जप होता है, तो मुझे जम्हाई आती है और आँखों से आँसू निकलते हैं। लेकिन जब मैं सीधे आपके साथ सत्संग में होता हूँ, तो ऐसा कुछ नहीं होता। ऐसा क्यों है? कृपया समझाइए।

उत्तर: देखिए, पहले मैं जम्हाई के बारे में बताता हूँ। जब त्रिकाल संध्या के दौरान दिव्य ऊर्जा मानव शरीर में प्रवेश करती है, तभी जम्हाई आती है और आँखों से आँसू निकलते हैं। यह केवल त्रिकाल संध्या के दौरान ही होता है। यह पहली बात। दूसरी, मन की अशुद्धियों को शुद्ध करने के लिए — हम दिन भर जो कर्म करते हैं और जो आचरण रखते हैं, वह मन को या तो शुद्ध कर सकता है या दूषित। यदि हम दिन भर अपने कर्म, विचार और दृष्टि को किसी बुरी चीज़ में न लगाएँ, तो बुरे विचार नहीं आएँगे। यह भौतिक तत्वों से प्रभावित होता है। मन को शुद्ध करने के लिए श्रीमद्भागवत और हर शास्त्र में भगवान की शरण लेने को कहा गया है। स्वयं को भगवान के प्रति समर्पित कर दीजिए और निरंतर उनके नाम का जप कीजिए। जैसे दर्पण पर जमी धूल को पोंछने के लिए कपड़े की आवश्यकता होती है, वैसे ही भगवान के नाम के जप से मन की अशुद्धियाँ धुल जाती हैं। साथ ही भगवान के पवित्र शास्त्रों का अध्ययन कीजिए; मन शुद्ध बना रहेगा। लोग करते यह हैं कि सुबह से शाम तक मोबाइल फोन देखते हैं, बुरे लोगों से मिलते-जुलते हैं, अपने भविष्य की चिंता करते हैं, और कभी-कभी गलत चीज़ें देखते हैं। व्यक्ति इन चीज़ों से प्रभावित होता है। इसलिए, सुबह से शाम तक जो भी पवित्र है, उसे देखने और उसका पालन करने की कोशिश कीजिए। और भगवान की पुस्तकें दिन में कम से कम दो-तीन बार पढ़िए, जिनमें उनकी लीलाओं की महिमा का वर्णन है। भागवत क्रमिक मुक्ति का मार्ग भी दिखाती है, जिसे हम एक ही दिन में प्राप्त नहीं कर सकते; इसमें कई दिन लगते हैं। तब मन शुद्ध हो जाएगा। और आजकल सबसे बड़ा कारण सामाजिक स्थिति है, मोबाइल फोन की स्थिति है। हर कोई अपना मोबाइल फोन देखता है, और मन उससे प्रभावित होता है। इसलिए, आध्यात्मिक तत्वों से जुड़े रहने से मन शुद्ध होगा। भगवान के प्रति समर्पण कीजिए और उनके नाम का जप कीजिए। उनके नाम के जप से मन शुद्ध होगा। इसमें समय लगेगा। एक ही दिन त्रिकाल संध्या करने से नहीं होगा; इसमें छह से सात महीने लगते हैं। उसके साथ-साथ छह-सात महीने भागवत पढ़ने के बाद मन शुद्ध हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:56 · 17 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2771 पंडित जी, आपने बताया था कि जब भगवान श्रीकृष्ण अपनी लीला में उपस्थित थे, तब तक कलियुग के 1200 वर्ष बीत चुके थे। मैं बस यह जानना चाहता था कि जिन 5000 वर्षों की हम बात करते हैं, क्या उनमें वे 1200 वर्ष शामिल हैं? और इसका संदर्भ मुझे कहाँ मिलेगा?

उत्तर: देखिए, यह श्रीमद्भागवत महापुराण में रचित है: 'यदा देवर्षयः सप्त मघासु विचरन्ति हि, तदा प्रवृत्तस्तु कलिर्द्वादशाब्दशतात्मकः।' जब भगवान श्रीकृष्ण अपने परमधाम गए, उस समय सप्तर्षि मघा नक्षत्र में विचरण कर रहे थे। उस समय तक कलियुग के 1200 वर्ष बीत चुके थे। परंतु पृथ्वी पर भगवान श्रीकृष्ण की उपस्थिति के कारण कलियुग का प्रभाव प्रकट नहीं हो सका। जब भगवान श्रीकृष्ण ने पृथ्वी छोड़ी, तब तक कलियुग की आयु बढ़ चुकी थी, परंतु उसका प्रभाव नहीं फैला था। इसके अनुसार उस समय 1200 वर्ष बीत चुके थे, और अब कलियुग के 5000 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, जैसा कि भविष्य मालिका शास्त्र, गर्ग संहिता, वायु पुराण, मनुस्मृति में लिखा है—सभी शास्त्रों में लिखा है। अब यह समाप्त हो चुका है। आज ओडिशा के जगन्नाथ क्षेत्र पुरी में भी... और कल जगन्नाथ मंदिर में रक्त की एक बूँद गिरी। परसों जगन्नाथ मंदिर का ध्वज गिरा। इस पर विचार कीजिए, समय अवश्य बदलेगा। मानवता के परिवर्तन और रक्षा के लिए हम आपको त्रिकाल संध्या का पावन सिद्धांत बताते हैं। क्योंकि भारत में... कौन क्या सोचता है? हमें इसकी परवाह नहीं। परंतु हमारी विचारधारा यह है कि हर मनुष्य के लिए त्रिकाल संध्या आवश्यक है। आपको इसका पालन करना चाहिए; यह आपके लिए लाभकारी होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:27 · 17 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2772 मैं बचपन से भगवान श्रीकृष्ण का भक्त रहा हूँ। मैं हमेशा जानना चाहता था कि इस पृथ्वी को किसने बनाया, कैसे बनाया और क्यों बनाया। मुझे अब तक इसका उत्तर नहीं मिला कि 27 साल पहले, इस जन्म से पहले मैं कहाँ था। और यह उत्तर भी नहीं मिला कि मरने के बाद मैं कहाँ जाऊँगा। खैर, मेरा प्रश्न यह है: मैं जानता हूँ कि इस पृथ्वी पर कोई अमर नहीं है। मेरा एक मित्र था जिसने मेरे माध्यम से किसी और से एक लाख रुपये लिए थे, और मैं उसका गारंटर था। फिर वह गायब हो गया। जिसने पैसे दिए थे उसने कहा कि वह सिर्फ मुझे जानता है और पैसे मुझसे ही लेगा। मुझे अपने मित्र को ढूँढ़कर वापस लाना पड़ा, और मैंने उसे तीन दिन तक बाँधकर रखा। मैंने उसे भोजन और पानी दिया; मैं बस चाहता था कि वह पैसे लौटा दे। इस संध्या में, मैं जानता हूँ कि हर कोई भगवान से अपनी इच्छाएँ पूरी करने को कहता है, पर यहाँ हम कहते हैं, 'तेरी इच्छा पूर्ण हो, प्रभु।' यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। तो जब मैंने अपने मित्र के साथ ऐसा व्यवहार किया, तो क्या यह पाप गिना जाएगा? क्या होगा? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: हाँ बेटा, यह बहुत अच्छा विचार है। देखिए, भविष्य मालिका में लिखा था कि आज के संसार में लोग दूसरों से पैसे लेंगे और लौटाएँगे नहीं। जब ऐसा हो, तो जान लीजिए कि कलियुग का अंत निकट है। यह एक परंपरा बन चुकी है और यह कलियुग के अंत का चिह्न है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा मानव जीवन 84 लाख योनियों से बँधा हुआ है। हमने पहले भी जन्म लिया है और कर्म भी किए हैं। जैसा आदि गुरु शंकराचार्य ने कहा है: 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम्' (फिर जन्म, फिर मृत्यु, फिर माता के गर्भ में शयन)। आप अभी 25 के हैं, पर 26 वर्ष पहले आपका कोई और जीवन था। मृत्यु के बाद मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है, और जन्म के बाद मनुष्य अपना प्रारब्ध भोगता है। इस मनुष्य लोक में लोग अपने पूर्वजन्मों के कर्म भोगते हैं। इसीलिए इस मानव जीवन में हमें ऐसे कर्म करने चाहिए जो हमें मुक्ति की ओर ले जाएँ। और त्रिकाल संध्या एक ऐसा सिद्धांत है जिसके द्वारा मनुष्य निर्वाण और गोलोक धाम परमधाम प्राप्त कर सकता है। यह सभी शास्त्रों में लिखा है। त्रिकाल संध्या ही वह एक तत्व है जो मनुष्य को जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त करेगा। संसार में ऐसा कुछ नहीं जो त्रिकाल संध्या से न मिल सके। दूसरी बात, हम इस संसार में अपने कर्म करने आते हैं, दूसरों के लिए नहीं। इसलिए हमारे अपने कर्म सही होने चाहिए। मैं कहूँगा कि आजकल यदि कोई उधार माँगे, तो थोड़ी मदद कर दीजिए। यदि वह 10,000 माँगे, तो कहिए, 'बेटा, 2,000 ले लो और लौटाने की चिंता मत करो,' क्योंकि वे लौटा नहीं पाएँगे। महापरिवर्तन का समय आ गया है। कोई किसी का पैसा नहीं लौटाएगा। आर्थिक स्थिति

भयावह होती जा रही है। तो, समय अच्छा नहीं है। त्रिकाल संध्या कीजिए। 'तेरी इच्छा पूर्ण हो' का अर्थ है कि भगवान की इच्छा हमारे लिए मंगलकारी है, जबकि हमारी अपनी इच्छा शायद न हो। जैसे, कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से व्यापार शुरू करता है, वह असफल हो जाता है, और वह अपना कर्ज नहीं चुका पाता। इसीलिए भक्त प्रार्थना करता है, 'प्रभु, यदि तेरी इच्छा पूर्ण हो, तो वह मेरे कल्याण के लिए ही होगी।' तो, इसे भगवान पर छोड़ दीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:20 · 17 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2773 मैं जालंधर से बोल रही हूँ। कल रात मुझे सपना आया कि सब कुछ अस्त-व्यस्त और उलट-पुलट हो गया है। मैंने म्लेच्छों को उनके पहनावे में देखा, और सब कुछ अव्यवस्थित था। मुझे कुछ समझ नहीं आया। मेरी पूरी रात इसी उलझन में बीती, और मुझे लगातार डर लगता रहा और मैं काँपती रही। पंडित जी, मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस सपने का क्या संकेत है।

उत्तर: इसका संकेत यह है कि भविष्य में म्लेच्छ पृथ्वी पर मानवता के लिए बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी करेंगे। म्लेच्छों की संख्या बढ़ गई है, और उनके विनाश का समय भी आ गया है। यही संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 47:23 · 17 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2774 अगर कलियुग का अंत हो ही चुका है, तो अभी भी कलियुग के लक्षण क्यों दिखाई दे रहे हैं?

उत्तर: देखिए, जैसे मनुष्य बाल्यावस्था, किशोरावस्था और युवावस्था से गुजरता है, वैसे ही कलियुग का अंतिम समय... वह संयोग 1943 में हुआ था, जैसा श्रीमद्भागवत महापुराण में उल्लेख है, जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति कर्क राशि में पुष्य नक्षत्र में एक साथ आए। उसी दिन सत्ययुग आरंभ हुआ। पर इसका अर्थ यह नहीं कि सत्ययुग एक ही दिन में प्रकट हो जाता है। देखिए, इस युग को बनाने में 5000 वर्ष लगे। इसे मिटाने में उसका लगभग 10% समय लगता है। तो, वह उसी दिन शुरू हो गया, पर मिटने में भी समय लगेगा न? 10, 50, 100 वर्ष। तो अब बहुत कम समय बचा है। कार्य तो आरंभ हो ही चुका है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 49:10 · 17 फ़रवरी 2025

सत्र 149 · प्रश्न 2775–2786

L165 : Maha Kumbh | महाकुंभ - सत्ययुग आगमन का पहला चरण। | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 21 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2775 नमस्ते, श्री मा, प्रणाम। मेरा प्रश्न यह है कि आने वाले विनाश में बहुत से लोग मरेंगे। हम त्रिकाल संध्या भी करते हैं, पर यदि हमारे कर्म अच्छे न हों, तो हम बचेंगे या नहीं यह अलग बात है, वह तो प्रभु ही जानें। पर जो लोग मर जाएँगे, जब सत्युग आएगा, तो उनकी मुक्ति कैसे होगी? उन्हें मोक्ष कैसे मिलेगा?

उत्तर: देखिए, जो लोग आने वाले विनाश में मरेंगे, वे अपने कर्मों के अनुसार आगे बढ़ेंगे। जैसा मैंने पहले भी कहा है, मृत्यु के बाद मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार, चाहे पुण्य हों या पाप, भूत लोक, यक्ष लोक, गंधर्व लोक, सूर्य लोक, चंद्र लोक, स्वर्ग लोक, वैकुंठ या पाताल लोक जैसे भिन्न-भिन्न लोक प्राप्त करता है। इस काल में जिनकी अकाल मृत्यु होती है, यदि उनका 'पिंड दान' किया जाए, तो उन्हें उनके कर्मों के अनुसार फल मिलेगा। परंतु जिनकी मृत्यु हो जाती है और उनका 'पिंड दान' या 'श्राद्ध क्रिया' नहीं होती, वे प्रेत आत्मा बन जाते हैं। फिर, सत्युग के बाद, एक 'कल्प' के बाद जब 'ब्रह्म प्रलय' होती है, तब भगवान सभी को एक साथ मुक्ति प्रदान करते हैं। उसके बाद उन्हें पुनः उनके कर्मों के अनुसार स्थान दिए जाते हैं। इसलिए, यदि किसी की अकाल मृत्यु होती है और उसकी अंत्येष्टि क्रिया नहीं होती, तो वह प्रेत आत्मा बना रहेगा और उसे उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी जब भगवान उसे क्षमा प्रदान करें। ऐसा इसलिए क्योंकि 'श्राद्ध' संस्कार के बिना आत्मा का अपने नियत स्थान तक पहुँचना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी को पितृ लोक जाना है, तो संस्कार न होने के कारण वह जा नहीं पाता। यदि किसी को मुक्ति प्राप्त करनी है, तो 'श्राद्ध क्रिया' के बिना वह भी कठिन हो जाता है। तो, भविष्य में जिनकी अकाल मृत्यु होगी, उन्हें अपनी मुक्ति के लिए ब्रह्म प्रलय तक प्रतीक्षा करनी होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:07 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2776 सर, मैं कर्नाटक से बोल रहा हूँ। मुझे एक डीलरशिप का प्रस्ताव मिला है और मुझे लगभग 2 करोड़ निवेश करने हैं। क्या मुझे यह करना चाहिए या नहीं, सर? यह एक प्राइवेट ट्रैक्टर/वाहन डीलरशिप है। आप मुझे क्या सुझाव देंगे? साथ ही, मेरा बेटा पुणे में एमबीए कर रहा है।

उत्तर: देखिए, कुछ परिवर्तन होने में अभी लगभग पाँच से सात वर्ष हैं। तो, यदि कंपनी अच्छी है और बिक्री मजबूत है, तो कर लीजिए, कोई समस्या नहीं है। भविष्य में कृषि के अलावा कुछ नहीं रहेगा। सभी खेती करेंगे, और कृषि सबसे बड़ी चुनौती होगी। लोग अपने तरीकों और परिश्रम से कृषि कार्य करेंगे। तो, यह अंतिम पीढ़ी और उसके बाद आने वाली पीढ़ी कृषि पर निर्भर रहेगी। कृषि के लिए, मेरी राय में, यह ठीक है। तो आगे बढ़िए, कोई समस्या नहीं है। अच्छा होगा यदि आपका बेटा आपके व्यापार में आपकी सहायता करे। 2030 तक कोई निजी संस्थान नहीं बचेगा। देखिए, यदि आपका बेटा आपके व्यापार में सहायता करे, तो आप उसे और बढ़ा सकते हैं। वह चाहे तो नौकरी कर सकता है; वह विदेश भी जा सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 11:48 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2777 जय श्री माधव, पिताजी। कल रात मेरे साथ एक घटना घटी। मैं अपने लड्डू गोपाल के साथ थी, जिनका नाम मैंने माधव रखा है। मैं अपने कमरे में थी, उन्हें सुला रही थी, तभी मुझे लगा जैसे किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया हो, पर वहाँ कोई नहीं था। मुझे लगा किसी ने मेरी कलाई पकड़ी। मैं डर के मारे चिल्लाई, 'कौन है?' पर वहाँ कोई नहीं था। मैं कमरे में माधव के साथ अकेली थी। जब मैंने घरवालों से पूछा, तो उन्होंने कहा कि शायद कोई नकारात्मक शक्ति हो। मैं डरी हुई हूँ, क्या सचमुच कुछ नकारात्मक था?

उत्तर: यह नकारात्मक बात नहीं है। जैसे आपकी भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति है, वैसे ही भगवान श्रीकृष्ण आपको प्रमाण दे रहे हैं। मा, यह आपका सौभाग्य है। बस ऐसी ही भक्ति बनाए रखिए। ठीक है? जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 16:54 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2778 मैं पूछना चाहती थी, अभी यह गूगल मीट होती है, और सत्संग भी होता है। तो यदि मैं गूगल मीट में शामिल होती हूँ, तो सत्संग छूट जाता है। क्या यह कोई समस्या है?

उत्तर: देखिए, सत्संग वहीं है जहाँ ज्ञान की चर्चा होती है। ऑनलाइन मीटिंग सप्ताह के सात में से छह दिन होती है। यानी सात में से दो दिन भक्त ऑनलाइन आते हैं, और पाँच दिन हम करते हैं। इसमें कोई समस्या नहीं है। यह अच्छा है; दोनों एक ही हैं। कोई अंतर नहीं है, कोई अलग प्रभाव नहीं है। दोनों एक समान हैं। तो यह सत्संग और वह सत्संग एक ही हैं। आपको कोई हानि नहीं है। इससे आपको बराबर पुण्य मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 18:13 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2779 पिताजी, जब से मैंने नाम जप शुरू किया है, मुझे भगवान माधव की छवि दिखाई देने लगी है। लेकिन घर की स्थिति अनुकूल नहीं है। मेरे परिवार वाले कहते हैं कि चूँकि मैं कॉलेज का छात्र हूँ, मुझे नौकरी ढूँढ़नी चाहिए। पर हमें पता है कि भविष्य में क्या होने वाला है, पिताजी, कि नौकरियाँ नहीं रहेंगी...

उत्तर: देखिए, मैं आज भी अपना कर्म करता हूँ। मैं अब भी परिश्रम करता हूँ; मैं जीविका भी कमाता हूँ। मैं धर्म का प्रचार करता हूँ, पर इसका अर्थ यह नहीं कि मैं कहीं बैठकर खाता रहूँ। मैं परिश्रम भी करता हूँ। और काम से मेरा अर्थ है कि इस धार्मिक कार्य के अलावा, मैं अपने परिवार और अपने भरण-पोषण के लिए दूसरे काम भी करता हूँ। मुझे जीविका कमानी पड़ती है। धर्म के साथ भविष्य में क्या होगा, यह अलग बात है। आपको भी अपना कर्म करना चाहिए। नौकरी पाने का प्रयास कीजिए; आपको मिल जाएगी। क्योंकि बस बैठकर किसी पर निर्भर रहना मानव धर्म नहीं है। मैं भी काम करता हूँ। आप मेरे अनुयायियों से बात कर सकते हैं कि मैं कितना परिश्रम करता हूँ। तो, कोई समस्या नहीं है। जीविका कमाइए और धर्म का पालन कीजिए; दोनों कार्य आवश्यक हैं। प्रयास करते रहिए, आपको नौकरी मिल जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 19:26 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2780 पिता श्री जी, मुझे आपसे एक प्रश्न पूछना था। मैंने एक बार गूगल मीट पर आपसे अपने घर के बारे में पूछा था, और आपने हमें उसे छोड़ने की सलाह दी थी। पर परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि चाहकर भी हम छोड़ नहीं पा रहे। हमें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मेरे बेटे का स्वास्थ्य भी बहुत खराब रहता है। उसे जन्म से ही आँख में थोड़ी समस्या थी, पर अब दवा लेने के बाद भी समस्या बढ़ती जा रही है। डॉक्टर ने सर्जरी का भी सुझाव दिया है पर कहते हैं कि सर्जरी के बाद भी शायद यह पूरी तरह ठीक न हो। मुझे समझ नहीं आ रहा, पिता श्री जी, कि यह बीमारी है या कोई ऊपरी बाधा है।

उत्तर: देखिए, मैंने आपको पहले ही कहा था कि वह घर छोड़ दीजिए। पर आप छोड़ नहीं पा रहीं। जो लोग उस घर में रहते हैं, क्या वे सब त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं? (प्रश्नकर्ता स्पष्ट करती हैं कि केवल वही करती हैं)। देखिए, आप अकेली त्रिकाल संध्या करती हैं न? घर की बाधा दूर करने के लिए, कम से कम सात दिन तक, आप और आपके पति साथ बैठकर भागवत पढ़िए। पूरी भागवत पूर्ण कीजिए। और प्रतिदिन पंचभूत और माधव के नाम से 108 आहुतियों का 'हवन' कीजिए। इन सात दिनों में पूरी भागवत पूर्ण कीजिए। और इसके लिए जो आवश्यक कार्य करने हैं, उसके बारे में आप मुझसे बात कीजिए, मैं बता दूँगा। यदि आप ऐसा करेंगी, तो घर की बाधा दूर हो सकती है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 20:50 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2781 आप कहते हैं कि चैतन्य महाप्रभु भी भगवान महाविष्णु के अवतार हैं, तो फिर उनका कहीं विशेष उल्लेख क्यों नहीं है? दशावतार स्तोत्र में भी बुद्ध अवतार के बाद सीधे कल्कि अवतार का उल्लेख आता है। चैतन्य महाप्रभु का क्यों नहीं?

उत्तर: क्योंकि चैतन्य महाप्रभु स्वयं कृष्ण हैं। देखिए, दशावतार (दस अवतारों) में तो भगवान कृष्ण का भी वर्णन नहीं है; वहाँ भगवान बलराम का वर्णन है। और चैतन्य महाप्रभु कृष्ण हैं, और जो कृष्ण हैं वही महाविष्णु हैं। उन्हीं से अवतारों की रचना होती है। आप कहते हैं कि चैतन्य महाप्रभु का वर्णन नहीं है, लिखा नहीं है। देखिए, चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ मंदिर में मुख्य संरचना के पास 'दारु मूर्ति' (काष्ठ विग्रह) के रूप में विद्यमान हैं। और वहाँ भगवान चैतन्य की आठ भुजाएँ हैं। अर्थात् सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि—इन चारों युगों की दो-दो भुजाएँ मिलकर आठ भुजाएँ बनती हैं। और इन आठ भुजाओं में चारों युगों के अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए भगवान चैतन्य वहाँ खड़े हैं और उनकी पूजा होती है। और चैतन्य महाप्रभु का यह अष्टभुजा स्वरूप ही भगवान कल्कि का स्वरूप है, जिनके बारे में महापुरुष बलराम दास ने लिखा, 'अष्ट बाहु अष्ट कलि शेषे, जन्म हेबे माधव' (कलियुग के अंत में आठ भुजाओं के साथ माधव का जन्म होगा), और 'माधव नाम को जे जपै, जन्म मरण तारा नाहिं' (जो माधव का नाम जपता है, वह जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है)। इसका अर्थ है कि चैतन्य महाप्रभु, जो जगन्नाथ मंदिर में अष्टभुजा दारु मूर्ति के रूप में विद्यमान हैं, वही माधव हैं। और वही माधव कलियुग में कल्कि के रूप में आएँगे। लिखा हुआ है; ऐसा नहीं है कि नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 24:50 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2782 पिताजी, मेरा एक प्रश्न था। मेरे परिवार के सदस्य इस मार्ग पर विश्वास नहीं करते। मैं जब उन्हें बताती भी हूँ, तब भी वे मेरी बात नहीं मानते। इस मार्ग से केवल मैं ही जुड़ी हूँ। मुझे कहीं जाने की अनुमति भी नहीं है, इसलिए मैं किसी बाहरी सभा या सत्संग में नहीं जा सकती। तो क्या कभी किसी सभा में न जा पाने पर भी मैं इस मार्ग पर आगे बढ़ पाऊँगी? मैं संध्या करती हूँ, भागवत पुराण पढ़ती हूँ, और सुबह से शाम तक नाम जपती हूँ।

उत्तर: बिल्कुल। माँ, यदि आप सभा में नहीं जा सकतीं या भागवत कथा में नहीं जा सकतीं, तो कोई बात नहीं। यदि माधव के प्रति आपकी भक्ति पूर्ण है और आपकी श्रद्धा अटल है, तो आपको वही फल मिलेगा। देखिए, श्रीमद् भागवत में लिखा है कि जब भगवान कृष्ण ने ग्वाल-बालों को भोजन के लिए ब्राह्मणों की पत्नियों के पास भेजा, वे भूखे थे। ब्राह्मण अपने कर्मकांड में व्यस्त थे, उन्होंने उनकी उपेक्षा कर दी। उसके बाद ग्वाल-बाल ब्राह्मणों की पत्नियों के पास गए। ब्राह्मण पत्नियाँ तुरंत भगवान कृष्ण के लिए भोजन लेकर उन्हें खिलाने के लिए ब्रज की ओर चल पड़ीं। ब्राह्मणों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, पर उन्होंने नहीं सुना। परंतु एक छोटी, दुर्बल माता थी जिसे उसके पति ने घर में एक खंभे से कसकर बाँध दिया और जाने नहीं दिया। बाकी सभी ब्राह्मण माताएँ गईं और उन्होंने भगवान कृष्ण के दर्शन किए। दूसरी ओर, जो माता बँधी हुई थी, उसने वहीं भगवान कृष्ण के प्रति समर्पण कर दिया और सीधे वैकुंठ (परम धाम) को प्राप्त हो गई। तो ऐसा कुछ नहीं है। धर्म तो धर्म है। हाँ, जिनके भाग्य में धर्म की स्थापना में कर्म करना लिखा है, वे करते हैं। आपके भाग्य में वहीं रहकर भगवान की आराधना करना लिखा है, तो वही कीजिए। आपको फिर भी भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:03 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2783 मैं बड़ौदा की सभा में नहीं आ पाऊँगा। मैं जानना चाहता हूँ, क्या आप उसके बाद और सभाएँ करेंगे? क्या हमारी और सभाएँ होंगी?

उत्तर: देखिए, जैसे-जैसे पृथ्वी पर विनाश बढ़ेगा, बाकी सबके प्रवचन बंद हो जाएँगे, सबकी सभाएँ बंद हो जाएँगी। लेकिन हमारी बंद नहीं होगी। सभाएँ चलती रहेंगी। जब भी आपको समय मिले, आप आ सकते हैं। कोई दिक्कत नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 30:24 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2784 पिताजी, मैं यह पूछना चाहता था कि यदि कोई भागवत महापुराण पढ़ता है, त्रिकाल संध्या करता है, और माधव का नाम भी जपता है, लेकिन उसके साथ-साथ व्यसन भी करता है, यानी नशा करता है, तो क्या उसे अपनी साधना का फल मिलेगा?

उत्तर: देखिए, शास्त्रों में लिखा है कि कलि (वर्तमान युग के दानव) के निवास स्थान हैं—नशा, जुआ, जीव-हत्या, स्वर्ण (धन के प्रति आसक्ति), और असत्य। यदि कोई नशा न करे, तो वह झूठ नहीं बोल पाएगा। यदि कोई नशा न करे, तो वह आसुरी नहीं बनेगा। इसलिए जो नशा करते हैं, उन्हें उसे छोड़ देना चाहिए। हाँ, यदि वे लंबे समय से कर रहे हैं और अब त्रिकाल संध्या कर रहे हैं, तो उन्हें छोड़ देना चाहिए। जो नहीं छोड़ेंगे, उन्हें यम (मृत्यु के देवता) की यातना भोगनी पड़ेगी और यमलोक में अनंत काल तक दंड मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:39 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2785 दूसरे साधु-संत भागवत का वाचन करते हैं, लेकिन कोई हमें स्वयं भागवत पढ़ने को नहीं कहता। आप हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि हमें स्वयं भागवत पढ़नी चाहिए। क्या उसे सुनने और स्वयं पढ़ने में अंतर है? और दूसरा, इस त्रिकाल संध्या के विषय में, जिसके द्वारा हम भगवान के बहुत निकट पहुँचते हैं और हमें कई दिव्य अनुभव होते हैं—क्या शास्त्रों में कहीं लिखा था कि कलियुग में कोई आएगा और त्रिकाल संध्या का वितरण या प्रचार करेगा? पंडित जी, इस पर हम आपसे कुछ मार्गदर्शन चाहेंगे।

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका ग्रंथ में लिखा है कि भगवान के भक्त त्रिकाल संध्या करेंगे। और इसके वितरण के विषय में वेदों में भी लिखा है कि जब कोई 'पूर्ण संत' आते हैं, तो वे त्रिकाल संध्या का वितरण करते हैं। हर युग के अंत में एक पूर्ण संत त्रिकाल संध्या बाँटने के लिए आते हैं, और इसका प्रचार होगा। शास्त्रों में यह भी सिद्ध है कि भगवान कल्कि के भक्त दशावतार, दुर्गा माधव स्तुति, और 'सोऽहम्' नाम का जप करेंगे। मैंने यह विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, कूर्म पुराण, लिंग पुराण, नारद पुराण, श्रीमद् महाभारत, श्रीमद् महापुराण, और पंचसखा के भविष्य शास्त्र में देखा है। मानवता के लिए त्रिकाल संध्या की रचना अमृत है। लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उन्हें भोजन करने का अधिकार नहीं है। लेकिन आजकल कलियुग में सभी त्रिकाल संध्या किए बिना ही भोजन कर लेते हैं। शास्त्र कहता है कि त्रिकाल संध्या के तीन समय हैं, और यदि आप एक संध्या भी छोड़ देते हैं, तो उस समय के बाद आपको भोजन नहीं करना चाहिए। तो जो नहीं करते, वे बड़ी समस्या हैं। वे जीवित मनुष्य हैं, लेकिन मानो वे मृत हैं या यमपुरी (यम के लोक) जा चुके हैं। यह भी लिखा है कि त्रिकाल संध्या के अतिरिक्त मानवता के लिए और कोई उपाय नहीं है; इसे करना ही होगा। जो त्रिकाल संध्या करेंगे, वे जहाँ भी प्रलय होगी—जल में, वायु में, अग्नि में, आकाश में, या अंतरिक्ष में—सुरक्षित रहेंगे। अपने परिवार की सुरक्षा के लिए, यदि परिवार के सभी सदस्य भी त्रिकाल संध्या करें, तो वे भी सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि त्रिकाल संध्या से बड़ा कोई सिद्धांत नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:37 · 21 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2786 यदि आपकी अनुमति हो, तो क्या मैं यहाँ एक छोटा-सा अनुभव साझा कर सकता हूँ?

उत्तर: ठीक है, दो मिनट में बताइए क्योंकि समय समाप्त हो गया है।

► यह उत्तर सुनें · 37:27 · 21 फ़रवरी 2025

सत्र 150 · प्रश्न 2787–2799

L166 : कलियुग से सत्ययुग कैसे आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 23 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2787 पंडित जी, यह हमारे लिए और सभी भक्तों के लिए एक समस्या है, कृपया इसका समाधान बताइए। जैसे, मेरे बेटे का नाम माधव है। वह बड़ा है, लेकिन बहुत से छोटे बच्चे हैं, कोई 3, 5, या 10 साल का, जिन्हें कभी-कभी डाँटना पड़ता है। जब हम उन्हें डाँटते हैं, और यदि उनका नाम माधव हो, तो ऐसा लगता है जैसे हम स्वयं भगवान को डाँट रहे हैं। हम बच्चों को कैसे समझाएँ? थोड़ी डाँट तो कभी-कभी जरूरी होती है न? कृपया इस पर सलाह दीजिए।

उत्तर: देखिए माँ, बच्चों को सही मार्ग पर लाने के लिए, उन्हें भागवत सुनवाइए, और उनसे माधव का नाम जपवाइए। जैसे, उनके साथ बैठिए और कहिए कि माधव का नाम 100 बार जपो। उनके साथ बैठकर उनसे करवाइए। डाँटने से परिवर्तन नहीं आता। यदि हमें कोई नट-बोल्ट ढीला करना हो, तो हम उस पर तेल लगाते हैं, तब वह खुलता है। यदि आप बिना तेल के जबरदस्ती खोलने की कोशिश करेंगे, तो वह टूट जाएगा। इसी तरह, छोटे बच्चों को मारने या डाँटने से वे नहीं बदलेंगे। उनके परिवर्तन का मार्ग धर्म से होकर जाता है। उनसे माधव का नाम जपवाइए, उन्हें भगवान कृष्ण की गोपियों के साथ की दिव्य लीलाओं (गोप लीला) की कथाएँ सुनाइए, और उन्हें त्रिकाल संध्या सिखाइए। इससे परिवर्तन आएगा। यदि आप उन्हें डाँटेंगी, तो वे अभी मान लेंगे, लेकिन जब बड़े होंगे, तो वे आपको डाँटने लगेंगे। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 26:25 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2788 धूमकेतु अवतार, जो कोका और विकोका का वध करेंगे... भविष्य मालिका इस बारे में क्या कहती है? मैं भगवान गणेश के धूमकेतु अवतार के बारे में जानना चाहता था, जो आकर कलि के प्रमुख मंत्रियों कोका और विकोका का वध करेंगे। मैंने इंटरनेट पर इस बारे में कुछ देखा था, इसलिए जानना चाहता था कि भविष्य मालिका में इसके बारे में क्या वर्णन है।

उत्तर: देखिए, गणपति महाराज—भगवान जगन्नाथ भी गणपति का रूप धारण करते हैं। और देवताओं में एक अवतार गणपति हैं। इस समय भगवान कल्कि स्वयं कल्कि के रूप में आ रहे हैं, और 33 करोड़ देवी-देवता मानव शरीर में भगवान के साथ लीला में सम्मिलित होने के लिए आएँगे। राम राज्य स्थापित होगा। यह भविष्य मालिका में लिखा है। और गणपति स्वयं ही कल्कि हैं; वे भिन्न नहीं हैं। क्योंकि गीता में कहा गया है, 'देवताओं में मैं गणपति हूँ।' और गणपति भी भगवान हैं। तो वही भगवान कल्कि के रूप में आ रहे हैं। इस समय मालिका शास्त्र में जो लिखा है वह यह है कि ब्रह्मा, भगवान शंकर, महर्षि नारद, और सभी देवता अपने प्रकट स्वरूपों में उपस्थित रहेंगे। अन्य देवता मानव शरीर में आएँगे और भगवान के साथ दिव्य लीलाएँ करेंगे। क्योंकि सत्य युग सभी देवताओं, ऋषियों और संतों का युग है। ऐसा ही लिखा है। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 28:06 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2789 क्या हम 'जयघोष' के लिए खड़े नहीं हो सकते? यदि हम ऑफिस में हों, तो हम खड़े होकर यह नहीं कर सकते।

उत्तर: नहीं, नहीं, यह आवश्यक नहीं है। देखिए, मन में कीजिए। हाथ जोड़ना भी आवश्यक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 30:04 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2790 और त्रिकाल संध्या से पहले क्या कहना चाहिए? मेरा मतलब, जब हम भगवान से अनुमति लेते हैं, तो कैसे कहना चाहिए?

उत्तर: त्रिकाल संध्या से पहले आपको तीन बार 'ॐ' का उच्चारण करना चाहिए। 'ॐ' शब्द 'प्रणव' अक्षर है, जिसे भगवान महाविष्णु का निराकार स्वरूप माना जाता है। उस नाम का, उस मंत्र का जप कीजिए। तीन बार 'ॐ' कहिए, मन में कहिए, दूसरों को सुनाने की आवश्यकता नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 30:24 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2791 हमने महाभारत में राधा जी द्वारा 'माधव' नाम बोले जाने के बारे में सुना है। इसका संदर्भ हमें कहाँ मिलेगा?

उत्तर: नहीं, महाभारत में नहीं, यह गीत गोविन्द में लिखा है। जब राधा रानी का विवाह भगवान कृष्ण से हुआ, तब उन्होंने आरंभ में उन्हें कृष्ण नाम से नहीं पुकारा; उन्होंने उन्हें माधव कहा। 'माच ब्रह्म स्वरूपा जम्बू प्रकृति स्वरी नारायणी इति विख्याता विष्णु माया सनातनी। जोग महालक्ष्मी स्वरूपा च महालक्ष्मी स्वरूपा जोग माया गायत्री राधस् ता सा स्वामी च माधव।' इस श्लोक का अर्थ यह है कि राधा रानी ने सर्वप्रथम भगवान कृष्ण को माधव नाम से संबोधित किया। जब उनका विवाह भगवान कृष्ण से हुआ—राधा रानी का विवाह पहले हुआ था—यह गीत गोविन्द में रचित है। और राधा रानी का विवाह स्वयं भगवान ब्रह्मा ने ब्रज में, यमुना के तट पर, नंद बाबा के उद्यान की उपस्थिति में सम्पन्न कराया था। उस समय राधा रानी ने भगवान कृष्ण को माधव नाम से पुकारा। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 31:03 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2792 आपने जिस श्लोक का उल्लेख किया, वह केवल गीत गोविन्द में है या कहीं और भी है?

उत्तर: यह गीत गोविन्द में रचित है। यह हमारी जगन्नाथ संस्कृति के भीतर की रचना है। देखिए, यह ब्रह्म पुराण में भी रचित है और एक और, वायु पुराण में। ब्रह्म पुराण में लिखा है कि जब इससे पहले के कलियुग में भगवान कल्कि आए थे, तब उनका नाम प्रमित चन्द्र था, और वे माधव के अवतार के रूप में आए थे। इस बार स्वयं कल्कि माधव के रूप में आए हैं। माधव अर्थात् महाविष्णु। 'माधव माधव विष्णु माधव माधव हरि स्मर, साधव नित्यं सकल कार्येषु।' इसका अर्थ है कि देवता, यक्ष, गंधर्व, ऋषि और संत सभी माधव के नाम का जप करते हैं। यह संसार का सबसे कल्याणकारी नाम है। जय श्री माता।

► यह उत्तर सुनें · 33:01 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2793 एक सौर तूफान आएगा और पूरा इंटरनेट या हमारी सैटेलाइट प्रणाली ध्वस्त हो जाएगी। पिछले साल की भविष्यवाणियाँ थीं कि जुलाई के आसपास यह अपने चरम पर होगा और हमारी पूरी संचार प्रणाली को नष्ट कर देगा। तो पंडित जी, क्या यह इस साल होगा या नहीं? क्योंकि मैं घर से दूर रहता हूँ, मैं कुछ समय अपने माता-पिता के साथ घर पर बिताना चाहता हूँ।

उत्तर: देखिए, वह समय अभी नहीं आया है। वह समय भगवान के नियंत्रण में है। जो लोग भविष्यवाणियाँ करते हैं, उनके संबंध में, मेरे 2018 के वीडियो देखिए। मैंने पहले ही कहा था, 'लेखा जंत्र माण उल पड़िबो, तिथि बार नारते दसा सारा को निश्चय उदय।' 'लेखा जंत्र' का अर्थ है कंप्यूटर काम नहीं करेगा। अच्युतानंद जी ने यह बहुत पहले लिखा था। परन्तु यह भगवान कल्कि के नियंत्रण में है। आज बहुत से लोग भविष्यवाणियाँ करने लगे हैं। यह निश्चित रूप से होगा, परन्तु मेरे मत में, जुलाई के आसपास नहीं होगा। समय बाद में आएगा। यदि मैं समय निर्दिष्ट करूँ, तो यह मेरी ओर से गलत होगा क्योंकि यह भगवान का कार्य है। हम धर्म के प्रचारक हैं, हम घुमक्कड़ हैं। हमारा काम है धर्म का प्रसार करना, लोगों को सही मार्ग पर लाना, सत्य-धर्म का प्रसार करना, और सत्य युग के उन सिद्धांतों का प्रचार करना जिनके लिए हमें भगवान की कृपा प्राप्त हुई है। हाँ, हमें अनुमानित समय पता है, परन्तु यह जुलाई तक नहीं है। जुलाई तक ऐसा कुछ नहीं होगा। बहुत से लोग जो भविष्यवाणियाँ कर रहे हैं, वे सच नहीं होंगी। जय जगन्नाथ। इंटरनेट थोड़े-थोड़े समय के लिए ठप हो सकता है, परन्तु पूर्ण रूप से इंटरनेट का ठप होना अभी नहीं होगा। जय जगन्नाथ। अभी सभी को काम करना चाहिए, जीविका कमानी चाहिए, अपना व्यवसाय करना चाहिए, धर्म को थामे रखना चाहिए, और आगे बढ़ना चाहिए। हमारे हाथ में लगभग 10 वर्ष हैं। यदि भगवान चाहें, तो वे इधर-उधर दो या तीन वर्ष खिसका सकते हैं। तो एक दशक के लिए डरने की क्या बात है? हाँ, इस अवधि में धीरे-धीरे परिवर्तन होंगे। आपको आभास होगा कि कुछ होने वाला है। भगवान यह सब एक ही दिन में नहीं करेंगे। परन्तु करने से पहले, वे थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे दिखाएँगे, और उसके बाद वे इसे पूरी तरह रोक देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:29 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2794 मेरी बेटी का स्वास्थ्य बहुत खराब है, और मेरी माँ का स्वास्थ्य भी बहुत खराब है। मैं त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ, ब्रह्म मुहूर्त में उठ रहा हूँ, श्रीमद् भागवत महापुराण पढ़ रहा हूँ, और माधव के नाम का जप भी कर रहा हूँ। तो क्या आप मेरी बेटी के लिए कुछ सुझा सकते हैं?

उत्तर: देखिए, माता जी की जो मूर्ति स्थापित की गई थी, वह संभवतः सही विधि-विधान से नहीं की गई थी। यदि ऐसा होता, तो गाँव पर विपत्ति क्यों आती? इसलिए मैं आपको सलाह देता हूँ कि गाँव के कल्याण के लिए गाँव में 'माधव नाम संकीर्तन' का आयोजन करें। केवल माधव के नाम का कीर्तन करें, एक 'अष्ट प्रहर कीर्तन' (24 घंटे का कीर्तन)। इससे प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी बात, अपनी छोटी बेटी के लिए, त्रिकाल संध्या को रिकॉर्ड कर लें और उसे तथा अपनी माँ को सुनाएँ। इससे कुछ अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। क्योंकि त्रिकाल संध्या का अभ्यास कम से कम तीन वर्ष की साधना के बाद फल देता है, फिर भी प्रयास कीजिए और माधव के प्रति समर्पित हो जाइए। जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 37:59 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2795 पंडित जी, मैं जानना चाहता हूँ कि नेपाल के लिए 2025 और 2026 कैसा रहेगा।

उत्तर: देखिए, 2025-26 नेपाल के लिए भूकंप का संकेत देता है। इसके अतिरिक्त, भारी वर्षा होगी, और कुछ क्षेत्रों में सूखा भी पड़ेगा। अन्न की कमी होगी। और मैं आपको बताना चाहता हूँ कि नेपाल में सरकार में अव्यवस्था हो सकती है। इसके साथ ही, महँगाई बहुत बढ़ेगी, और पंच तत्वों का प्रकोप भी देखना पड़ेगा। 25-26 में नेपाल के लिए यही दिखाई देता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:47 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2796 आने वाली शिवरात्रि के संबंध में, क्या आपका कोई संदेश है या कुछ विशेष करने को है? हम पहले से ही भागवत महापुराण, त्रिकाल संध्या करते हैं, और माधव के नाम का जप करते हैं। मैं पूछना चाहता था कि शिवरात्रि के दिन और कुछ करना है क्या? जय श्री माधव।

उत्तर: देखिए, शिवरात्रि के दिन रामायण का सुंदर कांड पढ़िए, वह कांड जिसमें भगवान राम ने माता जानकी (सीता) को मुक्त कराया था। उसे सुंदर कांड कहते हैं। भगवान शंकर को सुंदर कांड सुनाइए; वे बहुत प्रसन्न होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:34 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2797 पिताजी, कृपया मुझे क्षमा करें। हम दिन भर काम करते हैं, घर के काम, बाहर के काम, नौकरी आदि करते हैं। अपने कर्तव्यों (कर्म) का पालन करना बहुत आवश्यक है। परन्तु कभी-कभी ऐसा होता है कि हम अपने धार्मिक कर्तव्यों में पिछड़ जाते हैं; कभी-कभी भागवत पढ़ना छूट जाता है। हमें लगता है कि यह बहुत बड़ा पाप है। और कभी-कभी हम ऐसे काम कर बैठते हैं जो हमें नहीं करने चाहिए, जो गलत हैं। हम जानते हैं कि वे गलत हैं, फिर भी अपने काम के कारण वे हो जाते हैं। क्या यह हमारे लिए ठीक है? कृपया हमें मार्ग दिखाइए।

उत्तर: त्रिकाल संध्या सही समय पर करने का प्रयास कीजिए। त्रिकाल संध्या चलते-फिरते भी की जा सकती है; काम करते हुए भी की जा सकती है। जप मन में, हृदय में करना चाहिए; दूसरों को सुनाने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए आप जहाँ भी काम कर रहे हों, कहीं भी, मन में जप कीजिए। आपका मुख हमेशा खाता तो नहीं रहता, तो आपका मुख खाली है न? तो मुख से, हृदय से, जहाँ भी हों, जप कीजिए। मैं कभी कार में करता हूँ, कभी चलते-फिरते। क्योंकि भगवान के नाम के जप के लिए कोई कठोर नियम नहीं हैं। आप जहाँ भी जप करेंगे, उसका फल आपको मिलेगा। बस गलत समय पर मत कीजिए। समय पर करना अच्छा है। इसके लिए बैठकर विशेष समय निकालने की आवश्यकता नहीं है; आप इसे अपने घर के काम और कामकाज करते हुए कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 43:44 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2798 ठीक है, पंडित जी। जिन जगहों पर ठंड होती है, वहाँ क्या हम सुबह लेटे-लेटे कर सकते हैं, विशेषकर जब बहुत ठंड हो?

उत्तर: देखिए, ब्रह्म मुहूर्त प्रातः 3:45 बजे है, जो 3:30 से आरंभ होता है। जब आकाश में तारे दिखाई देते हों, उस समय त्रिकाल संध्या करने से सर्वोत्तम फल मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 45:06 · 23 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2799 नहीं, मेरा मतलब है, संयोगवश, यदि और कोई उपाय न हो, तो क्या इसे लेटे-लेटे किया जा सकता है? मैं यही पूछना चाहता था।

उत्तर: लेटे-लेटे, वृद्ध और बीमार लोग कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 45:28 · 23 फ़रवरी 2025

सत्र 151 · प्रश्न 2800–2809

L167: MAHASHIVRATRI | महाशिवरात्री लिंगराज तथा जगन्नाथ क्षेत्र से अशुभ संकेत ! | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 27 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2800 मैं महामंत्र के बारे में बात करना चाहता हूँ। मैं हरे कृष्ण मंत्र का जप करता था और मुझे लगा कि इसमें भगवान कल्कि को जोड़ना चाहिए, तो मैं जपता था 'हरे कृष्ण... हरे राम... कल्कि हरे कल्कि कल्कि कल्कि'। परन्तु यह ठीक नहीं लगा, इसलिए मैंने बंद कर दिया। 2023 में आपकी स्ट्रीम से जुड़ने के बाद से, मैं जप कर रहा हूँ। हरे कृष्ण मंत्र से पहले 'श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानंद...' आता है। मैंने सोचा कि जिस मंत्र का हम जप करते हैं, उसके लिए भी कुछ वैसा ही बनाऊँ। मैंने तीन रूप बनाए हैं और आपकी राय चाहूँगा। पहला है 'जय श्री जगन्नाथ, जसवंत प्रभु, अच्युतानंद, श्री अद्वैत गदाधर, श्री अनंत दास, बलराम भक्त'। दूसरा है 'जय श्री अच्युतानंद प्रभु, बलराम, जसवंत, जगन्नाथ प्रभु के चरणों में ध्यावे अनंत'। तीसरा है 'श्री कृष्ण माधव प्रभु अच्युतानंद, श्री जगन्नाथ जसवंत प्रभु के चरणों में ध्यावे जसवंत और अनंत'। क्या यह ठीक है?

उत्तर: ठीक है, बहुत अच्छा, बाबा। यह नाम बहुत पवित्र है; इसमें भगवान का नाम समाहित है। फिर भी, मैंने आपको बताया है कि मालिका शास्त्र में क्या लिखा है। भगवान चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिए गए 'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे' मंत्र के संबंध में, मालिका शास्त्र में एक स्थान पर लिखा है कि महामंत्र उल्टा जपा जाएगा। अर्थात्, 'राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधव हरे हरे।' इस प्रकार जपा जाएगा। इसलिए आपने जो मंत्र रचा है वह बहुत अच्छा और पवित्र है। आप इसका जप कर सकते हैं। परन्तु त्रिकाल संध्या के समय माधव के नाम का जप कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, और शास्त्र में लिखे अनुसार महामंत्र का उल्टा रूप भी जपिए: 'राम हरे कृष्ण हरे'। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:09 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2801 गुरुजी, ब्रह्म एकाक्षर मंत्र (ब्रह्म का एकाक्षरी मंत्र) क्या है?

उत्तर: देखिए, ब्रह्म एकाक्षर को केवल कोई ब्रह्म मुनि (जिन्होंने ब्रह्म का साक्षात्कार किया हो, ऐसे ऋषि) ही जानते हैं। ब्रह्म एकाक्षर मंत्र सार्वजनिक नहीं है। इसके बारे में केवल वही ब्रह्म मुनि बता सकते हैं जो ब्रह्मज्ञान प्रदान करने में समर्थ हों। फिर भी, एकाक्षर के विषय में मैं आपको थोड़ा बताऊँगा। एकाक्षर मंत्र का अर्थ है 'एकम् ब्रह्म, द्वितीय नास्ते' (ब्रह्म एक ही है, दूसरा कोई नहीं)। भगवान महाविष्णु के नाम का जप करना ही एकाक्षर भजन (एकाक्षरी उपासना) कहलाता है। और इस कलियुग में एकाक्षर मंत्र है 'माधव' नाम। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:11 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2802 पिताजी, कल मैं रुद्राभिषेक के लिए गया था। आमतौर पर मैं 'ॐ नमः शिवाय' का जप करता हूँ, लेकिन इस स्ट्रीम से जुड़ने के बाद से प्रभु (माधव) के नाम के अलावा कोई और नाम मेरे होंठों पर आता ही नहीं। 'हर हर महादेव' की जगह मैं 'जय श्री महादेव' कह रहा था। और रुद्राभिषेक करते समय 'ॐ नमः शिवाय' की जगह मैं पूरे समय 'जय श्री माधव' का जप कर रहा था। प्रभु (माधव) का नाम लेते हुए रुद्राभिषेक करके क्या मैंने कुछ गलत किया?

उत्तर: यदि आप भगवान शंकर की पूजा के समय माधव का नाम जपते हैं, तो भगवान शंकर सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं। क्योंकि भगवान शंकर निरंतर अपने हृदय में राम नाम का जप करते हैं। भगवान (विष्णु/माधव) और शंकर में कोई भेद नहीं है; वे सब एक ही हैं, केवल नाम अलग-अलग हैं। भगवान की प्राप्ति के लिए भगवान शंकर भी माधव नाम के जप का आशीर्वाद देते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:05 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2803 और एक प्रश्न और: यदि मन में अनजाने में कोई कामवासना का विचार आ जाए, तो क्या वह पाप है? आज सुबह से मेरा मन थोड़ा अशांत है। पिछले डेढ़ साल से मैंने स्वयं को नियंत्रण में रखा है, लेकिन कभी-कभी मन थोड़ा भटक जाता है। इस विषय में मैं क्षमा और मार्गदर्शन चाहता हूँ।

उत्तर: देखिए, मनुष्य का शरीर पंचभूतों से बना है। और इस पंचभौतिक शरीर में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश हैं। जैसे पंचभूतों में कभी-कभी परिवर्तन होते हैं, वैसे ही मनुष्य के मन में भी हलचल होती है। इसी कारण इच्छा और काम का जागरण सभी में होता है; ऋषि-मुनियों और संतों में भी होता है। तो, उसके लिए कोई पाप नहीं है। लेकिन यदि कोई उस इच्छा पर कार्य करे या उसे अपना ले, तो वह पाप है। जब ऐसे भाव उठें, तो उन्हें रोकने के लिए भगवान के नाम का जप करना, नित्य आध्यात्मिक दिनचर्या का पालन करना और भगवान की शरण लेना आवश्यक है। इसलिए यह भाव सभी मनुष्यों, देवताओं, ऋषियों और संतों को आता है, अतः यह पाप नहीं है। लेकिन उस पर आचरण करना पाप है।

► यह उत्तर सुनें · 23:51 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2804 पिताजी, मैं एक व्यक्तिगत अनुभव साझा करना चाहता हूँ और एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। (एक शिव मंदिर में त्रिकाल संध्या करने की एक लंबी कथा साझा करते हैं।) मेरा प्रश्न हमारे माधव महाप्रभु के बारे में है। क्या वे आज भी वैसी ही 'लीलाएँ' करते हैं जैसी कृष्ण ने की थीं, जैसे माखन चुराना और दही की मटकियाँ फोड़ना?

उत्तर: सुनिए, सुनिए। भगवान को किसी ने पहचाना नहीं; भगवान को कोई नहीं जानता। इस बारे में सोचना भी आवश्यक नहीं है। विचार यह होना चाहिए कि हमें सत्कर्म करने हैं। और सत्कर्म करने से, यदि हमारे भाग्य में है, तो हम सत्ययुग में जाएँगे। हमारा यह अभियान माधव नाम के जप के लिए है। मैं कहता हूँ, माधव कहाँ हैं, कौन हैं, यह हमारा विषय नहीं है। लेकिन मालिका शास्त्र में लिखा है कि जो माधव का नाम जपेंगे, वे सत्ययुग में जाएँगे। वे आने वाली विपदाओं से सुरक्षित रहेंगे। इसीलिए हम इसका प्रचार करते हैं। त्रिकाल संध्या का सार ब्रह्म कर्म (दिव्य कर्म) है। जो व्यक्ति त्रिकाल संध्या के इस सार को आत्मसात करेगा, वह सत्ययुग का मनुष्य बनेगा, क्योंकि सत्ययुग में सभी मनुष्यों को ब्रह्म कर्म करना होगा। तो हमें इसी विचारधारा में रहना चाहिए। समय के साथ, अंत में, जब सत्ययुग की स्थापना होगी, तब हम सोचेंगे कि लीला क्या है या क्या नहीं है, और आगे क्या होगा। अभी के लिए, जो मैं आपसे कह रहा हूँ, वही कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:33 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2805 पिताजी, जब हमारे अतीत से जुड़ी कोई बात आज हमारे सामने आती है—चाहे वह कोई व्यक्ति हो, कोई घटना हो, परिवार से जुड़ी कोई बात हो, या स्वयं हम से—उस क्षण हम न तो धैर्य से काम ले पाते हैं, न ही सत्य पर टिके रह पाते हैं। हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, निरंतर माधव नाम का जप कीजिए। जब भी समय मिले, दिन में दो बार भागवत पढ़िए। इस समय जो समस्याएँ उठ रही हैं, वे दूर हो जाएँगी। क्योंकि कोई एक दिन में संत नहीं बनता, कोई एक दिन में ऋषि नहीं बनता, और कोई एक दिन में सिद्धियाँ प्राप्त नहीं करता। इसमें समय लगता है। जैसा मैंने बताया है वैसा कीजिए, और समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:46 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2806 पिताजी, मैं जानना चाहती हूँ, आपने कहा था कि भारत में कुछ भक्त बचेंगे और विदेशों में भी कुछ भक्त बचेंगे। तो, विदेश में रहने वाले भक्तों के लिए, यदि वे वहीं रहकर माधव नाम का जप करें और त्रिकाल संध्या करें, तो क्या वे वहाँ सुरक्षित रहेंगे, या उन्हें भारत आना होगा? मैं इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि मेरे दोनों बच्चे विदेश में हैं।

उत्तर: पहली बात, मालिका शास्त्र में लिखा है कि जो लोग विदेश में हैं, वे अपने देश लौट आएँगे। दूसरी बात, यह भी लिखा है कि जो भगवान के भक्त विदेशों में रहेंगे—यह पूरे ब्रह्मांड के बारे में लिखा है—भगवान कल्कि अंतिम क्षणों में उनके पास जाएँगे और उन्हें राजा बनाएँगे। तो, इस विचार का सार यह है कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं, और माधव नाम का जप करते हैं, वे जहाँ कहीं भी हों, सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:52 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2807 शिवरात्रि की रात मुझे एक स्वप्न आया। मैंने भगवान महाविष्णु की एक लेटी हुई मूर्ति देखी, जिसके पास एक बालक बैठा था। मैंने उस बालक से कहा कि भगवान को जगाओ। बालक ने पुकारा, 'विष्णु जी, कृपया जाग जाइए।' उस मूर्ति में से त्रिशूल धारण किए और रुद्राक्ष की माला पहने एक आकृति उठी और बालक के सामने बैठ गई। फिर बालक ने मेरी ओर इशारा करके उस त्रिशूलधारी से कहा, 'देखिए, वह व्यक्ति आपको देख रहा है।' जैसे ही त्रिशूलधारी ने मुझे देखा, उसने मुझ पर त्रिशूल फेंकने की कोशिश की। उसी क्षण मैं चिल्लाने लगा, 'माधव, माधव, मुझे बचाइए, माधव, मेरी रक्षा कीजिए!' फिर मैंने देखा कि आप (वक्ता) मेरे पास प्रकट हुए, फोन पर बात करते हुए। मुझे केवल आपकी पीठ दिखाई दी। मैंने स्वयं को भी लेटे हुए देखा, और मेरे शरीर पर जल की बूँदें छिड़की जा रही थीं। मुझे लगा कि अब आप आ गए हैं, तो मैं सुरक्षित हूँ। मैंने फोन पर आपकी आवाज़ सुनी, और मैं बार-बार 'रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए' कहते हुए जाग गया। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ यह है कि भगवान शंकर प्रभु, अर्थात भगवान कल्कि का रुद्र रूप हैं। यह संहार का रूप है। क्योंकि भगवान विष्णु, ब्रह्मा की रचना के अनुसार, सृष्टि की रचना करते हैं; नारायण के रूप में उसका पालन करते हैं; और शिव के रूप में उसका संहार करते हैं। तो, यह प्रमाण है कि संहार के उद्देश्य से भगवान ने स्वयं शिव का रूप धारण किया है। और कल लिंगराज मंदिर में जो हुआ, वह भगवान शंकर का यह सिद्ध करना है कि 'अब मैं करूँगा, तुम्हारे हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।' यही प्रमाण हमें मिल रहा है। और यह भी प्रमाण है कि भगवान शंकर के संहार के समय माधव नाम ही रक्षा करेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:58 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2808 जैसा कि हम सुनते हैं कि देवता अपने धाम छोड़ रहे हैं, तो क्या बाबा विश्वनाथ (काशी के भगवान शिव) ने भी अपना स्थान छोड़ दिया है?

उत्तर: सभी देवताओं ने अपने स्थान छोड़ दिए हैं, पूरे भारत और विश्व में। इसीलिए संहार का कार्य हो रहा है। इसीलिए अशुभ घटनाएँ घट रही हैं। इसीलिए पंचभूत विनाश कर रहे हैं। इसीलिए रोग फैल रहे हैं। इसीलिए युद्ध हो रहे हैं। जब तक उनकी पूजा हो रही थी, तब तक पृथ्वी पर न पाप था न दुख। मानव सभ्यता भयभीत है; कोई भी शांति में नहीं है। और मैंने एक बात कही थी, देखिए, मैंने यह 2018-19 में कहा था, कि इतनी ब्रेकिंग न्यूज़ होंगी कि किसी भी मीडिया चैनल को पता नहीं चलेगा कि क्या दिखाएँ, क्योंकि लाखों ब्रेकिंग न्यूज़ होंगी। यदि भगवान शंकर गए न होते, तो यह ब्रेकिंग न्यूज़ क्यों हो रही होती? यह बढ़ती ही जाएगी। संहार के लिए भगवान शंकर पहले ही प्रस्थान कर चुके हैं। और जो भगवान शंकर हैं, वही कल्कि का रूप भी हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:01 · 27 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2809 मुझे एक स्वप्न आया। मैं मालिका और कुछ पर्चे लेकर प्रचार के लिए जा रहा था। सुबह के 6 बजे थे। हमने किसी से लिफ्ट माँगी। पलक झपकते ही मैंने नेपाल देखा। पहले रास्ता तपती गर्मी से जल रहा था, पेड़ सूखे हुए थे। थोड़ा आगे इतनी हल्की बारिश हो रही थी कि बूँदें गिनी जा सकती थीं, और चारों ओर हरियाली थी। फिर हम कीचड़ में गिर गए, लेकिन भविष्य मालिका और अन्य सामग्री बचा ली। हमें नेपाल जैसी किसी जगह पर छोड़ दिया गया। अचानक एक वृद्ध स्त्री प्रकट हुई। वे बहुत बूढ़ी थीं, उनकी त्वचा लटकी हुई थी, लेकिन उनका चेहरा अविश्वसनीय रूप से तेजस्वी था। मैं निःशब्द रह गया। उनके पीछे एक बालक था, लगभग 8-10 साल का, जो बौद्ध भिक्षु जैसे हल्के भूरे वस्त्र पहने था। वह हल्की मुस्कान के साथ मुझे देखता रहा। वृद्ध स्त्री ने पूछा, 'तुम यहाँ किसलिए आए हो?' जब मैंने उन्हें सामग्री दिखाई, तो उन्होंने कहा, 'अच्छा, तुम प्रचार के लिए आए हो। हम जानते हैं। और तुम्हारे पीछे जो बालक तुम्हें देख रहा है, वह भी इस बारे में बहुत कुछ जानता है।' मैंने पीछे मुड़कर उसे देखा, वह मुझे एकटक देख रहा था, लेकिन मैं कुछ कह नहीं सका। फिर, कोई बड़ी और काली चीज़ मुझ पर छा गई, और मेरा स्वप्न टूट गया। कृपया इस बारे में कुछ बताइए और कुछ मार्गदर्शन दीजिए?

उत्तर: देखिए, मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है। जो माधव नाम का जप करते हैं और त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें स्वाभाविक रूप से ऐसे स्वप्न आते हैं। यह योगमाया की शक्ति का दर्शन था। और आपको भगवान के कार्यक्रम की कुछ जानकारी मिल रही है। यह संकेत देता है कि धार्मिक प्रचार और आने वाले सत्ययुग के लिए कार्य नेपाल में भी होगा; इसीलिए नेपाल दिखाया गया। तो, आपको माता योगमाया की शक्ति का दर्शन हुआ है, जो बड़े आनंद की बात है।

► यह उत्तर सुनें · 35:20 · 27 फ़रवरी 2025

सत्र 152 · प्रश्न 2810–2815

L168: EARTHQUAKE | नेपाल-बिहार में भूकंप का असली कारण? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 28 फ़रवरी 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2810 नेपाल और बिहार में बार-बार भूकंप क्यों आ रहे हैं?

उत्तर: वक्ता बताते हैं कि ये बार-बार आने वाले भूकंप मानवता के लिए भगवान की ओर से एक चेतावनी हैं। उन्होंने पहले ही मालिका शास्त्र जैसे शास्त्रों के आधार पर इनकी भविष्यवाणी की थी, जिसमें नेपाल सहित हिमालयी क्षेत्र में विनाश का उल्लेख है। ये छोटे झटके भविष्य में आने वाले एक कहीं बड़े, विनाशकारी भूकंप के पूर्वसंकेत हैं। वे कहते हैं कि ये घटनाएँ लोगों के लिए संकेत हैं कि एक महाविपदा निकट आ रही है और उन्हें धर्म के मार्ग की ओर मुड़ना होगा। भूकंप और बाढ़ सहित इन आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता मार्च 2025 के बाद काफी बढ़ने की भविष्यवाणी की गई है। इस आसन्न विनाश से रक्षा पाने का अंतिम उपाय है अपनी जीवनशैली बदलना: मांसाहार और मदिरा का त्याग करना, और सत्य, शांति तथा करुणा जैसे गुणों का सच्चे मन से पालन करना। वे सभी को दृढ़ता से सलाह देते हैं कि अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए त्रिकाल संध्या करें, श्रीमद् भागवत पढ़ें, और निरंतर भगवान माधव के नाम का जप करें।

► यह उत्तर सुनें · 00:51 · 28 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2811 मैं अपने परिवार को त्रिकाल संध्या और नाम-जप जैसी अपनी आध्यात्मिक साधनाओं में साथ देने के लिए कहते-कहते थक चुका हूँ। वे कोई रुचि नहीं दिखाते और कहते हैं कि वे मन ही मन भगवान की पूजा करते हैं और जो होना है, वह होकर रहेगा। मैं क्या करूँ?

उत्तर: कोई बात नहीं, उन्हें छोड़ दीजिए। देखिए, हर कोई भक्त नहीं होता, और हर किसी के भाग्य में सत्य के मार्ग पर चलना नहीं लिखा होता। जिनके पिछले जन्मों के सही कर्म हैं, केवल वही इसकी ओर आकर्षित होंगे। मालिका शास्त्र भी कहता है कि जो पिछले चार युगों में भक्त थे और भगवान के साथ थे, केवल वही सत्य के नए युग (सत्ययुग) में प्रवेश करेंगे। जिन्होंने यह नहीं किया, वे कैसे जा सकते हैं? तो, उन्हें छोड़ दीजिए। किसी से कुछ मत कहिए। यदि उन्हें जुड़ना ही है, तो वे भविष्य में जुड़ जाएँगे। आपका परिवार क्या है? सारा परिवार तो भगवान ही है।

► यह उत्तर सुनें · 15:16 · 28 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2812 मेरा प्रश्न सभी विद्यार्थियों के विषय में है। आजकल उनका अनैतिक संबंधों में रहना आम बात है, जैसे गर्लफ्रेंड या बॉयफ्रेंड रखना। उनका भविष्य क्या होगा?

उत्तर: देखिए, हम विवाहित लोगों पर टिप्पणी नहीं कर रहे हैं। परंतु जो लोग अनैतिक संपर्क में हैं और विवाह से पहले पापपूर्ण, अनधिकृत कर्म करते हैं, धार्मिक दृष्टि से उनका मार्ग अच्छा नहीं है। अभी समय है, उन्हें अपने आचरण को सुधार लेना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 17:01 · 28 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2813 गुरुजी, मेरे ऑफिस में एक सहकर्मी मुझसे लगातार झगड़ा करती रहती है। ऐसा कई बार हो चुका है, और वह समझाने पर भी नहीं मानती। हाल ही में हमारा बहुत बुरा झगड़ा हुआ जिसमें वह बेहद अभद्र थी। तब से मैं किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं लगा पा रहा हूँ, यहाँ तक कि त्रिकाल संध्या या भागवत पाठ जैसी अपनी साधनाओं पर भी। ऐसे लोगों से कैसे निपटूँ? मेरा मन मेरे नियंत्रण से बाहर हो जाता है।

उत्तर: देखिए, यह केवल आपके ऑफिस में नहीं होता; यह हर कॉर्पोरेट ऑफिस में होता है। एक काम कीजिए: उनसे दूरी बनाए रखिए। भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, मुझे उनसे बचाइए।' उनसे बात मत कीजिए, उनसे मत मिलिए। अगर वह कहीं बैठती है, तो आप उससे दूर रहिए। यह आपके ही भले के लिए होगा। अभी जो दैवी और आसुरी शक्तियों के बीच युद्ध चल रहा है, यह भी एक प्रकार का युद्ध ही है। इसलिए न कुछ कहने से काम बनेगा, न कुछ करने से। हमें समाज में भी रहना है और नौकरी भी करनी है। तो, उनसे दूरी बनाए रखिए और प्रतिदिन माधव से प्रार्थना कीजिए कि वे आपकी रक्षा करें। मेरे विचार से भगवान अपनी कृपा दिखाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 17:56 · 28 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2814 पंडित जी, मेरे माता-पिता लगभग रोज़ झगड़ते हैं। जब मैं बीच-बचाव करने की कोशिश करता हूँ, तो कभी-कभी मुझे गुस्सा आ जाता है और मैं ऐसी बातें कह देता हूँ जो मुझे नहीं कहनी चाहिए। मुझे लगता है कि यह गलती है और मुझे डर है कि इस क्रोध के कारण मैं योगिनी माता की आध्यात्मिक परीक्षा में असफल हो जाऊँगा और सत्य के नए युग (सत्ययुग) में प्रवेश नहीं कर पाऊँगा। इस बार-बार होने वाली स्थिति और अपने क्रोध के विषय में मैं क्या करूँ?

उत्तर: आपको वह क्रोध त्यागना ही होगा। किसी पर क्रोध करना, किसी को शाप देना, या किसी को गाली देना—यह सज्जनों का नियम नहीं है। हमें अपनी भाषा और आचरण से लोगों को बदलना चाहिए। किसी पर क्रोध करना हमारा अधिकार नहीं है, विशेषकर उन भक्तों के लिए जो त्रिकाल संध्या करते हैं। उनके लिए क्रोध विष के समान है क्योंकि यह हमारे धर्म का नाश कर देगा। तो, इस आदत को छोड़िए। यदि कोई गलत करता है, तो उसे समझाइए। इसलिए, क्रोध का त्याग कीजिए, और शुद्ध एवं परिष्कृत भाषा में उन लोगों को स्थिति समझाइए जो गलत कर रहे हैं, चाहे वे आपके परिवार में हों या बाहर। यदि वे न समझें या बहस करें, तो उनसे बिल्कुल बात मत कीजिए। दूरी बनाए रखिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:40 · 28 फ़रवरी 2025

प्रश्न 2815 पंडित जी, कभी-कभी संध्या अनुष्ठान करते समय मेरे शरीर का तापमान बढ़ जाता है। क्या यह ठीक है?

उत्तर: यदि बढ़ता है, तो यह अच्छी बात है। कोई समस्या नहीं है। अपनी साधना जारी रखिए, और उसके बाद आपको शांति का अनुभव होगा।

► यह उत्तर सुनें · 21:40 · 28 फ़रवरी 2025

सत्र 153 · प्रश्न 2816–2827

L169: ASTEROID IMPACT | क्या पृथ्वी पर ऐस्टरॉइड गिरने वाला है? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 3 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2816 पटना, बिहार से मुकेश कुमार पूछ रहे हैं: क्या लोकतांत्रिक व्यवस्था (गणतंत्र) 2029 तक रहेगी, या समाप्त हो जाएगी?

उत्तर: देखिए, शास्त्रों में लिखा है कि सत्य युग 2032 में आरंभ होगा। मैंने भविष्य मालिका शास्त्र के हिंदी संस्करण में भी लिखा है कि सत्य युग 2032 से शुरू होगा। यही शास्त्रीय नियम है। 2032 के बजाय 2034 भी हो सकता है, या 2030 भी हो सकता है। क्योंकि जब धर्म की स्थापना होती है, तो एक-दो वर्ष का अंतर हो सकता है। परंतु प्रश्न यह है कि क्या 2032 के बाद सचमुच गणतंत्र के स्थान पर राजतंत्र होगा? हाँ, आपका प्रश्न सही है। क्योंकि अच्युतानंद जी ने इस विषय में लिखा है कि तेरह ब्रह्मचारी राजतंत्र के रूप में भारत पर शासन करेंगे, और दिल्ली के सिंहासन पर एक ब्राह्मण राज करेगा। और केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में, भगवान की इच्छा से भक्त राजा बनेंगे। यह तानाशाही शासन नहीं है; भगवान के महान भक्त, प्रभु की कृपा से, राजा बनाए जाएँगे। इसलिए, 2032 के बाद स्वतंत्र राम राज्य होगा। यह भी लिखा है कि जब दिल्ली के सिंहासन पर एक ब्राह्मण शासन करेगा, तब पूरे विश्व में राम राज्य स्थापित होगा। तो हमें उस समय की प्रतीक्षा करनी है। यह दो-तीन वर्ष आगे या पीछे हो सकता है; यह पहले भी हो सकता है। यह प्रभु पर निर्भर है। क्योंकि मालिका शास्त्र की रचना हुई है, और सब कुछ लिखने के बाद अच्युतानंद जी ने एक पंक्ति लिखी, कि 'जो मैंने लिखा है वह मेरा वचन नहीं है, बल्कि भगवान ने मुझे यह वचन बताया है।' जब भगवान कल्कि आएँगे, तो वे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करेंगे। समय आगे-पीछे हो सकता है, परंतु यह होना 100% निश्चित है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:13 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2817 वाराणसी, उत्तर प्रदेश से सूरज मौर्या पूछना चाहते हैं: कलियुग में अच्छे लोगों के साथ अच्छा और बुरे लोगों के साथ बुरा क्यों होता है?

उत्तर: कलियुग में अच्छे लोगों के साथ अच्छा होता है, और बुरे लोगों के साथ बुरा होता है। देखिए, अब कलियुग नहीं है क्योंकि युग बदल चुका है, परंतु इसका पूरा प्रभाव अभी नहीं आया है। जैसे-जैसे यह पूरा प्रभाव आएगा, भारत और विश्व में जो लोग बुरा करते हैं उन्हें बुरे परिणाम मिलेंगे। उदाहरण के लिए, कुछ समय तक यूक्रेन के शासकों ने अमेरिका की मदद से युद्ध जारी रखा, परंतु एक समय आया जब उनके बीच ही टकराव पैदा हो गया। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिसके कर्म में दोष है, वह उजागर होगा ही। पूरे विश्व में, जो भी बुरा करता है उसे भुगतना पड़ता है। रूस एक शांतिप्रिय राष्ट्र है जिसने सदा भारत की मदद की है। उसे एक साथ 30-40 देशों के विरुद्ध लड़ना पड़ा, परंतु धर्म प्रकट होगा, और सभी देश अलग हो जाएँगे। यह समय का परिवर्तन ही धर्म का प्राकट्य है। विश्व में कोई भी मनुष्य जो गलती करता है, पकड़ा जाता है। जो भी अच्छाई के साथ परिश्रम करता है, उसे फल मिलता है। देखिए, आज भारत में किसान खेती करके 50 लाख की गाड़ियाँ चला रहे हैं, जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब परिश्रम फल देता है। युग बदल चुका है। यह वातावरण सत्य युग के आगमन के लिए बनाया जा रहा है, जहाँ एक भी दुष्ट व्यक्ति नहीं होगा। पिछले सत्य युग में, भगवान कल्कि ने 22 वर्षों तक धर्म की स्थापना की, पहले महापापियों का नाश करके, फिर मध्यम श्रेणी के, और अंत में उनका भी जिन्होंने छोटे पाप किए थे। यह युग परिवर्तन का संकेत है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 27:16 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2818 दिल्ली से ईशांत पूछना चाहते हैं: जब कलियुग समाप्त होगा, तो हमारे मोबाइल फोनों का क्या होगा?

उत्तर: देखिए, जब कलियुग समाप्त होगा... हम कलियुग को यंत्रों का युग कहते हैं। अच्युतानंद जी ने इस विषय में पहले ही लिखा था कि कंप्यूटर और मोबाइल फोन जैसी गणना करने वाली मशीनें उलटी पड़ी रहेंगी, अर्थात वे काम नहीं करेंगी। एक अन्य स्थान पर उन्होंने लिखा कि सारे यंत्र और उद्योग निश्चल हो जाएँगे। मालिका में लिखा है कि ये सभी वैज्ञानिक यंत्र निश्चल हो जाएँगे। तो जब मोबाइल फोन काम करना बंद कर देगा, तब भक्तों को एक आध्यात्मिक मोबाइल शक्ति प्राप्त होगी। भारत में कहीं भी बैठे भक्त पूरे विश्व को जान सकेंगे। इस यंत्रों के युग के कारण हमें उनके माध्यम से समाचार मिलते हैं। परंतु युग परिवर्तन के साथ, मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति इतनी बढ़ जाएगी कि उन्हें प्राप्त 'ज्ञान चक्षु' के माध्यम से वे सब कुछ जान सकेंगे। तो, जो भी होगा अच्छे के लिए होगा। सत्य युग की तकनीक कलियुग की तकनीक से लाखों गुना अधिक प्रभावी, शुद्ध और सुरक्षित है। अच्छे दिन आएँगे, कोई समस्या नहीं होगी।

► यह उत्तर सुनें · 30:14 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2819 नोएडा से सचिन गुप्ता पूछना चाहते हैं: शनि के मीन राशि में प्रवेश करने वाले होने के कारण, क्या उन्हें अपनी आजीविका के लिए ट्यूशन सेंटर खोलने हेतु पैसा लगाना चाहिए, या उनकी वर्तमान प्राइवेट नौकरी ठीक है?

उत्तर: देखिए, 2032 में होने वाले विनाश तक शिक्षा, भोजन, सेना और चिकित्सा जैसी आवश्यक सेवाएँ चलती रहेंगी। लोग अंत तक पढ़ेंगे; यह रुकेगा नहीं। मेरे विचार से यह 2032 तक चलता रहेगा। इसलिए, यदि आप इसमें सहज हैं, तो आपको यह काम करना चाहिए। जब संसार का विनाश होगा, तब आप भी होंगे। यदि नहीं होगा, तो आपको कोई समस्या नहीं। परंतु परिवर्तन अवश्य होगा। मैंने पहले कहा था कि बाज़ार गिरेगा, और अब वह गिर रहा है और आगे और गिरेगा। हमें खाना-पीना है, काम करना है। मैं भी काम कर रहा हूँ। मैं रुककर यह नहीं कहता कि संसार का विनाश होने वाला है। हम अपना काम करते हैं क्योंकि इस शास्त्र का प्रचार करना है। इसलिए, अपना काम कीजिए। काम से कभी दूर मत रहिए। परिणाम में आपको क्या मिलेगा या नहीं मिलेगा, यह भगवान पर निर्भर है। तो, अपना काम कीजिए। जो होगा या नहीं होगा, वह सबके साथ होगा। मेरे साथ भी होगा, और आपके साथ भी होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:21 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2820 नोएडा से बरखा पूछना चाहती हैं: क्या त्रि-संध्या सुनने का फल वही है जो उसे पढ़ने का है? हम यूट्यूब पर दिन में तीन बार त्रि-संध्या सुनते हैं।

उत्तर: देखिए, यूट्यूब पर दिन में तीन बार त्रि-संध्या सुनने से उतना ही फल मिलता है जितना उसे पढ़ने से। परंतु त्रिकाल संध्या को सही समय पर सुनिए। उससे भी आपको फल मिलेगा, और आपको भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:55 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2821 झारखंड से रोहित कुमार सिन्हा पूछना चाहते हैं: क्या मालिका में प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध का कोई उल्लेख था?

उत्तर: हाँ, भविष्य मालिका ग्रंथ में प्रथम विश्व युद्ध के बारे में लिखा गया था, द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में लिखा गया था, और यह भी लिखा गया था कि अमेरिका जापान पर परमाणु बम गिराएगा। यह भी लिखा गया था कि भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्ध होंगे। जो कुछ भी लिखा गया था, वह सब हो चुका है। और आगे जो लिखा है, तृतीय विश्व युद्ध के बारे में, वह भी होगा। समय के साथ यह भी होगा।

► यह उत्तर सुनें · 35:31 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2822 मुझे बहुत अधिक कामवासना का अनुभव होता है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, यह केवल आपकी समस्या नहीं है; यह मानव जाति पर पड़ने वाला Kali Yuga का अंतिम प्रभाव है। इसके लिए हमारा खान-पान और जीवनशैली जिम्मेदार है। अगर हम मोबाइल फोन और लैपटॉप, यानी इंटरनेट से दूर रहें, तो उसी दिन कामवासना 70% कम हो जाएगी। क्योंकि इन्हीं यंत्रों के माध्यम से... अच्युतानंद ने लिखा था कि इंटरनेट और मोबाइल फोन के माध्यम से लोगों की कामवासना जागृत होगी। यह Bhavishya Malika ग्रंथ में लिखा है। इसलिए मैं एक सलाह देता हूँ: अगर आपके फोन पर कोई बुरी सामग्री आए, तो उसे 'Not Interested' मार्क कर दीजिए। और जो लोग बुरी बातें करते हैं, उनकी संगति मत कीजिए। अगर कभी आपके मन में कोई बुरा विचार आए, तो बैठकर भगवान के शास्त्र, पुराण या भागवत पढ़िए। उनके प्रभाव से वह चला जाएगा। और रात 9 या 10 बजे के बाद अपना मोबाइल फोन अपने पास मत रखिए। इससे व्यक्ति में बदलाव आ सकता है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 37:17 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2823 पंडित जी, क्या हमें एकादशी के दिन तुलसी के पौधे में जल चढ़ाना चाहिए या नहीं? और कृपया हमें त्रिकाल संध्या के सारे लाभ बताइए। मैं एक बीमारी से भी परेशान हूँ जो त्रिकाल संध्या करने और दवा लेने के बावजूद ठीक नहीं हो रही है।

उत्तर: देखिए, आपको माता तुलसी को प्रतिदिन जल चढ़ाना चाहिए, चाहे एकादशी हो, अमावस्या हो, या संक्रांति, क्योंकि वे एक दिव्य माता हैं और उनकी प्रतिदिन पूजा होती है। यह पहली बात। दूसरी बात, त्रिकाल संध्या के लाभ के बारे में: जो लोग दिन के तीन समय संध्या (प्रार्थना) करते हैं, उन्हें भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है। शास्त्रों में लिखा है कि जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, वे दिव्य प्राणी बन जाते हैं और देवत्व की स्थिति प्राप्त करते हैं। त्रिकाल संध्या में वह तत्व है जो व्यक्ति को मृत्यु से जीवन की ओर ले आता है। जो इसे नहीं करते, उन्हें मृत शरीर माना जाता है, जबकि जो करते हैं, उनमें सचमुच प्राण होते हैं। तीनों समय त्रिकाल संध्या करने से सभी बड़ी विपत्तियाँ, दुःख और बीमारियाँ दूर हो सकती हैं। शास्त्रों में मेरी आस्था के अनुसार, पृथ्वी पर इससे बड़ा कोई तत्व नहीं है। जिस त्रिकाल मंत्र का हमने उल्लेख किया है—दुर्गा Madhava स्तुति, भगवान विष्णु के 16 नाम, उनके 10 अवतार, उनका मुख्य नाम 'Madhava', और भागवत का एक अध्याय—जो इसे पढ़ेंगे, उन्हें निश्चित रूप से इसका फल मिलेगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 39:19 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2824 पंडित जी, कहते हैं कि रविवार को तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। क्या यह सही है?

उत्तर: रविवार रवि नारायण का दिन है, यानी भगवान नारायण का दिन। सूर्यास्त से पहले माता तुलसी से पत्ते लाने चाहिए, लेकिन केवल स्नान करने और फूल व दीपक के साथ विधिवत अनुष्ठान करने के बाद। माता से निवेदन करने के बाद ही तुलसी लानी चाहिए। और तुलसी पर केवल भगवान नारायण का अधिकार है, किसी और का नहीं। हम किसी अन्य देवी-देवता की पूजा में तुलसी का उपयोग नहीं कर सकते। केवल भगवान नारायण के अवतार, जैसे राम, कृष्ण, परशुराम आदि, ही तुलसी को धारण करने में सक्षम हैं। किसी अन्य देवी-देवता में यह क्षमता नहीं थी।

► यह उत्तर सुनें · 41:21 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2825 मैंने एक टेलीग्राम चैनल पर Bhavishya Malika में आपके बारे में एक वर्णन पढ़ा। उसमें आपकी भक्ति की पद्धति का वर्णन है, कि आप कभी स्त्री भाव से और कभी पुरुष भाव से पूजा करेंगे, और किसी को पता नहीं चलेगा कि आप कब किस अवस्था में हैं। कृपया इसका अर्थ समझाइए ताकि हम भी समझ सकें और उसके अनुसार आचरण कर सकें?

उत्तर: देखिए, भगवान के भक्त, भगवान के सामने, स्वयं को स्त्री के रूप में देखते हैं, अर्थात वे 'गोपी भाव' (गोपियों की भावदशा) प्राप्त करते हैं। गोपी भाव भक्ति भाव का सर्वोच्च अंग है। भक्ति का उच्चतम स्तर गोपी माताओं का भाव है। जब वह भाव किसी भक्त में आ जाता है, तो भगवान को प्राप्त करना थोड़ा आसान हो जाता है। इसलिए, भगवान के सामने स्वयं को स्त्री के रूप में, या एक दिव्य गायक के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, उनके भजन गाते हुए। ऐसा भाव होना चाहिए। भगवान कृष्ण ने उद्धव से कहा था कि पूजा करने के बाद उनकी महिमा का गान भी करना चाहिए और नृत्य करना चाहिए, उस नृत्य में उन्हें देखते हुए। इसलिए, यह भक्ति का भाव है। गोपी भाव के स्तर तक पहुँचने के लिए, व्यक्ति को भौतिक तत्वों से दूर रहना चाहिए और स्वयं को सबसे छोटा और तुच्छ मानते हुए भगवान की शरण लेनी चाहिए। कुछ लोग थोड़ी-सी भक्ति करने के बाद सोचते हैं कि वे सबसे बड़े भक्त हैं। मैं कहूँगा, अगर यह गोपी भाव नहीं आया तो भक्ति का क्या अर्थ है? अगर आप भगवान की पूजा करना चाहते हैं, तो आपकी आँखों से आँसू आने चाहिए। जो भगवान के प्रति समर्पित है, उसके आँसू आएँगे, वह नाचने लगेगा, और ब्रह्मांड को भूल जाएगा। उसका भाव केवल कृष्ण के लिए होगा। इसलिए, गोपी भाव में आइए। इस भक्ति भाव में लीन होकर भगवान को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है, और जीवन सार्थक हो जाएगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 42:29 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2826 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, जैसा कि नासा और अन्य कह रहे हैं कि 2032 में एक क्षुद्रग्रह गिरेगा, आपने कहा था कि ये भविष्यवाणियाँ काम नहीं करेंगी और भगवान इन घटनाओं को आगे-पीछे कर देंगे। क्या इसका अर्थ यह है कि 2032 की तारीख सही नहीं है? दूसरा, जब विनाश शुरू होगा, तो क्या हम भक्तों को कभी आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिलेगा?

उत्तर: देखिए, मैं तो अभी इसी समय आप सबसे मिल रहा हूँ और बात कर रहा हूँ। मेरा लक्ष्य एक ही है। जैसा आपने पूछा, क्षुद्रग्रह कब आएगा, कब गिरेगा—यह सब भगवान के नियंत्रण में है। आप अपना कर्म कीजिए। आपसे मिलने का सबसे बड़ा उपहार जो मुझे मिलेगा, वह यह है कि आप त्रिकाल संध्या करें और सही समय पर भागवत पढ़ें, प्रतिदिन अपने घर की पहली रोटी गाय को दान करें, और निरंतर सत्यवादी बनें। तब, आज हम जो आध्यात्मिक चर्चा कर रहे हैं, उसका फल आप Satya Yuga में अनुभव करेंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 50:21 · 3 मार्च 2025

प्रश्न 2827 क्या हमें प्याज और लहसुन छोड़ना होगा? हम मांसाहार छोड़ रहे हैं, लेकिन क्या प्याज और लहसुन भी छोड़ना होगा? क्या यह भी मांसाहार माना जाता है?

उत्तर: देखिए, भगवान के मंदिर में या आपके घर के मंदिर में जहाँ आप पूजा करते हैं, अगर आप भगवान को प्रसाद अर्पित करते हैं, तो उसे पूरी तरह शाकाहारी, बिना प्याज-लहसुन के बनाइए। यह पहली बात। दूसरी बात, अगर आपने मांसाहार छोड़ दिया है, तो अभी कुछ समय के लिए आप प्याज और लहसुन खा सकते हैं। समय के साथ सभी प्याज और लहसुन छोड़ देंगे। आप अभी खा सकते हैं, यह इतनी बड़ी बात नहीं है, लेकिन आगे चलकर इसे छोड़ना ही होगा। अभी खा सकते हैं, कोई बात नहीं। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 52:51 · 3 मार्च 2025

सत्र 154 · प्रश्न 2828–2841

L170: Ukraine-Russia War | यूक्रेन रूस के युद्ध का नतीजा क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 7 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2828 मेरी राशि मीन है, और मैं शनि की साढ़े साती के प्रभाव में हूँ। क्या मीन-शनि योग का प्रभाव इस राशि पर भी पड़ेगा?

उत्तर: देखिए, जिस राशि से शनि गोचर कर रहे होते हैं, उस पर गोचर के अनुसार, साथ ही जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार प्रभाव पड़ता है। हाँ, जैसे-जैसे शनिदेव गोचर कर रहे हैं, मीन राशि से यह गोचर पूरी पृथ्वी के लिए विपत्ति ला रहा है, और यह मीन राशि के लोगों को भी प्रभावित करेगा। इसे कम करने के लिए, प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, भागवत पढ़ना चाहिए, Madhava के नाम का जप करना चाहिए, और तीनों संध्या के समय भगवान नृसिंह महाप्रभु के स्तोत्र का 11 बार पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से आप पर शनिदेव की कृपा दृष्टि होगी।

► यह उत्तर सुनें · 09:05 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2829 उन्होंने एक ओड़िया श्लोक भेजा है और उसका अर्थ समझना चाहते हैं। श्लोक है: "अग्नि कुंडे गृत ढाली थे सेहि हृदे ए मो नाम, केते बेले स्थिति केते बेले पुनि हेबा पुरुषोत्तम, केते बेले स्त्री पुरुष बोलेना किछि जाण ना पड़िबा, हेमंत बेषरे मोहर भक्त ब्रह्मांड मध्ये भ्रमिबा।"

उत्तर: इसका अर्थ है कि वर्तमान Kali Yuga में, यह एक 'नाम यज्ञ' (भगवान के नाम के जप का यज्ञ) की बात करता है। भगवान का एक भक्त आएगा जो यह नाम यज्ञ करेगा। उनका स्वभाव कभी स्त्री जैसा होगा, कभी पुरुष जैसा, और कभी दोनों का मिश्रण। इसका अर्थ है कि उनके मन में कोई मानवीय भावनाएँ नहीं होंगी; उनमें गोपी का, एक भक्त का भाव होगा। वे भगवान का नाम फैलाते हुए पूरे विश्व में भ्रमण करेंगे। शास्त्रों में लिखा है कि ऐसा व्यक्ति पूरे विश्व में Bhavishya Malika का प्रचार करेगा।

► यह उत्तर सुनें · 10:24 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2830 पिछले जन्म के महापापों का प्रायश्चित इस वर्तमान जीवन में कैसे किया जा सकता है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। इस जीवन में हम जो कर्म करते हैं, उनका प्रायश्चित हम कर सकते हैं। मृत्यु से पहले लोग दान देते हैं, तीर्थयात्रा पर जाते हैं, और गरीबों, जरूरतमंदों तथा गायों को दान करते हैं। मृत्यु से पहले, अपने कर्म को समझकर, वे चिंतन करते हैं, पश्चाताप करते हैं और भगवान की शरण लेते हैं, साथ ही पुण्य कर्म भी करते हैं। लेकिन मृत्यु के बाद जब हम पुनर्जन्म लेते हैं, तो वह कर्म हमारी जन्म कुंडली में लिखे 'प्रारब्ध' (भाग्य) के रूप में आता है। क्या लिखा होता है? कि इस व्यक्ति ने पिछले जन्म में अमुक-अमुक अच्छे कर्म किए थे, इसलिए वह अच्छे परिवार में जन्म लेगा, इतनी पढ़ाई करेगा, इतना कमाएगा, सुंदर जीवनसाथी मिलेगा, ऐसी संतान होगी, या संतान बिल्कुल नहीं होगी। यह सब प्रारब्ध के अंतर्गत आता है। प्रारब्ध और वर्तमान कर्म दोनों को शुद्ध करने के लिए, शास्त्र कहते हैं कि अनंत पिछले जन्मों के कर्मों को सुखद, शुद्ध और पुण्यमय बनाने के लिए, त्रिकाल संध्या ही वह एक तत्व है जो करोड़ों जन्मों के पापों को जला सकता है। वह है त्रिकाल संध्या। यह शास्त्रों में लिखा है। अगर कोई मनुष्य त्रिकाल संध्या करता है, Madhava के नाम का जप करता है, और भागवत पढ़ता है, तो उसके प्रारब्ध का प्रायश्चित हो जाता है, उसके वर्तमान पापों का प्रायश्चित हो जाता है, और अनगिनत पिछले जन्मों के पापों का भी प्रायश्चित हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 12:01 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2831 यदि मैं किसी भी प्रकार से त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहा हूँ, तो क्या कोई सरल विकल्प है?

उत्तर: देखिए, अगर संसार में खाने के लिए रोटी न हो, तो सरल विकल्प है पानी। लेकिन क्या कोई केवल पानी पीकर जीवित रह सकता है? इसलिए रोटी तो खानी ही पड़ेगी। इसी प्रकार त्रिकाल संध्या का सरल विकल्प यह है: यदि आप विवश हैं, यदि आपके पास पाँच से सात मिनट नहीं हैं, तो उस समय आप संक्षिप्त रूप कर सकते हैं। अर्थात्, उस समय आप 36 बार दुर्गा माधव नाम, एक बार दस अवतारों के नाम, और 108 बार माधव नाम का जप करके उस काल को पार कर सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि समय होते हुए भी आप जानबूझकर त्रिकाल संध्या की उपेक्षा करें; यह ठीक नहीं है। हाँ, यदि आप गाड़ी चला रहे हैं, बस में यात्रा कर रहे हैं, ऑफिस में बैठे हैं, या किसी काम में लगे हैं, तो आप पाँच से सात मिनट निकाल सकते हैं। जैसे, दस अवतारों का श्लोक। यदि हम उसे लय के साथ गाएँ तो अधिक समय लगेगा। लेकिन यदि आप लय का प्रयोग न करें, तो यह बहुत कम समय में, लगभग तीन से छह मिनट में हो सकता है। उसी तरह कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 14:25 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2832 मैं लोगों को प्रभु के नाम के प्रति जागरूक कैसे करूँ? सब इसका मज़ाक उड़ाते हैं।

उत्तर: देखिए, मैंने यह पहले भी कहा है और फिर कह रहा हूँ। शास्त्र कहते हैं कि जो भगवान के वचन की आलोचना करते हैं, वे राक्षसों से कम नहीं हैं। इसलिए ऐसे लोगों से कभी बात मत कीजिए। केवल उन्हीं से बात कीजिए जो श्रद्धालु हैं, पवित्र हैं, अच्छे लोग हैं, जो भगवान के वचन का पालन करना चाहते हैं। वह समय आ रहा है जब लोग त्रिकाल संध्या के लिए भीख माँगेंगे। वे गिड़गिड़ाकर कहेंगे, 'भाई, हमारी मदद कीजिए, हमें भी त्रिकाल संध्या दीजिए, हम भी बचना चाहते हैं।' अभी कलियुग में लोग सोने को नहीं पहचानते; वे लोहे को पहचानते हैं। वह समय आएगा जब सारे संसार के लोगों को त्रिकाल संध्या करनी पड़ेगी, और उसके बिना वे जीवित नहीं रह पाएँगे। यह शास्त्रों में लिखा है। यह मेरा वचन नहीं है; यह भगवान का वचन है। तो जो लोग भगवान के नाम के जप का उपहास करते हैं, जान लीजिए कि वे भगवान के लोग नहीं हैं। उनसे हमारा कोई काम नहीं। लेकिन जब विपत्ति आएगी, तब लोग आएँगे। यदि बचना चाहते हैं, तो भगवान ने मार्ग दिखा दिया है। जो मानना चाहते हैं, वे मानेंगे। जो नहीं मानते, उन्हें मत बताइए। केवल उन्हीं को बताइए जो श्रद्धा और भक्ति के साथ इसकी इच्छा रखते हैं। इसमें आपका भी कल्याण होगा और उनका भी कल्याण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:50 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2833 उनके दो प्रश्न हैं। पहला, क्या भगवान कल्कि की सेना के लोगों को अभी से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए? और दूसरा, आने वाले महाप्रलय का सामना करने के लिए कई दिनों तक भूखा रहना पड़ेगा, तो क्या हमें अभी से चार दिन भूखे रहने का अभ्यास शुरू कर देना चाहिए?

उत्तर: देखिए, भगवान कल्कि की सेना पहले से ही निर्धारित है। वे लोग पहले ही जन्म ले चुके हैं। इस काल में भगवान कल्कि सारे संहार के कार्य करेंगे। कल्कि सेना भक्तों की रक्षा करेगी और धर्म का प्रचार करेगी। युद्ध स्वयं भगवान करेंगे। जहाँ तक छह वर्ष के अकाल में भोजन न मिलने की बात है, अभी अभ्यास भी कर लें तो काम नहीं चलेगा, क्योंकि यह छह वर्षों का मामला है। लिखा है: 'हर गाँव में केवल तीन-चार लोग बचेंगे, और वे पवन आहार करेंगे। उन्हें अन्न नहीं मिलेगा, फिर भी वे मरेंगे नहीं, क्योंकि वे हरि नाम का जप कर रहे होंगे।' वे वायु, श्वास ग्रहण करके और भगवान माधव के नाम का जप करके जीवित रहेंगे। छह वर्ष का अकाल उन्हें बिना किसी हानि के पार हो जाएगा। तो अपना धर्म बढ़ाइए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और भागवत पढ़िए। धर्म की रक्षा और सत्य युग के निर्माण के लिए त्रिकाल संध्या ही एकमात्र तत्व है। इसके अलावा कोई मार्ग नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 20:20 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2834 जब हम अपने नित्य कर्म करते हैं, तो प्रभु उन्हें देखते हैं। तो जब हम पाप करते हैं, तब हम क्यों भूल जाते हैं कि प्रभु हमें देख रहे हैं? अनजाने में हो जाए तो समझ में आता है, लेकिन जानबूझकर क्यों करते हैं? साथ ही, मेरा अनुभव है कि जब से मैंने भोजन करते समय जनार्दन का नाम लेना शुरू किया है, तब से कम भोजन में भी ऐसा लगता है कि मैंने बहुत खा लिया और पेट बिल्कुल भर गया। कृपया इसे समझाइए।

उत्तर: आपकी भावना बहुत स्पष्ट और अच्छी है। हम जो भी कर्म करते हैं, प्रभु उन्हें देखते हैं, चाहे अच्छे हों या बुरे। लेकिन जो व्यक्ति अच्छा या बुरा करता है, वह स्वयं जानता है। जब आपको यह अनुभव होता है कि 'मैंने यह ठीक नहीं किया', तो मानो भगवान ने आपको संकेत दिया। इसी प्रकार भगवान देखते हैं। इसलिए यदि अनजाने में भूल हो जाए, तो मनुस्मृति के नियमों के अनुसार प्रायश्चित कीजिए, पश्चाताप कीजिए और क्षमा माँगिए। अनजाने में गलती हो जाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन जानबूझकर ऐसा करना पाप है। जब भगवान आपको आपकी गलती का बोध कराते हैं, तो इसका अर्थ है कि भगवान ने आपका कर्म देखा और आपको सूचित किया। भोजन के विषय में, भोजन के समय जनार्दन का नाम लेने से भोजन अमृत बन जाता है। आपको पेट भरा हुआ अनुभव होता है, यह बहुत अच्छा प्रभाव है। इस मंत्र की शक्ति भविष्य में और बढ़ेगी। अभी कलियुग के कारण मंत्र का प्रभाव कम है, लेकिन आगे चलकर यह बहुत बढ़ जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:11 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2835 गुरुजी, मैं त्रिकाल संध्या नहीं कर पाता हूँ। मैं शराब नहीं पीता, मांस नहीं खाता, झूठ नहीं बोलता। क्या मेरी गिनती भक्तों में होगी?

उत्तर: देखिए, सदाचारी व्यक्ति के रूप में, हिंदू के रूप में, सनातनी के रूप में, यह हमारा कर्तव्य है कि हम दूसरों को हानि न पहुँचाएँ और सत्य बोलें। आप ऐसा कर रहे हैं, इसलिए आप प्रशंसा के योग्य हैं। लेकिन त्रिकाल संध्या के विषय में, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि सत्य युग एक दिन में स्थापित नहीं होगा। कलियुग के लोगों के लक्षण हैं — भोजन, मनोरंजन और नींद। सत्य युग के लोगों के लक्षण हैं 'ब्रह्म कर्म' — यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान, और गौ माता की सेवा। सत्य युग में सभी ब्रह्म कर्म करेंगे, जिसका अर्थ है त्रिकाल संध्या। इसलिए सत्य युग का कर्म त्रिकाल संध्या से आरंभ होता है। यह पहला कदम है। आगे चलकर और भी अनुष्ठान होंगे। जब ऐसा होगा, तब संसार में कोई विपत्ति या रोग नहीं रहेगा। सत्य युग में जाने के लिए आपको त्रिकाल संध्या करनी ही होगी। यह पहला कदम है। आप सदाचार का पालन करते हैं, इसलिए आप हिंदू हैं, सनातनी हैं। इसके लिए धन्यवाद।

► यह उत्तर सुनें · 26:49 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2836 कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं त्रिकाल संध्या कर सकूँ। मैं कोलकाता में दिहाड़ी मज़दूरी का जीवन जी रहा हूँ और अपने परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पा रहा हूँ। एक वर्ष से मैं आपका प्रवचन सुन रहा हूँ, लेकिन त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहा हूँ। कृपया आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ। संध्या कीजिए, माधव नाम का जप कीजिए, और भगवान आपकी आर्थिक स्थिति में तथा परिवार के भरण-पोषण की आपकी क्षमता में बड़ा परिवर्तन लाएँगे। मैं यह गारंटी के साथ कहता हूँ। आप कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 30:14 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2837 कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए, कल मेरी परीक्षा है। मेरी परीक्षा अच्छी हो।

उत्तर: ठीक है, माधव नाम का जप करके जाइए। सब ठीक होगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:12 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2838 पंडित जी, मैं आगरा से हूँ। मैं झूठ नहीं बोलता, अपनी रोज़ी-रोटी कमाता हूँ, और अपने परिवार का ध्यान रखता हूँ। लेकिन मैं दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या नहीं कर पाता क्योंकि मेरी ड्यूटी सुबह 9:30 से रात 7:30 बजे तक है। मैं पूर्ण शाकाहारी हूँ, प्याज़-लहसुन तक नहीं खाता। तो क्या मैं सत्य युग में प्रवेश करूँगा या नहीं?

उत्तर: बिल्कुल, आप प्रवेश करेंगे। इसीलिए तो आप मुझसे यह चर्चा कर रहे हैं। यह आपका अधिकार है, आप जाने के योग्य हैं, क्योंकि भगवान ने आपको वह सामर्थ्य दी है। देखिए, त्रिकाल संध्या ब्रह्ममुहूर्त में की जाती है (जब तारे दिखाई देते हैं)। तब एक बार कीजिए। फिर सुबह 11:30 से दोपहर 12:30 के बीच, इसमें 5 मिनट लगते हैं, तब कीजिए। फिर शाम को, सूर्यास्त से पहले 5 मिनट कीजिए। यह त्रिकाल संध्या एक ऐसा कवच है जिसे कलि का तत्व भेद नहीं सकता, और यह सुख-शांति लाती है। 24 घंटों में से दिन में 10-15 मिनट देना संभव है। प्रयास कीजिए, और श्रद्धा के साथ यह निश्चित रूप से होगा, और आपको बहुत सी अच्छी चीज़ें प्राप्त होंगी। आप ऋषि या संत के समान बन जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 31:28 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2839 पिताजी, मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर किसी के मन में कोई न कोई संशय है। कोई माधव नाम का जप नहीं कर पा रहा, कोई त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहा, और कोई भागवत कथा नहीं कर पा रहा। तो मैं हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना करता हूँ, कृपया सभी को आशीर्वाद दीजिए ताकि हर एक व्यक्ति पूरी भक्ति के साथ प्रभु का कार्य कर सके। कृपया सभी को आशीर्वाद दीजिए, प्रभु।

उत्तर: ठीक है। आप सही समय पर जागेंगे और त्रिकाल संध्या हो जाएगी। मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ। प्रभु अपनी कृपा दिखाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 33:48 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2840 मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, लेकिन भागवत नहीं पढ़ पाता, गुरुजी। मुझे भागवत पढ़ने का फल कैसे मिलेगा? कृपया इसके लिए कोई नियम बताइए।

उत्तर: देखिए, सोने से पहले पैर धोइए, तीन बार माँ गंगा का नाम लीजिए, और फिर सोने से पहले 10 मिनट भागवत पढ़िए। आपको अच्छी नींद आएगी, और अगला दिन भी अच्छा बीतेगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:40 · 7 मार्च 2025

प्रश्न 2841 (संदर्भ से भावार्थ) मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, फिर भी मेरी आर्थिक स्थिति खराब है। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: आप में से जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और फिर भी आर्थिक स्थिति खराब है, तो देखिए, घर में सभी को सही समय पर त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। अकेले आपके करने से काम नहीं चलेगा। सबको एक ही नाव पर सवार होना होगा, और भगवान उस नाव को पार लगाएँगे। सही समय पर संध्या कीजिए, माधव का नाम लीजिए, और अपना काम कीजिए। मैं आपको गारंटी देता हूँ—सिर्फ़ मैं ही नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों ने अनुभव किया है कि त्रिकाल संध्या से उन्हें नौकरी मिली, रोज़गार मिला, और बीमारियाँ ठीक हुईं। यह भगवान का वचन है। इसमें अपार शक्ति है। इसे सही नियमों के साथ कीजिए। यह भगवान की गारंटी है कि व्यक्ति का जीवन शांति, सुख और आनंद से भर जाएगा। त्रिकाल संध्या से ही सत्य युग आएगा। शास्त्र कभी गलत नहीं होते। इस पर विश्वास कीजिए, और आपको परिणाम मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 36:02 · 7 मार्च 2025

सत्र 155 · प्रश्न 2842–2857

L171: NATO's Future | नाटो (NATO) का भविष्य क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 9 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2842 आत्म-साक्षात्कार (स्वयं को जानने) का क्या अर्थ है?

उत्तर: आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है यह समझना कि हम यहाँ क्यों आए हैं, इस जीवन की धारा किस ओर जा रही है, इसका अंत कहाँ है, और इस विशाल ब्रह्मांड में हमारी स्थिति क्या है। मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बाद व्यक्ति अपनी आर्थिक क्षमता और शक्ति के आधार पर बहुत कुछ सोचता है, परंतु सबसे पहले उसे अपनी स्थिति समझनी चाहिए। जो लोग आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करते हैं, अर्थात् जो भगवान को समझते हैं, भगवान की महिमा जानते हैं, और भगवान के विराट स्वरूप को समझते हैं, वही सही कर्म कर सकते हैं। जो इसे नहीं समझते, वे गलत कर्म करते हैं और अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 03:07 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2843 धर्म क्या है?

उत्तर: धर्म में हमेशा दान और सेवा शामिल होती है। यदि हम अच्छे कर्म करेंगे, तो भगवान हमें देंगे। इस पृथ्वी पर सब कुछ, जिसमें 56 करोड़ प्रकार के जीव, 33 करोड़ देवता, और 52 करोड़ अन्न भंडार शामिल हैं, भगवान के दान से चलता है और उन्हीं के नियंत्रण में है। इसलिए आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है भगवान को पहचानना और अपनी स्थिति को समझना: 'मैं क्या हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मेरा अंत कहाँ है? मेरी स्थिति क्या है? क्या मैं स्वयं की रक्षा कर सकता हूँ?' नहीं। जब आपको यह अनुभव होगा कि भगवान ही आपकी रक्षा करने वाले हैं, तब आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 07:29 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2844 NATO का भविष्य क्या है?

उत्तर: यदि सभी NATO देश एकजुट रहे, तो पृथ्वी पर समय अच्छा नहीं रहेगा। जैसे भगवान ने पवन देव को 49 भागों में बाँट दिया, क्योंकि यदि सभी 49 पवन एक साथ चलते, तो पृथ्वी पर न पहाड़ बचते और न छोटे जीव। मैंने पहले भी कहा है कि NATO में दरार आएगी, विभाजन होगा। आज मैं कहता हूँ कि NATO देश आर्थिक और सामाजिक आवश्यकता के कारण आपस में युद्ध तक करेंगे। NATO का एक हिस्सा अमेरिका के साथ रहेगा, जबकि दूसरा हिस्सा, जिसमें जर्मनी, फ्रांस और जापान शामिल हैं, अधिकांशतः तटस्थ रहेगा। अंतिम क्षणों में वे भारत और रूस के साथ मिलकर विश्व युद्ध में भाग भी लेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 09:21 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2845 तीसरा विश्व युद्ध क्यों होगा?

उत्तर: यह इसलिए होगा क्योंकि जब पृथ्वी पर जनसंख्या बढ़ती है, तो परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। जब पृथ्वी पर लोगों की संख्या बढ़ती है, तो वे अपनी मनमानी करते हैं, जो चाहें वही करते हैं। वे न शास्त्रों का पालन करते हैं, न भगवान की पूजा करते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य महान बनना होता है, और संसाधनों के लिए संघर्ष बढ़ जाता है। इस अत्यधिक जनसंख्या के कारण लोग अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। यही कारण है कि तीसरा विश्व युद्ध होगा। हर कोई अपने देश, अपने लोगों, अपने राज्य का विकास चाहता है, और सभी अपने भविष्य की चिंता करेंगे, जिससे युद्ध होगा।

► यह उत्तर सुनें · 11:04 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2846 'सुकर्म' (अच्छा कर्म) क्या है?

उत्तर: सुकर्म है अपने जीवन में सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का अभ्यास करना। धर्म के चार स्तंभों—सत्य, ईमानदारी, करुणा और दान—के नियमों का पालन कीजिए। ऐसा करने से इस जीवन की धारा अच्छी हो सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 20:15 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2847 Kali Yuga के कारण भक्त बहुत कष्ट झेल रहे हैं। भक्तों के लिए अच्छे दिन कब आएँगे?

उत्तर: वह समय आएगा। मालिका शास्त्र के अनुसार, रात में पश्चिम दिशा में सूर्य उदय होगा। यह असंभव लगता है, परंतु ऐसा होगा। आकाश से बहुत से उल्कापिंड गिरेंगे, और पृथ्वी के जंगलों में आग लगेगी। पूरी जलवायु बदल जाएगी। यूरोप की जलवायु विष के समान विषैली हो जाएगी। आप सबको इस पर विचार करना है।

► यह उत्तर सुनें · 22:23 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2848 क्या कोई ऐसा स्तोत्र या ग्रंथ है जिसके माध्यम से हम भगवान से शीघ्र धर्म स्थापना की प्रार्थना कर सकें?

उत्तर: देखिए, धर्म की स्थापना शीघ्र हो या विलंब से, यह भगवान की इच्छा के अधीन है। हम भगवान पर अपनी इच्छा नहीं थोप सकते। हम बद्ध जीव हैं। बद्ध जीव का कर्तव्य है उस बंधन से मुक्ति पाना। इसलिए बंधन में पड़े व्यक्ति को यह माँग करने का अधिकार नहीं है कि भगवान धर्म की स्थापना करें। हाँ, हम एक बात कह सकते हैं: 'प्रभु, इस पृथ्वी पर अनीति, पाप और अधर्म का नाश हो, गौ माता की रक्षा हो, वेदों की रक्षा हो, कृपा कीजिए।' यह कब और कैसे होगा, यह भगवान पर निर्भर है। जब तक सभी भक्त एकजुट नहीं होते, जब तक उनमें पाँचों सद्गुण नहीं आ जाते, और जब तक वे पूर्ण रूप से सत्यनिष्ठ होकर Satya Yuga के लिए तैयार नहीं हो जाते, तब तक थोड़ा और समय लगेगा। परंतु यह होगा। यह तब होगा जब लोग भयभीत होंगे और मर रहे होंगे, मृत्यु के भय से। वह समय अभी नहीं आया है।

► यह उत्तर सुनें · 24:07 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2849 मोक्ष की परिभाषा क्या है? क्या मोक्ष प्राप्त करने वाले का अस्तित्व समाप्त हो जाता है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। मोक्ष का अर्थ निर्वाण या परम गति प्राप्त करना भी है। जब पृथ्वी पर कोई भी जीव जन्म लेता है, जिस दिन से उसका बीज बनता है, उसी दिन से उसका एक ही लक्ष्य होता है—मोक्ष प्राप्त करना, चाहे वह पौधा हो, पशु हो, या मनुष्य। परंतु पौधों और पशुओं को इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य जन्म तक पहुँचना पड़ता है, इसीलिए 84 लाख योनियों का विधान है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है मनुष्य जीवन। मनुष्य जीवन देवता बनने से ठीक पहले का जीवन है। जैसे ध्रुव, प्रह्लाद और पांडव—ये सभी मनुष्य से देवता बने। मोक्ष प्राप्त करना देवता बनने से भी बड़ा है, क्योंकि देवता स्वर्ग में निवास करते हैं, जबकि मोक्ष प्राप्त करने वाले वैकुंठ में निवास करते हैं, जहाँ कोई शत्रु नहीं होता, केवल मित्र होते हैं। वह ऐसा स्थान है जहाँ न सूर्य है, न चंद्रमा, फिर भी वह सदैव धर्म और भगवान की दिव्य शक्ति से प्रकाशित रहता है। वहाँ अंधकार नहीं है। मोक्ष प्राप्त होने पर व्यक्ति को एक नया जीवन मिलता है, जिसमें उसे भगवान विष्णु के स्वरूप के समान चार भुजाओं वाला शरीर प्राप्त होता है। वे भगवान के शरीर में विलीन नहीं होते, बल्कि उन्हें एक स्वतंत्र, दिव्य शरीर मिलता है जिसके साथ वे अनंत काल तक वैकुंठ में आनंद से निवास करते हैं। उनकी मृत्यु नहीं होती, ब्रह्म प्रलय के समय भी नहीं। उनका न मरण होता है, न जन्म, और वे वैकुंठ में परम आनंद का अनुभव करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 26:10 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2850 क्या Trisandhya (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) के समय हमारे लिए शुद्धता बनाए रखना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, यह स्थान, समय और व्यक्ति पर निर्भर करता है। यदि आप घर पर हैं, तो आप पैर धोकर और माँ गंगा का नाम तीन बार लेकर Trisandhya कर सकते हैं। यदि आप बाहर हैं, ड्यूटी पर हैं, या यात्रा कर रहे हैं, तो शुद्धता आवश्यक नहीं है। आप कहीं भी बैठकर पाँच मिनट अपना भजन कर सकते हैं, जैसे दुर्गा माधव स्तुति, 16 नाम, दशावतार, और Madhava नाम। रात को सोने से पहले भागवत का एक अध्याय पढ़िए। यदि समय न हो, तो सोने से पहले कुछ समय निकालकर इसे पढ़िए। तो, घर पर Trisandhya के लिए कुछ शुद्धता आवश्यक है, जैसे पैर धोना। अन्य समय में यह आवश्यक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 29:38 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2851 कोई भी अच्छा कार्य करते समय इतनी सारी बाधाएँ क्यों आती हैं?

उत्तर: देखिए, बाधाएँ अच्छे कर्म करने से नहीं आतीं। कभी-कभी बाधाएँ इसलिए आती हैं क्योंकि हमारे पिछले बुरे कर्म हमें अच्छे कार्य करने से रोकने की कोशिश करते हैं। जब कोई अत्यंत पापी व्यक्ति कोई धर्म का कार्य करने का प्रयास करता है, तो उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उसने जो पाप किए हैं, वे उसके धर्म-कार्य को पूरा नहीं होने देते। लेकिन जो पुण्यात्मा लोग मन, वचन और शरीर से भगवान के शरणागत हो चुके हैं, उनके जीवन में कोई बाधा नहीं आएगी। उनके लिए बाधा कौन उत्पन्न कर सकता है? उनका शरीर पवित्र है, और भगवान की कृपा साक्षात् उनके साथ है। और जिन्हें बाधाओं का सामना करना पड़ता है, उन्हीं बाधाओं के माध्यम से उनके कर्मों के दोष दूर हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 30:50 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2852 हम आपके वीडियो का प्रचार करते हैं और भविष्य मालिका की बातें साझा करते हैं। बहुत से लोग गाली-गलौज वाले कमेंट लिखते हैं, आपके विरुद्ध बोलते हैं, और जान-बूझकर एक वैष्णव की निंदा करते हैं। कभी-कभी अपने अहंकार में वे सनातनियों का भी उपहास करते हैं। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: देखिए, निंदा को आशीर्वाद समझिए। यदि आप इसका प्रचार करते हैं और लोग आपकी निंदा करते हैं, तो मैं कहूँगा कि वे आपको आशीर्वाद दे रहे हैं। आशीर्वाद क्या है? उनका पुण्य कर्म भक्तों को स्थानांतरित हो जाएगा। यदि कोई किसी भक्त की निंदा करता है, और यदि निंदा करने वाले के पास कुछ पुण्य कर्म है, तो वह भक्त को स्थानांतरित हो जाएगा। जो लोग आपकी निंदा करते हैं, वे एक तरह से आपको आशीर्वाद ही दे रहे हैं। कोई भी दूसरे की निंदा स्वेच्छा से नहीं करता। यदि किसी को निंदा करने में आनंद आता है, तो इससे केवल उसी की हानि होती है, जबकि जिसकी निंदा होती है, उसका सदैव लाभ ही होता है।

► यह उत्तर सुनें · 32:03 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2853 मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, क्या इस समय श्री महालक्ष्मी और वैष्णो देवी एक ही शरीर में एक साथ प्रकट होंगी? दूसरा, जो भक्त त्रिसंध्या करते हैं, माधव नाम का जप करते हैं, और भागवत पढ़ते हैं, उन्हें मृत्यु के बाद कौन-सी गति प्राप्त होगी?

उत्तर: देखिए, इस समय जो महालक्ष्मी हैं, वही वैष्णो देवी भी हैं। वे एक ही शरीर में भगवान कल्कि की पत्नी बनेंगी। वे माता महालक्ष्मी हैं और माता वैष्णो देवी भी हैं, लेकिन उनका नाम महालक्ष्मी होगा। क्योंकि इस समय भगवान नारायण आ रहे हैं, इसलिए माता का नाम महालक्ष्मी होगा, और उनमें माता वैष्णो देवी की शक्ति भी है। दूसरी बात, आप में से जो लोग त्रिसंध्या करते हैं, मैं आपको गारंटी देता हूँ। सुनिए। जो त्रिसंध्या करते हैं, उन्हें मृत्यु का भय नहीं होगा। यदि कोई समस्या या विपत्ति आएगी, तो वे भयभीत नहीं होंगे। लेकिन जो त्रिसंध्या नहीं करते, वे मृत्यु से डरते हैं। बहुत से लोग जिन्होंने त्रिसंध्या शुरू की है, वे स्वयं मुझे बताते हैं कि पहले वे मृत्यु से डरते थे, लेकिन अब उन्हें कोई भय नहीं है क्योंकि वे सिद्ध देवताओं और शुद्ध ऋषियों जैसे हो गए हैं। जो त्रिसंध्या करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होगी। यह कई शास्त्रों में लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 33:25 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2854 पंडित जी, मैं रात में जागा और वहाँ बहुत अच्छी सुगंध थी। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: जब रात में सुगंध आती है, तो इसे भगवान की उपस्थिति समझिए, कि भगवान प्रकट हो रहे हैं। इसीलिए आपको यह दिव्य सुगंध मिल रही है। यह तब आती है जब भगवान आने वाले होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 36:01 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2855 मैं जैसलमेर से मोनिका हूँ। मैं यह पूछ रही थी कि भक्तों के अच्छे दिन कब आएँगे? अभी भक्त कष्ट झेल रहे हैं, तो वह खुशी उनकी आँखों में कब आएगी?

उत्तर: देखिए, मालिका शास्त्र में लिखा है कि भक्तों को बहुत कष्ट झेलने पड़ेंगे; उन्हें अन्न-जल नहीं मिलेगा। भक्तों को बहुत दुःख का सामना करना पड़ेगा; भयंकर कष्ट और विपत्तियाँ आएँगी, लेकिन अंततः भक्तों का कुछ नहीं होगा। वे आएँगी और चली जाएँगी, लेकिन कुछ नहीं होगा। और उसके बाद भक्तों को बहुत आनंद भी मिलेगा। भगवान कल्कि उन्हें चारों युगों में झेले गए दुःखों की भरपाई के लिए सारी खुशियाँ देंगे और इस सत्य युग में सबका उद्धार करेंगे। यदि भक्त कष्ट न सहें, तो धर्म कैसे प्रकट होगा? मैं जानता हूँ कि मेरी कितनी निंदा होती है और मेरे साथ क्या-क्या किया गया है, और आप सब भी यह जानते हैं। फिर भी मैंने धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा, क्योंकि इसमें मेरा कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं है। लाभ केवल इतना है कि यदि मैं इस मानव जीवन को सार्थक नहीं बनाऊँ, तो मुझे विश्वास नहीं कि मुझे दूसरा अवसर मिलेगा। इसलिए, अब जब मेरे पास समय है, तो मुझे इसका पूरा उपयोग करना चाहिए। आपको भी करना चाहिए। यदि आपके जीवन में त्रिसंध्या मिल गई है, तो जान लीजिए कि आपको मुक्ति का मार्ग मिल गया है। बस कुछ दिन कीजिए। सत्य युग आएगा, और उसके साथ आपको वैकुंठ भी प्राप्त होगा।

► यह उत्तर सुनें · 36:40 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2856 कल रात मैंने सपना देखा कि मेरे गृहनगर में लगभग तीन दिनों तक बहुत भारी वर्षा हो रही है। मैं सोच रहा था कि यह सब तो भविष्य मालिका में लिखा हुआ है। फिर मैं अपने परिवार के साथ इधर-उधर भाग रहा था, कभी ट्रेन से, कभी फ्लाइट से। पंडित जी, यह किस बात का संकेत है?

उत्तर: यह बहुत अच्छा संकेत है। भविष्य में लोग मौत से डरे हुए होंगे। देखिए, एक जगह प्रलय होगी; कोई कहेगा कि वे फ्लाइट से जाएँगे, कोई बस से, कोई सड़क मार्ग से जाएगा, वे इधर-उधर जाएँगे। लेकिन वे जहाँ भी जाएँगे, वही बात होगी। उदाहरण के लिए, यदि दिल्ली के लोगों पर कोई विपत्ति आएगी, तो वे उत्तर प्रदेश जाएँगे। फिर उत्तर प्रदेश पर विपत्ति आएगी, और वे कहीं और जाएँगे, और वहाँ भी वही होगा। भविष्य में ऐसी भागदौड़ होगी। यह समय के साथ होगा। भक्तों को आने वाली बातों के ये दृश्य देखने को मिलते हैं। यह भी शास्त्रों में लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 39:38 · 9 मार्च 2025

प्रश्न 2857 हमें जो बीमारियाँ होती हैं, क्या वे हमारे 'प्रारब्ध' (पूर्व) कर्म के कारण होती हैं?

उत्तर: देखिए, सारी बीमारियाँ प्रारब्ध हैं। प्रारब्ध के बिना कोई बीमार नहीं पड़ता। पूर्व जन्म में किए गए कर्म बीमारी के रूप में आते हैं। यह शरीर को कष्ट देती है, और इस प्रकार उस कर्म का फल चुक जाता है। बीमारी से स्वयं की रक्षा के लिए त्रिसंध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और माधव नाम का जप कीजिए। एक दिन, दो दिन या छह महीने त्रिसंध्या करने से आप ठीक नहीं हो सकते। आपको लगातार तीन वर्षों तक सही समय पर यह करना होगा और अपने वचन में सत्यवादी होना होगा। जो सत्य, शांति, दया और क्षमा का अभ्यास करता है, उस पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा। वैसे बन जाइए।

► यह उत्तर सुनें · 41:51 · 9 मार्च 2025

सत्र 156 · प्रश्न 2858–2873

L172: पश्चिम दिशा में सूर्य उदित होंगे वो भी मध्य रात्रि में | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 13 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2858 क्या भविष्य मालिका में लिखा है कि सूर्य पश्चिम से उदय होगा?

उत्तर: हाँ, भविष्य मालिका शास्त्र में लिखा है कि सूर्य पश्चिम से उदय होगा।

► यह उत्तर सुनें · 01:43 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2859 क्या यह भी लिखा है कि यह कब होगा?

उत्तर: हाँ, इसके बारे में भी लिखा हुआ है।

► यह उत्तर सुनें · 02:04 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2860 और जब यह होगा, तो क्या यह मानव सभ्यता के कल्याण के लिए होगा या उसके विनाश के लिए? क्या यह भी लिखा है?

उत्तर: यह मानव सभ्यता के कल्याण के लिए होगा।

► यह उत्तर सुनें · 02:17 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2861 तो यह [पश्चिम में] उदय क्यों होगा?

उत्तर: देखिए, यदि सूर्य देव पश्चिम में उदय नहीं होंगे, तो समुद्र का जल मीठा कैसे होगा, और पृथ्वी पर नए युग की स्थापना कैसे होगी? आप देखिए, वैज्ञानिक कहते हैं कि सूर्य में बार-बार विस्फोट हो रहे हैं, सौर सुनामी आ रही है, और नक्षत्र टूट रहे हैं। सूर्य में जो हो रहा है, उसके कारण पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणें पृथ्वी तक पहुँच रही हैं, जो विनाश का कारण बनेंगी। यदि यह इसी तरह बढ़ता रहा, तो मानव सभ्यता कैसे बचेगी? इसलिए भगवान कल्कि, जो महाविष्णु हैं, एक नया सूर्य और एक नया चंद्रमा रचेंगे। इसीलिए यह बहुत बड़ी और अच्छी बात है। सूर्य पश्चिम में उदय होगा, और उससे पहले आप 13 दिनों में छह ऋतुएँ देखेंगे। जब आप यह देखेंगे, तब सूर्य देव पश्चिम में उदय होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 10:56 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2862 समय के इस चक्र और समय कैसे चलता है, इस बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: वर्तमान में सूर्य देव किस समय उदय होते हैं? प्रभात में। परंतु भविष्य में सूर्य ब्राह्म मुहूर्त में उदय होगा। क्योंकि सत्य युग के लिए ब्राह्म मुहूर्त का समय प्रातः 3:00 बजे से 3:45 बजे के बीच है; सूर्य देव इसी समय उदय होंगे। अभी सूर्य भोर के बाद उदय होता है, परंतु तब सूर्य उस समय उदय होगा जब आकाश में तारे दिखाई देंगे। जैसे मैं मैत्र काल संध्या के लिए कहता हूँ कि जब आकाश में तारे दिखाई दें, तब ब्राह्म मुहूर्त की त्रिकाल संध्या करें। यह बहुत अच्छी बात है।

► यह उत्तर सुनें · 12:11 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2863 जय जगन्नाथ, पंडित जी। लखनऊ से रचना तिवारी एक प्रश्न पूछ रही हैं। मैं त्रिकाल संध्या करती हूँ, फिर भी मुझे बहुत सपने आते हैं, और उनमें एक स्त्री मुझे मार डालने की धमकी देती है।

उत्तर: देखिए माता जी, मैं कहना चाहता हूँ कि योगिनी माताओं ने अब मनुष्यों को कष्ट देने का अपना कार्य आरंभ कर दिया है। जो आप देखती हैं, वह एक योगिनी माता हैं। आपको पूर्ण रूप से त्रिकाल संध्या में समर्पित होकर माधव की शरण लेनी चाहिए। भागवत पढ़िए, निरंतर माधव नाम का जप कीजिए, और रात्रि में सोने से पहले एक बार त्रिकाल संध्या कीजिए। जो सपने आपको आ रहे हैं, वे भी चले जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:40 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2864 यह चंडीगढ़ से हिमांशु शर्मा का प्रश्न है। क्या संघ (समुदाय) से जुड़ना आवश्यक है, या केवल त्रिकाल संध्या करके, माधव नाम का जप करके और श्रीमद्भागवत पढ़कर भी सत्य युग में प्रवेश किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए, हर युग में धर्म की स्थापना के लिए एक संघ (समुदाय) बनता है। कैसे बना? सत्य युग में वैष्णव संघ बना, वैष्णव संप्रदाय। त्रेता युग में वानर संप्रदाय। द्वापर युग में गोपी-गोपाल संप्रदाय, यदुवंशी संप्रदाय। कलियुग में भक्तों का संप्रदाय। और जिस युग की ओर हम बढ़ रहे हैं, अनंत युग, वह माधव संप्रदाय या सुधर्म महा संघ है। इसलिए युग के अनुसार संप्रदाय बनते हैं। जो भक्त हैं, जो उस युग के परिवर्तन के साथ जाने योग्य हैं, उन्हें संघ के साथ रहना चाहिए, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, और नियमों का पालन भी करना चाहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:34 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2865 पंडित जी, तीसरा प्रश्न राजकोट, गुजरात से यतीन्द्र बंसल का है। क्या मालिका में हर वर्ष के हर महीने में होने वाली घटनाओं के बारे में लिखा है? जैसे मार्च में क्या होना है, अप्रैल में क्या, और आगे क्या होगा?

उत्तर: देखिए, भक्ति का सार प्रकट नहीं किया जाता। हाँ, औसतन मैं कुछ बातें कह सकता हूँ। पृथ्वी एक महीने में नहीं बनी, इसे 5000 वर्ष हो गए हैं। एक वर्ष में 12 महीने होते हैं, 100 वर्षों में 12,000 महीने। यह संसार 5000-6000 वर्षों से है। इसलिए हर ऋतु में आपको कुछ परिवर्तन दिखाई देंगे, और इन परिवर्तनों से आपको एहसास होगा कि युग बदल रहा है। आप इसे अमेरिका, यूरोप, एशिया, रूस और भारत में, हर राज्य में देखेंगे। हर महीने कुछ न कुछ होता ही है, है ना? जो कुछ होता है, वह होने के लिए लिखा गया था। और जिन मुख्य घटनाओं का मैंने आज उल्लेख किया—सूर्य का पश्चिम में उदय होना, धर्म की स्थापना, तीसरा विश्व युद्ध, रोग, और महामारियाँ फिर से आएँगी—यह सब लिखा है। भगवान यह करेंगे; हमारा यह कहना उचित नहीं है। अगर हम इसकी बात करें, तो यह आजकल के उन परंपरावादियों जैसा हो जाएगा जो दावा करते हैं कि 'हम जो कहते हैं वही होता है।' हम उस अहंकार में नहीं हैं। हम नहीं कहेंगे, यद्यपि भगवान हमें इन बातों की सूचना देते हैं। परंतु मैं इसकी चर्चा नहीं करूँगा। आप स्वयं देखिए कि हर एक दिन कितनी ब्रेकिंग न्यूज़ आती है। यही प्रमाण है। मैं और क्या कहूँ? और एक बात बता दूँ, पाँच वर्ष पहले भारत के सभी बड़े परंपरागत लोग कलियुग के अंत को स्वीकार नहीं करते थे। उनमें से किसी ने भी विनाश और युग परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया था। आज वे अपने मुँह से यह कह रहे हैं। यही प्रतिदिन का प्रमाण है। इसे हर दिन देखिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:05 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2866 पंडित जी, चौथा प्रश्न दिल्ली से आनंदिता सिंह का है। यदि हत्या करना पाप है, तो क्या सेना और पुलिस के जवानों को यह पाप लगता है? यदि कोई सैनिक या कोई साधारण व्यक्ति अपने कर्तव्य (वर्ण) के कारण किसी निर्दोष की रक्षा के लिए हत्या करता है, तो क्या उसका पाप अलग होगा?

उत्तर: देखिए, इस विषय में भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में अर्जुन से कहा था कि यदि कोई सैनिक अपने देश के लिए, अपने राष्ट्र के लिए किसी का वध करता है, तो उसे पाप नहीं लगता। परंतु यदि वही सैनिक अपने स्वार्थ के लिए या अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए किसी का वध करता है, तो उसे पाप अवश्य लगता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:39 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2867 पंडित जी, पाँचवाँ प्रश्न जयपुर, राजस्थान से अमृता सिंह राजावत का है। श्रीमद्भागवत महापुराण पूर्ण करने के बाद, उसे फिर से आरंभ करने से पहले क्या एक छोटा हवन या कोई अन्य धार्मिक कार्य करना आवश्यक है? यदि हाँ, तो विधि क्या है?

उत्तर: देखिए, यह बहुत अच्छा प्रश्न है। जैसा कि मैं आज समझा रहा था, मैंने आपके लिए त्रिकाल संध्या को बहुत सरल बना दिया है। भविष्य में त्रिकाल संध्या बहुत जटिल हो जाएगी। मैं संक्षेप में बताता हूँ कि वह कैसी होगी: ब्राह्म मुहूर्त में स्नान करना होगा, हवन के लिए बैठना होगा, और त्रिकाल संध्या करनी होगी—दोनों होंगे। मध्याह्न में स्नान करके विधि-विधान के अनुसार त्रिकाल संध्या करनी होगी। संध्या के समय स्नान करके सूर्य देव को अर्घ्य (जल अर्पण) देना होगा और त्रिकाल संध्या करनी होगी। प्रातःकाल भी सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाएगा। और भागवत महापुराण ब्राह्म मुहूर्त से लेकर रात्रि 12 बजे तक कभी भी पढ़ा जा सकता है। तो यह जटिल त्रिकाल संध्या अभी के लिए नहीं है; युग परिवर्तन के साथ मैं आपको इसके बारे में अवश्य बताऊँगा। अभी मैंने इसे सरल कर दिया है ताकि लोग पहले इस मार्ग में प्रवेश करें, बच जाएँ, और आनंद में रहें। हाँ, भागवत से पहले हवन के विषय में, इसे करना आनंददायक है। इसे प्रतिदिन करना आनंददायक है। और जिस दिन भागवत का पाठ संपन्न होता है, उस दिन जो चाहे हवन कर सकता है। गाय को भोजन भी कराया जा सकता है और भगवान के महामंत्र, माधव नाम का जप किया जा सकता है। यह बहुत आनंददायक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:29 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2868 पंडित जी, छठा प्रश्न कल्याणी, पश्चिम बंगाल से रामेश्वरी माँ का है। मैं माधव नाम का जप कर रही हूँ और त्रिकाल संध्या कर रही हूँ, परंतु मुझे स्वामी नारायण या भगवान विष्णु का कोई सपना नहीं दिखता। क्या उन्होंने मुझे स्वीकार नहीं किया, या उन्होंने मुझे त्याग दिया है?

उत्तर: वे कितने दिनों से त्रिकाल संध्या कर रही हैं? और वे किस स्वामीनारायण की बात कर रही हैं? यह मुझे स्पष्ट कीजिए। यहाँ पर्याप्त जानकारी नहीं है। इसे स्पष्ट करने के लिए: पहला, कौन से स्वामीनारायण? दूसरा, वे कितने दिनों से त्रिकाल संध्या कर रही हैं? उसके बाद मैं इस पर विचार करूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 31:34 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2869 सातवाँ प्रश्न पटना, बिहार से गौरव का है। भविष्य मालिका में लिखा है कि दिल्ली के राजा के शासन के 13वें वर्ष में हीराकुंड बाँध टूटेगा। मोदी जी का 13वाँ वर्ष 2026 में आरंभ होगा। इसके आधार पर, क्या हम यह मान सकते हैं कि 2026 वही वर्ष है जब हीराकुंड बाँध किसी चीनी मिसाइल द्वारा तोड़ा जाएगा?

उत्तर: देखिए, यह एक महत्वपूर्ण और बुद्धिमानी की बात है। परंतु हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री के विषय में, उनके और उनके समय के बारे में भविष्य मालिका में लिखा है कि पृथ्वी पर धर्म की स्थापना होगी। जगन्नाथ क्षेत्र के राजा और ओडिशा के अंतिम मुख्यमंत्री के बारे में भी लिखा है। यह सब लिखा है। परंतु यह विषय एक बड़ा रहस्य है, और सबके सामने इसकी चर्चा करना उचित नहीं है। परंतु सत्य यह है कि एक निश्चित स्थिति है जो भविष्य में होने के लिए लिखी गई है। देखिए, हीराकुंड टूटे या बना रहे, या भगवान इसकी रक्षा करें, यह हमारी चिंता का विषय नहीं है। हमारी चिंता केवल एक बात से है: हे मनुष्य, तुम्हें बदलना होगा। त्रिकाल संध्या करो, भागवत पढ़ो, और सत्य युग का निर्माण करो। नए युग के साथ नई सृष्टि भी होगी, और कलियुग की संरचना नहीं रहेगी, यह हम जानते हैं। और जो लिखा है वह रहस्य की बात है। लोग अपनी टीआरपी बढ़ाने और लोगों को डराने के लिए इन बातों की चर्चा करते हैं। परंतु मालिका ग्रंथ में जो लिखा है, जो आपका प्रश्न है, वह एक दिन अवश्य सत्य होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:21 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2870 आठवाँ प्रश्न सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश से सर्वेन्द्र मिश्रा का है। मुझे और मेरी माँ दोनों को सपने आते हैं, परंतु हमें वे याद नहीं रहते। जागने के बाद बस एक अनुभूति रहती है। उनका दूसरा प्रश्न है, यदि एक परिवार से एक से अधिक व्यक्ति बचते हैं, तो क्या हम आने वाले युग में साथ रहेंगे? क्या हम एक-दूसरे को याद रखेंगे या भूल जाएँगे?

उत्तर: पहला प्रश्न: आपको जो सपने आते हैं वे याद नहीं रहते। इसका अर्थ है कि हम अभी पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं हुए हैं। देखिए, एक जाग्रत अवस्था होती है जब हम दिन में बात करते हैं, और एक निद्रा अवस्था। परंतु हमारी शाश्वत शक्ति तब भी जागृत रहती है। यह कब होता है? जब हमारे शरीर में धर्म और पवित्र शक्ति और अधिक बढ़ती है, तब सभी काल, जाग्रत हों या निद्रा, हमारे लिए एक हो जाएँगे। इसे प्राप्त करने के लिए, ताकि आपको देखे हुए सपने याद रहें, सोने से पहले माधव नाम का 108 बार जप कीजिए। सपना आपके मन में रहेगा। दूसरा, यह कि परिवार से एक व्यक्ति बचेगा या नहीं: यदि एक परिवार में 10 लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, तो 10 लोग बचेंगे। यदि किसी परिवार में कोई भी नहीं करता, तो उनके बारे में मेरा कोई मत नहीं है। यदि किसी परिवार में एक या दो लोग करते हैं, तो उन्हें भगवान की सुरक्षा प्राप्त है। तो, वे सभी जो त्रिकाल संध्या करते हैं और धर्म का पालन करते हैं, वही बचेंगे। फिर, परिवर्तन के साथ, उनका मन, भाव, पिछला जीवन, और काम करने के पुराने ढंग भूल जाएँगे, और वे सच्चे मनुष्य बन जाएँगे, ऋषि-मुनियों और संतों के समान। उनके मन से सारे विचार भूल जाएँगे; कुछ भी शेष नहीं रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:20 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2871 यह आखिरी प्रश्न दिल्ली से हेमा रावत जी का है। जय श्री माधव, पंडित जी। मेरा प्रश्न यह है कि जब परिवार में किसी का देहांत हो जाता है, तो हम एक साल तक तीर्थयात्रा पर नहीं जाते। क्या यह शास्त्रों में लिखा है? मेरी सास का अक्टूबर में देहांत हुआ था और हमने 15 दिन का कार्यक्रम किया था। तब से मैंने श्रीमद्भागवत नहीं पढ़ी है। क्या मैं अब पढ़ सकती हूँ? और गाँव में हमारा घर नहीं है, तो क्या हमें अब घर बनवाना चाहिए? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: पहली बात, यदि परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है, तो उनका 'शल्य विसर्जन', अर्थात उनकी अस्थियों का विसर्जन, गंगा, प्रयाग या वैतरणी नदी में होना चाहिए। यह एक वर्ष बीतने से पहले कर लेना चाहिए। जो लोग एक वर्ष के बाद करते हैं, वे ठीक नहीं करते; इससे उन्हें दुख और दुर्भाग्य मिलता है। इसलिए यदि पिता, माता या परिवार में कोई भी गुजर जाए, तो जितनी जल्दी हो सके, दो-तीन महीने के बाद भी, गंगा स्नान करके उनकी अस्थियों का विसर्जन कर देना चाहिए। उसके बाद आप सभी तीर्थयात्राएँ कर सकते हैं, व्रत रख सकते हैं और पूजा-पाठ कर सकते हैं। लेकिन विवाह जैसे मांगलिक कार्य एक वर्ष के बाद ही होने चाहिए। गृह निर्माण भी एक वर्ष के बाद ही होना चाहिए। लेकिन भागवत का पाठ मृत्यु के बाद बारहवें दिन से भी किया जा सकता है। कोई दिक्कत नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:32 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2872 मेरा प्रश्न यह है कि भगवान हमारे लिए इतना कुछ करते हैं। भगवान के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? कृपया इस बारे में थोड़ा बताइए।

उत्तर: देखिए, 'भगवान के प्रति हमारा कर्तव्य' इस भाव की भाषा को मैं थोड़ा बदलना चाहता हूँ। मनुष्य जीवन का कर्तव्य क्या है? भगवान हमारे पिता हैं; वे हमें सब कुछ देते हैं। हमारे पास कृतज्ञता में देने के लिए कुछ नहीं है। बस एक ही बात है: अपने प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? मनुष्य का अपने प्रति पहला कर्तव्य है पुण्य कर्म करना। दूसरा कर्तव्य है सत्य बोलना। और तीसरा कर्तव्य है परिश्रम करके जीविका कमाना। जो मनुष्य ये तीन काम करता है, वही सच्चा मनुष्य है, और यह मनुष्य जीवन सार्थक हो जाता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:03 · 13 मार्च 2025

प्रश्न 2873 आज पहला दिन है जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ। पंडित जी, आप कौन हैं? आप मुझे कोई साधारण व्यक्ति नहीं लगते। कृपया इसका उत्तर दीजिए। अगर आप सबके सामने उत्तर नहीं दे सकते तो कोई बात नहीं, लेकिन यह मेरे हृदय का प्रश्न था। और दूसरा, मीन-शनि के गोचर के दौरान क्या होगा? कृपया उस पर मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, आपने मेरे बारे में जो प्रश्न पूछा, मेरा जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ है। मेरा नाम पंडित काशीनाथ मिश्रा है और मैं धर्म प्रचार का कार्य कर रहा हूँ। भगवान के खाते में यही मेरा कर्तव्य है। मेरे बारे में बस इतना ही है। और आपका दूसरा प्रश्न, मीन-शनि की युति के दौरान क्या होगा? यह जो मीन-शनि का गोचर हो रहा है, जिसमें नौ ग्रह और दो अन्य तत्व, शनि के गुलिक और मांदी, की भी पृथ्वी पर बाधक दृष्टि है। इस दौरान, मोटे तौर पर कहें तो, बृहस्पति बहुत शक्तिशाली हो रहे हैं और शनि उनका साथ दे रहे हैं। मंगल पृथ्वी के लिए कुछ कष्टकारी है, और यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटो की पृथ्वी पर बाधक दृष्टि है। इसके कारण पृथ्वी पर बाढ़, अग्नि प्रलय, भूमि आपदा, परमाणु युद्ध और भूकंप जैसी परिस्थितियाँ आएँगी। सरकार और प्रशासनिक व्यवस्था धर्म की ओर बढ़ेगी, अर्थात यह एक आध्यात्मिक शासन व्यवस्था में परिवर्तित हो जाएगी। इसमें 10 वर्ष लगेंगे, कुछ दिन नहीं, 8-10 वर्ष लगेंगे। और मीन-शनि के गोचर के दौरान धर्म का उदय होगा। इसका अर्थ है कि जो लोग धर्म से जीते हैं, उनकी आयु बढ़ेगी, उनका मनोबल बढ़ेगा, और उन्हें भगवान की कृपा तथा उनका सान्निध्य भी प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:56 · 13 मार्च 2025

सत्र 157 · प्रश्न 2874–2878

L173: WW3 | तीसरे विश्व युद्ध का परिणाम क्या होगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 17 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2874 आपने सात दिन की श्रीमद्भागवत कथा की विधि का उल्लेख किया था। इसकी संपूर्ण प्रक्रिया, नियम और इसे आरंभ करने का शुभ समय क्या है?

उत्तर: देखिए, संसार का सबसे शुभ और पवित्र ग्रंथ वही है जो तीनों प्रकार के तापों का नाश करता है, जिससे मनुष्य को दुख चक्र से मुक्ति मिलती है। 'तापत्रय विनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नमः' (तीनों तापों का नाश करने वाले श्रीकृष्ण को हम नमन करते हैं)। यह सदैव एक शुभ ग्रंथ है। यदि कोई अपने घर पर सात दिन की भागवत कथा करना चाहता है, तो मैं यह सलाह देता हूँ: परिवार के सभी सदस्यों को इकट्ठा करें और इस ग्रंथ का पाठ सात दिनों में पूरा करें, या तो सूर्योदय से सूर्यास्त तक, या 'अहोरात्र' (दिन-रात), अर्थात एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक। यदि आपके परिवार के सदस्य कम हैं, तो आप माधव परिवार के उन लोगों को भी बुला सकते हैं जो भागवत पढ़ते हैं। जैसे, बारह स्कंध होते हैं। आप एक व्यक्ति को एक स्कंध दे सकते हैं, या स्कंधों को उनमें बाँट सकते हैं—जैसे दो, डेढ़, आधा—ताकि साथ बैठकर सात दिनों में भागवत का संपूर्ण पाठ पूरा हो सके। इसके लिए आपको 'कलश स्थापना' करनी होगी और भगवान गणपति का आवाहन करना होगा। जिस दिन आप भागवत कथा आरंभ करें, गणपति के आवाहन के बाद आपको गाय को भोजन कराना होगा—उसे रोटी और जो भी फल आप दे सकें, दीजिए। यह सात दिनों तक प्रतिदिन करना चाहिए। भागवत कथा के इन सात दिनों में घर में कोई भी पलंग पर न सोए; चटाई पर सोएँ, गद्दे पर नहीं। सादा जीवन रखना अनिवार्य है। पति-पत्नी अलग रहें। हँसी-ठिठोली न हो। इस अवधि में घर में ऊँची आवाज़ में बात, क्रोध या वाद-विवाद न हो। यदि आप इस प्रकार सात दिन दिन-रात भागवत का पाठ करते हैं, तो मेरे मत में आपके पितरों के साथ-साथ आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:50 · 17 मार्च 2025

प्रश्न 2875 हम इस समय इसी सोसाइटी में रह रहे हैं और हमें एक रीसेल फ्लैट पसंद आया है। हमारा वर्तमान फ्लैट A204 है, जबकि नया फ्लैट 1337 है। क्या यह फ्लैट खरीदना उचित होगा? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, 1337... 13... 37... देखिए, कुंभ भी 13 को शुरू हुआ था। तो यह 1337, 13, 37 एक धर्मयुक्त अंक है। अच्छा रहेगा, कोई हानि नहीं है। आप वहाँ सुखपूर्वक रह सकते हैं। लेकिन एक बात कहूँ... आजकल लोग जो कर रहे हैं, उस पर अगर मैं बोलूँगा तो उनके व्यापार पर असर पड़ेगा, इसलिए उस पर अलग से चर्चा करूँगा। लेकिन वह घर लेने में कुछ भी अशुभ नहीं है; यह अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 32:46 · 17 मार्च 2025

प्रश्न 2876 हम अपने दैनिक जीवन में जितने लोगों की मदद कर सकते हैं, करने की कोशिश करते हैं, और करते भी हैं। लेकिन जब हमें मदद की ज़रूरत होती है, तो लगभग 99% लोग हमारी मदद नहीं करते। ऐसा क्यों होता है? (प्रश्नकर्ता आगे कहते हैं कि जब अंत तक कोई मदद नहीं करता, तब भगवान किसी न किसी माध्यम से मदद करते हैं।)

उत्तर: देखिए, यह कलियुग का काल है। इस युग में धर्म का प्रकाश मंद है और उसका प्रभाव भी घट रहा है। इसीलिए ये बातें प्रतिबिंबित होती हैं। लेकिन भविष्य में एक समय ऐसा आएगा जब हर काम में सब मदद करेंगे। जैसे, यदि हमारे घर में अनाज है और दूसरों के पास नहीं है, तो सब कहेंगे, 'इतना अनाज है, चलो सब गाँव मिलकर खाते हैं।' ऐसा समय भी आएगा। तो समय परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है, और इसमें थोड़ा वक्त लगेगा। कलियुग के कारण... देखिए श्रीमद्महाभारत, श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता, नारद पुराण, सभी पुराण—इन सबने त्रिकाल संध्या की महिमा लिखी है, जिसका अब तक प्रचार नहीं हो रहा था। मैं विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट के भक्तों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने कुंभ मेले में लाखों लोगों तक त्रिकाल संध्या का प्रचार किया। क्योंकि यदि संसार में कोई इससे बड़ा सिद्धांत है—कोई कितना भी ज्ञानी हो, शास्त्रों में कितना भी पारंगत हो—आइए, मैं आपको त्रिकाल संध्या के बारे में दिखाऊँगा। मनुष्य जीवन में इससे बड़ी कोई शक्ति नहीं, इससे बड़ा कोई धर्म नहीं, इससे बड़ा कोई कर्म नहीं, इससे बड़ी कोई उपलब्धि नहीं। इसलिए हे मनुष्य, अपनी स्थिति को समझो। अपने जीवन-प्रवाह के नियंत्रण और अवस्था को, अपने जन्म के उद्देश्य को समझो। इस जीवन की सार्थकता त्रिकाल संध्या में है, और कहीं नहीं। मैंने सभी शास्त्र पढ़े हैं, और इससे बड़ा कोई सिद्धांत नहीं है। जो कोई इस पर विचार-विमर्श करना चाहता है, मैं उसे आमंत्रित करता हूँ कि आकर मुझसे चर्चा करे। तो आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। जब विपत्ति आएगी, तब आपकी पत्नी भी कहेगी, 'मैं भी करूँगी। मुझे खाँसी क्यों हो रही है? मुझे सर्दी-ज़ुकाम क्यों है? मुझे वायरस क्यों लग रहा है? मैं भी त्रिकाल संध्या करूँगी।' बस उस समय का इंतज़ार कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:39 · 17 मार्च 2025

प्रश्न 2877 हमें कैसे पता चलेगा कि कौन से भक्त बचेंगे और सत्ययुग (स्वर्ण युग) में प्रवेश करेंगे? क्या इसका उल्लेख भविष्य मालिका में है? हमें कैसे पता चलेगा कि बचने वाले हम ही होंगे?

उत्तर: देखिए, मालिका ग्रंथ में लिखा है कि जो सत्य, शांति, दया और क्षमा का पालन करते हैं और 'ब्रह्म कर्म' करते हैं, वही बचेंगे। ब्रह्म कर्म क्या है? त्रिकाल संध्या, जो ऋषि-मुनि किया करते थे। इसे अच्छी तरह समझ लीजिए। सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में ऋषि, सिद्ध और संत ब्रह्म कर्म कर रहे थे। और कलियुग के लिए स्पष्ट रूप से लिखा है कि जो ब्रह्म कर्म करेंगे, उन्हें ब्रह्म के दर्शन होंगे, वे भगवान को प्राप्त करेंगे और सत्ययुग में जाएँगे। तो त्रिकाल संध्या के अलावा कोई सिद्धांत नहीं है। जो इसे करेंगे—मेरी विचारधारा के अनुसार नहीं, बल्कि शास्त्रों की विचारधारा के अनुसार—वे सत्ययुग के योग्य बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 36:38 · 17 मार्च 2025

प्रश्न 2878 क्या भगवान कल्कि ने इस कलियुग में स्त्री रूप में जन्म लिया है या पुरुष रूप में?

उत्तर: आह, यह बहुत अच्छा प्रश्न है। लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूँ: यदि भगवान कल्कि ने जन्म ले लिया है और प्रश्नकर्ता को इसका पता है, तो उन्हें देखकर वे निश्चित ही अंदाज़ा लगा सकते हैं। लेकिन चूँकि उन्होंने पूछा है, मैं उनके प्रश्न का सम्मान करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि भगवान न स्त्री हैं, न पुरुष। वे न मनुष्य हैं, न देवता, न यक्ष या गंधर्व, न ऋषि। भगवान निराकार हैं, निर्गुण हैं, फिर भी सगुण हैं। हम उन्हें आकार विष्णु या निराकार विष्णु कहते हैं। कभी भगवान ने अमृत बाँटने के लिए मोहिनी रूप धारण किया। कभी प्रभु ने पृथ्वी की रचना के लिए विश्वरूप धारण किया। कभी प्रभु ने दैत्यों के संहार के लिए नृसिंह महाप्रभु का रूप धारण किया। तो भगवान 'अरूपवंत' हैं, अर्थात हम उनके रूप की कल्पना नहीं कर सकते। वे भगवान हैं, वे हमारे प्रभु हैं, वे हमारे परम पिता हैं। उनके रूप पर स्त्री या पुरुष के रूप में विचार करना शायद हमारी मानवीय सामर्थ्य से परे है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:46 · 17 मार्च 2025

सत्र 158 · प्रश्न 2879–2885

L174: Bhavishya Malika Volume 2 | भविष्य मालिका पुराण पार्ट 2 कब आएगा? | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 20 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2879 वाराणसी से रजत प्रजापति जी ने पूछा है: यदि ब्रह्म मुहूर्त (सूर्योदय से पहले का शुभ समय) में स्नान करना संभव न हो, तो त्रिसंध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) कैसे की जाए?

उत्तर: देखिए, कोई भी एक दिन में ब्रह्मर्षि नहीं बन जाता। कोई एक दिन में ऋषि या मुनि नहीं बनता, न ही एक दिन में ज्ञानी बनता है। तो पहले इसकी आदत बनाइए। अर्थात, बिस्तर से उठने के बाद आप मन में तीन बार माँ गंगा देवी का नाम जपकर त्रिसंध्या कर सकते हैं। और जब युग बदलेगा, तब भक्त भी मज़बूत और शक्तिशाली हो जाएँगे। वे भी ब्रह्म मुहूर्त में उठेंगे, स्नान करेंगे और फिर करेंगे। लेकिन पहले आदत बनाइए। आप माँ गंगा का नाम जपकर त्रिसंध्या कर सकते हैं। एक बात बताऊँ: जब भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा के कारागार में हुआ, उस समय वसुदेव जी ने स्नान नहीं किया था। लेकिन उन्होंने माँ गंगा का नाम जपा और भगवान के जन्म तथा कल्याण के लिए एक हज़ार गौ दान का संकल्प लिया। तो मन पवित्र हो तो सब कुछ संभव है, और मन अपवित्र हो तो कुछ भी संभव नहीं। इसलिए आप ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कर सकते हैं। स्नान करें या न करें, आप माँ गंगा का नाम जपकर कर सकते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 32:22 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2880 दूसरा प्रश्न दिल्ली से राहुल कुमार जी का है। जिस नौकरी या जगह पर शराब, मांस, अभद्र भाषा और गलत व्यवहार का बोलबाला हो, क्या वह नौकरी छोड़ देनी चाहिए या कहीं और दूसरी नौकरी ढूँढनी चाहिए? कृपया मार्गदर्शन करें, पंडित जी।

उत्तर: आपको भी मेरा सादर प्रणाम। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की एक चौपाई में लिखा है, 'संत हंस के समान होते हैं जो दूध को पानी से अलग कर देते हैं, अच्छे को ग्रहण करते हैं और बुरे को त्याग देते हैं।' उन्होंने कहा कि यह जगत, चर और अचर, गुण-दोष से भरा है। तो हर वातावरण में अशुद्धि है। यह अशुद्धि क्या है? यह कलियुग के तत्वों को अपनाना है: शराब पीना, झूठ बोलना, दूसरों को नुकसान पहुँचाना, जीव हत्या करना और गलत कर्म करना। कलि के निवास वाले ऐसे स्थान इस पृथ्वी पर बहुत हैं। तो तुलसीदास जी ने कहा कि संसार दोषों से भरा है, लेकिन आपको एक काम करना है। जैसे हंस पानी को छोड़कर दूध पी लेता है, हमें वैसा ही करना चाहिए। दूसरे क्या कर रहे हैं या नहीं कर रहे, यह देखना हमारा कर्तव्य नहीं है। हमें ऐसी संगति से दूर रहना चाहिए। जहाँ आपका कर्तव्य है, जहाँ आप नौकरी करते हैं, वहाँ अपना काम कीजिए और भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, मुझे इस वातावरण से बचाइए।' और जब भगवान आपको कहीं और दूसरी नौकरी दें, तब उस नौकरी में चले जाइए। और जैसे हंस अच्छे गुणों को ग्रहण करता है, वैसे ही जो गलत करते हैं, उनमें भी अच्छे गुण खोजिए। बुरे को भूल जाइए, बुरे को मत देखिए, बुरे के बारे में मत सोचिए। और समय आने पर भगवान से प्रार्थना कीजिए, 'प्रभु, मुझे इस वातावरण से बचाइए,' क्योंकि वातावरण ही मनुष्य को बुरा बनाता है। और मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप बच जाएँगे। मेरे मत में आपका उद्धार होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 34:15 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2881 क्या कलियुग (वर्तमान पाप-युग) पहले भी आ चुका है? और क्या यह वर्तमान कलियुग 28वाँ कलियुग है? क्या पिछले कलियुग 5000 वर्षों से अधिक चले थे या नहीं? कृपया मेरा संशय दूर करें।

उत्तर: पिछले कलियुग की आयु के विषय में, देखिए, शास्त्रों में यह बहुत स्पष्ट नहीं है। परंतु ब्रह्म पुराण में लिखा है कि पिछले कलियुग में—अर्थात् इससे पूर्व जो सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि का चक्र बीत चुका है, उस समय—भगवान कल्कि ने प्रमित चंद्र नाम से जन्म लिया था। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने 22 वर्षों तक धर्म की स्थापना की। और उन 22 वर्षों तक कभी घोड़े पर सवार होकर, कभी हाथी पर सवार होकर उन्होंने धर्म की स्थापना की। उस समय भगवान का विवाह भी हुआ था। और भगवान ने पहले उनका वध किया जिन्होंने सबसे अधिक पाप किए थे, फिर उनका जिन्होंने आधे पाप किए थे, और उसके बाद उनका जिन्होंने छोटे-छोटे पाप किए थे। उस समय उन्होंने चीन तथा भिन्न-भिन्न धर्मों और मतों के देशों में भ्रमण किया, लगभग 20-22 वर्षों तक संपूर्ण ब्रह्मांड में घूमकर धर्म की स्थापना की और समस्त पापियों का विनाश किया। तो, कलियुग हर युग-चक्र में आता है, और कलियुग की आयु हर युग में एक समान ही होती है। क्योंकि, देखिए, आज समुद्र में जितना जल है, उतना ही द्वापर युग में था, उतना ही त्रेता युग में था, और उतना ही सत्ययुग में था। सात समुद्र थे, और आज भी सात ही समुद्र हैं, आठ नहीं। तो जैसे जल की मात्रा निश्चित है, वैसे ही पाप की मात्रा भी हर युग में एक समान ही होती है। आप इस युग की बात करें या पिछले युग की, वह इसी सिद्धांत पर चलता है, और भगवान उसका संतुलन बनाते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 37:00 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2882 अगला प्रश्न ओडिशा से सूरज कुमार जैन का है। क्या हम रात 12 बजे के बाद भी श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ सकते हैं? अर्थात् क्या हम पूरी रात पढ़ सकते हैं?

उत्तर: देखिए, भगवान की उपासना के लिए कोई निश्चित समय नहीं होता। क्योंकि कोई बीमार है, कोई शोक में है, कोई काम कर रहा है, और कोई साधारण कार्यों में लगा हुआ है। आधी रात में पढ़ना वर्जित नहीं है। परंतु भगवान भी कुछ समय के लिए शयन करते हैं न? जैसे कि हमारे शास्त्रों में लिखा है कि भगवान जगन्नाथ आधी रात में जगन्नाथ क्षेत्र (पवित्र भूमि) छोड़कर श्री वृंदावन जाते हैं, जहाँ वे नित्य रास लीला (दिव्य नृत्य) करते हैं। तो उस समय भगवान को विघ्न पहुँचाना उचित नहीं है। परंतु बात यह है कि जहाँ 'अहोरात्र कथा' (दिन-रात की कथा) होती है, वहाँ 'अहोरात्र' पाठ होता है। 'अहोरात्र' का अर्थ है सूर्योदय से सूर्यास्त तक, सूर्यास्त से रात 12 बजे तक, और फिर 12 बजे से सूर्योदय तक। यदि कथा सात दिनों की है, जैसी राजा परीक्षित ने सुनी थी, उस प्रकार के संकल्प के साथ, तो समय नहीं देखना चाहिए। यदि हमारी सात दिन की कथा उस संकल्प के अंतर्गत नहीं है, तो मैं कहूँगा कि सूर्योदय से लेकर रात 12 बजे तक पढ़िए। 12 के बाद मत पढ़िए। ब्रह्म मुहूर्त से आप पुनः आरंभ कर सकते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 39:25 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2883 यह प्रश्न छपरा, बिहार से सुनील सिंह का है। बुध ग्रह के विषय में मालिका में क्या जानकारी दी गई है? मक्का-मदीना में माधव महाप्रभु की लीला के बारे में क्या विवरण है? क्या ये दोनों घटनाएँ मीन-शनि योग के दौरान घटित होंगी?

उत्तर: बहुत अच्छा और महत्वपूर्ण प्रश्न है। बुध ग्रह के विषय में लिखा है कि वहाँ निवास करने वाले जीव—चाहे वे मनुष्यों जैसे हों या देवताओं जैसे, जो भी हों, कुछ लोग उन्हें एलियन कहते हैं—उन्हें कोई नहीं जानता, कोई नहीं पहचानता। परंतु मालिका शास्त्र में लिखा है कि बुध ग्रह से निवासी आएँगे, और भगवान की आज्ञा से वे सारे संसार में वर्षा के साथ प्रलय का ताण्डव रचेंगे, जिससे पापियों के लिए अत्यंत भयंकर स्थिति उत्पन्न होगी, और महाप्रलय (महान बाढ़) आएगी। यह लिखा है। दूसरा प्रश्न मक्का-मदीना में माधव महाप्रभु की लीला के विषय में है और यह कि

क्या दोनों घटनाएँ मीन-शनि योग में होंगी। देखिए, लिखा है कि जब समुद्र देवता जगन्नाथ मंदिर की 22 सीढ़ियों तक पहुँचेंगे, ठीक उसी समय मक्का-मदीना के पवित्र क्षेत्र में महान, भीषण युद्ध होगा। यह भी लिखा है कि समुद्र पूर्व दिशा से आएगा, और 22 सीढ़ियों पर मछलियाँ खेलेंगी। समुद्र देवता वरुण रत्न सिंहासन पर विराजमान होंगे, और भगवान जगन्नाथ छतिया धाम में निवास करेंगे। और जब भगवान जगन्नाथ जगन्नाथ क्षेत्र छोड़ेंगे, तो समुद्र उनके पीछे-पीछे चलेगा। यह लिखा है। यह प्रत्यक्ष प्राकट्य होगा क्योंकि समुद्र देवता वरुण जगन्नाथ जी के पीछे-पीछे चलेंगे, ठीक वैसे ही जैसे जब भगवान कृष्ण गए थे तो द्वारका जल में डूब गई थी। इसी प्रकार, जगन्नाथ जी के जाने के बाद, कलियुग की द्वारका, या जिसे वैकुंठ कहा जाता है, समुद्र से ढँक जाएगी। यह लिखा है। तो जिस समय समुद्र 22 सीढ़ियों तक पहुँचेगा, उस समय मक्का-मदीना में युद्ध होगा। अब, यह मीन-शनि के गोचर के दौरान होगा या उसके बाद, यह भगवान का निर्णय है। इस पर मेरा कोई मत नहीं है। इसीलिए मैंने मालिका शास्त्र में बार-बार कहा है कि भगवान जो चाहेंगे, वही करेंगे। होगा अवश्य, इसमें कोई प्रश्न ही नहीं है। और समय निकट है, अर्थात् भविष्य में यह होगा। यह भगवान की इच्छा के अधीन है। भगवान किस समय करेंगे, इस पर टिप्पणी करने योग्य मैं नहीं हूँ। परंतु भाव यह है कि यह 1,000,000% सत्य है, और जैसे-जैसे समय बीतेगा, भक्तों की रक्षा करते हुए भगवान उचित समय पर, ऐसे ढंग से करेंगे कि भक्तों को कष्ट न हो और धर्म की रक्षा हो।

► यह उत्तर सुनें · 41:09 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2884 परंतु मैं अपने कुछ मित्रों को बचाना चाहता हूँ, तो मैं उन्हें कैसे बचा सकता हूँ?

उत्तर: यह बहुत आनंद की बात है क्योंकि हम अपने लिए नहीं आए हैं। वे ओडिशा से पूछ रहे हैं और कह रहे हैं, 'मैं नॉन-वेज छोड़ रहा हूँ, मैं त्रिसंध्या कर रहा हूँ, और मैंने तीन गूगल मीटिंग्स में भाग लिया है।' देखिए, आप जैसे शुद्ध हृदय वाले भक्तों से संवाद करना मेरा सौभाग्य है। क्योंकि यह जीवन मुक्ति के लिए है। जैसे मैंने आपको बताया, वैसे ही आप दूसरों की भी मुक्ति चाहते हैं। यह भक्त अपने साथियों को बचाना चाहता है। तो, मैं एक सलाह देता हूँ: उनसे सीधे कुछ मत कहिए। बस इतना कहिए, 'भाई, एक काम करो, तुम्हारे जीवन में बड़ा परिवर्तन आएगा।' 'क्या करूँ?' 'माधव का नाम जपो।' मन ही मन जपो, कभी रास्ते में, गाँव में, घर में, काम पर, कोई भी कार्य करते हुए, या सोते समय। और भागवत का दशम स्कंध पढ़ो। यदि वे पूछें, 'हमें क्या मिलेगा?' तो बस उन्हें बता दीजिए, 'तुम्हें नौकरी मिलेगी, तुम्हें शांति और सुख मिलेगा, घर में शांति होगी, पितृ दोष दूर होंगे, और जो परिवारजन इसे सुनेंगे वे भी पवित्र हो जाएँगे। और सबसे बड़ी बात, यह जीवन बच जाएगा, और जिन समस्याओं से हम जूझ रहे हैं वे दूर हो जाएँगी।' पहले, यदि वे कुछ समय तक, कुछ दिनों तक भागवत का दशम स्कंध पढ़ें और माधव का नाम जपें, तो मेरे विचार से वे भी त्रिसंध्या करने लगेंगे, वे मांस-मछली छोड़ देंगे, वे सब कुछ छोड़कर संत बन जाएँगे। संत वेशभूषा से नहीं, कर्मों से बनते हैं। नौकरी करने वाला व्यक्ति भी संत हो सकता है, व्यापारी भी संत हो सकता है, और जिसने परिवार छोड़ दिया है वह भी संत हो सकता है। तो, कर्म अच्छे होने चाहिए। ये छोटे-छोटे परिवर्तन आपको ही उनमें लाने होंगे। वे एकदम से नहीं समझेंगे। यदि आप उन्हें कहेंगे तो वे बदलेंगे। यदि आप कहेंगे, 'यह तुम्हारे ही भले के लिए होगा,' क्योंकि कलियुग में लोग जानना चाहते हैं, 'इसमें मेरा क्या फायदा है?' यदि उनमें कोई ऐसा भक्त है जिसके भाग्य में सत्ययुग लिखा है, तो मेरे विचार से वह अवश्य करेगा। परंतु यदि उनके भाग्य में सत्ययुग में जाना नहीं है, तो हम लाख बार भी कहें, कोई परिवर्तन नहीं होगा। जय जगन्नाथ। धन्यवाद।

► यह उत्तर सुनें · 51:07 · 20 मार्च 2025

प्रश्न 2885 पंडित जी, क्या त्रिसंध्या करने और भागवत पढ़ने से हम मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, श्रीमद्भागवत महापुराण में भगवान ने उद्धव से संध्या के विषय में कहा था। उन्होंने कहा कि जो त्रिसंध्या नहीं करते, वे जीवित शव हैं। अर्थात् जन्म लेने और चलने-फिरने के बावजूद वे मृत शरीर के समान हैं। और जो त्रिसंध्या नहीं करते, उनके जीवन की कोई दिशा नहीं होती। जो त्रिसंध्या करते हैं, उन्हें तीन प्रकार के पापों के चक्र से मुक्ति मिलती है, और जो लोग त्रिसंध्या करते हैं वे वैकुंठ (दिव्य धाम) प्राप्त करते हैं। भगवान यह कहते हैं। यह केवल भागवत महापुराण में ही नहीं है; यह भागवत पुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, कूर्म पुराण में लिखा है—यह अनेक शास्त्रों में लिखा है। मुक्ति की एक ही धारा है त्रिसंध्या। जो भी त्रिसंध्या करता है, उसका वैकुंठ प्राप्त करना निश्चित है; इसमें कोई परिवर्तन नहीं है। शास्त्र यह कहते हैं क्योंकि जो शास्त्रों में लिखा है वह हमें मार्ग दिखाता है। उसका पालन करके हमने ऋषियों को देखा है, नारद महामुनि जैसे सिद्ध संतों को देखा है, जो मनुष्य से भगवान के अवतार बन गए। ध्रुव, मनुष्य से—बल्कि, दैत्य कुल से, ध्रुव और प्रह्लाद—इंद्र पद तक पहुँचे और वैकुंठ में राजा बने। तो, मनुष्य जीवन देवता बनने की पूर्व-भूमिका है, और त्रिसंध्या मुक्ति के लिए पवित्र अमृत है। इसी में मानवता की मुक्ति निहित है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 53:46 · 20 मार्च 2025

सत्र 159 · प्रश्न 2886–2920

L175: धर्म एकमात्र रास्ता है | अभी भी समय है मानव सभ्यता के लिए | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 26 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2886 भविष्य मालिका का प्रचार क्यों किया जा रहा है?

उत्तर: आज हम शास्त्रों और पुराणों का चिंतन क्यों करते हैं? इसलिए कि पृथ्वी युग-परिवर्तन के काल की ओर बढ़ रही है। और इस युग-परिवर्तन के समय, मानव सभ्यता में सबसे बड़ी शक्ति धर्म होगी। एक समय आएगा जब सारी मानवता एक व्यवस्था, एक विचार, एक पवित्र धारा में एकजुट होगी। घोर कलियुग के कारण आज मानव सभ्यता में मानवता बची ही नहीं है। हर कोई स्वयं को अलग समझता है; संसार देख रहा है। इसलिए भविष्य मालिका शास्त्र संपूर्ण ब्रह्मांड को सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री का संदेश देता है। हमें सत्य के मार्ग पर चलना ही होगा। सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री के बिना किसी भी मनुष्य का पृथ्वी पर रहना असंभव है। इसीलिए हमें बदलना होगा। भविष्य मालिका में लिखा है कि एक समय आएगा जब सब एक हो जाएँगे, सब एक साथ आएँगे। सारा संसार भगवान का एक परिवार बनने के काल की ओर बढ़ रहा है, हमारी सनातनी अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संसार एक परिवार है) की ओर। इसीलिए अच्युतानंद जी ने कहा, 'अपने मन से माया, मोह और अहंकार का त्याग करो। जो ऐसा नहीं करेंगे, उन्हें जगदम्बा द्वारा विनाश का सामना करना पड़ेगा।' तो, यही आज की विचारधारा है, और इसीलिए हम मालिका का प्रचार करते हैं: ताकि हर मनुष्य हर दूसरे मनुष्य की सहायता करे, सबमें भाईचारा विकसित हो, और हर व्यक्ति में समस्त जीवों के प्रति करुणा उत्पन्न हो।

► यह उत्तर सुनें · 00:35 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2887 इसे गुप्त विषय क्यों कहा गया?

उत्तर: क्योंकि इस कलियुग की लगभग 5,000 वर्षों की आयु में से लगभग 4,600 वर्षों तक यह गुप्त रहा। कलियुग में सत्ययुग (स्वर्ण युग) के बारे में कोई नहीं जानता था। हाँ, कल्कि अवतार का उल्लेख भागवत महापुराण में है। विष्णु पुराण और कल्कि पुराण में भी लिखा है। भगवान वेदव्यास ने अपने द्वारा लिखे अनेक शास्त्रों में इसका वर्णन किया है, परंतु सटीक समय निर्धारित नहीं किया गया। किसी भी शास्त्र ने वह ठीक-ठीक काल या समय नहीं बताया जब यह कलियुग समाप्त होगा। यह जानकारी केवल एक ही शास्त्र में मिलती है, और वह शास्त्र है भविष्य मालिका।

► यह उत्तर सुनें · 05:56 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2888 भविष्य मालिका का लक्ष्य क्या है?

उत्तर: लक्ष्य यह है: हे मनुष्य, तुम्हारे लिए हमारे सनातन धर्म के नियमों का पालन करना आवश्यक है। और सनातन धर्म के नियम क्या हैं? अपने माता-पिता का सम्मान करो, घर में शांति बनाए रखो, जीव हत्या से दूर रहो, मछली, मांस और मदिरा का त्याग करो, नशा छोड़ो, और संसार में एक अच्छे मनुष्य बनो। ताकि आने वाले समय में, युग-परिवर्तन के समय, यदि तुम भी बदल जाओ, तो तुम्हें सत्ययुग में प्रवेश करने के लिए भगवान की कृपा प्राप्त होगी। मालिका शास्त्र यही है। मालिका शास्त्र में यही लिखा है: मानवता का परिवर्तन।

► यह उत्तर सुनें · 07:34 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2889 और सनातन धर्म के नियम क्या हैं?

उत्तर: अपने माता-पिता का सम्मान करो, घर में शांति बनाए रखो, जीव हत्या से दूर रहो, मछली, मांस और मदिरा का त्याग करो, नशा छोड़ो, और संसार में एक अच्छे मनुष्य बनो।

► यह उत्तर सुनें · 07:47 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2890 परिवर्तन कैसे आता है?

उत्तर: परिवर्तित होने के लिए हमें शास्त्र पढ़ने होंगे। और शास्त्र क्या हैं? शास्त्र वह ग्रंथ है जो सत्व तत्व और सत्य पर आधारित हो। जो शास्त्र पढ़ते हैं, जो त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों की उपासना) करते हैं, जो भागवत महापुराण पढ़ते हैं—केवल उन्हीं के जीवन में परिवर्तन आता है।

► यह उत्तर सुनें · 08:30 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2891 और शास्त्र क्या होते हैं?

उत्तर: शास्त्र वह ग्रंथ है जो सत्व (सत्वगुण) और सत्य के तत्व पर आधारित होता है।

► यह उत्तर सुनें · 08:39 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2892 लक्ष्य क्या है?

उत्तर: भविष्य मालिका को लेकर बहुत से प्रश्न उठते हैं। लोग कहते हैं, 'इसे सुनने के बाद हमारा मन काम करना बंद कर देता है।' पर मैं आपको एक बात बताता हूँ: देखिए, यह मनुष्य को सुधारने के लिए लिखी गई है। यह केवल भविष्य मालिका में ही नहीं लिखा गया है; यह भागवत महापुराण में भी लिखा है और भारत में संतों, महर्षियों और ऋषियों द्वारा रचे गए और भी अनेक ग्रंथों में लिखा है कि अच्छा मनुष्य कैसे बना जाए। और मनुष्य होने के नाते हमें सत्यवादी बनना चाहिए और धर्म को थामे रखना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 11:19 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2893 अच्छा मनुष्य कैसे बना जाता है?

उत्तर: मनुष्य होने के नाते हमें सत्यवादी बनना चाहिए और धर्म (धार्मिकता) को थामे रखना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 11:50 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2894 भविष्य मालिका में कहाँ लिखा है कि एक क्षुद्रग्रह (asteroid) पृथ्वी को नष्ट कर देगा? नासा जो कहता है, उससे क्या आपको डर नहीं लगता?

उत्तर: नासा जैसी बड़ी संस्थाएँ जो कहती हैं, वह यह है कि एक क्षुद्रग्रह आ रहा है, और बहुत से लोग इसका प्रचार करते हैं। लेकिन भविष्य मालिका में क्या लिखा है? 'नक्षत्र लज्जा शिव लवण जड़ पड़िब।' सबसे पहले तो इसमें मनुष्यों की सुरक्षा के बारे में लिखा गया है। क्या लिखा है? कि जब तारे का टुकड़ा (क्षुद्रग्रह) गिरेगा, तो वह समुद्र में गिरेगा; भूमि पर कुछ नहीं होगा। सबसे पहले तो मनुष्यों को प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि वह भूमि पर नहीं गिरेगा, वह समुद्र में गिरेगा।

► यह उत्तर सुनें · 12:30 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2895 भविष्य मालिका में क्या लिखा है?

उत्तर: 'नक्षत्र लज्जा शिव लवण जड़ पड़िब।' सबसे पहले तो इसमें मनुष्यों की सुरक्षा के बारे में लिखा गया है। क्या लिखा है? कि जब तारे का टुकड़ा (क्षुद्रग्रह) गिरेगा, तो वह समुद्र में गिरेगा; भूमि पर कुछ नहीं होगा। सबसे पहले तो मनुष्यों को प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि वह भूमि पर नहीं गिरेगा, वह समुद्र में गिरेगा।

► यह उत्तर सुनें · 12:48 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2896 क्या लिखा है?

उत्तर: कि जब तारे का टुकड़ा (क्षुद्रग्रह) गिरेगा, तो वह समुद्र में गिरेगा; भूमि पर कुछ नहीं होगा। सबसे पहले तो मनुष्यों को प्रसन्न होना चाहिए क्योंकि वह भूमि पर नहीं गिरेगा, वह समुद्र में गिरेगा।

► यह उत्तर सुनें · 12:57 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2897 अनुशासन क्या है?

उत्तर: अनुशासन यह है कि मनुष्य को अपने जीवन के दौरान किसी का विरोध नहीं करना चाहिए, किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए, और किसी पर अपना बल प्रयोग नहीं करना चाहिए। संवैधानिक कानून के अनुसार, किसी संवैधानिक कार्यालय या व्यवस्था के पास जाकर उसके लिए प्रतिवेदन (रिप्रेज़ेंटेशन) देना आवश्यक है। किसी को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। यही हमारा संविधान है।

► यह उत्तर सुनें · 13:54 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2898 और भगवान का संविधान क्या कहता है?

उत्तर: देखिए, भगवान ने पृथ्वी पर 56 करोड़ प्रकार के जीवों को जन्म दिया। और ये सभी 56 करोड़ जीव प्राणवान हैं। सभी में बोलने की क्षमता नहीं है, पर उनमें जीवन है। वे चलते हैं, वे बढ़ते हैं, वे प्रकट होते हैं, वे फल और फूल देते हैं, और ये जीव प्रजनन भी करते हैं। वे बोल नहीं सकते। जैसे हम किसी दिव्यांग व्यक्ति का आदरपूर्वक सम्मान करते हैं... पशु भी मूक हैं; उनमें बोलने की क्षमता नहीं है, पर वे खाते हैं, वे इधर-उधर घूमते हैं, वे अपनी दुनिया का विस्तार भी करते हैं, पर वे बोल नहीं सकते। तो भगवान कहते हैं, उन्हें मत मारो। क्योंकि जैसे आपकी मानव सभ्यता में हम उन लोगों को ऊँचा स्थान और सम्मान देते हैं जो असहाय हैं, वैसा ही सम्मान, स्नेह, करुणा और मानवता उन्हें भी दिखाओ।

► यह उत्तर सुनें · 14:30 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2899 वे 'काल' (समय/मृत्यु) की बात क्यों कर रहे हैं?

उत्तर: नहीं, मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि, देखिए, शास्त्र ज्ञान की आँख हैं, और उनके माध्यम से हम भविष्य को भी जानते हैं। ज्योतिष विज्ञान के माध्यम से भी हम भविष्य को जानते हैं। अब, ज्योतिष और हमारे शास्त्र एक ही बात कहते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 16:18 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2900 यह (भविष्य मालिका) क्या समाधान देती है?

उत्तर: यह कहती है, देखिए, जो जीव धर्म में रहते हैं, उनका कुछ नहीं होगा। अर्थात्, यह सुरक्षा प्रदान करती है, और यह समस्या की ओर भी संकेत करती है। इसमें उपचार भी है। उपचार के साथ-साथ इसने आने वाली सावधानियों और प्रमाणों के बारे में भी बताया है, और आने वाले तत्वों के बारे में भी।

► यह उत्तर सुनें · 16:52 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2901 यह (सनातन धर्म का पुनरुत्थान) क्यों होगा?

उत्तर: क्योंकि यदि सम्पूर्ण विश्व में सनातन का पवित्र तत्त्व नहीं रहेगा, तो पृथ्वी की रक्षा करना, देवताओं को संतुष्ट करना, या पंचतत्त्वों को संतुष्ट करना हमारे वश में नहीं है। बार-बार आने वाले भूकंप, प्राकृतिक आपदाएँ, विपत्तियाँ, और जगन्नाथ क्षेत्र में दिखाई देने वाले संकेत — इन सबका यही कारण है।

► यह उत्तर सुनें · 18:08 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2902 वे संकेत किसके लिए हैं?

उत्तर: क्या भगवान जगन्नाथ हमें प्रमाण दे रहे हैं? हाँ, उन्होंने प्रमाण दिया है। पहले यह शास्त्रों में लिखा गया, और उसके बाद उन्होंने प्रमाण देकर कहा, 'मैं मानवता की रक्षा करना चाहता हूँ। सभी मनुष्य मेरी संतान हैं।'

► यह उत्तर सुनें · 18:51 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2903 क्या भगवान जगन्नाथ हमें प्रमाण दे रहे हैं?

उत्तर: हाँ, उन्होंने प्रमाण दिया है। पहले यह शास्त्रों में लिखा गया, और उसके बाद उन्होंने प्रमाण देकर कहा, 'मैं मानवता की रक्षा करना चाहता हूँ। सभी मनुष्य मेरी संतान हैं।'

► यह उत्तर सुनें · 18:53 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2904 (लोगों द्वारा आत्महत्या, हत्या आदि करने का) क्या कारण है?

उत्तर: कारण यह है कि हमारे पास शास्त्र-ज्ञान नहीं है; हमारे पास धैर्य नहीं है। इसीलिए हम कहते हैं, शास्त्र पढ़िए, भागवत पढ़िए। भागवत पढ़ने से आपका धैर्य बढ़ेगा, आपको किसी पर क्रोध नहीं आएगा, आपका मन शांत रहेगा, घर में शांति रहेगी, और भगवान की कृपा से आप दीर्घायु होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 24:36 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2905 मैं भगवान का नाम जपता हूँ, श्रीमद्भागवत पढ़ता हूँ, और त्रिसंध्या भी करता हूँ, फिर भी मुझे भगवान की उपस्थिति का अनुभव नहीं होता। क्या भगवान मुझसे नाराज़ हैं? मुझे न उनके दर्शन होते हैं, न उनका आशीर्वाद मिलता है; मुझे अनुभव नहीं होता।

उत्तर: देखिए, जो मैं कहता हूँ वह कीजिए। आज से, रात में सोने से पहले, भगवान महाविष्णु का ध्यान कीजिए और 'माधव' नाम का 108 बार जप कीजिए। और त्रिकाल संध्या सही समय पर कीजिए। मेरे विचार से, आपको अवश्य कुछ अनुभव होगा। फिर आप मुझे बता सकते हैं। जितना मैंने कहा है, केवल उतना ही कीजिए। क्योंकि, देखिए, हमारे पास कुछ नहीं है — न मंत्र, न यंत्र, न तंत्र — केवल भक्ति है। और जो भक्ति भगवान ने मुझे बाँटने की प्रेरणा दी है, वह है भागवत, वह है त्रिकाल संध्या, वह है माधव का नाम। यही हमारी परम्परा की विचारधारा है। और मेरा विश्वास है कि यदि आप भक्तिपूर्वक और सही समय पर त्रिकाल संध्या करें, और प्रतिदिन सोने से पहले, पैर-हाथ धोकर और मानसिक गंगा-स्नान करके, भगवान माधव का नाम 108 बार जपें, तो मुझे विश्वास है कि भगवान आपको अनुभव देंगे। हो सकता है वे आपको दर्शन भी दे दें, क्योंकि यह आध्यात्मिक तत्त्व एक अत्यंत पवित्र परम्परा है।

► यह उत्तर सुनें · 25:51 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2906 भविष्य मालिका के अनुसार, लोग 13 प्रकार से मरेंगे, जैसे कुछ प्राकृतिक आपदाओं से, और कुछ अपने प्रियजनों की मृत्यु का समाचार सुनकर। जो इन 13 प्रकार की विपत्तियों से बच जाएँगे, वे अंत में सत्य युग में जाएँगे। तो कृपया इन 13 प्रकार की आपदाओं पर मार्गदर्शन दीजिए और प्रकाश डालिए।

उत्तर: बहुत अच्छा प्रश्न है। 13 प्रकार की संख्या के विषय में, देखिए, भविष्य मालिका ने कभी भी धर्मात्मा मनुष्यों की मृत्यु के बारे में नहीं लिखा है। यह उनके लिए लिखा गया है जो पाप करते हैं, जो संसार के लिए दुःख का कारण हैं, जो धर्म का पालन नहीं करते, जो दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। जैसा व्यास देव ने लिखा, 'अठारह पुराणों में व्यास के दो ही मुख्य वचन हैं: परोपकार पुण्य है, और परपीड़ा पाप है।' विपत्ति उनके लिए लिखी गई है जो दूसरों को सताते हैं और पाप करते हैं, किसी धर्मात्मा मनुष्य के लिए नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 27:33 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2907 मासिक धर्म के दौरान, क्या महिलाएँ फ़ोन से श्रीमद्भागवत पढ़ सकती हैं?

उत्तर: देखिए, भगवान ने माताओं के लिए विश्राम का समय निश्चित किया है, क्योंकि माताएँ पूरे वर्ष काम करती हैं और घर का कामकाज संभालती हैं। तो भगवान ने नियम बनाया कि महीने में सात दिन भगवान उन्हें विश्राम देते हैं। उस दौरान, शास्त्रों के विषय में — यह मेरा दृष्टिकोण है, मैं इसे किसी पर थोप नहीं रहा — नाम-भजन और कीर्तन किया जा सकता है। अपने मंदिर या पूजा-कक्ष को छोड़कर, वे कहीं भी भगवान का नाम ले सकती हैं। लेकिन जब मंत्र-पाठ की बात आती है, तो वह भागवत से संबंधित है, जिसे हम पूजा-कक्ष में रखते हैं। वे पूजा-कक्ष में जाएँगी नहीं, तो पढ़ेंगी कैसे? मोबाइल के माध्यम से। देखिए, भौतिक शास्त्र-ग्रंथ को छूना वर्जित है। तो, मोबाइल पर कोई भी शास्त्र पढ़ा जा सकता है। मोबाइल पर पढ़ने में क्या आपत्ति है? कोई समस्या नहीं है। लेकिन भौतिक ग्रंथ, जो भगवान का जीवंत स्वरूप है, उसे पूजा-कक्ष से लाना मना है। हम बस इतना ही मना करते हैं। धर्म की चर्चा करना ठीक है। कहाँ लिखा है कि वे चर्चा नहीं कर सकतीं? तो, भौतिक पुस्तक पढ़ना और पूजा-कक्ष में जाना अलग बात है। कोई भी चाहे तो अपने मोबाइल पर धर्म के बारे में पढ़ सकता है। उस पर कोई रोक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 28:54 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2908 अगर मैं रात में सोया नहीं हूँ और सुबह स्नान नहीं किया है, तो क्या मैं भागवत पढ़ सकता हूँ? इस स्थिति में, क्या मैं केवल दाँत साफ़ करके भागवत पढ़ सकता हूँ?

उत्तर: रात में न सोना अलग बात है। जहाँ तक स्नान न करने की बात है, बिना स्नान किए भागवत पढ़ने का कोई नियम नहीं है। चाहे आप दिन में पढ़ें या रात में, यदि आपका शरीर ठीक नहीं है, तो मेरे विचार से — यह मेरा दृष्टिकोण है — आप मानसिक गंगा-स्नान करके पढ़ सकते हैं। परन्तु, यदि भागवत पूजा-कक्ष में है, तो बिना स्नान किए पूजा-कक्ष में जाना, भागवत को छूना, और उसे पढ़ने के लिए लाना, यह मेरी विचारधारा से मेल नहीं खाता। मेरी विचारधारा यह है कि यदि आप भागवत को अपने अध्ययन-कक्ष में रखते हैं, तो आप उसे पढ़ सकते हैं। लेकिन यदि आपका भागवत आपके पूजा-कक्ष या मंदिर में है, तो मेरे विचार से, बिना स्नान किए भीतर जाकर पुस्तक को छूना और पढ़ने के लिए लाना मेरी विचारधारा से मेल नहीं खाता।

► यह उत्तर सुनें · 31:24 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2909 कुछ मालिका शोधकर्ता कह रहे हैं कि कल्कि उत्तर से, राजस्थान से आएंगे। क्या यह सच है?

उत्तर: देखिए, भगवान अनंत हैं, उनकी लीलाएँ अनंत हैं। भगवान कल्कि उत्तर से आएँ, दक्षिण से, पूर्व से या पश्चिम से, उन्हें कौन रोक सकता है? हाँ, कल्कि लीला का आरंभ सबसे पहले बिरजा क्षेत्र से होगा। भगवान कल्कि का प्राकट्य बिरजा क्षेत्र में होगा। 'प्राकट्य' का अर्थ यह नहीं कि सबको उनके दर्शन होंगे। भगवान गुप्त रूप से, अपनी इच्छा से आएँगे। लिखा है कि बैतरणी नदी के तट पर, माता बिरजा देवी सबसे पहले विनाश की कल्कि लीला आरंभ करेंगी। यह युगों-युगों से होता आया है और इस युग में भी होगा। भगवान की लीला हर जगह हो रही है। लोग उसे देख नहीं पाते, पर विनाश आरंभ हो जाता है — बाढ़, भूकंप, तूफ़ान। इसे भगवान की लीला समझिए। भगवान कहाँ से और कैसे आएँगे, यह उनकी इच्छा है। पर यह भारत भूमि अत्यंत सुरक्षित स्थान है, देवताओं की भूमि है। इसलिए, चिंता मत कीजिए। अपना कर्म कीजिए, आगे बढ़िए। धर्म की रक्षा होगी, और उसके साथ आपकी भी रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 31:53 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2910 पद्म कल्प टीका में संत अराक्षित दास ने लिखा है कि कलियुग के अंत में 'आली' में एक यज्ञ होगा जो 21 दिन तक चलेगा। कृपया इसके बारे में बताइए, जैसे यह कब होगा और इसका क्या महत्त्व होगा।

उत्तर: लिखा है कि यज्ञ अनुष्ठान होगा। कलियुग के अंत में, 'आली' में एक यज्ञ होगा। कलियुग के अंत में, अनेक स्थानों पर अनुष्ठान होंगे। एक यज्ञ कोलकाता के सियालदह में होगा। दूसरा बिरजा क्षेत्र में होगा। और केंद्रापाड़ा ज़िले में एक स्थान है जिसे ओड़िया में 'आली' कहा जाता है। वहाँ भी एक यज्ञ अनुष्ठान होगा। यह सब लिखा हुआ है। यह भगवान की इच्छा से होगा। यह हमारी योजनाओं में नहीं है, पर चूँकि यह लिखा है, यह अवश्य होगा।

► यह उत्तर सुनें · 34:58 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2911 आने वाले महाविनाश के युग में गौ माता की क्या भूमिका होगी? हमें गौ माता की रक्षा के लिए किस प्रकार प्रयास करना चाहिए?

उत्तर: आने वाले समय में हर घर में हर कोई एक गौ माता पालेगा। और यह Kali Yuga की तरह नहीं होगा जहाँ दूध पाने के लिए उन्हें बाँध दिया जाता है। गौ माता अपनी स्वतंत्रता के साथ विचरण करेंगी और दूध भी देंगी। उनके बंधन टूट जाएँगे। हर घर में सुबह गौ माता की पूजा भी होगी। उसके बाद उन्हें चरने के लिए खुला छोड़ दिया जाएगा। गौ माता के लिए स्वतंत्र चरागाह होंगे, और वे आराम से चरागाहों में जाकर चरेंगी और दूसरों के खेतों में नहीं जाएँगी। उनके लिए प्रचुर मात्रा में चारा भी उपलब्ध होगा। सब कुछ भगवान के नियमों के अनुसार होगा। वह आनंदमय और शांतिपूर्ण समय आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 37:13 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2912 मेरा प्रश्न आम जनता की सहायता के लिए है। कुछ युवा हर हफ्ते या दो हफ्ते में कामवासना का अनुभव करते हैं। वे इसे नियंत्रित करने का बहुत प्रयास करते हैं, Trisandhya करते हैं, और भागवत पढ़ते हैं, फिर भी कुछ गलत कार्य छिपकर हो जाते हैं। उन्हें अपराधबोध होता है, वे सोचते हैं कि क्या यह पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण है, Kali Yuga का प्रभाव है, या भगवान सुन नहीं रहे हैं। इसका उपाय क्या है ताकि उनकी श्रद्धा बनी रहे?

उत्तर: देखिए, घोर Kali Yuga के कारण सबका मन विचलित और अशांत है। अच्छे लोग भी बुरे काम कर बैठते हैं। संत की दृष्टि से हमें इंद्रियों से ऊपर उठना है। कैसे? यह समझकर कि यह मनुष्य शरीर स्थायी नहीं है। यदि हम इस पर चिंतन करें, तो यह प्रश्न उठेगा कि हमें कौन-सा कर्म करना चाहिए। उत्तर है: भागवत पढ़िए, और सत्य, शांति, दया और क्षमा का अभ्यास कीजिए। अभिमान और अहंकार इसी नश्वर शरीर के कारण उत्पन्न होते हैं। यदि यह शरीर हमारा है ही नहीं, तो ये भाव कहाँ से आएँगे? स्वयं समझिए: 'मैं आत्मा हूँ, मैं बंधन में हूँ, मुझे मुक्ति चाहिए।' हमें व्यर्थ की बातों में नहीं पड़ना चाहिए। ऐसी विचारधारा को प्राप्त करने के लिए भागवत शास्त्र में लिखा है कि जो प्रतिदिन भागवत का पाठ और चर्चा करते हैं, उनके मन के सारे मल धुल जाते हैं। वे शुद्ध मनुष्य बन जाते हैं। मोह, आसक्ति, घमंड, लोभ, क्रोध और अहंकार सब समाप्त हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 38:40 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2913 क्या श्रीमद्भागवत में इस बारे में कुछ लिखा है कि Kali Yuga का अंत कब होगा? किस अध्याय और किस स्कंध में?

उत्तर: देखिए, Kali Yuga के अंत के संबंध में श्रीमद्भागवत महापुराण में लिखा है कि जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति कर्क राशि में पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेंगे, तब Satya Yuga आएगा। यह भगवान वेदव्यास ने लिखा था। दूसरी बात, मनुस्मृति में भी लिखा है कि Kali Yuga के 4,800 वर्षों के बाद (4,400 वर्ष और 400 वर्ष की संधिकाल अवधि) Kali Yuga समाप्त हो जाएगा। भागवत में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति के योग का उल्लेख है। यह योग 1943 में हुआ था और 2026 में फिर से हो रहा है। तो, शास्त्रों में जो लिखा है उसके अनुसार, Satya Yuga पहले ही आरंभ हो चुका है।

► यह उत्तर सुनें · 42:15 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2914 पिताजी, क्या हम मासिक धर्म के दौरान Trisandhya कर सकते हैं? यानी, जब हम अशुद्ध मानी जाती हैं, तब क्या हम Trisandhya कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, Trisandhya एक प्रकार का भजन है। जैसे आप टीवी पर रामायण देखती हैं। मनुष्य को भजन, श्रवण और मनन का अधिकार है। लेकिन पूजन का अधिकार नहीं है। आप भजन, स्मरण और मनन कर सकती हैं। मन में भगवान का चिंतन कीजिए। भजन करने से किसने मना किया है? सुनने से किसने मना किया है? लेकिन आप पूजन नहीं कर सकतीं।

► यह उत्तर सुनें · 43:43 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2915 चूँकि Satya Yuga आ रहा है, हमें अपने बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए? वही जो स्कूलों में दी जाती है, या हमें उन्हें अपने भागवत और उस जैसे ग्रंथों की शिक्षा देने पर अधिक ध्यान देना चाहिए?

उत्तर: देखिए, पहले तो आपको उनकी पढ़ाई पर ध्यान देना होगा; बच्चों को अच्छी तरह पढ़ना चाहिए। दूसरा, आपको उनके अच्छे आचरण पर भी ध्यान देना होगा। यदि उनका आचरण अच्छा होगा, तो उन्हें अच्छी शिक्षा भी मिलेगी। आज के समय में बुरी आदतें छोटी उम्र से ही शुरू हो जाती हैं। इसलिए, यदि उन्हें भागवत सिखाया जाए... मैं दो युवाओं से बात कर रहा था जिन्होंने कहा कि उनके पिता ने उन्हें एक जगह न जाने को कहा क्योंकि वहाँ बुरे लोग रहते हैं। वे सुनते हैं क्योंकि वे भागवत पढ़ने और त्रिकाल संध्या करने का अभ्यास करते हैं, जिससे उनमें अपने पिता का सम्मान करने और पवित्रता को समझने की क्षमता आती है। तो, बच्चों को या तो भागवत सुनाइए या उनसे पढ़वाइए। उन्हें शास्त्रों की कथाएँ सुनाइए। बार-बार सुनाइए। बच्चे प्रश्न पूछेंगे, और आप उन्हें और ज्ञान पाने के लिए स्वयं पढ़ने को प्रोत्साहित कर सकते हैं। जिस दिन वे भागवत को हाथ में लेंगे, उनका जीवन सुरक्षित और उनका भविष्य स्थिर समझिए। उन पर कोई विपत्ति नहीं आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 44:46 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2916 पिताजी, क्या आप कृपया दिल्ली के पास कोई सभा आयोजित कर सकते हैं? चंडीगढ़ वाली बहुत दूर है, और मेरे पिताजी मुझे नहीं भेजेंगे। पिछली बार फरीदाबाद में हुई थी, वह भी हमारे लिए बहुत दूर थी।

उत्तर: देखिए, यदि भागवत कथा में जाना संभव न हो, तो अपने पिता की सेवा करना भी भागवत के समान है; यह बहुत पवित्र है। इसलिए, घर पर बैठकर सुनिए। भगवान ऐसा समय लाएँगे जब आप भागवत कथा में भी जा सकेंगी। उस समय की प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 47:16 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2917 पिताजी, भगवान की कृपा से मैंने एक पेंट की दुकान खोली, लेकिन मेरे साझेदार ने मुझे धोखा दिया और अब व्यापार में बाधा डाल रहा है। मेरा निवेश फँसा हुआ है, व्यापार चल नहीं रहा, और प्रार्थना करने के बाद भी मैं बहुत तनाव और नकारात्मकता महसूस कर रहा हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसे बंद कर दूँ या क्या करूँ। इसका समाधान क्या है?

उत्तर: नकारात्मकता के लिए, अपनी दुकान में 'Madhava' नाम का संकीर्तन बजाइए। यह पहली बात है। दूसरी, शत्रुओं के नाश के लिए दशावतार स्तोत्र से भगवान नृसिंह का स्तोत्र प्रतिदिन 11 बार पढ़िए। और प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए, मेरा उद्धार कीजिए, और मेरे व्यापार को आगे बढ़ाइए।' ये दो काम कीजिए और मुझे बताइए कि इसका क्या प्रभाव होता है।

► यह उत्तर सुनें · 48:27 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2918 ठीक है, तो अब साझेदार क्या कहता है?

उत्तर: साझेदार अब अलग हो गया है। वह कंपनी के लोगों को हमारे यहाँ मार्केटिंग प्रमोशन करने से रोक रहा है। जैसे, जब कोई बड़ा ऑर्डर आता है, तो वह हमारे अकाउंट डेटा का उपयोग करके उसे अपने पास रख लेता है। एक विवाद भी हुआ था जिसमें वह अपना पैसा वापस चाहता था, लेकिन हमने बताया कि हमारा पैसा ब्याज पर चढ़ रहा है जबकि उसने कोई पूँजी नहीं लगाई, केवल अपने संपर्क लगाए, और अब वह हमें बाधित कर रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 49:31 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2919 जिस स्तोत्र का आप उल्लेख कर रहे हैं, क्या आप नृसिंह अष्टकम की बात कर रहे हैं?

उत्तर: नृसिंह अष्टकम नहीं, नृसिंह स्तोत्र जो दशावतार स्तोत्र में है, जो 'तव कर कमल वरे नखम् अद्भुत शृंगम्' से शुरू होता है। यह आपको त्रिकाल संध्या की पुस्तक में मिलेगा। बैठकर त्रिकाल संध्या भी कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 50:43 · 26 मार्च 2025

प्रश्न 2920 क्या हमें और स्टॉक खरीदने के लिए 50 लाख का ऋण लेना चाहिए? चूँकि साझेदार हट गया है, इसमें हमारी क्षमता से अधिक पैसे की आवश्यकता पड़ रही है।

उत्तर: देखिए, आप ऋण ले सकते हैं; इसमें कोई समस्या नहीं है। जितनी आवश्यकता हो उतना निवेश कीजिए। वर्तमान समय में उधार देना कम कीजिए। भविष्य में कलि के प्रभाव के कारण उधार वापस नहीं आएगा। इसलिए, अपना पैसा अपने पास रखिए। जितना आवश्यक हो उतना ही व्यापार कीजिए। देखिए कि क्या आपको सरकारी सौदे मिल सकते हैं; यह आपके लिए संभव है। आप बड़ी कंपनियों के साथ उनकी पेंट की आवश्यकताओं के लिए काम कर सकते हैं। आपको कॉर्पोरेट कंपनियों, स्टील प्लांट्स और बड़े उद्योगों से जुड़ने का प्रयास करना चाहिए जहाँ पेंट का उपयोग होता है।

► यह उत्तर सुनें · 51:30 · 26 मार्च 2025

सत्र 160 · प्रश्न 2921–2927

L176: बस ! 48 घंटे और फिर ... | मीन - शनि संयोग | 48 Hours later | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 28 मार्च 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2921 अगला युग सत्य युग होगा या आद्य सत्य युग? यदि आद्य सत्य युग होगा, तो पूर्ण सत्य युग कब और कैसे आरंभ होगा?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है, मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। देखिए, सत्य युग एक ही दिन में स्थापित नहीं होगा। भगवान को सत्य युग की रचना करने में लंबा समय लगेगा। भविष्य मालिका ग्रंथ में लिखा है कि आद्य सत्य युग का प्रकाश प्रकट होगा और कलि की आयु का नाश होगा। इसका अर्थ है कि जिस युग की ओर हम बढ़ रहे हैं, उसके प्रथम चरण को आद्य सत्य युग कहा जाएगा, और कलियुग का प्रभाव घटता जाएगा। लगभग 5,000 वर्षों तक मनुष्य आद्य सत्य युग से सत्य युग तक के संक्रमण को जिएँगे, और इसी अवधि में पूर्ण सत्य युग भी आ जाएगा। आरंभिक काल को आद्य सत्य युग कहा जाएगा। आद्य सत्य युग में लोगों में संपूर्ण परिवर्तन आएगा और वे आनंद में अपना जीवन जिएँगे। चारों ओर हर्ष, सुख और समृद्धि होगी। संपूर्ण संसार माता लक्ष्मी की कृपा से धन्य एक सुंदर धरती बन जाएगा। जय!

► यह उत्तर सुनें · 12:38 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2922 क्या मांसाहारी व्यक्ति त्रिकाल संध्या कर सकता है?

उत्तर: देखिए, जो लोग मांसाहार करते हैं, वे भी त्रिकाल संध्या कर सकते हैं, क्योंकि परिवर्तन एक ही दिन में नहीं होता। हाँ, त्रिकाल संध्या करते हुए और भागवत पढ़ते हुए मन में एक दिन यह विचार अवश्य उठेगा कि 'हम जीवों की हत्या क्यों करें?' तो मेरे मत में मांसाहारी लोग त्रिकाल संध्या कर सकते हैं। जो लोग मांसाहार करते हैं पर रक्षा चाहते हैं, उन्हें त्रिकाल संध्या के साथ-साथ भागवत भी पढ़ना चाहिए। मेरी राय में, कुछ ही महीनों या दिनों के बाद आप कहेंगे, 'नहीं, मैं मांसाहार नहीं करूँगा।' यदि आप खाने की कोशिश करेंगे तो आपको उल्टी जैसा लग सकता है, और आपका शरीर उसे अस्वीकार कर देगा। तो हाँ, आप कर सकते हैं। जय!

► यह उत्तर सुनें · 14:05 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2923 यदि भविष्य मालिका हिंदू धर्म का अंतिम ग्रंथ है, तो इसके बारे में अधिक लोग क्यों नहीं जानते? और इस त्रिकाल संध्या में गायत्री मंत्र को उतना महत्व क्यों नहीं दिया गया, और एकाक्षर मंत्र के रूप में 'माधव' नाम ही क्यों चुना गया?

उत्तर: भविष्य मालिका एक गुप्त सिद्धांत है, जो भक्तों के लिए लिखा गया है। यह एक गूढ़ सत्य है जो केवल भक्तों के उद्धार के लिए है। जो भक्त हैं, वे इसका अनुसरण करते हैं। जो नहीं हैं, चाहे हम कितना ही प्रचार करें—और हम पूरे भारत में इसका प्रचार करते हैं—वे न तो इस पर विश्वास करते हैं और न ही इसका पालन करते हैं। इसीलिए अच्युतानंद ने लिखा कि यह सिद्धांत केवल उन भक्तों के लिए है जिन्होंने पहले जन्म लिया है, और केवल वे ही भविष्य मालिका का पालन और उस पर विश्वास करेंगे। जो भक्त नहीं हैं, वे विश्वास नहीं करेंगे। यही कारण है। और 'माधव' नाम ही एकाक्षर मंत्र क्यों है? क्योंकि माधव ही भगवान महाविष्णु हैं। 'मा' ब्रह्मा का स्वरूप है, 'धा' प्रकृति है, दिव्य नारायणी, जो विष्णु की नित्य माया के रूप में प्रसिद्ध हैं। राधा योगमाया का साक्षात् स्वरूप हैं, विष्णु की नित्य माया। राधा वसुंधरा (पृथ्वी) हैं, और उनके साथ हैं उनके स्वामी, माधव। अर्थात् राधा, कृष्ण और योगमाया सब मिलकर माधव नाम बनता है। और यही नाम, माधव, एकाक्षर मंत्र है। पंचसखा में से एक, बलराम दास जी ने अपने ग्रंथ में स्पष्ट रूप से कहा है कि कलियुग के अंत में महाविष्णु माधव नाम से जन्म लेंगे, और जो माधव नाम का जप करेंगे, वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाएँगे। जय!

► यह उत्तर सुनें · 15:10 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2924 मेरी आयु 35 वर्ष है और अभी तक मेरा अपना घर नहीं है। इस कलियुग में मुझे अपना घर खरीदना चाहिए या नहीं? यदि हाँ, तो कब तक होगा? मैं थोड़ा चिंतित हूँ।

उत्तर: देखिए, यदि आप चाहें तो आपको अपने वर्तमान घर के बाईं ओर कहीं ज़मीन का एक टुकड़ा मिल सकता है। फिर भी, मैं सुझाव दूँगा कि आप कम से कम एक वर्ष प्रतीक्षा करें। ज़मीन के दामों के कारण, यदि आप डेढ़ वर्ष बाद घर बनाने का निर्णय लेंगे, तो आपको अच्छे भाव पर ज़मीन मिल सकती है। साथ ही, एक समय ऐसा आएगा जब रहने के लिए खाली घर उपलब्ध होंगे, अर्थात् ऐसे घर जिनमें कोई नहीं रह रहा होगा। इसलिए लगभग डेढ़ वर्ष प्रतीक्षा कीजिए, फिर आपको घर मिल सकता है। हम देखेंगे कि समय कैसे बदलता है। आपको घर मिलेगा; यह आपके भाग्य में है। आप अभी भी प्रयास कर सकते हैं, पर आगे चलकर आपको कम पैसों में मिलेगा। थोड़ा प्रतीक्षा करना बेहतर है। जय!

► यह उत्तर सुनें · 17:34 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2925 महाराज जी, आपने कहा था कि भारत में केवल 33 करोड़ लोग ही बचेंगे। पर यदि भक्तों की संख्या 33 करोड़ से अधिक हुई, तो क्या वे भी मरेंगे? कृपया विस्तार से समझाइए।

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। मैं आपके सोचने के ढंग का सम्मान करता हूँ। देखिए, मैं एक बात कहूँगा। औसतन विश्व की जनसंख्या 64 करोड़ होगी। इसमें से, चूँकि भारत को 'देव भूमि' कहा जाता है, मैं कहता हूँ कि यहाँ 33 करोड़ देवी-देवता निवास करेंगे। उनके साथ, अन्य भक्तों की संख्या मिलाकर, परिवर्तन के युग में पूरे विश्व में कुल 31 करोड़ लोग इस धरती पर बचेंगे। पर मैं एक बात कहता हूँ, और हर बार कही है और फिर कहूँगा: अभी भी समय है। यदि लोग धर्म की ओर मुड़ें, धर्म में विश्वास करें, उसके सिद्धांतों का पालन करें, भगवान विष्णु की उपासना करें, त्रिकाल संध्या करें, शाकाहारी बनें और भागवत पढ़ें, तो यह संख्या बढ़ भी सकती है। धर्म से जनसंख्या बढ़ती है और अधर्म से घटती है। तो यदि लोग समय के साथ बदलें... हम प्रचार क्यों करते हैं? हम इसलिए करते हैं कि अधिक अच्छे लोग सामने आएँ, यह संदेश अधिक लोगों तक पहुँचे, और उनके भीतर परिवर्तन आए। तो संख्या बदल सकती है। यह सब भगवान की इच्छा के अधीन है। हम अपना दृष्टिकोण बता रहे हैं, पर यदि लोग बदलें तो भगवान इस दृष्टिकोण को बदल सकते हैं। जय!

► यह उत्तर सुनें · 18:56 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2926 भविष्य मालिका पुराण के दूसरे खंड में आपने किन विषयों पर प्रकाश डाला है?

उत्तर: देखिए, यह दूसरी पुस्तक बहुत परिश्रम से बनी है। मुझे बहुत समय लगा। इसके प्रकाशन से पहले मेरा शरीर बहुत प्रभावित हुआ, और मैंने बहुत कष्ट सहा। मैंने इसे टाल भी दिया था, यह सोचकर कि मैं इसे प्रकाशित नहीं करूँगा। पर फिर मुझे अपने अंतरात्मा से प्रेरणा मिली कि मेरे साथ चाहे कुछ भी हो, सैकड़ों करोड़ लोग इस ग्रंथ को पढ़कर इसके सार से परिवर्तित हो सकते हैं, इसलिए यह पुस्तक अवश्य प्रकाशित होनी चाहिए। इस अंतर्नाद के बाद मैंने अपने व्यक्तिगत कष्ट के बावजूद इसे प्रकाशित करने का निर्णय लिया। इसमें मुख्य बातें ये हैं: कलि भारत क्या है? वह कैसे होगा, और उसके लिए देवता और भगवान कैसे युद्ध करेंगे? एक युद्ध राष्ट्रों के बीच होगा, जिसे हम तृतीय विश्व युद्ध कहते हैं। दूसरा युद्ध कलियुग का महाभारत होगा। इसमें वर्णन है कि वह महाभारत कहाँ से आरंभ होगा और भगवान उसे कैसे रचेंगे। इसमें आने वाले 64 प्रकार के रोगों का वर्णन है। इसमें विश्व युद्ध के बारे में और यह कि कौन-कौन से देश भारत का पक्ष लेंगे, इसका लेखन है। इसमें वर्णन है कि नाटो-वारसा संघर्ष कैसे सामने आएगा। इसमें त्रिकाल संध्या का सार समझाया गया है। इसमें आने वाले 'पंचभूत प्रलय' का वर्णन है। इसमें वर्णन है कि समुद्र जगन्नाथ क्षेत्र को कैसे निगलेगा और क्या-क्या संकेत दिखाई देंगे। इसमें 'सुधर्म महासंघ' का वर्णन है और यह कि ब्रह्मा, शंकर और देवताओं के साथ सभा कैसे, कब और कहाँ होगी। इसमें वर्णन है कि भगवान कल्कि कहाँ निवास करेंगे और कैसे गुप्त रहेंगे। इसमें विशेष रूप से वर्णन है कि पिछले कलियुग में कल्कि अवतार कैसे प्रकट हुए थे। मैंने कल्कि अवतार के विषय में लगभग 100 ग्रंथों से प्रमाण दिए हैं—वे किस संभल गाँव में जन्म लेंगे, उनके आगमन का समय, और जगन्नाथ क्षेत्र से जो संकेत दिखाई देंगे। संभल धाम, जिसका हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने प्रतिष्ठान किया है, सत्य युग के आगमन का संकेत है। वहाँ भगवान कल्कि की दिव्य लीलाएँ होंगी; उसका भी वर्णन है। मैं किसी को यह पुस्तक पढ़ने के लिए बाध्य नहीं कर रहा। यह एक आध्यात्मिक सिद्धांत है। जो इस सिद्धांत को श्रद्धा से पढ़ना चाहें, वे पढ़ें और अपने कल्याण के लिए इसके पावन सार को ग्रहण करें। जय!

► यह उत्तर सुनें · 20:42 · 28 मार्च 2025

प्रश्न 2927 पिताजी, बहुत से पूजा करने वाले लोगों का लक्ष्य स्वर्ग प्राप्त करना या भगवान का आशीर्वाद पाना होता है। पर इस आध्यात्मिक मार्ग के बारे में जानने से पहले, जब हम 10-11 वर्ष के थे, हमारा लक्ष्य सैनिक बनना और देश की रक्षा के लिए प्राण देना था। हम इसी कारण इस मार्ग पर आए कि यदि हमें भगवान का आदेश मिले तो हम युद्ध में लड़ने जाएँगे। तो क्या हमारा लक्ष्य सही है या गलत?

उत्तर: देखिए, आप सब आज जो कर रहे हैं—त्रिकाल संध्या की पुस्तकें बाँटना, भागवत बाँटना, लोगों को युग परिवर्तन के बारे में बताना—यही तो नारायणी सेना (भगवान की सेना) का युद्ध है। भगवान कृष्ण के पास लगभग तीन करोड़ यदुवंशी थे। उस युग में वह युद्ध धर्म के लिए शस्त्रों से लड़ा गया था। इस युग में युद्ध ज्ञान, बुद्धि और परिश्रम से लड़ा जाता है। तो यह भी एक युद्ध है, और आप इसे लड़ रहे हैं। रही बात कलि भारत में नारायणी सेना के धर्म युद्ध की, तो शास्त्रों में लिखा है कि सप्तऋषि, पाँच पांडव, 64 सिद्ध और भगवान कल्कि लड़ेंगे। पाँच चिरंजीवी भी होंगे। तो यदि आपके भाग्य में है, तो आप भी उस समय शस्त्रों से युद्ध करेंगे। अभी तो शास्त्र-युद्ध चल रहा है। जय जगन्नाथ!

► यह उत्तर सुनें · 25:11 · 28 मार्च 2025

सत्र 161 · प्रश्न 2928–2932

L177: भविष्य मलिका की वाणी सत्य हो रही है! | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 10 अप्रैल 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2928 क्या रामायण और महाभारत एक ही मनु के चतुर्युग में हुए, या इस कल्प के भीतर अलग-अलग मनुओं के चतुर्युगों में?

उत्तर: देखिए, युगों के चक्र में भगवान राम आते हैं, भगवान कृष्ण आते हैं, और महाभारत भी होता है। वायु पुराण के अनुसार स्पष्ट प्रमाण है कि उससे भी पहले पृथ्वी पर कलियुग आ चुका था, उस समय भगवान कल्कि का नाम प्रणीत चंद्र या ऐसा ही कुछ था। इसलिए युगों के आरंभ से ही, जब भगवान ने विराट रूप धारण किया, उनसे ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई, और भगवान विष्णु ने ब्रह्मा जी को भागवत सुनाया। महाभारत भी भागवत पुराण में है। कृष्ण लीला भी भागवत पुराण में है। अठारह पुराणों का सार श्रीमद्भागवत महापुराण में है। इससे हमें प्रमाण मिलता है। हर युग में देवता, ऋषि और संत आते हैं और शास्त्रों का पुनर्निर्माण करते हैं। वे उन्हें पुनः लिखते हैं। सब भगवान विष्णु के श्रीमुख के वचन हैं। और आदि युग में, कुमार सर्ग में, सभी शास्त्रों की रचना हुई, क्योंकि सनकादि कुमारों ने नारद महामुनि को सात दिन भागवत पढ़ने के बारे में बताया था, क्योंकि उनका प्रादुर्भाव आदि सर्ग में हुआ था और उन्हें इन सब का ज्ञान था। तो युग के अनुसार भगवान के अवतार होते हैं; 24 प्रमुख अवतार हैं और असंख्य अन्य, और ये शास्त्र भी पुनर्जीवित होते हैं, कभी व्यास देव जी द्वारा तो कभी अन्य सिद्ध संतों द्वारा। यह एक निरंतर प्रक्रिया है, एक परंपरा है जो चलती रहती है।

► यह उत्तर सुनें · 19:34 · 10 अप्रैल 2025

प्रश्न 2929 क्या सभी के लिए दीक्षा लेना आवश्यक है? बिना गुरु के, केवल माधव नाम का जप और त्रिसंध्या करने से क्या भगवान की शरण नहीं मिलेगी? यह कहाँ तक सही है?

उत्तर: जय जगन्नाथ। सभी पर मेरा आशीर्वाद है। मैं सबके सुख के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूँ। पर मेरा भी एक मार्ग है, एक धारा है जिसका हम प्रचार करते हैं। आपको सही समय पर त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और भागवत पढ़ना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपको स्वतः ही भगवान की प्रबुद्ध कृपा प्राप्त होगी। और गुरु परंपरा की बात है तो देखिए, गुरु परंपरा एक परंपरा है। जो परंपरा प्रचलित है, हम उसका सम्मान करते हैं। पर इस समय सत्य युग आने वाला है। और मेरी राय में, भगवान विष्णु को अपना गुरु बनाइए और त्रिकाल संध्या कीजिए। सब कुछ अच्छा होगा। अब कोई और धारा या परंपरा काम नहीं करेगी। युग परिवर्तन के साथ, त्रिकाल संध्या की यही धारा आपकी गुरु है। इसे पकड़े रहिए और अपना काम कीजिए। भगवान कृपालु होंगे। भगवान विष्णु की उपासना कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:20 · 10 अप्रैल 2025

प्रश्न 2930 मेरा एक प्रश्न है। बांग्लादेश में क्या होने वाला है? हमें क्या करना चाहिए? कृपया बताइए। गुरु-शिष्य परंपरा का क्या होगा? मैं एक गुरु पर निर्भर हूँ। मैंने दीक्षा नहीं ली है, पर उन्होंने मुझे जप करने के लिए कुछ मंत्र दिए हैं। अब मैं क्या करूँ?

उत्तर: पहली बात, मेरी विचारधारा यह है: आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और भागवत पढ़ना चाहिए। दूसरी बात, मैं भविष्य के बारे में कहूँगा। एक समय आएगा जब भारत के बांग्लादेश के साथ संबंध और बिगड़ेंगे। आगे युद्ध की भी संभावना है। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और ऐसी जगह जाने की व्यवस्था कीजिए जहाँ आपको विपत्ति का सामना न करना पड़े। क्योंकि भविष्य मालिका के ग्रंथों के अनुसार लिखा है कि 'बांगड़ा है वो लंगड़ा' (बंगाल लंगड़ा है), अर्थात् बांग्लादेश की वर्तमान स्थिति नहीं रहेगी। भविष्य में अभाव होंगे, अन्न की कमी होगी, और इतने तूफान और बवंडर आएँगे कि वे बांग्लादेश की आर्थिक स्थिति को नष्ट कर देंगे। युद्ध की स्थिति और जातिगत भेदभाव की परंपरा भी बढ़ेगी। तो त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और माधव नाम का जप कीजिए। माधव से प्रार्थना कीजिए कि वे आपको ऐसे स्थान पर ले जाएँ जहाँ आप सुरक्षित रहें। माधव से यही मेरी प्रार्थना है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:34 · 10 अप्रैल 2025

प्रश्न 2931 जब जाजपुर में सुधर्मा सभा होगी, तब भक्तों की संख्या कितनी होगी?

उत्तर: जब जाजपुर में सुधर्मा सभा होगी, तब 33 करोड़ (330 मिलियन) देवी-देवता उपस्थित रहेंगे। ब्रह्मा जी वहाँ होंगे, शंकर भगवान वहाँ होंगे, नारद महामुनि वहाँ होंगे, 64 सिद्ध ऋषि वहाँ होंगे, और नैमिषारण्य के सभी साधु-संत वहाँ होंगे। सभी भक्त वहाँ होंगे। और स्वयं भगवान कल्कि, भगवान विष्णु के अवतार, उस सभा का संचालन करेंगे। कोई अन्य देवी या देवता उसका संचालन नहीं करेगा। इस प्रकार, विश्व के धर्म की रक्षा और विश्व के संविधान का निर्माण सुधर्मा सभा में होगा। और भगवान कल्कि अपने भक्तों को राजा बनाएँगे। वे संसार में एक लाख (100,000) भक्तों को राजा बनाएँगे। एक लाख भक्त भगवान के राजा बनेंगे, और वहाँ भगवान अपने निर्णय लेंगे। यह कई दिनों तक चलेगा। यह बड़े आनंद और आश्चर्य की बात है।

► यह उत्तर सुनें · 26:41 · 10 अप्रैल 2025

प्रश्न 2932 चार महावाक्यों में उपवास का उपदेश दिया गया है। हमें कौन-सा उपवास करना चाहिए, और कैसे करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, यह प्रश्न संभवतः ओडिशा से आया है। आप जिन चार महावाक्यों की बात कर रहे हैं, मैं समझ रहा हूँ। यहाँ उपवास का अर्थ भोजन त्यागना नहीं कहा गया है। 'उपवास' का अर्थ है अपने मन को वश में करना, अर्थात वह मन जो इच्छाओं और वासनाओं की आशा करता है, और अपने स्वभाव को दबाना। यही वास्तविक उपवास है। यह भोजन के उपवास की बात नहीं है। और जो इसका पालन करेंगे, वे भगवान को प्राप्त करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 28:20 · 10 अप्रैल 2025

सत्र 162 · प्रश्न 2933–2938

L178: जगन्नाथ क्षेत्र से धर्म संस्थापना का एक और संकेत! | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 15 अप्रैल 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2933 श्री मंदिर की ध्वजा पर 'शून्य ग्रंथि' (शून्य गाँठ) का प्रकट होना किस बात का संकेत है?

उत्तर: हाँ, जगन्नाथ मंदिर की ध्वजा पर 'शून्य' या स्वयं बन जाने वाली गाँठ... देखिए, यह ध्वजा मोक्ष के लिए है। यह मनुष्यों, जीव-जंतुओं, देवताओं और समस्त सृष्टि के कल्याण के लिए है। भगवान अनंत काल से इस ध्वजा को धारण किए हुए हैं। मेरे विचार से, यदि हम जो वस्त्र पहनते हैं उसमें गाँठ पड़ जाए, तो जान लीजिए कि यह शुभ संकेत नहीं है; हमें अच्छा नहीं लगेगा, और जो भी देखेगा उसे भी अच्छा नहीं लगेगा। इसी प्रकार, जब भगवान की ध्वजा पर शून्य गाँठ प्रकट होती है, तो यह संसार के लिए हितकारी नहीं है। यह संसार के लिए परिवर्तन के समय का संकेत देता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:31 · 15 अप्रैल 2025

प्रश्न 2934 हम त्रिकाल संध्या करते हैं और हरिनाम का जप भी करते हैं। क्या इससे हमारे बच्चों, परिवार और माता-पिता की रक्षा होगी?

उत्तर: देखिए, जिस घर में लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, वहाँ शांति रहती है। उस घर में 'पितृ दोष' नष्ट हो जाता है। जब आप अपने घर में त्रिकाल संध्या करते हैं, तो जो दूसरे लोग सुनते हैं उन्हें भी लाभ मिलता है और उनका उद्धार होता है। परंतु, यदि जब आप त्रिकाल संध्या करते हैं, तब आपके घर के सभी लोग उसे नहीं सुनते या उससे दूर रहते हैं, तो उन्हें उसका लाभ मिलना कठिन है। यह ऐसे ही है जैसे कोई व्यक्ति घर के भीतर ही रहे, तो उसे सूर्य का प्रकाश नहीं मिलेगा। इसी प्रकार, जिस समय आपके घर में त्रिकाल संध्या होती है, उस समय जो भक्त, जो लोग, जो परिवारजन उसे सुनते हैं, उसके पास बैठते हैं और उसका अनुभव करते हैं, उन्हें पवित्रता और भगवान की कृपा प्राप्त होगी। जो नहीं करते, उन्हें इस विषय में कुछ प्राप्त नहीं होगा। त्रिकाल संध्या के द्वारा 'पितृ लोक' में निवास करने वाले पितरों को आशीर्वाद मिलता है, भूत-प्रेत की बाधाएँ दूर होती हैं, और अपशकुन तथा ग्रह दोष नष्ट होते हैं। परंतु पाप और पुण्य पर विचार कीजिए। जो सुनते और पढ़ते हैं, उन्हें लाभ मिलता है। जो नहीं सुनते या नहीं पढ़ते, उन्हें नहीं मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:54 · 15 अप्रैल 2025

प्रश्न 2935 रोहित, जो 11 वर्ष का है और 5वीं कक्षा में पढ़ता है, उसे भविष्य मालिका पसंद है, वह त्रिकाल संध्या करता है और भागवत महापुराण पढ़ता है। परंतु उसके परिवार के लोग मांसाहार करते हैं। वह जानना चाहता है कि क्या उसे त्रिकाल संध्या का अर्थ हिंदी में मिल सकता है।

उत्तर: सबसे पहले, मैं रोहित को बधाई देता हूँ। देखिए, हम सनातनियों को जड़ से सुधार करने की आवश्यकता है। जैसे वह महिला कह रही थीं कि उनका दो वर्ष का बेटा भागवत के श्लोक बोलता है, और जो पहले कार्टून आदि देखता था, अब आध्यात्मिक तत्वों, भजन और कीर्तन में लगा रहता है। देखिए, जहाँ विदेशी संस्कृति है, वहाँ विनाश है, वहाँ अशांति है, वहाँ परिवार नहीं है, क्योंकि विदेशी कई बार विवाह करते हैं। वे अपने बच्चों का विवाह करके उन्हें छोड़ देते हैं। उनके बच्चे कहाँ जाते हैं, इससे वे अधिक संपर्क नहीं रखते। परंतु हमारी सनातनी परंपरा तो अपने परिवार के साथ रहने की है। एक पत्नी, एक पति—यह परंपरा विदेशी संस्कृति से प्रभावित हो रही है, जिसके कारण हमारे लोग भी कई विवाह

करने लगे हैं और अपने बच्चों को छोड़ देते हैं। इससे परिवार में अशांति होगी, और उन्हें मुक्ति या वैकुंठ प्राप्त नहीं होगा। जीवन के कर्म का मार्ग गलत हो जाएगा। इसीलिए यह बहुत अच्छा है कि रोहित त्रिकाल संध्या करता है। मैं रोहित के परिवार को सलाह देता हूँ: यदि आपके परिवार में कोई भगवान का नाम लेता है, तो उसे और अधिक प्रोत्साहित कीजिए, ताकि वह कभी बुरी संगति में न पड़े। वह त्रिकाल संध्या करता है और भागवत पढ़ता है। इसलिए, जैसे-जैसे वह बड़ा होगा, आपको इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि वह शराब पिएगा, वेश्याओं के पास जाएगा, या समाज-विरोधी काम करेगा, क्योंकि वह त्रिकाल संध्या करता है। दूसरी बात, उसके घर में जो लोग मांस-मछली खाते हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ: देखिए, जीव हत्या पाप है। सनातन धर्म में पशु हत्या का विरोध है। भगवान बुद्ध ने भी पशु बलि का विरोध किया था। तो हम सनातनी हैं। समय के अनुसार, हमारे देश में विदेशियों की आसुरी परंपरा प्रचलित है, परंतु उसके अंत का समय आ रहा है। इसलिए, मैं रोहित को सलाह देता हूँ: यदि घर में वे मांस-मछली खाते हैं, तो उनसे कुछ मत कहो। अपने माता-पिता का सम्मान करो। और मैं उससे यह कहना चाहता हूँ: प्रतिदिन सुबह उठकर अपने माता-पिता के चरण स्पर्श करो और उन्हें प्रणाम करो। साथ ही, अपने बड़ों, अर्थात वरिष्ठ जनों को भी प्रणाम करो। और शाम को, सूर्यास्त से पहले, यदि तुम घर पर हो, तो उन्हें फिर से प्रणाम करो। तुम्हें आशीर्वाद मिलेगा। अपने माता-पिता के कर्मों का आकलन करना हमारी परंपरा में नहीं है। प्रत्येक सनातनी को अपने माता-पिता को भगवान मानना चाहिए। 'पिता च माता, माता च पार्वती देवी, पिता देव महेश्वरा' (पिता और माता, माता पार्वती देवी हैं, पिता देव महेश्वर हैं)। अपने माता-पिता की ऐसे भक्ति करो मानो वे शिव और पार्वती हों। इससे रोहित की त्रिकाल संध्या का फल और भी अधिक कल्याणकारी होगा। अपने माता-पिता का सम्मान करो, अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, और भविष्य शास्त्र का अध्ययन करो। युग परिवर्तन के साथ, मानवता सत्य युग की ओर बढ़ेगी, और उसके लिए तुम जो कर्म कर रहे हो, वह आवश्यक है। यह जीवन आगे एक सुंदर संसार की ओर ले जाएगा। लोग आनंद से रहेंगे। कोई विपत्ति नहीं होगी। तो, त्रिकाल संध्या बहुत अच्छी है। तुम्हें इसे करते रहना चाहिए, और तुम्हारे पिता को भी आशीर्वाद मिलेगा। जय। और हिंदी में त्रिकाल संध्या के विषय में, मैं अपने उन लोगों से कह रहा हूँ जो यह काम करते हैं कि त्रिकाल संध्या भेज दें। और रोहित, भागवत का एक अध्याय पढ़ो और उसका सार अपने माता-पिता को समझाओ। इससे उनका अधिक कल्याण होगा। भागवत सुनकर वे भी बदलेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:39 · 15 अप्रैल 2025

प्रश्न 2936 क्या भविष्य मालिका रूस के हाथों में पहुँच गई है?

उत्तर: देखिए, जब भविष्य मालिका की पहली पुस्तक बनी थी, तब हमने उसका रूसी भाषा में अनुवाद करवाया था। हमारे भक्तों की सहायता से, उसका अंग्रेज़ी से रूसी में अनुवाद किया गया। उनके संगठन द्वारा अमेज़न जैसे मंचों पर भी इसका प्रचार हो रहा है, और रूसी लोग इसे खरीद भी रहे हैं। तो, यह हमारे लिए अच्छा है कि भविष्य मालिका रूस तक पहुँच गई है, क्योंकि रूस हमारा मित्र है। कई युगों से—द्वापर युग, सत्य युग, त्रेता युग—रूस के साथ हमारा अच्छा, मैत्रीपूर्ण संबंध रहा है। और इस समय, यदि यह उन तक पहुँचती है, तो रूस के साथ हमारा संबंध और भी मजबूत होगा। वहाँ के भक्त भी बचेंगे। केवल रूस ही नहीं, भविष्य मालिका का यूरोपीय भाषाओं, फ्रेंच और जापानी में भी अनुवाद हुआ है। वहाँ के लोग भी इसे खरीदकर पढ़ रहे हैं। एक समय आएगा जब पूरा विश्व सनातनी हो जाएगा, और यह पुस्तक एक माध्यम है, एक संदेश है जो पहले ही भेजा जा चुका है। यह बहुत अच्छा है; समय के साथ, भगवान की इच्छा से यह आवश्यक था। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:01 · 15 अप्रैल 2025

प्रश्न 2937 कर्नाटक से अमूल्य भाई पूछते हैं: आपने कहा था कि भक्त 'ब्रह्म कर्म' के द्वारा स्वयं को जानेगा। ब्रह्म कर्म वास्तव में क्या है? भगवद गीता कहती है कि ब्रह्म कर्म का अर्थ है स्वयं को जानना। क्या स्वयं को जान लेना ही पर्याप्त है?

उत्तर: देखिए, पहले मैं आपको ब्रह्म कर्म के बारे में बताऊँगा। 'ब्रह्म' का अर्थ है भगवान विष्णु। भगवान विष्णु की पूजा और उपासना की विधि को ब्रह्म कर्म कहते हैं। अर्थात, भगवान विष्णु की पूजा पद्धति। भगवान विष्णु निराकार भी हैं और साकार भी। भगवान विष्णु आकार रहित भी हैं। वे सगुण भी हैं और निर्गुण भी। वे व्यक्त भी हैं और अव्यक्त भी। यह उनकी इच्छा है। 'निज इच्छा निमित तनुधारी' अर्थात वे अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं। तो, ब्रह्म कर्म यही त्रिकाल संध्या है, यही भागवत का पाठ है। ऐसा करने से मनुष्य अपनी स्थिति को जान लेता है। 'स्थिति' का अर्थ है, हमारा जन्म क्यों हुआ? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? हम किस कारण से इस पृथ्वी पर आए हैं, और हमें कौन-से कर्म करने हैं? इस जीवन चक्र के बंधन से हम कैसे मुक्त हो सकते हैं, और मुक्ति के बाद मानव जीवन का परम उद्देश्य और सर्वोच्च स्थिति क्या है? जब मनुष्य त्रिकाल संध्या करता है, तब वह इन सब बातों को जान लेता है। इसलिए, ब्रह्म कर्म के माध्यम से, भागवत के माध्यम से, मनुष्य को अपनी स्थिति की जानकारी मिलती है—अर्थात अपनी सीमा, सृष्टि और अंत की। फिर, उसी के अनुसार मनुष्य आचरण करता है और अपने सामाजिक तथा आध्यात्मिक कर्मों को बदलता है, मुक्ति और मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ता है। इसी को आत्म-साक्षात्कार कहते हैं, और मनुष्य स्वयं को जान लेता है—उसे यह शरीर क्यों मिला, कहाँ जाना है, कहाँ से आना है, सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। तो, इस पर चिंतन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:41 · 15 अप्रैल 2025

प्रश्न 2938 अयोध्या से आकाश बताते हैं कि उनके पिता मांसाहार और शराब का सेवन करते हैं। उनकी माता धार्मिक होते हुए भी उनके आध्यात्मिक मार्ग का विरोध करती हैं, उन्हें किसी दूसरे गुरु का अनुसरण करने के लिए कहती हैं और जब वे सत्संग में जाते हैं या अपनी प्रातःकालीन साधना करते हैं तो समस्या खड़ी करती हैं। उनके कारण वे कभी किसी आध्यात्मिक सभा में नहीं जा पाए और अब वे उन्हें चंडीगढ़ की सभा में जाने से रोक रहे हैं। वे मार्गदर्शन माँगते हैं।

उत्तर: जय जगन्नाथ। पहले मैं यह कहूँगा, अपने माता-पिता को भगवान की तरह मानिए। सुबह-शाम उन्हें प्रणाम कीजिए ताकि उन्हें लगे कि उनका पुत्र उनका सम्मान करता है और यह संस्कार उसे त्रिकाल संध्या और भगवान की कृपा से मिले हैं। तो, अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए। पुत्र कुपुत्र हो सकता है, परंतु माता कभी कुमाता नहीं होती। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे मांस-मछली खाते हैं; यह आपका विषय नहीं है। यह आपके कर्म के अधीन नहीं है। अपने माता-पिता को नियंत्रित करने का प्रयास मत कीजिए। परंतु आप जो कर सकते हैं वह यह है कि उन्हें भागवत पढ़कर सुनाइए, जिसमें लिखा है कि जीव हत्या सबसे बड़ा पाप है, और जो ऐसा करते हैं वे नरक में जाते हैं। भागवत से यह अपने माता-पिता को पढ़कर सुनाइए। यदि आपके माता-पिता आपको चंडीगढ़ के कार्यक्रम में जाने से मना करते हैं, तो मत जाइए। घर बैठकर सुनिए, क्योंकि हर घर तीर्थ है, हर मन तीर्थ है, हर स्थान तीर्थ है। भगवान सर्वव्यापी हैं। 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम ते प्रगट होइ मैं जाना' (भगवान सर्वत्र समान रूप से व्याप्त हैं; मैं जानता हूँ कि वे प्रेम से प्रकट होते हैं)। भगवान हर जगह हैं—घर में, बाहर, स्वर्ग में, पृथ्वी पर, पाताल में, पर्वतों पर, वनों में, समुद्रों, नदियों और पहाड़ियों में। जहाँ भी देखिए, हमारे भगवान वहीं हैं। इसलिए, यदि आपके माता-पिता मना करते हैं, तो उनका पूरा सम्मान कीजिए। पहले, अपने माता-पिता का सम्मान कीजिए। उसके बाद, आप मुझसे इस पर चर्चा कर सकते हैं। क्योंकि मैं भी माता-पिता का सम्मान करता हूँ। वे सृजनकर्ता हैं। उन्होंने हमें जन्म दिया है। यदि वे विश्वास नहीं करते तो कोई बात नहीं। उनके जीवन के कर्म का मार्ग उनके पूर्व जन्म के 'प्रारब्ध' से नियंत्रित होता है। जो कर्म-मार्ग भौतिक तत्वों से प्रभावित नहीं होता, वह भी पूर्व जन्म के कर्मों के कारण ही होता है, जैसा आपके साथ है। तो, भौतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक जीवन—ये सब इसी संसार के अंग हैं। सत्व, रज और तम गुण विद्यमान हैं।

परंतु हमें उससे सरोकार नहीं रखना चाहिए। भगवान के कार्य का, भगवान के मार्ग का, शास्त्रों के नियमों का पालन कीजिए: अपने माता-पिता का सम्मान कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और माधव नाम का जप कीजिए। व्याकुल मत होइए। अपने माता-पिता की देवता के रूप में पूजा कीजिए, और फिर, समय के साथ, वे बदल जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:26 · 15 अप्रैल 2025

सत्र 163 · प्रश्न 2939–2947

L179: इस साल विश्व में FOOD CRISIS देखने मिलेगा! | पंडित काशीनाथ मिश्र

दिनांक: 20 अप्रैल 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2939 सुधीर सिंह, जिन्हें सरजीत सिंह भी कहा जाता है, पिछले 24 वर्षों से भूत-प्रेत जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कभी-कभी ये समस्याएँ उनके शरीर पर हावी हो जाती हैं और पूरे परिवार को परेशान करती हैं। जब भी परिवार का कोई सदस्य सरजीत जी के लिए कोई उपाय या इलाज करता है, तो वह स्वयं इस समस्या से ग्रस्त हो जाता है। यह स्थिति भगवान श्री माधव की हमारी भक्ति और पूजा में भी बाधा उत्पन्न कर रही है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए कि क्या करें जिससे भगवान की कृपा से हमें इस समस्या से छुटकारा मिल सके। जय श्री माधव।

उत्तर: देखिए, भूत-प्रेत की बाधा को रोकने के लिए त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) सबसे आवश्यक है। मैं उन्हें सलाह देता हूँ कि सही समय पर त्रिकाल संध्या करें, भागवत महापुराण पढ़ें, और साथ ही, रात को सोने से पहले 'माधवम्' नाम का 108 बार जप करें। उसके बाद मुझे बताइए कि आपको क्या परिणाम मिलते हैं और क्या होता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:59 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2940 पिताजी को सादर प्रणाम। मैं हरि नाम कल्कि महामंत्र और अपने गुरु द्वारा दिए गए मंत्र का जप करता हूँ। इसके साथ ही, मैं त्रिकाल संध्या भी करता हूँ और आपके बताए अनुसार माधव नाम का जप भी करता हूँ। क्या मैं ये दोनों संध्याएँ एक साथ कर सकता हूँ? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, मेरे अनुसार, आप अपने गुरु और अपनी परंपरा का पालन जैसे करते आ रहे हैं, वैसे ही करते रहिए। परंतु, आपको तीनों संध्याएँ अवश्य करनी चाहिए: प्रातः संध्या (प्रातःकालीन प्रार्थना) जो ब्रह्म मुहूर्त संध्या है, मध्याह्न संध्या (दोपहर की प्रार्थना), और सायं संध्या (संध्याकालीन प्रार्थना)। और भागवत पढ़िए। इसके साथ ही, अपने गुरु की परंपरा का पालन कीजिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 11:29 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2941 जय श्री राम। मेरा प्रश्न यह है कि क्या केवल माधव नाम का ही जप करना आवश्यक है? मैं अन्य नामों का भी जप करता हूँ। और क्या केवल श्रीमद्भागवत महापुराण ही पढ़ना चाहिए? मैं रामचरितमानस का पाठ करता हूँ। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: आपको माधव नाम का जप करना ही होगा। यह आवश्यक है। आपको इसका जप करना चाहिए क्योंकि यह मंत्र आपको आने वाली प्राकृतिक, सामाजिक और शारीरिक आपदाओं से बचाएगा। दूसरी बात, आपको समय पर त्रिकाल संध्या भी करनी होगी। आपका कल्याण इसी में है। रही बात अन्य मंत्रों की जो आप जपते हैं, तो उन्हें करते रहिए; उस विषय में मुझे कुछ नहीं कहना। मैं केवल इतना कह रहा हूँ कि समय पर त्रिकाल संध्या करें। बाकी आप जिस भी परंपरा का पालन करते हैं, उसे अपने समय के अनुसार करते रहें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:47 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2942 अगला प्रश्न दिल्ली से जन्म विजय स्वाई भाई का है। जगन्नाथ सहस्रनाम के नित्य पाठ के क्या नियम हैं? मैं आपके श्रीमुख से इसकी महिमा सुनना चाहता हूँ।

उत्तर: देखिए, जगन्नाथ सहस्रनाम के विषय में, अच्छा यह होगा कि जब आप घर में पूजा या आरती करते हैं, या यदि आपके घर में मंदिर है जहाँ आप भगवान की उपासना करते हैं, तब आप इसका पाठ करें। सुबह और शाम पूजा करें, और रात में, भगवान के विश्राम हेतु द्वार बंद होने (पहुड़) से पहले, यदि आप दीपक जलाकर उस स्तोत्र का पाठ करते हैं, तो भगवान प्रसन्न होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:24 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2943 अगला प्रश्न बरेली से अभिषेक चौहान भाई का है। भागवत में कहा गया है कि कलियुग की एक अच्छी बात यह है कि यदि कोई मन में कोई पुण्य कर्म करने का संकल्प करता है, तो उसे केवल संकल्प मात्र से ही उसका फल मिल जाता है। और मानसिक पाप तब तक फल नहीं देता जब तक वह कर्म में न उतरे। अब जबकि मालिका के अनुसार सत्ययुग आरंभ हो चुका है और कलियुग समाप्त हो रहा है, यदि किसी के मन में दुर्भावना के कारण मानसिक पाप उत्पन्न होता है, तो वह कलियुग का कर्म माना जाएगा या सत्ययुग का?

उत्तर: देखिए, यह मन चंचल है, इंद्रियों से प्रभावित है। भगवान के नाम का जप, कीर्तन, त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ करने से मन के विकार, मन के द्वंद्व और मन की गलत भावनाएँ दूर होती हैं। लोगों ने सत्ययुग में भी बुरे कर्म किए, त्रेता युग में भी किए, द्वापर युग में भी किए, और कलियुग में भी करते हैं। परंतु आने वाला सत्ययुग, अनंत युग, एक शुद्ध युग होगा जिसमें लोग पूर्ण रूप से पवित्र हो जाएँगे। न कोई गलत भावना होगी, न कोई गलत विचार, क्योंकि त्रिकाल संध्या करने और भागवत पढ़ने से वे ऋषि-मुनियों और संतों की परंपरा को अपनाएँगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 15:25 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2944 जैसे हम अभी समय-सारणी के अनुसार दिन में तीन बार त्रिसंध्या करते हैं, भविष्य में जब धर्म स्थापना का कार्य तेजी से आगे बढ़ेगा, तो क्या हमें निरंतर त्रिसंध्या करनी होगी, या संक्षेप में करना पर्याप्त होगा?

उत्तर: देखिए, बदलते समय के साथ मनुष्य का सबसे बड़ा कर्म संध्या ही होगा। भविष्य में लोगों को इसी में शांति मिलेगी। युग परिवर्तन के संकटपूर्ण समय में लोग 24 घंटे तक उस मंत्र का जप करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:49 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2945 पंडित जी, मुख्य शनि योग वाले दिन, उसके शुरू होने के मात्र 5-10 मिनट बाद, लगभग 10:10-10:15 पर, मेरे घर में एक छिपकली दीवार पर चढ़ रही थी और मेरी आँखों के सामने ही मर गई। दीवार पर चढ़ते समय उसे कुछ लगा भी नहीं था, और मौसम भी कोई खास गर्म नहीं था। तो मुझे समझ नहीं आया कि यह मेरे घर के लिए शुभ संकेत है या अशुभ।

उत्तर: नहीं, यह अशुभ संकेत नहीं है। जब किसी जीव का समय पूरा हो जाता है, तब उसका जीवन समाप्त हो जाता है। इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। आपके घर पर कोई विपत्ति नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 18:46 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2946 मेरा प्रश्न व्यक्तिगत है। मैं कभी नियमित नहीं रह पाता। कभी ऐसा होता है कि मैं तीनों समय संध्या कर लेता हूँ, और कभी तीनों बार करता तो हूँ पर सही समय चूक जाता है। कभी बहुत पाठ कर लेता हूँ, और कभी दिन भर में 108 नामों का ठीक से जप भी नहीं कर पाता। मैं अपनी भक्ति में नियमित नहीं रह पाता। मुझे समझ नहीं आता कि मुझे क्या हो जाता है। कभी वैराग्य महसूस होता है, और कभी सांसारिक भय में उलझ जाता हूँ। मैं एक विद्यार्थी हूँ। और मेरा दूसरा प्रश्न यह है, पिताजी, मेरी कक्षाएँ दोपहर 1:20 बजे तक चलती हैं, इसलिए 12:30 बजे मुझे पूरी संध्या करने का पर्याप्त समय नहीं मिलता। मैं कक्षा से बाहर निकलकर पाँच मिनट में जल्दी-जल्दी पाठ कर लेता हूँ। जल्दबाजी में पढ़ता हूँ, और कभी-कभी कोई हिस्सा छूट भी जाता है। ऐसी स्थिति में मैं क्या करूँ, पिताजी? कृपया इन दोनों प्रश्नों का उत्तर दें। जय श्री माता।

उत्तर: देखिए, हर साधना, हर मंत्र और पूजा की हर विधि का भक्तिपूर्वक बार-बार अभ्यास करने से आपके सामने आने वाली बाधाएँ टूट जाएँगी। इसलिए माधव की शरण में जाइए, माधव के प्रति समर्पित रहिए। मैं भी आपके लिए भगवान से प्रार्थना करता हूँ। आपको समय पर त्रिकाल संध्या करने का प्रयास करना चाहिए, और इससे आपका केवल भला ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:41 · 20 अप्रैल 2025

प्रश्न 2947 पिता श्री, मेरा एक प्रश्न है। भविष्य में यदि महाप्रभु की कृपा से हमें युद्ध में लड़ने का सौभाग्य मिले, चाहे वह महाभारत युद्ध हो या भारतीय सेना की ओर से कोई युद्ध, तो पिता श्री, युद्ध के समय हम त्रिकाल संध्या कैसे करेंगे? क्या तब भी यह अनिवार्य होगी? जय श्री माधव।

उत्तर: देखिए, जैसे मनुष्य भोजन करके जीवित रहता है और कार्य करके जीविका कमाता है, और जैसे सूर्यदेव प्रतिदिन पृथ्वी को अपना प्रकाश देते हैं, वैसे ही त्रिकाल संध्या एक ब्रह्म तत्त्व है। इसे कभी मत छोड़िए। इसके बिना मानव जीवन अधूरा है। शास्त्र कहते हैं कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उन्हें अन्न का अधिकार नहीं है। उनका शरीर जीते-जी भी जीवित शव के समान है। उनके जीवन की कोई दिशा नहीं होती, और मानव जीवन का अर्थ ही खो जाता है। इसलिए त्रिकाल संध्या बहुत महान है। त्रिकाल संध्या पृथ्वी पर वह एकमात्र माध्यम है जिससे मानवता का सबसे बड़ा कल्याण होता है। जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है, शक्ति मिलती है, पितृ दोष से मुक्ति मिलती है, रोजगार मिलता है—सब कुछ प्राप्त होता है। सब कुछ त्रिकाल संध्या में है, इसलिए इसे कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:13 · 20 अप्रैल 2025

सत्र 164 · प्रश्न 2948–2956

L180: America का U-TURN! | अमेरिका पाकिस्तान और चीन का साथ देगा! | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 29 अप्रैल 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2948 जयपुर से लक्ष्मण शर्मा पूछते हैं: जब भगवान कल्कि का अवतार प्रकट होगा, तो उनके गुण और विशेषताएँ क्या होंगी?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। आपका प्रश्न स्वतंत्र है, जिसमें गहरे तत्त्व निहित हैं। हाँ, भगवान कल्कि के गुण क्या हैं, भगवान के गुण क्या हैं? भगवान सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण में आते हैं। परंतु भगवान को आज तक कोई पहचान नहीं पाया, न ही पहचान पाएगा। हर युग में मुट्ठी भर भक्तों ने ही भगवान को पहचाना है, और इस युग में भी ऐसा ही है। हाँ, भगवान कल्कि के मुख्य गुणों के विषय में शास्त्रों में जो लिखा है, वह मैं आपको बताता हूँ। भगवान कल्कि के शरीर के चारों ओर चार मेघ और 49 प्रकार की वायु उनके शरीर के साथ निवास करती हैं। और भगवान कल्कि की केवल इच्छा मात्र से वे अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश द्वारा विनाश कर सकते हैं। उनके शरीर से 49 प्रकार की वायु भी प्रकट हो सकती है। इसलिए वे सब कुछ अपनी इच्छाशक्ति से करेंगे। परंतु उनका मुख्य गुण यह है: इस समय भगवान कल्कि पंचभूतों के माध्यम से धर्म की स्थापना करेंगे। इन पाँचों में से अग्नि द्वारा विनाश विश्व युद्ध का रूप लेगा। वह कल्कि की लीला का एक अंश है। उसमें भक्तों की रक्षा होगी और पापियों का विनाश होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई देश विश्व का सबसे शक्तिशाली देश है; विनाश धर्म बनाम अधर्म के आधार पर होगा। इसीलिए धर्म बड़ा है। भगवान कल्कि की शक्ति की कल्पना करने का कोई उपाय नहीं है; उनकी शक्ति अनंत है, इसलिए हमारे लिए उसका वर्णन करना संभव नहीं है। परंतु मुख्य गुण यही है कि जहाँ भी पंचभूतों द्वारा विनाश होता है, जहाँ युद्ध में अग्नि के प्रभाव से पृथ्वी जलती है, जान लीजिए कि भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। और जहाँ भी रक्षा होती है, वह भगवान की कृपा से होती है। भगवान कल्कि का तत्त्व 2032 तक गुप्त रहेगा। 2032 के बाद, शायद भगवान कल्कि पहले कुछ भक्तों के लिए पहचानने योग्य होंगे। फिर धीरे-धीरे उनका प्रभाव पूरे विश्व में फैलेगा। सब उन पर विश्वास करेंगे, और तब राम राज्य की स्थापना होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 07:40 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2949 मुंबई, महाराष्ट्र से नवीन गुप्ता पूछते हैं: यदि केवल भक्ति ही पर्याप्त है, तो जब भी मन में इच्छाएँ उठें, तो सर्वोच्च इच्छा क्या होनी चाहिए? क्या वह इच्छा आवश्यक रूप से सुखद ही होनी चाहिए?

उत्तर: देखिए, मानव जीवन में सर्वोच्च इच्छा सुकर्म की होनी चाहिए। और सुकर्म और कुकर्म के बारे में हम सब जानते हैं; आज तो छोटा बच्चा भी जानता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। तो, सुकर्म का अर्थ है सत्य, शांति, दया और क्षमा का पालन करना। अथवा सत्य, शांति, दया और दान। जो इन चार सिद्धांतों का पालन करेंगे, उनकी जीवनशैली उच्च कोटि की और उत्तम होगी, और यही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए। हम सत्य का पालन करेंगे, हम शांति का पालन करेंगे, हम दया का पालन करेंगे, और हम क्षमा का पालन करेंगे। इसी से सभी साधन प्राप्त हो जाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:35 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2950 बेंगलुरु से प्रवेश का श्रीवास्तव पूछते हैं: 2025 में भारत के मेट्रो शहरों की क्या स्थिति होगी, विशेषकर जब युद्ध के संकेत हैं?

उत्तर: देखिए, यह युद्ध सबसे पहले सीमावर्ती क्षेत्रों में होगा। जब सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध होता है, तो सीमा उल्लंघन की भी संभावना रहती है। यह एक ही दिन में नहीं होगा। इसलिए इसकी चिंता मत कीजिए। सुकर्म कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और अनुशासन बनाए रखिए। हाँ, युद्ध की संभावना है, और यह और बढ़ेगा, परंतु यह एक ही दिन में नहीं होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 11:57 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2951 मध्य प्रदेश से ओम प्रकाश पूछ रहे हैं: वर्तमान मीन शनि योग (शनि का मीन राशि में गोचर) के संबंध में, क्या इसके बाद एक और विशेष मीन शनि योग आएगा जो 2029 तक चलेगा?

उत्तर: शनि का मीन राशि में गोचर 2027 के मध्य तक चलता रहेगा। उसके बाद बृहस्पति का गोचर प्रारंभ होगा। उसके बाद, पृथ्वी पर उसका बहुत बड़ा महत्व और अपार मूल्य है, तो वह समय भी आ रहा है। और एक चंद्र घटना होगी जो निश्चित रूप से सत्युग (स्वर्ण युग) का मार्ग प्रशस्त करेगी। हमारा कल्याण सभी शास्त्रों पर विश्वास करने में है क्योंकि जो शास्त्रों में लिखा है वही होगा; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 13:29 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2952 महाराष्ट्र से श्रीमती माधवी पूछती हैं: पंडित जी, प्रणाम। भारत में जो गुरु और बाबा भक्ति के नाम पर जनता को लूट रहे हैं, उनके संबंध में — क्या कभी उनका असली चेहरा सामने आएगा? क्या वे कभी बेनकाब होंगे?

उत्तर: देखिए, आपके प्रश्न पर विचार किया गया। देखिए, हम संतों का सम्मान करते हैं। यह देश संतों की भूमि है। संसार में, हर पवित्र तत्व के भीतर भी कहीं-कहीं कुछ बुराई होती है। लेकिन संसार बुरा नहीं है। यह एक महान देश था और फिर से महान बनेगा। भगवान कल्कि के आगमन के लिए वे भविष्य शास्त्र (भविष्य के शास्त्र) का भी प्रचार करेंगे। अभी भी बहुत से संत कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। एक समय आएगा जब पृथ्वी पर कोई बुराई शेष नहीं रहेगी। सभी धर्म की ओर मुड़ेंगे। हाँ, जहाँ-जहाँ छोटी-मोटी गड़बड़ियाँ हो रही हैं, वे लोग भी निश्चित रूप से बदलेंगे। आपकी सोच की दिशा सही है। समय के आने की प्रतीक्षा कीजिए। ऐसी स्थिति में एक बड़ा परिवर्तन आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:46 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2953 हरियाणा से आरती कुमारी पूछती हैं: भागवत के अनुसार, सत्व, रज और तम गुणों से आवृत परब्रह्म नारायण अपने शरीर में अनगिनत ब्रह्मांडों को धारण करते हैं। जब यह कहा जाता है कि अनगिनत ब्रह्मांड उनके भीतर स्थित हैं, और वे स्वयं को न मनुष्य कहते हैं, न जीव, न आत्मा, तो फिर उनका वास्तविक स्वरूप क्या है? शास्त्रों में यह भी लिखा है कि उन्हें पूर्ण रूप से जान पाना असंभव है। फिर भी मेरा मन बार-बार इस पर विचार करता है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए। जय जगन्नाथ।

उत्तर: देखिए, आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। उनका असली शरीर क्या है? यही उनका असली शरीर है। देखिए, भगवान निराकार हैं, भगवान अनाकार हैं, और भगवान रूप में, मानव शरीर में भी आते हैं। लेकिन बात यह है कि यह उनकी इच्छा है। एक स्थान पर तुलसीदास महाराज ने लिखा है, 'निज इच्छा निर्मित तनुधारी' (वे अपनी ही इच्छा से निर्मित शरीर धारण करते हैं)। इसका अर्थ यह है कि यदि भगवान के शरीर में करोड़ों ब्रह्मांड हैं, तो जब भगवान अवतार लेते हैं या मानव शरीर में आते हैं, तो वे करोड़ों ब्रह्मांड कहाँ जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि

भगवान संपूर्ण ब्रह्मांड को धारण करते हैं, जो हमारी आँखों की देखने की सीमा से परे है। वे संपूर्ण ब्रह्मांड का संचालन करते हैं, पर हमारी दृष्टि की परिधि उसे समझ नहीं सकती। यदि हम भक्ति, भाव और समर्पण भाव के साथ, उनके कर्मों और आंतरिक शक्ति की आत्म-अनुभूति के माध्यम से भगवान विष्णु के परम तत्व को देखें, तो हम देखेंगे कि उनकी शक्ति करोड़ों ब्रह्मांडों में है, और वे करोड़ों ब्रह्मांडों को धारण करते हैं। वे इन करोड़ों ब्रह्मांडों का संचालन करते हैं, जिन्हें मानव नेत्र समा नहीं सकते, पर मानव भक्ति में समाया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि भक्ति के माध्यम से भक्त उस वास्तविक तत्व का अनुभव कर सकता है। उसे प्रत्यक्ष देखने के लिए हमारे पास वह 'ज्ञान चक्षु' नहीं है जो भगवान ने अर्जुन को दिया था। उस नेत्र के माध्यम से अर्जुन संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वरूप को, भगवान के वास्तविक स्वरूप को देख सके। फिर भगवान ने वही ज्ञान चक्षु महाभारत युद्ध से पहले संजय को भी दिया, जिसके द्वारा वे अनंत दूर रहते हुए भी भगवान की लीला और महाभारत युद्ध के धर्म-कार्य को अनुभव कर और देख सके। इसलिए, इस सत्य को जानने के लिए हमारे पास वह क्षमता नहीं है। इसी कारण, भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए केवल योगी, संत और ऋषि ही आत्म-अनुभूति के माध्यम से भगवान की प्राप्तियों और उनके वास्तविक स्वरूप को जान सके। और आप भी कर सकती हैं। उस भक्ति में जाइए जो ऋषि-मुनियों के पास थी, तब द्वंद्व उत्पन्न नहीं होगा। और एक बात और, जब आप पूर्ण विश्वास के साथ जाते हैं, तो क्या भगवान का अनुसरण करना आवश्यक है? भगवान हैं, और पूर्ण विश्वास के साथ भगवान को समर्पित होकर, उसी समर्पण में हमें भगवान की कृपा प्राप्त होगी। हाँ, ज्ञान मार्ग का यह तत्व जो आपके मन में है, इस तत्व को आप केवल भक्ति मार्ग, तप मार्ग और ध्यान मार्ग से ही प्राप्त कर सकती हैं। प्रत्यक्ष अनुभव और प्रत्यक्ष प्राप्ति के लिए, आपको भगवान के पवित्र ज्ञान चक्षु की शक्ति प्राप्त होगी। यह संभव है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:11 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2954 उत्तर प्रदेश के बरेली से अभिषेक चौहान पूछते हैं: मैं सुधर्म महासंघ से जुड़ना चाहता हूँ, लेकिन अभी पढ़ाई कर रहा हूँ। क्या मैं पढ़ाई करते हुए, बिना कोई सेवा कार्य किए, संघ से जुड़ा रह सकता हूँ? साथ ही, त्रिकाल संध्या करते समय, कभी-कभी 101 दिनों में से किसी एक दिन कोई एक समय की संध्या छूट जाती है। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जब आप धर्म का कार्य करते हैं, तो बाधाएँ भी आती हैं। कोई एक दिन में तपस्वी नहीं बनता। कोई एक दिन में ज्ञानी नहीं बनता। यह धीरे-धीरे करना होता है। आप कुछ दिन त्रिकाल संध्या कीजिए। फिर समय के साथ वह छूटेगी नहीं। शुरुआत में अनियमितता हो सकती है। दूसरी बात, आप अपनी पढ़ाई के साथ-साथ त्रिकाल संध्या कर सकते हैं। सुधर्म महासंघ के लिए सेवा करना अनिवार्य नहीं है। हमारा लक्ष्य यह है कि भारत में लोग घर पर भागवत पढ़ें और त्रिकाल संध्या करें। यह त्रिकाल संध्या सत्युग (स्वर्ण युग) का तत्व है, जिसके माध्यम से लोग सत्युग में जाएँगे। इसमें दिन में अधिकतम 15-20 मिनट लगते हैं, यानी हर बार लगभग पाँच-छह मिनट। तो, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत का एक अध्याय पढ़िए, सुबह-शाम अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए, और पढ़ाई कीजिए। बस इतना ही। आने-जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने घर से ही कीजिए। हमसे संपर्क में रहने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। बस त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, माता-पिता का सम्मान कीजिए, और समय के अपने कार्य को, जो आपकी शिक्षा है, महत्व दीजिए। आपका कल्याण उसी में है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 20:16 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2955 हमारे घर में अलग बने पूजा स्थान में माँ लक्ष्मी और कई अन्य देवताओं की मूर्तियाँ जल गईं। हालाँकि, हमने माँ लक्ष्मी की मूर्ति की पुनः स्थापना कर दी है, विधि-विधान करवा लिया है, और पूजा चल रही है। लेकिन इसका क्या संकेत हो सकता है?

उत्तर: देखिए, भारत में कई मंदिरों में भी आग लगी है। घर का पूजा स्थान भी एक मंदिर है, और वहाँ आग की घटना हो गई। यह कोई समस्या नहीं है। आप अपनी पूजा जारी रखिए, और भगवान की कृपा प्रसन्नतापूर्वक आप पर बनी रहेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:33 · 29 अप्रैल 2025

प्रश्न 2956 मेरा प्रश्न यह है, पिताजी, मैं हॉस्टल में रहती हूँ और भगवान विष्णु की एक छोटी मूर्ति या फोटो रखना चाहती हूँ। चूँकि हम हमेशा हॉस्टल में ही भोजन करते हैं और उसे नीचे से ऊपर पूजा स्थान तक नहीं ले जा सकते, तो यदि मैं रखूँ, तो मुझे किन नियमों और धार्मिक विधियों का पालन करना चाहिए? बस यही पूछना था।

उत्तर: देखिए, यदि आप भगवान विष्णु की पूजा करना चाहती हैं, तो एक फोटो रखिए और उसकी पूजा कीजिए। मूर्ति (प्रतिमा) नहीं रखनी चाहिए क्योंकि मूर्ति की पूजा के विधि-विधान थोड़े कठिन होते हैं। इसलिए, हॉस्टल में जहाँ आप रहती हैं, अपने कमरे में एक फोटो रखिए, भगवान विष्णु की पूजा कीजिए, और अच्छे से पढ़ाई कीजिए। आपकी पढ़ाई और भी बेहतर होगी। त्रिकाल संध्या करने से आपका मन स्थिर होगा, स्मरण शक्ति बढ़ेगी, और आपकी मानसिक शक्ति बहुत मजबूत हो जाएगी। आपमें संसार में कुछ भी कर पाने की क्षमता आ जाएगी। तो, उसका भी पालन कीजिए, और भागवत का एक अध्याय पढ़िए। आपके मन की एकाग्रता बढ़ेगी, और साथ ही भगवान की कृपा से आपके शरीर की रक्षा होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:35 · 29 अप्रैल 2025

सत्र 165 · प्रश्न 2957–2964

L181: WORLD WAR 3 की आहट और भविष्य मालिका | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 2 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2957 यदि कोई सुबह 3:30 बजे उठता है, तो क्या वह हाथ-पैर धोकर त्रिकाल संध्या (तीनों समय की संध्या) कर सकता है?

उत्तर: देखिए, यदि किसी की आँख 3 बजे खुल जाती है, यदि उसकी नींद टूट जाती है, तो यह उसका परम सौभाग्य है। आप हाथ-पैर धोएँ या न धोएँ, आप तीन बार माँ गंगा का नाम लेकर, हाथ से अपने सिर को स्पर्श करके, विधि करने बैठ सकते हैं। स्नान की कोई आवश्यकता नहीं है। जहाँ बैठे हैं वहीं कर सकते हैं। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 09:10 · 2 मई 2025

प्रश्न 2958 2032 के बाद धर्म की स्थापना के पश्चात, अनंत युग में, भगवान माधव कितने वर्षों तक अपने भक्तों के साथ रहेंगे और उन्हें सेवा का अवसर देंगे?

उत्तर: देखिए, समय सबसे बलवान है। भक्तों को सही समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। समय के साथ-साथ धर्म का आचरण भी करना चाहिए। और जो मैं आपको अभी बता रहा हूँ, उसका समय के साथ अच्छे से पालन कीजिए। उसी के माध्यम से आप भगवान को प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 10:07 · 2 मई 2025

प्रश्न 2959 क्या केवल 'माधव' नाम का ही जप करना आवश्यक है? जो नारायण, राम, कृष्ण आदि नामों का जप करते हैं, क्या भगवान उनकी रक्षा नहीं करेंगे?

उत्तर: जय जगन्नाथ। आपका प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। राम, कृष्ण, हरि, गोविंद और श्याम जैसे नामों का जप करने से भी भगवान की प्राप्ति होगी और रक्षा भी मिलेगी। लेकिन इस युग के लिए शास्त्रों के अनुसार भगवान का नाम माधव है। इसलिए त्रिकाल संध्या के समय माधव नाम का ही जप करना चाहिए। अन्य समय में आप भगवान के किसी भी अवतार के नामों का जप कर सकते हैं, और उससे भी आपको लाभ मिलेगा। लेकिन इस अंतिम युग में माधव नाम बहुत शक्तिशाली है। पंचसखा ने कहा है कि जो माधव नाम का जप करेंगे, वे जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाएँगे। राधा रानी माधव नाम का जप करती थीं, और अर्जुन भी करते थे। भगवान के सबसे पवित्र भक्त माधव नाम के द्वारा ही उनके चरणों तक पहुँचे। तो भाव यह है कि सभी नामों का तत्व एक ही है, लेकिन इस युग में माधव नाम सर्वोपरि है। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 11:31 · 2 मई 2025

प्रश्न 2960 आजकल भक्त बहुत अजीब महसूस कर रहे हैं। यद्यपि भगवान की कृपा से सब कुछ ठीक है, फिर भी एक बेचैनी का भाव है। यह बेचैनी क्यों है?

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समय बदल रहा है, युग बदल रहा है, और ग्रह-नक्षत्र अपनी स्थिति बदल रहे हैं। एक नए युग का निर्माण होगा, और भगवान का प्रभाव भक्तों पर पड़ रहा है। इस समय, जैसा मालिका में कहा गया है, लोग समझ नहीं पाएँगे, निर्णय नहीं ले पाएँगे, और उनका मन और कर्म विचलित होंगे क्योंकि युग बदल रहा है। युग परिवर्तन के समय ऐसे प्रभाव देखे जाते हैं। इसलिए, इस काल से बचने के लिए अभी कुछ समय शेष है। तो इस समय आपको संध्या, भागवत पाठ और भजन में लगना चाहिए। अपने गृहस्थ कर्तव्यों का पालन कीजिए, अपने परिवार का ध्यान रखिए, और जो समय के अनुकूल चलेंगे वही आपके साथी होंगे। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 13:39 · 2 मई 2025

प्रश्न 2961 बछड़े (नर बछड़े) का क्या करना चाहिए ताकि वह कसाई के हाथ में न पड़े और पाप से भी बचा जा सके?

उत्तर: देखिए, हमारी सनातन परंपरा के अनुसार हर राज्य, हर जिले, हर कस्बे और हर ग्राम पंचायत में एक 'गौशाला' होनी चाहिए। नर बछड़े को गौशाला में छोड़ देना चाहिए और वहीं उसकी देखभाल होनी चाहिए। हमारी भी एक गौशाला है जहाँ ऐसे बहुत से बछड़े हैं, और हम उनका पालन करते हैं, क्योंकि गाय हमारे लिए देवता है। उसे गौशाला में छोड़ देना चाहिए। यदि उस क्षेत्र में कोई गौशाला नहीं है, तो सरकार से बात करके गौशाला बनवानी चाहिए; हम भी उसका सहयोग करेंगे। बछड़ों, बूढ़ी गायों और बीमार गायों का इलाज और सेवा हमारी सनातन गौशालाओं में होनी चाहिए। उन्हें किसी को बेचना नहीं चाहिए। सीधे गौशाला से व्यवस्था करके उन्हें वहाँ भिजवा देना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 15:39 · 2 मई 2025

प्रश्न 2962 क्या हम माधव के नाम के साथ राधा का नाम भी जप सकते हैं, क्योंकि माता राधा के बिना भगवान अधूरे हैं, और माता राधा ही हमें प्रेममयी, रक्षात्मक भक्ति प्रदान करती हैं?

उत्तर: देखिए, 'माधव' एक ऐसा नाम है जिसमें राधा रानी और कृष्ण दोनों के नाम एक साथ जपे जाते हैं। 'मा' का अर्थ है ब्रह्म स्वरूपा, नारायणी, विष्णु माया, सनातनी, महालक्ष्मी स्वरूपा, वेद माता, गायत्री, राधा और वसुंधरा। 'धव' का अर्थ है स्वामी। तो भगवान माधव राधा रानी के स्वामी हैं। यह गीत गोविंद में भी वर्णित है, जिसमें कृष्ण और राधा को सर्वाधिक प्रिय रास लीला का सार है। इसलिए 'माधव' नाम के जप से राधा रानी और कृष्ण दोनों के नाम एक साथ जप लिए जाते हैं। यदि फिर भी किसी का मन संतुष्ट न हो, तो वह 'राधा माधव' भी जप सकता है। वह भी स्वीकार्य है।

► यह उत्तर सुनें · 17:48 · 2 मई 2025

प्रश्न 2963 जैसे चीन के पास 'झाड़ू बम' (संभवतः हाइड्रोजन बम का अशुद्ध उच्चारण) है, क्या दूसरे देशों के पास भी है?

उत्तर: देखिए, भारत, पाकिस्तान, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस और इज़राइल जैसे देशों के पास परमाणु बम हैं। लेकिन इन परमाणु हथियारों का नियंत्रण भगवान के पास है, क्योंकि यह 'ब्रह्मास्त्र' है। इसलिए वे अस्थिर हो जाएँ तब भी इसका प्रयोग नहीं कर पाएँगे। ऊपर वाला नियंत्रण में है।

► यह उत्तर सुनें · 21:05 · 2 मई 2025

प्रश्न 2964 क्या मलिका ग्रंथों में जरासंध के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: नहीं, नहीं लिखा है। मलिका में जो लिखा है वह यह है कि दुष्ट (वृक्षों के प्रतीक रूप में) नष्ट होंगे, और 'चिरंजीवी' (अमर) भगवान के साथ रहेंगे। भक्त अवतार लेंगे, सत्य की स्थापना होगी, और एक लाख भक्त भगवान कल्कि के साथ रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 21:56 · 2 मई 2025

सत्र 166 · प्रश्न 2965–2977

L182: भारत पाकिस्तान युद्ध में विजेता कौन होगा? | मालिका में क्या लिखा है? | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 5 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2965 क्या भविष्य में युद्ध नहीं होगा? इस युद्ध में विजय किसकी होगी?

उत्तर: भविष्य के ग्रंथों में लिखा है कि तीसरे विश्व युद्ध में कुछ देश भारत के साथ होंगे और कुछ पाकिस्तान के साथ। लेकिन विजयी कौन होगा? इस पर हमारी विचारधारा यह है कि यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध होगा। इसमें संपूर्ण सनातन के पितृ तत्व का निर्णय होगा। एक ओर भारत सरकार, उसका प्रशासन और आम जनता पाकिस्तान से युद्ध करेंगे। दूसरी ओर पाकिस्तान के विरुद्ध दैवीय शक्ति का भी युद्ध होगा, जिसका किसी को पता नहीं है। दैवीय शक्ति का युद्ध केवल पाकिस्तान के विरुद्ध ही नहीं, बल्कि उन देशों के विरुद्ध भी होगा जो पाकिस्तान की सहायता करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 02:02 · 5 मई 2025

प्रश्न 2966 तो दैवीय शक्ति का युद्ध क्या है?

उत्तर: हमारी आधुनिक मशीनरी और सेना से युद्ध तो होगा ही, लेकिन देवताओं और भगवान की ओर से एक और युद्ध होगा, जिसे हम 'पंचभूत प्रलय' कहते हैं। इस युद्ध का नेतृत्व स्वयं देवता और भगवान करेंगे। जो भारत के विरुद्ध हैं, जो भारत के विरुद्ध लड़ेंगे या लड़ रहे हैं, उनके लिए आने वाला समय अच्छा नहीं है। क्योंकि भारत को जहाँ एक युद्ध का सामना करना होगा, वहीं उन्हें दो मोर्चों पर लड़ना पड़ेगा। और दैवीय शक्ति इतनी प्रबल है कि कोई भी देश उसके सामने टिक नहीं पाएगा। प्रतिदिन विनाश होगा। किसी देश में भूकंप आएगा, किसी में अग्नि प्रलय, किसी में जल प्रलय (बाढ़), किसी में अंतरिक्ष से प्रलय, और किसी में वायु प्रलय। इसके साथ ही अत्यधिक वर्षा, वर्षा की कमी और सूखा भी होगा। अन्न उपलब्ध नहीं होगा। मलिका में एक स्थान पर लिखा है: 'भारत भगवान की जन्मभूमि है; यदि हानि आएगी, तो पुनर्जन्म होगा।' यह भारत भगवान की भूमि है। और इस समय भगवान कल्कि की शक्ति भी भारत के साथ है। इसलिए यह आने वाला युद्ध पूरे विश्व के लिए एक निश्चित निर्णय होगा, और सभी भारत की शक्ति को पहचानेंगे। इस युद्ध में भारत की आध्यात्मिक विजय होगी, और विश्व के सभी देश भारत का सम्मान करेंगे। उसके बाद संपूर्ण विश्व भारत के नेतृत्व में शासित होगा, और पूरा विश्व सनातन धर्म बन जाएगा। इसलिए जो देश युद्ध करना चाहते हैं, उन्हें उसके परिणाम के बारे में भी सोचना चाहिए, और परिणाम भारत की ओर से और धर्म की ओर से आएगा। यह एक आध्यात्मिक युद्ध होगा और एक भौतिक युद्ध भी। भौतिक युद्ध हमारी सरकार, हमारे देश की सेना लड़ेगी। दूसरी ओर नारायण सेना (भगवान की सेना) की ओर से, भगवान की ओर से भी उन्हीं देशों के विरुद्ध लड़ाई होगी जो भारत के विरुद्ध कार्य करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 03:17 · 5 मई 2025

प्रश्न 2967 अमृतसर, पंजाब से प्रिया तलवार पूछती हैं: वे समय पर त्रिसंध्या करती हैं और भागवत पढ़ती हैं, लेकिन केवल अपने मोबाइल फोन से, क्योंकि उनका परिवार पुस्तक को घर लाने की अनुमति नहीं देता। क्या मोबाइल फोन से भागवत पढ़ने पर वही आध्यात्मिक फल मिलता है? कृपया इस पर मार्गदर्शन दें।

उत्तर: आपको बिल्कुल वही फल मिलेगा। आपकी भक्ति में शक्ति है, और भगवान की कृपा आप पर बनी रहे। समय आ गया है। भविष्य में सब भागवत पढ़ेंगे। सब त्रिकाल संध्या भी करेंगे। आप मोबाइल पर कर सकती हैं। अपने परिवार में सबका सम्मान कीजिए। अपने पिता और माता का सम्मान कीजिए। सुबह-शाम अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए। और अपनी भक्ति से आपको भगवान की कृपा प्राप्त होगी। इसमें कोई संदेह नहीं है। और जैसे-जैसे समय बढ़ेगा, भारत और विश्व के लोग सत्य की ओर बढ़ेंगे। करोड़ों लोग यह करेंगे, और उस समय सत्य प्रकाशित होगा। समय की प्रतीक्षा कीजिए। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 08:12 · 5 मई 2025

प्रश्न 2968 बोर से अनार व्यास जी पूछते हैं: भागवत के प्रथम स्कंध में शूकर (वराह) अवतार को दूसरा अवतार कहा गया है, जो मीन (मत्स्य) और कच्छप (कूर्म) अवतारों से पहले हुआ था। फिर त्रिसंध्या में दिए गए क्रम में शूकर अवतार मीन और कच्छप अवतारों के बाद क्यों आता है? इस क्रम में यह परिवर्तन क्यों है?

उत्तर: देखिए, मीन (मत्स्य) अवतार आदि सर्ग के समय हुआ था, जब भगवान महाविष्णु ने अपना विराट स्वरूप धारण किया था। उसके बाद भगवान ने ब्रह्मा जी, भगवान शंकर, आठ वसु, दिक्पालों और 14 मनुओं की रचना की। ब्रह्मा जी के माध्यम से सप्तऋषियों की भी रचना हुई। जब ब्रह्मा जी को भगवान से सृष्टि आरंभ करने का आदेश मिला, तो वे पृथ्वी पर आए और देखा कि वह महाप्रलय में डूबी हुई है। तो मीन अवतार आदि सर्ग में था, अर्थात् हिरण्यकशिपु के पृथ्वी का अपहरण करने से पहले भी पृथ्वी विद्यमान थी। जब हिरण्यकशिपु ने पृथ्वी का अपहरण कर उसे रसातल में ले गया, तो उससे पहले भी पृथ्वी थी, और वही पृथ्वी हिरण्यकशिपु ने चुराई थी। उससे पहले ब्रह्म प्रलय हुआ था, जिसमें भगवान ने मीन अवतार लिया। उसके बाद कुमार सर्ग आया, जब सनकादि कुमारों का जन्म हुआ। उसके बाद वराह कल्प आया। कच्छप (कूर्म) अवतार में समुद्र मंथन हुआ, और भगवान ने देवताओं के कल्याण का कार्य किया। फिर वराह (शूकर) अवतार में उन्होंने पृथ्वी पर मानव सभ्यता के लिए कार्य किया। इसलिए यह क्रम सही है: मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्कि। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:43 · 5 मई 2025

प्रश्न 2969 मेरठ से संजू कुमार पूछते हैं: श्री कृष्ण को आठवाँ अवतार माना जाता है। लेकिन कई स्थानों पर बलराम जी को भी आठवाँ अवतार कहा जाता है। ऐसा क्यों है?

उत्तर: देखिए, 'एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' (नीचे वर्णित सभी अवतार भगवान के अंश या अंशांश हैं, किंतु भगवान श्रीकृष्ण स्वयं भगवान हैं)। भगवान के जितने भी अवतार पृथ्वी पर हुए, वे सब अंश अवतार हैं। लेकिन वे किससे उत्पन्न हुए? मत्स्य, कच्छप, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्कि, सनकादि कुमार, नर-नारायण, नारद महामुनि, ऋषभ अवतार, पृथु अवतार, दत्तात्रेय अवतार—पृथ्वी पर जितने भी अवतार प्रकट हुए, सब भगवान कृष्ण के अंश से उत्पन्न हुए। जिस समय दशावतार की अवधारणा रची गई, उस समय महाविष्णु का अवतार कृष्ण हैं; वे ही जगन्नाथ हैं। इसलिए जैसे पिता संतान उत्पन्न करता है, या जब भगवान अंश अवतार में प्रकट होते हैं, तो भगवान स्वयं उस अवतार रूप में नहीं रहते; वे ऊपर ही रहते हैं, और उनसे ही वे उत्पन्न होते हैं। तो भगवान कृष्ण स्वयं भगवान हैं। उन्हीं से, उनके अंश अवतारों के रूप में, 10 अवतार, 24 अवतार और असंख्य अन्य अवतार आए। इसी कारण 10 अवतार महाविष्णु के अवतार हैं, और वे भगवान विष्णु के अंश अवतार हैं, और भगवान महाविष्णु ही कृष्ण हैं। इसीलिए, संभवतः 10 अवतारों और 24 अवतारों में भगवान बलराम को अवतार माना गया है, क्योंकि सब भगवान कृष्ण से उत्पन्न हुए और बाद में भगवान कृष्ण में ही विलीन हो गए। इसलिए कृष्ण स्वयं ही महाविष्णु हैं, आदि विष्णु हैं, सनातन हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:25 · 5 मई 2025

प्रश्न 2970 बिलासपुर से सूरज साहू पूछते हैं: जैसे कलियुग में हम लेन-देन के लिए पैसे का उपयोग करते हैं, क्या सत्ययुग में भी हमारे लेन-देन के लिए पैसे जैसी कोई व्यवस्था होगी?

उत्तर: देखिए, भविष्य मलिका ग्रंथ के अनुसार, द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने भारत और ओडिशा में कई स्थानों पर स्वर्ण मुद्राएँ रखी हैं। उन्होंने क्यों रखीं? इसलिए कि कलियुग के बाद जब सत्ययुग आएगा, तब भगवान उन स्वर्ण मुद्राओं को प्रचलन में लाएँगे। इसलिए स्वर्ण मुद्राएँ प्रचलन में रहेंगी। कागज़ के नोट नहीं चलेंगे। वर्तमान में प्रचलित लोहे और पीतल के सिक्के भी नहीं चलेंगे। केवल स्वर्ण मुद्राएँ चलेंगी, और लोग स्वर्ण मुद्राओं के बदले खरीदारी कर सकेंगे। यह भविष्य मलिका ग्रंथ में लिखा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:44 · 5 मई 2025

प्रश्न 2971 राजस्थान से अक्षय भाई जी पूछते हैं: अच्युतानंद जी कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रातः और सायं चंडी पंजर स्तुति का पाठ करता है, उसे 'चोबर्ग फल' प्राप्त होता है। कृपया इसे स्पष्ट करें। इस 'चोबर्ग फल' का अर्थ क्या है?

उत्तर: 'चोबर्ग' एक सांसारिक तत्व से जुड़ा हुआ है। 'चोबर्ग' क्या है? इसका अर्थ है कि व्यक्ति को भौतिक संसार से चार चीज़ें प्राप्त होती हैं: राजपद, राजा जैसी जीवनशैली, धन और सम्मान। जब ये चार तत्व प्राप्त हो जाते हैं, तब 'चोबर्ग' मिलता है। और 'चतुर्वर्ग' में मोक्ष की प्राप्ति के विषय में, मेरे मत में, मोक्ष प्राप्ति का तत्व मैंने शास्त्रों में केवल त्रिकाल संध्या के संदर्भ में ही पढ़ा है। अच्युतानंद जी ने जो लिखा है वह यह है कि जो व्यक्ति दुःखी है, जिसे समस्याएँ हैं, जिसे भौतिक संसार से जुड़ी परेशानियाँ हैं, उसे इस मंत्र के जप से फल मिलेगा। परंतु Satya Yuga में जाने के लिए त्रिकाल संध्या आवश्यक है। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 15:57 · 5 मई 2025

प्रश्न 2972 हम त्रिसंध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, परंतु Kali Yuga के प्रबल प्रभाव के कारण हम सत्य, प्रेम और क्षमा का पूर्ण रूप से पालन नहीं कर पाते। तो क्या हम Satya Yuga में जा पाएँगे? साथ ही, आपने कहा था कि Bhavishya Malika पुस्तक का तीसरा भाग प्रकाशित होगा। वह कब आएगा?

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या करने से भगवान की प्राप्ति निश्चित है। आप Satya Yuga प्राप्त करेंगे, मुझे विश्वास है। यदि आप मन, वचन और कर्म से सत्य, शांति, करुणा और क्षमा का पालन करते हैं, तो आप निश्चित रूप से Satya Yuga में जाएँगे। इसमें कोई संदेह नहीं है। यह भगवान की धारा है। और इस धारा में स्पष्ट लिखा है कि जो ऐसा करेंगे, उन्हें भगवान का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होगा। और दूसरी बात, आपने जिस पुस्तक के तीसरे खंड की बात की, वह तीसरा खंड अवश्य प्रकाशित होगा। हम उसे तब प्रकाशित करेंगे जब विश्वयुद्ध अपने मध्य चरण में होगा, और उसमें भक्त और भगवान के मिलन के विषय में पवित्र ज्ञान होगा। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 18:05 · 5 मई 2025

प्रश्न 2973 मैं आठ वर्ष का हूँ। आपने कहा था कि भगवान कृष्ण पूर्ण अवतार थे और इसीलिए उन्हें 10 अवतारों में सम्मिलित नहीं किया गया। परंतु भगवान Kalki भी पूर्ण अवतार हैं, तो उन्हें 10 अवतारों में क्यों सम्मिलित किया गया है?

उत्तर: देखिए, यह सत्य है कि भगवान Kalki पूर्ण अवतार हैं। यह भी सत्य है कि भगवान श्री कृष्ण ही Kalki अवतार हैं। परंतु दस अवतारों की सूची देने वाले शास्त्र द्वापर युग में रचे गए थे। भगवान Kalki इस समय आ रहे हैं, और उनकी उपासना होनी चाहिए। हमें उनकी शरण लेनी चाहिए। इसीलिए ऋषियों ने और भगवान वेदव्यास ने भगवान Kalki को दस अवतारों में अंतिम अवतार के रूप में स्थान दिया है। एक और बात, आपका प्रश्न बहुत उचित है। उस समय भगवान बलराम भी भगवान कृष्ण के बड़े भाई के रूप में आए थे। अपने बड़े भाई को सम्मान देने के लिए, सभी शास्त्र कृष्ण की इच्छा के अनुसार रचे गए हैं। उन्होंने सबके मन में यह भाव भर दिया: 'मेरे बड़े भाई का सम्मान करो।' इसलिए उन्होंने अपने बड़े भाई को सम्मान दिया और उन्हें अवतारों में सम्मिलित किया। परंतु Kali Yuga में बलराम और कृष्ण एक ही शरीर में आ रहे हैं। कोई भाई नहीं है। इसीलिए Kalki अवतार को दस अवतारों में अंतिम और पूर्ण अवतार माना जाता है। जय जय राम।

► यह उत्तर सुनें · 19:46 · 5 मई 2025

प्रश्न 2974 मैं अमेरिका में पढ़ाई कर रहा हूँ। आप जो कह रहे हैं वह सत्य है, यह सब हो रहा है। क्या मुझे भारत लौट आना चाहिए?

उत्तर: थोड़ी प्रतीक्षा कीजिए। एक-दो महीने बाद इस पर पुनः विचार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 22:57 · 5 मई 2025

प्रश्न 2975 पिताजी, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए कि Madhava का नाम निरंतर मेरी जिह्वा पर रहे, और मैं इसी शरीर में भारत आकर आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर सकूँ। कृपया आशीर्वाद दीजिए।

उत्तर: ठीक है माँ, आपको मेरा आशीर्वाद है। Madhava का नाम जपिए। समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। आप भगवान को प्राप्त करेंगी और प्रभु की कृपा पाएँगी। परंतु समय के अनुसार कीजिए। मैं आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 23:39 · 5 मई 2025

प्रश्न 2976 बाबा, एक-दो वर्ष पहले आपने मुझसे कहा था कि बहुत सावधान रहें, एक महामारी आ रही है जिससे बहुत बड़ी जनहानि होगी। मेरा प्रश्न है, क्या वह इसी वर्ष होगा, या भगवान वह 'लीला' बाद में करेंगे?

उत्तर: देखिए, महामारी के विषय में मैंने कहा था कि यह 2025 से शुरू होगी। और यदि भारत में महामारी नहीं आई है, तो वह चीन, अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका में पहले से ही हो रही है। तो मैंने केवल भारत के लिए नहीं कहा था। हमारा संदेश सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म की रक्षा और स्थापना के लिए है। तो, भगवान की कृपा से यह हमारे देश में नहीं आई है, परंतु अन्य देशों में हो रही है। भविष्य में यह और बढ़ती जाएगी। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 24:47 · 5 मई 2025

प्रश्न 2977 मैं Google पर खोज रहा था और मुझे मिला कि अच्युतानंद दास के पिता चैतन्य महाप्रभु के शिष्य थे। तो मैं सोच रहा था, क्या Bhavishya Malika चैतन्य महाप्रभु के मार्गदर्शन में लिखी गई थी? यही मेरा संदेह है।

उत्तर: बिल्कुल। अच्युतानंद जी ने लिखा है कि एक दिन भगवान चैतन्य ने पंच सखा (पाँच मित्रों) को बुलाया और उन्हें निर्देश दिया, 'मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि भविष्य के विषय में, गुप्त पुराणों के विषय में लिखो।' और भगवान चैतन्य के आदेश पर इस Bhavishya Malika ग्रंथ की रचना हुई। मैंने इस विषय में Bhavishya Malika पुस्तक के दूसरे खंड में लिखा है; पुस्तक का नाम भी उल्लिखित है। यह उस पुस्तक में लिखा गया था, और मैंने उसका हिंदी में अनुवाद कर उसका सार रचा है। यह सत्य है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 25:45 · 5 मई 2025

सत्र 167 · प्रश्न 2978–2986

L183: OPERATION SINDOOR के बाद क्या युद्ध होने वाला है ? | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 7 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2978 पंडित जी, चूँकि हम गुरुकुल में रहते हैं, हमारे यहाँ वैदिक त्रिकाल संध्या होती है, और फिर Bhavishya Malika के अनुसार बताई गई त्रिकाल संध्या भी है। क्या हम दोनों एक साथ कर सकते हैं?

उत्तर: आप बिल्कुल कर सकते हैं। कोई समस्या नहीं है। वैदिक त्रिकाल संध्या कीजिए, और नए युग के निर्माण के लिए तथा Satya Yuga में प्रवेश के लिए यह त्रिकाल संध्या भी कीजिए। आप कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 12:30 · 7 मई 2025

प्रश्न 2979 पंडित जी, आपके चरणों में मेरा सादर प्रणाम। एक महिला हैं जो Google, Facebook या YouTube का उपयोग नहीं करतीं। उन्होंने मुझसे कहा कि आप जो भी कहते हैं, वह मुझे बता दिया करें। मैंने उन्हें बताया कि इस समय इन बातों को कहना या साझा करना वर्जित है। उन्होंने उत्तर दिया, 'कोई बात नहीं, बस उनका संदेश मुझ तक पहुँचा दो।' तो क्या मुझे ऐसा करना चाहिए? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, मैंने जो भी कहा है, उसे सबमें फैलाइए। मानवता को रक्षा की आवश्यकता है, मानवता को मुक्ति की आवश्यकता है, और यह समय सनातन धर्म की रक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए इस ज्ञान की धारा को पूरी तरह फैलाइए। कोई प्रतिबंध नहीं है। त्रिकाल संध्या, भजन, श्रीमद्भागवत का पाठ, और Madhava नाम का जप—बस इतना ही। और कुछ आवश्यक नहीं है। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 12:57 · 7 मई 2025

प्रश्न 2980 पंडित जी, मेरा प्रश्न यह है कि मेरा व्यवसाय है, और प्रातःकाल की Trisandhya करने में मुझे कोई समस्या नहीं होती। परंतु दोपहर की Trisandhya उस समय आती है जब मैं अपने व्यवसाय पर होता हूँ। उस समय मैं क्या करूँ ताकि मेरा पूरा ध्यान काम के बजाय Trisandhya पर रहे? कृपया मार्गदर्शन कीजिए, क्योंकि मैं बड़ी दुविधा में हूँ।

उत्तर: यह बहुत अच्छी बात है कि आप त्रिकाल संध्या करना चाहते हैं। परंतु मैं एक बात कहना चाहता हूँ, माँ। देखिए, जब आप अपने व्यवसाय पर हों और मध्याह्न संध्या का समय आए, तो आप वहीं अपनी कुर्सी पर बैठकर त्रिकाल संध्या कर सकती हैं। मंत्रों में पाँच मिनट लगेंगे। अधिक से अधिक पाँच या छह मिनट लगते हैं। इसे ऊँचे स्वर में मत बोलिए, बस शब्दों का उच्चारण कीजिए। उसी कुर्सी पर बैठकर मानसिक गंगा स्नान कीजिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। क्योंकि त्रिकाल संध्या दिन में तीन बार की जाती है। यह बहुत अच्छा है कि आप दो बार करती हैं, परंतु तीसरी भी कीजिए। आगे का जीवन सबसे बड़ी चुनौती है—इस पृथ्वी पर मानव सभ्यता को बचाना, आपकी सुरक्षा सुनिश्चित करना, और आपको धर्म की ओर लाना। आप पहले से ही धर्म के मार्ग पर हैं, परंतु त्रिकाल संध्या ही वह तत्व है जो आपको Satya Yuga तक ले जाएगा। इसलिए इसका पालन कीजिए। उस समय पाँच या छह मिनट लगेंगे। आप इसे कुर्सी पर बैठकर, या खड़े होकर, या थोड़ा टहलते हुए भी कर सकती हैं। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 13:59 · 7 मई 2025

प्रश्न 2981 पंडित जी, यह जो एयर स्ट्राइक हुई है, इसके बाद कुछ और होगा, या अब यह खत्म हो गया?

उत्तर: देखिए, यह मैं पहले भी कह चुका हूँ। पहले पाकिस्तान छाया युद्ध (शैडो वॉर) करेगा। छाया युद्ध के बाद वह अपने सहयोगियों के साथ मिलकर तीन बड़े युद्ध लड़ेगा। और देखिए, धर्म और सनातन की रक्षा के लिए सत्ययुग एक ही दिन में नहीं आ जाता। इसलिए इसमें बहुत समय लगेगा। यह चलता रहेगा, और बाद में यह विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:43 · 7 मई 2025

प्रश्न 2982 पंडित जी, जो लोग इस आध्यात्मिक धारा से जुड़े हैं, वे त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। यदि जो लोग इस धारा में नहीं हैं, वे भी त्रिकाल संध्या करें, तो क्या उन्हें भी वही लाभ मिलेगा?

उत्तर: देखिए, लाभ सभी को मिलेगा। अभी समय है; समय बीता नहीं है। पूरे विश्व को अब इस त्रिकाल संध्या का पालन करना चाहिए, क्योंकि भगवान सबके पिता हैं, और प्रभु सबका उद्धार करेंगे। किसी ने पाप किया हो या न किया हो, कोई धर्मी हो या अधर्मी, भगवान सबको बदलना चाहते हैं। इसलिए संध्या की धारा और भागवत का नाम—अभी समय है। हम समय के साथ इसका प्रचार करते रहेंगे। और जो इसका पालन करना चाहते हैं, जो सत्ययुग में जाना चाहते हैं, उन्हें इसका पालन करना चाहिए। यह उनके ही कल्याण के लिए होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:37 · 7 मई 2025

प्रश्न 2983 प्रणाम पंडित जी। आपने अपने एक वीडियो में कहा था कि त्रिकाल संध्या आवश्यक है। क्या इसका अर्थ यह है कि बच्चों सहित सभी को इसे करना चाहिए? साथ ही, इसके समय क्या हैं, और क्या इसे करने से सभी देवी-देवता प्रसन्न होंगे?

उत्तर: एक ब्रह्म मुहूर्त से सूर्योदय तक करनी चाहिए। दूसरी सूर्योदय से सुबह 11 बजे तक, या सुबह 11:30 से दोपहर 12:30 के बीच। तीसरी सूर्यास्त से 15 मिनट पहले करनी चाहिए। और हाँ, सभी देवी-देवता प्रसन्न होंगे। त्रिकाल संध्या में स्वयं महाविष्णु की उपासना होती है। क्योंकि भगवान महाविष्णु की उपासना होती है, इसलिए सभी देवता आनंदित हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:38 · 7 मई 2025

प्रश्न 2984 पंडित जी, मैं एक इंजीनियरिंग का छात्र हूँ। मैं यह पूछना चाहता था कि छात्र के रूप में, जो अक्सर अकेले रहते हैं, हम कभी-कभी ऐसी चीज़ें देख या सुन लेते हैं जो कामवासना जगा देती हैं, जो बहुत प्रबल हो सकती है। यह मेरे लिए और मेरे कई छात्र मित्रों के लिए भी समस्या है जो इसी आध्यात्मिक मार्ग पर हैं। हम क्या करें कि हमारा मन हमेशा प्रभु के चरणों में लगा रहे, तब भी जब हम उनका नाम जप रहे हों?

उत्तर: जय श्री माधव। देखिए, त्रिकाल संध्या करने से मन की एकाग्रता बढ़ती है और स्मरण शक्ति तेज़ होती है। आपको प्रभु की कृपा, भगवान गणपति की कृपा, माँ सरस्वती की कृपा, और भगवान विष्णु की प्रत्यक्ष कृपा प्राप्त होती है। इसलिए आपकी पढ़ाई भी अच्छी होगी। अपने माता-पिता का सम्मान करें, सही समय पर अपनी उपासना करें, और अच्छे से पढ़ाई करें। जैसे नदी का धर्म है समुद्र तक पहुँचना, वैसे ही मनुष्य का धर्म है अपना कर्तव्य निभाना। यदि कोई व्यक्ति अपनी आयु के अनुसार निर्धारित कर्तव्य नहीं निभाता, तो यह मानव जीवन के धर्म का पालन न करने के समान है। यह हमारा निर्धारित कर्तव्य है। इसलिए पढ़ाई करें, त्रिकाल संध्या करें, माधव का नाम जपें, और माता-पिता का सम्मान करें। बस उसी पर ध्यान दें, उससे आगे मत सोचें। इसी में आपका कल्याण है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 19:07 · 7 मई 2025

प्रश्न 2985 पंडित जी, भविष्य मालिका भाग 2 में उल्लिखित जगन्नाथ अष्टकम और जगन्नाथ सहस्रनाम के बारे में—इनका पाठ कब करना चाहिए? सुबह, या किसी भी समय? इसके क्या नियम हैं?

उत्तर: इनका पाठ करने के लिए आपको सुबह या शाम को करना चाहिए। यदि आप जगन्नाथ अष्टकम का पाठ करना चाहते हैं, तो हाथ-पैर धोकर कर सकते हैं। यदि आप सुबह करना चाहते हैं, तो स्नान के बाद जगन्नाथ अष्टकम का पाठ कर सकते हैं। क्योंकि यह भगवान जगन्नाथ महाप्रभु की सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली उपासना या मंत्र है। इस मंत्र का पाठ पूर्ण पवित्रता के साथ करना चाहिए। सुबह और शाम अच्छे समय हैं। अन्यथा, आप सोने से पहले भी पैर धोकर जगन्नाथ अष्टकम या जगन्नाथ सहस्रनाम का पाठ कर सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:07 · 7 मई 2025

प्रश्न 2986 पंडित जी, छोटे बच्चों के बारे में, जैसे मेरा छोटा बेटा—वह सुबह और शाम की पूरी त्रिसंध्या करता है, हम उससे रोज़ भागवत का एक अध्याय पढ़वाते हैं, और वह दिन में तीन बार मंत्र जपता है। लेकिन स्कूल की वजह से वह दोपहर वाली नहीं कर पाता क्योंकि उसे याद नहीं रहता। इसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर: जो लोग दोपहर में संध्या नहीं कर पाते, उनसे मैं कहता हूँ कि माधव का नाम 108 बार जपें। बस 'मत्स्य, वराह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, श्री' नामों का 36 बार जप करें, और दुर्गा माधव नाम का भी 36 बार जप करें। इससे त्रिकाल संध्या पूरी हो जाएगी, और उससे भी आपको लाभ मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:10 · 7 मई 2025

सत्र 168 · प्रश्न 2987–2992

L184: तृतीय विश्व युद्ध के बारे में मालिका में क्या लिखा है? | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 9 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2987 क्या पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर इस वर्ष भारत में मिल जाएगा?

उत्तर: देखिए, यह भारत की संप्रभुता का विषय है और एक गुप्त मिशन है। मैं इस पर खुलकर नहीं बोलूँगा, क्योंकि यदि मैं ऐसा करूँ तो यह हमारे देश के अनुशासन और संविधान के संबंध में मेरी ज़िम्मेदारी की सीमा लाँघना होगा। इसलिए मैं नहीं कहूँगा। हाँ, बहुत से लोग इधर-उधर बातें कहते हैं। मैंने इस पर कभी खुले तौर पर विचार नहीं किया। हाँ, यदि मैं उन लोगों से मिलूँ तो किसी भागवत कथा के दौरान गुप्त रूप से इस पर चर्चा कर सकता हूँ। लेकिन यह सरकार की ज़िम्मेदारी है, और मैं इस विषय पर कोई उत्तर नहीं दूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 06:52 · 9 मई 2025

प्रश्न 2988 एक यूट्यूब दर्शक ने पूछा है: क्या मीन शनि योग (शनि का मीन राशि में गोचर) के बारे में जो कुछ लिखा गया है, वह सब इन ढाई वर्षों में हो जाएगा?

उत्तर: देखिए, भविष्य शास्त्र की रचना भगवान जगन्नाथ की कृपा से और भगवान के नित्य भक्तों, वैकुंठ के नित्य पंचसखा द्वारा हुई है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। जो कुछ लिखा है, उसके समय में कुछ अंतर हो सकता है, लेकिन जो कुछ लिखा है वह सब होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 07:43 · 9 मई 2025

प्रश्न 2989 एक और प्रश्न है, क्या श्री जगन्नाथ यात्रा इस वर्ष से बंद हो जाएगी?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका शास्त्र में लिखा है... 2025 से नहीं, बल्कि 2022 से, जब से यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ—क्योंकि यह विश्व समुदाय के लिए लिखा गया था—तब से पृथ्वी पर कृषि की हानि और भुखमरी बढ़ेगी। यह लिखा था। और यह भी लिखा था कि भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा छह वर्षों के लिए रुक जाएगी। यह विचार शनि के मीन राशि में गोचर के दौरान उभर रहा है। कार्य प्रभु की कृपा और प्रभु की इच्छा के अनुसार होगा। भविष्य में यह अवश्य होगा, लेकिन समय भगवान निर्धारित करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 08:18 · 9 मई 2025

प्रश्न 2990 पंडित जी, एक अन्य यूट्यूब दर्शक ने पूछा है: जिन्हें त्रिकाल संध्या (दिन में तीन बार की उपासना) के लिए समय नहीं मिलता, उनका क्या होगा?

उत्तर: देखिए, एक समय आ रहा है जब सब घर पर बैठे होंगे। तो फिर अभी से त्रिकाल संध्या क्यों न शुरू कर दें? जब घर पर बैठने का समय आएगा, तब सब करेंगे। लेकिन जो पहले करेंगे उन्हें फल पहले मिलेगा, और जो बाद में करेंगे उन्हें फल बाद में मिलेगा। इसलिए समय व्यर्थ न करें। त्रिकाल संध्या आपके लिए भोजन के समान है। शास्त्रों के अनुसार, त्रिकाल संध्या किए बिना भोजन करने का अधिकार नहीं है। इसलिए आपको जो भी करना हो, पहले त्रिकाल संध्या करें, क्योंकि जीवन की रक्षा के लिए त्रिकाल संध्या एक हीरे का कवच है जो व्यक्ति को आने वाली विपत्तियों से बचा सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 09:16 · 9 मई 2025

प्रश्न 2991 एक और प्रश्न है, पंडित जी। कहते हैं कि भगवान सर्वशक्तिमान हैं। वे बिना विनाश के भी धर्म की स्थापना कर सकते हैं। फिर विनाश क्यों आवश्यक है?

उत्तर: वास्तव में बहुत अच्छा प्रश्न है। लेकिन मैं आपसे एक बात पूछता हूँ। भगवान बिना विनाश के धर्म की स्थापना कर सकते हैं, यह सत्य है। परंतु एक और बात भी सत्य है। यदि भगवान विनाश नहीं लाएँगे, तो जो लोग आज निर्दोष, असहाय जीवों की हत्या करते हैं, जो आज संसार में धर्म का उल्लंघन करते हैं, जो आज वेदों में विश्वास नहीं करते, जो निर्दयता से गौ माता और अन्य पशुओं की हत्या करते हैं—क्या ऐसे लोग भगवान की धर्म-स्थापना को स्वीकार करेंगे? इसीलिए सफ़ाई आवश्यक है, और भगवान सफ़ाई करते हैं। वे अच्छे लोगों को रखते हैं और उन पौधों को हटा देते हैं जो मानवता के लिए विषैले हैं। धर्म की स्थापना मानव जाति के कल्याण के लिए आवश्यक है। अन्यथा, मनुष्य कभी नहीं सुधरेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:07 · 9 मई 2025

प्रश्न 2992 पंडित जी, यूट्यूब के एक दर्शक की ओर से एक और प्रश्न है। क्या विनाश को अब भी टाला या रोका जा सकता है?

उत्तर: बिल्कुल, विनाश को अब भी रोका जा सकता है। यदि पूरी दुनिया के लोग शाकाहारी हो जाएँ, यदि पूरा विश्व सनातन धर्म को स्वीकार कर ले, यदि विश्व भर के हर गाँव और हर शहर में यज्ञ अनुष्ठान हों, और यदि पूरी दुनिया में माधव के नाम का जप हो, तो यह विपत्ति टल जाएगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:17 · 9 मई 2025

सत्र 169 · प्रश्न 2993–3005

L185: विश्व युद्ध एवं पंचभूत प्रलय में रक्षा पाने के उपाय? | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 12 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 2993 मानव समाज की रक्षा कैसे होगी? आने वाली विपत्तियों से मनुष्यों को सुरक्षा कैसे मिलेगी?

उत्तर: मैं आज भी इस पर चिंतन कर रहा हूँ। मार्ग केवल एक ही है। मार्ग तो बहुत थे, लेकिन सत्य युग में प्रवेश करने के लिए मार्ग केवल एक है। वह है त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों में की जाने वाली प्रार्थना)। त्रिकाल संध्या में भागवत का पाठ, माधव नाम का जप, भगवान महाविष्णु के 16 नाम, और भगवान विष्णु के दस अवतार—जो लोग ये कार्य करेंगे, उनका उद्धार होगा और उन्हें सत्य युग के लिए दैवी कृपा प्राप्त होगी। यह भविष्य शास्त्र और समस्त शास्त्रों का विधान है। आज हम जिस समय में हैं, वह एक विराम है; यह अंत नहीं है। यह अंत नहीं है; यह एक विराम है। और यह विराम तब समाप्त होगा जब पृथ्वी पर सनातन की पूर्ण रूप से पुनःस्थापना हो जाएगी। इसलिए इस समय हमें भगवान की शरण लेनी चाहिए और धर्म स्थापना के कार्य में हमें माधव नाम का प्रचार करना चाहिए, त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, और भागवत का पाठ करना चाहिए। इसलिए जो लोग शाकाहारी बनेंगे, त्रिकाल संध्या करेंगे, और माधव नाम का जप करेंगे, वे कलियुग के विनाश से सुरक्षित रहेंगे और अपने जीवन का सबसे आनंदमय समय देखेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 01:54 · 12 मई 2025

प्रश्न 2994 मैं यह पूछना चाहती थी कि हमारी सेना और हमारे भारत की रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए? हम घर पर रहकर क्या कर सकते हैं जिससे उनकी रक्षा हो सके?

उत्तर: देखिए, आज हमारी भारतीय सेना से एक व्यक्ति आई थीं, उनके पति भी आए थे। मैंने उन्हें भागवत महापुराण दिया, त्रिकाल संध्या के बारे में बताया, और माधव नाम भी दिया। मैंने उनसे कहा कि यदि युद्ध के दौरान कोई विपत्ति आए, तो माधव नाम का जप करें और समय पर त्रिकाल संध्या करें। भागवत का पाठ करें। इसके द्वारा आपकी रक्षा हो सकती है, और आप शत्रु पक्ष से आने वाली विपत्तियों से स्वयं को बचा सकते हैं। यह एक माध्यम है: भागवत का पाठ। दूसरा है त्रिकाल संध्या, और तीसरा है माधव नाम। और जो युद्ध नहीं लड़ रहे हैं, उन्हें भी केवल माधव नाम का जप करने से लाभ मिलेगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 07:05 · 12 मई 2025

प्रश्न 2995 पिताजी, मैं बस यह कहना चाहती हूँ कि यहाँ युद्ध का वातावरण बन रहा है, मैं बार-बार आपके चरणों में प्रणाम करती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि आप हमें ऐसा आशीर्वाद दें कि हम धर्म से जुड़े रहें, डगमगाएँ नहीं, हमारा साहस न टूटे, और हम केवल भगवान के प्रति समर्पित रहें। कृपया हमें अपना आशीर्वाद दें।

उत्तर: आपकी विचारधारा अच्छी है। माधव की शरण में रहें। पूर्ण भक्ति और श्रद्धा के साथ त्रिकाल संध्या करें और भागवत का पाठ करें। आप आने वाली समस्याओं और आने वाले समय को पार कर पाएँगे और सत्य युग की ओर बढ़ेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:08 · 12 मई 2025

प्रश्न 2996 मेरे माता-पिता त्रिकाल संध्या नहीं करते। यदि मैं करना शुरू कर दूँ, तो क्या भगवान समय आने पर मेरे माता-पिता की भी रक्षा करेंगे? क्या वे सत्य युग में प्रवेश कर पाएँगे? यदि मैं कल से त्रिकाल संध्या शुरू करूँ, तो क्या मुझे अभी से इसका लाभ मिलना शुरू हो जाएगा? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: बिल्कुल, यदि आप अभी भी त्रिकाल संध्या शुरू करते हैं तो आपको लाभ मिलेगा। त्रिकाल संध्या के साथ-साथ भागवत का एक अध्याय पढ़ें और जब भी समय मिले माधव नाम का जप करें। मेरे विचार में, जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं, माधव नाम का जप करते हैं, और भगवान कल्कि की शरण में रहते हैं, उन्हें आने वाली धर्म स्थापना के दौरान सत्य युग में प्रवेश करने का भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होगा। और मैं यह भी चाहता हूँ कि आप सब यह करें, ताकि आपके परिवार को सुरक्षा मिले और आपको भी मिले। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:58 · 12 मई 2025

प्रश्न 2997 जो लोग भावनात्मक रूप से पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हैं लेकिन शारीरिक रूप से त्रिकाल संध्या करते हैं, क्या वे सुरक्षित रहेंगे?

उत्तर: बिल्कुल रहेंगे। शारीरिक हो या भावनात्मक... भाव बाद में आता है; पहले शारीरिक कर्म आता है। कुछ दिनों तक शारीरिक स्तर पर भक्ति और पूजा करने के बाद, भय से ही सही, भाव उत्पन्न होता है। भाव से भक्ति आती है। भक्ति से समर्पण आता है। और समर्पण से मुक्ति आती है। इसलिए जो लोग समय के साथ, केवल कर्तव्य भाव से भी, त्रिकाल संध्या का पालन करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सुरक्षा कवच प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:59 · 12 मई 2025

प्रश्न 2998 क्या हम अपने सभी कर्म भगवान को समर्पित करके और जाने-अनजाने में किए गए पूर्व जन्मों के पाप कर्मों से मुक्त होकर सदा के लिए भगवान को प्राप्त कर सकते हैं? यदि हाँ, तो हमें अपना शेष जीवन कैसे बिताना चाहिए जिससे हमें परम भगवान की कृपा प्राप्त हो सके? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, इस जन्म के कर्म और प्रारब्ध (पूर्व जन्मों के संचित कर्म) को भगवान को समर्पित करना हमारे लिए संभव नहीं है। केवल एक ही उपाय है। यदि हम त्रिकाल संध्या करें, भागवत पढ़ें, और माधव नाम का जप करें, तो हमारे पूर्व जन्मों का प्रारब्ध और इस जन्म के बुरे कर्म कट जाएँगे। अर्थात् वे मिट जाएँगे, और तब हम पुण्यात्मा बन सकते हैं और जीवन के परम लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:50 · 12 मई 2025

प्रश्न 2999 सादर प्रणाम, पंडित जी। अब जब युद्ध शुरू हो गया है, तो क्या हम अपने सैनिकों और अग्रिम मोर्चे पर काम करने वालों के लिए कोई विशेष प्रार्थना या उपाय कर सकते हैं जिससे वे सुरक्षित रहें और अपने धर्म-कर्तव्यों का सफलतापूर्वक पालन कर सकें? कृपया सभी का मार्गदर्शन करें।

उत्तर: मेरे साथ जुड़े सभी भक्तों के लिए मेरा संदेश है कि माधव से प्रार्थना करें और त्रिकाल संध्या के समय भारत के सम्मान और सुरक्षा की कामना करें, कि हमारी सेना को भगवान की कृपा और शक्ति प्राप्त हो। हमारी सेना अच्छी तरह लड़े और राष्ट्र का सम्मान बढ़ाए। और भगवान से की गई यह सामूहिक प्रार्थना—अर्थात् जब सब मिलकर करें—इसका फल निश्चित रूप से हमारे सैनिकों तक पहुँचेगा। यह मेरा मत है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 16:02 · 12 मई 2025

प्रश्न 3000 प्रभु, मैं अमेरिका में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ। आप जो कुछ कह रहे हैं, वह सब सत्य है। क्या मुझे अब भारत लौट आना चाहिए?

उत्तर: मेरे विचार में... अमेरिका से एक और सज्जन ने मुझसे मेरी राय पूछी थी कि क्या उन्हें अब अमेरिका, यूएस छोड़ देना चाहिए। अभी नहीं, दो-तीन महीने प्रतीक्षा करें। मैंने पिछले सत्संग में उनसे यही कहा था। मैं आपसे भी यही कह रहा हूँ। दो-तीन महीने प्रतीक्षा करें। हम परिस्थिति का अध्ययन करेंगे, और जब मैं कहूँ, तब आपका लौट आना अच्छा होगा। फिलहाल, दो-तीन महीने प्रतीक्षा करें। जय।

► यह उत्तर सुनें · 17:04 · 12 मई 2025

प्रश्न 3001 पिताजी, मेरा एक छोटा-सा प्रश्न है। अगर हम किसी को, चाहे हम उसे जानते हों या न जानते हों, यह कहें कि माधव नाम का जप करो या त्रिकाल संध्या करो ताकि वह इस आध्यात्मिक मार्ग से जुड़ सके, तो हमें उनके पास किस तरह जाना चाहिए कि वे थोड़े धैर्य से हमारी बात सुनें और यह विश्वास करें कि कुछ सत्य घटित हो रहा है, कि यह सच होने वाला है, और प्रभु आ रहे हैं?

उत्तर: देखिए, मेरे विचार से आपको किसी को भी माधव नाम के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति शारीरिक या मानसिक रूप से परेशान है, जो कष्ट भोग रहा है, जिसे भगवान की कृपा चाहिए—अगर वह मांगे, तब उसे माधव नाम के बारे में बताइए। बिना पूछे, बिना उनकी कोई रुचि दिखाए, आपको उनके पास यह लेकर नहीं जाना चाहिए। क्योंकि वह हमारी विचारधारा नहीं है। हमारी विचारधारा यह है कि अगर कोई कष्ट में है, तो आपको उसका उपाय भी बताना चाहिए। जय।

► यह उत्तर सुनें · 17:52 · 12 मई 2025

प्रश्न 3002 जय श्री पिता श्री, क्या हम इसके स्थान पर हरे कृष्ण महामंत्र का जप कर सकते हैं?

उत्तर: हरे कृष्ण महामंत्र का जप सदैव कीजिए। हमारे सनातन धर्म के मूल मंत्र का जप कीजिए। साथ ही, त्रिकाल संध्या के लिए जो मंत्र निर्धारित किया गया है, उसका भी जप कीजिए। जय जय मां।

► यह उत्तर सुनें · 19:21 · 12 मई 2025

प्रश्न 3003 मुझे यह भागवत पाठ पंजाबी में चाहिए। मैंने और मेरी माताजी ने इसे ऑर्डर किया था, पर हमें पता नहीं कि यह मिलेगा या नहीं। क्या हमें यह पंजाबी में मिल सकता है, या हमें हिंदी में ही लेना पड़ेगा, गुरुजी?

उत्तर: यह 15 दिन में पंजाबी में उपलब्ध हो जाएगा। इसके लिए कार्य चल रहा है। अधिक से अधिक 15 से 20 दिन में हम इसका अनुवाद पंजाबी भाषा में उपलब्ध करा देंगे। अंग्रेज़ी संस्करण भी 15 दिन में तैयार हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:02 · 12 मई 2025

प्रश्न 3004 पिता श्री, मेरा प्रश्न यह है कि हम लोगों को धर्म की ओर कैसे लाएं? जब मैं उन्हें बताता हूं, तो वे हंसते हैं। वे कहते हैं कि कलियुग अभी समाप्त नहीं हुआ है और पूछते हैं कि मैं किसके प्रभाव में आ गया हूं। मैं उन्हें देखने के लिए वीडियो भेजता हूं, पर वे देखते तक नहीं; बस अनदेखा कर देते हैं। तो पिता श्री, कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: जिसके भाग्य में नहीं है, वह कहेगा कि कलियुग समाप्त नहीं हुआ। और जिसके भाग्य में सत्ययुग में प्रवेश करना है, वह पहले से ही जानता है कि युग बदल रहा है। तो जो भाग्यशाली हैं, उन्हें यह प्राप्त होगा। जिन्होंने अपने पूर्व जन्मों में पुण्य कर्म किए हैं, वे कहेंगे, 'हां, युग समाप्त हो गया है।' जिनके भाग्य में नहीं है, वे कहेंगे, 'नहीं, युग समाप्त नहीं हुआ।' वे बस अपने समय की प्रतीक्षा करेंगे और अपने रास्ते चलेंगे। हमें उससे क्या लेना-देना? किसी पर ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए, कोई धर्मांतरण नहीं। हम चाहते हैं कि धर्म का प्रकाश फैले, सनातन की रक्षा हो, और जो पहले से ही सत्ययुग के लिए भगवान की सूची में हैं, वे अवश्य विश्वास करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:36 · 12 मई 2025

प्रश्न 3005 मुझे ऑपरेशन के 'सिंदूर' शब्द को लेकर एक अनुभूति हुई। अगर आप इसे 'sin' और 'door' में तोड़ें, तो 'sin' का अर्थ है पाप और 'door' का अर्थ है दूर रखना या हटाना। तो 'सिंदूर' का अर्थ हुआ घर से पाप को दूर करना। क्या यह समझ सही है?

उत्तर: यह बिल्कुल सत्य है। पाप को दूर करने के लिए यह सरकार का एक बड़ा कदम है, और यह आध्यात्मिक विचारधारा से भी मेल खाता है। मां भगवती का सिंदूर है, और हमारी माताओं का सिंदूर है जिनका विवाह होता है, हमारे देश की देवियों का सिंदूर। यह सब एक ही है। वह सिंदूर धर्म की रक्षा करता है और पाप का नाश भी करता है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 27:50 · 12 मई 2025

सत्र 170 · प्रश्न 3006–3020

L186: 64 प्रकार की महामारी | त्रिकाल संध्या निदान | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 22 मई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3006 बरनाला, पंजाब से दर्शना शर्मा पूछ रही हैं: आपकी पुस्तक में बताई गई त्रिकाल संध्या और जो पहले से प्रचलित है, इन दोनों में से हमें किसका पालन करना चाहिए?

उत्तर: जय श्री माता। आपको त्रिकाल संध्या की वही विधि अपनानी चाहिए जो दूसरी पुस्तक में दी गई है।

► यह उत्तर सुनें · 07:03 · 22 मई 2025

प्रश्न 3007 दूसरा प्रश्न महाराष्ट्र के नागपुर से प्रियंका का है। वे पूछती हैं कि श्वेत तुलसी के बारे में भविष्य मालिका पुराण क्या कहता है?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका में, जय फूल मालिका में लिखा है... 'गरुसी बिल जी ब्रह्म रसी'। तुलसी, मेरे विचार से, तुलसी माता, एक हैं समेत तुलसी, जिन्हें हम राधा रानी के नाम पर राधा तुलसी कहते हैं। एक काले रंग की कृष्ण तुलसी होती है। और यह गोरे वर्ण की है, अर्थात पूर्णतः सफेद रंग की तुलसी। संभवतः यह श्री वृंदावन में थी, और अंग्रेज़ों के शासन काल में वे इसे हमारे देश से ले गए। प्रभु उस पौधे को भारत में वापस लाएंगे, और सत्ययुग में वही तुलसी होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 07:42 · 22 मई 2025

प्रश्न 3008 कानपुर से मुकुंद अग्रवाल पूछते हैं: आने वाली धर्म स्थापना में पशु-पक्षियों का क्या होगा? समाज का अभिन्न अंग रहे इन जीवों के लिए हम धर्म स्थापना के समय किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?

उत्तर: सभी 56 करोड़ जीव रहेंगे। युग बदलेगा, और पशु भी बात करेंगे। उनकी अपनी विचारधाराएं होंगी और वे बहुत ज्ञानी हो जाएंगे। ये जीव वैसे नहीं रहेंगे जैसे कलियुग में हैं; वे भी मनुष्यों से और मनुष्य की भाषा में बात करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:05 · 22 मई 2025

प्रश्न 3009 हल्द्वानी, उत्तराखंड से मोहित पंत पूछते हैं: संध्याकालीन त्रिकाल संध्या का सही समय क्या है जो पूरे वर्ष के लिए उपयुक्त हो? क्या गर्मी और सर्दी के अनुसार समय में परिवर्तन करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या पूर्णतः सूर्य देव के उदय और अस्त पर निर्भर करती है। सूर्योदय और सूर्यास्त का समय हर राज्य में अलग-अलग होता है। तो अगर आप हिमाचल में त्रिकाल संध्या करते हैं, तो वहां संध्या बाद में होती है। आपको देखना चाहिए कि सूर्य देव कब अस्त होते हैं, और सूर्यास्त से 15 मिनट पहले और 15 मिनट बाद त्रिकाल संध्या करने से आपको पूर्ण लाभ मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:55 · 22 मई 2025

प्रश्न 3010 महाराष्ट्र से पवन सोलंकी पूछते हैं: जय श्री माधव, पंडित जी। मेरा प्रश्न है कि अगर कोई आपको आवाज़ दे दे या किसी कारणवश त्रिकाल संध्या अधूरी रह जाए, तो क्या यह पाप माना जाएगा? क्या अधूरी त्रिकाल संध्या निष्फल मानी जाएगी?

उत्तर: देखिए, अगर अत्यंत आपातकालीन स्थिति हो, तब तो आप बात कर सकते हैं, पर उससे पहले नहीं। अगर कोई फोन करे, तो उस समय फोन मत उठाइए। कम से कम अपना फोन स्विच ऑफ कर दीजिए। इसमें केवल पांच-छह मिनट ही लगते हैं, और उन पांच-छह मिनटों के लिए हमें पूर्ण भक्ति में रहना चाहिए। दूसरी बात, अगर कोई उस समय आपको बुलाए, तो उसे बता दीजिए कि आप त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। फिर त्रिकाल संध्या का अपना मंत्र जपते रहिए। इसमें कुछ भी अधूरा नहीं होता। आप एक क्षण के लिए, मान लीजिए एक मिनट या 50 सेकंड, उनसे बात भी कर सकते हैं, 'देखिए, मैं अभी व्यस्त हूं, बाद में बात करूंगा,' और फिर अपनी त्रिकाल संध्या जारी रखिए। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 10:51 · 22 मई 2025

प्रश्न 3011 कुरुक्षेत्र, हरियाणा से संगीता कौशिक पूछती हैं: पंडित जी, सादर प्रणाम। मैं जानना चाहती हूँ कि जैसे द्वापर युग में भगवान ने कुरुक्षेत्र में अपनी दिव्य लीला की थी, क्या इस बार भी माधव कुरुक्षेत्र में कोई लीला करेंगे? क्या भविष्य मालिका में इस बारे में कुछ लिखा है? कृपया अवश्य बताइए।

उत्तर: निश्चित रूप से लिखा है। द्वापर युग में कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर भगवान श्रीकृष्ण की महान लीला हुई थी, जहाँ धर्म की पुनः स्थापना हुई। वह एक युग-परिवर्तनकारी घटना थी, और भगवान ने धर्म की रक्षा के लिए एक महान कार्यक्रम किया था। लेकिन कलियुग में ओडिशा ही कुरुक्षेत्र बनेगा। भविष्य मालिका में लिखा है... 'एक जुग महाभारत ओडिशा भू प्रमाण, सब उत्पत्ति हुई ठीक ठिके राम सुन।' इसका अर्थ है कि ओडिशा की पवित्र भूमि पर यह महाभारत ओडिशा में होगा, और सब कुछ ओडिशा से ही उत्पन्न होगा। इसलिए भगवान कल्कि कुरुक्षेत्र जाएँगे और भक्तों से मिलेंगे। परंतु धर्म युद्ध का आरंभ ओडिशा में होगा, और वह युद्ध, महाभारत का शेष भाग, ओडिशा में ही होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:56 · 22 मई 2025

प्रश्न 3012 जालना, महाराष्ट्र से ओंकार पाटिल पूछते हैं: नमस्ते, पंडित जी। मैं एक UPSC अभ्यर्थी हूँ और IFS में जाकर वनों की सेवा करना चाहता हूँ। मैं प्रतिदिन त्रिकाल संध्या करता हूँ और भक्ति के मार्ग पर चल पड़ा हूँ। मालिका के अनुसार यदि सब कुछ नष्ट ही होने वाला है, तो क्या आज जो विद्यार्थी अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की सोच रहे हैं, वे सफल हो पाएँगे? यदि भविष्य में ये संस्थाएँ रहेंगी ही नहीं, तो क्या हमें फिर भी UPSC जैसी परीक्षाओं की तैयारी जारी रखनी चाहिए? क्या मेरे जैसे लोगों को, जिनमें सेवा की इच्छा है और जो प्रकृति से जुड़े हैं, यह अवसर मिलेगा? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, भगवान ने गीता में कहा है, 'अपना कर्म करो।' मेरी पहली सलाह यह है कि UPSC की और भी अच्छी तैयारी कीजिए। और चूँकि आप त्रिकाल संध्या करते हैं, इसलिए आपको उसमें सफलता भी मिलेगी। क्योंकि जो बच्चे शिक्षा में हैं और असफल हैं, वे त्रिकाल संध्या के मार्ग पर चलकर, उनका मनोबल, स्मरण शक्ति और भगवान की कृपा — सब बढ़ती है, और वे सफल हो जाते हैं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे कभी असफल नहीं होते। मेरी दृष्टि में, यदि आप त्रिकाल संध्या करते हैं, तो UPSC के लिए आवेदन कीजिए; आप अवश्य सफल होंगे। साथ ही, धर्म की रक्षा के लिए त्रिकाल संध्या करते रहिए। सभी को अपना कर्म करना ही चाहिए। समय जो लेकर आएगा, हमें स्वीकार करना होगा। जैसे आज हमें भोजन मिल रहा है, यदि 50 वर्ष बाद कुछ बेहतर मिलेगा, तो हम वही खाएँगे। जिस समय जो उपलब्ध है, वही कीजिए। लेकिन समय रुकता नहीं, और कर्म रुकता नहीं। सभी के लिए अपना कर्म करना आवश्यक है। मैं भी ब्राह्मण के रूप में अपना कर्म करता हूँ। तो आपको मेरी सलाह है

कि आप भी अपना कर्म कीजिए। यदि आप देश की सेवा करना चाहते हैं, तो देश की सेवा कीजिए। राष्ट्र की रक्षा हमारा सबसे बड़ा धर्म है। इसलिए अपनी पढ़ाई को मजबूत कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, और भगवान की कृपा आपके साथ रहेगी। यह आपके परिवार और माता-पिता के सम्मान के लिए आवश्यक है। किसी की शिक्षा या कर्म नहीं रुकना चाहिए; भगवान ने यही कहा है, और हम भी यही कहते हैं। मालिका ग्रंथ में जो लिखा है, वह मानवता के कल्याण के लिए और समय के परिवर्तन के लिए है। इस संसार में मनुष्य तब भी रहेंगे। सब कुछ वैसे ही चलता रहेगा, बस पाप नहीं रहेगा। तो, पढ़िए, साक्षात्कार दीजिए, माता-पिता का सम्मान कीजिए, और त्रिकाल संध्या जैसे अपने धार्मिक कर्तव्य भी निभाइए। आप आनंदमय रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:35 · 22 मई 2025

प्रश्न 3013 मुंबई से गोपी शेट्टी पूछती हैं: पूज्य पंडित जी, आपके चरणों में मेरा सादर प्रणाम। मैं नियमित रूप से त्रिकाल संध्या करती हूँ, भागवत पढ़ती हूँ, और माधव का नाम जपती हूँ। सुबह भोजन बनाना शुरू करने से पहले अग्नि देव को आहुति भी देती हूँ। कृपया बताइए कि आने वाली बीमारियों से बचने के लिए मुझे और कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उत्तर: आने वाली बीमारियों से बचने के लिए, सबसे पहले, आपके कर्मों में सत्य, सही सोच, करुणा और दान होना चाहिए। अग्नि देव को आहुति देने के बाद ही भोजन बनाना चाहिए। त्रिकाल संध्या समय पर होनी चाहिए। भागवत का पाठ होना चाहिए। मेरी दृष्टि में, दिन हो या रात, जब भी समय मिले, माधव का नाम जपना बंद मत कीजिए, ताकि आने वाली विपत्तियाँ हमें प्रभावित न करें। अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:28 · 22 मई 2025

प्रश्न 3014 बलिया से अंकित तिवारी पूछते हैं: माननीय पंडित जी, क्या धर्म स्थापना का निर्धारित समय, 2032, और आगे बढ़ सकता है? कृपया हमारा मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, मेरी दृष्टि में, मैंने 2032 लिखा है, लेकिन भगवान की इच्छा से यह दो-तीन वर्ष आगे-पीछे हो सकता है। यह बढ़ भी सकता है और कम भी हो सकता है। यह उनकी इच्छा है। लेकिन 2032 से, मेरे मत में, मानव सभ्यता में निश्चित रूप से आमूल परिवर्तन आएगा। लोग सत्यवादी बनेंगे। लोग धर्म की ओर मुड़ेंगे। लोग शाकाहारी बनेंगे। भाईचारे की पवित्रता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना प्रकट होगी। सनातन धर्म विश्व पर शासन करेगा, और पूरे विश्व के लोग सनातन धर्म की ओर लौटेंगे। साथ ही, सभी त्रिकाल संध्या करेंगे और भागवत पढ़ेंगे। इससे निश्चित रूप से एक स्वतंत्र परिवर्तन आएगा। भगवान को सत्ययुग की स्थापना में कुछ समय लग सकता है, लेकिन 2032 से इस संसार पर धर्म और सत्य का महान प्रभाव होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 17:27 · 22 मई 2025

प्रश्न 3015 अंगुल, ओडिशा से नितिन कुमार मोदी पूछते हैं: मैं ओडिशा से हूँ, और यहाँ एक महायुद्ध की भविष्यवाणी है। क्या हमें ओडिशा छोड़कर किसी दूसरे राज्य में चले जाना चाहिए?

उत्तर: देखिए, मालिका में ओडिशा में युद्ध को लेकर जो प्रचार है, वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। युद्ध वहीं होगा जहाँ होना नियत है। मानव सभ्यता अपने मार्ग पर चलती रहेगी। ओडिशा में कोई समस्या नहीं है। आनंद से रहिए, अपना काम कीजिए, और धर्म का पालन कीजिए। साथ ही त्रिकाल संध्या कीजिए। कोई समस्या नहीं है। मेरी राय में, मैं बस इतना ही कहूँगा: ओडिशा में युद्ध वहीं होगा जहाँ होना है। उसके लिए, ओडिशा देवभूमि है, और धर्म की स्थापना भी भगवान के माध्यम से ओडिशा में ही होगी। यह पवित्र भूमि है। चिंता करने की कोई बात नहीं है। देखिए, हम जहाँ भी हों, यदि हमारा कर्म सही है तो हम सुरक्षित हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:44 · 22 मई 2025

प्रश्न 3016 मेरे आपसे दो प्रश्न हैं। क्या मैं उन्हें एक-एक करके पूछ सकती हूँ? ... पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि कुछ दिन पहले मैं आपका एक पॉडकास्ट देख रही थी। उसमें आपने कहा था कि जिन्हें आत्मसाक्षात्कार हो गया है, वे भगवान के दर्शन कर सकते हैं। जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, उन्हें उनके दर्शन होते हैं। तो मैं आपसे पूछना चाहती हूँ कि आत्मसाक्षात्कार क्या है और हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर: आत्मसाक्षात्कार का अर्थ है करोड़ों ब्रह्मांडों में हर जगह भगवान की उपस्थिति का अनुभव करना। यह तब होता है जब व्यक्ति गरीब, असहाय, दुखी, पापी, पुण्यात्मा, अज्ञानी और जाति के भेदों से ऊपर उठ जाता है। सभी जातियों और धर्मों को एक मानते हुए, जब व्यक्ति अपने हृदय और दूसरों के हृदय को एक समझता है, अपने ही शरीर के भीतर संसार को देखता है, और संसार में स्वयं को देखता है। यही आत्मसाक्षात्कार है। ऐसा व्यक्ति सभी आत्माओं को पहचानता है, सबको एक मानता है, और सबको समान स्थान देता है। भगवान उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इसी को आत्मसाक्षात्कार कहते हैं, और इसके द्वारा मनुष्य मुक्ति प्राप्त करता है। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 20:22 · 22 मई 2025

प्रश्न 3017 जी, पिताजी, सबसे पहले आपको मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। पिताजी, पहले मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। और पिताजी, मेरी बस यही प्रार्थना है कि जब भी भगवान हमारे निकट हों, कृपया हमें उनके दर्शन हों। वे हमारी परीक्षा न लें, क्योंकि हम परीक्षा देने के योग्य नहीं हैं...

उत्तर: मैं चाहता हूँ कि सभी को भगवान कल्कि के दर्शन हों और उनकी उपस्थिति का लाभ मिले। लेकिन व्यक्ति को अपने कर्म के अनुसार ही फल मिलेगा। और मैं इतना कहता हूँ: जो त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, उन्हें घर बैठे ही, शायद स्वप्न में, भगवान के दर्शन हो सकते हैं। क्योंकि द्वापर युग में जब भगवान कृष्ण ने अवतार लिया था, तब भगवान ने ब्रह्मा देव को स्वप्न में दर्शन दिए थे। राम अवतार के समय भी ऐसा हुआ था। तो, त्रिकाल संध्या के माध्यम से भक्तों को यह दर्शन अवश्य मिलेंगे। इसे कीजिए और भगवान पर पूर्ण विश्वास रखिए। वे अवश्य आपको आशीर्वाद देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:42 · 22 मई 2025

प्रश्न 3018 पंडित जी, हम सुनते आए हैं कि अन्य युगों में लोगों की ऊँचाई बहुत अधिक होती थी। जैसे द्वापर युग में ऊँचाई अधिक थी, त्रेता युग में उससे भी अधिक, और सत्य युग में उससे भी अधिक। तो क्या पशु-पक्षियों का आकार भी उसी तरह बड़ा था?

उत्तर: बिल्कुल। वे भी बड़े थे, फल-कंद बड़े थे, और अनाज बड़े थे। उस समय लोगों की दृष्टि भी बहुत अधिक शक्तिशाली और विस्तृत थी। उनका बल भी उतना ही महान था, और मन भी। सब कुछ अच्छा था। कलियुग के कारण सब कुछ छोटा हो गया है। फल-कंद तक छोटे हो गए हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:00 · 22 मई 2025

प्रश्न 3019 मैं आपसे पूछ रही थी, हरिद्वार में आपने मुझे प्रसाद के रूप में एक भागवत दी थी। मुझे 'सुधा सागर' भागवत मिली थी। आप भागवत पढ़ने की बात कहते हैं; उसमें क्या अंतर है? जैसे आप कहते हैं कि भागवत पढ़नी चाहिए, आपने हरिद्वार में मुझे प्रसाद के रूप में 'सुधा सागर' दी थी। उसमें और जिस भागवत पाठ की आप सलाह देते हैं, उसमें क्या अंतर है? (होस्ट द्वारा स्पष्ट किया गया: उन्हें जो पुस्तक मिली वह 'सुधा सागर' है, जिसमें भागवत महापुराण भी है। वे पूछ रही हैं कि श्रीमद् भागवत महापुराण और 'सुधा सागर' में क्या अंतर है।)

उत्तर: 'सुधा सागर' नहीं, वह 'सुख सागर' होगा। हाँ, 'सुख सागर'। यह एक ही बात है, दोनों एक ही हैं। इसे पढ़िए। कीजिए। जीवन में यही सबसे बड़ा प्रभाव है; यह मानव जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। जो आपको मिला है, वह सबसे बड़ी संपत्ति है। जिस व्यक्ति को भागवत नहीं मिली, वह अभागा है।

► यह उत्तर सुनें · 26:02 · 22 मई 2025

प्रश्न 3020 पिताजी, आपने मुझे मेरे पति के लिए एक फूल दिया था। वह रास्ते में ही एक दिन के भीतर मुरझा गया। हमने उसे सुखाकर रख लिया है। क्या मैं उसे किसी छोटी डिबिया में रख सकती हूँ?

उत्तर: हाँ, रख लीजिए। माधव से प्रार्थना कीजिए कि वे भी आपके मार्ग पर चलें और त्रिकाल संध्या करें, जिससे उनका जीवन भी शांति और सुख से भर जाए।

► यह उत्तर सुनें · 27:43 · 22 मई 2025

सत्र 171 · प्रश्न 3021–3034

L187: IRAN and AMERICA | ईरान अमेरिका का सम्बन्ध कैसा रहेगा आगे जाके ?| Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 22 जून 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3021 पहला प्रश्न यह है कि त्रिकाल संध्या करते समय और श्रीमद्भागवत महापुराण पढ़ते समय मन की चंचलता को कैसे शांत करें?

उत्तर: देखिए, जब लोग पहली बार त्रिकाल संध्या करना शुरू करते हैं, तो कुछ दिनों तक मन भटकता रहता है, इधर-उधर जाता है। लेकिन कई दिनों तक इसका अभ्यास करने के बाद मन स्थिर हो जाता है। उस समय केवल भगवान के दर्शन होते हैं, भगवान की उपस्थिति का अनुभव होता है, और पवित्रता का भाव अनुभव होता है। इसलिए, जो इसमें नए हैं, उनका मन थोड़ा भटकेगा। कुछ दिन त्रिकाल संध्या करने के बाद, मेरी राय में, मन नहीं भटकता। तो कुछ समय, कुछ दिनों तक इसका अभ्यास कीजिए। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:11 · 22 जून 2025

प्रश्न 3022 अगला प्रश्न यह है कि क्या हम संपत्ति खरीद सकते हैं और घर बनवा सकते हैं? और क्या हम अपने बच्चों के लिए कुछ नया निवेश कर सकते हैं?

उत्तर: देखिए, बच्चों के लिए निवेश करना आवश्यक है। आप उनके भविष्य की योजना बना सकते हैं। उनकी शिक्षा के लिए यह आवश्यक है। वह करना चाहिए। लेकिन जहाँ तक संपत्ति की बात है, भविष्य में संपत्ति का बाज़ार नीचे जाएगा। बहुत नीचे जाएगा। आप स्वयं देखेंगे। इसलिए, संपत्ति, अपार्टमेंट या इमारतों में पैसा लगाकर, आपका 100% निवेश घटकर 50% तक भी आ सकता है। अभी इसे करने का समय नहीं है। दो-तीन साल प्रतीक्षा कीजिए। तब करिए।

► यह उत्तर सुनें · 11:20 · 22 जून 2025

प्रश्न 3023 तीसरा प्रश्न यह है कि भविष्य मालिका में कहा गया है कि करुणा, क्षमा, शांति और प्रेम—ये सब आवश्यक हैं। लेकिन उस व्यक्ति का क्या, जिसने हमारे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया हो, जिसे हम भूल नहीं सकते, और जिसे देखकर भीतर से घृणा होती है? हम उन्हें कैसे क्षमा करें?

उत्तर: देखिए, हम न तो किसी को क्षमा करने वाले हैं और न ही किसी को दंड देने वाले। श्रीमद्भागवत महापुराण में, बारहवें स्कंध में, स्वयं भगवान ने कहा है कि जो चांडाल, पापी, साधु, संत और मनुष्य—सबको एक ही भाव से देखते हैं, वे मुझे प्राप्त करते हैं और वे वैकुंठ (दिव्य धाम) को प्राप्त करते हैं। यदि आप वैकुंठ प्राप्त करना चाहते हैं, तो ऐसे भावों से दूर रहिए। यदि आप जन्म-मरण के चक्र में बंधना चाहते हैं, बार-बार जन्म लेना चाहते हैं, और बार-बार मृत्यु और पुनर्जन्म का सामना करना चाहते हैं, तो आप अपने शत्रु को शत्रु या मित्र मान सकते हैं। यह आपकी अपनी विचारधारा है। लेकिन मैं तो यही कहूँगा कि मनुष्य जीवन बड़ी कठिनाई से मिलता है, और इस मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए, मेरे विचार में, आपको शत्रुता और मित्रता—दोनों को भूल जाना चाहिए। बस अपना कर्म कीजिए। और जिस शत्रु ने अन्याय किया है, उससे भगवान निपटेंगे। यह हमारे नियंत्रण में नहीं है। इसलिए इसे भगवान पर छोड़ दीजिए। शत्रुता या मित्रता का भाव मत रखिए। क्योंकि शत्रुता और मित्रता का भाव रखने से हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएँगे। हमें दुख और मानसिक पीड़ा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 12:13 · 22 जून 2025

प्रश्न 3024 मालिका के अनुसार, बहुत कम लोग, जिनका स्वभाव शुद्ध और सत्यनिष्ठ है, सत्य युग में प्रवेश करेंगे, और अधिकांश का विनाश हो जाएगा। मेरा प्रश्न है कि उन आत्माओं का क्या होगा? क्या उन्हें सत्य युग में मनुष्य के रूप में या किसी अन्य रूप में पुनर्जन्म का अवसर मिलेगा?

उत्तर: देखिए, जो अधर्म की ओर जाते हैं, वे कभी नहीं। हाँ, जो अच्छे कर्म करके देह त्यागते हैं, उनमें से कुछ अवश्य लौटेंगे। और जिनकी 'अपमृत्यु' होती है, जिनकी आने वाले विनाश में अकाल मृत्यु होगी... 'अपमृत्यु' का अर्थ है दुर्घटना से मृत्यु, अपना समय पूरा होने से पहले, कम उम्र में, किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण मर जाना। ऐसे लोगों के लिए इतनी जल्दी मुक्ति प्राप्त करना संभव नहीं है। उनके कर्मों का फल भी शास्त्रों के अनुसार ही माना जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 14:16 · 22 जून 2025

प्रश्न 3025 हमें पृथ्वी लोक में आने वाले परिवर्तनों के बारे में जानकारी मिली है। लेकिन अन्य सभी लोकों में क्या परिवर्तन होंगे? स्वर्ग लोक या पाताल लोक में निवास करने वाली आत्माओं का क्या होगा? वर्तमान समय की उन सभी मनुष्य आत्माओं का क्या भविष्य होगा जो सत्य लोक में जाने के योग्य नहीं होंगी? क्या उन्हें पुनर्जन्म मिलेगा?

उत्तर: देखिए, यह भगवान के अधीन है। लेकिन बात यह है कि जो पाताल लोक में रहते हैं, पाताल लोक स्वर्ग जैसा हो जाएगा, और पाताल लोक के लोग वहाँ स्वर्ग के समान रहेंगे। मृत्यु लोक पाताल में चला जाएगा, और मृत्यु लोक पर स्वर्ग का निर्माण होगा। पृथ्वी पर जो लोग बचेंगे, उन्हें स्वर्ग जैसा सुख और शांति मिलेगी। और मेरी राय में, यह भगवान के अधीन है। यह हमारे नियंत्रण में नहीं है। लेकिन स्वर्ग और पाताल के बारे में भगवान ही निर्णय करेंगे। पृथ्वी पर जीव को अपने कर्मों के अनुसार कर्मफल मिलता है। उसी के अनुसार उसे जीवन मिलता है।

► यह उत्तर सुनें · 15:19 · 22 जून 2025

प्रश्न 3026 अपनी नौकरी के कारण मुझे अक्सर भारत और दुबई के बीच आना-जाना पड़ता है। क्या इस महीने के बाद यात्रा करना सुरक्षित है? क्या मुझे इससे बचना चाहिए, या मैं माधव का नाम लेकर यात्रा करता रह सकता हूँ?

उत्तर: मेरी राय में, पहले अच्छे कर्म कीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए। उसके साथ माधव का नाम जपिए और फिर यात्रा कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:42 · 22 जून 2025

प्रश्न 3027 सरकारी नौकरियाँ और पद कब समाप्त होंगे? क्या मीन-शनि की युति समाप्त होते ही सभी नौकरियाँ खत्म हो जाएँगी?

उत्तर: नहीं, इतनी जल्दी कुछ नहीं होने वाला। उसमें अभी समय है। आपको 2032 तक प्रतीक्षा करनी होगी, और समय के साथ आपको यह भी आभास होता जाएगा कि भविष्य के परिणाम क्या होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:14 · 22 जून 2025

प्रश्न 3028 भविष्य मालिका पुस्तक का तीसरा भाग कब प्रकाशित होगा?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका का तीसरा भाग अवश्य प्रकाशित होगा। और उससे पहले, जगन्नाथ संस्कृति के तत्वों पर आधारित सनातन धर्म के बारे में एक पुस्तक प्रकाशित होगी। उसके बाद अंतिम पुस्तक, तीसरी धारा या तीसरा भाग, भी अनावृत और प्रकाशित की जाएगी। इसमें समय लगेगा; हम उस पर काम कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:45 · 22 जून 2025

प्रश्न 3029 क्या 2027-28 बच्चों का विवाह करने के लिए उपयुक्त समय होगा? जो बच्चे विवाह योग्य हो चुके हैं, क्या 2027-28 में उनका विवाह करना उचित रहेगा?

उत्तर: देखिए, '27, '28, '29, '30, '31, '32, '33, '34, '35... अब, शादी-ब्याह, विवाह, भोजन और आहार—ये चीज़ें कभी नहीं रुकेंगी। ये चलती रहेंगी। इसलिए ऐसा नहीं है; समय के साथ, जिसका विवाह जब होना लिखा है, वह अवश्य होगा। यह रुकेगा नहीं, क्योंकि विवाह एक पारंपरिक व्यवस्था है, एक नियम है जो सदियों से संसार में चला आ रहा है। महाविनाश हो जाए, तब भी विवाह होते रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:20 · 22 जून 2025

प्रश्न 3030 'गंधर्व विवाह' (परस्पर सहमति से होने वाला विवाह का एक रूप) का क्या अर्थ है? क्या भविष्य में विवाह की व्यवस्था बदलेगी?

उत्तर: देखिए, हमारे सनातन धर्म में विवाह अग्नि (अग्निदेव) को साक्षी मानकर, या माता देवी को साक्षी मानकर, या देवताओं को साक्षी मानकर किया जाता है। जो विवाह अग्नि को साक्षी मानकर, यज्ञ के माध्यम से होता है, वह हमारा सामाजिक नियम है और वेदों के नियमों पर आधारित है। और पौराणिक काल में गंधर्व विवाह प्रचलित था। उस समय पति-पत्नी, या कोई भी जो किसी से विवाह करना चाहता था, देवी-देवताओं को साक्षी मानकर और पुष्पमालाओं का आदान-प्रदान करके विवाह कर लेता था। इसे गंधर्व विवाह कहा जाता था, और वह भी अच्छा है। और आज जो विवाह होते हैं, वे भी अच्छे हैं। गंधर्व विवाह एक पवित्र विवाह है। संभवतः युग के परिवर्तन के साथ यह भविष्य में फिर से प्रचलित हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 19:08 · 22 जून 2025

प्रश्न 3031 क्या केवल उन्हीं भक्तों को अपने पूर्व जन्मों की स्मृतियाँ रहेंगी जो चारों युगों से भगवान के साथ रहे हैं?

उत्तर: बिल्कुल, चारों युगों के भक्तों का मिलन, देवताओं का मिलन, सिद्धों का मिलन—यह सब इसी समय होने जा रहा है। इसलिए भगवान भक्तों के बिना नहीं आते, और भक्तों के बिना भगवान की लीला नहीं होती। तो इसे भक्तों का मिलन समझिए, और चारों युगों के भक्त इसी समय एकत्र होंगे। जय जगन्नाथ। युग परिवर्तन के साथ, जो सत्य युग में जाएँगे, उन्हें अपने पूर्व जन्मों के बारे में बहुत कुछ याद आएगा, और उन्हें अनुभूतियाँ भी होंगी।

► यह उत्तर सुनें · 20:14 · 22 जून 2025

प्रश्न 3032 जय श्री माधव, पंडित जी। मैं अभिषेक बरेली से बोल रहा हूँ। सबसे पहले मैं यह कहना चाहता था कि मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। कुछ दिन पहले मेरा विवाह हुआ, जैसा कि मैंने आपको बताया था। मेरी पत्नी ने तीन महीने पहले त्रिकाल संध्या करना शुरू किया, और कुछ दिन पहले वह गर्भवती हुई। उसने मुझे बताया कि गाँव में अपने मायके में भगवान ने उसे लड्डू गोपाल (बाल कृष्ण) के रूप में दर्शन दिए। और फिर कुछ दिनों बाद, उसे बादलों में सफेद वस्त्र पहने कल्कि के दर्शन हुए, जो उसे देखकर मुस्कुरा रहे थे। तो पंडित जी, मैं जानना चाहता हूँ कि इसका क्या अर्थ है, और मैं अपने परिवार तथा अपने होने वाले बच्चे के लिए आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए। जय श्री माधव।

उत्तर: देखिए, अपनी पत्नी को भागवत सुनवाइए, और उन्हें त्रिकाल संध्या सुनवाइए। अच्छा पुत्र होगा। जय।

► यह उत्तर सुनें · 21:37 · 22 जून 2025

प्रश्न 3033 आपने कहा था कि 33 करोड़ देवी-देवताओं ने अब जन्म ले लिया है, है ना? तो क्या सत्य युग में केवल भक्त ही जाएँगे, या देवी-देवता भी जाएँगे? क्योंकि आपने बताया था कि भारत की जनसंख्या में से कुल 33 करोड़ और पूरे विश्व से कुल 64 करोड़ लोग सत्य युग में जाएँगे। तो आपने कहा कि इस संसार में कुल 33 करोड़ देवी-देवताओं ने जन्म लिया है, तो क्या सत्य युग में केवल मनुष्य ही जाएँगे?

उत्तर: देवी-देवता भी सत्य युग में जाते हैं। देखिए, जब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ, जब भगवान राम का जन्म हुआ, उस समय भी देवताओं ने पृथ्वी पर जन्म लिया था। उन्होंने भी मनुष्य शरीर में जन्म लिया था। कोई नहीं जानता था कि वे कौन से देवता हैं। तो यह चारों युगों के भक्तों और देवताओं के मिलन का समय है। इसीलिए सभी देवता पृथ्वी पर उतरे हैं, और सभी ने मनुष्य शरीर में जन्म लिया है। सिद्ध ऋषियों ने भी जन्म लिया है। सभी देवता नहीं आते, क्योंकि पृथ्वी का भी प्रबंध और संचालन करना होता है। इसलिए जिन देवताओं को आना था, वे आ चुके हैं। सिद्ध ऋषि भी आ चुके हैं, और गंधर्वों में से भी भक्त आ चुके हैं। और चारों युगों के भगवान के सबसे निकटतम भक्त भी आ चुके हैं। सब मिलाकर 33 करोड़ भक्त भगवान के साथ सत्य युग का निर्माण करेंगे। और यही मेरी विचारधारा है: भारत देवभूमि है, और 33 करोड़ देवता यहाँ निवास करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:23 · 22 जून 2025

प्रश्न 3034 प्रभु, मेरा एक और प्रश्न है। मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, भागवत पढ़ता हूँ, हरे कृष्ण महामंत्र का जप करता हूँ, और माधव का नाम लेता हूँ। लेकिन इस मार्ग में दूसरे लोगों को सपने आते हैं, है ना? भगवान कल्कि के सपने और दूसरे सपने। क्या यह कठिन है? अगर सभी संध्या करें, तो क्या सभी को सपने आएँगे?

उत्तर: देखिए, वे सबके सपनों में नहीं आएँगे। लोगों को उनकी भक्ति के स्तर के अनुसार दर्शन मिलेंगे। जिन्हें मिलते हैं, उनके लिए अच्छा है, और जिन्हें नहीं मिलते, उन्हें भी त्रिकाल संध्या का पालन करना चाहिए, और समय के साथ उन्हें भी दर्शन मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 25:17 · 22 जून 2025

सत्र 172 · प्रश्न 3035–3058

L188: वर्ल्ड वार की स्थिति क्या होगी? | 13 इस्लामिक देशों की गुप्त बातचीत | Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 26 जून 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3035 भगवान से जुड़ने के बाद हम बहुत बदल गए हैं। पहले हम व्यभिचार जैसे कई पाप करते थे, लेकिन अब हम अनुशासित जीवन जीते हैं। ऐसा क्यों लगता है कि पहले हम जैसे थे, ठीक थे, और अब हम बदल गए हैं? ऐसा क्यों महसूस होता है?

उत्तर: देखिए, जब मनुष्य पर धर्म का प्रभाव पड़ता है, तो परिवर्तन आता है। और जो धर्म को समझते हैं, उनका सब कुछ बदल जाता है। अच्छा या बुरा जैसा कुछ नहीं होता। हर मनुष्य में अच्छे गुण भी होते हैं और बुरे भी। मनुष्य में परिवर्तन उसके वातावरण और सत्संग से आता है। और जो मानव धर्म का पालन करते हैं, त्रिकाल संध्या करते हैं, और भागवत पढ़ते हैं, उनके लिए महान परिवर्तन का समय आ रहा है। समय के साथ भक्त इसका अनुभव कर रहे हैं, और शीघ्र ही पूरा संसार इसका अनुभव करेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 09:33 · 26 जून 2025

प्रश्न 3036 हमारी आध्यात्मिक धारा में ऐसे बहुत से भाई हैं जो निष्ठा से संध्या करते हैं और भगवान के मार्ग का अच्छे से पालन करते हैं। भविष्य में, जब देश को उनकी आवश्यकता होगी, वे सैनिक के रूप में सेवा करेंगे और इस विश्व युद्ध में भारत की ओर से नेतृत्व करेंगे। तो क्या वे मरेंगे या शहीद होंगे? क्या उन्हें मोक्ष प्राप्त होगा?

उत्तर: देखिए, जो लोग निर्धारित समय के अनुसार त्रिकाल संध्या का पालन करते हैं—प्रातः, मध्याह्न और सायं संध्या—जो तीनों का समय के अनुसार और भक्ति के साथ पालन करते हैं, और जो सत्य, शांति, दया और क्षमा का आचरण करते हैं, तथा परम भक्ति के लक्षण प्रकट करते हैं, वे सत्य युग में जाएँगे। वे मरेंगे नहीं। यह शास्त्रीय और आध्यात्मिक विचारधारा का एक स्वतंत्र तत्व है। जय श्री।

► यह उत्तर सुनें · 11:16 · 26 जून 2025

प्रश्न 3037 हम किराए के कमरे में रहते हैं। हमारे घर में मैं और मेरी माँ काम करके किराया चुकाते हैं। मेरे पिता कुछ नहीं करते; बल्कि रोज़ झगड़ा करते हैं और मेरी माँ को मारने की कोशिश करते हैं। मैं 20 वर्ष का युवक हूँ और यह सहन नहीं कर सकता। मैं सब कुछ भगवान पर छोड़ देता हूँ। पड़ोसी भी इस झगड़े से परेशान हैं। सब समझते हैं पर कुछ कहते नहीं, जिससे मुझे बहुत दुख होता है। मैं नहीं चाहता कि हमारे कारण किसी को कष्ट हो। इसलिए मैंने सोचा है कि कर्ज लेकर एक अलग घर बना लूँ जहाँ पड़ोसी दूर हों। कभी-कभी मैं बाहर जाकर नौकरी खोजने की सोचता हूँ, पर अपनी माँ के प्रति जिम्मेदारी के कारण नहीं जा पाता। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: अगर आप कर्ज लेकर घर बनाना चाहते हैं, तो बना सकते हैं, कोई समस्या नहीं। और देखिए, हमारा कर्म अच्छे और बुरे से बँधा हुआ है। इसलिए पिता तो पिता ही हैं। उनके बदलने के लिए भगवान से प्रार्थना कीजिए। और अगर आप कर्ज लेकर घर बनाना चाहते हैं, तो वह भी कर सकते हैं। त्रिकाल संध्या के समय भगवान को अपने घर की समस्याएँ बताइए। मेरी राय में, आपको कोई न कोई दिशा मिलेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:47 · 26 जून 2025

प्रश्न 3038 युद्ध में भक्तों का योगदान क्या होगा? क्या वह प्रत्यक्ष होगा या अप्रत्यक्ष?

उत्तर: जब तक हमारे सैनिक लड़ रहे हैं और विश्व के अलग-अलग देशों की सेनाओं के बीच युद्ध चल रहा है, तब तक भक्तों के लिए केवल भगवान का गुणगान करना ही बहुत महत्वपूर्ण है। जब भगवान की शक्ति से आध्यात्मिक युद्ध होगा, उस समय भगवान कुछ भक्तों को उस धर्म कार्य में लगा सकते हैं। समय आने की प्रतीक्षा करना ही अच्छा है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:28 · 26 जून 2025

प्रश्न 3039 सियालदा महायज्ञ कब होगा?

उत्तर: तृतीय विश्व युद्ध के मध्य चरण में सियालदा में एक यज्ञ अनुष्ठान होगा। यह बहुत महत्वपूर्ण यज्ञ है जिसमें विश्व के 16 मंडलों के भक्त भाग लेंगे। यह विश्व युद्ध के मध्य चरण में सुधर्मा सभा द्वारा आयोजित होगा। यदि विश्व युद्ध मान लीजिए सात वर्ष चलता है, तो शायद तीन वर्ष बाद सियालदा में यज्ञ अनुष्ठान होगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:12 · 26 जून 2025

प्रश्न 3040 क्या सुदर्शन चक्र 14 लाख सैनिकों का संहार करेगा? क्या तब विधर्मियों को वैकुंठ (विष्णु का दिव्य धाम) प्राप्त होगा? कृपया इस पर मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, भगवान द्वारा पापियों का संहार एक चक्र का हिस्सा है। एक 'काल चक्र' है और दूसरा 'उद्धार चक्र'। उद्धार चक्र में भगवान उन भक्तों का उद्धार करते हैं जो श्राप के कारण पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। जब धर्म की स्थापना होती है, तब वे काल चक्र के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। जो काल चक्र के प्रभाव से मरते हैं, उन्हें वैकुंठ प्राप्त नहीं होता। उन्हें मुक्ति नहीं मिलती। वे फिर से जन्म लेते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत युद्ध में कौरव और पांडव सेनाओं के जो सैनिक मरे थे, वे सब पहले ही पुनर्जन्म ले चुके हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:53 · 26 जून 2025

प्रश्न 3041 शास्त्रों में लिखा है कि कभी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। लेकिन जब कोई हमारे सामने आकर दूसरों की निंदा करता है, तब हमें क्या करना चाहिए, विशेष रूप से तब जब वह व्यक्ति परिवार का ही सदस्य हो और हमारी या परिवार की निंदा कर रहा हो? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, हमारे लिए यही सबसे अच्छा है कि दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों से, गलत काम करने वालों से दूरी बनाकर रखें। यह अच्छा समय नहीं है। आगे चलकर हर घर में ऐसे झगड़े और कलह होंगे, और कहीं-कहीं तो कोई किसी की हत्या तक कर सकता है। ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होंगी। हर घर में कलह होगी और हर गाँव में झगड़े होंगे। इसलिए भक्तों से मेरा निवेदन है कि शरारती और गलत लोगों से दूरी बनाए रखें। उनसे उतना ही संपर्क रखें जितना आवश्यक हो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:48 · 26 जून 2025

प्रश्न 3042 आज के समय में हम सबके लिए जानने और करने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है?

उत्तर: आज के समय में मानव सभ्यता पर सबसे बड़ा संकट मँडरा रहा है। त्रिकाल संध्या करने, भागवत पढ़ने और माधव का नाम जपने से बड़ी कोई शक्ति या बड़ा कोई कर्म नहीं है। सभी मनुष्यों को इसका पालन करना चाहिए ताकि मानव सभ्यता बच सके। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:57 · 26 जून 2025

प्रश्न 3043 हमें कहा जाता है कि हमें सबसे विनम्र होना चाहिए और सबमें भगवान को देखना चाहिए। लेकिन अपने छिपे हुए अहंकार को बार-बार हमें अक्षम महसूस कराने से कैसे रोकें?

उत्तर: देखिए, यह मैंने नहीं कहा है। यह मनुष्य का धर्म है, भक्त का धर्म है। इस संसार में 'मैं' और 'मेरा' के अभिमान और अहंकार को त्यागकर, स्वयं को एक साधारण मनुष्य मानकर, परम प्रिय भगवान की शरण में जाना चाहिए। इसलिए सभी मनुष्यों के लिए इसका पालन करना आवश्यक है। जो इसका पालन नहीं करते, उनमें आसुरी गुण हैं। लेकिन भक्तों में यह गुण नहीं होना चाहिए। 'मैं', 'मेरा', 'तू', 'तेरा' को छोड़ दीजिए और बस समर्पण करके भक्ति के साथ जीवन बिताइए। एक नए युग का निर्माण होगा। सत्य युग का निर्माण होगा। तो, उसके लिए स्वयं को तैयार कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:24 · 26 जून 2025

प्रश्न 3044 लिखा है कि सत्य युग में मृगचर्म पहनना उचित था। लेकिन आज चमड़ा पहनना अनुचित क्यों है?

उत्तर: सत्य युग में मृगचर्म पहनने की प्रथा के बारे में शास्त्रों में स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है। इसलिए हमें अपनी मानव सभ्यता में इस धारणा का ठोस प्रमाण नहीं दिखता। क्योंकि द्वापर युग में पांडव अच्छे वस्त्र पहनते थे। वे उच्च गुणवत्ता वाले और उन्नत वस्त्र पहनते थे। त्रेता युग में रामचंद्र जी ने भी वनवासी के वस्त्र पहने थे। मुझे कहीं भी इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसीलिए मैं इस पर चर्चा नहीं करूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:45 · 26 जून 2025

प्रश्न 3045 भविष्य मालिका के बारे में बहुत सी बातें कही जाती हैं। कई घटनाओं के बारे में कहा जाता है कि वे भविष्य मालिका में लिखी हैं। क्या हमारे लिए वह सब जानना आवश्यक है? क्या इसका कोई सार है जिसे हम सबको जानना चाहिए और जिसे जान लेना हम सबके लिए पर्याप्त होगा?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका ग्रंथ हमारे पुराणों में से एक है। इसमें कलियुग के सभी तत्त्वों और विनाश से मुक्ति के बारे में लिखा गया है, जिसका उद्देश्य पृथ्वी को कलियुग से सत्य युग में परिवर्तित करना है। इसलिए भविष्य ग्रंथ में जो लिखा है, वह मानव सभ्यता में घटित हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। सबको बस परम पवित्रता के साथ इसका पालन करना चाहिए। इसका मूल तत्त्व धर्म के चार स्तंभ हैं: सत्य, पवित्रता, दया और दान, जिनका पालन सभी मनुष्यों को करना ही चाहिए। इस ग्रंथ को लिखने का उद्देश्य था मनुष्यों को आने वाली समस्याओं के प्रति सचेत करना, लोगों को धर्म की ओर लाना, और भ्रष्ट हो चुके समाज का सुधार करना, अर्थात् उसे बेहतर बनाना। इसका पालन करना सभी मनुष्यों के लिए अच्छा है।

► यह उत्तर सुनें · 20:42 · 26 जून 2025

प्रश्न 3046 अक्सर देखा जाता है कि भविष्य मालिका के नाम पर भय फैलाया जाता है, और भगवान कल्कि को भी सबका संहारक बताकर बहुत भयानक रूप में दिखाया जाता है। सच्चाई क्या है? क्या भविष्य मालिका भय की वस्तु है, और क्या हमें भगवान कल्कि से भी डरना चाहिए? या फिर इसमें भक्ति का कोई और ही तत्त्व है जिसे सब नहीं समझते? यदि हाँ, तो वह क्या है?

उत्तर: भगवान कृष्ण के जन्म लेने से पहले के समय में सभी राक्षस भय से काँप रहे थे। कंस तक भय के कारण घर में सो नहीं पाता था। इसलिए जो आसुरी कर्म करते हैं, जो पाप करते हैं, वे भविष्य मालिका के प्रचार से डरते हैं। भक्त तो आनंदित होते हैं और इसका अध्ययन करके अपने कर्मों को बदलते हैं। यह हर युग में हुआ है, और इस युग में भी हो रहा है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 22:15 · 26 जून 2025

प्रश्न 3047 जो व्यक्ति भक्त नहीं है, क्या वह भी त्रिकाल संध्या करके भक्ति प्राप्त कर सकता है?

उत्तर: कोई भी हो, चाहे वह राक्षस हो, पतित हो, या महापापी हो, चाहे कितना ही बड़ा पापी क्यों न हो, यदि वह त्रिकाल संध्या का पालन करता है, तो उसका मन, शरीर, अंतःकरण और आत्मा शुद्ध हो जाएगी। वह भी एक शुद्ध, पवित्र भक्त बनकर वैकुंठ प्राप्त कर सकता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:25 · 26 जून 2025

प्रश्न 3048 त्रिसंध्या ब्रह्म का सार है। भविष्य मालिका में बताई गई त्रिसंध्या करने से क्या कोई इस संसार के चक्र में बार-बार आने से बच सकता है?

उत्तर: इस संसार में यदि कोई व्यक्ति वैकुंठ प्राप्त करना चाहता है, तो सबसे बड़ा मूल मंत्र और मुख्य कर्म त्रिकाल संध्या है। और जो त्रिकाल संध्या करते हैं, वे भगवान विष्णु के धाम को प्राप्त करेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 24:07 · 26 जून 2025

प्रश्न 3049 मेरा प्रश्न त्रिकाल संध्या से संबंधित है। कुछ लोग हैं जो मांस और मछली खाते हैं और छोड़ना चाहते हैं। जब मैं अपने कुछ पुराने मित्रों को, जो मांस, मछली खाते हैं और खूब शराब पीते हैं, भविष्य मालिका का उपदेश देता हूँ, तो वे मेरी बात समझते हैं, लेकिन कहते हैं, 'हमने भी भविष्य मालिका में पढ़ा है कि यदि हम शराब पीते हुए त्रिकाल संध्या करेंगे तो योगिनी माता हमें खा जाएँगी।' इसी डर से वे शुरू ही नहीं करना चाहते। तो पंडित जी, इसका क्या किया जा सकता है? कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: आपके प्रचार से मैं बहुत प्रसन्न हूँ और आपकी सराहना करता हूँ। बात यह है कि मान लीजिए किसी ने जीवन भर मांसाहार किया और शराब पी, अनैतिक कर्म किए, और अब वह बदलना चाहता है। अब सुनिए कि इस ग्रंथ में क्या लिखा है। स्पष्ट रूप से लिखा है कि यह ग्रंथ गलत मार्ग पर चल रहे लोगों के परिवर्तन के लिए और मनुष्यों को शुद्ध व पवित्र बनाकर उन्हें बचाने के लिए रचा गया है। इसलिए यदि वे अपने किए गए पापों और कर्मों को त्याग दें और त्रिकाल संध्या करें तथा भागवत महापुराण पढ़ें, तो वे भी सत्य युग में जा सकते हैं और अपना जीवन बचा सकते हैं। कोई समस्या नहीं है। जय।

► यह उत्तर सुनें · 26:35 · 26 जून 2025

प्रश्न 3050 कहा गया है कि बैंक डूब जाएँगे, शेयर बाज़ार नीचे चला जाएगा, और संपत्ति के दाम गिर जाएँगे। तो हमें क्या करना चाहिए? हम घर में नकद भी नहीं रख सकते। हम क्या करें?

उत्तर: अभी के लिए आपको थोड़ा प्रतीक्षा करनी चाहिए। जब विश्व युद्ध आरंभ होगा, तब निर्णय लिया जाना चाहिए। लेकिन मैं यह कहूँगा: इस समय रियल एस्टेट या शेयर बाज़ार में पैसा मत लगाइए, क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा समय नहीं है। ब्रह्मास्त्र पहले ही छोड़ा जा चुका है। हमें नहीं पता कि वह कब और कहाँ गिरेगा। इसलिए कुछ समय प्रतीक्षा कीजिए, और सही समय आने पर मैं आपको अवश्य बताऊँगा।

► यह उत्तर सुनें · 28:04 · 26 जून 2025

प्रश्न 3051 मुझे डर लग रहा है कि क्या करूँ, क्योंकि भविष्य में तकनीक (टेक्नोलॉजी) समाप्त होने वाली है, और मेरा काम उसी क्षेत्र में है। तो मुझे डर है कि मैं इसमें अपनी पढ़ाई पूरी करूँ या नहीं। पढ़ने का मन तो करता है, पर डर लगता है कि जब सब कुछ समाप्त हो जाएगा, तब हम क्या करेंगे? जो हमने पढ़ा है, वह तब किसी काम का नहीं रहेगा।

उत्तर: देखो बेटा, मैं अभी भी पढ़ता हूँ। मैं हर दिन शास्त्र पढ़ता हूँ। मैं पढ़ता रहता हूँ, क्योंकि अपना कर्म रोका नहीं जा सकता। यदि जल का प्रवाह रुक जाए, तो लोगों को जल कैसे मिलेगा? यदि वायु का प्रवाह रुक जाए, तो मनुष्य को वायु कैसे मिलेगी? इसी प्रकार मनुष्य का कर्म, जैसे विद्यार्थी का कर्तव्य है पढ़ना और शिक्षा प्राप्त करना, और जो नौकरी करते हैं, उनका कर्तव्य है अपना काम करना — यह चलते रहना चाहिए। यही संसार का नियम है। तो अपना काम करो। जब होगा, तब देखा जाएगा। डर क्यों? संध्या करो, भागवत पढ़ो, और पढ़ाई करो। सुनो, मनुष्य जीवन में जो कर्म करता है, भगवान उसे उसका फल देते हैं। जिन्होंने खूब मन लगाकर पढ़ाई की है, वे भी सत्य युग में जाएँगे और अपने परिश्रम के अनुसार फल प्राप्त करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 29:04 · 26 जून 2025

प्रश्न 3052 आपने कहा है कि अंत में सात दिन-रात अंधकार रहेगा। आपने यह भी कहा कि योगिनी माता तीन चरणों में हमारी परीक्षा लेंगी। उसमें क्या होगा? मुझे कोई शास्त्र नहीं आता; आपको सुनने के बाद मैंने दिन में तीन बार संध्या करना शुरू किया है। पर मैंने दूसरों से यह भी सुना है कि तीन चरणों में परीक्षा होगी, और माता दुर्गा स्तुति जैसी चीज़ों के बारे में पूछेंगी। अगर हम उत्तीर्ण नहीं हो पाए, तो क्या हमें आगे नहीं जाने दिया जाएगा?

उत्तर: बिल्कुल, जो त्रिकाल संध्या करते हैं, यदि जगदंबा माँ कोई प्रश्न पूछें, चाहे स्वप्न में या प्रत्यक्ष रूप में — और यह अंतिम समय के लिए है, जिसमें अभी बहुत समय बाकी है — उस समय वे त्रिकाल संध्या के बारे में पूछेंगी। यदि आप त्रिकाल संध्या करते हैं, तो आप कहेंगे, 'हम त्रिकाल संध्या करते हैं और पंडित काशीनाथ मिश्र द्वारा हमें दिए गए माधव नाम का जप करते हैं।' बस, वे आपको जाने देंगी और कुछ और नहीं पूछेंगी। वे कुछ नहीं पूछेंगी, बस अपना आशीर्वाद देकर चली जाएँगी, और कुछ नहीं कहेंगी।

► यह उत्तर सुनें · 30:51 · 26 जून 2025

प्रश्न 3053 जैसा आपने बताया कि भविष्य में इंटरनेट बंद हो जाएगा, तो बंद होने के बाद लोग क्या करेंगे? पूरी दुनिया इंटरनेट पर निर्भर है, खासकर नौकरियों के लिए। जैसे, मैं अभी डिजिटल मार्केटिंग कर रहा हूँ, तो जब वह सब समाप्त हो जाएगा, तब क्या करना चाहिए?

उत्तर: यह स्थिति 2030 तक चलती रहेगी। जब बंद होगा, तब देखा जाएगा, पर बंद जरूर होगा। उसकी चिंता क्यों करना? सुनो, काम तो करते रहना चाहिए। अभी हमारे हाथ में दो, तीन, चार, पाँच साल हैं। तो करते रहो। इंटरनेट एक ही दिन में नहीं जाएगा। धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके इस पर असर पड़ेगा। पहले पापी देशों में इंटरनेट ठप होगा, और भारत सबसे अंत में होगा। समय की प्रतीक्षा करो।

► यह उत्तर सुनें · 32:29 · 26 जून 2025

प्रश्न 3054 यह जानते हुए कि भविष्य में क्या होने वाला है, क्या हमें भविष्य की योजनाएँ बनानी चाहिए या नहीं?

उत्तर: भविष्य की योजनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। धर्म का आचरण करो, अच्छे कर्म करो, त्रिकाल संध्या करो, भागवत पढ़ो — यही सबसे बड़ी योजना है। अपने काम पर, अपनी शिक्षा पर, अपने कर्मक्षेत्र पर ध्यान दो।

► यह उत्तर सुनें · 34:04 · 26 जून 2025

प्रश्न 3055 मैं लगातार त्रिकाल संध्या करता हूँ, माधव नाम का जप करता हूँ, और भागवत भी पढ़ता हूँ, पर भगवान के प्रति सही भाव नहीं जगा पा रहा हूँ। त्रिकाल संध्या करते समय मेरा मन भटक जाता है।

उत्तर: देखिए, जब भाव न जगे, तो त्रिकाल संध्या के समय बस आँखें बंद कर लीजिए और भगवान को देखिए। बस देखते रहिए। कुछ दिन ऐसा करने के बाद वे आपके मन और हृदय में प्रकट होंगे। ऐसा करने से मन नहीं भटकेगा। आँखें बंद करके भगवान श्रीकृष्ण को देखने का प्रयास कीजिए; आप उन्हें देखेंगे, और आपका मन कहीं नहीं भटकेगा। एक बार करके देखिए।

► यह उत्तर सुनें · 34:45 · 26 जून 2025

प्रश्न 3056 मालिका में कौन-सा मंत्र लिखा है? लिखा है कि जो ब्रह्म मंत्र का जप करेगा, वह सत्य युग में जाएगा। क्या वह 'माधव' नाम है? क्या हम 'माधव' नाम का जप करके जा सकते हैं?

उत्तर: लिखा है कि जो एकाक्षर ब्रह्म मंत्र का जप करेंगे, वे सत्य युग में जाएँगे और जगदंबा के प्रकोप से बच जाएँगे। 'माधव' नाम ही ब्रह्म है। जो इसका जप त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ के साथ करेंगे, वे जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 35:35 · 26 जून 2025

प्रश्न 3057 आपने हमें बताया है कि सोने का मूल्य शून्य हो जाएगा। सोना इतना महँगा है, तो क्या हमें इसे खरीदना चाहिए या नहीं? हमें निवेश कैसे करना चाहिए?

उत्तर: मेरी राय में, तीन साल बाद सोने का दाम आधे से भी कम हो जाएगा। तो उसी के आधार पर सोचिए कि क्या करना है।

► यह उत्तर सुनें · 36:21 · 26 जून 2025

प्रश्न 3058 यदि किसी को त्वचा रोग है, और वह नियमित रूप से त्रिकाल संध्या कर रहा है और भागवत पढ़ रहा है, तो क्या उसके ठीक होने की कोई संभावना है?

उत्तर: देखिए, दो-तीन साल पहले एक लड़की — आप मेरा पुराना वीडियो देख सकते हैं — उसे लगभग 10 साल से त्वचा रोग था और वह दवा ले रही थी। उसने त्रिकाल संध्या के समय 16 नामों का जप करके अपनी दवा ली। उसने कहा कि जिस दिन से उसने ऐसा करना शुरू किया, रोग चला गया। तो देखिए, दवा कलियुग की व्यवस्था है; उसे लेना चाहिए। पर जो लोग भक्ति के साथ 16 नामों का जप करते हैं, विष्णु को ही औषधि मानते हुए, और साथ में अपनी दवा भी लेते हैं, तो वह दवा अच्छे से काम करेगी और वे रोग से मुक्त हो जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 37:19 · 26 जून 2025

सत्र 173 · प्रश्न 3059–3067

L189: जगन्नाथ पुरी में सबसे बड़ा विनाश का संकेत। Rath Yatra Massacre | Dr Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 30 जून 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3059 एक भक्त अध्यात्म के मार्ग पर है, पर उसका परिवार मांसाहार करता है। वे जानना चाहते हैं कि क्या उनकी भक्ति के प्रभाव से उनके परिवार के सदस्य भी धीरे-धीरे भक्ति के मार्ग पर आएँगे और उनका उद्धार होगा? क्या यह संभव है कि हम जो अच्छे कर्म करते हैं, उनका लाभ हमारे परिवार के सदस्यों को भी मिले और उनका उद्धार हो?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है। बहुत-से भक्तों को अपने परिवार में ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह प्रश्न मेरे पास बार-बार आता है। पर बात यह है कि 'बिनु सत्संग विवेक न होई।' यदि किसी परिवार में कोई सदाचारी, पवित्र व्यक्ति रहता है, तो उसकी पवित्रता के प्रभाव से वह परिवार भी बदल जाता है। यह ऐसे ही है जैसे अंधेरे कमरे में एक तेज़ दीपक जला दिया जाए; उसके कारण अंधकार दूर हो जाता है। इसी प्रकार यदि परिवार में कोई संत या भक्त धर्म के मार्ग पर चलता है, तो उसके प्रभाव से समय के साथ कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होगा। इसके लिए छोटे-छोटे प्रयास करना भी आवश्यक है। और समय के साथ धर्म के पवित्र वचनों के चिंतन से घर में पवित्रता और परिवर्तन भी आएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:21 · 30 जून 2025

प्रश्न 3060 भारत के एक बहुत प्रसिद्ध कथावाचक, जो भगवान शिव की कथाएँ सुनाते हैं, कहते हैं कि वैकुंठ में भी मुक्ति नहीं है। उनका कहना है कि हम वैकुंठ में तभी तक रहते हैं जब तक हमारा पुण्य है, और पुण्य क्षीण होने के बाद हमारा पुनर्जन्म हो जाता है। कृपया इस पर मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, मैं एक बात कहूँगा। श्रीमद्भागवत महापुराण में स्वयं भगवान ने उद्धव से कहा है, और नारद जैसे अनेक महान ऋषियों ने भी इस पर चिंतन किया है। जो लोग वैकुंठ जाते हैं, उनकी मृत्यु ब्रह्म प्रलय (सृष्टि के संहार) के समय भी नहीं होती। उसे अमर लोक कहा जाता है, जहाँ मृत्यु नहीं है। जहाँ मृत्यु ही नहीं है, वहाँ ऐसी विचारधारा कहाँ से आ गई? ब्रह्म प्रलय के समय सभी लोक जल में डूब जाते हैं, पर उस समय भी वैकुंठ जलमग्न नहीं होता। इसीलिए स्वयं भगवान ने कहा है, 'न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥' मेरे लोक में सूर्य नहीं है, फिर भी वह प्रकाश से आलोकित है। मेरे लोक में कोई मरता नहीं, और सभी अमर लोक को प्राप्त करते हैं। तो अमर लोक में मृत्यु कहाँ से आएगी? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:11 · 30 जून 2025

प्रश्न 3061 धर्म में विश्वास करने और धर्म का आचरण करने में क्या अंतर है?

उत्तर: जो लोग केवल धर्म में विश्वास करते हैं—कहना और करना, दो बातें हैं। जो केवल कहता है, वह दूसरों के साथ उसकी चर्चा करता है, परंतु सच्चाई यह है कि बुद्धिमान और सफल वही हैं जो अपने आचरण में धर्म का पालन करते हैं। जो इसका आचरण करते हैं, उन्हें फल मिलता है। केवल विश्वास करने से थोड़ा-सा पुण्य तो मिलता है, पर फल नहीं मिलता। पुण्य मिलने और फल मिलने में बहुत बड़ा अंतर है। यह ऐसा है जैसे आपके पास एक पौधा हो। केवल पत्ते होने से क्या लाभ? जिस वृक्ष पर पत्ते तो हों पर फल न हो, वह केवल विश्वास करने के समान है। और यदि वृक्ष पर पत्तों के साथ फल भी हों, तो वह आचरण करने के समान है; ऐसा ही उसका फल है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:11 · 30 जून 2025

प्रश्न 3062 यहाँ हमारे यहाँ बहुत ऊँची इमारतें हैं, इसलिए सूर्यदेव और उनकी किरणें दिखाई नहीं देतीं। हम पूर्व दिशा की ओर मुख करके सूर्यदेव को अर्घ्य (जल) अर्पित करते हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर: यह बिल्कुल ठीक है। सूर्यदेव दिखें या न दिखें... जैसे, यदि आकाश बादलों से ढका हो, तब भी सूर्यदेव दिखाई नहीं देते, है न? सूर्यदेव प्रातः और सायंकाल अपनी कृपा प्रदान करते हैं। वे पूर्व में उदय होते हैं और पश्चिम में अस्त होते हैं। आप सूर्यदेव को देख पाएँ या न देख पाएँ, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय यदि आप विधिपूर्वक सूर्यदेव को अर्घ्य देते हैं, तो आपको वही पुण्यफल मिलेगा जो सूर्य को देखकर अर्घ्य देने वालों को मिलता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:21 · 30 जून 2025

प्रश्न 3063 हम केवल ब्रह्म मुहूर्त (भोर से पहले का समय) और दोपहर में ही स्नान करते हैं। तो क्या शाम को हम बिना स्नान किए सूर्यदेव को अर्घ्य दे सकते हैं?

उत्तर: आप दोपहर और प्रातःकाल सूर्यदेव को अर्घ्य दे सकते हैं। शाम को, यदि आपको कोई कठिनाई है या कोई शारीरिक समस्या है जिसके कारण आप स्नान नहीं कर सकते, तो आप पैर धो लीजिए, फिर मानसिक रूप से गंगा स्नान कीजिए, अपने ऊपर जल छिड़कीए, तीन बार माँ गंगा का नाम लीजिए, और फिर स्वच्छ वस्त्र पहनकर आप सूर्यदेव को अर्घ्य दे सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:27 · 30 जून 2025

प्रश्न 3064 मैं अर्घ्य देने के लिए छत पर नहीं जा सकता। इसलिए मैं सूर्यदेव का ध्यान करके अपने घर की देहरी पर खड़े होकर अर्घ्य देता हूँ। परंतु वहाँ से सूर्यदेव दिखाई नहीं देते और जल मेरे घर की दीवार पर गिरता है। क्या ऐसा करना ठीक है?

उत्तर: देखिए, शहरी क्षेत्रों में अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों के लिए बाहर जाकर सूर्यदेव को जल अर्पित करना संभव नहीं है। इसलिए आप घर के भीतर भी सूर्यदेव को जल अर्पित कर सकते हैं, चाहे वह दीवार पर गिरे या कहीं और। यह अर्घ्य का जल सूर्यदेव ग्रहण नहीं करते। यह उन असुरों के प्रतिकार के लिए है जो प्रातः और सायं संध्या के समय सूर्य को ग्रसने का प्रयास करते हैं। भक्तों द्वारा अर्पित जल इन असुरों के मुख पर अग्नि के समान पड़ता है, जिससे वे जलते हैं और सूर्यदेव को दिया जाने वाला कष्ट रुक जाता है। इसलिए आप कहीं भी अर्घ्य दे सकते हैं, और इसका फल भी आपको मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:15 · 30 जून 2025

प्रश्न 3065 त्रिसंध्या (तीनों समय की संध्या) के समय, यदि मैं कहीं और हूँ जहाँ मैं इसे ठीक से नहीं कर सकता, तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या संध्या करने से पहले स्नान करना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, सत्य युग एक ही दिन में स्थापित नहीं होगा। मैं एक ही दिन में सबको पुण्यात्मा नहीं बना सकता। इसीलिए मैं आपको धीरे-धीरे, चरणबद्ध रूप से बता रहा हूँ। अभी के लिए त्रिकाल संध्या का नियम यह है: आप मानसिक रूप से गंगा स्नान करके कहीं भी अपनी संध्या कर सकते हैं—यात्रा करते हुए, काम करते हुए, या गाड़ी चलाते हुए। परंतु समय के साथ, जब सत्य युग आएगा, तब तीनों संध्याओं से पहले स्नान करना होगा और यज्ञ भी करना होगा। पर अभी, आप जिस भी स्थिति में हों, मानसिक स्नान कीजिए और दुर्गा माधव स्तुति, भगवान विष्णु के 16 नाम, उनके दस अवतारों के श्लोक पढ़िए, और 108 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए। साथ ही, ब्रह्म मुहूर्त से लेकर रात 12 बजे के बीच कभी भी भागवत का एक अध्याय पढ़िए। ऐसा करने से आपको त्रिकाल संध्या का पुण्यफल प्राप्त होगा। अभी हम इसी नियम का पालन करेंगे, और समय के साथ मैं इसे बदलूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:46 · 30 जून 2025

प्रश्न 3066 यदि पाँच वर्ष का छोटा बच्चा केवल माधव नाम का जप करे, तो क्या वह पर्याप्त होगा?

उत्तर: देखिए, ध्रुव जब सात वर्ष के थे, तब उन्होंने तपस्या करके ध्रुव तारा और अपने पिता का सिंहासन प्राप्त किया। तो पाँच वर्ष का बच्चा तो निश्चित रूप से कर सकता है। हमारे सुधर्म महासंघ में तो दो वर्ष के बच्चे भी त्रिकाल संध्या करते हैं और पूरा मंत्र बोलते हैं। इसलिए आपकी भावना बहुत अच्छी है। उन्हें माधव नाम का जप अवश्य करना चाहिए, परंतु आपको अभ्यास कराकर उन्हें त्रिकाल संध्या के मंत्र भी लगन से सिखाने चाहिए, ताकि वे पूरी त्रिकाल संध्या कर सकें। यह उनके लिए मंगलकारी होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:15 · 30 जून 2025

प्रश्न 3067 क्या 2025 में इंटरनेट समाप्त हो जाएगा?

उत्तर: देखिए, इंटरनेट कलियुग का एक तत्व है। जैसे-जैसे भगवान की आध्यात्मिक शक्ति का प्रकाश, सत्य युग, प्रकट होगा, वैसे-वैसे इंटरनेट भी कम होता जाएगा। यह एक ही दिन में या केवल 2025 में नहीं होगा। इसके लिए 2032 तक का समय है। यह धीरे-धीरे होगा। हमें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए, परंतु यह निश्चित रूप से होगा। यह हर वर्ष थोड़ा-थोड़ा कम होता जाएगा, और एक समय आएगा जब यह पूरी तरह बंद हो जाएगा। जिस दिन सत्य युग पूर्ण रूप से प्रकाशित होगा, उसी दिन इंटरनेट पूरी तरह बंद हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:13 · 30 जून 2025

सत्र 174 · प्रश्न 3068–3073

L190: अमेरिका में भूकंप और अमेरिका का भविष्य। Future of US | Dr Pandit Kashinath Mishra

दिनांक: 18 जुलाई 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3068 जय श्री पंडित जी, आपके चरणों में मेरा विनम्र प्रणाम। मैं 2022-23 से एक मंदिर से जुड़ा हुआ हूँ। मैं वहाँ प्रचार करता हूँ और मैंने उन्हें भविष्य मालिका की पुस्तक भी दी है, यह बताते हुए कि ऐसा-ऐसा होने वाला है। पर वे कहते हैं कि ऐसा कुछ नहीं होगा, यह सब बकवास है। वे कहते हैं, 'बस एक गुरु का अनुसरण करो, और तुम मुक्त हो जाओगे और भगवत धाम चले जाओगे।' मैं उनसे कहता हूँ कि यह भी भविष्य मालिका से है, जिसे पंचसखा ने लिखा है। पर वे कहते हैं, 'नहीं, इनमें से कुछ नहीं होगा।' तो मैं उन्हें कैसे समझाऊँ? साथ ही, मुझे नहीं पता कि मैं सत्ययुग में जाऊँगा या नहीं, क्योंकि मुझे छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आ जाता है, हालाँकि मैं कोशिश करता हूँ कि न आए। तो कृपया बताइए, मैं उन लोगों को कैसे समझाऊँ? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, शास्त्रों में जो लिखा है वह किसी मनुष्य की मनमानी बात नहीं है। शास्त्र सदैव परम सत्य होते हैं। जिनका आगे बढ़ना नियत है, वे इसकी सराहना करेंगे। और जो स्वयं को बचाने का प्रयास करने के बावजूद विनाश और कष्ट की ओर बढ़ रहे हैं, वे नहीं समझेंगे। इसलिए किसी को समझाने का प्रयास मत कीजिए। मैं भी किसी को समझाता नहीं हूँ, पर प्रचार अवश्य करता हूँ। क्योंकि जिन्हें इसकी आवश्यकता है, वे इसे ग्रहण कर लेंगे। जो इसके भूखे हैं, जिन्होंने अपने पूर्व जन्मों में सचमुच अच्छे, पुण्यमय और पवित्र कर्म किए हैं, जिनमें सत्ययुग का मनुष्य बनने की क्षमता है, उन्हें यह अच्छा लगेगा। जिनमें यह नहीं है, उन्हें यह अच्छा नहीं लगेगा। तो किसी को समझाने का प्रयास मत कीजिए। पर शास्त्रों का प्रचार अवश्य कीजिए। हर युग में—बुद्ध ने सारे संसार में बौद्ध धर्म और सनातन धर्म का प्रचार किया। भगवान चैतन्य ने वैष्णव धर्म का प्रचार किया। और इस युग में भगवान महाविष्णु के धर्म—त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ और माधव नाम के जप—का प्रचार हो रहा है। क्योंकि भविष्य शास्त्र में लिखा है कि संसार के सभी मनुष्य माधव नाम से मुक्त होंगे। इसीलिए हम माधव नाम का प्रचार करते हैं। जो भाग्यशाली हैं, वे इसे स्वीकार करेंगे। जो अभागे हैं, वे स्वीकार नहीं करेंगे। उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:13 · 18 जुलाई 2025

प्रश्न 3069 जय श्री माधव, पिताजी। मेरा प्रश्न यह है, पिताजी, मेरा पाँच वर्ष का बेटा है। वह छोटा है और सुबह जल्दी नहीं उठ पाता। वह शाम की त्रिकाल संध्या करता है। वह दोपहर में स्कूल जाता है और 2 बजे लौटता है। तो गुरुजी, मैं उससे दिन में तीनों समय त्रिकाल संध्या कैसे करवाऊँ?

उत्तर: देखिए, वह छोटा बच्चा है। यदि वह स्कूल के समय में नहीं कर सकता, तो उसे सुनवा दीजिए। उसके लिए रिकॉर्डिंग चला दीजिए। और उससे कहिए कि वह 'सरल संध्या' करे, जिसमें केवल 108 बार 'माधव' नाम का जप और अवतारों के नामों का उच्चारण है: परशुराम, राम, बलराम, श्री बुद्ध, कल्कि, और दुर्गा माधव। ऐसा करने से उसे वही लाभ मिलेगा। बच्चों को माधव नाम सिखाइए; यह तो केवल एक-दो मिनट में हो जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 16:08 · 18 जुलाई 2025

प्रश्न 3070 मेरा एक और प्रश्न है, पिताजी। मुझे बस आपका आशीर्वाद चाहिए कि वह मेरे पूरे परिवार पर बना रहे। हमारा पूरा परिवार संध्या करता है। हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।

उत्तर: ठीक है। आपको भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद है।

► यह उत्तर सुनें · 17:03 · 18 जुलाई 2025

प्रश्न 3071 आपने हमें अमेरिका के भविष्य के बारे में विस्तार से बताया, कि वहाँ क्या हो सकता है। लेकिन मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। मेरे भाई और बहन ऑस्ट्रेलिया में रहते हैं, और वे इस्कॉन समुदाय से जुड़े हुए हैं। वे महामंत्र का जप करते हैं: 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।' उन्होंने ऑस्ट्रेलिया से मेरे लिए विवाह का प्रस्ताव तक भेजा है, और कह रहे हैं कि मैं वहाँ आकर उनके और इस्कॉन के साथ जुड़ जाऊँ, क्योंकि वे प्याज-लहसुन नहीं खाते, और उनका कहना है कि मेरा जीवन सफल हो जाएगा क्योंकि मैं श्रीकृष्ण के और निकट पहुँच जाऊँगा। लेकिन मैं सौभाग्यशाली रहा कि कुछ महीने पहले मैं आपसे जुड़ गया। अब मैं असमंजस में हूँ। वे मुझे विदेश भेजना चाहते हैं ताकि मैं ऑस्ट्रेलिया में इस्कॉन से जुड़ जाऊँ, जहाँ मेरे भाई-बहन रहते हैं। दूसरी ओर, मैं भारत में ही रहने पर विचार कर रहा हूँ। मैं बहुत बड़ी दुविधा में हूँ। क्या मैं यहीं रहकर आगे बढ़ूँ, या उनकी बात मानकर ऑस्ट्रेलिया जाकर उनके और इस्कॉन के साथ जुड़ जाऊँ?

उत्तर: मेरा ऐसा मानना है। हमारे भारत के जितने भी लोग विदेशों में हैं, चाहे ऑस्ट्रेलिया में हों, अमेरिका में, इंग्लैंड में, जर्मनी में, फ्रांस में, कनाडा में, या कहीं और—आने वाले दो-तीन वर्षों के भीतर वे धीरे-धीरे, क्रमशः हमारे देश लौटने लगेंगे। वहाँ रहना संभव नहीं हो पाएगा। यह पहली बात है। दूसरी बात यह है कि भगवान कृष्ण के महामंत्र का जप सभी के लिए आवश्यक है। लेकिन त्रिकाल संध्या के बिना सत्ययुग में प्रवेश करना बहुत कठिन है, असंभव भी है। त्रिकाल संध्या वह तत्व है जिसके द्वारा मनुष्य को निराकार भगवान महाविष्णु से सीधे आशीर्वाद मिलता है और उनसे सीधा संबंध स्थापित होता है। संध्या के बिना पृथ्वी का कोई भी मनुष्य सत्ययुग में नहीं जाएगा। 2032-33 से सत्ययुग का निर्माण प्रारंभ होगा। इसलिए भगवान विष्णु की शरण लीजिए। महामंत्र का जप कीजिए, लेकिन यह भी जानिए कि भगवान विष्णु का परम तत्व त्रिकाल संध्या है। त्रिकाल संध्या करना और माधव की शरण लेना आपके लिए कल्याणकारी होगा। जो लोग अभी विदेशों में हैं, एक समय ऐसा आएगा कि वे भी अपने घर लौटेंगे, क्योंकि समय बदल रहा है। एक नए सत्ययुग का निर्माण होगा, और इस काल में भारतीय मूल के सभी लोगों को भारत वापस आना होगा। कुछ थोड़े-से लोग शायद रह जाएँ, लेकिन 95% लोगों को भारत लौटना ही पड़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:18 · 18 जुलाई 2025

प्रश्न 3072 पिताजी, जैसा आप कहते हैं, पाप के कारण कलियुग की आयु घट रही है। लेकिन मनुष्य अपनी स्वेच्छा से तो पाप नहीं करता, है ना? मैं आपके सत्संग से जुड़ा हूँ, मैं भागवत पुराण पढ़ता हूँ, त्रिकाल संध्या करता हूँ, और भगवान का नाम जपता हूँ। मैं सब कुछ पालन कर रहा हूँ। मैं बस यह पूछना चाहता था, आप कहते हैं कि पाप के

कारण कलियुग की आयु कम कर दी गई है। लेकिन पाप तो कलियुग ही लाया है ना? मनुष्य अपनी इच्छा से तो नहीं कर रहा। परमपिता ने तो पहले ही लिख दिया था कि कलियुग में लोग ऐसा ही आचरण करेंगे। यही मैं पूछना चाहता था।

उत्तर: देखिए, पाप तो सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में भी हुआ था। लेकिन सत्ययुग में 99-100% लोग पाप नहीं करते थे। हाँ, उसकी इच्छा से ही पत्ता-पत्ता हिलता है, लेकिन जब किसी जीव को मारा जाता है, तो वह पहले रोता है, चीखता है, और फिर मनुष्य जबरदस्ती उसे मार डालता है। क्या यह भगवान की इच्छा से होता है? नहीं। मनुष्य अपने ही कर्म के सूत्र में बँधा हुआ है। भगवान ने सत्व, रज और तम से संसार की रचना की, और मनुष्य को ज्ञान, बुद्धि और विवेक दिया। जो अपने विवेक को जागृत करते हैं, वे पाप नहीं करते। जो मनुष्य इंद्रियों के वशीभूत हैं, वे पाप करते हैं। और भगवान ने कहा है कि मनुष्य अपने कर्मों से पाप करता है और अपने कर्मों से पुण्य अर्जित करता है। पाप का फल पाप है, और पुण्य का फल पुण्य। इसलिए भगवान का इससे कोई लेना-देना नहीं है। सृष्टि भगवान की इच्छा से चलती है—हमें अन्न मिलता है, सूर्य और चंद्रमा उदय होते हैं, हवा चलती है—यह सब भगवान की इच्छा से है। लेकिन कर्म मनुष्य अपनी इच्छा से करता है। जो शास्त्रों का पालन करते हैं, उन्हें भगवान की कृपा मिलती है और वे सत्कर्म करते हैं। जो अज्ञानी हैं और इंद्रियों के वश में हैं, वे अपनी इच्छा से पाप करते हैं। इसलिए भगवान का इसमें कोई हाथ नहीं। भगवान कहते हैं कि मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही फल मिलेगा। इसीलिए शास्त्रों की रचना हुई। जो उनका अध्ययन और पालन करेंगे, वे कभी पाप नहीं करेंगे। और जो पाप करते हैं, वे कहते हैं, 'यह तो भगवान की इच्छा से होता है।' नहीं, जिनकी इंद्रिय-शक्ति जागृत है, वही पाप करते हैं। जो सात्विक शक्ति प्राप्त करते हैं, वे पुण्य कर्म करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 21:35 · 18 जुलाई 2025

प्रश्न 3073 मैं चार महीने से संध्या कर रहा हूँ, लेकिन पिताजी, मेरा एक प्रश्न है। जब भी मैं दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या करता हूँ, तो पहले मुझे नींद नहीं आती, लेकिन जैसे ही मैं शुरू करता हूँ, पूरे अभ्यास के दौरान मुझे बहुत जम्हाइयाँ आती हैं। मुझे समझ नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है।

उत्तर: बार-बार जम्हाई आना और आँखों से आँसू बहना, यह होता है। इसका कारण यह है कि शरीर के भीतर की नकारात्मकता बाहर जा रही है, और आध्यात्मिक ऊर्जा शरीर में प्रवेश कर रही है। किसी अन्य मंत्र का ऐसा प्रभाव नहीं होता; यह केवल त्रिकाल संध्या के मंत्रों से ही आता है। यदि कोई त्रिकाल संध्या करता है और रात में उसे नींद नहीं आती, तो वह लेटे-लेटे आँखें बंद करके भी कर सकता है। नींद आ जाएगी, क्योंकि यह 'ब्रह्म तत्व' है। इसके द्वारा देवताओं की कृपा और भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है। सारी नकारात्मकता चली जाती है, और शरीर अधिक से अधिक शुद्ध होता जाता है। इसीलिए जम्हाइयाँ आती हैं और आँखों से थोड़े आँसू निकलते हैं। इसका अर्थ है कि आपकी त्रिकाल संध्या सफल है। जय जयकार।

► यह उत्तर सुनें · 28:29 · 18 जुलाई 2025

सत्र 175 · प्रश्न 3074–3078

L191: विश्व में प्रजा आंदोलन तथा नेपाल का भविष्य। Nepal Protests | Pandit Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 12 सितम्बर 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3074 प्रभु, लोगों को किस वर्ष भारत लौट आना चाहिए? मेरा मतलब है, अमेरिका से भारत वापस आ जाना चाहिए? क्योंकि जब युद्ध वगैरह होंगे... अभी यहाँ स्थिति बहुत भयानक है। वे भारतीयों को मार रहे हैं... यह सब हो रहा है। और जब युद्ध वगैरह होगा, तो सबसे पहले हवाई यात्रा ही बंद होगी, है ना? अगर हवाई यात्रा बंद हो गई, तो लोग यहीं फँस जाएँगे। मैं लंबे समय से आपको सुन रहा हूँ और मुझे अभी-अभी नौकरी मिली है, इसलिए मुझे अपने कर्ज चुकाने हैं। यहाँ रहने की मेरी एक आर्थिक मजबूरी है। मुझे लौटने में एक साल या उससे अधिक लगेगा।

उत्तर: देखिए, यह प्रश्न उन सभी लोगों के लिए है जो दूसरे देशों में रह रहे हैं। भविष्य शास्त्र के अनुसार यह लिखा है, और मैंने भी इसे भविष्य शास्त्र की पुस्तक, भविष्य मालिका पुराण में लिखा है। जो लोग विदेशों में रह रहे हैं, वे भारत आएँगे। लिखा है कि वे भारत लौटेंगे। वहाँ समयावधि का भी उल्लेख है। जब तृतीय विश्वयुद्ध होने वाला है, जब यह विश्व में शुरू होने वाला है, उसके बाद जो भारतीय निवासी बाहर के देशों में रह रहे हैं, वे भारत लौटेंगे। वे एक सुरक्षित भविष्य के लिए अपने गाँवों को लौटेंगे। तो, विश्वयुद्ध 2025, 26 और 27 के बीच होने वाला है। यह 100% निश्चित है। उस दौरान आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं। अगर कोई समस्या हो, तो भविष्य में हम गूगल मीट कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने से पहले ही, मैं पूरी दुनिया के लोगों को, विदेशों में रहने वाले सभी भारतीय निवासियों को सूचित करूँगा। मैं आपको बताऊँगा... अभी समय नहीं है, लेकिन मैं आपसे कहूँगा कि कुछ समय, कुछ महीनों या एक-दो वर्ष प्रतीक्षा करें। जब आवश्यक होगा, मैं बाहर के देशों में रहने वाले सभी लोगों को 100% पुष्टि कर दूँगा। बस कुछ समय प्रतीक्षा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 35:37 · 12 सितम्बर 2025

प्रश्न 3075 मेरी बहन ने एक घर खरीदा है। यह पुराना घर है जिसका नवीनीकरण किया गया है। क्या वे नवदुर्गा के नौ दिनों में गृह-प्रवेश कर सकते हैं? उन्हें कब, किस तारीख को प्रवेश करना चाहिए? योजना यह है कि 22 तारीख के बाद, जब नवदुर्गा शुरू होती है, तब प्रवेश करें। कृपया सलाह दीजिए।

उत्तर: ठीक है, नवरात्रि 22 तारीख से शुरू हो रही है। नवरात्रि का समय अच्छा है। दशहरे का दिन अच्छा हो सकता है, दशमी का दिन। दशहरे का दिन बहुत अच्छा दिन हो सकता है। यह चल रहे देवी पक्ष के दौरान भी हो सकता है। देखिए, आप जब भी प्रवेश करना चाहें, दशहरे का दिन एक अच्छा विकल्प है। 22 तारीख भी सर्वश्रेष्ठ है। 22 तारीख को ही रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा हुई थी। 22 तारीख अच्छी तिथि है।

► यह उत्तर सुनें · 38:56 · 12 सितम्बर 2025

प्रश्न 3076 पिताजी, मेरी एक बहुत बड़ी समस्या है। मैं संध्या करती हूँ और माधव का नाम जपती हूँ, लेकिन किसी कारण से ब्रह्म मुहूर्त में मेरी नींद नहीं खुल पाती। और दिन में भी मैं सही समय पर संध्या नहीं कर पाती। मैं दिनभर मन ही मन संध्या करती रहती हूँ और माधव का नाम जपती रहती हूँ, लेकिन उचित समय पर नहीं कर पाती। मुझे नहीं पता क्यों, और मुझे बहुत चिंता है कि मैं ब्रह्म मुहूर्त में नहीं उठ पाती। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए माँ, मैं आपको एक बात बताता हूँ। शास्त्रों में लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उनका जीवन चांडाल के समान है। उनके जीवन का कोई मूल्य नहीं। इस पृथ्वी पर उनके जन्म का कोई प्रयोजन नहीं। और जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उन्हें भोजन करने का अधिकार नहीं है। कोई कह सकता है, 'मैं कमा रहा हूँ, तो मैं खाऊँगा।' नहीं, शास्त्र कहते हैं कि आप कमा सकते हैं और भोजन बना सकते हैं, लेकिन जिस दिन किसी व्यक्ति ने त्रिकाल संध्या नहीं की, उस दिन उसे भोजन करने का अधिकार नहीं है। तो माँ, सही समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। देखिए, जब मृत्यु आती है, तो मनुष्य चिकित्सालय जाता है, और इस संसार के लिए मृत्यु आ रही है। त्रिकाल संध्या ही एकमात्र मार्ग है जिससे हम उस सत्य पर विजय पा सकते हैं। उसके लिए हमें प्रयास करना होगा। भगवान के प्रति भक्ति और समर्पण होना चाहिए। यदि भक्ति और समर्पण नहीं है, तो माँ, यह कैसे होगा? और यदि आप समय पर त्रिकाल संध्या नहीं करतीं, तो आपको भोजन करने का अधिकार नहीं है; शास्त्रों ने इसे वर्जित किया है। इसका अर्थ है कि संसार में जो लोग त्रिकाल संध्या किए बिना भोजन करते हैं, उनका कोई अधिकार नहीं है। सनातन धर्म कहता है कि त्रिकाल संध्या अवश्य करनी चाहिए। जो लोग नहीं करते, उन्हें भोजन ग्रहण करने का अधिकार नहीं है। तो समय पर कीजिए, और भगवान आपको आशीर्वाद देंगे। ब्रह्म मुहूर्त में आपकी नींद खुल जाएगी। अब जब मैंने आपको आज बता दिया है, तो आप देखिएगा कि आपकी नींद खुलेगी। लेकिन उस समय आलस्यवश फिर से सो मत जाइएगा। त्रिकाल संध्या कीजिए, मेरी बच्ची। जय।

► यह उत्तर सुनें · 41:10 · 12 सितम्बर 2025

प्रश्न 3077 कृपया हमें नवरात्रि के बारे में बताइए। इस विषय पर बात करते-करते आप रुक गए थे। आप इस वर्ष की नवरात्रि के बारे में कुछ कहने वाले थे, लेकिन विषय अधूरा रह गया, इसलिए मैं उसके बारे में जानना चाहता हूँ।

उत्तर: देखिए, इस बार जो नवरात्रि का कार्यक्रम हो रहा है, देवी दुर्गा पक्ष की यह नवरात्रि, संसार के लिए सत्ययुग का उदय लाने की दिशा में कार्य करेगी। विनाश का कार्य आरंभ होगा। जगदंबा... जैसे माता वैष्णो देवी के क्षेत्र में विनाश आ रहा है। और देवी दुर्गा द्वारा धर्म-स्थापना का कार्य... यही वह विशेष समय है जब माँ दुर्गा विनाश के लिए प्रस्थान करेंगी। यह इसी नवरात्रि के दिनों से आरंभ होगा। संसार के लिए माँ दुर्गा के विनाश-कार्य का समय इस आने वाली 22 तारीख से शुरू होगा। अधिक कहने की क्या आवश्यकता है? यदि मैं अधिक कहूँगा, तो लोग इधर-उधर की बातें करेंगे। इसलिए मैं केवल इतना ही कहूँगा: इस समय माँ दुर्गा विनाश आरंभ करने के लिए अपने धाम से प्रस्थान करेंगी। वह 22 तारीख ही विशेष तिथि है।

► यह उत्तर सुनें · 43:34 · 12 सितम्बर 2025

प्रश्न 3078 पंडित जी, कृपया हमें भारत-पाकिस्तान युद्ध के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध निश्चित रूप से होगा। और मैं आपको इतना बताऊँगा: जैसे पहले एक घटना हुई थी, वैसे ही एक और घटना होगी, और उसके बाद युद्ध आरंभ होगा। सुनिए, यदि आप व्यक्तिगत रूप से बात करें, तो मैं बता सकता हूँ, लेकिन यहाँ नहीं कहूँगा। हम जानते हैं कि यह आक्रमण कहाँ होगा, लेकिन हम इसे उजागर नहीं करते। लेकिन उनकी ओर से कुछ होगा, जैसे पहलगाम में हुआ था, और फिर युद्ध होगा। उसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध निश्चित है। और हमारे अन्य शत्रु राष्ट्रों के साथ भी, जैसे चीन और बांग्लादेश। शास्त्रों में जो लिखा है, वही होगा; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। विश्वयुद्ध बिल्कुल होगा, 100%। समय बहुत निकट है। यह कुछ दिनों में हो सकता है या एक-दो वर्षों के भीतर, लेकिन 100% होगा। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, क्योंकि धर्म-स्थापना का कार्य आरंभ हो चुका है। और यह जो नया चरण शुरू होता है, नवमी पक्ष, वह 22 सितंबर से आरंभ होता है। आगे का समय केवल बदतर ही होगा, बेहतर नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 46:26 · 12 सितम्बर 2025

सत्र 176 · प्रश्न 3079–3099

L192: India-Pakistan के बीच War कभी भी हो सकता है। कारण क्या होगा? | Pandit Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 15 सितम्बर 2025 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3079 और इसका उद्देश्य क्या था?

उत्तर: इसका उद्देश्य यह था: यह पूरे विश्व में प्रचारित होगा, और इस प्रचार के कारण लोग अपनी नीतियाँ, आदर्श और कर्म बदलेंगे। एक चेतावनी, और दूसरा रक्षा का मार्ग—दोनों का प्रचार होगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:56 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3080 भारत-पाकिस्तान युद्ध के बारे में भविष्य शास्त्र में क्या लिखा है?

उत्तर: इस विषय में केवल एक ही शास्त्र है, नित्य पंचखली, जो भविष्य मालिका पुराण के भीतर रचित है। बहुत से लोग बहुत-सी बातें प्रचारित करते हैं। लेकिन भगवान व्यास देव ने भी एक भविष्य पुराण और एक कलि पुराण की रचना की थी। उन पुराणों में भारत-पाकिस्तान युद्ध का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं है। हालाँकि, यह उल्लेख अवश्य है कि युग के अंत में युद्ध, महामारियाँ और प्राकृतिक आपदाएँ होंगी। इसके प्रमाण मिल रहे हैं। लेकिन नित्य पंच ने भविष्य मालिका पुराण में इसके बारे में स्पष्ट रूप से लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 05:43 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3081 इसकी स्थिति क्या होगी? शास्त्र क्या कहता है?

उत्तर: शास्त्र क्या कहता है, इस विषय में हमने अध्ययन किया है और इसका स्पष्ट प्रमाण मौजूद है। जब शनि मीन राशि में होते हैं (मीन शनि), जो 29 मार्च 2025 से आरंभ हुआ है और ढाई वर्ष तक रहेगा—2025, 2026 और 2027 का आधा वर्ष—तब शास्त्र कहता है कि इस अवधि में भारत और पाकिस्तान के बीच एक महान और भयंकर युद्ध होगा।

► यह उत्तर सुनें · 07:34 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3082 इसमें किसका लाभ होगा और किसकी हानि होगी?

उत्तर: इसकी चर्चा भी शास्त्र में है। सबसे बड़ा लाभ सनातन धर्म का होगा।

► यह उत्तर सुनें · 08:30 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3083 क्यों?

उत्तर: सनातन धर्म का लाभ करना मनुष्य के सामर्थ्य में नहीं है। परंतु सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए और मानव सभ्यता को उसका आशीर्वाद प्राप्त हो, इसके लिए एक भव्य कार्यक्रम होगा।

► यह उत्तर सुनें · 08:42 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3084 भविष्य क्या है?

उत्तर: बात यह है कि 2025 और 2027 के बीच यह दूसरा युद्ध होगा। मेरी दृष्टि में यह 2026 तक हो सकता है, या 2026 से पहले भी हो सकता है। यह अत्यंत नाजुक स्थिति है। भारत-पाकिस्तान संबंधों की वर्तमान स्थिति किसी भी क्षण युद्ध में बदल सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 09:07 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3085 तो इसका भविष्य क्या है? उस युद्ध में क्या होगा?

उत्तर: देखिए, इस युद्ध के विषय में भविष्य शास्त्र में लिखा है कि पाकिस्तान अकेला नहीं लड़ेगा। इसमें 13 मुस्लिम देश शामिल होंगे और चीन भी। ये सब मिलकर भारत के विरुद्ध लड़ेंगे। तुर्की और ईरान स्पष्ट रूप से अग्रिम पंक्ति में रहेंगे, हमारे विरुद्ध लड़ते हुए।

► यह उत्तर सुनें · 09:45 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3086 तो इस स्थिति में भारत का भविष्य क्या है?

उत्तर: भविष्य शास्त्र में लिखा है कि युद्ध होगा, परंतु पाकिस्तान पराजित होगा। एक समय आएगा जब भारत विश्व में विजयी होगा। वही युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा, और संपूर्ण पृथ्वी पर एक भयंकर महायुद्ध आरंभ करेगा। इस युद्ध में भारत विजयी होगा और आगे बढ़ेगा। विश्व के सभी देश भारत का सम्मान करेंगे। भारत विश्व गुरु बनेगा, और भारत में प्रचलित सृष्टि का आदि धर्म सनातन धर्म संपूर्ण विश्व में स्थापित होगा।

► यह उत्तर सुनें · 10:26 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3087 तो भारत के लोगों की रक्षा कैसे होगी? भारत के भक्तों की रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: यह शास्त्र में लिखा है। भारत के भविष्य के बारे में मैं पहले ही बता चुका हूँ: भारत विश्व गुरु बनेगा, और यह विश्व युद्ध ही उसे ऐसा बनाएगा। परंतु यह एक भयंकर युद्ध होगा, एक महासमर। इस युद्ध में भारत के भक्त विजयी होंगे। सनातन धर्म संपूर्ण विश्व में फैलेगा। भारत और विश्व की संपूर्ण मानव सभ्यता सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों का पालन करेगी: त्रिकाल संध्या (तीनों काल की संध्या), भागवत का पाठ, और माधव के नाम का जप। वे इन तीन साधनाओं को अपने जीवन में अपनाएँगे और सनातन धर्म को स्वीकार करेंगे। लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं और माधव के नाम का जप करते हैं, वे महायुद्धों से, आने वाले विनाश से, और गृहयुद्ध से सुरक्षित रहेंगे। यह शास्त्र में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 12:46 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3088 भक्तों की रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: मैं पहले ही बता चुका हूँ। भारत विश्व गुरु बनेगा, और यह विश्व युद्ध ही उसे ऐसा बनाएगा। परंतु यह एक भयंकर, महायुद्ध होगा। इस युद्ध में भारत के भक्त विजयी होंगे। सनातन धर्म संपूर्ण विश्व में फैलेगा। संपूर्ण मानव सभ्यता सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों का पालन करेगी: त्रिकाल संध्या (तीनों काल की संध्या), भागवत का पाठ, और माधव के नाम का जप। वे इन साधनाओं को अपनाएँगे और सनातन धर्म को स्वीकार करेंगे। लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं और माधव के नाम का जप करते हैं, वे महायुद्धों से, आने वाले विनाश से, और गृहयुद्ध से सुरक्षित रहेंगे। यह शास्त्र में लिखा है।

► यह उत्तर सुनें · 12:52 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3089 मेरे दो बच्चे हैं, 5 वर्ष की बेटी और 10 वर्ष का बेटा। पिछले कई वर्षों से हमारे साथ कोई नकारात्मक ऊर्जा जुड़ी हुई है। हम घर में बहुत पूजा-पाठ करते हैं, जिससे कुछ राहत मिलती है। लेकिन इस बार समस्या बहुत बढ़ गई है। मेरे बच्चों की आँखों के नीचे काले घेरे हैं और वे रात में डर जाते हैं। मुझे भी सिर में भारीपन, चक्कर, नींद आना और शरीर में भारीपन महसूस होता है। बच्चे डरावने चेहरे बनाते हैं। हम त्रिकाल संध्या करते हैं और हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: नकारात्मकता की यह अवधारणा आजकल बहुत फैल रही है क्योंकि पितरों के लिए पिंड-दान नहीं किया जाता, और शुद्धि क्रिया तथा श्राद्ध क्रिया सही समय पर नहीं होती। इसी कारण नकारात्मकता बढ़ रही है। साथ ही, आजकल बहुत से लोग मंत्र-तंत्र के द्वारा दूसरों को परेशान करते हैं। इसलिए आप त्रिकाल संध्या करती रहिए, परंतु उसके साथ घर में 'नारायण कवच' का पाठ कीजिए। रात को सोने से पहले घर में एक बार और त्रिकाल संध्या कीजिए और सोने से पहले 216 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए। मेरी दृष्टि में इससे आपको नकारात्मकता से या आपके घर पर किए गए किसी भी टोने-टोटके से तत्काल राहत मिलेगी। यदि काम न बने तो मुझे बताइएगा। यह कोई बड़ी समस्या नहीं है; हम इसे ठीक कर सकते हैं। आध्यात्मिक मंत्रों से और शास्त्रीय विधि के अनुसार हम इसे ठीक कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:45 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3090 देबानी मा नाम की एक व्यक्ति पूछती हैं: पंडित जी, आपके चरणों में मेरा सादर प्रणाम। हमारी प्रैक्टिकल परीक्षाओं में, दवा के प्रभाव देखने के लिए, हमें पशु के मांस को छूना पड़ता है। महाप्रभु जी की कृपा से अब तक मुझे ऐसा नहीं करना पड़ा, परंतु अंतिम परीक्षा में यह अनिवार्य है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: आपके प्रश्न के संबंध में, देखिए, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' (तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फलों में कभी नहीं)। आप जो पढ़ाई कर रही हैं, जो प्रैक्टिकल कार्य कर रही हैं—यदि आप इन कर्तव्यों का पालन करती हैं, तो इस कार्य के माध्यम से आप मानव सभ्यता के हजारों, यहाँ तक कि लाखों लोगों की सेवा कर सकेंगी। आप सेवा करने के योग्य बनेंगी। यह कार्य आपकी शिक्षा का ही अंग है। यदि हम पढ़ाई के समय ऐसा सोचेंगे, तो मानव सभ्यता की रक्षा कैसे होगी? इसलिए, पाप तब लगता है जब कोई किसी जीव को मारता है, उसे खाता है, पीता है, और उसका प्रचार करता है। आप इनमें से कुछ भी नहीं कर रही हैं। तो इस विषय में व्यथित होने की आवश्यकता नहीं है। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दीजिए। आपकी शिक्षा समाज के कल्याण की ओर ले जाएगी, और इसके लिए हमें निर्धारित शिक्षा प्रणाली का पालन करना पड़ता है। उसके अनुसार यह आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 19:42 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3091 जय जगन्नाथ, पंडित जी। झाँसी से प्रवेश कांत श्रीवास्तव पूछते हैं: भागवत महापुराण, दशम स्कंध, 57वें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ हैं, और अर्जुन शिकार कर रहे हैं। उस समय भी लोग गलत काम कर रहे थे, जिसके कारण द्वापर युग 8,00,000 वर्ष से घटकर 3600 वर्ष रह गया, क्योंकि पशु वध और बलि हो रही थी। लेकिन जब भगवान उनके साथ थे, तो उन्होंने अर्जुन को क्यों नहीं रोका?

उत्तर: देखिए, इस प्रश्न और दृष्टिकोण के विषय में केवल चर्चा करने भर से हम किसी अंतिम निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सकते। जगन्नाथ दास द्वारा लिखित ओड़िया भागवत... उस ग्रंथ में मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं पढ़ा। और देखिए, जब पृथ्वी पर विद्वानों द्वारा बार-बार ग्रंथों की रचना होती है, तो कुछ विसंगतियाँ आ सकती हैं। मेरी दृष्टि में, इसका स्पष्ट प्रमाण मिलना संभव नहीं है। और भगवान कृष्ण क्या करते या क्या नहीं करते, अथवा उन्होंने क्या किया — इस पर टिप्पणी करना मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। उन्होंने क्यों रोका या क्यों नहीं रोका, यह कहना भी मेरा काम नहीं है। फिर भी, स्वयं भगवान ने श्रीमद्भागवत महापुराण में कहा है कि जो व्यक्ति 'जीव-हत्या' करता है, वह राक्षस है। भगवान ने बार-बार कहा है कि जीव-हत्या सबसे बड़ा पाप है। मेरी दृष्टि में, भगवान की ऐसी विचारधारा कभी नहीं रही। अर्जुन ने किया या नहीं किया, ग्रंथ में जो लिखा है उसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। भगवान कल्कि, जैसा शास्त्रों में लिखा है, जीव-हत्या का विरोध करेंगे और अहिंसा का प्रचार करेंगे। भगवान बुद्ध ने पशु बलि का विरोध किया। भगवान चैतन्य ने जीवों पर दया का उपदेश दिया। तो द्वापर युग में जब भगवान कृष्ण आए, तो उन्होंने भी उसी धर्म का प्रचार किया और जीवों की रक्षा की। इसलिए यह विचार मेरी सोच की रेखा में नहीं है, और जिसने भी यह ग्रंथ में लिखा है, उसमें स्पष्ट प्रमाण और सत्यता का अभाव है।

► यह उत्तर सुनें · 21:28 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3092 गाज़ियाबाद से। मैं बहुत कम शब्दों में कहूँगी: मेरे दो छोटे बच्चों को एक नकारात्मक ऊर्जा ने जकड़ लिया है। कृपया मेरी सहायता कीजिए।

उत्तर: सुनो बेटी, तुम्हारी नकारात्मकता की समस्या के लिए, या यदि किसी ने टोना-टोटका या काला जादू किया है, तो सुरक्षा के लिए मैं यह कहूँगा: अपने घर में दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या करो। सुबह भगवान कृष्ण की भागवत के एक अध्याय का चिंतन करो। रात को सोने से पहले भागवत का एक अध्याय पढ़ो, और उसके साथ तुम प्रतिदिन 'नारायण कवच' का पाठ कर सकती हो। साथ ही, माधव नाम का 108 बार जप करो और सबके सोने से पहले एक बार और त्रिकाल संध्या करो। इससे तुम इस समस्या से बच सकती हो। यदि फिर भी काम न बने, तो मुझे बताना। हमारी विचारधारा यह है कि जो कोई हमसे सहायता माँगता है, हम उससे एक पैसा भी नहीं लेते। यदि काम न बने, तो तुम्हें यहाँ आना पड़ सकता है, और उस समय मैं तुम्हें भगवान के फूल दे सकता हूँ, और उन्हें घर में रखने से भी लाभ होगा। कोई समस्या नहीं है, और एक पैसा भी खर्च नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:02 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3093 मेरा प्रश्न यह है कि मेरी बहन का दो वर्ष पहले केवल 17 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। हम चाहते हैं कि उसे मुक्ति मिले। उसकी बड़ी बहन होने के नाते, यद्यपि मेरा विवाह नहीं हुआ है, क्या मैं 'पिंड-दान' कर सकती हूँ?

उत्तर: यदि आप अपनी बहन की मुक्ति चाहती हैं, और यदि घर में कोई पुरुष या भाई नहीं है, तो बेटी होने के नाते आपको ही पिंड-दान करना पड़ेगा। क्योंकि यदि पिंड-दान और संस्कार नहीं किए गए, तो उसे मुक्ति कैसे मिलेगी? तो हाँ, आप कर सकती हैं। मेरी दृष्टि में, पितृ पक्ष के दौरान, यदि आप किसी अच्छे तीर्थस्थल पर जाएँ... पिंड-दान गया में किया जाता है। नाभिगया में पिंड-दान करने से उसे मुक्ति मिल सकती है। साथ ही एक काम और करो: यदि आप घर पर त्रिकाल संध्या का पालन करती हैं, तो उसके प्रभाव से भी उसे मुक्ति मिल सकती है। लेकिन नाभिगया में एक बार पिंड-दान करना आवश्यक है, क्योंकि वहाँ पिंड-दान करने से 21 पीढ़ियों को मुक्ति मिलती है।

► यह उत्तर सुनें · 30:42 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3094 मैं एक शुद्ध शाकाहारी सनातनी ब्राह्मण हूँ। बचपन से ही धर्म और अध्यात्म से जुड़ा हुआ हूँ। मैं आपसे और आपके संगठन से जुड़ना चाहता हूँ। मैंने पंडित जी द्वारा बताए गए नियमों का पालन करना शुरू कर दिया है, जैसे त्रिकाल संध्या, श्री माधव नाम, आदि। कृपया बताइए कि मैं आपसे और आगे कैसे जुड़ सकता हूँ।

उत्तर: देखिए, आपको उचित समय पर त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, भागवत पढ़नी चाहिए, और माधव नाम का जप करना चाहिए। क्योंकि यही इस युग के धर्म का अंतिम प्रचार है, अंतिम नियम है, अंतिम मंत्र है। इस मंत्र का पालन करने से आपका कल्याण होगा। हम एक ऑनलाइन सत्संग चला रहे हैं। हमारे भक्त मिलकर यह कर रहे हैं। देखिए, मैं किसी गुरु परंपरा में नहीं हूँ। मेरा कोई शिष्य नहीं है। मैं तो बस संदेश का प्रचार करता हूँ। यदि आप इस ऑनलाइन प्रवचन से जुड़ेंगे, तो आपको बहुत सारे अनुभव होंगे। भक्तों को आपस में मिलने का अवसर मिलता है, और आपस में चर्चा करने से भक्ति भाव भी बढ़ता है। यदि आप चाहें, तो हमने 'नव सत्य युग निर्माण सुधर्म महासंघ' नामक एक संगठन बनाया है। वहाँ भक्तों के लिए सत्संग होते हैं। नीचे जो नंबर दिखाई देता है, उस पर संपर्क करके आप इससे जुड़ सकते हैं और इस धारा से जुड़ रहे पूरे भारत के लोगों से भी संवाद कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 32:30 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3095 राधे-राधे। मैं भी इस धर्म प्रचार में योगदान देना चाहता हूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: यह बहुत सुंदर बात है। हम आपकी इस भावना का बहुत आदर करते हैं। देखिए, भगवान बुद्ध ने भी धर्म का प्रचार किया। भगवान चैतन्य महाप्रभु ने किया... तो आप भी धर्म प्रचार में भाग ले सकते हैं। और निश्चित ही, जिनका सत्य युग में जाना निश्चित है, उनका मन उद्वेलित होगा, और वे अवश्य आकर त्रिकाल संध्या करेंगे, भागवत पढ़ेंगे, और माधव नाम का जप करेंगे, क्योंकि यह उनके भाग्य में है। यदि आप आगे बढ़कर मानव सभ्यता के कल्याण के लिए इसका प्रचार करना चाहते हैं, तो हमने जो समूह बनाया है, 'नव सत्य युग निर्माण संघ', उसमें भारत और विदेश के भक्त एकत्र होते हैं। यदि आपको इस कार्य के लिए भगवान की कृपा मिल रही है, तो आपको यह करना चाहिए। मेरी दृष्टि में, चारों युगों के भगवान के निजी भक्त ही इस धारा से जुड़कर मानव सभ्यता और भक्तों को बचाने के लिए इस कार्य को आगे बढ़ाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 34:54 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3096 पिताजी, मैं जानना चाहती हूँ... मैंने हमेशा कई गुरुओं, आध्यात्मिक लोगों और बड़ों से सुना है कि किसी को गुरु बनाए बिना या दीक्षा लिए बिना भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती। तो पिताजी, मेरा प्रश्न यह है कि मैंने कभी किसी को अपना गुरु नहीं बनाया... यदि मैंने किसी को गुरु नहीं बनाया, तो क्या मैं भगवान को प्राप्त नहीं कर पाऊँगी?

उत्तर: यह बहुत अच्छा प्रश्न है... 'वंदे भगवती देवी श्री रामस्य जगत गुरु' — अर्थात् भगवान श्रीराम जगत के गुरु हैं। और 'कृष्णं वंदे जगद्गुरुम्'। तो हमारी सनातन परंपरा में... भगवान शंकर की कृपा के बिना कोई सिद्ध संत नहीं बन सकता। तो भगवान शंकर गुरु हैं, हनुमान जी गुरु हैं, भगवान कृष्ण गुरु हैं, भगवान राम गुरु हैं। इतने सारे भगवान होने के बाद, मेरी दृष्टि में किसी और गुरु की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, जैसा कि शास्त्रों में मार्गदर्शन की परंपरा है, यदि कोई अच्छे संत या साधु मार्गदर्शन दें, तो उसमें से अच्छे तत्वों को ग्रहण कर लीजिए। मेरी दृष्टि में, भगवान कृष्ण को अपना गुरु बनाइए। भगवान कृष्ण को गुरु बनाइए, भगवान जगन्नाथ को गुरु बनाइए। उसी में आपका कल्याण और मोक्ष है। यह बिल्कुल सत्य है। किसी अलग परंपरा का पालन करना आवश्यक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 37:35 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3097 हम विदेश में कनाडा में रहते हैं, तो हमें त्रिकाल संध्या किस समय करनी चाहिए? मेरा मतलब है, किन-किन समयों पर? हम करते तो हैं, पर सही समय समझ नहीं आता।

उत्तर: देखिए, मैं पिछले वर्ष कनाडा गया था... आपको ब्रह्म मुहूर्त की संध्या सूर्योदय से पहले करनी चाहिए। मध्याह्न संध्या दोपहर के आसपास, सुबह 11:30 से दोपहर 1:30 के बीच करनी चाहिए। और तीसरी संध्या सूर्यास्त से 15 मिनट पहले करनी चाहिए। यह त्रिकाल संध्या, मेरी दृष्टि में, भगवान केवल उन्हीं को देते हैं जिनकी मुक्ति का समय निकट है।

► यह उत्तर सुनें · 40:54 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3098 पिताजी, मैं दिल्ली से हूँ और मैं इस मार्ग का पालन करती हूँ, पर मेरा परिवार, जैसे मेरे पति, नहीं करते। जैसे-जैसे युद्ध का समय निकट आ रहा है, और हम सुनते हैं कि दिल्ली पर मिसाइलें गिरेंगी, मैं कभी-कभी उनसे चर्चा करती हूँ कि हमें सही समय पर दिल्ली से बाहर रहने की व्यवस्था करनी चाहिए। लेकिन वे एक बात कहते हैं: 'जिस सत्संग को तुम सुनती हो, उसमें कहा जाता है कि जो त्रिकाल संध्या करता है उसे कुछ नहीं होगा।' तो पिताजी, मुझे थोड़ा डर लगता है, समझ रहे हैं न?

उत्तर: व्यक्ति अपने प्रयास से भी नहीं बच सकता, और बिना प्रयास के भी बच सकता है। इसीलिए मैंने त्रिकाल संध्या बताई है। त्रिकाल संध्या करो, माधव नाम का जप करो, और भागवत पढ़ो। जब विपत्ति आएगी, तो भगवान की कृपा से आप जहाँ भी होंगे, सुरक्षित रहेंगे। बस यह दृढ़ विश्वास रखिए। जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उनकी अकाल मृत्यु या दुर्घटना से मृत्यु नहीं होती। भगवान की कृपा निश्चित रूप से रहती है। वे अपने अंतिम क्षण तक जीते हैं। यदि वे भक्ति भाव से करते हैं, तो उन्हें परम गति भी प्राप्त होती है। तो डरने की कोई बात नहीं है। सही समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। फिर, सही समय पर मैं सही मार्गदर्शन दूँगा।

► यह उत्तर सुनें · 42:34 · 15 सितम्बर 2025

प्रश्न 3099 जय श्री माधव, पंडित जी। मैं बरेली से अभिषेक हूँ। मेरा एक मित्र है जो पशुपालन के व्यवसाय में है। उसका सूअर पालन का व्यवसाय था, और अब भी है। यह उसका पुश्तैनी काम है। वह उत्तराखंड और अन्य जगहों पर मांस बेचता था, दूसरों को खिलाता था, और इसी तरह अपनी आजीविका कमाता था। वह बहुत पुराना और अच्छा मित्र है, तो मैंने उसे समझाया। मैंने उसे भविष्य मालिका की भविष्यवाणियों के बारे में बताया। भगवान की कृपा से उसने मांस बेचना बंद कर दिया है। लेकिन अब वह यह करता है कि सूअर पालता रहता है और उन्हें दूसरों को बेच देता है। अब मैं उससे कहता हूँ, 'भाई, तुम किसी को बेच रहे हो, और अगर वे उनका वध करते हैं, तो क्या पाप तुम्हें भी नहीं लगेगा, क्योंकि तुम प्रेरक और अनुमोदक हो?' लेकिन वह कहता है, 'नहीं, नहीं, मेरा काम तो बस बेचना है; वे क्या करते हैं यह उनका काम है।' तो पंडित जी, हम बस चाहते हैं कि आप कुछ मार्गदर्शन दें ताकि हम आपकी बात उस तक पहुँचा सकें।

उत्तर: सबसे पहले तो मैं उसे धन्यवाद देता हूँ कि उसने जो काम कर रहा था उसे बंद कर दिया। लेकिन शास्त्रों में लिखा है कि जो जीव की हत्या करता है, जो हत्या के लिए प्रेरित करता है, और जो हत्या में सुविधा देता है — ये सभी पाप के भागी होते हैं। हमारी शास्त्रीय दृष्टि में, अब समय ही कहाँ है? आय कमाने के कई रास्ते हैं। यदि वह पशुपालन ही करना चाहता है, तो गाय पाल सकता है। गाय पालने से आय भी होगी और धार्मिक पुण्य भी मिलेगा। हाँ, मेरी दृष्टि में, यदि हम अच्छे कर्म करेंगे, तो हमारे जीवन में अच्छा ही आएगा। जो बुरा करते हैं, वे एक दिन उस बुराई के फल से ग्रस्त हो जाएँगे। उसने अब तक जो कर्म किए हैं, वह एक बात है, लेकिन यदि वह यह काम जारी रखेगा, तो यह उसके लिए अच्छा नहीं होगा। अब कलियुग नहीं रहा; सत्य युग आ रहा है। मैं उस बेटे को यह संदेश देना चाहता हूँ: कोई अच्छा काम करो जो दोष से मुक्त हो। भगवान की कृपा तुम्हारे साथ रहेगी।

► यह उत्तर सुनें · 46:18 · 15 सितम्बर 2025

सत्र 177 · प्रश्न 3100–3111

L193: 2026 में वैश्विक संकट और प्राकृतिक आपदाएँ | India Pakistan War | Pandit Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 10 जनवरी 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3100 रूस भारत में कब और कैसे प्रवेश करेगा, और छतिया बट से रूस का क्या संबंध है?

उत्तर: देखिए, जब तृतीय विश्व युद्ध आरंभ होगा, और भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा, तभी रूस भारत आएगा। शास्त्र कहता है, 'पूर्व पश्चिम रंग गिरि मा चम, लोहा खंड मान भारत, रूस शासन है', अर्थात् जब पूर्व और पश्चिम में विश्व युद्ध शुरू होगा, और भारत का पाकिस्तान तथा चीन से युद्ध होगा, तब रूस आएगा। वह समय अभी आना है। और छतिया बट से रूस का संबंध यह है: द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने रूस को कलियुग में भगवान जगन्नाथ की सेवा प्राप्त करने का वरदान दिया था। शास्त्रों में लिखा है, 'छतिया रे सात दिन वासी भोइ', अर्थात् सात दिनों तक छतिया में रथ यात्रा होगी, और रूसी सरकार का प्रमुख भगवान जगन्नाथ की सेवा में उपस्थित रहेगा। यह विश्व युद्ध के बीच होगा, और भक्त इस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जय जय।

► यह उत्तर सुनें · 27:34 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3101 इंटरनेट पूरी तरह से कब बंद होगा? और अगर ऐसा हुआ, तो हम जैसे लोग जो ऑनलाइन काम करते हैं और इंटरनेट से अपनी आजीविका कमाते हैं, कैसे जीवित रहेंगे? साथ ही, क्या भविष्य मालिका में मध्य प्रदेश के बारे में कुछ लिखा है?

उत्तर: देखिए, मध्य प्रदेश बहुत ही धार्मिक क्षेत्र है। वहाँ 64 योगिनी पीठ हैं, और इसके अलावा मध्य प्रदेश का महाकालेश्वर मंडल धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेगा; यह शास्त्रों में लिखा है। तो, मध्य प्रदेश एक धार्मिक क्षेत्र के रूप में उभरेगा, और वह पहले से ही है। जहाँ तक इंटरनेट की बात है, आप देखते हैं कि कभी-कभी एक-दो दिन इंटरनेट ठप रहता है, कभी चार-पाँच दिन, और किसी भी क्षण इंटरनेट बंद हो सकता है। आप बैंक से पैसा नहीं निकाल पाते, नेटवर्क की समस्या के कारण एटीएम काम नहीं करते, मेल सिस्टम बंद हो जाता है, और फोन कॉल कट जाते हैं। यह ऐसा ही है जैसे किसी को बीमारी होती है; पहले छोटे-छोटे लक्षण दिखते हैं, फिर मृत्यु होती है। इंटरनेट ने अपनी बीमारी दिखाना शुरू कर दिया है। एक समय आएगा जब सैटेलाइट काम नहीं करेंगे। विश्व युद्ध के दौरान एक समय ऐसा आएगा जब एक आकाशीय पिंड पृथ्वी पर, तीन महासागरों में गिरेगा, और उसी क्षण सारा इंटरनेट ठप हो जाएगा। यह एक ही दिन में नहीं होगा; यह समय के साथ होगा। एक ओर भक्तों की रक्षा होगी; दूसरी ओर धर्म की रक्षा होगी; और तीसरी ओर पापियों का न्याय होगा। ये सारे कार्य क्रमवार, चरण दर चरण आगे बढ़ेंगे। और समय की बात करें तो मैंने 2032 बताया है। यह 2032 से दो-तीन साल पहले या बाद हो सकता है, लेकिन 2032 तक लोग समझ जाएँगे कि शास्त्रों में जो कुछ लिखा है, वह सब सत्य सिद्ध होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:15 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3102 क्या महामारियाँ और रोग अगले साल से शुरू होंगे? अगर ऐसा होता है, तो स्वयं की रक्षा का उपाय क्या है? साथ ही, 12,000 भक्तों का जो समागम होना है, वह कब होगा?

उत्तर: देखिए, महामारियाँ और रोग तो पहले से ही चल रहे हैं। लोग दवा लेते हैं। लोग साल भर बीमार रहते हैं। उनके शरीर खोखले होते जा रहे हैं। कोरोना जैसी बीमारियाँ आज भी भारत में और अन्य देशों में मौजूद हैं। लोग कष्ट पा रहे हैं, लेकिन यह बढ़ नहीं रहा क्योंकि भगवान ने कुछ अंतराल दिया है। शास्त्रों में लिखा था कि 2025 से 2032 तक का काल सत्य युग के आगमन का समय है, और रोगों का समय '27 (2027) से शुरू होगा। अभी भी छोटी-मोटी बीमारियाँ आएँगी। आप देखते हैं लोगों को चक्कर आते हैं, वे गिर जाते हैं, और सड़क पर चलते-चलते या ऑफिस में बैठे-बैठे मर जाते हैं। मैंने भविष्य शास्त्र में लिखा है कि एक ऐसी बीमारी आएगी जिससे चक्कर आते हैं। युवाओं को हार्ट स्ट्रोक होंगे। आप देखते हैं न? हार्ट स्ट्रोक होते हैं, लोग मरते हैं। कैंसर एक बीमारी की तरह फैल रहा है। गैस्ट्राइटिस और एसिडिटी जैसी तकलीफें बढ़ रही हैं। सर्दी, खाँसी और टाइफाइड जैसी बीमारियाँ भी बढ़ रही हैं। तो, बीमारियाँ बढ़ रही हैं। और भगवान लोगों को बदलने का अवसर दे रहे हैं। '27 (2027) के बाद से यह और अधिक भयंकर रूप ले लेगा। इसलिए, इसका उपाय है त्रिकाल संध्या, भागवत का पाठ, और माधव के नाम का जप। जो इसे भक्ति और नियम के साथ करते हैं—केवल यूँ ही नहीं, बल्कि भक्ति, नियम और उचित समय के साथ—केवल उन्हें ही इसका लाभ मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 31:22 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3103 मेरा परिवार समुद्र के पास रहता है। हमें कैसे और कब पता चलेगा कि अब समुद्र तट से गाँव की ओर जाने का समय आ गया है, ताकि हमारा परिवार बच सके?

उत्तर: देखिए, जो समुद्र तट पर हैं वे भी सुरक्षित हैं। जो मैदानों में हैं वे भी सुरक्षित हैं। जो पहाड़ों में हैं वे भी सुरक्षित हैं। वे सुरक्षित कैसे रहेंगे? जिसके पास धर्म है, वह सुरक्षित है। अगर आप समुद्र के किनारे भी रहते हैं, पर आपके पास धर्म है, अगर आप त्रिकाल संध्या करते हैं, तो भगवान किसी न किसी तरह आपकी रक्षा करेंगे। अगर हम समुद्र तट छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जाएँ... क्योंकि पंच तत्वों का प्रलय होगा—अग्नि प्रलय होगा, जल प्रलय होगा, वायु प्रलय होगा, भूकंप होंगे, और जल प्रलय में सुनामी भी शामिल है। तो आप सुनामी से बच सकते हैं, पर किसी दूसरे प्रलय में फँस सकते हैं। आप बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। मृत्यु किसी की भी यूँ ही नहीं होती। कर्म के बिना व्यक्ति की मृत्यु संभव नहीं है। जिसका धर्म अधिक है, उसकी आयु लंबी होती है। जिसका धर्म कम है, उसकी आयु छोटी होती है। इसलिए ऐसा सोचने के बजाय त्रिकाल संध्या अपनाइए। भागवत पढ़िए। सुबह अग्निहोत्र यज्ञ कीजिए। इससे आपका पुरुषार्थ और पुण्य बढ़ेगा। फिर सात समुद्र भी आ जाएँ, तब भी गोविंद (भगवान) आपकी रक्षा करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 33:12 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3104 अगर हम अधर्म के विरुद्ध बोलते हैं तो क्या हमें पाप लगेगा? साथ ही, जब हम त्रिकाल संध्या करने की कोशिश करते हैं, तो ठीक से नहीं कर पाते क्योंकि हम इस संसार के मोह-माया में बंधे हैं। हम इसे सही तरीके से कैसे करें? इसके लिए क्या करना होगा?

उत्तर: देखिए, अधर्म के विरुद्ध आवाज़ उठाना धर्म है। लेकिन हमारे देश में संविधान और अनुशासन है, इसलिए इस पर हमारी सरकार को सोचना है। अधर्म के विरुद्ध बोलने के बजाय, हम उन लोगों को समझाने की कोशिश कर सकते हैं जो अधर्म के मार्ग पर चलते हैं, उन्हें सद्बुद्धि दे सकते हैं, उन्हें उनके भविष्य और उनके कर्मों के परिणाम बता सकते हैं। यह समझाने से शायद वे बदल जाएँ। यह कार्य हम कर सकते हैं। संवैधानिक नियम, कानून और अनुशासन सरकार के अधिकार में हैं; हम उसके विरुद्ध कार्रवाई नहीं कर सकते। लेकिन बिल्कुल, जो पाप करते हैं उन्हें समझा-बुझाकर धर्म की ओर लाना चाहिए। हमें उन्हें भविष्य के बारे में बताना चाहिए। और सही समय पर त्रिकाल संध्या न कर पाने के विषय में—यह ऐसा ही है जैसे स्कूल में कुछ विद्यार्थी फेल हो जाते हैं। सभी विद्यार्थी स्कूल जाते हैं, कुछ को अच्छी नौकरी मिलती है, और कुछ फेल हो जाते हैं। इसी तरह, धर्म के इस विषय में, अगर आप सही समय पर त्रिकाल संध्या नहीं करेंगे, तो आपको पूरा लाभ नहीं मिलेगा। तो, पूरा लाभ पाने के लिए, नियम के अनुसार और सही समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। इससे आपका कल्याण होगा। साथ ही, अपने परिवार के सदस्यों को बताइए कि यह बहुत ही पुण्यदायी साधना है जिससे भगवान की प्राप्ति हो सकती है। इसे अपनाइए, और आप भी युग परिवर्तन के साथ उस समय तक पहुँच सकेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 34:40 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3105 मुझे नौकरी पाने में बहुत परेशानी हो रही है। कृपया कुछ उपाय बताइए ताकि मुझे समय पर नौकरी मिल जाए।

उत्तर: हाँ, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि उन्हें मंगल दोष (मंगल ग्रह से जुड़ा एक ज्योतिषीय दोष) के कारण नौकरी नहीं मिल रही है। शुभ कार्य पूरे नहीं हो पा रहे हैं। त्रिकाल संध्या करने से मंगल दोष निष्फल हो जाएगा। मैं उनके लिए एक बात सुझाता हूँ: लगभग तीन महीने तक हर दिन सोने से पहले दशावतार स्तोत्र पढ़ें और सही समय पर त्रिकाल संध्या करें। उन्हें नौकरी मिलेगी, और मंगल दोष का प्रभाव कम हो जाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 36:32 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3106 वे इस समय जो महामंत्र जप रहे हैं, क्या वह उन्हें सत्य युग तक ले जाने के लिए पर्याप्त होगा, या उन्हें महामंत्र बदलना पड़ेगा?

उत्तर: देखिए, महामंत्र बदलना न हमारे अधिकार में है और न ही हमारी विचारधारा में। महामंत्र तो महामंत्र है। मैं भी महामंत्र जपता हूँ। भगवान चैतन्य महाप्रभु ने यह मंत्र कलियुग के लोगों को आध्यात्मिक लाभ और मुक्ति के लिए दिया था। यह मंत्र कलियुग के चंगुल से उद्धार और मुक्ति के लिए दिया गया था। तो, आपको यह मंत्र अवश्य जपना चाहिए। इसे किसी भी तरह से मत बदलिए। सब यह मंत्र जपते हैं; मैं भी जपता हूँ। लेकिन बचने के लिए—कलियुग के विनाश से, पंच तत्वों के प्रलय से बचने के लिए—त्रिकाल संध्या हमें मृत्यु से बचाएगी। त्रिकाल संध्या हमें ब्रह्म ज्ञानी बनाएगी। त्रिकाल संध्या से हमें भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होगी। और त्रिकाल संध्या के माध्यम से, जिसे हम ब्रह्म कर्म कहते हैं, हम ब्रह्म के युग में, अर्थात भगवान विष्णु के युग में जाएँगे। सभी भक्त यह त्रिकाल संध्या करेंगे। यह हर युग में की जाती है; सत्य युग में की जाती है, देवता करते हैं, ब्रह्मलोक में की जाती है, भगवान शंकर के पवित्र कैलाश में त्रिकाल संध्या होती है, और सिद्ध लोक में ऋषि-मुनि भी इसका पालन करते हैं। जो मनुष्य इसका पालन करेंगे, वे भी वहाँ जाएँगे। यह आपको बचाएगी, और त्रिकाल संध्या आवश्यक है। महामंत्र भी आवश्यक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 37:15 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3107 कृपया अग्निहोत्र यज्ञ की विधि समझाने की कृपा करें और यह भी बताएँ कि इसमें किस मंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

उत्तर: देखिए, अग्निहोत्र यज्ञ के नियमों के विषय में, हम उन सभी भक्तों को उन नियमों की एक पीडीएफ उपलब्ध कराएँगे जो हमारे संपर्क में हैं। तो कोई समस्या नहीं है। कृपया 10-11 दिन प्रतीक्षा कीजिए। अगर आप अग्निहोत्र के नियमों का पालन करके यज्ञ करना चाहते हैं, तो भगवान विष्णु की कृपा से हम विधि और नियम आपको भेज देंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:01 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3108 आपने हमें सूर्यास्त से पहले भोजन करने की सलाह दी है। हम बहुत कोशिश कर रहे हैं पर ऐसा नहीं कर पा रहे। त्रि-संध्या करना आसान है, पर सूर्यास्त से पहले भोजन करना कठिन साबित हो रहा है।

उत्तर: शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य के भोजन की प्रक्रिया सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच ही शुरू और समाप्त होनी चाहिए। और जो सूर्यास्त से पहले, या सूर्यास्त के आधे घंटे बाद तक भी भोजन कर लेते हैं, उन्हें रोग कम होंगे और वे दिव्य प्राणी बनेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि जठर अग्नि सूर्य देव की कृपा से प्रज्वलित होती है। पेड़-पौधे अपना भोजन बनाते हैं, संसार अपना भोजन बनाता है [दिन में]। हमें भी उसी नियम का पालन करना है। आप सूर्यास्त के आधे घंटे, 30 मिनट बाद तक भोजन कर सकते हैं। उसका पालन कीजिए। अगर आप नौकरी के लिए दूर जाते हैं, तो यह कठिन हो सकता है। ऐसी स्थिति में, अपना भोजन पैक करवाकर साथ ले जाइए। सही समय पर भोजन कीजिए। घर आइए, अपने काम कीजिए, और चैन से सोइए। आपको बहुत आनंद मिलेगा। आपका शरीर हल्का महसूस करेगा। बीमारी दूर हो जाएगी। अगर आप एक दिन भी करेंगे, तो उसी दिन से परिणाम देखेंगे। जो लोग एसिडिटी और गैस्ट्राइटिस से पीड़ित हैं, वे एक दिन आज़माकर देखें कि उन्हें क्या परिणाम मिलता है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:02 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3109 क्या होने वाला है और क्या नहीं, यह तो केवल भगवान ही जानते हैं। पर आप हमें बता रहे हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं। जैसे, आज आपने कहा कि हमें मौन रहना चाहिए। इसी तरह, और कौन-सी बातें हम कर सकते हैं जिससे हमारे कार्य और जीवन आसान हो जाएँ?

उत्तर: देखिए, भगवान ही सब कुछ करते हैं। भगवान के बिना कोई मार्ग नहीं है। लेकिन हम जितना अधिक मौन रहेंगे, उतना ही हमारा ज्ञान, हमारी आँखों की शक्ति, और हमारे शरीर की शक्ति बढ़ेगी, और हमें भगवान की कृपा भी प्राप्त होगी। भक्त का एक लक्षण है मौन रहना, अधिक न बोलना, कम बोलना। दूसरा, सूर्यास्त से पहले भोजन करना। तीसरा, त्रिकाल संध्या करना। चौथा, भागवत पढ़ना। पाँचवाँ, निरंतर माधव के नाम का जप करना। और संसार के सभी मनुष्यों को अपना मानिए, और किसी भी धर्म या पंथ को अलग रखिए, क्योंकि धर्म भगवान का है, और भगवान ने ही धर्म की रचना की है। मनुष्यों को अपने कर्म बदलने की आवश्यकता है। भागवत में लिखा है कि हर मनुष्य भगवान की संतान है, और मनुष्य को सभी पेड़ों, पूरी प्रकृति, और सभी जीवों के प्रति अपने कर्तव्य निभाने चाहिए। इसमें, आप हर दिन गाय को एक छोटा फल या कंद दे सकते हैं, चींटियों जैसे छोटे जीवों को कुछ दान कर सकते हैं। इससे आपका पुण्य और आयु बढ़ेगी। साथ ही, अग्निहोत्र यज्ञ करना शुरू कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:30 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3110 मैं एक आईटी इंजीनियर हूँ और अपनी प्राइवेट नौकरी में हमेशा तनाव में रहता हूँ। अगर इस तनाव से छुटकारा पाने का कोई उपाय हो, तो कृपया बताइए।

उत्तर: इसके लिए, आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और सोने से पहले दशावतार स्तोत्र पढ़ना चाहिए। आपका तनाव दूर हो जाएगा। और एक बात और सोचिए: जब आप भगवान के शरणागत हो जाते हैं, तो आपको चिंता किस बात की? जिसने आपको भेजा है, उसी पर सब कुछ समर्पित कर दीजिए। 'प्रभु, आप ही सब कुछ हैं, मुझे कोई चिंता नहीं करनी चाहिए।' बस फल की अपेक्षा किए बिना अपने कर्तव्य निभाते रहिए। जो फल की अपेक्षा करते हैं, उन्हें चिंता और तनाव मिलता है। फल की आसक्ति के बिना अपने कर्तव्य कीजिए, सोने से पहले दशावतार स्तोत्र पढ़िए, और समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। समय के साथ आप कहेंगे कि संसार एक माया है, बस अपने कर्तव्य निभाने हैं और भगवान की शरण में रहना है। यही सत्य है, और आपके मन से सारी चिंताएँ मिट जाएँगी।

► यह उत्तर सुनें · 43:09 · 10 जनवरी 2026

प्रश्न 3111 आप बार-बार कहते हैं कि त्रिसंध्या नियमपूर्वक करनी चाहिए। तो हम त्रिसंध्या नियमानुसार कैसे करें?

उत्तर: नियम का अर्थ है कि सूर्योदय से पहले, ब्रह्म मुहूर्त से लेकर सूर्योदय तक के समय में, आपको मानसिक रूप से गंगा-स्नान करना चाहिए या शारीरिक रूप से शुद्धिकारक स्नान करना चाहिए, और फिर त्रिकाल संध्या के सभी मंत्रों का स्पष्ट रूप से पाठ करना चाहिए। दूसरा, मध्याह्न की संध्या के लिए आपको मानसिक रूप से गंगा-स्नान करना चाहिए; उस समय शारीरिक स्नान आवश्यक नहीं है। आप जहाँ कहीं भी हों — अपनी नौकरी पर, ऑफिस में, अपने व्यापार में, रास्ते में, कार चलाते हुए — आपको मन ही मन इसका पाठ करना चाहिए। मध्याह्न की संध्या समय के अनुसार, सुबह 11 बजे से 12:30 या 1 बजे के बीच करनी चाहिए। और तीसरी संध्या, जो सूर्यास्त से पहले होती है, आप जहाँ भी हों, मानसिक रूप से गंगा-स्नान करके समय पर संध्या करें। यदि संभव हो तो एक छोटा पात्र रखें, थोड़ा जल लें, और सूर्यदेव तथा अपने पितरों को अर्पित करें। आपको बहुत आनंद की अनुभूति होगी। इन्हीं नियमों के अनुसार इसका पालन करें।

► यह उत्तर सुनें · 44:10 · 10 जनवरी 2026

सत्र 178 · प्रश्न 3112–3131

L194: आज के समय में मनुष्य को क्या करना चाहिए ? | Pandit Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 19 फ़रवरी 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3112 आज के संसार में मानव सभ्यता कैसे बचेगी? और इस समय मनुष्य को क्या करना चाहिए?

उत्तर: हम इस समय युग-परिवर्तन के काल में हैं, यह एक ऐसा संकेत है जिसे विश्वभर में वैज्ञानिकों से लेकर अध्यात्मवादियों तक सभी अनुभव कर रहे हैं। धर्म की स्थापना एक दिन में नहीं होती; यह एक क्रमिक प्रक्रिया है जो छोटे रूप में आरंभ होती है और पूरे वातावरण को बदल देती है। आज के संसार में लोगों में धर्म और शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। यह काल आने वाले परिवर्तन के छोटे-छोटे संकेतों से चिह्नित है, जैसे प्रकृति के पंचतत्वों में बदलाव और युद्ध की ओर ले जाती भू-राजनीतिक परिस्थितियाँ। इस स्थिति के लिए स्वयं मानवता ही उत्तरदायी है। हमने जल, पृथ्वी, वायु, आकाश और अग्नि — इन तत्वों को प्रदूषित किया है और उनके अधिष्ठाता देवताओं को क्रोधित किया है। हमने भौगोलिक परिवर्तनों और विस्फोटों से धरती माता का अनादर किया है। हमने वेदों के पवित्र नियमों का पालन नहीं किया, जो सृष्टि का मूल आधार हैं। इन सबके कारण एक गंभीर स्थिति उत्पन्न हुई है, जहाँ संसार एक महाविनाश की ओर बढ़ रहा है, और मानव सभ्यता की रक्षा आवश्यक है।

► यह उत्तर सुनें · 00:25 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3113 तो इस समय हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: जो छोटी समस्याएँ हम अभी देख रहे हैं, वे भविष्य में बड़ी समस्याओं में बदल जाएँगी। हम इस क्रम को न तो रोक सकते हैं और न बदल सकते हैं, क्योंकि यह मानवता के लंबे समय से संचित पापों का परिणाम है। जिस आधुनिक सभ्यता को मनुष्य ने विज्ञान से बनाया, उसी को अब मनुष्य स्वयं नष्ट कर रहा है। हमने पंचतत्वों को प्रदूषित किया है: जल तत्व को, जिससे जल के देवता क्रोधित हुए; पृथ्वी तत्व को, उसे खोदकर, उसका भूगोल बदलकर और विस्फोट करके; वायु तत्व को; और अपने नकारात्मक विचारों से आकाश तत्व को भी। मानवता ने ईश्वर की प्राकृतिक सृष्टि पर मिले अपने अधिकार का दुरुपयोग किया है।

► यह उत्तर सुनें · 02:40 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3114 यदि परमाणु युद्ध हुआ, तो पृथ्वी की रक्षा कौन करेगा?

उत्तर: जब अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, जो परमाणु बम जैसा अस्त्र था, तब भगवान वेदव्यास ने पृथ्वी को बचाया था। परंतु इस युग में विज्ञान के पास परमाणु युद्ध से हमारी रक्षा करने का कोई उपाय नहीं है। यह शक्ति सबके पास है और सब इसका प्रयोग करेंगे, पर इसके परिणामों से बचने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। इसलिए हमारे एकमात्र रक्षक आदि भगवान विष्णु हैं, हमारे परम पिता, ब्रह्मांड के, देवताओं के और हम सबके सृष्टिकर्ता।

► यह उत्तर सुनें · 08:55 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3115 ठाकुर जी सोच रहे हैं कि मानव सभ्यता कैसे बचाई जाए? यह कैसे होगा?

उत्तर: इसी चिंता के कारण, भगवान वेदव्यास ने यह जानते हुए कि कलियुग के अंत में मानव सभ्यता को बचाने की आवश्यकता होगी, भविष्य शास्त्र (भविष्य के शास्त्र) और कल्कि पुराण की रचना की। मानवता के लिए इन शिक्षाओं को विस्तार से और सरल रूप में समझाने हेतु, भगवान जगन्नाथ और भगवान चैतन्य के निर्देश पर, ओडिशा में पंचसखा (पाँच दिव्य सखाओं) द्वारा भविष्य मालिका पुराण नामक ग्रंथ की रचना की गई। यह अनगिनत ग्रंथों का संकलन है, जिसका विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया है ताकि समस्त मानवता समय को समझ सके और मुक्ति का मार्ग पा सके। यह शास्त्र सभ्यता के लिए जीवन-रक्षक अमृत के समान है।

► यह उत्तर सुनें · 09:37 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3116 कुछ डगमगाते मन वाले लोग सोचते हैं, 'महापरिवर्तन क्यों नहीं हो रहा? ये तो बस छोटी-छोटी समस्याएँ हैं। यह कब होगा? हमें नहीं पता।'

उत्तर: धर्म की स्थापना एक क्रमिक प्रक्रिया है, जैसे दीपक का जलना और बुझना। भगवान एक निश्चित काल में बार-बार संकेत देते हैं। यह मुक्ति के लिए बहुत ही अमूल्य समय है। मुक्ति का मार्ग लिखा हुआ है, क्या होने वाला है यह लिखा हुआ है, और एक शांतिपूर्ण सभ्यता कैसे बनेगी यह भी लिखा हुआ है। वह ऐसा संसार होगा जहाँ मनुष्य एक-दूसरे से प्रेम करेंगे, जहाँ सब एक में सबको और सबमें एक को देखेंगे, और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 16:42 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3117 'कल्कि स्वरूप दुर्तन मार्ग स्थापति हरि' का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि जैसे द्वापर युग में वेदव्यास आए थे, वैसे ही कलियुग के अंत में महाविष्णु कल्कि के रूप में आएँगे। वे अनेक महादानवों, पापियों और दुष्कर्मियों को अपने शुद्ध धर्म के द्वारा परिवर्तित करेंगे। यह स्पष्ट प्रमाण है कि जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं, ऐसे महापापी भी भगवान कल्कि की शिक्षाओं से परिवर्तित होते हुए दिखाई देंगे और सत्ययुग (सत्य के युग) में प्रवेश के योग्य बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 19:24 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3118 परंतु जो लोग इस मार्ग पर चलने को सहमत होंगे, उन्हें किस बात को स्वीकार करना होगा?

उत्तर: उन्हें भगवान की दिव्य अवस्था को समझना होगा और पूर्ण समर्पण तथा विनम्रता के साथ हृदय से उनकी परम शक्ति को स्वीकार करना होगा। अहंकार, घमंड और छल नहीं चलेगा। अन्य जीवों को हानि पहुँचाना, या सृष्टि के किसी भी भाग को — चाहे वह चेतन हो या जड़ — नष्ट करना, भगवान को स्वीकार नहीं होगा।

► यह उत्तर सुनें · 20:27 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3119 इस सिद्धांत को 'ब्रह्म तत्व' (परम सिद्धांत) क्यों कहा जाता है?

उत्तर: इसे ब्रह्म तत्व इसलिए कहा जाता है क्योंकि त्रिकाल संध्या (दिन में तीन बार की जाने वाली प्रार्थना) में भगवान विष्णु की उपासना होती है। इसमें प्रकृति स्वरूपिणी योगमाया राधा रानी, आदि माता के लिए भी श्लोक सम्मिलित हैं। यह ब्रह्म तत्व केवल और केवल भगवान विष्णु की पूजा, भजन और नाम-जप के बारे में है। इसमें महाविष्णु के दस मुख्य अवतार, उनके 16 नाम, और उनका मूल नाम माधव सम्मिलित है, जो भगवान जगन्नाथ की गुप्त परंपरा है।

► यह उत्तर सुनें · 22:05 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3120 परंतु कुछ लोग कहेंगे, 'मैं समय पर नहीं कर पाता,' या 'मैं भागवत नहीं पढ़ पाता,' या 'आज एक बार कर लिया, पर कल शायद दो बार न कर पाऊँ।' उनका क्या?

उत्तर: इसी कारण से हमने शुद्धता या आचरण के कठोर नियम नहीं थोपे हैं। आप चलते हुए, गाड़ी चलाते हुए, ऑफिस में बैठे हुए, या जहाँ कहीं भी हों, मंत्र का जप कर सकते हैं। आप काम करते हुए भी कर सकते हैं। मैंने इसी कारण सारे नियम हटा दिए हैं, ताकि मनुष्य पहले बस नाम का जप करे और मंत्र सिद्ध हो जाए। तभी वे धर्मपरायण बनेंगे, वेदों का पालन करेंगे, और भगवान विष्णु के सत्ययुग में प्रवेश के योग्य बनेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 23:47 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3121 तो इस समय आप सबको क्या करना चाहिए?

उत्तर: मेरी सलाह है कि त्रिकाल संध्या का अभ्यास कीजिए। इसके तीन विशेष समय हैं: ब्रह्म मुहूर्त (प्रातःकाल), मध्याह्न (सुबह 11:30 से दोपहर 12:30 बजे तक), और सूर्यास्त के आसपास का समय (आधा घंटा पहले और आधा घंटा बाद)। यदि आप इन तीनों समयों पर यह करेंगे, तो आपको भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होगी। जब आप पर भगवान विष्णु की कृपा होगी, तो अन्य सभी देवता, नवग्रह, और यहाँ तक कि विनाशकारी शक्तियाँ भी आपको विष्णु का भक्त मानकर छोड़ देंगी, ठीक वैसे ही जैसे छोटे अधिकारी उस व्यक्ति का सम्मान करते हैं जिस पर किसी उच्च पदाधिकारी की कृपा हो।

► यह उत्तर सुनें · 24:40 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3122 परिवार और नौकरी छोड़कर लोग तपस्या करने का समय कहाँ से निकालेंगे?

उत्तर: पारंपरिक तपस्या के लिए समय नहीं है, क्योंकि हर कोई गृहस्थ है और उसके सांसारिक कर्तव्य हैं। इसीलिए मैंने 'तप' के स्तंभ को 'सत्य, शौच, दया, दान' में परिवर्तित कर दिया है। 'शौच' का अर्थ है मन की पवित्रता, काम और वासना से मुक्ति। 'दया' का अर्थ है सभी जीवों और समस्त सृष्टि के प्रति करुणा। 'क्षमा' भी महत्वपूर्ण है; जो लोग गलती करते हैं, हमें क्रोध पकड़े रखने के बजाय उन्हें क्षमा कर देना चाहिए, क्योंकि क्रोध अहंकार का चिह्न है। और 'दान' कुछ भी हो सकता है, छोटा या बड़ा, अपनी सामर्थ्य के अनुसार, चाहे गाय को थोड़ी-सी घास ही क्यों न खिलाई जाए।

► यह उत्तर सुनें · 27:20 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3123 यदि हमें अभ्यास के लिए तीन वर्ष नहीं मिले, तो मंत्र सिद्धि कैसे होगी? और यदि मंत्र सिद्ध नहीं हुआ, तो हमारा जीवन और परिवार कैसे सफल होगा?

उत्तर: ठीक इसीलिए मैं उन लोगों से अपील कर रहा हूँ जो मोक्ष चाहते हैं और इस जीवन को सत्य युग में ले जाना चाहते हैं। मेरा निवेदन है कि आप सही समय पर, पूर्ण और स्पष्ट मंत्रोच्चार के साथ त्रिकाल संध्या करें। यदि आप जल्दी में भी हों, तो भी मंत्र का उच्चारण स्पष्ट और पूर्ण होना चाहिए। आप इसे कागज़ से पढ़ सकते हैं, या यदि आप निरक्षर हैं तो रिकॉर्डिंग सुन सकते हैं। साथ ही, धर्म के चार स्तंभों का पालन कीजिए: सत्य, शौच, दया और दान। ऐसा करने से आप सत्य युग के योग्य बन जाएँगे और आने वाले महाविनाश से सुरक्षित रहेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 28:47 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3124 देवता और ग्रह हम पर कृपालु कैसे होंगे?

उत्तर: यह तभी होगा जब आप भगवान विष्णु के भक्त बनेंगे। अन्यथा यह कैसे हो सकता है? इसीलिए सभी दर्शकों से मेरा यही संदेश है कि इस मार्ग का अनुसरण करें।

► यह उत्तर सुनें · 30:20 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3125 पिताजी, मेरा प्रश्न राधा रानी के भक्तों की ओर से है। क्या उन्होंने अब अवतार लिया है? यदि हाँ, तो क्या वह महालक्ष्मी के रूप में है या वैष्णो देवी के रूप में?

उत्तर: राधा रानी स्वयं प्रकृति का स्वरूप हैं; वे योगमाया हैं, महालक्ष्मी हैं, वेदों की माता हैं, गायत्री हैं... वे सब कुछ हैं। इस समय वे ओडिशा में जगन्नाथ के क्षेत्र में प्रकट होंगी। उनका नाम माता महालक्ष्मी के रूप में जाना जाएगा, जो रमापति (विष्णु) की संगिनी हैं। पंचसखा ने एक स्थान पर 'लक्ष्मी-नरसिंह' लिखा है, अर्थात भगवान कल्कि नरसिंह के रूप में हैं और माता राधा रानी लक्ष्मी के रूप में आई हैं।

► यह उत्तर सुनें · 37:43 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3126 पिताजी, मेरी बहन के स्वप्न के बारे में एक प्रश्न है। उसने दो-तीन बार स्वप्न देखा कि मलूक पीठ के राजेंद्र दास जी महाराज उसे तिलक लगा रहे हैं। इसका क्या अर्थ है? क्या इसका मतलब है कि वे उसे दीक्षा देना चाहते हैं?

उत्तर: आदरणीय राजेंद्र दास महाराज जी एक महान संत हैं, और हम उनका आदर करते हैं। इस पर टिप्पणी करना मेरे लिए उचित नहीं है। भविष्य मालिका के विषय में मैंने जो कुछ कहा है, आप उसका पालन कीजिए। त्रिकाल संध्या का पालन कीजिए। इस विषय पर टिप्पणी करना शायद मेरे लिए उचित नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 38:51 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3127 प्रभु जी, मुझे कुछ पूछना है। त्रिकाल संध्या करने की सामग्री और निर्देश हमें कैसे मिल सकते हैं?

उत्तर: जो लोग त्रिकाल संध्या करना चाहते हैं, वे यहाँ दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। वे आपको त्रिकाल संध्या का पाठ भेज देंगे। इसमें हर बार लगभग पाँच से छह मिनट ही लगते हैं, तो दिन में तीनों समय मिलाकर लगभग 17-18 मिनट। यदि आप उनसे संपर्क करेंगे, तो वे तुरंत आपको पीडीएफ भेज देंगे। साथ ही, जो लोग इसे प्रत्यक्ष रूप में चाहते हैं, हम जहाँ भी हमारी कथा होती है वहाँ इसे वितरित करते हैं। जैसे, कल हम संभल, मुरादाबाद में कल्कि धाम के स्थापना दिवस के एक बड़े कार्यक्रम में जा रहे हैं, और वहाँ भी हम इसे वितरित करेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 43:51 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3128 आपकी अनुमति से, क्या मैं आपकी शिक्षाएँ पुलिसकर्मियों या अन्य लोगों के साथ साझा कर सकता हूँ? साथ ही, तीसरे विश्व युद्ध के दौरान, यदि दस बच्चे मेरे पास सुरक्षा के लिए आएँ, तो मैं उन्हें कैसे बचाऊँगा? क्या मैं आपकी अनुमति से आपका संदेश पुलिस, समाज और फेसबुक पर फैला सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, ये मेरे शब्द नहीं हैं। ये शास्त्रों पर आधारित सिद्धांत हैं। हम तो बस इनका प्रचार कर रहे हैं। यह संदेश उसी तक पहुँचेगा जिसके भाग्य में इसे पाना लिखा है, क्योंकि यह भगवान का वचन है। यह उन तक पहुँचता है जो पूर्व जन्मों में अच्छे भक्त थे या भगवान के निकट थे। पंचभूतों का विलय तो पहले से ही पूरे विश्व में हो रहा है। इसका उपदेश सबको देना आवश्यक नहीं है, केवल उन्हीं को जो सच्चे भक्त हैं।

► यह उत्तर सुनें · 46:17 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3129 कृपया हमें कोई मार्ग बताइए जिससे हमारे क्षेत्र (जबलपुर) में भविष्य मालिका और त्रिकाल संध्या का प्रचार बढ़ सके। हम लोगों तक कैसे पहुँचें और उनकी मदद कैसे करें ताकि उन्हें अभ्यास के पूरे तीन वर्ष मिल सकें और वे आने वाले सत्य युग के योग्य बन सकें?

उत्तर: यदि आप संदेश फैलाना चाहते हैं, तो अपने क्षेत्र के छोटे मंदिरों में जाइए। एक सफेद कागज़ पर लिखिए: 'युग परिवर्तन का समय आ गया है। भविष्य मालिका पुराण का अनुसरण कीजिए। प्रतिदिन त्रिकाल संध्या कीजिए।' उसमें एक संपर्क नंबर भी डालिए। जब लोग आपको फोन करें, तो बस उन्हें त्रिकाल संध्या की पीडीएफ भेज दीजिए। बस इतना ही आपको करना है। इन मंदिरों के पास बस एक छोटा-सा A4 साइज़ का कागज़ लगा दीजिए। आप त्रिकाल संध्या मोबाइल व्हाट्सएप के माध्यम से भेज सकते हैं। इसी तरह इसका प्रचार हो सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 50:54 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3130 पिताजी, मेरे दो प्रश्न हैं। पहला, एक बीमारी के कारण मैं चार महीने से त्रिकाल संध्या नहीं कर पा रहा हूँ, जिसमें इलाज का असर कुछ ही दिनों से ज़्यादा नहीं टिकता। दूसरा, क्या 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव होंगे या नहीं?

उत्तर: 2027 का चुनाव होगा। हमारे देश में चुनाव और शासन चलते रहेंगे, और इसी के बीच धर्म स्थापना का कार्य भी आगे बढ़ेगा। आपकी बीमारी के विषय में — यदि हम नियमों और भगवान की भक्ति का पालन करें, तो दवा भी अमृत बन जाती है। कोई भी दवा लेने से पहले 'औषधे चिंतये विष्णुम्...' श्लोक का पाठ कीजिए और श्रद्धा के साथ त्रिकाल संध्या कीजिए; दवा असर करेगी। यह हमारे मन और विश्वास पर निर्भर करता है। चुनाव चलते रहेंगे, 2029 में भी। लेकिन यदि युद्ध छिड़ जाए, तो चुनाव कैसे होंगे? शास्त्रों में इसका उल्लेख है। पर जो भगवान की इच्छा होगी, वही होगा। हमारा ध्यान लोगों के परिवर्तन पर है, चुनावों पर नहीं। हमारे देश में शासन 2032-34 तक चलता रहेगा, और इसी दौरान महान धर्म स्थापना, महापरिवर्तन और विनाश — ये सब एक साथ होंगे।

► यह उत्तर सुनें · 52:42 · 19 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3131 पिताजी, कृपया बताइए कि हम अपना 'धर्म बल' (धर्म की शक्ति) कैसे बढ़ाएँ।

उत्तर: कलियुग में धर्म बढ़ाने के लिए दान ही आधार है। दान छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। जैसा मैंने कहा, खेत से थोड़ी घास लाकर गाय को खिला देना भी दान है। थोड़ा-सा भोजन देना, या 10-50 रुपये देना भी दान है। दूसरों की सहायता करने से धर्म बढ़ता है। दूसरे कौन हैं? सभी जीव। यदि हम चींटियों को गुड़ डालें, तो हमारा धर्म बढ़ेगा। गुड़ या शक्कर का एक छोटा-सा टुकड़ा बहुत कम मूल्य का होता है, पर पुण्य बढ़ाता है। जब हम दूसरों की सहायता करते हैं, तब धर्म बढ़ता है। भगवान का नाम जपना और त्रिकाल संध्या करना शरीर और मन को शुद्ध करता है, जिससे भगवान हमारे हृदय में निवास कर सकें और हमें आशीर्वाद दें। इसलिए दोनों आवश्यक हैं: भजन, कीर्तन, त्रिकाल संध्या, और छोटे-छोटे दान-कर्म। सत्य बोलिए, माता-पिता को प्रणाम कीजिए, गौ सेवा कीजिए, दूसरों की सहायता कीजिए, और छोटे-छोटे दान कीजिए। इससे आपका धर्म बढ़ेगा।

► यह उत्तर सुनें · 55:09 · 19 फ़रवरी 2026

सत्र 179 · प्रश्न 3132–3149

L195: JAGANNATH मंदिर से मिला और एक नया संकेत! | Bhavishya Malika | Pandit Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 25 फ़रवरी 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3132 इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर: हम सम्पूर्ण विश्व की आसपास की परिस्थितियों का अध्ययन करते हैं। उसमें हमें बड़े संकेत मिलते हैं। कल हमें एक अच्छा संकेत मिला। हमने मध्य वैकुण्ठ में नील चक्र (नीले चक्र) पर एक चील पक्षी को बैठे देखा। भगवान आदि विष्णु सनातन महाप्रभु, जो स्वयं ब्रह्माण्ड हैं, जो नीलाचल क्षेत्र में चतुर्धा विग्रह (चार स्वरूपों वाले दिव्य रूप) के साथ महाविष्णु के रूप में विराजमान हैं — उस क्षेत्र में, भगवान के मुख्य मंदिर के नील चक्र पर एक चील पक्षी का बैठना एक बड़ा संकेत है।

► यह उत्तर सुनें · 00:37 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3133 तो इस संकेत का अर्थ क्या है?

उत्तर: इस संकेत का अर्थ है एक अशुभ पक्षी का जाकर वैकुण्ठ पर बैठना। भगवान का कालचक्र और उद्धारकारी चक्र — दोनों ही उग्र भी हैं और सौम्य भी। नील चक्र उग्र भी है और सौम्य भी; भक्तों के लिए यह सौम्य है और पापियों के लिए विनाशकारी कालचक्र है। तो यह चील पक्षी केवल भारत या ओडिशा के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए एक बड़ा संकेत लेकर आया है। यह एक अनोखे समय का प्रमाण है।

► यह उत्तर सुनें · 02:06 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3134 वह अनोखा समय क्या है?

उत्तर: वह अनोखा समय वर्तमान विश्व परिस्थिति से जुड़ा है। मानव सभ्यता में भक्तगण गहरे विचार में हैं। भारत में और सारे विश्व में भगवान के अनेक भक्त हैं। पर भक्त सोच रहे हैं, 'सचमुच कुछ होने वाला है।' हाँ।

► यह उत्तर सुनें · 03:08 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3135 वह विशेषता क्या है?

उत्तर: वह विशेषता एक ही बात है: यह सम्पूर्ण विश्व में समय परिवर्तन का संकेत है। इसमें दो प्रकार के समय शामिल हैं। एक है विश्व के समस्त भक्तों का उद्धार। चील पक्षी का बैठना एक शुभ संदेश है, और दूसरा परिवर्तन का संदेश है। पहला संदेश है विश्वभर के समस्त भक्तों का एकीकरण। सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म की ध्वजा फहराने का समय आ रहा है। चारों युगों के भक्त एक होंगे। वे लोग, वे मनुष्य, चाहे उनका धर्म या पंथ कोई भी हो, जो सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री का आचरण करते हैं; जो जीवों के प्रति दयालु हैं और सात्त्विक (शुद्ध) गुणों के आधार पर सत्यपूर्ण कर्म करते हैं, उन मनुष्यों की रक्षा होगी।

► यह उत्तर सुनें · 03:54 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3136 दूसरा संकेत क्या है?

उत्तर: दूसरा संकेत उनके लिए है जिन्होंने पाप नहीं छोड़ा और पाप करते जा रहे हैं। पहला पाप यह है कि मनुष्य के मन में जीवों के प्रति करुणा न हो। जो गौ माता और अन्य जीवों को मारकर खाते हैं, उनके लिए पाप का तत्त्व आता है। जो लोग दूसरों के प्रति अन्याय करते हैं — चाहे वह प्रकृति का जगत हो, प्रेत-आत्माओं का, मनुष्यों का या पशुओं का — जो ऐसे कर्मों में लिप्त हैं, उन्हें एक ओर से बदलने का संकेत दिया जा रहा है। दूसरी ओर, जो मनुष्य दूसरों के विरुद्ध कार्य करते हैं और पाप करते हैं, जो दूसरों का बुरा सोचते हैं — चाहे वे जीव हों, मनुष्य हों, कोई देश हो, या कोई समुदाय — उनके लिए विनाशकारी समय आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 05:32 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3137 पाप क्या है?

उत्तर: पहला पाप यह है कि मनुष्य के मन में जीवों के प्रति करुणा न हो। जो गौ माता और अन्य जीवों को मारकर खाते हैं, उनके लिए पाप का तत्त्व आता है। साथ ही वे लोग जो दूसरों के प्रति अन्याय करते हैं — चाहे वह प्रकृति का जगत हो, प्रेत-आत्माओं का, मनुष्यों का या पशुओं का — जो ऐसे कर्मों में लिप्त हैं।

► यह उत्तर सुनें · 05:43 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3138 तो वे (भगवान कल्कि) क्या करेंगे?

उत्तर: इस श्लोक में उसी सिद्धांत के आधार पर लिखा गया है जिस पर चील पक्षी का बैठना है। भाव यह है कि, जैसा मैंने कहा, दो प्रकार के परिवर्तन: एक है आध्यात्मिक परिवर्तन, और दूसरा है पाप में लिप्त लोगों के लिए परिवर्तन। जो पाप में लिप्त हैं, उनके लिए महाफल का समय आ रहा है। यहाँ सत्य किसी के पास नहीं होगा, क्योंकि कलियुग की सारी शक्ति अब भगवान कल्कि के हाथों में है। कोई भी देश या कोई भी व्यक्ति कितना भी सोचे कि 'मेरे पास धन है, सम्पत्ति है, मेरे पास शक्ति है। मैं कुछ भी कर सकता हूँ,' उन्हें यह भूल जाना चाहिए। 2026 से आपको यह मनोवृत्ति त्याग देनी चाहिए, क्योंकि सारी विचारधाराएँ भगवान के हाथों में चली गई हैं। जो मनुष्य इसका दुरुपयोग करेंगे, उनका भी विनाश होगा।

► यह उत्तर सुनें · 09:38 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3139 क्या लिखा है?

उत्तर: लिखा है, 'कल्कि स्वरूपा दुरत मार्ग स्थापयते हरि।' भगवान कल्कि सात्त्विक (शुद्ध) लोगों को अवश्य मुक्ति प्रदान करेंगे; इसमें कोई संदेह नहीं। पर जो म्लेच्छ (अपवित्र) कर्म करते हैं, जो पाप करते हैं, जो अपने अहंकार, वैभव और शक्ति का दुरुपयोग करते हैं — उन्हें भी मार्गदर्शन मिलेगा। मार्गदर्शन की एक धारा है भविष्य मालिका पुराण, और उसमें सम्पूर्ण दिव्य तत्त्व है, जिसे हम त्रिकाल (तीनों काल) कहते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 10:52 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3140 हम कुछ कहने वाले कौन होते हैं?

उत्तर: यह एक आलंकारिक प्रश्न है जिसका भाव यह है कि ऐसे दिव्य विषयों पर बोलने का मनुष्यों को कोई अधिकार नहीं है। वक्ता आगे कहते हैं: इसलिए जगन्नाथ मंदिर के ऊपर का संकेत विश्व को एक अनोखा संदेश देता है। अब समय नहीं बचा है। इस समय हमें भेदभाव, जाति, धर्म और पंथ के विचारों को त्यागकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सारा विश्व एक परिवार है) के एकमात्र सिद्धांत को अपनाना होगा। सब हमारे अपने हैं, और सब मुझमें और आपमें हैं — जो सनातन धर्म के शुद्ध सिद्धांतों और नियमों का पालन करते हैं, उनके लिए कोई भेदभाव नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 15:20 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3141 इसमें मध्यस्थ कौन होगा?

उत्तर: पाकिस्तान, और सऊदी अरब जैसे कुछ मध्य-पूर्व के देश। ये सब मिलकर युद्ध रोकने के लिए आगे आएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 16:47 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3142 धर्म (धार्मिक कर्तव्य) क्या है?

उत्तर: छोटे-छोटे दान, गौ माता की सेवा, त्रिकाल संध्या का पालन (दिन के तीन संधिकालों में प्रार्थना), सात्त्विक (शुद्ध) भोजन, सात्त्विक आचरण, और सात्त्विक मनोवृत्ति को अपनाना।

► यह उत्तर सुनें · 20:12 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3143 मुझे यह संध्या साधना शुरू किए और इस परिवार से जुड़े हुए 10 महीने हो गए हैं। क्योंकि वे मांसाहार करते हैं, इसलिए वे मुझे अग्निहोत्र यज्ञ करने, सूर्य अर्घ्य देने, या ब्रह्मचर्य का पालन करने नहीं देते। मैंने अपने परिवार को कई बार समझाने की कोशिश की, पर वे सुनते ही नहीं। कृपया मार्गदर्शन करें। आपको मेरा सादर प्रणाम।

उत्तर: देखिए, मनुष्य को अपना कर्म करना चाहिए। हम अपना कर्म करते हैं। यदि हमारे कर्मों में पवित्रता है और समाज-कल्याण का संदेश है, तो हमें यह भेद नहीं करना चाहिए कि कोई उसे स्वीकार करता है या नहीं। पर सच्चाई यह है कि वह समय आएगा जब लोग इसे अपनाएँगे। उनके पास और कोई रास्ता नहीं होगा। इसीलिए वैशाख मास में हम दिल्ली में 3000 लोगों को अग्निहोत्र यज्ञ सिखाने के लिए एक कार्यशाला आयोजित कर रहे हैं, जिसमें सामूहिक हवन का कार्यक्रम होगा। सब लोग सहमत नहीं होंगे, और सब लोग समझेंगे भी नहीं। जब सूर्य चमकता है, तो उसका प्रकाश सब पर पड़ता है, पर सब लोग सूर्यदेव को अर्घ्य नहीं देते। पर कुछ पवित्र आत्माएँ देती हैं, और उन्हीं के कारण सूर्य की कृपा धरती पर उतरती है। इसलिए वृक्ष की तरह स्थिर रहिए और कर्मयोगी की भाँति अपने कर्तव्य कीजिए; यही हमारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। वृक्ष किसी से कुछ नहीं कहता, पर स्थिर रहकर सबसे अधिक देता है। कर्मयोगी परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। ये दोनों ही हमें स्वीकार्य हैं। कोई स्वीकार करे, आलोचना करे, भला कहे या बुरा — इससे उन पर कोई असर नहीं पड़ता। और भगवान हमारे कर्म का कण-कण, इंच-इंच इकट्ठा करके हमारी झोली में डाल देते हैं। जय।

► यह उत्तर सुनें · 23:41 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3144 मैं त्रिसंध्या करता हूँ। क्या इससे मेरे परिवार की रक्षा होती है, या मुझे पुण्य मिलता है?

उत्तर: देखिए, जो व्यक्ति त्रिकाल संध्या करता है, उसे उसका प्रत्यक्ष फल मिलता है। और जिस घर में त्रिकाल संध्या होती है, उसकी कृपा से पितरों के लिए मुक्ति का मार्ग खुल जाता है। और यदि हम त्रिकाल संध्या करते हैं और कोई दूसरा उसे सुनता है, तो समय के साथ उसे भी उसका कुछ लाभ मिलेगा। इसलिए जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उन्हें पूरा लाभ मिलेगा। जो सुनते हैं या उसके संपर्क में आते हैं, उन्हें कुछ लाभ मिलेगा, पर उन्हें पूरा पुण्य प्राप्त नहीं होगा। सत्य युग में जाने के लिए सबको त्रिकाल संध्या करनी ही होगी। जो करेगा, वही जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 26:25 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3145 यदि मैं त्रिसंध्या तीन बार के बजाय दो बार करूँ, तो क्या वह स्वीकार्य होगा?

उत्तर: बात यह है कि 'मैं दो बार करता हूँ।' अगर हम दो बार भोजन करें और एक बार छोड़ दें, तो काम नहीं चलता। इसी तरह, त्रिकाल एक अमृत तत्व है। बार-बार उसका जाप करने से हमारी हृदय-ग्रंथि शुद्ध होती है और हमें दिव्य कृपा मिलती है। यह कृपा तीन बार करने से पूर्ण रूप से प्राप्त होती है। दो बार करने से कुछ लाभ तो मिलेगा, पर तीनों काल में त्रिकाल संध्या का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण है। मैंने जो समय बताए हैं वे हैं — ब्रह्म मुहूर्त, दोपहर 12 बजे, और सायं संध्या सूर्यास्त से आधा घंटा पहले और आधा घंटा बाद तक। इन्हीं समयों पर देवता त्रिकाल संध्या करते हैं। आप भी उसी समय कीजिए। आप देवताओं के समान अमर हो जाएँगे। आप देवताओं के समान पुण्य फल प्राप्त करने के योग्य बन जाएँगे।

► यह उत्तर सुनें · 26:32 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3146 नाम-जप में कौन सा नाम श्रेष्ठ है? माधव माधव, राधे राधे, या हरे कृष्ण हरे राम?

उत्तर: इसलिए सबसे महान और सबसे पवित्र नाम है 'माधव' नाम। 'मा' ब्रह्म स्वरूपा हैं, आदि प्रकृति, नारायणी के नाम से विख्यात, विष्णु की सनातन माया, महालक्ष्मी स्वरूपा, वेदमाता गायत्री, राधा और वसुंधरा। उनके पति माधव हैं। माधव राधा रानी के पति हैं और स्वयं सच्चिदानंद भगवान, महाविष्णु हैं। इसलिए माधव नाम का जप करने से राधा रानी का नाम भी जप हो जाता है, और भगवान कृष्ण महाविष्णु का नाम भी उसमें सम्मिलित हो जाता है। माधव नाम संसार का कल्याण और उद्धार करता है, और जो भी मनुष्य माधव नाम का जप करेगा, वह सत्य युग में जाएगा। यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है। इसका पालन करना अनिवार्य है।

► यह उत्तर सुनें · 26:38 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3147 मेरा प्रश्न यह है कि मैं पिछले तीन वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ, पर किसी कारणवश अब तक त्रिकाल संध्या नहीं कर पाया हूँ। त्रिकाल संध्या शुरू करना कब तक उचित माना जाएगा? यदि मैं अभी शुरू करूँ, तो क्या ठीक रहेगा?

उत्तर: अगर आप नहीं कर पाए हैं, तो अभी शुरू कीजिए। आज से ही शुरू कीजिए। यदि आप त्रिकाल संध्या नहीं करेंगे, तो आप सत्य युग में नहीं जाएँगे। मैं यह स्पष्ट रूप से कहता हूँ क्योंकि यह न मेरा धर्म है, न मेरी विचारधारा। यह ब्रह्म तत्व है। यह अठारहों पुराणों का पुण्य सार है। जो त्रिकाल संध्या नहीं करते, उनके लिए सत्य युग में जाना कठिन है। इसलिए आज से, ब्रह्म मुहूर्त से त्रिकाल संध्या शुरू कीजिए। समय पर कीजिए। अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण रखिए, और मन में उठने वाले गलत विचारों पर लगाम लगाइए। मन पर नियंत्रण करके भगवान के प्रति अपनी भक्ति बढ़ाइए। संसार में त्रिकाल संध्या से बढ़कर कोई ध्यान, तप, पूजा या उपाय नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 29:25 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3148 बाबा, त्रिसंध्या के द्वारा मेरी एक बड़ी बीमारी, लकवा, ठीक हो गई। इसके लिए आपको मेरा प्रणाम और इस धारा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने संकल्प लिया था कि ठीक होने के बाद मैं सूर्य को अर्घ्य दूँगा और नियम के अनुसार भोजन करूँगा। कुछ समय तक मैंने ऐसा किया, पर अब नियमित रूप से नहीं कर पा रहा हूँ। मैं क्या करूँ? कोशिश करने पर भी ठीक से नहीं कर पाता।

उत्तर: देखिए, कोई बात नहीं। मन और इंद्रियों पर नियंत्रण का अभाव बार-बार मनुष्य के लिए धर्म-कर्म करने में बाधा बन जाता है। पर चिंता मत कीजिए। एक काम कीजिए: सोने से पहले 108 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए और कहिए, 'माधव, कृपा कीजिए कि मैं वे वैदिक, आध्यात्मिक और दिव्य कर्म कर सकूँ जो मैं कर रहा था।' फिर धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। प्रतिदिन सोने से पहले 108 बार माधव नाम का जप कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 30:52 · 25 फ़रवरी 2026

प्रश्न 3149 मेरी पत्नी के परिवार ने उसे प्रभावित करके मुझसे अलग कर दिया है। उसके परिवार की प्रवृत्तियाँ आसुरी हैं और वे मांसाहारी हैं। कृपया मार्गदर्शन करें। मेरा परिवार कैसे ठीक होगा, या मैं सही मार्ग पर कैसे चल सकता हूँ?

उत्तर: जय जगन्नाथ। पहले मैं आपको बताऊँ, यदि आप अपना परिवार ठीक करना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको त्रिकाल संध्या करनी होगी। दूसरा, प्रतिदिन सोने से पहले 108 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए। कहिए, 'प्रभु, कृपा करके मेरा परिवार मुझे लौटा दीजिए।' न कोई राक्षस है, न कोई संत। कर्म और समय मनुष्य को वैसा बना देते हैं। कोई मांसाहारी भी हो, तो हम उसके कर्म की निंदा कर सकते हैं, पर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। शास्त्र कहते हैं कि किसी व्यक्ति की निंदा मत करो। व्यक्ति द्वारा किए गए गलत कर्मों की निंदा हम कर सकते हैं, पर स्वयं व्यक्ति की नहीं। हर मनुष्य भगवान की संतान है। इसलिए आपके ससुराल वाले भी अच्छे हैं। बात यह है कि यदि आप अपना परिवार वापस पाना चाहते हैं, तो छह महीने तक 108 बार माधव नाम का जप कीजिए। रात को सोने से पहले कीजिए। उचित समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। उसके बाद देखिए कि आपको क्या परिणाम मिलता है, और फिर मुझसे संपर्क कीजिए या इस नंबर पर संपर्क कीजिए। ठीक है?

► यह उत्तर सुनें · 32:08 · 25 फ़रवरी 2026

सत्र 180 · प्रश्न 3150–3174

L196: वर्तमान युद्ध से मानवता को क्या सीखना चाहिए? | Bhavishya Malika Puran | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 8 मार्च 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3150 यह वर्तमान समय मानव समाज के लिए क्या लेकर आ रहा है?

उत्तर: यही सबसे बड़ा विचारणीय विषय होना चाहिए। जब सारा संसार इतनी बड़ी समस्याओं और इतने बड़े युद्धों का सामना कर रहा है, तो मानव सभ्यता को इस पर चिंतन करना ही चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई किस धर्म, मत या परंपरा को मानता है, पर कोई इसके बारे में सोच ही नहीं रहा। सबको लगता है कि इससे उनका कोई लेना-देना नहीं। पर सच्चाई यह है कि एक बार युद्ध शुरू हो जाए, तो वह रुकता नहीं। और धधकती आग, प्रलयकारी दावानल की तरह, बड़े-बड़े जंगलों और विशाल क्षेत्रों को जलाकर राख कर देती है। यह युद्ध भी ठीक वैसा ही एक तत्व है।

► यह उत्तर सुनें · 01:47 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3151 मध्य पूर्व में हो रहे युद्ध की प्रतिक्रिया और भविष्य क्या होगा?

उत्तर: हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है। सबसे बड़ा मुद्दा है मानव सभ्यता की रक्षा; यही सबसे बड़ा प्रश्न है। यदि मानव सभ्यता सुरक्षित नहीं रही, यदि इस संसार में मनुष्य ही सुरक्षित नहीं रहे, तो पृथ्वी की रक्षा कैसे होगी? इसलिए यह समय बहुत मूल्यवान है।

► यह उत्तर सुनें · 03:08 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3152 यदि मनुष्य ही सुरक्षित नहीं रहे, तो पृथ्वी की रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: इसीलिए यह समय इतना अनमोल है। सब लोग घर में हैं, आराम से खा-पी रहे हैं और सो रहे हैं। पर जो आक्रमण और युद्ध हो रहा है, उसमें कितने ही लोग मर रहे हैं। कितने ही निर्दोष प्राण चले जाते हैं, चाहे उनका कोई भी धर्म या पंथ हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मानव सभ्यता को अपार क्षति होती है।

► यह उत्तर सुनें · 03:36 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3153 छोटे-छोटे बच्चों ने क्या अपराध किया था?

उत्तर: फिर भी, यह सब देखने के बाद भी हमारी मानसिकता तनिक भी नहीं बदलती। हम बस निष्क्रिय बैठे रहते हैं। इसीलिए भविष्य मालिका ग्रंथ लिखा गया। उसमें स्पष्ट लिखा है कि जब मध्य पूर्व में, मक्का और मदीना में महायुद्ध होगा, तब समुद्र जगन्नाथ क्षेत्र को डुबो देगा।

► यह उत्तर सुनें · 04:13 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3154 एक धर्मभूमि में युद्ध और दूसरी में प्रलय — पहले से लिखा हुआ यह संकेत क्या है?

उत्तर: हम उसी समय की ओर बढ़ रहे हैं। इसलिए जैसे-जैसे पृथ्वी इस तृतीय विश्वयुद्ध की ओर बढ़ेगी, पूरे विश्व को क्षति होगी। चाहे सबसे शक्तिशाली देश हो या सबसे छोटा देश, इसमें सभी को भुगतना पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि कोई शक्तिशाली देश बच जाएगा और बाकी नहीं बचेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 05:06 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3155 मानव सभ्यता की रक्षा कैसे हो सकती है? वह कैसे बचेगी?

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण बात है इस पर चिंतन करना। 600 वर्ष पूर्व, चारों युगों को समेटते हुए, जगन्नाथ क्षेत्र में एक ग्रंथ की रचना हुई, जिसे भविष्य मालिका कहते हैं। लगभग 40 वर्षों से इसका प्रचार हिंदी भाषा में और विदेशों में भी हो रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह परिवर्तन का समय है और मानव सभ्यता के लिए घोर संकट का समय है।

► यह उत्तर सुनें · 07:01 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3156 जब मानव सभ्यता प्रगति और विकास के शिखर पर है, तब विनाश क्यों?

उत्तर: क्योंकि, हमने सब कुछ तो प्राप्त कर लिया, पर हमने जो अधर्म के कार्य किए हैं, उनका फल कौन भोगेगा? भगवान विष्णु की पूजा नहीं होती। भगवान विष्णु का आदर नहीं होता। महाभारत में लिखा है कि जब युग का अंत होगा, तब भगवान विष्णु की पूजा नहीं होगी। अन्य देवी-देवताओं की पूजा होगी, परंतु आदि, सनातन भगवान विष्णु की पूजा न होने के कारण मनुष्य भटक जाएगा और उसके कर्म भ्रष्ट हो जाएंगे। हमने जो कर्म किए हैं, उनका फल अब हमारी ओर आ रहा है।

► यह उत्तर सुनें · 12:45 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3157 धर्म क्या कहता है?

उत्तर: पहले स्वयं शाकाहारी बनिए। जीव हत्या मत कीजिए। यदि आप किसी जीव की हत्या करते हैं, तो उससे लगने वाला शाप आपको भोगना ही पड़ता है। शास्त्रों में लिखा है कि गोहत्या के कारण कलियुग की आयु 1,00,000 वर्ष कम हो गई।

► यह उत्तर सुनें · 15:04 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3158 गायों के साथ दुर्व्यवहार के पाप का फल कौन भोगेगा?

उत्तर: कौन भोग रहा है? कभी यह मत सोचिए कि मध्य पूर्व में युद्ध हो रहा है और उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं। वहाँ के लोग जो दुःख भोग रहे हैं, वही दुःख हमारे देश में भी आने वाला है। उससे रक्षा हमें धर्म के माध्यम से ही मिलेगी, और किसी से नहीं।

► यह उत्तर सुनें · 17:02 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3159 जिन माता-पिता ने हमें जन्म दिया, उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ देना क्या पाप नहीं है?

उत्तर: हाँ, यद्यपि सभी ने ऐसा नहीं किया है। आप जो सुन रहे हैं, शायद आपने ऐसा न किया हो, पर समाज में ऐसे पाप होते हैं ना? इस पाप का परिणाम भुगतना ही पड़ेगा। इसलिए हमें सबसे बड़ी सीख लेनी चाहिए। आज विदेशों में जो हो रहा है, लोग एक दिन नहीं, 15-15 दिन तक भूखे-प्यासे भटक रहे हैं। उनके पास पीने को पानी तक नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 21:16 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3160 युद्धग्रस्त क्षेत्रों के लोगों की पीड़ा से हमें क्या सीख लेनी चाहिए?

उत्तर: इससे हमें सबसे बड़ी सीख लेनी चाहिए। हमें अपने कर्म बदलने होंगे। यदि हमने अपने कर्म नहीं बदले, तो भविष्य में हमारी दशा भी वैसी ही हो जाएगी। क्योंकि यह पूरे विश्व के लिए परिवर्तन का समय है, केवल मध्य पूर्व के लिए नहीं, यूरोप के लिए नहीं, एशिया महाद्वीप के लिए नहीं। यह सम्पूर्ण विश्व के लिए युग परिवर्तन का समय है।

► यह उत्तर सुनें · 21:54 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3161 आपस में लड़ने से क्या मिलेगा?

उत्तर: मानव सभ्यता का बचना कठिन हो जाएगा। इस समय इधर-उधर भटकने के बजाय हमें धर्म की रक्षा करनी चाहिए और सबके कल्याण के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। और जो युद्ध मध्य-पूर्व (मिडिल ईस्ट) में चल रहा है, वह एक महीने से अधिक चल सकता है। लेकिन कोई न कोई समाधान निकलेगा जिससे युद्ध रुक भी जाएगा, और उसके बाद वह समय आएगा जब यह युद्ध पाकिस्तान, भारत और चीन के बीच होगा।

► यह उत्तर सुनें · 24:14 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3162 भगवान की यह जो महान कृपा आप कह रहे हैं, वह क्या है?

उत्तर: जो युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाला था, जिसके लिए कई देश भारत के विरुद्ध अपनी शक्ति का प्रयोग करने वाले थे—वे देश अब अपनी ही रक्षा के लिए अपनी शक्ति को स्वयं नष्ट कर रहे हैं। भगवान की कृपा से उनकी शक्ति घट रही है। वे अपनी पूरी शक्ति के साथ भारत के विरुद्ध लड़ नहीं पाएंगे। भगवान निरंतर उनकी शक्ति को कम कर रहे हैं।

► यह उत्तर सुनें · 25:43 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3163 लेकिन तृतीय विश्वयुद्ध का परिणाम क्या होगा?

उत्तर: यह भी शास्त्रों में लिखा है। तृतीय विश्वयुद्ध का परिणाम यह होगा कि पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना होगी। कोई भी देश महाशक्ति (सुपरपावर) नहीं रहेगा। यही इसका परिणाम होगा। जो देश यह सोचते हैं कि वे अपनी शक्ति से विश्व को जीत लेंगे और भारत की अर्थव्यवस्था नष्ट कर देंगे, भारत से लड़ेंगे और भारत पर विजय प्राप्त कर लेंगे... देखिए, चारों युगों में कोई भी भारत को जीत नहीं पाया है। भारत सदैव एक अजेय भूमि रहा है। तो, तृतीय विश्वयुद्ध का परिणाम यह होगा कि पूरे विश्व में सनातन धर्म स्थापित होगा। पूरे विश्व में छोटे-छोटे राज्य बनेंगे, और भारत मुख्य देश होगा। तृतीय विश्वयुद्ध के बाद भारत अखंड भारत बनेगा, जिसमें एशिया महाद्वीप के सभी क्षेत्र भारत का हिस्सा बन जाएंगे।

► यह उत्तर सुनें · 27:26 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3164 'मैं' और 'मेरा' में फँसकर क्या मिलेगा?

उत्तर: इसलिए सभी को भगवान विष्णु की उपासना करनी चाहिए। त्रिकाल संध्या का पालन करें। माधव का नाम जपें और भागवत पढ़ें, ताकि आप अपने जीवन और अपने परिवार की रक्षा कर सकें। क्योंकि रक्षा का मार्ग भी लिखा है, और समय-सीमा भी लिखी है।

► यह उत्तर सुनें · 29:33 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3165 क्या जगन्नाथ मंदिर में रक्त की बूँद से हमें संकेत नहीं मिल रहा है?

उत्तर: हाँ, मिल रहा है। कम खुश रहिए, कम मज़ाक कीजिए। बहुत मत हँसिए। काल का समय आ रहा है। हँसने की क्या आवश्यकता है? मैं सड़क पर जाता हूँ, गाड़ी में जाता हूँ, और लोग बात करते हुए इतना हँसते हैं। आजकल बच्चे और वरिष्ठ लोग भी ऐसा करते हैं। जब पृथ्वी विनाश की ओर बढ़ रही है, तब इस हँसी की क्या आवश्यकता है?

► यह उत्तर सुनें · 33:18 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3166 इस हँसी की क्या आवश्यकता है?

उत्तर: जब पृथ्वी विनाश की ओर बढ़ रही है, तब सबसे बड़ी परंपरा यही है कि जितना कम हो सके बोलें और जितना अधिक हो सके भगवान की शरण में रहें। इस समय हँसी-मज़ाक मत कीजिए। जीवों की हत्या मत कीजिए। मदिरा और मांस का सेवन मत कीजिए। अंडा मत खाइए। दूसरों की वस्तु का लोभ मत कीजिए। झूठ मत बोलिए। यदि सामर्थ्य है तो दूसरों की सहायता कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 33:41 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3167 यदि आप शास्त्रीय नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो कल्याण कैसे मिलेगा?

उत्तर: इसलिए आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए, माधव का नाम जपना चाहिए, भागवत पढ़ना चाहिए, भागवत का दान करना चाहिए, गौ माता की सेवा करनी चाहिए, तुलसी देवी की पूजा करनी चाहिए, और मानव सभ्यता के कल्याण के लिए सनातन धर्म की मूलभूत परंपराओं का पालन करना चाहिए। इसी में हमारी रक्षा है। और 2034 में सत्ययुग आएगा; यह भी नहीं बदलेगा। इस बीच मानव सभ्यता को 64 प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ेगा, और महा तृतीय विश्वयुद्ध आरंभ होगा, जिससे मानव सभ्यता का बड़ा परिवर्तन होगा। समय हमारे हाथ में नहीं है। इस समय धर्म को थामे रहिए और सत्कर्म कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 37:27 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3168 जय जगन्नाथ, पंडित जी। आपकी पहली भविष्य मालिका में आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने लिखा था कि जब भी जगन्नाथ मंदिर में कोई अनहोनी होती है, वही पूरे विश्व में प्रतिबिंबित होती है। हमने कोरोना से पहले संकेत देखे, और फिर कोरोना आया। इसी प्रकार, 8 तारीख को रक्त के धब्बे दिखे; 7 तारीख को एक अशुभ पक्षी; 5 मार्च को एक गिद्ध; 4 मार्च को पुजारियों के बीच झगड़ा। केवल एक महीने में इतनी घटनाएँ हो गईं। किसी ने पूछा है, क्या इसका अर्थ यह है कि इसी वर्ष से बहुत बड़ा संकेत प्रकट हो रहा है?

उत्तर: बिल्कुल, इसी वर्ष से। देखिए, पृथ्वी विश्वयुद्ध की ओर बढ़ रही है, और बड़ी संख्या में मानव जीवन की हानि होगी, और धन तथा जीवन नष्ट होंगे। यह पूरे विश्व के लिए जगन्नाथ मंदिर से मिला संकेत है। तो, जगन्नाथ मंदिर से जो संकेत मिल रहा है, वह दर्शाता है कि पृथ्वी निश्चित रूप से तृतीय विश्वयुद्ध की ओर बढ़ेगी, और बहुत भयंकर स्थिति होगी। और आगे भी जगन्नाथ मंदिर से और संकेत मिलेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 38:35 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3169 एक माता ने पूछा है, 'जय श्री माधव। जो व्यक्ति रोता है, वह माया से ऊपर नहीं उठा है। क्या इसका अर्थ यह है कि भगवान के लिए रोना भी माया के अंतर्गत आता है? हमारे साथ ऐसा होता है। जब हम रोते हैं, तो भगवान का नाम लेते हुए रोना रुकता ही नहीं। हम तभी रोना बंद करते हैं जब हमें माया की याद आती है।'

उत्तर: देखिए, जो भगवान की भक्ति में रोता है, वह सबसे अधिक धन्य है, और उन्हें आनंद अश्रु कहा जाता है। ऐसे आँसू बहाने वाले व्यक्ति को भी भगवान की कृपा प्राप्त होती है। क्योंकि भगवान के लिए रोया नहीं जाता; हँसा जाता है। उस रोने को आनंद कहा जाता है। लेकिन जो माया के कारण रोते हैं—अपनी संपत्ति के लिए, अपने परिवार के लिए, अपने अहंकार के लिए, अपने क्रोध के लिए, जब उन्हें मान्यता नहीं मिलती—वे रोते हैं, बैठ जाते हैं और क्रोध करते हैं। ऐसे लोग नरक को प्राप्त होते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 39:53 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3170 जय जगन्नाथ। अवधेश ठाकुर जी ने पूछा है, 'जय श्री माधव, पंडित जी। अन्य धर्मों के लोग हमारे सनातन धर्म की त्रिकाल संध्या का पालन कैसे और कब करेंगे और भगवान की शरण ले पाएंगे?'

उत्तर: देखिए, 2032 से पहले, 2028 के बाद, विश्व में एक बड़ा, आमूल परिवर्तन होगा। विश्व की अनेक धार्मिक परंपराओं के लोग सनातन धर्म की त्रिकाल संध्या को अपनाएंगे। वे भागवत पढ़ेंगे। वे सनातन परंपरा को अपनाएंगे। क्योंकि उस समय जब रोग आएंगे, तब न कोई इलाज होगा, न कोई रक्षा। बड़ी विपत्तियाँ आएंगी, और उनसे बचने का कोई उपाय या रक्षा नहीं होगी। तब भय के कारण या रक्षा के लिए लोग सनातन धर्म की परंपराओं को अपनाएंगे। 2034 तक पूरा विश्व सनातन बनने के मार्ग पर होगा। यही हमारा विचार है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 40:57 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3171 जय जगन्नाथ, पंडित जी। ज्योति कुशवाहा जी पूछती हैं, 'जय श्री माधव, पिताजी। मेरा प्रश्न यह है कि भक्ति के मार्ग पर मेरा भाव बहुत ऊपर-नीचे होता रहता है। मैं मालिका को सत्य मानती हूँ और स्वयं को प्रभु के चरणों में समर्पित कर चुकी हूँ। परंतु कभी-कभी मुझे बहुत भाव आता है और मैं प्रभु के लिए अत्यंत व्याकुल हो जाती हूँ, लेकिन कभी-कभी मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता, सुन्नपन लगता है।'

उत्तर: देखिए, जब कोई पहली बार गाड़ी चलाता है, तो गाड़ी इधर-उधर डगमगाती है। इसी प्रकार, जब तक व्यक्ति का अंतःकरण पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं हो जाता, मन भटकता रहता है। कभी भक्ति आती है, और कभी सांसारिक और सामाजिक तत्व आ जाते हैं और व्यक्ति भगवान को भूल जाता है। पूरी श्रद्धा और विधि-विधान के साथ लंबे समय तक भागवत का पाठ करने से मन की यह चंचलता—कभी भक्ति-भाव आना, कभी न आना—दूर हो जाएगी। भागवत शास्त्र का पाठ करने और सही समय पर त्रिकाल संध्या करने से व्यक्ति एकनिष्ठ भक्त बन सकता है और पूर्ण भक्ति के साथ भगवान की शरण में रह सकेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 41:47 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3172 जय जगन्नाथ, पंडित जी। किसी ने फोन किया था जिन्हें आज सऊदी अरब जाना था। वे पूछ रहे थे कि क्या यह सही समय है एक साल के लिए सऊदी अरब जाने का, यदि संभव हो तो। उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर है, इसलिए वे सोच रहे हैं, 'क्या हम एक साल के लिए वहाँ जा सकते हैं?'

उत्तर: देखिए, काम तो करना ही पड़ता है, लेकिन ठीक इसी समय जब युद्ध चल रहा है, और वह युद्ध अभी एक महीने से 45 दिन और चलेगा, इस समय जाना समस्या पैदा कर सकता है। भगवान कहीं भी रोजगार दे सकते हैं। इसलिए प्रतीक्षा करना ही बेहतर है। अभी उड़ानों की कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए फिलहाल इसे टाल देना ही ठीक है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:06 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3173 जय जगन्नाथ। पंडित जी, एक माता जी का प्रश्न है: उन छोटे बच्चों का क्या होगा जिनके परिवार के लोग इस आध्यात्मिक मार्ग पर नहीं हैं? वे छोटे बच्चे हैं, और कोई उन्हें त्रिकाल संध्या के बारे में नहीं बता रहा। तो उनका उद्धार कैसे होगा?

उत्तर: देखिए, सभी जीव अपने-अपने कर्म के अनुसार आए हैं। बच्चों को त्रिकाल संध्या सिखाना और उसका पाठ कराना माता-पिता की जिम्मेदारी है। यदि माता-पिता अपने बच्चों का ध्यान ही नहीं रखेंगे, तो वे तो छोटे हैं, वे क्या कर सकते हैं? इसलिए जो बच्चे पढ़ नहीं सकते, बहुत छोटे बच्चे हैं, उनके लिए माता-पिता से मेरा निवेदन है कि वे स्वयं त्रिकाल संध्या का पालन करें और अपने बच्चों को भी सुनाएँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 43:53 · 8 मार्च 2026

प्रश्न 3174 जय श्री माधव, पंडित जी। कृपया मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए। कल मेरी परीक्षा है।

उत्तर: ठीक है। माधव का नाम जपिए। परीक्षा अच्छी जाएगी। जय जगन्नाथ। परीक्षा अच्छी जाएगी। माधव का नाम लेकर जाइए, सब ठीक होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 45:13 · 8 मार्च 2026

सत्र 181 · प्रश्न 3175–3195

L197: भविष्य मालिका से नया संकेत? | Bhavishya Malika Puran | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 30 मार्च 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3175 मानव सभ्यता की रक्षा कैसे हो सकती है?

उत्तर: आज यही सबसे बड़ा प्रश्न है। वक्ता बताते हैं कि संसार उथल-पुथल में है, प्रकृति की चाल बदल गई है, हर जगह संघर्ष है, और ग्रहों की चाल अस्थिरता पैदा कर रही है। कोई भी मनुष्य सुरक्षित नहीं है। संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए वे सभी को सलाह देते हैं कि त्रिकाल संध्या (दिन के तीन संधिकालों की प्रार्थना) का पालन करें, प्रतिदिन भागवत का एक अध्याय पढ़ें, और घर की पहली रोटी गौ माता को खिलाएँ। वे इस बात पर जोर देते हैं कि तप, दया और दान ही सबसे बड़ी पवित्रता हैं और अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

► यह उत्तर सुनें · 00:26 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3176 और जब रोग आएँगे, तो हमारी रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: इसी कारण हम शास्त्रों का प्रचार करते हैं। एक समय आएगा जब दवा विफल हो जाएगी और काम नहीं करेगी। रक्षा का एकमात्र उपाय है दिन में तीन बार संध्या करने की परंपरा। शास्त्रों में लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उनके अनंत जन्मों के पाप जल जाते हैं, वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं, उनकी आयु बढ़ती है, और भगवान की कृपा से रोग दूर हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 02:36 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3177 तो, मानवता की रक्षा का मार्ग क्या है?

उत्तर: एकमात्र परंपरा है तीनों समय संध्या करना। बाढ़, अग्नि, भूकंप, आकाशीय आपदाओं, महामारियों और बड़े विश्व युद्धों जैसी महान विपत्तियों के समय, त्रिकाल संध्या आपकी रक्षा करेगी। इसीलिए सभी से निवेदन है कि प्रतिदिन त्रिकाल संध्या का पालन करें।

► यह उत्तर सुनें · 02:57 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3178 लोग सत्य युग में कैसे पार उतरेंगे?

उत्तर: इसकी एकमात्र परंपरा है तीनों समय संध्या करना। हमने वह पुस्तक मानवता के कल्याण के लिए समर्पित की है। शास्त्रों में लिखा है कि जो त्रिकाल संध्या करते हैं, उनके अनंत जन्मों के पाप जल जाते हैं, और वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 03:03 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3179 धर्म क्या है?

उत्तर: धर्म है सत्य, पवित्रता, दया और दान। जो जीवों की, गौ माता की, और दीन-दुखियों की सेवा करते हैं, वही धर्म है।

► यह उत्तर सुनें · 06:20 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3180 यदि घर या परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए, तो क्या उस समय हम त्रिकाल संध्या कर सकते हैं? और उस अवधि में क्या लहसुन-प्याज का त्याग करना आवश्यक है?

उत्तर: बिल्कुल। जब परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु होती है, या आपके रक्त-संबंध में किसी का देहांत होता है, तो हमें प्याज और लहसुन से दूर रहना चाहिए। उस समय तेल का भी सेवन नहीं किया जाता, तो इसका पालन करना होता है। आप घी में बना भोजन खा सकते हैं। दूसरी बात, यदि घर में किसी की मृत्यु हुई है, तो त्रिकाल संध्या भक्ति और नाम-जप का मार्ग है। आप मंदिर में नहीं जा सकते, लेकिन आप कहीं बैठकर मन ही मन मंत्र का जप कर सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि 10 दिनों तक मृतक की आत्मा आपके घर के आसपास विचरण करती है, और त्रिकाल संध्या का सार पितरों को मुक्ति प्राप्त करने में सहायता करता है। इसलिए आप मंदिर में विधिपूर्वक त्रिकाल संध्या नहीं कर सकते, लेकिन कहीं बैठकर उसे गा सकते हैं, जप कर सकते हैं, या पाठ कर सकते हैं। जब घर में किसी की मृत्यु होती है, तो मंदिर में पूजा नहीं की जाती, हम घर के पूजा स्थल में नहीं जा सकते या भागवत नहीं पढ़ सकते, लेकिन कहीं और मंत्र और नाम का जप कर सकते हैं। इससे दिवंगत आत्मा को मुक्ति मिलती है, और उन्हें आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। तो, यह करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 10:02 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3181 यहाँ कतर में इस समय स्थिति थोड़ी खराब है। तो ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए? और मेरा एक और प्रश्न है: क्या अधिमास या मलमास (अतिरिक्त मास) में एकादशी का व्रत रखना चाहिए?

उत्तर: देखिए, मलमास हो या कोई भी अन्य मास, एकादशी कभी नहीं रुकती। जो लोग शारीरिक रूप से स्वस्थ और सक्षम हैं, उन्हें एकादशी का व्रत रखना चाहिए। यह पहली बात है। दूसरी बात, कतर या मध्य-पूर्व के देशों की स्थिति कुछ दिन और चलेगी और फिर रुक जाएगी। इसलिए इस समय आपको त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और माधव का नाम जपना चाहिए। स्वयं को माधव को, कल्कि को समर्पित कर दीजिए, ताकि भगवान कल्कि आपकी रक्षा कर सकें। माधव नाम आपकी रक्षा कर सकता है। त्रिकाल संध्या बड़ी-बड़ी आपदाओं के विरुद्ध आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकती है। बस इतना कीजिए और शाकाहारी भोजन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 11:54 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3182 पंडित जी, जब भोजन ही नहीं होगा, तो हम जीवित कैसे रहेंगे?

उत्तर: देखिए, ऐसा समय अभी नहीं आया है। वह समय दूर है। हमने शास्त्रों में पढ़ा है, और अभी भी हिमालय में ऐसे संत हैं जिन्होंने 10,000 या 15,000 वर्षों से भोजन नहीं किया है। वे मंत्र जप से जीवित रहे हैं, जिससे उनके शरीर को भूख का अनुभव नहीं होता। तो जब भोजन नहीं होगा, तब लोग भगवान माधव का नाम जपकर और त्रिकाल संध्या करके एक-दो वर्ष तक जीवित रह सकेंगे। धर्म आपको बचाएगा, मंत्र आपको बचाएगा, माधव आपको बचाएँगे। तो वह समय अभी नहीं है। उसकी चिंता मत कीजिए। लेकिन अभी से त्रिकाल संध्या का पालन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 13:14 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3183 मैंने अभी-अभी त्रिसंध्या शुरू की है, लेकिन आपके मार्गदर्शन के अनुसार भगवान उनकी रक्षा करेंगे जो तीन वर्ष से अधिक समय से यह कर रहे हैं। तो क्या मेरी रक्षा होगी या नहीं?

उत्तर: बिल्कुल। मैं चाहता हूँ कि सभी पर भगवान की कृपा और आशीर्वाद हो। लेकिन त्रिकाल संध्या सही समय पर कीजिए। त्रिकाल संध्या के साथ-साथ आपको सुबह 3:45 बजे से अगली रात 12:00 बजे के बीच कभी भी भागवत का एक अध्याय अवश्य पढ़ना चाहिए। और त्रिकाल संध्या के सभी नियमों का पालन कीजिए। मैं स्नान की बात नहीं कर रहा हूँ। आप जहाँ भी हों—काम पर, यात्रा में, कहीं भी—बस श्रद्धा से मंत्र जपिए। उससे आपकी रक्षा होगी। भले ही तीन वर्ष न हुए हों, यदि आप सही समय पर करेंगे, तो भगवान कृपा करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:20 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3184 मैं 15 वर्ष का हूँ। मेरे परिवार में सभी मांसाहारी हैं, लेकिन मैं शाकाहारी हूँ। मैं छिपकर त्रिसंध्या करता हूँ और एक महीने से कर रहा हूँ। मैंने इसे कंठस्थ भी कर लिया है। लेकिन मेरा परिवार मेरा साथ नहीं देता। क्या माधव मेरी रक्षा करेंगे?

उत्तर: बिल्कुल। अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए और उनके प्रति समर्पित रहिए। समय के अनुसार त्रिकाल संध्या कीजिए। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दीजिए और उसमें ढिलाई मत कीजिए। माधव की कृपा निश्चित रूप से आपके साथ रहेगी, और माधव आपका उद्धार भी करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 15:17 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3185 आने वाले प्रलय के समय के लिए, क्या हमें अभी से कम भोजन करना शुरू कर देना चाहिए, या जैसे सामान्य रूप से खाते हैं वैसे ही खाते रहना चाहिए?

उत्तर: नहीं, नहीं। मैं कहता हूँ, इस समय जितना अच्छा भोजन करना चाहें, कीजिए। भविष्य में, तीन-चार वर्ष बाद, स्थिति पूरी तरह बदल जाएगी। तो अभी जो अच्छा भोजन मन करे, वह कीजिए। इसका यह अर्थ नहीं कि हर दिन अच्छा खाइए; वह पचने योग्य भी होना चाहिए। तो अभी अच्छा भोजन कीजिए, क्योंकि बाद में यह नहीं मिलेगा। कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:00 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3186 जब सात दिन और सात रात अंधकार रहेगा, तब क्या भगवान भक्तों को उनके प्राण बचाने के लिए किसी गुप्त स्थान पर ले जाएँगे, या लोग घर पर रहकर अपने प्राण बचा सकते हैं?

उत्तर: देखिए, इसके लिए हमारी भविष्य मालिका के अनुसार 16 मंडल (क्षेत्र/समूह) बनाए गए हैं। इन 16 मंडलों के भक्तों के रहने के लिए, वे मिलकर समूह या संगठन बनाएँगे और साथ रहेंगे। मेरा मत है कि आप जिस क्षेत्र या राज्य में हैं, वहाँ के मंडल से संपर्क में रहिए। ताकि जब ऐसी आपदा आए, तो भगवान की ओर से पहले से ही कुछ व्यवस्था अवश्य की जाएगी, और भक्त भी साथ रहने की व्यवस्था करेंगे। जय।

► यह उत्तर सुनें · 16:37 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3187 मेरे घर के लोग एक वर्ष से त्रिसंध्या कर रहे हैं, लेकिन उनके हृदय में भगवान के प्रति कोई भक्ति भाव नहीं आ रहा। ऐसा क्यों हो रहा है? कृपया समझाइए।

उत्तर: देखिए, मंदिर एक दिन में नहीं बनता। कोई ढाँचा एक दिन में खड़ा नहीं किया जा सकता। धर्म का मार्ग भी बहुत कठिन है। उन्होंने एक वर्ष त्रिकाल संध्या की है। उनके पूर्व जन्मों के कर्म कट रहे हैं, और जब वे पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे, तब भाव, भक्ति और समर्पण सब आ जाएगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। उन्हें भगवान की कृपा निश्चित रूप से प्राप्त होगी। लेकिन सही समय पर कीजिए। भले ही भाव या भक्ति न हो, मंत्र समय पर जपिए। उसी मंत्र जप से आपको भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 17:32 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3188 मैं एक विद्यार्थी हूँ। मुझे अधिक समय नहीं मिलता, इसलिए मैं प्रतिदिन त्रिसंध्या करता हूँ। मैं भागवत महापुराण का ऑडियो तीन बार सुनता हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर: हाँ, यह बिल्कुल ठीक है। लेकिन भागवत महापुराण का ऑडियो प्रथम स्कंध से द्वादश स्कंध तक क्रमबद्ध रूप से सुनना ही पर्याप्त होगा। और संध्या भी कीजिए; इसमें केवल पाँच से सात मिनट लगते हैं। अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दीजिए। प्रतिदिन अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए। यही आपके लिए मेरा निर्देश है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:22 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3189 मुझे माइग्रेन है, और माइग्रेन के कारण जब भी मैं कोई व्रत रखता हूँ, दर्द बहुत बढ़ जाता है। तो क्या मैं एकादशी का व्रत रख सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, जिन्हें कोई शारीरिक कष्ट, दर्द या छोटी-मोटी बीमारियाँ हैं, उनके लिए एकादशी का व्रत न रखना ही बेहतर है। आप एकादशी किए बिना भी त्रिकाल संध्या करके निश्चित रूप से भगवान को प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन को परम लक्ष्य की ओर ले जा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। यदि आपके शरीर को ऐसा कष्ट होता है, तो उस समय आपको यह नहीं करना चाहिए, अर्थात् एकादशी का व्रत न रखना ही बेहतर होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:56 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3190 क्या हम बिना स्नान किए सुबह की त्रिकाल संध्या कर सकते हैं?

उत्तर: बिल्कुल। मैंने यह त्रिकाल संध्या सभी लोगों के लिए बहुत सरल बनाई है। बिस्तर छोड़ने के बाद, आप माँ श्री गंगा का नाम तीन बार लेकर और अपने सिर तथा कानों का स्पर्श करके मानसिक रूप से गंगा-स्नान कर सकते हैं। आप बिना स्नान किए बैठकर मंत्र जप कर सकते हैं और आपको पूरा लाभ मिलेगा। यात्रा के दौरान या स्कूल-कॉलेज में भी आप पाँच-छह मिनट का अवकाश लेकर यह कर सकते हैं। उससे भी आपको पूरा लाभ मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 20:01 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3191 हम आपसे यह पूछना चाहते हैं कि कभी-कभी हमारी सुबह की त्रिसंध्या छूट जाती है। हम जानबूझकर ऐसा नहीं करते, बस कभी-कभी हो जाता है। आपने कहा था कि तीन वर्ष तक त्रिसंध्या करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

उत्तर: बिल्कुल, यह सही है। कोशिश कीजिए कि सही समय पर करें। अगर न हो पाए, तो भगवान माधव से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, मुझे सही समय पर त्रिकाल संध्या करने की शक्ति दीजिए।'

► यह उत्तर सुनें · 20:43 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3192 मैंने त्रिसंध्या के बारे में तीन-चार साल पहले सुना था, लेकिन शुरू 2026 में किया। इसे करते हुए, 2025 में मुझे नौकरी के लिए गुड़गांव जाना पड़ा। फिर नवंबर 2025 के अंत में, ऑफिस में काम का बोझ ज़्यादा होने की वजह से मेरा अभ्यास रुक गया। अब मुझे अचानक फिर से शुरू करने का मन कर रहा है। तो अगर मैं अब इसे दोबारा शुरू करूं, तो क्या कर सकता हूं?

उत्तर: आप बिल्कुल कर सकते हैं। देखिए, जैसे व्यक्ति अपने जीवन और परिवार के लिए भोजन करता है और नौकरी करता है, वैसे ही त्रिकाल संध्या हमारे शरीर के लिए एक अनमोल तत्व है। त्रिकाल संध्या के माध्यम से व्यक्ति के सारे मल-दोष दूर हो जाते हैं। आने वाले समय में त्रिकाल संध्या मानवता की सबसे बड़ी, अनमोल संपत्ति बन जाएगी। इसलिए यह सबके लिए आवश्यक है। अगर हम त्रिकाल संध्या नहीं करेंगे, तो सत्य युग तक कैसे पहुंचेंगे? अगर हम अभी से सत्य युग के सिद्धांतों का पालन नहीं करेंगे, तो युग तो बदल जाएगा, लेकिन अगर हम नहीं बदले तो हम जा नहीं पाएंगे। इसलिए अपने जीवन की रक्षा के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए और अपनी नौकरी भी कीजिए। कुल मिलाकर सिर्फ 15 मिनट लगते हैं, हर बार पांच मिनट। कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 21:11 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3193 क्या हमें दूध छोड़ देना चाहिए? क्योंकि कलियुग में गायों को इंजेक्शन दिए जाते हैं और उनसे ज़्यादा दूध निकालने के लिए उन्हें कष्ट दिया जाता है।

उत्तर: देखिए, हमारे शास्त्र दूध छोड़ने के लिए नहीं कहते। हमारी सनातन परंपरा में गौ माता को माता माना जाता है। हां, आजकल ऐसी हेराफेरी होती है, जो नहीं होनी चाहिए। लेकिन क्या किया जा सकता है? अगर शाकाहारी लोग दूध नहीं पिएंगे, तो जीवित रहना मुश्किल हो जाएगा। कुछ लोगों का शरीर कमज़ोर होता है, और उनके लिए यह आवश्यक है। तो मेरी राय में, हम इसे पीना बंद नहीं कर सकते। लेकिन भगवान से प्रार्थना कीजिए कि ऐसा न हो; भविष्य में एक बड़ा परिवर्तन आएगा। गौ माता हमारी माता है। दूध पीना बुरी बात नहीं है; यह अच्छी बात है। आप दूध पी सकते हैं। जो लोग गायों के साथ ये सब करते हैं, भगवान उन्हें उनके कर्म के अनुसार ज़रूर दंड देंगे। यह जगन्नाथ का समय है। भविष्य में गौ माता की बहुत रक्षा होगी। आज मनुष्य गायों और अन्य पशुओं को मार रहा है, और उसे इसका फल भुगतना पड़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:56 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3194 मैं सुबह 5:00 बजे उठता हूं और सूर्य देव को जल अर्पित करता हूं। लेकिन उस समय सूर्य देव की जगह चंद्रमा दिखाई देता है। तो मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, आपको सूर्योदय से आधा घंटा पहले सूर्य देव को अर्घ्य (जल अर्पण) देना चाहिए। भले ही सूर्य देव दिखाई न दें, आकाश में लाल रंग दिखाई देगा। इसलिए आपको उसी समय अर्घ्य देना चाहिए। सूर्योदय से आधा घंटा पहले और सूर्यास्त के आधा घंटा बाद अर्पित कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:16 · 30 मार्च 2026

प्रश्न 3195 मेरे घर में मैं अकेली हूं जो भगवान में विश्वास करती है और त्रिसंध्या करती है। मैं चाहती हूं कि मेरा पांच साल का बेटा भी इसी मार्ग पर चले और त्रिसंध्या करे। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: बिल्कुल, मैं भी भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आपका बेटा त्रिकाल संध्या अपनाए। वह छोटा बच्चा है, तो अगर वह न कर पाए, तो उसे पढ़कर सुनाइए। माता होने के नाते यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि त्रिकाल संध्या के समय उसे पास बिठाएं और उससे कहें, 'बेटा, यह सुनो।' उससे भी उसे लाभ मिलेगा। सुनते-सुनते वह भी बोलने लगेगा। बहुत छोटे-छोटे बच्चे, दो-तीन साल के, भी त्रिकाल संध्या करते हैं। महाराष्ट्र में एक बच्ची है जिसने मेरे सामने छह पन्नों का नारायण कवच संस्कृत में सुनाया। तो उसे वह उदाहरण दिखाइए। मैं उसका वीडियो साझा करूंगा। दिखाइए कि छोटे बच्चे कैसे करते हैं, इसका उदाहरण। वे बच्चे दिव्य हो गए हैं। और कल जो भी हो, विनाश भी हो, भगवान उनकी रक्षा करेंगे क्योंकि वे नारायण कवच का पाठ करते हैं। तो अपने बेटे को सुनाइए और उसे उदाहरण दिखाइए कि दूसरे छोटे बच्चे कैसे त्रिकाल संध्या करते हैं। उससे कहिए, 'इससे हम मरेंगे नहीं, हमारी पढ़ाई अच्छी होगी, हमें हमारे सभी ग्रहों का आशीर्वाद मिलेगा, हम सफल मनुष्य बनेंगे, और अगले जन्म में भी हम भगवान को प्राप्त कर सकते हैं।' आप सभी का धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 24:52 · 30 मार्च 2026

सत्र 182 · प्रश्न 3196–3207

L198: 30 मार्च 2026 - जगन्नाथ मंदिर ध्वज पर फिर चील का बैठना - अशुभ संकेत? | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 31 मार्च 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3196 पंजाब के नवादा से प्रीत का प्रश्न। वे कहती हैं कि उनकी ढाई साल से कम उम्र की बेटी ने कुछ ही दिनों में त्रिसंध्या याद कर ली है। वे चाहती हैं कि उनकी बेटी इसे समय पर करे और कभी-कभी इसके लिए उसे डांट भी देती हैं। क्या उसे डांटना पाप या गलती है? क्या उसे डांटना नहीं चाहिए? दूसरा, आप अग्निहोत्र की बात करते हैं। यह यज्ञ कैसे करना चाहिए?

उत्तर: जय जगन्नाथ। मैं आपकी बेटी को आशीर्वाद देता हूं। लोगों को वर्षों बाद भी त्रिकाल संध्या याद करना कठिन होता है, जबकि उस पवित्र बेटी ने कम समय में ही कर लिया। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब पृथ्वी पर शक्तिशाली आत्माएं जन्म ले रही हैं जो धर्म की स्थापना और रक्षा के लिए कार्य करेंगी। अगर आपकी बेटी त्रिकाल संध्या करती है, तो उस पर भगवान विष्णु की कृपा होगी। उसे इसके लिए डांटना नहीं चाहिए। फिर भी, मेरी सलाह है कि वह अपना काम भी करे, अपना भोजन करे, पढ़ाई करे, अपने कर्तव्य (कर्म) निभाए, और समय पर त्रिकाल संध्या करे। भविष्य में त्रिकाल संध्या के बिना मानव सभ्यता का बचे रहना बहुत कठिन होगा। जब बीमारियां फैलेंगी, तो लोग 24 घंटे, दिन-रात बैठकर त्रिकाल संध्या करेंगे, क्योंकि रोग के समय त्रिकाल संध्या ही जगत जननी की ओर से रक्षा का एकमात्र साधन है। तो अगर वह करती है, तो मैं उसकी सराहना करता हूं। रही बात अग्निहोत्री यज्ञ की, जिसकी आप इच्छा रखती हैं, उसके लिए हमारे पास एक पीडीएफ है, और हम भक्तों को सिखाने के लिए कार्यशालाएं भी करते हैं। जब हमारा सत्र आयोजित होगा, तो आपको सूचित किया जाएगा, और आप आकर सीख सकती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 10:09 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3197 हरियाणा से प्रियंका सिंह पूछती हैं: 'आदरणीय पंडित जी, मेरा परिवार चाहता है कि मैं एलएलबी की पढ़ाई करूं और मुझे हॉस्टल भेजना चाहता है। मैं जाना नहीं चाहती क्योंकि मुझे डर है कि हॉस्टल में रहने से मेरी त्रिकाल संध्या, भागवत महापुराण का पाठ और भगवान के नाम का जप छूट न जाए। क्या करना सही होगा? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।'

उत्तर: देखिए, हम त्रिकाल संध्या कहीं भी कर सकते हैं, चाहे स्कूल हो, कॉलेज हो, या हॉस्टल। और हॉस्टल में रहकर आप दस और लोगों को भी बदल सकती हैं और उनका उत्थान कर सकती हैं। हमारे माता-पिता जो चाहते हैं, हमें उसका पालन करना चाहिए। माता पार्वती देवी हैं, और पिता देव महेश्वर हैं। हमारे माता-पिता पूजनीय हैं। उनकी बात मानना हमारे लिए अच्छा है। इस पर मैं इससे अधिक टिप्पणी नहीं कर सकता, इसलिए अपने माता-पिता की इच्छा का पालन कीजिए। और वहां आपको अपने मित्रों और सहपाठियों को भी इस पवित्र मार्ग पर चलने की प्रेरणा देनी चाहिए। हम केवल अपने लिए नहीं आए हैं; हम संसार का उत्थान करने आए हैं। भगवान माधव आपको आशीर्वाद दें। प्रसन्न रहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 12:39 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3198 गुजरात से रमा रेवरी दो प्रश्न पूछती हैं। पहला, पितरों को जल अर्पण किस मंत्र से करना चाहिए? दूसरा, मार्च में पुरी के जगन्नाथ धाम से 10 से अधिक संकेत मिले हैं। क्या कुछ बड़ा होने वाला है?

उत्तर: पहले मैं पितृ तर्पण के बारे में बताऊंगा। सुबह और शाम, शुद्ध मन से, अगर समय हो तो स्नान के बाद कीजिए। अगर समय न हो, तो मन ही मन तीन बार मां गंगा का नाम जपिए, अपने सिर और कानों को स्पर्श कीजिए, और अपने पास एक छोटा पात्र रखिए। उसमें कोई भी जल भर लीजिए। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय, सूर्य की ओर मुख करके दक्षिण दिशा में। हाथ में जल लेकर अंगूठे की ओर से उसे बहने दीजिए। यह जल तीन बार अपने पितरों के लिए और तीन बार अपने परिवार के बड़ों के नाम से अर्पित कीजिए। इसे पितृ तर्पण कहते हैं, और इसे दिन में दो बार करना चाहिए। आपके दूसरे प्रश्न के बारे में, देखिए, यह एक ही दिन में नहीं होगा, लेकिन जिन देशों में बड़ी घटनाएं होनी हैं, वहां वे पहले से ही हो रही हैं। अमेरिका में रोग फैल रहा है। जगन्नाथ मंदिर में मिला संकेत इसका अर्थ नहीं कि आपदा केवल भारत पर आएगी; यह पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। और मैं यह स्पष्ट रूप से कहता हूं: जिन देशों में अधिक पाप, अहंकार और घमंड है, उनका घमंड भगवान चूर-चूर कर देंगे। भगवान कल्कि, भगवान जगन्नाथ, उनका विनाश करेंगे जो दूसरों को हानि पहुंचाते हैं। तो विश्व में बड़ी घटनाएं अवश्य होंगी, लेकिन भारत के लिए यह राहत का समय है। लोगों को त्रिकाल संध्या और भगवान की भक्ति की ओर मुड़ना चाहिए। धीरे-धीरे भारत के लिए भी वह समय आएगा, लेकिन अन्य देशों को अनेक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 14:05 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3199 नेपाल से गुलशन सिंह पूछते हैं: नेपाल का भविष्य क्या है? क्या युवा नेतृत्व देश को सही दिशा में ले जा पाएगा? बालेंद्र शाह जी मात्र 35 वर्ष की आयु में नेपाल के सबसे युवा प्रधानमंत्री बने हैं। भविष्य में भारत और चीन के साथ नेपाल के संबंध कैसे रहेंगे?

उत्तर: देखिए, नेपाल धर्म की भूमि है, हिमालय क्षेत्र में स्थित है, और सदा से ऐसा ही रहा है। नेपाल और जगन्नाथ मंदिर के बीच गहरा संबंध है। ओडिशा में हमारी परंपरा, जगन्नाथ परंपरा, भी नेपाल से जुड़ी है। वर्तमान युवा नेतृत्व निश्चित रूप से अखंड नेपाल की पवित्रता और अखंडता को बनाए रखने का प्रयास करेगा। फिर भी, मैं सब कुछ प्रकट नहीं करूंगा, लेकिन इतना कहूंगा: एक समय आएगा जब भारत और नेपाल के संबंध बदलेंगे। यह बंधन और मजबूत होगा, जैसे माता जनक नंदिनी और भगवान राम का विवाह हुआ था। इस समय ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति के कारण पूरे विश्व में अराजकता है। यह स्थिति केवल नेपाल की नहीं है; यह कई देशों में है और अन्य देशों में भी होगी। इसलिए इन बातों पर ध्यान मत दीजिए। त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, और माधव का नाम जपिए। पूरा विश्व बदलेगा, केवल नेपाल नहीं। भक्त बच जाएंगे। सत्युग 2032 में आएगा। तो समय कम है। मुझे नहीं पता कौन शासन करेगा और कौन नहीं, लेकिन सत्युग निश्चित रूप से आएगा। यह मेरा विश्वास है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 16:44 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3200 एक माता पूछती हैं: 'जय श्री माधव। पूज्य पिताजी, मेरा प्रणाम। मैं पांच वर्षों से इस आध्यात्मिक मार्ग से जुड़ी हूं, लेकिन मुझे अच्छी नौकरी नहीं मिल पा रही। जहां भी आवेदन करती हूं, अस्वीकृति मिलती है। मैं बहुत व्यथित हूं। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।'

उत्तर: ठीक है, माता। एक महीने तक, हर दिन सोने से पहले माधव का नाम 108 बार जपिए। और भगवान विष्णु तथा महालक्ष्मी से नौकरी के लिए प्रार्थना कीजिए। तीन महीने तक ऐसा करती रहिए, और मुझे विश्वास है कि उतने समय में आपको नौकरी मिल जाएगी। लेकिन आपको प्रयास और परिश्रम भी करते रहना होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 18:49 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3201 मध्य प्रदेश से गौरव प्रजापति पूछते हैं: 'मैंने सुना है कि जो भगवान की शरण में जाते हैं, उन पर माया का प्रभाव नहीं पड़ता। फिर जय और विजय माया से मोहित होकर सनक ऋषियों का अपमान कैसे कर बैठे? वे वैकुंठ से क्यों गिरे?'

उत्तर: देखिए, भगवान की लीला को कोई नहीं समझा सकता। यदि जय और विजय को शाप न मिलता, तो असुर साम्राज्य का नाश कैसे होता? उन्होंने असुर कुल में जन्म लिया, और जन्म लेने के बाद उन्होंने सभी असुरों को एकत्र किया, जिससे उन सबकी सामूहिक मृत्यु हुई और असुर सभ्यता का विनाश हुआ। यदि वे सभी असुरों को एकजुट न करते, तो भगवान के लिए धर्म की स्थापना इतनी सरल न होती। ब्रह्म माया हो या भौतिक माया—भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। जय और विजय का कार्य केवल ऋषियों को रोकना था, परंतु ऋषियों ने जो शाप दिया, वह भी भगवान के ही नियंत्रण में था। किसी को केवल रोक देने भर से इतना कठोर शाप नहीं मिलता। परंतु यदि वे मृत्युलोक में न उतरते, तो असुरों का नाश कैसे होता? इसलिए सभी असुरों के विनाश के लिए भगवान ने अपने ही जनों को असुर बनाकर भेजा। धर्म की यह स्थापना हर युग में होती है। यह भगवान की इच्छा है। जो भगवान के शरणागत हैं, उनके लिए कभी-कभी अमृत भी कड़वा लग सकता है। जो भगवान के निकट रहते हैं, उनमें भी अहंकार और गर्व आ सकता है कि 'हम भगवान के साथ हैं।' मनुष्य अपने कर्म का फल स्वयं भोगता है। इससे भगवान का विधान रुकता नहीं। यदि हम भगवान के साथ बैठे हैं, तो दूसरों को भी उनका उचित सम्मान देना चाहिए। विनम्रता अनिवार्य है; अहंकार नहीं होना चाहिए। तो यह जीवों का कर्म था, जय और विजय का कर्म था। इसमें भगवान का क्या दोष? जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 19:38 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3202 असम से सुप्रतिम गोस्वामी पूछते हैं: 'गुरुदेव, क्या असम राज्य 16 मंडलों में सम्मिलित होगा या नहीं?'

उत्तर: हाँ, 16 मंडलों में असम का कामाख्या देवी मंडल भी एक है। वह सम्मिलित है। वह मंडल इस समय 16 मंडलों के भीतर सक्रिय है और भविष्य में भी कार्य करता रहेगा। शास्त्रों के अनुसार, असम का माँ कामाख्या देवी मंडल धर्म की स्थापना के लिए कार्य करेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:05 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3203 जयपुर से करिश्मा शर्मा पूछती हैं: 'जब हम त्रिसंध्या करते हैं और भगवान का नाम जपते हैं, तो मेरा शरीर हिलने लगता है। मुझे अपनी तीसरी आँख पर खिंचाव महसूस होता है, मेरे पैर और कमर सुन्न हो जाते हैं, और मैं आँखें नहीं खोल पाती। मुझे क्या करना चाहिए?'

उत्तर: यह तो बहुत ही अच्छा संकेत है। दैवीय प्रभाव विद्यमान है। माधव से प्रार्थना कीजिए कि 'प्रभु, मुझे त्रिकाल संध्या करने दीजिए। यदि प्रभाव बहुत अधिक बढ़ जाएगा, तो मैं कैसे सँभालूँगी?' यह देवताओं के प्रभाव से होता है, जिससे शरीर में कंपन होता है। त्रिकाल संध्या के समय इस दैवीय प्रभाव के कारण आँखों से आँसू बहना, बार-बार जँभाई आना और शरीर के किसी भाग में तीव्र अनुभूति होना सामान्य बात है। इसलिए चिंता मत कीजिए। करती रहिए; यह आनंद की अवस्था है। यदि ऐसा न हो, तो माधव से कह दीजिए कि कोई बात नहीं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 22:36 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3204 विराट का यह प्रश्न उन बहुत से लोगों का साझा प्रश्न है जो नौकरी या पढ़ाई करते हैं। वे कॉलेज के विद्यार्थी हैं जो प्रातःकाल और संध्या की त्रिसंध्या कर पाते हैं, परंतु दोपहर वाली छूट जाती है क्योंकि वे उस समय विद्यालय में होते हैं। दूसरी बात, वे माता-पिता की अनुमति के बिना हवन नहीं कर सकते। वे ये दोनों साधनाएँ सही ढंग से कैसे करें?

उत्तर: बेटा, तुम त्रिकाल संध्या कर रहे हो, और इसके लिए भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें। मैं यह कहूँगा: अभी हवन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो लोग मध्याह्न की संध्या नहीं कर सकते, उनके लिए मैं एक श्लोक दूँगा। इस श्लोक को लिख/रिकॉर्ड कर लीजिए। यदि पूरी त्रिकाल संध्या संभव न हो, तो 10 बार 'दुर्गा माधव' नाम का जप कीजिए। फिर 108 बार 'माधव' नाम का जप कीजिए, जिसमें लगभग एक मिनट लगेगा। और मैं एक श्लोक सुनाऊँगा। इस श्लोक का पाठ करना दस अवतारों के श्लोक के समान होगा। [वे श्लोक सुनाते हैं: 'वेदं धारयते, जगन्निवते, भूगोलमुद्विभ्रते, दैत्यं दारयते, बलिं छलयते, क्षत्रक्षयं कुर्वते, पौलस्त्यं जयते, हलं कलयते, कारुण्यमातन्वते, म्लेच्छान् मूर्छयते, दशकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः... श्री राधिका वल्लभाय नमः... श्री कल्कि देवाय नमः।'] बस इस मंत्र का जप, जिसे मैंने धीरे-धीरे गाया, पूरा करने में केवल एक-दो मिनट ही लगेंगे। सभी को जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 23:37 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3205 गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में भगवान विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण को आठवाँ अवतार बताया गया है। परंतु बहुत से लोग भगवान कृष्ण को स्वयं भगवान विष्णु मानते हैं। कौन सा सही है? कृपया विस्तार से मार्गदर्शन कीजिए, पूज्य पिताजी।

उत्तर: भगवान कृष्ण ही भगवान विष्णु हैं। वे आठवें अवतार नहीं हैं; वे सभी अवतारों के स्रोत हैं। प्रत्येक अवतार की उत्पत्ति भगवान कृष्ण से ही होती है। भगवान कृष्ण महाविष्णु हैं। भौतिक स्तर पर, या हमारे युग के अनुसार, यदि शास्त्रों में कहीं लिखा है कि वे आठवें अवतार हैं—यद्यपि मेरे सामने ऐसा मत नहीं आया है—तो वह भी सत्य हो सकता है। परंतु भगवान कृष्ण सभी अवतारों के मूल स्रोत हैं। वे महाविष्णु हैं, और सभी अवतार उन्हीं से उत्पन्न होते हैं और उन्हीं में विलीन हो जाते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 25:51 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3206 महाराष्ट्र से ऋषिकेश जी पूछते हैं: 'पूज्य पिताजी, भगवान का नाम निरंतर कैसे जपा जाए? कुछ देर बाद मेरा मन भटक जाता है, और मैं निरंतर जप नहीं कर पाता। मैं अपने ही विचारों में खो जाता हूँ।'

उत्तर: हर रात सोने से पहले 108 बार माधव का नाम जपिए और प्रभु से कहिए, 'प्रभु, मेरे मन को स्थिर कीजिए। मैं आपकी शरण में हूँ।' और आप देखिएगा, ऐसा अवश्य होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 26:54 · 31 मार्च 2026

प्रश्न 3207 इस व्यक्ति ने अपना नाम नहीं बताया है। वे पूछते हैं: 'पूज्य पिताजी, मैं कुछ गलत कार्यों को छोड़ नहीं पा रहा हूँ। मैं बार-बार वही गलतियाँ कर बैठता हूँ, जबकि मैं आध्यात्मिक मार्ग पर चल रहा हूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।'

उत्तर: देखिए, मार्गदर्शन यही है: इस समय सभी को समय पर त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। मैं 40 वर्षों से उपदेश दे रहा हूँ, और अब तक बहुत ही कम परिवर्तन हुआ है। लोगों को अब अपनी मनमानी छोड़ देनी चाहिए। उन्हें त्रिकाल संध्या करनी चाहिए और भागवत पढ़ना चाहिए। आने वाला समय हमारे लिए चुनौती होगा; परीक्षा का समय आएगा। उस परीक्षा से पहले स्वयं को तैयार कीजिए, अपने उद्धार के लिए और संसार के उद्धार के लिए कार्य कीजिए। सभी को धन्यवाद। आज की चर्चा हम यहीं समाप्त करते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 27:28 · 31 मार्च 2026

सत्र 183 · प्रश्न 3208–3224

L199: परमाणु महाविनाश से मानव का रक्षा सूत्र क्या है? | Bhavishya Malika | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 3 अप्रैल 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3208 मानवता को परमाणु विनाश से बचाने का मार्ग क्या है?

उत्तर: मैंने सभी भविष्य शास्त्र और अठारह पुराण पढ़े हैं, और उनमें मैंने एक सत्य देखा है: मानवता के लिए त्रिकाल संध्या (दिन में तीन बार की जाने वाली प्रार्थना/साधना) सबसे महत्वपूर्ण परंपरा है। यदि तीसरा विश्व युद्ध होता है, तो वह पिछले युद्धों जैसा नहीं होगा। तीसरे विश्व युद्ध में परमाणु हथियारों का प्रयोग होगा, क्योंकि अब वही शेष है। परमाणु हथियारों से मानवता की रक्षा के लिए त्रिकाल संध्या सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। ऐसा इसलिए क्योंकि हम यंत्र युग में हैं, और यंत्र का प्रभाव परमाणु शक्ति के रूप में प्रकट होता है। परंतु मंत्र शक्ति ही यंत्र शक्ति की इस विपदा से मानव सभ्यता को बचा सकती है। इसीलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि यदि यह मानव सभ्यता भगवान महाविष्णु की शरण ले ले और उद्धार के लिए त्रिकाल संध्या के सिद्धांत का पालन करे, तो चाहे कितनी भी बड़ी आपदा हो, कितनी भी बड़ी समस्या हो, या परमाणु हमला कितना भी भीषण क्यों न हो, त्रिकाल संध्या से मानवता की रक्षा हो सकती है। शास्त्रों में लिखा है कि जब भक्त भगवान का नाम जपते हैं, तो कोई गोली या मिसाइल उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। त्रिकाल संध्या वही 'नाम' (साधना) है।

► यह उत्तर सुनें · 01:16 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3209 आप पूछ सकते हैं कि यदि परमाणु हमला होता है, तो क्या त्रिकाल संध्या सचमुच हमारी रक्षा कर सकती है?

उत्तर: मेरे विचार से, आज तक परमाणु हथियारों से सुरक्षा के लिए कोई तत्व आविष्कृत नहीं हुआ है। मनुष्य ने परमाणु बम तो बना लिया, परंतु उससे बचाव का सूत्र नहीं बना सका। इसीलिए शास्त्र कहते हैं कि जो भगवान विष्णु के इस परम और परम पावन मार्ग को अपनाएँगे, वे परमाणु प्रलय जैसे महाविनाश से भी बच जाएँगे। त्रिकाल संध्या वही एक परम तत्व है जिसमें मानवता की रक्षा करने की सामर्थ्य है, और उससे बड़ा कोई मंत्र नहीं है। हम मंत्र युग की ओर बढ़ रहे हैं, और त्रिकाल संध्या उस युग का परम मंत्र है। इसलिए मैं समस्त मानव सभ्यता और सभी भक्तों से कहना चाहता हूँ कि प्रतिदिन त्रिकाल संध्या कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 03:48 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3210 भविष्य मालिका में लिखी भविष्यवाणियों में आधुनिक युग के ईंधन, पेट्रोल और गैस के विषय में क्या उल्लेख है? क्या कमी या बहुत अधिक कीमतों का दौर आने वाला है? और आम जनता पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: देखिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कलियुग के इस दौर को यंत्र युग कहा जाता है, यानी मशीनों का युग। सभी मशीनें बिजली, डीजल, पेट्रोल और अन्य ईंधनों से चलती हैं। परंतु आने वाले मंत्र युग में इनकी आवश्यकता नहीं होगी। सत्य, त्रेता और द्वापर युग में पेट्रोल या डीजल नहीं था। भविष्य में पेट्रोल, डीजल और मिट्टी के तेल जैसी चीज़ों की शायद आवश्यकता ही नहीं होगी, और इनकी उपलब्धता न्यूनतम रहेगी। सरकार इन्हें अपने उपयोग के लिए, युद्ध के लिए और आपात स्थितियों के लिए सुरक्षित रखेगी। मैंने शास्त्रों में पढ़ा है कि एक समय आएगा जब बड़े-बड़े वाहन, कारें, ट्रक और बसें सब सड़कों पर खड़ी रह जाएँगी। ईंधन उपलब्ध नहीं होगा। हमें अभी इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है; यह समय आने पर होगा। जब भगवान एक तत्व का नाश करते हैं, तो दूसरा तत्व रच देते हैं। तो यह हमारी चिंता का विषय नहीं है; यह भगवान की योजना है। यदि पेट्रोल और डीजल से मिलने वाली शक्ति चली जाएगी, तो कोई दूसरी शक्ति प्रकट होगी जो मानवता के उपयोग के लिए सरल, सुंदर और बेहतर उपाय होगी।

► यह उत्तर सुनें · 09:02 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3211 पंडित जी, सूर्य को अर्घ्य (जल अर्पण) देने से पहले दो बार स्नान करना आवश्यक है क्या? और अर्घ्य देने के क्या नियम हैं? कृपया बताइए।

उत्तर: देखिए, जो लोग सूर्य तर्पण (सूर्य को अर्पण) या पितरों को अर्घ्य देते हैं, उनके लिए स्नान आवश्यक है। यदि उस समय आप स्नान नहीं कर पा रहे हैं, परंतु सुबह स्नान कर चुके हैं, तो आप अपने पास गंगाजल की एक छोटी शीशी रख सकते हैं। उस गंगाजल को आप स्वयं पर छिड़क सकते हैं और फिर एक छोटे पात्र से सूर्यदेव को जल अर्पित कर सकते हैं। पितरों को भी आप अर्पित कर सकते हैं। सूर्यदेव को अर्पित किए जाने वाले जल के दो श्लोक हैं। प्रातःकाल का श्लोक है: 'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते, अनुकम्पया मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरम्।' सूर्यदेव को अर्घ्य देने से व्यक्ति की आयु बढ़ती है, नवग्रहों की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होता है, ग्रह दोष नष्ट होते हैं, और व्यक्ति ज्ञानी, बलवान तथा रोगमुक्त होता है। पितरों के लिए अर्घ्य दक्षिण दिशा की ओर मुख करके देना चाहिए। आपको अपनी अंजलि में जल लेकर दक्षिण दिशा की ओर छोड़ना चाहिए, जल अंगूठे के पार्श्व भाग से बहने देना चाहिए। पितरों के लिए यह तीन बार करना चाहिए। सूर्यदेव के लिए यह सात बार करना चाहिए। संध्या के समय, सूर्यास्त के समय सूर्यदेव को अर्घ्य देने का श्लोक है: 'संध्यां कश्यपमात्मजं सर्व पाप प्रणाशनम्, गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दिवाकरम्।' इस मंत्र से संध्या के समय अपनी हथेलियों से सूर्यदेव को सात बार जल अर्पित करें। पितरों के लिए दक्षिण दिशा की ओर मुख करके अर्पित करें। पितरों को जल अर्पित करते समय आपको 'ॐ श्री पितृ देवाय नमः' तीन बार बोलना चाहिए। यदि आप अपने पिता, माता या अन्य संबंधियों को अर्पित करना चाहते हैं, तो उनका नाम लेकर प्रत्येक के लिए तीन बार अर्पित करना चाहिए।

► यह उत्तर सुनें · 11:23 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3212 मैं त्रिसंध्या कर रहा हूँ और भागवत पढ़ रहा हूँ, फिर भी मुझे लगता है कि भगवान विष्णु में मेरी श्रद्धा कमजोर है। मैं चाहता हूँ कि यह श्रद्धा बढ़े। उनकी कृपा पाने के लिए और अपनी श्रद्धा बढ़ाने के लिए मैं और क्या कर सकता हूँ?

उत्तर: मेरा विचार है, यदि आपको लगता है कि भगवान के प्रति आपकी भक्ति में कमी है, तो यह बहुत अच्छा है कि आप त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। प्रतिदिन सोने से पहले श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध की गोप लीला को संपूर्ण रूप से बार-बार पढ़िए। इससे आपको भगवान विष्णु और कृष्ण के प्रति भक्ति प्राप्त होगी।

► यह उत्तर सुनें · 14:11 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3213 मैं तीनों समय संध्या करता हूँ और सभी अर्पण भी करता हूँ। मेरी नौकरी चली गई है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, नौकरी जाने का कारण मंगल दोष (मंगल से संबंधित ज्योतिषीय दोष) हो सकता है। इसके लिए आप एक काम कीजिए। तीनों संध्या कालों में 'माधव' नाम का 108 से 216 बार जप कीजिए। रात में सोने से पहले प्रतिदिन एकादश स्कंध का बारहवाँ अध्याय कम से कम तीन महीने तक पढ़िए। इससे आपको शुभता प्राप्त होगी और आपको नौकरी का अवसर मिलेगा।

► यह उत्तर सुनें · 15:12 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3214 मेरा एक छोटा-सा, भोला-सा प्रश्न है। क्या फरवरी 2027 में बोर्ड परीक्षाएँ होने की संभावना है?

उत्तर: बोर्ड परीक्षाएँ 2032-34 तक चलती रहेंगी, और उसके बाद भी शायद न रुकें। शिक्षा कभी नहीं रुकेगी। युद्ध अलग बात है, परंतु शिक्षा कभी नहीं रुकेगी। तो परीक्षाएँ 2027 में होंगी; यह कोई नई बात नहीं है। वे '27, '26, '28, '29, '30, '31, '32, '33, '34 में और संभवतः उसके बाद भी होंगी। हमें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। वे अवश्य होंगी क्योंकि शिक्षा व्यवस्था इस सभ्यता के अंत तक चलती रहेगी। इसलिए इसके बारे में मत सोचिए।

► यह उत्तर सुनें · 15:58 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3215 त्रिकाल संध्या करते हुए लहसुन-प्याज खाना चाहिए या नहीं, या इन्हें छोड़ देना चाहिए?

उत्तर: देखिए, लहसुन और प्याज राजसिक भोजन हैं। यह भोजन व्यक्ति को उत्तेजित करता है, अर्थात शरीर में गर्मी पैदा करता है। यदि आप इसे छोड़ सकते हैं, तो अच्छा है। परंतु 2032 के बाद, मेरी राय में, लोग इसे वैसे भी पूरी तरह छोड़ देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 17:07 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3216 मैं अपने क्रोध पर कैसे नियंत्रण पाऊँ? स्वयं को शांत कैसे करूँ? और मैं माधव नाम का निरंतर जप नहीं कर पाता। निरंतर जप कैसे करूँ? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, क्रोध सबसे बड़ा पाप है। जब क्रोध आपके शरीर में 24 मिनट तक रहता है, तो वह पाप में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि यदि आपको क्रोध आए, तो दो-तीन मिनट के भीतर उस क्रोध को समाप्त कर देना चाहिए। यदि क्रोध आपके शरीर में ठहर जाए, तो वह न केवल आपके शरीर के अंगों को नष्ट करता है, बल्कि पाप में भी बदल जाता है। यमपुरी (मृत्यु के देवता के लोक) में 22 नरकों का वर्णन है, और क्रोध करने वालों के लिए एक नरक है। इसलिए कभी क्रोध मत कीजिए। क्रोध व्यक्ति को नरक की ओर ले जाता है। इसलिए ऐसा मत कीजिए। माधव नाम का जप कीजिए। रात में सोने से पहले माधव नाम का 280 बार जप कीजिए। इससे परिवर्तन आएगा। त्रिकाल संध्या समय पर कीजिए। भागवत पढ़िए। समय के साथ क्रोध भी समाप्त हो जाएगा, आपकी इंद्रियाँ वश में होंगी, और इंद्रियों को वश में करके आप अध्यात्म की ओर प्रगति कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 17:41 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3217 पंडित जी, मैं बहुत बीमार हूँ। दवा भी असर नहीं कर रही। मैं संध्या भी करता हूँ। मैं कॉलेज का विद्यार्थी हूँ। मेरी पढ़ाई बर्बाद हो गई है और मैं कॉलेज नहीं जा पा रहा। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: मैं यह कहूँगा: अपनी बीमारी के कारण यदि आप पढ़ नहीं पा रहे हैं, तो आपको त्रिकाल संध्या समय पर करनी चाहिए। साथ ही, प्रतिदिन सोने से पहले आपको दशावतार (दस अवतारों) के सभी श्लोक एक बार पढ़ने चाहिए। सुबह उठने के बाद, त्रिकाल संध्या के अतिरिक्त, उन्हें एक बार और पढ़िए। और दोपहर में 'माधव' नाम का 108 बार अतिरिक्त जप कीजिए (त्रिकाल संध्या के 108 बार के ऊपर)। यह तीन महीने तक कीजिए और सीधे भगवान विष्णु से, माधव से प्रार्थना कीजिए, 'हे प्रभु, मेरे पूर्व जन्म के कर्मों के कारण आई इस बीमारी से मेरी रक्षा कीजिए।' यह तीन महीने तक कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 19:03 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3218 दक्षिण भारत में कौन-कौन से मंडल (क्षेत्र/अंचल) हैं? मुझे एक का पता है, रामेश्वर मंडल। क्या इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत में और भी मंडल हैं?

उत्तर: देखिए, हमारे भविष्य मालिका ग्रंथ के अनुसार, 16 मंडल भगवान कल्कि महाप्रभु के कृपापात्र क्षेत्र बनेंगे। दक्षिण दिशा में एक मंडल है जिसे रामेश्वर मंडल कहते हैं। रामेश्वर मंडल में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल सम्मिलित हैं। परंतु भविष्य में एक पद्मनाभ मंडल और एक वेंकटेश मंडल भी बनेगा। ये छोटे मंडल होंगे जो रामेश्वरम मंडल के अधीन कार्य करेंगे। हाँ, अभी भी सभी राज्यों में भक्तजन त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो, तो नीचे विवरण में दिए गए नंबर से आप उनके संपर्क नंबर प्राप्त कर सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 20:19 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3219 मुझे त्रिसंध्या करते हुए एक वर्ष हो गया है, परंतु जब भी मैं आपका कोई नया वीडियो देखता हूँ, मुझे बहुत डर लगता है और नींद नहीं आती। तो मेरा प्रश्न है कि त्रिसंध्या करने, नाम जप करने और भागवत महापुराण पढ़ने के बावजूद यह भय क्यों नहीं जा रहा?

उत्तर: देखिए, भय एक मानसिक विकार है जो इंद्रियों और भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति से उत्पन्न होता है। जिन्हें भौतिक वस्तुओं से लगाव होता है, उन्हें भय लगता है। यदि हम भोजन या काम जैसी भौतिक वस्तुओं की अपनी इच्छाएँ पूरी कर लें, तो शायद हमें भय न लगे, परंतु भौतिक संसार के प्रति आसक्ति ही भय का कारण है। भौतिक संसार के प्रति आकर्षण के कारण व्यक्ति अपने जीवन, परिवार, घर और शरीर की रक्षा के लिए भय महसूस करता है। भौतिक संसार एक ऐसा तत्व है जिसकी हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। जिस भगवान ने हमें जन्म दिया है, वही इसकी चिंता करते हैं। तो यदि आपको भय लगता है, तो मेरा सुझाव है कि आप दशावतार में से नृसिंह अवतार का श्लोक जपें: 'तव कर कमल वरे नखम् अद्भुत शृंगं, दलित हिरण्यकशिपु तनु भृंगं, केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीश हरे।' इस श्लोक को प्रातः और संध्या की त्रिसंध्या में दस-दस बार पढ़िए। मेरे विचार से समस्त भय दूर हो जाएगा। देखिए, मैं इसका प्रचार करता हूँ, और मैं आनंद से सोता हूँ, खाता-पीता हूँ क्योंकि मेरे मन में कोई भौतिक विचार नहीं है। संसार का जो भी हो, मेरी सारी संपत्ति का, मेरे घर का — मुझे कोई चिंता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भौतिक संसार के प्रति मेरा कोई आकर्षण नहीं है। मन भौतिक वस्तुओं से जुड़ा रहता है: परिवार, रिश्तेदार, संपत्ति, शिक्षा। भविष्य के बारे में मत सोचिए। बस अपना कर्म कीजिए, और फल भगवान देते हैं। फल अपने आप आते हैं। जो भौतिक संसार में डूबे हुए हैं, उन्हें भय लगता है। जो भौतिकता से ऊपर हैं, जो दिव्य तत्व में जीते हैं, उन्हें कोई भय नहीं होता। आप त्रिकाल संध्या कर रहे हैं। त्रिकाल संध्या में इंद्रियाँ वश में होती हैं। त्रिकाल संध्या में सभी भय टूट जाते हैं। सभी सांसारिक बंधन कट जाते हैं। तो फिर भय कैसा? समय पर कीजिए और जैसा मैंने बताया, भगवान नृसिंह की स्तुति का पाठ कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 21:30 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3220 मैं 16 वर्ष का विद्यार्थी हूँ। मैं शाकाहारी हूँ, बचपन से सूर्य को अर्घ्य देता आ रहा हूँ, और गौ माता को रोटी भी खिलाता हूँ। आपने कहा था कि त्रिकाल संध्या तीन वर्षों में सिद्ध होती है। उस हिसाब से मेरी 2029 में सिद्ध होगी। कृपया इसे जल्दी सिद्ध करने का उपाय बताइए।

उत्तर: मैं आपको धन्यवाद देता हूँ और कुछ सलाह भी देता हूँ। प्रतिदिन सुबह और शाम अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए। आपकी त्रिकाल संध्या सिद्ध हो जाएगी। माता-पिता को प्रणाम कीजिए और त्रिकाल संध्या भी समय पर कीजिए। झूठ मत बोलिए। अपनी दिनचर्या के अनुसार पढ़ाई कीजिए। माता-पिता के आशीर्वाद से आपकी त्रिकाल संध्या सिद्ध हो सकती है।

► यह उत्तर सुनें · 24:00 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3221 मैं छह महीने से तुलसी माला पहन रहा हूँ। घर पर मैं प्याज-लहसुन डालकर प्रसाद बनाता हूँ। क्या इससे मुझे कोई पाप लगेगा? और मैं इसे पूरी तरह से कब छोड़ सकता हूँ?

उत्तर: यह बिल्कुल ठीक है। त्रिकाल संध्या कीजिए। अभी प्याज-लहसुन खाने पर कोई रोक नहीं है। जब सत्य युग आएगा, तब वैसे भी सब लोग इन्हें छोड़ देंगे। अभी इसे बंद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आपका पूरा परिवार इसे खाता है, तो आप भी उनके साथ खा सकते हैं और बना सकते हैं। इसमें कोई पाप नहीं है।

► यह उत्तर सुनें · 24:55 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3222 मैं जून 2025 से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। आप कहते हैं कि जो त्रिकाल संध्या नहीं करेगा, उसमें से एक भी व्यक्ति नहीं बचेगा। मैं करता हूँ, लेकिन जब मैं करता हूँ, तो भगवान का ध्यान करते समय मेरे मन में घर के कामकाज और दूसरी बातों के विचार आ जाते हैं, जिससे मेरी एकाग्रता टूट जाती है। मैं फिर से ध्यान लगाने की कोशिश करता हूँ, पर क्या इस तरह त्रिकाल संध्या करने पर भी मंत्र काम करेगा?

उत्तर: बिल्कुल काम करेगा। मंत्रों का जाप मनुष्य के शरीर की ग्रंथियों को शुद्ध करता है। त्रिकाल संध्या करते रहिए। माया और इंद्रियों के कारण मन में सामाजिक, सामयिक, पारिवारिक और सांसारिक बातों को लेकर विक्षेप और विचार आते हैं। लेकिन समय के साथ, कुछ दिनों तक त्रिकाल संध्या करने के बाद, यह सब धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। तब आपको भगवान की भक्ति प्राप्त होगी। यदि आप और अधिक भक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, तो सोने से पहले पाँच मिनट श्रीमद्भागवत महापुराण का दशम स्कंध पढ़िए।

► यह उत्तर सुनें · 25:43 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3223 भागवत महापुराण का ध्यान किस प्रकार करना चाहिए? इसकी विधि क्या है? वास्तव में इसे पढ़ना कैसे चाहिए?

उत्तर: भागवत महापुराण की विधि यह है: आप इसे प्रातः 3:45 बजे से रात्रि 12:00 बजे तक कभी भी पढ़ सकते हैं। श्रीमद् भागवत महापुराण पढ़ने के लिए आपको स्नान करना चाहिए, या मानसिक रूप से गंगा स्नान करना चाहिए, और स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। यदि आप फोन, लैपटॉप या टैबलेट से पढ़ रहे हैं, तो मानसिक रूप से गंगा स्नान करके पढ़ सकते हैं। यदि आप पुस्तक से पढ़ रहे हैं, तो आपको हाथ-पैर धोने चाहिए और गंगाजल छिड़कना चाहिए या मानसिक रूप से गंगा स्नान करना चाहिए। विधि यह है कि यदि आप घर में या मंदिर में पढ़ रहे हैं, तो एक अगरबत्ती जलाइए, भगवान विष्णु के नाम पर एक पुष्प अर्पित कीजिए, और 'शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्...' मंत्र का जप करके उनका ध्यान करने के बाद आप भागवत पढ़ सकते हैं। यदि आप घर पर नहीं हैं, बल्कि किसी काम से बाहर हैं और फोन जैसे किसी उपकरण पर पढ़ रहे हैं, तो मानसिक रूप से गंगा स्नान करके पढ़ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 26:53 · 3 अप्रैल 2026

प्रश्न 3224 यह प्रश्न सेना से है। यदि सेना का कोई व्यक्ति युद्ध में लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करता है, और वह भगवान का ध्यान और त्रिसंध्या कर रहा था, तो उसकी क्या गति होगी? क्या वह भगवान की शरण में रहेगा? और क्या सभी को, यहाँ तक कि जो वैष्णव बन चुके हैं उन्हें भी, लड़ना पड़ेगा?

उत्तर: देखिए, समय के अनुसार सभी को लड़ना पड़ सकता है। शास्त्र कहते हैं कि जो युद्ध में वीर गति प्राप्त करते हैं, वे अपने कर्मों का फल प्राप्त करने के बाद पुनः जन्म लेते हैं। अपने कर्म के अनुसार, जो अपने देश या अपने राजा के लिए वीर गति प्राप्त करते हैं... इस विषय पर मैं विस्तार से नहीं बोल सकता। मैं अपने व्यक्तिगत विचार साझा करूँगा, क्योंकि यह एक सार्वजनिक प्रश्न है, और हर देश में, सीमाओं पर युद्ध होता है। हमारे वीर सैनिक लड़ते हैं। मैं इस प्रश्न पर यहाँ इतने विस्तार से चर्चा नहीं कर सकता। फिर भी, इतना अवश्य कहूँगा: जो अपने देश के लिए बलिदान देते हैं, उन पर भगवान की कृपा और आशीर्वाद रहता है। यदि वे त्रिकाल संध्या भी करते हैं, तो वे भी मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आप सभी का धन्यवाद।

► यह उत्तर सुनें · 28:33 · 3 अप्रैल 2026

सत्र 184 · प्रश्न 3225–3235

L200: बड़ा संकेत! जगन्नाथ मंदिर पर चील, श्री मंदिर के ऊपर लाल आसमान 😱 | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 15 अप्रैल 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3225 (प्रारंभिक प्रवचन) 200वीं गूगल मीट — जगन्नाथ मंदिर पर दिखे संकेत (मंदिर पर गिद्ध/चील, श्री मंदिर के ऊपर लाल आकाश), धर्म वास्तव में क्या है, त्रिसंध्या और भागवत, तथा आने वाला युग परिवर्तन

उत्तर: यदि कोई सबसे पवित्र, सबसे कल्याणकारी तत्त्व है, तो वह है हमारी सनातन धर्म परंपरा का शास्त्र। यदि हम शास्त्रों का पूर्ण अध्ययन करें — अष्टादश पुराण (अठारह पुराण), भविष्य पुराण — तो भारत के अतीत के विषय में, इतिहास की रचना होने से भी पहले के इतिहास के विषय में, वर्तमान के विषय में और भविष्य के विषय में सारे तत्त्व हमें वहीं से मिल जाएँगे। परंतु चिंता का कारण यह है कि न तो इस पर चिंतन होता है, न ही कोई इसे पढ़कर इसका प्रचार करता है। चूँकि मैंने भविष्य मालिका शास्त्र में विश्व के भविष्य के विषय में — मानव सभ्यता के उत्थान के विषय में, आने वाले समय के विषय में, और नव युग की रचना तक के समय परिवर्तन के विषय में — रचना की, यह मुझ पर भगवान की बहुत बड़ी कृपा थी, और यह मानव सभ्यता पर भी बहुत बड़ी कृपा है। चालीस वर्ष पहले जब मैंने कहा था कि कलियुग समाप्त हो चुका है, कि नए युग की रचना होगी, कि धर्म की स्थापना होगी, कि मनुष्य का उत्थान आवश्यक है, कि मनुष्य की मुक्ति आवश्यक है, कि मनुष्य के कर्म, आचरण, वाणी, कृत्य, विचार, आहार और जीवनशैली में परिवर्तन आवश्यक है — तब कोई नहीं समझा। इसके लिए मुझे बहुत से फोन आए जिनमें लोगों ने मुझे गालियाँ दीं, परेशान किया; लोग हर तरह से मेरे पीछे पड़े, उन्होंने मुझे न सोने दिया न बैठने दिया। बीच में मैंने ऑनलाइन मीटिंग की, और फिर इसी कारण से छोड़ दी। और अब, भगवान की कृपा से, हम प्रचार करते हैं, और मानव सभ्यता इसे स्वीकार करती है, परखती है, और इसका प्रमाण भी पाती है। इस माध्यम से आने वाले भविष्य के विषय में, वर्तमान के विषय में, और उत्थान के विषय में सारे तत्त्व आज मानवता के लिए प्रचारित हो चुके हैं। पहले मैं अकेला प्रचार करता था। आज भारत में, विश्व में, बहुत से शास्त्र, बहुत से तत्त्व, वेद, बहुत से चैनल इसका प्रचार करते हैं। इसी आधार पर, भगवान की कृपा से, भविष्य मालिका की रचना हुई, जिसकी रचना नित्य पंच सखा (पाँच नित्य सखाओं) ने की। लाखों-लाखों ग्रंथ हैं; उनमें से वह एक मूल सार निकालकर जो मानव सभ्यता के लिए आवश्यक है, मैंने भविष्य मालिका पुराण की रचना की। उसी विचारधारा में, आज पूरे विश्व में जगन्नाथ संस्कृति के पंच सखाओं के ये पवित्र तत्त्व प्रचारित होते हैं — यह मनुष्य के लिए हितकर है। इसमें कोई अजीब बात नहीं है। इसमें मनुष्य का उत्थान होगा; मनुष्य आने वाले समय को पहले से जान लेगा और उसके लिए सावधानी ले सकेगा। और मेरे विचार से, कलियुग की सारी 'भविष्यवाणियाँ' इसके लिए किसी काम की नहीं हैं। एक ही भविष्यवाणी है: यदि धर्म बढ़ेगा, तो विश्व में आने वाली सभी समस्याओं का प्रभाव कम हो जाएगा। आज, यदि हर गाँव और हर घर में लोग भागवत पढ़ें और त्रिसंध्या (दिन में तीन बार की संध्या) करें, तो मेरे विचार से जो गाँव, जो देश, जो राज्य यह करेगा, वही क्षेत्र आने वाले समय में सुरक्षित क्षेत्र बन जाएगा, और उस क्षेत्र में कोई समस्या नहीं होगी। मैंने शास्त्र में पढ़ा है: जब धर्म बढ़ता है, तब विश्व में मनुष्य का सुख, शांति और आयु बढ़ती है। यदि धर्म घटता है, तो मनुष्य को कष्ट भोगना पड़ता है, और आयु भी घटती है। प्रकृति ने हमें एक मर्यादा दी है; भगवान ने जो प्रकृति रची, उसमें उन्होंने भी एक मर्यादा रखी, और मर्यादा यह है: सभी जीवों के प्रति दया — सभी जीवों के प्रति दया होनी चाहिए; दूसरों का भला करो — यही धर्म है। दूसरों का भला करो, दूसरों की सहायता करो। 'दूसरों' में पशु और जीव-जंतु आ सकते हैं, प्रकृति आ सकती है, अन्य मनुष्य आ सकते हैं, और 'दूसरों' में हमारे संसार का हर तत्त्व आ सकता है। और सात्त्विक आहार, पशु-हत्या से दूर रहना, और दूसरों का भला करना — यह मनुष्य को एक धर्ममय संसार में स्थापित करेगा जहाँ सुख, शांति और आनंद के सभी तत्त्व उपलब्ध हैं। इसीलिए, आज, जब मैं सड़क मार्ग से आ रहा था — उदयपुर में एक कथा थी, कल की कथा, और मैं दिल्ली आ रहा था — उस समय मेरे मन में यह विचार आया: मनुष्य कुछ समझता ही नहीं; सुख का साधन दूसरों को दुःख देने से नहीं आता। सुख का साधन तब आता है जब हम दूसरों का भला करें, दूसरों का कल्याण करें, दूसरों की सहायता करें। तब मेरे विचार से मनुष्य को सुख का साधन प्राप्त होता है। कितने दिन तक हम पशु-हत्या करेंगे? कितने दिन तक हम दूसरों को

ठगेंगे? कितने दिन तक हम छल और कपटपूर्ण सोच रखेंगे? कितने दिन तक हम अन्याय करेंगे? कितने दिन तक हम भगवान के वेदों और पवित्र धारा को स्वीकार नहीं करेंगे? कितने दिन तक हम भगवान विष्णु से दूर रह सकते हैं? यह संभव नहीं है। इसका परिणाम हम आज भोग रहे हैं। अभी भी समय है। इस समय भी, यदि विश्व धर्म का पालन करे और धर्म की बात सुने — और धर्म के विषय में मैं दो बातें कहता हूँ: पहली, दूसरों का भला करो; दूसरी, जीवों की हत्या मत करो। यही धर्म है। धर्म की परिभाषा में इससे अधिक कुछ नहीं है; दो बातों का पालन करना है। और कभी किसी का बुरा मत सोचो। और जब भगवान से माँगो, तो संसार के लिए माँगो, क्योंकि वे दाता हैं; यदि हम संसार के लिए माँगेंगे, तो उसमें हमें, हमारे परिवार को, हमारे बंधु-बांधवों को, हमारे देश को, हमारे विश्व को सबको प्राप्त होगा — और भगवान ऐसे दाता हैं। मनुष्य की मनमानी की सीमा पार हो चुकी है। दिन-रात मनुष्य सुनते नहीं, पशुओं को मारते हैं। रात के दो बजे सोते हुए जीवों को जगाकर, लाकर खा जाते हैं। और इतना ही नहीं — मनुष्य जीवों को जीवित जला देते हैं, और जीवित जलाकर भी उन्हें खाते हैं। जीवित जीवों को जलाना हमारे देश में कम होता है, परंतु चीन, इंडोनेशिया, थाईलैंड और यूरोपीय देशों में सबसे अधिक होता है। क्योंकि यह पाप है। दूसरों की सहायता करना: कोई गरीब है, कोई संकट में है, असहाय है — यदि वह सत्य के मार्ग पर चल रहा है, यदि उसमें सात्त्विक गुण हैं, तो ऐसे लोगों की सहायता सबसे पहले करनी चाहिए। और दूसरे, ज़रूरतमंद लोग जिनका कोई सहारा ही नहीं है — उनकी। भगवान, जिन्होंने हमें इस संसार में भेजा, जिन्होंने यह प्रकृति रची, जिन्होंने यह पृथ्वी, ब्रह्मांड, कोटि ब्रह्मांड रचे, जिन्होंने सूर्य, चंद्र, ग्रह और नक्षत्र स्थापित किए, जिन्होंने जल, वायु, अग्नि और आकाश रचे, और जिनकी कृपा से खेतों में फसल उगती है, गेहूँ और अन्न उगते हैं और हमें भोजन मिलता है — कम से कम कभी-कभी तो हमें कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए: 'प्रभु, आपकी कृपा से हम बचे हुए हैं।' यह भी नहीं है। और सारे मनुष्य सोचते हैं कि हमारा धन ही हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है। परंतु अर्थ (धन) कभी संपत्ति नहीं है; धर्म ही संपत्ति है। जिसके पास धर्म है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होगी। जिसके पास धर्म है उसे कभी दुखी नहीं होना पड़ेगा। जिसके पास धर्म है उसे कभी अस्पताल जाकर बिस्तर पर पड़े-पड़े इंजेक्शन नहीं लगवाने पड़ेंगे। क्योंकि धर्म सदैव सुरक्षित है और मनुष्य को आनंद देने वाली सबसे बड़ी पवित्र व्यवस्था है। पाप करने से हमें आनंद नहीं मिलेगा। आज सब परेशानी में हैं, सारा विश्व परेशानी में है, हर दिन कोई न कोई समस्या — जो भी ब्रेकिंग न्यूज़ बनता है, हर खबर ब्रेकिंग न्यूज़ बन जाती है। और इसी समय, आज 200वीं गूगल मीट ऑनलाइन मीटिंग पूरी हो रही है। मैं लगभग 2018 से ऑनलाइन आ रहा हूँ, 181 से — परंतु मुझे समय कम मिलता है, क्योंकि मैं धर्म प्रचार के लिए देश में गाँव-गाँव घूमता हूँ, और इसी कारण मुझे समय कम मिलता है और मैं ऑनलाइन मीटिंग में नहीं आ पाता। परंतु जगन्नाथ जी की कृपा बहुत बड़ी है; यह उनका आशीर्वाद है। आज भी मैं चाहता हूँ कि आपके घर में जगन्नाथ जी की उपासना हो। जगन्नाथ जी की पूजा करें। भगवान विष्णु की पूजा करें। भागवत पढ़ें, त्रिसंध्या करें। किसी से मत डरें — सबसे पहले मृत्यु का भय जाएगा। और मेरे विचार से, जो माधव नाम का भजन करते हैं, उन्हें जन्म-मृत्यु का कोई बंधन निगल नहीं सकेगा; वे सभी महान विपत्तियों से सुरक्षित रह सकते हैं। तो ऐसी अनेक विचारधाराएँ हैं जिन्हें हमें अपनाना पड़ेगा। इस समय हम विश्व में परिवर्तन देख रहे हैं, प्रकृति में परिवर्तन, मनुष्य में परिवर्तन, संसार में परिवर्तन। एक समय आएगा — यह मैंने आपसे पहले भी चर्चा की है — जब संयुक्त राष्ट्र को कोई स्वीकार नहीं करेगा और वह टूट जाएगा। एक समय आएगा जब नाटो दो भागों में बँट जाएगा। एक समय आएगा जब बड़ी शक्तियाँ आकर भारत के समर्थन में खड़ी होंगी। एक समय आएगा जब मनुष्य की रक्षा के लिए देवताओं का प्रभाव बढ़ेगा। और एक समय आएगा जब अच्छे कर्म करने वाले लोग अत्यंत आनंदित होंगे। तो समय अभी हमारे हाथ से नहीं निकला है। समय अभी भी हमारे हाथ में है। यदि हम अब से भी अच्छे कर्म करें, तो यह भी मेरा विचार और विश्वास है कि विश्व पर आने वाली विपत्ति रोकी जा सकती है। विश्व की ओर से आने वाला विश्व युद्ध, विश्व की ओर से आने वाला ब्रह्मांडीय प्रलय, विश्व पर आने वाली पंच भूतों (पाँच तत्त्वों) की विपत्ति — वह भी टाली जा सकती है यदि हम धर्म को अपना लें। और धर्म क्या है? फिर कहता हूँ: दूसरों का भला करना, और शाकाहारी आहार, जीवों के प्रति दया। देखिए — जिसमें जीवों के प्रति दया है वह शाकाहारी खाता है। तो जीवों पर दया और दूसरों का भला करना। इसलिए, आप सभी सुनने वालों से मेरा निवेदन है: त्रिसंध्या अवश्य करें, भागवत का एक अध्याय पढ़ें, और जब भी समय मिले, हर क्षण, माधव नाम का भजन अवश्य करें — मन में करें; ऊँचे स्वर में जपना आवश्यक नहीं, मन में करें। यदि आप ऐसा करेंगे — यह मेरा विचार है और बहुत दिनों का मेरा अनुभव है, जो मैंने संसार में देखा है — तो आपका बहुत बड़ा कल्याण होगा। मेरी कोई गुरु परंपरा नहीं है, न ही मैंने किसी को शिष्य बनाया है, क्योंकि मुझे यह ज्ञान है कि आने वाले समय में ठाकुर जी आ रहे हैं। कल्कि भगवान आ रहे हैं। यदि कल्कि भगवान आ रहे हैं, तो आप लोग उन्हीं को अपना गुरु बनाएँगे। जब श्री राम आए, तब राम राज्य के सभी लोगों ने रामचंद्र को अपना गुरु बनाया। अब जब कल्कि भगवान आएँगे, तो आप उन्हें अपना गुरु बनाएँगे। इसीलिए मैंने किसी को शिष्य नहीं बनाया, किसी को परंपरा से नहीं जोड़ा।

परंतु शास्त्र का प्रचार मैं निःस्वार्थ भाव से करता हूँ, अर्थात् मैंने कोई भेदभाव नहीं देखा — कोई जाति, धर्म, वर्ण, हिंदू, मुस्लिम, जैन, ईसाई, बौद्ध नहीं; कोई सांप्रदायिक विचारधारा नहीं। केवल एक ही विचारधारा: मानवता का कल्याण; और जिससे मनुष्य का हित होगा, जिसमें भगवान की पवित्र शक्ति मनुष्य का उत्थान करेगी और कृपा करेगी — वही एक तत्त्व है। क्योंकि मैंने शास्त्र में लिखा है, सनातन कहता है कि सारा विश्व एक परिवार है और हम सब उसके सदस्य हैं, जिसे हम वसुधैव कुटुम्बकम् कहते हैं। यही वह एक धर्म है जो कहता है: विश्व का कल्याण हो, गौ माता की रक्षा हो। जो धर्म विश्व के कल्याण की बात करता है वही हमारा सनातन है। इसी परंपरा में भगवान ने सृष्टि की रचना की, और हम सनातनी इस परंपरा का पूर्ण पालन करते हैं। हमारे लिए कोई भेदभाव नहीं है। मैं पूरे विश्व से कहना चाहता हूँ: युद्ध का यह रोग जो राष्ट्राध्यक्षों के सिर चढ़ गया है — उन्हें भी इसमें रक्षा नहीं मिलेगी। इसलिए, स्वयं की भी रक्षा करें और ब्रह्मांड की भी रक्षा करें। युद्ध कभी समाधान का सूत्र नहीं है। युद्ध विनाश का तत्त्व है; उस विनाशकारी तत्त्व में हमने अतीत के इतिहास में देखा है कि बहुत-बहुत बड़ी सभ्यताएँ मिट गईं। और ऐसा ही समय अभी चल रहा है। ग्रह योग में दिखाया गया है: यदि एक वर्ष में बृहस्पति देव तीन राशियों में स्थापित हों या उनका अतिक्रमण करें, तो उस समय करोड़ों में सैनिक मरते हैं, और जो होता है — 'प्रेत पूर्ण वसुंधरा' (शवों से भरी पृथ्वी)। तो ऐसा समय अभी चल रहा है। हाँ, सब चलता रहे, परंतु यदि हमें भगवान का नाम और भगवान की कृपा मिल जाए, तो यह सब टल सकता है, यह सब रुक सकता है। यदि पूरे भारत में, सभी गाँवों में, भागवत पाठ और ग्राम देवता की पूजा के साथ-साथ त्रिसंध्या का पालन सब करें, तो मानव सभ्यता की सारी विपत्तियाँ टल जाएँगी। जो भविष्य शास्त्र नित्य पंच सखा ने रचा — उसमें उन्होंने एक बात लिखी है। उन्होंने कहा: 'हम यह शास्त्र मनुष्य को नव युग का ज्ञान देने के लिए रच रहे हैं। इसमें मनुष्य के उत्थान का तत्त्व भी है। आने वाली समस्याओं से कैसे निपटें, मनुष्य की सभ्यता समस्या का सामना कैसे करेगी — वह विधि भी हमने लिखी है।' और उन्होंने यह भी लिखा: लोग यदि धर्म की ओर मुड़ें तभी मानव सभ्यता एक विकसित सभ्यता में परिवर्तित हो सकती है; नव युग की रचना भी हो सकती है, और सभी लोग, जीव जगत और सारा विश्व एक सुंदर वातावरण में स्थापित होकर मनुष्य के लिए सुख का स्रोत बन सकते हैं। आज लोग भविष्य शास्त्र को इधर-उधर तोड़-मरोड़कर बहुत सी बातें प्रचारित करते हैं; मैं पॉडकास्ट में बहुतों को कहते देखता हूँ कि '26 में सब नष्ट हो जाएगा, '27 में सब नष्ट हो जाएगा। देखिए, मैंने ऐसी बात कभी नहीं कही। आज भी मैं कहता हूँ कि परमाणु हथियार से भी रक्षा संभव है, यदि हम त्रिसंध्या करें और भागवत पढ़ें। सब कैसे नष्ट होगा? यदि लोग त्रिसंध्या करें और भागवत पढ़ें, तो कुछ भी नष्ट नहीं होगा। इसलिए, हमें समय को भी समझना पड़ेगा। इस समय — कल जब हमारी विचार-कथा चल रही थी, उसी समय मैं कह रहा था कि जगन्नाथ मंदिर से एक संकेत आ रहा है, कि उस पर चील और गिद्ध बैठ रहे हैं — उसी समय एक चील जाकर श्री जगन्नाथ मंदिर पर बैठ गई, और शाम को जगन्नाथ क्षेत्र का सारा आकाश गुलाबी, रक्त के रंग का हो गया। तो इसका संकेत क्या है? भगवान यह कहते हैं: अभी भी समय है। मेरे मंदिर के मुख्य नील चक्र पर, जो मुक्तिदायक चक्र है, पतित पावन ध्वज पर जो पतितों का उद्धार करता है, मनुष्य का उद्धार करता है — उस पर एक अशुभ पक्षी, मांसभक्षी पक्षी जिसे वहाँ बैठने का कोई अधिकार नहीं, बैठता है। क्योंकि यह विश्व पर आने वाली विपत्ति का संकेत है। कोई युद्ध, कोई नया युद्ध छिड़ सकता है। कोई विनाशकारी तत्त्व हो सकता है। पंच भूतों का कोई प्रलय हो सकता है। कोई विनाशकारी रोग भी आ सकता है। और आकाश का गुलाबी होना भी रक्तपात के समय की सूचना देता है। फिर भी, भगवान कहते हैं: 'मैं सूचना दे रहा हूँ। मैंने यह नहीं किया है। मैं केवल आप लोगों को सूचित कर रहा हूँ कि ऐसा समय आ गया है। मैंने कुछ नहीं किया है।' इसलिए, मनुष्य के लिए भगवान ने भविष्य शास्त्र भी लिखवाया। यह भगवान के निर्देश पर लिखा गया है। नित्य पंच सखा ने भले ही लिखा हो, परंतु यह सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग में कई चरणों में लिखा गया; नित्य पंच सखा ने इसे पूर्ण रूप दिया। इसी विचारधारा में भगवान बार-बार पहले से वचन देते हैं; भगवान कभी किसी पर बिना चेतावनी के प्रहार नहीं करते। महाभारत युद्ध के लिए भगवान उसे कई वर्षों तक आगे बढ़ाते रहे ताकि मनुष्य बदल जाए। और इस समय भी ठाकुर जगन्नाथ जी की कृपा बहुत बड़ी है — वे ऐसे समय पर संकेत देते हैं, और मनुष्य को सतर्क हो जाना चाहिए। और सतर्कता की बात क्या है? त्रिसंध्या। मैंने त्रिसंध्या को बहुत सरल बना दिया है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस समय हर मनुष्य को अपने काम को, अपनी जीविका को, और अपने परिवार को समय देना पड़ता है। इसलिए मैं त्रिसंध्या बहुत सरल रूप में वितरित कर रहा हूँ, क्योंकि इस कलियुग में, इस मशीनी युग में, यदि मनुष्य अपनी जीविका नहीं करेगा तो जीवित कैसे रहेगा? उसे अपना कर्म करना ही होगा। तो, चलते-चलते, यात्रा करते हुए, ऑफिस में बैठे हुए, कहीं भी कुछ भी करते हुए, बिना स्नान किए, केवल माता गंगा का नाम तीन बार उच्चारण करके और कानों पर तथा ललाट पर हाथ रखकर, आप त्रिसंध्या कर सकते हैं। त्रिसंध्या में केवल पाँच मिनट लगते हैं। इसमें अधिक समय नहीं लगता। भागवत पाठ के लिए मैंने कोई समय सीमा नहीं दी है: सुबह 3:45 से रात 12 बजे के बीच कभी भी, हाथ-पैर धोकर, मन से गंगा स्नान करके, धुले वस्त्र

पहनकर, आप भागवत महापुराण पढ़ सकते हैं। इतने सरल रूप में मैं धर्म आप तक ला रहा हूँ, क्योंकि विचार यह है कि मनुष्य पहले प्रवेश तो करे; और एक समय आएगा जब युग बदलेगा, जब सभी मनुष्य स्नान, तर्पण और अर्घ्य-प्रदान करेंगे, सूर्य देव को अर्घ्य देंगे, पितृ देवों को तर्पण करेंगे, और सुबह अग्निहोत्र यज्ञ करेंगे। त्रिसंध्या करते-करते वे परिवर्तन की ओर बढ़ेंगे, और जब नव युग की रचना होगी तब वे स्वयं को पहले से तैयार करके नव युग में प्रवेश करेंगे। सत्य युग अवश्य आएगा, क्योंकि यदि सत्य युग नहीं आएगा, तो पृथ्वी पर भूकंप आते हैं — पाप भर चुका है। सत्य युग अवश्य आएगा; इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। 2032–34 के बीच — यह विचार मैंने शास्त्र में रचा है। भगवान की कृपा हो। परंतु सत्य युग की व्यवस्था परिवर्तन की ओर बढ़ रही है। जहाँ तक जगन्नाथ क्षेत्र के संकेत की बात है — यह संकेत विश्व के लिए है, भारत के लिए नहीं। आज भी मैं कहता हूँ: पूरे विश्व में जो भी विपत्तियाँ आएँगी, उनमें लगभग 20–25 प्रतिशत भारत में होंगी और 75% विदेश में, विश्व में होंगी। मध्य पूर्व सबसे अधिक प्रभावित होगा। मध्य पूर्व सबसे अधिक प्रभावित होगा; अमेरिका — उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका — बहुत अधिक प्रभावित होंगे। प्रकृति के पाँच तत्त्वों द्वारा होने वाले विनाश में यूरोपीय देश और चीन आएँगे। ऐसा दृश्य आएगा: चीन, पाकिस्तान, और उस क्षेत्र से जुड़े देश — उन देशों में बड़े भूकंप, अकाल, कृषि नहीं, अन्न नहीं, रोग का फैलाव होगा। ऐसा समय आ रहा है — इंडोनेशिया, हाँगकाँग; इसमें जापान भी आता है। चीन को सबसे अधिक क्षति होगी। अमेरिका को सबसे अधिक क्षति होगी। मध्य पूर्व को उससे भी अधिक क्षति होगी — जो अभी चल रहा है और आगे और अधिक होगा। युद्ध समाप्त भी हो जाए, तो प्रकृति उन्हें नहीं छोड़ेगी। तो मैं एक बात कहता हूँ, और इसका प्रचार भी करता हूँ: भारत में जितने लोग बचेंगे, उनकी संख्या शेष विश्व में बचने वालों की संख्या से अधिक होगी। इससे यह विचार आता है: भारत में कितना धर्म है। अभी भी हमारे देश में धर्म है, पुण्य है। लोग सत्य, शांति, दया का पालन करते हैं; भगवान के भजन में रहते हैं। परंतु मेरा विचार है कि जब युग बदले, तब भगवान विष्णु की उपासना होनी चाहिए। हर घर में भगवान विष्णु की पूजा और भजन होना चाहिए। जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा, सुदर्शन — चतुर्धा विग्रह (चार-स्वरूप) — वे स्वयं महा विष्णु के अवतार हैं। जो कोई श्री जगन्नाथ के नाम से भजन करता है, वह भी भगवान विष्णु की पूजा के समान है। ऐसा समय आएगा जब पूरे विश्व में जगन्नाथ मंदिर होंगे — मैं विश्व की बात कर रहा हूँ, भारत की नहीं। यह समय आएगा। जगन्नाथ उद्धार करेंगे; कोई और नहीं है जो उद्धार करेगा। यदि कोई करेगा, तो जगन्नाथ ही उद्धार करेंगे। यही नाम उद्धार करेगा। इसीलिए जगन्नाथ जी का मूल नाम, पहला नाम, भगवान विष्णु का पहला नाम, माधव है। इसीलिए मैं माधव नाम का प्रचार करता हूँ। और शास्त्र में लिखा है कि जो माधव नाम का भजन करते हैं, जो निरंतर माधव नाम का जप करते हैं — जन्म-मृत्यु का बंधन उन्हें कभी छू नहीं सकेगा; वे जन्म और मृत्यु पर विजय पा सकेंगे। रोग तो छोटी बात है; रोग उन पर काम नहीं करेगा। तो, लगभग एक महीने से — 101 दिन हो चुके हैं, और 15 दिन और, लगभग डेढ़ महीना — बार-बार अशुभ पक्षी, चीलें, जगन्नाथ मंदिर पर बैठती हैं, और आकाश लाल हो जाता है। जैसा कल हुआ — पूर्व और पश्चिम रंग में लाल हो गए, पर्वत-शृंखला लाल चमकने लगी, अर्थात् आकाश इतना लाल हो जाएगा कि पहाड़ भी लाल हो जाएँगे। 'लोह खंड मन भारत रशिया शासन' — अर्थात् भारत का किसी अन्य देश के साथ बड़ा युद्ध होगा और रूस की सेना भारत की सहायता के लिए आएगी। यह मैंने शास्त्र से, मेरे विचार से, 2022 से बताया है। और आज भी हम इसकी स्थिति देखते हैं: आकाश रंग ले रहा है। तो जगन्नाथ जी संकेत दे रहे हैं। वे कहते हैं: 'मैंने विनाश नहीं किया है। अभी भी समय है; मनुष्य का उत्थान हो सकता है।' धर्म एक दिन में आ सकता है। धर्म एक क्षण में आ सकता है। एक विचारधारा होनी चाहिए: भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण — 'प्रभु, आप ही सर्वोपरि हैं।' अजामिल ने मृत्यु के समय एक बार नाम लिया — केवल एक बार — और वैकुंठ प्राप्त कर लिया। ऐसा भाव, ऐसा विचार होना चाहिए। आप सभी से मेरा निवेदन: अपने परिवार के सदस्यों को, अपने संबंधियों को, अपने बंधु-बांधवों को बताइए — मैं कहता हूँ, देखिए, यह बहुत सरल मार्ग है, इसमें कोई खर्च नहीं है। यदि आप किसी को गुरु बनाएँगे तो पैसा देना पड़ेगा, किसी के पास जापान जाना पड़ेगा, यात्रा करनी पड़ेगी, सब कुछ करना पड़ेगा। मैंने इसे पूरी तरह सरल बना दिया है: घर पर बैठिए, त्रिसंध्या और एक अध्याय (भागवत का) कीजिए; दूसरों के विरुद्ध मत सोचिए; यदि कर सकें तो दूसरों का भला कीजिए — यदि कर सकें तो कर सकें, यदि न कर सकें तो न कर सकें; शाकाहारी आहार, पशु-हत्या नहीं। यदि हम बस इतना ही करें, तो हम एक नए स्थान पर जाएँगे, जहाँ हमारा जीवन... विचार कीजिए कि हम पहले ही कितने लाख-करोड़ जन्म ले चुके हैं, फिर भी हमें भगवान नहीं मिले, मुक्ति नहीं मिली, परमार्थ नहीं मिला। और इस समय, इस पवित्र त्रिसंध्या को करने से करोड़ों जन्मों के पाप भस्म हो जाते हैं। जो कोई त्रिसंध्या करता है — चाहे किसी भी धर्म का हो, किसी भी जाति का, किसी भी आस्था का — वह सनातनी बन जाता है। और भगवान कृष्ण का सुदर्शन चक्र सदैव उसकी रक्षा करता है। अष्ट दुर्गा, सप्तशती चंडी, शंकर भगवान, माँ भवानी, ब्रह्मदेव, सभी देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। तो सभी से मेरा निवेदन: आनंदपूर्वक त्रिसंध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, माधव नाम का भजन कीजिए। जगन्नाथ महाप्रभु

की कृपा बहुत बड़ी है। जगन्नाथ की कृपा से, चैतन्य भगवान की कृपा से, नित्य पंच सखा ने भविष्य शास्त्र की रचना की। आज शास्त्र आप तक पहुँच गया है। यह पूरे विश्व में पहुँच गया है और सब इसे पढ़ सकते हैं, जान सकते हैं, समझ सकते हैं। तदनुसार, धर्म को थामिए और कर्म कीजिए। यह बहुत सरल विचारधारा है। और सभी से मेरा निवेदन: कभी किसी के विरुद्ध मत सोचिए। हमें सत्य, शांति, दया, क्षमा, आचार और धर्म का अभ्यास करना है, और सत्य युग में जाना है — और सत्य युग के लिए वातावरण अनुकूल होता जा रहा है, और वह समय आएगा; सत्य युग आ रहा है। मेरे विचार से, भगवान का शास्त्र कभी झूठा नहीं होता; शास्त्र सदैव सत्य है, और ठाकुर जी ने शास्त्र पूर्णतः आपके उत्थान के लिए लिखा। यह शास्त्र इसलिए लिखा गया ताकि मनुष्य का उत्थान हो। तो मनुष्य के उत्थान के लिए लिखा गया शास्त्र आपके लिए हितकर बनेगा और आपका उत्थान करेगा, और आपको इस संसार में दिव्य मनुष्य बनाएगा; और मनुष्य से आप देवता बनेंगे, दिव्य मानव बनेंगे, और दिव्य मानव से आप अमर जीवन प्राप्त करेंगे, और मनुष्य की आयु 1000 वर्ष तक हो जाएगी। मैं मानता हूँ कि 2032–34 के बाद लोग मरेंगे नहीं, क्योंकि तब तक धर्म के पूर्ण प्रकाश का समय आ चुका होगा और लोगों ने धर्म को अपना लिया होगा। तो सभी को धन्यवाद। जय जगन्नाथ। माधव कृपा करें। यह संसार जगन्नाथ प्रभु की कृपा से चलता है, और यदि जगन्नाथ जी चाहें, तो यह ब्रह्मांड सुरक्षित रहेगा। अभी भी समय है — जगन्नाथ की शरण में जाइए, भगवान विष्णु की शरण में जाइए। हर घर में भगवान विष्णु की पूजा हो। हर घर में त्रिसंध्या हो। हर घर में भागवत पाठ हो। और थोड़ा दान कीजिए — एक-दो रोटी दान कीजिए, गौ माता को घास दान कीजिए, गरीबों को दीजिए — कुछ कीजिए। समय हमारे अनुकूल होगा। विश्व में चाहे कितनी भी तबाही हो, भारत सुरक्षित है। फिर भी, युद्ध होगा; जब युद्ध होगा तो वह सीमावर्ती क्षेत्रों पर अधिक होगा। तो वह होता रहता है; युग परिवर्तन में यह सब होता है। तो हमें कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं — बस अपना कर्म ठीक कीजिए और आगे बढ़िए। युवाओं से, छोटे बच्चों से, मैं इतना कहता हूँ: पहले अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए, और केवल 101 मिनट (कुछ मिनट) त्रिसंध्या कीजिए ताकि जब आप सड़क पर जाएँ, वाहन चलाएँ, तो आपका जीवन जोखिम में न हो — सुरक्षित रहिए, आपकी आयु बढ़े, और आपके माता-पिता बहुत प्रसन्न होंगे। जब बच्चा संस्कारी और पवित्र बनता है, तो माता-पिता बहुत प्रसन्न होते हैं, उन्हें कोई चिंता नहीं होती, कोई फिक्र नहीं होती: 'मेरा बच्चा अनुशासित और संस्कारी है।' और सबसे बड़ी बात यह है कि त्रिसंध्या से मन स्थिर होता है, भय नष्ट होता है, और संसार में मनुष्य शांत, बुद्धिमान, तत्त्ववान बनता है; और उसके साथ-साथ उसे अपने कार्य क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। तो एक बार फिर सभी को धन्यवाद। यदि पिछली बार से कोई प्रश्न हों, तो मनीष या मोहन — जो भी हों — वे प्रश्न मेरे समक्ष रखें, और मैं उन पर विचार करूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:00 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3226 बिहार से राजू कुमार सिंह: गुरु जी, क्या हमें अपने सैनिकों के साथ युद्ध में भाग लेना चाहिए, और वीरगति प्राप्त करने के बाद क्या मैं अपने शेष पापों से मुक्त हो सकता हूँ?

उत्तर: देखिए, शास्त्र में लिखा है: 'जननी जन्मभूमि' — हमारी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है। जो लड़ाई हमारी जन्मभूमि के लिए लड़ी जाती है — बिल्कुल, हर युवक को हमारे देश के लिए बलिदान करना चाहिए। अपने देश के लिए हमें सेना में जाना चाहिए, हमें लड़ना चाहिए। और आपकी जो विचारधारा है वह वीरगति प्राप्त करने के लिए बिल्कुल सबसे बड़ा, सबसे उत्तम और सबसे पवित्र तत्त्व है, और इसमें निश्चित रूप से वीरगति प्राप्त होगी। देश की सेवा, जननी की — अर्थात् हमारी जन्मदात्री, जिसने हमें जन्म दिया; वह धरती, वह धरती जो हमारा पोषण करती है — उस धरती के लिए प्राण न्योछावर करने से बड़ा कोई कर्म नहीं है। आपकी सोच बिल्कुल सत्य और पवित्र है। और हमारे देश में हर युवक को यह पवित्र विचारधारा स्वीकार करनी चाहिए। देश के लिए हम सबको बलिदान करना चाहिए। हमारा देश महान है, हमारी जन्मभूमि महान है, हमारा भारत महान है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:31:27 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3227 आप कहते हैं कि जो भक्त त्रिसंध्या करेंगे उनकी रक्षा होगी। लेकिन क्या सभी 64 करोड़ भक्तों को त्रिसंध्या धारा मिलेगी? उनकी रक्षा कैसे होगी?

उत्तर: देखिए, वे मनुष्य जो सत्य, शांति, दया, क्षमा का पालन करते हैं; जो भगवान राम की शरण में हैं, कृष्ण की शरण में हैं, शंकर भगवान की शरण में हैं, ब्रह्मदेव की शरण में हैं, अष्ट दुर्गाओं की शरण में हैं, देवी-देवताओं की शरण में हैं — उन सबके लिए त्रिसंध्या का ब्रह्म तत्त्व है; अच्युतानंद ने लिखा है। देखिए, मैं शास्त्र को गलत ढंग से प्रस्तुत नहीं करूँगा, गलत प्रचार नहीं करूँगा; यदि मैं गलत बताऊँ, तो कल मनुष्य को क्या लाभ मिलेगा? मैं सत्य कहता हूँ। लिखा है: 'ब्रह्म कर्म सर्व लोक करेंगे' — सभी लोग ब्रह्म कर्म करेंगे। कैसे करेंगे? मान लीजिए आज भारत में पाँच लाख लोग करते हैं। एक समय आएगा जब दस लाख करेंगे। फिर एक समय आएगा जब बीस लाख करेंगे। फिर एक समय आएगा जब करोड़ों करेंगे। इस प्रकार बढ़ते-बढ़ते यह 64 करोड़ तक फैल जाएगा। और एक बात और: जब रोग आएगा, जब पंच भूतों का प्रलय आएगा, जब भुखमरी और अन्न की कमी बढ़ेगी, जब सूखा बढ़ेगा, तब लोग समय के साथ त्रिसंध्या को अपनाएँगे। और मैं यह भी मानता हूँ: जिस भी गाँव में, जिस भी देश में, जिस भी राज्य में लोग बैठकर त्रिसंध्या करेंगे, वहाँ सूखा नहीं पड़ेगा, वर्षा होगी। तो यह एक महान तत्त्व है, और अंतिम समय तक 64 करोड़ लोग निश्चित रूप से त्रिसंध्या अपनाएँगे; और देवी-देवता आकर कहेंगे, 'तुम त्रिसंध्या क्यों नहीं करते? तुम कैसे बचोगे?' तो त्रिसंध्या एक महान तत्त्व है। लेकिन जो भगवान का भजन करते हैं, जो विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की सेवा करते हैं — वे भी समय के साथ इस धारा में आएँगे। यह शास्त्र में लिखा है, और अच्युतानंद जी ने लिखा है 'सर्वे करा ब्रह्म कर्म' — अर्थात सभी लोग ब्रह्म कर्म, त्रिसंध्या को अपनाएँगे, समझेंगे कि यही हमारे लिए सुरक्षित है और हमारे लिए हितकारी है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:33:17 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3228 विकास कुमार: मेरी प्रातःकाल की त्रिसंध्या बार-बार छूट जाती है। कृपया मार्गदर्शन करें कि मैं इसे कैसे कर सकूँ।

उत्तर: देखिए, प्रातःकाल की त्रिसंध्या के लिए एक काम कीजिए: सोने से पहले माधव नाम का 108 बार भजन कीजिए और कहिए, 'प्रभु, मुझसे सही समय पर त्रिसंध्या करवा दीजिए, क्योंकि, प्रभु, मनुष्य का शरीर वश में नहीं है — कभी सो जाता है, कभी देर से जागता है, कभी काम के बंधन में बँध जाता है; इसलिए कृपा कीजिए।' तब यह हो सकता है — मेरे विचार से माधव आपको समय देंगे और आप कर पाएँगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:35:23 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3229 सुमित: क्या विष्णु षोडश नाम, दशावतार स्तोत्र और दुर्गा माधव स्तुति का जाप त्रिसंध्या के अतिरिक्त, अन्य समय पर भी किया जा सकता है?

उत्तर: देखिए, ऐसा समय आएगा जब मनुष्य के पास कोई काम नहीं होगा — इसे ध्यान से सुनिए, आप सब जो सुन रहे हैं, सुनिए। ऐसा समय आएगा जब लोगों का पूरा समय खाली होगा, और सुबह से रात तक वे बैठकर मन ही मन, मन ही मन त्रिसंध्या करेंगे और जाप करते रहेंगे। यह चलता ही रहेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:36:03 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3230 श्रीधर जी: यदि एकादशी के दिन मृत्यु हो जाए, तो क्या व्यक्ति को सद्गति मिलती है?

उत्तर: हाँ, यह शास्त्र में लिखा है। यदि किसी जीव की मृत्यु के समय पूर्णिमा हो, या एकादशी हो, या उत्तरायण का काल हो, या दोपहर 12 बजे से पहले हो, या प्रातः मुहूर्त (प्रातःकाल का समय) हो — इनमें मनुष्य के कर्म के अनुसार स्वर्ग की प्राप्ति होती है, या फिर से मनुष्य जन्म की प्राप्ति होती है, और एकादशी के दिन मुक्ति की बात है; वह होती है। परंतु एक बात यह है: मृत्यु के बाद भी मनुष्य के कई कर्म शेष रहते हैं — वे कर्म जैसे श्राद्ध, पितृ तर्पण, और दश कार्य (दसवें दिन के संस्कार) — वे भी पूर्ण रूप से और ठीक प्रकार से किए जाने चाहिए। परंतु यदि कोई एकादशी पुण्यतिथि को देह त्यागता है, तो एकादशी के प्रभाव से वह वैकुंठ को प्राप्त करता है। यह शास्त्रीय विचारधारा में वर्णित है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:36:46 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3231 झाँसी से प्रवेश जी: मेरी बड़ी बहन अपने बच्चों और पति के साथ जापान में फँसी हुई हैं, क्योंकि उनके पति को भारत में ट्रांसफर या कोई दूसरी नौकरी नहीं मिल रही है। कृपया मार्गदर्शन करें। मेरी बहन त्रिसंध्या करती हैं।

उत्तर: देखिए, अकेले बहन के करने से काम नहीं चलेगा। बहन के साथ-साथ उनके पति को भी करना चाहिए। बच्चों को भी सुनवाना चाहिए, या बच्चे भी करें। अगर सब मिलकर करेंगे, तो माधव कृपा करेंगे और वह काम पूरा होगा। फिर भी मैं माधव से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु की कृपा उन पर बरसे। पति से कहिए कि माधव नाम का भजन करें और भागवत के द्वादश स्कंध (बारहवें स्कंध) में कल्कि अवतार के बारे में पढ़ें, और कहें, 'प्रभु, मुझे अपना एक अच्छा स्थान दीजिए।' मेरी दृष्टि में यह हो सकता है — कीजिए, फल अवश्य मिलेगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:37:52 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3232 सत्यम सेन: मेरे मन में भक्ति-भाव नहीं जाग रहा है। काम, वासना और मोह बहुत बढ़ रहे हैं; मुझसे अपराध भी हो जाते हैं। कृपया मार्गदर्शन करें कि अखंड परा भक्ति कैसे जागृत हो, जिससे मैं अपनी ही इच्छा से भी भटक न जाऊँ।

उत्तर: मैं यह कहना चाहता हूँ: हमारा भागवत महापुराण भक्ति, ज्ञान और वैराग्य है। आपको जो चाहिए — आपको भक्ति चाहिए, ज्ञान भी चाहिए, और वैराग्य, अर्थात् सभी इच्छाओं, कामनाओं, धन और वैभव से विरक्ति चाहिए। एक काम कीजिए: भगवान कृष्ण की गोप-लीला, दशम स्कंध (दसवाँ स्कंध), तीन महीने तक बार-बार पढ़िए। भक्ति आएगी, ज्ञान आएगा, वैराग्य आएगा, आप कामनाओं से दूर रहेंगे, और आपको परमार्थ भी मिलेगा। जय जगन्नाथ। त्रिसंध्या समय पर कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 00:38:36 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3233 स्नेहल, मैं महाराष्ट्र से हूँ: आपने हमारी रक्षा के लिए त्रिसंध्या धारा बताई है। मेरी भाषा मराठी है; महाराष्ट्र में लोग गुरु परंपरा का अनुसरण करते हैं, इसलिए अधिकतर लोग गुरु मंत्र का जप करते हैं और मानते हैं कि गुरु ही सब कुछ हैं, गुरु मंत्र ही उनका कल्याण करेगा, और वे त्रिसंध्या को अधिक महत्त्व नहीं देते। कृपया इस विषय में मेरा मार्गदर्शन करें।

उत्तर: देखिए, मैं जगन्नाथ संस्कृति का एक श्लोक पढ़ता हूँ: 'मननाथ श्री जगन्नाथ, मद्गुरु श्री जगद्गुरु, मदात्मा सर्वभूतात्मा, तस्मै श्री गुरवे नमः।' इसका अर्थ है: मेरे प्रभु जगन्नाथ हैं, मेरे गुरु जगन्नाथ हैं, और जो जीवात्मा मेरे शरीर में है, वह आत्मा पूरे ब्रह्मांड में, हर जीव में फैली हुई है — और मैं बार-बार जगन्नाथ के चरणों में शरण लेने जाता हूँ। और शास्त्र में लिखा है, 'वन्दे भगवती देवी श्री रामा, जगद्गुरु'; और शास्त्र में यह भी लिखा है, 'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।' तो मेरी दृष्टि में गुरु ही भगवान हैं। हाँ, दीक्षा और शिक्षा के लिए सांसारिक नियमों में गुरु आवश्यक है — दीक्षा गुरु आवश्यक है, शिक्षा गुरु आवश्यक है। परंतु परमार्थ के लिए, अपने प्रारब्ध, रोग, बीमारी, विपत्ति और बड़ी समस्याओं से रक्षा के लिए, विश्व गुरु के चरणों में जाइए। जगन्नाथ माधव के चरणों में जाइए। इसमें कोई अंतर नहीं है। यह शास्त्र में लिखा है; हम शास्त्र को गलत नहीं बोलेंगे। और इस तत्त्व से, भगवान विष्णु को अपना गुरु बनाइए और आप सबसे अधिक सुखी हो जाएँगे, सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाएँगे; सभी देवताओं की कृपा, आशीर्वाद और कृपादृष्टि निरंतर आप पर बरसती रहेगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:40:05 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3234 मनीष जी: जो लोग त्रिसंध्या नहीं कर सकते, उनके लिए आपने 31 मार्च की गूगल मीट में एक मंत्र दिया था। मैं एक विद्यार्थी हूँ — क्या मैं वही मंत्र तीनों समय जप सकता हूँ? मुझे त्रिसंध्या याद तो है, परंतु आपके दिए हुए मंत्र की तुलना में उसमें अधिक समय लगता है।

उत्तर: देखिए बेटा, बिल्कुल — बहुत अच्छा; आपको मंत्र याद है, यह बड़े आनंद की बात है। हाँ, जो मंत्र मैंने दिया था, दशावतार का श्लोक, एक ही स्वर में — 'वेदानुद्धरते जगन्ति वहते... दैत्यं दारयते बलिं छलयते... क्षत्रक्षयं कुर्वते... कृष्णं वन्दे' — यह दस अवतारों का फल प्रदान करता है। परंतु देखिए बेटा, यदि दिन में न हो सके, तो कम से कम थोड़ा आलस्य छोड़कर पाँच या सात मिनट दीजिए, और सोने से पहले पाँच से सात मिनट दीजिए। अर्थात्, संध्या के समय पाँच से सात मिनट कीजिए, और मध्याह्न में यह श्लोक पढ़िए। और मेरी दृष्टि में, आपका कल्याण और भी अधिक होगा — ऐसा कल्याण जो कोई और नहीं दे सकता। यह मंत्र, भगवान की कृपा से, आपको आशीर्वाद देगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:42:13 · 15 अप्रैल 2026

प्रश्न 3235 अंतिम प्रश्न: आपने ईरान और अमेरिका के बीच युद्धविराम (सीज़फ़ायर) की बात कही थी। अब इसे कैसे समझें, क्योंकि ईरान–अमेरिका का युद्धविराम अब टूट चुका है? कृपया स्पष्ट करें।

उत्तर: यह विचारधारा निश्चित रूप से सत्य होगी। उनके बीच छोटी झड़पें भी चलती रहती हैं, और बड़ी झड़पें भी होती हैं। परंतु एक समय आएगा — आप देखेंगे — कि उनमें एक गठबंधन बनेगा; उसमें सभी मुस्लिम देशों की सहमति होगी, पाकिस्तान मध्यस्थ की भूमिका निभाएगा, तुर्की को लेकर, सऊदी को लेकर, यह काम करेगा, और आगे युद्ध की समाप्ति अवश्य होगी। और देखिए, एक बात जो मैंने कही थी — मुझे कहनी नहीं चाहिए, पर फिर भी मैं कहना चाहता हूँ: सभी मुस्लिम देशों की सोच यह थी कि वे सब मिलकर भारत के विरुद्ध लड़ें। परंतु जैसे कल्कि भगवान — जैसे जगन्नाथ कृष्ण ने पवन देव के 49 भाग किए, 49 मरुद्गण — अब मध्य-पूर्व में वे अपने ही देशों में अपने ही हथियारों से लड़ रहे हैं, और कल्कि भगवान उनकी शक्ति को कम कर रहे हैं। यदि वे पूरी शक्ति के साथ आते, तो लड़ाई बहुत जबरदस्त होती। तो कुछ दिन यह चलने दीजिए, और उनकी सारी शक्ति कम हो जाने दीजिए; फिर वे भारत से लड़ेंगे — यह बिल्कुल सत्य है, वे सब एक साथ आएँगे, परंतु उनके

पास पूरी शक्ति नहीं होगी; वे कम शक्ति के साथ लड़ेंगे। तो भारत की रक्षा के लिए यह प्रभु की, कल्कि भगवान की बहुत बड़ी कृपा है, कि उनके अपने ही देशों में प्रभु द्वारा उनकी पूरी शक्ति तोड़ी जा रही है। अन्यथा यूक्रेन भी भारत के विरुद्ध काम करता; समय आया तो भगवान ने उसे तोड़ दिया — वह बहुत शक्तिशाली था। मध्य-पूर्व में युद्ध चल रहा है; प्रभु उनकी शक्ति के टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं, ताकि जब वे भारत से लड़ें तो उनकी पूरी शक्ति न बचे, और वे कम शक्ति के साथ आएँ, और प्रभु भारत की रक्षा करें। एक तत्त्व लिखा है: 'भारत भाग जन्मस्थली' — इस भूमि का कोई अहित नहीं हो सकता। भारत भगवान की भूमि है। यह देवों की भूमि है। इस भूमि को कोई तोड़ नहीं सकता, कोई नष्ट नहीं कर सकता, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों। इस देश पर सदा भगवान की कृपा है, और इस समय भारत पर कल्कि भगवान की बहुत बड़ी कृपा है। एक समय आएगा जब विश्व के सभी देश भारत का सम्मान करेंगे, भारत को स्वीकार करेंगे, भारत के सनातन धर्म को अपनाएँगे; पूरा विश्व सनातन हो जाएगा। यह जो युद्ध चल रहा है, वह कुछ दिन और चलेगा, या जो युद्धविराम हुआ था उसे बढ़ाया जाएगा, परंतु समय के साथ युद्ध निश्चित रूप से समाप्त होगा और अमेरिका के साथ गठबंधन भी बनेगा। उसके बाद एशियाई महाद्वीप में भारत, पाकिस्तान और चीन के युद्ध का समय आएगा। यह समय मैंने भविष्य मालिका शास्त्र में निश्चित रूप से देखा है: जिस समय चीन के साथ युद्ध होगा, ठीक उसी समय भारत में चौहान नाम का एक व्यक्ति होगा — यह शास्त्र में लिखा है — और ठीक उसी समय चीन के साथ युद्ध होगा। यह मालिका में लिखा है। कोई बात नहीं, सब जगन्नाथ जी की इच्छा है। भारत सुरक्षित है। भारत के लोग सुरक्षित हैं। यहाँ धर्म है। यहाँ चार धाम हैं। यहाँ राम हैं, यहाँ कृष्ण हैं, यहाँ शंकर भगवान का कैलाश है। भय नहीं है — हमें केवल धर्म का पालन करना है, क्योंकि धर्म की भूमि में यदि हम धर्म का पालन न करें, तो हमारी रक्षा कैसे होगी? जिस देश को धर्म की भूमि कहा जाता है, उस देश के नागरिकों को भी धर्म का पालन करना चाहिए। त्रिसंध्या सबसे बड़ा ब्रह्म तत्त्व है; यह आपका उद्धार करेगी। सभी को धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:43:40 · 15 अप्रैल 2026

सत्र 185 · प्रश्न 3236–3244

L201: Iran–America Ceasefire फेल = भारत–पाक युद्ध की शुरुआत? 😨 | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 19 अप्रैल 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3236 आज का चिंतन-विषय: ईरान–अमेरिका युद्धविराम — यह क्या है, और इसका भविष्य क्या है?

उत्तर: (मंडी, हिमाचल से बोलते हुए, जहाँ भागवत कथा का कार्यक्रम चल रहा है।) प्रत्येक मनुष्य को इस जानकारी की आवश्यकता है; समय को समझना चाहिए, और समय को समझकर अपना कर्म और अपनी विचारधारा उसी के अनुसार बनानी चाहिए। आज पूरे विश्व में यह सबसे बड़ा, सबसे महत्वपूर्ण विषय है — यह कार्यक्रम जो द्वितीय विश्वयुद्ध (अर्थात् अगले विश्वयुद्ध) से पहले चल रहा है। हमने पहले ही विचार किया था कि इस युद्धविराम का भविष्य क्या होगा: अमेरिका और इज़राइल का ईरान के साथ कुछ समय तक युद्ध होगा, और युद्ध के बाद गठबंधन भी होगा। अगला चरण मध्य-पूर्व में एक अरब संगठन है — विश्व के सभी मुस्लिम देशों के एकीकरण का समय बहुत निकट है। यह पिछले चार-पाँच वर्षों से बन रहा है, परंतु अब यह समय एक निर्णायक बिंदु की ओर बढ़ेगा और गठबंधन पूर्णता तक पहुँचेगा। और इस युद्धविराम के बाद भी विश्व में और नए-नए युद्ध भड़केंगे। युद्ध ऐसे समाप्त नहीं होगा — युद्धविराम होगा, फिर आरंभ होगा, फिर समाप्त होगा, फिर आरंभ होगा; ऐसे ही चलता रहेगा। हमारे देश के लिए, सनातनियों के लिए, हमारे नागरिकों के लिए सबसे बड़ी बात यह है: सभी मुस्लिम देशों का जो आने वाला एकीकरण है, वह भारत के विरुद्ध विरोध के रूप में आएगा। विरोध पहले भी था और आज भी है, परंतु अब यह पूर्ण हो जाएगा। और जैसा मैंने पहले कहा था, 2026–27 में भारत–पाकिस्तान का जो युद्ध हुआ था, वह फिर आरंभ होगा। तो इसमें हर्ष का कोई कारण नहीं है; विश्व के लिए शोक का कारण है। मानव सभ्यता के लिए एक युद्ध का रुकना लाभदायक है। हम सभी मनुष्यों को अपना मानते हैं, हम सभी मनुष्यों को अपनी दृष्टि से अपना देखते हैं। युद्ध कभी समाधान का सूत्र नहीं है, युद्ध कभी विकास का सूत्र नहीं है, युद्ध कभी पूर्णता का विषय नहीं है — एक युद्ध अनेक समस्याएँ उत्पन्न करता है। आज मध्य-पूर्व का युद्ध समाप्त हुआ; यह मानव सभ्यता के लिए बहुत अच्छी बात है। परंतु एक संगठन बनेगा, और उस संगठन के कारण एशिया महाद्वीप की स्थिति बहुत गंभीर हो जाएगी। उस संगठन में चीन भी होगा, सभी मुस्लिम देश होंगे, और अमेरिका तथा नाटो के सदस्य देश भी होंगे। परंतु बात यह है कि यह युद्ध मध्य-पूर्व में समाप्त होता है और फिर दूसरा आरंभ होना है — तो हमें, भारत के लोगों को, भविष्य के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि भविष्य में युद्ध निश्चित रूप से होगा। एक बात छिपी हुई है — चीन की बात। चीन आज जो सोचता है और अपना मत बताता है, उससे भी आगे जाएगा; वह भी उनके साथ मिलकर भारत के विरुद्ध कार्य करेगा। विश्व के बड़े देश, अमेरिका जैसे देश, पूरे विश्व को अपनी मुट्ठी में रखना चाहते हैं। यह संभव नहीं है और होगा भी नहीं — इस समय, जो धर्म की स्थापना का समय है, उसका क्या मूल्य है? युद्ध में पूरे विश्व में मानवता की बहुत बड़ी हानि होगी, और भविष्य लिखा है: मानव सभ्यता के लिए अमेरिका उत्तरदायी है, और जो विश्वयुद्ध का क्षेत्र बनेगा, उसके लिए अकेला अमेरिका ही उत्तरदायी है। इस विचारधारा में युद्ध समाप्त नहीं हुआ है, समय समाप्त नहीं हुआ है, धर्म और अधर्म का हिसाब समाप्त नहीं हुआ है। इस समय पाप बहुत बढ़ गया है, और पाप बढ़ने के कारण विश्व में विनाशकारी स्थितियाँ चल रही हैं। जो पहले देखा गया था — कि अमेरिका और ईरान फिर समझौता करेंगे — वह हो गया। और एक प्रश्न आता है: क्या भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होगा? निश्चित रूप से होगा। परंतु इस बार उस युद्ध में सभी मुस्लिम देश और अमेरिका पाकिस्तान को अपना पूरा समर्थन देंगे। शास्त्र में लिखा है कि उसके साथ चीन भी युद्ध करेगा, और वही समय अब चल रहा है। इसलिए हमारे सबसे बड़े रक्षक भगवान हैं। भगवान के अतिरिक्त भारत की रक्षा कोई नहीं कर सकता। भारत के रक्षक स्वयं भगवान हैं — जगन्नाथ, कृष्ण, राम। तो जितने भी युद्ध आएँ, जितने भी विनाशकारी तत्त्व आएँ, उन शक्तियों को दो मोर्चों पर लड़ना पड़ेगा: एक ओर वे भौतिक तत्त्वों से लड़ेंगी, दूसरी ओर उन्हें आध्यात्मिक तत्त्वों की लड़ाई का भी सामना करना पड़ेगा। आध्यात्मिक शक्ति — भगवान महाविष्णु की शक्ति, कल्कि भगवान की शक्ति — और सरकारों की सेनाओं व सैन्य बलों की भौतिक शक्ति: भारत-विरोधी शक्तियों को दोनों शक्तियों से लड़ना पड़ेगा। जिस समय वे भारत से लड़ेंगी, ठीक उसी समय उनके अपने देशों में बड़ी प्राकृतिक आपदाएँ आएँगी — प्राकृतिक विपत्तियाँ — उनका सामना भी करेंगी और हमसे लड़ेंगी भी। जितना वे

लड़ेंगी, उतने ही भगवान के प्रहार आएँगे, और अमेरिका जैसे देश प्राकृतिक युद्ध में पराजय स्वीकार करेंगे, क्योंकि वे आगे नहीं बढ़ पाएँगे; चाहे धन हो या तकनीक, कुछ काम नहीं आएगा। तो भविष्य मालिका की एक अंतिम रिपोर्ट है। अंतिम रिपोर्ट क्या कहती है? वह कहती है कि युद्ध होगा; सभी मुस्लिम देश भारत के विरुद्ध कार्य करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है; चीन भारत के विरुद्ध कार्य करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है; और आगे वे भारत पर अनेक प्रतिबंध-आदेश लगाएँगे, अनेक नियम लागू करेंगे, मिलकर भारत को परेशान करेंगे और तैयारी करेंगे, क्योंकि वे पहले भारत की आर्थिक स्थिति तोड़ना चाहते हैं और फिर युद्ध करना चाहते हैं। तो इसे भी विचार में लेना चाहिए। वे भारत की अर्थव्यवस्था तोड़ने के लिए भारत पर तरह-तरह के नियम लगाएँगे, परंतु उनकी अपनी अर्थव्यवस्था टूटेगी — उनकी रक्षा कोई नहीं कर सकता। आध्यात्मिक युद्ध में धर्म विजयी होता है; भौतिक युद्ध में पापी विजयी होते हैं। आध्यात्मिक युद्ध आरंभ हो चुका है। और जो गलत साधनों से भारत के विरुद्ध अन्यायपूर्ण युद्ध करेंगे, उन्हें भी अपना सबक मिलेगा। विश्व के सभी देशों से — अब भी समय है। यदि वे सनातन की और भगवान की शरण में आएँ, धर्म को अपनाएँ, और यदि सभी मनुष्य सनातन धर्म की परंपरा का पालन करें — त्रिकाल संध्या (तीनों काल की उपासना), भागवत पाठ, माधव नाम भजन, यज्ञ, अनुष्ठान — तो मानव सभ्यता बचाई जा सकती है। युद्ध से केवल 10–20% प्रभावित होंगे; मुख्य पीड़ा प्राकृतिक प्रलय से होगी — पंचभूतों का जो भयंकर समय आ रहा है। फिर भी, यह सबसे बड़ा विचार है: जिन शक्तियों ने अतीत में भारत के विरुद्ध युद्ध किया, वे न भारत में रह सकीं और न भारत को हरा सकीं; उन्हें भारत छोड़कर जाना पड़ा। और इस बार वह समय नहीं है — इस समय सत्ययुग आ रहा है। जिसके साथ धर्म है, उसी की विजय होगी। हमारे देश में धर्म है, पुण्य है, पवित्रता है, भगवान हैं, देवता हैं — तो इस देश का (अहित) कौन कर सकता है? इसलिए भारत के सभी लोगों के लिए, इस समय धर्म को धारण कीजिए; और भारत का जो गौरवशाली इतिहास हमने बीते युगों में, बीते समयों में देखा, उस धार्मिक शक्ति के बल पर — उस इतिहास को धर्म में परिवर्तित करना होगा। हमें धर्म की ओर आना होगा। युद्ध होगा, विनाश होगा — इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं, इसमें कोई सुधार नहीं होगा। परंतु बात यह है कि सभी मुस्लिम देश और अमेरिका भारत की अर्थव्यवस्था तोड़ने का प्रयास करेंगे, युद्ध भी करेंगे, बार-बार धमकी देंगे, और कई बार आक्रमण भी करेंगे — आतंकवाद और ऐसी सब गतिविधियाँ चलती रहेंगी। फिर भी, धर्म सदा बलवान है, धर्म सदा टिकता है, धर्म सदा स्थापित रहता है, और धर्म को आज तक कोई तोड़ नहीं सका। तो यह युद्धविराम हमारे लिए कोई नई खबर नहीं है, परंतु मानव सभ्यता के लिए यह बहुत अच्छी बात है। मानव सभ्यता की रक्षा होनी चाहिए। युद्ध से साधारण मनुष्यों की बहुत बड़ी हानि होती है, और ईरान में, मध्य-पूर्व में, साधारण लोगों की भारी हानि हुई। वह अन्याय है, और जिन लोगों ने वह अन्याय किया, जिन्होंने लोगों की वह हानि की, वे ही फिर आपस में मिल गए हैं। ऐसे लोग विश्व में बहुत होंगे, परंतु धर्म कम होगा। हमें धर्म को पकड़े रहना है; धर्म के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है। दो वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं — 26, 27 — जब युद्ध का समय चल रहा है। यदि भगवान उसे टाल दें तो बात अलग है, परंतु शास्त्र के अनुसार 2026–27 में युद्ध है। फिर भी भविष्य मालिका लिखती है कि युद्ध की जो एक 'बेला' (अवधि) शेष है, वह भगवान कल्कि के आदेश पर है; उनका आदेश और उनकी विचारधारा शास्त्रों से मेल खा सकती है या शास्त्रों से भिन्न भी हो सकती है — यह भगवान जानते हैं, हम नहीं जानते। और शास्त्र में लिखा है कि 26–27 तक पाकिस्तान के साथ यह युद्ध होगा, और लिखा है कि सब मिलकर भारत के विरुद्ध कार्य करेंगे, और चीन बिना किसी सूचना के, बिना चेतावनी के आक्रमण करेगा। एक बात और: ठीक इसी समय भारत के सभी लोगों को धर्म की ओर आना चाहिए। सभी संप्रदायगत परंपराओं से ऊपर उठकर वैष्णव की — अर्थात् भगवान विष्णु की — उपासना होनी चाहिए। यदि इस समय हम अपने परिवार की, देश की, सबकी सुरक्षा चाहते हैं, तो हर घर में भगवान विष्णु की पूजा कीजिए; हर घर में भागवत पाठ हो; हर घर में माधव नाम हो; और हर घर में सात्त्विक भोजन हो। क्योंकि अतीत में हमने देखा है कि न तकनीक हमारी रक्षा कर सकी और न विज्ञान; यदि वे तब हमारी रक्षा नहीं कर सके, तो इस बार समस्या अधिक भयंकर, अधिक गंभीर और अधिक शक्तिशाली होगी। इसलिए हमारी धार्मिक शक्ति — सनातन विष्णु, जगन्नाथ, कृष्ण, राम की उपासना — हर घर में होनी चाहिए, और माधव नाम का जप होना चाहिए। माधव नाम प्रभावशाली नाम है; कलियुग के अंत में इस नाम का बहुत महत्व है, क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि जो माधव नाम का जप करेंगे वे जन्म-मृत्यु से पार हो जाएँगे। तो इस समय इस ऑनलाइन बैठक को सुनने वाले सभी से मेरा निवेदन है: त्रिकाल संध्या कीजिए, माधव नाम भजन कीजिए, और हर घर में भगवान विष्णु की पूजा कीजिए; तब हमारे घरों में और हमारे देश में बहुत आनंद आएगा। परंतु समय अच्छा नहीं है। आगे विश्व के बहुत-बहुत देशों में और हमारे देश में भी सूखा पड़ेगा; यह सूखा पूरी कृषि व्यवस्था को नष्ट कर देगा; महँगाई बढ़ेगी और इसके कारण देश के लोगों को बहुत कठिनाई भोगनी पड़ेगी। तो धर्म ही विजय है, अधर्म ही विनाश है। इस अमेरिका–ईरान युद्धविराम के बारे में मैंने आपको एक पॉडकास्ट में पहले ही बता दिया था, और आज फिर बता रहा हूँ: आगे वे सब मिलकर भारत की ओर

आएँगे। परंतु भय नहीं है, शोक नहीं है। रूस हमारे साथ दृढ़ता से खड़ा रहेगा, और रूस भारत के साथ मिलकर विदेशियों को उत्तर देगा। रूस के साथ जापान भी आएगा। आगे विश्व की बड़ी शक्तियाँ भी भारत के साथ जुड़ेंगी, और भारत के साथ मिलकर वे भी असुरों से, भारत-विरोधियों से लड़ेंगी। तो यह युद्ध अकेले का युद्ध नहीं है; यह युद्ध साझा युद्ध होगा। इस साझा युद्ध में कई बड़ी शक्तियाँ भारत के साथ होंगी — जापान होगा, रूस होगा, और दूसरे चरण में फ्रांस और जर्मनी भी भारत के साथ सजग होकर आएँगे। तो यह धर्मयुद्ध होगा; धर्मयुद्ध में भारत विजयी होगा, भारत विश्वगुरु बनेगा, विश्व में सनातन धर्म की स्थापना होगी, और पूरे विश्व के सभी मनुष्य सनातन धर्म को अपनाएँगे। यह समय आ रहा है। परंतु जिन देशों ने आज युद्ध में युद्धविराम किया है — प्राकृतिक आपदा से कोई युद्धविराम नहीं होगा। सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा मध्य-पूर्व में होगी, और यूरोप में, अमेरिका में, उत्तरी अमेरिका में, दक्षिण अफ्रीका/अफ्रीका में। और चीन तथा पाकिस्तान जैसे देशों में भूकंप पर भूकंप, सूखा, अकाल, रोग और बीमारी होगी — एक समय आएगा जब मनुष्य के शरीर का मांस गल जाएगा और केवल हड्डियाँ बचेंगी। तो चीन और पाकिस्तान के लिए समय बहुत भयंकर स्थिति की ओर जा रहा है। यद्यपि वे युद्ध की तैयारी कर रहे हैं, परंतु मेरे विचार में उनका और उनके देश का कल्याण धर्म की ओर आने में है; पर यदि वे युद्ध के माध्यम से भारत के विरुद्ध कार्य करेंगे, तो उनके सभी साधारण लोग भी प्राकृतिक, भौतिक प्रलय भोगेंगे — क्योंकि इस समय दिक्-प्रलय (तत्त्वों का प्रलय) होगा, एक ऐसा प्रलय जिसे सभ्यता की कोई शक्ति रोक नहीं सकती। जुड़े हुए सभी भक्तों को धन्यवाद और साधुवाद। माधव सबका कल्याण करें। त्रिकाल संध्या अवश्य कीजिए, भागवत और नाम भजन कीजिए। इस समय युग का अंत होगा; 2032–34 में सत्ययुग आएगा — इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। और मौसम बदलता रहेगा; कब कौन-सा मौसम आएगा, कब कौन-सी स्थिति बनेगी, मनुष्य बिल्कुल नहीं बता पाएगा। परंतु बचने का एकमात्र उपाय है धर्म को अपनाना। त्रिकाल संध्या धर्म की रक्षा का एक ही मार्ग है; उसके अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है। माधव नाम एक ही मार्ग है; उसके अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है। तो हर घर में भागवत, हर घर में त्रिकाल संध्या, हर समय माधव नाम का जप — यह मनुष्य को आने वाली सबसे बड़ी आपदाओं से बचाएगा। यह बिल्कुल निश्चित है कि धर्म रक्षा करेगा; धर्म के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। बस इसका पालन कीजिए। और आगे हम देखेंगे कि वे भारत पर कौन-से प्रतिबंध लगाते हैं, कौन-से कर, कौन-से टैरिफ़ लगाते हैं, क्या होता है — हम प्रतीक्षा करेंगे और समस्या देखेंगे; और वे कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि भारत पर हमला करेंगे, यह-वह — हम उसकी प्रतीक्षा करेंगे। उसके बाद हम फिर एक ऑनलाइन बैठक में आकर आपके साथ चिंतन करेंगे। स्थिति देवताओं के हाथ में है; स्थिति मनुष्य के हाथ में नहीं है। जब आग जलती है, तो आकर्षण में उसके पास आने वाले सभी भी जलते हैं। तो जहाँ यह युद्ध की आग जल रही है, वहाँ यह कहना कि 'हम विजय प्राप्त करेंगे' — यह स्वयं को जलाने का ही एक तरीका है। विश्व के देशों के पास अब भी समय है — वे भारत के विरुद्ध न जाएँ; यदि वे भारत के विरुद्ध गए तो अपने ही विनाश को निमंत्रण देंगे, और प्राकृतिक आपदा को संभालना उनके लिए कठिन होगा। यह भगवान का देश है, धर्म का देश है, और इस समय पृथ्वी पर, भारत पर कल्कि भगवान की बहुत बड़ी कृपा है — वे विश्व के लिए आए हैं, केवल भारत के लिए नहीं आए हैं; परंतु जो भारत के विरुद्ध अधर्म-युद्ध करेंगे उन्हें उचित उत्तर मिलेगा। लोग जान जाएँगे कि यह कैसे हो रहा है: उनकी तकनीक ऐसे ही विफल हो जाएगी, उनका मिसाइल सिस्टम ऐसे ही विफल हो जाएगा, कल्कि उनके नेटवर्क सिस्टम को ऐसे ही बंद कर देंगे, प्राकृतिक आपदा ऐसे ही आ पड़ेगी, और सेना के लिए लड़ना कठिन हो जाएगा। तो बहुत अच्छा समय — हम सत्ययुग की ओर जा रहे हैं। मानव सभ्यता के लिए आनंदमय समय, आनंदमय इतिहास आ रहा है। इसमें दुखी होने जैसा कुछ नहीं है; यह महान आनंद का समय है, धर्म की रक्षा होगी। इस समय मानवता का कल्याण होगा, एक नए युग का निर्माण होगा, और नए युग में सभी मनुष्य सुखी होंगे और शांति से रहेंगे। इसके लिए हमें संघर्ष करना पड़ेगा, और यह संघर्ष धर्म से आरंभ हुआ है और धर्म से ही समाप्त होगा। (अंत में:) भविष्य शास्त्र से जो कुछ कहा गया था — कि अमेरिका के साथ युद्धविराम होगा, कि युद्ध रुकेगा — देखिए, सब सत्य की ओर बढ़ रहा है। भविष्य शास्त्र में लिखा था कि जिस समय चीन के साथ विवाद होगा, उस समय भारत में चौहान नाम का एक व्यक्ति महत्वपूर्ण पद पर होगा; यह भी आगे सत्य होगा, आप देखेंगे। तो भविष्य शास्त्र से हमने जो बातें कहीं — कि गर्मी के मौसम में बर्फबारी होगी, ठंड पड़ेगी, और लोगों को भागना पड़ेगा — ये लोगों ने देख ली हैं। क्या गलत है, क्या झूठ है? शास्त्र में कभी असत्य नहीं होता; असत्य मनुष्य की सोच में है। हम ब्राह्मण हैं, हम मानव कल्याण के लिए शास्त्र का पाठ करते हैं; हमारा विचार यही है कि मानवता पर कृपा हो और मानवता का उद्धार हो। मैं सभी भक्तों से कहना चाहता हूँ: धर्म मत छोड़िए। यह उसका समय नहीं है — इस समय में धन बड़ी संपत्ति नहीं है; एक समय आएगा जब धन तो होगा, परंतु धर्म कम होने के कारण मनुष्य जीवित नहीं रह पाएगा। आपने वर्तमान स्थिति में देखा है कि माधव नाम और त्रिकाल संध्या कितने आवश्यक हैं; आप स्वयं हर तत्त्व की परीक्षा कर रहे हैं। बहुत सी भविष्यवाणियाँ थीं — कौन-सी भविष्यवाणी सत्य हुई? कुछ भी सत्य नहीं होता,

क्योंकि सत्य शास्त्र है, सत्य भगवान का वचन है; मनुष्य के वचन में क्या हो सकता है? तो मनुष्य के वचन के पीछे मत भागिए। भगवान विष्णु का तत्त्व, जगन्नाथ का तत्त्व, मानव उद्धार का यह परम तत्त्व — हमें इसी का पालन करना चाहिए। हम मानव सभ्यता का, विश्व के सभी मनुष्यों का भला करेंगे। किसी भी मनुष्य से हमारा कोई भेद नहीं है; भेद केवल धर्म और पाप के बीच है, पाप और पुण्य के बीच है — और पाप-पुण्य के भेद पर हम समझौता नहीं करते। हमारी कोई दूसरी विचारधारा नहीं है। मानवता का कल्याण हो, सबका कल्याण हो; हम इसी न्यायपूर्ण विचारधारा पर चलते हैं। हमारी जगन्नाथ संस्कृति कहती है: 'मन्नाथ श्री जगन्नाथ, मद्गुरु श्री जगद्गुरु, मदात्मा सर्वभूतात्मा, तस्मै श्री गुरवे नमः' — जो मेरी आत्मा में है वही विश्व के सभी मनुष्यों में है; हर मनुष्य में भगवान हैं, हमारे शरीर में भगवान हैं, हमारे गुरु जगन्नाथ हैं, और विश्व का प्रत्येक मनुष्य भगवान का एक छोटा-सा रूप है। यही हमारी विचारधारा है। परंतु पाप और पुण्य के साथ हम समझौता नहीं करते; जो भी मनुष्य, चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय का हो, पाप करेगा उसे दंड अवश्य मिलेगा। उस दंड से बचने के लिए अब भी समय है — धर्म को जीएँ, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, माधव नाम का जप कीजिए; इसी में आपका कल्याण है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:23 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3237 पंडित जी, आपने हमें बताया था कि कई जगहों पर आग लगेगी। आज हर जगह इतनी आग लग रही है — लगभग 250, 300, 500 घर जल गए हैं। तो लोग पूछते हैं: हमारी सुरक्षा के लिए, त्रिसंध्या के अलावा, क्या हमें अग्नि देवता के लिए कोई मंत्र जपना चाहिए ताकि घर की रक्षा हो?

उत्तर: जय जगन्नाथ। देखिए, अग्नि-प्रलय से रक्षा पाने का सबसे बड़ा उपाय यह है कि हर घर में भगवान विष्णु की पूजा होनी चाहिए — एक फोटो या एक मूर्ति — और त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ और माधव नाम। जिस भी घर में यह होगा, उस घर को अग्नि-प्रलय से रक्षा मिलेगी। और हर घर में, खाना बनाने से पहले, भोजन बनाने से पहले, जब हम गैस का चूल्हा जलाएँ, तो 11 बार माधव नाम का जप करें और उसमें थोड़ी-सी चीनी, या मिश्री, या गुड़ — एक बूँद, थोड़ा-सा — डालें, प्रणाम करें, और फिर उस अग्नि पर भोजन बनाएँ; अग्नि देव भी संतुष्ट होंगे। और अग्नि-प्रलय से रक्षा पाने का सबसे बड़ा उपाय यही है कि हर मनुष्य को प्रतिदिन, हर समय भगवान विष्णु के माधव नाम का जप करना चाहिए। सब कुछ इसी नाम में है। अग्नि-प्रलय पूरे विश्व में हो रहा है, केवल भारत में नहीं, और ऐसा समय आएगा कि आकाश से भी आग बरसेगी। गर्मी इतनी बढ़ जाएगी कि जंगलों में आग लग जाएगी, कुछ घरों में आग लगेगी, कुछ वाहनों में बैटरियाँ फट जाएँगी — यह सब और इससे भी बहुत कुछ होगा, क्योंकि गर्मी बहुत बढ़ जाएगी। अभी ठंड और गर्मी चल रही है — यह भगवान की कृपा है — लेकिन आगे इतनी गर्मी होगी कि सहन करना कठिन होगा, और अचानक आग लग जाएगी। लेकिन केवल माधव नाम और त्रिकाल संध्या — उन्हीं में रक्षा का सूत्र है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:20:46 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3238 जय श्री माधव, पिता श्री जी, आपके चरणों में मेरा प्रणाम। प्रभु की कृपा से आठ महीने से अधिक हो गए हैं कि मैं त्रिसंध्या कर रहा हूँ। प्रभु महा कल्कि मुझे स्वप्न में दर्शन कब देंगे? मुझे क्या करना चाहिए? मैं बहुत असमंजस में रहता हूँ।

उत्तर: ठीक है — आपको कल्कि भगवान के दर्शन होंगे। एक काम कीजिए: आप त्रिकाल संध्या तो करते ही हैं; सोने से पहले 108 बार माधव नाम का जप कीजिए, और एक अध्याय पढ़िए — श्रीमद्भागवत महापुराण का नारायण कवच अध्याय — और भगवान से प्रार्थना कीजिए: 'प्रभु, मेरे स्वप्न में आइए और दर्शन दीजिए।' मेरी दृष्टि में भगवान अवश्य दर्शन देंगे; यह 15–20 दिनों के भीतर हो जाएगा। कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:22:55 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3239 मेरा नाम बलिराम तिवारी है। मेरे अपने पिताजी पंडित हैं। जब मैं मालिका प्रचार (भविष्य मालिका का प्रचार) और भक्ति करता हूँ, तो वे मुझे रोकते हैं और कहते हैं कि इनमें से कुछ भी नहीं होने वाला। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: सब कुछ पवित्र है; और सबसे अधिक पवित्र हैं हमारे माता-पिता — उनकी इच्छा पूरी कीजिए। एक पुत्र के रूप में, अपने माता और पिता की इच्छा पूरी करना सबसे बड़ा कर्म है। और भजन करना, भक्ति करना, शास्त्रों को पढ़ना हर सनातनी का अधिकार है; इससे व्यक्ति में अनुशासन आता है, चरित्र में परिवर्तन आता है, मानसिक शक्ति बढ़ती है, स्मरण शक्ति बढ़ती है, और सबसे बढ़कर ग्रह-दोष नष्ट होता है, जिससे व्यक्ति को अपमृत्यु (असमय मृत्यु) से भी रक्षा मिलती है। तो अपने माता-पिता का लक्ष्य पूरा कीजिए। धर्म करने के लिए दिन में आधा घंटा या एक घंटा देना चाहिए — इतना तो देना ही चाहिए। लेकिन पढ़ाई को पूरा महत्व दीजिए। अपने माता-पिता के लक्ष्य को पूरा करना, एक धार्मिक सनातनी के नियमों में, पुत्र का सबसे बड़ा कर्म है; उसका पालन कीजिए। ठीक वही कीजिए जो आपके माता-पिता चाहते हैं — यही आपका धर्म है, और इसी में आपको पुण्य मिलेगा। और जब भी हो सके, पाँच मिनट के लिए त्रिकाल संध्या कीजिए; त्रिकाल संध्या में पाँच मिनट लगते हैं, यह चलते-फिरते भी की जा सकती है। इस प्रकार आपका धर्म, आपकी आयु, आपका यश, और आपका भविष्य व वर्तमान सब सुरक्षित रहेगा। जय जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 00:24:00 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3240 मेरा नाम प्रवीण कांत श्रीवास्तव है। क्या राजा परीक्षित जी और शुकदेव जी ने भी जन्म लिया है? अगर लिया है, तो वे कहाँ हैं और उनकी क्या भूमिका है?

उत्तर: जय श्री... देखिए, राजा परीक्षित और शुकदेव जी ने जन्म नहीं लिया है। वे वैकुंठ में हैं और वैकुंठ में ही रहेंगे। उनके आने की कोई आवश्यकता नहीं है, और शायद इसीलिए भगवान ने उन्हें नहीं बुलाया है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:25:46 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3241 पिताजी, आपके चरणों में कोटि-कोटि नमन। मेरे पिताजी पिछले दो सप्ताह से बीमार हैं — उन्हें हर्पीज़ वायरस हो गया है। वे निरंतर त्रिकाल संध्या, भागवत पुराण का पाठ और माधव नाम जाप करते हैं, और उन्होंने नारायण कवच भी शुरू किया है, पर कुछ खास असर नहीं हुआ। कृपया कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: बाबा से कहिए कि (दशावतार) अवतार का श्लोक पढ़ें — एक-एक करके, तीन बार करें — और कल्कि अवतार का श्लोक जपते रहें: 'म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालं धूमकेतुमिव किमपि करालम्, केशव धृत-कल्कि-शरीर, जय जगदीश हरे।' या फिर यह मंत्र: 'अथासौ युग-सन्ध्यायां दस्यु-प्रायेषु राजसु, जनिता विष्णु-यशो नाम कल्किर्जगत्पतिः।' वे इस मंत्र को दिन से लेकर रात तक जपें, और जो त्रिकाल संध्या वे करते हैं उसमें एक-एक माला बढ़ा दें, और माधव की शरण में जाकर कहें, 'प्रभु, मुझे मेरे कर्म से उबार दीजिए।' जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:26:08 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3242 जय श्री माधव पंडित जी, हम दिल्ली से हैं। आपने कहा था कि लगातार तीन वर्ष तक त्रिसंध्या करने से ही दिव्य शरीर (दिव्य शरीर) प्राप्त होता है। पर मैं एक माँ हूँ, इसलिए कई बार यह समय पर नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में दिव्य शरीर कैसे प्राप्त होगा, उस दिव्य शरीर के क्या लाभ हैं, और सभी के लिए उसे प्राप्त करना कितना आवश्यक है?

उत्तर: जय जगन्नाथ। देखिए, हर शास्त्रीय विधि में उसका पाठ और पाठ की विधि लिखी हुई है। त्रिकाल संध्या में मैंने कहा था कि व्यक्ति द्वारा कम से कम तीन वर्ष त्रिकाल संध्या करने से व्यक्ति में एक आध्यात्मिक परिवर्तन आता है और शरीर दिव्य शक्ति की ओर बढ़ता है, और आने वाली विपरीत परिस्थितियों, पंच तत्वों के प्रलय, रोग-व्याधि और भौतिक आपदाओं से लोगों को सुरक्षा मिलेगी; व्यक्ति को आयु भी प्राप्त होगी। यही मैंने कहा था, और आज भी कहता हूँ। यदि आपने नहीं किया है, तो भी कीजिए — अभी से त्रिकाल संध्या शुरू कीजिए और समय के साथ कीजिए। देखिए, मैंने त्रिकाल संध्या को पूरी तरह सरल बना दिया है: न मैंने स्नान की कोई विधि रखी, न घर पर बैठकर करने की अनिवार्यता। कहीं भी, किसी भी दिशा में, यहाँ या वहाँ — अपना काम कीजिए, यात्रा कीजिए, कहीं गाड़ी चलाइए, कहीं बैठिए — आप जहाँ भी हों, बस मन में गंगा स्नान कर लीजिए, माता श्री गंगा का नाम तीन बार उच्चारित कीजिए, अपने कान और बालों पर हाथ रखिए, बस इतना ही कीजिए। तो अभी से शुरू कीजिए, क्योंकि त्रिकाल संध्या में केवल पाँच या छह मिनट ही लगते हैं; समय के साथ कीजिए और अभी कीजिए। माधव नाम जपिए और माधव से कहिए, 'यह मुझसे छूटे नहीं, और मुझसे ठीक से, समय पर होता रहे।' जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:27:35 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3243 पंडित जी, मैं सीतामढ़ी, बिहार से राजू कुमार सिंह हूँ। मेरा पूरा परिवार बहुत समय से त्रिसंध्या कर रहा है — मेरी माता जी और मेरी पत्नी भी करती हैं — और मेरा परिवार आपसे गुरु-दीक्षा लेना चाहता है। क्या हम आपसे गुरु-दीक्षा ले सकते हैं?

उत्तर: जय जय जगन्नाथ। देखिए, मेरी परंपरा में — अर्थात् जो कृपा भगवान ने मुझे दी है — इस कृपा में मैंने आज तक किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया; मैं किसी का गुरु नहीं बना हूँ। क्योंकि निकट समय में, 2032 और 2034 के बीच, सत्य युग आरंभ होगा, और मेरे विचार से भगवान स्वयं आगे आएँगे — कल्कि भगवान — और कल्कि भगवान ही भक्तों के गुरु बनेंगे। इसलिए भगवान कल्कि को, भगवान जगन्नाथ को अपना गुरु बनाइए। भागवत में लिखा है कि जो भी व्यक्ति 'मैं' और 'मेरा' का त्याग करता है, जो समस्त संपत्ति को स्वप्न के समान समझता है, जो परिवार को माया का एक तत्त्व समझता है जिसमें मोह कार्य करता है, और जो भगवान कृष्ण के शरणागत हो जाता है — भगवान कृष्ण स्वयं उसके गुरु बन जाते हैं; यह उन्होंने उद्धव से कहा था। तो भगवान कल्कि को अपना गुरु बनाइए; कल्कि भगवान आ रहे हैं, इसलिए कल्कि भगवान को अपना गुरु बनाइए। इसीलिए मैंने किसी को शिष्य नहीं बनाया। जब स्वयं ठाकुर जी आ रहे हैं, तो वे ही भक्तों के गुरु बनेंगे। तो मेरी शुभकामनाएँ आप सब के साथ हैं, आपको साधुवाद, और मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान आपकी सोच का संचालन करें और भगवान ही आपके गुरु बनें। और इसी विचारधारा में, भगवान को अपना गुरु मानकर अपना कर्म कीजिए। जहाँ मैं मार्ग दिखाता हूँ, उसका थोड़ा अनुसरण कीजिए: समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पाठ कीजिए, माधव नाम भजन कीजिए, और समय आने पर भगवान सिद्ध कर देंगे कि वे आपके साथ हैं। गुरु का अर्थ: गुरु व्यक्ति का उद्धार करता है, दिशा दिखाता है, और उसे मोक्ष तक ले जाता है। और यदि स्वयं भगवान विष्णु प्रत्यक्ष गुरु बन जाएँ, तो उससे बड़ा क्या हो सकता है? तो समय की प्रतीक्षा कीजिए, और अपने मन में भगवान कल्कि को अपना गुरु बनाइए; और यह किस प्रक्रिया से, किस नियम से हो सकता है, वह मैं समझाऊँगा। जय जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:29:42 · 19 अप्रैल 2026

प्रश्न 3244 मेरा नाम गुलशन सिंह राजपूत है। मनुष्य को अपना पूर्वजन्म क्यों याद नहीं रहता?

उत्तर: देखिए, यदि किसी व्यक्ति को अपना पूर्वजन्म याद रहे, तो वह ज्ञान के एक स्तर का सर्वोच्च स्तर है, जिसे 'जाति-स्मर' कहते हैं। और यह तत्त्व उसी आत्मा को प्राप्त होता है जो बिल्कुल एक शुद्ध आत्मा हो, जिसमें कोई पाप न हो — जैसे दर्पण पर जब एक छोटा-सा काला निशान आ जाता है तो वह दिखाई देता है, उसी प्रकार जाति-स्मर जैसी शक्ति एक पवित्र आत्मा, शुद्ध आत्मा को प्राप्त होती है। जाति-स्मर का अर्थ है कि वे जन्म दर जन्म दर जन्म जानते हैं — जितने भी जन्म हों, उन सबको जानते हैं। और जो लोग किसी शाप के कारण, या कुसंग के कारण, गलत दिशा में चले जाते हैं और फिर जन्म पाते हैं — पर उनका धर्म इतना महान होता है — उन्हें पूर्वजन्म का ज्ञान होता है; इसे शुद्ध आत्मा कहते हैं, या जाति(-स्मर)। तो यह अनुमति हर आत्मा को नहीं है; यह शक्ति हर किसी के पास नहीं होती। हाँ, केवल उसी श्रेणी की आत्मा इसे जान पाती है। तो जाति-स्मर से हमें कुछ नहीं मिलेगा। भगवान ने कहा है: अपना कर्म करो, अपना धर्म करो, अपने समय की परीक्षा करो, और हर क्षण को धर्म में परिवर्तित करो — क्योंकि यह एक सतत प्रक्रिया है। व्यक्ति के धर्म करने से, पूर्वजन्म को जानकर क्या प्राप्त होगा? यदि इस जीवन में हम अच्छे कर्म करें, तो अगले जीवन में हमें वह मिलेगा। और इस समय युग-धर्म की स्थापना का समय है; कलियुग समाप्त हो चुका है, सत्य युग आ रहा है, और भक्तों का भगवान से मिलन होगा। तो इसमें से कुछ भी आवश्यक नहीं है — बाबा, त्रिकाल संध्या कीजिए, आनंद में रहिए, और माधव की शरण में रहिए। सभी को धन्यवाद और साधुवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:32:31 · 19 अप्रैल 2026

सत्र 186 · प्रश्न 3245–3251

L202: बंगाल में बड़ा परिवर्तन! आध्यात्मिक बदलाव का स्पष्ट प्रमाण😨 | Pt Dr Kashinath Mishra

दिनांक: 7 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3245 (प्रारंभिक प्रवचन) बंगाल के चुनाव परिणाम से प्रकट हुआ आध्यात्मिक परिवर्तन, और भविष्य मालिका भारत के सत्य युग की ओर मुड़ने के विषय में क्या कहती है

उत्तर: जय जगन्नाथ। सनातन धर्म के समस्त अनुयायियों को तथा भारत एवं विश्व के समस्त शुद्ध मानवों को मेरा सादर प्रणाम। आज का विषय है आध्यात्मिक विकास — वह परिणाम जो बंगाल चुनाव में आया है। मैं कोई राजनीतिक व्यक्ति नहीं हूँ, न ही किसी राजनीतिक दल में हूँ। परंतु हम धर्म का समर्थन करते हैं; जो लोग धर्म के कार्य में लगे हैं, धर्म के लिए जो भी मार्ग कार्य करता है, हम उनका पूर्ण समर्थन करते हैं। और भविष्य मालिका (भविष्यवाणी-ग्रंथ) की विचारधारा में यही सिद्धांत है: आध्यात्मिक विकास सबसे पहले भारत में होगा। आध्यात्मिक विकास का अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है — जब सभी मनुष्य धर्म को और देवी-देवताओं को स्वीकार करेंगे, और धर्म द्वारा विधिपूर्वक निर्धारित नियमों एवं संहिताओं का पालन करेंगे, जब वे शास्त्रों द्वारा रचित बातों का पालन करेंगे, तब संसार में धर्म का प्रकाश बना रहेगा। और आज यह केवल कोलकाता की बात नहीं है — पूरे भारत में, एक ही समय में, एक धार्मिक दल, भारतीय जनता पार्टी, विकसित हो रहा है। लोगों ने उसे अपना मत दिया है, समर्थन दिया है; जिस राज्य में अपनी स्थिति के लिए संघर्ष चल रहा था, वहाँ जनता ने पूर्ण बहुमत दिया है। तो इसका अर्थ वही है जो मैं पहले ही कह चुका हूँ। पूरे भारत में एक आध्यात्मिक दल का शासन है, और भारत में इस समय एक आध्यात्मिक शासन चल रहा है जो धर्म पर प्रतिष्ठित है — क्योंकि धर्म यही कहता है: हमारा शास्त्र, हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति, हमारा सनातन। 2025 में मैंने एक पॉडकास्ट में इसकी चर्चा की थी: कि भविष्य में भारत के जिन राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं है, उन राज्यों में भी सरकार आएगी। यह मेरी अपनी विचारधारा नहीं थी — यह विचारधारा भविष्य मालिका पुराण की है। भविष्य मालिका पुराण में लिखा है कि पूरे भारत में कमल का फूल खिलेगा, और यह समय आ रहा है। और इस प्रथम विकास के बाद, भारत राम राज्य की ओर बढ़ेगा। भारत राम राज्य बनेगा, और उसके बाद विश्व राम राज्य बनेगा। आज संसार में जो भी कठिनाइयाँ हैं, अनेक प्रकार के धर्मों का जो प्रचार-प्रसार है, वह रुक जाएगा। सब एक ही धर्म में आएँगे, सब एक ही मार्ग पर आएँगे। धार्मिक स्थापना होने से पहले, पहले धार्मिक प्रभाव पड़ता है। मैं समाचार में पढ़ रहा था — सत्रह वर्ष बीत गए, सत्रह वर्ष, कि दुर्गा देवी का एक मंदिर बंद था; वह अब खुलेगा। माँ दुर्गा देवी जगत की कल्याणकारिणी हैं, वे माँ राधा रानी हैं। इसी समय पश्चिम बंगाल में माँ दुर्गा देवी की कृपा प्राप्त हुई है। जो भगवान की शरण में रहकर शासन करते हैं, जो राम के सहारे कार्य करते हैं — वही परंपरा बढ़ रही है। और यह भविष्यवाणी-ग्रंथ में भी लिखा था; भविष्य शास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि पूरे भारत में कमल के फूल की पंखुड़ियाँ खिलेंगी। आज भी भारत में, और आगे जिन-जिन राज्यों में शेष चुनाव आएँगे, उन राज्यों में भी हम ऐसी ही स्थिति देखेंगे। तो यह क्यों हो रहा है? क्योंकि 2032 से सत्य युग का आगमन होगा। इस विषय में मैं पहले ही बोल चुका हूँ। और सत्य युग आने से पहले, पूरे भारत में राम नाम का प्रभाव रहेगा; राम का नाम गूँजेगा। यह पुराण में लिखा है। हम संसार के सभी मनुष्यों का सम्मान करते हैं, परंतु जहाँ धर्म है, हम पूर्ण शुद्धता से उसका समर्थन करते हैं। यह देश सनातन का देश है। यह देश हिंदुओं का देश है। इस देश में अनेक धर्मों और अनेक मतों के लोग रहते हैं — यह सत्य है। देश एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है — यह भी सत्य है। परंतु भविष्य मालिका शास्त्र कहता है: सब सनातनी बनेंगे। सभी धर्मों का समन्वय सनातन धर्म होगा। सभी मनुष्य सनातन को अपनाएँगे। केवल भारत ही नहीं — आज संसार में जितने भी देश हैं, उन सभी देशों में सनातन धर्म का प्रभाव पड़ेगा, और लोग सनातन धर्म को अपनाएँगे; पूरा विश्व सनातन बनेगा और पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना होगी। अनेक वर्षों से हमारे देश में धर्म की रक्षा के लिए, सनातन की रक्षा के लिए कार्य हुआ है, और यह समय हमारे देश में एक निर्णायक समय की ओर बढ़ रहा है — ऐसा समय जिसमें आगे केवल धर्म और धर्म ही दिखाई देगा। भगवान की कृपा उस दल पर रहेगी जिसका आदर्श धर्म है। संसार में लोग जीवों पर हिंसा करते हैं, असत्य बोलते हैं, दूसरों का अहित करते हैं। परंतु एक समय आएगा जब ऐसे मनुष्य नहीं रहेंगे जो जीवों पर हिंसा करें या दूसरों का अहित सोचें — हम

ऐसे समय की ओर बढ़ रहे हैं। आज का दिन, हमारे लिए, हमारे देश के लिए, और जो समय चल रहा है — यह परिवर्तन का समय है। हमें इस परिवर्तन की हवा में चलना है, क्योंकि समय एक नए युग के निर्माण का है। मैंने पहले बताया है कि श्री नरेंद्र मोदी जी भारत के अंतिम प्रधानमंत्री होंगे, क्योंकि यह भविष्य शास्त्र में लिखा है। मैं नहीं कहता; जो शास्त्रों में लिखा है वही हमारे लिए मंगलकारी है। उनके समय में हमें एक विश्व युद्ध में जाना है। पाकिस्तान से लड़ाई होगी, चीन से लड़ाई होगी, पश्चिमी देशों से लड़ाई होगी। उनके शासन के समय में — यह भी लिखा है। आज एक सशक्त सरकार भारत के नेतृत्व को पूरे विश्व के समक्ष प्रकट करती है; हमारे देश के दृढ़ और विश्वसनीय नेतृत्व ने पूरे विश्व में भारत का मान आगे बढ़ाया है। तो जो परिवर्तन हो रहा है — उस परिवर्तन का कारण यह है कि सत्य युग के निर्माण के लिए आधारभूमि तैयार की जा रही है। 2032 से 2034 के बाद लोग असत्य का आचरण नहीं करेंगे; सभी लोग सत्यवादी बनेंगे। लोग जीवों की हत्या नहीं करेंगे। सभी लोग धर्मशास्त्रों को सम्मान देंगे। सभी लोग भागवत पढ़ेंगे और सभी लोग त्रिकाल संध्या (तीनों काल की प्रार्थना) भी करेंगे। हमारे देश में ऐसा समय है। जब हम इस समय पर विचार करते हैं, तो यह समय हमारे लिए अनेक चुनौतियाँ ला रहा है। आगे, भारत में — और मैं विश्व की भी बात करता हूँ — अनेक राज्यों में और अनेक देशों में समय सूखे की परिस्थितियों का सामना करने की ओर जा रहा है। अन्न की महँगाई बढ़ेगी। मनुष्य संकट में पड़ेंगे। आर्थिक स्थिति में खड़े देश अपनी आर्थिक स्थिति बचाने के लिए लड़ेंगे। आगे का समय ऐसे ही समय की ओर जा रहा है। आप सब देख रहे हैं कि भगवान बद्री के क्षेत्र में, भक्तों और तीर्थयात्रियों के दर्शन के समय, वहीं जल के प्रवाह ने भक्तों को दर्शन लेने में कष्ट दिया। आप देख रहे हैं कि भगवान केदारनाथ के क्षेत्र में बर्फबारी हो रही है, ओले गिर रहे हैं, पाला है, और भक्तों के लिए संभव नहीं हो पा रहा। हमें इसमें प्रसन्न नहीं होना चाहिए। यह सिद्ध करता है: भगवान केदारनाथ कहते हैं, "अब मैं श्रृंगार का कार्य करूँगा; अब मेरे पास दर्शन द्वारा मुक्ति देने का समय नहीं है।" भगवान बद्री कहते हैं, "अब मैं धर्म की स्थापना में लगा हूँ; मेरे पास समय नहीं है, क्योंकि मनुष्य बहुत अहंकारी हो गए हैं।" आध्यात्मिक विकास और आध्यात्मिक क्षेत्र में, आध्यात्मिक दर्शन, तीर्थ पर्यटन — सात्त्विक लोगों के साथ तामसिक लोग भी जाते हैं। यदि कुछ लोग इसे अपने जीवन के सुख का साधन, घूमने-फिरने का साधन मान लेते हैं, तो भगवान कितने दिन सहन करेंगे? भगवान के दर्शन के समय, भगवान के क्षेत्र में, जो यह विपत्ति आती है, प्रकृति की ओर से जो यह विरोध आता है — जो आज हम देख रहे हैं, वह इतिहास में हमने नहीं देखा। क्यों? इस समय भगवान भी यह नहीं चाहते — वे नहीं चाहते कि मनुष्यों ने धर्म और तीर्थक्षेत्र का जो पर्यटन स्थल बना दिया है, वह चलता रहे। यह पर्यटन स्थल नहीं है। यह मुक्ति का, परमार्थ का और मानव जीवन के उत्थान का क्षेत्र है। केवल इतना ही नहीं — भारत में देवी-देवताओं के जितने भी मंदिर हैं, हर मंदिर में हम इसे कई बार देखेंगे। हमने पहले कहा है: चार धाम से एक संकेत आएगा। कौन सा संकेत? विपत्ति का, और भक्तों के दर्शन न कर पाने का। जैसे कुछ समय पहले ब्रज वृंदावन में जल-प्रलय आया था, वैसे ही श्री द्वारकानाथ के क्षेत्र में और रामेश्वर क्षेत्र में भी आपको समस्याएँ और संकेत आएँगे। भगवान बद्री और भगवान केदारनाथ के क्षेत्र में आने वाले संकेत विनाशकारी संकेत दे रहे हैं। यह आगे भी होता रहेगा। तो यह समय अच्छा नहीं है; यह समय परिवर्तन का समय है। यह समय युग-परिवर्तन का समय है, और इस समय मानव सभ्यता में एक महान परिवर्तन — एक आध्यात्मिक क्रांति — भारत से आरंभ होकर पूरे विश्व पर अपना प्रभाव फैलाएगी और स्थापित होगी। पहले भगवान के भक्त आध्यात्मिक विकास का नेतृत्व लेंगे, जो आज हो रहा है, और एक समय आएगा जब देवी-देवता मनुष्यों के साथ मिलकर यह नेतृत्व लेंगे और पूरे विश्व में इसे स्थापित करेंगे। तो हमारे देश के सभी धर्मों, जातियों और वर्णों के लिए, सभी मनुष्यों के लिए एक ही संदेश है: हमारे पास समय नहीं है। हमें सात्त्विक बनना है। हमें सत्त्वगुण पर आधारित सिद्धांतों को स्वीकार करना है। हमें भगवान राम की शरण में जाना है, कल्कि की शरण में जाना है। इसके अतिरिक्त हमारे लिए रक्षा का कोई सूत्र नहीं है। भगवान कल्कि की महान कृपा इस देश पर है — आज भी है, कल भी थी, और आगे के समय में उसका प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा; वह समय भी आएगा। युद्ध रुका नहीं है। किसी भी समय — मैंने पहले कहा है — चीन और पाकिस्तान की ओर से बड़ा खतरा है। अमेरिका की ओर से बड़ा खतरा है। तुर्की की ओर से भारत की ओर खतरा है। भीतर से वे लोग काम कर रहे हैं, जो बाहर प्रकट नहीं होता, और अचानक, आकस्मिक रूप से, किसी भी समय वे भारत पर युद्ध थोप देंगे। परंतु महाभारत में हमने क्या देखा है? इतिहास में भी हमने देखा है, महाभारत में भी हमने देखा है — सदा आसुरी तत्त्वों ने, लोगों की आसुरी परंपरा ने धर्म और सनातन और सात्त्विकता पर प्रहार किया, और पहले वे यह प्रहार करते हैं — जो आज भारत की स्थिति है — और उसके बाद उनकी पराजय भी होती है; यह भी हमने देखा है। कौरवों ने युद्ध थोपा और वे पराजित हुए। एक समय अच्युतानंद ने लिखा था (श्लोक उद्धृत): जब अधिक मास चलेगा, उसी समय भगवान बड़े-बड़े राष्ट्रों का घमंड तोड़ेंगे। कोई महान हो, बहुत शक्तिशाली हो, आर्थिक रूप से या सामर्थ्य में, चाहे जो भी देश हो — उसका घमंड नहीं रहेगा। अमेरिका ने पहले ईरान पर युद्ध थोपा, और इस युद्ध में वे विजय प्राप्त नहीं कर सके, और लड़ाई

अब भी जारी है — चाहे वह मानसिक लड़ाई हो, कूटनीतिक लड़ाई हो, या अस्त्र-शस्त्रों की लड़ाई हो, लड़ाई अब भी चल रही है। कोई देश स्थिति का समाधान नहीं कर सका, क्योंकि बड़े देशों का, और बड़े लोगों का घमंड चूर-चूर होगा। तो यह वही समय है। हर मनुष्य को घमंड और अहंकार से दूर रहना चाहिए, क्योंकि भगवान किसी का घमंड नहीं रखेंगे, और धर्म ही सर्वप्रमुख सिद्धांत है, जिसे पूरे विश्व और समस्त मानवता को स्वीकार करना ही होगा। उस समय पंचभूतों का खतरा, भूकंप का खतरा, युद्ध का खतरा, रोग, महामारी, सूर्य देव की गर्मी का बढ़ना — यह विश्व के लिए विनाशकारी संकेत की सूचना है। इस समय हमें धर्म को थामे रखना होगा। धर्म के बिना हमारा आगे जाना बहुत कठिन है — यह संभव ही नहीं है। तो इस सत्संग में जुड़े सभी सज्जन, शुद्ध भक्तों से मेरा निवेदन: मैं धर्म के विकास की बात करता हूँ। मैं जाति-भेद में विश्वास नहीं करता। मैं हर जाति का सम्मान करता हूँ। जब भगवान आते हैं, उसी समय वे पूरे विश्व की हर जाति और हर धर्म को बदलते हैं और एक नए धर्म की स्थापना करते हैं। जब भगवान चैतन्य महाप्रभु आए, तो उन्होंने मुसलमानों, हिंदुओं, ईसाइयों को — जो भी मनुष्य है, उसे — उपदेश दिया और मानव धर्म का उपदेश देकर मनुष्यों को वैष्णव बनाया। और इस समय जब भगवान आते हैं, या शास्त्रों की पद्धति से कल्कि भगवान आ चुके हैं, वे भी समस्त मानव सभ्यता के उत्थान के लिए आए हैं। वे किसी निर्दिष्ट धर्म या जाति के लिए नहीं आते, क्योंकि भगवान सबके हैं और भगवान सभी लोगों का कल्याण करते हैं। आगे के समय में उत्थान के लिए, मानव सभ्यता के लिए, केवल एक ही धारा है। कलियुग में सभी धाराएँ प्रचारित हुई हैं, सभी नियम प्रचारित हुए हैं, परंतु सत्य युग के लिए केवल एक ही परंपरा शेष है, जिसे हम त्रिकाल संध्या धारा कहते हैं। और त्रिकाल संध्या के बिना मानव सभ्यता को बचाना संभव नहीं है। कोई भी मनुष्य, कोई भी जाति, किसी भी धर्म के लोग — यदि वे त्रिकाल संध्या का पालन करते हैं, तो वे लोग सत्य युग में जाएँगे। भगवान हर मनुष्य में हैं। सभी मनुष्य भगवान की संतान हैं। सभी मनुष्यों का कल्याण करना सनातन का मूल भाव है। हम भी सभी मनुष्यों का कल्याण चाहते हैं। परंतु आध्यात्मिक विकास हो, आध्यात्मिक मार्ग का विकास हो, जिससे उसके प्रभाव में मठों और मंदिरों तथा धर्म केंद्रों की रक्षा हो, और फिर धर्म आगे बढ़े। तो भारत और विश्व के सभी मनुष्यों के लिए, यह समय स्वतंत्रता का संदेश देता है। मानव स्वतंत्रता, जीवों के प्रति करुणा, और भगवान के नाम का भजन — ये मनुष्यों के लिए सबसे बड़ी संपत्ति बनने वाले हैं। सभी मनुष्यों से मेरा निवेदन है: वही बनिए। और केवल सात्त्विक ही नहीं — सात्त्विक होने के साथ-साथ भगवान कल्कि की शरण में जाइए, क्योंकि भगवान कल्कि के अतिरिक्त कौन रक्षा करेगा? भविष्य मालिका में लिखा है कि हिंदू से आरंभ होकर सभी धर्म विलीन हो जाएँगे और पूरे विश्व में एक ही धर्म होगा। भविष्य मालिका शास्त्र में जो कुछ लिखा है — उसका एक शब्द, एक वचन भी कभी गलत सिद्ध नहीं हुआ, न होगा। इसलिए मैं दृढ़ता से कहता हूँ: आगे सभी धर्मों का समन्वय होगा और सभी धर्म सनातन की महान परंपरा में मिलेंगे। सनातन से ही सभी संप्रदाय आए; यह पृथ्वी, यह सप्त द्वीप और नौ खंड पृथ्वी के बने, सूर्य, चंद्र, ग्रह और नक्षत्र बने। हर आत्मा में सनातन का बीज है। तो यह समय आ रहा है जब सब सनातन धर्म में मिलेंगे और सभी मनुष्य सनातन धर्म का पालन करेंगे। हमारे पास अब भी समय है। आज से समय निकल नहीं गया है। अब भी, यदि लोग धर्म की ओर आएँ, त्रिकाल संध्या करें, भागवत पाठ करें, समस्त मानव सभ्यता का कल्याण चाहें, और मन में कोई भेदभाव न रहे, तो लोग सत्य युग में जाने के योग्य बन जाएँगे। मानव सभ्यता का विरोध करके हम सत्य युग में नहीं जा सकते। हमें मानव सभ्यता को एक परंपरा, एक ही परिवार मानना होगा। ऐसे विचार से, ऐसे भावों से, पूरे विश्व में सनातन की स्थापना होगी। और यह शास्त्र में बिल्कुल लिखा है: पूरा विश्व सनातन बनेगा, पूरे विश्व में सनातन धर्म की स्थापना होगी, और सभी मनुष्य सनातन धर्म को अपना धर्म मानकर अपनाएँगे। लोगों को संयमी बनना चाहिए — अर्थात् मनुष्य को विचार में आत्म-संयम का आश्रय लेना ही होगा। सत्य युग कैसे आएगा? आज मनुष्यों के भीतर जो भेदभाव का विचार है, वह बदलेगा। जिस दिन तामसिक विचारधारा की परंपरा सात्त्विक विचारधारा की परंपरा में परिवर्तित होगी, उसी दिन सत्य युग आएगा। और जब ऐसा समय आएगा, तो देवी-देवता भी जागृत होंगे, और देवी-देवता भी मनुष्यों के साथ मिलकर कार्य करेंगे। तो हम विश्व की समस्त मानव सभ्यता को एक संदेश देना चाहते हैं: आज तक भविष्य मालिका शास्त्र में जितनी भी परंपराएँ, सिद्धांत और विचार हैं, वे सत्य हुए — वह सत्य पहले से ही शास्त्र में रचित था, और आज मैं जो कह रहा हूँ वह भी आगे उसी प्रकार होगा। तो भारत और विश्व के सभी सनातनियों से, सभी सज्जनों से, सभी जातियों, धर्मों, वर्णों से बिना किसी अपवाद के, मैं एक संदेश देना चाहता हूँ: सत्य का त्याग मत कीजिए। सत्यनिष्ठा ही हमारी रक्षा करेगी। और जीवों पर दया — चींटी से आरंभ करके, छोटे जीवों से आरंभ करके, गौ माता से आरंभ करके, बड़े जीवों तक। यदि मानव सभ्यता इन दो सिद्धांतों को अपना ले, तो आने वाली विपत्तियों में मानव सभ्यता का महान कल्याण होगा। और त्रिकाल संध्या का सिद्धांत एक महान परंपरा है जो मानव सभ्यता के लिए रक्षा-कवच बनेगी। ऐसा समय आ रहा है जब दवाइयाँ काम नहीं करेंगी। जो भी दवा खाएगा, उसका उपचार नहीं होगा, और कहीं-कहीं दवाएँ प्रतिक्रिया भी करेंगी। वह समय — 2028 के बाद आप उसका प्रतिबिंब

देखेंगे, और वह धीरे-धीरे बढ़ेगा, एक साथ नहीं, और बढ़ते-बढ़ते, 2032 तक पूर्ण रूप से आध्यात्मिक विचार, और तब लोग आयुर्वेद पर आकर रुकेंगे। ऐसा समय आएगा। आपने अनेक भविष्यवाणियाँ देखी हैं, अनेक पॉडकास्ट देखे हैं — परंतु क्या वे सत्य हुए? वे सत्य नहीं होते। क्योंकि अच्युतानंद ने लिखा है कि लोग भविष्य मालिका पुराण पढ़ेंगे और भविष्य के विषय में भविष्यवाणी करेंगे, परंतु कहेंगे, "यह हमारा अपना वचन है," कहेंगे, "यह ग्रह-योगों का वचन है।" परंतु आज देखिए, कितने पॉडकास्ट, कितने भविष्यवक्ताओं के वचन झूठे सिद्ध हुए हैं। केवल भविष्य मालिका पुराण ही सत्य होगा। वह भगवान का वचन है; वह पंडित काशीनाथ मिश्र का वचन नहीं है। वह वचन महापुरुषों, नित्य पंच सखा और जगन्नाथ महाप्रभु की कृपा का वचन है। उसे कौन अलग कर सकता है? तो हम लगभग 40 वर्षों से इसका प्रचार कर रहे हैं, क्योंकि हमें पहले से ही यह अनुभव था कि ऐसा समय आएगा। और आज, समय का जो प्रतिमान हम देखते हैं वह परिवर्तन की ओर बढ़ता है: शासन के स्तर पर परिवर्तन होता है, आध्यात्मिक स्तर पर परिवर्तन होता है, सामाजिक स्तर पर परिवर्तन होता है, मार्गों के स्तर पर परिवर्तन होता है। अच्युतानंद ने लिखा है: जब भविष्य मालिका पुराण के मूल सिद्धांत हिंदी, अंग्रेजी और अनेक भाषाओं में प्रकाशित होंगे, तब उसी ग्रंथ को पढ़कर अनेक परंपराएँ और अनेक व्यक्ति उसे अपनी भविष्यवाणी कहेंगे, भविष्य मालिका का नाम नहीं लेंगे, उसे अपनी भविष्यवाणी घोषित करेंगे — उसी समय वह वचन व्यर्थ हो जाएगा और उसमें कोई फल नहीं आएगा। और हम उसका प्रमाण देख रहे हैं। अरे, यह भविष्य मालिका ही है जिसने आने वाले समय के विषय में पूरे विश्व को मार्गदर्शन दिया, और आज लोगों ने उसे व्यक्तिगत वचन बना दिया है। भविष्य मालिका का प्रचार कीजिए — इसमें महान आनंद है। आपको कल्कि भगवान की कृपा मिलेगी, आपको कल्कि भगवान का आशीर्वाद मिलेगा। और कल्कि भगवान के बिना, हमारी रक्षा कौन करेगा? इस समय भगवान जगन्नाथ की महान कृपा है। भविष्य शास्त्र की रचना जगन्नाथ महाप्रभु के नित्य पंच सखा ने भगवान चैतन्य महाप्रभु के अवतरण के समय की थी; यह ग्रंथ मानव सभ्यता के उत्थान के लिए रचित है और हर मनुष्य को इसके प्रचार का अधिकार है। परंतु इसे अपना वचन कहकर प्रचारित मत कीजिए; इस वचन को, इस शास्त्र को सम्मान न देना, और उसे अपना वचन कहना शास्त्र के विरुद्ध है। और इसीलिए कुछ समय के लिए, भविष्य मालिका के सिद्धांतों में जो भी तिथियाँ और समय दिए गए हैं, उनमें परिवर्तन भी आते हैं। मैं अनेक चैनलों पर देखता हूँ कि लोग तिथियाँ बताते हैं: "इस तारीख को यह होगा।" क्या आपने कभी उस तारीख को कुछ होते देखा है? और वे इतनी दृढ़ता से कहते हैं मानो वे ब्रह्मज्ञानी हों, मानो वे ब्रह्मदर्शी हों, मानो महान सिद्ध ऋषियों की परंपरा के हों। ऐसे विचार से कोई लाभ नहीं होता, और आज तक उनका कोई वचन सत्य नहीं हुआ — जिन्होंने तिथियाँ दीं। भविष्य मालिका में लिखा है कि लोग अपने विचारों से, अपने अहंकार से इसका प्रचार करेंगे, और इसे अपना वचन बना देंगे, और भगवान उसे निष्फल कर देंगे। इसीलिए भगवान ने एक ग्रंथ रचा जिसका नाम भविष्य मालिका पुराण है; उस पुराण में भगवान का वचन है, और भगवान को सम्मान देते हुए उस वचन का प्रचार होना चाहिए। तो, भारत के लोगो, भारत के हर नागरिक, आगे हमें आध्यात्मिकता की ओर बढ़ना है। और समय के साथ, भारत में, हर राज्य में एक सरकार, एक शासन, एक मार्ग; हमारे देश में एक सशक्त शासन होगा और देश की प्रगति भी होगी और मनुष्यों की रक्षा होगी, जिससे हमारे देश का शासन और संविधान मानव सभ्यता के कल्याण के लिए बहुत अच्छी तरह उपयोग में आ सके। वह समय आ रहा है जब पूरे भारत में, विश्व में, हर राज्य में, हर क्षेत्र में एक जगन्नाथ मंदिर बनेगा। जब कल्कि भगवान आएँगे, वे पूरे भारत और विश्व के हर क्षेत्र में जगन्नाथ मंदिर का कार्य स्थापित करेंगे, और जगन्नाथ महाप्रभु सबके आराध्य देव होंगे — समय इसी ओर बढ़ रहा है। तो सभी से मेरा निवेदन: जाति, धर्म या वर्ण में विश्वास मत कीजिए। एक ही विश्वास — मानवता; एक ही विश्वास — जीवों पर दया; एक ही विश्वास — भगवान के प्रति श्रद्धा। तो सभी धर्मों और जातियों को भुलाकर, हम मानव सभ्यता के कल्याण के लिए कार्य करेंगे। हम एक हैं। हमारा विश्व एक है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' — उस विचारधारा को हम पुनः स्थापित करेंगे, और भारत के हर नागरिक का इस पर अधिकार है; हर मनुष्य में यह गुण है। उस गुण के प्रकाश को बाहर लाने का समय आ गया है। तो आज एक बार फिर — हमारे देश की एकता और अखंडता, भारत के संविधान के प्रति हमारी गंभीरता और उत्तरदायित्व, मानव सभ्यता के कल्याण और सनातन की स्थापना के साथ — क्योंकि सनातन की स्थापना के बिना पृथ्वी नहीं रहेगी, पृथ्वी टुकड़ों में टूट जाएगी। यदि सनातन धर्म की स्थापना नहीं हुई, यदि पूरे विश्व में सनातन धर्म का पुनः आत्म-सम्मान के साथ पालन नहीं हुआ, तो पंचभूतों के प्रलय में विश्व के महाविनाश का समय आ रहा है। तो धर्म की रक्षा आवश्यक है, और धर्म को लाना भी आवश्यक है। यह कार्य हम सब करेंगे। भगवान कल्कि की कृपा सब पर बनी रहे। अहमदाबाद में तरणा और उत्तर प्रदेश में संभल — इनमें से एक क्षेत्र में, तरणा में, कल्कि धाम की प्रतिष्ठा पहले ही हो चुकी है। मैं वहाँ गया था। भगवान कल्कि के अच्छे भक्त, जो अपने गुरुदेव की कृपा से आज भी कल्कि भगवान की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वहाँ हैं। और संभल क्षेत्र में, जिसे शास्त्र भगवान कल्कि का जन्मस्थान कहता है — (भागवत श्लोक उद्धृत): 'सम्भल-ग्रामे मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति' — भगवान कल्कि का जन्मस्थान संभल में है; वहाँ संभल में, जो आज उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में है, जगद्गुरु प्रमोद कृष्णम जी ने भक्तिपूर्वक कार्य आरंभ किया है। उस पर भगवान की कृपा, कल्कि भगवान की कृपा है — हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री ने उसका शिलान्यास किया है। क्योंकि समय कल्कि के आगमन के समय की ओर, या उनके प्राकट्य के समय की ओर बढ़ रहा है। आगे का समय आ रहा है, और इस समय केवल कल्कि भगवान ही सभी मनुष्यों की रक्षा कर सकते हैं। कल्कि भगवान का नाम माधव है, और यदि आप माधव नाम का भजन करें, तो आपका उत्थान हो सकता है। कोई भी बड़ी विपत्ति, कोई भी बड़ी समस्या जो आपके सामने आ रही है, कोई भी समस्या जिसका समाधान कभी नहीं हुआ, वह हल हो जाएगी; और त्रिकाल संध्या आपको आने वाली विपत्तियों, आपदाओं और समस्याओं से तथा प्रकृति और पंचभूतों के आने वाले प्रलय से बचाएगी, और आपको सत्य युग का मनुष्य बनाएगी। और सत्य युग में सब त्रिकाल संध्या कैसे करेंगे? अभी से आरंभ कीजिए, आज से। तो मैं एक बार फिर सभी भक्तों को प्रणाम करता हूँ, और बंगाल में अच्छी सरकार बने, जनता का कल्याण बना रहे, सभी मनुष्यों की रक्षा बनी रहे — हम भगवान से सभी मनुष्यों के कल्याण की प्रार्थना करते हैं। हमारे देश के नेतृत्व पर भी भगवान की महान कृपा है। आज देश के नेतृत्व ने भारत की नीति, परंपरा और आदर्शों को विश्व में सम्मानित कराया है, और यह प्रशंसा की बात है। और इस समय हम सब भारतीय, एकजुट होकर, सनातन की ओर चलेंगे और पुनः सनातन धर्म का निर्माण करेंगे। कोई वैचारिक भेद नहीं रहेगा, कोई मतभेद नहीं रहेगा। यही भविष्य मालिका पुराण कहता है, जो मैंने आपको बताया है — और यह मेरा मत है। सभी को धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:03 · 7 मई 2026

प्रश्न 3246 जमशेदपुर से राहुल कुमार: पंडित जी, प्रणाम। पिछले तीन वर्षों से मेरी माताजी गैस और पेट की समस्या से परेशान हैं। बहुत से डॉक्टर, दवाइयाँ और एंडोस्कोपी तक कराने के बाद भी कोई राहत नहीं है। जब वे शौचालय जाती हैं तो 12 से 15 घंटे लग जाते हैं, इसलिए वे एक दिन छोड़कर ही जाती हैं, और उस दिन उनकी त्रिकाल संध्या भी छूट जाती है। हमें लगता है कि यह परेशानी तीन साल पहले तेज़ बुखार की एक दवा से शुरू हुई। जाँच के बाद पेट में कोई बड़ी समस्या नहीं मिली, पर गैस पूरे शरीर को जकड़ लेती है और बाहर नहीं निकलती। कृपया इसके समाधान के लिए कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, हमारी सबसे बड़ी परंपरा — शास्त्र में लिखा है: 'जप, दान... सर्व निष्फलम्... अरे, नाम-कीर्तनानु बिना' — अर्थात् जब भगवान का नाम नहीं है तो सब निष्फल है; और युग के अनुसार भी नाम ही है। फिर भी, आपकी माताजी को नियमित रूप से त्रिकाल संध्या करनी चाहिए। और मैं कहता हूँ, इस विपत्ति के लिए, दवा लेने से जो यह प्रतिक्रिया हुई है — उसके लिए नारायण कवच नामक एक स्तोत्र है, जो भागवत महापुराण में है; उसे अपनी माताजी को दिन में तीन बार सुनाइए, या उन्हें स्वयं पढ़ने को कहिए। इसमें परिवर्तन आएगा; वह अचानक नहीं आएगा, धीरे-धीरे आएगा। तो उसी दृष्टिकोण से कीजिए। और जब भी मेरी भागवत कथा होती है — इस समय मैं मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में भागवत कथा के लिए हूँ — भागवत कथा के समय, जब मैं कथा पढ़ता हूँ, तब आप मुझसे पूछ सकते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 00:41:05 · 7 मई 2026

प्रश्न 3247 पंडित जी, प्रणाम। मेरा प्रश्न है: क्या 64,000 भक्तों का एकत्रीकरण पहले ही हो चुका है? आपसे जुड़ने के लिए बहुत से समूह बन रहे हैं — क्या सभी समूह किसी मंडल में सम्मिलित होंगे? और कानपुर के लोग किस मंडल में आते हैं?

उत्तर: देखिए, कानपुर मंडल अयोध्या मंडल के अंतर्गत आता है। इस समय भारत में और विश्व में भविष्य मालिका पुराण का प्रचार हो रहा है। हमारा मुख्य चैनल 'कल्कि अवतार ऑफिशियल' है, और बहुत से चैनल इसका प्रचार करते हैं। मेरा अपना कोई आश्रम नहीं है, न कोई निश्चित निवास। हम घूमते रहते हैं और धर्म का प्रचार करते हैं। तो, आप लोगों को धर्म अपनाने के लिए — त्रिकाल संध्या अपनाइए, भागवत का पाठ अपनाइए, माधव नाम का भजन कीजिए। और कभी-कभी चैनल के माध्यम से या समूह के माध्यम से जो भी संदेश जाता है, उसका पालन कीजिए। हमारा ऐसा कोई विशेष समूह नहीं है, कोई विशेष कार्यक्रम नहीं है। आज तक जितने भी लोग मुझसे जुड़े हैं, मैं सबको देखता नहीं हूँ और सबको जानता नहीं हूँ — क्योंकि अन्य विचारधाराओं की तरह नहीं, जहाँ वे लोगों को एक सभा में साथ बिठाकर अपने संगठन को मज़बूत करते हैं; यह संगठन आध्यात्मिक प्रचार का संगठन है, और इस आध्यात्मिक प्रचार से आप स्वयं, अपने आप जुड़ सकते हैं। और कभी-कभी, भक्तों ने जो समूह बनाए हैं, उनके माध्यम से भी आप कार्य के विषय में जान सकते हैं। हमारा कोई निर्दिष्ट स्थान नहीं है जहाँ मैं बैठकर लोगों के साथ विचार-विमर्श करूँ। इसी प्रकार, ऑनलाइन माध्यम से, भागवत प्रचार से, भागवत कथा से, जगन्नाथ पंचरात्र से, कल्कि कथा से मैं धर्म का प्रचार करता हूँ, और भविष्य मालिका पुराण शास्त्र का प्रचार करता हूँ जिसकी रचना भगवान की कृपा से, नित्य पंचसखा की कृपा से हुई। तो आप अयोध्या मंडल में हैं — क्योंकि भविष्य मालिका में लिखा है कि 16 मंडल बनेंगे, और उन 16 मंडलों में से एक, अयोध्या मंडल में, आप वर्तमान और भविष्य के नियमों से आ सकते हैं। जय जय श्री राम।

► यह उत्तर सुनें · 00:43:21 · 7 मई 2026

प्रश्न 3248 तिवारी जी: ब्रह्म एकाक्षर मंत्र क्या है? मैं त्रिकाल संध्या करता हूँ, पर मेरे घर में प्याज और लहसुन बनता है। मना करने पर भी वे ध्यान नहीं देते, और मैं छोड़ना चाहता हूँ पर विवशता में खा लेता हूँ। कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए, कोई भी मनुष्य एक दिन में ऋषि नहीं बनता। कोई भी मनुष्य एक दिन में संत नहीं बनता। इसलिए समय चाहिए। यही कारण है कि जो त्रिकाल संध्या धारा मैंने प्रचारित की है, उसमें मैंने लोगों से कहा है कि वे बिना स्नान के भी, मन में गंगा-स्नान करके त्रिकाल संध्या कर सकते हैं — क्योंकि पहले लोग करना तो शुरू करें, और समय के साथ वे भी संस्कारी बनेंगे, वे भी साधु-संतों जैसे बनेंगे। तो हम अभी प्याज और लहसुन का विरोध नहीं करते। प्याज और लहसुन राजसिक आहार हैं, उत्तेजक आहार हैं, परंतु वे मांसाहार नहीं हैं। जो जीव-हत्या से उत्पन्न होता है उसे हम नॉन-वेज कहते हैं; उसे हम आमिष आहार कहते हैं। पर प्याज और लहसुन राजसिक तथा उत्तेजक आहार हैं। और लहसुन में बहुत से औषधीय गुण भी हैं जो कलियुग के मनुष्य के लिए आवश्यक हैं। इसलिए घर में प्याज-लहसुन का विरोध मत कीजिए, और समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। माधव नाम का भजन कीजिए। अपने माता-पिता का सम्मान कीजिए। माता-पिता का सम्मान करने से ही हम भगवान को प्राप्त कर सकते हैं और सत्य युग प्राप्त कर सकते हैं। और अपने समय की प्रतीक्षा कीजिए — तब वह समय आएगा जब लोग प्याज और लहसुन छोड़ देंगे। वह समय अभी नहीं है; इसलिए इस पर चिंतन करके दुखी नहीं होना चाहिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:46:06 · 7 मई 2026

प्रश्न 3249 राजस्थान से भरत माली जी: जय श्री माधव, पंडित जी। मैं आपके बताए मार्ग पर चल रहा हूँ, पर मेरे जीवन में शांति नहीं है। परिवार में कमाई को लेकर निरंतर विवाद रहता है। मेरी तीन दुकानें पहले ही बंद हो चुकी हैं। व्यापार चलता नहीं, हर बार घाटा होता है। अभी भी माल घर में पड़ा है, और फिर से विवाद की संभावना है। कृपया बताइए मैं अब क्या करूँ।

उत्तर: आपका व्यापार मंगल दोष के कारण नहीं चल रहा है — इसी कारण व्यापार आगे नहीं बढ़ पा रहा। एक काम कीजिए: त्रिकाल संध्या तीन बार के बजाय छह बार कीजिए। और माधव नाम का निरंतर भजन कीजिए। इससे शांति आएगी। और साथ ही रोज़गार एवं नौकरी के लिए भी कहीं प्रयास कीजिए — उसमें आप सफल हो सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:47:51 · 7 मई 2026

प्रश्न 3250 महाराष्ट्र से हेमंत लिचड़े: मैं धारा का पालन करता हूँ, पर मुझे लगातार पायल की आवाज़ सुनाई देती रहती है। कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे कोई ज़ोर-ज़ोर से नृत्य कर रहा हो। मैं रात में जागकर सारे कमरे देखता हूँ पर सब सामान्य लगता है। यह किसका संकेत है? वह आवाज़ केवल मुझे ही सुनाई देती है, घर के अन्य सदस्यों को नहीं। और नागपुर में सात दिन की कथा कब होगी? मेरी भागवत कथा सुनने की तीव्र इच्छा है।

उत्तर: बिल्कुल — आगे नागपुर में कथा होगी। भारत के हर राज्य में कथा होती है। अभी कथा भोपाल में होगी; फिर भोपाल में दो कथाएँ हैं, और दो कथाओं के बाद हम कोरबा जाएँगे, जो छत्तीसगढ़ में आता है — वहाँ की कथा 1 मई से होगी; और कोरबा से, 1 जून से; फिर कोरबा के बाद कानपुर में कथा है। तो आगे भी कथाएँ होंगी। परंतु नृत्य की जो यह आवाज़ आती है — वह आवाज़ बंद हो जाएगी। कभी कथा में आइए और हम इसका समाधान कर देंगे। पर इसके लिए चिंता या दुखी होने का कोई कारण नहीं है। अपने स्वभाव के अनुसार यह आप पर कोई प्रभाव नहीं डालती। बस एक काम कीजिए: सोने से पहले भक्तिपूर्वक 108 बार माधव का भजन कीजिए, और माधव नाम, त्रिकाल संध्या एवं सभी नियमों का पालन करते हुए माधव से कहिए: 'प्रभु, मुझे इस आवाज़ से दूर रखिए।'

► यह उत्तर सुनें · 00:48:54 · 7 मई 2026

प्रश्न 3251 माही माँ जी: माता (दिव्य माँ) भक्तों की परीक्षा कैसे लेंगी? वे भक्तों से क्या पूछेंगी?

उत्तर: देखिए, भक्तों की परीक्षा का एक रूप — देवी माता स्वप्न में भी भक्तों की परीक्षा लेंगी। और स्वप्न में, जो मनुष्य स्वप्न में त्रिकाल संध्या नहीं सुना पाएँगे — उन लोगों को रोग आएगा। ऐसे बहुत से लोगों के पास देवी माता रात में अचानक स्वप्न में आएँगी और पूछेंगी: 'त्रिकाल संध्या सुनाओ।' उससे पहले यह भी होगा — उन लोगों को पहले से ही कहीं न कहीं से त्रिकाल संध्या की जानकारी मिल चुकी होगी, और यदि वे उस जानकारी का पालन नहीं करते, या नहीं करते और बहुत समय बीत जाता है, तो देवी माता स्वप्न में आकर उनसे पूछेंगी। ऐसा समय आएगा जब प्रतिदिन देवी माता का ऐसा संकल्प हर मनुष्य की ओर आएगा; वे स्वप्न में पूछेंगी, और यदि आप स्वप्न में सुना नहीं पाए, तो यह हमारे लिए अच्छा समय नहीं है। इसलिए अभी से त्रिकाल संध्या अपनाइए — यह सबके लिए है, क्योंकि सबकी परीक्षा होगी। एक परीक्षा स्वप्न में होगी; दूसरी, वे घर-घर जाकर परीक्षा लेंगी; तीसरी, ओडिशा में चित्रोत्पला नदी के तट पर, भगवती मंदिर के पास, माता बिरजा देवी और अष्ट दुर्गा भी त्रिकाल संध्या की परीक्षा लेंगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:51:00 · 7 मई 2026

सत्र 187 · प्रश्न 3252–3260

L203: भविष्य मालिका का जो गलत प्रचार हो रहा है, उस पर स्पष्टीकरण | Pt. Dr. Kashinath Mishra

दिनांक: 7 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3252 राउरकेला से रवि शंकर प्रसाद, एक शिक्षक: मैं भौतिकी और गणित का शिक्षक हूँ और विद्यार्थियों को पढ़ाता हूँ। परंतु मालिका के विचारों में कहा गया है कि 2032 से पूरी शिक्षा प्रणाली, आंतरिक बैंकिंग, सब कुछ बदल जाएगा। तो अभी बच्चों को जो आधुनिक शिक्षा दी जा रही है, क्या भविष्य में उसका कोई उपयोग होगा?

उत्तर: देखिए, आपकी सोच बिल्कुल सत्य है। यदि हम तार्किक रूप से, दार्शनिक रूप से विचार करें, तो आपने बहुत सटीक बात कही है। परंतु बात यह है: आज यदि हमें भोजन करना है, तो हमारी शारीरिक स्थिति क्या है? हमारे स्वास्थ्य की स्थिति क्या है? और आज हम यात्रा कर रहे हैं, या हम घर पर हैं, या हमें किसी कार्यक्रम में जाना है — उस परिस्थिति के अनुसार हमें अपना भोजन लेना चाहिए। तो इसी कारण, आज की शिक्षा प्रणाली, आज का संविधान, आज के तत्त्व आज के समय के अनुसार चलते हैं। और उस आगे के समय में, जो भी व्यवस्था होगी — उसे शिक्षा पद्धति कहिए, लोगों की जीवन-प्रणाली कहिए, जो भी हो — सब कुछ उसी समय के अनुसार चलेगा। जब समय बदलता है, संसार बदलता है, और सोच बदलती है; तब मनुष्य के कर्म और व्यवहार भी बदलते हैं। जब सत्य (सत्य/सत्य युग) आएगा, तो सारी सोच बदलेगी, मनुष्य का कर्म बदलेगा, मनुष्य का आचरण और व्यावहारिक स्थिति तथा सामाजिक स्थिति भी बदलेगी।

► यह उत्तर सुनें · 00:05:27 · 7 मई 2026

प्रश्न 3253 कुछ लोग अपने चैनल पर आपकी पुस्तक (भविष्य मालिका) दिखा रहे हैं — जैसे संत रामपाल जी के अनुयायी — और उसके आधार पर दावे कर रहे हैं। कृपया इस विषय पर सभी का मार्गदर्शन करें।

उत्तर: परम पूज्य संत रामपाल जी हमारे लिए आदरणीय हैं। हम सभी संतों का सम्मान करते हैं। संतों के बिना धर्म नहीं मिलता। भारत संतों का देश है, देवताओं का देश है। इसलिए सभी संतों के प्रति मेरे हृदय में आदर है। मैं सभी संतों का सम्मान करता हूँ। और संतों के कारण ही आज संसार में सनातन धर्म बचा हुआ है। आज हम जिस स्थान पर खड़े हैं — उसे आप हमारे देश के संतों का त्याग कहें, या उनका योगदान कहें, या उनका आशीर्वाद कहें। बात यह है: आज मैंने एक वीडियो में देखा कि कुछ सज्जन भविष्य मालिका पुराण को हाथ में उठाकर कहते हैं कि इस ग्रंथ में भगवान के कल्कि अवतार के विषय में कुछ लिखा है — कि वे पहले आते हैं और फिर से अवतार लेते हैं, इत्यादि। मैं नाम नहीं लेता। परंतु मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ: भविष्य पुराण में संभल के विषय में लिखा है। हमने पाँच संभलों पर विचार किया है। पर मुख्य संभल — मुरादाबाद के संभल में भगवान कल्कि का अवतार होगा। और जो लोग यह प्रचार करते हैं, उन्हें भविष्य मालिका को स्पष्ट रूप से देखना चाहिए: जो वे प्रचार करते हैं वह ग्रंथ में लिखा ही नहीं है; ऐसा नहीं होना चाहिए। ग्रंथ मुक्ति की रचना है; यह लाखों-करोड़ों भक्तों के लिए मुक्ति का मार्ग है। और भगवान की वाणी को तोड़-मरोड़कर विकृत नहीं करना चाहिए। स्पष्ट लिखा है कि भगवान संभल में आएंगे, और मेरी पुस्तक के द्वितीय खंड में मैंने संभल माहात्म्य भी लिखा है और पाँचों का वर्णन किया है। संभल के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान का उल्लेख नहीं है। तो जो विचार वे व्यक्त करते हैं वह सत्य नहीं है; वह ग्रंथ में लिखा नहीं है। उसका प्रचार मत कीजिए — झूठा प्रचार मत कीजिए। जो सत्य है, उसी का प्रचार कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 00:07:18 · 7 मई 2026

प्रश्न 3254 मनीष: आजकल हमारे पास फोन आते हैं — आपके माध्यम से भगवान कल्कि का प्रचार पूरे विश्व में हो रहा है। दक्षिण में चेन्नई में एक विजय कुमार नायडू जी हैं, जिनका जन्म 7 मार्च 1949 को हुआ, और विकिपीडिया में भी लिखा है कि वे भगवान कल्कि हैं — उनके अनुयायियों ने वह पेज बनाया है — और वहाँ पूरा प्रचार चलता है कि वे भगवान कल्कि हैं, और वे स्वयं भी ऐसा कहते हैं। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका पुराण में उनके विषय में, उस संत के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है — कुछ भी नहीं लिखा है। और कल्कि अवतार के विषय में लिखा है कि उन्हें कोई भी पहचान नहीं पाएगा। केवल संभल के विषय में लिखा है, कि संभल कहाँ है। यदि वह व्यक्ति मुरादाबाद के संभल से होते, तो मैं विचार करता। परंतु ऐसा कुछ भी नहीं लिखा है। यह भविष्य मालिका के मत के पूर्णतः विरुद्ध है, और यह भविष्य मालिका के विचार का परिपंथी है — अर्थात् इस विचारधारा में इसमें कोई सत्य नहीं है। भविष्य मालिका ग्रंथ केवल संभल के विषय में लिखता है। यदि संभल के विषय में कोई विचार हो, तो मुझसे चर्चा कीजिए।

► यह उत्तर सुनें · 00:10:31 · 7 मई 2026

प्रश्न 3255 संजय: जो लोग आज स्वयं को कल्कि घोषित कर रहे हैं — भगवान कृष्ण जब आए थे तो उनका स्वरूप क्या था? क्योंकि रूप गोस्वामी जी जैसे टीकाकारों ने उनके बारे में कहा है 'किशोरं परम वयः' — अर्थात् भगवान की अंतिम अवस्था किशोर अवस्था है, उसके बाद न उनकी आयु बढ़ती है, न उनकी दाढ़ी आदि आती है। तो भगवान का स्वरूप क्या है? क्या कल्कि का स्वरूप भी वही है, क्योंकि वे स्वयं भगवान कृष्ण ही हैं? उनका स्वरूप कैसा होगा?

उत्तर: पहले मैं यह कहूँ: भगवान की आयु की कोई गणना नहीं होती। भगवान जब तक अपने परमधाम नहीं लौटते, तब तक एक ही स्वरूप में रहते हैं। उनके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। उन पर वृद्धावस्था नहीं आती। यदि शास्त्रों में लिखा है कि राम राज्य में, कृष्ण भगवान के राज्य में और कल्कि भगवान के राज्य में लोगों का बुढ़ापा चला जाएगा, तो भगवान पर बुढ़ापा कैसे आएगा? जो राम राज्य में थे — उनका बुढ़ापा चला गया। जो कृष्ण भगवान के राज्य में थे — उनका बुढ़ापा चला गया। और जो कल्कि भगवान के राज्य में रहेंगे — वे सभी मनुष्य 16–17 वर्ष की आयु के हो जाएँगे; सबका बुढ़ापा चला जाएगा। तो फिर भगवान पर बुढ़ापा कैसे आएगा? इसलिए भगवान कभी वृद्ध नहीं होते; उनकी आयु का अनुमान कोई नहीं लगा सकता। वे सदा दिव्य और किशोर अवस्था के प्रतीत होते हैं, जब तक वे परमधाम नहीं चले जाते। उनके बाल सफेद नहीं होते, उनके शरीर में कोई दुर्बलता नहीं आती, उनके शरीर पर कभी वृद्धावस्था नहीं आती। वे ब्रह्म हैं, वे सच्चिदानंद हैं, वे सदा सुंदर हैं, वे सदा एक नवयुवक के समान प्रतीत होते हैं।

► यह उत्तर सुनें · 00:12:13 · 7 मई 2026

प्रश्न 3256 बाबा, आप जो धारा दे रहे हैं, उसमें हमें कुछ अनुभूतियाँ होती हैं। लेकिन बहुत से लोग कहते हैं कि किसी और नाम को लेकर, या जो लोग स्वयं को भगवान घोषित करते हैं, उनसे भी उन्हें ऐसी अनुभूतियाँ हुई हैं। हम कैसे समझें कि जिस धारा में हम हैं और जो अनुभूति हमें होती है, वह सचमुच स्वयं भगवान की ही है?

उत्तर: देखिए, मैंने किसी को बाध्य नहीं किया है। मैंने किसी पर जोर-जबरदस्ती नहीं की है। मैंने किसी को मंत्र नहीं दिया है। मैं किसी का गुरु नहीं बना हूँ। मैं धर्म का प्रचार करता हूँ। जो लोग लोगों को बुलाकर उन्हें शिष्य बनाते हैं — उन लोगों के लिए शायद ऐसा कोई विचार हो सकता है। मैंने न किसी को शिष्य बनाया है, न मैं किसी का गुरु हूँ। शास्त्रों में जो लिखा है, उसका भावार्थ मैंने हिंदी में रचा है और मानव कल्याण के लिए उसका प्रचार कर रहा हूँ। कोई मेरे साथ रहे या न रहे, इससे मुझे कोई सरोकार नहीं है। मैं किसी से कभी नहीं कहता कि 'आपको मेरी बात माननी ही होगी।' यदि किसी का मन माने, तो मान लें; न माने, तो न मानें। इसमें मेरा कोई सरोकार नहीं, कोई लेना-देना नहीं। तो कोई माने या न माने, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। लेकिन हम इसका प्रचार अवश्य करेंगे, क्योंकि यह शास्त्रों में लिखा है। इसका प्रचार होना चाहिए, और जो भक्त हैं वे इसे अवश्य समझेंगे। जो भक्त नहीं हैं वे इसका खंडन करेंगे, विवाद करेंगे, विरोधाभास खड़ा करेंगे। उन लोगों से मेरा कोई तर्क नहीं, कोई विवाद नहीं; और न ही मैं उनकी विचारधारा का विरोध करता हूँ — मैंने कभी उनकी सोच का विरोध नहीं किया है।

► यह उत्तर सुनें · 00:14:26 · 7 मई 2026

प्रश्न 3257 एक भक्त पूछते हैं: जिस प्रकार भक्त दिन-रात भगवान का नाम जपते हैं, प्रेम में रोते और तड़पते हैं, उनसे मिलने के लिए भाव के आँसू बहाते हैं — क्या माधव जी की आँखें भी कभी अपने सरल हृदय वाले भक्तों से मिलने के लिए भीगती हैं? क्या वे भी उनसे मिलने के लिए व्याकुल होते हैं?

उत्तर: देखिए, भगवान ने अपने भक्तों के लिए दास तक बनना स्वीकार किया है, और दूत भी बने हैं। भक्तों के लिए — आज मैं कथा में कह रहा था — भगवान स्वर्णकार/शिल्पी बने और भक्त की इच्छा पूर्ण की, उन्होंने जगन्नाथ क्षेत्र में नारायण मुदली के लिए कंकण बनाया। तो भगवान भक्त के लिए सदा आतुर रहते हैं, और भगवान सदा भक्तों को खोजते हैं। परंतु भक्त और भगवान का यह संपर्क — इसे मैं मानवीय शब्दों में, ऑनलाइन चर्चा में कैसे समझाऊँ? इतना अवश्य कह सकता हूँ: यदि हमारे भीतर उनके प्रति पूर्ण विश्वास और तड़प हो, तो अपनी स्वयं की अनुभूति से हमें उत्तर स्वयं ही मिल जाएगा। यदि हम पूर्ण भक्ति के साथ भगवान की शरण में हैं, तो जैसा संदेह आपके मन में है, उसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि भगवान भक्तों के साथ हर क्षण, हर समय, कण-कण में हैं। वे भक्तों का उद्धार करते हैं और भक्तों को आशीर्वाद देते हैं, भक्तों को सही दिशा दिखाते हैं, और भक्तों का हाथ पकड़कर वैकुण्ठ तक ले जाते हैं। यह मैंने देखा है, सुना है, शास्त्रों में पढ़ा भी है। तो भगवान और उनकी भक्ति का, भक्तों का यह संपर्क — इसे मैं बाहरी शब्दों में कैसे वर्णन करूँ? उस संपर्क को केवल आत्मा और परमात्मा ही जानते हैं; मैं वर्णन करने का प्रयत्न भी करूँ, तो उस वर्णन से कोई पूर्ण सार तक नहीं पहुँच पाएगा। इसलिए भगवान के प्रति विश्वास और भक्ति रखिए। कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में भगवान आकर दर्शन देंगे और प्रमाण भी देंगे।

► यह उत्तर सुनें · 00:16:14 · 7 मई 2026

प्रश्न 3258 एक भक्त पूछते हैं: जैसे हम भगवान शिव का ध्यान शिव के रूप में और भगवान कृष्ण का ध्यान कृष्ण के रूप में करते हैं, वैसे ही भगवान कल्कि का ध्यान किस रूप में करें — जगन्नाथ रूप में या किसी अन्य रूप में?

उत्तर: भगवान कल्कि का ध्यान जगन्नाथ रूप में करने से आपको बहुत सहजता से दर्शन प्राप्त होंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:20:48 · 7 मई 2026

प्रश्न 3259 आपने अभी कहा कि भविष्य मालिका में लिखा है कि लोग स्वयं को कल्कि अवतार घोषित करेंगे। उनके बारे में क्या लिखा है — उनका आगे क्या होगा?

उत्तर: देखिए, लिखा है कि ऐसे बहुत से व्यक्ति होंगे — 'द्वादश', भक्तजनों के बीच तेरह व्यक्ति — अर्थात् भारत में वे स्वयं को स्वयं घोषित करेंगे, वे जाकर सभाओं में बैठेंगे, स्वयं को सिद्ध करेंगे या दूसरों से सिद्ध करवाएँगे, यह कहते हुए कि 'मैं कल्कि हूँ।' वे लोग भगवान नहीं हैं। जो कल्कि आएँगे, वे गुप्त रूप में रहेंगे। न कोई उन्हें पहचान पाएगा, न कोई उनसे वार्तालाप कर पाएगा। वे तभी प्रकट होंगे जब धर्म की स्थापना अपने बिंदु पर आएगी — वे अंत में प्रकट होंगे। उस समय शायद भारत में, संसार में, शायद ही कोई बचा होगा। तो बहुत से लोग यह स्वयंघोषित प्रचार करेंगे; इसका कोई अर्थ नहीं है। अच्युतानंद ने यह स्पष्ट किया है: जो भगवान आएँगे वे गुप्त रहेंगे, वे किसी को दर्शन नहीं देंगे। और यदि वे किसी को दर्शन ही नहीं देंगे, तो उनका दावा कहाँ से आया? उनका प्रमाण कहाँ है?

► यह उत्तर सुनें · 00:21:08 · 7 मई 2026

प्रश्न 3260 (समापन संदेश) पंडित जी का अंतिम स्पष्टीकरण एवं भक्तों को निर्देश

उत्तर: तो आज की चर्चा को हम यहीं समाप्त करते हैं। यहाँ जुड़े हुए सभी भक्तों का मैं धन्यवाद करता हूँ। भविष्य मालिका को स्पष्ट रूप से समझिए, और यदि आप भगवान के विषय में जानना चाहते हैं तो भविष्य मालिका प्रथम खंड और द्वितीय खंड की पुस्तकें पढ़िए। उनमें नित्य पंचसखा द्वारा भगवान के विषय में लिखी गई शुद्ध धारा स्पष्ट प्रमाण है। और जब कुछ लोग भविष्य मालिका लेकर कहते हैं कि भविष्य मालिका में लिखा है कि यह कल्कि अवतार हैं — तो कहीं भी कल्कि अवतार के विषय में वैसा कोई प्रमाण, कोई लेख नहीं है। केवल इतना लिखा है: सम्भल में। यदि बात सम्भल की है, तो वे लोग विचार करें — वह सम्भल क्षेत्र ही होना चाहिए, अर्थात् राजस्व ग्राम सम्भल, वह मुरादाबाद का सम्भल होना चाहिए; तभी उस पर विचार करना चाहिए, और तब आप मान सकते हैं। यदि सम्भल क्षेत्र को छोड़कर लोग किसी और क्षेत्र की बात करें कि 'हम कल्कि अवतार हैं,' या ऐसी बातों का प्रचार करें, तो उस प्रचार से दूर रहिए। जय जगन्नाथ। यही मैं आज की चर्चा में रखता हूँ। भारत और विश्व के सनातन धर्मियों, सज्जनों और संतों को मेरा पवित्र प्रणाम। अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक भगवान विष्णु के श्रीचरणों में इस दीन सेवक के अनंत कोटि प्रणाम। एक बार पुनः सभी का धन्यवाद। देखिए, 2034 तक कल्कि किसी को दर्शन नहीं देंगे। जन्म से '34 तक — उस समय वे 28 वर्ष या 30 वर्ष के होंगे — तब तक वे किसी को दर्शन नहीं देंगे। फिर लोग कल्कि कैसे बन गए? और हम किसी को कल्कि कैसे बना सकते हैं? ऐसी गलत सोच नहीं होनी चाहिए। आप सब त्रिसंध्या (तीनों समय की उपासना) कीजिए। माधव नाम का जप कीजिए। भक्ति में भगवान को देखिए। भागवत पढ़िए। सात्त्विक आहार लीजिए, और सत्य, शांति, दया और क्षमा का आचरण कीजिए। आप भगवान को प्राप्त करेंगे। आप सत्य युग में जा सकेंगे। यदि कुछ लोग मेरे विषय में इधर-उधर कुछ कहें, तो किसी की बात मत सुनिए, उस पर विचार मत कीजिए। और जो लोग अवतार के विषय में भविष्य मालिका का झूठा प्रचार करते हैं — यदि वह उस क्षेत्र (सम्भल) में नहीं है, तो उनका मत पूर्णतः असत्य है। जो कल्कि होंगे वे भी गुप्त रहेंगे — यह लिखा है — और जब भगवान प्रकट होंगे, तो वह तृतीय विश्वयुद्ध के अंतिम चरण में होगा, अर्थात् शेष समय में। तो इस समय जो लोग स्वयं को स्वयं घोषित करते हैं, या भविष्य मालिका की पुस्तक लेकर इधर-उधर की बातें करते हैं — उन बातों पर बिल्कुल विश्वास मत कीजिए। बस वही कीजिए जो मैं कहता हूँ: त्रिसंध्या, भागवत का पाठ, माधव नाम, और सत्य, शांति, दया, क्षमा का आचरण; आप सत्य युग में पहुँचेंगे, और सत्य युग में आप स्वयं भगवान से मिलेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 00:22:34 · 7 मई 2026

सत्र 188 · प्रश्न 3261–3264

L204: गौ माता और अन्य जीवों की रक्षा अभी क्यों ज़रूरी है? Pt. Dr. Kashinath Mishra

दिनांक: 18 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3261 अभी इसी समय जीव हत्या और गौ हत्या रोकना क्यों आवश्यक है? (पंडित जी द्वारा लिया गया सत्र-विषय)

उत्तर: हम शास्त्रों में पढ़ते हैं कि गौ माता की हत्या और गौचर भूमि के हड़पने/अतिक्रमण के कारण कलियुग की आयु चौदह लाख वर्ष कम हो गई, और जीव हत्या के कारण कलियुग की आयु लगभग 2000 वर्ष और कट गई। इसीलिए इस समय पृथ्वी पर बार-बार भूकंप आते हैं, और हम पृथ्वी पर पंच भूतों (पाँच तत्वों) की अनेक प्रकार की विपदाएँ देखते हैं — कारण यह है कि मनुष्य जीव हत्या का पाप कर रहा है। यह निर्देश भारत की सभी जातियों, वर्णों और धर्मों के लिए बिना किसी भेद के है, क्योंकि जो धर्म-संस्थापना होने जा रही है वह सभी मनुष्यों के लिए होगी। भगवान कल्कि का न्याय पाप और पुण्य का न्याय होगा — जिसका पाप है, उसका हिसाब देखा जाएगा; जिसका पुण्य है, उसका हिसाब भी देखा जाएगा। हमारे हाथ में समय धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। 2032–34 में सत्य युग आ जाएगा, और सत्य युग आने से पहले उसकी परम्परा पहले स्थापित करनी होती है; दिन-रात हम इसी कार्य में लगे हैं और मानव कल्याण के लिए इसका प्रचार करते हैं। मेरी अपनी कोई व्यक्तिगत परम्परा नहीं है — मैंने न किसी को शिष्य बनाया है, न मैं किसी का गुरु हूँ; परन्तु धर्म की रक्षा के लिए, सनातन के लिए, पृथ्वी और मानवता के कल्याण के लिए धर्म का प्रचार करने का अधिकार सभी को है। यदि हम जीव हत्या नहीं रोकेंगे तो पृथ्वी पर बड़े-बड़े भूकंप आएँगे। और सबसे बड़ी बात यह है कि कल्कि पुराण में एक श्लोक लिखा है — 'वेदांतु द्वापर व्यास करो अंत... मार्ग सप अति दुर्त कल्कि रूपस भूप' — कल्कि पुराण में लिखा है कि जो लोग आज तक मांस-मछली खाते हैं, जो पाप करते हैं, जो जीव हत्या करते हैं, भगवान कल्कि उनका भी उद्धार करेंगे; वे ऐसे दुष्टों का भी, शूद्रों तक का भी उद्धार करेंगे। इसलिए जो कुछ हो गया, उसे हमें भूल जाना चाहिए; हमारी तैयारी आगे के समय के लिए होनी चाहिए। शास्त्रों के विचार में यह सबके कल्याण का समय है। यदि हम सब जीव हत्या से दूर रहें — चाहे वह पक्षी हो, चाहे कीट-पतंग या पशु हो, चाहे गौ माता हो — तो हमारा कल्याण होगा और इस समय भगवान हमारा उद्धार कर सकेंगे। तो जो भी इस विचारधारा को सुन रहे हैं और आगे सुनेंगे, उन सबसे मैं कहना चाहता हूँ: जो किया सो किया, उसे भूल जाइए; अब से आगे जीव हत्या मत कीजिए, जीवों का मांस मत खाइए, जीवों का गलत ढंग से उपयोग मत कीजिए। अभी उद्धार होने का समय है। मैं चाहता हूँ सबका उद्धार हो। मनुष्य का कर्म बुरा हो सकता है — मनुष्य बुरा नहीं होता। मनुष्य के गुणों में भेद दिखाई देता है, परन्तु मनुष्य कभी बुरा नहीं होता; मनुष्य बहुत पवित्र होते हैं। हम मनुष्य की निंदा नहीं करते, हम कर्मों की निंदा करते हैं। तो जाति, वर्ण और धर्म से परे, जिन्होंने आज तक अपने विचार में और अपने कर्म में जीव हत्या और पाप किया है, उनके लिए यह सुधार का समय है, यह राज क्षमा का समय है। कल्कि पुराण के अनुसार भगवान कल्कि अच्छे और बुरे — दोनों को अच्छा बना देंगे। परन्तु यदि इस समय हम जीव हत्या और गौ हत्या से दूर नहीं रहे, तो 2032–34 में, जो धर्म-संस्थापना और सत्य युग के आगमन का समय है — और धर्म-संस्थापना तो अभी भी चल रही है — हमारा आगे बढ़ने का मार्ग बंद हो जाएगा। इसलिए यहाँ जुड़े सभी भद्रजनों से मेरा निवेदन है: कभी किसी जीव की हत्या मत कीजिए, कभी गौ माता की हत्या मत कीजिए। जब जीवों का रक्त पृथ्वी पर गिरता है, इसी कारण भूकंप आते हैं और पंच भूतों की प्रलय होती है। धरती माता अत्यंत वेदना और दुःख में भगवान से गुहार लगाती हैं। धर्म-संस्थापना चल रही है, 2032–34 में सत्य युग आएगा, विश्व युद्ध भी होगा, परन्तु मानव सभ्यता की रक्षा भी आवश्यक है — यदि मानव सभ्यता ही न रही तो संसार का अर्थ क्या? तो सम्पूर्ण मानवता का कल्याण हो; शास्त्रों ने सभी मनुष्यों को समान व्यवहार और समान मूल्य दिया है। इसलिए परम कल्याणकारी भविष्य मालिका पुराण का अनुसरण कीजिए। शास्त्रों में जो-जो लिखा था वह एक-एक कर सत्य हो रहा है, और आज हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री भी आने वाले 10 वर्षों को विपदा का समय बता रहे हैं। समय ऐसा है, इसलिए इस समय केवल संकीर्तन, नाम, भजन, कथा, दान, विचार की पवित्रता और दया करनी चाहिए। घर-घर अग्नि यज्ञ, घर-घर त्रिसंध्या, घर-घर भागवत-पठन और घर-घर माधव नाम लोगों

का उद्धार करेगा। भविष्य मालिका में लिखा है कि जब अधिक मास चलेगा, तब पृथ्वी पर बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। शास्त्र के कई विद्वान कहते हैं कि अधिक मास तीन वर्ष में एक बार आता है और ऐसे ही आता रहता है; परन्तु भविष्य मालिका पुराण कहता है कि जिस समय शनि का गोचर हो और शनि देव मीन राशि में निवास करें, यदि उसी समय अधिक मास आ जाए, तो क्या-क्या होगा? इसके विषय में नित्य पंच सखा के संत महापुरुष अच्युतानंद जी ने लिखा है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है: जब शनि मीन राशि में गोचर कर रहा हो, उसी समय 13 दिन का पक्ष या अधिक मास हो — तो संसार में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। अच्युतानंद जी ने कहा कि अनेक विपदाएँ आएँगी। किसी का गर्व, अहंकार और दम्भ नहीं रहेगा। संसार में कितना भी बड़ा धनवान हो, कितना भी बड़ा विद्वान हो, कितना भी बड़ा सामर्थ्यवान हो, इस समय भगवान किसी का अहंकार टिकने नहीं देंगे। उन्होंने एक पंक्ति लिखी — 'मनो मनो तेजो दम्भ' — अपने मन से ही दम्भ, अहंकार, गर्व, लोभ, मोह, माया छोड़ दो, और इन्द्रियों को वश में करो। और जो इनमें फँस जाएँगे — 64 प्रकार के रोग, 64 योगिनियाँ, आने वाले वायरस-जनित रोग — उन्हीं में वे मरेंगे। इसलिए गर्व, अहंकार, मोह, लोभ, माया, परधन की लालसा, असत्य और जीव हत्या इसी समय छोड़ दीजिए, क्योंकि स्पष्ट लिखा है कि जिस समय अधिक मास आएगा, किसी का गर्व और अहंकार नहीं रहेगा। देखिए, अमेरिका अहंकार कर रहा था — वेनेजुएला जैसे देश के शासनाध्यक्ष को उठा लाया और कहा कि ईरान के शासकों को भी उठा लाएगा, और ईरान में उसकी विजय बस कुछ ही दिनों में हो जाएगी। परन्तु क्या हुआ? क्या विजय प्राप्त हो सकी? पहली बार अमेरिका जैसा देश आपसी समझौता कर रहा है, संधि कर रहा है; दोनों देश एक मध्यस्थ के माध्यम से युद्धविराम लागू कर रहे हैं। तो आज अमेरिका जैसे देश का भी गर्व उठ गया। संसार के अनेक देश जो सोच रहे थे कि वे संसार के स्वामी बन जाएँगे — रूस अकेला लड़ रहा है, लगभग 21–22 देश उसके विरुद्ध लड़ रहे हैं; रूस आज भी लड़ रहा है और उसने कई क्षेत्र जीत लिए हैं। इसी समय, अधिक मास के साथ अमावस्या और संक्रांति भी एक साथ पड़ेंगी। जब अमावस्या और संक्रांति एक साथ पड़ती हैं, अधिक मास पड़ता है, और 13 दिन का पक्ष पड़ता है, तब मानव सभ्यता की बड़ी फसल कटती है। शास्त्र में लिखा है: 'यदा ज त्रिदशात्मकं भवे घोर लोक मुंड मम' — इस वर्ष भी तेरह दिन का पक्ष पड़ा है, 2022 में पड़ा था, और आगे भी पड़ेगा। 13 दिन के पक्ष से क्या होता है? जिस समय त्रयोदश पक्ष अर्थात् तेरह दिन का पक्ष होता है, उसी समय पृथ्वी पर अकाल मृत्यु बड़ी संख्या में फैलती है और पृथ्वी मुंड मालाओं (खोपड़ियों की मालाओं) से भर जाती है; उस समय पृथ्वी पर चारों ओर मुंड मालाएँ दिखाई देती हैं और मनुष्य बड़ी संख्या में मरते हैं। दूसरी बात शास्त्र में लिखी है: जब बृहस्पति (गुरु) एक ही वर्ष में अपनी अतिचारी गति के कारण तीन राशियों का स्पर्श करते हैं — गुरुदेव तीन राशियों को स्पर्श करें — तब 'तदातु सुभट कोटि भि प्रेत पूर्ण वसुंधरा': संसार में करोड़ों अत्यंत सामर्थ्यवान, अत्यंत सुंदर, अत्यंत शक्तिशाली सैनिक मरेंगे, और पृथ्वी प्रेतों से भर जाएगी। इस वर्ष भी अतिचारी गति के कारण बृहस्पति ने तीन राशियों का स्पर्श किया है। यूक्रेन और रूस में सैनिक मर रहे हैं, ईरान में सैनिक मर रहे हैं, अमेरिकी सैनिक मर रहे हैं। यह शास्त्र में लिखा है। तो समय बहुत मूल्यवान है और हमें इस समय को समझना होगा। सूरदास जी ने लिखा: 'रे मन धीरज क्यों न धरे — संभवत (संवत) 2000 के ऊपर ऐसा योग पड़े रे, मन धीरज क्यों न धरे। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चतुर दग काल पड़े रे, मन धीरज क्यों न धरे। अकाल मृत्यु जग माहँ व्यापी, प्रजा बहुत मरे रे, मन धीरज क्यों न धरे। दुष्ट दुष्ट को ऐसे काटे जैसे काठ जरे रे, मन धीरज क्यों न धरे। सहस्र वर्ष तक सत्य युग बीते, धर्म की बेल (फैले) रे, मन धीरज क्यों न धरे। स्वर्ण फूल पृथ्वी पर फूले, पुनि जगदीशा रे, मन धीरज क्यों न धरे। सूरदास कहे ये हरि की लीला, तारे न तरे रे, मन धीरज क्यों न धरे।' एक दिन सूरदास जी के शिष्य ने उनसे कहा — क्योंकि 600 वर्ष पहले बहुत पाप चल रहा था, बहुत अधर्म; कथा नहीं होती थी, लोग धर्म-स्थानों पर नहीं जाते थे, लोग झूठे हो गए थे, बहुत पाप हो गया था — तब भक्तों ने सूरदास जी से पूछा, जो भगवान के, कृष्ण के, जगन्नाथ जी के परम भक्त थे: 'यह पाप कब समाप्त होगा?' तब सूरदास जी ने कहा, 'रे मन, तू धीरज क्यों नहीं धरता — संवत 2000 के ऊपर ऐसा योग पड़ेगा।' सूरदास जी ने स्पष्ट कर दिया कि सन् 2000 के बाद पृथ्वी पर ऐसा योग पड़ेगा, इसलिए धीरज रखो और प्रतीक्षा करो कि क्या होगा। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण — संसार में जितने भी देश हैं, सब पर काल पड़ेगा और लोग दुखी होंगे; विपदा का बहुत बड़ा समय आएगा। कब आएगा? सन् 2000 के बाद। और उसमें उन्होंने बताया: 'अकाल मृत्यु जग माहँ व्यापी, प्रजा बहुत मरे' — अकाल मृत्यु; युवाओं पर, कोमल आयु के लोगों पर, पूरे संसार में विपदा आएगी। उन्होंने यह केवल भारत के लिए नहीं कहा — उन्होंने कहा 'चतुर दग', सम्पूर्ण संसार, सम्पूर्ण ब्रह्मांड। और 'दुष्ट दुष्ट को ऐसे काटे जैसे काठ जरे' — जैसे लकड़ी जलाई जाती है, वैसे ही मनुष्य मनुष्य को काटते रहेंगे; मनुष्य ही मनुष्य की मृत्यु का कारण बनेगा। कब? संवत 2000 के बाद — और वही समय अभी चल रहा है। और 'सहस्र वर्ष तक सत्य युग' — जो विचार हमने आपको भविष्य मालिका से बताया है, वही सूरदास जी ने कहा: उन्होंने कहा सत्य युग 1000 वर्ष के लिए आएगा, और हम कहते हैं 1009 वर्ष मनुष्य जीवित रहेंगे; और इसमें पूर्ण सहमति और प्रकाश है। सत्य

युग एक हजार वर्ष चलेगा और पृथ्वी पर अच्छा युग आएगा, और जगदीश — भगवान विष्णु — पृथ्वी पर अवतार लेंगे: 'स्वर्ण फूल पृथ्वी पर फूले, पुनि जगदीशा' — यहाँ भगवान के कल्कि अवतार का स्पष्ट संकेत है। और अंत में सूरदास जी कहते हैं, 'सूरदास कहे हरि की लीला, तारे न तरे' — यह वचन व्यर्थ नहीं जाएगा, इस वचन में कोई परिवर्तन नहीं होगा, यह वचन पूर्ण रूप से फलित होगा। 2000 के बाद संसार में महायुद्ध होगा, भगवान कल्कि अवतार लेंगे, और मानव सभ्यता के विषय में शास्त्रों में यही लिखा है — भविष्य मालिका पुराण, सूरदास जी, कल्कि पुराण, भविष्य पुराण और अनेक अन्य शास्त्र; पूर्ण स्पष्टता और प्रमाण मिल रहा है। इसलिए इस समय जीव हत्या मत कीजिए। जीव कोई भी हो — चींटी तक को मत मारिए। अपना पुण्य बढ़ाइए, अपना पुरुषार्थ बढ़ाइए। और मैं मानता हूँ कि यदि आप सब इसका पालन करेंगे तो आपका कल्याण होगा, मंगल होगा। हम मानवता के कल्याण के लिए दिन-रात कार्य करते हैं; मैंने किसी को शिष्य नहीं बनाया; मेरा कोई व्यक्तिगत स्वार्थ बिल्कुल नहीं है। परन्तु मेरा एक स्वार्थ अवश्य है: कि संसार में धर्म और सनातन का प्रकाश फैले और मानवता का कल्याण हो। मानवता पर आने वाली विपदा के विषय में मैं लगभग 40 वर्षों से प्रचार कर रहा हूँ, और जिस समय की मैंने चर्चा की थी वही समय आज चल रहा है, और आप हर संकेत, हर घटना, हर परिवर्तन देख रहे हैं; सारा संसार इसे स्वीकार कर रहा है। आज भविष्य मालिका का प्रचार हजार मुखों से हो रहा है। परन्तु मेरा निवेदन है: जब मैंने भविष्य के शास्त्र के 40 वर्षों के अध्ययन के बाद, नित्य पंच सखाओं की महान कृपा और आशीर्वाद से, मानवता की पूर्ण समझ के लिए इसे लिखा — तो कोई भी भविष्य मालिका का गलत ढंग से दुरुपयोग न करे। यदि आप इसका अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं, तो उस अर्थ पर मुझसे चर्चा कीजिए, क्योंकि यह शास्त्र भगवान की कृपा से हमारे द्वारा हिन्दी और कई भाषाओं में अनूदित हुआ है, इसलिए कम से कम भगवान ने इसका कुछ ज्ञान दिया है। शास्त्र को तोड़-मरोड़कर, उसे जाने बिना, पूरी श्रद्धा को समझे बिना, इधर-उधर प्रचार करने से लोग भयभीत हो जाते हैं। परन्तु वास्तव में भविष्य मालिका की रचना क्यों हुई? भय के लिए नहीं। इसकी रचना इसलिए हुई कि यदि हमारे वाहन में कोई मशीनरी की खराबी हो तो हम उसे ठीक कर लें; ताकि हमारे कर्म की भूलें, जो त्रुटियाँ हमने जाने-अनजाने की हैं, बदली जा सकें। एक स्वतंत्र चेतावनी के माध्यम से, एक सावधानी के माध्यम से, यह शास्त्र इसलिए रचा गया ताकि बिगड़ी हुई मानव सभ्यता को, मानव सभ्यता के पाप करते लोगों को, एक सात्विक, पवित्र धारा में लाया जाए और उन्हें सत्य युग का मनुष्य बनाया जाए। इसलिए यह शास्त्र मनुष्य का उद्धार करेगा; यह मनुष्य के कल्याण के लिए रचा गया है — इसमें भयभीत करने वाला कुछ भी नहीं है। बस इतना ही है: त्रिसंध्या, भागवत-पठन, माधव नाम का 15 मिनट का कार्य कीजिए; जीव हत्या मत कीजिए; सत्य बोलिए। आपका कल्याण होगा, आप सत्य युग में जाएँगे, और 1000 वर्ष के सत्य युग में आप मरेंगे नहीं; आपको अनंत सुख प्राप्त होगा, भगवान महाविष्णु का सत्संग, दर्शन और सान्निध्य मिलेगा, और आपको सभी देवताओं के दर्शन होंगे — शंकर भगवान, हनुमान जी, ब्रह्मदेव, अष्ट दुर्गा, सत्य सती माता — इन सबके। परम आनंद का समय आ रहा है। समय बिल्कुल बुरा नहीं है; यह परिवर्तन का समय है। आज भी, यदि मानव सभ्यता धर्म की ओर मुड़ जाए, सत्य बोले, विचार की पवित्रता और दया का पालन करे, त्रिसंध्या करे, जीव हत्या न करे, और सभी मनुष्यों के कल्याण की कामना करे — 'परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्', दूसरों का भला करना पुण्य है, दूसरों को पीड़ा देना पाप है — तो धर्म-संस्थापना बलपूर्वक करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, सभी मनुष्य सत्य युग में जाएँगे, तत्वों की प्रलय रुक जाएगी, विश्व युद्ध भी रुक जाएगा। भगवान की इच्छा सदा यही रहती है कि लोग बदल जाएँ और युद्ध, रक्तपात और विनाश न हो; परन्तु यदि मनुष्य नहीं बदलता तो भगवान क्या करेंगे? इसलिए मैं भगवान विष्णु से प्रार्थना करता हूँ, मैं जगन्नाथ से प्रार्थना करता हूँ: सबका कल्याण हो; सभी जातियों और धर्मों का — हिन्दू, मुस्लिम, जैन, ईसाई — सबका कल्याण हो; सभी मनुष्यों में परिवर्तन आए; सम्पूर्ण मानव सभ्यता का कल्याण हो। परन्तु यदि आप कर्म नहीं करेंगे — कल्याण का कर्म, त्रिसंध्या, भागवत-पठन, माधव नाम — और यदि आप जीव हत्या नहीं छोड़ेंगे, तो कैसे होगा? भगवान की शरण में रहिए, जीव हत्या मत कीजिए, दूसरों का अहित मत कीजिए, सबका सम्मान कीजिए; हर जाति, धर्म और वर्ण के सभी मनुष्य भारत की अखंडता और संप्रभुता के लिए एक हो जाएँ; विदेशियों के साथ जो लड़ाई आने वाली है उसमें हम सब मिलकर कार्य करेंगे, सब सनातनी बनेंगे, सब धर्म को थामेंगे, भगवान की कृपा बनी रहेगी, और हमारे भारत का सम्मान, हमारी शांति और एक सुदृढ़ भविष्य निर्मित होगा — यही मेरा विश्वास है।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:22 · 18 मई 2026

प्रश्न 3262 नेहा पांडेय जी: जय श्री माधव, पंडित जी। हम त्रिसंध्या और धारा (साधना) का पालन करते हैं, परन्तु पिछले छह-सात महीनों से हमारे घर में एक लड़की की आत्मा दिखाई देती है। वह मुझे मेरे नाम से भी पुकारती है। हम नारायण कवच और हवन भी करा चुके हैं, फिर भी यह नकारात्मक ऊर्जा नहीं जा रही। अब आप ही हमारी अंतिम आशा हैं — कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: देखिए बेटी, आप त्रिसंध्या करती हैं — यह बहुत बड़े आनंद की बात है, और भगवान आपका कल्याण करें। उस लड़की की आत्मा जो आपके घर आती है, वह आपको इसलिए पुकारती है: क्योंकि त्रिसंध्या करने से हमारे पितरों के साथ-साथ अन्य अतृप्त आत्माओं की भी गति होती है। और त्रिसंध्या के विषय में शास्त्र में लिखा है कि बार-बार त्रिसंध्या सुनने से उन आत्माओं को भी मुक्ति मिलती है। तो मैं आपको एक सलाह देता हूँ: उस अतृप्त आत्मा के लिए, उस लड़की के लिए, अपने घर के किसी पुरुष सदस्य के द्वारा श्राद्ध क्रिया करवाइए — क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी के लिए भी पिंड-दान कर सकता है और श्राद्ध क्रिया कर सकता है। उसकी दशाह क्रिया — दशाह संस्कार और सारे क्रिया-कर्म एक साथ — उज्जैन में की जाती है, और भारत के अन्य पवित्र स्थानों पर भी की जाती है: गया क्षेत्र में, पुष्कर में, प्रयाग में, और हरिद्वार में। भगवान की बहुत बड़ी कृपा होगी। घर के किसी सदस्य से उसका पिंड-दान करवाइए। और मेरी दृष्टि में, जो बेटी आकर आपको पुकारती है, उससे कहिए: 'हम तुम्हारा पिंड-दान करेंगे और तुम्हारी अंत्येष्टि क्रिया करेंगे — तुम अपना नाम बताओ।' ऐसा कार्य करने से सम्भवतः वह चली जाएगी। यदि फिर भी न जाए, तो उसके लिए मैं आपको एक प्रति-उपाय बताऊँगा, और वह भी सफल होगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:27:29 · 18 मई 2026

प्रश्न 3263 राधा रानी माँ: जय श्री माधव, पंडित जी, आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। एक सरल भक्त सद्भाव के साथ कैसे जी सकता है? हम सरल कैसे बनें और अधिक से अधिक मौन में कैसे रहें?

उत्तर: देखिए, हम सरल भक्त तब बनेंगे जब भगवान में हमारी पूर्ण निष्ठा आ जाएगी, और जब हमें यह अनुभव होगा कि संसार के सारे कार्य भगवान की इच्छा से हो रहे हैं और हम मनुष्य उनकी कृपा पर जी रहे हैं — तब हमारी सरलता बढ़ेगी। जब तक हम स्वयं भौतिक, जड़ तत्वों की सोच में उलझे रहेंगे और यही सोचते रहेंगे कि 'मैं यह कर रहा हूँ, वह वह कर रहा है, कोई मेरे विरुद्ध काम कर रहा है, कोई मेरा काम आगे बढ़ा रहा है, कोई मेरी मदद कर रहा है, कोई मेरा विरोध कर रहा है, यह मेरा शत्रु है, यह मेरा मित्र है' — तब तक सरलता नहीं आएगी। जब हमारे मन में यह विचार आएगा कि संसार में जो कुछ भी होता है वह केवल भगवान की इच्छा से होता है, कि मैं बस अपना कर्म ठीक कर लूँ और अपना पुण्य भगवान को समर्पित कर दूँ, तब संसार में कोई भेदभाव नहीं रहेगा, सब एक समान दिखाई देंगे, और भगवान की सोच को सम्मान देते हुए मनुष्य सौम्य, सरल और संत-स्वरूप बन जाता है।

► यह उत्तर सुनें · 00:29:37 · 18 मई 2026

प्रश्न 3264 पंडित जी, आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। मैं त्रिसंध्या और भागवत-पठन करता हूँ, लेकिन पिछले 5 वर्षों से एक सामान्य बीमारी चल रही है और मैं ठीक नहीं हो पा रहा हूँ। कृपया कोई उपाय बताइए।

उत्तर: देखिए, बीमारी चाहे जो भी हो, उस बीमारी का उपाय त्रिसंध्या है। यदि आप त्रिसंध्या करते हैं, तो उसे सही समय पर कीजिए। भागवत-पठन कीजिए, और अपनी बीमारी के लिए श्रीमद्भागवत महापुराण के चतुर्थ स्कंध को प्रतिदिन बार-बार पढ़िए — रात को सोने से पहले, और सुबह उसे पूरा कीजिए, बार-बार पढ़ते हुए। त्रिसंध्या में जो भागवत है, उसे भी पढ़िए। और सोने से पहले 108 बार माधव नाम का जप कीजिए। सरकार से जो दवा आपको मिलती है या जो दवा आप खरीदते हैं — दवा लेते समय सोलह नामों (माधव नाम) का जप कीजिए और फिर दवा लीजिए। इससे आप में परिवर्तन आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:31:01 · 18 मई 2026

सत्र 189 · प्रश्न 3265–3274

L205: 2026-27 Important Prediction: कितना हुआ सच? अब आगे क्या होगा | Pt. Dr. Kashinath Mishra

दिनांक: 24 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3265 (सत्र के विषय पर प्रारंभिक प्रवचन) भविष्य मालिका (पंच सखाओं का भविष्यवाणी ग्रंथ) 2026 और 2027 के लिए क्या भविष्यवाणी करती है — कितना सच हो चुका है और आगे क्या होगा?

उत्तर: भारत के, विश्व के, सनातन धर्म के समस्त भद्रजनों और संतों को मेरा सादर प्रणाम। आइए 2026-27 के भविष्य पर विचार करें। हम भविष्य मालिका के विषय में अनेक प्रकार के मत देखते हैं जो मानव सभ्यता के लिए अच्छे नहीं हैं; हम उनका खंडन करते हैं। यह शास्त्र मनुष्य के कल्याण के लिए रचा गया था — इसकी ऐसी पवित्रता है कि यह केवल मनुष्य का उद्धार ही नहीं करता, यह उसे सत्य युग (सत्य का युग) में ले जाएगा, यह उसे परमार्थ (परम कल्याण) देगा, और आने वाले 1000 वर्ष के सत्य युग में मनुष्य 1000 वर्ष तक जीवित रहेंगे। इसमें मनुष्य के लिए हानिकारक कुछ भी नहीं है; इसमें केवल मनुष्य की रक्षा है, मनुष्य का उत्थान है — यह एक स्वतंत्र चेतावनी है (एक 'वॉर्निंग') जो मानव सभ्यता में परिवर्तन लाने के लिए लिखी गई है। इसमें कोई भय फैलाने वाली विचारधारा नहीं है। समस्त मानवता के लिए अच्छा समय आ रहा है; केवल उनके लिए समस्या है जो गलत करते हैं, जो वेदों और शास्त्रों के विरुद्ध हैं — बाकी सबके लिए कोई समस्या नहीं है। युद्ध: 2026 में एक अरब देश में और एक विशेष स्थान पर युद्ध छिड़ सकता है — मुस्लिम धर्म का सबसे बड़ा पवित्र स्थान, वह धर्म-क्षेत्र। 2026 में उस क्षेत्र में आक्रमण की संभावना है। 2026 में 13 मुस्लिम देश — या 57 मुस्लिम देश, जो मूलतः 13 थे और छोटे-छोटे राष्ट्रों में बँट गए — उनका एकीकरण होगा। ईरान-अमेरिका युद्ध भी पुनः हो सकता है। तो पूरे विश्व की युद्ध की स्थिति थमेगी नहीं; वह स्थिति आगे विश्व के हर देश में फैलेगी। शास्त्र में लिखा है कि जब यह युद्ध होगा, तब श्री जगन्नाथ में समुद्र भी बाईसी पहाच (22 सीढ़ियों) तक आ जाएगा: 'बाईसी पहाच खेरे वरुण, मक्का मदीना रे घोर युद्ध' — मक्का और मदीना के विषय में लिखा है कि जब जगन्नाथ क्षेत्र में समुद्र 22 सीढ़ियों तक आएगा, उसी समय मक्का-मदीना के पवित्र धर्म-क्षेत्र पर दो गुटों के बीच, मुसलमानों और ईसाइयों के बीच युद्ध हो सकता है। और यदि मक्का-मदीना में युद्ध नहीं होता, तो अमेरिका-ईरान युद्ध हो सकता है — ईरान-अमेरिका युद्ध फिर भड़क सकता है और फिर रुक सकता है; यह भी एक संभावना है। तो विश्व में युद्ध की स्थिति बढ़ेगी, घटेगी नहीं। शास्त्र में लिखा है कि जिस समय यह सब होगा, कोई भी पहले से इसका पूर्वानुमान नहीं लगा सकेगा, कोई भी गणना नहीं कर सकेगा। एकीकरण: 2026 के एकीकरण की बैठकें अभी भी चल रही हैं, परंतु मेरा मत है कि जब तक मक्का-मदीना में युद्ध नहीं होता, एकीकरण अपना पूर्ण स्वरूप नहीं ले पाएगा। भारत: इसके साथ ही 2026-27 में भारत और पाकिस्तान के बीच पुनः युद्ध का समय आ रहा है। यह गंभीर समय है; विश्व में छोटे देश और बड़े देश सब कुछ अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। 2026-27 में आधुनिक यंत्र — युद्ध में प्रयुक्त होने वाले आधुनिक उपकरण — बहुत अधिक खराबी विकसित करेंगे, वे विफल होंगे, नेट कई बार फेल होगा, और ऐसा हो सकता है कि हथियार अपने लक्ष्य तक न पहुँचें। युद्ध के कारण पूरे विश्व की आर्थिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। भारत पर भगवान की कृपा है, फिर भी अभी भी भारत में प्रभाव महसूस हो रहा है और आगे भी महसूस होगा। चीन और पाकिस्तान के बीच भाईचारे के कारण, शास्त्र में लिखा है कि 2026-27 में भारत-पाकिस्तान-चीन युद्ध होगा। इस समय में महँगाई बढ़ेगी, नौकरियों में कटौती होगी; जो सेवा में हैं वे अपनी नौकरियों में परेशान होंगे, कुछ को नौकरी छोड़नी भी पड़ेगी। तो यह पूरे विश्व के लिए बहुत अच्छा समय नहीं है; समय धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा। परंतु यह धारणा कि 2026 में सात दिन और सात रात अंधकार रहेगा — ऐसा नहीं होगा, बिल्कुल नहीं; और 2027 में भी, मेरे मत में, सात दिन-सात रात की वह बात नहीं आ रही है। हमारे देश में एक दृढ़, मजबूत सरकार बनी रहेगी — जो सरकार आज चल रही है वह बनी रहेगी, और जो चुनाव आएगा उसमें सत्तारूढ़ दल (जीतेगा)। देश-दर-देश: अमेरिका में प्रकृति के द्वारा, पंचभूत के द्वारा विनाश होगा, और भूतों के उस विनाश के कारण अमेरिका की अर्थव्यवस्था और महँगाई पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। यूरोप में भी प्रकृति और पंचभूत का प्रलय होगा, और यूरोप में तकनीकी क्षेत्र में बड़ी आपदा आएगी। पाकिस्तान देश में अधिक भूकंप होंगे और उसके साथ कृषि में बड़ी हानि होगी — अत्यधिक वर्षा, कम वर्षा — और चीन

तथा पाकिस्तान के अनेक क्षेत्रों में खेती नहीं होगी। इस वर्ष की महँगाई अगले वर्ष और भी अधिक बढ़ेगी, आर्थिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा; चीन और पाकिस्तान में बीमारी और रोग भी होंगे। इंडोनेशिया, थाईलैंड, हांगकांग और जापान में बार-बार भूकंप आएँगे, खेती आधी भी नहीं होगी, और अर्थव्यवस्था गिरेगी। गर्मी और तूफान: इसी समय, भारत में और विश्व में सूर्य देव की रुद्र-तपन बहुत बढ़ेगी — चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र के महीनों में, अर्थात् जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर में — धूप बढ़ेगी, गर्मी बढ़ेगी। मई और जून में जो गर्मी हमने देखी, उससे अधिक तापमान सितंबर-अक्टूबर में भी पूरे विश्व में बढ़ेगा। बड़े चक्रवात, गर्मी के मौसम के काल-बैसाखी तूफान, विश्व के हर देश में आएँगे; हम उनका प्रभाव अपने देश के हर राज्य में भी देखेंगे। विश्व के सभी देशों में हम चक्रवात और टाइफून जैसी बड़ी आपदाएँ देखेंगे; भारत में भी होगा। भारत के तटीय क्षेत्रों में — गुजरात, तमिलनाडु, केरल, ओडिशा, बंगाल, बिहार — समुद्री तूफानों का प्रभाव बड़ा होगा। इस समय लोग धर्म की ओर अधिक मुड़ेंगे, लोग धार्मिक कार्यों में जुड़ेंगे, मठों और मंदिरों में अधिक भीड़ होगी, धामों में भीड़ होगी, और लोग भक्ति की ओर आएँगे। तृतीय विश्व युद्ध: तृतीय विश्व युद्ध पहले से ही टुकड़ों-टुकड़ों में चल रहा है; विश्व स्तर पर युद्ध चल रहा है, चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, और बड़े देश उसमें भाग ले रहे हैं, चाहे पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से। इस युद्ध का प्रभाव सभी देशों पर पड़ रहा है, जैसे विश्व युद्ध में होता है — आर्थिक स्थिति पर, निर्यात और आयात पर, विदेशी मुद्रा पर। इसलिए यह विश्व स्तर पर आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है, क्योंकि विश्व के अनेक देश, मुख्य देश, सब इसमें हैं। तो जहाँ तक पूर्ण विश्व युद्ध का प्रश्न है, शास्त्र के अनुसार वह 2026-27 में होना लिखा है — और यदि भगवान की इच्छा हो तो युद्ध टाला भी जा सकता है। पूरे विश्व का युद्ध टाला जा सकता है। भविष्य मालिका में कहीं लिखा है कि जब भगवान चाहें, युद्ध रोका नहीं जा सकता। भगवान ने महाभारत युद्ध को कई वर्षों तक रोका; अंतिम क्षण में भगवान ने पांडवों की ओर से माँगा, 'पाँच गाँव दे दो' — फिर भी वे नहीं माने। फिर उन्होंने कहा, 'प्रभु, कम से कम पाँच घर दे दो, हम वहीं रोक देंगे' — क्योंकि प्रभु परम पिता हैं। भगवान सदा यही चाहते हैं कि संसार में रक्तपात न हो। धरती माता भी यही चाहती हैं, देवता भी यही चाहते हैं, क्योंकि मनुष्य देवताओं की और भगवान की सृष्टि है। इसलिए यदि लोग धर्म की ओर, पुण्य और पवित्रता की ओर आएँ, यदि लोग त्रिकाल संध्या (तीनों काल की संध्या उपासना) करें, भागवत पढ़ें, दान दें, तो जिस क्षेत्र में धर्म बढ़ेगा, उस क्षेत्र में भगवान भी छूट देंगे। चोरी और साइबर अपराध: बहुत चोरी और डकैती होगी — दिन में, रात में, हर समय। साइबर ठगी होगी, खातों से पैसे निकल जाएँगे; भारत और विश्व के हर मनुष्य को थोड़ा सावधान रहना चाहिए, क्योंकि इस समय के लिए शास्त्र में लिखा है, 'चोर प्रबल हुईबा' — चोर शक्तिशाली हो जाएँगे और उसका कोई उपाय नहीं होगा; अच्छे लोग चुपचाप बैठे रहेंगे और कुछ नहीं कर पाएँगे। साइबर क्राइम, साइबर ठगी, साइबर से पैसे निकालना बहुत बढ़ेगा। इसलिए इस समय में आपको अनजान कॉल नहीं उठानी चाहिए, अनजान कॉल करने वाले को ओटीपी नहीं देना चाहिए, और अपने खाते के विषय में कुछ नहीं बताना चाहिए। इतना ही नहीं — घर में, शहर में, दुकानों में, नगर में, हर जगह, और गाँवों में भी चोरी बढ़ेगी और चोर बहुत अधिक होंगे। अग्नि: शहर में, यंत्रों में, औद्योगिक क्षेत्र में, छोटी दुकानों और बाजारों में, अग्नि देव का जो प्रभाव हम अभी देख रहे हैं, वह दुगुना होने की संभावना है, संभवतः 2026 में। इसलिए अग्नि देव के लिए, घर में भोजन पकाने से पहले, अग्नि देव के लिए धूप और दीप जलाएँ, आरती करें, भगवान विष्णु की पूजा करें, और रसोई में अपने चूल्हे की लौ में थोड़ा गुड़ या चीनी डालकर प्रणाम करें, जिससे पूरा परिवार उस विपत्ति से सुरक्षित रहे। हर घर में एक अग्निशामक यंत्र रखा जाना चाहिए, और हर वाहन में भी गैस के लिए एक — विशेषकर बैटरी वाहनों और गैस वाहनों में; लोग वाहनों में तो रखते हैं, परंतु घर में भी रखना चाहिए, क्योंकि आजकल हम अधिकांश घरों में एसी देखते हैं। भविष्य में आपके लिए अग्निशामक रखना आवश्यक है; यदि सब रखें, तो यह अच्छा है। परंतु सबसे बड़ी बात है हमारा पुण्य कर्म — यदि हम भगवान में रहेंगे, तो भगवान हमें विपत्ति से बचाएँगे। भूकंप और प्रलय: पूरे विश्व में भूकंप बढ़ेंगे, अग्नि-प्रलय बढ़ेगा, जंगल जलेंगे, बड़े उद्योगों में आग लगेगी, शस्त्रागारों और सैन्य हथियार भंडारों में उन्हीं स्थानों पर आग लगेगी — भारत में भी। विश्व में भूकंप बढ़ेंगे, अधिकतर चीन, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, यूरोप और मुख्यतः अमेरिका और मध्य-पूर्व में; उन देशों में भूकंप का, जल-प्रलय और अग्नि-प्रलय का प्रभाव पड़ेगा। भारी वर्षा होगी; भारत में अधिकतर उत्तराखंड, बिहार, ओडिशा में अधिक वर्षा होगी, और गुजरात तथा केरल भी इसमें आते हैं। एक-दो दिन वर्षा होगी और फिर सूखा पड़ेगा; फसल नष्ट होगी, फिर वे दोबारा फसल उगाएँगे, और वह फिर नष्ट होगी। तो अग्नि-प्रलय, जल-प्रलय और भूकंप भारत और विदेश में होंगे, परंतु अधिक चीन, पाकिस्तान, मध्य-पूर्व और यूरोप में। और इंडोनेशिया, थाईलैंड, हांगकांग और जापान में पिछले वर्ष वाले से बड़ा भूकंप आएगा, 2026-27 में, चाहे जो हो। इस वर्ष लगभग आठ महीने गर्मी का मौसम रहेगा और चार महीने राहत, और शीत ऋतु में भी 2027, 2024 का रिकॉर्ड तोड़ेगा — गर्मी में तोड़ेगा, वर्षा में तोड़ेगा। मैं उसे विनाशकारी वर्षा कहता हूँ; वह अच्छी वर्षा नहीं होगी। धर्म: तो यह समय परिवर्तन की ओर जा रहा है। विश्व में

परिवर्तन होगा। जिसके पास धर्म है वह उन्नति करेगा, वह आगे जाएगा। जिनके पास धर्म नहीं है, यदि वे धर्म करें तो वे भी उठेंगे; यदि लोग धर्म छोड़ेंगे तो उनके लिए अच्छा नहीं है, जैसा इस समय हो रहा है। भारत में भी जीव हत्या हो रही है, गौ हत्या हो रही है; यह अन्य देशों में और विश्व में भी है, परंतु भारत में धर्म का प्रभाव अधिक है, और इसी कारण भारत राहत की ओर बढ़ रहा है। और इस समय अनेक प्रकार के रोग आएँगे — अफ्रीकी देशों, थाईलैंड, इंडोनेशिया, जापान, चीन, पाकिस्तान, मध्य-पूर्व, यूरोप, अमेरिका में रोग का प्रभाव रहेगा, और भारत में बाद में आएगा। पहले उन देशों में बढ़ेगा जिनके नाम मैंने लिए, उसके बाद भारत में आएगा; रूस भी उस रोग में आता है। हम अनेक प्रकार के नए रोग भी देखेंगे। युग परिवर्तन: यह युग-परिवर्तन का समय है। कलियुग संवत्सर से हम सत्य युग संवत्सर की ओर बढ़ रहे हैं। इस समय पुरुषोत्तम संवत्सर चल रहा है — श्री जगन्नाथ जी पुरुषोत्तम हैं और उनका संवत्सर चल रहा है; अब विष्णु का, महाविष्णु का संवत्सर चल रहा है, और देवी माता और सब अब सक्रिय हैं। इसलिए चाहे आप ट्रेन, बस, फ्लाइट, मोटरसाइकिल या कार से यात्रा करें, आपसे मेरा निवेदन है: माधव का नाम जपते हुए यात्रा कीजिए। बड़े से बड़ा संकट आपको छूकर निकल जाएगा। हर दिन हम सड़क पर दुर्घटनाएँ देखते हैं, ट्रेनों में आग, ट्रेन दुर्घटनाएँ — फ्लाइट में अभी के लिए राहत है; परंतु ऐसे समय में यदि आप माधव का नाम जपें तो आप बच सकते हैं। जो त्रिकाल संध्या जानते हैं उनकी भी भगवान रक्षा करेंगे, क्योंकि कलियुग से सत्य युग में जाने की एक ही परंपरा है, और वह है त्रिकाल संध्या। जो भी यह त्रिकाल संध्या करेगा, भगवान विष्णु उस मनुष्य की रक्षा करेंगे। ज्योतिष: इस समय जो भी भविष्यवाणी की जाती है, उसमें से बहुत कुछ 2026-27 में गलत सिद्ध होगा। इस समय ग्रह और नक्षत्रों की स्थिति डगमगाई हुई है — ग्रह कहाँ बैठेंगे, कहाँ ठहरेंगे, कहाँ विश्व का भला करेंगे; शायद वे भगवान की इच्छा से चल रहे हैं। तो इस समय जो गणनाएँ की जाती हैं वे प्रभावित होंगी। सत्य युग में ज्योतिष शास्त्र और वेदों का बहुत महत्व होगा; सत्य युग में लोग प्रतिदिन ज्योतिष शास्त्र पढ़ेंगे और उसी के अनुसार चलेंगे। परंतु जब अंतराल का समय हो, युग-परिवर्तन का समय हो, तब ग्रह स्थिति के अनुसार पूर्ण फल नहीं मिलता; ग्रह स्थिति का पुण्य-फल नहीं मिलता — कहीं अधिक मिलता है, कहीं कम, कहीं बिल्कुल नहीं, क्योंकि अभी ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति ठीक नहीं है। परंतु हमारे देश में और विश्व में सत्य युग में ज्योतिष शास्त्र का प्रभाव बहुत होगा; ज्योतिष शास्त्र हमारे शास्त्रों का ज्ञान है, धारा है। तो आगे ज्योतिष की भी बहुत माँग होगी। आज हम जो अपनी सोच से कहते हैं, वह ज्योतिष शास्त्र में लिखा है। अच्युतानंद, जिन्होंने भविष्य मालिका शास्त्र लिखा, महान ज्योतिषी थे, वे भविष्यदृष्टा थे, ब्रह्मज्ञानी थे, और भगवान के सखा (मित्र) थे। पूरा भविष्य मालिका शास्त्र ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार लिखा गया है, और कहीं-कहीं जगन्नाथ को संकेत में लिया गया है; कहीं-कहीं उन्होंने विश्व के विषय में, भारत के विषय में, शासक और शासित के विषय में तथा भारत की राजनीतिक स्थिति के विषय में भी भविष्यवाणी की है। तो आगे हमारे देश में जप, तप, कर्म, पूजा-विधि, धर्म, न्याय, भागवत शास्त्र का पाठ, संस्कार, स्वाहा-स्वधा, अग्निहोत्र और यज्ञ — यह सब चलेगा। पिंड-दान: पितरों को पिंड-दान देने का विश्व में शायद बहुत स्थान नहीं है, परंतु मैं इतना कहता हूँ: 2026-27 से आगे, वर्ष में कम से कम दो बार पिंड-दान कीजिए — कृष्ण पक्ष में, महालया पक्ष में, और अपने पूर्वजों की श्राद्ध तिथि पर, कम से कम पिंड-दान अवश्य कीजिए। इस समय हमें पितरों की कृपा चाहिए और भगवान विष्णु की कृपा भी चाहिए, क्योंकि इस समय देवता भी कमजोर हो गए हैं; प्रकृति के पंचभूत अपने क्रम के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहे, वे नियंत्रण से बाहर हैं। इस समय केवल भगवान विष्णु ही हमारा उद्धार कर सकते हैं, और पितर भी हमारा उद्धार कर सकते हैं; पितर आशीर्वाद देंगे, देने वाले भगवान विष्णु हैं। तो हम सब जो धर्म में विश्वास करते हैं, हमें पिंड-दान करना चाहिए, और ज्योतिष शास्त्र से सही तिथि निश्चित करके उस तिथि पर, उस विशेष समय पर पिंड-दान कीजिए जिस समय पितर संतुष्ट होंगे। क्योंकि हमें पुरुषार्थ चाहिए और हमें धर्म चाहिए; इसमें पुरुषार्थ मिलता है, और पिंड-दान में धर्म भी मिलता है। और हर घर में भगवान विष्णु की पूजा होनी चाहिए। इस समय केवल भगवान विष्णु ही पूरे विश्व का उद्धार कर सकते हैं। भगवान विष्णु जाति या धर्म नहीं देखेंगे; वे नहीं देखेंगे कि यह हिंदू है, यह मुसलमान, यह जैन, यह ईसाई। वे केवल यह देखेंगे कि किसके पास धर्म है — उन्हीं लोगों का उद्धार हो। शास्त्र में लिखा है, 'विजाति पूर्वक ततो कालांतरे यस्मिन पुनो विधि' — अर्थात् भगवान कल्कि, भगवान विष्णु, तब पूरे विश्व की समस्त मानवता को एक परिवार बना देंगे। कोई भेदभाव नहीं होगा, कोई धर्म या जाति नहीं होगी, कोई 'मैं और मेरा' नहीं होगा। वे पूरे विश्व में शांति स्थापित करेंगे। 'विजाति पूर्वक' — जैसा सत्य युग में होगा, वैसा ही इस समय आएगा। भगवान कल्कि सभी मनुष्यों को लेंगे; हम कहते हैं कि जाति, धर्म या वर्ण से परे कोई भी मनुष्य त्रिकाल संध्या कर सकता है, भागवत पढ़ सकता है, भगवान विष्णु की उपासना कर सकता है — क्योंकि आगे सभी जातियों का मिश्रण होगा और भगवान विष्णु सबको वैष्णव बना देंगे। वे सबका अपने बच्चों की तरह पालन करेंगे; वे पूरे विश्व में राम राज्य चलाएँगे। आज विश्व में युद्ध चल रहा है, लोगों को खाने-पीने को नहीं मिल रहा, अकाल मृत्यु हो रही है, लोग दुखी हो गए हैं — प्रभु भगवान विष्णु पृथ्वी पर शांति स्थापित करेंगे।

वे कलियुग का सारा कलंक मिटाकर एक सशक्त, समर्थ और समृद्ध समाज बनाएँगे, और सबको वैष्णव बनाएँगे। जब भगवान आते हैं तो वे कोई जाति भेद नहीं देखते। जगन्नाथ क्षेत्र में तो कोई जाति भेद है ही नहीं; सभी जातियाँ, विश्व के सभी धर्म, चांडाल और विप्र ब्राह्मण, विश्व की सभी धार्मिक परंपराएँ जगन्नाथ महाप्रभु का रथ खींचती हैं। इसीलिए हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को जगन्नाथ महाप्रभु रथ यात्रा करते हैं, और रथ यात्रा करके वे पूरे धर्म की पुनः स्थापना करते हैं और पूरे विश्व की मानवता का उद्धार करते हैं। तो यदि 2032-34 में सत्य युग आना है, तो भारत के सभी धर्मों और वर्णों को एक साथ जुड़कर इस समय मानव सभ्यता के कल्याण के लिए कार्य करना होगा। सबको कर्म के अनुसार फल मिलेगा। यदि इस समय हम धर्म की ओर आएँ, तो धर्म के कारण भगवान हमारा उद्धार करेंगे और हमारा भविष्य भी सुख से भरा होगा। इस समय, पूरे भारत में और विश्व में, मनुष्य स्वयं ही इस विनाशकारी समय को बुला रहा है। यदि 2032-34 में सत्य युग आना है, तो इसकी क्या आवश्यकता है? सबको कर्म के अनुसार फल मिलेगा: यदि युद्ध नहीं होगा, तो रोग आएगा; यदि रोग नहीं आएगा, तो किसी न किसी प्रकार से धर्म की रक्षा होगी और अधर्म का नाश होगा। यह स्पष्ट है; इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। 2032-34 में सत्य युग आएगा — इसमें कोई विचलन नहीं होगा। विचलन केवल इतना है: यदि विश्व महान परिवर्तन की ओर बढ़े और सभी लोग एक परिवार बन जाएँ, तो आप सबको यह देखने का प्रयास करना चाहिए कि धर्म को कैसे बढ़ाया जाए। आपस में लड़ना आवश्यक नहीं है; क्या हम विश्व की मानवता के कल्याण का कार्य नहीं करेंगे? क्योंकि एक विचारधारा सनातन की है, जिसमें जब हम हवन या सत्संग करते हैं, तो हम कहते हैं: विश्व के सभी मनुष्यों का कल्याण हो; प्रकृति का कल्याण हो, देवताओं का कल्याण हो, सभी जीवों का कल्याण हो, प्रकृति के 14 ब्रह्मांडों का मंगल हो। यही हम कहते हैं। तो इस समय को धर्म में परिवर्तित कीजिए, आपस के भेदभाव को भूलकर। यह समय बिल्कुल आ रहा है; धर्म की ओर आना चाहिए। निर्णय ऊपर से आएगा; अपनी सोच से हम कुछ नहीं कर पाएँगे — 'दैव बलम अन्य बलम', संसार में दैवी शक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं है। और आगे 2026-27 में, जब पाकिस्तान और चीन की ओर से भारत पर युद्ध थोपा जाए, उस समय सभी भारतीयों को एकजुट होना चाहिए, देश की लड़ाई में देश की सरकार के साथ खड़े होना चाहिए, राष्ट्र की संप्रभुता और अखंडता के साथ तथा संघीय संविधान के साथ रहना चाहिए — यदि हम ऐसा करें, तो भारत में शांति होगी। लड़ाई सीमा पर होगी, और देश में एक शांतिपूर्ण, समृद्ध समाज के रूप में रहकर हम आने वाली चुनौती से लड़ सकते हैं; हम उसका सामना कर सकते हैं। तो समय परिवर्तन की ओर जा रहा है, और यह आवश्यक है कि हम भी बदलें। जैसे आचरण, विचार और कर्म से एक युग बनता है, वैसे ही सत्य युग आचरण, विचार और कर्म से बनेगा। हमारी जो विचारधारा थी — दूसरे का नाश करना, दूसरे को दुख देना, दूसरे को कुचलकर ऊपर उठना, किसी जीव को मारकर खाना, प्रकृति के पंचभूत के विरुद्ध कार्य करना, धर्म के विरुद्ध कार्य करना, सभ्यता और संस्कार में 'मैं और मेरा' में फँसे रहना — इस परंपरा को छोड़कर हमें वसुधैव कुटुंबकम् की ओर जाना होगा। 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' — हमें उसकी ओर भी जाना होगा; हमें एक भगवान विष्णु की शरण में जाना होगा। कभी-कभी धर्म और परंपरा को भूलकर भगवान की शरण में जाना चाहिए; इस समय वही उद्धार करेंगे। और कलियुग की जो सारी विचारधारा हमारी थी — 'मैं और मेरा' हमारा सबसे बड़ा शत्रु है — उसे छोड़ना होगा, और अपने आचरण, विचार और चरित्र में हमें ब्रह्म-कर्म की ओर जाना चाहिए, जो है त्रिकाल संध्या और भागवत। और सत्य, शौच, दया और दान के चतुष्पाद धर्म का पालन करना भी आवश्यक है। सत्य बोलिए — प्रारंभ में थोड़ी कठिनाई होगी, परंतु समय के साथ आप सत्यवादी हो जाएँगे। जो सत्य बोलते हैं, उनकी आयु बढ़ती है, उनकी अकाल मृत्यु नहीं होती, उन्हें देवताओं की कृपा और भगवान की कृपा मिलती है, और सत्यवादी के साथ महालक्ष्मी निरंतर रहती हैं — उसे कभी अभाव या कमी नहीं होती, कोई मूलभूत घाटा नहीं होता; जो झूठ बोलते हैं वे उसी में फँस जाते हैं। तो सत्यवादी बनिए; और सत्य-शौच — शौच का अर्थ है हमारा ब्रह्म-कर्म और पवित्रता, शरीर को कामना और वासना से दूर रखना; सबके प्रति दया, सभी जीवों के प्रति दया, सभी मनुष्यों के प्रति दया, और क्षमा — यदि यह हमारे साथ है, तो हम सत्य युग में जाने के योग्य बन सकते हैं। भविष्य शास्त्र मनुष्य को डराने के लिए नहीं लिखा गया। लोग कहते हैं — यह टूटेगा, युद्ध होगा, विनाश होगा, बड़ा भूकंप आएगा, लोग मरेंगे। ऐसा नहीं है; शास्त्र में लिखा है और होगा, परंतु यह भी लिखा है कि उससे पहले इस शास्त्र का प्रचार होगा, और यह भी लिखा है कि इस शास्त्र का प्रचार सुनकर मानव सभ्यता में परिवर्तन आएगा, और मानव सभ्यता में बहुत लोग धर्म की ओर आएँगे जो आगे सत्य युग का निर्माण करेंगे। तो मेरे मत में भविष्य मालिका में उद्धार का मार्ग लिखा है; उसमें उबार लिखा है, उसमें रक्षा लिखी है। उसकी चर्चा क्यों नहीं होती? भगवान विष्णु की उपासना ही सबसे बड़ी रक्षा है। एक दिन नैमिषारण्य में शौनकादि ऋषियों ने भगवान व्यास देव से पूछा: 'भगवन्, आपने भागवत की रचना की, परंतु कलियुग में इतने स्तोत्र और श्लोक और संस्कृत का अर्थ कौन समझेगा? यह बहुत सरल होना चाहिए था। ठीक है, आपने रचना कर दी, परंतु हम एक बात कहना चाहते हैं: इसका अर्थ हमें दो शब्दों में बताइए, जिसका कलियुग के मनुष्य

पालन कर सकें और अपना उद्धार कर सकें।' क्योंकि यह भागवत जो वेदव्यास जी ने लिखा, कलियुग के मनुष्यों के उद्धार के लिए है; सत्य युग में एक अलग भागवत चलेगा, वह विस्तृत होगा, पूर्णतः संस्कृत में और बहुत बड़ा होगा। तो वेदव्यास जी ने कहा, 'यदि आप चाहें, तो मैं भागवत दो शब्दों में बता दूँ — 18,000 श्लोकों को दो शब्दों में बता दूँ।' तब सभी मुनि और ऋषि प्रसन्न हो गए। वेदव्यास जी ने कहा, 'मैं भागवत दो शब्दों में बताऊँगा; जो भी उन दो शब्दों का पालन करेगा उसे भी भागवत का पुण्य-फल प्राप्त होगा।' वे शब्द कौन से हैं? वेदव्यास जी ने कहा: 'अष्टादश पुराणानां व्यासस्य वचनं द्वयम् — परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीडनम्।' इसमें उन्होंने स्पष्ट कर दिया: 'परोपकाराय' — इसमें उन्होंने यह नहीं कहा कि एक जाति की सहायता करो और दूसरी जाति की सहायता मत करो। उन्होंने कहा, जो भी जाति, धर्म या वर्ण का भेद किए बिना मानव सभ्यता की सहायता करेगा वह स्वर्ग को प्राप्त करेगा, उसका मानव जीवन पवित्र होगा और उसका जीवन सुखी और समृद्ध होगा; और जो दूसरों को दुख देते हैं, जो भेदभाव में फँसे हैं, 'मैं और मेरा' में फँसे हैं, धर्म, जाति और वर्ण में फँसे हैं, वे लोग मुक्ति नहीं पाएँगे — उनके लिए संजीवनी-पुर में यम की यातना होगी। तो दो शब्दों में: दूसरों का भला करो, दूसरों को दुख मत दो — तब यह मानव जीवन सार्थक हो जाएगा। तो यदि यह समय सत्य युग की ओर जा रहा है, तो मेरी विचारधारा भी है 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्'। यदि सभी लोग सुख में रहें और सब एक मन के हों, तो दुख कहाँ से आएगा? न दुख चाहिए न सुख; बस एक कर्म कीजिए — संसार में 'मैं और मेरा' से दूर रहकर, पूरे विश्व के कल्याण की कामना कीजिए: आपका संसार, ब्रह्मांड, देश, सबका कल्याण हो। एक ऐसा समय था जब यह संसार एक देश जैसा था, जब राजा युधिष्ठिर सात महाद्वीपों के राजा थे; उस समय रूस भी, अमेरिका, पूरा विश्व, सातों महादेश, राजा युधिष्ठिर के अधीन थे और उन सब में राम राज्य चल रहा था। और ऐसा समय फिर आ रहा है — पूरा विश्व भगवान के अधीन शासित होगा, सब राम राज्य बन जाएगा। और यह समय बहुत मूल्यवान है। हमने लगभग 40 वर्षों तक इन शास्त्रों का प्रचार और अध्ययन किया है; मैंने इन्हें हर शास्त्र में पढ़ा है। और भगवान कहते हैं: जो भी दूसरे का अमंगल करता है, जो दूसरे के विषय में अमंगल विचार करता है, वह पाप का भागी होता है; और जो भी, जाति, धर्म या वर्ण से परे, मेरी भक्ति में लीन हो जाता है, जो स्वयं को मुझे समर्पित कर देता है, जो संसार को माया समझता है और मुझे अपना समझता है — उसे मैं अपना बना लेता हूँ। हर वर्ष जब शुक्ल एकादशी तिथि को स्वयं अच्युतानंद जी की पूजा होती है, तब प्रसाद खान नामक एक मुस्लिम भक्त के घर से आता है; पहला प्रसाद उनके घर जाता है। कलियुग ने ही धर्म का विभाजन किया; मनुष्यों में विभाजन आया, अनेक धर्म बने, अनेक परंपराएँ बनीं, और लोग आपस में बँटने में व्यस्त हो गए। कभी भारत सोने की चिड़िया का देश था। आज भारत में बड़ा परिवर्तन हो रहा है — हमारी सरकार की स्थिति के कारण, सरकार की शक्ति और सरकार की दृढ़ विदेश नीति के कारण, आज विश्व के दरबार में हमारे देश का मान और सम्मान स्थापित है, और यह बिल्कुल सिद्ध करता है कि भारत प्रगति की ओर जा रहा है, भारत परिवर्तन की ओर जा रहा है, और भारत विश्व का अग्रणी देश बनने जा रहा है। हम भी यह अनुभव करते हैं और आप भी करते हैं। क्यों? क्योंकि धर्म विजय का कारण है और अधर्म विनाश का कारण है। जैसे-जैसे हम अपने देश में धर्म बढ़ाएँगे, विश्व स्तर पर पूरा विश्व हमारे देश का उतना ही अधिक सम्मान करेगा। ऐसा समय आएगा जब भारत का संविधान पूरे विश्व में प्रचलित होगा, और पूरा विश्व भारत के शासन को स्वीकार करेगा। वह समय भी आएगा। तो 2026-27 के लिए, धर्म की ओर आइए। भविष्य मालिका में कोई भयभीत करने वाला तत्व नहीं है; यह एक चेतावनी है, एक सावधानी है, जो आपको सिखाने के लिए, आपको बदलने के लिए है — और परिवर्तन की बात करने के साथ यह यह भी बताती है कि परिवर्तन कैसे होगा और किस धारा में जाना चाहिए। यही भविष्य शास्त्र में लिखा है। लोगों ने मुझसे पूछा कि युद्ध क्यों नहीं हुआ। मैंने कहा, एक बार युद्ध हुआ तो था — भविष्य मालिका में लिखा था कि युद्ध होगा, और चाहे वह छह-सात दिन का ही रहा हो, वह हुआ। और मैं भगवान से क्या प्रार्थना करूँ — 'प्रभु, युद्ध हो'? युद्ध में कितनी स्त्रियाँ विधवा होंगी, कितने परिवारों के बेटे-बेटियाँ मरेंगे, युद्ध में कितना विनाश आएगा! कुछ लोगों को सुख मिलेगा परंतु 70% लोगों को दुख मिलेगा; पूरी अर्थव्यवस्था टूट जाएगी, लोगों को भोजन नहीं मिलेगा, दवा नहीं मिलेगी, कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए हम सदा भगवान से प्रार्थना करते हैं: प्रभु, बिना युद्ध के पृथ्वी को बदलिए; बिना रक्तपात के पृथ्वी को बदलिए, और मानव सभ्यता का कल्याण हो। क्योंकि हम कहते हैं, 'प्रभु, आप मंगलमय हैं, विश्व का कल्याण हो' — हम अमंगल की कामना नहीं करेंगे। भगवान की इच्छा के सिवा कुछ नहीं है; भगवान जो चाहेंगे, वही होगा। अच्युतानंद ने लिखा था, 'अच्युत वचनिता हो कपा मारि हाथ' — ऐसा समय आएगा जब भविष्य मालिका के अनेक तत्व ठीक-ठीक सही नहीं होंगे, और उसी समय बड़े-बड़े भक्त अपने माथे पर हाथ रखकर कहेंगे, 'क्या हुआ? क्यों नहीं?' भगवान, हमारे परम पिता विष्णु भगवान, सदा विश्व का कल्याण, मनुष्य का कल्याण चाहते हैं। यह संसार महान आनंद की ओर बढ़ रहा है; केवल धर्म कम है — धर्म बढ़ना चाहिए। परंतु यदि लोग धर्म की ओर न मुड़ें, यदि लोग सत्य, शौच, दया और दान का

पालन न करें, यदि लोग त्रिकाल संध्या न करें, भागवत न पढ़ें, तो भविष्य मालिका के सभी वचन सत्य हो जाएँगे — क्योंकि एक ब्राह्मण के रूप में मैं कभी नहीं कहूँगा, 'प्रभु, विनाश कीजिए।' हाँ, मैं ठीक यही कहूँगा: विश्व का कल्याण हो, धर्म की रक्षा हो, गौ माता की रक्षा हो, जीवों की रक्षा हो, मनुष्य की रक्षा हो। तो समय हमारे हाथ में है। यदि हम इस समय का सही उपयोग करें, तो इससे हमारा कल्याण होगा; यदि हम उपयोग न कर सके, तो भविष्य मालिका का एक-एक शब्द सत्य की कसौटी पर उतरेगा — इसमें कोई संदेह नहीं है। हम ऐसे समय की ओर बढ़ रहे हैं। सबका धन्यवाद। हर घर में त्रिकाल संध्या हो, भागवत का पाठ हो, माधव नाम का जप हो, और यात्रा करते समय, आते-जाते समय माधव का नाम जपिए जिससे आप पर कोई विपत्ति न आए। (समापन वक्तव्य:) भारत और विश्व के सभी भक्तों को मेरा सादर प्रणाम। सबसे मेरा निवेदन: युग-परिवर्तन होगा। हम भगवान से प्रार्थना नहीं करेंगे, 'प्रभु, युद्ध कीजिए'; हम प्रार्थना करेंगे कि धर्म का प्रकाश फैले और पृथ्वी की रक्षा हो — यदि पृथ्वी बचेगी, तो हम बचेंगे। भविष्य मालिका में जो लिखा है वह होगा, क्योंकि मेरे मत में लोग धर्म में नहीं आएँगे, लोग बदलेंगे नहीं, लोग जीव हत्या नहीं छोड़ेंगे, दूसरों का नाश करना नहीं छोड़ेंगे, 'मैं और मेरा' नहीं छोड़ेंगे, अहंकार और घमंड नहीं छोड़ेंगे — तो धर्म-संस्थापना (धर्म की पुनः स्थापना) होगी। परंतु हम सदा भगवान से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु मंगल करने वाले हैं; इसलिए हम धर्म की स्थापना की ओर बढ़ रहे हैं। त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ, माधव नाम — ये कीजिए, जहाँ भी आप हों, किसी भी समस्या में। हर घर में अग्निशामक यंत्र रखिए, गैस से सुरक्षा के लिए, क्योंकि आजकल गैस है, एसी है, और बिना कारण शॉर्ट सर्किट होता है। और बड़े भूकंपों में, जल-प्रलय में, अग्नि-प्रलय में, और जब लोग आकाश में उड़ते हैं, उस समय माधव नाम और त्रिकाल संध्या आपकी रक्षा करेगी — ये कीजिए, और भागवत का एक अध्याय पढ़िए। और इस समय अपना भोजन और रहन-सहन सीमित कीजिए, क्योंकि आगे यह उपलब्ध नहीं होगा; यदि आप अभी कुछ रखेंगे तो वह बाद में काम आएगा। और इस वर्ष भारत में कृषि पर लगभग 50% हानि का प्रभाव पड़ेगा, और विश्व में भी ऐसा ही होगा; ओडिशा में भी कृषि में हानि होगी। भारत में और विश्व में अनेक स्थानों पर, छोटी जोतों में और बड़ी जोतों में, अत्यधिक और कम वर्षा के कारण अकाल जैसी स्थिति आएगी। श्रावण, भाद्र और आश्विन — अगस्त, सितंबर, अक्टूबर — में अधिक गर्मी होगी, और गर्मी होगी फिर अचानक मौसम बदलेगा और ठंड शुरू हो जाएगी। ऐसे समय आ रहे हैं। रोग को भगवान ने फिलहाल भारत में रोक रखा है; वह पहले अन्य देशों में फैलेगा — जिस देश में अधिक पाप होता है, जहाँ हत्या और जीव हत्या होती है, वहाँ अधिक होगा; हमारे देश में बाद में आएगा, हमारा समय आएगा। परंतु भारत-पाकिस्तान युद्ध किसी भी समय हो सकता है; पूर्ण विश्व युद्ध भी किसी भी समय आ सकता है; और सऊदी अरब में एक बड़ा युद्ध बढ़ सकता है — एक नया युद्ध मोर्चा खुल सकता है — और अमेरिका का ईरान से युद्ध फिर होने की भी संभावना है। इसी विचार के साथ, सबका धन्यवाद। सबकी रक्षा हो और समस्त मानवता का कल्याण हो। सभी धर्म, सभी जातियाँ, सभी वर्ण मिलकर भारत की एकता और अखंडता बनाए रखें; भारत पर जो भी आएगा, उसके विरुद्ध हम सब मिलकर लड़ेंगे। हाँ — कौन रहेगा और कौन नहीं रहेगा, सब कुछ सात-आठ वर्षों के भीतर, अधिक से अधिक दस वर्षों के भीतर तय हो जाएगा। सबका धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:23 · 24 मई 2026

प्रश्न 3266 (अरब अमीरात से) नमस्कार पंडित जी — भविष्य मालिका के अनुसार 13 इस्लामिक देशों का गठन/एकीकरण कैसे होगा? और सऊदी अरब के भविष्य के बारे में भविष्य मालिका में क्या भविष्यवाणी है?

उत्तर: देखिए, सबसे पहले तो — आज सऊदी अरब में जो रेगिस्तान है, वह रेगिस्तान नहीं रहेगा। आगे चलकर वह हरा-भरा, उपजाऊ क्षेत्र बन जाएगा। वहीं पर, महाभूकंप, सुनामी और प्रकृति के परिवर्तन के द्वारा उस भूमि में हरियाली उत्पन्न होगी, और आज जो वहाँ रेगिस्तान है वह रेगिस्तान नहीं रहेगा। आगे चलकर वहाँ मीठा पानी भी मिलेगा। जिस दिन मक्का-मदीना पर हमला होगा, उसके कुछ समय बाद सभी मुस्लिम देशों का एकीकरण होगा — यह शास्त्र में लिखा है। और उसी प्रक्रिया में मिड-ईस्ट के सभी देशों में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा, और कुछ देश तो समुद्र में विलीन ही हो जाएँगे; कुछ देश 70-80% बचेंगे, 20% समाप्त हो जाएगा — छोटे देश और समुद्र से सटे हुए क्षेत्र बहुत अधिक प्रभावित होंगे। और मक्का-मदीना में भयंकर युद्ध होगा। उसी समय जगन्नाथ क्षेत्र में जल-प्रलय होगी — यह लिखा हुआ है; पंच सखाओं ने भविष्य मालिका में ये दोनों बातें लिखी हैं। तो आगे चलकर समय एक सुंदर परिवर्तन की ओर बढ़ेगा, लेकिन कुछ समय के लिए एक बड़ा अंतराल आएगा, आगे बहुत विनाशकारी स्थिति भी आएगी।

► यह उत्तर सुनें · 00:47:42 · 24 मई 2026

प्रश्न 3267 (गोपी राठौर जी) पंडित जी, सभी भक्तों का एकत्रीकरण कब तक होगा?

उत्तर: देखिए, यह तब होगा जब लोगों की विचारधारा बदलेगी। इस समय भगवान संसार में 'ठंडी हथौड़ी' चला रहे हैं — वे छोटे-छोटे भूकंप लाते हैं, छोटी-छोटी जल-प्रलय, छोटी-छोटी अग्नि-प्रलय लाते हैं। ऐसा समय आएगा जब आकाश से अग्नि की वर्षा होगी और गाँव, शहर और वन जल उठेंगे, और हम उसे रोक नहीं पाएंगे। परंतु भगवान ने अभी तक ऐसी विपत्ति नहीं लाई है; वे छोटी-छोटी लाते हैं। ऐसा समय आएगा जब एक ग्रह की दूसरे ग्रह से टक्कर होगी और उससे महान परिवर्तन आएगा। ऐसा समय आएगा जब हिमालय की एवरेस्ट चोटी भूकंप से टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी। परंतु भगवान ने अभी ये नहीं किए हैं; वे सबको थोड़ा अवसर दे रहे हैं ताकि परिवर्तन आ सके। मेरे विचार से, 2028 के बाद सभी भक्तों का एकत्रीकरण होगा, 2031-32 तक, और सभी लोग धर्म की ओर आएंगे — क्योंकि 2028 के बाद, जैसा मैंने बताया है, रोग आएगा, पूरे विश्व में रोग का प्रभाव बढ़ेगा, और रोग के साथ-साथ पंचभूत की प्रलय और विश्वयुद्ध की परिस्थितियों से लोग धर्म की ओर मुड़ेंगे और भक्तों का एकत्रीकरण होगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:49:31 · 24 मई 2026

प्रश्न 3268 (अध्यक्ष जी) इस भीषण गर्मी में हम इसका सामना कैसे करें? हम पहले से ही Trisandhya कर रहे हैं और भागवत महापुराण पढ़ रहे हैं — इस भीषण गर्मी से कुछ राहत पाने के लिए हमें और क्या करना चाहिए?

उत्तर: देखिए, जहाँ तक गर्मी के मौसम की बात है — आगे हम आठ महीने गर्मी और चार महीने ठंड देखेंगे। वर्षा पूरे साल भर होगी; अत्यधिक वर्षा भी होगी और कम वर्षा भी। तीन ऋतुएँ चलेंगी। तो गर्मी से राहत के लिए मैं यह कहता हूँ: यदि आप गर्मी को और मृत्यु को भी जीतना चाहते हैं, तो Madhava के नाम का जप कीजिए। गर्मी से, ठंड से, जल से, आकाश से — कहीं भी, जल में, थल में, आकाश में — भगवान रक्षा देंगे। जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 00:51:16 · 24 मई 2026

प्रश्न 3269 (विदेश से एक भक्त) डीज़ल और पेट्रोल की बढ़ती कीमतों के बारे में भविष्य मालिका में क्या लिखा है?

उत्तर: भविष्य मालिका में लिखा था कि Kali Yuga की सारी मशीनें चलना बंद हो जाएँगी; सारी कलियुगी मशीनरी ठप हो जाएगी — चाहे वह तकनीक हो, साइबर सिस्टम हो, या वाहन हों। तो आगे ऐसा समय आएगा जब डीज़ल और पेट्रोल उपलब्ध नहीं होगा; और जहाँ तक दुनिया के सारे तेल क्षेत्रों की बात है, मनुष्य आपस में लड़कर उन सबको नष्ट कर देंगे। इसलिए मेरे विचार में 2028 के बाद डीज़ल और पेट्रोल की बहुत बड़ी समस्या होगी और यह उपलब्ध नहीं होगा। और यह भी दिखाया गया है: बड़े-बड़े वाहन और मशीनरी सब खड़े-खड़े कबाड़ की तरह जंग खा जाएँगे और किसी काम के नहीं रहेंगे। अभी थोड़ा-बहुत चल रहा है, उपलब्ध है, लेकिन जैसे-जैसे हम 2032 की ओर बढ़ेंगे, आगे पेट्रोल और डीज़ल उपलब्ध नहीं होगा — केवल सेना के लिए, देश की रक्षा के लिए जो आवश्यक है उसके लिए, सरकार इसकी खपत को (नियंत्रित) करेगी।

► यह उत्तर सुनें · 00:52:17 · 24 मई 2026

प्रश्न 3270 (भाविका मेरवानी जी) कोटि-कोटि प्रणाम, गुरु जी। मैं आप में देवर्षि नारद जी का रूप देखती हूँ, जो युगों-युगों से भगवान विष्णु के नाम का प्रचार करते आ रहे हैं। मेरा प्रश्न यह है: कुछ लोगों ने पहले मुझे बहुत कष्ट और पीड़ा दी। मैं उन्हें क्षमा करना चाहती हूँ, पर कर नहीं पा रही हूँ। कृपया कोई उपाय बताइए।

उत्तर: जय Jagannath। मैं आपके विचार का बहुत सम्मान करता हूँ, लेकिन बात यह है: देखिए, अगर हम सोचें तो हम किसी को क्षमा करने के योग्य ही नहीं हैं। क्षमा करने वाले तो भगवान हैं। हम तो केवल अपना कर्म भुगत रहे हैं, अपने ही कर्म का फल भोग रहे हैं। अगर क्षमा की बात है, तो वह करुणा की बात है। अगर हम किसी पर करुणा दिखाते हैं, तो हमारे हृदय में बसे भगवान ही उसे वह करुणा देते हैं। अगर हम किसी को क्षमा करते हैं, तो हमारे हृदय में बसे भगवान ही उसे वह क्षमा देते हैं। तो जिन लोगों ने यह किया है, उनके बारे में हमारा सबसे बड़ा विचार यही रहता है: हमारे सनातन धर्म में हम कहते हैं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'। भगवान ने भागवत में कहा — अपने शत्रु, अपने मित्र, चांडाल, पापी, हत्यारे, डाकू — सबको एक ही दर्जा दो; अगर आप सबको एक दर्जा देंगे, तो सब मनुष्य हैं और सब हमारे मित्र हैं, और क्षमा अपने आप हो जाएगी। इसलिए संसार में शत्रुता और मित्रता का व्यवहार हमारी विचारधारा में नहीं है; न वह सनातन में है और न ही हमारी विचारधारा में रहना चाहिए। हर कर्म, हर दुःख, हर समस्या, हर वैभव, हर सम्पत्ति भगवान विष्णु के चरणों में अर्पित कर दीजिए। उसी दिन से सब कुछ क्षमा हो जाता है। और कहिए: 'प्रभु, यह सब आपका है; मेरा दुःख आपका है, मेरा सुख आपका है, मेरी सम्पत्ति आपकी है, और सब कुछ आप ही हैं; आपके बिना मेरा कोई नहीं; आप ही मेरे रक्षक हैं; और मैं पूरे संसार का और सबका कल्याण चाहता हूँ; मुझे अपने चरणों में स्थान दीजिए।' बस इतना कहने मात्र से भगवान स्वयं सबको क्षमा कर देंगे — क्योंकि हम क्षमा करने के योग्य नहीं हैं। अगर हम किसी से कह भी दें कि 'मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया', तो भी जो कर्म किया गया है उसका न्याय यम के दरबार में होगा; उसने जो गलत कर्म किया है उसका फल उसे अगले जन्म में भोगना ही पड़ेगा, प्रारब्ध के कारण। जिस मनुष्य ने दूसरे को सताया है, दुःख दिया है, दंड दिया है — चाहे हम कहें या न कहें, चाहे हम क्षमा दें या न दें — उसे वह दंड भोगना ही पड़ेगा। जैसे हवा सुगंध और दुर्गंध दोनों को अपने साथ ले जाती है, वैसे ही यह आत्मा मृत्यु के बाद पंचभूतों के शरीर को त्यागकर, जीवन भर किए गए कर्म के साथ जाएगी, और अगले शरीर में वही कर्म प्रकट होगा। तो मैंने क्षमा दे भी दी, फिर भी कर्म किसी को नहीं छोड़ेगा; सबको कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। लेकिन हम बस इतना ही कहते हैं: 'प्रभु, इस संसार में हम आपकी शरण लेते हैं; सुख और दुःख आपका है; मेरा कोई मित्र या सगा-सम्बन्धी नहीं, आप ही मेरे मित्र और सगे हैं; कृपया मेरा उद्धार कीजिए, और संसार का कल्याण हो।' जय Jagannath।

► यह उत्तर सुनें · 00:53:21 · 24 मई 2026

प्रश्न 3271 (कनिष्क गोयल जी) पंडित जी, कोटि दंडवत प्रणाम। मेरे विवाह के लिए आपने जो उपाय बताया था, वह प्रभु की कृपा से सफल हुआ और मेरा विवाह हो गया। अब कृपया बताइए कि संतान प्राप्ति के लिए कोई उपाय है क्या?

उत्तर: अच्छा — रही बात संतान की, तो संतान आपको अवश्य प्राप्त होगी। जब विवाह हो गया है, तो संतान की प्राप्ति भी हो सकती है। संतान प्राप्ति के लिए मैं आपको अवश्य बताऊँगा। अलग समय पर, जिस नंबर पर मोहन बात करते हैं, या जो नंबर विवरण (डिस्क्रिप्शन) में है, मोहन का — उनसे चर्चा करने के बाद मैं आपको बताऊँगा। यदि आप आगे संतान चाहते हैं — ऐसा समय आएगा जब लोगों के लिए अन्न, राशन और जल की बहुत बड़ी समस्याएँ होंगी। फिर भी, यदि यही आपकी इच्छा है, तो हम आपको उपाय बताएँगे; फ़ोन करके बात कीजिए, मैं आपको बता दूँगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:57:16 · 24 मई 2026

प्रश्न 3272 (दो प्रश्नकर्ता, नाम नहीं दिए गए) भविष्य मालिका के अनुसार, क्या भविष्य में सोने में निवेश करना सुरक्षित रहेगा?

उत्तर: दोनों ही मामलों में नाम नहीं दिया गया है। ऐसा समय आएगा जब भारत में, विश्व में, हर देश में सोने को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर दिया जाएगा। न तो कोई उसे बेच पाएगा, न ही कोई उसे खरीद पाएगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:58:22 · 24 मई 2026

प्रश्न 3273 (नाम नहीं दिया गया) भारत-पाकिस्तान का जो युद्ध होना है — क्या वह 2026-27 के भीतर होगा? हो सकता है या नहीं?

उत्तर: उन्होंने भी नाम नहीं दिया। मई 2025 में युद्ध हुआ; उसकी रचना भविष्य मालिका में थी — कि सैन्य कार्रवाई के द्वारा पाकिस्तान से युद्ध होगा। और लिखा है कि 2026-27 में फिर से युद्ध होगा। इसीलिए मैंने भी कहा है कि 2026-27 में भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच युद्ध होगा, और तृतीय विश्वयुद्ध भयानक रूप ले लेगा। मेरे विचार से, यदि लोग धर्म की ओर आएँ तो यह थोड़ा विलंबित हो सकता है; यदि वे धर्म की ओर नहीं आते तो यह बिलकुल समय पर ही आएगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:58:42 · 24 मई 2026

प्रश्न 3274 (अपूर्वा शर्मा जी) क्या स्त्रियाँ भी पितृ तर्पण कर सकती हैं, जिस प्रकार पुत्र पितृ तर्पण करते हैं? मेरे पति जल्दी नहीं उठते और चिढ़ जाते हैं; कभी संध्या करते हैं, कभी नहीं करते।

उत्तर: अपूर्वा शर्मा जी, यह ठीक है। पितृ तर्पणम् — आजकल बेटियाँ भी कर रही हैं, क्योंकि शास्त्र में लिखा था कि युग-परिवर्तन के समय माताओं को भी आगे आकर धार्मिक कार्य करना पड़ेगा। इसलिए आप पिंड-दान कर सकती हैं; माताओं को करना चाहिए। यदि हम पितरों का पिंड-दान नहीं करते, तो हमारे घर में कोई मंगल नहीं होगा। आज पति-पत्नी में अलगाव, घर में कलह, वाणी में क्रोध, संतान का न होना, नौकरी का चले जाना, आजीविका में दरार पड़ना, व्यापार में हानि — ये सब पितृ दोष के कारण होते हैं। और पितृ दोष से मुक्ति के लिए — पितृ दोष से उद्धार पाने के लिए त्रिकाल संध्या सबसे बड़ा मंत्र है। जिसके घर में त्रिकाल संध्या होती है, उस घर में पितृ दोष नष्ट हो जाता है। तो आप बिलकुल कर सकती हैं।

► यह उत्तर सुनें · 00:59:44 · 24 मई 2026

सत्र 190 · प्रश्न 3275–3280

L206: 2026–32 में छात्र और नौजवानों का जीवन कैसे रहेगा सुरक्षित और शांतिमय? | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 27 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3275 (प्रारंभिक प्रवचन) वर्ष 2026–32 के दौरान विद्यार्थियों और युवाओं का जीवन कैसे सुरक्षित और शांतिपूर्ण रहेगा?

उत्तर: जय जगन्नाथ। भारत और समस्त विश्व के सभी सनातन धर्मी सज्जनों, संतों और शुद्ध मानवों को मेरा सादर प्रणाम। आज का विषय हमारे लिए बहुत मूल्यवान है, क्योंकि देश का भविष्य और वर्तमान युवा ही हैं — वे ही हमारे देश के रक्षक हैं और वे ही हमारे देश को आगे ले जा सकते हैं। भविष्य मालिका नामक ग्रंथ में सम्पूर्ण विश्व के विषय में लेख है — सम्पूर्ण विश्व के भविष्य के विषय में, भारत के भविष्य के विषय में, और सम्पूर्ण ब्रह्मांड में होने वाले परिवर्तनों के विषय में। इस ग्रंथ में जो लिखा है वह हमारे लिए अत्यंत लाभकारी है, क्योंकि यदि हम उसे जान सकें तो हम उससे सावधानी ले सकते हैं। इसी कारण यह ग्रंथ बहुत महत्वपूर्ण है और कल्याणकारी ग्रंथ है। बहुत से लोग बहुत-सी बातों का प्रचार करते हैं जो ग्रंथ में हैं ही नहीं। ग्रंथ में केवल मानव कल्याण है, मानवता का उत्थान है, और यह है कि आने वाली समस्याओं से हमें मुक्ति कैसे मिलेगी। इसीलिए यह ग्रंथ युवाओं के लिए और समस्त मानव जाति के लिए इतना महत्वपूर्ण है। इसी समय युग परिवर्तन हो रहा है। सम्पूर्ण विश्व का युग परिवर्तन होने वाला है — सात ब्रह्मांडों में युग परिवर्तन का समय है। इसलिए युग परिवर्तन के समय मनुष्य में भी परिवर्तन होना ही चाहिए। मानवता में परिवर्तन के साथ-साथ युवाओं का, नौजवानों का और छोटे बच्चों का परिवर्तन भी आवश्यक है — क्योंकि जैसा ऋतु होता है, वैसा ही जीवन-यापन होना चाहिए। इस समय हम एक भयंकर कलियुग से सत्ययुग की ओर बढ़ रहे हैं, और मानव सभ्यता में, मनुष्य में एक बड़ा परिवर्तन आता है; अतः हममें भी परिवर्तन आवश्यक है, और युवाओं तथा विद्यार्थियों में परिवर्तन होना ही चाहिए। आजकल हम देखते हैं कि अनेक स्थानों पर युवाओं के साथ सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं। कहीं युवा अवसाद (डिप्रेशन) के कारण दुखी हो जाते हैं। कहीं भारी अवसाद के कारण, अपने करियर में असफलता के कारण, वे आत्महत्या तक कर लेते हैं। कहीं वे क्रूर हो जाते हैं, और कहीं अपनी ही समस्याओं को लेकर आपस में लड़ भी पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि इस युग परिवर्तन के समय के कारण युवाओं पर छोटी समस्याएँ और बहुत बड़ी समस्याएँ भी आती हैं। हमें इन समस्याओं से मुक्ति चाहिए, और मुक्ति का केवल एक ही मार्ग है — संस्कार। मैंने देखा है कि पिकनिक में युवा जलाशयों में डूब जाते हैं; कहीं नाव डूब जाती है, कहीं समुद्र में। इस समय युवाओं ने अनेक ऐसी परंपराएँ अपना ली हैं जो हमारी सनातन परंपरा की मूल परंपरा से बहुत दूर हैं — अनेक व्यक्तिगत परंपराएँ, अनेक मनुष्य-निर्मित परंपराएँ; युवा जाकर उनके चरणों में आश्रय लेते हैं और वहीं रहकर अपना कार्य करते हैं। परंतु सच में, क्या वहाँ उनकी रक्षा होती है? नहीं होती। वह हमारी विचारधारा में नहीं है। फिर भी आज के समाज में हम देखते हैं कि युवाओं पर अनेक घटनाएँ, अनेक विपत्तियाँ आती हैं। यदि युवा भगवान विष्णु की शरण में जाएँ, या जाएँगे, तो उनका बहुत कल्याण होगा, क्योंकि इस संसार में भगवान विष्णु के अतिरिक्त हमारा कोई रक्षक नहीं है। तो सबसे पहले, सभी युवाओं और छोटे बालक-बालिकाओं से मेरा निवेदन है: कम से कम भगवान विष्णु की शरण में जाइए। भगवान विष्णु की पूजा कीजिए। श्री विष्णु, श्री श्री जगन्नाथ जैसे नामों का जप करने से उन पर भगवान विष्णु की कृपा होगी। इसीलिए संस्कार चाहिए। इस समय हर माता-पिता अपने बच्चों के लिए चिंतित हैं; वे चाहते हैं कि हमारा बच्चा अच्छा बने, उसका करियर अच्छा हो, उसका भविष्य अच्छा हो। मेरे विचार से सबका भविष्य अच्छा होगा — पर तभी, जब हम उसे संस्कार दें। यदि बचपन से, जन्म से हम बच्चों और युवाओं को संस्कार दें, तो उनके जीवन में उन्हें कभी ऐसी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। मैं द्वापर युग की एक विचारधारा लेता हूँ। एक दिन राजा धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा, 'प्रभु, कलियुग की रूपरेखा कैसी होगी?' भगवान ने युधिष्ठिर से कहा, 'कलियुग का प्रभाव अब आ रहा है; तुम जाओ और भ्रमण करो, और जो दृश्य देखो, आकर मुझे बताओ।' तो धर्मराज युधिष्ठिर भ्रमण पर गए, और मार्ग में उन्होंने देखा कि एक गाय अपने बछड़े को इतना चाट रही है, चाटती ही जा रही है, कि बछड़े के शरीर से और मुख से, सब जगह से खून बहने लगा। राजा युधिष्ठिर दुखी हो गए और बोले, 'हे माता गौ, तुम अपने ही बच्चे को इतना क्यों चाटती

हो कि चाटने से उसे हानि हो रही है और उसका जीवन संकट में पड़ गया है?' यह देखकर उनके मन में दुख आया — गाय धर्म की देवता है, और जिसे हम माता के रूप में पूजते हैं, वह अपनी ही संतान के साथ ऐसा क्यों करती है? तब राजा युधिष्ठिर आकर भगवान कृष्ण से पूछते हैं, 'मैंने मार्ग में एक दृश्य देखा।' कृष्ण भगवान ने कहा, 'क्या दृश्य देखा?' 'मैंने देखा कि एक माता गाय अपने बछड़े को तब तक चाट रही थी जब तक निरंतर रक्त बहने लगा, और कभी-कभी तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है।' तब भगवान कृष्ण ने कहा: 'कलियुग में माता-पिता अपने बच्चों को संस्कार नहीं देंगे। जन्म से संस्कार न मिलने के कारण बच्चे अपने भविष्य को धर्म और संस्कार के साथ आगे नहीं बढ़ा पाएँगे। हर माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा और करियर के विषय में सोचेंगे, पर संस्कार नहीं देंगे। तो इससे क्या होगा? बच्चों में संस्कार न होने के कारण उस कुल का पतन होगा। उनके वृद्धावस्था में बच्चे अपने माता-पिता की सेवा और देखभाल नहीं करेंगे, और कुछ मामलों में तो ऐसी समस्या उत्पन्न होगी कि वे अपने माता-पिता का विरोध तक करेंगे। इस प्रकार कलियुग में कुल धर्म नष्ट होगा, और वह भविष्य — माता-पिता स्वयं ही उस भविष्य को नष्ट कर देंगे।' यदि पुत्र गलती करता है, यदि वह संस्कार से दूर है, यदि वह आध्यात्मिक मार्ग को नहीं अपनाता, यदि वह भागवत नहीं पढ़ता, यदि वह त्रिसंध्या (तीनों समय की प्रार्थना) नहीं करता, यदि वह भगवान विष्णु का नाम नहीं लेता — तब भी माता-पिता उसे प्रोत्साहित करते हैं, कहते हैं, 'छोटा बच्चा है, अभी नहीं करता, बाद में कर लेगा।' पर सच में यह हमारे बच्चों के भविष्य, उनके संस्कार, उनकी आयु, उनकी सुरक्षा को प्रभावित करता है। हमने सनातन धर्म से यह परंपरा सीखी है: यदि सभी बालक, बालिकाएँ और युवा प्रतिदिन त्रिसंध्या करें, तो उन सबकी आयु बढ़ेगी। माता सरस्वती और गणेश देव की कृपा बनी रहेगी। शिक्षा अच्छी होगी, स्मरण शक्ति बढ़ेगी, और समय के पाबंद रहकर, ब्रह्म मुहूर्त से लेकर संध्या तक, वे अपने कर्तव्य और अध्ययन सुचारु रूप से कर पाएँगे। क्योंकि आजकल हम देखते हैं कि अनेक युवा और बच्चे देर से सोने जाते हैं, देर तक सोते हैं। इस आदत के कारण बच्चों की स्मरण शक्ति क्षीण होती है और उनकी शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित होती है। यदि बच्चे ब्रह्म मुहूर्त में जागें और त्रिसंध्या करें, और उसके बाद अध्ययन करें, और उसके बाद भोजन करें; यदि वे सही समय पर दोपहर का भोजन और सही समय पर रात्रि भोजन करें — तो उन्हें शिक्षा और अध्ययन के लिए भरपूर समय मिलेगा, और उसके साथ ही उनकी स्मरण शक्ति, बल, और भगवान विष्णु की कृपा से हमारे बच्चे सुरक्षित हो जाएँगे। और हमने ग्रंथ में यह पढ़ा है: जो भगवान विष्णु की पूजा करते हैं — उनका बल, बुद्धि, विवेक, आत्मशक्ति, उनका पुरुषार्थ और आयु, सब बढ़ते हैं। त्रिसंध्या में केवल भगवान विष्णु के ही श्लोक हैं — भगवान विष्णु के 16 नाम, भगवान विष्णु के दस अवतार, भगवान विष्णु का माधव नाम, परम पवित्र ग्रंथ भागवत महापुराण — ये सब भगवान विष्णु की उपासना और ध्यान हैं। और यदि बच्चे भागवत पढ़ें, तो आयु बढ़ती है। वे सड़क पर चलते हैं, घूमने जाते हैं, खेलने जाते हैं, पिकनिक पर जाते हैं — अपमृत्यु (अकाल मृत्यु) होती है। मेरे विचार से, जो त्रिसंध्या करता है उसकी अपमृत्यु नहीं होगी। इस समय हमारे युवा जो हमारे देश का भविष्य हैं, हमारी रक्षा, हमारी सुरक्षा हैं — वे हमारे भविष्य को दृढ़ और निश्चित बना सकेंगे। उनके संस्कार, और उनके लिए त्रिसंध्या, आवश्यक है — क्योंकि इस समय युग परिवर्तन हो रहा है; सत्ययुग आएगा। यदि बच्चे त्रिसंध्या नहीं करेंगे, तो वे सत्ययुग के कर्म को नहीं जान पाएँगे; फिर सत्ययुग में वे कैसे जीवित रहेंगे, वहाँ कैसे कार्य करेंगे? इसलिए इस समय सभी बालक-बालिकाओं का त्रिसंध्या करना — मेरा पूर्ण विश्वास है, मेरा सत्य विश्वास है, कि अपमृत्यु नहीं होगी, वे अपने माता-पिता की सेवा और रक्षा करेंगे, और पुत्र, बहुएँ और बच्चे अंत तक अपने माता-पिता की देखभाल करेंगे — क्योंकि त्रिसंध्या एक ऐसा सिद्धांत है जो हमें सेवा, सत्य, शांति, करुणा, क्षमा और मैत्री सिखाता है। इसलिए इस समय हमारे युवाओं की रक्षा त्रिसंध्या है। त्रिसंध्या करने से शिक्षा अच्छी होगी, आत्मशक्ति बढ़ेगी, और मेरे विचार से अनहोनी घटनाएँ नहीं होंगी। दुर्घटना से मृत्यु, आकस्मिक विपत्ति — वह भी नहीं आएगी। हमारे बच्चे बड़ी आपदाओं से सुरक्षित रहेंगे। इसलिए बच्चों की सुरक्षा अनिवार्य है, और हर माता-पिता से मेरा निवेदन है: मैंने आपको द्वापर युग की वह कथा सुनाई — वैसा मत कीजिए। यदि आप उन्हें संस्कार नहीं देंगे, तो अपने ही हाथों से हम अपने ही बच्चे के विनाश की खेती करते हैं, और बाद में उसका दोष हमें स्वयं भुगतना पड़ेगा। आज भारत में कितने वृद्धाश्रम हैं। कारण यह है कि हमने अपने बच्चों को संस्कार नहीं दिए; हमने अपने बच्चों को भगवान विष्णु की शरण में नहीं ले गए; हमने अपने बच्चों को त्रिसंध्या नहीं सिखाई। इसी कारण, हमारे बच्चों के विवाह के बाद, उन्हें अपने कर्तव्य का कोई ज्ञान नहीं होता, उसकी कोई सही समझ नहीं होती, और इसलिए वे उसे निभा नहीं पाते। यह उनका दोष नहीं है — मैं दोष माता-पिता पर रखना चाहता हूँ। और दोष देने से क्या लाभ? अब 2032–34 में सत्ययुग आएगा। हम भी जाएँगे। हमारे छोटे बच्चे भी सत्ययुग में जाएँगे। वे 1000 वर्ष तक जीवित रहेंगे और अपने जीवन में परम सुख प्राप्त करेंगे; और अभी से जो समय चल रहा है उसमें भी वे सुख प्राप्त करेंगे और सुरक्षित जीवन जिएँगे। इसलिए सभी माता-पिता से मेरा निवेदन है: पहले संस्कार का पाठ दीजिए — अपने छोटे बच्चों को त्रिसंध्या सुनाइए, उनसे त्रिसंध्या करवाइए, उनसे भागवत पढ़वाइए; उसी में

उनकी रक्षा है। हम बच्चों को ऐसी आयु में घर से बाहर भेज देते हैं जब उनमें निर्णय लेने की परिपक्वता नहीं आई होती। यदि वे त्रिसंध्या करें, तो उनकी पूर्णता और पूर्ण उत्तरदायित्व भगवान विष्णु की कृपा से आता है। फिर आज के समय में घर पर बैठे माता-पिता को ऐसा विश्वास होगा — 'मेरा बेटा त्रिसंध्या करता है, माधव नाम जपता है, विष्णु की शरण में है, भागवत पढ़ता है, उसे कोई समस्या नहीं होगी' — और अंत में, अपने करियर में सर्वोच्च स्तर पर पहुँचकर वह अपना जीवन सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बनाएगा। आजकल हम देखते हैं कि अनेक स्थानों पर पति-पत्नी में अलगाव होता है; तलाक के मामले होते हैं, और वे निभा नहीं पाते और अलग रहते हैं। बहुत से मुकदमे चलते रहते हैं। यदि इसी आयु से हम उन्हें त्रिसंध्या सिखाएँ और भागवत पढ़वाएँ, तो आगे चलकर उनके वैवाहिक जीवन में भी उन्हें सुख और शांति प्राप्त होगी और वे आनंद में रहेंगे। आज संसार में जो हो रहा है — परिवार टूट रहे हैं। परिवार नहीं टूटेंगे। घर में अच्छी संतान जन्म लेगी। आजकल बहुत से लोगों की संतान नहीं होती। इन सभी समस्याओं का समाधान — बच्चों का भविष्य, बच्चों की भावी सुरक्षा, नवयुवकों की सुरक्षा, और उनके भविष्य को एक सुविचारित मार्ग पर ले जाना — इसके लिए त्रिसंध्या उनके लिए सर्वाधिक सत्य प्रदान करने वाली है, ब्रह्मांड में सबसे बड़ी है। हमें सत्य की ओर आगे बढ़ना है। सब कुछ बदल रहा है। हम अपने बच्चों को भी बदलेंगे और अपने बच्चों की रक्षा भगवान विष्णु की शरण में छोड़ देंगे, क्योंकि मनुष्य के करने से कुछ नहीं होता; जो कुछ होता है वह भगवान की कृपा से और पूर्व अर्जित कर्म से होता है। तो सभी युवाओं से मेरा निवेदन है: त्रिसंध्या कीजिए। पाँच मिनट लगते हैं। और यदि आप ब्रह्म मुहूर्त से अपना कार्य आरंभ करें, तो आपके जीवन में कभी बाधाएँ नहीं आएँगी, और आप जीवन में सर्वोत्तम करियर तक पहुँच सकते हैं; और संसार की किसी भी चुनौती में — चाहे शिक्षा हो, चाहे खेल हो, चाहे कोई भी शैक्षणिक करियर हो — उन सबमें आपको भगवान की कृपा मिलेगी। और जो ब्रह्म मुहूर्त में जागते हैं, उनके जीवन में सफलता स्वयं आती है। त्रिसंध्या एक ऐसा माध्यम है जिससे स्वयं ही, ब्रह्म मुहूर्त में रात्रि के 3:45 से 4:30 बजे, नींद टूट जाती है; और यदि हमारे बच्चे उसी समय से अपना कार्य आरंभ करें, तो उन्हें पूरे दिन का समय मिलेगा — वे शिक्षा भी करेंगे और साथ ही धर्म की रक्षा करेंगे, स्वयं की रक्षा करेंगे, अपनी सुरक्षा स्वयं लेंगे, और अपनी शिक्षा, अपनी स्मरण शक्ति के लिए स्वयं निर्णय ले सकेंगे। क्योंकि जब भगवान की कृपा आती है — ध्रुव नौ वर्ष के थे, प्रह्लाद ग्यारह वर्ष के थे; उन्होंने स्वयं अपने निर्णय लिए, और अपने निर्णय से ध्रुव मोक्ष-पद के स्तर के राजा बन गए, और प्रह्लाद स्वर्ग में इंद्र बने और ग्यारह वर्ष की आयु में पृथ्वी पर राजा भी बने। वही भविष्य है — और वे उस स्तर पर त्रिसंध्या के माध्यम से पहुँचे। हमारे बच्चे वहाँ क्यों न जाएँ? तो बच्चे अपनी सुरक्षा स्वयं लें; वे स्वयं त्रिसंध्या करें। मेरे विचार से, कोई भी बच्चा, कोई भी वरिष्ठ व्यक्ति, कोई भी वृद्ध व्यक्ति जो त्रिसंध्या करता है, उसकी कभी अपमृत्यु नहीं होगी; दुर्घटना से मृत्यु नहीं होगी। उनके जीवन में भगवान की रक्षा और सम्पूर्ण विश्व का सहयोग उनके साथ रहेगा। तो हमारे सभी बालक-बालिकाओं के साथ हमारे परिवार को भी सत्ययुग में जाना है। भविष्य मालिका पुराण हमें सत्ययुग की शुभ सूचना देता है, और यह भी बताता है कि त्रिसंध्या के माध्यम से हम सत्ययुग में कैसे जाते हैं। और यह भी प्रमाण देता है कि सत्ययुग में हमारा जीवन कैसे समृद्ध, सुखी, रोगमुक्त और वृद्धावस्था की व्याधियों से मुक्त होगा — कैसे एक स्वस्थ और समृद्ध मानव सभ्यता बनी थी। इसलिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र, औषधि — यह परंपरा हर युग में है और इस युग में भी है। अतः युग परिवर्तन के साथ यह शिक्षा व्यवस्था चलती रहेगी। आज जो बच्चे पढ़ रहे हैं वे इसे जारी रखें। अच्छे से पढ़िए — क्योंकि किसी भी युग में शिक्षा कभी समाप्त नहीं हुई। हर युग में शिक्षा चलती है। सत्य, त्रेता, द्वापर में — स्वयं कल्कि भगवान ने अध्ययन किया, और पांडवों ने भी किया; ध्रुव और प्रह्लाद ने भी अध्ययन किया। हमें भी अध्ययन करना चाहिए। युग परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा सबसे बड़ी आवश्यकता है। और आप जो अभी पढ़ रहे हैं — चाहे आपका करियर शैक्षणिक हो, या पारंपरिक करियर हो, या कोई व्यक्तिगत करियर हो — उस करियर को बनाने के लिए धर्म को मजबूत कीजिए: धर्म त्रिसंध्या में मिलेगा। अपनी आयु को मजबूत कीजिए: वह आपको त्रिसंध्या में मिलेगी। और इस युवा अवस्था में आपके जीवन में आवश्यक निर्णय — त्रिसंध्या में आपको स्वतंत्र सकारात्मकता मिलेगी, जिससे आप स्वयं कहेंगे, 'त्रिसंध्या करने के बाद हमारी स्मरण शक्ति अच्छी रहती है, मन मुक्त रहता है, पढ़ाई अच्छी चलती है, और शिक्षा में जो बातें हम पकड़ नहीं पाते थे और भूल जाते थे वे अब हमारे लिए आसान हो गई हैं।' तो अपनी शिक्षा को मजबूत कीजिए, पढ़िए। समय पर भोजन कीजिए। सुविचारित वस्त्र पहनिए, और हमारी सनातनी परंपरा के अनुसार वेश धारण कीजिए; और उचित समय पर शौच जाकर और उचित समय पर सोकर, हम अपने जीवन में एक सुरक्षित, समृद्ध और प्रगतिशील सभ्यता तक पहुँचेंगे। इसलिए भारत और विश्व के सभी बच्चों और युवाओं से मैं कहता हूँ: बस त्रिसंध्या कीजिए और देखिए आपको इससे क्या लाभ मिलता है। मैं गारंटी देता हूँ — न अपमृत्यु, न दुख, न विपत्ति, न चिंता, न समस्या। त्रिसंध्या सभी समस्याओं के समाधान का एक ही सूत्र है। देखिए, सबसे बड़ी परंपरा, सबसे सस्ती, सबसे बड़ा सृष्टिकर्ता, समस्त देवताओं के पिता, शंकर भगवान और ब्रह्मा देव के पिता, सबके रक्षक — भगवान विष्णु हैं। भगवान विष्णु

के बिना संसार में कोई दूसरा रक्षक नहीं है। मनुष्य इसे नहीं समझता। जब मनुष्य मरता है, जब उसका पिंडदान किया जाता है, तब भगवान विष्णु की ही पूजा होती है। भले ही आपने अपने जीवन में अनेक मनुष्यों को भगवान बना लिया हो, भले ही आपने अपने जीवन में अनेक परंपराएँ अपनाईं और उनके पीछे दौड़ते हुए पूरा जीवन बिता दिया हो — मृत्यु के बाद हमें भगवान विष्णु की ही शरण में जाना पड़ता है, क्योंकि मृत्यु के बाद भगवान विष्णु ही हमारी रक्षा करते हैं; मृत्यु से पहले मानव जीवन में भी वे ही हमारी रक्षा करते हैं; और सृष्टि, पालन और संहार में केवल भगवान विष्णु ही हमारे जीवन का उद्धार और रक्षा करते हैं। तो यदि मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति के लिए भगवान विष्णु की पूजा की जाती है, तो लोगों को बचपन से ही, प्रह्लाद की तरह, ध्रुव की तरह, पांडवों की तरह जिन्होंने सब कुछ त्यागकर भगवान की शरण ली — अंत में वे चक्रवर्ती सम्राट बने, सम्पूर्ण विश्व के राजा बने, स्वर्ग प्राप्त किया, और भगवान के मित्र बने, अपने जीवन को बहुत सुखी और समृद्ध बनाया। तो महान परंपराओं में सबसे बड़ी परंपरा भगवान विष्णु की परंपरा है। किसी भी मनुष्य-निर्मित परंपरा से, मेरे विचार से, आपको कुछ नहीं मिलेगा। जब भी आप भगवान विष्णु की शरण में जाते हैं, उसी दिन से, उसी क्षण से, उसी समय से, आपके मन और आपके शरीर को एक स्वतंत्र सकारात्मकता, स्वतंत्र शक्ति, स्वतंत्र आध्यात्मिक शक्ति मिलती है — यह आध्यात्मिक शक्ति ब्रह्मांड की, संसार की सबसे बड़ी इच्छाशक्ति है। ब्रह्मांड में ऐसी कोई इच्छाशक्ति नहीं है जैसी भगवान विष्णु के नाम से प्राप्त होती है। तो सभी युवाओं से, सम्पूर्ण युवा पीढ़ी से, सभी बालक-बालिकाओं से मेरा निवेदन है: त्रिसंध्या में 15 मिनट लगते हैं, और 15 मिनट में आपका करियर 100 वर्षों के लिए सुरक्षित हो जाता है। आपका जीवन सुरक्षित हो जाता है, आपका पुरुषार्थ एक स्वतंत्र स्तर तक उठ जाता है, और इसमें आपको सभी देवताओं की कृपा प्राप्त होगी। सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सभी देवता आपको आशीर्वाद देंगे। ग्रह और नक्षत्र — जो ग्रह और नक्षत्र आपको परेशान करते हैं — वे भी आपके लिए सुंदर और आशीर्वादपूर्ण हो जाएँगे, और जीवन सुखी और शांतिपूर्ण हो जाएगा, पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण हो जाएगा। पति-पत्नी में कभी अलगाव नहीं होगा, और पति-पत्नी में कोई कलह नहीं होगी। संसार का सर्वोत्तम सुख और शांति इसी में मिलेगी। तो सभी युवाओं से मेरा निवेदन है: त्रिसंध्या, भागवत का पाठ, माधव नाम — यह 15–20 मिनट की बात है। यदि आप पूरा भागवत नहीं पढ़ सकते, तो एक अध्याय; भागवत का एक पृष्ठ भी पढ़िए, दो मिनट लगेंगे। बस इतना कीजिए और संध्या कीजिए। और सभी बच्चों, बालकों, बालिकाओं और युवा पीढ़ी से मेरा निवेदन है: सुबह और शाम अपने माता-पिता के चरण पकड़कर साष्टांग प्रणाम कीजिए। इससे आपको जीवन में शांति मिलेगी, आपका भविष्य सुरक्षित होगा, आपको सभी देवताओं की कृपा मिलेगी, और सबसे बड़ी बात, भगवान महालक्ष्मी-विष्णु-नारायण की कृपा मिलेगी। और इससे आपको अपने जीवन में समस्त सुख और शांति मिलेगी। तो दिन में दो बार, सुबह और शाम, अपने माता-पिता को प्रणाम कीजिए। सुबह और शाम सूर्य देव को प्रणाम कीजिए। त्रिसंध्या में 15 मिनट लगेंगे — वह कीजिए। मैं आपसे बिल्कुल कहता हूँ: कीजिए। जो सुन रहे हैं — अपने बच्चों को, अपने विद्यार्थियों को, स्कूल में पढ़ने वाले छोटे बच्चों को बताइए: कहिए, 'हम त्रिसंध्या करते हैं और हमें इससे बहुत अच्छा लगता है।' और सबसे बड़ी बात, संसार में कभी भय नहीं होगा, न मोह, न चिंता, और सबसे बढ़कर आप कभी अपने भीतर कोई कमजोरी अनुभव नहीं करेंगे कि 'मैं कम हूँ' — क्योंकि ध्रुव और प्रह्लाद ने कहा, 'हम भी संसार के सबसे बड़े संत बन सकते हैं, हम राजा बन सकते हैं, हम इंद्र भी बन सकते हैं।' तो यह सब कीजिए, इसका पालन कीजिए; इसी में आपका कल्याण है। नए युग के निर्माण के साथ-साथ हम भी बढ़ेंगे। अभी आप जो शिक्षा पढ़ रहे हैं उसे और मजबूत कीजिए। पढ़िए, अच्छा करियर बनाइए, अपने माता-पिता को सुख और शांति दीजिए, उन्हें मानसिक शांति भी दीजिए, और भविष्य में जीविका अर्जित कर उन्हें आर्थिक शांति दीजिए। और उसके साथ ही, विश्व के सभी अभिभावकों, सभी माता-पिता से — अपने बच्चों से त्रिसंध्या करवाइए। संस्कार दिए बिना... हम तो स्वयं जैसे करते हैं वैसे जाएँगे; हमारा बच्चा भी त्रिसंध्या करके सत्ययुग में जाए, और उनका भविष्य भी शुभ हो। तो अपने छोटे बच्चों को भी त्रिसंध्या सिखाइए। और शिक्षा एक निरंतरता है; यह कभी नहीं रुकती और न रुकेगी। कुछ लोग, कुछ बच्चे सोचते हैं कि आगे संसार बदल जाएगा — शिक्षा कभी नहीं रुकेगी। शिक्षा चलती रहेगी। अपना अध्ययन करते रहिए। अपना भविष्य बनाइए, और बस भगवान का संस्कार और भगवान की कृपा प्राप्त कीजिए, जिससे आपके जीवन में उन प्रभु की कृपा आपकी हो जाए जो आपका हाथ पकड़कर आपके गंतव्य तक ले जाते हैं। सभी का धन्यवाद। जय जगन्नाथ, और माधव की कृपा से विश्व का कल्याण हो, समस्त मानव जाति का कल्याण हो, सम्पूर्ण ब्रह्मांड के समस्त जीवों, प्रकृति-जगत और देवताओं का कल्याण हो। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:00 · 27 मई 2026

प्रश्न 3276 हर सत्र में आप अग्निहोत्र यज्ञ के विषय में बोलते हैं और हमें प्रेरित करते हैं। हम जानना चाहते थे कि अग्निहोत्र क्या है, इसे कैसे किया जा सकता है, इसके क्या-क्या नियम हैं — कृपया पूरे विस्तार से समझाइए। यज्ञ करने से क्या लाभ होता है, जिससे हम उन लोगों को बता सकें जो इसके विरुद्ध तर्क करते हैं? और आपने कहा था कि आप इस पर एक पुस्तक लिखेंगे — वह पुस्तक सबके सामने कब आएगी?

उत्तर: बहुत अच्छा सुझाव। जहाँ भी मैं कथा करता हूँ, वहीं मैं हवन भी करता हूँ — वैष्णव यज्ञ। और आज तक मैंने किसी को शिष्य नहीं बनाया, क्योंकि मैं धर्म-प्रचार करता हूँ। धर्म-प्रचार करना भगवान की कृपा है, क्योंकि एक दिन हमारी मृत्यु भी आएगी, जिस दिन हमारे कर्मों का भी विचार होगा; तो धर्म-प्रचार करके और संसार में कल्याण करके भगवान की कृपा मिलती है। मैं स्वयं गुरु नहीं बना हूँ; मैंने कोई बड़ी परंपरा नहीं बनाई। यह मुझ पर भगवान की बड़ी कृपा है। अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण के कारण, लोभ, मोह और माया पर संयम के कारण, आज मैं शिष्य-गुरु परंपरा में नहीं गया हूँ और केवल धर्म-प्रचार के कार्य में लगा हूँ। यह भगवान की कृपा है। और ग्रंथ में लिखा है: 'अशेष ग्रह-पीड़ानाम् शान्ति... यज्ञ दान होम्य कल्याण धी अते ध्रुवम्।' इसका अर्थ: जो मनुष्य अग्निहोत्र यज्ञ करते हैं — 'अशेष ग्रह' का अर्थ केवल नौ ग्रह नहीं, बल्कि ब्रह्मांड में ग्रहों का जो भी दोष है — चाहे शनि देव का प्रभाव हो, शुक्र देव का प्रभाव हो, राहु-केतु का प्रभाव हो, मंगल देव का प्रभाव हो, बुध दशा का प्रभाव हो, जो भी प्रभाव हो — सारी ग्रह-पीड़ा शांत हो जाती है, सारी ग्रह-पीड़ा नष्ट हो जाती है, यदि कोई अग्निहोत्र यज्ञ करता है। 'यज्ञ दान होम्य' — यज्ञ, दान, और 'होम्य': अग्निहोत्र को 'होम्य' कहते हैं; यज्ञ से तात्पर्य वैष्णव यज्ञ, इंद्र यज्ञ, जल यज्ञ, पंचभूत यज्ञ से है। तो 'होम्य' का अर्थ है अग्निहोत्री यज्ञ। प्रतिदिन प्रातः ब्रह्म-मुहूर्त में, सूर्योदय के समय और सूर्यास्त के समय, यह हवन करना है। मैंने इसकी एक PDF बनाई है, और इस यज्ञ पर पुस्तक लिखने के आपके सुझाव के अनुसार, मैं अवश्य लिखूँगा। और ग्रंथ में लिखा है: यदि इस संसार में कोई यज्ञ करता है — 'यज्ञो देवते, यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम्' — यह संसार जो हम देखते हैं: मनुष्य, प्रकृति, देवता, और संसार तथा ब्रह्मांड के जो भी तत्व हम देखते हैं, वे भगवान के यज्ञ की कृपा से विद्यमान हैं। 'यज्ञे देव तपते' — सभी देवता प्रसन्न होते हैं; 'यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितम्' — यज्ञ के द्वारा पृथ्वी स्थापित है; यज्ञ से पृथ्वी का निर्माण हुआ। और पहला यज्ञ ब्रह्मा देव ने ओडिशा के बीज क्षेत्र में किया था, सृष्टि के कल्याण के लिए, सृष्टि की स्थापना के लिए और सृष्टि के निर्माण के लिए। ब्रह्मा देव ने पहले वह हवन, वह यज्ञ-अनुष्ठान ओडिशा के बीज क्षेत्र में किया। तो यज्ञ बहुत महत्वपूर्ण है। और एक श्लोक में भी लिखा है: 'महा-उत्पाद प्रशमति प्रसूयते प्रसूता प्रजा' — महान विपत्तियाँ: सृष्टि पर पंचभूतों का विनाश, सृष्टि पर ग्रह और नक्षत्रों का प्रभाव, महान दोष, वे महान ग्रहों के दोष जो हमारी ओर आ रहे हैं — वे वायु में जड़ से उखड़ जाते हैं। जो हवन करते हैं — उनकी आयु बढ़ती है; वे लोग 100 वर्ष से अधिक जीते हैं, और उन्हें रोग और वृद्धावस्था की व्याधियाँ कभी नहीं आतीं। तो मैं इसे अवश्य लिखूँगा; हमारे पास PDF है, हम भेज देंगे — मौन (समन्वयक) से बात कीजिए और मैं भेज दूँगा। आप लोग यज्ञ कीजिए; सुबह यज्ञ कीजिए, क्योंकि ग्रंथ में लिखा है: 'स्वाहा, स्वधा' — केवल 'ॐ' — जब यह पृथ्वी पर आता है, तो मनुष्य परम सुख प्राप्त करेगा। बहुत अच्छा विचार — इसका पालन अवश्य कीजिए। मेरे चार कार्यक्रम भी हैं: एक कार्यक्रम हैदराबाद में, एक भोर में, एक कर्नाटक में, और एक पम्पा सरोवर में, दो-तीन महीनों के भीतर। तो यदि आप चाहें, तो बाबा इन कार्यक्रमों में भी आ सकते हैं। ये कार्यक्रम आगे हैं, तो हम इस पर आगे विचार करेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:29:30 · 27 मई 2026

प्रश्न 3277 पंडित काशीनाथ मिश्र जी, आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। जब न बिजली होगी और न इंटरनेट, तब जो लोग मंडल के माध्यम से जुड़े हुए हैं, उन्हें कैसे पता चलेगा कि कहाँ जाना है — क्योंकि दूर-दूर तक कोई दिखाई भी नहीं देगा? ऐसी स्थिति होगी कि यदि सब बच गए, तो लोग भागेंगे, और जहाँ-जहाँ लोग होंगे, उसी दिशा में भागते रहेंगे। मेरे गाँव में काली जी का एक बड़ा मंदिर बन रहा है। क्या वह मंदिर रहेगा? जब प्रलय आएगी तो क्या लोग बचने के लिए उस मंदिर में जाएँगे?

उत्तर: देखिए, शास्त्र में लिखा है — देखिए, इस समय प्रलय नहीं होगी। बहुत-सी बड़ी परंपराएँ कहती हैं कि प्रलय होगी। इस शब्द में बस एक सुधार है — यह कोई संपूर्ण विनाश नहीं है। इस समय प्रलय नहीं होगी। किसने कहा कि प्रलय होगी? इस समय छोटी-छोटी खंड-प्रलय (आंशिक प्रलय) होंगी। वे छोटे-छोटे भूभागों पर घटित होंगी। ऐसी एक महाप्रलय एक साथ पूरे विश्व में नहीं होगी जिसमें संपूर्ण मानव सभ्यता पर विपत्ति आए। वैसा नहीं होगा। खंड-प्रलय होगी। देखिए — जिस दिन हमारे पास पका हुआ भोजन नहीं होता, हम नाश्ता कर लेते हैं, या फिर फल खा लेते हैं। जिस दिन हमारे पास अपना वाहन नहीं होता, हम किराये के वाहन से चले जाते हैं। जिस दिन हमारे पास अपनी पसंद का वस्त्र पहनने को नहीं होता, हम दूसरा वस्त्र पहन लेते हैं। भगवान ने संसार को इसी प्रकार बनाया है: जब संसार में परिवर्तन होता है, तो भगवान कोई दूसरा विकल्प भी खड़ा कर देंगे, कोई दूसरी शक्ति उठा देंगे। यह हमें नहीं सोचना है — यह भगवान विष्णु को सोचना है। वे हमें कैसे रखेंगे, कैसे हमारा पालन करेंगे, यह उनकी इच्छा है। आप बस अपना कर्म अच्छा कीजिए, अपना धर्म अच्छा कीजिए; और वह समय आएगा जब सब देवी-देवताओं के मंदिरों में जाएँगे और उनकी पूजा करेंगे। वे प्रतिदिन मंदिर जाएँगे। गाँव में माँ काली का मंदिर बन रहा है — बहुत अच्छा; और माँ काली भी अपने भक्तों को रक्षा प्रदान करती हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:35:16 · 27 मई 2026

प्रश्न 3278 (कॉर्पोरेट जगत के किसी व्यक्ति की ओर से, भोर) आप कहते हैं कि कलि चार स्थानों पर निवास करता है, और उनमें से एक स्थान वह है जहाँ असत्य बोला जाता है। हम कॉर्पोरेट जगत में काम करते हैं और हमें हर समय असत्य बोलना पड़ता है; ऐसी जगहें बहुत कम हैं जहाँ असत्य न बोला जाता हो। हम इस भाव से काम करते हैं कि कर्म ही सर्वोपरि है, पर कभी-कभी यह बहुत कठिन हो जाता है। इसमें हम अपना काम और कर्तव्य कैसे पूरा करें? कृपया कुछ मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: बिल्कुल, यह अच्छा प्रश्न है। बहुत ही अच्छा प्रश्न। यह प्रश्न मानव कल्याण करेगा। इस प्रश्न में 'व्यावसायिक सत्य' है। व्यवसाय में एक व्यावसायिक सत्य आता है। उस सत्य की परिभाषा मुझे शास्त्र में मिली। कोई सरकारी सेवा में है, कोई देश की रक्षा में है, कोई किसी कंपनी की नौकरी या व्यवसाय में है। उस व्यवसाय के अनुसार कार्य करना — उस परंपरा को शास्त्र राजधर्म कहता है। तो राजधर्म के पालन के अंतर्गत असत्य बोलना या सत्य बोलना — यह राजधर्म के अंतर्गत आता है। यह आचरण चाहे कॉर्पोरेट क्षेत्र में हो, या सरकार में, या किसी कंपनी में, इसे राजधर्म कहा जाता है। राजधर्म में, चाहे असत्य हो या सत्य, जो कंपनी के हित में हो वही करना चाहिए — इसमें कोई पाप नहीं है। परंतु अपने सामाजिक जीवन में, अपने पारिवारिक जीवन में, असत्य मत बोलिए। लेकिन व्यावसायिक सत्य, राजधर्म के अनुसार, कोई पाप नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:37:26 · 27 मई 2026

प्रश्न 3279 डॉलर और वैश्विक अर्थव्यवस्था के भविष्य के बारे में भविष्य मालिका में क्या बताया गया है?

उत्तर: देखिए, आप डॉलर कहें, या रूबल, या फ्रांसीसी मुद्रा, या भारतीय रुपया, या टका — आप जो भी कहें, भारत और विश्व की समस्त विदेशी मुद्रा: मेरे विचार से समय आने पर स्वर्ण मुद्रा प्रचलन में आएगी। और इन सभी मुद्रा-व्यवस्थाओं के लिए बहुत समय है; मैं अभी वह आकलन नहीं दे रहा हूँ। तो उसके बारे में सोचने से हमें क्या मिलेगा? जिस समय जिसके पास सत्ता है — इस समय, धर्म को बढ़ाइए। धर्म ही सबसे बड़ा धन है, और धर्म से उद्धार भी हो सकता है। और ऐसा समय आएगा कि देवी-देवता हमें भोजन कराएँगे, हमें बचाएँगे, हमारा उद्धार करेंगे, हमारे मार्गदर्शक बनेंगे। देवी-देवता साक्षात् शरीर धारण कर इस धरती पर आएँगे और हमें बचाएँगे। इसलिए हमें उसके बारे में नहीं सोचना है। इस समय देखिए कि हमारा धर्म क्या है, हमारा कर्म क्या है, हमारी आवश्यकताएँ क्या हैं — कल की क्या आवश्यकता है, उसे देखिए; परसों की क्या आवश्यकता है, उसे देखिए; आगे क्या होगा, उसे भगवान पर छोड़ दीजिए। पर एक बात कहूँ: धर्म को थामे रहिए, त्रिसंध्या कीजिए — क्योंकि हमारे जीवन को सुरक्षा चाहिए, भगवान की कृपा चाहिए — और भगवान विष्णु की उपासना कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:39:16 · 27 मई 2026

प्रश्न 3280 (एक भक्त की ओर से) ईरान और अमेरिका का युद्ध फिर से शुरू हो गया है। कुछ दिन पहले आपने यह कहा था, जबकि सब कह रहे थे कि युद्ध नहीं होगा। तो आपको कैसे पता चलता है कि ईरान और अमेरिका के बीच फिर से युद्ध होगा? कृपया इस बारे में कुछ जानकारी दीजिए, क्योंकि आपके अलावा किसी और ने इस पर इतना सटीक मार्गदर्शन नहीं दिया।

उत्तर: देखिए, यह सब भगवान की कृपा है; हमारा कुछ भी नहीं है। हम निष्काम कर्म में लगे हुए हैं। यह भविष्य मालिका पुराण का कार्य है। पूरे विश्व में कई बड़ी परंपराएँ मेरा विरोध करती हैं। आज तक किसी में कल्कि भगवान के बारे में बताने की इच्छाशक्ति नहीं है; कोई इसके बारे में नहीं बताता। भगवान विष्णु के आगमन को लेकर किसी की कोई चर्चा नहीं है। फिर भी, 40 वर्ष हो गए हैं कि हम धर्म-प्रचार में लगे हुए हैं, और यह केवल हमारी मान्यता नहीं है — यह सत्य है। निश्चित रूप से, विश्व में सत्य युग का आगमन हो रहा है। हम सब, आप जैसे पवित्र लोगों के साथ मिलकर, इस सत्य युग का निर्माण करेंगे। और जब मन पवित्र होता है, तब वाणी पवित्र हो जाती है। यदि मन में मैल है, यदि मन में लोभ है, यदि मन में छल है, यदि मन में स्वार्थ प्रवेश कर गया है, तो वाणी में पवित्रता नहीं आती। इसी प्रकार, यदि आप पवित्र मन और पवित्र विचार में रहेंगे, तो आपकी वाणी भी सत्य हो जाएगी। और वाणी (जो सत्य सिद्ध होती है) तब आती है जब मन शुद्ध हो जाता है। और शुद्ध मन के साथ, भगवान की शरण में, जो भी यह कार्य करता है — ऐसा मनुष्य पहले से सत्य बता पाएगा। और मैं आपसे यह कहता हूँ: सत्य युग में सभी मनुष्य दिव्य ज्ञान से युक्त हो जाएँगे। यहाँ बैठे-बैठे, अमेरिका में क्या हो रहा है, भविष्य क्या होगा, वर्तमान क्या है, क्या आवश्यक है, क्या आवश्यक नहीं है — यह सब हर मनुष्य को ज्ञात होगा। यह तो केवल आरंभ है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:40:43 · 27 मई 2026

सत्र 191 · प्रश्न 3281–3286

L207: क्या सभी मनुष्य त्रिकाल संध्या करके जा सकते हैं सत्ययुग ? Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 29 मई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3281 (प्रारंभिक प्रवचन) क्या सभी मनुष्य, चाहे उनकी जाति, संप्रदाय या धर्म कोई भी हो, त्रिकाल संध्या कर सकते हैं और सत्य युग में जा सकते हैं?

उत्तर: मैं समस्त सनातन धर्मी सज्जनों, श्रद्धालु एवं पवित्र मनुष्यों को अपना सादर प्रणाम निवेदित करता हूँ। आज का विचार-सूत्र नए युग के निर्माण की सबसे बड़ी परंपरा है — त्रिकाल संध्या, तीन समय की संध्या। दिन में तीन बार भगवान विष्णु का भजन किया जाता है, भगवान विष्णु की स्तुति की जाती है, पूजा की जाती है, आराधना की जाती है — शास्त्रीय विधि ने तीन समय की संध्या, अर्थात् त्रिकाल संध्या का विधान किया है। तीन संध्या-काल ये हैं: पहला संध्या-काल सूर्य भगवान के उदय होने से पहले; दूसरा संध्या-काल वह है जब सूर्य भगवान मध्याह्न के शिखर की ओर बढ़ रहे होते हैं — 11:30 से 12:30 तक का समय दूसरी संध्या है; तीसरी संध्या वह है जब भगवान सूर्य देव अस्त होते हैं — उससे पंद्रह मिनट पहले और पंद्रह मिनट बाद। इन्हें तीन समय की संध्या कहा जाता है। उन समयों में, स्वर्ग लोक में, कैलाश में, पितृ लोक में, पाताल में, समस्त वैकुंठों में, गोलोक वैकुंठ में, ब्रह्म लोक में, कैलाश में — ठीक उसी समय भगवान विष्णु की त्रिकाल संध्या चलती रहती है। समस्त ऋषि-मुनि, समस्त साधु-संत, ब्रह्म लोक के समस्त परिकर, और गोलोक वैकुंठ में निवास करने वाले समस्त भक्तों को यह तीन समय की संध्या करनी होती है, क्योंकि इन तीनों समयों में भगवान विष्णु की पूजा होती है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा इन समयों में नहीं की जाती। अन्य देवी-देवताओं की पूजा तिथि, वार और नक्षत्र के अनुसार, जब भी उत्सव पड़े, अपने समय पर की जाती है। किसी भी दिन, सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच, हम किसी भी क्षण किसी भी देवता की पूजा कर सकते हैं, और सूर्यास्त के बाद, अर्धरात्रि में या रात भर भी हम किसी भी देवता की पूजा कर सकते हैं — परंतु तीनों संध्या-काल भगवान विष्णु की पूजा के हैं। इसलिए इन समयों में मनुष्यों को भी त्रिकाल संध्या करना आवश्यक है। आज के विषय पर मैं अपना मत रखता हूँ: त्रिकाल संध्या संसार के समस्त मनुष्य कर सकते हैं, चाहे जाति, वर्ण या धर्म कोई भी हो। किसी के भी त्रिकाल संध्या करने पर कोई भी निषेध नहीं है। क्यों? देखिए — ठीक इसी समय कलियुग समाप्त हो चुका है और सत्य युग का आगमन हो रहा है। तो इस समय, हम सब सत्य युग में जाएँ, इसके लिए हमें सत्य युग का ब्रह्म-कर्म करना चाहिए, और वही कर्म तीन समय की संध्या के रूप में समझा जाता है। इसलिए ब्रह्म-कर्म। 'विश्व उत्पत्ति हेतवे, तापत्रय विनाशाय, श्रीकृष्णाय वयं नमः' — वे सच्चिदानंद भगवान जो हमें तीन प्रकार के तापों (त्रिविध ताप) से उबारते हैं, वही सच्चिदानंद भगवान विष्णु, महाविष्णु। महाविष्णु की त्रिकाल संध्या के कारण मनुष्य तीन तापों के चक्र से उबर जाता है; जो आत्मा जन्मों के चक्र के बंधन में भटकती और मोहित रहती है, वह परमार्थ की ओर, परम पद की ओर बढ़ती है — परम पद अर्थात् पृथ्वी पर, स्वर्ग में, मध्य लोक में और पाताल में जितने प्राणी हैं, उन सबमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। किसके द्वारा? त्रिकाल संध्या के माध्यम से। इसलिए तीन समय की संध्या हमारे लोगों के लिए और समस्त लोगों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब सत्य युग आरंभ हुआ, उस समय एक जाति थी, एक धर्म, एक परंपरा, एक स्वामी — केवल महाविष्णु; केवल माता महालक्ष्मी। 'कृत' — अर्थात् कृत युग में सब भगवान विष्णु के सेवक बन गए, सबने आराधना की, सबने उनका भजन गाया। तो सत्य युग में सब भगवान विष्णु का भजन कर रहे थे। एक देवता, एक धर्म, एक परंपरा, एक संविधान और एक परम तत्त्व — यही सत्य युग में विद्यमान था। फिर सत्य से त्रेता आया, त्रेता से द्वापर आया, द्वापर से कलि आया। फिर युग-चक्र के बंधन में हम पुनः सत्य युग की ओर बढ़ रहे हैं, और सत्य युग में जाने से पहले हमें आदि सत्य युग में प्रवेश करना होगा — आद्य सत्य युग, जिसे युग संगम (युगों की संधि) का काल या सत्य युग का आरंभ कहा जाता है। आदि सत्य युग लगभग सौ वर्ष चलता है, और उसके बाद मनुष्य पूर्ण सत्य युग की ओर बढ़ते हैं और भगवान विष्णु के पूर्ण समर्पण में जप, तप, तपस्या और ज्ञान में लीन हो जाते हैं। तो सत्य युग में, जब एक धर्म था, तब कितनी जातियाँ थीं, कितनी परंपराएँ? ऐसा कुछ भी लिखा नहीं है। उस समय एक जाति थी और कोई दूसरी जाति नहीं थी। सब, भगवान विष्णु के साथ और उनकी शरण में रहकर, वैष्णव या ब्राह्मण बन गए थे। इसका प्रमाण शास्त्रों में मिलता

है। शास्त्रों में क्या लिखा है? 'सर्वान् गण ब्राह्मणी परिवर्तयेत्' — जब भगवान कल्कि पृथ्वी पर सत्य की स्थापना करेंगे, तब वे क्या करेंगे? वे पृथ्वी पर के समस्त धर्मों और परंपराओं को एक परंपरा में परिवर्तित कर देंगे और उन्हें ब्राह्मण या वैष्णव बना देंगे। और ठीक यही प्रमाण सत्य युग में भी मिलता है, जैसा मैंने अभी शास्त्रीय प्रमाण रखा। यदि भगवान कल्कि सारे विश्व के समस्त लोगों को ब्राह्मण या वैष्णव बनाने वाले हैं, तो हम वह कार्य अभी से क्यों न आरंभ करें? अभी विभाजन क्यों करें? अभी भेद क्यों करें? क्या आवश्यकता है? शास्त्रों में लिखा है कि जब भगवान समस्त विश्व पर आते हैं, तो वे समस्त विश्व पर धर्म की स्थापना करते हैं। पापियों के लिए पृथ्वी पर रहना असंभव हो जाता है। हाँ — वे लोग जो बदल जाते हैं, उन्हें भी भगवान सत्य युग में ले जाते हैं। इसका भी प्रमाण शास्त्रों में है: 'वेदो द्वापरे व्यास काले, अन्ते पुनर्हरि' — अर्थात् वेद और पुराण द्वापर युग में वेदव्यास द्वारा रचे गए; आदि युग में भगवान विष्णु ने ब्रह्मदेव के माध्यम से उनकी रचना की; और 'कलौ अन्ते पुनर्हरि' — कलियुग के अंत में हरि आएँगे। हरि अर्थात् महाविष्णु, 64 कला संपूर्ण महा अवतार, परम अवतार, सृष्टि का अभूतपूर्व अवतार, ऐसा अवतार जो पहले कभी नहीं हुआ — भगवान कल्कि के रूप में। 'प्रभु मार्ग स्थापयति हरि' — कल्कि भगवान उन दुष्ट लोगों को भी, जिन्होंने बुरे कर्म किए, सत्कर्म करवाकर सही मार्ग पर लगा देंगे, और महापापियों को भी पवित्र और पुण्यवान बनाकर रखते हैं। इसके लिए धर्म प्रचार होता है — लगभग सौ वर्ष तक धर्म प्रचार चलता है। और जब धर्म प्रचार से भगवान विष्णु का धर्म पृथ्वी पर फैलता है, तब लोग सत्य युग की ओर, ब्रह्म-कर्म की ओर बढ़ते हैं; लोग पाप और पुण्य की परिभाषा समझने लगते हैं। तो जब भगवान आते हैं, या आने वाले हैं, या — शास्त्रों की विधि के अनुसार — आ ही चुके हैं, जब 2032–34 में सत्य युग आरंभ होता है, तब सनातन केवल भारत में ही स्थापित नहीं होगा। प्रभु केवल भारत के ही राजा नहीं होंगे। भगवान समस्त विश्व के राजा बनेंगे, और समस्त विश्व में वे एक लाख भक्तों को भी राजा बनाएँगे। तो इस परंपरा में, सत्य युग में कोई क्षुद्र धर्म, कोई अलग धर्म नहीं रहेगा। समस्त धर्मों को मिलाकर भगवान वैष्णव धर्म बनाएँगे। समस्त विश्व में, जो मनुष्य बदलना चाहते हैं, जो मनुष्य अच्छे धर्म और त्रिकाल संध्या तथा भगवान विष्णु की शरण में आते हैं — केवल उन्हीं को भगवान विष्णु पृथ्वी पर स्थापित करेंगे और नए युग की रचना करेंगे। इसीलिए लिखा है, 'सर्वे गत ब्राह्मण परिवर्तयेत्' — सब ब्राह्मण बनेंगे, वैष्णव बनेंगे; और वैष्णव कर्म, जिसे मैं ब्रह्म-कर्म कहता हूँ, वह त्रिकाल संध्या है। समस्त विश्व के सभी लोग उस समय त्रिकाल संध्या करेंगे। यदि हमें यह करना है, तो सनातन धर्म के दायित्व के अनुसार और शास्त्रीय विधि के अनुसार, सनातन धर्म की यह परंपरा और भगवान विष्णु की परंपरा समस्त मनुष्यों के लिए है और हमें इसका प्रचार करना चाहिए, और इसमें कोई भेदभाव नहीं रखना चाहिए। क्योंकि यदि भगवान, कृपा के भंडार, समस्त विश्व के सभी मनुष्यों पर कृपा करना चाहते हैं, तो हम संकीर्ण मन के क्यों बनें? इसलिए मैं समस्त विश्व का आह्वान करता हूँ। मैं समस्त मानव सभ्यता का आह्वान करता हूँ। मैं समस्त मानव सभ्यता को भली-भाँति और सबसे पवित्र भाव से समझाना चाहता हूँ, ताकि आगे जैसे-जैसे समय बदले, हम भी बदल सकें। हमें अकेले सत्य युग में नहीं जाना है — हम सबको मिलकर सत्य युग में जाना है, और सबको भगवान विष्णु की शरण में आना है। जब सत्य युग था, भगवान विष्णु के नाम की आराधना करके मनुष्य चिरंजीवी (अमर) हो जाते थे। मनुष्य मरते नहीं थे। उनकी आयु बढ़ती थी। इतना ही नहीं — उन्हें इच्छा मृत्यु मिली, इच्छा भोजन मिला, जहाँ चाहें वहाँ रहने का अधिकार मिला, और इच्छानुसार सुख प्राप्त हुआ। क्यों? क्योंकि उस युग में भगवान विष्णु की अपार करुणा के कारण मनुष्य परम सुखी हो गए थे। यदि हम विचार करें: किस युग में — सत्य, त्रेता, द्वापर या कलि — मनुष्य सबसे अधिक सुखी थे? इसका विचार शास्त्रों में मिलता है। सत्य युग: वह युग जिसमें मृत्यु का कोई भय नहीं था; वह युग जिसमें कोई औषधियाँ नहीं थीं, कोई वृद्धावस्था और रोग नहीं था; वह युग जिसमें पति-पत्नी के बीच प्राणों का देना-लेना एक परंपरा थी — एक पत्नी अपने पति के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देती, और पति भी वैसे ही अपनी पत्नी के लिए। परिवार में पिता का सम्मान था, माता का सम्मान था, बड़ों का सम्मान था। सबके लिए हर समय भोजन की, पौष्टिक, शुद्ध, हितकर भोजन की व्यवस्था थी। मनुष्य केवल इच्छा मात्र से एक देश से दूसरे देश, एक लोक से दूसरे लोक जाते थे — मनुष्य लोक से, मृत्यु लोक से, मध्य लोक से चंद्र लोक, स्वर्ग लोक, सूर्य लोक, ब्रह्म लोक — वे आते-जाते थे, पाताल लोक तक, चौदह ब्रह्मांडों से होकर, इकसठ गोलोक वैकुंठों को स्पर्श करते हुए; वे सभी स्थानों पर जाते थे। और वहाँ जाने के लिए मंत्र की शक्ति थी। कोई यंत्र-शक्ति किसी सीमित समूह के लोगों के लिए आरक्षित नहीं थी; ऐसा समय सभी लोगों के लिए था। इसलिए — सत्य, शांति, दया, क्षमा, मैत्री — जहाँ मानव दुःख का कभी कोई विचार ही नहीं था, दुःख का कोई भेद नहीं था। ऐसा युग, सत्य युग, शास्त्रों में सबसे अधिक सुख से परिपूर्ण युग के रूप में वर्णित है। जब सत्य युग था, एक धर्म था। फिर त्रेता युग आया और दो धर्म आए — उसमें एक धर्म असुरों का रह गया, और देवता तथा मनुष्य भी थे, परंतु देवताओं और मनुष्यों का एक धर्म था और असुरों का अलग धर्म। फिर द्वापर युग में मनुष्य, असुर और देवता रहे। और कलियुग में मनुष्य रहे, और मनुष्य रूप में असुर भी रहे, परंतु धर्म अनेक प्रकार का हो गया। और इस समय

कलियुग समाप्त हो चुका है; और जब कलियुग समाप्त हो चुका है, तब धर्म भी एक हो जाएगा, कर्म भी एक हो जाएगा, संविधान भी एक हो जाएगा, स्वामी भी एक होगा, और समस्त विश्व में सबके समान अधिकार होंगे और एक-दूसरे के प्रति समान विचार होगा। ऐसा लिखा है। ऐसा समय आएगा जब सब लोग समान हो जाएँगे। धनी, विद्वान, सभी लोग एक परंपरा, एक सुख को प्राप्त करेंगे। आज जिसके पास सौ करोड़ हैं — वह जो भी योग्यता प्राप्त करता है, जिसके पास एक पैसा भी नहीं है उसे भी उतनी ही योग्यता मिलेगी। वह समय आ रहा है, और ऐसा समय आएगा जब धनी और निर्धन एक हो जाएँगे, और मानव सभ्यता में करुणा का प्रचंड प्रकाश होगा। सभी मनुष्य भेदभाव भूल जाएँगे। भगवान विष्णु की कृपा से और उनके प्रभाव से, आज विश्व में जाति, धर्म और वर्ण के कारण जो युद्ध हो रहे हैं, जो विनाश हो रहा है, मानव सभ्यता के विरुद्ध जो महाविपत्ति है — वह विपत्ति टल जाएगी, और सब स्वयं को एक परिवार मानकर एक परिवार में रहेंगे। फिर हम पुनः शास्त्रों की ओर जाते हैं। कल्कि पुराण में लिखा है: भगवान कल्कि युग-प्रवर्तक के रूप में आएँगे, युग को मोड़ने वाले — 'स चक्रवर्ती राजा भविष्यति, सकल लोक प्रसाद' — भगवान कल्कि समस्त विश्व के चक्रवर्ती (सार्वभौम सम्राट) बनेंगे। यदि ठाकुर जी को विश्व के राजा बनना है, तो विश्व में यह त्रिकाल संध्या सबको करनी चाहिए। यदि हम भेदभाव के कारण इसे भारत के भीतर ही सीमित रखेंगे, तो समस्त विश्व में मानवता का उद्धार कैसे होगा? क्योंकि भविष्य मालिका पुराण में लिखा है कि इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस, पाकिस्तान और रूस में, यूरोप में, सभी देशों में, अफ्रीका में, सभी देशों में, भगवान महाविष्णु सनातन धर्म की पुनः स्थापना करेंगे। तो अब से हम इस परंपरा का प्रचार करें, ताकि समस्त विश्व में सब त्रिकाल संध्या करें। और यदि सब, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर, त्रिकाल संध्या करें, तो भगवान विष्णु को प्राप्त करके और भगवान विष्णु की निकटता तथा कृपा का लाभ पाकर मनुष्य सत्य युग में जाएँगे, और उस आने वाले नए सत्य युग में प्रवेश करके अमर और सदा सुखी हो सकते हैं। इसलिए समय कम है। समय कम है, अर्थात् हमारे हाथ में 2025 से 2032–34 तक का काल है; सत्य युग के आगमन का समय '32 और '34 के बीच है। यह मैंने पहले भी कहा है और आज भी कहता हूँ — प्रभु इधर-उधर दो वर्ष का अंतर कर सकते हैं। इस पर हमें विचार नहीं करना चाहिए; हमें कर्म पर और धर्म पर विचार करना चाहिए। धर्म हमें रक्षा देगा, कर्म हमें रक्षा देगा; आयु की रक्षा प्राप्त होगी, भविष्य की, वर्तमान की और आने वाले समय की। इसलिए त्रिकाल संध्या, मेरे मत में और शास्त्रों के मत में, समस्त विश्व के लिए है, समस्त मनुष्यों के लिए है; किसी भी जाति, संप्रदाय या वर्ग के लोगों के इस त्रिकाल संध्या को करने पर कोई निषेध नहीं है, इसमें कोई प्रतिबंध नहीं, कोई नियम नहीं। एकमात्र नियम है धर्म और कर्म। तो, जो मैंने शास्त्रों में पढ़ा है उसके अनुसार, तीन समय की संध्या हमें तीन तापों से रक्षा देगी। मनुष्यों को शम और दम को सबसे अधिक महत्त्व देना चाहिए — शम और दम अर्थात् सबके प्रति समता और धैर्य। जो मनुष्य इसका पालन करेंगे, वे सत्य तक पहुँच सकेंगे। धैर्य और समता हमें आगे बढ़ने के योग्य बनाएँगे। इसलिए भविष्य मालिका पुराण एक शास्त्र है, ऐसा शास्त्र जिसे सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि से होते हुए, और उसके बाद कलियुग में, नित्य पंच सखा ने पूर्ण रूप दिया, जो भगवान विष्णु के अंश से या उनके शरीर के अंगों से — मुख, वक्ष, कटि और भुजाओं से — जन्मे थे। उन्होंने यह शास्त्र लिखा; यह शास्त्र स्वयं भगवान ने कहा। कभी यह भगवान कृष्ण और गरुड़ का संवाद है, भगवान विष्णु और गरुड़ का। कभी शंकर भगवान शिव ने किसी कल्प में इसे कहा; कभी कृष्ण भगवान ने रुक्मिणी को रुक्मिणी गीता में कहा; कभी उद्धव चौसा में कृष्ण और उद्धव का प्रवचन हुआ; कभी हरि-अर्जुन संवाद में अर्जुन और भगवान कृष्ण के बीच चर्चा हुई। यह है भविष्य मालिका पुराण — जो दारु-मूर्ति (काष्ठ प्रतिमा) चल रही थी, वह मानव शरीर बन गई; ऐसे रूप में भगवान जगन्नाथ कल्कि अवतार लेंगे। और कल्कि अवतार समस्त विश्व के लिए आ रहा है। इस समय, समस्त विश्व में, जो मनुष्य बदलना चाहते हैं, जो ब्रह्म-कर्म करेंगे, जो त्रिकाल संध्या करेंगे और भगवान विष्णु की शरण में आएँगे — कई बार मैंने देखा है: विभीषण भी असुर थे; वे भी भगवान की शरण में आकर अमर हो गए। प्रह्लाद भी असुर कुल में जन्मे थे; भगवान विष्णु की शरण में आकर उन्होंने इंद्र का पद प्राप्त किया। इसी प्रकार गयासुर भगवान की शरण में आए और अमर हो गए। तो भगवान की शरण में आना जाति, संप्रदाय या वर्ण का कोई विषय नहीं है। भागवत में स्पष्ट कहा गया है: 'मेरी कोई जाति नहीं, कोई संप्रदाय नहीं, कोई वर्ण नहीं। मैं कर्म देखता हूँ। जो कर्म करता है, जो जीवन में मेरे प्रति पूर्ण समर्पित हो जाता है और संसार को माया समझता है, और मुझे सर्वोच्च संपत्ति मानता है — उसे मैं अपनी शरण में लेता हूँ।' इसलिए जीवन की यह धारा, भविष्य मालिका का यह प्रचार, भगवान की महान कृपा है। हमें इस पर प्रश्न नहीं उठाने चाहिए। बहुत से लोग प्रश्न उठाते हैं — 'भविष्य मालिका में यह हुआ, वह नहीं हुआ।' देखिए, इस पर विचार करना हमारा अधिकार नहीं है। हम मनुष्य हैं। भगवान के विचार पर, भगवान के शास्त्र पर तर्क-वितर्क करना मनुष्य के कर्तव्य में नहीं है। मनुष्य का कर्तव्य है सत्कर्म और सद्बुद्धि — समस्त इंद्रियों को वश में करने के लिए सद्बुद्धि का विकास करो; अपनी आत्मा को अधिक सुखी और पवित्र बनाने के लिए सत्कर्म करो। इसलिए इस मानव जीवन को सार्थक बनाना हमारे लिए आवश्यक है। तो जो भविष्य

मालिका पर तर्क करते हैं, जो प्रश्न उठाते हैं — 'यह होगा या नहीं, यह सत्य है या असत्य' — यह तो देवताओं के लिए भी विचार का विषय नहीं है। मैंने इसे कहीं भी शास्त्र में नहीं पढ़ा। जब भगवान कृष्ण ने अठारह दिन के महाभारत युद्ध को साढ़े सत्रह दिन में समाप्त करके बंद कर दिया — उस पर मुझे किसी शास्त्र में विचार नहीं मिला। वह संग का विषय है; वह हमारा विचार-सूत्र नहीं है। शास्त्रों में जो लिखा है — एक स्थान पर भगवान भागवत में कहते हैं: यदि तुम शास्त्र में लिखी हर बात के विषय में सोचते बैठोगे, तो उसमें तुम्हारा कोई कल्याण नहीं होगा; समझो कि तुम्हारा कल्याण किसमें है और वही करो। इसलिए भविष्य मालिका पुराण में, जो तुम्हारे कल्याण के लिए है, जो तुम्हारे लिए सुखदायी है, जो तुम्हारे लिए शिक्षाप्रद है — वही करो, वही सीखो, वही पालन करो। किसी दूसरे सिद्धांत के पीछे मत भागो; मरुस्थल में जल के पीछे भागने से जल नहीं मिलता। शास्त्र की निंदा करना और शास्त्र को मिथ्या मानना मनुष्य के अधिकार में नहीं है। किसी भी मनुष्य का शास्त्र के सिद्धांतों को सही या गलत ठहराना नरक की स्थिति की ओर ले जाता है, क्योंकि शास्त्र-निंदक नरक प्राप्त करते हैं। उस पर कभी विचार मत करो — कि शास्त्र में क्या हुआ या क्या नहीं हुआ। हमने संपूर्ण ब्रह्मांड नहीं देखा है, और ब्रह्मांड में जो कुछ हो रहा है उसका सारा समाचार हमें नहीं मिलता। इसलिए, बस एक विनम्र, स्थिर और दृढ़ मनुष्य बनो, और अपने उद्धार के लिए भगवान से प्रार्थना करो जैसे प्रार्थना की जाती है; वैसे प्रार्थना करो, और शास्त्र को पूर्णतः समझने का प्रयत्न कभी मत करो। बस इतना करो — शास्त्र की धारा के कर्म का पालन करो। संपूर्ण शास्त्र को समझना मनुष्य के सामर्थ्य में नहीं है, देवताओं के सामर्थ्य में नहीं है; भगवान विष्णु, ब्रह्मदेव और शंकर भगवान के अतिरिक्त इसका कोई विचार नहीं है। तो आगे सत्य युग बनेगा, और समस्त विश्व के लोग सत्य युग में आएँगे। शास्त्रों में लिखा है कि समस्त विश्व में — अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, चीन, पाकिस्तान, थाईलैंड, विश्व में जितने भी देश हैं, रूस, सभी देश — सनातन स्थापित होगा; सभी देशों में भक्तों का उद्धार होगा, और भगवान कल्कि प्रत्येक देश में जाएँगे और उस देश में सनातन की स्थापना करेंगे। इसलिए मेरा मत है: उचित समय पर त्रिकाल संध्या करो। त्रिकाल संध्या करने से तुम्हारे तीनों पाप कट जाएँगे; यदि तीनों पाप कट गए, तो कोई अपमृत्यु (अकाल मृत्यु) नहीं होगी, कोई दुर्घटनाजन्य मृत्यु नहीं होगी। तुम्हारा पारिवारिक जीवन और सांसारिक जीवन सुख से परिपूर्ण हो जाएगा। तुम कंगाल नहीं बनोगे। और इसके साथ ही, यह विश्व के सर्वाधिक कल्याणकारी सिद्धांत की, मानव सभ्यता के कल्याण की भी सेवा करेगा। और पितृ लोक तक भी, त्रिकाल संध्या के माध्यम से, वे तुम्हें आशीर्वाद देंगे। इसलिए इस समय हमारे लोगों का पुरुषार्थ बढ़ना चाहिए, आयु बढ़नी चाहिए। क्योंकि सूरदास जी ने लिखा, 'अकाल मृत्यु जग माहि व्यापी, प्रजा बहुत मरे' — और 'यदा ज पक्ष त्रिदश दिनात्मकं भवेत्' — जब पृथ्वी पर क्षीण पक्ष आता है, तब बहुत से मनुष्य मरते हैं, अकाल मृत्यु होती है। तो अकाल मृत्यु से रक्षा तुम्हें त्रिकाल संध्या देगी; कोई दूसरी परंपरा यह नहीं करेगी, कोई दूसरा सिद्धांत यह नहीं करेगा, कोई दूसरा नाम यह नहीं करेगा। हाँ, नाम से उद्धार होगा, नाम से मुक्ति होगी; परंतु मृत्यु से, अकाल मृत्यु से, दुर्घटनाजन्य मृत्यु से, और मानव आयु के क्षय से केवल त्रिकाल संध्या ही हमारी रक्षा कर सकती है। इस परंपरा को लेकर हम सत्य युग में जाएँगे। इसके आगे हम हवन करेंगे — प्रत्येक घर में हवन होगा, प्रत्येक घर में ब्रह्म-कर्म और त्रिकाल संध्या, प्रत्येक घर में भगवान विष्णु की पूजा; प्रत्येक मनुष्य सत्य, शांति, दया, क्षमा का पालन करेगा, और समस्त विश्व एक परिवार बन जाएगा — वसुधैव कुटुंबकम्। समस्त विश्व के लिए हमारा विचार है: 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।' विश्व में दुःख कभी नहीं आएगा यदि समस्त विश्व के कल्याण के लिए, हाथ जोड़कर और हाथ उठाकर हम भगवान से प्रार्थना करें: 'हे प्रभु, सबका भला करो, सबका उद्धार करो।' मानव धर्म ही एकमात्र धर्म है, और मानव धर्म से ऊँचा या नीचा कुछ भी नहीं है। सबका कल्याण, अपना कल्याण, समस्त विश्व का कल्याण, सृष्टि का कल्याण — यही दैवी कृपा प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन है। त्रिकाल संध्या के बिना हम आगे नहीं बढ़ पाएँगे। यह स्पष्ट बात है। हाँ, बहुत से विचार भी आते हैं — 'त्रिकाल संध्या क्या है?' त्रिकाल संध्या यही ब्रह्म-कर्म है; ये तीनों संध्याएँ मानव जाति का उद्धार करेंगी; इसके अतिरिक्त उद्धार का कोई मार्ग है ही नहीं। इसका पालन करना हमारा सबसे बड़ा कर्म है। समस्त जातियाँ, संप्रदाय, वर्ण — हम किसी जाति-भेद में नहीं हैं। हाँ, निश्चय ही हमें पाप और पुण्य से सरोकार है: जो पाप करते हैं, हम उनका विरोध करते हैं; जो जीव-हत्या करते हैं, हम उनका विरोध करते हैं; जो गौ-हत्या करते हैं, हम उनका विरोध करते हैं; जो धर्म का विरोध करते हैं, हम उनका विरोध करते हैं; जो शास्त्रों की निंदा करते हैं, हम उनका विरोध करते हैं। परंतु हम किसी मनुष्य का, किसी धर्म का, किसी जाति का विरोध नहीं करते, क्योंकि यह सनातन है। और सनातन धर्म — वह धर्म जिसे पृथ्वी ने धारण किया, वह धर्म जिससे पृथ्वी की रचना हुई, वह धर्म जिससे मानव जाति की रचना हुई — वही सनातन था। सत्य युग में सब मनुष्य थे; सत्य युग में सब मनुष्य सनातन थे और ब्राह्मण वंश में थे। फिर त्रेता में मनुष्य आया, द्वापर में मनुष्य आया, कलियुग में मनुष्य आया, और कलियुग में मनुष्य ने अनेक प्रकार के धर्म बनाए, और उन धर्मों में कलियुग में मानव जाति का उद्धार हुआ। परंतु इस समय कलियुग नहीं है; सत्य

युग आ रहा है। हमें एक धर्म, भगवान विष्णु की परंपरा को स्वीकार करना होगा; हमें उसका पालन करना होगा। वही सिद्धांत त्रिकाल संध्या है; इससे पहले या बाद में कोई दूसरा सिद्धांत नहीं है। वह समय आएगा जब लोग इस पर अवश्य विचार करेंगे और इसकी बात करेंगे, परंतु हाथ में समय नहीं बचेगा। यदि तुम इस समय इस पर विचार करोगे, तो भविष्य में सशक्त बनोगे। यही मैं आज के विचार के रूप में रखता हूँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:00 · 29 मई 2026

प्रश्न 3282 मैं बहुत पापी, महापापी आत्मा हूँ। मैंने अपने जीवन में बहुत पाप और महापाप किए हैं। अब वही कर्म मुझे आत्महत्या करने, फाँसी लगाने के लिए उकसा रहे हैं। कृपया मुझे इस महापाप से बचाइए। मेरे जीवन में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा — न अच्छी नौकरी, न मन की शांति। मैं इस जीवन से बहुत त्रस्त हूँ। (नाम नहीं दिया गया)

उत्तर: जय जगन्नाथ। देखिए, संसार में कोई भी पापी नहीं है, और पाप-पुण्य पर विचार करने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है। मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है, और उसे सत्कर्म करना चाहिए। यदि हमसे कोई पाप हो गया है, या यदि हमें लगता है कि पाप हो गया है, तो एक सरल उपाय है जिससे समस्त पाप नष्ट हो जाएँगे — वही जिसकी हम बात करते हैं: त्रिकाल संध्या। शास्त्रों में लिखा है कि जो तीन समय की संध्या करता है, उसके करोड़ों जन्मों के पाप — केवल इस कलियुग के ही नहीं, बल्कि करोड़ों युगों के जन्मों के जो पाप हमारे साथ हैं — वे पाप धुल जाते हैं और मनुष्य पवित्र हो जाता है। तो आपके सभी पाप टूट जाएँगे। एक बहुत ही आसान और सरल उपाय से: तीन समय की त्रिकाल संध्या कीजिए, और भागवत का एक अध्याय पढ़िए। प्रतिदिन गौ माता को कुछ थोड़ी सब्जी या कुछ दीजिए और क्षमा माँगिए। इसके द्वारा, भगवान की कृपा से और शास्त्रीय विधि से, आपके पापों का समस्त प्रायश्चित हो सकता है। और त्रिकाल संध्या करने के साथ-साथ मन सशक्त होगा; सशक्त होकर मन स्थिर होगा; स्थिर होकर मन शक्तिशाली होगा, और आप कोई भी कार्य कर सकते हैं और अपनी आजीविका तथा अपने असफल जीवन को आगे बढ़ा सकते हैं। और तीसरी बात मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ: जो लोग आत्महत्या करते हैं — उनके द्वारा लिए गए समस्त पूर्व जन्मों के सभी पाप कई करोड़ गुना बढ़ जाते हैं। ब्रह्म-हत्या (ब्राह्मण की हत्या), भ्रूण-हत्या, स्त्री-हत्या, बाल-हत्या, अपने पिता की हत्या, अपनी माता की हत्या से जो पाप लगता है — उस समस्त पाप से कहीं बड़ा पाप आत्महत्या करने वाले का है। उस पाप के कारण उस मनुष्य को कई लाख जन्मों तक प्रेत योनि में भटकना पड़ता है, जिसे अतृप्त आत्मा कहा जाता है। उसे पीने को जल नहीं मिलता, बैठने को स्थान नहीं मिलता; भूत-प्रेत भी उसका साथ नहीं रखते — वे कहते हैं, 'तूने आत्महत्या की है, इसलिए तू हमारे साथ भी नहीं रह सकता।' सब उसे भगा देते हैं, सब उसे मारते हैं, सब उसे गाली देते हैं। तो मृत्यु के बाद, रोने-रोने के अतिरिक्त उस आत्मा को कुछ नहीं मिलता; और फिर उसे कभी दोबारा मानव जीवन नहीं मिलता। तो कोई भी मनुष्य आत्महत्या न करे; संसार में आत्महत्या से बड़ा कोई पाप नहीं है। ऐसा मत कीजिए। त्रिकाल संध्या में समस्त पाप धुल जाते हैं, और आपका जीवन एक सुंदर जीवन बन जाएगा — आजीविका भी आएगी, सुख और शांति भी आएगी, भगवान भी आएँगे, और समृद्धि भी आएगी। बस इतना ही कीजिए; मेरे मत में आपका बहुत कल्याण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:32:34 · 29 मई 2026

प्रश्न 3283 परमवीर सिंह साही भैया: क्या कल्कि अवतार आ चुका है या नहीं? कृपया यह संदेह थोड़ा दूर कीजिए।

उत्तर: देखिए, यह प्रश्न — क्या कल्कि अवतार आ गया है? मैं ब्राह्मण हूँ। आज भारत में बड़ी-बड़ी परंपराएँ, बड़े-बड़े लोग, कल्कि अवतार के विषय में बोलने में हिचकिचाते हैं। वे इसकी चर्चा तक नहीं करते। और मैं देखता हूँ कि कुछ ज्योतिष पॉडकास्ट में कुछ महानुभाव यह भी कहते हैं कि कल्कि अवतार आ चुका है। क्या इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण है? हाँ, इसका शास्त्र में प्रमाण है। मैं ब्राह्मण हूँ; मैं शास्त्रीय प्रमाण रखूँगा। कल्कि का अवतार कब होगा — किस शास्त्र में लिखा है? मैं भविष्य मालिका पुराण की ओर जाता हूँ। भविष्य मालिका पुराण में लिखा है: 'नीलचक्र प्रभु रंग' — जब जगन्नाथ मंदिर के नील चक्र से ध्वजा गिरेगी, तब भगवान कल्कि, उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद के चंबल क्षेत्र में, एक ब्राह्मण परिवार में, कृष्ण यश नामक पिता और सुमति नामक माता के यहाँ, शुक्ल द्वादशी तिथि को — भगवान कल्कि का अवतार हुआ। [इसी समय एक खुले माइक्रोफोन से पंडितजी की बात बाधित हुई और उन्होंने कहा:] कोई कृपया उसे म्यूट कर दे; आवाज़ आ रही है। यदि आप लोग इस तरह बीच में बाधा डालेंगे, तो मेरे लिए बोलना कठिन हो जाता है। मैं शास्त्र सोच-विचार कर नहीं बोलता — जब मन में भाव आता है, तब बोलता हूँ। यदि आप बीच में बाधा डालेंगे, तो मैं कैसे बोलूँ? मैं तो सब भूल गया। ऐसा मत कीजिए। ठीक है — शास्त्रों की विधि से, यह अवतार हो चुका प्रतीत होता है। जो मैं कहने जा रहा था, वह भूल गया, क्योंकि बीच में किसी ने अपना फोन अनम्यूट कर दिया, इसलिए मैं बोल नहीं सका। ठीक है, अगला प्रश्न।

► यह उत्तर सुनें · 00:36:29 · 29 मई 2026

प्रश्न 3284 अमेरिका–ईरान युद्ध से ही भारत पर इतना प्रभाव पड़ा है; तीसरे विश्व युद्ध के बाद भारत पर क्या प्रभाव होगा?

उत्तर: देखिए, पूरा तीसरा विश्व युद्ध तो अभी आरंभ ही नहीं हुआ है। उसके प्रभाव से ही सारे संसार की आर्थिक स्थिति विश्व स्तर पर 10 से 40 प्रतिशत तक गिर चुकी है। तो तीसरे विश्व युद्ध के बाद — केवल भारत की नहीं, मैं संसार की बात करता हूँ — पूरे संसार में एक स्वतंत्र (मुक्त) समय आएगा। पहले भारत में मंगल समय आएगा और भारत के लोग सुखी हो जाएँगे। लोगों के कई दिनों के दुःख और कष्ट मिट जाएँगे और लोग आनंदित हो जाएँगे। भारत के लोगों के रोग और बीमारियाँ दूर हो जाएँगी। वृद्धावस्था चली जाएगी। किसी की अकाल मृत्यु नहीं होगी। कृषि में अच्छी फसलें उगने लगेंगी। मंद, सुगंधित वायु बहने लगेगी। और सब आनंदित हो जाएँगे। तीसरे विश्व युद्ध के बाद — यह भागवत महापुराण में लिखा है: जब भगवान राम ने रावण का संहार किया, असुरों का संहार किया, तब पृथ्वी पर पूरे संसार में, सभी राज्यों में मंगल वचन और मंगल ध्वनियाँ सुनाई दीं, और मनुष्य सुखी हो गए। पवन देव मंद, सुगंधित, शीतल वायु बनकर आने लगे। सूर्य देव का प्रकाश सुखद रूप से शीतल हो गया। चंद्रमा की चाँदनी दीप्तिमान हो गई। चारों दिशाएँ स्थिर हो गईं। दिक्पाल पृथ्वी की रक्षा करने लगे, और धरती माता ने इतना अन्न उत्पन्न किया कि मनुष्य काटते ही चले गए। विश्व युद्ध के बाद भारत में ऐसा ही मंगल समय आ रहा है। उस मंगल समय में न कोई मरेगा और न किसी को रोग होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:39:22 · 29 मई 2026

प्रश्न 3285 पाकिस्तान से ओम प्रकाश भैया: मैं तीन वर्षों से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। क्या यहाँ पाकिस्तान में और भी कोई भक्त हैं, या आने वाले समय में होंगे, जिन्हें मैं भविष्य मालिका की वाणी सुना सकूँ? क्योंकि जिसे भी बताता हूँ, वे लोग मुझे पागल कहते हैं और मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। और त्रिकाल संध्या करते समय मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

उत्तर: देखिए, त्रिकाल संध्या करते समय बार-बार जम्हाई आना और आँखों से आँसू आना — यह इसलिए होता है कि हमारे भीतर की नकारात्मकता, दुर्गुण, हमारे शरीर में जो दुष्कृत हैं, वे बाहर निकलते हैं। इसी कारण बार-बार जम्हाई आती है और आँखों से पानी आता है। इस धरती पर, इस ग्रह पर ऐसा कोई मंत्र नहीं है जिसका उच्चारण करने से अपने आप बार-बार जम्हाई और आँखों से आँसू आएँ। ये आँसू नहीं हैं — यह आँखों से पानी बाहर निकालता है, अर्थात् नकारात्मकता को, गलतपन को बाहर निकालता है। आँसू रोने से आते हैं; यह रोने के कारण नहीं है। त्रिकाल संध्या में रोने का कोई शब्द ही नहीं है; यह तो केवल भगवान के नाम की महिमा है। इसलिए यह अत्यंत प्रभावशाली मंत्र है, प्रभावशाली भजन है। इसी कारण आँसू आते हैं, जम्हाई आती है। आपकी त्रिकाल संध्या सफल हो रही है। हाँ, पाकिस्तान में बहुत-बहुत लोग बचेंगे, चाहे कोई भी जाति, पंथ या वर्ण हो — जो सत्य युग में जाएँगे। तो आज अगर लोग नहीं मानते, तो कल मानेंगे। क्या हमें आज इसका प्रचार नहीं करना चाहिए? मैं भी कहता हूँ: किसी को बताने पर कोई नहीं मानता — कोई बात नहीं, रहने दीजिए। पर वह समय आएगा जब लोग ढूँढ-ढूँढ कर त्रिकाल संध्या करेंगे, माँग-माँग कर त्रिकाल संध्या करेंगे। बचने के लिए त्रिकाल संध्या ही सबसे बड़ी औषधि है; यही ब्रह्म-तत्त्व है, यही अमृत है; इससे बड़ा कुछ नहीं है। तो त्रिकाल संध्या कीजिए, अपने परिवार से करवाइए, और समय के साथ लोग बदलेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:42:06 · 29 मई 2026

प्रश्न 3286 (समापन घोषणाएँ) अब हमें और कौन-कौन से साधन और कार्यक्रम अपनाने चाहिए?

उत्तर: आज का विचार मैं यहाँ रखता हूँ। अनंत कोटि ब्रह्मांडों के अधिपति भगवान महाविष्णु के श्रीचरणों में इस तुच्छ सेवक के अनंत कोटि प्रणाम। देव देव ब्रह्मदेव, माता भवानी और प्रभु शंकर भगवान के श्रीचरणों में अनंत कोटि प्रणाम। और भारत के तथा विश्व के समस्त सनातन धर्मी सज्जनों, संतों और पवित्र मानवों को मैं सादर प्रणाम करता हूँ। बार-बार भगवान विष्णु के श्रीचरणों में और महा महालक्ष्मी के श्रीचरणों में नमन करता हूँ। जो भी जुड़े हैं, उन सबसे मेरा निवेदन है: त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पढ़िए, माधव नाम का जप कीजिए। आगे चलकर हर घर में हवन शुरू करना है — स्वाहा, स्वधा, वषट् और ओंकार; जब ओंकार, स्वाहा, स्वधा और वषट् कार्य करने लगेंगे, तब सत्य युग आएगा। ये चार तत्त्व विश्व की चारों दिशाओं को पवित्र करेंगे और सत्य युग का निर्माण करेंगे। हम चरण-दर-चरण सत्य युग की ओर बढ़ रहे हैं। पहले मैंने त्रिकाल संध्या की बात कही; अब हवन की भी बात कह दी — पूरा भारत, हमारे जो लोग मुझसे जुड़े हैं, और आप भी हवन कर सकते हैं। हवन के लिए हम एक पुस्तक रचेंगे: हवन कैसे करना है, विधि क्या है, नियम क्या हैं, आपको कैसे करना चाहिए — सब उसमें लिखा है और वह आपको मिल जाएगी। और पितृ-लोक की तृप्ति के लिए जो-जो कर्म आवश्यक हैं, उन्हें भी मैं स्थान देता हूँ — क्योंकि जब तक पितृ लोक में और पृथ्वी पर भगवान विष्णु की पूजा नहीं होगी, तब तक सत्य युग नहीं आएगा। इसलिए हर घर में भगवान विष्णु की पूजा कीजिए, हर घर में त्रिकाल संध्या कीजिए, हर घर में माधव नाम का भजन कीजिए, और सत्य, शांति, दया, क्षमा का पालन कीजिए; छोटा-छोटा दान कीजिए। सत्य युग के आगमन के लिए यही हमारे लिए सबसे बड़ा मार्ग है; हमें इसका पालन करना है, और प्रचार भी करना है, क्योंकि त्रिकाल संध्या के सिवा कोई मंत्र रक्षा नहीं करेगा। जो त्रिकाल संध्या करता है, उसकी अकाल मृत्यु कभी नहीं होती, न होगी। यह मेरा अपना विचार नहीं है — मैंने किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया, मैं किसी का गुरु नहीं हूँ; परंतु जो सिद्धांत शास्त्रों में है, उसे मैं दृढ़ता से रखता हूँ, क्योंकि धरती पर बहुत-सी परंपराओं ने शास्त्रों को नष्ट और विकृत किया है, शास्त्रों को नष्ट किया है। अब हम उन्हें नष्ट नहीं करने देंगे। हम शास्त्रों को जागृत करेंगे। हम विश्व में मानव जाति को शास्त्रों के सिद्धांत बाँटेंगे। हम लोगों को भागवत पढ़वा रहे हैं, ताकि वे स्वयं ज्ञानवान बनें और अज्ञान फैलाने वाले अज्ञानी लोगों को मुँहतोड़ उत्तर दें। तो आज के समय के लिए मैं अपना विचार रखता हूँ। जय जगन्नाथ, जय श्री बलभद्र, जय माता सुभद्रा, जय श्री सुदर्शन, जय श्री माधव, जय भगवान कल्कि। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद स्थित संभल-क्षेत्र में सजावट चल रही है; हमारा कल्कि धाम बनना है, तो आप उस क्षेत्र

की यात्रा कर सकते हैं और भगवान कल्कि के आगमन के लिए जा सकते हैं। और दूसरा, आप अहमदाबाद के पिराना स्थित कल्कि धाम के भी दर्शन कर सकते हैं। हमारे नवरात्रि पक्ष में वहाँ सात दिन की कल्कि कथा होती है, अहमदाबाद, गुजरात के पिराना में; वहाँ बहुत सुंदर कल्कि धाम बना है और आप उस कल्कि धाम के भी दर्शन कर सकते हैं। भगवान कल्कि समस्त भक्तों की रक्षा करें। जय।

► यह उत्तर सुनें · 00:45:13 · 29 मई 2026

सत्र 192 · प्रश्न 3287–3300

L208: अमावस्या-संक्रांति योग बना खतरा? 15 जून के योग के बाद सूखा और तबाही | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 19 जून 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3287 पिछली मीट में नेहा पांडेय नाम की एक माता जी ने अपने घर में प्रेत/आत्मा संबंधी समस्याओं के बारे में पूछा था। आपने पिंडदान करने की सलाह दी थी, लेकिन वे समझ नहीं पाईं कि किसका पिंडदान करना है, क्या करना है और कैसे करना है। समस्या बढ़ती जा रही है; रात में उन्हें कुछ दिखाई भी देता है और ऐसा लगता है जैसे कोई उन्हें बुला रहा हो। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: किसी भी गया क्षेत्र, या नाभि-गया क्षेत्र, या जगन्नाथ पुरी क्षेत्र (महोदधि क्षेत्र), या पुष्कर या हरिद्वार जाइए — अपने साथ एक अच्छे ब्राह्मण को ले जाइए। जो उनके स्वप्न में आता है, जिसका नाम ज्ञात नहीं है, उसके लिए ऐसा कहा गया है: कहिए, "जो मेरे स्वप्न में आता है, जो मुझे दिखाई देता है, जिस आत्मा को सद्गति प्राप्त नहीं हुई है — मैं उसका पिंडदान करती हूँ।" उनके नाम पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर का भी आवाहन कीजिए, और इस प्रकार संबोधित कीजिए: "जो मेरे स्वप्न में आता है या जो मुझे दिखाई देता है" — उसके लिए पिंडदान कीजिए, और साथ ही समस्त अतृप्त आत्माओं के लिए भी, पिंडदान के समय यह बोलते हुए। संभवतः उनकी मुक्ति नहीं हुई है, जिस कारण वे बार-बार स्वप्न में आते हैं। यदि पिंडदान संभव न हो, तो एक काम कीजिए: उनके लिए घर में गरुड़ पुराण का पाठ कीजिए — सात दिन तक गरुड़ पुराण पढ़िए, और तीनों संध्याओं में त्रिकाल संध्या कीजिए। फिर मुझे बताइए कि इससे क्या प्रभाव आता है।

► यह उत्तर सुनें · 00:20:09 · 19 जून 2026

प्रश्न 3288 शिवानी जी पूछती हैं: मैं एक वर्ष से त्रिसंध्या कर रही हूँ, लेकिन अब तक मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई। मैं प्रतिदिन भागवत का पाठ भी करती हूँ। मेरा एक छोटा बच्चा है और मैं सुबह जल्दी नहीं उठ पाती — मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर: बहुत अच्छी बात है कि आप त्रिकाल संध्या करती हैं, बहुत अच्छा। जहाँ तक अनुभूति की बात है — देखिए, जब कोई विपत्ति आने वाली होती है, तब अनुभूति होती है। दूसरे प्रकार की अनुभूति यह है कि भगवान स्वप्न में आकर कुछ कहें। निश्चित रूप से, यदि आप चाहें: प्रतिदिन सोने से पहले माधव नाम / कल्कि का नाम 108 बार जपिए और फिर सोइए, और भगवान से कहिए, "प्रभु, मुझे कुछ अनुभूति दीजिए जिससे मेरा मन दृढ़ हो जाए और मैं इस धारा में आगे बढ़ सकूँ।" जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:21:54 · 19 जून 2026

प्रश्न 3289 तुला कन्या: मैं तीन वर्षों से इस धारा से जुड़ी हुई हूँ। पहले भक्ति-भाव था, पर अब मन भटक रहा है, जीवन में बहुत कष्ट है, यद्यपि भगवान में मेरी श्रद्धा है, और आर्थिक पतन हो रहा है। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: बहुत अच्छी बात है कि आप धारा में हैं; हम आपका धन्यवाद करते हैं। जो त्रिकाल संध्या करते हैं वे दिव्य मानव (दिव्य मानव) हैं, और आप दिव्य मानव का कर्म कर रही हैं — यह अद्भुत है। जो आर्थिक संकट चल रहा है, उससे रक्षा के लिए प्रतिदिन तीन बार महालक्ष्मी अष्टकम् का पाठ करें — इन्द्र-कृत महालक्ष्मी अष्टकम्; वह मंत्र प्राप्त करने के लिए आप नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क कर सकती हैं। उसका पाठ करते समय, साथ ही 108 बार माधव नाम का जप भी करें। और आप जो भी निर्णय लें, धैर्य के साथ लें, ताकि आपको और आर्थिक हानि न हो।

► यह उत्तर सुनें · 00:22:58 · 19 जून 2026

प्रश्न 3290 अमेरिका से रंजुल मेहता पूछते हैं: मैं अपनी माता जी के साथ 21 जुलाई से 14 अगस्त तक तीर्थयात्रा पर जाना चाहता हूँ — अहमदाबाद, वृंदावन, शुकरताल, प्रयागराज, अयोध्या, काशी। क्या यह समय तीर्थयात्रा के लिए सुरक्षित है? आप क्या मार्गदर्शन देंगे?

उत्तर: हाँ, आप इस समय तीर्थयात्रा कर सकते हैं। पर गढ़वाल क्षेत्र में समय-समय पर मौसम कुछ बदलता रहता है। उस समय माधव नाम और त्रिकाल संध्या करते रहने से — यदि कोई आपदा आ भी जाए तो कोई समस्या नहीं होगी, और आप इस अवधि में तीर्थयात्रा कर सकते हैं। त्रिकाल संध्या और माधव नाम भजन करते हुए आगे बढ़िए। और सबसे महत्वपूर्ण बात: गढ़वाल क्षेत्र में, उत्तराखंड/उत्तरांचल क्षेत्र में, इस समय किसी भी क्षण कोई आपदा आ सकती है, क्योंकि उस समय अत्यधिक वर्षा होती है, कभी-कभी भूस्खलन — ये सब छोटी-छोटी समस्याएँ होती रहती हैं। पर माधव नाम और त्रिकाल संध्या के साथ जाने पर कोई समस्या नहीं होगी। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:24:03 · 19 जून 2026

प्रश्न 3291 आशीष कुमार जी: त्रिकाल संध्या में, अंत में एक जयकारा आता है कि सभी भक्तों का एकत्रीकरण हो — यह कब होगा?

उत्तर: देखिए, भक्तों का एकत्रीकरण तब होगा जब पूरे विश्व में मानव सभ्यता पर महा विपत्ति आएगी। जब पूरे संसार में विपत्ति आएगी, तब भक्त स्वयं ही एकत्रित हो जाएंगे। वह समय अभी आगे है। 2028 के बाद लोग भय या डर के कारण धर्म को अपनाएंगे; वे त्रिकाल संध्या को अपनाएंगे। फिर जब भगवान सुधर्मा सभा बैठाएंगे, तब सभी भक्तों का एकत्रीकरण होगा। अभी तो यह धर्म-प्रचार का कार्य भक्तों के परिवर्तन और उत्थान के लिए चल रहा है। जब सुधर्मा सभा बैठेगी, तब यह भक्तों का एकत्रीकरण होगा। लोग पहले से ही त्रिकाल संध्या कर रहे होंगे, और भगवान का आह्वान आएगा; कल्कि भगवान प्रकट होंगे। वह समय अभी आगे है, इसलिए उसके बारे में सोचने के बजाय, यह समय है कि जो धारा है उसका अनुसरण करें, और उसका अनुसरण करने से हमारा कल्याण होगा। आगे महान परिवर्तन है और आपको उसका प्रभाव और प्रेरणा मिलेगी — संसार बदल रहा है, और मानवता में परिवर्तन आएगा, और भक्त धीरे-धीरे अपने धर्म की ओर आएंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:25:27 · 19 जून 2026

प्रश्न 3292 हर्षिता आनंद जी: मुझे शालिग्राम भगवान प्राप्त हुए हैं और मैं उनकी पूजा करती हूँ, लेकिन बहुत से लोग कहते हैं कि लड़कियों को पूजा नहीं करनी चाहिए। मैं क्या करूँ? घर में सेवा मैं ही करती हूँ।

उत्तर: मेरे विचार से भक्ति में माताओं (स्त्रियों) और पुरुषों में कोई भेद नहीं है। हमारे देश में, शास्त्रों में हमने कर्माबाई के बारे में पढ़ा है, जो कृष्ण की महान भक्त थीं और भगवान की पूजा करती थीं, और उन्होंने भी भगवान को प्राप्त किया। इसलिए भक्ति में स्त्री और पुरुष का कोई भेद नहीं है। सभी स्त्री-पुरुष भक्ति कर सकते हैं, पूजा कर सकते हैं। बस आपकी श्रद्धा महान होनी चाहिए, क्योंकि भगवान को प्राप्त करने में स्त्री या पुरुष का कोई भेदभाव नहीं है। भेद कर्म का है; भेद पाप और पुण्य का है; और भेद व्यक्ति की श्रद्धा या अश्रद्धा का है। इसी कारण आप पूजा कर सकती हैं। आपके पूजा करने में कोई आपत्ति नहीं है। यदि आपमें भक्ति है, तो भगवान की पूजा कीजिए — कोई समस्या नहीं है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:27:12 · 19 जून 2026

प्रश्न 3293 भरत माली जी, एक व्यापारी, ने पहले पूछा था — उनका व्यापार नहीं चल रहा था और आपने कहा था कि उन्हें मंगल दोष है, जिसे वे स्वीकार करते हैं। लेकिन उनकी दुकान बंद हो गई है और उनका माल घर में पड़ा है, और वे कुछ कर नहीं पा रहे हैं। वे मार्गदर्शन चाहते हैं।

उत्तर: देखिए, प्रयत्न और प्रचेष्टा — ये दोनों इस संसार के सिद्धांत हैं। जो सामग्री आपके पास पड़ी है — उसके लिए उन लोगों से समन्वय कीजिए जो उसे खरीद सकते हैं। और माधव नाम कीजिए, त्रिकाल संध्या कीजिए, भागवत पाठ कीजिए, त्रिकाल संध्या की विधि का पालन कीजिए, और माधव से प्रार्थना कीजिए कि यह सामग्री कहीं बिक जाए। मेरे विचार से, समन्वय कीजिए और प्रयत्न कीजिए — जहाँ भी आपकी बिक्री होने की संभावना हो, या जो खरीदार हैं, जो एजेंसियाँ हैं, उनसे बात कीजिए और उसे निपटाइए। समय लगेगा, पर समय पर हो जाएगा।

► यह उत्तर सुनें · 00:28:43 · 19 जून 2026

प्रश्न 3294 ओम प्रकाश जी पाकिस्तान से लिखते हैं: हमें आपकी कल्कि पुस्तक — भविष्य मालिका भाग एक और भाग दो — प्राप्त हुई। तीसरा भाग कब आएगा, और क्या हम पाकिस्तान में भी इसका प्रचार कर सकेंगे?

उत्तर: देखिए, भविष्य मालिका शास्त्र में जो सिद्धांत निहित है, वह पूरे विश्व में फैलाने योग्य सिद्धांत है। इसमें नित्य पंच सखाओं ने कोई भेदभाव नहीं रखा, कोई जाति या धर्म नहीं रखा। यह शास्त्र सभी के लिए प्रचार और प्रसार हेतु लिखा गया है, और तीसरी पुस्तक का कार्य चल रहा है। यदि भगवान जगन्नाथ की कृपा प्राप्त हुई, तो वह पुस्तक अवश्य मानव सभ्यता को उपलब्ध कराई जाएगी। हाँ, मेरे विचार से इस वर्ष जनवरी तक पुस्तक मानवता को उपलब्ध हो सकती है। मैं प्रयत्न कर रहा हूँ। जब तक ठाकुर जी की इच्छा नहीं होगी, जब तक नित्य पंच सखाओं की कृपा और आशीर्वाद नहीं होगा, हम इसे मानव सभ्यता को नहीं दे पाएंगे; फिर भी हम इसे उपलब्ध कराने का प्रयत्न और प्रचेष्टा कर रहे हैं। और मैं आपके प्रयास, आपकी भक्ति और आपकी श्रद्धा के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ — कि इतनी दूर रहकर भी आपने भविष्य मालिका शास्त्र प्राप्त किया। यह जगन्नाथ जी की महान कृपा है। माधव की कृपा बनी रहे, ताकि आप इस कार्य को आगे बढ़ा सकें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:29:46 · 19 जून 2026

प्रश्न 3295 रोमित जी पूछते हैं: शाम को, सूर्य और पितरों को अर्घ्य देते समय स्नान करना आवश्यक है?

उत्तर: देखिए, स्नान तीन प्रकार का होता है: शरीर शुद्धि, मन शुद्धि, और अंतःकरण शुद्धि। जिनमें इतनी शारीरिक क्षमता नहीं है, वे अपने शरीर पर गंगाजल छिड़क सकते हैं, और फिर वे भी सूर्य देव को जल अर्पित कर सकते हैं और पितृ-तर्पण भी कर सकते हैं। बहुत से लोग अपने साथ छोटी बोतलें रखते हैं — एक गंगाजल की और एक जल की — अपनी गाड़ी में। और समय पर, गाड़ी रोककर, मन से गंगाजल छिड़ककर, उस प्रकार स्नान करके — पूर्ण स्नान नहीं, बल्कि ऐसा आध्यात्मिक स्नान — वे सूर्य को जल अर्पित करते हैं और पितरों का तर्पण करते हैं। पितरों को जल अर्पित करना पितृ-तर्पण कहलाता है; सूर्य को जल अर्पित करना अर्घ्य-अर्पण कहलाता है। तो आप कर सकते हैं। हाँ, जिनमें क्षमता है, आयु है, शरीर में कोई रोग नहीं है — यदि उस समय उनके पास सुविधा और व्यवस्था है और वे कर सकते हैं, तो वे करें। अन्यथा, मन से गंगा में स्नान करके और गंगाजल छिड़ककर हम ये दोनों कार्य कर सकते हैं। क्योंकि कलियुग के कारण मनुष्य के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं: किसी का काम अस्थिर है, कोई लोग यात्रा में हैं, कोई अपने कार्यस्थल पर काम में व्यस्त हैं। तो वे उस समय क्या करेंगे? यदि संभव नहीं है, तो संभव नहीं है। यदि आपमें क्षमता है, तो जल अपने साथ रखिए, और कहीं भी खड़े होकर छोटे पात्र से आप अर्पित कर सकते हैं। क्योंकि धर्म के पालन के लिए स्थान, समय या व्यक्ति का कोई प्रतिबंध नहीं है — आप कर सकते हैं। और यदि संभव न हो, तो कम से कम उस समय त्रिकाल संध्या अवश्य कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:31:37 · 19 जून 2026

प्रश्न 3296 हर्ष चौहान जी: आपने बहुत अच्छा मार्गदर्शन दिया है। हम भगवान का नाम भी लेते हैं और प्रार्थना भी करते हैं, लेकिन हमारी इंद्रियाँ और हमारा मन नियंत्रण में नहीं आते, और हमारा मन हमें गलत विचारों और गलत कर्मों की ओर जाने को कहता है। इससे कैसे बचा जाए? कुछ गलत हो तो क्षमा करें, पिता श्री, पर मार्गदर्शन अवश्य करें।

उत्तर: देखिए, माया और इंद्रियाँ दोनों प्रबल हैं; विशेषकर कलियुग में ये बहुत शक्तिशाली हैं। इसमें कोई दुःख नहीं है। मनुष्य छोटी-छोटी गलतियाँ करेगा; उन गलतियों के कारण हमें दुःखी नहीं होना चाहिए। हमें प्रयत्न करना चाहिए कि वे गलतियाँ फिर न हों। इसलिए अपनी माया और इंद्रियों को अपने वश में लाने के लिए, निरंतर माधव नाम का गान कीजिए। जब भी समय मिले, हृदय में, हृदय पर भजन कीजिए — ऊँची आवाज़ में नहीं — और जब भी समय मिले भागवत महापुराण पढ़िए। विशेषकर भागवत पढ़ने से मन और शरीर की माया और इंद्रियाँ नष्ट होती हैं, जिसमें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य उत्पन्न होते हैं। यह एकमात्र पुराण है जिसमें मनुष्य को ये चार चीज़ें मिलती हैं: भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और मुक्ति। तो वैराग्य आने के कारण मनुष्य की इंद्रियाँ नष्ट हो जाती हैं। और जो त्रिकाल संध्या का पाठ करते हैं — उनकी इंद्रिय-शक्ति पूर्णतः समाप्त हो जाती है। हाँ, पहले वे कुछ प्रभाव डालेंगी; बाद में, जन्म-मृत्यु के बंधन से आरंभ करके, सारी इंद्रियाँ, और मानव मन के सारे काल्पनिक दुःख — वे काल्पनिक दुःख, काल्पनिक समस्याएँ और काल्पनिक आशाएँ — त्रिकाल संध्या के द्वारा, समय के साथ समाप्त हो जाएँगी। यदि आरंभ में गलतियाँ हो जाएँ, तो कोई बात नहीं; अब से बदलिए। जब भी समय मिले, भागवत पढ़िए और माधव नाम गाइए। पहले गलती होगी, फिर आप गलती सुधारेंगे, फिर दोबारा गलती होगी, फिर आप सुधारेंगे — फिर अच्छा हो जाएगा। कोई एक दिन में संत नहीं बना; पृथ्वी एक दिन में नहीं बनी; कोई एक दिन में भक्त नहीं बना। भजन और कर्म मनुष्य को भक्त बनाते हैं। तो उस समय, प्रतीक्षा क्यों? कर्म कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:33:46 · 19 जून 2026

प्रश्न 3297 रूबी सिंह जी पूछती हैं: हमारे कुछ मित्र मांसाहारी भोजन करते हैं। यदि हम उनके घर जाएँ, तो क्या हम वहाँ भोजन कर सकते हैं या नहीं?

उत्तर: देखिए, भोजन में हमें भेद नहीं देखना चाहिए। शास्त्र में लिखा है — कोई मछली, मांस, मदिरा खाता है; कोई चोर हो सकता है, डाकू हो सकता है; कोई संत हो सकता है, कोई साधु हो सकता है; कोई दुर्गुणों से भरा है, कोई सद्गुणों से भरा है; कोई उपयोगी हो सकता है, कोई निकम्मा; कोई झूठा हो सकता है, कोई सत्यवादी। लेकिन मनुष्य होने के नाते हमें इसमें भेदभाव नहीं लाना चाहिए। उनके घर में नॉन-वेज पकता है — ठीक है, वे खाते हैं; हम उनके भोजन की निंदा नहीं करेंगे। हम उनके कर्म की निंदा करेंगे। भोजन ईश्वर द्वारा दिया गया पदार्थ है। तो वे जो खाते हैं, खाने दीजिए। आपके वहाँ जाकर खाने में कोई समस्या नहीं है। अलग से खाइए — उनसे कह दीजिए कि उसमें उनका नॉन-वेज न मिलाया जाए, या उसका संपर्क न हो। इस प्रकार आप खा सकती हैं। निंदा मनुष्य की नहीं की जाती — कर्म की की जाती है; पर निंदा करने वाले हम कौन होते हैं? हम लोगों में परिवर्तन ला सकते हैं; पर यदि लोग फिर भी नहीं बदलते, तो उनकी निंदा करना उचित नहीं है। आप भोजन कर सकती हैं, पर वह मिश्रित न हो — नॉन-वेज की संलिप्तता, यानी नॉन-वेज से संपर्क। यदि संपर्क हो जाए, तो बहुत शांति से, स्थिरता से और प्रेमपूर्वक कहिए: "हम शाकाहारी हैं, इसलिए यह भोजन हम नहीं कर सके; यदि आप मेरे लिए स्वच्छ और शुद्ध होकर भोजन बनाएँ, तो मैं खाऊँगी — कोई समस्या नहीं।" जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:36:38 · 19 जून 2026

प्रश्न 3298 मोहित सिंह जी लिखते हैं: पितरों को जल-तर्पण देते समय, वह बाईं ओर देना चाहिए या दाईं ओर?

उत्तर: दक्षिण दिशा की ओर मुख कीजिए — मुख दक्षिण की ओर — और यह बाईं ओर नहीं बल्कि दाईं ओर होता है। यह जल उँगलियों से छोड़ना होता है: जल हथेली पर रखिए, और उँगली से, जल को इस प्रकार पकड़कर, हाथ को इस तरह उठाकर, इस प्रकार अर्पित कीजिए। और दक्षिण दिशा में पितरों का तर्पण करने से घर में शांति आएगी। पितर प्रसन्न होंगे। और अपनी रसोई में, अपने पाकस्थल की दक्षिण दिशा में, आप धूप भी अर्पित कर सकते हैं। पितरों के लिए आप सुबह-शाम छोटे दीपक भी जला सकते हैं। इसके कारण, आपकी रसोई में बने भोजन में कोई भूत-प्रेत, कोई दुष्ट शक्ति प्रवेश नहीं कर पाएगी। उस पर पितरों की महान कृपा होने से, वह भोजन अमृत बन सकता है।

► यह उत्तर सुनें · 00:38:48 · 19 जून 2026

प्रश्न 3299 पुष्पराज कुमार, रांची, झारखंड से: काम, क्रोध, लोभ, मोह से कैसे निकला जाए? मैं सत्य, प्रेम, करुणा, क्षमा और शांति में जीने का प्रयास कर रहा हूँ; मैं त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ करता हूँ, लेकिन ऐसा लगता है कि मैं केवल एक औपचारिकता पूरी कर रहा हूँ। आपकी बातें सुनकर लगता है, शायद इसीलिए भगवान की जो अनुभूति होनी चाहिए वह नहीं हो रही। कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: यह बड़े आनंद की बात है कि आप त्रिकाल संध्या करते हैं। देखिए, संतों, साधुओं, ऋषियों और मुनियों को हज़ार वर्षों की तपस्या करनी पड़ी; तब जाकर उनकी इंद्रिय-शक्तियाँ, उनके दुर्गुण नष्ट हुए। पर इस समय आपने अभी-अभी त्रिकाल संध्या आरंभ की है। औपचारिकता के रूप में भी करते-करते, निरंतर करते रहने से, समय के साथ आपको सिद्धि प्राप्त होगी — जैसे साधना-प्राप्ति में होता है, उसमें जो पूर्णता है — अर्थात् आपको भी आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होगी। और जब भी समय मिले, हृदय पर माधव नाम का भजन कीजिए, और सोने से पहले भगवान विष्णु को 108 बार माधव नाम का जप कीजिए और अपनी आँखों के सामने उनके स्वरूप का ध्यान कीजिए — उनका विराट स्वरूप, उनका अनंत-शयन स्वरूप, महालक्ष्मी द्वारा सेवित उनका स्वरूप — उस स्वरूप का ध्यान कीजिए। मेरे विचार से, त्रिकाल संध्या के द्वारा सारी इंद्रियाँ, सारी माया, सारे दुर्गुण नष्ट होते हैं; इसमें कुछ दिन लगते हैं, और मृत्यु का भय तथा कोई भी भय शेष नहीं रहता। तो समय के साथ आपके साथ भी ऐसा होगा। कुछ दिन करते रहिए, और सोने से पहले यह प्रतिदिन कीजिए — माधव नाम का जप कीजिए और भगवान विष्णु का ध्यान कीजिए; अच्छा होगा, आपको महान आनंद मिलेगा। और सबसे बड़ी बात: जो भी मनुष्य त्रिकाल संध्या और भगवान विष्णु का भजन करता है, वह कभी पराजय स्वीकार नहीं करेगा। उसे कभी नहीं लगेगा कि वह अकेला है, कि वह असफल होगा, कि वह सफल नहीं होगा। ऐसी भावनाएँ कभी नहीं आएँगी, क्योंकि इसमें भगवान विष्णु की महान कृपा है। जो भी उनकी उपासना करता है, वह निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करता है — इसमें कोई संदेह नहीं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:40:16 · 19 जून 2026

प्रश्न 3300 नगे कावेरी, औरंगाबाद, महाराष्ट्र से: इस जून के महीने में, घर के मंदिर में मध्याह्न की त्रिसंध्या करते समय, भगवान विष्णु के चित्र से मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो स्वयं भगवान, कमल के साथ, हमारी ओर अपना हाथ उठा रहे हों। ऐसी अनुभूति हुई।

उत्तर: बहुत अच्छा, और यह बहुत शुभ दिन है। देखिए, यदि कोई भगवान के निकट होना चाहता है, तो विष्णु का नाम गाइए; और विष्णु का परम पवित्र नाम है माधव, और माधव का नाम है कल्कि, और कल्कि ही माधव हैं। और कलियुग से सत्ययुग में जाने के लिए, उद्धार देने वाला नाम है माधव। तो यदि संसार का कोई भी मनुष्य थोड़े समय में भगवान की प्राप्ति चाहता है — त्रिकाल संध्या और भगवान विष्णु की उपासना के द्वारा, बहुत कम समय में इंद्रियों को वश में किया जा सकता है, माया को वश में किया जा सकता है, संसार के सत्य और असत्य को समझा जा सकता है, अपनी स्थिति को समझा जा सकता है, कि मनुष्य का लक्ष्य क्या है और मनुष्य का मूल उद्देश्य क्या है; और मनुष्य भगवान और मनुष्य के बीच के संबंध को, अपनी स्थिति और भगवान की स्थिति को समझने योग्य बन जाता है। इसलिए यह आपके लिए बहुत शुभ दिन है — मैं भी इस दिन से आनंदित हूँ। माधव की कृपा बनी रहे। इसी प्रकार भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति के साथ जीवन जीजिए। भगवान विष्णु की उपासना कीजिए। इस समय, भगवान विष्णु की उपासना किए बिना, हम बच नहीं पाएँगे, हम आगे नहीं बढ़ पाएँगे। सभी देवी-देवता पहले ही जन्म ले चुके हैं। केवल भगवान विष्णु ही कल्याण करेंगे। जब वे मानव शरीर में आएँगे तो वे क्या करेंगे? इसलिए इस समय भगवान विष्णु परम, सर्वाधिक शक्तिशाली अवतार ले रहे हैं। भगवान विष्णु का राम भजन गाइए, माधव नाम गाइए, कल्कि-माधव नाम गाइए, कल्कि-राम नाम गाइए। और सबसे प्रभावशाली नाम है माधव — तो इसे गाइए। इसके द्वारा आप भगवान को और अधिक प्राप्त करेंगे, और जीवन में परिवर्तन आएगा। जो सभी लोग अब इस धारा में मुझसे जुड़े हैं, उनसे मेरा निवेदन है: त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ और माधव नाम कीजिए। सत्ययुग अवश्य आएगा; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वाणी दो-तीन वर्ष इधर-उधर खिसक सकती है — दो वर्ष या एक वर्ष या तीन वर्ष; वह भगवान की इच्छा है। पर

आप सब एक-दो वर्ष पहले ही आगे बढ़ जाइए। केवल आप ही नहीं — पूरे विश्व में करोड़ों लोग इस पवित्र धारा को स्वीकार करेंगे और उसका अनुसरण करेंगे, क्योंकि इसके अतिरिक्त न पहले कुछ है न बाद में। शास्त्र में लिखा था कि इसका प्रचार होगा, जिसे हम मानवता के कल्याण और रक्षा के लिए प्रचारित करते हैं — यह धारा मानवता को विपत्ति से उबारने और एक नए युग के निर्माण के लिए है। सभी को धन्यवाद। जय जगन्नाथ, जय श्री माधव। आज की चर्चा हम यहीं रखते हैं; आगे समय मिला तो मैं फिर आपसे विचार साझा करूँगा। सभी को धन्यवाद। महादेव सभी का भला करें, जगन्नाथ जी की कृपा बनी रहे, ताकि पूरे विश्व में मानवता के उत्थान के लिए, सभी — जाति, धर्म और वर्ण से परे — भगवान विष्णु की शरण लें और सनातन को अपनाएँ। समय परिवर्तनशील है; हमें भी बदलना होगा। यदि हम नहीं बदलेंगे, तो आगे बढ़ना कठिन है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:42:25 · 19 जून 2026

सत्र 193 · प्रश्न 3301–3308

L209: VENEZUELA में भूकंप का तांडव , क्या अब भारत की बारी? | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 27 जून 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3301 (प्रारंभिक प्रवचन) वेनेजुएला में भूकंप की तबाही — क्या अब भारत की बारी है? ये आपदाएँ क्यों हो रही हैं और हमारी रक्षा कौन करता है।

उत्तर: जय जगन्नाथ। भारत के और समस्त विश्व के सभी सनातन धर्मी सज्जनों, संतों एवं शुद्ध मानवों को मेरा सादर प्रणाम। अनंत कोटि ब्रह्मांडनायक भगवान विष्णु के श्रीचरणों में यह तुच्छ सेवक अनंत कोटि प्रणाम अर्पित करता है। देवदेव ब्रह्मा, माता भवानी एवं प्रभु शंकर भगवान के श्रीचरणों में यह तुच्छ सेवक अनंत कोटि प्रणाम अर्पित करता है। आज हम एक जनहित के विषय पर विचार करेंगे। दो दिन पहले आपने देखा कि वेनेजुएला में भूकंप आया, लगभग 7.5 तीव्रता का। उसके बाद जापान में एक आया, पुलवामा में एक आया, नेपाल में भी एक आया, और विश्व में अनेक स्थानों पर छोटे-छोटे भूकंप आए। और यह विचार आज का नहीं है — लगभग दस या पंद्रह वर्ष पहले ही इसकी चर्चा हो चुकी थी। पहले ही बताया जा चुका था कि ऐसी स्थिति आएगी, भूकंप की यह बात पहले ही कही जा चुकी थी। वेनेजुएला में जो हुआ है वह समस्त विश्व के लिए एक उदाहरण है; उस दिन जापान में जो हुआ वह भी एक बड़ा उदाहरण था। परंतु आगे हम विश्व में ऐसे असंख्य और उदाहरण देखेंगे। समय एक परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है, वह समय जब विश्व में महान परिवर्तन होगा। इसलिए सारा विश्व, विश्व के सभी लोग इसे गंभीरता से लें — हमें भी इसे गंभीरता से लेना चाहिए। विश्व के प्रत्येक देश में ऐसी स्थिति आएगी — केवल भूकंप ही नहीं, उसके साथ पंच-तत्त्व का प्रलय भी होगा। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि लोग सनातन धर्म से बहुत दूर चले गए हैं। लोगों ने स्वयं को वेदों की धारा से अलग कर लिया है। आज लोग अपने मन और अपनी राय के अनुसार आचरण करते हैं। कोई मनुष्य यह नहीं सोचता कि यह कार्य विश्व के लिए अच्छा होगा या बुरा। इसलिए अमेरिका के अनेक देशों में ऐसी स्थिति आएगी — चाहे उत्तरी अमेरिका हो, चाहे दक्षिणी अमेरिका; जापान, चीन, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, थाईलैंड, यूरोपीय देश भी इसमें आएँगे, मध्य-पूर्व भी इसमें आएगा। इसी कारण हम समय में परिवर्तन देख रहे हैं। जो वर्षों पहले कहा गया था — कि विश्व में खेती नहीं होगी, अकाल पड़ेगा, वर्षा नहीं होगी, अतिवृष्टि-अनावृष्टि होगी — यह स्थिति आज स्वयं वैज्ञानिक प्रचारित कर रहे हैं। इससे हमें प्रमाण मिलता है कि भविष्य मालिका ग्रंथ की विचारधारा कितनी सत्य और कितनी पवित्र है। एक स्वतंत्र चेतावनी के माध्यम से, पतित मानव सभ्यता को आध्यात्मिक मार्ग पर लाने के लिए, मानव सभ्यता के कल्याण के लिए, इस भविष्य ग्रंथ की रचना हुई थी; और समस्त विश्व में इसका प्रचार, सारे संसार में मानव जाति के उद्धार के लिए इसकी रचना — आज एक-एक करके अपने सत्य होने का प्रमाण दे रही है। इसलिए भारत के भी अनेक क्षेत्र ऐसे समय की ओर बढ़ रहे हैं — दिल्ली से नेपाल तक, कश्मीर से उत्तराखंड और हिमाचल तक; बिहार, बंगाल, ओडिशा भी इसमें आ सकते हैं, यूपी भी इसमें आ सकता है। परंतु एक प्रश्न सदा उठता है — प्रश्न और उत्तर: ऐसा क्यों हो रहा है? कारण बस इतना ही है: अधर्म बढ़ गया है, धर्म घट गया है। यदि धर्म बढ़े, तो समस्त विश्व में विनाश की यह लीला रुक सकती है। यदि हमारे देश में भी सभी लोग शाकाहारी रहें, आध्यात्मिक रहें, गोहत्या से विरत रहें, जीव-हिंसा से विरत रहें, यदि वे नशे और गुटखा को छोड़ दें और जीवों की हत्या न करें, तो हमारे देश में कोई विनाश नहीं होगा। परंतु यदि मनुष्य इसमें मनमानी करें, इसका पालन न करें, और धर्म की वाणी तथा चेतावनी को न सुनें, तो मानव सभ्यता पर इसका प्रभाव 100 प्रतिशत होगा। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैसे ग्रंथ की विचारधारा का प्रचार हुआ, उसका एक-एक शब्द सत्य की ओर बढ़ेगा। तो आज जिस देश में भूकंप आया है, वहाँ के नागरिक — जो दुख और पीड़ा वे भोग रहे हैं, वह समस्त विश्व के लिए सबसे बड़ा उदाहरण है। मानव सभ्यता की बहुत बड़ी क्षति होती है। कितने परिवार टूट गए, कितने परिवारों में कितने लोग खो गए — केवल उसका अनुमान लगाने और उस पर विचार करने से उनका दुख हल नहीं होगा। हम उनकी पीड़ा को पोंछ नहीं सकते। परंतु यदि हम विचार करें, तो भारत में और विश्व के शेष सभी देशों में जो समस्याएँ अभी आनी बाकी हैं, उन्हें हम रोक सकते हैं। वह सिद्धांत है: धर्म का प्रसार करो। वह सिद्धांत है: घर-घर में अग्निहोत्र यज्ञ करो, घर-घर में त्रिकाल संध्या, घर-घर में भागवत पाठ, घर-घर में माधव का नाम — आने वाले समय में

केवल यही मनुष्य की रक्षा कर सकता है। मार्ग केवल एक ही है। इस मार्ग के अतिरिक्त, न पहले न बाद में, कोई और मार्ग निश्चित नहीं होगा, कोई और मार्ग बनाया नहीं जाएगा। यह मैं नहीं कहता — यह भगवान की इच्छा है। तो देखिए समस्त विश्व का परिवर्तन — मध्य-पूर्व में युद्ध चल रहा है। उसमें कितने लोग दुखी हैं, कितने बेघर हो जाते हैं, कितने अपना परिवार, पिता, माता, संतान और वंश खो देते हैं। ऐसे युद्ध से क्या लाभ? परंतु लोगों को समय को समझना चाहिए। यह समय के कारण हो रहा है। लोगों को धर्म की ओर आना चाहिए, और धर्म ही वह एकमात्र मार्ग है जो हमारी रक्षा कर सकता है। सभी लोगों से मेरा निवेदन है: भागवत पढ़िए। भागवत का एक अध्याय अवश्य पढ़िए। त्रिकाल संध्या कीजिए। त्रिकाल संध्या को अपनाइए। हर क्षण माधव का नाम जपिए। तब आपको कुछ नहीं होगा। माधव का नाम अत्यंत शक्तिशाली नाम है; यही एक महाविनाश को भी रोक सकता है। तो सभी भक्तों से मेरा निवेदन है: त्रिकाल संध्या का पालन करें, भागवत पढ़ें, माधव का नाम जपें। और आगे आने वाली अनेक प्रकार की चुनौतियों का हमें सामना करना होगा — एक चुनौती नहीं, अनेक प्रकार की चुनौतियाँ हमें देखनी होंगी। उन चुनौतियों और आपदाओं से हमें बचाने का एक ही सूत्र है त्रिकाल संध्या — ब्रह्म मुहूर्त में, मध्याह्न संध्या में, सायं संध्या में; तीनों संध्याओं में उपासना करनी चाहिए। इसमें पाँच-छह मिनट लगते हैं। भागवत पाठ का एक अध्याय, (दोपहर) 3:45 से मध्यरात्रि के बीच किसी भी समय; और शाकाहारी भोजन — ये हमें सत्ययुग के मानव बनाएँगे। देखिए: जब मछुआरे तालाब में जाल डालते हैं, तो कुछ मछलियाँ उसके भीतर आ जाती हैं; उनमें से कुछ मछलियाँ प्रयत्न और संघर्ष करके उससे बाहर निकल जाती हैं — वे जीवन जीत लेती हैं। जो भीतर रह जाती हैं वे बद्ध जीव बन जाती हैं। और कुछ मछलियाँ जल के बिल्कुल तल में रहती हैं, जो किसी जाल में कभी नहीं आतीं। इन्हें कहते हैं बद्ध जीव, मुक्त जीव और कारक जीव। तो बद्ध जीव मत बनिए। बद्ध जीव बनकर आप अपना कल्याण नहीं करेंगे। कम से कम अपना कल्याण तो कीजिए। आपने जीवन भर सारे संसार का कल्याण किया — एक बार अपना कल्याण कीजिए; और अपने कल्याण के लिए सबसे बड़ी परंपरा है त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ, माधव का नाम — अपनी आत्मा का कल्याण कीजिए। कारक जीव बनिए, मुक्त जीव बनिए, बद्ध जीव मत बनिए। मानव जीवन भी ऐसा ही है — 'संसार जाल रूप, मीन रूप मानवा' — यह संसार माया का जाल है; हमें मछली की तरह उसमें नहीं फँसना चाहिए। आध्यात्मिक सिद्धांत को समझकर हम अपना कल्याण और अपना उद्धार भी कर सकते हैं। इसलिए भविष्य मालिका ग्रंथ में जो लिखा है वह अवश्य होगा। जल प्रलय होगा, भूकंप होंगे, सूखा पड़ेगा, रोग आएँगे, और अकाल मृत्यु, सड़क दुर्घटना जैसी बड़ी समस्याएँ आएँगी। इन दिनों हम देख रहे हैं कि नेटवर्क बार-बार फेल हो रहा है; नेटवर्क व्यवस्था में जो मशीन काम कर रही थी वह काम नहीं कर रही। और एक दिन आएगा जब आपको पूर्ण ठप हो जाने का समाचार भी मिलेगा — परंतु वह समय अभी नहीं है; अभी कुछ समय है। तो यह प्रमाण है कि यह संसार एक परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है, जिसमें आध्यात्मिक शक्ति ही हमारी रक्षा कर सकती है। तो भक्तों और सज्जनों से मेरा निवेदन है: त्रिकाल संध्या कीजिए। यह समय अच्छा नहीं है। भागवत पढ़िए। किसी से अधिक विचार-विमर्श मत कीजिए, किसी से अधिक वाद-विवाद मत कीजिए। आप अपने परिवार और अपने घर में जितना समय बिताएँ, वह अच्छा है। और तीनों समय की संध्या का पालन कीजिए। इसी में मानव सभ्यता का कल्याण है। एक ग्रंथ है जिसमें कल्याण लिखा है, उद्धार लिखा है, और उसके साथ मनुष्य पर आने वाली आपदाएँ भी लिखी हैं। तो आगे समस्त विश्व में, प्रत्येक देश में पंच-तत्त्व का यह विनाशकारी प्रलय होगा, और इसके लिए हमें सावधानी रखनी चाहिए — और सावधानी है त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ, और माधव नाम का निरंतर जप। सभी का धन्यवाद। जय जगन्नाथ, जय श्री माधव। मैं अपने विचार यहीं रखता हूँ और चार-पाँच प्रश्नों के उत्तर दे सकता हूँ। अभी मैं राजस्थान में भागवत कथा के लिए हूँ — दो कथाएँ हैं — और आज भी कथा से आया हूँ, इसलिए थोड़ी देर हो गई।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:00 · 27 जून 2026

प्रश्न 3302 अमेरिका से राठौर जी: मेरे जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आए, परंतु आपके त्रिसंध्या, भागवत महापुराण और माधव नाम के मार्ग ने मुझे सही राह दिखाई। मेरी आयु 65 वर्ष है, मैं ध्यान और नाम-जप के मार्ग की भक्त हूँ, पर उचित समय पर नहीं कर पाती। मैं पंच-तत्त्व की ध्वनि/पीड़ा से परेशान हूँ और डेढ़ वर्ष से दुखी हूँ; मेरे पति ने धन के लिए कुछ मंत्र-तंत्र करवाया है। क्या कोई उपाय है?

उत्तर: देखिए, उचित समय पर त्रिकाल संध्या करने का प्रयत्न कीजिए। और जहाँ तक मंत्र-जंत्र की बात है — मेरे विचार से, त्रिकाल संध्या करने से मंत्र-जंत्र के तत्व बिल्कुल काम नहीं करते। यह सारे तंत्र और सारी नकारात्मकता को नष्ट कर सकती है। फिर भी, यदि आपके मन में ऐसा विचार आता है: आप दिन में तीन बार त्रिकाल संध्या करती हैं — सोते समय एक और कीजिए, अर्थात् दिन की तीन बार के अतिरिक्त एक अतिरिक्त कीजिए, और 108 बार अतिरिक्त माधव का नाम जपिए, और सीधे माधव से कहिए, 'प्रभु, मैं जो कहती हूँ वह अवश्य होना चाहिए; प्रभु, मेरी ओर निर्देशित नकारात्मकता को दूर कीजिए और मुझे अपनी शरण में लीजिए।' इतना कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:14:37 · 27 जून 2026

प्रश्न 3303 मेरी आयु 19 वर्ष है और मेरा कॉलेज शुरू होने वाला है। मैं संध्या करता हूँ, फिर भी मुझे पढ़ाई याद नहीं रहती। कृपया आशीर्वाद दीजिए कि मैं परीक्षा में अच्छा कर सकूँ — मेरा आत्मविश्वास कमजोर है।

उत्तर: ठीक है, यह बहुत अच्छा है। उचित समय पर त्रिकाल संध्या कीजिए। जब भी समय मिले, मन ही मन माधव का नाम जपिए, और आपका कल्याण होगा तथा आपकी परीक्षा भी अच्छी जाएगी।

► यह उत्तर सुनें · 00:16:23 · 27 जून 2026

प्रश्न 3304 ऋचा माधवी: आपके चरणों में प्रणाम। क्या भागवत के माध्यम से इस संसार में भक्त आएँगे? कृपया बताइए।

उत्तर: उनका प्रश्न यह है कि क्या भक्तों के माध्यम से और भक्त उस पवित्र धारा में आएँगे। त्रिसंध्या, भागवत महापुराण और भविष्य ग्रंथ — यह ग्रंथ भक्तों के एकत्र होने के लिए रचा गया था; यह भक्तों को दिशा दिखाने के लिए रचा गया था। और यही समय आएगा जब घर-घर में भागवत होगी, घर-घर में त्रिकाल संध्या होगी, घर-घर में माधव का नाम होगा। और आज के भक्त, ये ही भक्त, इसका प्रचार करेंगे और इसे आगे ले जाएँगे। भागवत पुराण एक महान सिद्धांत है, जो भगवान का ही दूसरा नाम है — श्रीमद् भागवत — और इसमें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य प्राप्त होता है। मनुष्य कितना भी गलत क्यों न हो, इसी ग्रंथ को पढ़कर वह संत बन जाता है। भक्तों का उद्धार होता है। यही माध्यम है। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:17:07 · 27 जून 2026

प्रश्न 3305 यश कुमार (एक विद्यार्थी): पिछले वर्ष एक पॉडकास्ट में आपने कहा था कि आप ओड़िया भागवत का हिंदी अनुवाद कर रहे हैं। क्या वह कार्य चल रहा है? हम प्रतीक्षा कर रहे हैं — वह कब आएगा?

उत्तर: देखिए, हम उस भागवत महापुराण पर कार्य कर रहे हैं। यह काफी विस्तृत है, इसलिए थोड़ा समय लगेगा। हम अगली जनवरी तक इसे पूरा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। जब जगन्नाथ जी की कृपा प्राप्त होगी, तब यह हो सकेगा। इस भागवत का नाम होगा श्री जगन्नाथ भागवत महा(पुराण)। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:18:32 · 27 जून 2026

प्रश्न 3306 यश कुमार जी: मैं 2026 से त्रिकाल संध्या कर रहा हूँ। मैं विद्यार्थी हूँ — कभी-कभी बीच में मेरी त्रिकाल संध्या, विशेषकर ब्रह्म मुहूर्त वाली, छूट जाती है। क्या फिर भी मैं सत्ययुग में जा सकूँगा? कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: मेरे विचार से, जो भी त्रिकाल संध्या करता है — चाहे समय छूट जाए या समय में देर हो जाए — समय के साथ वह निश्चित और स्थिर हो जाएगी; वह ठीक हो जाएगी। और जो भी भक्त त्रिकाल संध्या करता है वह सत्ययुग में जाएगा। परंतु इसे छोड़ना नहीं चाहिए, और पूर्ण श्रद्धा के साथ भगवान कल्कि की शरण में रहना चाहिए। और जो परंपरा है — त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ — उसे बंद नहीं करना चाहिए। इसके साथ आप सत्ययुग में जा सकते हैं। आप बिल्कुल जा सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:19:19 · 27 जून 2026

प्रश्न 3307 भरत माली, सिरोही से: मैं आपकी कथा में आता हूँ। मैं सुधर्म महासंघ से जुड़ना चाहता हूँ। मेरी बड़ी इच्छा है कि भागवत कथा करवाऊँ — कृपया व्यवस्था के विषय में मार्गदर्शन दीजिए। साथ ही, घर में कोई काम नहीं बनता; कोई कार्य ठीक से तय नहीं होता, कोई काम सही ढंग से पूरा नहीं होता। हम भागवत महापुराण कथा करवाना चाहते हैं।

उत्तर: बहुत अच्छा, आपकी ऐसी इच्छा है। जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं वे स्वतः ही सुधर्म महासंघ से जुड़ जाते हैं — किसी को उन्हें जोड़ना नहीं पड़ता। हाँ, हमारा अपना भक्त मंडल तो है, परंतु जो त्रिकाल संध्या और भागवत पाठ करते हैं वे स्वतः सुधर्म महासंघ से जुड़ जाते हैं। जैसा भविष्य मालिका में लिखा है, भगवान के भक्तों के संगठन का नाम सुधर्म महासंघ होगा। और मेरे विचार से, यदि आप त्रिकाल संध्या करते हैं और भागवत पढ़ते हैं, तो आप उस संस्था से पहले ही जुड़ चुके हैं, इसलिए इसकी चिंता मत कीजिए। अभी मैं सिरोही में कथा कर रहा हूँ; सिरोही के बाद मैं सुमेरपुर में कथा करूँगा। यदि आप मुझसे मिलना चाहें, तो कथा में आकर मिल सकते हैं। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:20:04 · 27 जून 2026

प्रश्न 3308 (अंतिम प्रश्न) कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि हम अपने पापों, वासनाओं और इच्छाओं के कारण इस जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसे हैं। परंतु जब सृष्टि बनी, तब किस वासना से सबका पहला जन्म हुआ? क्योंकि उस समय न हम थे न हमारी वासना। पहला जन्म क्यों?

उत्तर: देखिए — देवता भी इंद्रियों के प्रभाव में हैं; माया उन्हें भी प्रभावित करती है। ब्रह्मलोक में भी माया और इंद्रियों का प्रभाव विद्यमान है। इसलिए माया ने ही इस संसार की रचना की और वह मनुष्य के भीतर भी समाहित थी। एक भागवत-माया भी है — जो लोग भगवान के प्रति समर्पित होते हैं, वह भी एक माया है, वह भी एक आसक्ति है, वह भी मनुष्य की इच्छा-शक्ति है, जिसे हम 'भक्ति का इंद्र' (भक्ति-आसक्ति)

भी कह सकते हैं। तो माया प्रत्येक मनुष्य में और देवताओं में भी है। और माया केवल उन्हीं लोगों की टूटती है जो भागवत महापुराण पढ़ते हैं; उन्हें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य प्राप्त होता है। वैराग्य के कारण सांसारिक माया, मोह और बंधन उस व्यक्ति को नहीं निगलते, और ऐसे व्यक्ति शुद्ध, स्वच्छ और सत्त्वगुण आधारित मानव बन जाते हैं; वे लोग परमार्थ की ओर मुड़ जाते हैं। इसलिए माया को तोड़ने के लिए, और भागवत-माया के लिए, माधव की पुस्तक, भगवान की पुस्तक, भागवत महापुराण पढ़िए। यह आपको सांसारिक माया से भागवत-माया की ओर ले जाएगी, जिससे जीवन का महान कल्याण होगा। सभी का धन्यवाद। जय जगन्नाथ, जय श्री माधव। अनंत कोटि ब्रह्मांडनायक महाविष्णु के श्रीचरणों में यह तुच्छ सेवक अनंत कोटि प्रणाम अर्पित करता है; श्री महालक्ष्मी के श्रीचरणों में अनंत कोटि प्रणाम; देवदेव ब्रह्मदेव, माता भवानी एवं प्रभु शंकर भगवान के श्रीचरणों में अनंत कोटि प्रणाम। आज की चर्चा हम यहीं रखते हैं: आगे विश्व में अनेक स्थानों पर और विभिन्न देशों में भूकंप आएँगे, जल प्रलय होगा, सूखा भी पड़ेगा। परंतु हम त्रिकाल संध्या करके सत्ययुग में जाने का संकल्प लेंगे — जिस संकल्प को लेकर हमें आगे सत्ययुग का मानव बनने के लिए भगवान की कृपा प्राप्त होगी। मेरी कामना है कि आप सब सत्ययुग में जाएँ, आपके परिवार का कल्याण हो, आप धन्य हों। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:21:54 · 27 जून 2026

सत्र 194 · प्रश्न 3309–3314

L210: पवित्र स्नान पूर्णिमा महोत्सव | Special Google Meet | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 30 जून 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3309 (प्रारंभिक प्रवचन) भगवान जगन्नाथ की स्नान पूर्णिमा (पवित्र स्नान पूर्णिमा पर्व) का महत्व, उनकी तीन प्रमुख यात्राएँ, और इस वर्ष देखा गया संकेत

उत्तर: जय श्री माधव, जय जगन्नाथ। भारत के और विश्व के समस्त सनातन धर्मी सज्जनों एवं संतों को मेरा सादर प्रणाम। अनंत कोटि ब्रह्मांडनायक भगवान विष्णु के चरणों में यह धर्मदास अनंत कोटि बार प्रणाम करता है; देवदेव ब्रह्मदेव, माता भवानी एवं प्रभु शंकर भगवान के चरणों में अनंत कोटि बार प्रणाम। आज हमारे सनातन धर्म के लिए सबसे महान, सबसे पवित्र दिन है। आज ज्येष्ठ पूर्णिमा है, वह दिन जिस दिन समस्त ब्रह्मांड में विख्यात भगवान जगन्नाथ का स्नान उत्सव होता है। जगन्नाथ की तीन प्रमुख यात्राएँ हैं। मंच (डोल) मंडप पर प्रभु की पूजा धूलि गोविंद के रूप में भगवान कृष्ण के रूप में होती है; स्नान मंडप पर श्री जगन्नाथ महाप्रभु का स्नान उत्सव होता है; और तीसरी है आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को, सर्वलोक-वंदित रथ यात्रा। ये तीन जगन्नाथ महाप्रभु की मुख्य यात्राएँ हैं। इनके अतिरिक्त जगन्नाथ जी के बारह महीनों में बारह उत्सव होते हैं — मंच, स्नान, रथबड़ा, शयन, पार्श्व-परिवर्तन, उत्थापन, पारण, पूजा, दमनक-विधि, इत्यादि, बारह यात्राएँ। मंदिर की स्थापना के समय भगवान ब्रह्मदेव ब्रह्मलोक से राजा इंद्रद्युम्न के साथ आए और श्री जगन्नाथ महाप्रभु की प्राण-प्रतिष्ठा तथा मंदिर की प्रतिष्ठा की। उस समय, जब ब्रह्मदेव प्रभु के सारे विधान पूर्ण करके, द्वार बंद करके बाहर आ रहे थे, तब जगन्नाथ महाप्रभु ने स्वयं ब्रह्मदेव से कहा: 'ब्रह्मदेव, आप इतनी दूर ब्रह्मलोक से आए और इतना बड़ा कार्य किया — आप क्या चाहते हैं?' ब्रह्मदेव ने कहा, 'प्रभु, मुझे क्या चाहिए? आप ही प्रभु हैं। आपकी कृपा से मैं ब्रह्मा हूँ, आपकी कृपा से शंकर शंकर हैं, आपकी कृपा से इंद्र इंद्र हैं; आप चौदहों लोकों के, समस्त ब्रह्मांड के ठाकुर हैं।' तब प्रभु ने कहा: 'बारह महीनों में बारह यात्राएँ होंगी, और उनमें तीन प्रमुख होंगी — दो मंडपों पर, मंच पर धूलि गोविंद, स्नान मंडप पर स्नान (जहाँ प्रभु गजानन वेश, हाथी के मुख वाला रूप धारण करते हैं और स्नान उत्सव होता है), और रथ यात्रा।' तो आज अत्यंत पवित्र दिन है। यह रथ यात्रा और स्नान यात्रा समस्त ब्रह्मांड के लिए सबसे पवित्र दिन हैं। जगन्नाथ महाप्रभु पहले स्नान करते हैं; उसके बाद पृथ्वी पर, समस्त विश्व की खेती, इंद्र देव की सृष्टि (वर्षा), और मनुष्यों तथा समस्त जीवों के लिए सारी उपज तैयार होती है। पहले जगन्नाथ महाप्रभु स्नान करते हैं; वह पवित्र जल पृथ्वी पर गिरता है, और धरती माता उससे प्रसन्न और पवित्र होकर समस्त ब्रह्मांड के लिए अन्न और धान्य उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार जगन्नाथ महाप्रभु की रथ यात्रा और स्नान यात्रा अत्यंत पुण्यमयी और पवित्र हैं। इसके बाद प्रभु की रथ यात्रा भी होगी। हमारे लिए, सनातन धर्म के लिए, यह सबसे बड़ा दिन है। भगवान जगन्नाथ अपने स्थूल शरीर में रत्न वेदी पर, रत्न सिंहासन पर, चतुर्धा विग्रह (चार देव-विग्रह) के रूप में विराजते हैं। वर्ष में दो बार जगन्नाथ जी समस्त ब्रह्मांड के भक्तों को दर्शन देने के लिए बाहर निकलते हैं — नीलाचल से, नीलाद्रि गुफा से, जगन्नाथ महाप्रभु दो बार बाहर आते हैं: एक बार स्नान पूर्णिमा पर और एक बार रथ यात्रा पर। आज के दिन सभी जाति, धर्म और वर्ण के लोग बिना भेदभाव के जगन्नाथ महाप्रभु का दर्शन करते हैं, और रथ यात्रा में भी सभी जाति, मत और वर्ग के लोग श्री जगन्नाथ महाप्रभु का स्पर्श भी करते हैं और दर्शन भी। तो ये दो समस्त ब्रह्मांड के लिए प्रमुख यात्राएँ हैं। आज चतुर्धा विग्रह को सोने के कुएँ के 108 घड़ों के जल से स्नान कराया जाता है, जिसमें चंदन, कस्तूरी और विविध दिव्य सुगंध मिलाई जाती हैं, और जिसे मंत्रों से तथा समस्त तीर्थों के आवाहित जलों से अभिमंत्रित किया जाता है — इस प्रकार श्री जगन्नाथ महाप्रभु की स्नान यात्रा संपन्न होती है। इसके बाद प्रभु अनवसर में चले जाते हैं — पार्श्व-परिवर्तन, शयन, उत्थापन। अनवसर घर में प्रभु अपनी मनुष्य-सदृश लीला करते हैं और ब्रह्मांड को प्रमाणित करते हैं: 'मैं भी मनुष्य हूँ; इतना स्नान करने के कारण मुझे ज्वर हो गया है।' इस मानव लीला के माध्यम से वे मानव जाति को दिखाते हैं: यदि मैं मनुष्य बनकर आऊँ, यदि मैं पृथ्वी पर मानव लीला करूँ — यद्यपि मैं दिव्य ब्रह्म-मूर्ति, सच्चिदानंद, निराकार, निरंजन, निर्विकल्प, आदि विष्णु जगन्नाथ, ब्रह्मांड-ब्रह्मांड के ठाकुर हूँ — फिर भी उन्हें भी ज्वर होता है, और वे भी औषधि लेते हैं। विविध आयुर्वेदिक औषधियाँ प्रभु लेते हैं; यह जगन्नाथ की परंपरा है, कि प्रभु कुछ दिन शयन कक्ष में रहते हैं। उसके

बाद रथ यात्रा होती है। तो जगन्नाथ महाप्रभु समस्त ब्रह्मांड और मानव सभ्यता को दिखाते हैं कि सुख-दुख और मानव धर्म का आचरण सबका अधिकार है, और सबके लिए उन्हें भोगने का नियम है; उसी नियम के आधार पर प्रभु भी सारे नियमों का पालन करते हैं। अब, जगन्नाथ महाप्रभु की आज की स्नान पूर्णिमा के विषय में — आज एक छोटी अशुभ घटना घटी, जो मेरे विचार से मानव सभ्यता और विश्व के लिए अच्छी नहीं है। इस दिन प्रभु प्रातःकाल स्नान मंडप पर आते हैं; उस शोभायात्रा को 'धाड़ी पहंडी' कहते हैं। जगन्नाथ और बलभद्र धाड़ी पहंडी में आते हैं, और सुभद्रा मैया तथा सुदर्शन महाप्रभु शून्य पहंडी में आते हैं; और लौटते समय प्रभु गोटी पहंडी में जाते हैं। तो आज जब जगन्नाथ महाप्रभु स्नान मंडप पर आए — पहले आरती की जाती है, उसके बाद षोडशोपचार पूजा, और उसके बाद शास्त्रीय विधि से प्रभु का महास्नान उत्सव होता है। परंतु आज, जब स्नान सिंहासन पर जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के सम्मुख आरती की जा रही थी, कुछ समय बाद आरती (दीप) बुझ गई। आरती का बुझ जाना — ब्रह्मांड के स्वामी के लिए, कोटि ब्रह्मांडों के ठाकुर के लिए — उनकी आरती का बुझ जाना विश्व के लिए कुछ अच्छा संकेत नहीं देता। इसलिए आज एक स्मरणीय दिन है। संभवतः प्रभु धर्म-संस्थापना का संकेत दे रहे हैं; संभवतः प्रभु मानव सभ्यता को परिवर्तन का समाचार दे रहे हैं; संभवतः प्रभु समस्त मानव सभ्यता से कहना चाहते हैं: 'तुम लोग भी स्वयं को सुधारो, और धर्म की ओर आओ। धर्म की ओर आने से संसार में तुम्हारा कल्याण होगा।' क्योंकि हमारे प्रभु हमारे पिता हैं, ब्रह्मांड के पिता, देवताओं के पिता, कोटि ब्रह्मांडों के ठाकुर, समस्त ब्रह्मांडों के ठाकुर। तो उनके क्षेत्र में दिया गया संकेत मानव सभ्यता के लिए है कि वह थोड़ा सुधार करे, इस पर विचार करे, आगे आने वाले समय पर विचार करके फिर कार्य करे। धर्म की ओर आइए, पुण्य की ओर आइए, जीव-हत्या मत कीजिए। प्रतिदिन त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ, घर-घर में माधव का नाम, घर-घर में जगन्नाथ का नाम, घर-घर में भागवत कथा, घर-घर में त्रिकाल संध्या — यही सबसे बड़े आपदा-काल में मानव सभ्यता की रक्षा कर सकता है; यह मेरा विचार है। तो आज उपस्थित सभी भक्तों, सभी संतों, सभी सज्जनों से मेरा यही विचार है: भगवान बार-बार संकेत देते हैं, और हमें इन संकेतों को समझना चाहिए। यदि हम इन्हें समझें, तो हमारा कल्याण होगा। प्रभु मानव सभ्यता के कल्याण के लिए संकेत देते हैं, और मानव सभ्यता इन संकेतों को समझ सके इसलिए इनका प्रचार भी किया जाता है। यह भविष्य मालिका पुराण में बहुत पहले लिखा जा चुका है: कि जब नीति-कांत (दैनिक अनुष्ठानों), सेवा, पूजा और भोग में व्यवधान/अनियमितता होगी, तब संसार में सत्ययुग आएगा, और संसार में महान परिवर्तन होगा — पंचक का प्रलय और समस्त विश्व में एक महान आध्यात्मिक परिवर्तन। तो आज मैं यह विचार आपके सम्मुख रखता हूँ। समय भी अधिक हो गया है; यहाँ आते-आते मैं थक गया हूँ। मैं चार प्रश्न लूँगा और फिर अपने विचार रखूँगा। सभी का धन्यवाद। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:00:21 · 30 जून 2026

प्रश्न 3310 ओडिशा से रेशमा जी पूछती हैं: द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के साथ महालक्ष्मी जी का अवतार किस रूप में माना जाता है?

उत्तर: द्वापर युग में, यदि हम माता महालक्ष्मी के स्वरूप का शास्त्रीय मत देखें — रुक्मिणी जी, राधा जी — मैं एक श्लोक उद्धृत करता हूँ: 'या च ब्रह्मजा मूलप्रकृति-ईश्वरी, नारायणी इति विख्याता, विष्णुमाया सनातनी, महालक्ष्मी स्वरूपा च, वेदमाता गायत्री, राधा, वसुंधरा, गंगा — तासां स्वामी माधवः।' यह रचना गीत गोविंद में आती है। इसका अर्थ है कि राधा रानी महालक्ष्मी-स्वरूपा थीं, और माता राधा रानी प्रकृति-स्वरूपा, योगमाया भी हैं। तो आपके प्रश्न के अनुसार, राधा रानी स्वयं महालक्ष्मी हैं जो भगवान कृष्ण के साथ अवतरित हुईं, और उन्हीं को शास्त्रों के अनुसार हम महालक्ष्मी का स्वरूप मानते हैं। जय जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:12:24 · 30 जून 2026

प्रश्न 3311 ऋचा जी पूछती हैं: हम सनातन धर्म से जुड़े हुए हैं, पर मेरी सास न तो पूजा करती हैं और न ही किसी देवी-देवता को मानती हैं — बल्कि कमरा बंद करके नमाज़ पढ़ती हैं। मेरे ससुर और पति भी कोई पूजा-पाठ नहीं करते। कृपया इस विषय में हमें मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, शास्त्रों में एक बात लिखी है — 'महाजनो येन गतः' — यदि हमारे घर के बड़े-बुज़ुर्ग, या वरिष्ठ लोग, या अभिभावक कुछ कहते हैं, तो हमें उनकी बातों पर निर्णय करने नहीं बैठना चाहिए। वे जो भी करें, हमारे सनातन धर्म के अनुसार हमें अपने बड़ों और वरिष्ठों को सम्मान देना ही है; सनातन धर्म यही कहता है। वे अपनी इच्छा से जो चाहें करें; आप अपना कर्म कीजिए। उनके कर्म में बाधा डालकर आपको कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए अपना कर्म स्वयं करना चाहिए। वे जो भी सोचते हैं, उनकी राय के विरुद्ध अपनी राय मत रखिए — तब घर में शांति रहेगी, और धर्म यह भी कहता है: लोग जिस भी मार्ग पर चलते हैं, वे अपने प्रारब्ध (पूर्वसंचित) कर्म के अनुसार चलते हैं; लाखों प्रयत्न करने पर भी हम उन्हें बदल नहीं पाएँगे। इसलिए 'मौन ही सर्वोत्तम नीति है' — उससे दूर रहिए, उनके विचारों पर बहस मत कीजिए; घर-गृहस्थी के व्यवहार में उनके साथ प्रेम से निभाइए और अपना काम तथा अपना धर्म कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:14:13 · 30 जून 2026

प्रश्न 3312 प्रवेश कांत श्रीवास्तव जी पूछते हैं: क्या मालिका में काकभुशुंडि जी और भगवान कल्कि के बीच किसी संवाद का वर्णन है? यदि हाँ, तो कृपया उस पर मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए, काकभुशुंडि जी अमर हैं; वे आज भी सुमेरु पर्वत पर हैं, और रामचरितमानस का गान भी करते हैं। भगवान की कृपा और शंकर भगवान के आशीर्वाद से वे अमर हुए। परंतु भगवान कल्कि और भुशुंडि जी के बीच संवाद या चर्चा — ऐसा कुछ मैंने आज तक भविष्य मालिका में नहीं पढ़ा। परंतु जब सत्य युग आएगा और भगवान कल्कि प्रकट होंगे, तब मेरे विचार से काकभुशुंडि जी — वे बड़े भक्त हैं — वे आ सकते हैं; पर शास्त्रीय विधि से ऐसा मैंने नहीं पढ़ा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:16:00 · 30 जून 2026

प्रश्न 3313 महाराष्ट्र से हेमंत लिछड़े पूछते हैं: मैं पैरों के दर्द से बहुत परेशान हूँ। मेरे दोनों पैरों के ऑपरेशन हो चुके हैं; तीन साल से मैं पतंजलि का इलाज ले रहा हूँ, पर दर्द से कोई राहत नहीं है — चलते समय, सीढ़ियाँ चढ़ते समय, ऑफिस में असहनीय दर्द होता है। मैं संध्या (त्रिकाल संध्या) करता हूँ पर पैरों की समस्या नहीं जाती।

उत्तर: देखिए, आपके शारीरिक कष्ट के लिए हमें भी दुःख है। पर देखिए, आपके ऑपरेशन भी हो चुके हैं; उससे पहले मुझसे कोई परामर्श नहीं लिया गया। फिर भी कोई बात नहीं। आप त्रिकाल संध्या भी करते हैं — करते रहिए। आपके पैर की बीमारी के इलाज के लिए मैं आपको एक सलाह देता हूँ: अपनी दवा लीजिए, और जिस डॉक्टर से आपका संपर्क है, जिन्होंने ऑपरेशन किया है, उनके निर्देशों का पालन कीजिए। परंतु हर समय, सहस्रनाम का मंत्र — 'औषधं जाह्नवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः' (विष्णु सहस्रनाम का श्लोक, 'औषधि गंगाजल है, वैद्य विष्णु हैं') — उस मंत्र का मन में नियमित रूप से लंबे समय तक जप कीजिए। देखिए इससे रोग ठीक होता है या नहीं, फिर मुझे बताइए क्या हुआ; यदि नहीं होता, तो हम कोई दूसरा उपाय सोचेंगे।

► यह उत्तर सुनें · 00:17:03 · 30 जून 2026

प्रश्न 3314 (समापन संदेश) पंडित जी की सबके लिए अंतिम अपील

उत्तर: हम सबका धन्यवाद करते हैं। अनंत कोटि ब्रह्मांड के नायक भगवान महाविष्णु के चरणों में यह तुच्छ सेवक प्रणाम करता है; देव-देव ब्रह्मदेव, माता भवानी और प्रभु शंकर भगवान के चरणों में अनंत प्रणाम। आज के सत्संग में उपस्थित सभी सज्जन, पवित्र मानवों को मैं प्रणाम करता हूँ, और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि सबका कल्याण हो। और मैं सबसे निवेदन करता हूँ: त्रिकाल संध्या कीजिए। कोई कुछ कहे या न कहे, उसका बुरा मत मानिए। समय अच्छा नहीं है। आगे बीमारी, समस्याएँ, रोग — बीमारी के साथ-साथ सब प्रकार की समस्याएँ हम पर टूट पड़ेंगी। यदि हम अभी से धर्म को पकड़ लें, तो हमें कुछ नहीं होगा। यदि हम धर्म को नहीं पकड़ेंगे, तो आगे बढ़ना कठिन हो जाएगा। मैं यह 40 वर्षों से कह रहा हूँ; आज भी कह रहा हूँ। आज भी आप सब संसार में देख रहे हैं — सारे विश्व में बड़ी-बड़ी आपदाएँ आ रही हैं; लोग देख रहे हैं, यह हमारी आँखों के सामने हो रहा है। फिर भी भगवान ने भारत के लोगों को, भारत के भक्तों को अभी समय दिया है। परिवर्तन के लिए समय हमारे हाथ में है। इस समय को जीतिए और त्रिकाल संध्या कीजिए। त्रिकाल संध्या आपको सब समस्याओं से मुक्त कर सकती है — आने वाली, वर्तमान, या पहले की सब; समस्या चाहे जो भी हो, कोर्ट-कचहरी के मामलों से लेकर सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक तक — बस त्रिकाल संध्या कीजिए, तीन बार, पंद्रह मिनट, और अपने जीवन को सुख और समृद्धि से भर दीजिए। एक अनुशासित मानव परंपरा और आध्यात्मिक परंपरा ही हमें सुख दे सकती है — त्रिकाल संध्या वही सिद्धांत है। यदि हम आज नहीं करेंगे, तो एक समय आएगा जब हमें करना ही पड़ेगा; शायद उस समय यह मंत्र आपके लिए काम न करे, क्योंकि शास्त्र कहते हैं कि इसे पहले से करो। पहले से कीजिए, और इसी में आपका कल्याण है। सबका धन्यवाद। जय जय जगन्नाथ, सबको प्रणाम।

► यह उत्तर सुनें · 00:18:33 · 30 जून 2026

सत्र 195 · प्रश्न 3315–3319

L211: क्या होगा भारत का भविष्य ? Bhavishya Malika Puran | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 26 जुलाई 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3315 जय श्री माधव पंडित जी। मैं हरिद्वार से प्रदीप हूँ, बैंक में कार्यरत हूँ। एक वर्ष से मैं सच्चाई से त्रिसंध्या का जीवन जी रहा हूँ, प्रतिदिन भागवत पढ़ता हूँ, भगवान के शरणागत हूँ — फिर भी अशांत रहता हूँ। मुझ पर किसी तांत्रिक की क्रिया है, जिसके कारण मेरे माता-पिता से भी संबंध अच्छे नहीं हैं — आपने आज गूगल मीट में जो कहा कि माता-पिता और पुत्र के बीच संबंध अच्छे नहीं रहेंगे, वह सत्य है। मेरी आयु 34 वर्ष है और अभी तक विवाह नहीं हुआ; इस कारण भी मन अशांत रहता है। यह दूसरी बार है जब मैं गूगल मीट में यह प्रश्न पूछ रहा हूँ — कृपया आज इसे लीजिए।

उत्तर: बहुत-बहुत धन्यवाद, प्रदीप। आप त्रिकाल संध्या करते हैं, भागवत पढ़ते हैं और माधव नाम का जप करते हैं — यह बड़े आनंद की बात है। परंतु देखिए बेटा, इस समय हर परिवार में, किसी न किसी कारण से, पिता और पुत्र के बीच समस्या उत्पन्न होती है। पर कोई बात नहीं। यदि आप चाहते हैं कि आपका विवाह हो, तो इस नंबर पर बात कीजिए (जो व्हाट्सऐप नंबर साझा किया गया है); वे आपकी मुझसे बात कराएँगे। विवाह हो जाएगा। उसके लिए मैं आपको भगवान का एक छोटा-सा मार्ग दिखाऊँगा — उसका पालन कीजिए, और विवाह हो जाएगा, और नौकरी के मामले, पारिवारिक समस्याएँ तथा मन की अशांति भी दूर होगी। आज से, प्रतिदिन सोने से पहले, एकादश स्कंध (भागवत का) का अध्ययन करते जाइए, और जब भी समय मिले, मन में माधव का जप कीजिए। तब संसार आपको छोटा लगेगा, आपका कार्य बहुत विस्तृत हो जाएगा, आपका मन अशांत नहीं रहेगा, और शांति आएगी। फिर मुझे बताइए आगे क्या होता है। बस इतना ही पालन कीजिए। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:41:10 · 26 जुलाई 2026

प्रश्न 3316 जय जगन्नाथ, मैं नेहा पांडेय हूँ, आपको मेरा प्रणाम। मेरा प्रश्न मेरे लिए और उन सभी स्कूल-कॉलेज के बच्चों के लिए है जो मेरे साथ हैं: हम एक वर्ष से अधिक समय से त्रिसंध्या कर रहे हैं, पर जब कॉलेज शुरू होता है, तो सुबह और शाम की संध्या हम कर लेते हैं, और दोपहर में कॉलेज में होने के कारण हम मन ही मन जप तो कर लेते हैं पर जयघोष नहीं कर पाते। तो क्या हमें उस संध्या की आध्यात्मिक उन्नति और लाभ मिलेगा या नहीं?

उत्तर: बहुत अच्छा, बेटी। आपका प्रयास और आपका कर्म बहुत पवित्र है। देखिए बेटी — त्रिकाल संध्या को मन में जप के रूप में कीजिए, यात्रा करते हुए कीजिए, आते-जाते कीजिए, चलते-फिरते कीजिए। इन सबमें आपको पूरा फल, संपूर्ण फल मिलेगा; इसमें कोई कमी नहीं है। और रही जयकार की बात — हाथ ऊपर मत उठाइए, पर मन में जयकार कीजिए। मेरे विचार से आपको त्रिकाल संध्या का पूरा फल मिलेगा, और मैं यह गारंटी देता हूँ: जब भी कोई विपत्ति आएगी, माधव आपकी रक्षा करेंगे। आप स्वयं अनुभव करेंगी — कि त्रिकाल संध्या मेरे साथ थी और आज मुझे उसका फल मिला है। हर मुसीबत में, हर चुनौती में, हर समस्या में, जीवन में जिस मार्ग पर चलते हैं, यह त्रिकाल संध्या संजीवनी है और बड़ी शक्ति के साथ आपके साथ चलती है, और इसमें पुण्य का फल प्राप्त होता है। बैठकर कीजिए, चलते-फिरते कीजिए। बस समय पर ध्यान रखिए — स्कूल के समय में, यदि समय में देर हो जाए या इधर-उधर खिसक जाए, तो ठीक है; जब आप खाली हों, तब अलग समय पर कीजिए। आनंद में रहिए; जगन्नाथ आपको आशीर्वाद दें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:43:20 · 26 जुलाई 2026

प्रश्न 3317 पंडित जी, मैं अभिषेक दुबे हूँ। त्रिसंध्या में कुछ मंत्र हैं, जैसे ॐ से आरंभ होने वाले, और गायत्री मंत्र। बहुत से साधु, संत और जगद्गुरु की उपाधि धारण करने वाले इनका निषेध करते हैं — वे कहते हैं कि बिना दीक्षा लिए और बिना गुरु बनाए इनका उच्चारण या अनुष्ठान नहीं करना चाहिए। आप हम सबको सही मार्ग दिखा रहे हैं, और हम सब गृहस्थ हैं — तो कृपया हमें मार्गदर्शन दीजिए।

उत्तर: देखिए — प्रह्लाद ने किसी को गुरु नहीं बनाया। ध्रुव ने किसी को गुरु नहीं बनाया। शबरी ने किसी को गुरु नहीं बनाया। फिर भी उन्होंने भगवान को प्राप्त किया। प्रह्लाद ने इंद्र का पद प्राप्त किया; ध्रुव ध्रुव-चक्र में राजा बने; शबरी — भगवान ने उनके जूठे किए हुए बेर खाए, और उन्हें वैकुंठ ले गए। इस संसार में भगवान ही गुरु हैं, और जो मंत्र दिए गए हैं — ये मंत्र हम सबके लिए हैं। यदि हम भगवान विष्णु को अपना गुरु बनाएँ, या भगवान कृष्ण को, या शंकर भगवान को, या जगन्नाथ जी को, या हनुमान जी को — एक स्थान पर भगवान ने उद्धव से कहा, 'मन तोहर निज गुरु, उद्धव' — तुम्हारा अपना मन ही तुम्हारा गुरु है; यदि मन ने यह स्वीकार कर लिया कि भगवान मेरे गुरु हैं, तो भगवान गुरु हो गए। भागवत शास्त्र में लिखा है: जो 'मैं और मेरा' का त्याग करता है, जो संसार को स्वप्न के समान समझता है, जो पूर्ण समर्पण के साथ मुझे गुरु मानता है — मैं उसका गुरु बन जाता हूँ। तो इसमें अंतर क्या है? इसलिए: 'वन्दे भगवती देवी, श्री राम जगत गुरु; वासुदेव-सुत देव कृष्ण, वन्दे जगत गुरु' — जगन्नाथ गुरु हैं, कृष्ण गुरु हैं, शंकर भगवान गुरु हैं, भवानी-शंकर; 'वन्दे श्रद्धा-विश्वास-रूपेण... गुरुर् शंकर-रूपिणम्' — शास्त्र कहते हैं कि गुरु शंकर भगवान हैं। तो यदि हम भगवान को अपना गुरु बनाएँ, तो क्या यह गलत है? 'गुरुः शंकर-रूपिणम्' — शंकर भगवान ही गुरु हैं। मैं केवल वही कहता हूँ जो शास्त्र में लिखा है। यदि मन ने स्वीकार कर लिया कि भगवान मेरे गुरु हैं — तो बस भगवान को गुरु बनाइए और मंत्र का उच्चारण कीजिए। आगे भगवान विष्णु सबके गुरु बनेंगे; संसार में कोई परंपरा (संप्रदाय-परंपरा) नहीं रहेगी; सब देवी-देवता भगवान विष्णु की उपासना करेंगे; सत्य युग आएगा; सब लोग ब्रह्म-कर्म करेंगे, सब सद्गुणी बनेंगे, सब वेद और शास्त्रों का अध्ययन करेंगे। देखिए कितना बड़ा परिवर्तन आ रहा है — यह तो हम केवल एक छोटा-सा कदम आगे बढ़ा रहे हैं; बहुत कुछ अभी होना बाकी है। तो मैं वही कहता हूँ जो शास्त्र की स्वीकृति से लिखा है; उससे आगे मैं कोई कल्पना नहीं करता। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:45:31 · 26 जुलाई 2026

प्रश्न 3318 जय जगन्नाथ, मैं दक्षिण भारत से हूँ। प्राकृतिक आपदाएँ होने वाली हैं — पंचभूत का प्रलय और प्राकृतिक आपदाएँ धीरे-धीरे बढ़ रही हैं और सब देख सकते हैं; दूसरे मानें या न मानें, हम तो मानते हैं। पर 2029 के बाद के समय में हमें अन्न और जल कैसे मिलेगा — हम कैसे जीवित रहेंगे?

उत्तर: बहुत अच्छी बात। देखिए, सारे विश्व में प्राकृतिक आपदाएँ और अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। अन्न और जल की भी समस्या होगी। जल के लिए तो निश्चित रूप से समस्या होगी — जल की एक बूँद बड़ी समस्या बन जाएगी। इसलिए जो भक्त त्रिकाल संध्या, भागवत पाठ और माधव नाम करते हैं — उन्हीं भक्तों पर भगवान की कृपा होगी, और त्रिकाल संध्या के माध्यम से लोगों को दैवी कृपा भी प्राप्त होगी। जहाँ खेती के लिए समस्या है, जहाँ फसल के लिए वर्षा नहीं होती — वहाँ यदि उस गाँव के सब लोग मिलकर प्रतिदिन तीनों समय त्रिकाल संध्या करें, तो उस क्षेत्र में वर्षा होगी। त्रिकाल संध्या में ऐसे मंत्र हैं जिनसे हम प्रकृति और पंचभूत को भी रोक सकते हैं, तकनीक को रोक सकते हैं, आने वाली बीमारी को रोक सकते हैं, भूख-प्यास को रोक सकते हैं। इसे एक तपस्या की तरह समझिए। जैसा मैंने कहा — जिस समय वर्षा नहीं होती, जब सूखा पड़ता है, जब लोग कष्ट में होते हैं और बड़ी-बड़ी समस्याएँ आती हैं, यदि उस गाँव के सब लोग बैठकर हवन करें और त्रिकाल संध्या करें, तो वर्षा होगी। मैं उपाय पहले से भी बता देता हूँ। परंतु शाकाहारी होना चाहिए, भगवान विष्णु में श्रद्धा होनी चाहिए, और माधव नाम के प्रति पूर्ण समर्पण होना चाहिए। ऐसे साधनों से हम आगे की समस्याओं से पार पाएँगे और शांति में भी रहेंगे। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:48:54 · 26 जुलाई 2026

प्रश्न 3319 जय जगन्नाथ, मैं ओडिशा से कमल सामल हूँ। बहुत से लोग मालिका की बहुत सी अलग-अलग व्याख्याएँ देते हैं और हम सबको सुनते हैं, पर हमें आप पर पूर्ण विश्वास है, इसलिए यह प्रश्न आपके सामने रखते हैं: मालिका में लिखा है कि 'हीरा और पारा एक साथ आएँगे' (हीरा-पारा एक अत्र)। कृपया दया करके इसका सही अर्थ बताइए और हम सबका मार्गदर्शन कीजिए।

उत्तर: यह भविष्य मालिका में लिखा है: 'हीरा पारा मोरो ध्यान-कुड़ ठारे।' ध्यानकुड़ जगतसिंहपुर में एक स्थान है — पंचसखा का ध्यान-स्थल, जहाँ अर्ध बाबा का आश्रम है। 'हीरापारा' का अर्थ है हीराकुड, और 'पारा' का अर्थ है पारादीप — पारादीप बंदरगाह, जहाँ समुद्र है। हीराकुड विश्व का सबसे बड़ा जलाशय है, जल संरक्षण का भंडार। ऐसा समय आएगा जब शत्रु हीराकुड बाँध पर मिसाइलों से हमला करेंगे; वह बाँध टूटेगा, और उसी समय महानदी का तटबंध टूटेगा और त्रि-कोण भूमि (त्रिकोणीय भूमि) जलमग्न हो जाएगी। हीराकुड से पारादीप तक आप समुद्र और जल का प्रलय देखेंगे — एक ओर से बाँध का जल, दूसरी ओर से बाँध का जल धकेलता हुआ, समुद्र में प्रवेश करता हुआ; और समुद्र के जल को रहने के लिए स्थान नहीं मिलेगा, इसलिए समुद्र का जल उल्टा जाएगा। ऐसा समय आएगा, और हीराकुड तथा पारादीप का मिलन होगा। यह विश्वयुद्ध के समय होगा — विश्वयुद्ध के बीच में, या उसके कुछ दिनों बाद, ऐसी पूर्ण-युद्ध की स्थिति बन सकती है। 'ओडिशा नेता निज जगन्नाथ' — उस भूमि में, उस राज्य में जहाँ जगन्नाथ हैं, जहाँ बलभद्र हैं, सुभद्रा मैया, सुदर्शन, माँ मंगला, माँ शारदा देवी, माँ बिरजा देवी, माँ भगवती हैं — उस भूमि में भक्तों की रक्षा भी होगी, और समय के साथ परिवर्तन भी आएगा, और हीराकुड तथा पारादीप का मिलन भी होगा। वह समय आ रहा है। हाँ, यह भगवान की इच्छा से होगा, पर यह विश्वयुद्ध के बीच में आएगा। तो यह बहुत अच्छा प्रश्न है; मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:51:22 · 26 जुलाई 2026

सत्र 196 · प्रश्न 3320–3322

L212: 13 देशों का मिलन, NATO का विभाजन शुरू ! Bhavishya Malika Puran | Pt. Kashinath Mishra

दिनांक: 24 अगस्त 2026 · पूरा सत्र देखें ↗

प्रश्न 3320 (दक्षिण भारत से अलेख) कलियुग का अंत और नए युग का आरंभ बहुत निकट लगता है, और आपकी सारी बातें सत्य हो रही हैं। भगवान अपने भक्तों की किस प्रकार परीक्षा लेंगे? कृपया मार्गदर्शन कीजिए। और आने वाले समय में हम आपकी भागवत कथा कहाँ सुन पाएँगे, क्योंकि आपकी बातें सुनकर ही हम भगवान की ओर और आपकी ओर देखते हैं?

उत्तर: सबसे पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह भगवान विष्णु की कृपा है। आज भगवान महाविष्णु मानवता के कल्याण के लिए गतिशील हैं। कलियुग तो समाप्त हो चुका है; सत्य युग का आरंभ 2032–34 में होगा। और इस समय मानवता की रक्षा का एक ही सूत्र है त्रिकाल संध्या। जो कोई भी, जाति, पंथ या वर्ण से परे, त्रिकाल संध्या का पालन करेगा, वह भक्त बनेगा और सत्य युग में, राम राज्य में पार जाएगा। इस समय 'मेरा' और 'तेरा' छोड़कर, सत्यवादी और सामाजिक होकर तथा अपना व्यावसायिक कार्य भी करते हुए, त्रिकाल संध्या कीजिए — आपका कल्याण होगा। भक्तों की रक्षा का मुख्य माध्यम त्रिकाल संध्या है, जो भगवान विष्णु का मंत्र है: प्रातः संध्या, जिसे ब्रह्म-मुहूर्त संध्या कहते हैं, मध्याह्न संध्या, और सायं संध्या। एक समय अग्निहोत्र यज्ञ; दूसरे समय सूर्य देव को जल अर्पण, पितृ-देवों को तर्पण; और मानव जीवन के उद्धार के लिए सदैव माधव नाम का जप। इस समय भक्तों के निर्माण के लिए बड़ी कृपा है — तो जो भक्त बनना चाहते हैं, वे इसका पालन करें। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:30:50 · 24 अगस्त 2026

प्रश्न 3321 (रोहित) आपके चरणों में प्रणाम। मैं एक विद्यार्थी हूँ; पिछले 10 वर्षों से मैं डिप्रेशन में था। मैं बहुत जगह भटका, बहुत इलाज कराया, मेरे माता-पिता ने हर उपाय किया। लेकिन जब से मैंने त्रिकाल संध्या शुरू की है, मेरा जीवन सुधर गया है और मुझे किसी वरदान जैसा कुछ मिला है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए कि आगे मेरा जीवन किस पथ पर चले।

उत्तर: सबसे पहले मैं यह कहता हूँ कि जो लोग त्रिकाल संध्या करते हैं, यह भगवान की कृपा है। बेटा, तुम त्रिकाल संध्या करते हो — त्रिकाल संध्या में तुम्हें भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त हुई है। आज भारत में बहुत से नौजवान, बहुत से युवा चिंता में हैं, डिप्रेशन में हैं, बड़ी समस्याओं में हैं। वे बहुत से तरीके अपनाते हैं, बहुत सी दवाइयाँ लेते हैं; पर मेरी दृष्टि में, एक बार त्रिकाल संध्या करके देखिए कि उसमें भगवान की कितनी कृपा प्राप्त होती है। बेटा, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि तुम त्रिकाल संध्या करते हो। युवाओं के लिए आदर्श बनो, और जो युवा देख रहे हैं उनसे मैं कहता हूँ कि वे भी तुम्हारा अनुसरण करें। इतना ही नहीं बेटा — त्रिकाल संध्या ने तुम्हारे मन का और उसके विचारों का द्वंद्व और उथल-पुथल दूर कर दिया है; इससे भी बढ़कर, यह तुम्हारे जीवन को सुरक्षित भी करेगी, और भगवान तुम्हें सत्ययुग तक ले जाएँगे। जीवन में अनंत सुख की प्राप्ति के लिए त्रिकाल संध्या ही एकमात्र माध्यम है। कोई भौतिक तत्व, कोई मानवीय तत्व, कोई प्रायोजित तत्व मनुष्य को बदल नहीं सकता; जब तक भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त न हो, इस जीवन में व्यक्ति को कुछ नहीं मिलता। जिसने एक बार भगवान विष्णु में अपना ध्यान लगा दिया —

उसका जीवन सार्थक हो गया, और तुम्हारा जीवन सार्थक हो गया है। बेटा, बहुत आनंद है। त्रिकाल संध्या करते रहो। ब्रह्म मुहूर्त से लेकर रात 12 बजे तक किसी भी समय भागवत का एक पृष्ठ, एक श्लोक पढ़ो, और उसके साथ-साथ हर समय अपने मन के भीतर माधव का नाम जपते रहो। और मेरी कामना है कि भगवान सत्ययुग के मनुष्यों पर अपनी कृपा बरसाएँ। जय जय श्री माधव।

► यह उत्तर सुनें · 00:32:59 · 24 अगस्त 2026

प्रश्न 3322 पंडित जी, मैं भटक गया था — मैंने अलग-अलग जगहों पर आपके विरुद्ध लिखी बातें पढ़ीं और सुनीं और उसी मार्ग पर चलने लगा। लेकिन आज यह देखकर कि आपका एक-एक शब्द सत्य हो रहा है, जो विश्वास टूट गया था वह पूरी तरह लौट आया है और मैं पूरी तरह आपकी ओर देखता हूँ। इस बीच मेरा मन बहुत अशांत रहता है और मुझे बहुत क्रोध भी आता है। कृपया मार्गदर्शन कीजिए और कोई समाधान दीजिए।

उत्तर: जय जगन्नाथ। यह बहुत आनंददायक विचार है। देखिए — 'मुनि मति-भ्रम... मम दोष नहीं' — मुनि और ऋषि भी भूल करते हैं; हम तो साधारण मनुष्य हैं, इसलिए संग-दोष के कारण ऐसी भूलें और गलत विचार हमारे पास आते हैं। मैं एक बात कहना चाहता हूँ: जो कुसंगी हैं, कुबुद्धि हैं, बुरे आचरण वाले और बिना अच्छे चरित्र के हैं — ऐसे लोगों से कभी संपर्क मत रखिए। ऐसे लोगों से संपर्क रखने से पिंड-दान भी पितृ-लोक तक नहीं पहुँचता। ऐसे लोगों से संपर्क रखने से अमृत में भी विष आ जाता है। और ऐसे संग से — 'बिधि बस सुजन कुसंगत परी' — एक अच्छा व्यक्ति भी, जैसे आप, कभी-कभी बुरी संगति के कारण गलत विचारों में पड़ जाता है; परंतु उसके पास जो पवित्रता और जन्म तथा कर्म का संस्कार है — जैसा आपके पास है — वह संस्कार फिर से उसमें जाग उठता है और वह दिव्य मनुष्य बन जाता है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग आज गलत समझते हैं, जिन्होंने बुरी संगति के कारण धर्म, नीति, पवित्रता और सत्य को छोड़ दिया है, वे सत्य पर आएँ और सत्य को समझें। देखिए — मेरा कोई शिष्य नहीं है। मैं किसी का गुरु नहीं हूँ। मेरा कोई आश्रम नहीं है। मेरा कुछ भी नहीं है। मैं इधर-उधर घूमता रहता हूँ। फिर भी मैंने धर्म-प्रचार नहीं छोड़ा। असुरों ने मुझे मारने तक की बार-बार कोशिश की। फिर भी मैंने धर्म नहीं छोड़ा, क्योंकि जन्म धर्म से हुआ, मृत्यु भी धर्म से ही होगी — फिर भी मैं धर्म को ही खोजूँगा, और मैं धर्म से दूर नहीं हूँ। और मेरी कामना है कि इस समय आपके मन में जो क्रोध आता है, जो विचार आते हैं, जो द्वंद्व आता है, वह चला जाएगा। रात को सोने से पहले एक बार त्रिकाल संध्या कीजिए। इसी में आपका कल्याण होगा। और इस प्रकार आप इतिहास बन जाइए। जो लोग धर्म छोड़ रहे हैं, जो सत्य समझने के बाद भी गलत विचारों से सत्य का विरोध करते हैं — वे भी सत्य को समझें। सत्य कभी आग में नहीं जलता। सत्य कभी मिटता नहीं। सत्य कभी नष्ट नहीं होता। यह बिल्कुल सत्य है, बेटा। धर्म धर्म है और कर्म कर्म है, और इस संसार में बड़े-बड़े मुनियों को भी बुद्धि का भ्रम होता है; पर आपमें कोई दोष नहीं है — आप सदा अच्छे हैं, अच्छे बने रहिए। इस त्रिकाल संध्या, भागवत पठन और माधव के नाम का पालन कीजिए, और रात को सोने से पहले एक बार त्रिकाल संध्या कीजिए — आपका कल्याण होगा। जय जगन्नाथ।

► यह उत्तर सुनें · 00:35:27 · 24 अगस्त 2026